दशमस्कन्ध पूर्वार्द्ध




आंबिका
गोपा
नन्दः
कृ.


अरिष्टासुर


कृष्ण
केशी


रास क्रीडा


गोप्य
अक्रूर
गोप्य


धनुर्भंग


रा
कृ
चा.
मु


गोप्य
उद्धव


कुवलयापीड


रा
कृ
कंस


पांडवा अक्रूर
ध
कु.
भी

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ दशमस्कन्धप्रारम्भः (तत्रतुप्रथमेकंसः स्वमृत्युंदेवकीसुतात् ॥ श्रुत्वाभीतोऽवधीत्तस्याःषड्गर्भानितिवर्ण्यते १ तहां पहिले अध्यायमें कंस देवकी के पुत्रसे अपनी मृत्यु सुनकर डरकर तिसके छः बालकोंको मारता भयाहै यह वर्णनहै ?) श्रीराजा परीक्षित् शुकदेवजी से प्रश्न करते हैं कि हे महाराज ! आपने पूर्व नवमस्कन्धमें चन्द्रवंश और सूर्यवंश विस्तारपूर्वक कह्यो और दोनों वंशके राजानको आश्चर्य चरित्र कह्यो १ हे मुनिनमें श्रेष्ठ! धर्म्मशील महाराज यदुको वंश निरन्तर अच्छी तरहसे कहो तिन महाराज यदुके वंशमें परिपूर्ण रूपते अवतार लेकर श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने जो लीला चरित्रकरे सो हमारे सम्मुख वर्णन कीजिये सम्पूर्ण प्राणिनके रक्षा करनवारे भगवान् ने यदुवंशमें अवतार लेकर जो २ लीलाकरी तिनको हमारे आगे विस्तार पूर्वक कथन कीजिये २।३ संसारमें तीनप्रकारके मनुष्यहैं एक तो ज्ञानी द्वितीय मुमुक्षु तृतीय विषयी इन तीनों प्रकारके मनुष्यनको उत्तमश्लोक भगवान्के चरित्र प्रियहैं ज्ञानीनको परमेश्वरके चरित्र

नमोभगवतेवासुदेवाय ॥ राजोवाच ॥ कथितोवंशविस्तारो भवतासोमसूर्ययोः ॥ राज्ञांचोभयवंश्यानां चरितंपरमाद्भुतम् १ यदोश्चधर्मशीलस्य नितरांमुनिसत्तम ॥ तत्रांशेनावतीर्णस्य विष्णोर्वीर्याणिशंसनः २ अवतीर्ययदोर्वंशे भगवान्भूतभावनः ॥ कृतवान्यानिविश्वात्मा तानिनोवदविस्तरात् ३ निवृत्ततर्षैरुपगीयमानाद्भवौषधाच्छ्रोत्रमनोऽभिरामात् ॥ कउत्तमश्लोकगुणानुवादात्पुमान्विरज्येतविनापशुघ्नात् ४ पितामहामेसमरेऽमरञ्जयैर्देवव्रताद्यातिरथैस्तिमिङ्गिलैः ॥ दुरत्ययंकौरवसैन्यसागरं कृत्वातरन्वत्सपदंस्मयत्प्लवाः ५ द्रौण्यस्त्रविप्लुष्टमिदंमदङ्गं सन्तानबीजंकुरुपाण्डवानाम् ॥ जुगोपकुक्षिङ्गतआत्तचक्रो मातुश्चमेयःशरणंगतायाः ६ वीर्याणितस्याखिलदेहभाजामन्तर्बहिःपूरुषकालरूपैः ॥ प्रयच्छतोमृत्युमुतामृतंच मायामनुष्यस्यवदस्वविद्वन् ७ रोहिण्यास्तनयःप्रोक्तो रामःसङ्कर्षणस्त्वया ॥ देवक्यागर्भसम्बन्धःकुतोदेहान्तरंविना ८ कस्मान्मुकुन्दोभगवान् पितुर्गेहाद्व्रजंगतः ॥ क्ववासंज्ञातिभिःसार्धं कृतवान्सात्वतांपतिः ९ व्रजेवसन्किमकरोन्मधुपुर्यांचकेशवः ॥ भ्रातरंचावधीत्कंसं मातुरद्धातदर्हणम् १० देहंमानुषमाश्रित्य कतित

श्रवण करनेसे संसारकी वासना दूरहुई और मोक्षकी इच्छाहै जिनको ऐसे नारद उद्धवादिकन को संसाररूपी रोग के दूर करनेको औषध है और विषयों में चित्त है जिनको ऐसे मनुष्यनके चित्तको और काननको आनन्दके देनवारे हैं ऐसो आत्मघाती कौन सो मनुष्यहै जो परमेश्वर के गुणानुवाद सुनकर उपरामको प्राप्तहोय ४ संग्राम विषे देवतानको पराजय करनवारे भीष्मसदृश ग्राहान करि अतिदुस्तर कौरवन की सेनारूपी सागर ताको मेरे पितामह युधिष्ठिरादिक जैसे बछराके खुर के जलको मनुष्य उल्लंघन करिजाय है तैसे श्रीकृष्णरूपी नौका को आश्रय करिके पार उतरिगये ५ कौरव और पाण्डवन की सन्तान को बीजरूपजो मेरो अङ्ग सो अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र के तेज से दग्ध देखकर मेरीमाता उत्तरा अतिकष्ट को प्राप्त होकर श्रीकृष्णकी शरण प्राप्तहुई तासमय श्रीकृष्ण चक्र ग्रहणकर मेरी माताकी कुक्षि में प्रविष्ट होकर रक्षा करतभये ६ हे विद्वन् ! सम्पूर्ण प्राणिनको पुरुष कालरूप संसार मोक्षके देनवारे अतिकृपाकरिके मनुष्यरूप धारण किये जो श्री कृष्णचन्द्र तिनकी लीला हमारे आगे कहो ७ और राम संकर्षण तुमने नवमस्कन्ध में रोहिणी के पुत्र कहे फिरि तिनको देवकी के पुत्र कहे इसमें सन्देह होतहै कि एक देहते दो उनके पुत्र कैसे

भये ८ अपने पिता वसुदेवके घरसे मुक्तिके देनवारे भगवान् व्रजमें क्योंगये और भक्तनके रक्षक भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी ज्ञातिके मनुष्यन को संगलेकर कहां बसे ९ व्रजमें वसिके भगवान कहा करतभये और मथुरा में वसिके कहा करतभये और माताके भ्राता कंसको सम्मुख ठाढ़े होकर अपने हाथसे कैसे मारनेको योग्य होतभये १० हे प्रभो! मनुष्य देहधारण करिके श्रीकृष्णचन्द्र यादवन सहित मधुपुरी में कितने वर्षपर्य्यन्त वसे और कितनी स्त्रीभई मेरे आगे कहो ११ जो प्रथम मैंने बूझो है सो और जो श्रीकृष्ण को चरित्र बूझिबे में बाकी रहो है सो सब श्रद्धावान् जो मै हौं ताके आगे विस्तार ते कहो काहे से कि हे मुनि! आप सम्पूर्ण के जानिबेवारे हो १२ तुम्हारे कमलरूपी मुखसे निकसो जो हरिकी कथारूपी अमृत तिसको पान कियेहौं यासे जल पानादि त्यागकरे हौं परन्तु नहीं सहनेके योग्य जो क्षुधाहै सो मोको बाधा नहीं करै है १३ सूतजी महाराज कहतहैं कि हे भृगुनन्दन शौनक! या प्रकार व्यासपुत्र श्री शुकदेवजी महाराज राजा

पौष्णिवृष्णिभिः ॥ यदुपुर्यांसहावात्सीत्पत्न्यःकत्यभवन्प्रभोः ११ एतदन्यच्चसर्वंमे मुनेकृष्णविचेष्टितम् ॥ वक्तुमर्हसिसर्वज्ञ श्रद्दधानायविस्तृतम् १२ नैपाऽतिदुःसहाक्षुन्मां त्यक्तोदमपिबाधते ॥ पिबन्तंत्वन्मुखाम्भोजच्युतंहरिकथामृतम् १३ सूतउवाच ॥ एतंनिशम्यभृगुनन्दनसाधुवादं वैयासकिःसभगवानथविष्णुरातम् ॥ प्रत्यर्च्यकृष्णचरितंकलिकल्मषघ्नं व्याहर्त्तुमारभतभागवतप्रधानः १४ श्रीशुकउवाच ॥ सम्यग्व्यवसिताबुद्धिस्तवराजर्षिसत्तम ॥ वासुदेवकथायान्ते यज्जातानैष्ठिकीमतिः १५ वासुदेवकथाप्रश्नः पुरुषांस्त्रीन्पुनातिहि ॥ वक्तारंपृच्छकंश्रोतॄंस्तत्पादसलिलंयथा १६ भूमिर्दृप्तनृपव्याजदैत्यानीकशतायुतैः ॥ आक्रान्ताभूरिभारेण ब्रह्माणंशरणंययौ १७ गौर्भूत्वाऽश्रुमुखीखिन्ना क्रन्दन्तीकरुणंविभोः ॥ उपस्थितान्तिकेतस्मै व्यसनंस्वमवोचत १८ ब्रह्मातदुपधार्य्याथ सहदेवैस्तयासह ॥ जगामसत्रिनयनस्तीरंक्षीरपयोनिधेः १९ तत्रगत्वाजगन्नाथं देवदेवंवृषाकपिम् ॥ पुरुषंपुरुषसूक्तेनउपतस्थेसमाहितः २० गिरंसमाधौगगनेसमीरितां निशम्यवेधास्त्रिदशानुवाचह ॥ गांपौरुषींमेशृणुतामराःपुनर्विधीयतामाशुतथैवमाचिरम् २१

को पूजन करिके कलियुग के पापनको नाश करनवारो श्रीकृष्णचन्द्र को चरित्र तिसके कहिवे को प्रारम्भ करतभये १४ हे राजन् राजऋषिन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित! तुम्हारी बुद्धिने भलेप्रकार निश्चय कियो है या बुद्धिते तुम्हारी कृष्णकथान में अति उत्कृष्ट प्रीतिभई १५ वासुदेव भगवान् की कथाको प्रश्न तीनि मनुष्यन को पवित्र करै है कहनवारे प्रश्न करनवारे और सुननवारे को जैसे श्रीगंगाजी को जल पुरोहित यजमान और ग्रहण करनवारेको पवित्र करै है १६ गर्व्ववन्त दैत्यराजानकी सेनाके समूह सैकरान हजारन के भारसे दुःखी हुई पृथ्वी ब्रह्माजी की शरण जाति भई १७ पृथ्वी गौ को रूप धारण करिके और रुदन करतीहुई और करुणा जामें उपजे ऐसे वचनों को कहती पुकारती ब्रह्माके पास जायके अपना सम्पूर्ण दुःख कहतभई १८ ब्रह्माजी तब पृथ्वी को दुःख श्रवण करिके देवतानको सग लेके पृथ्वी को सङ्ग लेके और शिवजी को संग ले क्षीरसागर के निकट जातभये १९ क्षीरसमुद्रके समीप जायके जगत्के नाथ सम्पूर्ण मनोरथ पूरण करनवारे ऐसे भगवान् नारायण तिनकी सहस्रशीर्षापुरुष इन षोड़श ऋचानते स्तुति करतभये २० ब्रह्माजी ने समाधि लगाई ता समय आकाशवाणी हुई ता वाणी

को श्रवणन रि ब्रह्माजी देवतान से बोले हे देवताओ ! मोको ईश्वरकी आज्ञाभई है तिसको तुम श्रवणकरो और श्रवण करि बैठि मतरहो शीघ्र वैसाहीकरो २१ हमारी प्रार्थनासे प्रथम परमेश्वरने या पृथ्वीको दुःख दूरि करनो विचारो है सो तुम अपने अंशन करिके यादवनके कुलमें जायकर जन्म धारण करो यावत्पर्य्यन्त ब्रह्मादिकन के ईश्वर अपनी कालशक्ति करि पृथ्वीको भार उतारैं और पृथ्वी में विचरैं तावत्पर्य्यन्त पृथ्वीपर रहो २२ साक्षात् परमपुरुष भगवान् पृथ्वी में आयके प्रकट होयँगे तिनके संग विहार करिवे के लिये देवतानकी स्त्री हैं तो जायके व्रजमें जन्म धारण करो २३ हजार जिनके मुख वासुदेवकी अंशकला ऐसे शेषजी बलभद्र श्रीकृष्ण के संग क्रीड़ा करिवेके लिये प्रकट होयँगे २४ देवकी के गर्भ खींचिवे के लिये और यशोदाको मोह करिवे के लिये परमेश्वरकी माया सम्पूर्ण जगत् को मोह करायवेवारी ताको आज्ञा देतभये सो वह माया अंश करिके सहित यशोदाके प्रकट होयगी २५ या प्रकार प्रजापतिन के पति श्रीब्रह्माजी देवतान

पुरैवपुंसाऽवधृतोधराज्वरो भवद्भिरंशैर्यदुषूपजन्यताम् ॥ सयावदुर्व्याभरमीश्वरेश्वरः स्वकालशक्त्याक्षपयंश्चरेद्भुवि २२ वसुदेवगृहेसाक्षाद्भगवान्पुरुषः परः ॥ जनिष्यतेतत्प्रियार्थं सम्भवन्तुसुरस्त्रियः २३ वासुदेवकलाऽनन्तःसहस्रवदनःस्वराट् ॥ अग्रतोभवितादेवो हरेःप्रियचिकीर्षया २४ विष्णोर्मायाभगवती ययासम्मोहितंजगत् ॥ आदिष्टाप्रभुणांशेन कार्यार्थेसंभविष्यति २५ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यादिश्यामरगणान् प्रजापतिपतिर्विभुः ॥ आश्वास्य चमहींगीर्भिः स्वधामपरमंययौ २६ शूरसेनोयदुपतिर्मथुरामावसन्पुरीम् ॥ माथुराञ्छूरसेनांश्च विषयान्बुभुजेपुरा २७ राजधानीततःसाभूत्सर्वयादवभूभुजाम् ॥ मथुराभगवान्यत्र नित्यंसन्निहितोहरिः २८ तस्यांतुकर्हिचिच्छौरिर्वसुदेवःकृतोद्वहः ॥ देवक्यासूर्यया सार्द्धं प्रयाणेरथमारुहत् २९ उग्रसेनसुतःकंसः स्वसुःप्रियचिकीर्षया ॥ रश्मीन्हयानांजग्राह रौक्मैरथशतैर्वृतः ३० चतुःशतंपारिबर्हं गजानांहेममालिनाम् ॥ अश्वानामयुतंसार्द्धं रथानांचत्रिषट्शतम् ३१ दासीनांसुकुमारीणां द्वेशतेसमलङ्कृते ॥ दुहित्रेदेवकःप्रादाद्याने दुहितृवत्सलः ३२ शङ्खतूर्यमृदङ्गाश्च नेदुर्दुन्दुभयःसमम् ॥ प्रयाणप्रक्रमे तावद्वरवध्वोःसुमङ्गलम् ३३ पथिप्रग्रहिणंकंसमाभाष्याहाशरीरवाक् ॥ अस्यास्त्वामष्टमोगर्भो हन्तायांवहसेऽबुध ३४ इत्युक्तःसखलःपापो भोजानांकु

के गणनको आज्ञादेके और पृथ्वीको समाधान करिके अपने सत्यलोक को जातभये २६ यादवन के राजा शूरसेन मथुरापुरी में वसिके माथुरदेश शूरसेनदेशनको राज्य करतभये २७ जा मथुरापुरी में भगवान् हरि नित्य विराजमान रहे हैं सो सम्पूर्ण पृथ्वी के भोग करनवारे यादवन की राजधानी होतभई २८ एकसमय मथुरापुरीमें शूरसेन के पुत्र वसुदेवजी विवाह करिके नववधू देवकीको संग लेके रथमें बैठतभये २९ उग्रसेन को पुत्र कंस अपनी भगिनी देवकीके प्यार करिवे के लिये सैकरान सुवर्ण से जटित रथनको संगलेकर वहिनिके रथके घोडन की वागडोरी पकरिके हाकिवे को बैठिगयो ३० अपनी कन्यापै अधिकहै प्रीति जाकी ऐसो देवक ताने विदा के समय सुवर्ण की माला पहिरेभये चारसौहाथी और दशहजार घोडा अठारहसौ रथ दाइजे में दिये ३१ सुकुमार जिनके अंग ऐसे दास और दासी दो सौ शृङ्गार करिके देतभये ३२ यात्राके समय वरवधूके मंगल केलिये शङ्ख भेरी नगाड़े यहसब वरातके संग बाजे बाजतभये ३३ मार्ग में देवकी

के रथके घोड़नकी वागडोर पकरे जो कंस ताको आकाशवाणी सम्बोधन देकर बोली अरे मूर्ख! जाको तू पहुँचाइवेकूं जाय है यही देवकी तेरी वहिनि ताको आठवाँ बालक तोको मारेगो ३४ या विधि आकाशवाणी के वचन श्रवण करतेही भोजवंशीन के कुलको कलङ्क लगावनवारो दुष्ट पापी कंस वहिनि के मारिवे को हाथमें तरवार लेकर केश पकरतभयो ३५ निन्दा के योग्य है कर्म जाको ऐसो मूर्ख निर्लज्ज कंसहै ताको बड़े ऐश्वर्य्यवान् वसुदेवजी समझावत यह बोले ३६ अहो कंस तुम बड़े गुणवान् और शूरवीर भोजवंशीन के यशके करनवारे हो विवाह के उत्सवमें एकतो स्त्री जाति दूसरे तुम्हारी वहिनि ताहि कैसे मारो हो ३७ और मृत्युके डरते मारोहो तो मृत्यु तो जन्मधारी मनुष्यन को जिसदिन मनुष्य जन्मो है उसी दिन संग मृत्युको जन्म है आज अथवा सौ वर्ष पाछे देहधारी को मरण निश्चयहै ३८ जा समय या देहको अन्तकाल आवे है ता समय देहमें जो जीवात्माहै सो अपने कर्म्मानुसार और देहको प्रथम पायके अपने देहको त्यागै है ३९ जैसे चलती

लपांसनः ॥ भगिनीहन्तुमारब्धः खड्गपाणिःकचेऽग्रहीत् ३५ तंजुगुप्सितकर्माणं नृशंसंनिरपत्रपम् ॥ वसुदेवोमहाभाग उवाचपरिसान्त्वयन् ३६ ॥ वसुदेवउवाच ॥ श्लाघनीयगुणःशूरैर्भवान्भोजयशस्करः ॥ सकथंभगिनींहन्यात्स्त्रियमुद्वाहपर्वणि ३७ मृत्युर्जन्मवतांवीर देहेनसहजायते ॥ अद्यवाऽब्दशतान्तेवा मृत्युर्वैप्राणिनांध्रुवः ३८ देहेपञ्चत्वमापन्ने देहीकर्मानुगोऽवशः ॥ देहान्तरमनुप्राप्य प्राक्तनंत्यजतेवपुः ३९ व्रजंस्तिष्ठन्पदैकेन यथैवैकेन गच्छति ॥ यथातृणजलौकैवं देहीकर्मगतिंगतः ४० स्वप्नेयथापश्यतिदेहमीदृशं मनोरथेनाभिनिविष्टचेतनः ॥ दृष्टश्रुताभ्यांमनसानुचिन्तयन्प्रपद्यते तत्किमपिह्यपस्मृतिः ४१ यतोयतोधावतिदैवचोदितं मनोविकारात्मकमापपञ्चसु ॥ गुणेषुमायारचितेषुदेह्यसौ प्रपद्यमानःसहतेनजायते ४२ ज्योतिर्यथैवोदकपार्थिवेष्वदः समीरवेगानुगतंविभाव्यते ॥ एवंस्वमायारचितेष्वसौपुमान्गुणेषुरागानुगतोविमुह्यति ४३ तस्मान्नकस्यचिद्द्रोहमाचरेत्सतथाविधः ॥ आत्मनःक्षेममन्विच्छन्द्रोग्धुर्वैपरतोभयम् ४४ एपातवानुजाबालाकृपणापुत्तिकोपमा ॥ हन्तुंनार्हसिकल्याणीमिमांत्वंदीनवत्सलः ४५ ॥ श्री

वेर मनुष्य अगिले पांवको धरिलेयहै तब पिछले पावको उठावैहै और जैसे जोंक चलते समय पहिले अगिले तृणको पकरिलेइ तब पीछिले तृणको छोड़ैहै ऐसेही देहस्थ जीवात्मा कर्म्मनके वशते और देहको प्रथम ग्रहण करिके तब या देहको त्यागकरैहै ४० स्वप्नमें मनुष्य जैसे देखे सुने संस्कारके वश जो मनहै ताके चिन्तनते संसारमें सोवत देहको भूलिके अपनेको राजा और इन्द्रादिक रूपके अभिमान को बाधिलेयहै ऐसेही मनोरथ देहकूं भूलिके और देहमें अभिमान बाधिलेयहै ४१ फलके देनवारे कर्म्मन करि प्रेरित विकारनको भरो जो मनहै सो मायारचित पंचभूतनके बने जो शरीर तिनमें जा जा शरीरमें दौरे है और अभिमानको बाधे है वाही शरीर में जीवको संगलेके जन्मैहै ४२ जैसे सूर्य्य चन्द्रमादिकनकी ज्योति जलकेभरे घटादि पात्रनमें प्रतिबिम्बित होयके पवनके वेगते जलमें कम्पित प्रतीत होयहै ऐसे जो पुरुष अपनी अविद्यारचित जो देह तिनमें अभिमान करि मोहको प्राप्त होइ है ४३ ता कारण ते अपने आत्माको कल्याण करनवारो पुरुष काहूसे वैरभावको न करै ऐसे मनुष्य को दूसरे ते भय नहीं होय ४४ जाते यह तेरी छोटी वहिनि है और बालक है और कृपणाहै काष्ठकी पुतरी की नाई तेरे सम्मुख ठाढ़ी है तुम तो दीनन के हितकारी

हो या मंगलरूपी को मारिवे योग्य नहीं हो ४५ श्रीशुकदेवजी महाराज कहतहैं कि हे कुरुवंशी राजा परीक्षित्! ऐसे प्रिय वचन कहिके वसुदेवजी ने समझायो तथापि एक तो आपही दुष्ट दूसरे असुरन को संग एकहु वचन मान्यो नाहीं ४६ वसुदेवजी कंसके हठको जानि विचारि के देवकीको प्राप्तभई जो मृत्यु ताहि दूरि करिवेके लिये ता समय यह विचार करतभये ४७ जवताईं बुद्धि को वलहोइ तवताईं मृत्यु दूरिकरै याहू में मृत्यु निवृत्त न होय तो या पुरुष को दोष नहीं है ४८ मृत्युरूप कंसको पुत्र देने कहिके या कृपणा देवकी के प्राण वचाऊं कदाचित् कहो कि पुत्र देके देवकी के प्राण वचावने यह तो नीति नहीं है तहा वसुदेवजी विचार करैहै कि जा समय देवकी के पुत्र होयँगे ता समय जो होनहार होयगी सो होय रहैगी तवताईं तो याके प्राण बचैंगे ४९ पुत्र उत्पन्न होने ते पहले यही कंस मरजाय तौ कछू भी अनीति नहीं है और जो मेरे पुत्रहोइ वाको कंस न मारे तौ मेरो पुत्रही या कंसकूं मारेगो ऐसे उलटी बात तो न होजाय कदाचित् कहो कि

शुकउवाच ॥ एवंससामभिर्भेदैर्बोध्यमानोऽपिदारुणः ॥ नन्यवर्त्तत कौरव्यपुरुषादाननुव्रतः ४६ निर्बन्धंतस्यतंज्ञात्वा विचिन्त्यानकदुन्दुभिः ॥ प्राप्तंकालं प्रतिव्योढुमिदंतत्रान्वपद्यत ४७ मृत्युर्बुद्धिमतापोह्योयावद्बुद्धिबलोदयम् ॥ यद्यसौननिवर्तेतनापराधोऽस्तिदेहिनः ४८ प्रदायमृत्यवेपुत्रान्मोचयेकृपणामिमाम् ॥ सुतामेयदिजायेरन्मृत्युर्वानम्रियेतचेत् ४९ विपर्ययोवाकिंनस्याद्गतिर्धातुर्दुरत्यया ॥ उपस्थितोनिवर्तेत निवृत्तःपुनरापतेत् ५० अग्नेर्यथादारुवियोगयोगयोरदृष्टतोऽन्यन्ननिमित्तमस्ति ॥ एवंहिजन्तोरपिदुर्विभाव्यः शरीरसंयोगवियोगहेतुः ५१ एवंविमृश्यतंपापं यावदात्मनिदर्शनम् ॥ पूजयामासवैशौरिर्बहुमानपुरःसरम् ५२ प्रसन्नवदनाम्भोजो नृशंसंनिरपत्रपम् ॥ मनसादूयमानेन विहसन्निदमब्रवीत् ५३ वसुदेवउवाच ॥ नह्यस्यास्तेभयंसौम्य यद्विसाहाशरीरवाक् ॥ पुत्रान्समर्पयिष्येऽस्या यतस्तेभयमुत्थितम् ५४ श्रीशुकउवाच ॥ स्वसुर्वधान्निववृते कंसस्तद्वाक्यसारवित् ॥ वसुदेवोऽपितंप्री

तुम्हारे पुत्र वालक या तरुण वलवान् कंस कू कैसे मारेंगे तहा वसुदेवजी कहै हैं विधाताकी गति काहू के जानिवे में नहीं आवैहै जे पुरुष मारिवे योग्यहैं ते नहीं मरै हैं और जो मारिवे योग्य नहीं हैं तिनकी मृत्यु होजाय है ५० जैसे अग्नि काष्ठन में वियोगयोगकों केवल अदृष्ट के विना और कोई कारण प्रतीत नहीं होयहै जैसे वनमें अग्निलगै है तो जो वृक्ष जरनहार नहीं है ते समीप के वचिजायँ है और जरनहार हैं ते दूरिके जरिजायँ हैं और जैसे गावमें पास के घर वचिजायँ हैं दूरके जरिजायँ हैं ऐसेही प्राणिन के जन्म मृत्युको कारण हू विचारिवे में नहीं आवै है ५१ श्रीशुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित् से कहै हैं कि या प्रकार जहाताईं अपनी बुद्धि चली तहा ताईं वसुदेवजी ने विचार करिके कंसको पूजन करयो ५२ कंस के विश्वास के कारण ऊपरतें प्रफुल्लित है मुख कमलरूपी जिनको ऐसे वसुदेवजी क्रूर निर्लज्ज कंसतें दुःखित मन मुसकायके यह वोले ५३ हे सौम्य! जैसे आकाशवाणी ने कही वैसे निश्चय या देवकी ते तुम कूं भय नहीं है जिन पुत्रन ते तुम्हैं भयभयो है सो याके पुत्र लायकै तुम्हारे अर्पण करि देउँगो ५४ वसुदेवजीके वाक्यको सत्य मानिके कंस अपनी वहिनिके मारिवे ते निवृत्तभयो वसुदेवजी हू प्रसन्नहोइ कंसकी वडाई

करिके अपने घर जातभये ५५ समस्त प्राणीन के आत्मा भगवान् हैं देवता जिनके ऐसी जो देवकी तिनने जब पुन जन्मको समय आयो तब वर्ष वर्ष प्रति एक एक पुत्र और एक कन्या ऐसे नव बालक उत्पन्न किये ५६ प्रथम कीर्तिमान् पुत्रभयो ताको वसुदेवजी बड़े कष्टते कंसके समीप लेगये क्योंकि मिथ्या बोलिवे तें वसुदेवजी डरपे हैं ५७ कदाचित् कहो कि कंस मँगावतो तब लेजाते वसुदेवजी आपही तें कंसपै क्यों लेगये तहां कहैं हैं कि साधु महात्मा जो हैं ते कौनसी बात न सहिसकें हैं और पुत्रके लाड़ करिबेको आनन्द वसुदेवजी पै कैसे त्यागो गयो तहां कहै हैं विद्वाननको कौन बात अपेक्षित है कदाचित् कहो कि वसुदेवजी या कारण आप लेगये कि मैं लैजाऊँगो तो दया विचार कंस न मारैगो तहां कहैं हैं कि दुष्टजन कहा नहीं करैं हैं कंस सदृश दुष्टन कूं दया कब आवै वसुदेवजी पुत्र कूं लैगये परन्तु देवकी पै पुत्र कैसे दियोगयो तहां कहैं हैं कि देवकी ने मनमें विचार करि राख्यो है कि ऐसे पुत्र तो बहुत होयँगे मेरे सांचे पुत्र तो श्रीकृष्णचन्द्र हैं यह जानिकै

तः प्रशस्यप्राविशद्गृहम् ५५ अथकालउपावृत्ते देवकीसर्वदेवता ॥ पुत्रान्प्रसुषुवेचाष्टौ कन्यांचैवानुवत्सरम् ५६ कीर्तिमन्तंप्रथमजं कंसायानकदुन्दुभिः ॥ अर्पयामासकृच्छ्रेण सोऽनृतादतिविह्वलः ५७ किन्दुःसहन्तुसाधूनां विदुषांकिमपेक्षितम् ॥ किमकार्य्यंकदर्याणां दुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् ५८ दृष्ट्वासम त्वंतच्छौरेःसत्येचैवव्यवस्थितिम् ॥ कंसस्तुष्टमनाराजन्प्रहसन्निदमब्रवीत् ५९ प्रतियातुकुमारोऽयं नह्यस्मादस्तिमेभयम् ॥ अष्टमाद्युवयोर्गर्भान्मृत्युर्मेविहि तःकिल ६० तथेतिसुतमादायययावानकदुन्दुभिः ॥ नाभ्यनन्दतत्तद्वाक्यमसतोविजितात्मनः ६१ नन्दाद्यायेव्रजेगोपायाश्चामीषाञ्चयोषितः ॥ वृष्णयो वसुदेवाद्या देवक्याद्यायदुस्त्रियः ६२ सर्वेवैदेवताप्राया उभयोरपिभारत ॥ ज्ञातयोबन्धुसुहृदो येचकंसमनुव्रताः ६३ एतत्कंसायभगवाञ्छशंसाभ्येत्य नारदः ॥ भूमेर्भारायमाणानां दैत्यानांचवधोद्यमम् ६४ ऋषेर्विनिर्गमेकंसोयदून्मत्वासुरानिति ॥ देवक्यागर्भसम्भूतं विष्णुञ्चस्ववधंप्रति ६५ देव कींवसुदेवञ्च निगृह्यनिगडैर्गृहे ॥ जातंजातमहन्पुत्रं तयोरजनशङ्कया ६६ मातरंपितरंभ्रातॄन् सर्व्वांश्चसुहृदस्तथा ॥ घ्नन्तिह्यसुतृपोलुब्धा राजानः

दियो ५८ वसुदेवजीकी समता देखिकै हे राजन् परीक्षित्! सन्तुष्ट जाको मन ऐसो कंस सो मुसकायके यह वचन बोल्यो ५९ या पुत्रको घरकू फेरि ले जावो यासें मोकूं भय नहीं है आपके आठवें पुत्र ते मेरी मृत्यु निश्चय रची है ६० तथास्तु ऐसे कहिके वसुदेवजी पुत्र कूं लैके घरको आवतभये परंतु कंस के वचन को विश्वास न करयो अब फेरि दियो है पश्चात् फिरि चाहै मँगाय लेइ असा दुष्ट याके वचनको कुछ विश्वास नहीं कंसने वसुदेवजी को पुत्र फेरि दियो यह बात श्रवण करि नारदजीने आयके कंसते कही ६१ व्रजमें नन्दजी ते आदिलेके जे गोप हैं और गोपनकी स्त्री हैं और वसुदेवजी ते आदिलेके वृष्णि यादव और देवकी ते आदिलेके यादवनकी स्त्री जे तुम्हारे समीपवर्ती हैं ते सम्पूर्ण हे कंस! वसुदेवजी और नन्दजी के कुलमें ज्ञाति बन्धु सुहृद् ये समस्त देवता प्रकटभये हैं पृथिवी में दैत्यनको भार बढ़्यो है ताके उद्धार के निमित्त भगवान् ने यह उपाय रच्यो है सो तुम जानिलीजो ६२। ६३।६४ ऐसे उपदेश करि नारदजी तो जातभये अब कंसने याद- वन कूं देवता मानिके और देवकी के गर्भ ते विष्णु भगवान् प्रकट होयके मोकूं मारेंगे यह मानिके ६५ देवकी और वसुदेव कूं बन्दीघर में रोकि पावन में बेड़ी डारिदई और जो जो इनके पुत्रभये

ताई कूं विष्णुभगवान् की शंका मानिकै मारतभयो ६६ अपने प्राणन के लोभी राजा पृथ्वी में माता पिता भय्या और सम्पूर्ण मित्रनको मारिडारे हैं ६७ पहले या जगत् में कालनेमि बडो असुरभयो ताकूं विष्णुने माख्यो और ताही असुरते अपनो जन्म जो है ताही जानिकै यादवन से वैर करतभयो ६८ यदुवंशी भोजवंशी अन्धकवंशीन के राजा उग्रसेन ऐसे अपने पिता तिनके पावन में वेडी डारिकै बड़ो बलवान् कंस सो आपही शूरसेनदेशनको राज्य करतभयो ६९ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिययादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेश्रीकृष्णावतारोपक्रमेप्रथमोऽध्यायः १ ॥ * ॥

(द्वितीये ःसत्वातायदेवक्यागर्भगोहरिः ॥ ब्रह्मादिभि स्तुतःसाचसान्त्विततितिनिरूप्यते १ दूसरे अध्यायमें कंस के मारनेके लिये देवकीजी के गर्भ में प्राप्त भगवान् ब्रह्मादिक देवताओं से स्तुति किये गये और देवकीजी समझाई गई यह वर्णनहै १) प्रलम्बासुर बकासुर चाणूर तृणावर्त अघासुर मुष्टिक अरिष्ट द्विविदबन्दर पूतना केशी धेनुकासुर १ और असुरनके राजा बाणासुर भौ-

प्रायशोभुवि ६७ आत्मानमिहसञ्जातं जानन्प्राग्विष्णुनाहतम् ॥ महासुरंकालनेमिं यदुभिःसव्यरुध्यत ६८ उग्रसेनञ्चपितरं यदुभोजान्धकाधिपम् ॥ स्वयंनिगृह्यबुभुजे शूरसेनान्महाबलः ६९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेश्रीकृष्णावतारोपक्रमेप्रथमोऽध्यायः १ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ प्रलम्बबकचाणूरतृणावर्तमहाशनैः ॥ मुष्टिकारिष्टद्विविदपूतनाकेशिधेनुकैः १ अन्यैश्चासुरभूपालैर्बाणभौमादिभिर्युतः ॥ यदूनांक दनंचक्रे बलीमागधसंश्रयः २ तेपीडिताविविविशुः कुरुपाञ्चालकेकयान् ॥ शाल्वान्विदर्भान्निषधान्विदेहान्कोसलानपि ३ एकेनमनुरुन्धानाज्ञातयःप र्युपासते ॥ हतेषुषट्सुबालेषु देवक्याऔग्रसेनिना ४ सप्तमोवैष्णवंधाम यमनन्तंप्रचक्षते ॥ गर्भोबभूवदेवक्या हर्षशोकविवर्द्धनः ५ भगवानपिविश्वात्मा विदित्वाकंसजम्भयम् ॥ यदूनांनिजनाथानां योगमायांसमादिशत् ६ गच्छदेविव्रजंभद्रे गोपगोभिरलङ्कृतम् ॥ रोहिणीवसुदेवस्य भार्य्याऽस्तेनन्दगो कुले ॥ अन्याश्चकंससंविग्ना विवरेषुवसन्तिहि ७ देवक्याजठरेगर्भं शेषाख्यंधाममामकम् ॥ ततसन्निकृष्यरोहिण्याउदरेसन्निवेशय ८ अथाहमंशभागेन

मासुर इनको संग लेके और मगधदेशको राजा जरासन्ध ससुरके बलतें बली कंस यादवन कूं कष्ट देतभयो २ ते यादव दुःखित होयके कंसके भय ते कुरुदेश पञ्चाल केकय शाल्व विदर्भ निषध विदेह कोसल इन देशन में जायकै वास करतभये ३ एक अक्रूरादिक यादव वसके आज्ञाकारी सर्व्वकार्य्य में लगि रहे हैं जब उग्रसेन के बेटा कंसने देवकी के छः बालक मारे ४ तब विष्णुभगवान्की कला अनन्त जिनकूं कहे हैं ऐसो सातवों गर्भ देवकी के भयो सो कैसो है कि आनन्दरूपको अवतार होइगो यातें तो मनमें हर्षभयो और पहले कीसी नाई याहू को कंस मारैगो यातें कछु शोकभी है ५ तब विश्व के आत्मा भगवान् ने जानी कि मेरे यादवन कूं कंस दुःख देइहै ता समय अपनी योगमाया कूं आज्ञा देतभये ६ हे देवि! हे मङ्गलरूपिणी! जो गोप और गौवनकरि शोभायमान व्रजहै तहां तुम जायके नन्दरायजी के गोकुल में वसुदेवजी की स्त्री रोहिणी है ७ कंस के डरते औरहू स्त्री गुप्तस्थानमें वास करै हैं सो देवकी के उदरमें मेरी कला शेषस्वरूप है तिन्हें

निकासि रोहिणीके उदर में प्राप्तकरो ८ तू गर्भकूं खैंचेगी याके पीछे हे मङ्गलरूपिणी ! अपने परिपूर्णरूप करिके मैं देवकी के पुत्रभावकूं प्राप्त होउँगो और तुम नन्दरायजीकी पत्नी यशोदाके प्रकट होउ ९ हे मङ्गलरूपिणी ! कैसी तुमहौ सम्पूर्ण पुत्रादिकनकी कामना करनवारे पुरुषनकी ईश्वरी पूर्ण करोगी और सर्व्वकामनानकूं देनवारी तू होयगी और सम्पूर्ण मनुष्य धूप दीप सामग्री बलि प्रदान भेंटनकरि तेरो पूजन करेंगे तू उनके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करैगी १० पृथ्वी में मनुष्य तुम्हारो स्थापन करेंगे और दुर्गा भद्रकाली विजया वैष्णवी ११ कुमुदा चण्डिका कृष्णा माधवी कन्यका माया नारायणी ईशानी शारदा अम्बिका ये नाम धरैंगे १२ गर्भ में तें खैंचिके निकासेगी याते पृथ्वी में मनुष्य या बालकको संकर्षण कहैंगे लोकनकूं रमावैगो यातें राम कहैंगे बल अधिक है यातें बलभद्र कहैंगे १३ या प्रकार योगमाया कू भगवान् ने आज्ञा दीन्हीं तब कही ऐसेही करूंगी या प्रकार भगवान्‌की परिक्रमाकरिके वचनकूं ग्रहण करि पृथ्वी में आयके तैसेई करत भई १४

देवक्याःपुत्रतांशुभे ॥ प्राप्स्यामित्वंयशोदायां नन्दपत्न्यांभविष्यसि ९ अर्चिष्यन्तिमनुष्यास्त्वांसर्व्वकामवरेश्वरीम् ॥ धूपोपहारबलिभिः सर्व्वकाम वरप्रदाम् १० नामधेयानिकुर्वन्ति स्थानानिचनराभुवि ॥ दुर्गेतिभद्रकालीति विजयावैष्णवीतिच ११ कुमुदाचण्डिकाकृष्णा माधवीकन्यकेतिच ॥ मा यानारायणीशानी शारदेत्यम्बिकेतिच १२ गर्भसङ्कर्षणात्तंवै प्राहुःसङ्कर्षणंभुवि ॥ रामेतिलोकरमणाद्बलंबलवदुच्छ्रयात् १३ सन्दिष्टैवंभगवता तथेत्यो मितितद्वचः ॥ प्रतिगृह्यपरिक्रम्य गाङ्गतातत्तथाऽकरोत् १४ गर्भेप्रणीतेदेवक्या रोहिणींयोगनिद्रया ॥ अहोविस्रंसितोगर्भइतिपौराविचुक्रुशुः १५ भग वानपिविश्वात्मा भक्तानामभयङ्करः ॥ आविवेशांशभागेन मनआनकदुन्दुभेः १६ सबिभ्रत्पौरुषंधाम भ्राजमानोयथारविः ॥ दुरासदोऽतिदुर्धर्षो भूता नांसम्बभूवह १७ ततोजगन्मङ्गलमच्युतांशं समाहितंशूरसुतेनदेवी ॥ दधारसर्व्वात्मकमात्मभूतं काष्ठायथाऽऽनन्दकरंमनस्तः १८ सादेवकीसर्व्वजग न्निवासनिवासभूतानितरांनरेजे ॥ भोजेन्द्रगेहेऽग्निशिखेवरुद्धा सरस्वतीज्ञानखलेयथासती १९ तांवीक्ष्यकंसःप्रभयाऽजितान्तरां विरोचयन्तींभवनं

वह योगमाया देवकीके उदर में ते बालककूं रोहिणी के उदरमें लैगई तासमय समस्तपुरवासी मनुष्य यों पुकार उठे कि अबकी कंसने अपनी बहिन ऐसी धमकाई यातें याको गर्भगिरिपर्यो १५ और उनमें विश्वके आत्मा भगवान् भक्तनके भयकूं दूरि करनवारे सो अपने परिपूर्ण रूपकरि वसुदेवजी के मनमें आयके प्रकट होतभये १६ जब वसुदेवजीके मनमें भगवान् आये तब सूर्यके तेजके तुल्य तेज होतभयो कोई मनुष्य तेजके प्रकाश के मारे सम्मुख आवे नहीं ऐसे वसुदेवजी होतभये १७ ताके अनन्तर जगत्‌कू मूर्त्तिमान् मंगलरूप भगवान्‌को स्वरूप वसुदेवजी मनतें अर्पणकर्यो तब देवकी ने भले प्रकार धारण कर्यो जैसे पूर्वदिशा चन्द्रमाकूं धारणकरै १८ जैसे ढके दीपकको प्रकाश नहीं होइहै और जैसे ज्ञानरञ्चककूं विद्या सुन्दर नहीं लगै है तैसे सब ब्रह्माण्ड जिनके उदरमें ऐसेभगवान् अपनी कान्तियुक्त देवकी के उदरमें आये तथापि कंसके कारागारमें रुके हैं याते सम्पूर्ण मनुष्यनको जैसे निरन्तर आनन्द होय तैसे देवकी शोभाकों प्राप्त न होतिभई १९

अजित भगवान् जाकी कुक्षिके विषे अपनी कान्तिकरि बन्दीघर कूं प्रकाशमान करैं सुन्दर जाकी मुसकानि ऐसी देवकीकूं देखि कंस यह बोल्यो कि मेरे प्राणनको हरनवारो हरिरूपी सिंह निश्चय या देवकी के उदररूपी गुफा में आय बैठ्यो है प्रथम याको तेज ऐसो नहीं हो २० कंसराय अपने मनमें विचार करै है कि अब मैं जल्दी याके लिये कहा उपायकरूं यह तो देवतानके कार्य करिवे को आयो है यातें निश्चय मोकूं मारैगो अब या देवकी कूं मैं मारूं तो एक तो स्त्रीजाति दूसरे मेरी बहिनि तीसरे गर्भिणी याके मारेतें हमारो यश लक्ष्मी आयुर्बल ये सब हीनताको प्राप्त होइंगे २१ जो मनुष्य संसार में दुष्टता करे सो मनुष्य जीवतही मरयो है देहधरे पीछे समस्त मनुष्य बाहि कोसें हैं कि इस पापीको धिक्कार है निश्चय घोरनरक में परैगो २२ ऐसे विचार करिके घोर पापरूप जो देवकी को वध तातें सामर्थ्यवान् कंस आपही निवृत्त होतभयो भगवान् के जन्महोयवेकी बाट देखै है २३ तब बैठते सोवते ठाढ़े भोजन करते पृथ्वीमें विचरते इन्द्रियनके ईश्वर

शुचिस्मिताम् ॥ आहैषमेप्राणहरोहरिर्गुहां ध्रुवंश्रितोयन्नपुरेयमीदृशी २० किमद्यतस्मिन्करणीयमाशुमे यदर्थतन्त्रोनविहन्तिविक्रमम् ॥ स्त्रियाःस्वसुर्गुरुमत्यावधोऽयं यशःश्रियंहन्त्यनुकालमायुः २१ सएषजीवन्खलुसम्परेतोवर्ततेयोऽत्यन्तनृशंसितेन ॥ देहेमृतेतंमनुजाःशपन्ति गन्तातमोऽन्धंतनुमानिनोध्रुवम् २२ इतिघोरतमाद्भावात्सन्निवृत्तःस्वयंप्रभुः ॥ आस्तेप्रतीक्षंस्तज्जन्म हरेर्वैरानुबन्धकृत् २३ आसीनःसंविशंस्तिष्ठन् भुञ्जानःपर्यटन्महीम् ॥ चिन्तयानोहृषीकेशमपश्यत्तन्मयंजगत् २४ ब्रह्माभवश्चतत्रैत्य मुनिभिर्नारदादिभिः ॥ देवैःसानुचरैःसाकं गीर्भिर्वृषणमैडयन् २५ सत्यव्रतंसत्यपरंत्रिसत्यं सत्यस्ययोनिंनिहितञ्चसत्ये ॥ सत्यस्यसत्यमृतसत्यनेत्रंसत्यात्मकंत्वांशरणंप्रपन्नाः २६ एकायनोऽसौद्विफलस्त्रिमूलश्चतूरसःपञ्चविधःषडात्मा ॥ सप्तत्वगष्टविटपोनवाक्षोदशच्छदीद्विखगोह्यादिवृक्षः २७ त्वमेकएवास्यसतःप्रसूतिस्त्वंसन्निधानंत्वमनुग्रहश्च ॥ त्वन्माययासंवृतचेतसस्त्वां पश्यन्तिनानानविपश्चितोये २८ बिभर्षिरूपाण्यवबोधआत्मा क्षेमायलोकस्यचराचरस्य ॥ सत्त्वोपपन्नानिसुखावहानि सतामभद्राणिमुहुःखलाना

भगवान्हीकी चिन्ता करत सम्पूर्ण जगत्में हरिरूपही देखत भयो २४ इतनेहीमें नारदादिक मुनीश्वरनकूं सगले और गन्धर्वादिक सहित देवतानकूं संगलैकै ब्रह्माजी और महादेवजी आयके गर्भहीमें वर्णनकरि स्तुति करतभये २५ सत्यहै संकल्प जिनको सत्यपरायण और भूत भविष्यत् वर्तमान तीनोंकालमें पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश ये पञ्चभूतनके कारणरूपहौ और पञ्चभूतनके नाशमें आप ही बाकी रहौहौ और मनोहर जिनकी वाणी ज्ञानीन के प्रेरणा करनवारे सत्यरूप जो तुम तिनकी हम शरण प्राप्तभये हैं २६ एक मायाही जाको थामरो सुख दुःख जामें फल सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण जाकी जड़ धर्म अर्थ काम मोक्ष जामें रसहैं पांच इन्द्रियन ते जामें ज्ञान होइहै क्षुधा पिपासा शोक मोह मृत्यु बुढ़ापो ये जाके स्वभाव हैं त्वचा लोहित मेद मास स्नायु अस्थि मज्जा रेत ये जाके वल्कल पृथ्वी जल तेज पवन आकाश मन बुद्धि अहङ्कार ये जाकी शाखा नव इन्द्रियन के दरवाजे जामें कोटर अर्थात् खोतारि प्राण अपान व्यान उदान समान नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनञ्जय ये दश प्राण जामें पत्ता और जीव ईश्वर ये दोनों पक्षिन को घोसला ऐसो यह देह आदिवृक्ष है वृक्षहू काटिवे से कटै है ऐसेही देह भी मरै है जन्मै है २७ या संसार के उत्पत्ति

पालन संहार करनवारे तुमहीं हौ तुम्हारी मायामें भूले है चित्त जिनके ते पुरुष तुम्हें नानाप्रकार जानै है और जे विवेकी पुरुषहैं ते एक रूपकरि जानै हैं २८ एकस्वरूप जो भगवान् हौ सो तुम ब्रह्मारूप होयके उत्पन्न और विष्णुरूप करि पालन शिवरूप करि संहार करौहौ सतोगुण करिके सयुक्त सत्यपुरुषन कू सुख देनवारे दुष्टनकूं दण्ड देनवारे जे रूप हैं तिन्हे धारण करौहौ २९ हे कमलदललोचन ! समस्त जीवन के आश्रय तुमहीं हौ तातें तुम्हारे विषे विवेकी महात्मा समाधिद्वारा चित्तकूं लगाय के महत् पुरुषन ने सिद्धकरयो ऐसी जो तुम्हारे चरणारविन्दरूपी नौका ताको आश्रय करिके यह संसाररूप समुद्रको अवगाहन करि वछराके खुरकी बराबरी करिके तरिजाई हैं ३० हे स्वयंप्रकाश ! जे करुणावान् पुरुषहैं ते अतिशय करिके तरिवेमें न आवे ऐसो महा- भयङ्कर संसारसमुद्र ताहि पार उतरि के और भजनभावना सम्प्रदाय यह जो तुम्हारे चरणारविन्दरूपी नावहै ताकूं औरन के पार उतरिवे के निमित्त या संसार में राखिके आप पार लगिजाइ है हे ईश्वर ! आप कैसेहो सन्तन के ऊपर कृपा करनवारेहौ ३१ हे कमलदललोचन ! जे ज्ञानीपुरुष अपनपेकू मुक्त मानै हैं ते तुम्हारे विषे भाव नहीं करै है यातें अविशुद्धबुद्धी है और वडे कष्टतें

म् २९ त्वय्यम्बुजाक्षाखिलसत्त्वधाम्नि समाधिनावेशितचेतसैके ॥ त्वत्पादपोतेनमहत्कृतेन कुर्वन्तिगोवत्सपदंभवाब्धिम् ३० स्वयंसमुत्तीर्यसुदुस्तरंद्युमन् भवार्णवंभीममदभ्रसौहृदाः ॥ भवत्पदाम्भोरुहनावमत्रते निधाययाताःसदनुग्रहोभवान् ३१ येऽन्येऽरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबु द्धय॰ ॥ आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदङ्घ्रयः ३२ तथानतेमाधवतावकाःक्वचिद् भ्रश्यन्तिमार्गात्त्वयिबद्धसौहृदाः ॥ त्वयाऽभिगुप्ता विचरन्तिनिर्भया विनायकानीकपमूर्द्धसुप्रभो ३३ सत्त्वंविशुद्धंश्रयतेभवान्स्थितौ शरीरिणांश्रेयउपायनंवपुः ॥ वेदक्रियायोगतपःसमाधिभिस्तवार्हणंये नजनःसमीहते ३४ सत्त्वंनचेद्धातरिदंनिजंभवेद्विज्ञानमज्ञानभिदापमार्जनम् ॥ गुणप्रकाशैरनुमीयतेभवान् प्रकाशतेयस्यचयेनवागुणः ३५ ननाम रूपेगुणजन्मकर्मभिर्निरूपितव्येतवतस्यसाक्षिणः ॥ मनोवचोभ्यामनुमेयवर्त्मनो देवक्रियायांप्रतियन्त्यथापिहि ३६ शृण्वन्गृणन्संस्मरयंश्चचिन्त

ऊंचे पदकूं प्राप्त होइहै तहा कहै है ऊंचोपद कहा सुन्दर कुल में जन्म और तप करिके शास्त्र पढियो ताकूं पायके तुम्हारे चरणकमल को आदर नहीं करै हैं और नीचोपद कहा कि विघ्नन करिके कष्टकू प्राप्त होइहैं ३२ हे माधव ! जैसे ज्ञानी निर्विघ्न होइहै तैसे आपके भक्तनको विघ्न नहीं होइहै काहे तें कि तुममें जिनने स्नेह बांध्यो है तुम जिनकी रक्षा करौहौ हे प्रभो ! यातें तुम्हारे भक्त नि र्भय होइकै विघ्नन के माथेपर पाव धरिके आनन्दपूर्वक विचरैं हैं ३३ हे प्रभो ! पालनसमय समस्त देहधारीन को पालन करनवारो जो रूप ताहि धारणकरौ हौ या स्वरूप करि ब्रह्मचारी गृह- स्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चारों आश्रमी वेद कर्म योग तप समाधि इन उपायन तें आपकोही पूजन करै हैं ३४ हे विधाता ! तुम्हारो सत्त्वगुणयुक्त श्यामसुन्दर स्वरूप प्रकट न होतो तौ अज्ञान को करयो भेद ताको नाशक विज्ञान है सोऊ ईश्वरको प्रेरयो भयो बुद्ध्यादिक गुणन कों प्रकाशै है और जो ईश्वर गुणनको साक्षी है ऐसे इन्द्रियन के प्रकाश करके तुम अनुमान करिवे में आवो हौ ३५ हे प्रकाशमान ! या विश्व के साक्षी तुमहीं हौ और तुम्हारे नामरूप गुण कर्म जन्म कहिवे में नहीं आवै हैं मन वाणी द्वारा अनुमान करिवेमें जिनको स्वरूप नहीं आवै तो भी तुम्हारे

जो भक्त हैं ते ध्यान और उपासनामें तुम्हारे रूपको साक्षात् दर्शन करे हैं ३६ हे ईश्वर ! तुम्हारे जो मंगलरूपी नाम रूपहैं तिनकूं काननतें श्रवण करे हैं जिह्वाते उच्चारण करे और मनुष्यनकूं श्रवण करावें आप स्मरण करे हैं और पूजनादिक क्रियान में तुम्हारे चरणारविन्द में जिन पुरुषन को मन लग्यो है ते जन्म मरणकूं नहीं प्राप्त होइहै ३७ हे ईश्वर ! तुम्हारे अवतारते तुम्हारे चरणारविन्द करिके पृथ्वीको भार दूरि होइगो यह बड़ो मंगलभयो और तुम्हारे सुन्दर चरणारविन्द करिके या पृथ्वी पैं चिह्न परेंगे तिनकूं हम दर्शन करेंगे अपने वैकुण्ठधामकू जानि पृथ्वी और स्वर्ग पैं कृपा करोगे ताकूं हम देखेंगे यह बड़ो मंगलहोयगो ३८ हे ईश्वर ! जन्म करिकै रहित जो तुम सो तुम्हारे जन्मको कारण और लीलाविनोद विचारिवे में नहीं आवै है हे नित्यमुक्त ! तुम्हारे स्वरूप को ज्ञान नहीं है याते अविद्या करिके जीवन को जन्म मृत्यु पालन होय है ३९ मत्स्य हयग्रीव कच्छप वाराह नृसिंह हंस रामचन्द्र परशुराम वामनरूप करिके तुम त्रिलोकी की रक्षा

यन्नामानि रूपाणि च मङ्गलानि ते ॥ क्रियासु यस्त्वच्चरणारविन्दयोराविष्टचेता न भवाय कल्पते ३७ दिष्ट्या हरेऽस्या भवतः पदो भुवो भारोऽपनीतस्तव जन्मनेशितुः ॥ दिष्ट्याङ्कितां त्वत्पदकैः सुशोभनैर्द्रक्ष्याम गां द्यां च तवानुकम्पिताम् ३८ न तेऽभवस्येश भवस्य कारणं विना विनोदं बत तर्कयामहे ॥ भवो निरोधः स्थितिरप्यविद्यया कृता यतस्त्वय्यभयाश्रयात्मनि ३९ मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंसराजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः ॥ त्वं पासि नस्त्रिभुवनं च यथाऽधुनेश भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते ४० दिष्ट्याम्ब ते कुक्षिगतः परः पुमानंशेन साक्षाद्भगवान्भवाय नः ॥ माभूद्भयं भोजपतेर्मुमूर्षोर्गोप्ता यदूनां भविता तवात्मजः ४१ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यभिष्टूय पुरुषं यद्रूपमनिदं यथा ॥ ब्रह्मेशानौ पुरोधाय देवाः प्रतिययुर्दिवम् ४२ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे गर्भगतविष्णोर्ब्रह्मादिकृतस्तुतिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः ॥ यर्ह्येवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम् १ दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम् ॥ मही म

करोहो तैसे समस्त पृथ्वीको भार उतारो हो यादवन में उत्तम जो तुमहो तिनको नमस्कार करे है ४० अब देवकी प्रति कहै हैं कि हे माता ! हमारे कल्याण करिवे के लिये साक्षात परमपुरुष भगवान् अपने परिपूर्ण रूप करि तुम्हारी कोखिमें आये यह बड़ो मंगल भयो अब यह कंस मरैगो याते तुम डरपो मति तुम्हारो पुत्र सम्पूर्ण यादवन की रक्षा करनवारो होइगो ४१ श्रीशुकदेव जी महाराज राजा परीक्षित् तें कहै हैं कि हे राजन ! जिनको रूप इदन्तत् कहिवे में नहीं आवै ऐसे जो परमपुरुष भगवान् तिनकी या प्रकार यथायोग्य स्तुति करिके ब्रह्माजी महादेवजी कूं आगेकरि देवता स्वर्ग कू जातभये ४२ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेगर्भगतविष्णोर्ब्रह्मादिकृतस्तुतिर्नामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(तृतीये निजरूपेणाविर्भूतस्तु हरिः स्वयम् ॥ पितृभ्यां संस्तुतो नीतः पित्रा भीतेन गोकुलम् १ तीसरे अध्यायमें अपने रूपसे आपही भगवान् उत्पन्न होकर पितासे स्तुतिको प्राप्त होकर डरेहुये पितासे गोकुलमें प्राप्त कियेगये हैं १) श्रीशुकदेवजी महाराज राजापरीक्षित् तें कहै हैं कि हे राजन् ! जा समय देवकीके साक्षात् भगवान् प्रकटहोतभयेता समय सर्वशुभगुणयुक्त परमशोभायमान काल

होतभयो और ता समय ब्रह्माजी को नक्षत्र रोहिणी आवतभयो और शान्तियुक्त शुभग्रह तारागण होतभये १ ता समय सम्पूर्ण दिशा प्रसन्नहोतभई और आकाश निर्म्मल होतभयो और समस्त निर्म्मल तारागण उदय होतभये पृथ्वी मङ्गलरूपिणी होतभई पुर ग्राम व्रज आकर वन वाटिका श्रीकृष्णचन्द्र के जन्म समय अत्यन्त शोभायमान होतभये २ जा समय श्रीकृष्णचन्द्रको जन्मभयो ता समय नदीन के जल निर्म्मल होतभये सरोवरन में कमल प्रफुल्लितभये सम्पूर्ण पक्षी मनोहर शब्दकरतभये और भ्रमर बहुत सुन्दर पुष्पनकी सुगन्धि सूँघिके गुंजार करनलगे ३ और वा समय सुखदायक शीतल मन्द सुगन्धियुक्त पवन चलतभई और ब्राह्मणन की शान्त होमकी अग्नि प्रज्वलित होतभई ४ और तासमय कंसादिकन के विना सम्पूर्ण महात्मान के मन प्रसन्न होतभये प्रभु के प्रकट होनेके समय आपही तें स्वर्ग में नगारे वाजतभये ५ किन्नर गन्धर्व गान करतभये सिद्ध चारण स्तुति करनलगे अप्सरान कूं सग लैके विद्याधर नृत्य करनलगे ६ वड़े आनन्द तें देवता

ङ्गलभूयिष्ठपुरग्रामव्रजाकरा। २ नद्यःप्रसन्नसलिलाह्रदाजलरुहश्रियः ॥ द्विजालिकुलसन्नादस्तवकावनराजयः ३ ववौवायुःसुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहःशुचिः ॥ अग्नयश्चद्विजातीनां शान्तास्तत्रसमिन्धत ४ मनास्यासन्प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम् ॥ जायमानेजनेतस्मिन्नेदुर्दुन्दुभयोदिवि ५ जगुःकिन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुःसिद्धचारणाः ॥ विद्याधर्य्यश्चननृतुरप्सरोभिःसमन्ततः ६ मुमुचुर्मुनयोदेवाःसुमनांसिमुदान्विताः ॥ मन्दंमन्दंजलधराजगर्जुरनुसागरम् ७ निशीथेतमउद्भूते जायमाने जनार्दने ॥ देवक्यांदेवरूपिण्यां विष्णुःसर्वगुहाशयः ॥ आविरासीद्यथाप्राच्यां दिशीन्दुरिवपुष्कलः ८ तमद्भुतंबालकमम्बुजेक्षणं चतुर्भुजंशङ्खगदाद्युदायुधम् ॥ श्रीवत्सलक्ष्मङ्गलशोभिकौस्तुभंपीताम्बरंसान्द्रपयोदसौभगम् ९ महार्हवैदूर्य्यकिरीटकुण्डलत्विषापरिष्वक्तसहस्रकुन्तलम् ॥ उद्दामकाञ्च्यङ्गदकङ्कणादिभिर्विरोचमानंवसुदेवऐक्षत १० सविस्मयोत्फुल्लविलोचनोहरि सुतंविलोक्यानकदुन्दुभिस्तदा ॥ कृष्णावतारोत्सवसंभ्रमोऽस्पृशन्मुदाद्विजेभ्योऽयुतमाप्लुतोगवाम् ११ अथैनमस्तौदवधार्य्यपूरुषंपरंनताङ्गःकृतधीःकृताञ्जलिः ॥ स्वरोचिषाभारतसूतिकागृहंविरोचयन्तंगतभीः

मुनीश्वर पुष्पन की वर्षा करतभये मेघ मन्द मन्द गर्जनलगे ७ अर्द्धरात्रि के समय सबकी प्रार्थनाभई तब तो देवरूपिणी देवकीकी कोखिमें सबके अन्तर्यामी भगवान् प्रकट होतभये जैसे पूर्व्वदिशा में चन्द्रमा उदय होयहै ८ कमल से हैं नेत्र जिनके चारि जिनके भुजा और शङ्ख चक्र गदा पद्मकूं धारणकरे हृदयमें भृगुलताको चिह्न जिनके कण्ठविषे शोभायमान कौस्तुभमणि पीताम्बरकी धोती उपरना पहिरे वर्षती घटाकी तुल्य श्यामसुन्दर जिनको अङ्ग ९ बहुत श्रेष्ठ वैदूर्य्यमणि जटित किरीट मस्तक पै शोभायमान है उज्ज्वल कुण्डलन की कान्ति करि शोभायमान जिनके केश भुजान में सुन्दर बाजूबन्द पहिरे और उत्तम कङ्कण धारण करे और अनेक प्रकारके आभूषणन करि परमशोभायमान अद्भुत बालक वसुदेवजी देखतभये १० हरि भगवानकूं अपने पुत्र देखिके आश्चर्य्य तें वसुदेवजीके नेत्र प्रफुल्लित होयगये श्रीकृष्णचन्द्र के प्रकटहोयवे के समय हरनराय गये मन्दीरजानिंईमें दशहजार गौवनको सङ्कल्प करयो पुत्र कूं परब्रह्म नारायण जानिके नम्र जिनके अङ्ग शुद्ध

जिनकी बुद्धि भय तिनको जातरह्यो प्रभाव के जाननवारे वसुदेवजी सूतिकागृह कूं शोभायमान करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं हाथ जोरिके वसुदेवजी स्तुति करतभये ११।१२ तुम कूं मैंने जानो आप माया ते परे स चात् परमपुरुष हौ केवल अनुभव आनन्द स्वरूपहौ सम्पूर्ण प्राणीन की बुद्धि के साक्षी हौ १३ अपनी मायाते सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण रूप यह विश्वहै ताकूं पहिले रचौ हौ तामें प्रविष्ट नहीं हौ और प्रविष्ट से देखिवे में आवो हौ १४ तामें दृष्टान्त है जैसे विकार कूं प्राप्त न भये महत्तत्त्वादिक भाव जैसे ये विकारी महदादिक भाव जैसे तैसे दृष्टान्त कूं विस्तारहै १५ जैसे महत्तत्त्व अहंकार पञ्चतन्मात्रा ये सातौ पदार्थ पञ्चज्ञानेन्द्रिय पञ्चकर्मेन्द्रिय और मन पञ्च महाभूत अर्थात् पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश इन सोलहों विकारन ते संग मिलके समस्त ब्रह्माण्ड कूं उत्पन्न करैं हैं और पृथक् २ ब्रह्माण्ड बनाइवे में असमर्थ हैं १६ ऐसेही तुम्हारो स्वरूप बुद्ध्यादिक इन्द्रियनकरिके जानिवे में आवै है विषयन में अपारहौ परन्तु विषयन के संग तुम ग्रहण करिवे में नहीं

प्रभाववित् १२ वसुदेवउवाच ॥ विदितोऽसिभवान्साक्षात्पुरुषःप्रकृतेःपरः ॥ केवलानुभवानन्दस्वरूपःसर्व्वबुद्धिदृक् १३ सएवस्वप्रकृत्येदं सृष्ट्वाग्रेत्रिगुणात्मकम् ॥ तदनुत्वंह्यप्रविष्टः प्रविष्टइवभाव्यसे १४ यथेमेऽविकृताभावास्तथातेविकृतैःसह ॥ नानावीर्याःपृथग्भूता विराजंजनयन्तिहि १५ सन्निपत्यसमुत्पाद्य दृश्यन्तेनुगताइव ॥ प्रागेवविद्यमानत्वान्नतेषामिहसम्भवः १६ एवंभवान्बुद्ध्यनुमेयलक्षणैर्ग्राह्यैर्गुणैःसन्नपितद्गुणाग्रहः ॥ अनावृतत्वाद्बहिरन्तरंनते सर्व्वस्यसर्व्वात्मनआत्मवस्तुनः १७ यआत्मनोदृश्यगुणेषुसन्निति व्यवस्यतेस्वव्यतिरेकतोऽबुधः ॥ विनानुवादंनचतन्मनीषितं सम्यग्यतस्त्यक्तमुपाददत्पुमान् १८ त्वत्तोऽस्यजन्मस्थितिसंयमान्विभो वदन्त्यनीहादगुणादविक्रियात् ॥ त्वयीश्वरेब्रह्मणिनोविरुध्यते त्वदाश्रयत्वादुपचर्य्यतेगुणैः १९ सत्वंत्रिलोकस्थितयेस्वमायया बिभर्षिशुक्लंखलुवर्णमात्मनः ॥ सर्गायरक्तंरजसोपबृंहितं कृष्णंचवर्णंतमसाजनात्यये २० त्वमस्यलोकस्यविभोरिरक्षिषुर्गृहेऽवतीर्णोऽसिममाखिलेश्वर ॥ रा ान्यसंज्ञासुरकोटियूथपैर्निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसेचमूः २१ अयंत्वसभ्यस्तवजन्मनौगृहे श्रुत्वाऽग्रजांस्तेन्यवधीत्सुरे

आवौ हौ जैसे एक दूधमें शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पाचौं वस्तुहैं नेत्रन तेंई रूप जानिवे में आवै है रसको ज्ञान नहीं होइ है ऐसेई विषयन के ग्रहण में तुम्हारो ग्रहण नहीं होय है अपरिच्छिन्न पत्ता को घोंसला में प्रवेश होइ है तुम परिच्छिन्न हौ याते बाहर भीतर भेद नहीं है गर्भ में प्रवेश कहां ते आवरण करिके रहित कहाते हौ सर्वस्वरूपहौ सम्पूर्ण में व्यापकहौ सत्यवस्तुरूपहौ १७ आत्माके जो दृश्यगुण देहादिक तिनकूं आत्मा के विना जो पुरुष सत्य मानै है वह अज्ञानी है विचारि के देखो तो कथनमात्र विना देहादिक सब झूठेही हैं याते झूठे देहादिकनकूं जो पुरुष सत्य माने है सो अज्ञानी है १८ हे विभो ! निरीह निर्गुण निर्विकार तुमहौ तुमहीं ते या विश्व को जन्म पालन संहार होइ है तुम ईश्वर ब्रह्म जिन में कछु विरोध नहीं है तुम्हारो आश्रय लेकै तीनों गुण करैं हैं याते तुम कर्त्ता कहिवे में आवौहौ १९ त्रिलोकी के पालन करिवेके लिये अपनी माया करिके सतोगुणी शुक्लवर्ण विष्णुरूप तुम धारण करौहौ और सृष्टि की उत्पत्ति के समय रजोगुणी रक्तवर्ण ब्रह्मारूप धारण करौहौ संहारके समय तमोगुणी कृष्णवर्ण रुद्ररूप धारणकरोहौ २० हे समर्थ श्रीकृष्ण ! हे ब्रह्मादिकन के ईश्वर ! तुम या लोककी रक्षा करिवे के कारण

हमारे गृह में प्रकटभये हौ और क्षत्रिय जिनको नाम ऐसे असुरन की सेनाके किरोड़ों यूथ जितातित चलायमान तिनकूं मारौगे २१ हे देवतान के ईश्वर! या दुष्ट कंस ने तुम्हारे जन्मकूं हमारे घर में श्रवण करि तुम्हारे बहुत भ्राता मारे हैं अब जो कोई कहि देयगो तो सुनि के शस्त्र लेके सम्मुख चल्यो आवैगो २२ श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहैं हैं कि हे राजन्! या प्रकार वसुदेवजी स्तुति करि चुके पश्चात् देवकी पुत्रमें महापुरुष भगवान् के लक्षण देखि सुन्दर जिनकी मुसिकानि कंसके भय ते स्तुति करनलगीं २३ अनादि व्यापक ज्योतिःस्वरूप निर्गुण निर्विकार सत्तामात्र चरणादिकन करिके रहित चेष्टारहित जो तुम सो काहू प्रकार जानिवे में नहीं आवौ हौ वेद जो हैं सो तुम्हारे स्वरूप को वर्णन करे हैं सो तुम ज्ञानके प्रकाश करनवारे साक्षात् विष्णुहौ २४ जा समय ब्रह्माजी की सौ वर्ष की अवस्था होयहै तब प्रलयकाल में सम्पूर्ण लोक नष्टहोइ हैं पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश ये पंचतत्त्व अपने कारण में मिलि जाइहैं ता समय केवल एक

श्वर॥ सनेवतारंपुरुषैःसमर्पितं श्रुत्वाऽधुनैवाभिसरत्युदायुधः २२ श्रीशुकउवाच॥ अथैनमात्मजंवीक्ष्य महापुरुषलक्षणम् ॥ देवकीतमुपाधावत्कंसाद्भीताशुचिस्मिता २३ देवक्युवाच॥ रूपंयत्तत्प्राहुरव्यक्तमाद्यं ब्रह्मज्योतिर्निर्गुणंनिर्विकारम्॥ सत्तामात्रंनिर्विशेषंनिरीहं सत्वंसाक्षाद्विष्णुरध्यात्मदीपः २४ नष्टेलोकेद्विपरार्द्धावसाने महाभूतेष्वादिभूतङ्गतेषु॥ व्यक्तेऽव्यक्तंकालवेगेनयाते भवानेकःशिष्यतेशेषसंज्ञः २५ योयंकालस्तस्यतेव्यक्तबन्धो चेष्टामाहुश्चेष्टतेयेनविश्वम्॥ निमेषादिर्वत्सरान्तोमहीयांस्तंत्वेशानंक्षेमधामप्रपद्ये २६ मर्त्योमृत्युव्यालभीतःपलायँल्लोकान्सर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत्॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाऽद्य स्वस्थःशेतेमृत्युरस्मादपैति २७ सत्वंघोरादुग्रसेनात्मजान्नस्त्राहित्रस्तान्भृत्यवित्रासहासि॥ रूपंचेदंपौरुषंध्यानधिष्ण्यं माप्रत्यक्षंमांसदृशांकृषीष्ठाः २८ जन्मतेमय्यसौपापो माविद्यान्मधुसूदन॥ समुद्विजेभवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः २९ उपसंहरविश्वात्मन्नदोरूपमलौकिकम्॥ शङ्खचक्रगदापद्मश्रियाजुष्टंचतुर्भुजम् ३० विश्वंयदेतत्स्वतनौनिशान्ते यथाऽवकाशंपुरुषःपरोभवान्॥ बिभर्तिसोयंममगर्भगो

आपही अजन्मा शेष रहो हौ २५ हे मायाके प्रेरक! यह जो काल है ताकूं तुम्हारी लीला वर्णन करै है या कालते विश्वहोय है पलते आदि लैके वर्षपर्यन्त जाकी गिनती होयहै यह परार्द्ध रूप करिके बडो है ऐसे तुम निर्भयरूप तिनकी मैं शरणागतहूं २६ अब ये सम्पूर्ण मनुष्य मृत्युरूपी सर्प के भय ते समस्त लोकन में भाज्यो फिरै हैं जाकूं निर्भय स्थान कहूं प्राप्त नहीं होयहै कोई एक पुण्य के फल तें आपके चरणारविन्दकूं प्राप्त होइजायहै तब निर्भय होयके शयन करै है मृत्युहू याको पीछो छोड़ि देय है २७ और महाराज अतिभयंकर जाको स्वरूप उग्रसेन को पुत्र कंस ताते हम डरपैं है सो आप हमारी रक्षाकरो भक्तन के भय के दूरि करनवारे हौ ध्यानकरिवे योग्यहौ यह जो आपको श्यामसुन्दर स्वरूप ताको चर्म्म चक्षुवारेनकूं मति दिखावो २८ हे मधुसूदन! तुम्हारो जन्म मेरे यहां भयो है यह मति जानो तुम्हारे लिये अघोर याको चित्त स्त्रीजाति जो मैं हू सो या कंसके भयते डरपूं हूं २९ हे विश्वके आत्मा! शङ्ख चक्र गदा पद्म करि शोभायमान जो आपको चतुर्भुज स्वरूप याकूं आप छिपाइलेव ३० जो तुम पहिले परमपुरुष भगवान् प्रलयसमय विना परिश्रमही समस्त विश्वको अपने उदर में राखौ हौ सो तुम मेरे गर्भ

में प्राप्तभये हौ यातें या संसारमें वडी हांसी होयगी ३१ अब श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् कहैं हैं अहो माता तुम अपने पूर्व्वजन्म की कथा सुनो तुम तो पहिले जन्ममें पृश्निभई और ये वसुदेवजी तास-
मय पापनकरि रहित सुतपा जिनको नाम ऐसे प्रजापतिभये ३२ सो तुम दोउन कूं सृष्टिउत्पन्न करिवे के निमित्त जब ब्रह्माजी ने आज्ञाकरी तब तुमने इन्द्रियनको रोंकि के वड़ो तप कियो ३३
वर्षा पवन धूप जाड़ो गरमी ये कालके गुण तिनकूं सह्यो और श्वासको रोकिके मनके मैल जिनके दूरिभये ३४ शुष्कपत्र पवनको भोजन करिके मोसे कामनाकूं चाहिके तुमने चित्त शान्तकरि मेरो
आराधन कर्यो ३५ हे माता ! मोमें चित्त लगाय करि तुम दोउन ने वड़ो तीव्र तप कर्यो तपकरत करत वारह हजार वर्ष देवतानके व्यतीत भये ३६ हे निष्पापे ! ताही समय याही देह तें तु-
म्हारे ऊपर प्रसन्न भयो तप श्रद्धा भक्तिकरि नित्य मेरो हृदयमें ध्यानकरत भये हौ ३७ तुम दोनोंकी कामना पूरी करिवे के लिये प्रकट होत भयो जब मैंने कही कि वरमागो तब तुमने यह वर

भूदहोनृलोकस्यविडम्बनंहितत् ३१ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वमेवपूर्व्वसर्गेभूःपृश्निःस्वायम्भुवेसति ॥ तदायंसुतपानाम प्रजापतिरकल्मषः ३२ युवांवैब्रह्म
णादिष्टौ प्रजासर्गेयदाततः ॥ सन्नियम्येन्द्रियग्रामं तेपाथेपरमंतपः ३३ वर्षवातातपहिमघर्मकालगुणाननु ॥ सहमानौश्वासरोधविनिर्धूतमनोमलौ ३४
शीर्णपर्णानिलाहारावुपशान्तेनचेतसा ॥ मत्तःकामानभीप्सन्तौ मदाराधनमीहतुः ३५ एवंवांतप्यतोस्तीव्रंतपःपरमदुष्करम् ॥ दिव्यवर्षसहस्राणिद्वाद
शेयुर्मदात्मनोः ३६ तदावांपरितुष्टोहममुनावपुषानघे ॥ तपसाश्रद्धयानित्यंभक्त्याचहृदिभावितः ३७ प्रादुरासंवरदराड्युवयोःकामदित्सया ॥ व्रियतां
वरइत्युक्ते माहशोवांवृतःसुतः ३८ अजुष्टग्राम्यविषयावनपत्यौचदम्पती ॥ नववाथेऽपवर्गंमे मोहितौदेवमायया ३९ गतेमयियुवांलब्ध्वा वरंमत्सद्द
शंसुतम् ॥ ग्राम्यान्भोगानभुञ्जाथां युवांप्राप्तमनोरथौ ४० अदृष्ट्वान्यतमंलोके शीलौदार्यगुणैःसमम् ॥ अहंसुतोवामभवं पृश्निगर्भइतिश्रुतः ४१
तयोर्वांपुनरेवाहमदित्यामासकश्यपात् ॥ उपेन्द्रइतिविख्यातो वामनत्वाचवामनः ४२ तृतीयेस्मिन्भवेहंवै तेनैववपुषाथवाम् ॥ जातोभूयस्तयोरेव
सत्यंमेव्याहृतंसति ४३ एतद्वांदर्शितंरूपं प्राग्जन्मस्मरणायमे ॥ नान्यथामद्भवंज्ञानं मर्त्यलिङ्गेनजायते ४४ युवांमांपुत्रभावेन ब्रह्मभावेनचासकृत् ॥

मांग्यो महाराज जो वर देनकी इच्छाहै तो तुम सदृश हमारे पुत्रहोय ३८ विषय जिनने भोगे नहीं और कोऊ पुत्र जिनके नहीं सो तुम मेरी मायामें मोहितहोय के मोतें मुक्ति न मागी ३९ तासमय
मैंने तुमकूं वर दियो कि तुम्हारे मोसरीखो पुत्रहोयगो ऐसेकहिके मैं जात भयो और प्राप्त भयो है मनोरथ जिनको ऐसे जो तुमहो सो विषयनको मोह करत भये ४० जब मैंने शील उदारता इन
गुणनयुक्त अपनी सदृश दूसरो पुरुष या लोक में न देख्यो तब मै पृश्निगर्भ नाम करि विख्यात तुम्हारे आय के पुत्र भयो ४१ दूसरे जन्म में तुम कश्यप अदिति रूप रहे मैं फिरि अदिति माता
विषे उपेन्द्रनाम करिके विख्यात भयो और तवहीं वामनरूप धरिके वामन विख्यात भयो ४२ तीसरे जन्म में ताही रूप करिके फेरि तुम्हारे जन्मो हौं हे माता ! मेरो वचन सत्य जानो देखो तुमने
एक वेर पुत्रको वर मांग्यो मैं तुम्हारे तीन वेर पुत्र भयो ४३ पहले जन्मको स्मरणकरायवे के लिये यह स्वरूप तुम्हें दिखायो है और प्रकार मनुष्य के वालक को रूप धारण करि प्रकट होतो

तौ तुम कहा जानते कि यह परमेश्वर बेर बेर जन्म लेइहैं ४४ अब तुम चाहौ पुत्रभाव करि मेरो ध्यान करो चाहौ परमेश्वर जानिके ध्यान करो मोमें स्नेह करोगे तौ मेरी परमगतिकूं माप्तहोउगे ४५ और जो तुमको कंस ते भय है कि याकूं मारेगो तो तुम मोकूं गोकुल में नन्दरायजी के घर माप्तकरो और यशोदा के गर्भ ते प्रकट भई जो मेरी माया ताहि शीघ्र अपने घरकूं लैआवो ४६ श्रीशुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित् तें कहैं हैं कि हे राजन् ! इतनी वार्त्ता कहि के भगवान् चुप ह्वैगये अपनी माया करिके माता पिता के देखत शीघ्रही साधारण बालक होइगये ४७ जब भगवान् ने वसुदेवजी ते कही तब वसुदेवजी सूतिकाघरते श्रीकृष्णचन्द्रकूं बाहर निकारिवेकी इच्छा करत भये ताहीसमय श्रीनन्दरानी यशोदा के घर योगमाया जन्मलेत भई ४८ ता समय योगमाया ने सम्पूर्ण द्वारपालन के पुरवासीन के ज्ञान हरिलीने और सबकूं सुवाय दीनो जब श्रीकृष्णचन्द्रकूं लैके चले तब द्वारन के बड़े बड़े किंवारन की लोहकी सांकल आपसूं आप खुलिगये जैसे सूर्य्य के उदय होत अन्धकार दूरिहोत है और मन्द मन्द मेघ गर्जनाकरि वर्षत भये पीछे पीछे शेषजी फणकी छाया तें बूंदनकूं निवारण करत भये ४९ । ५० निरन्तर इन्द्रके वर्षने तें ता समय अतिगम्भीर जाको जल तरंग जामें उठैं असंख्यात भ्रमर जामें परें ऐसी श्रीयमुनाजी भगवान् के चरणछुइके श्रीवसुदेवजी कूं मार्ग देत भई जैसे जानकी के पति श्रीरामचन्द्रजी कूं समुद्र मार्ग देत भयो ५१ वसुदेवजी गोकुल जाय सम्पूर्ण गोप गोपिनकूं सोवते देखिकै श्रीकृष्णकूं यशोदाजी की शय्या पर सोवाय और उनकी कन्याकूं लैके फिरि श्रीमथुराजी कूं आवत भये ५२ वा कन्याकूं देवकी जी की शय्या पै सोवाय के वसुदेवजी वाही स्थानमें जाय पांवनमें बेड़ी पहिरिलीनी मानो यहाते गयेई नहीं हैं ५३ अब नन्दरानी श्रीयशोदाजी ने जानी कि कछु मेरे बालक भयो और होन समय कछु दुःख न भयो यातें पुत्र भयो कि पुत्री यह न जानी निद्रा में मग्न यातें कछु सुधि न रही ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकृष्णजन्मनितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चिन्तयन्तौकृतस्नेहौ यास्येथेमद्गतिंपराम् ४५ यदिकंसाद्बिभेषित्वं तर्हिमांगोकुलंनय ॥ मन्मायामानयाशुत्वं यशोदागर्भसम्भवाम् ४६ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्त्वासीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया ॥ पित्रोःसंपश्यतोःसद्योबभूवप्राकृतःशिशुः ४७ ततश्चशौरिर्भगवत्प्रचोदितः सुतंसमादायससूतिकागृहात् ॥ यदाबहिर्गन्तुमियेषतर्ह्यजा यायोगमायाऽजनिनन्दजायया ४८ तयाहृतप्रत्ययसर्व्ववृत्तिषु द्वाःस्थेषुपौरेष्वपिशायितेष्वथ ॥ द्वारस्तुसर्व्वाःपिहितादुरत्ययाबृहत्कपाटायसकीलशृङ्खलैः ४९ ताःकृष्णवाहेवसुदेवआगतेस्वयंव्यवर्यन्तयथातमोरवेः ॥ ववर्षपर्जन्यउपांशुगर्जितःशेषोऽन्वगाद्वारिनिवारयन्फणैः ५० मघोनिवर्षत्यसकृद्यमानुजा गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला ॥ भयानकावर्तशताकुलानदी मार्गंददौसिन्धुरिवश्रियःपतेः ५१ नन्दव्रजंशौरिरुपेत्यतत्रतान् गोपान्प्रसुप्तानुपलभ्यनिद्रया ॥ सुतंयशोदाशयनेनिधायतत्सुतामुपादायपुनर्गृहानगात् ५२ देवक्याःशयनेन्यस्य वसुदेवोऽथदारिकाम् ॥ प्रतिमुच्यपदोर्लोहमास्तेपूर्व्ववदावृतः ५३ यशोदानन्दपत्नीचजातंपरमबुध्यत ॥ नतल्लिङ्गंपरिश्रान्ता निद्रयापगतस्मृतिः ५४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकृष्णजन्मनितृतीयोऽध्यायः ३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(चतुर्थेचण्डिकावाक्यमाकर्ण्यातिभयाकुलः ॥ दुर्मन्त्रिभिर्हिंतमेने कंसोबालादिहिंसनम् ? चौथेअध्यायमें चण्डिकाजीके वचन सुनकर अत्यन्तभयसे व्याकुल कंस दुष्टमन्त्रियों से बालक आदिकों का मारनाही हित मानता भया ?) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् तें कहैं हैं कि हे राजन् ! ता समय बाहर भीतर के सम्पूर्ण पुरके दरवाजे हैं सो पहिले कीसी नाईं बन्द हैगये ता पीछे वा बालक को रुदन श्रवण करिके ड्योढ़ीवान उठे उठिके शीघ्र आप देवकी के आठवें गर्भको जन्म जायके कंस ते कह्यो उद्विग्न जाको मन सो याही गर्भको पैंडो देखिरह्यो हो १।२ श्रवण करिके उसी समय शय्याते जल्दी उठिके कंस शीघ्र सूतिकागृह में आवतभयो ववड़ायके जल्दीमें मार्गमें गिरि पर्यो मस्तकके वारखुलिगये ३ देवकी कंसकूं देखिकें दीन ह्वैगई और करुणा जैसे उपजिआवे तैसे वचन कंसते बोली हे मङ्गलरूप ! या कन्या कूं मतिमारे जो कदाचित् जीवैगी तो तेरेही पुत्रकूं व्याहि देउँगी और अग्निको सौं जिनको तेज ऐसे बहुत तैंने मेरे पुत्रमारे परन्तु तू कहा करै दैवने तेरी ऐसीही बुद्धि

श्रीशुकउवाच ॥ बहिरन्तःपुरद्वारः सर्व्वाःपूर्व्ववदावृताः ॥ ततोबालध्वनिंश्रुत्वा गृहपालाःसमुत्थिताः १ तेतुतूर्णमुपव्रज्य देवक्यागर्भजन्मतत् ॥ आचख्युर्भोजराजाय यदुद्विग्नःप्रतीक्षते २ सतल्पात्तूर्णमुत्थाय कालोयमितिविह्वलः ॥ सूतीगृहमगात्तूर्णं प्रस्खलन्मुक्तमूर्द्धजः ३ तमाहभ्रातरंदेवी कृपणा करुणंसती ॥ स्नुषेयंतवकल्याण स्त्रियंमाहन्तुमर्हसि ४ बहवोहिंसिताभ्रातःशिशवःपावकोपमाः ॥ त्वयादैवनिसृष्टेन पुत्रिकैकाप्रदीयताम् ५ नन्वहंते ह्यवरजा दीनाहतसुताप्रभो ॥ दातुमर्हसिमन्दाया अङ्गेमांचरमांप्रजाम् ६ श्रीशुकउवाच ॥ उपगुह्यात्मजामेवं रुदत्यादीनदीनवत् ॥ याचितस्तांविनिर्भर्त्स्य हस्तादाचिच्छिदेखलः ७ तांगृहीत्वाचरणयोर्जातमात्रांस्वसुःसुताम् ॥ अपोथयच्छिलापृष्ठे स्वार्थोन्मूलितसौहृदः ८ सातद्धस्तात्समुत्पत्य सद्योदेव्यम्बरंगता ॥ अदृश्यतानुजाविष्णोः सायुधाष्टमहाभुजा ९ दिव्यस्रगम्बरालेपरत्नाभरणभूषिता ॥ धनुःशूलेषुचर्मासिशङ्खचक्रगदाधरा १० सिद्धचारणगन्धर्वैरप्सरःकिन्नरोरगैः ॥ उपाहृतोरुबलिभिःस्तूयमानेदमब्रवीत् ११ किंमयाहतयामन्द जातःखलुतवान्तकृत् ॥ यत्रक्वपूर्वशत्रुर्माहिंसीः

करि दीनी अब या एक कन्याकूं मागे दे मतिमारे ४ । ५ हे सामर्थ्यवान् ! बहुत पुत्र जाके मरे ऐसी मैं दीन तेरी छोटी बहिन मन्दभागिनी कूं अन्तकी पीठपोछनी कन्याकूं तू दे ६ श्रीशुकदेवजी महाराज परीक्षित् ते कहै है कि हे राजन् ! या प्रकार देवकी कंसते कहिके कन्या कूं छाती ते लगाइ के अतिदीनकी नाईं रुदनकरै कछु दीन तो नहीं है किन्तु मनमें प्रसन्नहै जानैहै कि मेरो पुत्र तो और स्थान पै पहुँच गयो है और यह कन्या योगमायाहै याके हाथ लगे नहीं यातें रुदनकरै है तथापि देवकी के हाथ में ते दुष्टने हठते कन्या झटकिलीनी अत्यन्त नम्रहोईके रह्यो तौऊ दुष्टने न मानी ७ तुरतकी उत्पन्न भई बहिन की कन्या के चरण पकरिके जोर से शिला के ऊपर देमारी अपने मतलब के लिये प्रीतिको न गिन्यो ८ वह कन्या कंसके हाथते उछेटिके कंस के माथे में लातदेके तत्कालही देवी को रूपधरिके आकाशकूं जातभई शस्त्रन सहित आठ जाकी महाभुजा ऐसी विष्णुकी छोटी बहिन देखिवे में आई ९ दिव्यमाला पहिरे चन्दन जाके लगिरह्यो दिव्यरत्न जटित आ-

भूषणन करि शोभायमान धनुष् त्रिशूल ढाल तरवार शंख चक्र गदा इनकूं धारण करे १० सिद्ध चारण गन्धर्व अप्सरा किन्नर नागन ने वड़ी वड़ी भेंटें दीनी और स्तुतिकरी तब वह यह बोली ११ अरे मूर्ख! मेरे मारे तें तेरे हाथ कहा लगेगो तेरे मारिवेवारो पहिलेई यहू जहां तहां प्रकट है चुक्यो है अरे कृपण! वालकनकूं वृथा क्यों मारै है १२ याप्रकार भगवान्की देवी योगमाया कंस ते कहति भई और वहुत स्थानन पर दुर्गा भद्रकाली इत्यादिक नामन करि प्रकाशित होतभई १३ या प्रकार योगमायाको वचन श्रवणकरि कंसको वड़ो विस्मयभयो देवकी वसुदेव के पांइन में तें वेड़ी खुलवाइ डारी हाथ जोरि करिके यह वचन कहतिभयो १४ अहो वहिना! अहो वहनेऊ! हाय मो पापी ने तुम्हारे वहुत वालक मारे जैसे कोऊ राक्षस अपने पुत्रन कूं मारै है १५ और देखो करुणा मैंने छोड़िदीनी जाति के हितकारी सम्पूर्ण छोड़ि दिये अहो मैं दुष्ट कौन लोकमें जाऊंगो ब्रह्महत्यारे की नाईं जीवतेही मरे वरावर हों १६ और केवल मनुष्यही मिथ्या वोलैं यह वात

कृपणान्वृथा १२ इतिप्रभाष्यतंदेवी मायाभगवतीभुवि ॥ बहुनामनिकेतेषु बहुनामाबभूवह १३ तयाऽभिहितमाकर्ण्य कंसःपरमविस्मितः ॥ देवकींवसुदेवञ्च विमुच्यप्रश्रितोऽब्रवीत् १४ अहोभगिन्यहोभाम मयावांबतपाप्मना ॥ पुरुषादइवापत्यं बहवोहिंसिताःसुताः १५ सत्वहन्त्यक्तकारुण्यस्त्यक्तज्ञातिसुहृत्खलः ॥ काल्ँलोकान्वैगमिष्यामि ब्रह्महेवमृतःश्वसन् १६ दैवमप्यनृतंवक्ति नमर्त्याएवकेवलम् ॥ यद्विश्रम्भादहंपापः स्वसुर्निहतवाञ्छिशून् १७ माशोचतंमहाभागावात्मजान्स्वकृतंभुजः ॥ जन्तवोनसदैकत्र दैवाधीनाःसहासते १८ भुविभौमानिभूतानि यथायान्त्यपयान्तिच ॥ नायमात्मातथैतेषु विपर्य्येतितथैवभूः १९ यथाऽनेवंविदोभेदो यतआत्मविपर्य्ययः ॥ देहयोगवियोगौच संसृतिर्ननिवर्तते २० तस्माद्भद्रेस्वतनयान्मयाव्यापादितानपि ॥ मानुशोचयतःसर्वः स्वकृतंविन्दतेऽवशः २१ यावद्धतोऽस्मिहन्ताऽस्मीत्यात्मानंमन्यतेस्वदृक् ॥ तावत्तदभिमान्यज्ञोबाध्यबाधकतामियात् २२ क्षमध्वंममदौरात्म्यं साधवोदीनवत्सलाः ॥ इत्युक्त्वाऽश्रुमुखःपादौश्यालःस्वस्रोरथाग्रहीत् २३ मोचयामासनिगडाद्विश्रब्धःकन्यकागिरा ॥ दे

नहीं किन्तु देवताहू मिथ्या वोलैंहैं देखो आकाशवाणी के कहे तें मो पापी ने वहिनके पुत्र मारे १७ अहो वड़भागियो! तुम पुत्रनको शोक मतिकरो ये जीव अपने करे को भोगभोगैं हैं दैव के अधीन जीवहैं सर्वदा इनको एकत्र नहीं राखै है १८ जैसे पृथ्वी के विकार घट पट इत्यादिक उत्पन्न होइ हैं और फूटिजाई हैं इनके होवे में पृथ्वी को विकार नहीं आवै है तैसेही देहतेही जन्मै है और मरै है देहन के संग आत्मा नहीं मरै है १९ जे पुरुष ऐसे नहीं जानैं हैं वे देहकूं आत्मा मानैं है और देहकूं आत्मा माने तें अहन्त्वं ये नाना वुद्धिभेद उदय होइहैं या भेद तें पुत्रादिकनके देहनसूं योग वियोग होइ है याते उनके अज्ञान की निवृत्ति नहीं होइहै २० हे मङ्गलरूपिणी! मैंने तुम्हारे पुत्र मारे हैं तौऊ तुम उनको शोच मतिकरो सम्पूर्ण जीव वेवश होयके अपने कर्म के फलको भोगैं हैं २१ यावत्पर्य्यन्त अज्ञानीपुरुष अपने कूं मानै है कि मरूं हूं मारूं हूं तावत्पर्य्यन्त देहाभिमानी अज्ञानी पुरुष मरै हैं मारै हैं २२ अब तुम मो दुष्ट पर क्षमाकरो साधु मनुष्य दीनपर दयाही करै

हैं यह कहिके अश्रु जाके नेत्रमें भरिआये ऐसो कंस देवकी वसुदेव के चरणन में गिरिपरयो २३ तेरो मारनवारो कहूं उत्पन्न होय चुक्यो है यह वाक्य आकाशवाणीको श्रवण करि विश्वास जाकों आइगयो ऐसो कंस ताने देवकी वसुदेवजी के पायन में तें बेड़ी काटिदीनी और अपनी सुहृदता स्नेह जतावतभयो २४ देवकी भय्या कंसकूं अतिव्याकुल देखिके क्षमाकरि अपने रोषकूं त्यागतभई और वसुदेवजी भी मुसिकाय के कसते यहबोले २५ हे महाभाग कंस! जैसे तुम कहो हो यह बात तैसेही है देहधारीनकूं अज्ञानते अहङ्कार होयहै या अहङ्कारने मेरो तेरो भेद कराय दियो है २६ शोक हर्ष भय द्वेष लोभ मोह जिनकूं लगिरहे हैं वे पुरुष इन चोरों करिके आपही मरे हैं उन्हें कौन मारे है ईश्वर परमात्माकूं नहीं देखे हैं याते मैं मरूं हूं ऐसे माने हैं २७ अब श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! या प्रकार प्रसन्नहै श्रद्धायुक्त-जिनको मन ऐसे देवकी वसुदेवजी तें कंस आज्ञा ग्रहणकरि अपने स्थानकूं गयो २८ जैसे तैसें वह रात्री व्यतीतभई,पश्चात् प्रातःकाल

वकींवसुदेवश्च दर्शयन्नात्मसौहृदम् २४ भ्रातुःसमनुतप्तस्य क्षान्तरोपाचदेवकी ॥ व्यसृजद्वसुदेवश्च प्रहस्यतमुवाचह २५ एवमेतन्महाभाग यथावद सिदेहिनाम् ॥ अज्ञानप्रभवाऽहंधीः स्वपरेतिभिदायतः २६ शोकहर्षभयद्वेषलोभमोहमदान्विताः ॥ मिथोघ्नन्तंनपश्यन्ति भावैर्भावंपृथग्दृशः २७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कंसएवंप्रसन्नाभ्यां विशुद्धंप्रतिभाषितः ॥ देवकीवसुदेवाभ्यामनुज्ञातोऽविशद्गृहम् २८ तस्यांरात्र्यांव्यतीतायां कंसआहूयमन्त्रिणः ॥ तेभ्यआचष्टतत्सर्वं यदुक्तंयोगनिद्रया २९ आकर्ण्यभर्तुर्गदितं तमूचुर्देवशत्रवः ॥ देवान्प्रतिकृतामर्षा दैतेयानातिकोविदाः ३० एवंचेत्तर्हिभोजेन्द्र पुरग्रामव्रजादिषु ॥ अनिर्दशान्निर्दशांश्च हनिष्यामोऽद्यवैशिशून् ३१ किमुद्यमैःकरिष्यन्ति देवाःसमरभीरवः ॥ नित्यमुद्विग्नमनसो ज्याघोषैर्धनुषस्तव ३२ अस्यतस्तेशरव्रातैर्हन्यमानाःसमन्ततः ॥ जिजीविषवउत्सृज्य पलायनपरायपुः ३३ केचित्प्राञ्जलयोदीनान्यस्तशस्त्रादिवौकसः ॥ मुक्तकच्छशिखाः केचिद्भीताःस्मइतिवादिनः ३४ नत्वंविस्मृतशस्त्रास्त्रान् विरथान्भयसंवृतान् ॥ हंस्यन्यासक्तविमुखान् भग्नचापानयुध्यतः ३५ किंक्षेमशूरैर्विबुधैरसंयु

भयो ता समय कंसने मंत्री बुलाये और योगमायानें कही तेरे मारनवारो उत्पन्न होय चुक्यो है सो यह वार्ता सम्पूर्ण मंत्रीन प्रति कही २९ कंसको वचन श्रवणकरि मंत्री कहै हैं कि हे भोजवंशीन के इन्द्र! तुम्हारो मारनवारो कहूं है चुक्यो है तो कहा चिन्ताहै पुर ग्राम खिरक इत्यादिक जितने स्थानहैं तिनमें दश दश पांच पांच दिनके बालकनकूं हम मारिआवैंगे इनहीं में तुम्हारो मारनवारो भी आय जायगो ३०।३१रणके विषे डरपनहारे जे देवता ते कहा पराक्रम करैंगे तुम्हारे धनुष् की टंकार सुनिके मन जिनके कंपायमानकूं प्राप्त होयँगे ३२ जासमय धनुषमें लगायकेवाणनकी चारोंओर ते मारदेउहौ तासमय देवता अपनो जीव लैके मार्ग छोड़िके भाजि जायहैं भाजनोही जिनके श्रेष्ठहै ३३ कोई देवता रणमें शस्त्र त्याग करि अपने को दीन जानिके हाथ जोरिलेयहैं और कोई देवता हम तें डरे हैं ऐसे कहै हैं ३४ आपके सम्मुख शस्त्रन की गति भूलिगये रथ जिनके टूटिगये भय करिके भाजनमें जिनके मन लगे सग्रामते विमुख धनुष् जिनके टूटिगये युद्ध न करैं ऐसे देवतानकूं तो तुम

मारौही नहींहौ ३५ संग्रामके विना निर्भय स्थानमें बैठिके बकवाद करनवारे देवता कहा पराक्रम करैंगे तुम्हारे डरके मारे एकान्त जाय छिप्यो काहूने देख्यो नहीं ऐसो हरि कहा पराक्रम करैगो इलावृत खंडको रहनवारो जहां पुरुप जायके स्त्रीरूप होयजाय ऐसो महादेव कहाकरैगो ३६ थोड़ो जाको पराक्रम और यत्किंचित् विपत्ति परै तो भगवान्के पास भाज्यो जाय ऐसो इन्द्र कहा करैगो वेदनको बांचनवारो ब्रह्मा कहा करैगो तेहूं देवता वैरी हैं छोड़िवे लायक नहीं हैं यह जानि देवतानकी जड़ उखारिवे के लिये आज्ञाकारी हम हैं तिनकूं आप आज्ञाकरो या प्रकार समस्त मंत्रीन ने कही ३७ जैसे शरीर में रोग विना उपायकरे जड़ पकरि जाय है पश्चात् मनुष्यते वाको उपाय नहीं होय सकै है और जैसे योगीजन प्रथम इन्द्रियन करि विषय भोग करिके पश्चात् विषयन ते इन्द्रियन को रोंको चाहै तो नहीं रुकि सकैं हैं ऐसेही शत्रु छोटो जानि छोड़े पीछे प्रबल होने ते जीतिवे में नहीं आवै है ३८ समस्त देवतानके मूल अर्थात् जड़ विष्णु हैं और विष्णुको मूल

गविकत्थनैः ॥ रहोजुषाकिंहरिणा शम्भुनावावनौकसा ३६ किमिन्द्रेणाल्पवीर्येण ब्रह्मणावातपस्यता ॥ तथाऽपिदेवाःसापत्न्यान्नोपेक्ष्याइतिमन्महे ॥ ततस्तन्मूलखनने नियुङ्क्ष्वास्माननुव्रतान् ३७ यथामयोऽङ्गेसमुपेक्षितोनृभिर्नशक्यतेरूढपदश्चिकित्सितुम् ॥ यथेन्द्रियग्रामउपेक्षितस्तथा रिपुर्महान् बद्धबलोनचाल्यते ३८ मूलंहिविष्णुर्देवानां यत्रधर्म्मःसनातनः ॥ तस्यचब्रह्मगोविप्रास्तपोयज्ञाःसदक्षिणाः ३९ तस्मात्सर्वात्मनाराजन् ब्राह्मणान्ब्रह्मवादिनः ॥ तपस्विनोयज्ञशीलान् गाश्चहन्मोहविर्दुघाः ४० विप्रागावश्चवेदाश्च तपःसत्यंदमःशमः ॥ श्रद्धादयातितिक्षाच क्रतवश्चहरेस्तनूः ४१ सहिसर्वसुराध्यक्षोह्यसुरद्विड्गुहाशयः ॥ तन्मूलादेवताःसर्वाःसेश्वराःसचतुर्मुखाः ॥ अयंवैतद्वधोपायोयदृषीणांविहिंसनम् ४२॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंदुर्मन्त्रिभिःकंसः सहसंमन्त्र्यदुर्मतिः ॥ ब्रह्महिंसांहितंमेने कालपाशावृतोऽसुरः ४३ सन्दिश्यसाधुलोकस्य कदनेकदनप्रियान् ॥ कामरूपधरान्दिक्षु दानवान् गृहमाविशत् ४४ तेवैरजःप्रकृतयस्तमसामूढचेतसः ॥ सतांविद्वेषमाचेरुरारादागतमृत्यवः ४५ आयुःश्रियंयशोधर्मं लोकानाशिषएवच ॥ हन्तिश्रेयांसिसर्वाणि पुंसोमहदतिक्रमः ४६॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

सनातन धर्म्म है और वेद गौ ब्राह्मण तप तथा दक्षिणा सहित यज्ञ ये समस्त धर्म्म के मूलहैं ३९ हे राजन्! कंस ता कारण ते सर्व्वप्रकार करिके वेद पढ़नवारे और तपस्वी और यज्ञ करनवारे ब्राह्मणन को और होम के द्रव्यकी पूर्ण करनवारी गऊनको हम मारेंगे ४० विप्र गऊ वेद तप सत्य दम शम श्रद्धा दया तितिक्षा यज्ञ ये समस्त हरि भगवान्के शरीर हैं ४१ सो हरि सम्पूर्ण देवतान में मुख्य असुरनके द्रोही सबके अन्तःकरणमें विराजमान हैं और समस्त देवता महादेव ब्रह्मा इन सबको मूल ऋषीश्वर इनको वध करिवो यही वाको वध करिवे को उपाय है ४२ अब श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! दुष्ट जाकी बुद्धि कालफांसी में बँध्यो ऐसो असुर कंस सो दुष्ट मत्रीन सहित ऐसे विचार करिके ब्राह्मणनके मारिवेतें अपनो कल्याण मानत भयो ४३ साधुन के कष्ट देवे में कष्ट जिनकूं प्यारो इच्छापूर्व्वक रूपकूं धारण करैं ऐसे दानवनकू पठवायके अपने घरकूं कंस आवतभयो ४४ रजोगुणी तमोगुणी जिनके स्वभाव अज्ञान

करिके मूढ जिनको चित्त मृत्यु जिनकी आय लगी ऐसे असुरन ने साधुन ते वैर कर्यो ४५ साधुन ते द्वेष करनो पुरुषकी आयुर्बल धन यश धर्म्म और स्वर्गादिकन को आशीर्वाद इन सम्पूर्ण को नाश करै है ४६ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(पञ्चमेजातकंनन्द' सूनोःकृत्वामहोत्सवम् ॥ गत्वाथमथुरामाप वसुदेवागमोत्सवम् १ पांचयें अध्याय में नन्दजी पुत्रका जातक महान् उत्सवकर मथुराजी में जाकर वसुदेवजी के आगम के उत्सव को प्राप्तहुये १) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन् ! उदारहै चित्त जिनको ऐसे नन्दरायजी सो पुत्रजन्मके समय में बडे आनन्द को प्राप्त होत भये स्नानकरि पवित्र होइके सुन्दर वस्त्र आभूषण पहिरिके ज्योतिषी ब्राह्मणनकूं बुलाय पुत्रको स्वस्तिवाचन पढवाय के विधिपूर्वक पितृ और देवतानकूं पूजन करत भये १ । २ ब्राह्मणनकूं दो लाख गौ शृङ्गार करिके दान करत भये भीतर अनेक प्रकार के रत्ननकू धरिके सात तिल के पर्वतन के दान करत भये ३ काल करिके पृथिव्यादिकन की शुद्धि होय है और स्नान ते देहादिकनकी शुद्धि होयहै

श्रीशुकउवाच ॥ नन्दस्त्वात्मजउत्पन्ने जाताह्लादोमहामनाः ॥ आहूयविप्रान्वेदज्ञान् स्नातःशुचिरलङ्कृतः १ वाचयित्वास्वस्त्ययनं जातकर्म्मात्मजस्यवै ॥ कारयामासविधिवत् पितृदेवार्चनंतथा २ धेनूनांनियुतेप्रादाद्विप्रेभ्यःसमलङ्कृते ॥ तिलाद्रीन्सप्तरत्नौघशातकौम्भाम्बरावृतान् ३ कालेनस्नानशौचाभ्यां संस्कारैस्तपसेज्यया ॥ शुध्यन्तिदानैःसन्तुष्ट्या द्रव्याण्यात्मात्मविद्यया ४ सौमङ्गल्यगिरोविप्राः सूतमागधवन्दिनः ॥ गायकाश्चजगुर्नेदुर्भेर्योदुन्दुभयोमुहुः ५ व्रजःसंमृष्टसंसिक्तद्वाराजिरगृहान्तरः ॥ चित्रध्वजपताकास्रक्चैलपल्लवतोरणैः ६ गावोवृषावत्सतरा हरिद्रातैलरूपिताः ॥ विचित्रधातुबर्हस्रग्वस्त्रकाञ्चनमालिनः ७ महार्हवस्त्राभरणकञ्चुकोष्णीषभूषिताः ॥ गोपाःसमाययूराजन्नानोपायनपाणयः ८ गोप्यश्चाकर्ण्यमुदिता यशोदायाःसुतोद्भवम् ॥ आत्मानंभूषयाञ्चक्रुर्वस्त्राकल्पाञ्जनादिभिः ९ नवकुङ्कुमकिञ्जल्कमुखपङ्कजभूतयः ॥ बलिभिस्त्वरितंजग्मुः पृथुश्रोण्यश्चलत्कुचाः १० गोप्यः

धोये ते वस्त्रादिक शुद्धहोयहैं संस्कार तें गर्भादिक शुद्ध होयहैं और तप करे तें इन्द्रियनकी शुद्धि होयहै यज्ञ करे ते ब्राह्मणादिक शुद्धहोयहैं दान के करे ते द्रव्य शुद्ध होयहै और सन्तोष ते मन शुद्धहोय है और ज्ञानते आत्मा शुद्धहोयहै ४ ब्राह्मण स्वस्तिवाचन पढतभये पुराणवक्ता पुराण कहत भये जागा वशावली कहत भये भाट वन्दीजन बड़ाई करतभये गवैया गान करतभये भेरी नगारेवारे वाजे वजावत भये ५ व्रजमें जो दरवाजे और आगन घरहैं तिनमें वुहारी झारी छिरकाव होय गये और उत्तम चित्रविचित्र ध्वजा पताका माला जहां तहां टांगिदीनी वस्त्रनकी पल्लवन की वन्दनवार दरवाजे पै बँधिगई ६ गौ बैल बछरान के हरदी तेल लगाय दियो और शृंगन में खरिया गेरू लगाय दीनो और मोरपिच्छ जिनमें टँकों ऐसी सुन्दर झूलैं उढायदीनी और सुवर्ण की माला पहिराय दीनीहैं ७ हे राजन् परीक्षित् ! सम्पूर्ण गोप सुन्दर वस्त्र आभूषण पाग पहिरिके भेंटनकूं हाथन में लैकै नन्दरायजी के घर आवत भये ८ यशोदाजी के पुत्र भयो है यह सुनिके गोपीन के वड़ो आनन्द भयो सुन्दर वस्त्र आभूषण पहिरिके काजर टीकी लगायके अपने शृङ्गार करत भईं ९ नवीन केशरकी खौरि मुखारविन्दन पै लगाय पतली जिनकी कमर चला-

यमान जिनके कुच ऐसी गोपिका हाथन में भेंटैं लैलैके शीघ्रही नन्दरायजी के घर जात भईं १० उज्ज्वल मणिन के जड़ाऊ कुण्डल कानन में पहिरे अतिसुन्दर मोतीन के हार हृदयके ऊपर विराजमान तिन करिके परमशोभायमान स्तन जिनके ऐसी गोपीन के समूह नन्दरायजी के मन्दिरकूं जाती भईं तासमय मार्ग में अतिशोभा प्राप्त होत भईं ११ तब गोपिका नन्दरायजी के घर आइकें श्रीकृष्णचन्द्रकूं आशीर्वाद देत भईं अहो कृष्ण ! तुम चिरंजीव २ और लाला तुम बहुत दिन पर्यन्त हमारी रक्षाकरो या प्रकार बालककूं आशीर्वाद देत हल्दी चूर्ण तेल जलसूं आपुस में छिरकत श्रीकृष्णचन्द्रके चरित्रकूं गावतभईं १२ विश्वके ईश्वर भगवान् अन्त जिनको नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जा समय व्रज में आये ता समय मनुष्यनके बड़े उत्सवमें मन यातें नाना प्रकार के बाजे बजावत भये १३ व्रजवासी प्रसन्न होयके दही दूध घृत जलनकूं आपुसमें छिरकत गावतभये और माखन के लौंदा फेंकत भये १४ अतिउदार है चित्त जिनको ऐसे नन्दरायजी सूत मागध वन्दीजननकूं और जे कोऊ गुणीजन हैं गवैया तिनको वस्त्र आभूषण गऊन को दान करत भये १५ विष्णु भगवान् मोपै प्रसन्नहोईं और यह मेरो पुत्र चिरंजीवरहे या कारणते अति उदार है चित्त जिनको ऐसे नन्दरायजी के समीप जे मनुष्य गुणीजन जा जा वस्तुकी कामना करिके आये हैं उनकूं उही उही वस्तुदैके यथायोग्य सबको पूजन करत भये १६ ॥

समृष्टमणिकुण्डलनिष्ककण्ठ्यश्चित्राम्बराःपथिशिखाच्युतमाल्यवर्षाः ॥ नन्दालयंसवलयाव्रजतीर्विरेजुर्व्यालोलकुण्डलपयोधरहारशोभाः ११ ताआशिषःप्रयुञ्जानाश्चिरंपाहीतिबालके ॥ हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिञ्चन्त्योजनमुज्जगुः १२ अवाद्यन्तविचित्राणि वादित्राणिमहोत्सवे ॥ कृष्णेविश्वेश्वरेनन्ते नन्दस्यव्रजमागते १३ गोपाःपरस्परंहृष्टा दधिक्षीरघृताम्बुभिः ॥ आसिञ्चन्तोविलिम्पन्तो नवनीतैश्चचिक्षिपुः १४ नन्दोमहामनास्तेभ्योवासोलङ्कारगोधनम् ॥ सूतमागधवन्दिभ्यो येन्येविद्योपजीविनः १५ तैस्तैःकामैरदीनात्मा यथोचितमपूजयत् ॥ विष्णोराराधनार्थाय स्वपुत्रस्योदयायच १६ ॥

अथ श्रीकृष्णचन्द्रस्य जन्मपत्रमाह ॥

आत्मारामोमधुरचरितोभक्तियोगंविधास्यन् नानालीलारसरचनयानन्दयिष्यन्स्वभक्तान् । दैत्यानीकैर्भुवमतिभरांवीतभारांकरिष्यन् मूर्तानन्दोव्रजपतिगृहेजातवत्प्रादुरासीत् ॥ १ ॥ स० ॥ पूत सपूत जन्यो जसुधा इतनी सुनिकैं वसुधा सब दौरी । देवनकोहि अनन्द भयो सुनि धावत गावत मंगल गौरी ॥ नन्द कछू इतनो जो दियो धनपाल कुबेरहु की गति बौरी । देखतही जो लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥ २ ॥ ब्रह्मादयोपिनिजधामगतंनिशम्य कोलाहलंप्रजपरेमहदुत्सवोत्थम् । तत्रागताःकविविचित्रविरक्तवेशा नन्दात्मजस्यमुखदर्शनमर्थयन्ति ॥ ३ ॥ गई विधि लोकमाँह परम उछाह धुनि देवनके साथ सुनि सृष्टिनाथ आयेहैं । ज्यौतिषी को स्वांग घाल तिलक विशाल भाल शीश में सुपाग लाल जामा भपकाये हे ॥ कटि करफेंटा बाधे कांखमें सुपोथी साधे सभामधि राजे अज आशिष जताये हैं । कांखसों सुपोथी काढे मनमें विचार बाढे जनमसुपत्र फल सबही सुनाये हैं ॥ ४ ॥ स्वस्तिश्रीसौख्यदात्रीसुतधनजननीपुष्टितुष्टिप्रदात्री माङ्गल्योत्साहकर्त्रीगतभवसदसत्कर्मणांव्यञ्जयित्री । नानासंपद्विधात्रीधनकुलयशसामायुषोवर्द्धयित्री सर्वापद्विघ्नहन्त्रीगुणगणमहितोलिख्यतेजन्मपत्री ॥ ५ ॥ अथ शुभसंवत्सरेस्मि

अथ जन्मचक्रमिदम् ॥

३ | १ | च. २ के | वृ १२ | ४ | ११ | सू ५ | ८ २। | मं १० | ६ बु | शु ७श | ६

न्भगवत्पूजनत्रिशिष्टधर्मयुक्तेश्रीमद्द्वापराख्येयुगेगमिताब्दाः ८।६३—८।८० अष्टलक्षतदन्तर्गतसन्ध्यांशसमये भोजवंशावतंसस्यकंसस्यराज्याहुताब्दगणेपुतवचायनवलनाभिव्यक्तयेअनुगदयनगते श्रीभास्वन्मण्डले तथाच सौम्यगोलावलम्बिनिश्रीगगनचारिचूडामणौतत्रयथासमयं सर्वर्तुगुणप्रकाशनपटीयसिवर्षासंज्ञकचौंतेनैवंमौढभाविनिव्यञ्जकत्वेनमौष्ठपदाभिधमासिस्वसदृशनामवर्णसूचकत्वात् सितेतरदलेसर्वलोकोपकारकतयादुष्टमारकत्वंस्वभक्तरक्तकत्वंचन्दर्शयितुंप्राकृतइवमनुव्यनाट्यंदर्शयितुं श्रीभक्तराजस्वामिनितिथौचन्द्रसदृशसुखदातृत्वाचन्द्रसुतस्यैववासरेसकलगुणगणाढ्येरोहिणीभे आयुष्मान्योगेकौलवाख्यकरणेएवंविधेऽत्राङ्केशुद्धावत्रदिनेतत्रार्कगतांशाः ४।७।३ तत्रदिनमप्रमाणम् ३२ तत्रेनोदयादिष्टम् ४६ तदावृषभोदयेशुक्रक्षेत्रेसूर्यहोरायांबुधद्रेष्काणे शुक्रनवांशेभौमद्वादशांशेगुरुत्रिंशांशेग्रहषड्वर्गवलोपन्नेलग्नेशुभग्रहाङ्कितवेलायायदुकुलावतंसस्यवरीयान्गोपस्यपञ्चप्राणतुल्येषु पञ्चसुतेषु मुख्यतमस्यनन्दरायाभिधस्योढाधर्मपत्न्युभयकुलानन्ददात्री इन्द्रनीलमणिमारकतइवमौक्तिकमणि शुक्तपुटइवपरमानन्दजनकंव्रजजननयनचन्द्रचकोरसमंस्वमात्मजं स्वकुक्षेर्जनयामास तस्यरोहिणीनामनक्षत्रस्यतृतीयचरणे जातत्वाद्वकाराक्षरेइकारस्वरे विहारीलाल इतिनामधेयं प्रतिष्ठितम् सचपहेशानुकम्पातोदीर्घायुर्भूयात् ॥ उच्चस्थाश्शशिभौमचान्द्रिशनयो लग्नंवृषोलाभगो जीवः सिंहतुलालिपुक्रमवशात्पूपाशनीराहव. । नैशीथेसमयेऽष्टमीबुधदिनेब्रह्मर्क्षमत्रक्षणे श्रीकृष्णाभिधमम्बुजेक्षणमभूदाविःपरंब्रह्मतत् ॥ १ ॥ (अथ तत्तद्गृहस्थग्रहाणा फलान्याह) स० ॥ जन्मको पत्र विशाल वनो निज लालको हाल सुनो सुखदाई । लग्नरही वृषरूप सही टिकि चन्द तहीं जो अनन्द देखाई ॥ तासुको नाथ अरयो अर मन्दर अन्दर में रविसूनु सुहाई । श्यामसरूप अनूप लहे तुव धामको माम भयो व्रजराई ॥ १ ॥ कर्कश केतु रह्यो तनमें लखि राहुको रूप रमेश करावे । राहु सु राजि रह्यो रतिमें रमणी रतिदै रमणीन रमावे ॥ वैरि विनाश करै क्षणमें रणरंग परे न डरे डर पावे । औ धननाथ टिके सुतमें गुरु पेखत हैं धनवान कहावे ॥ २ ॥ विक्रमनाथ ठये अँग में गुरु देखतही बलको बलकावे । साहस में अति साहसकै निजबाहु पराक्रम को अधिकावे ॥ या सम नाहिं बली क्षितिमें हम सांच कहैं सबही मन भावे । अम्बको नाथ टिक्यो सुखमें सुखकोहि लहैं जननी सुखपावे ॥ ३ ॥ पुत्रको नाथ रह्यो सुतमें गुरु पेखतही गुणवान कहावे । चन्द्रकी दृष्टि पड़ै बुधपै बुधिमान बड़ो बहु पुत्र लहावे ॥ वेदको पार अपार लहै सुख सार अहै जो उदार सुहावे । औ सबकोहि अनन्दकरै दुख दन्द हरै मनकोहि सुहावे ॥ ४ ॥ शत्रुको नाथ रह्यो रिपुमें शनि ऊंच पर्यो भृगुसाथ सो जाई । वैरिन वेगिं विनाशकरै अरु मातुलकोहि हनै रण पाई ॥ जाहि समै रण रंग जुरै रिपु मारि विदारि धरै मनुसाई । भूतल माहिं सो नाहिं भयो जो करै समता इनकी अब आई ॥ ५ ॥ नारि को नाथ रह्यो तपमें तयहि कारण नारिन नाथ कहावे । प्यारिन कोहि पियार करै करुणाकर नाम सो श्राम सुहावे ॥ धर्मको रूप धरामें धर्यो धरणीकर भार उतार बहावे । दानिनमें अतिदानी बड़ो अरु मानिन के मद को हि दहावे ॥ ६ ॥ आयुको नाथ सो आय ११ गयो तनुनाथ तुलामें छयो घर माहीं । दीरघ आयुलहैं सब कोहि चहैं रिपु कोहि दहैं पलमाहीं ॥ सुन्दर श्याम सुसोहन हैं मनमोहन है सबकोहि सुहाहीं । धन्य धरातल नन्द अहौ नितहौं लहि द्वन्द विनाशन काहीं ॥ ७ ॥ धर्म को नाथ टिक्यो अरि में भृगुनाथ के साथ सो ऊँच सुहावे । धर्म को रूप लखो सुतको नित धर्म करै बहु कर्म कमावे ॥ राज को नाथ रह्यो रिपुमें नहिं राज करै पितु कोहि मनावे । लाभ को नाथ सो लाभ लह्यो बहु लाभ लहै ललना ललचावे ॥ ८ ॥ खर्च को नाथ सुभाग ९ गयो भगवान भयो भवकोहि भगावे । तासु को नाथ सो ऊंच उग्यो

तुल माहिं तुल्यो नहिं तुल्य लखावे ॥ पुत्र मपौत्रन ब्याह वरै वहु खर्च करै खल कोहि नशावे । जानि परै जनु पूरण ब्रह्म धस्यो अवतार धरा में सुहावे ॥ ९ ॥ रानि समेत सुन्यो फल को व्रजराज खुशी मनमोद मचायो । पूजनको सब साज सज्यो द्विजराज को पूजि महामुद पायो ॥ आशिष दै अज लोक गयो यहँ आनहुँ स्वाग भयो मन भायो । लालको गोद लये नँदरानी चलीं द्विज शक्तिको भक्ति दिलायो ॥ १० ॥ दो० ॥ शक्ति कलितहै ललित यह पढ़ै सुनै मनलाय । ताके करतल चारि फल दुर्लभ कछु न लखाय ॥ १ ॥ नन्दरायजी के घर सम्पूर्ण व्रजवधू आई परन्तु रोहिणीजी नहीं आई किस कारण ते कि इनके पति मथुरा में हैं जा स्त्री को पति परदेशमें हो सो स्त्री अपनो शृङ्गार न करै और पराये घर न जाय यह शास्त्रकी आज्ञा है ता समय नन्दरायजी जायके रोहिणीजी ते कही कि तुम तौ बड़ी भागिनी हो चलो क्यों न आज हमारे बधाई भई है ऐसे नन्दरायजी की आज्ञा मानि के अच्छे सुन्दर वस्त्र और मोतिन के हार सुन्दर धुकधुकी पहिरि शृङ्गार करि वनिठनि के आवति भई १७ जब तें या व्रज में श्रीकृष्णचन्द्र प्रकटभये तब तें नन्दरायजी सम्पूर्ण सम्पत्तिन करिके परिपूर्ण होइगये हैं हे राजन् परीक्षित् ! जहां

रोहिणीचमहाभागानन्दगोपाभिनन्दिता ॥ व्यचरद्दिव्यवासःस्रक्कण्ठाभरणभूषिता १७ ततआरभ्यनन्दस्यव्रजःसर्वसमृद्धिमान् ॥ हरेर्निवासात्मगुणैर
माक्रीडमभून्नृप १८ गोपान्गोकुलरक्षायां निरूप्यमथुरांगतः ॥ नन्दःकंसस्यवार्षिक्यं करंदातुंकुरूद्वह १९ वसुदेवउपश्रुत्य भ्रातरंनन्दमागतम् ॥ ज्ञा
त्वादत्तकरंराज्ञे ययौतदवमोचनम् २० तंदृष्ट्वासहसोत्थाय देहःप्राणमिवागतम् ॥ प्रीतःप्रियतमंदोर्भ्यां सस्वजेप्रेमविह्वलः २१ पूजितःसुखमासीनःपृष्ट्वा
नामयमादृतः ॥ प्रसक्तधीःस्वात्मजयोरिदमाहविशांपते २२ दिष्ट्याभ्रातःप्रवयसइदानीमप्रजस्यते ॥ प्रजाशायानिवृत्तस्य प्रजायत्समपद्यत २३ दि
ष्ट्यासंसारचक्रेऽस्मिन् वर्त्तमानःपुनर्भवः ॥ उपलब्धोभवानद्य दुर्लभंप्रियदर्शनम् २४ नैकत्रप्रियसंवासः सुहृदांचित्रकर्मणाम् ॥ ओघेनव्यूह्यमानानां

हरि नारायण प्रकट भये ता व्रज में लक्ष्मी आप क्रीड़ा करत भई १८ अहो राजन् परीक्षित् ! नन्दरायजी गोपनको सर्वप्रकार गोकुलकी रक्षाकरिवे में नियुक्त करिके आप कंसकूं वर्ष दिनको कर देवे के लिये मथुराजी कूं जातभये १९ अब नन्दरायजी आये हैं और कंस कूं कर दैचुके हैं यह वार्त्ता वसुदेवजी श्रवण करिके नन्दरायजीके स्थानपै वसुदेवजी मिलिवे कूं आवत भये २० अब जैसे देहमें प्राण आये ते देह उठै है ऐसे बड़े प्यारे वसुदेवजी कू आये देखिके नंदराय जी शीघ्र उठिके आप हाथन तें पकरिके प्रेममें विह्वल होइके अपनी छाती सूं लगायके मिले २१ नन्दराय जी ने वसुदेवजी की पूजाकरी और सुखपूर्वक आसनपै बैठारि के कुशलक्षेम पूंछतभये सो हे राजन् परीक्षित् ! पुत्रनमें मन जिनको लग्यो ऐसे वसुदेवजी नन्दजी ते यह बोले २२ अहो भैया नन्दजी ! तुम्हारे पुत्र नहीं होत रहो पुत्र होइवेको आसरो नहीं हो सो अब बहुत अवस्थामें तुम्हारे पुत्र भयो यह बड़ो मंगलभयो २३ या संसारमें रहिके पुनर्जन्मकी नाईं तुम्हारो मिलाप भयो यह बड़ो मंगल भयो अपने प्यारेनको दर्शन या समय में बड़ो दुर्लभहै २४ अहो प्यारे ! प्यारे जिनके कर्म ऐसे अपने प्यारे मित्रहैं तिनको एक ठौर वास नहीं होयहै जैसे नदीके प्रवाहमें बहते

तृण एकत्र इकठौरे नहीं रहे हैं कदाचित् संयोग कदाचित् वियोग २५ हे नन्द ! बहुत जल तृण लतानयुक्त और पशून को हितकारी जो महावन तहां अपने सुहृदनसहित अब वास करोहो या घुनिते अपने पुत्रनकी कुशल वसुदेवजीने पूंछी अर्थात् बहुत जल तृण होयेंगे तो उनकी गऊ चरैंगी उन गऊनको नीरोग लघु दूध होइगो ताकूं यशोदा रोहिणी पान करैंगी तिनको नीरोग दूध मेरे पुत्र पीवेंगे २६ वसुदेवजी कहे हैं अहो भैया नन्दजी ! मेरो पुत्र अपनी माताकूं सङ्ग लैके तुम्हारे व्रज में रह्यो है और तुमकू पिता मानै है तुमहीं उनको पालन करोहो सो वे पाछे मसन्न हैं २७ और ये पुरुष अपने स्नेही प्यारेन कू संगलैके धर्म्म अर्थ काम मोक्ष इन तीनों पदार्थनकूं करै और जो प्यारे सनेहीनकू छोडिके अकेलो धर्म्म करै अथवा द्रव्य भोगे काम विषयनको भोगकरै तौ ये त्रिवर्ग याकूं सुखदायी नहीं होय हैं २८ अब नन्दराय जी वसुदेवजी ते कहै हैं-अहो भैया वसुदेवजी ! देखो तो तुम ते देवकी के पुत्र कंसने बहुत मारे एक पिछली कन्या सोभी उड़िके आकाश में चलीगई २९ और जा जीवकी मारब्धही में समाप्ति है जा समय पुत्रादिकन को देनहारो मारब्धहीन होइ जायहै ता समय वे पुत्रादिक नहीं होइ है यामें मारब्धही परमकारण है जब कभऊ

प्लवानांस्रोतसोयथा २५ कच्चित्पशव्यंनिरुजं भूर्यम्बुतृणवीरुधम् ॥ बृहद्वनंतदधुना यत्रास्सेत्वंसुहृद्वृतः २६ भ्रातर्ममसुतःकच्चिन्मात्रासहभवद्व्रजे ॥ तातंभ वन्तंमन्वानो भवद्भ्यामुपलालितः २७ पुंसस्त्रिवर्गोविहितः सुहृदोह्यनुभावितः ॥ नतेषुक्लिश्यमानेषु त्रिवर्गोऽर्थायकल्पते २८ नन्दउवाच ॥ अहोते देवकीपुत्राः कंसेनबहवोहताः ॥ एकाऽवशिष्टाऽवरजा कन्यासापिदिवंगता २९ नूनंह्यदृष्टनिष्ठोऽयमदृष्टपरमोजनः ॥ अदृष्टमात्मनस्तत्त्वं योवेदनसमुह्य ति ३० वसुदेवउवाच ॥ करोवैवार्षिकोदत्तो राज्ञेदृष्टावयञ्चवः ॥ नेहस्थेयंबहुतिथं सन्त्युत्पाताश्चगोकुले ३१ श्रीशुकउवाच ॥ इतिनन्दादयोगोपाःशोक्ता स्तेशौरिणाययुः ॥ अनोभिरनडुद्युक्तैस्तमनुज्ञाप्यगोकुलम् ३२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनन्दवसुदेवसङ्गमोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ नन्दःपथिवचःशौरेर्नमृषेतिविचिन्तयन् ॥ हरिञ्जगामशरणमुत्पातागमशङ्कितः १ कंसेनप्रहिताघोरा पूतनाबालघातिनी ॥ शिशूंश्च

पुत्रादिक बिछुटि जाइ हैं और जो कभऊं आछो मारब्ध होइ तो फेरि आइ मिलैं हैं ऐसे भैया मारब्धही ते सुख और दुःख होइ हैं जो पुरुष या मकार जानैहै वह कभऊं मोहको माप्त नहींहोइ है याते अहो वसुदेवजी ! अपने मनमें पुत्रादिकन को शोच मतिकरो तेरे बिछुरे पुत्रनको कोई समय संयोग दर्शन होइ जायगो हम ते वियोग होइ जाय है ३० अब वसुदेवजी नन्दरायजी ते कहै हैं अब तुम कंसरायकूं वर्ष दिनको कर दैचुके और हमहूं ते मिलिचुके अब यहां बहुत दिन मतिरहो गोकुलमें उत्पात आवैं हैं ३१ अब श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहैहैं कि हे राजन्! या मकार वसुदेवजी के कहे ते नन्दराय सों आदि लैके सम्पूर्ण गोप गाड़ान में बैल जोरिके और वसुदेवजी ते आज्ञा मागिके आप मथुरा ते गोकुल कूं गमन करतभये ३२ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यांद शमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनन्दवसुदेवसङ्गमोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(षष्ठेसख्युर्गिरानन्दोव्रजंगच्छन्मृतांपथि ॥ दृष्ट्वातुराक्षसींतस्यामृत्युंश्रुत्वाथविस्मितः १ छठयें अध्यायमें मित्र वसुदेवजी की वाणी से नन्द व्रजमें जातेहुये राह में मरीहुई पूतना राक्षसी को

देखकर तिसकी मृत्यु सुनकर विस्मितहुये १) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन् ! अब नन्दजी मार्गमें यह विचार करतभये भाई वसुदेवजीको वचन मिथ्या तो नहीं होइहै उत्पातके आइवे तें डरपिके नारायणकी शरण होतभये कि महाराज यह तुमने पुत्र दियो है तुमहीं याकी रक्षाकरोगे १ घोर जाको रूप वालकनकी मारनवारी पूतना कंसकी पठाई पुर ग्रामकूं आदि लैके वालकन कूं मारत डोलै है २ यह वात श्रवण करिके राजा परीक्षित् के मनमें शंका भई कि महाराज वह पूतना नन्दजी के महल में गई होइगी तहां शुकदेवजी कहै हैं कि राजा चिन्ता मति करो उहां जायगी तौ मरैगी राक्षसन के नाश करनवारे जा स्थान में यज्ञादिक कर्म्म और परमेश्वरकी कथा स्मरण कीर्तनादिक नहीं होंइ है तहां राक्षसिनी प्रवृत्त होइके अपनो पराक्रम करै है और जिन भगवान् के नाम स्मरण को यह प्रभावहै तहां साक्षात् आपही है तहां पूतना की कहा सामर्थ्य जो उनकूं मारे ३ आकाश की विचरनवारी इच्छापूर्वक रूप धरनवारी ऐसी वह पूतना मायाते अपनो स्त्री रूप बनाय के श्रीनन्दरायजी के गोकुल में जातभई ४ चोटी में मल्लिका के फूल जाने गुहे हैं वड़े नितम्ब स्तन जाके सूक्ष्म जाकी कमर सुन्दर वसन कूं धारण करे और हलें जो कानन के कर्णफूल तिनकी कान्तिते शोभायमान जो केश तिनकेशनकरि शोभायमान जाको मुखहै ५ व्रजवासीन के मनकूं मोहै ऐसी जाकी मुसिकानि सुन्दर जाकी चितवनि ता चितवनि करि व्रजवा-

चारनिघ्नन्ती पुरग्रामव्रजादिपु २ नयत्रश्रवणादीनि रक्षोघ्नानिस्वकर्मसु ॥ कुर्वन्तिसात्वतांभर्तुर्यातुधान्यश्चतत्रहि ३ साखेचर्येकदोपेत्य पूतनानन्दगोकुलम् ॥ योपित्वामाययात्मानं प्राविशत्कामचारिणी ४ तांकेशबन्धव्यतिपक्तमल्लिकां वृहन्नितम्बस्तनकृच्छ्रमध्यमाम् ॥ सुवाससंकम्पितकर्णभूपणत्विपोल्लसत्कुन्तलमण्डिताननाम् ५ वल्गुस्मितापाङ्गविसर्गवीक्षितैर्मनोहरन्तीं वनितांव्रजौकसाम् ॥ अमंसताम्भोजकरेणरूपिणीं गोप्यःश्रियंद्रष्टुमिवागतांपतिम् ६ वालग्रहस्तत्रविचिन्वतीशिशून् यदृच्छयानन्दगृहेऽसदन्तकम् ॥ वालंप्रतिच्छन्ननिजोरुतेजसं ददर्शतल्पेऽग्निमिवाहितंभसि ७ विबुध्यतांवालकमारिकाग्रहंचराचरात्मासनिमीलितेक्षणः ॥ अनन्तमारोपयदङ्कमन्तकंयथोरगंसुप्तमबुद्धिरज्जुधीः ८ तांतीक्ष्णचित्तामतिवामचेष्टितां वीक्ष्यान्तराको

सिनी मोहितहोइके वा पूतना कूं मने न करतभई और हाथमें कमल फिरावत आई याते गोपीन ने जानी कि अपने पति नारायण के देखिवे कूं लक्ष्मी आईहै याते यशोदा रोहिणी और गोपीन ने मने न करी ६ वालकन कूं ग्रहरूप जो पूतना सो छोटे छोटे वालकन कूं ढूंढ़त अकस्मात् गोकुल में श्रीनन्दरायजी के महल में आवतभई दुष्टन के मारनवारे भगवान् भस्ममें ढकी अग्निकीसी नाई वालकरूप में अपनो तेज जिनने छिपाय राख्यो है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शय्या ऊपर सोवैंहैं तिन्हें देखतभई ७ स्थावर जंगम जीवनके अन्तर्यामी श्रीकृष्णचन्द्र पूतना कूं वालकन के मारनवारी ग्रहरूपी जानिके नेत्र मूंदतभये भगवान् के नेत्र मूंदिवे को कारण कहा कि मेरी शुद्ध दृष्टि जाके ऊपर परैगी तो याको शुद्ध मन होइ जायगो स्तननमें विष लगाय के मारिवेकूं आईहै यह मनोरथ सिद्ध जिनको न होइगो याते नेत्र मूंदिलिये आप अनन्त औरन के अन्त करनवारे श्रीकृष्णचंद्र तिनकूं गोदमें उठाय लेतभई जैसे अज्ञानीपुरुष जेवरी जानि सूते सापकूं उठाइ लेइहै ८ जैसे म्यानमें के म्यानकी तरवारि होइहै तैसे भीतरतें जाको चित्त ऊपरतें मनोहर जाकी चेष्टा ऐसी सुन्दर स्त्री पूतना नन्दरायजी के घरके भीतर आई देखि वाके तेजकों रोहिणी यशोदा चकित होयके ठाढ़ी

देखतरहीं कछु न कही ९ तहां घोर जाको रूप ऐसी पूतना श्रीकृष्णचन्द्रकूं गोदमें लैके और भयानक विष जामें लग्यो ऐसो स्तन मुखमें देतभई श्रीकृष्णचन्द्र भी क्रोध करिके दोनों हाथन ते कसिके पकरि के प्राणसहित स्तनकूं औषधरूप मानिके पीवतभये १० पूतना यह कहतभई अरे लाल ! छोड़िदे छोड़िदे वसकर वसकर ऐसे पुकारनलगी मर्मस्थलनमें पीड़ा जाके होति भई नेत्र जाके फटि गये हाथ पांव वेर वेर पटकत देहमें पसीना जाके आय गयो पुकारि के रुदन करतभई ११ पूतनाके रुदन को वड़ो शब्द भयो ता शब्द तें पर्वतन सहित पृथ्वी कँपनलगी ग्रह तारागण रसातल ये सम्पूर्ण हलनलगे और दिशानमें गर्जनाभई मानो इन्द्रके वज्रगिरिवे की शङ्काकरिके मनुष्य पृथ्वी में गिरतभये १२ दुःखित जाको शरीर प्राण जाके जातरहे ऐसी पूतना हे राजन् परीक्षित् ! मुख जाने फारिदियो हाथ पांव फैलाय दिये मरती समय कपट जाने अपनो त्यागदियो राक्षसीरूप प्रकट करिके जैसे इन्द्रके वज्रको मारो वृत्रासुर गिरो है तैसे पृथ्वी पर गिरतभई १३ हे राजन्

शपरिच्छदासिवत् ॥ वरस्त्रियंतत्प्रभयाचधर्षिते निरीक्षमाणेजननीह्यतिष्ठताम् ९ तस्मिन्स्तनंदुर्जरवीर्यमुल्वणं घोराङ्कमादायशिशोर्ददावथ ॥ गाढंकरा भ्यांभगवान्प्रपीड्यतत् प्राणैःसमंरोषसमन्वितोऽपिवत् १० सामुञ्चमुञ्चालमितिप्रभाषिणी निष्पीड्यमानाऽखिलजीवमर्मणि ॥ विवृत्यनेत्रेचरणौभुजौ मुहुः प्रस्विन्नगात्राक्षिपतीरुरोदह ११ तस्याःस्वनेनातिगभीररंहसासाद्रिर्मही द्यौश्चचालसग्रहा ॥ रसादिशश्चप्रतिनेदिरेजनाः पेतुःक्षितौवज्रनिपात शङ्कया १२ निशाचरीत्थंव्यथितस्तनाव्यसुर्व्यादायकेशांश्चरणौभुजावपि ॥ प्रसार्यगोष्ठेनिजरूपमास्थिता वज्राहतोवृत्रइवापतन्नृप १३ पतमानो पितद्देहस्त्रिगव्यूत्यन्तरद्रुमान् ॥ चूर्णयामासराजेन्द्र महदासीत्तदद्भुतम् १४ ईषामात्रोग्रदंष्ट्रास्यं गिरिकन्दरनासिकम् ॥ गण्डशैलस्तनंरौद्रं प्रकीर्णा रुणमूर्द्धजम् १५ अन्धकूपगभीराक्षं पुलिनारोहभीषणम् ॥ बद्धसेतुभुजोर्वङ्घ्रिशून्यतोयह्रदोदरम् १६ सन्तत्रसुःस्मतद्वीक्ष्य गोपागोप्यःकलेवरम् ॥ पूर्वं न्तुतन्निःस्वनितभिन्नहृत्कर्णमस्तकाः १७ बालञ्चतस्याउरसि क्रीडन्तमकुतोभयम् ॥ गोप्यस्तूर्णंसमभ्येत्य जगृहुर्जातसम्भ्रमाः १८ यशोदारोहिणी

परीक्षित् ! जा समय पूतना को देह गिरयो ता समय छः कोस के बीचमें जो वृक्ष हैं तिनको चूर्ण होतभयो १४ हलके दण्ड की वरावर भयङ्कर मुखमें जाके डाढ़ हैं और पर्वत की गुफासी जाकी नाक घोर पर्वत के समान जाके स्तन और भयानक अरुण फैले भये जाके केश हैं १५ अँधेरे कुआ की नाई आँखें जाकी वैठ गई जैसो पुल बँधो होइ तैसे हाथ पाँव जंघा जाके और शुष्क सरोवर के समान जाको उदर है १६ ऐसो भयङ्कर पूतना को देह देखि के गोप गोपीनके वड़ो भय होत भयो पहलेही वाके रुदन के शब्द तें गोप गोपीन के हृदय कान मस्तक विदीर्ण होइ गये हे १७ ता पूतना की छाती पर निर्भय श्रीकृष्णचन्द्र क्रीडा करे हैं तिन कू हरवराय के शीघ्र जाय के गोपीन ने उठाय लियो १८ सम्पूर्ण गोपी और यशोदा रोहिणी श्रीकृष्णचन्द्र कों गो-

पुच्छ को भारो दैके फूँक मारि रक्षा करत भई १६ श्रीकृष्णचन्द्र कों गोमूत्रसूं स्नान कराय के गोरजमें लुटाय गोबर लगाय करि द्वादश अंगन में केशवादि द्वादश नामन करि रक्षा करत भई २० गोपी हाथ पाँव धोइके आचमन करिके अपने अंगन में तथा करन में न्यारो न्यारो न्यास करिके बालकन को विजयन्यास करत भई २१ हे श्रीकृष्णचन्द्र ! अजन्मा भगवान् तुम्हारे चरणन की रक्षा करो मणिमान् भगवान् तुम्हारे ऊरून की रक्षा करो यज्ञ भगवान् तुम्हारे जङ्घान की रक्षा करो अच्युत भगवान् तुम्हारे कमर की रक्षा करो हयग्रीव भगवान् तुम्हारे उदर की रक्षा करो केशव भगवान् तुम्हारे हृदय की रक्षा करो विष्णु भगवान् तुम्हारी भुजान की रक्षा करो उरुक्रम भगवान् तुम्हारे मुखारविन्द की रक्षा करो ईश्वर भगवान् तुम्हारे मस्तक की रक्षा करो २२ चक्रधारी भगवान् तुम्हारे अग्रभागकी रक्षा करो गदा धारण करिके भगवान् तुम्हारे पीछे तें रक्षा करो धनुषकूं धारण करिके मधुनामा दैत्य के मारनवारे भगवान् और

भ्यांताः समंबालस्यसर्व्वतः ॥ रक्षांविदधिरेसम्यग्गोपुच्छभ्रमणादिभिः १६ गोमूत्रेणस्नापयित्वा पुनर्गोरजसाऽर्भकम् ॥ रक्षाञ्चक्रुश्चशकृताद्वादशाङ्गेपुनामभिः २० गोप्यःसंस्पृष्टसलिलाअङ्गेपुकरयोःपृथक् ॥ न्यस्यात्मन्यथबालस्य बीजन्यासमकुर्वत २१ अव्यादजोङ्घ्रिमणिमांस्तवजान्वथोरू यज्ञोऽच्युतःकटितटंजठरंहयास्यः ॥ हृत्केशवस्त्वदुरईशइनस्तुकण्ठं विष्णुर्भुजंमुखमुरुक्रमईश्वरःकम् २२ चक्र्यग्रतःसहगदोहरिरस्तुपश्चात्त्वत्पार्श्वयोर्धनुरसी मधुहाऽजनश्च ॥ कोणेषुशङ्खउरुगायउपर्युपेन्द्रस्तार्क्ष्यःक्षितौहलधरःपुरुषःसमन्तात् २३ इन्द्रियाणिहृषीकेशःप्राणान्नारायणोऽवतु ॥ श्वेतद्वीपपतिश्चित्तं मनोयोगेश्वरोऽवतु २४ पृश्निगर्भस्तुतेबुद्धिमात्मानंभगवान्परः ॥ क्रीडन्तंपातुगोविन्दः शयानंपातुमाधवः २५ व्रजन्तमव्याद्वैकुण्ठआसीनंत्वांश्रियःपतिः ॥ भुञ्जानंयज्ञभुक्पातु सर्व्वग्रहभयङ्करः २६ डाकिन्योयातुधान्यश्चकूष्माण्डायेऽर्भकग्रहाः ॥ भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षोविनायकाः २७ कोट

खड्ग धारण करनवारे अजन्मा भगवान् यह दोनों तुम्हारे दाहिने और बायें तें रक्षा करो और शङ्खकूं धारण करनवारे उरुगाय भगवान् चारों कोणन तें रक्षा करो उपेन्द्र भगवान् तिहारे ऊपर रहो तार्क्ष्य भगवान् पृथ्वी में रक्षा करो हलधर भगवान् सर्वत्र रक्षा करो २३ हृषीकेश भगवान् तुम्हारी इन्द्रियनकी रक्षा करो और नारायण भगवान् प्राणनकी रक्षा करो श्वेतद्वीप के पति भगवान् तुम्हारे चित्तकी रक्षाकरो और योगेश्वर भगवान् तुम्हारे मन की रक्षा करो २४ पृश्निगर्भ भगवान् तुम्हारी बुद्धिकी रक्षाकरो परम भगवान् तुम्हारी आत्माकी रक्षाकरो क्रीड़ा करते समय गोविन्द भगवान् तुम्हारी रक्षाकरो सोवत समय माधव भगवान् तुम्हारी रक्षाकरो २५ वैकुण्ठ भगवान् तुम्हारी चलती वेर रक्षाकरो लक्ष्मीपति भगवान् बैठते रक्षाकरो समस्त ग्रहन के भय के करनहारे यज्ञभोक्ता भगवान् भोजन समय रक्षाकरो २६ डाकिनी यातुधान और जे बालकनके ग्रहते भूत प्रेत पिशाच यक्ष राक्षस विनायक गण हैं ते २७ और कोटरा रेवती ज्येष्ठा

पूतना और मातृकानकूं आदिलैके राक्षसी हैं ते और उन्माद हैं ते और जे जे अपस्मार रोग के करनवारे देह प्राण इन्द्रियनके द्रोही २८ और जे स्वप्न में देखे उतातहैं और वृद्धग्रह बालग्रह हैं ते समस्त नाशकूं प्राप्तहोउ विष्णु भगवान् के नाम लिये तें सम्पूर्ण नष्ट होइ जाय है २९ श्रीशुकदेवजी कहै हैं या प्रकार हाथ जोरि गोपीन ने विष्णु भगवान् की प्रार्थना करि रक्षा करिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं माताकूं सौंपि दियो तब यशोदाजी ने स्तनपान कराय के श्रीकृष्णचन्द्र कूं शय्यापर पौढ़ाय दीनो ३० तबताई नन्दादिक ब्रजवासी मथुरा तें गोकुलमें आये तब मार्ग में मृत्युकूं प्राप्तभई पूतनाको देखिके बडो आश्चर्य्य मान्यो ३१ नन्दजी कहै हैं कि वसुदेवजी निश्चय कोई ऋषि है कि योगेश्वरहैं वसुदेवजी ने कही भैया तुम शीघ्र मथुरा ते गोकुलको जावो गोकुल में उत्पात होइगो सोई सोई नेत्रन ते देख्यो ३२ अब सम्पूर्ण गोकुल के मनुष्य पूतनाके शरीर कूं फरसान ते काटि काटि घरनके दूरि लकरियान में धरिके दाह करत भये ३३

रारेवतीज्येष्ठा पूतनामातृकादयः ॥ उन्मादायेह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रियद्रुहः २८ स्वप्नदृष्टामहोत्पाता वृद्धबालग्रहाश्चये ॥ सर्वेनश्यन्तुतेविष्णोर्नामग्रहणभीरवः २९ श्रीशुकउवाच ॥ इतिप्रणयबद्धाभिर्गोपीभिःकृतरक्षणाम् ॥ पाययित्वास्तनंमाता संन्यवेशयदात्मजम् ३० तावन्नन्दादयोगोपा मथुरायाव्रजंगताः ॥ विलोक्यपूतनादेहं बभूवुरतिविस्मिताः ३१ नूनंबतर्षिःसञ्जातोयोगेशोवासमासतः ॥ सएवदृष्टोह्युत्पातो यदाहानकदुन्दुभिः ३२ कलेवरंपरशुभिश्छित्वातत्तेव्रजौकसः ॥ दूरेक्षिप्त्वाऽवयवशोन्यदहन्काष्ठधिष्ठितम् ३३ दह्यमानस्यदेहस्य धूमश्चागुरुसौरभः ॥ उत्थितःकृष्णनिर्भुक्तसपद्याहतपाप्मनः ३४ पूतनालोकबालघ्नी राक्षसीरुधिराशना ॥ जिघांसयाऽपिहरयेस्तनंदत्त्वाऽऽपसद्गतिम् ३५ किंपुनःश्रद्धयाभक्त्याकृष्णायपरमात्मने ॥ यच्छन्प्रियतमंकिंनु रक्तास्तन्मातरोयथा ३६ पद्भ्यांभक्तहृदिस्थाभ्यां वन्द्याभ्यांलोकवन्दितैः ॥ अङ्गंयस्याःसमाक्रम्य भगवानपिबत्स्तनम् ३७ यातुधान्यपिसास्वर्गमवापजननीगतिम् ॥ कृष्णभुक्तस्तनक्षीराः किमुगावोनुमातरः ३८ पयांसियासामपिबत्पुत्रस्नेहस्नुतान्यलम् ॥ भगवान्देवकीपुत्रः कैवल्याद्य

जा समय पूतनाको देह जरायो तो जरते देहमें ते अगरकी सी सुगन्धि कैसो धुआं उठत भयो श्रीकृष्णचन्द्र ने याके स्तन पान किये यातें सम्पूर्ण पाप तत्काल दूर होइगये ३४ संसार के बालकन की मारनवारी रुधिरकी पीवनवारी राक्षसी पूतना भगवान् कूं मारिवेकूं आई स्तन पान करायके सुन्दर गतिकूं प्राप्त भई ३५ श्रद्धाभक्ति करिके श्रीकृष्णचन्द्र परमात्मा कूं माता अतिप्यारी वस्तु देके बहुत सुन्दर गति कूं पावैगी यामें कहा कहनो है ३६ भक्तन के हृदय में विराजें और लोकनकरिके वन्दित ऐसे जो ब्रह्मादिक देवता जिनकूं प्रणाम करें ऐसे चरणारविन्दन सूं पूतना को अङ्ग दाबि के भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र स्तन पान करत भये ३७ माताकी गति स्वर्ग है ताहि वह पूतना राक्षसी पावतभई और कहो जिन गऊन के गोपिनके स्तन को श्रीकृष्णचन्द्रने उत्तम दुग्ध पान करो वे सुन्दरगति कू प्राप्त होयें यामें कहा कहनो है ३८ मोक्ष कूं आदि लैके समस्त पदार्थन के देनवारे देवकी के पुत्र भगवान् पुत्र स्नेहतें गऊ गोपीन को दुग्ध परिपूर्ण होय के पीवत

भये ३९ श्रीकृष्णचन्द्र में पुत्रभाव माने जो गोपी हैं तिन कूं हे राजन् परीक्षित्! अज्ञानते जाकी उत्पत्ति ऐसो जो संसार सो न होइगो ४० व्रजवासी मनुष्य श्मशान के धुआं की सुगन्ध सूंघि के गोकुल। भये कि यह कहा है कहा ते आवै है ऐसे कहत कहत गोकुल कूं आवत भये ४१ गोकुलमें व्रजवासीनने पूतना को आयवो और आय के मृत्यु होइवो श्रवण करिके और कृष्ण को कल्याण श्रवण करिके नन्द ते आदि लेके व्रजवासी बड़ो आश्चर्य मानत भये ४२ हे कौरवनके कुल कूं आनन्द देनवारे राजन् परीक्षित्! उदार जिनकी बुद्धि ऐसे नन्दरायजी मथुरा तें गोकुल कूं प्राप्त होइ के पुत्र कूं गोदमें लैके बड़े आनन्द कू प्राप्त होत भये ४३ यह जो श्रीकृष्णचन्द्रको परमअद्भुत चरित पूतना को मोक्ष जो कोई श्रद्धा करिके श्रवण करै तो वा पुरुष की गोविन्द भगवान् में प्रीति होइहै ४४ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेपूतनामोक्षोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

खिलपदः ३९ तासामविरतंकृष्णे कुर्वतीनांसुतेक्षणम् ॥ नपुनःकल्पतेराजन् संसारोऽज्ञानसम्भवः ४० कटुधूमस्यसौरभ्यमवघ्रायव्रजौकसः ॥ किमिदं कुतएवेति वदन्तोव्रजमाययुः ४१ तेतत्रवर्णितंगोपैः पूतनागमनादिकम् ॥ श्रुत्वातन्निधनंस्वस्ति शिशोश्चासन्सुविस्मिताः ४२ नन्दःस्वपुत्रमादाय प्रेत्यागतमुदारधीः ॥ मूर्ध्न्युपाघ्रायपरमां मुदंलेभेकुरूद्वह ४३ यएतत्पूतनामोक्षं कृष्णस्यार्भकमद्भुतम् ॥ शृणुयाच्छ्रद्धयामर्त्यो गोविन्देलभतेरतिम् ४४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेपूतनामोक्षोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

राजोवाच ॥ येनयेनावतारेण भगवान्हरिरीश्वरः ॥ करोतिकर्णरम्याणिमनोज्ञानिचनःप्रभो १ यच्छृण्वतोऽपैत्यरतिर्वितृष्णा सत्त्वंचशुध्यत्यचिरेण पुंसः ॥ भक्तिर्हरौतत्पुरुषेचसख्यं तदेवहारंवदमन्यसेचेत् २ अथान्यदपिकृष्णस्य तोकाचरितमद्भुतम् ॥ मानुषंलोकमासाद्य तज्जातिमनुरुन्धतः ३

(उत्क्षिप्तपञ्चशकटंव्योम्नितृणावर्तगयःक्षिपन् ॥ दर्शयन्विश्वमास्येच कृष्णःक्रीडतिसप्तमे १ कृष्णार्भकसुधासिन्धुसंप्लवानन्दनिर्भरः ॥ भूयस्तदेवसंपृच्छ राजाभ्यदभिनन्दति २ सातवें अध्याय में गाड़ा को पायनसे ऊपर फेंककर और तृणावर्तको नीचे गिराकर माता को मुखमें संसार दिखाकर क्रीडा करते भये १ कृष्णजीकी बाललीलारूप अमृतके समुद्रमें स्नानकर आनन्दयुक्त राजा परीक्षित् फिर और चरित्र पूंछने को प्रारम्भ करते भये २) महाराज परीक्षित् कहै हैं कि हे प्रभो! छःप्रकार के ऐश्वर्य करिके परिपूर्ण समस्त प्राणिन के कष्टन के हरनवारे श्रीकृष्णचन्द्र जिन जिन अवतारन कूं लैके जो जो लीला करी है ते ते हमारे काननकूं रमणीय मनोहर है १ जे पुरुष श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र श्रवण करै हैं तिनके मनकी ग्लानि जाय है और अनेक प्रकारकी तृष्णा दूरि होइ जाय है शीघ्र सम्पूर्ण अन्तःकरण शुद्ध होइ है हरिमें भक्ति होइ है और हरिभक्तन ते मित्रता होइ है यातें आपकी इच्छा में आवै तो श्रीकृष्णचन्द्र को मनोहर चरित्र कहो २ याके अनन्तर मनुष्य देह धारण करि मनुष्यन की सी लीला धारण करें जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनको मनोहर अद्भुत बालचरित्र हमारे आगे वर्णन करो ३ श्रीशुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित् तें

कहैं हैं कि हे राजन्! एकसमय श्रीकृष्णचन्द्र के वर्षग्रन्थि के उत्सव को दिन प्राप्त भयो और वाही दिन जन्मनक्षत्र को आइवो भयो यातें अतिमंगल भयो ता दिन सम्पूर्ण गोपिका आवत भईं और वाजे वाजत भये गीत गान होत भये ब्राह्मणन पै स्वस्तिवाचन पढवाय के श्रीयशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्र को अभिषेक स्नान करावति भईं ४ अब नन्दरानी यशोदाजी ने अन्नादिक वस्त्र मोतिन के हार सुन्दर शृंगार करिके गौ पूजन करि ब्राह्मणन कूं दीनी और ब्राह्मणन तें स्वस्तिवाचन पढवाय स्नान करवायो ता समय निद्रा जिन के नेत्रन में झुकिआई तब तो श्रीकृष्णचन्द्र कूं हौले ते गाड़ा के नीचे पालने में नन्दरानी सुवावत भई ५ करवटे लेवे की बधाई में हर्ष जिनके मन में भयो और उदार जिनको मन ऐसी यशोदा के घर आई जे गोपी तिनकी शुश्रूषा करत पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनके रोइवो को शब्द न सुनत भई स्तन पीवे की इच्छा भई तब रोवत रोवत चरण ऊपर कू उठावत भये ६ गाड़ा के नीचे पालने में जो कृष्णचन्द्र तिनको छोटो अतिकोमल मूंगा कीसी कान्ति ऐसो जो चरणारविन्द ताकी ठोकर ते गाड़ा गिरत भयो अनेक प्रकारके रसन के भरे तावे पीतर के वासन गिरिपरे पैहा न्यारे न्यारे गिरिपरे धुरी निकसि

श्रीशुकउवाच ॥ कदाचिदौत्थानिककौतुकाप्लवे जन्मर्क्षयोगेसमवेतयोषिताम् ॥ वादित्रगीतद्विजमन्त्रवाचकैश्चकारसूनोरभिषेचनंसती ४ नन्दस्यपत्नीकृतमज्जनादिकं विप्रैःकृतस्वस्त्ययनंसुपूजितैः ॥ अन्नाद्यवासःस्रगभीष्टधेनुभिः सञ्जातनिद्राक्षमशीशयच्छनैः ५ औत्थानिकौत्सुक्यमनामनस्विनी समागतान्पूजयतीव्रजौकसः ॥ नैवाशृणोद्वैरुदितंसुतस्यसा रुदन्स्तनार्थीचरणावुदक्षिपत् ६ अधःशयानस्यशिशोरनोऽल्पकप्रवालमृद्वङ्घ्रिहतंव्यवर्त्तत ॥ विध्वस्तनानारसकुप्यभाजनं व्यत्यस्तचक्राक्षविभिन्नकूबरम् ७ दृष्ट्वायशोदाप्रमुखाव्रजस्त्रियऔत्थानिकेकर्मणियाःसमागताः ॥ नन्दादयश्चाद्भुतदर्शनाकुलाःकथंस्वयंवैशकटंविपर्यगात् ॥ इतिब्रुवन्तोऽतिविवादमोहिता जनाःसमन्तात्परिवव्रुरार्तवत् ८ ऊचुरव्यवसितमतीन्गोपान्गोपीश्चबालकाः ॥ रुदताऽनेनपादेन क्षिप्तमेतन्नसंशयः ९ नतेश्रद्दधिरेगोपा बालभाषितमित्युत ॥ अप्रमेयंबलंतस्य बालकस्यनतेविदुः १० रुदन्तंसुतमादाययशोदाग्रहशङ्कि

गई जुआ टूटि गयो ७ यशोदा ते आदिलेके जो व्रजकी स्त्री हैं ते और करवट देवेके उत्सवमें आई हैं ते और नन्दजीतें आदि लैके जे व्रजवासी हैं ते आश्चर्य कूं देखिके व्याकुल भये कि याप हीते गाड़ा कैसे उलटि परयो इसप्रकार विषाद में मोहित मनुष्य चारोंओर पीडित की नाईं बोलते भये ८ नहीं है निश्चय मन जिनको ऐसे उन गोप गोपीन तें श्रीकृष्णचन्द्र के समीप के बालक कहन लागे कि तुम क्यों सन्देह करोहौ रोवत रोवत या श्रीकृष्णचन्द्र ने पांव की ठोकर मारी याते यह गाड़ा उलटिके गिरि परयो यामें कुछ सन्देह मति जानो ९ बालक जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनके अनन्त बलकूं व्रजवासी नहीं जानैं हैं याते बालकन की बात को विश्वास न करत भये और कहत भये कि ये बालक हैं कहाजानैं कहो बालककी ठोकर ते गाड़ा कैसे गिरि परयो १० पालने में रोवत जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं गोदमें लैके यशोदाजीने जानी कि आज या घरी कोई खोंटो ग्रह आयो यह शंका मानि के ब्राह्मणन कूं बुलाय स्वस्तिवाचन कराय स्तन प्यायो जो

स्तन आछे पिये तो जानिये दरयो महीं ११ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के प्रभाव को न जानिके व्रजवासीन ने ब्राह्मणन के कहे तें आठदिशान में बलिदान कूं करिके सम्पूर्ण वस्तु धरिके गाडा धरि दियो ब्राह्मणनने नवग्रहादिकन को होम कियो और दही अक्षत कुश जल ते गाड़ा की पूजाकरी प्रेमी व्रजवासीन को अन्न खायके ब्राह्मण प्रेमी होयगये जो सम्पूर्ण गाड़ाकी पूजा करी १२ निन्दा झूठ पाखण्ड ईर्षा और हिंसा गर्व ये जिनके नहीं हैं और सत्यवादी ऐसे जो ब्राह्मण तिनके आशीर्वाद निष्फल नहीं होइ हैं १३ या प्रकार मनमें विचार करि नन्दरायजी श्रीकृष्णचन्द्रकूं गोद में लैके जल में पवित्र ओषधि डरवायके सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद के मन्त्र उत्तम ब्राह्मणन ते पढ़वायके अभिषेक करावत भये १४ स्वस्तिवाचन कराय और अग्नि में होम कराय के नन्दरायजी और सम्पूर्ण गोप गोपी सावधान होइके बड़े जिनमें गुण ऐसे अन्नको दान ब्राह्मणन को करतभये १५ बहुत सुन्दर जिनमें गुण ऐसी बहुत गौ वस्त्रनकूं उढ़ाय फूलनकी माला तथा सुवर्ण ते शृंग मढ़ाय सोनेकी माला पहिराय ऐसी बहुत गऊ पुत्र के कल्याण के निमित्त देतभये ब्राह्मण आशीर्वाद देतभये १६ मन्त्रन के जानिवेवारे योग्य ब्राह्मणन ने जो जो आशी-

ता ॥ कृतस्वस्त्ययनंविप्रैः सूक्तैःस्तनमपाययत् ११ पूर्ववत्स्थापितंगोपैर्बलिभिःसपरिच्छदम् ॥ विप्राहुत्वाऽर्चयाञ्चक्रुर्दध्यक्षतकुशाम्बुभिः १२ येऽसूयाऽनृतदम्भेर्ष्याहिंसामानविवर्जिताः ॥ नतेषांसत्यशीलानामाशिषोविफलाःकृताः १३ इतिबालकमादाय सामर्ग्यजुरुपाकृतैः ॥ जलैःपवित्रौषधिभिरभिषिच्य द्विजोत्तमैः १४ वाचयित्वास्वस्त्ययनं नन्दगोपःसमाहितः ॥ हुत्वाचाग्निंद्विजातिभ्यः प्रादादन्नंमहागुणम् १५ गावःसर्वगुणोपेता वासःस्रग्रुक्ममालिनीः ॥ आत्मजाभ्युदयार्थाय प्रादात्तेचान्वयुञ्जत १६ विप्रामन्त्रविदोयुक्तास्तैर्याःप्रोक्तास्तथाशिषः ॥ तानिष्फलाभविष्यन्ति नकदाचिदपिस्फुटम् १७ एकदारोहमारूढं लालयन्तीसुतंसती ॥ गरिमाणंशिशोर्वोढुं नसेहेगिरिकूटवत् १८ भूमौनिधायतंगोपी विस्मिताभारपीडिता ॥ महापुरुषमाध्यौ जगतामासकर्मसु १९ दैत्योनाम्नातृणावर्तः कंसभृत्यःप्रणोदितः ॥ चक्रवातस्वरूपेण जहारासीनमर्भकम् २० गोकुलंसर्वमावृण्वन्मुष्णंश्चक्षूंषि

र्वाद दिये ते ताही प्रकार होतभये ब्रह्मवाक्य किसी समय निष्फल नहीं होइ हैं यह बात प्रकट है १७ एक दिन नन्दरानी श्रीकृष्णचन्द्र को लाड़ करेंहीं ता समय श्रीकृष्णचन्द्र ने पर्वतकी समान अपने शरीरको बोझ बढ़ायो सो यशोदाजी पै सम्हारयो न गयो बोझ बढ़ायबे को कारण यह है कि श्रीकृष्णचन्द्र ने जानी कि जो मैं माताकी गोद में रहूंगो तो यह उपस्थित जो तृणावर्त है सो मेरी माता सहित उठायके ले जायगो याते मोकूं कष्टहोउ तो होउ मेरे कारण मेरी माताकूं कष्ट न होय १८ जब तो यशोदाजी अतिआश्चर्य्य को प्राप्त होयके और बोझतें अतिपीड़ित होयके श्रीकृष्णचन्द्र कू पृथ्वी में बैठाय के नारायण को ध्यान करतभई और कहतभई कि आज कृष्ण में बोझ क्यों भयो ऐसे विचारिके घरके काममें लगि गई १९ इतनेही में कंसको टहलुवा कंसको पठायो तृणावर्त जाको नाम ऐसो दैत्य पवनके बबूरे को रूप धरिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं उड़ाय कै लैगयो २० सम्पूर्ण गोकुल धूरिते ढकिदियो मनुष्यन के धूरिते नेत्र मुंदिगये और जाके घोर

शब्द ते दिशा विदिशा मुँदतभई २१ दो घड़ीताईं चढ़ो जो रेत ताके अन्धकार ते सम्पूर्ण गोकुल ढकिगयो अब जहाँ श्रीयशोदाजी श्रीकृष्णकूं बैठारि गईहीं तहाँ आयके देखैं तो हैंई नाहीं २२ तृणावर्त ने ककरी ठीकरीनकी वर्षाकरी तासूं पीड़ितभये गोकुलवासी मोहकूं प्राप्त होइके अपने आत्माकूं न देखत भये २३ या प्रकार महातीक्ष्ण पवन चली धूर बरसी ता पीछे कछु दीखिवे लग्यो तब बल करिके रहित जो माता यशोदा हैं सो करुणा जामें होइ आवै ऐसे प्यारे अपने पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी सुधि करिके रोवतभई और अतिदुःखित होइके पृथ्वी में गिरि परीं जैसे बछरा जाको मरिजाय वह गौ रम्हावै है तैसे यशोदा पुकारत भई २४ ता समय यशोदाजीको रुदन श्रवण करिके अति पीड़ित वहुत व्याकुल भई नेत्रन में अश्रुपात जिनके आयगये ऐसी जो गोपिका सो श्रीकृष्णचन्द्र के देखे विना सम्पूर्ण रुदन करतभई इतनेही में धूरि वर्षतो पवन थमिगयो २५ तृणावर्त्त बबूरेको रूपधरिके श्रीकृष्ण कू आकाशताईं दूरि लै गयो जब देहको

रेणुभिः ॥ ईरयन्सुमहाघोरशब्देनप्रदिशोदिशः २१ मुहूर्त्तमभवद्गोष्ठं रजसातमसावृतम् ॥ सुतंयशोदानापश्यत्स्वयंन्यस्तवतीयतः २२ नापश्यत्कश्चनात्मानं परंचापिविमोहितः ॥ तृणावर्त्तनिसृष्टाभिः शर्कराभिरुपद्रुतः २३ इतिखरपवनचक्रपांसुवर्षे सुतपदवीमबलाऽविलक्ष्यमाता ॥ अतिकरुणमनुस्मरन्त्यशोचद्भुविपतितामृतवत्सकायथागौः २४ रुदितमनुनिशम्यतत्रगोप्योभृशमनुतप्तधियोऽश्रुपूर्णमुख्यः ॥ रुरुदुरनुपलभ्यनन्दसूनुं पवनउपारतपांसुवर्षवेगे २५ तृणावर्तःशान्तरयोवात्यारूपधरोहरन् ॥ कृष्णंनभोगतोगन्तुं नाशक्नोद्भूरिभारभृत् २६ तमश्मानंमन्यमानआत्मनोगुरुमत्तया ॥ गलेगृहीतउत्स्रष्टुंनाशक्नोदद्भुतार्भकम् २७ गलग्रहणनिश्चेष्टो दैत्योनिर्गतलोचनः ॥ अव्यक्तरावोन्यपतत्सहबालोव्यसुर्व्रजे २८ तमन्तरिक्षात्पतितंशिलायां विशीर्णसर्व्वावयवंकरालम् ॥ पुरंयथारुद्रशरेणविद्धं स्त्रियोरुदत्योददृशुःसमेताः २९ प्रादायमात्रेप्रतिहृत्यविस्मिताः कृष्णञ्चतस्योरसिलम्बमानम् ॥ तंस्वस्तिमन्तंपुरुषादनीतं विहायसामृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ गोप्यश्चगोपाःकिलनन्दमुख्या लब्ध्वापुनःप्रापुरतीवमोदम् ३० अहोबतात्यद्भुतमेषरक्षसा बा

वल घटिगयो सम्पूर्ण जगत् जिन भगवान् के हृदय में ऐसे कृष्ण तिनके बोझ कूं सहि न सक्यो २६ श्रीकृष्णचन्द्र तृणावर्त के गरे में मूठी बांधिके लटकिगये पर्व्वत समान कण्ठ में लटकिवे को जाके बोझभयो ऐसे अद्भुत बालक श्रीकृष्णचन्द्र जिनकी मूठी छुड़ाइ न सक्यो २७ कण्ठके घुटे तें चेष्टा जाकी हतभई नेत्र जाके निकसिपरे बोल जाको बन्द होयगयो प्राण जाके जात रहे ऐसो वह तृणावर्त दैत्य श्रीकृष्णचन्द्र सहित गोकुल में गिरतभयो २८ जैसे शिवजी के बाणको मारयो त्रिपुरदैत्य गिरयो तैसे आकाश तें शिलाके ऊपर गिरिपरयो अंग जाको टूटिगयो महाभयंकर रूप जाको ऐसो तृणावर्त्त ताकूं देखिवे कूं सम्पूर्ण स्त्री जुरिके रुदन करती आवतीभई २९ ता तृणावर्त्त के ऊपर छाती पै श्रीकृष्णचन्द्र निर्भय खेलैं हैं तिनकूं उठाय के गोपिका यशोदाजी कूं देतभई और बड़े आश्चर्य कों मानिके यह कहतभई कि या बालक कू उठाय के राक्षस आकाशमें लैगयो हो सो यह बालक मृत्यु के मुखमें ते फिरि निकसि आयो है नन्दरायजी मुख्य जिनमें ऐसे गोप और गोपिका सो सम्पूर्ण फिरि श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्राप्त होइके निश्चय बड़े आनन्द कूं प्राप्तहोतभये ३० अहो बड़ो आश्चर्य्य है देखो या राक्षसने या बालक के मारिवे में कछु कसरि नाहीं

राखी परन्तु भगवान् ने याकूं बचायो और यह दुष्ट आपुही मरिगयो और यह बालक साधुतुल्य है याते या दुष्टते छूटिआयो ३१ देखो हमने कहा कौन तप कियो है कि भगवान् की पूजा करी है अथवा कुंआ बाउरी तालाव खुदवाये हैं कि यज्ञकरे हैं कि दानकरे हैं अथवा प्राचीन ते स्नेह करयो है जिन पुण्यन के प्रताप ते मृत्युको प्राप्तभयो श्रीकृष्ण अपने बन्धून कूं आनन्द देवेके कारण फिरि आय गयो ३२ नन्दरायजी गोकुल में बहुत से उत्पातन कूं देखिके मनमें बडो आश्चर्य मानो कि वसुदेवजी ने प्रथम कही ही गोकुल में बड़ो उत्पात आवै है वसुदेवजी के वचन की सुधि करत भये ३३ एकसमय यशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनी गोद में बैठारि के मोह में अति निमग्न होइके दुग्ध तें स्रवे जो स्तन तिनकूं प्यावेहीं ३४ कछु एकस्तन पियो पाछे माता यशोदाजी अपनी मंद मुसकानि सहित श्रीकृष्णचन्द्र के मुख के ऊपर अंगुरिया धरिके प्यावनलगीं इतनेही में हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र ने जम्हुआई लीनी तासमय मुखारविन्द में यह देखतभई ३५ आकाश ध्यावा पृथ्वी तारागण दिशा सूर्य चन्द्रमा अग्नि पवन समुद्र द्वीप पर्वत नदी वन स्थावर जंगम सम्पूर्ण प्राणी देखतभई ३६ मृगके बच्चा कैसे हैं नेत्र जिनके ऐसी

लोनिवृत्तिंगमितोभयगात्पुनः ॥ हिंस्रःस्वपापेनविहिंसितःखलः साधुःसमत्वेनभयाद्विमुच्यते ३१ किंनस्तपश्चीर्णमधोक्षजार्चनं पूर्तेष्टदत्तमुतभूतसौहृदम् ॥ यत्संपरेतःपुनरेवबालको दिष्ट्यास्वबन्धून्प्रणयन्नुपस्थितः ३२ दृष्ट्वाऽद्भुतानिबहुशोनन्दगोपोबृहद्वने ॥ वसुदेववचोभूयो मानयामासविस्मितः ३३ एकदाऽङ्कमादाय स्वाङ्कमारोप्यभामिनी ॥ प्रस्नुतंपाययामास स्तनंस्नेहपरिप्लुता ३४ पीतप्रायस्यजननी सातस्यरुचिरस्मितम् ॥ मुखंलालयतीराजञ्जृम्भतोददृशेइदम् ३५ खंरोदसीज्योतिरनीकमाशाःसूर्येन्दुवह्निश्वसनाम्बुधींश्च ॥ द्वीपान्नगांस्तद्दुहितॄर्वनानि भूतानियानिस्थिरजङ्गमानि ३६ सावीक्ष्यविश्वंसहसा राजन्संजातवेपथुः ॥ संमील्यमृगशावाक्षी नेत्रेआसीत्सुविस्मिता ३७॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेतृणावर्तमोक्षोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ गर्गःपुरोहितोराजन् यदूनांसुमहातपाः ॥व्रजंजगामनन्दस्य वसुदेवप्रचोदितः १ तंदृष्ट्वापरमप्रीतः प्रत्युत्थायकृताञ्जलिः ॥ आ

यशोदाजी हे राजन् परीक्षित् ! सम्पूर्ण विश्व कूं तत्काल श्रीकृष्णचन्द्र के मुखमें देखिके डर के मारे कंपायमान होइके नेत्र मूंदिलिये और बड़ो आश्चर्य मानत भई कि यह बालक श्रीकृष्णचन्द्र के मुखमें मैंने कहा आलजञ्जाल देख्यो ३७ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेतृणावर्तमोक्षोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(अष्टमेनामकर्मास्यबालक्रीडाकुतूहले॥ मृद्भक्षणादियोगेचविश्वरूपंनिरूप्यते१ विश्वरूपादिवालस्यनिशम्याशङ्किनःपितुः॥ नामकृद्गर्गवाक्येननिजंतत्त्वमसूसुचत् २ आठयें अध्यायमें नामकर्म और बालक्रीड़ा के कुतूहल में मट्टी के खाने आदिके योगमें विश्वरूप निरूपण है १ विश्वरूप आदिक सुनकर शंकायुक्त पिताको नाम करनेवाले गर्गजीके वाक्य से अपना तत्त्व श्रीकृष्णजी सूचित करतेभये २) श्रीशुकदेवजी कहैं है कि हे राजन् परीक्षित् ! वड़े तपस्वी यादवनके पुरोहित श्रीगर्गाचार्य सो वसुदेवजी के पठाये मथुराजी ते गोकुल कूं जातभये १ नन्दरायजी श्रीगर्गाचार्य कूं

देखिके प्रसन्नहोतभये और उठिके हाथ जोरि प्रथम प्रणाम करिके भगवान् के तुल्य जानिके पूजन करतभये २ गर्गाचार्य्यजी कूं सुन्दर आसन पै बैठारि के भोजन करायो और मधुर मधुर वाक्य सुनाये आनन्ददैके नन्दरायजी यह बोले अहो ब्रह्मन्! आपतो परिपूर्णहौ कहो आपको कहा पूजनकरें ३ हे भगवन्! दीन जिनके चित्त ऐसे गृहस्थ पुरुषनके कल्याण करिवे के निमित्त तुम सरीखे महान् अपने आश्रम ते घरजायहैं और उनकूं कछु प्रयोजन नहीं है ४ देखिवे सुनिवेमें नहीं आवै ऐसो जो ज्ञान ताको जनावनवारो और सूर्य्य चन्द्रमा नक्षत्रादिकन को प्रतिपादन करनवारो ज्योतिषशास्त्र तुमने कह्यो है जाके पढ़ेते पुरुष अगिले पिछले जन्मकी बात जानिलेइ हैं ५ ब्रह्मवेत्तान में श्रेष्ठ जो तुमहो सो हमारे पुत्रन को नामकरणादि संस्कार करो तब गर्गाचार्य्यजी ने कही तुम्हारे गुरु आचार्य्य होईं तिनते क्यों न करायलेउ तब नन्दजी बोले कि महाराज ये ब्राह्मण मनुष्यनके जन्मतेही गुरु कहे हैं ६ अब श्रीगर्गाचार्य्य कहैं हैं कि मैं यादवन को पुरो-

नर्चाधोक्षजधियाप्रणिपातपुरःसरम् २ सूपविष्टंकृतातिथ्यं गिरासूनृतयामुनिम् ॥ नन्दयित्वाब्रवीद्ब्रह्मन् पूर्णस्यकरवामकिम् ३ महद्विचलनंनॄणां गृहिणांदीनचेतसाम् ॥ निःश्रेयसायभगवन् कल्पतेनान्यथाक्वचित् ४ ज्योतिषामयनंसाक्षाद्यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् ॥ प्रणीतंभवतायेन पुमान्वेदपरावरम् ५ त्वंहिब्रह्मविदांश्रेष्ठः संस्कारान्कर्तुमर्हसि ॥ बालयोरनयोर्नॄणां जन्मनाब्राह्मणोगुरुः ६ ॥ गर्गउवाच ॥ यदूनामहमाचार्य्यः ख्यातश्चभुविसर्वदा ॥ सुतंमयासंस्कृतंते मन्यतेदेवकीसुतम् ७ कंसःपापमतिःसख्यं तवचानकदुन्दुभेः ॥ देवक्याअष्टमोगर्भोनस्त्रीभवितुमर्हति ८ इतिसंचिन्तयञ्छ्रुत्वा देवक्यादारिकावचः ॥ अपिहन्तागताशङ्कस्तर्हितन्नोऽनयोभवेत् ९ ॥ नन्दउवाच ॥ अलक्षितोऽस्मिन्रहसि मामकैरपिगोव्रजे ॥ कुरुद्विजातिसंस्कारं स्वस्तिवाचनपूर्वकम् १० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंसंप्रार्थितोविप्रः स्वचिकीर्षितमेवतत् ॥ चकारनामकरणं गूढोरहसिबालयोः ११ ॥ गर्गउवाच ॥ अयंहिरोहिणीपुत्रो रमयन्सुहृदोगुणैः ॥ आख्यास्यतेरामइति बलाधिक्याद्बलंविदुः ॥ यदूनामपृथग्भावात् सङ्कर्षणमुशन्त्युत १२ आसन्वर्णास्त्रयोह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगंतनूः ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगतः १३ प्रागयंवसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः ॥ वासुदेवइतिश्रीमानभिज्ञाःसंप्रचक्षते १४

हित समस्त पृथ्वी पै विख्यात हूं मैं जो तुम्हारे पुत्रनको नाम धरूंगो तौ दुष्ट जाकी बुद्धि ऐसो कंस इन बालकनकूं देवकी के पुत्र मानैगो और तुम्हारी वसुदेवजी की परस्पर मित्रता भी है या कारण ते, औरहू एक बात है देवकी के आठवें गर्भ में कन्या होइवे की नहींहै ७। ८ और देवकी की कन्याकी बात सुनी है दूसरी यह वार्त्ता सुनेगो कि गर्गाचार्य्य ने नाम धर्‍यो है याते निश्चय वसुदेवको पुत्रहै यह शङ्का मानिकै जो वह कंस या बालक कूं आय मारे तो बड़ो अनर्थ होइगो ९ मेरे व्रजवासीनके देखिवे में नहींआवै एकान्त गऊनके खिरक में बैठिके स्वस्तिवाचन पढ़िके द्विजनको संस्कार पुत्रनको नाम धरिदेउ १० अब शुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! या प्रकार नन्दजीने प्रार्थनाकरी तो आपही करो चाहैं सो एकान्तमें गर्गाचार्य्यजी छिपिके नामकरण करतभये ११ यह रोहिणी को पुत्र अपने गुणन करि सुहृदन कूं रमावैगो याते याको राम नाम होइगो बल अधिक होइगो याते बलदेव नाम होइगो बिछुरे यादवनकूं मि-

लावैगो याते संकर्षण कहैंगे १२ और या बालक के तीन रंग होत भये युग युगमें जाने रूप धर्यो है सत्ययुग में याको शुक्लरूपहो त्रेता में लाल वर्णहो द्वापर में अलसी के पुष्प कैसो रंगहै अब इन्द्र नीलमणिकी नाई श्यामसुन्दर रूप धारण कर्योहै १३ काहूसमय नन्दरायजी यह तुम्हारोपुत्र पहले वसुदेवजी के भी जन्मलेतभयो है याते वासुदेव या प्रकार विवेकी जन याकूं कहैं हैं १४ तुम्हारे पुत्र के गुण कर्मनके अनुसार बहुत नाम है और रूपभी बहुत हैं तिनकूं मैं नहीं जानूं हूं और पुरुष नहीं जानैहैं १५ गौवनकूं और गोपीनकूं और तुमकूं आनन्ददेनवारो तुम्हारो पुत्र होइगो और नन्दरायजी तुम्हारे ऊपर बड़े बड़े कष्टआयके प्राप्त होईगे तिनकूं याकी कृपाते सहजमें तरि जावोगे १६ हे व्रजराज! पहिले इस बालक ने पृथ्वीपै दुष्ट चोरन करि पीड़ित जो साधु महातमा तिनकी रक्षाकरी १७ और ये ऐश्वर्य्यवान् पुरुष पुत्रन में प्रीति करै है तिनकू दुष्टशत्रु नहीं सतावैं हैं जैसे विष्णु भगवान् जिनकी सहाय करनवारे ऐसे जे देवता तिनकूं असुर नहीं

बहूनिसन्तिनामानि रूपाणिचसुतस्यते ॥ गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहंवेदनोजनाः १५ एषवःश्रेयआधास्यद्गोपगोकुलनन्दनः ॥ अनेनसर्व्वदुर्गाणियूयमञ्जस्तरिष्यथ १६ पुराऽनेनव्रजपते साधवोदस्युपीडिताः ॥ अराजकेरक्ष्यमाणाजिग्युर्दस्यून्समेधिताः १७ यएतस्मिन्महाभागाः प्रीतिंकुर्वन्तिमानवाः ॥ नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः १८ तस्मान्नन्दात्मजोऽयंते नारायणसमोगुणैः ॥ श्रियाकीर्त्याऽनुभावेन गोपायस्वसमाहितः १९ इत्यात्मानंसमादिश्य गर्गेचस्वगृहंगते ॥ नन्दःप्रमुदितोमेने आत्मानंपूर्णमाशिषाम् २० कालेनव्रजताऽल्पेन गोकुलेरामकेशवौ ॥ जानुभ्यांसहपाणिभ्यां रिङ्गमाणौविजह्रतुः २१ तावङ्घ्रियुग्ममनुकृष्यसरीसृपन्तौ घोषप्रघोषरुचिरंव्रजकर्दमेषु ॥ तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्यलोकंमुग्धप्रभीतवदुपेयतुरन्तिमात्रोः २२ तन्मातरौनिजसुतौघृणयास्नुवन्त्यौ पङ्काङ्गरागरुचिरावुपगुह्यदोर्भ्याम् ॥ दत्त्वास्तनंप्रपिबतोःस्ममुखंनिरीक्ष्यमुग्धस्मिताल्पदशनंययतुःप्रमोदम् २३ यर्ह्यङ्गनादर्शनीयकुमारलीलावन्तर्व्रजेतदबलाःप्रगृहीतपुच्छैः ॥ वत्सैरितस्ततउभावनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्यउज्झितगृहाजहृपुर्हसन्त्यः २४ शृङ्ग्यग्नि

सतावैं हैं १८ हे नन्द! तुम्हारो यह पुत्र गुणन करिके कीर्त्ति करिके प्रभाव करिके नारायणकी समानहै सावधान होइके याकी तुम रक्षाकरो १९ या प्रकार श्रीकृष्ण के गुणनकूं गर्गाचार्यजी नन्दरायजीतें वर्णन करिके अपने घरकूं जातभये उनके गये पीछे नन्दजी आनन्दयुक्त होयके मनोरथनकरि अपने आत्माकूं परिपूर्ण मानतभये २० अब कुछ थोड़ेदिन व्यतीतभये तब श्रीगोकुल में श्रीकृष्णचन्द्र तथा बलदेवजी दोऊ भैया हाथ टेकि के घुटुवन चलिवेकी लीला करत भये २१ जा समय श्रीकृष्ण बलदेव दोनों भैया व्रजकी कीच में विचरैं हैं ता समय वह पांवनकी पैंजनी जाकी भनकार को सुन्दर शब्द सुनिके श्रीयशोदाजी और रोहिणीजी बड़े आनन्दकू प्राप्त होतभई और जो कोई रस्तागीर पुरुष निकसै है तो ताही के पीछे घुटुवन ते चलैं निकसै हैं जब वह पुरुष इनके साहूं देखै है तब डरपिके अपनी मातान के पास भजि आवे हैं २२ माता यशोदा रोहिणी श्रीकृष्ण व बलदेव कूं देखैहैं कहां तो व्रजकी कीचमें लपिटि रहे हे और कहां प्रसाद की केशर जिनके अंगमें लागि रही है तिन पुत्रनकूं पुचकारतभई और स्नेह ते स्तन जिनके दूध ते खसि आये ऐसी माता हाथन तें उठाय छाती तें लगाय स्तन देके पिलावती भई स्तन पीवें

जा समय व्रजके मध्य गोपीन के देखिवे लायक श्रीकृष्ण
जो श्रीकृष्ण बलदेव तिनके मुख में भोरी मुसिकानि और छोटी छोटी दतुरियां ता मुखारविन्द कूं देखिके आनन्द कूं प्राप्त होत भई २३ जा समय व्रजके मध्य गोपीन के देखिवे लायक श्रीकृष्ण
बलदेव बाललीलान कूं करतभये कहा बाललीला करतभये घुटुवन चलते वछरानकूं आयके पकरि लेयँहैं तब वछरा उठिके भजे हैं तब उनकी पूंछ कूं पकरे लोटत चले जायहै या प्रकारकी
लीला वे गोपी देखिके घरके कामनकू छोड़ि २ हँसती भई आनन्दकूं प्राप्त होत भई २४ माता यशोदा रोहिणी अतिचलायमान खेलते जो श्रीकृष्ण बलदेव तिन पुत्रनकूं गऊ बैल अग्नि बन्दर
तरवार जल पक्षी काटेनतें रोंकि २ बचावति फिरैं और घरके काम काज न करि सकैं अतिचञ्चल चलायमान उनको चित्त होतभयो २५ हे राजन् परीक्षित्! व्रजमें राम कृष्ण दोऊ भैया थो-
ड़ेही दिनन में घोंटू घिसे नहीं परन्तु चरणनते अनायासपूर्व्वक चलतभये २६ पांवन तें चले पीछे श्रीकृष्ण बलदेवजी अपनी बराबरी के व्रजवासीनके बालकनकूं संगलैकै क्रीड़ाकरि गोपीन कू
आनन्द देतभये २७ गोपी श्रीकृष्णचन्द्रकी बाललीला की चपलता देखिके सम्पूर्ण जुरिमिलिआई श्रीकृष्णकी माता यशोदाजी तिनकू सुनाय के यह कहनलगीं २८ अहो यशोदाजी! तुम अ-

शेकातआपतुरलंमनसोऽनवस्थाम् २५ कालेना
दंष्ट्र्यसिजलद्विजकण्टकेभ्यः क्रीडापरावतिचलौस्वसुतौनिषेद्धुम्॥ गृह्याणिकर्त्तुमपियत्रनतज्जनन्यौ शेकातआपतुरलंमनसोऽनवस्थाम् २५ कालेना
ल्पेनराजर्षे रामःकृष्णश्चगोकुले॥ अघृष्टजानुभिःपद्भिर्विचक्रमतुरञ्जसा २६ ततस्तुभगवान्कृष्णो वयस्यैर्व्रजबालकैः॥ सहरामोव्रजस्त्रीणां चिक्रीडे
जनयन्मुदम् २७ कृष्णस्यगोप्योरुचिरं वीक्ष्यकौमारचापलम्॥ शृण्वन्त्याःकिलतन्मातुरितिहोचुःसमागताः २८ वत्सान्मुञ्चन्क्वचिदसमयेक्रोशसञ्जा
तहासः स्तेयंस्वाद्वत्त्यथदधिपयःकल्पितैःस्तेययोगैः॥ मर्कान्भोक्ष्यन्विभजतिसचेन्नात्तिभाण्डंभिनत्ति द्रव्यालाभेसगृहकुपितोयात्युपक्रोश्यतोकान्
२९ हस्ताग्राह्येरचयतिविधिंपीठकोलूखलाद्यैश्छिद्रंह्यन्तर्निहितवयुनःशिक्यभाण्डेषुतद्वित्॥ ध्वान्तागारेधृतमणिगणंस्वाङ्गमर्थप्रदीपं कालेगोप्योयर्हि
गृहकृत्येषुसुव्यग्रचित्ताः ३० एवंधार्ष्ट्यान्युशतिकुरुतेमेहनादीनिवास्तौ स्तेयोपायैर्विरचितकृतिःसुप्रतीकोयथास्ते॥ इत्थंस्त्रीभिःसभयनयनश्रीमुखालो

तहा यशोदाजी कहैहैं अरी तुम्हारे
पने पुत्रकूं बर्जलीजो हमारे घरन में आइके गऊ दुहन नहीं पावैंहैं तासूं पहलेही वछरान कूं छोडिदेइहैं वछरा दूध पीजायँ हैं दुहनवारे मूंड मारिके चलेजायँ हैं तहा यशोदाजी कहैहैं अरी तुम्हारे
घर जाय तब याकूं तुम डाटि दियो करो यह वचन यशोदाजी को गोपिका श्रवण करिके कहतीभई कि जब हम याहि डाँटैं हैं तब यह हँसिदेइ हैं याकी हांसी देखिके हमहू कूं हाँसी आयजाय है
और यह बालक चोरी के उपाय ते दूध दही स्वाद ते खायजायहै और आपखाइके वन्दरनकूं खवावै और बन्दर न खायँ तो जानिकै दूध दही घीके चीकने वासनन कूं फोरि डारै और कदा-
चित् याके हाथ दही माखन न लगैहै तब क्रोधकरि यह कहैहै कि याके घरमें आगि लागिजावो फिरि पलकान पै सोवत जो हमारे बालक तिनकूं रुवाय के चलयो जायहै २९ और जो ऊंचे
छीकेनपै धरै जहां कि याके हाथ नहीं आवै तब पीढ़ा मोढ़ा ऊखरी इत्यादिकन कूं धरिकै चुरावने के उपाय रचै है और छीकेनपै धरे जो वासन तिनमें छेद करि देइ है और या वासनमें मीठो
दधि है यह जाने है तामें छेदहु माफिक करै वड़ो छोटो न करै और जो हम अँधेरे घरमें दही माखन धरैं तो याके गहनेनमें हीरामणि लगेहैं तिनको चांदनो होइजायहै यशोदाजी कहनलगीं कि

गहनो मैं उतारि लेउँगी तहां कहै है कि याके अंगको प्रकाश कैसो है यावत्पर्य्यन्त हम घरमें बैठेरहैं हैं तावत्पर्य्यन्त आवै तो देखिके भाजिजाय जब हम घरके काममें लगैं तब आइ घुसैहै ३०
कबहूं हम आयके कहै कि घरमें चोर है तब कहै है कि तुमहीं चोरहो मै तो घरको मालिक हूं ऐसे हँसिके बात करै है और हमारे लिपे पुते घरनमें हगिजायहै मूतिजाय है सब दिन चोरीके उपायमें
फिरयो करै है अब देखो तुम्हारे आगे गरीब सों ठाढ़ो है या प्रकार गोपीनने डरपायो ता समय भयसंयुक्त नेत्र तिनमें श्रीमुखकी शोभा देखिबे के निमित्त श्रीयशोदाजी ते आयके गोपी उलाहनो
देत भई तब श्रीयशोदाजी ने हँसि दियो श्रीकृष्णकूं डाट्यो नहीं ३१ एकसमय बलदेवजी ते आदिलैके गोपन के बालक क्रीड़ा करतरहे तहां जाय श्रीकृष्णचन्द्र मृत्तिका खातभये तब सम्पूर्ण
बालकन ने कही कि आज कृष्णकूं मय्यापै पिटवावेंगे और यह कहैंगे मैयाजी आज श्रीकृष्णचंद्र ने माटी खाई है यह विचार करत सम्पूर्ण बालक बलदेवजी सहित श्रीकृष्णचन्द्र की माता ते
कहतभये ३२ तब हितकी चाहनवारी श्रीकृष्णकी माता यशोदा ने श्रीकृष्णकूं हाथ पकरि के डरपायो तब डरके मारे चंचल नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्ण तें यह बोली ३३ हे चपलगात्र चंचल!

किनीभिर्व्याख्यातार्थप्रहसितमुखीनह्युपालब्धुमैच्छत् ३१ एकदाक्रीडमानास्ते रामाद्यागोपदारकाः ॥ कृष्णोमृदंभक्षितवानितिमात्रेन्यवेदयन् ३२
सागृहीत्वाकरेकृष्णमुपालभ्यहितैषिणी ॥ यशोदाभयसम्भ्रान्तप्रेक्षणाक्षमभाषत ३३ कस्मान्मृदमदान्तात्मन् भवान्भक्षितवान्रहः ॥ वदन्तितावकाह्ये
ते कुमारास्तेऽग्रजोऽप्ययम् ३४ नाहंभक्षितवानम्ब सर्वेमिथ्याभिशंसिनः ॥ यदिसत्यगिरस्तर्हि समक्षंपश्यमेमुखम् ३५ यद्येवंतर्हिव्यादेहीत्युक्तःसभग
वान्हरिः ॥ व्यादत्ताव्याहतैश्वर्यः क्रीडामनुजबालकः ३६ सातत्रददृशेविश्वंजगत्स्थास्नुचखंदिशः ॥ साद्रिद्वीपाब्धिभूगोलंसवाय्वग्नीन्दुतारकम् ३७
ज्योतिश्चक्रंजलंतेजो नभस्वान्वियदेवच ॥ वैकारिकानीन्द्रियाणि मनोमात्रागुणास्त्रयः ३८ एतद्विचित्रंसहजीवकालस्वभावकर्माशयलिङ्गभेदम् ॥
सूनोस्तनौवीक्ष्यविदारितास्ये व्रजंसहात्मानमवापशङ्काम् ३९ किंस्वप्नएतदुतदेवमाया किंवामदीयोबतबुद्धिमोहः ॥ अथोअमुष्यैवममार्भकस्य यःक

अरे बेटा! तैंने अकेले में जाय के माटी क्यों खाई ये तेरे संग के बालक कहै हैं और तेरो भैया बलदेवजी कहैं हैं ३४ हे मय्या! मैंने माटी नहीं खाई है और जो तुम इनकी बात मानो हो तो
तेरे आगे मेरो मुखहै ताकूं तू देखिले ३५ यह सुनि करि मय्याबोली तैंने माटी नहीं खाईहै तो अपनो मुख दिखाइदे या प्रकार जब माताने कही तब छःप्रकारके दुःखके दूरि करनवारे जिन
को अखण्ड ऐश्वर्य्य ऐसे परमेश्वर क्रीड़ा करिबे के लिये मनुष्यबालक भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अपनो मुखारविन्द उघारिके माताकूं दिखायो ३६ तब यशोदाजी ने श्रीकृष्ण के मुख में स्थावर
जंगम सम्पूर्ण विश्व देख्यो ताही को आगे विस्तार है अन्तरिक्ष लोक दिशा पर्वत द्वीप समुद्र सहित भूलोक देख्यो और पवन अग्नि चन्द्रमा तारागणसहित समस्त देख्यो ३७ ज्योतिश्चक्र
देख्यो जल पवन तेज आकाश ये समस्त देखे इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवता इन्द्रिय मन और इनके विषय शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये पाचौं सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये समस्त देखतभई ३८
जीव काल स्वभाव कर्म्म अन्त करण इन सहित स्थावर जंगम और सम्पूर्ण प्राणीन के भेद सहित चित्रविचित्र विश्व कूं श्रीकृष्णचन्द्र के उघारे मुखमें देखत भई सम्पूर्ण व्रज देख्यो और

अपने आत्माकूं देख्यो यह समस्त देखि भालिके यशोदाजीके मनमें शंकाभई ३९ अब यशोदाजी कहैं हैं कि यह समस्त विश्व श्रीकृष्ण के मुखमें देख्यो सो कहा कछु स्वप्नो तो नं देख्यो फिर कहनलगीं कि स्वप्नो तो सोवतमें आवै है मै तो जागूंहूं अथवा कोई ईश्वरकी मायाहै अथवा कोई मेरी बुद्धि मोहित होइगई है अथवा मेरे पुत्र कृष्णको यह बेर बेर दिखाइबे को स्वभाव बढ़ि गयो है ४० चित्त मन वाणी इन करिके अनायासपूर्वक भलेप्रकार विचारमें नहीं आवै है जाके आश्रय जाकरिके संसार प्रतीत होइहै स्नेह करिके भावना में नहीं आवै ऐसो जो अचिन्तनीय स्वरूप ताहि मैं नमस्कार करूंहूं ४१ मैं यशोदाहूं और यह व्रजराज मेरो पति है यह कृष्ण मेरो पुत्रहै और यह व्रजराज के सम्पूर्ण धनकी मैं रक्षा करनवारीहूं और ये समस्त गोप गोपिका मेरे हैं ये सम्पूर्ण जाकी माया करिके कुबुद्धि लगिरही है सो अब भगवान् तुम्हारी शरणहूं ४२ याप्रकार यशोदाजी कूं कृष्णमें ईश्वर की बुद्धि होइगई तब कृष्णने विचार कियो कि मेरो लाड़ कौन करेगो तब पुत्रस्नेहरूपा वैष्णवीमाया अपनी यशोदा पै फैलायदीनी ४३ ता समय यशोदाजी की श्रीकृष्णचन्द्र में ते ईश्वरत्वबुद्धि हटिगई और पुत्रभाव मानिके गोदमें बैठारि के अतिस्नेह में

श्चनौत्पत्तिकआत्मयोगः ४० अथोयथावन्नवितर्कगोचरं चेतोमनःकर्मवचोभिरञ्जसा ॥ यदाश्रयंयेनयतःप्रतीयते सुदुर्विभाव्यंप्रणताऽस्मितत्पदम् ४१ अहंममासौपतिरेषमेसुतोव्रजेश्वरस्याखिलवित्तपासती ॥ गोप्यश्चगोपाःसहगोधनाश्चमे यन्माययेत्थंकुमतिःसमेगतिः ४२ इत्थंविदिततत्त्वायां गोपिकायांसईश्वरः ॥ वैष्णवींव्यतनोन्मायां पुत्रस्नेहमयींविभुः ४३ सद्योनष्टस्मृतिर्गोपी सारोप्यारोहमात्मजम् ॥ प्रवृद्धस्नेहकलिलहृदयासीद्यथापुरा ४४ त्रय्याचोपनिषद्भिश्च साङ्ख्ययोगैश्चसात्वतैः ॥ उपगीयमानमाहात्म्यंहरिंसामन्यतात्मजम् ४५ राजोवाच ॥ नन्दःकिमकरोद्ब्रह्मञ्छ्रेयएवंमहोदयम् ॥ यशोदाचमहाभागा पपौयस्याःस्तनंहरिः ४६ पितरौनान्वविन्देतांकृष्णोदारार्भकेहितम् ॥ गायन्त्यद्यापिकवयोयल्लोकशमलापहम् ४७ श्रीशुकउवाच ॥ द्रोणोवसूनांप्रवरोधरयासहभार्यया ॥ करिष्यमाणआदेशान्ब्रह्मणस्तमुवाचह ४८ जातयोर्नौमहादेवे भुविविश्वेश्वरेहरौ ॥ भक्तिःस्यात्परमालोके ययाञ्जोदुर्गतिंतरेत् ४९ अस्त्वित्युक्तःसभगवान् व्रजेद्रोणोमहायशाः ॥ जज्ञेनन्दइतिख्यातोयशोदासाधराऽभवत् ५० ततोभक्तिर्भगवतिपुत्री

मग्न होइके पहिले कीसी नाईं वात्सल्यभाव करत भई ४४ ऋग् यजुः साम यह तीनों वेद सांख्य योग समस्त निरन्तर जिन भगवान् की महिमा कूं गावें हैं तिनकूं यशोदाजी अपने पुत्र मानें हैं ४५ अब श्रीराजा परीक्षित् विस्मित होयके श्रीशुकदेवजी ते प्रश्न करै हैं कि हे ब्रह्मन् ! नन्दरायजी ने ऐसो कहा पुण्य कर्यो हो याते इनको ऐसो उदयभयो और यशोदाजीने कौन पुण्य कर्यो हो याते श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने स्तन पान कियो ४६ और समस्त लोकन के पापके दूरि करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र को बालचरित्र ताहि अब पर्यन्त कवीश्वर वर्णन करै हैं सो माता देवकी और वसुदेवजी को प्राप्त न होत भयो ऐसे आनन्द को भोग्यो ४७ अब श्रीशुकदेवजी कहैं हैं आठ वसुन में श्रेष्ठ द्रोण नाम नन्दजी अपनी धरा स्त्रीकूं सङ्ग लैके ब्रह्माकी आज्ञा करिबे के लिये ब्रह्माजी ते बोले ४८ हमारो जन्म पृथ्वी में होय परन्तु विश्वके ईश्वर देवनके देव बड़े देव भगवान् हरि तिनमें हमारी भक्ति होइ जा भक्ति के प्रभाव तें यह जीव संसारके पार लगि जाइ

है ४९ तासमय ब्रह्माजी ने कही कि जावो तुम्हारे भक्ति होइगी तब तो बड़ो जिनको यश ऐसे भगवान् द्रोण सो व्रजमें जन्म धारण करि नन्द नाम ते विख्यात होत भये और वह धरा यशोदा नाम करि विख्यात होत भई ५० हे भरत ! याके अनन्तर पुत्ररूप जो जनार्द्दन भगवान् तिनके विषे नन्द यशोदाजी की गोप गोपिकाहुन तें अतिशय करिके भक्ति होतिभई ५१ अब विभु भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ब्रह्माजी की आज्ञा सत्य करिने के कारण बलदेवजी सहित नन्द यशोदाजी के वास करत अपनी लीला करिके परमआनन्द देत भये ५२ इति श्रीमद्भागवतार्थरुचिरयादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेविश्वरूपदर्शनोनामाऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(नवमेपयउत्सिक्तेमत्वागोप्यथतत्कृतम् ॥ विलोक्यभाण्डभङ्गादिकृष्णंदाम्नाबबन्धतम् १ तनूदराश्रितंविश्वंदृष्ट्वाविस्मितचेतसः ॥ बन्धनक्लमद्गुलापूर्त्यापूर्णतामन्वदर्शयत् २ नवमे अध्यायमें यशोदाजी दूध उफलताहुआ देखकर कृष्णजी को बैठाकर दूध के ठीक करने के लिये चलीगई तब कृष्णजीने दही के बर्तन तोड़डाले तब बर्तनों को फूटेहुये देखकर और कृष्णजी के फोड़ेहुये जान

भूतेजनार्द्दने ॥ दम्पत्योर्नितरामासीद्गोपगोपीषुभारत ५१ कृष्णोब्रह्मणआदेशं सत्यंकर्तुंव्रजेविभुः ॥ सहरामोवसंश्चक्रे तेषांप्रीतिंस्वलीलया ५२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेविश्वरूपदर्शनेऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकदागृहदासीषु यशोदानन्दगेहिनी ॥ कर्मान्तरनियुक्तासु निर्ममन्थस्वयंदधि १ यानियानीहगीतानि तद्बालचरितानिच ॥ दधिनिर्मन्थनेकाले स्मरन्तीतान्यगायत २ क्षौमंवासःपृथुकटितटेबिभ्रतीसूत्रनद्धंपुत्रस्नेहस्नुतकुचयुगंजातकम्पञ्चसुभ्रूः ॥ रज्ज्वाकर्षश्रमभुजचलत्कङ्कणौकुण्डलेच स्विन्नंवक्त्रंकबरविगलन्मालतीनिर्ममन्थ ३ तांस्तन्यकामआसाद्यमथ्नन्तींजननींहरिः ॥ गृहीत्वादधिमन्थानं न्यषेधत्प्रीतिमावहन् ४ तमङ्कमारूढमपाययत्स्तनं स्नेहस्नुतंसस्मितमीक्षतीमुखम् ॥ अतृप्तमुत्सृज्यजवेनसाययावुत्सिच्यमानेपयसित्वधिश्रिते ५ सञ्जातकोपःस्फुरितारुणाधरं

कर उनको रस्सी से बांधनेलगीं १ तो जिस जिस रस्सी से बांधती हैं वहही दो अंगुल कम होतीहै तब यशोदाजी विस्मित चित्तहो कृष्णजीके सूक्ष्म पेटके आश्रित संसार देखतीभई फिर भगवान् रस्सी से बँधालेतेभये २) श्रीशुकदेवजी राजापरीक्षित्से कहे हैं कि हे राजन् ! एकदिवस सम्पूर्ण घरकी दासी तौ और कामनमें लगिरहीहीं तब तो नन्दरानी यशोदाजी अपनेही हाथ दधिमंथन करनभई १ दधिमंथनके समय जो २ लीला बालचरित्र या संसारमें श्रीकृष्णकी हैं तिनकूं स्मरण करिके गावतभई २ सूत्रते बँधी रेशमी सारी कमरमें धारण करे पुत्रके स्नेहते स्तननमें दुग्ध भरिआयो और नेती खींचिबे को अतिश्रम भयो और भुजान में चुरियान को शब्द होतजाय है कङ्कण हाथनमें और कान में कर्णफूल हलतजाय हैं और मुखपै पसीनान के बिन्दु आयगये हैं मस्तक के केशनमें ते चमेली के पुष्प गिरतजाय हैं और सुन्दर जिनकी भृकुटी या प्रकार बड़ी शोभायमान श्रीयशोदाजी दधि मथन करत भईं ३ इतनेही में श्रीकृष्णचन्द्र की स्तन पीवेकी इच्छाभई तब मैया के पास आय के रईकूं पकरिके कहनलगे कि अरी मैया ! पहले मोकूं स्तन प्यायदे ४ स्नेहते दुग्धते भरो जो स्तन सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं गोदमें लिटारि के प्यावन लगीं मुसिकानि भरयो मुख है ताहि देखति

जाय हैं इतनेही में चूल्हे के ऊपर औटिवे कूं धर्यो जो दूध सो बहुत आचलगी तब उफनि चल्यो इतने में श्रीकृष्णचन्द्रको पेट तो भर्यो नहीं परन्तु गोदमें ते पृथ्वी पै उतारि दूध उतारिवे कूं शीघ्रता तें चलीं ५ पूतने दूध प्यारो लग्यो याते श्रीकृष्णचन्द्र कूं क्रोधभयो ता क्रोध ते अरुण ओंठ तिनकूं दातन ते काटते जाइहैं और एक दासन मठा बिलोमन को फोरि डार्यो नेनन में झूठे आसू लगाय माखन को एकलौदा लैके भीतर घरके कोनमें बैठिके खानलगे ६ यशोदाजी बहुत औटे दूध कूं चूल्हे ते नीचे उतारिके फिरि दही मथिवे की जगह आयके दही मथिवे के बासनकूं फूट्यो देखिके विचार करतभई कि यह कृष्णकेही कौतुक हैं याके बिना और कौन फोरे उहा देखें तो श्रीकृष्ण हैई नाहिं तब तो हँसिके कहनलगी कि एक तो काम बिगार्यो दूसरे भागिगयो ७ देखें तो घरके भीतर उलूखल औंधी करिके याके ऊपर बैठिके छींके पै धर्यो जो माखन ताहि निकासि के बन्दरान कूं खवावे हैं और मैया तो न आय जावे या भयते इत उत देखत जायहैं इतनेही में पुत्र कूं ढूंढत २ श्रीयशोदाजी आवत भई ८ लकरिया हाथमें लिये माताकूं आवति देखिके शीघ्रही उलूखल ते कूदिके डरे कीसी नाईं भाजतभये एकाग्र ध्यान करिके योगि-

संदश्यदद्भिर्दधिमन्थभाजनम् ॥ भित्त्वामृषाऽश्रुर्दृषदश्मनारहोजघासहैयङ्गवमन्तरंगतः ६ उत्तार्यगोपीसुशृतंपयःपुनः प्रविश्यसंदृश्यचदध्यमत्रकम् ॥ भग्नंविलोक्यस्वसुतस्यकर्मतज्जहासतंचापिनतत्रपश्यती ७ उलूखलाङ्घ्रेरुपरिव्यवस्थितं मर्कायकामंददतंशिचिस्थितम् ॥ हैयङ्गवंचौर्यविशङ्कितेक्षणं निरीक्ष्यपश्चात्सुतमागमच्छनैः ८ तामात्तयष्टिंप्रसमीक्ष्यसत्वरस्ततोऽवरुह्यापससारभीतवत् ॥ गोप्यन्वधावन्नयमापयोगिनां क्षमंप्रवेष्टुंतपसेरितंमनः ९ अन्वञ्चमानाजननीबृहच्चलच्छ्रोणीभराक्रान्तगतिःसुमध्यमा ॥ जवेनविस्रंसितकेशबन्धनच्युतप्रसूनानुगतिःपरामृशत् १० कृतागसंतंप्ररुदन्तमक्षिणी कषन्तमञ्जन्मषिणीस्वपाणिना ॥ उद्वीक्ष्यमाणंभयविह्वलेक्षणं हस्तेगृहीत्वाभिषयन्त्यवागुरत् ११ त्यक्त्वायष्टिंसुतंभीतं विज्ञायार्भकवत्सला ॥ इयेषकिल तंबद्धुंदाम्नाऽतद्वीर्यकोविदा १२ नचान्तर्नबहिर्यस्य नपूर्वंनापिचापरम् ॥पूर्वापरंबहिश्चान्तर्जगतोयोजगच्चयः १३ तंमत्वात्मजमव्यक्तं मर्त्यलिङ्गमधोक्षजम् ॥ गोपिकोलूखलेदाम्नाबबन्धप्राकृतंयथा १४ तद्दामबध्यमानस्य स्वार्भकस्यकृतागसः ॥ द्व्यङ्गुलोनमभूत्तेन संदधेऽन्यच्चगोपिका १५ यदासीत्तद

राज जिनकी गतिकूं नहीं जानै हैं तप करिके मन नहीं पहुंचै है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पीछे श्रीयशोदाजी भाजति भई तथापि हाथ नहीं आवतभये ९ श्रीकृष्णचन्द्र के पीछे चलीजायँ जो यशोदाजी तिनकी पुष्ट कमर जाके बोझते शिथिल जिनकी गति होइ गई दौरिवे ते केशन के बन्धन खुलिगये तिन केशन में ते गिरे जे पुष्प हैं तिनके ऊपर पाव धरती जाय हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र कूं यके पकरि लियो १० अपराध जिनने कियो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र रोवते जाय हैं और काजर जिनमें लग्यो ऐसे जिनके नेत्र तिनकूं हाथते मीड़तजाय हैं और बारंबार यशोदाजी कूं देखतेजाय रके मारे चञ्चल जिनके नेत्र तिन श्रीकृष्णचन्द्र को हाथ पकरिके यशोदाजी डरपावति भई ११ पुत्रमें है हित जाको ऐसी यशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्र कूं अतिभयभीत देखिके लकरी हाथ ते भई पुत्र के पराक्रम कू नहीं जानिके रस्सी ते बाधिवे की इच्छा करतिभई १२ जाके भीतर जाके बाहिर नहीं जगत् के जो पूर्व अपतार हैं बाहिर और भीतर हैं और जगत्रूप हैं मनुष्य

रूप धारण करथोहै १३ इन्द्रियन की जिनमें पहुँच नहीं ऐसे अव्यक्त भगवान् कूं पुत्र मानिके यशोदाजी डोरि लैके उलूखल तें बांधनलगीं जैसे कोई साधारण मनुष्य बालक कूं बाधै है १४ अपराध जिनने कियो ऐसे अपने पुत्र श्रीकृष्ण तिनकूं बांधनलगीं ता समय वह रस्सी दो अंगुल ओछी भई ता समय और दूसरी जोरी १५ जो और रस्सी जोरी सो भी ओछी भई या प्रकार जो रस्सी जोरी सो सम्पूर्ण अंगुल २ ओछी होत भई १६ ऐसे यशोदाजी ने सम्पूर्ण घर की रस्सी लायके जोरी परन्तु श्रीकृष्ण कूं न बँधे देखिके हँसतभई और मुसिकाय के आप यशोदा जी विस्मित होत भई १७ अंगमें पसीना जाके आयगयो और माला कण्ठ ते टूटि के गिरतभई ऐसी यशोदा माता कूं श्रमित देखिके करुणामय जो श्रीकृष्णचन्द्र आपही कृपा करिके बन्धन में आयगये १८ हे राजन् परीक्षित् ! ऐसे कष्ट के हरनवारे ब्रह्मसहित विश्व जिनके अधीन ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने भक्तन को वश होइवो दिखायो कि जो मेरे भक्त मोकूं बाँधिवो चाहैं तो

पिन्यूनं तेनान्यदपिसंदधे ॥ तदपिद्व्यङ्गुलंन्यूनं यद्यदादत्तबन्धनम् १६ एवंस्वगेहदामानि यशोदासंदधत्यपि ॥ गोपीनांसुस्मयन्तीनां स्मयन्तीविस्मिताभवत् १७ स्वमातुःस्विन्नगात्राया विस्रस्तकबरस्रजः ॥ दृष्ट्वापरिश्रमंकृष्णःकृपयाऽऽसीत्स्वबन्धने १८ एवंसंदर्शिताह्यङ्गहरिणाभृत्यवश्यता ॥ स्ववशेनापिकृष्णेन यस्येदंसेश्वरंवशे १९ नेमंविरिञ्चियोनभवोनश्रीरप्यङ्गसंश्रया ॥ प्रसादंलेभिरेगोपी यत्तत्प्रापविमुक्तिदात् २० नायंसुखापोभगवान् देहिनांगोपिकासुतः ॥ ज्ञानिनांचात्मभूतानां यथाभक्तिमतामिह २१ कृष्णस्तुगृहकृत्येषु व्यग्रायामातरिप्रभुः ॥ अद्राक्षीदर्जुनौपूर्व्वं गुह्यकौधनदात्मजौ २२ पुरा नारदशापेन वृक्षतांप्रापितौमदात् ॥ नलकूबरमणिग्रीवावितिख्यातौश्रियाऽन्वितौ २३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोपीप्रसादोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ * ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

राजोवाच ॥ कथ्यतांभगवन्नेतत्तयोःशापस्यकारणम् ॥ यत्तद्विगर्हितंकर्म येनवादेवर्षेस्तमः १ श्रीशुकउवाच ॥ रुद्रस्यानुचरौभूत्वा सुदृप्तौधन

बँधिभी जाऊं हूं ऐसो अधीन हूं १९ भक्ति के देनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ते पुत्रके सम्बन्ध ते जो प्रसाद गोपीन ने पायो सो कृपा ब्रह्मा पै न भई और शिवजी आत्मा हैं तिन पै न भई लक्ष्मी सर्व्वदा अंगमें रही आवे है और पत्नी है तथापि न भई शुकदेवजी राजा ते कहैं हैं कि हे राजन्! जो कृपा यशोदाजी पै भई गोपिकानन्दन श्रीकृष्ण भगवान् भक्तनकूं सुख ते नहीं प्राप्त होइ हैं आत्मरूप जो ज्ञानी हैं तिनकूं नहीं मिलैं हैं सो भगवान् अनायासपूर्वक गोपीन कूं मिले २० । २१ मैया यशोदाजी तो घरके काम में लगि रही हीं इतने में श्रीकृष्णचन्द्र समर्थ भगवान् कुबेरके बेटा जो प्रथम जन्ममें गुह्यक रहे ते आयके यमलार्ज्जुन वृक्ष होतभये तिनके पास जातभये २२ सुन्दर जिनकी शोभा ऐसे नलकूबर मणिग्रीव नाम करिके प्रसिद्ध कुबेरके पुत्र प्रथम जन्म के मदते नारदजी के शाप ते वृक्षयोनि पावतभये २३ इति श्रीभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोपीप्रसादोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥ * ॥ * ॥

(दशमेऽपातयद्विष्णुरन्तरायमलार्ज्जुनौ ॥ तत्रत्याभ्याचदेवाभ्या कृष्णःस्तुतइतीर्यते १ दशयें अध्याय में कृष्णजी ओखली घसीटतेहुये यमलार्जुन के बीचमें निकलकर यमलार्जुन गिरादेते

भये तब वहां के देव नलकूबर मणिग्रीवने कृष्णजीकी स्तुतिकी है यह वर्णन है १) अब राजा परीक्षित् श्रीशुकदेवजी ते प्रश्न करै हैं कि हे भगवन्! नलकूबर मणिग्रीव के शापको कारण कहो ऐसो कहा निन्दितकर्म्म कर्यो जाते नारदजी कूं क्रोधभयो १ शिवजी के अनुचर अतिगर्व्ववन्त मतवारे कुबेर के पुत्र मन्दाकिनी के तटपै रमणीय कैलास के बगीचामें २ वारुणी मदिरा कूं पानकरे और मदते चलायमान जिनके नेत्र सो पुष्प जामें, फूलिरहे और बाग में स्त्री गानकरैं कमल जहां फूलिरहे ऐसी श्रीगङ्गाजी के मध्यमें जायके स्त्रीनकूं संगलैके विहार करतभये जैसे हथिनीन के संगमें हाथी विहार करैं तैसे ३ । ४ हे कौरववंश में भये राजा परीक्षित्! अनायास पूर्व्वक देवर्षि भगवान् नारदजी तहां इनकूं देखि के मतवारो जानत भये ५ अब श्रीनारदजी कूं देखिके नग्न जो देवाङ्गना सो लज्जित होयके शापके डरते शीघ्र वस्त्रनकूं पहिरिकैत भई और नलकूबर मणिग्रीवने वस्त्र न पहिरे नग्नही ठाढे रहे ६ तब नारदजी कुबेर के बेटानकूं मतवारो देखिके मददूरि करिवेके लिये और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन के निमित्त शाप देत यह गान करनलगे ७ अब नारदजी कहैं हैं प्रिय विषयनके भोग करनवारे जो पुरुष तिनकी बुद्धि कों धन मदके विना

दात्मजौ ॥ कैलासोपवनेरम्ये मन्दाकिन्यांमदोत्कटौ २ वारुणींमदिरांपीत्वामदाघूर्णितलोचनौ ॥ स्त्रीजनैरनुगायद्भिश्चेरतुःपुष्पितेवने ३ अन्तःप्रविश्यगङ्गायामम्भोजवनराजिनि ॥ चिक्रीडतुर्युवतिभिर्गजाविवकरेणुभिः ४ यदृच्छयाचदेवर्षिर्भगवांस्तत्रकौरव ॥ अपश्यन्नारदोदेवौक्षीबाणौसमबुध्यत ५ तं दृष्ट्वाव्रीडितादेव्योविवस्त्राःशापशङ्किताः ॥ वासांसिपर्यधुःशीघ्रं विवस्त्रौनैवगुह्यकौ ६ तौदृष्ट्वामदिरामत्तौ श्रीमदान्धौसुरात्मजौ ॥ तयोरनुग्रहार्थाय शापंदास्यन्निदंजगौ ७ नारदउवाच ॥ नह्यन्योजुषतोजोष्यान् बुद्धिभ्रंशोरजोगुणः ॥ श्रीमदादभिजात्यादिर्यत्रस्त्रीद्यूतमासवः ८ हन्यन्तेपशवोयत्र निर्दयैरजितात्मभिः ॥ मन्यमानैरिमन्देहमजरामृत्युनश्वरम् ९ देवसंज्ञितमप्यन्ते कृमिविड्भस्मसंज्ञितम् ॥ भूतध्रुक्तत्कृतेस्वार्थं किंवेदनिरयोयतः १० देहःकिमन्नदातुःस्वं निषेक्तुर्मातुरेवच ॥ मातुःपितुर्वाबलिनः क्रेतुरग्नेःशुनोऽपिवा ११ एवंसाधारणंदेहमव्यक्तप्रभवाप्ययम् ॥ कोविद्वानात्मसात्कृत्वा हन्तिजन्तूनृतेऽसतः १२ असतःश्रीमदान्धस्य दारिद्र्यंपरमाञ्जनम् ॥ आत्मौपम्येनभूतानिदरिद्रःपरमीक्षते १३ यथाकण्टकविद्धाङ्गो जन्तोर्नेच्छति

और जो विद्यामद कुलमद और हास्य हर्षादिक रजोगुण ये नाश नहीं करै हैं धनमद जाके होइहै तब वह स्त्रीनको संगकरै है जुआ खेलै है मदिरा को पान करै है ८ जा धनकूं पायके मन जिनने जीत्यो नहीं ऐसे निर्दयी पुरुष पशून कूं मारै हैं और नाशवान् या देहकूं पायके यह जानै हैं कि कबहूं वृद्ध न होइँगे न मरैंगे ऐसे मानै हैं ९ राजाहू के देहकी मृत्यु भये पीछे तीन गति होय हैं कृमि होय जाय अथवा पशुआदि जीव खाइँ तो विष्ठाहोय जाय अग्नि दग्धकरैं भस्म होयहै या कारण देहके निमित्त प्राणीन ते विरोध करिवो अपनो श्रेयस्कर नहीं होय है किन्तु जीवनके द्रोहते जाकूं नरक होइहै १० जो अन्न देकर या देहकूं पालन करै है वह पुरुष कहै है कि यह देह मेरोही है और माता पिता कहै हैं कि हमारो है नाना कहै कि मेरोहै मोल लेनवारो कहै कि हमारो है अग्नि कहै कि मेरोहै कुत्ता कहै मेरोही है ११ या प्रकार देह मायाते होइके मायाही में लीन होइजाय है पाच तथा सातनको जामें विवादहै ऐसे देहकूं पायके एक अज्ञानी के विना ऐसो विवेकी

पुरुष कौनहै जो जीवनको वधकरे १२ द्रव्यके मद करिके अन्धो जो पुरुष ताकूं दरिद्र श्रेष्ठ अञ्जन है दरिद्रीपुरुष समस्त प्राणीन कूं सुख दुःख समान देइ है क्योंकि अपने मन में विचार करि लेइहै कि या प्रकार मोकूं दुःख बाधा करै है ऐसेही और पुरुषनकूं भी बाधा करत होइगो जैसे आपकू सुख होइहै तैसे औरनकू भी सुख होइ है १३ जा पुरुषके पांव में कांटो लगै है वह पुरुष दूसरे के कांटे लगिवे की इच्छा नहीं करै है अपने मनमें विचार करै है कि जैसे मोकूं कांटे लगिवे को दुःख भयो ऐसेही सबको होइहै और जाके कांटो लागो नहीं वह कांटे के दुःखकूं कहा जानैगो कि कांटेको कहा दुःख होइहै १४ दरिद्रीपुरुषको अहंकार मद सम्पूर्ण गर्व्व नष्ट होइ जाइ है और जो कष्ट आयके प्राप्त होइहै तो वह वाकूं तपस्या समान होइ जायहै तपमें व्रत होइहै एक अन्नके विना भूखो प्यासो रहै है ऐसे दरिद्रीकूं अन्न न मिले तो वही व्रत होइ जाय है १५ अन्नकी आकांक्षा करनवारे दरिद्री के नित्य कडाके होयहैं याते देह सूखिजाय है इंन्द्रिय शिथिल होइजाइहैं याते हिंसा नहीं करै है जो आपुही मरै है वह कौनकूं मारैगो १६ दरिद्रीपुरुष सबकूं समान देखै है और दरिद्रीकूं साधु महात्मा भी मिलिजायँ है जा समय दरिद्री क्षुधित होइके अन्न २

तांऽयशाम् ॥ जीवसाम्यंगतोलिङ्गैर्नतथाविद्धकण्टकः १४ दरिद्रोनिरहंस्तम्भोमुक्तःसर्वमदैरिह ॥ कृच्छ्रंयदृच्छयाऽऽप्नोति तद्धितस्यपरंतपः १५ नित्यंक्षुत्क्षामदेहस्य दरिद्रस्यान्नकाङ्क्षिणः ॥ इन्द्रियाण्यनुशुष्यन्ति हिंसापिविनिवर्तते १६ दरिद्रस्यैवयुज्यन्ते साधवःसमदर्शिनः ॥ सद्भिःक्षिणोतितंतर्षं ततआराद्विशुध्यति १७ साधूनांसमचित्तानां मुकुन्दचरणैषिणाम् ॥ उपेक्ष्यैःकिंधनस्तम्भैरसद्भिरसदाश्रयैः १८ तदहंमत्तयोर्माध्व्या वारुण्याश्रीमदान्धयोः ॥ तमोमदंहरिष्यामिस्त्रैणयोरजितात्मनोः १९ यदिमौलोकपालस्य पुत्रौभूत्वातमःप्लुतौ ॥ नविवाससमात्मानं विजानीतःसुदुर्मदौ २० अतोऽर्हतःस्थावरतांस्यातानैवंयथापुनः ॥ स्मृतिःस्यान्मत्प्रसादेन तत्रापिमदनुग्रहात् २१ वासुदेवस्यसान्निध्यं लब्ध्वादिव्यशरच्छते ॥ वृत्तेस्वर्लोकतांभूयो लब्धभक्तीभविष्यतः २२ श्रीशुकउवाच ॥ एवमुक्त्वासदेवर्षिर्गतोनारायणाश्रमम् ॥ नलकूवरमणिग्रीवावासतुर्यमलार्जुनौ २३ ऋषेर्भागवतमुख्यस्य सत्यंकर्त्तुं वचोहरिः ॥ जगामशनकैस्तत्र यत्रास्तांयमलार्जुनौ २४ देवर्षिर्मेप्रियतमोयदिमौधनदात्मजौ ॥ तत्तथासाधयिष्यामि यद्गीतंतन्महात्मना २५ इत्यन्तरे

पुकारै है तब साधु महात्मा कहै हैं अरे कृष्ण २ पुकारो कर या प्रकार वे महात्मा याकी अन्नकी तृष्णा दूरि करि देइहैं तब शीघ्र सन्ताप छूटिजाई हैं १७ समान है चित्त जिनको ऐसे साधु महात्मान को श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द में चित्त लगिरहो है दुष्टनको संग जिनकूं ऐसे धन करि मदोन्मत्त पुरुषन ते प्रयोजन कहा १८ वरुण जाके देवता ऐसी मदिरा कूं पीके मदोन्मत्त होयगये धनमद सूं अंधरे होयके स्त्रीनके वशवर्त्ती और मन जिनने जीत्यो नहीं ऐसे ये नलकूबर मणिग्रीव तिनकूं अज्ञानते मदभयो ताकूं दूरि करूंगो १९ ये कुबेर के पुत्र होय के अज्ञान में बूडिगये हैं यह नहीं जानै हैं कि हम नङ्गे हैं इनकूं कछु खबर न रही अतिमद होयगयो है २० याते ये दोनों वृक्षयोनि होजावो जो फिर इनकूं मद न होय और वृक्षयोनिमें भी मेरी कृपाते सुधि बनीरहै २१ और वासुदेव भगवान् की समीपताकूं प्राप्तहोउ ता पीछे फिरि स्वर्ग में जाय देवता होय जाइँगे और भगवान् में इनकी भक्ति होयगी २२ श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! देवतान

में यद्यपि नारदजी या प्रकार कहिके बदरिकाश्रम कूं जातभये अब नलकूबर मणिग्रीव दोनों यमलार्ज्जुन होतभये २३ अपने भक्तन में मुख्य श्रीनारदजी तिनको वचन सत्यकरिवे के निमित्त श्री
कृष्णचन्द्र महाराज यमलार्ज्जुन वृक्ष जहा है तहा ही हौले हौले जातभये २४ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं श्रीनारदजी मेरो प्यारो भक्तहै और ये कुबेर के दोनों पुत्र हैं सो नारद महात्मा ने
गाये जो गीतहैं सो वैसेही करूंगो २५ ऐसे विचार करिके यमलार्ज्जुन जो वृक्षहैं तिनके वीचमें होय के निकसे और वृक्षके वीचमें आयके उलूखल को तिरछो करिदियो २६ रस्सी ते कमर में
बँध्यो जो उलूखल है ताकूं बालक श्रीकृष्णचन्द्रने झटोका मारिके खींच्यो ता समय जडते उखरि के वे वृक्ष पृथ्वी पै गिरतभये श्रीकृष्णके पराक्रम ते डार पतौवा सब हलतभये बडो शब्द भयो
२७ जैसे सकर्पण भये तें वृक्षन में तें अग्नि निकसै तैसे अतिशोभायमान और दिशान कूं प्रकाश करत दोनों पुरुष निकसत भये तब भगवान् त्रिलोकी के नाथ श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं शिरते प्रणाम

णार्जुनयोः कृष्णस्तुयमयोर्ययौ ॥ आत्मनिर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमुलूखलम् २६ वालेननिष्कर्षयताऽन्वगुलूखलंतद्दामोदरेणतरसोत्कलिताङ्घ्रिबन्धौ ॥
निष्पेततुःपरमविक्रमितातिवेपस्कन्धप्रवालविटपौकृतचण्डशब्दौ २७ तत्रश्रियापरमयाककुभःस्फुरन्तौसिद्धावुपेत्यकुजयोरिवजातवेदाः ॥ कृष्णंप्रणम्य
शिरसाऽखिललोकनाथं बद्धाञ्जलीविरजसाविदमूचतुःस्म २८ कृष्णकृष्णमहायोगिंस्त्वमाद्यःपुरुषःपरः ॥ व्यक्ताव्यक्तमिदंविश्वं रूपंतेब्राह्मणाविदुः २९
त्वमेकःसर्वभूतानां देहस्वात्मेन्द्रियेश्वरः ॥ त्वमेवकालोभगवान्विष्णुरव्ययईश्वरः ३० त्वंमहान्प्रकृतिःसूक्ष्मा रजःसत्त्वतमोमयी ॥ त्वमेवपुरुषोऽध्यक्षः
सर्वक्षेत्रविकारवित् ३१ गृह्यमाणैस्त्वमग्राह्यो विकारैःप्राकृतैर्गुणैः ॥ कोन्विहार्हतिविज्ञातुं प्राक्सिद्धंगुणसंवृतः ३२ तस्मैतुभ्यंभगवतेवासुदेवायवेधसे ॥
आत्मद्योतगुणैश्छन्नमहिम्नेब्रह्मणेनमः ३३ यस्यावताराज्ञायन्तेशरीरेष्वशरीरिणः ॥ तैस्तैरतुल्यातिशयैर्वीर्यैर्देहिष्वसङ्गतैः ३४ सभवान्सर्वलोकस्य
भवायविभवायच ॥ अवतीर्णोंशभागेन साम्प्रतंपतिराशिषाम् ३५ नमःपरमकल्याण नमःपरममङ्गल ॥ वासुदेवायशान्ताय यदूनांपतयेनमः ३६ अनु

करत भये मद जिनको जात रहो ऐसे हाथ जोरिके यह बोले २८ हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे महायोगिन्! तुम बालक नहीं हौ किन्तु परम कारण रूप हौ और स्थूल सूक्ष्मरूप जो तुमहौ तिनकूं ब्रह्म-
वेत्ता जानै हैं २९ समस्त प्राणीनके देह प्राण अहंकार इन्द्रियनके तुमहीं एक ईश्वरहौ और सम्पूर्ण में व्यापक भगवान् कालरूप तुमहौ ३० तुमहीं महान्‌रूपहौ रजोगुण सतोगुण तमोगुण और
सूक्ष्म मायारूप तुमहीं हौ समस्त देहन के विकार के जाननवारे साक्षीपुरुष तुमहीं हौ ३१ प्रकृति के गुण जो बुद्धि अहंकार इन्द्रियादिक तिन करिके ग्रहण करिवे में नहीं आवो हौ उत्पत्तिते पहिले
स्वयंप्रकाश ता करिके वर्त्तमान हो या कारण गुणनकरि आच्छादित जो जीव सो तुमकों कैसे जानिवे कू समर्थ होय ३२ अपने आप है प्रकाश जिनको ऐसे गुणन करि महिमा जिनकी प्रका
शमान वासुदेव भगवान् ज्ञानस्वरूप जो ब्रह्म तिनकूं नमस्कार है ३३ प्राकृतदेह करिके रहित जो तुमहौ तिनके अवतार देहधारीन पै वनै नहीं और देहधारीन की सामर्थ्य ते अधिक जो
लीलाचरित्र तिन सूं जानिवे में आवोहौ ३४ समस्त लोकन के ऐश्वर्य और विभव अर्थात् मोक्षके निमित्त निरन्तर परिपूर्ण रूप होयके प्रकटभये हौ ३५ परमकल्याणरूप हे मंगलरूप! तुमकूं

नमस्कार है शान्तरूप जो हौ तिनकूं नमस्कार है यादवनके रक्षा करनवारे जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है ३६ हे परिपूर्ण भगवान्! तुम्हारे अनुचर दास जो हम हैं सो हमने भगवान् नारद महाराज की कृपा करिके आपको दर्शन पायो और आपकूं जान्यो ३७ सो महाराज हमारी वाणी तौ तुम्हारे गुणानुवादकूं कह्यो करै और कान आपकी कथानकूं श्रवणकरै और हाथ आपके सेवन पूजन में लगेरहैं हमारो मन आपके चरणारविन्द में लग्योरहै हमारो मस्तक जामें आपकों वास रहै तासे जगत् कूं प्रणामकरै हमारी दृष्टि तुम्हारी साधुमूर्ति तिनको दर्शन करचो करै हे महाराज! आप तें यह वर मागे हैं ३८ श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै है कि हे राजन्! या प्रकार नलकूवर मणिग्रीवने गोकुलनाथ भगवान् की स्तुतिकरी तव रस्सी ते उलूखल जिनकी कमरमें बंध्यो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकायके यह बोले ३९ करुणामय श्रीनारदजीने लक्ष्मी के मदकरि अन्ध तुमकों देखिके शापदेके लक्ष्मीतें भ्रष्ट करिके तुमपै अनुग्रह कियो यह वात हमने पहिलेही जानी ४०

जानीहिनौभूमंस्तवानुचरकिङ्करौ ॥ दर्शनंनौभगवत ऋषेरासीदनुग्रहात् ३७ वाणीगुणानुकथनेश्रवणौकथायांहस्तौचकर्मसुमनस्तवपादयोर्नः ॥ स्मृत्यां शिरस्तवनिवासजगत्प्रणामे दृष्टिःसतांदर्शनेऽस्तुभवत्तनूनाम् ३८ श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंसंकीर्त्तितस्ताभ्यां भगवान्गोकुलेश्वरः ॥ दाम्नाचोलूखलेब द्धः प्रहसन्नाहगुह्यकौ ३९ श्रीभगवानुवाच ॥ ज्ञातंममपुरैवैतदृषिणाकरुणात्मना ॥ यच्छ्रीमदान्धयोर्वाग्भिर्विभ्रंशोऽनुग्रहःकृतः ४० साधूनांसमचि त्तानां सुतरांमत्कृतात्मनाम् ॥ दर्शनान्नोभवेद्बन्धः पुंसोऽक्ष्णोःसवितुर्यथा ४१ तद्गच्छतंमत्परमौ नलकूबरसादनम् ॥ सञ्जातोमयिभावोवामीप्सितःपर मोभवः ४२ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तौतौपरिक्रम्य प्रणम्यचपुनःपुनः ॥ बद्धोलूखलमामन्त्र्य जग्मतुर्दिशमुत्तराम् ४३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेद शमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनारदशापोनामदशमोऽध्यायः १० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ गोपानन्दादयःश्रुत्वा द्रुमयोःपततोरवम् ॥ तत्राजग्मुःकुरुश्रेष्ठ निर्घातभयशङ्किताः १ भूम्यांनिपतितौतत्र ददृशुर्यमलार्जुनौ ॥ ब

समान जिनको चित्त और निरन्तर मन जिनको मोमें लग्यो ऐसे साधुनके दर्शनतें या पुरुषको वन्धन जायहै जैसे सूर्यके दर्शनते नेत्रको अन्धकार जायहै ४१ हे नलकूवर मणिग्रीव! मत्परायण जो तुमहौ सो अपने स्थानकूं जावो तुम्हारी मेरे विषे सर्वदा भावना रहैगी और जन्म मरणरूप जो संसार है सो छूटतभयो ४२ अव श्रीशुकदेवजी राजापरीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! या प्रकार भगवान् के वाक्य श्रवण करि नलकूवर मणिग्रीव वारंवार परिक्रमा प्रणाम करत भये उलूखलते बंधे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तिन ते आज्ञा मॉगि के उत्तरदिशाकूं जातभये ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनारदशापोनामदशमोऽध्यायः १० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(एकादशेसमागत्यवृन्दावनमथार्भकैः ॥ वत्सान्पालयतानेनहतौवत्सवकासुरौ १ ग्यारहवें अध्यायमें बछरों की पालना करतेहुये कृष्णजी बालकों समेत वृन्दावन में आकर वत्सासुर और बकासुरको मारतेभये १) अव श्रीशुकदेवजी कहै हैं कि हे कुरुवंशीन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! नन्दरायजी सूं आदिलैके समस्त गोप जब वृक्ष गिरे तिनको शब्द सुनिके कहनलगे कि कोई वज्रगिरयो

कहा या भयते शङ्का मानिके जहां वृक्ष गिरे तहा आवतभये १ पृथ्वीमें यमलार्जुन वृक्षनकूं उखरिके गिरचो देखिके गिरिबे को कारण आगे दिखाये हैं ताके जाने विना गोपन कूं भ्रमभयो आंधी बयारि विना ये वृक्ष आपसूं आप कौन कारणतें उखरि परे २ रस्सीते कमरमें बँध्यो जो उलूखल ताकूं खैंचे डोलैं बालक श्रीकृष्णचन्द्र तिननेही वृक्ष पटकेहैं यह व्रजवासीनने नहीं जानिके कहन लगे किकौन राक्षसको कर्म्महै कहा ते आश्चर्य्यरूप उत्पातभयो ऐसे व्रजवासीडरपे ३ उसस्थानपै जो छोटे छोटे बालक खेलत रहे ते बोले कि यह श्रीकृष्णचन्द्र उलूखलकूं खैंचेसैंचे वृक्षनके बीचमें आयो तब उलूखल तिरछो होइके अढिगयो तब याने झटका मारिके खैंच्यो तासूं गिरि परे इनमें ते दो पुरुष निकसे तेऊ हमने देखे ४ बालकन की बात व्रजवासीन ने न मानी तबक सों बालक इतने बड़े वृक्षनकों कैसे उखारेगो कोई व्रजवासीनकूं या प्रकार सन्देह भयो और कोई कहतभये किया बालकने जन्मतेही ऐसे और उपाय किये हैं बालकसेने पूतनामारी और तृणावर्त मास्यो गाड़ा पटकि दियो ये वृक्षहू पटकि दिये होइंगे ५ कमरमें बँध्यो जो उलूखल ताको खैंचे डोले ऐसे अपने पुत्र श्रीकृष्ण तिनकूं नन्दरायजी हँसिके यह बोले तेरे उलूखल कौनने बाँध्यो है तब श्रीकृष्ण

भ्रमुस्तदविज्ञाय लक्ष्यंपतनकारणम् २ उलूखलंविकर्षन्तं दाम्नाबद्धंचबालकम् ॥ कस्येदंकुतआश्चर्य्यमुत्पातइतिकातराः ३ बालाऊचुरनेनेति तिर्य्यग्गतमुलूखलम् ॥ विकर्षतामध्यगेन पुरुषावप्यचक्ष्महि ४ नतेतदुक्तंजगृहुर्नघटेतेतितस्यतत् ॥ बालस्योत्पाटनंतर्वोः केचित्संदिग्धचेतसः ५ उलूखलंविकर्षन्तं दाम्नाबद्धंस्वमात्मजम् ॥ विलोक्यनन्दःप्रहसद्वदनोविमुमोचह ६ गोपीभिःस्तोभितोऽनृत्यद्भगवान्बालवत्क्वचित् ॥ उद्गायतिक्वचिन्मुग्धस्तद्वशोदारुयन्त्रवत् ७ बिभर्तिक्वचिदाज्ञप्तः पीठकोन्मानपादुकम् ॥ बाहुक्षेपंचकुरुतेस्वानांचप्रीतिमावहन् ८ दर्शयंस्तद्विदांलोकआत्मनोभृत्यवश्यताम् ॥ व्रजस्योवाहवैहर्षं भगवान्बालचेष्टितैः ९ सरित्तीरगतंकृष्णं भग्नार्जुनमथाह्वयत् ॥ जन्मर्क्षमद्यभवतोविप्रेभ्योदेहिगाःशुचिः १० पश्यपश्यवयस्यांस्तेमातृमृष्टान्स्वलङ्कृतान् ॥ त्वञ्चस्नातःकृताहारो विहरस्वस्वलङ्कृतः ११ नोपेयातांयदाहूतौ क्रीडासङ्गेनपुत्रकौ ॥ यशोदांप्रेषयामास रोहिणीपुत्रवत्सला

[illegible] मैया ने बांध्यो है चल तेरी मैया कूं कैसो डाटों हों यों कहिके उलूखल खोलि दियो ६ गोपी कहै हैं कि हम तारी बजावें तुम नाचौ तब छः प्रकारको जिनको ऐश्वर्य्य ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् [illegible] बालकन [illegible] नाईं नाचन लगे हैं कभऊँ भोरे वनिकर गावै हैं जैसे काष्ठकी पुतरी बाजीगर के वश जितमें कर फेरे तितमें मुरिजाय ऐसे गोपीन के प्रेमके वशहैं ७ कभऊँ यशोदाजी कहै हैं [illegible] पीढ़ा [illegible] खड़ाऊँ ले आउ तब पीढ़ा लावे हैं खड़ाऊँ लावें हैं कभऊँ वस्तु न उठैहै तब हाथ नचावें हैं या प्रकार अपने व्रजवासीनकूं लीलाकरिके आनन्ददेतहैं ८ संसार ॥ ऐश्वर्य्य के जाननवारे हैं [illegible] दिखावे हैं किमैं भक्तन के ऐसे वशमें हों जैसे नचावें तैसेही नाचूं हूं या प्रकार बाललीला करिके व्रजवासीनकूं आनन्ददियो है सो विधिपूर्व्वक भवन [illegible] ९ [illegible] प्रकार [illegible] के श्रीकृष्णचन्द्र यमुना तीर पै बालकनके संग बलदेवजी सहित खेलै हैं तिनकूं रोहिणीजी बुलावनलगीं आज तेरे जन्मको नक्षत्रहै [illegible] १० बुलाये ते न आये तब कहै हैं तेरी बराबर के बालकन कूं मैंने स्नान करायो है सुन्दर कपड़ा गहने पहिराये हैं तू देख तो सही इन

के आगे बुरोही लागतु है याते तुभी स्नानकरिके भोग लगायके सुन्दर गहने पहिरके अच्छे सुखपूर्वक सौरि लगायके खेलोकर ११ रोहिणीजीके बुलाये ते पुत्र कृष्ण और बलदेव खेलमें लागि रहे हैं तासों न आये तब पुत्रमें है हित जिनको ऐसी यशोदाजी बुलायवे कूं भेजी १२ बालकनके संग भैया बलदेवसहित खेलत खेलत दिन बहुत आय गयो ता समय पुत्रके स्नेह ते स्तननमें जिनके दूध चुवे ऐसी यशोदाजी श्रीकृष्णचन्द्रकूं बुलावनलगीं १३ हे कृष्ण! हे कमलदललोचन! तू आउ स्तनपीले भुखके मारे पेट तेरो लगिरह्यो है हे पुत्र! खेलत खेलत हारिगयो होइगो अब तो खेलिबो रहन दे १४ या प्रकार यशोदाजीके बुलाये श्रीकृष्ण न आये तब कहै हैं कि कृष्ण न आवै तो याकूं जान दे हे राम! हे पुत्र! हे कुल कूं आनन्द देनवारे! तू शीघ्र आउ और छोटे भैया कूं भी हाथ पकरिकै लै आउ प्रातःकालही कलेवा करो है अब आयके भोजन करिलेउ १५ ब्रजराज भोजन करिवे कूं बैठे हैं तेरे आयवेको पैंडो देखै है तो को बूढे बाबाकी दया नहीं आवै है तू आउ हमको प्रसन्न कर या प्रकार कहे तें श्रीकृष्ण आवनलगे तब बालक बोले जैसे तैसे करिके तो खेल जम्यो है अब श्रीकृष्ण जाय है याकों कभऊँ न खिलावेंगे ऐसे श्रवण करिके फिरि खेलन

म् १२ क्रीडन्तंसासुतंबालैरतिवेलंसहाग्रजम् ॥ यशोदाजोहवीत्कृष्णं पुत्रस्नेहस्नुतस्तनी १३ कृष्णकृष्णारविन्दाक्ष तातएहिस्तनंपिब ॥ अलंविहारैः क्षुत्क्षान्तःक्रीडाश्रान्तोसिपुत्रक १४ हेरामागच्छताताशुसानुजःकुलनन्दन ॥ प्रातरेवकृताहारस्तद्भवान्भोक्तुमर्हसि १५ प्रतीक्षतेत्वांदाशार्हभोक्ष्यमाणो व्रजाधिपः ॥ एह्यावयोःप्रियंधेहि स्वगृहान्यातबालकाः १६ इत्थंयशोदातमशेषशेखरं मत्वासुतस्नेहनिबद्धधीर्नृप ॥ हस्तेगृहीत्वासहराममच्युतं नीत्वा स्ववाटंकृतवत्यथोदयम् १७ श्रीशुकउवाच ॥ गोपवृद्धामहोत्पाताननुभूयबृहद्वने ॥ नन्दादयःसमागम्य व्रजकार्यममन्त्रयन् १८ तत्रोपनन्दनामाह गोपोज्ञानवयोऽधिकः ॥ देशकालार्थतत्त्वज्ञः प्रियकृद्रामकृष्णयोः १९ उत्थातव्यमितोऽस्माभिर्गोकुलस्यहितैषिभिः ॥ आयान्त्यत्रमहोत्पाताबालानांनाशहेतवः २० मुक्तःकथञ्चिद्राक्षस्या बालघ्न्याबालकोह्यसौ ॥ हरेरनुग्रहान्नूनमनश्चोपरिनापतत् २१ चक्रवातेननीतोऽयं दैत्येनविपदंवियत् ॥ शिलायांप

लगे तब यशोदा जी बोलीं बालको तुम्हारे घरबार है कि नाहीं जाउ अपने घरन कूं १६ हे राजन् परीक्षित्! स्नेह तें बुद्धि जिनकी बढी ऐसी यशोदा ब्रह्मादिकन के मुकुटमणि श्रीकृष्ण कूं अपनो पुत्र मानिके बलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र को हाथ पकरिके घरमें लैआई उबटन करि स्नान करायो गौवनको दान करायो ब्राह्मण भोजन कराये गहने वस्त्र पहिराये या प्रकार उत्सव करयो १७ नन्दजी ते आदिलैके जो वृद्ध ब्रजवासीन ने महावन में बड़े बड़े उत्पात देखे तब सम्पूर्ण जुरि मिलिके गोकुल के हितको विचार करनलगे १८ ज्ञान और अवस्था करिके अधिक देशकाल की बातको जाननवारो बलदेव और कृष्णचन्द्र ते अतिहै स्नेह जाको ऐसो उपनन्द नाम गोप तहां बोल्यो १९ गोकुल के हितकी इच्छाकरि ऐसे उपनन्द कहै हैं कि हम यहां ते उठिके और जगह वास करैंगे यहां बालकन के मारिवे के कारण बडे बड़े उत्पात आवै हैं २० बालकन की मारनवारी पूतना राक्षसी पै जैसे तैसे यह बालक बच्यो है और हरिके अनुग्रहते एक समय गाड़ा याके ऊपर ते बचिगयो न गिरयो २१ और एकसमय तृणावर्त्त बघूरेको स्वरूप धरिके या बालक कूं आकाश में उड़ाय के लैगयो तब शिलाके ऊपर गिरयो वहां हू देवतानने याकी

रक्षाकरी २२ यह बालक और कोई बालक वृक्षन के बीचमें आयके मर्यो नहीं वहा भी अच्युत भगवान्ने रक्षाकरी २३ यावत्पर्यन्त उत्पात को करनवारो अरिष्ट व्रजमें न आवै तावत् पर्यन्त बालकन कूं लैके और जगह जायकरि वसेंगे २४ पशून को हितकारी और नये जामें बाग बगीचा ऐसो वृन्दावन नाम वनहै गोप गोपी गऊन के रहिवे लायक ठिकानो है पवित्र जहां गोवर्द्धन पर्व्वत है सुन्दर घास जल और लताहैं २५ ता वृन्दावनमें अवहीं चलि वसें तुम कूं अच्छी लगे तो गाड़ान कूं जोतो गायन को आगे हांकि लेउ ढील मतिकरो २६ या प्रकार उपनन्द गोपको वचन सुनिके एक जिनकी बुद्धि ऐसे गोप भले २ ऐसे बड़ाई करिके अपने अपने गाड़ान कों जोरि चीज वस्तु लादिके जातभये २७ हे राजन् परीक्षित् ! वृद्ध बालक स्त्रीन कूं और सब वस्तुन कूं गाडान में लादिके धनुष कू हाथ में लेके समस्त व्रजवासी सावधान होय के गऊन कूं आगे करिके बड़ी बड़ी तुरही बजाय कै पुरोहितन कूं संग लैके सम्पूर्ण गोकुल तें वृन्दावन कूं जातभये २८ । २६

तितस्तत्रपरित्रातःसुरेश्वरैः २२ यन्नम्रियेतद्रुमयोरन्तरंप्राप्यबालकः ॥ असावन्यतमोवापि तदप्यच्युतरक्षणम् २३ यावदौत्पातिकोऽरिष्टो व्रजंनाभिभवेदितः ॥ तावद्बालानुपादाय यास्यामोऽन्यत्रसानुगाः २४ वनंवृन्दावनंनामपशव्यंनवकाननम् ॥ गोपगोपीगवांसेव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम् २५ तत्तत्राद्यैवयास्यामः शकटान्युङ्क्तमाचिरम् ॥ गोधनान्यग्रतोयान्तु भवतांयदिरोचते २६ तच्छ्रुत्वैकधियोगोपाः साधुसाध्वितिवादिनः ॥ व्रजान्स्वान्स्वान्समायुज्यययूरूढपरिच्छदाः २७ वृद्धान्बालान्स्त्रियोराजन् सर्वोपकरणानिच ॥ अनस्स्वारोप्यगोपाला यत्ताआत्तशरासनाः २८ गोधनानिपुरस्कृत्य शृङ्गाण्यापूर्य्यसर्वतः ॥ तूर्य्यघोषेणमहता ययुःसहपुरोहिताः २६ गोप्योरूढरथानूत्नकुचकुङ्कुमकान्तयः ॥ कृष्णलीलाजगुःप्रीत्यानिष्ककण्ठ्यःसुवाससः ३० तथायशोदारोहिण्यावेकंशकटमास्थिते ॥ रेजतुःकृष्णरामाभ्यां तत्कथाश्रवणोत्सुके ३१ वृन्दावनंसंप्रविश्य सर्वकालसुखावहम् ॥ तत्रचक्रुर्व्रजावासं शकटैरर्द्धचन्द्रवत् ३२ वृन्दावनङ्गोवर्द्धनं यमुनापुलिनानिच ॥ वीक्ष्यासीदुत्तमाप्रीती राममाधवयोर्नृप ३३ एवंव्रजौकसांप्रीतिं यच्छन्तौबालचेष्टितैः ॥ कलवाक्यैःस्वकालेन वत्सपालौबभूवतुः ३४ अविदूरेव्रजभुवः सहगोपालदारकैः ॥ चारयामासतुर्वत्सान्नानाक्रीडापरिच्छदौ ३५ क्वचिद्वादयतोवेणुं

गोपी नवीन केशर कुचन में लगाय के धुकधुकीन कूं कण्ठ में पहिर के सुन्दर वस्त्रन कूं पहिर के रथन में बैठिके कृष्ण की लीला गावतभई ३० ताही प्रकार रोहिणी यशोदा एक गाडामें बैठिके श्रीकृष्णचन्द्र और बलदेवजी कूं साथ लेके तिनके लीला चरित्र श्रवण करत शोभा कूं प्राप्त होतभई ३१ समस्त ऋतुनमें सुखको देनवारो जो वृन्दावन है तामें आयके गाडान कूं बराबर ठाढ़ो करिके आधे चन्द्रमा की तुल्य गौवन के रहिवे कूं खिरक बनावत भये ३२ वृन्दावन कूं देखिके गोवर्द्धन पर्वत कूं देखिके यमुनाजी को सुन्दर तट देखिके हे राजन् परीक्षित् ! कृष्ण बलदेव कू बड़ो आनन्द होतभयो ३३ या प्रकार बाललीलान सूं और तोतली बातन सूं व्रजवासीन कूं आनन्द देइ हैं आप जा समय बछरा चरावन लायक भये तब बछरान के पालकभये ३४ व्रजभूमि के निकट

ही गोपालन के लडकान कूं संग लैके श्रीकृष्ण वलदेव दोनों भैया वछरान कूं चरावत भये और तरह तरह की क्रीड़ान कूं करतभये ३५ ताही समय एक वांसुरी कूं वजावें है और कभऊं आमरेन कूं फेकै हैं कभऊं पावनमें घुंघुरू वांधिके नाचै हैं और कभऊं व्रजवासीन के वालकन कूं कंवल उढाय के कृष्ण वलदेव दोनों भैया वैल वनावें हैं ३६ और उनके संग आपहू वैल वनिके शब्द करै है कभऊं परस्पर युद्ध करे हैं कभऊ पक्षीन की वोली की नकल करैहैं जा मकार वालक खेलै हैं ता मकार जाय के वनमें रोलै है ३७ एक समय यमुनाजी के किनारे पै श्रीकृष्ण वलदेवजी अपनी वरावर के मित्रन कूं संग लैके वछरान कूं चरावत हैं तहा इनके मारन की इच्छा करिके दैत्य आवतभयो ३८ वछरा को रूप धरिके वछरान के समूह में आयके मिल्यो तासमय वलदेव जी को दिखाय के हौले हौले वाके पास जातभये ३९ जाय के श्रीकृष्णचन्द्र ने पूंछसहित वा दैत्य के पिछिले पांव पकरि के खूव घुमायके कैथके पेड़के ऊपर फेंकिदियो घुमाइवे में माण निकरि

क्षेपणैःक्षिपतःक्वचित् ॥ क्वचित्पादैःकिङ्किणीभिः क्वचित्कृत्रिमगोवृषैः ३६ वृषायमाणौनर्दन्तौ युयुधातेपरस्परम् ॥ अनुकृत्यरुतैर्जन्तूंश्चेरतुःप्राकृतौयथा ३७ कदाचिद्यमुनातीरे वत्सांश्चारयतोःस्वकैः ॥ वयस्यैःकृष्णवलयोर्जिघांसुर्दैत्यआगमत् ३८ तंवत्सरूपिणंवीक्ष्यवत्सयूथगतंहरिः ॥ दर्शयन्बलदेवाय शनैर्मुग्धइवासदत् ३९ गृहीत्वाऽपरपादाभ्यां सहलाङ्गूलमच्युतः ॥ भ्रामयित्वाकपित्थाग्रेप्राहिणोद्गतजीवितम् ॥ सकपित्थैर्महाकायःपात्यमानैःपपात ह ४० तंवीक्ष्यविस्मितावालाः शशंसुःसाधुसाध्विति ॥ देवाश्चपरिसन्तुष्टावभूवुःपुष्पवर्षिणः ४१ तौवत्सपालकौभूत्वा सर्वलोकैकपालकौ ॥ सप्रातराशौगोवत्सांश्चारयन्तौविचेरतुः ४२ स्वंस्वंवत्सकुलंसर्वे पाययिष्यन्तएकदा ॥ गत्वाजलाशयाभ्याशं पाययित्वापपुर्जलम् ४३ तेतत्रददृशुर्वाला महासत्त्वमवस्थितम् ॥ तत्रसुर्वज्रनिर्भिन्नंगिरेःशृङ्गमिवच्युतम् ४४ सवैवकोनाममहानसुरोवकरूपधृक् ॥ आगत्यसहसाकृष्णं तीक्ष्णतुण्डोऽग्रसद्बली ४५ कृष्णं महावकग्रस्तं दृष्ट्वारामादयोऽर्भकाः ॥ वभूवुरिन्द्रियाणीव विनाप्राणंविचेतसः ४६ तंतालुमूलंप्रदहन्तमग्निवद्गोपालसूनुंपितरंजगद्गुरोः ॥ चच्छर्दसद्यो

गयो वड़ी जाकी देह ऐसो वत्सासुर दैत्य कैथके वृक्षन कों संगलैके पृथ्वी में गिरतभयो ४० ताको गिरयो देखिके सम्पूर्ण वालक आश्चर्य मानिके भली करी २ ऐसे वड़ाई करत भये देवता सन्तुष्ट होयके पुष्प वरसावत भये ४१ समस्त लोकन के पालन करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र और वलदेवजी महाराज वछरान के पालक होयके मातःकाल को कलेवा लेके वनमें जायके वछरान कूं चरावत लीला विहार करत भये ४२ एकदिन समस्तवालक अपने अपने वछरान के समूहन को श्रीयमुनाजी के तटपै जल पिवाइवे के निमित्त गये तहां वछरान कों जल प्याय के आप जल पीवत भये ४३ ते वालक यमुनाजी के तीर पै वज्र ते कठिन पर्वत की शिलाके मानिन्द वड़ो जाको मुख ऐसो जानवर देखत भये वाकूं देखिके वड़ो त्रास मानत भये ४४ वड़ो वली तीक्ष्ण जाकी चोंच ऐसो वकासुर दैत्य वगुलाको रूप धरिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं आय के शीघ्रही निगलि गयो ४५ श्रीकृष्णचन्द्र कूं वकासुर निगलिगयो ता समय वलदेवजीसूं आदि लैके समस्त

बालक प्राणनके बिना इन्द्रिय जैसे अचेत होयजाय हैं तैसे अचेत होयगये ४६ गऊन के पालन करनवारे नन्दरायजी तिनके पुत्र जगत् के गुरु जो ब्रह्मा ताके पिता ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ते अग्नि के अंगार के तुल्य वाके तालुवे कूं जरावत भये तासमय वकासुर तुरत उगिलत भयो तनकहू जिनके अंगमें घाउ न आयो तब तो अतिक्रोध करि श्रीकृष्णचन्द्र कूं फिरि वकासुर मारिवे कूं आवत भयो ४७ साधुन के पालन करनवारे देवतान कूं आनन्द देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र सो चल्यो आवै जो कंस को सखा वकासुर ताकी दोनों हाथन तें चोंच पकरिके बालकनके देखत देखतही जैसे तृणको चीरिडारैं ता प्रकार चीरतभये ४८ ता समय सुरलोक के देवता वकासुर के वैरी श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर नन्दनवनके चमेली के पुष्पनकी वर्षा करत भये और नगाड़े शंख बजाय के स्तुति करतभये श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर पुष्पनकी वर्षा स्तुति देखि के वृजवासीनके बालक आश्चर्य्य मानतभये ४९ जैसे इन्द्रिय प्राण आये ते सुखी होय हैं तैसे बलदेवजी

ऽतिरुषाक्षतंबकस्तुण्डेनहन्तुंपुनरभ्यपद्यत ४७ तमापतन्तंसनिगृह्यतुण्डयोर्दोर्भ्यांबकंकंससखंसतांपतिः ॥ पश्यत्सुबालेषुददारलीलया मुदावहोवीरणव दिवौकसाम् ४८ तदाबकारिंसुरलोकवासिनः समाकिरन्नन्दनमल्लिकादिभिः ॥ समीडिरेचानकशङ्खसंस्तवैस्तद्वीक्ष्यगोपालसुताविसिस्मिरे ४९ मुक्तं बकास्यादुपलभ्यबालका रामादयःप्राणमिवेन्द्रियोगणः ॥ स्थानागतंतंपरिरभ्यनिर्वृताः प्रणीयवत्सान्व्रजमेत्यतज्जगुः ५० श्रुत्वातद्विस्मितागोपा गो प्यश्चातिप्रियादृताः ॥ प्रेत्यागतमिवौत्सुक्यादैक्षन्ततृषितेक्षणाः ५१ अहोबतास्यबालस्य बहवोमृत्यवोऽभवन् ॥ अप्यासीद्विप्रियंतेषां कृतंपूर्वंयतोभयम् ५२ अथाप्यभिभवन्त्येनं नैवतेघोरदर्शनाः ॥ जिघांसयैनमासाद्य नश्यन्त्यग्नौपतङ्गवत् ५३ अहोब्रह्मविदांवाचो नासत्याःसन्तिकर्हिचित् ॥ गर्गोयदा हभगवानन्वभावितथैवतत् ५४ इतिनन्दादयोगोपाः कृष्णरामकथांमुदा ॥ कुर्वन्तोरममाणाश्च नाविन्दन्भववेदनाम् ५५ एवंविहारैःकौमारैः कौमारंजह तुर्व्रजे ॥ निलायनैःसेतुबन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभिः ५६ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवत्सबकवधोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥ ❁ ॥

ते आदि लैके समस्त बालक वकासुर के मुखमें ते निकसि के श्रीकृष्णचन्द्र अपने पास आये तिन तें छाती लगाय के सम्पूर्ण बालक मिलिके सुखी भये बछरान कों इकठौरो करिके वृज में लैके आये और आज या श्रीकृष्णकूं बगुला निगलि गयो यह बात कहतभये ५० बड़े प्यार ते जिनके आदर गोप गोपिन के बालकन की बात सुनि सुनि के आश्चर्य्य मानिके जैसे मृत्युद्दोय के बगदि आवै हैं ताकूं उत्कण्ठा सूं मिलैं तैसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखनलगे देखत देखत आनन्दतें नेत्र तृप्त न भये ५१ और सम्पूर्ण गोप कहन लगे बड़ो आश्चर्य्य है यह बड़ो दुःखहै या बालक के बहुत मृत्यु के उपायभये परन्तु जो मारिवे को आये तिनकोही बुरोहोय गयो क्यों पहिले उनने और कूं भय दियो हो ५२ घोर जिनको रूप ऐसे असुर राक्षस या कृष्णको कछु बिगार न करि सके आप मरिवे के कारण याके पास आवै हैं जैसे आगिमें पतङ्ग जरि जाय है तैसे आपही मरि जाय हैं ५३ अहो वेद के पढ़नवारे ब्राह्मणन की वाणी कभऊं मिथ्या नहीं होय,है जो बात गर्गाचार्य कहिगये रहैं सो वैसेही देखि परै है ५४ नन्दजी सूं आदि लैके समस्तवृजवासी श्रीकृष्ण बलदेव जी की बातनकों करि करिके आनन्दित होयके सुखमानै हैं यह जिनको खबरि न भई ५५ या

प्रकार आंखिमिचौनी पुल बांधने वन्दरान की नाईं कूदनो यह कौमारअवस्थाके खेल करि करिके श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवने कौमार अवस्था व्यतीतकरी ५६ इति श्रीमद्भागवतार्थप्रकाशिकायां दशम स्कन्धेपूर्वार्द्धेवत्सवकवधोनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(द्वादशेतुमहासर्पवपुर्धरमघासुरम् ॥ वत्सपालगिलंक्रुद्धो गलेहन्निति वर्ण्यते १ महावकगलक्रीडाकेवलास्यनकौतुकम् ॥ इतीवाघासुरमुखेसलसःप्राविशद्धरिः २ बारहवें अध्याय में महासर्प की देह धारण करने वाले बछरोंके पालने वालोंके लीलनेवाले अघासुर को क्रोधयुक्त होकर कृष्णजी गले में जाकर नाश करदेते भये यह वर्णन है १ महान् वकासुर की गलेकी क्रीडा केवल कृष्णजी को कौतुक नहीं है इससे मिथलपेत हरिजी अघासुर के मुंह में प्रवेश करजाते भये २) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् से कहै हैं कि हे राजन्! कभऊं एक वनमें जायके प्रथम कलेना करेंगे यह मनमें विचार के व्रज ते प्रातःकाल उठिके सुन्दर सींगी बजायके बराबर के मित्रन कूं जगाय बछरान कूं आगे करिके श्रीकृष्णचन्द्र निकसत भये १ तिन श्रीकृष्णचन्द्र के संग स्नेही

श्रीशुकउवाच ॥ क्वचिद्वनाशायमनोदधद्व्रजात् प्रातःसमुत्थायवयस्यवत्सपान् ॥ प्रबोधयञ्छृङ्गरवेणचारुणा विनिर्गतोवत्सपुरःसरोहरिः १ तेनैवसा कंपृथुकाःसहस्रशः स्निग्धाःसुशिग्वेत्रविषाणवेणवः ॥ स्वान्स्वान्सहस्रोपरिसङ्ख्ययाऽन्वितान् वत्सान्पुरस्कृत्यविनिर्ययुर्मुदा २ कृष्णवत्सैरसङ्ख्यातैर्यू थीकृत्यस्ववत्सकान् ॥ चारयन्तोऽर्भलीलाभिर्विजहुस्तत्रतत्रह ३ फलप्रवालस्तवकसुमनःपिच्छधातुभिः ॥ काचगुञ्जामणिस्वर्णभूषिताअप्यभूषयन् ४ मुष्णन्तोऽन्योन्यशिक्यादीञ्ज्ञातानाराच्चिक्षिपुः ॥ तत्रत्याश्चपुनर्दूराद्धसन्तश्चपुनर्ददुः ५ यदिदूरंगतःकृष्णो वनशोभेक्षणायतम् ॥ अहंपूर्वमहंपूर्व मितिसंस्पृश्यरेमिरे ६ केचिद्वेणून्वादयन्तोध्मान्तःशृङ्गाणिकेचन ॥ केचिद्भृङ्गैःप्रगायन्तः कूजन्तःकोकिलैःपरे ७ विच्छायाभिःप्रधावन्तो गच्छन्तःसाधु हंसकैः ॥ बकैरुपविशन्तश्च नृत्यन्तश्चकलापिभिः ८ विकर्षन्तःकीशबालानारोहन्तश्चतैर्द्रुमान् ॥ विकुर्वन्तश्चतैःसाकं प्लवन्तश्चपलाशिषु ९ साकंभेकै

हजारन बालक छींके और सुन्दर बेतकी छडी बांसुरी लैकै अपने अपने बछरानकूं आगे करिके असंख्यात जो श्रीकृष्णचन्द्र के बछरा तिन में मिलाय के चरावते २ बाललीला करिके तहां तहां विहार करतभये २।३ मणिन के जड़ाऊ सुवर्ण के गहने पहिरे हैं तो भी वनमें जायके फलनके पत्तान के गुन्जन के आभूषण बनाइ बनाइ के पहिरे हैं खरिया माटीके तिलक लगाय के अपनो शृंगार करै है ४ आपुस में छाक के छींकेन कूं चुरावें जब जानिलेत हैं तब दूरि बालकनके पास फेंकि देत हैं वे बालक फिरि दूरि फेंकि देत है तब वे छींकेवारे व लक रोमनी में आजाय हैं तब श्रीकृष्णचन्द्र हँसिके फेरि देय हैं ५ वृन्दावन की शोभा देखिबे के निमित्त श्रीकृष्णचन्द्र दूरि चले जायँ हैं तब बालक आपुस में होड बद बद के दौरे हैं और कहै है कि पहले मैं छुऊं वह कहै है पहले मैं छुऊं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र छुइके खेलत भये ६ कोई बालक बांसुरी कूं बजावें है और कोई सींगीन को बजावें हैं कोई बालक भौरानके संग गावै है कोई कोकि-लान के संग बोले हैं ७ और कोई आकाश में पक्षी उड़े हैं तिनकी छाया दाबिके दौरे हैं कोई बालक हंसन के संग हौले हौले चलै हैं कोई बालक बगुलानके पास चुपके से जाय बैठे है

और कोई बालक मोरन के संग नाचत है ८ और कोई बालक बन्दरान की पूंछ पकरि पकरि के खैंचैं हैं और पूंछ पकरिके वृक्षनपै चढि जाय हैं और कोई बालक अपने कान चाटे करिके आंखें घुमाय के बन्दरान के सम्मुख घुड़कै हैं कोई वृक्षनपै ते कूदैं हैं ९ और कोई मेंडुकान के संग फुदकै हैं जब वे गोता मारैं तब आपभी यमुनाजी में गोता मारै है और कोई बालक अपनी परछाईं की हँसी करै हैं कोई बालक कुआ बाउरी में जो ध्वनि होयहै तिनकूं गारी देत है १० या प्रकार ब्रह्मज्ञानीन कूं ब्रह्मस्वरूप करिके जानिवे में आवै हैं दासभाव के करनवारे जो भक्त हैं ते परदेवता स्वामी जानैं है माया जिनकू लगिरही हैं वे पुरुष मनुष्य के बालक जानै हैं जाकी जैसी भावना ताकौं तैसही दिखाई देत है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तिनके संग बड़े बड़े पुण्यन के समूह जिनने करे उन व्रजवासीन के बालक खेलै हैं ११ जिनके चरणारविंद की धूरि बहुतजन्म तपस्या करिके मनकूं रोकें ऐसे योगीश्वरन कूं भी नहीं प्राप्त होयहै सो श्रीकृष्णचन्द्र आप

विलङ्घन्तः सरित्प्रस्रवसंप्लुताः ॥ विहसन्तः प्रतिच्छायाः शपन्तश्च प्रतिस्वनान् १० इत्थंसतांब्रह्मसुखानुभूत्या दास्यंगतानांपरदैवतेन ॥ मायाश्रितानांनर दारकेण साकंविजह्रुःकृतपुण्यपुञ्जाः ११ यत्पादपांसुर्बहुजन्मकृच्छ्रतोधृतात्मभिर्योगिभिरप्यगम्यः ॥ सएवयद्दृग्विषयःस्वयंस्थितः किंवर्ण्यतेदि ष्टमतोव्रजौकसाम् १२ अथाघनामाऽभ्यपतन्महासुरस्तेषांसुखक्रीडनवीक्षणाक्षमः ॥ नित्यंयदन्तर्निजजीवितेप्सुभिः पीतामृतैरप्यमरैःप्रतीक्ष्यते १३ दृष्ट्वाऽर्भकान् कृष्णमुखानघासुरः कंसानुशिष्टःसबकीबकानुजः ॥ अयन्तुमेसोदरनाशकृत्तयोर्द्वयोर्ममैनंसबलंहनिष्ये १४ एतेयदामत्सुहृदो स्तिलापःकृतास्तदानष्टसमाव्रजौकसः ॥ प्राणेगतेवर्ष्मसुकानुचिन्ताप्रजाऽसवःप्राणभृतोहियेते १५ इतिव्यवस्याजगरंबृहद्वपुः सयोजनायाममहा द्रिपीवरम् ॥ धृत्वाद्भुतंव्यात्तगुहाननंतदा पथिव्यशेतग्रसनाशयाखलः १६ धराऽधरोष्ठोजलदोत्तरोष्ठो दर्याननान्तोगिरिशृङ्गदंष्ट्रः ॥ ध्वान्तान्तरास्योवि तताध्वजिह्वः परुषानिलश्वासदवेक्षणोष्णः १७ दृष्ट्वातंतादृशंसर्वे मत्वावृन्दावनश्रियम् ॥ व्यात्ताजगरतुण्डेन ह्युत्प्रेक्षन्तेस्मलीलया १८ अहोमित्रा

इनके सम्मुख ठाढे रहे हैं अहो इन व्रजवासीन के भाग्य कहा वर्णन करैं १२ बालक वनमें खेलै हैं इतने में एक दिन अघासुर दैत्य आवतभयो तिन बालकनकूं सुखपूर्वक खेलत देखिके कुढ मरयो अपने जीवेकी इच्छाकरैं अमृत जिनने पियो ऐसे देवता कैसे कब मरैंगे या प्रकार पैंड़ो देख्यो करै १३ पूतना और बकासुर को छोटो भय्या कंसको पठायो अघासुर आयो कृष्ण जिन में मुख्य ऐसे बालकन कूं देखि के मन में विचार करत भयो कि या कृष्ण ने मेरे भय्या और बहिन मारे हैं तिन दोनों के बदले बालक बछरान सहित या कृष्ण कूं मारूंगो १४ और अपने भय्या बहिन कूं इन बालकन की तिलाञ्जली देऊँगो तब सब व्रजवासी नष्ट होइ जायँगे प्राणगये पीछे देहनकी कहा चिन्ताहै प्राणधारी पुरुषन कों प्राण हैं १५ ऐसो मनमें निश्चय करिके चारकोस को लम्बो बड़े पर्वत कीसी नाईं मोटो अजगर सर्पको अद्भुत बड़ो देह धारण करिके गुफाकी तुल्य मुख पसारि के बछरा बालकन के निगलिवे के लिये मार्ग में दुष्ट सोवत भयो १६ धरती में नीचलो ओष्ठ और बादल में ऊपरलो ओष्ठ फैलाय दियो है पर्वत की गुफा की तुल्य जाके मुखको अन्तहै पर्वत के शिखर के समान डाढें हैं घरके अँधेरे सों जाके मुख

में अन्धकार है बड़े रास्ता कीसी नाईं जाकी जीभहै कठोर पवनकी तुल्य जाकी श्वासहै अग्निकी तुल्य जाकी दृष्टि है १७ समस्त बालक अघासुर को देखिकै वृन्दावन की शोभा मानिके फेल्यो जो अजगरको मुख ताके समान लीला करतभये १८ आपुस में कहतभये अहो मित्र! तुम कहौ आगे यह जानवर सों ठाढ़ो है कि नहीं हमारे निगलिबे के लिये सर्प कीसी नाईं मुख पसारे है कि नहीं १९ सत्य है सूर्य्य की किरणन सूं लाल बादर ऐसे लगै है मानों सर्प को ऊपरलो ओष्ठहै और सूर्य्य की परछाईं ते लाल भई जो धरती सो ऐसी लगै है कि मानों सर्प के नीचे की ठोढी है २० बायें दाहिने पर्वत की गुफा ऐसी लगै है मानों या सर्प के मुखको अन्तहै ऊँचे ऊँचे पर्वतन की शिखर हमें ऐसी लगै है मानों सर्प की डाढ़है यह देखो तुम २१ चौंडो लम्बो रास्ता यह हम कूं ऐसो लगै है मानों यां सर्प की जीभहै और शिखरन के भीतर जो अन्धकार है सो हमको ऐसो लगै है मानों सर्प के मुख के भीतर अन्धकार है २२ दाव सों उष्ण तीक्ष्ण पवन ऐसो लगैहै

णिगदतसत्त्वकूटंपुरःस्थितम् ॥ अस्मत्संग्रसनव्यात्तव्यालतुण्डायतेनवा १९ सत्यमर्ककरारक्तमुत्तराहनुवद्घनम् ॥ अधराहनुवद्रोधस्तत्मतिच्छायया ऽरुणम् २० प्रतिस्पर्द्धेतेसृक्किभ्यां सव्यासव्येनगोदरे ॥ तुङ्गशृङ्गालयोप्येतास्तद्दंष्ट्राभिश्चपश्यत २१ आस्तृतायाममार्गोयं रसनांप्रतिगर्जति ॥ एषामन्तर्गतंध्वान्तमेतदप्यन्तराननम् २२ दावोष्णखरवातोऽयं श्वासवद्भातिपश्यत ॥ तद्दग्धसत्त्वदुर्गन्धोऽप्यन्तरामिषगन्धवत् २३ अस्मान्किमत्रग्रसिता निविष्टानयंतथाचेद्बकवद्विनङ्क्ष्यति ॥ क्षणादनेनेतिबकार्युशन्मुखंवीक्ष्योद्धसन्तःकरताडनैर्ययुः २४ इत्थंमिथोतथ्यमतज्ज्ञभाषितं श्रुत्वाविचिन्त्येत्यमृषा मृषायते ॥ रक्षोविदित्वाऽखिलभूतहृत्स्थितः स्वानांनिरोद्धुंभगवान्मनोदधे २५ तावत्प्रविष्टास्त्वसुरोदरान्तरं परंनगीर्णाःशिशवःसवत्साः ॥ प्रतीक्षमाणेन बकारिवेशनं हतस्वकान्तरमरणेनरक्षसा २६ तान्वीक्ष्यकृष्णःसकलाभयप्रदोह्यनन्यनाथान्स्वकरादवच्युतान् ॥ दीनांश्चमृत्योर्जठराग्निघासान्घृणार्दितोदिष्टकृतेनविस्मितः २७ कृत्यंकिमत्रास्यखलस्यजीवनं नवाअमीषांचसतांविहिंसनम् ॥ द्वयंकथंस्यादितिसंविचिन्त्यतज्ज्ञात्वाऽविशत्तुण्डमशेषदृग्घ

मानों सर्प को श्वासहै दाव में जीव जरै हैं तिनकी दुर्गन्ध ऐसी लगै है मानों सर्प के मुखके मांस की दुर्गन्ध है २३ सर्प के मुखमें धसैगे तो कहा यह हमको निगलिजायगो और जो निगलैगो तो यह श्रीकृष्ण याहि क्षणभरमें बकासुर कीसी नाईं मारि डारैगो या प्रकार कहिके बकासुरको वैरी श्रीकृष्णचन्द्र तिनको सुन्दर मुख देखिके हँसिके तारी बजाय के बालक आगे को जातभये तारी बजायबे को कारण यह है कि जो सर्प होयगो तो सरकि जायगो और जो वृन्दावन की शोभा होयगी तो खेलैंगे २४ झूंठो अज्ञानीनको वचन सुनिके हो तो सर्पको स्वरूप धरिकै अ-सुर परन्तु बालकन कूं वृन्दावनकी शोभा सों लगैहै समस्त प्राणीन के हृदय में विराजमान ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने मनमें, विचारकियो कि राक्षस जानिके बालकन कूं मनाकरूं कि याके मुखमें न जावें २५ ऐसे मनमें विचार करें तब ताईं बछरान कूं लैके बालक सर्प के मुखमें चलेगये परन्तु ता सर्पने निगले नहीं काहे ते कि मनमें विचार कर्यो बकासुर को मारनवारो मेरो दावादार कृष्ण तो आयो नहीं जे अपने भय्या बहिन मरे हैं तिनकी सुधिकरै है याते राक्षसने निगले नहीं २६ सबके अभयके देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र और जिनको पालन करनवारो नहीं मेरे हाथ ते निकसिगये

दीन हैं अघासुर के पेट की अग्नि करि जरि जायँगे या प्रकार बालकन कूं देखिके कृपाकरि पीड़ित भये दैवने कहा करडारो ऐसे आश्चर्य मानतभये २७ अब श्रीकृष्णचन्द्र मनमें विचार करै हैं कि या दुष्टको जीवन न होय और साधु मेरे मित्रन को नाश न होय ये दोनों बातें कैसे होयँ यह विचार करिके तिन दोनोंन कूं जानिके सम्पूर्ण के देखनहारे भगवान् अघासुर के मुख में धँसे क्योंकि मित्रता को यह धर्म्म नहीं है कि मित्र मुख में गये आप बाहिर ठाढ़े रहैं जो होयगी सो मित्रन के संग होयगी याते आप धँसे २८ ता समय बादर नहीं ओट में देवता ठाढ़े होयके हाय हाय करनलगे और निर्ऋति के वंशके अघासुर के भय्या बन्धु कंसकूं आदिलैके राक्षस हैं तिनकूं आनन्द भयो २९ अविनाशी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् देवतान को हाहाकार शब्द सुनिके बालक बछरान सहित अपने आत्माकूं चूर्ण करिबे को निगलो चाहै अघासुर ताके गरे में जल्दी धसत भये ३० बड़ो जाको देह कण्ठ जाको रुकिगयो आंखि जाकी निकस आई इत उत भ्रमै अघा-

रिः २८ तदाघनच्छदादेवाभयाद्धाहेतिचुक्रुशुः ॥ जहृषुर्येचकंसाद्याःकौणपास्त्वघबान्धवाः २९ तच्छ्रुत्वाभगवान्कृष्णस्त्वव्ययःसार्भवत्सकम् ॥ चूर्णीचिकीर्षोरात्मानंतरसाववृधेगले ३० ततोऽतिकायस्यनिरुद्धमार्गिणोह्युद्गीर्णदृष्टेर्भ्रमतस्त्वितस्ततः ॥ पूर्णोऽन्तरङ्गेपवनोनिरुद्धो मूर्द्धन्विनिष्पाट्यविनिर्गतोबहिः ३१ तेनैवसर्वेषुबहिर्गतेषु प्राणेषुवत्सान्सुहृदःपरेतान् ॥ दृष्ट्यास्वयोत्थाप्यतदन्वितःपुनर्वक्त्रान्मुकुन्दोभगवान्विनिर्ययौ ३२ पीनाहिभोगोत्थितमद्भुतंमहज्ज्योतिःस्वधाम्नाज्वलयद्दिशोदश ॥ प्रतीक्ष्यखेऽवस्थितमीशनिर्गमं विवेशतस्मिन्मिषतांदिवौकसाम् ३३ ततोऽतिहृष्टाःस्वकृतोऽकृतार्हणंपुष्पैःसुराअप्सरसश्चनर्तनैः ॥ गीतैःसुगावाद्यधराश्चवाद्यकैःस्तवैश्चविप्राजयनिःस्वनैर्गणाः ३४ तदद्भुतस्तोत्रसुवाद्यगीतिकाजयादिनैकोत्सवमङ्गलस्वनान् ॥ श्रुत्वास्वधाम्नोऽन्त्यजआगतोऽचिराद्दृष्ट्वामहीशस्यजगाभविस्मयम् ३५ राजन्नाजगरंचर्म शुष्कंवृन्दावनेऽद्भुतम् ॥ व्रजौकसांबहुतिथं बभूवाक्रीडगह्वर

सुर ताके देह में श्वास रुकिगयो बाहिर निकसिबे को रस्ता न पायो तब ब्रह्मरन्ध्र कों फोरिके बाहिर निकस्यो ३१ अघासुर के श्वास के संग समस्त के प्राण बाहिर निकसिगये तब बछरा बालक मरे देखिके अपनी दृष्टि में ते अमृतकी वृष्टि करिके सबको जिवायो तिनको संगलैके फेरि मुकुन्द भगवान् अघासुरके मुख में ते बाहिर निकसत भये ३२ दुष्ट सर्पके देहमें ते निकसी बड़ी ज्योति अद्भुत अपने तेजते दश दिशान में प्रकाश करिके आकाशमें ठाढ़ी श्रीकृष्णचन्द्र के निकसिबे को पैंडो देखै है जा समय श्रीकृष्ण बाहिर निकसे तब सब देवतान के देखत देखतही वाही क्षणके समय स्वरूप में धँसिगई ३३ ता समय समस्त देवतान को आनन्द भयो और फूलनसों श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजाकरी अप्सरा नृत्य करतभई सुर गन्धर्व गावतभये बाजेवारे बाजे बजावतभये ब्राह्मणन ने स्तुति करिके जय जय शब्द कस्यो ३४ वह अद्भुत स्तुति और सुन्दर बाजे गीत जय आदि लैके अनेक उत्सव मंगलशब्दन कू ब्रह्माजी अपने ब्रह्मलोक में श्रवण करिकै शीघ्रही चले आये श्रीकृष्णचन्द्र की महिमा देखिके आश्चर्य्य मानत भये ३५ हे राजन् परीक्षित्! वा अजगर को शुष्क अद्भुत चर्म्म वृन्दावन में बहुत दिनपर्य्यन्त व्रजवासीन के बालकन कों खेलिबे कूं बड़ी

गुफासी होतिमई मुखकी रस्ता घुसें आँखिनकी रस्ता निकसें आँखिनकी रस्ता घुसें मुखकी रस्ता निकसि आवें या प्रकार क्रीड़ा करतभये ३६ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने यह काम पांच वर्ष की अवस्था में करो है कहा अपने कूं प्रसिद्ध मृत्यु ते छुटाये बालक और सर्प कों संसार में ते छुड़ायो याकूं देखिके आश्चर्य मानिके समस्त बालक व्रजमें छठेवर्ष कहतभये या प्रकार व्रजवासीनकूं आनन्दभयो ३७ जिनके स्पर्श करेतें पाप जाके धुइ गये ऐसो अघासुर दैत्य साधुनको दुर्लभ श्रीकृष्णचन्द्रके समान रूपकूं पावतभयो माया करिके मनुष्य के बालकभये स्थावर जंगम समस्त प्राणीन में श्रेष्ठ सम्पूर्ण के रचनवारे श्रीकृष्णचन्द्र तिनमें यह आश्चर्य नहीं अंगकी प्रीति मानो जोरावरी मनते करुणा करिके प्रह्लादादिकनने ध्यान करो हो मनकी प्रीतिमाने उनकूं भागवतीगति दीनी नित्य आत्मसुख कों साक्षात्कार करि माया जिन में ते दूरि होय गई वे श्रीकृष्णचन्द्र बछरा बालकन कूं लैके आप जाके भीतर गये याते याकूं सुन्दर गति मिली यामें कहा आश्चर्य है

म् ३६ एतत्कौमारजंकर्महरेरात्माहिमोक्षणम् ॥ मृत्योःपौगण्डकेबालादृष्ट्वोचुर्विस्मिताव्रजे ३७ नैतद्विचित्रंमनुजार्भमायिनःपरावराणांपरमस्यवेधसः ॥ अघोऽपियत्स्पर्शनधौतपातकः प्रापात्मसाम्यंत्वसतांसुदुर्लभम् ३८ सकृद्यदङ्गप्रतिमाऽन्तराहितामनोमयींभागवतींददौगतिम् ॥ सएवनित्यात्मसुखानुभूत्याभ्युदस्तमायोन्तर्गतोहिकिंपुनः ३९ सूतउवाच ॥ इत्थंद्विजायादवदेवदत्तः श्रुत्वास्वरातुश्चरितंविचित्रम् ॥ पप्रच्छभूयोऽपितदेवपुण्यं वैयासकिंयन्निगृहीतचेताः ४० राजोवाच ॥ ब्रह्मन्कालान्तरकृतंतत्कालीनंकथंभवेत् ॥ यत्कौमारेहरिकृतं जगुःपौगण्डकेऽर्भकाः ४१ तद्ब्रूहिमेमहायोगिन् परंकौतूहलंगुरो ॥ नूनमेतद्धरेरेव मायाभवतिनान्यथा ४२ वयंधन्यतमालोकेगुरोऽपिक्षत्रबन्धवः ॥ यत्पिबामोमुहुस्त्वत्तःपुण्यंकृष्णकथाऽमृतम् ४३ सूतउवाच ॥ इत्थंस्मपृष्टःसतुबादरायणिस्तत्स्मारितानन्तहृताखिलेन्द्रियः ॥ कृच्छ्रात्पुनर्लब्धबहिर्दृशिःशनैः प्रत्याहतंभागवतोत्तमोत्तमम् ४४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽघासुरवधोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

३८।३९ अब श्रीसूतजी महाराज सनकादिक ऋषीश्वरन तें कहैं हैं कि हे सनकादिकऋषियो ! या प्रकार यादवन के देव श्रीकृष्णचन्द्र तिन ने गर्भ में जाय के रक्षा जाकी करी ऐसो राजा परीक्षित् सो अपने रक्षा करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र तिनको विचित्र पवित्र चरित्र है ताकू श्रवण करिके व्यासनन्दन श्रीशुकदेवजी ते फिरिहू प्रश्न करत भयो ताके श्रवण करे ते राजा परीक्षित् को मन वश होइ गयो ४० अब राजा परीक्षित् कहै हैं कि हे शुकदेवजी महाराज ! जो और काल में कर्यो सो तत्काल में कर्यो कैसे होय गयो पाँच वर्षकी अवस्था में श्रीकृष्णचन्द्र ने अघासुर को मार्यो छठे वर्ष में बालकन ने व्रजवासीन ते कह्यो यह वर्ष दिन को बीच कैसे पर्यो ४१ हे बड़े योगेश्वर ! हे गुरु ! यह बात मोवें कहौ मेरे बडो आश्चर्य है निश्चय भगवान् कीही माया है और तरह नहीं है ४२ हे गुरु ! है तो हम क्षत्रीन में गये बीते परन्तु अब संसार में अतिशय करिके धन्य हैं जादिन ब्राह्मणको शाप भयो तादिन धन्यभये जो तुम्हारे दर्शन करे ते धन्यतर भये अब तुम ते वारंवार कृष्णकथारूप अमृत पान करूं हूं याते अतिशय करिके धन्य भयो ४३ श्रीसूतजी सनकादिकन से कहै हैं कि या प्रकार राजा प्रश्न करिके श्रद्धा दिखाइ श्री-

कृष्णचन्द्र की कथा अमृत में सम्पूर्ण इन्द्रिय जिनकी जाय लगीं ऐसे व्यासनन्दन श्री शुकदेव जी बड़े कष्ट ते फिरि आँखि खोलि के भक्तन में श्रेष्ठ श्रोता राजा परीक्षित् ताते कहतभये ४४
इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽघासुरवधोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
(त्रयोदशेऽहरद्ब्रह्मावत्सान्पालानरचमायया ॥ तदातत्सर्वरूपोऽब्दंकृष्णःपूर्ववदाचरत् १ तेरहवें अध्याय में ब्रह्माजी बछड़ों और पालन करनेवाले गोपोंके बालकों को माया से हरलेते भये तब कृष्णजी तिन सबके वैसेही रूप रचकर पहले की नाई एक वर्ष तक बनाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् तें कहै हैं कि हे बड़भागी भक्तनमें उत्तम ते उत्तम राजा परीक्षित्! तैंने बहुत श्रेष्ठ प्रश्न पूँछो है जाते ईश्वरकी कथा कू वारंवार श्रवण करौ हौ फिरि प्रश्न करौ हौ याते तुम श्रेष्ठहौ १ सार वस्तु के ग्रहण करनवारे साधुन को यही स्वभाव है जिन श्रीकृष्णचन्द्र में जिन पुरुषन की वाणी श्रवण चित्त लगि रहे हैं वाणी ते कृष्णगुण वर्णन करैं श्रवणन ते कथा सुनैं चित्त ते स्वरूप को ध्यान करैं या प्रकार अच्युत भगवान् की वार्त्ता में क्षणक्षण प्रति ध्यान ल-

श्रीशुकउवाच ॥ साधुपृष्टंमहाभाग त्वयाभागवतोत्तम ॥ यन्नूतनयसीशस्य शृण्वन्नपिकथांमुहुः १ सतामयंसारभृतांनिसर्गोयदर्थवाणीश्रुतिचेतसा
मपि ॥ प्रतिक्षणंनव्यवदच्युतस्ययत् स्त्रियाविटानामिवसाधुवार्त्ता २ शृणुष्वावहितोराजन्नपिगुह्यंवदामिते ॥ ब्रूयुःस्निग्धस्यशिष्यस्यगुरवोगुह्यमप्युत ३
तथाऽघवदनान्मृत्योरक्षित्वावत्सपालकान् ॥ सरित्पुलिनमानीय भगवानिदमब्रवीत् ४ अहोतिरम्यंपुलिनंवयस्याः स्वकेलिसम्पन्मृदुलाच्छबालुकम् ॥
स्फुटत्सरोगन्धहृतालिपत्रिकध्वनिप्रतिध्वानलसद्द्रुमाकुलम् ५ अत्रभोक्तव्यमस्माभिर्दिवारूढंक्षुधाऽर्दिताः ॥ वत्साःसमीपेऽपःपीत्वाचरन्तुशनकैस्तृण
म् ६ तथेतिपाययित्वाऽर्भावत्सानारुध्यशाद्वले ॥ मुक्त्वाशिक्यानिबुभुजुःसमंभगवतामुदा ७ कृष्णस्यविष्वक्पुरुराजिमण्डलैरभ्याननाःफुल्लदृशोव्र
जार्भकाः ॥ सहोपविष्टाविपिनेविरेजुश्छदायथाऽम्भोरुहकर्णिकायाः ८ केचित्पुष्पैर्दलैःकेचित् पल्लवैरङ्कुरैःफलैः ॥ शिग्भिस्त्वग्भिर्दृषद्भिश्च बुभुजुःकृत

गाये रहे और ऐसी प्रिय लगै मानो कभऊँ सुनी नहीं है जैसे विषयी मनुष्यन कों स्त्रीन की बात प्यारी लगैहै हे राजन् परीक्षित्! मैं तुम्हारे आगे गोप्य कथा कहूंहूं तुम सावधान होयके श्रवण करो गुरु जो हैं ते अपने प्यारे शिष्य कूं गोप्य जो वार्त्ता है ताकूं भी कहि देइ हैं २।३ अघासुर के मुख में तें मरे बछरा और बालकन कूं जिवाय के और यमुनाजी की रेती में लाय के भगवान् यह बोले ४ हे बराबर के मित्रो! यह बड़ी रमणीय रेती है अपने खेलिवे के योग्य वस्तुहै कोमल स्वच्छ वारू के बिछौना बिछ रहे हैं कमल फूले हैं तिनकी सुगन्ध सों भौंरा पक्षी आये हैं तिनके जल में जो शब्द है तिनकी जो प्रतिध्वनि तिनसूं शोभायमान वृक्ष जहाँ होय रहे हैं ५ यहाँ बैठि के कलेवा करैंगे दिन बहुत चढ़ि आयो है भूख लगी है बछरान को जल प्याय के चरिवे को छोड़ि देउ येऊ हौले हौले घास चरेंगे ६ बालक बोले तथास्तु ऐसे कहि बछरानकों जल प्याय हरी घास में चरिवे को छोडि के छीकेन को खोलि खोलि के भोजन करिवे कों बैठत भये ७ व्रज के बालक श्रीकृष्णचन्द्र के चारों ओर बहुत सी पंक्तिन के मण्डल बनायके एक संग बैठे श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख जिनके मुख और दृष्टि जिनकी प्रफुल्लित होय रही या

प्रकार यमुनाजी की रेती में शोभा को प्राप्त होत भये जैसे कमल की कली के चारों ओर पखुरी सुन्दर लगी हैं श्रीकृष्णचन्द्र कली की समान है बालक पखुरीन के समान हैं ८ कोई बालक फूलन की पातरि बनाय के भोजन को बैठे कोई बालक पखुरीन की पातरि बनाय के बैठे और कोई बालकन ने पत्तान की पातरि बनाई और कोई बालकन ने अंकुरानकी पातरि बनाई कोई ने फलनकी पातरि और कोई बालक छीकेनमें भोजन करिबेकों बैठे कोई बालकन ने बहुत सुन्दर वृक्षन के वकलानकी पातरि बनाई कोई बालक शिलानपे परोसिके भोजन करन लगे ९ समस्त बालक अपनी अपनी सामग्रीन कूं न्यारे न्यारे चखावत जाय हैं और आपुस में हँसै हैं हँसावत जायँ हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के संग सुखपूर्वक भोजन करतभये १० फेंटमें बांसुरी उरशालिनी शृङ्गवेतकी छरीको कांख में धरिलीनी दही भातसों लपिटो ग्रास बायें हाथमें धरिलियो और बेर आपरे नींबू इत्यादिक फल अंगुलीन में भरिलिये चारों ओर अपने मित्र बैठे हैं तिनकूं हँसी की बात कहि कहि के हँसावत जाय हैं स्वर्ग में देवता ठाढे होय करि तमाशो देखे हैं हम यज्ञनमें अपरस होयके भाग देइ हैं हमारो भाग नहीं लेये हैं यज्ञ भग-

भाजनाः ९ सर्वेमिथोदर्शयन्तःस्वस्वभोज्यरुचिंपृथक् ॥ हसन्तोहासयन्तश्चाभ्यवजह्रुःसहेश्वराः १० बिभ्रद्वेणुंजठरपटयोःशृङ्गवेत्रेचकक्षे वामेपाणौम सृणकवलं तत्फलान्यङ्गुलीषु ॥ तिष्ठन्मध्येस्वपरिसुहृदोहासयन्नर्मभिःस्वैः स्वर्गेलोकेमिषतिबुभुजे यज्ञभुग्बालकेलिः ११ भारतैवंवत्सपेषु भुञ्जानेष्वच्युतात्मसु ॥ वत्सास्त्वन्तर्वनेदूरं विविशुस्तृणलोभिताः १२ तान्दृष्ट्वाभयसंत्रस्तानूचेकृष्णोऽस्यभीभयम् ॥ मित्राण्याशान्माविरमतेहानेष्येवत्सकानहम् १३ इत्युक्त्वाऽद्रिदरीकुञ्जगह्वरेष्वात्मवत्सकान् ॥ विचिन्वन्भगवान्कृष्णःसपाणिकवलोययौ १४ अम्भोजन्मजनिस्तदन्तरगतोमायाऽर्भकस्येशितुर्द्रष्टुंमञ्जुमहित्वमन्यदपितद्वत्सानितोवत्सपान् ॥ नीत्वाऽन्यत्रकुरूद्वहान्तरदधात्खेऽवस्थितोयःपुरा दृष्ट्वाऽघासुरमोक्षणंप्रभवतःप्राप्तःपरंविस्मयम् १५ ततो

वासीन के बालकनकी जूंठन छिनाय छिनायके खायें हैं यज्ञके भोग करनवारे भगवान् बालकन के खेल करिके भोजन करतभये ११ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र में जिनको मन वे ग्वालबाल भोजन करिबे को बैठे तब बछरा हरी हरी घासके लोभते दूर वनके भीतर चले गये १२ बछरानकों दूरिगये देखिके बालक डरपे तब उनको भय दूरि करत श्रीकृष्णचन्द्र बोलत भये हे मित्रो ! तुम बैठे भोजन करो उठोमति क्यों ऐसी मण्डली फिर न बनैगी मैं सबके बीच में बैठोहूं अलगदेसी उठिके बछरा ले आऊंगो १३ या प्रकार बालकन ने कही श्रीकृष्णचन्द्र पर्वत की गुफा गह्वर वन इनमें अपने बछरान कूं ढूंढते हाथ में दही भातको कौर लिये चले गये १४ हे राजन् परीक्षित् ! कमलतें जाको जन्म वह ब्रह्मा आप जड़ और बाप जड़ दादो जड़ प्रथम तो जल जड़ जलतें कमलभयो सो जड़ कमलते ब्रह्मा भयो सो जड़ क्यों भोजन समय आयके दुःख दियो माया करिके मनुष्य के बालक ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी औरहू मनोहर महिमा देखिवे के कारण मोहमें आयके यमुनाजी की रेतीमें ते बछरान सहित बालकन कूं और स्थान में लेजाय के दबकगयो जो ब्रह्मा पहले आकाश में ठाढ़ोहो श्रीकृष्णचन्द्र ते अघासुरको

मृत्यु देखिके बड़े आश्चर्य कूं प्राप्तभयो १५ ताके पीछे बछरानकों न देख्यो तब वनतैं यमुना तीर पै आये यहां ग्वालबालहू न देखे ता समय बछरा बालकन कूं चारों ओर ढूंढत भये १६ वनमें कहू बछराहू न देखे बालकहू न देखे तब विश्वकी बातके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तत्काल सम्पूर्ण ब्रह्माके कर्तव जानतभये १७ ताके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ने विचार कियो कि चुप बैठि रहोगे तो बालकन की माता रोवेंगी ब्रह्मा के पासते ले आवोगे तो वाको मोह न होयगो बालकन की मातान कूं आनन्द देवेके लिये और ब्रह्माकूं मोह करिवे के लिये विश्वके रचन करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् अपने रूप करतभये बछराहू आप भये और ग्वालबालहू आपभये १८ जाके जा बछराको जैसो छोटो देहहो और जैसे जा बालक के हाथ पांव हैं काहूके छः अंगुरीही जैसी जा बालककी छड़ी सींगी बांसुरी छीको हो जैसे जा बालकके गहने कपड़ाहे काहूके जड़ाऊ गहने काहूके सादा हे काहूकी कसूंमी पागही काहूकी हरी पीरी गुलाबीही जैसो

वत्सानदृष्ट्वैत्यपुलिनेऽपिचनत्सपान् ॥ उभावपिवनेकृष्णोविचिकायसमन्ततः १६ काप्यदृष्ट्वाऽन्तर्विपिने वत्सान्पालांश्चविश्ववित् ॥ सर्वंविधिकृतंकृष्णः सहसाऽवजगामह १७ ततःकृष्णोमुदंकर्त्तुं तन्मातॄणांचकस्यच ॥ उभयायितमात्मानं चक्रेविश्वकृदीश्वरः १८ यावद्वत्सपवत्सकाल्पकवपुर्यावत्कराङ्घ्र्या दिकं यावद्यष्टिविषाणवेणुदलशिग्यावद्विभूषाम्बरम् ॥ यावच्छीलगुणाभिधाकृतिवयोयावद्विहारादिकं सर्वंविष्णुमयंगिरोऽङ्गवदजःसर्वस्वरूपोबभौ १९ स्वयमात्मात्मगोवत्सान् प्रतिवार्यात्मवत्सपैः ॥ क्रीडन्नात्मविहारैश्च सर्वात्माप्राविशद्व्रजम् २० तत्तद्वत्सान्पृथङ्नीत्वा तत्तद्गोष्ठेनिवेश्यसः ॥ तत्तदात्माऽभवद्राजंस्तत्तत्सद्मप्रविष्टवान् २१ तन्मातरोवेणुरवत्वरोत्थिता उत्थाप्यदोर्भिःपरिरभ्यनिर्भरम् ॥ स्नेहस्नुतस्तन्यपयःसुधासवं मत्वापरंब्रह्मसुतानपाययन् २२ ततोनृपोन्मर्दनमज्जलेपनालङ्काररक्षातिलकाशनादिभिः ॥ संलालितःस्वाचरितैःप्रहर्षयन् सायंगतोयामयमेनमाधवः २३ गावस्ततोगोष्ठमुपेत्य सत्वरं हुङ्कारघोषैःपरिहूतसंगतान् ॥ स्वकान्स्वकान्वत्सतरानपाययन् मुहुर्लिहन्त्यःस्रवदौधसम्पयः २४ गोगोपीनांमातृताऽस्मिन् पूर्वास्नेहर्द्धिकांवि

जा बालक को स्वभावहो कोई सतोगुणी कोई रजोगुणी कोई तमोगुणी जैसो जा बालक में गुणहो और जो जो जा बालकको नामहो जैसो जा बालकको रूपहो कोई गोरो कोई सांवरो और जैसो जा बालक को खेलहो श्रीकृष्ण सबरूप होइके सबरूप धरिके सुन्दर लगत भये १९ आप आत्मा श्रीकृष्णचन्द्र आपुही ग्वालरूप बने आपुही बछरा बने तिनकों घेरि घेरिके अपने खेलसूं खेलत भये २० तिन तिन व्रजवासीन के बछरा समूह में ते न्यारे करिके तिन तिन के खिरक में करिके तिन तिन व्रजवासीन के बालक होयके हे राजन् परीक्षित् ! व्रजवासीनके घरनमें जातभये २१ तिन बालकन की माता बांसुरी बजी श्रवण करिके शीघ्रता से उठिके घरन ते बाहर निकसिके बालकन को हाथनते उठाय छाती तें लगावें हैं स्नेह ते स्तनन में दूध भरि आवे है नहीं अमृत की तुल्य स्वाद करिके परब्रह्म श्रीकृष्णचन्द्र कूं आपनो पुत्र मानिके प्यावत भई २२ आये पीछे उबटनो करें हें मज्जन स्नान करावें हैं चन्दन केशर लगावें हैं गहने पहरावें हैं तिलक लगावें हैं भोजन करावें हैं या प्रकार समस्त गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को लाड़ लड़ावें हैं तब अपने सुन्दर चरित्रन सूं उनको आनन्द देयँ हैं ता समय के खेलको नियम राखके सन्ध्याकाल व्रज में आये

है २३ ऐसे गोपीन को मोह करिके गोपन को मोह कहैं हैं [illegible] बछरान के [illegible] है [illegible]
पेन में [illegible] जो दूधहै नाहि पियावें हैं बारबार [illegible] के [illegible] है २४ या कृष्णचन्द्र में सम्पूर्ण गोप गोपीनकी [illegible]
तब दिन अधिक बढ़ो माय गोपीन में भी श्रीकृष्ण की [illegible] पीयी [illegible] पुत्रनी [illegible]
तन में स्नेहरूपी लता [illegible] ऐसी [illegible] नाहीं [illegible] जैसे [illegible] २६ [illegible]
करिके आपन्ने बछरान कूं आपन्ने ग्वालन कूं [illegible] वन में [illegible] क्रीड़ा करतभये २७ और [illegible]
जन्मा श्रीकृष्णचन्द्र [illegible] २८ [illegible] गोवर्द्धन [illegible]

ना ॥ पुरोवदास्वपिहरेस्तोकतामायया विना २५ व्रजौकसांस्वतोकेषु स्नेहवल्ल्याब्दमन्वहम् ॥ शनैर्निःसीमववृधे यथाकृष्णेत्वपूर्ववत् २६ इत्थमात्मा
त्मनात्मानं वत्सपालमिषेणसः ॥ पालयन्वत्सपोवर्षं चिक्रीडेवनगोष्ठयोः २७ एकदाचारयन्वत्सान् सरामोवनमाविशत् ॥ पञ्चषासुत्रियामासु हाय
नापूरणीष्वजः २८ ततोविदूराच्चरतोगावोवत्सानुपव्रजम् ॥ गोवर्द्धनाद्रिशिरसिचरन्त्योददृशुस्तृणम् २९ दृष्ट्वाथतत्स्नेहवशोऽस्मृतात्मा सगोव्रजोऽत्या
त्मपदुर्गमार्गः ॥ द्विपात्ककुद्ग्रीवउदास्यपुच्छोऽगाद्धुंकृतैरास्रुपयाजवेन ३० समेत्यगावोऽधोवत्सान् वत्सवत्योऽप्यपाययन् ॥ गिलन्त्यइवचाङ्गानि लिह
न्त्यःस्वौधसंपयः ३१ गोपास्तद्रोधनायासमौघ्यलज्जोरुमन्युना ॥ दुर्गाध्वकृच्छ्रतोऽभ्येत्यगोवत्सैर्ददृशुःसुतान् ३२ तदीक्षणोत्प्रेमरसाप्लुताशयाजातानु
रागागतमन्यवोऽर्भकान् ॥ उदुह्यदोर्भिःपरिरभ्यमूर्द्धनिघ्राणैरवापुःपरमांमुदंते ३३ ततःप्रवयसोगोपास्तोकाश्लेषसुनिर्वृताः ॥ कृच्छ्राच्छनैरपगतास्त

के समूह के समूह बछरान के स्नेह के [illegible] गोप जो [illegible]
[illegible] आतभये [illegible] ॥ २८ । ३० दूसरी [illegible]
के जो बड़े बड़े बछरा हैं तिनहूं अपने ऐनन को [illegible] ऐसे [illegible] निगल जायगी ३१ जब गोपन [illegible]
तब [illegible] गोप [illegible]
भये ३२ गोप आये तो [illegible]
सूंघि के [illegible] बड़ो आनन्द पावतभये ३३ [illegible] गोपन के [illegible]

जब होयहै तव नेत्रनमें आसू जिनके भरिआवें ३४ स्तन पीवनो जिनने त्यागदियो ऐसे बड़े बड़े बालकनकी क्षणक्षण में वृद्धि कूं देखिके कारण कूं न जानें ऐसे वलदेवजी मनमें विचारत भये ३५ सम्पूर्ण के आत्मा शुद्ध अन्तःकरणको प्रकाशें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र में आश्चर्य्य सो कहाहै मो सहित वृजवासीन के बालकनमें कहा है कभऊं ऐसो प्रेम न बढ़ो है ३६ यह कहा है कहां ते आये हैं देवतान की माया है अथवा मनुष्यन की माया है बहुधा मेरे स्वामी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् की माया है और माया मोकों मोह करनवारी नहीं है ३७ दाशार्हवंशोत्तम श्रीवलदेवजी या प्रकार विचार करिके सम्पूर्ण ग्वाल बाल बछगन सहित जो हैं तिनकूं ज्ञानदृष्टि ते श्रीकृष्णरूप देखत भये ३८ सम्पूर्ण देवता ग्वाल बाल भये है और ऋषीश्वर बछरा भये है यह मैं जानूं हूं परन्तु अब तो देवता नहीं हैं और ये बछरा ऋषि नहीं हैं हे ईश्वर! या भेद कों प्रकाशो यह भेद कैसे है सो तुम सम्पूर्ण न्यारी न्यारी संक्षेप तें विचार के कहो या प्रकार श्रीवलदेवजी

नुस्मृत्युदश्रुः ३ व्रजस्य राम प्रेमर्द्धेर्वीक्ष्यौत्कण्ठ्यमनुक्षणम् ॥ मुक्तस्तनेष्वपत्येष्वप्यहेतुविदचिन्तयत् ३५ किमेतदद्भुतमिव वासुदेवेऽखिलात्मनि ॥ व्रजस्य सात्मनस्तोकेष्वपूर्वं प्रेम वर्द्धते ३६ केयं वा कुत आयाता दैवी वा नार्य्युतासुरी ॥ प्रायो मायाऽस्तु मे भर्त्तुर्नान्या मेऽपि विमोहिनी ३७ इति संचिन्त्य दाशार्हो वत्सान्सवयसानपि ॥ सर्वानाचष्ट वैकुण्ठं चक्षुषा वयुनेन सः ३८ नैते सुरेशा ऋषयो न चैते त्वमेव भासीश भिदाश्रयेऽपि ॥ सर्वं पृथक्त्वं निगमात्कथं वदेत्युक्तेन वृत्तं प्रभुणा बलोऽवैत् ३९ तावदेत्यात्मभूरात्ममानेन त्रुट्यनेहसा ॥ पुरोवदब्दं क्रीडन्तं ददृशे सकलं हरिम् ४० यावन्तो गोकुले बालाः सवत्साः सर्व एव हि ॥ मायाशये शयाना मे नाद्यापि पुनरुत्थिताः ४१ इत एतेऽत्र कुत्रत्या मन्मायामोहितेतरे ॥ तावन्त एव तत्राब्दं क्रीडन्तो विष्णुना समम् ४२ एवमेतेषु भेदेषु चिरं ध्यात्वा स आत्मभूः ॥ सत्याः के कतरे नेति ज्ञातुं नेष्टे कथञ्चन ४३ एवं संमोहयन्विष्णुं विमोहं विश्वमोहनम् ॥ स्वयैव मायया जोऽपि स्वयमेव विमोहितः ४४ तम्यां तमोवन्नैहारं खद्योतार्चिरिवाहनि ॥ महतीतरमायैश्यं निहन्त्यात्मनि युञ्जतः ४५ तावत्सर्वे वत्सपालाः पश्यतोऽजस्य तत्क्षणात् ॥ व्यदृश्यन्त

ने श्रीकृष्णचन्द्र तें कही ता समय श्रीकृष्णने समस्त वृत्तान्त कह्यो कि दाऊ तुमको आज खबरि भई है ब्रह्मा बछरा और बालकन को चुराय के लैगयो मैं बछरा बालकभयो हो या प्रकार श्रीकृष्णके कहे ते वलदेवजी जानतभये ३९ तावत्पर्य्यन्त ब्रह्मा की आयुकी गिनती सूं एक क्षण भर काल बीतो तब आयके देखें तो पहले कीसी नाई बछरा बालकन को लिये श्रीकृष्ण खेलै है तिनकूं ब्रह्मा देखतभयो इतने में यहां वर्ष व्यतीत होय गयो है ४० जितने गोकुल में बछरा बालक है ते सम्पूर्ण मेरी मायारूपी शय्या में सोवत है अबताई फेरि जगे नहीं है ४१ यहां बछरा बालक कहा ते आये मैं चुरायके लैगयो हो तिनते न्यारे है जितने मैं चुरायके लैगयो तितनेही वर्षदिनपर्य्यन्त श्रीकृष्णचन्द्र के संग खेलै हैं ४२ आपही ते भयो है मोह जिसको ऐसो ब्रह्मा इन भेदन में बहुत वेरताई विचार करिके कौन से बछरा बालक सत्य हैं और कौन से मिथ्या हैं मैं लैगयो चुरायके ते सत्य हैं ये श्रीकृष्णके संग खेलैहैं ते सत्य हैं या प्रकार जानिवे कूं समर्थ न होतभयो ४३ मोह जिनके नहीं विश्वके मोह करनवारे ऐसे विष्णु भगवान् को मोहित करैं हैं परन्तु ब्रह्मा अपनी माया सूं आपुही मोहित होयगयो ४४ जैसे अंधेरी राति में

कोल कहा अँधेरो करैगो दिन में पटवीजना कहा प्रकाश करैगो ऐसे बडे पुरुषन कों नीचमाया नहीं मोहित करै है ४५ ब्रह्मा के देखत क्षण भरमें तवताई समस्त बछरा ग्वाल मेहश्यामी नाई सामरे पीरे रेशमी वस्त्रन कूं पहिरे चार चार जिनके भुजा शङ्ख चक्र गदा पद्म इनको हाथमें लिये माथे पै किरीट पहिरे कान में कुण्डल मोतीन के हार वनमाला पहिरे दिखाई देनभये ४६। ४७ भृगुलता की कान्ति जिनमें परे कमर में कोंधनी हाथन में मुंदरी पहरे कोमल तुलसी की नई माला चरणन ते लेकर मस्तक पर्यन्त पहरे हैं समस्तअङ्गन में बडे पुण्यवान् पुरुषने पहराये हैं चादनी कीसी नाई सुन्दर मुसिकानि भरी अरुण गुणलिये कटाक्ष भरी चितवन तिनसूं अपने भक्तनके मनोरथनकूं रजोगुणते उत्पन्न करनवारे सत्त्वगुण ते पालन करनवारे दिखाई देय हैं ४८। ४९। ५० ब्रह्मा ते आदि लेके तृणपर्यन्त स्थावर जंगम समस्तप्राणी मूर्तिमान् होय के एक एक नदरा के सम्मुख नाचें गावें हैं अनेकप्रकार की पूजा करें हैं ५१ अणिमा ते आदि लेके महिमादिक विभूति मायाते आदिलेके महिमादिक विभूति चौबीस तत्त्व हैं ते चारों ओर ठाढे हैं ५२ बालकनके तेजते जिनको तेज दूरि होयगयो ऐसे काल स्वभाव संस्कार काम कर्म्म सत्त्वगुण

घनश्यामाः पीतकौशेयवाससः ४६ चतुर्भुजाःशङ्खचक्रगदाराजीवपाणयः॥ किरीटिनःकुण्डलिनो हारिणोवनमालिनः ४७ श्रीवत्साङ्गदर्दोरत्नकम्बुकङ्कणपाणयः॥ नूपुरैःकटकैर्भाताःकटिसूत्राङ्गुलीयकैः ४८ अङ्घ्रिमस्तकमापूर्णास्तुलसीनवदामभिः॥ कोमलैःसर्वगात्रेषु भूरिपुण्यवदर्पितैः ४९ चन्द्रिकाविशदस्मेरैः सारुणापाङ्गवीक्षितैः॥ स्वकार्थानामिवरजः सत्त्वाभ्यामस्पृग्पालकाः ५० आत्मादिस्तम्बपर्यन्तैर्मूर्तिमद्भिश्चराचरैः॥ नृत्यगीताद्यनेकार्हैःपृथक्पृथगुपासिताः ५१ अणिमाद्यैर्महिमभिरजाद्याभिर्विभूतिभिः॥ चतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैःपरीतामहदादिभिः ५२ कालस्वभावसंस्कारकामकर्मगुणादिभिः स्वमहिध्वस्तमहिभिर्मूर्तिमद्भिरुपासिताः ५३ सत्यज्ञानानन्तानन्दमात्रैकरसमूर्त्तयः॥ अस्पृष्टभूरिमाहात्म्या अपिह्युपनिषद्दृशाम् ५४ एवंसकृद्ददर्शाजः परब्रह्मात्मनोखिलान्॥ यस्यभासासर्वमिदं विभातिसचराचरम् ५५ ततोऽतिकुतकोद्वृत्यस्तिमितैकादशेन्द्रियः॥ तद्धाम्नाऽभूदजस्तूष्णीं पूर्देव्यन्तीवपुत्तिका ५६ इतीरेशेऽतर्क्येनिजमहिमनिस्वप्रमितिके परत्राजातोऽतन्निरसनमुखब्रह्मकमितौ॥ अनीशेऽपिद्रष्टुंकिमिदमितिवामुह्यतिसतिचच्छादाजोज्ञा

रजोगुण तमोगुण ये रूप धरिके ५३ सत्य ज्ञानरूप आनन्दमान एकरस जो ब्रह्म सोई है रूप जिनको ऐसे परमेश्वर की उत्कृष्ट महिमा कूं नहीं जानै हैं ५४ या मकार ब्रह्माजी एक संग समस्त बछरा बालकन कूं परब्रह्म देखतभये या परब्रह्म की कान्ति करि सम्पूर्ण स्थावर जंगम विश्व प्रकाशै हैं ५५ ताके पीछे बडे आश्चर्य ते हंसपै ते ब्रह्मा गिरि परयो इन्द्रिय जाकी शिथिल होगई बालकन के तेज ते ब्रह्मा चुप होयगयो जैसे ग्रामकी रक्षाकरनवारी पुतरीके आगे चार मुखकी सोने की प्रतिमा ठाढी होय या प्रकार ठाढो भयो ५६ या प्रकार सरस्वती के स्वामी ब्रह्माजी के विचार में न आवै असाधारण जिनकी महिमा याते परे कछुहू नहीं कछुहू नहीं या प्रकार मिथ्या वस्तुको निषेध करिके श्रुतिन को शिरोभाग कौन उपनिषद् तिनसों जानिवे में आवें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की महिमा देखिके मोहित होयगये पीछे यह कहा है ऐसे देखिवे कीहू सामर्थ्य न रही तब श्रीकृष्णचन्द्र ने तुरत जानिके आश्चर्य दिखायो वह मायारूपी परदा ब्रह्मापै ते खैंचलीनों अथवा

दूसरो अर्थ, यह ब्रह्मा लोकाभिमानी है, याते मेरी माया देखिवे को अधिकारी नहीं है यह जानि के ब्रह्माके ऊपर मायारूपी परदा फैलाय दीनो ५७ ताके पीछे ब्रह्माजी की इन्द्रिय चेतन भई तब जैसे मृतक उठै है ऐसे उठिके कष्टते नेत्रन कूं खोलिके अपने सहित ब्रह्माजी यह देखत भयो ५८ ब्रह्माजी चारों ओर दिशान कूं देखिके और समस्त जीवनकूं जीविका कूं देनवारो वृक्ष जहा लगि रहे है चारो ओरते जहा प्रिय वस्तु हैं ऐसे वृन्दावन के दर्शन करतभये ५९ जा वृन्दावनमें स्वभावतेही जिनको वैर ऐसे सिंहादिक सम्मुख मित्रकी तुल्य संग रहे हैं श्रीकृष्णचन्द्र के वास करे ते समस्त प्राणिन को क्रोध तृष्णा दूर होयगई ६० ता वृन्दावन में गोपालवंशमें बालकपने को आचरण करे हैं अन्त जिनको नहीं अगाध जिनको ज्ञान बछरा और मित्र ग्वालबालन कूं पहले कीसी नाई चारिगो और ढूंढत डोलें हाथ में दही भात को ग्रास ले रहे हैं ऐसे अद्वितीय परब्रह्म श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करतभये ६१ दर्शन करिके ब्रह्मा अपने वाहन हंस पै ते शीघ्रता ते उतरि

त्यासपदिपरमोऽजाजवनिकाम् ५७ ततोऽर्वाक्प्रतिलब्धाक्षः कःपरेतवदुत्थितः ॥ कृच्छ्रादुन्मील्यवैदृष्टीराचष्टेदंसहात्मना ५८ सपद्येवाभितःपश्यन् दिशोऽपश्यत्पुरःस्थितम् ॥ वृन्दावनंजनाजीव्यद्रुमाकीर्णंसमाप्रियम् ५९ यत्रनैसर्गदुर्वैराः सहासन्नृमृगादयः ॥ मित्राणीवाजितावासद्रुतरुट्तर्षकादिकम् ६० तत्रोद्वहत्पशुपवंशशिशुत्वनाट्यंब्रह्माद्वयंपरमनन्तमगाधबोधम् ॥ वत्सान्सखीनिवपुरापरितोविचिन्वदेकंसपाणिकवलंपरमेष्ठ्यचष्ट ६१ दृष्ट्वात्वरेणनिजधोरणतोवतीर्य पृथ्व्यांवपुःकनकदण्डमिवाभिपात्य ॥ स्पृष्ट्वाचतुर्मुकुटकोटिभिरङ्घ्रियुग्मं नत्वामुदश्रुसुजलैरकृताभिषेकम् ६२ उत्थायोत्थायकृष्णस्य चिरस्यपादयोःपतन् ॥ आस्तेमहित्वंप्राग्दृष्टं स्मृत्वास्मृत्वापुनःपुनः ६३ शनैरथोत्थायविमृज्यलोचने मुकुन्दमुद्वीक्ष्यविनम्रकन्धरः ॥ कृताञ्जलिःप्रश्रयवान्समाहितःसवेपथुर्गद्गदयैलतेलया ६४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ नौमीड्यतेऽभ्रवपुषेतडिदम्बराय गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय ॥ वन्यस्रजेकवलवेत्रविषाणवेणुलक्ष्मश्रियेमृदुपदेपशुपाङ्गजाय १

के अपने देहको सुवर्ण की लठिया की तुल्य पटकि के चारों मुकुटनको अग्रभाग चरणारविन्द में लगाइ दण्डवत् करिके आनन्द के आंसू जो नेत्रन में ते चले तेई मानों सुन्दर जल हैं तासूं अभिषेक करतभयो ६२ प्रथम जो महिमा देखी ताकी फेरि फेरि सुधि करिके श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द में उठे फेरि गिरिपरे ऐसे बड़ी देरताईं ब्रह्मा पर्यो रह्यो ६३ याके पीछे उठिके आखिन कू पोछिके श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करि लज्जा के मारे नारि नीची करिके हाथ जोरि के थर थर कम्पत जाय कछु अक्षर निकसैं कछु नहीं निकसैं गद्गद वाणी सूं ब्रह्मास्तुति करत भयो ६४ इति श्री मन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(चतुर्दशेऽद्भुतंदृष्ट्वापूर्वागन्तुकनिश्चयम् ॥ अनीशःकर्त्तुमस्तौपीत्कृष्णंब्रह्माविमोहितः १ चौदहवें अध्याय में अनीश विमोहित ब्रह्माजी पूर्वागन्तुक निश्चय अद्भुत देखकर कृष्णजीकी स्तुति करते

भये १) ब्रह्माजी कहैहैं हे स्तुति करिवे योग्य ! तुम्हारे प्रसन्न करिवे के लिये तुम्हारी स्तुति करौ हौं बरसाऊ घटा सौं जिनको देह है बिजुरी सौं चटकीले पीताम्बर कूं पहिरे हैं गुंजान के कुण्डल मयूरपुच्छ के मुकुट तिनसौं शोभायमान जिनको मुखारविन्द है वनमाला कूं पहिरे दही भातको ग्रास वेतकी छरी सींग बासुरी इनको लिये अति सुन्दर कोमल जिनके चरण गौवनको चरावेके मे नन्दरायजी तिनके वंशमें १ हे देव महाशयवान् ! मेरे ऊपर कृपा जातेभई अपने भक्तनकी जैसी इच्छा तैसो होयजाय है पञ्चभूतको बनो नहीं ऐसो तुम्हारो यह शरीर ताकी महिमा कोई भी जानिवे को समर्थ भयो अर्थात् मैं ब्रह्मा भी जानिवे को नहीं समर्थ भयो तब साक्षात् आत्मसुखके अनुभवरूप अवतारी तुमको तिनकी महिमा कूं मनको रोकिके कौन जानसके अथवा दूसरो अर्थ पञ्च-भूतको बनो ब्रह्माण्ड तुम्हारी महिमा जानिवे में नहीं आवै है मेरे ऊपर कृपा याते भई अपने भक्तन की जैसी जैसी इच्छा तैसो तैसो होयजाय तुम्हारो सांवरो सच्चिदानन्द घनवपु है ताकी महिमा कूं मन रोकिके कौन जानिसकै है मेरोरूप जानिवे में नहीं आवैहै ते अज्ञानी संसार कूं कैसे करिके तरेंगे तहा ब्रह्माजी कहै है २ जानिवे के लिये जो परिश्रमहै ताको छोडिके ना हुनके मुखते निकरी

अस्यापिदेववपुपोमदनुग्रहस्य स्वेच्छामयस्यनतुभूतमयस्यकोऽपि ॥ नेशेमहित्ववसितुंमनसान्तरेण साक्षात्तवैवकिमुतात्मसुखानुभूतेः २ ज्ञानेप्रयासमुदपास्यनमन्तएव जीवन्तिसन्मुखरितांभवदीयवार्त्ताम् ॥ स्थानेस्थिताःश्रुतिगतांतनुवाङ्मनोभिर्येप्रायशोऽजितजितोऽप्यसितैस्त्रिलोक्याम् ३ श्रेयःस्रुतिंभक्तिमुदस्यतेविभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये ॥ तेषामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुषावघातिनाम् ४ पुरेहभूमन्बहवोऽपियोगिनस्त्वदर्पितेहानिजकर्मलब्धया ॥ विबुध्यभक्त्यैवकथोपनीतया प्रपेदिरेऽञ्जोऽच्युततेगतिंपराम् ५ तथापिभूमन्महिमाऽगुणस्यते विबोद्धुमर्हत्यमलान्तरात्मभिः ॥ अविक्रियात्स्वानुभवादरूपतोह्यनन्यबोध्यात्मतयानचान्यथा ६ गुणात्मनस्तेऽपिगुणान्विमातुं हितावतीर्णस्यकईशिरेऽस्य ॥ कालेनयैर्वा

जो तुम्हारी कथा सो कानमें आयके परी ताकी देह वाणी मनते बडाई करत ये पुरुष जीवें हैं हे अजित अर्थात् काहूके जीतवे में नहीं आवो हौ ! वे बहुधा त्रिलोकी में तुमको जीतिलेइहैं ३ हे विभो ! भक्ति मुक्तिकी देनवारी तुम्हारी माया ताकूं त्यागिके जे पुरुष अकेले ज्ञानी होयवे के लिये खेद करैहैं तिन पुरुषनको खेदही शेष रहि जाय है और कछु नहीं मिलै है जे पुरुष थोथे तुषन कूं कूटै उनकों जैसे दुःख बाकी रहि जाय और कछु हाथ नहीं लगै है ४ हे व्यापक ! या संसारमें पहिले बहुतसे योगीश्वर योग करते जब ज्ञान न मिलो तुममें समर्पण करी जो अपनी चेष्टा और कर्म तिनके प्रभाव से श्रवण करिवे को मिली जो तुम्हारी कथा ताने प्राप्त कराई भक्ति तासूं तुमकों जानि के हे अच्युत भगवन् ! श्रेष्ठ तुम्हारी गतिकों प्राप्तभये ५ या प्रकार केवल प्रेमभक्तिही करिके तुम्हारो साक्षात् यह स्वरूप अनुभव होय तौ भी केवल ज्ञानीकोही सम्बन्धहै ताते भक्तिमिश्रित ज्ञानहू तुम्हारो निर्गुण ब्रह्मस्वरूप अनुभव विषे कारणरूपहै सोई कहतहैं जो केवल भक्ति ... तो हे भगवन् ! हे प्रकट मधुरयुक्त यह प्रकट करनहार प्राकृतगुणरहित जो तुम सो तुम्हारी महिमा महत्त्व बहुत्व रूप एक धर्म मेरे महिमा पर हे ब्रह्म ! हेय कहतहै सम्यक्प्रकार प्रश्न करिके विस्तारितभयो यह मेरो अनुग्रह जानेगे हृदयमें या प्रकार तुम्हारो वचन है सो भक्तिसुख ब्रह्ममें नहीं या भांति दुर्गा को वचन महिमा शब्द प्रसिद्ध परै है ब्रह्महै आपही ते विशेष जानिवे के योग्यहै अन्नपाक आपही ते

होतहै ऐसे कर्म्महीं कर्त्ता होतहै जैसे कुठारी आपही वृक्षको छेदनकरैहै या प्रकार या ठौरमें कारणको कर्त्ता करिके अर्थ करिये कहा ते कौन निमित्त ते अमल शुद्ध अन्तरआत्मा करिके अपने अनुभव ते क्योंजी अनुभव निश्चय अन्तरवन सो सूक्ष्मदेह निराकाररूप निर्विकार ब्रह्म कैसे अनुभव विषयहोय ताते विशेषण करिके निर्विकारते विकारमायाको धर्म्म सो मायारहित होय जब वैसो होय तहां लिंगशरीर वासनामय शरीरको नाश जायवो जनावतभये क्योंजी तऊ ब्रह्मको अविषय करि कहिये अनुभव विषय करिके कहिवो उचित नहीं ताते फेरि विशेषण देतहैं विषय आकाश रहित जो ब्रह्म आकार ते ब्रह्मको ब्रह्म आकार अनुभवविषय होयवो दोष नहीं क्योंजी ताके जानिवे में कहा प्रकारान्तरहै तहा कहत हैं नहीं है और कोई ज्ञान आत्मस्वरूप जाको ता आत्मा करिके वही और प्रकार ज्ञान होयवे के योग्य या भांति जानिये जैसे विषय आकार अनुभव निश्चय शब्द स्पर्श आदि करनेको विषयकरै नहीं तैसेई ब्रह्म आकार अनुभव निश्चय ब्रह्म विषयकरै नहीं शब्द आदिकनकोकरे इत्यर्थः ६ या विश्व के कल्याण करिवे के लिये अवतार लिये सतोगुण रजोगुण तमोगुण इनके साक्षी तुमहौ तिनकेइतने गुणहैं जिनके गिनिवे के लिये कौन पुरुष सामर्थ्यवान् होयगो पुरुष बहुत दिनमें बहुतसे जन्म धरिके पृथ्वीके रेणुकी गिनती करिलेय आकाशके हिमके कणिकानकी गिनती करिलेय स्वर्गके तारेनकी गिनती करिसके परन्तु तुम्हारे गुण गिनिवेमें

विमिताःसुकल्पै र्भूपांसवःखेमिहिकाद्युभासः ७ तत्तेऽनुकम्पांसुसमीक्षमाणोभुञ्जानएवात्मकृतंविपाकम् ॥ हृद्वाग्वपुर्भिर्विदधन्नमस्ते जीवेतयोमुक्तिपदे सदायभाक् ८ पश्येशमेऽनार्य्यमनन्तआद्ये परात्मनित्वय्यपिमायिमायिनि ॥ मायांवितत्येक्षितुमात्मवैभवं ह्यहंकियानैच्छमिवार्चिरग्नौ ९ अतःक्षमस्वाच्युतमेरजोभुवोह्यजानतस्त्वत्पृथगीशमानिनः ॥ अजाऽवलेपान्धतमोऽन्धचक्षुषएषोऽनुकम्प्योमयिनाथवानिति १० क्वाहंतमोमहदहंखचराग्निवार्भूसंवेष्टिताण्डघटसप्तवितस्तिकायः ॥ क्वेदृग्विधाविगणिताण्डपराणुचर्यावाताध्वरोमविवरस्यचतेमहित्वम् ११ उत्क्षेपणंगर्भगतस्यपादयोःकिंकल्पते

नहीं आवैंहैं ७ ता कारण ते यो दीनके ऊपर कब कृपा करोगे याप्रकार तुम्हारी कृपाको पैंडो देखो करूंहूं अपने किये जे कर्म्म तिनको फल सुख दुःखहै ताको भोग करनरहे हृदय वाणी देहते दण्डवत् करत जो जीवहै वह पुरुष मुक्तिपदमें भाग पावेहै ८ हे ईश्वर! मेरी दुष्टता देखो तो अन्त जिनको नहीं सबको कारण मायाहै तिनके मोहन करनवारे परमात्मा तुमहो तिनके ऊपर माया फैलायके अपने वैभव देखिवे की मैंने इच्छाकरी सो कितनो कछु देख्यो जैसे अग्निमें पतङ्ग कहा प्रकाश करैगो ९ हे अच्युत! हे अखण्डरूप! या प्रकार ते रजोगुण ते जाकी उत्पत्ति तुम्हारे स्वरूपको न जानो तुम ते न्यारो ईश्वरको मानूं जगत्को करनवारो मैं हूं या मदते अँधरोहूं मैं ब्रह्माको नाथ हूं यह मेरो टहलुआ है याही ते यह कृपाकरिवे लायक है यह मानिके मेरे ऊपर कृपाकरो अहो ब्रह्मा ब्रह्माण्ड जाको देह तू तो ईश्वर है ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र कहैं तहां ब्रह्मा कहै हैं १० माया महत्तत्त्व अहङ्कार आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी इनको बनो ब्रह्माण्ड तामें सात बिलस्त की जाकी देह ऐसो मैं कहा या ब्रह्माण्ड सरीखे गिनती में न आवे अनेक ब्रह्माण्ड तुम्हारे रोमनमें बसे तुम्हारी महिमा कहा सो मैं और आप में बडो अन्तरहै ११ हे अधोक्षज अर्थात् इन्द्रियन करि जानिवे में न आवो! गोदमें बालक बैठिके पाव उछारे अथवा लात लगिजाय तो कहा या संसार में वाको अपराध मानै हैं तब श्रीकृष्णचन्द्र ने कही ब्रह्मा जो तेरी माया होय जाते

जायके कहै मोते कहाकहै छोटो वड़ो कार्य्य करत जितनो कछु विश्वहै सो सब तुम्हारे पेटमें है या विश्व में मैं हूं आयगयो आप मेरी मायाहो मैं तुम्हारो बालकहों मोपै अपराध बन्यो ताइ तुम क्षमाकरो या रीतिते तुम्हारो पुत्र होय यह कहै हैं १२ भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्गलोक इन तीनोंनको नाश होय जाय है तब चारों ओरते समुद्र उमड़े है तिनके भीतर नारायण सोवें है तिनकी नाभि में ते कमलभयो तामें ते ब्रह्मा निकसो यह वेद की वाणी कहा मिथ्याहै हे ईश्वर! तुम कहो मैं नहीं जन्मो तुमहीं ते जन्मोहूं तब श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं ब्रह्मा तू अपने बापही को भूलि जायहै नारायण को पुत्र होयगो मोको कहा तहा कहै हैं १३ तुम कहा नारायण नहीं हो किन्तु तुमहीं नारायण हो समस्त देहधारीन के आत्माहो हे अधीश अर्थात् सबके प्रेरणा करनवारे! समस्त लोकन कूं साक्षात् देखो हो नरते भयो जो जल तिसमें तुम्हारो वासहै तिस कारण नारायण प्रसिद्ध हैं सो तुम्हारी मूर्ति हैं और जल में वासहू सत्य नहीं है किन्तु तुम्हारी मायाहै १४ जगत् को आ-

मातुरधोक्षजागसे ॥ किमस्तिनास्तिव्यपदेशभूषितं तवास्तिकुक्षेःकियदप्यनन्तः १२ जगत्त्रयान्तोदधिसंप्लवोदे नारायणस्योदरनाभिनालात् ॥ वि निर्गतोऽजस्त्वितिवाङ्नमृषा किंत्वीश्वरत्वन्नविनिर्गतोऽस्मि १३ नारायणस्त्वंनहिसर्वदेहिनामात्माऽस्यधीशोऽखिललोकसाक्षी ॥ नारायणोऽङ्गंनरभू जलायनात्तच्चापिसत्यंनतवैवमाया १४ तच्चेज्जलस्थंतवसज्जगद्वपुःकिंमेनदृष्टंभगवंस्तदैव ॥ किंवासुदृष्टंहृदिमेतदैव किंनोसपद्येवपुनर्व्यदर्शि १५ अत्रैवमायाधमनावतारे ह्यस्यप्रपञ्चस्यबहिःस्फुटस्य ॥ कृत्स्नस्यचान्तर्जठरेजनन्या मायात्वमेवप्रकटीकृतन्ते १६ यस्यकुक्षाविदंसर्वंसात्मंभातियथातथा ॥ तत्त्वय्यपीहतत्सर्वं किमिदंमाययाविना १७ अद्यैवत्वदृतेऽस्यकिंममनतेमायात्वमादर्शितमेकोऽसिप्रथमंततोव्रजसुहृद्वत्साःसमस्ताअपि ॥ तावन्तोऽसि चतुर्भुजास्तदखिलैःसाकंमयोपासितास्तावन्त्येवजगन्त्यभूस्तदमितंब्रह्माद्वयंशिष्यते १८ अजानतांत्वत्पदवीमनात्मन्यात्मात्मनाभासिवितत्यमायाम् ॥ सृष्टाविवाहंजगतोविधानइवत्वमेषोऽन्तइवत्रिनेत्रः १९ सुरेष्वृषिष्वीशतथैवनृष्वपि तिर्यक्षुयादस्स्वपितेऽजनस्य ॥ जन्मासतांदुर्मदनिग्रहाय प्रभोविधा

श्रयभूत तुम्हारो रूप जलके भीतर सत्यहै तो जा समय मैंने कमल के भीतर साधिकर ढूंढो तब क्यों नहीं दिखाई दियो हृदय में भी नहीं देखो तो क्यों न होयगो तहां कहै हैं हे ब्रह्मा! तपकरे पीछे ताही समय नहीं होतो फिरि कैसे दिखाय दियो या प्रकार कहत भये है १५ हे माया के करनवारे बाहिर भीतर समस्त विश्व के प्रकाश करनवारे! या श्रीकृष्ण अवतार में ही यशोदा माताके पेटमें प्रतिविम्ब परयो सर्वथा माया कैसे होय तहां कहै हैं १६ या तुम्हारे उदर के भीतर तुम सहित यह विश्व प्रकाशै है तैसेही बाहिर प्रकाशै है बाहिर भीतर एकसो प्रकाश तो माया भी कहां बनै है १७ अबहीं तुम बिना मोकों यह विश्व कहा माया न दिखाई किन्तु मायाही दिखाई अब मायाही को कहै हैं प्रथम तुम अकेले हे पीछे सम्पूर्ण व्रज के बछरारूप भये तिनमें ही समस्त चतुर्भुज रूप भये ता पीछे मैंने समस्त तत्त्वन कों लैके एक एक बछरा बालककी स्तुतिकरी तिनमें ही तुम ब्रह्माण्डरूप होयगये ता पीछे प्रणाम करिबे में नहीं आये ऐसे अद्वितीय ब्रह्मरूप बाकी रहे १८ व्यापक जो तुम सो तुम्हारे स्वरूपको माया में स्थित होयके नहीं जानै हैं तिन पुरुषन के ऊपर माया फैलाय के स्वतंत्रता करिकै प्रकाशौ हो जगत् के उत्पन्न करिबे के समय

मो ब्रह्मा से होय जाउ और पालनसमय विष्णु से होय जाउ और संहारसमय तीन जिनके नेत्र ऐसे रुद्र से होय जाउहौ हे ईश ! देवतान में ऋषीश्वरन में मनुष्यन में पशु पक्षीन में जलके जीवन में अजन्मा तुम साधुन के ऊपर कृपाकरिबे के लिये दुष्टनके मद दूरि करिबे के लिये हे प्रभु ! जन्म लेउ हो १९।२० हे व्यापक ! हे षड्गुण ! हे छ' प्रकार के ऐश्वर्य्यकरि पूर्ण ! हे समस्त जीवन के आत्मा ! हे योगके ईश्वर ! त्रिलोकी तुम्हारी लीला कहा है कैसे होय है कितनी है कौन समय है ऐसे कौन जानि सकै है योगमाया को विस्तार करिके खेलो हौ २१ ता कारण ते मिथ्या जाको स्वरूप स्वप्न की तुल्य प्रकाशै आप ते प्रकाश जामें नहीं अति है दु ख जामें ऐसो यह समस्त जगत् और चित्त स्वरूप जो तुम देह अन्त जिनको नहीं तिनमें माया ते जनित जो जन्म मरण सो सत्य सों दिखाई देइहै २२ एक आत्मा कहिये व्यापक पुरातन पुरुष अपने करिके प्रकाशवान् अन्त जिनको नहीं नित्य और नाशकारिरहित सर्वदा सुखस्वरूप निर्म्मल

तःसदनुग्रहायच २० कोवेत्तिभूमन्भगवन्परात्मन्योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोक्याम् ॥ क्ववाकथंवाकतिवाकदेति विस्तारयन्क्रीडसियोगमायाम् २१ तस्मादिदंजगदशेषमसत्स्वरूपं स्वप्नाभमस्तधिषणंपुरुदुःखदुःखम् ॥ त्वय्येवनित्यसुखबोधतनावनन्ते मायातउद्यदपियत्सदिवावभाति २२ एकस्त्वमात्मा पुरुषःपुराणः सत्यःस्वयञ्ज्योतिरनन्तआद्यः ॥ नित्योऽक्षरोऽजस्रसुखोनिरञ्जनःपूर्णोऽद्वयोमुक्तउपाधितोऽमृतः २३ एवंविधंत्वांसकलात्मनामपि स्वात्मानमात्मात्मतयाविचक्षते ॥ गुर्वर्कलब्धोपनिषत्सुचक्षुषा येतेतरन्तीवभवानृताम्बुधिम् २४ आत्मानमेवात्मतयाऽविजानतां तेनैवजातंनिखिलंप्रपञ्चितम् ॥ ज्ञानेनभूयोऽपिचतत्प्रलीयते रज्ज्वामहेर्भोगभवाभवौयथा २५ अज्ञानसंज्ञौभवबन्धमोक्षौ द्वौनामनान्यौस्तऋतज्ञभावात् ॥ अजस्रचित्यात्मनिकेवले परे विचार्य्यमाणेतरणाविवाहनी २६ त्वामात्मानंपरंमत्वा परमात्मानमेवच ॥ आत्मापुनर्बहिर्मृग्यस्त्वहोऽज्ञजनताऽज्ञता २७ अन्तर्भवेऽनन्तभवन्तमेव ह्यतत्त्यजन्तोमृगयन्तिसन्तः ॥ असन्तमप्यन्त्यहिमन्तरेण सन्तंगुणंतंकिमुयन्तिसन्तः २८ अथापितेदेवपदाम्बुजद्वयप्रसादलेशानुगृहीतएवहि ॥

परिपूर्ण अद्वितीय उपाधिरहित अमृतरूप जो तुम हो सो सत्यहौ २३ समस्त जीवन के आत्मा पीछे स्वरूप जिनको कह्यो ऐसे तुमहो तिनकूं गुरुरूप सूर्य ते आयो जो ज्ञानरूपी नेत्र तासूं यह जीवके अन्तर्यामीरूप करिके नहीं जाने तिन पुरुषन को ताही अज्ञानसूं सब संसार होय है ज्ञान भये तें समस्त संसार दूर होयजाय है यावत्पर्य्यन्त अज्ञान है तावत्पर्य्यन्त रस्सी कू सर्प जाने है पश्चात् ज्ञानभये ते रस्सी की रस्सीही जानिबे में आवे है २४ । २५ संसार में बन्धन और मोक्ष दोनों अज्ञान सों है सत्य ज्ञानरूप जो आत्मा तासूं पृथक् नहीं है निरन्तर चैतन्यरूप आत्मा केवल परमेश्वररूप तुमहो तिनको विचारे पीछे अज्ञानहू नहीं बन्धनहू नहीं ज्ञानहू नहीं मोक्षहू नहीं जैसे सूर्य्य में रात दिन नहीं २६ तुम जो आत्मा हो तिनकूं देह मानिके और देहकों आत्मा मानिके आत्माको फिरि बाहिर ढूंढै हैं आश्चर्य्यरूप अज्ञानीनको अज्ञान है २७ साधु जो हैं येहू आत्मा नहीं येहू आत्मा ऐसे जड़ पदार्थ को निषेध करिके देहके भीतर तुमही को ढूंढै हैं नहीं जो सर्प है ताके निषेध विना समीप जो रस्सी परी है ताको कहा सत्य जानै हैं अपितु नहीं जानै हे सर्प के निषेध भये पीछे रस्सी जानिबे में आवै है २८ ज्ञान से मुक्ति होय जायहै मुक्तिको

क्यों बड़ाई करी तहां ब्रह्मा कहै हैं जो वैकुण्ठ में प्राप्त होय सो विध ज्ञान कह्यो तथापि कहै हैं चरणारविन्दन के प्रसाद के कणिकान को अनुग्रह जापै भयो है वही तुम्हारी महिमा के स्वरूप कों जानै है जापै तुम्हारे चरणारविन्दकी कृपाही नहीं है वह और कोई पुरुष बहुत दिन पर्यन्त ढूंढोकरै तौभी तुम्हें व तुम्हारी महिमाको नहीं जानै २९ हे नाथ! या ब्रह्माके जन्म में अथवा और कोई जन्म होय तामें अथवा पशु पक्षीन में जन्म होय जामें वह मेरो बड़ो भाग्य होय जा भाग्य सों तुम्हारे व्रजवासीन में कोई एक होयके तुम्हारे चरणारविन्द को सेवनकरौं ३० देवता के जन्म ते जाकाहू के जन्म ते तुम्हारी भक्तिहोय वह जन्म श्रेष्ठ है या प्रकार उत्कण्ठापूर्वक सात श्लोक करि स्तुति करै है अहो आश्चर्य व्रजकी गऊ गोपी धन्य हैं हे प्रभु! जिन गौ गोपीन के स्तनन को दूध रूप अमृत बछरा होयके बालक होयके तुमने आनन्द सूं पेट भरिके पियो तुम्हारी तृप्ति के लिये अबताईं यज्ञहू पूर्ण नहीं होय हैं कहा यज्ञनमें हूं तुम्हारो पेट नहीं भरै है भगवान् के सखानकी महिमा कहिबे में जानिबे में नहीं आवै है ३१ ब्रह्माजी कहै हैं नन्दरायजी के व्रजवासीन को आश्चर्य रूप बडो भाग्य है परमानन्द पूर्णब्रह्म सनातन जिन व्रजवासीन को

जानातितत्त्वंभगवन्महिम्नोनचान्यएकोपिचिरंविचिन्वन् २९ तदस्तुमेनाथसभूरिभागोभवेऽत्रवान्यत्रतुवातिरश्चाम् ॥ येनाहमेकोऽपिभवज्जनानां भूत्वानिषेवेतवपादपल्लवम् ३० अहोऽतिधन्याव्रजगोरमण्यः स्तन्यामृतंपीतमतीवतेमुदा ॥ यासांविभोवत्सतरात्मजात्मनायत्तृप्तयेऽद्यापिनचालमध्वराः ३१ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ॥ यन्मित्रंपरमानन्दंपूर्णब्रह्मसनातनम् ३२ एषांतुभाग्यमहिमाच्युततावदास्तामेकादशैवहिवयंबतभूरिभागाः ॥ एतद्धृषीकचषकैरसकृत्पिबामः शर्वादयोऽङ्घ्र्युदजमध्वमृतासवन्ते ३३ तद्भूरिभाग्यमिहजन्मकिमप्यटव्यां यद्गोकुलेऽपिकतमाङ्घ्रिरजोभिषेकम् ॥ यज्जीवितंतुनिखिलंभगवान्मुकुन्दस्त्वद्यापियत्पदरजःश्रुतिमृग्यमेव ३४ एषांघोषनिवासिनामुतभवान् किंदेवरातेतिनश्चेतो

सर्वदा मित्र होय रह्यो है ३२ इन व्रजवासीन के भाग्यकी महिमा रहो ताके कहिबे की कौन की सामर्थ्य है इन्द्रियन के अधिष्ठाता यज्ञदेवता महादेव बुद्धिके अधिष्ठाता मैं ब्रह्मा ऐसे तेरह देवता महादेव ते आदि लैके हम बड़भागी हैं कोई व्रजवासी इन्द्रियरूप दोनोंन सूं तुम्हारे चरणारविन्द को मकरन्द अमृतकी तुल्य मधुर ताहि पीवै है जा समय व्रजवासी तुम्हारे दर्शन नेत्रन ते करै हैं ता समय नेत्रनको अधिष्ठाता सूर्य्य कृतार्थ होय जायहै कानन ते तुम्हारी बात सुनै हैं तब कानन के देवता दिशा कृतार्थ होय जायहैं नाक ते तुम्हारी प्रसादी तुलसी सूंघै है तब नाकके देवता अश्विनीकुमार कृतार्थ होय जायहैं हाथ ते तुम्हारी सेवा करै तब हाथके देवता कृतार्थ होय जाय हैं याही प्रकार समस्त इन्द्रियन के जानि लीजो ३३ या मनुष्यलोक में कदाचित् जन्म होय तो वृन्दावन में होय ताहू में गोकुल में जन्महोय यह मेरे भाग्यहोयँ तब श्रीकृष्णचन्द्र कहै है ब्रह्मा सत्यलोकको छोडिके यहां जन्म भये ते तोको कहा लाभहोयगो तब ब्रह्मा कहै हैं जा जन्म में व्रजवासीन के चरणनकी रज मेरे माथे पै परेगी वही मोको एक बड़ो लाभ होयगो तब श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं व्रजवासी काहे ते धन्य हैं तब ब्रह्मा कहै हैं इन व्रजवासीनको पूर्ण जीवनहै काहे ते कि मुकुन्दपरायणहैं जिनके चरणारविन्दकी रजकूं वेद ढूंढो करैं उनकूं नहीं मिले ३४ इन व्रजवासीन की कृतार्थता कहा वर्णन करौं जिनकी भक्तिते तुमहूं ऋणी से होय रहेहो तब श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं

मैं कहा देवे को असमर्थ हौं जो ऋणीरहूं तहां ब्रह्मा कहै हैं हे देव अर्थात् प्रकाशवान्! समस्त फलरूप तुमही ताते और फलरूप तुमही ताते और फल इन व्रजवासीनको कहा देउगे यह जब विचार करै हैं तब हमारो चित्त मोहित होत है तब श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं मैं अपने को ऋणी होय जाउँगो तहां ब्रह्मा कहै हैं नहीं माता को स्वरूप धरिके पापिनी पूतना आईही ताको अपनपो दीनो तब कहै हैं व्रजवासीनको कुटुम्ब सहित अपनपो देउँगो तब ब्रह्मा कहै है पूतनाको कुटुम्ब अघासुर बकासुरको अपनपो दियो तब कृष्ण कहै हैं मेरे पास तो यही देवेकूं है तहां ब्रह्मा कहै हैं जिन व्रजवासीन ने घर धन हितकारी प्यारे देह पुत्र प्राण अन्तःकरण तुममें अर्पणकरि राखे हैं तिन व्रजवासीनकों और वैरीनको कहा बरोहि राखोगे तुम परमेश्वरहो तो कहा भयो तुम्हारे यहांऊ भलोन्यायहै ३५ तब ताईं रागादिक चोरहैं तब ताईं घर बन्दीखानो है तबहीं ताईं मोह पावकी बेड़ी है हे कृष्ण! जबताईं जन तुम्हारे शरण नहीं लेइहैं तुम्हारे शरण लिये पीछे,रागादिक जोहैं तेभी चोरते शाह होय जाय हैं ओघ हैं सो तुम्हारे मन्दिर होय हैं और मोह छुड़ावनवारो होय जाय है ३६ हे प्रभो! पृथ्वी में शरणागत भक्तन के आनन्ददेवे कूं संसार करिके रहितहौ तौ भी संसार को अनु-

विश्वफलात्फलंत्वदपरंकुत्राप्ययन्मुह्यति ॥ सद्वेषादिवपूतनापिसकुलात्वामेवदेवापिता यद्धामार्थसुहृत्प्रियात्मतनयप्राणाशयास्त्वत्कृते ३५ तावद्रागादयःस्तेनास्तावत्कारागृहंगृहम् ॥ तावन्मोहोऽङ्घ्रिनिगडो यावत्कृष्णनतेजनाः ३६ प्रपञ्चंनिष्प्रपञ्चोऽपि विडम्बयसिभूतले ॥ प्रपन्नजनतानन्दसन्दोहंप्रथितुंप्रभो ३७ जानन्तएवजानन्तु किंबहूक्त्यानमेप्रभो ॥ मनसोवपुषोवाचो वैभवंतवगोचरः ३८ अनुजानीहिमांकृष्ण सर्वंत्वंवेत्सिसर्वदृक् ॥ त्वमेवजगतांनाथो जगदेतत्तवार्पितम् ३९ श्रीकृष्णवृष्णिकुलपुष्करजोषदायिन्क्ष्मानिर्जरद्विजपशूदधिवृद्धिकारिन् ॥ उद्धर्मशार्वरहरक्षितिराक्षसध्रुगाकल्पमार्कमर्हन्भगवन्नमस्ते ४० श्रीशुकउवाच ॥ इत्यभिष्टूयभूमानंत्रिःपरिक्रम्यपादयोः ॥ नत्वाभीष्टंजगद्धाता स्वधामप्रत्यपद्यत ४१ ततोऽनुज्ञाप्यभगवान् स्वभुवंप्रागवस्थितान् ॥ वत्सान्पुलिनमानिन्ये यथापूर्वसखंस्वकम् ४२ एकस्मिन्नपियातेऽब्दे प्राणेशंचान्तरात्मनः ॥ कृष्णमायाहता

करण करोहौ ३७ जे पुरुष कहै हैं हम जाने हैं तेही जाने हैं हे प्रभो! मैं बहुत कहा कहौं देह तें वचन तें तुम्हारो वैभव जानिवे में नहीं आवै है ३८ हे कृष्ण! मोको आज्ञादेउ तुम सम्पूर्ण जानौं हौ अर्थात् अपनी महिमा हमारो ज्ञान बल पराक्रम समस्तके देखनवारे हौ तुमहीं जगत् के नायहौ मैंने ब्रह्मापनो छोड़ौं तुमहींकों जगत् दियो ३९ हे कृष्ण! हे यदुकुलकमलकूं प्रीतिके देनवारे! यामें सूर्य्य की उपमादीनी हे पृथ्वी के देवता ब्राह्मण पशु समुद्र इनके वृद्धि करनवारे! यामें चन्द्रमाकी उपमा आई हे पाखण्डधर्म्मस्वरूप अन्धकार के नाश करनवारे! यामें सूर्य्य चन्द्रमा दोनों की उपमा आई हे पृथ्वी पै कंसादिक राक्षसन के मारनवारे! यामें फिरि सूर्य्यकी उपमा आई हे सूर्य्य! हे अर्हन् सबके पूज्य भगवान् अर्थ छःप्रकार के ऐश्वर्य्य करि परिपूर्ण! तुमको दण्डवत् है ४० अब श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहे हैं कि हे राजन्! या प्रकार व्यापक श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुति करिके तीन परिक्रमा करिके चरणारविन्द को नमस्कार करिके जगत् को विधाता ब्रह्मा पूजन करिके अपने ब्रह्मलोक को जातभयो ४१ ता पीछे भगवान् ब्रह्माको आज्ञादैके बछरालाय के आगे ठाढ़े करिदिये प्रथम कीसी नाईं ग्वालमण्डली बैठी यह यमुनाजी की रेती है तामें ला-

वतभये इतने दिन पर्यन्त बालक कैसे यमुना तीरपै बैठे रहे भूख प्यास भूलिगये या प्रकार राजाने शङ्काकरी तहां शुकदेवजी कहै हैं ४२ हे राजन् परीक्षित् ! अपने प्राणनाथ श्रीकृष्णचन्द्र बिना एक वर्ष बीतगयो तथापि श्रीकृष्णचन्द्र की माया करि मोहित भये बालकनकूं आधोक्षण व्यतीत होतभयो ऐसे मानत भये ४३ माया करि मोहित जिनके चित्त वे पुरुष या संसार में कहा कहा नहीं भूले हैं सो समस्त जगत् मायासे मोहित होयके वारवार अपने आत्माकूं भूलि रह्यो है ४४ अब सम्पूर्ण ग्वालवाल श्रीकृष्णचन्द्र तें बोले तू भलो जल्दी आयो हमने तो तेरे बिना एक ग्रासहू नहीं खायो है अब आवो हम भोजन करैं ४५ ऐसे बालकन ने कही ताके पीछे इन्द्रियनके प्रेरणा करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र श्रवण करिके हँसे वर्ष दिनको ग्रास करिगये और कहै हैं एक ग्रास भी नहीं खायो बालकन के संग भोजन करिके रास्ता में जो शुष्क अघासुर को देह परोहो ताकूं दिखावत व्रजमें वनादिके आवत भये ४६ मोर मुकुट को पहिरे पुष्पनके तुर्रा टांगे नवीन

राजन् क्षणार्द्धंमेनिरेऽर्भकाः ४३ किंकिंनविस्मरन्तीह मायामोहितचेतसः ॥ यन्मोहितंजगत्सर्वमभीक्ष्णंविस्मृतात्मकम् ४४ ऊचुश्चसुहृदःकृष्णं स्वागतं तेतिरंहसा ॥ नैकोऽप्यभोजिकवलएहीतःसाधुभुज्यताम् ४५ ततोहसन्हृषीकेशोऽभ्यवहृत्यसहार्भकैः ॥ दर्शयंश्चर्माजगरंन्यवर्त्ततवनाद्व्रजम् ४६ बर्हप्रसूननवधातुविचित्रिताङ्गः प्रोद्दामवेणुदलशृङ्गरवोत्सवाढ्यः ॥ वत्सान्गृणन्ननुगगीतपवित्रकीर्त्तिर्गोपीदृगुत्सवदृशिःप्रविवेशगोष्ठम् ४७ अद्यानेनमहाव्यालोयशोदानन्दसूनुना ॥ हतोऽवितावयंचास्मादितिबालाव्रजेजगुः ४८ राजोवाच ॥ ब्रह्मन्परोद्भवेकृष्णे इयान्प्रेमाकथंभवेत् ॥ योऽभूतपूर्वस्तोकेषु स्वोद्भवेष्वपिकथ्यताम् ४९ श्रीशुकउवाच ॥ सर्वेषामपिभूतानां नृपस्वात्मैववल्लभः ॥ इतरेऽपत्यवित्ताद्यास्तद्वल्लभतयैवहि ५० तद्राजेन्द्रयथास्नेहः स्वस्वकात्मनिदेहिनाम् ॥ नतथाममतालम्बिपुत्रवित्तगृहादिषु ५१ देहात्मवादिनांपुंसामपिराजन्यसत्तम ॥ यथादेहःप्रियतमस्तथानह्यनुयेचतम् ५२ दे

धातु खरिया गेरू मनशिल तिनकी विचित्र खौरि लगी है बड़ी सुन्दर बांसुरी सींगी को शब्द करतहैं तासूं जो उत्सव होय रहे तासूं शोभायमान जिनकी दृष्टि वे श्रीकृष्णचन्द्र बछरानकूं नाम लै लैके बुलावत वृजमें आवतभये ४७ कोई कहै यशोदा को बेटाहै कोई कहै नन्दराय जी को बेटाहै एक तो यह अर्थ है दूसरो अर्थ यह है यशोदाको आनन्दके देनवारे पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र आज बड़ो सर्प मारो है हमारी रक्षा वातेकरी या प्रकार समस्त ग्वालवाल व्रजमें कहतभये ४८ अब राजापरीक्षित् प्रश्न करै हैं कि हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! पराये पुत्र श्रीकृष्णचन्द्रमें इतनो प्रेम वृजवासीन को कैसे भयो आपते भये जो पुत्र तिनमें भी इतनो प्रेम न भयो यह मेरे आगे कहो ४९ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! समस्त प्राणीन के साक्षात् आत्मा है याते श्रीकृष्णचन्द्र में प्रेम भयोही चाहै और जो स्त्री पुत्र वित्तादिक हैं ते आत्माके सुखदायी हैं याते प्रिय हैं ५० ताकारण ते हे राजेन्द्र परीक्षित् ! देहधारीनको जैसो अपने आत्मामें प्यारहै तैसो अपने पुत्र वित्त घर इन सूं आदिलैके जो वस्तु हैं तिनमें नहीं है ५१ हे क्षत्रियन में श्रेष्ठ राजन् परीक्षित् ! देहको आत्मा कहैं ऐसे पुरुषन कूं भी देह अतिप्रिय है और देहके अनुवर्त्ती जो स्त्रीपुत्रादिक हैं ते देहकी

अपेक्षा प्यारे नहीं लगै हैं ५२ और देहकूं भी मेरो देह है या प्रकार मानिलेइ हैं तथापि यह देह आत्माकी तुल्य प्यारो नहीं लगै है जा समय यह देह जीर्ण होय जायहै तब निश्चय करिलेय है कि यह देह न रहैगो और जीवनकी आशा वलवान् रहै है ५३ ता प्रकार समस्त देहधारीन को अपनो आत्माही प्यारो लगै है ता आत्माही के लिये समस्त स्थावर जंगम प्यारो लगै है ५४ तुमने पूंछी राजा परीक्षित् वृजवासी को विराने पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र में इतनो प्रेम क्यों भयो ताको जबाब दियो अब आगे को प्रसंग कहै हैं समस्त देहधारीन के आत्मा जगत् के कल्याण करिवे के लिये अपनी माया करिके प्रकाश करो हौ ५५ या विश्व के कारण श्रीकृष्णचन्द्र हैं या प्रकार जे पुरुष मानै हैं तिन पुरुपनकूं स्थावर कहिये ब्रह्मादिक जंगम कहिये मनुष्यादिक जो सम्पूर्ण हैं सो सब भगवान् कोही रूप हैं कछु या संसारमें न्यारो नहीं है ५६ समस्त वस्तुन को परमार्थरूप कारण में रहै है जैसे घटको रूप माटी में रहै है वा कारणहू को कारण श्रीकृष्ण भगवान् आप हैं श्रीकृष्णचन्द्र ते न्यारी वस्तु कहा है राजा तुमहीं कहो ५७ पवित्र है यश जिनको ऐसे मुरनामा दैत्य के शत्रु श्रीकृष्णचन्द्र तिनको महत् पुरुषन कूं आश्रय करिवे को योग्य

ह्योऽपिममताभाक्चेत्तर्ह्यसौनात्मवत्प्रियः ॥ यज्जीर्यत्यपिदेहेऽस्मिन् जीविताशाबलीयसी ५३ तस्मात्प्रियतमःस्वात्मा सर्वेषामपिदेहिनाम् ॥ तदर्थमेवसकलं जगदेतच्चराचरम् ५४ कृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मनाम् ॥ जगद्धितायसोऽप्यत्रदेहीवाभातिमायया ५५ वस्तुतोजानतामत्र कृष्णंस्थास्नुचरिष्णुच ॥ भगवद्रूपमखिलं नान्यद्वस्त्विहकिंचन ५६ सर्वेषामपिवस्तूनां भावार्थोभवतिस्थितः ॥ तस्यापिभगवान्कृष्णः किमतद्वस्तुरूप्यताम् ५७ समाश्रितायेपदपल्लवप्लवंमहत्पदंपुण्ययशोमुरारेः ॥ भवाम्बुधिर्वत्सपदंपरंपदंपदंपदंयद्विपदांनतेषाम् ५८ एतत्तेसर्वमाख्यातंयत्पृष्टोहमिहत्वया ॥ यत्कौमारेहरिकृतंपौगण्डेपरिकीर्त्तितम् ५९ एतत्सुहृद्भिश्चरितंमुरारेरघार्दनंशाद्वलजेमनंच ॥ व्यक्तेतरद्रूपगजोर्वभिष्टवं शृण्वन्गृणन्नेतिनरोऽखिलार्थान् ६० एवंविहारैःकौमारैःकौमारंजहतुर्व्रजे ॥ निलायनैःसेतुबन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभिः ६१ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेब्रह्मस्तुतिर्नामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

ऐसी चरणारविन्दरूपी नौका को जिन पुरुषन ने आश्रय लियो है उनकूं संसाररूपी समुद्र वछरा के खुर के जलकी समान होय है और वैकुण्ठधाम में वास होय है कबहू विपत्ति नहीं होय है वे पुरुष वगादि कै संसार में नहीं आवैं हैं ५८ पाँच वर्ष की उमर में जो श्रीकृष्णचन्द्र ने लीला करी सो छठे वर्ष में आय के बालकन ने कही जो राजा तुम ने पूंछी हमते इहाँ सो सम्पूर्ण हमने तेरे आगे कही ५९ मुरनामा दैत्य के शत्रु श्रीकृष्णचन्द्र तिनको मित्रन के सग यह चरित्रहै कहा अघासुर को मारयो यमुना तीर पै ग्वालवालन के सग भोजन कस्यो जड़ प्रपञ्च तें न्यारो शुद्ध सतोगुणी रूप वछरा ग्वालवाल रूप धरयो ब्रह्मा ने वड़ी स्तुति करी या चरित्र को जो कोई पुरुष कहै अथवा श्रवण करै वा पुरुषको सर्व अर्थ की प्राप्ति होय श्रीकृष्णचन्द्र में भक्ति होय ६० आँखिमिचौनी में छिपि जानो नदीन के पुल बाँधने बन्दरन की सी नाईं कूदनो या प्रकार कौमार अवस्था के खेल करिके व्रज में श्रीकृष्ण बलदेव कौमार अवस्था वितावतभये ६१

इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेब्रह्मस्तुतिर्नामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ततःपञ्चदशेधेनुपालनंधेनुकार्दनम् ॥ कालियक्ष्वेडतोगोपरक्षणंचनिरूप्यते १ अहिवक्त्रप्रवेशेनक्षुधाखिन्नान्सखीनतः ॥ कृष्णःप्रावेशयत्पक्वफलंतालालिकाननम् २ पन्द्रहवें अध्याय में गउओं का पालन धेनुकासुरका नाश और कालीनाग के विष से गोपों की रक्षा वर्णन है १ सर्प के मुख में प्रवेश से क्षुधा खिन्न मित्रों को कृष्णजी पके हुये ताल के वन में प्रवेश करावते भये २)

अब श्री शुकदेव जी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन् ! कौमारअवस्था बीती ताके पीछे पौगण्डअवस्था लगी अर्थात् छठो वर्ष जब लगो तब व्रज में गाय चरायवे लायक कृष्ण बलदेव दोनों भय्या भये तब ग्वालन कूं सग लैके गऊनकूं चरावत अपने चरणन सू वृन्दावन कूं अत्यन्त पवित्र करत भये १ मधुवंश में प्रकट भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अपने यशकों गावें जे ग्वाल बाल तिनकों सग लैके और बलदेव भय्या को संग लैके बाँसुरी को बजावत गऊन कों आगे करिके गऊन की हितकारी पुष्पवाटिका जामें फूलि रही या वृन्दावन में विहार करिवे को जात भये २ मधुर जिनकी बोली ऐसे भौंरा पशु पक्षी जामें वास करें महत्पुरुषन के मनकी तुल्य निर्म्मल जल जामें भर्यो ऐसे सरोवर ते स्पर्श करिके कमल की सुगन्धियुक्त पवन जामें चलै

श्रीशुकउवाच ॥ ततश्चपौगण्डवयःश्रितौव्रजे बभूवतुस्तौपशुपालसंमतौ ॥ गाश्चारयन्तौसखिभिःसमंपदैर्वृन्दावनंपुण्यमतीवचक्रतुः १ तन्माधवोवेणुमुदीरयन्वृतो गोपैर्गृणद्भिःस्वयशोबलान्वितः ॥ पशून्पुरस्कृत्यपशव्यमाविशद्विहर्त्तुकामःकुसुमाकरंवनम् २ तन्मञ्जुघोषालिमृगद्विजाकुलं महन्मनःस्वच्छपयःसरस्वता ॥ वातेनजुष्टंशतपत्रगन्धिना निरीक्ष्यरन्तुंभगवान्मनोदधे ३ सतत्रतत्रारुणपल्लवश्रिया फलप्रसूनोरुभरेणपादयोः ॥ स्पृशच्छिखान्वीक्ष्यवनस्पतीन्मुदा स्मयन्निवाहाग्रजमादिपूरुषः ४ श्रीभगवानुवाच ॥ अहोअमीदेववरामरार्चितं पादाम्बुजन्तेसुमनःफलार्हणम् ॥ नमन्त्युपादायशिखाभिरात्मनस्तमोपहत्यैतरुजन्मयत्कृतम् ५ एतेऽलिनस्तवयशोऽखिललोकतीर्थं गायन्तआदिपुरुषानुपदंभजन्ते ॥ प्रायोअमीमुनिगणाभवदीयमुख्या गूढंवनेऽपिनजहत्यनघात्मदैवम् ६ नृत्यन्त्यमीशिखिनईड्यमुदाहरिण्यः कुर्वन्तिगोप्यइवतेप्रियमीक्षणेन ॥ सूक्तैश्चकोकिलगणागृहमागताय ध

ऐसे वृन्दावन को देखि के श्रीकृष्णचन्द्र के मन में खेलिवे की आवतिभई ३ जहां तहां अरुण पल्लव निकसे है तिनकी शोभाहै कली फल फूलन के बोझतें झुकि झुकि के चरणन में जिनकी शाखा लगीं ऐसे वृक्षनकूं देखि के बड़े आनन्दित हैं मुसिकाय के आदिपुरुष श्रीकृष्णचन्द्र बड़े भय्या बलदेव जी ते यह बोलत भये ४ श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र कहैं हैं हे देवतान में श्रेष्ठ बलदेव जी ! बड़ो आश्चर्य्य है ये वृन्दावन के वृक्ष देवता जिनको पूजन करें ऐसो तुम्हारो चरणारविन्द है तो ये फल फूल भेंट लै लै के अपनी शाखान सों झुकि २ के प्रणाम करें है काहे के लिये कि जा अज्ञान ते हमारो वृक्षजन्म भयो है वह अज्ञान दूरि होय जाय इस कारण ५ हे आदिपुरुष ! सब लोकनको पवित्र करनवारो तुम्हारो यशहै ताय भौंरा निरन्तर गावत तुम्हारो भजन करैं हैं बहुधा ये भौंरा तुम्हारे मुख्य भक्तन में मुनिजन हैं हे पापरहित ! या वन के विषे मनुष्यरूप धरे छिपे जो तुम देव हौ तिनकूं ये मुनिजन नहीं छोड़ै हैं भौंरा वेष में छिपि के तुम्हारो भजन करें हैं ६ हे स्तुति करिवे के योग्य ! आनन्द ते ये वृन्दावन के मोर तुम्हारे आगे नृत्य करें है और ये हरिणी गोपीन की तुल्य चितवन ते तुम पै प्यार करै हैं और ये कोकिलान

के समूह इनको वृन्दावन घर है तामें आये जो तुम हौ तिनको सुन्दर बोलीन सों सत्कार करै हैं ये वृन्दावनवासी धन्य हैं साधुनको यही स्वभाव है बड़े पुरुष अपने घर आवें तो जो कछु अपने पास फूल फल होय ताय उनकी भेंट करें ७ यह पृथ्वी अब बड़ी धन्य है तुम्हारे चरणारविन्द कूं स्पर्श करे है और ये तृण भी धन्य हैं तुम्हारे नख को स्पर्श करै है और ये लता वृक्ष धन्य हैं नदी पर्वत पक्षी वन के पशु धन्य हैं तुम्हारी दयापूर्वक चितवन परे है और जा वक्षःस्थल की लक्ष्मी चाहना करै ताको स्पर्श गोपीन कूं होय है याते गोपी भी धन्य हैं ८ या प्रकार शोभायमान वृन्दावन है तामें प्रसन्न जिनको मन वे श्रीकृष्णचन्द्र पर्वत के समीप यमुना जी के तीर है तिन में गऊन को चरावत ग्वालबालन को संग लेके खेलत भये ९ मदोन्मत्त भौंरा जा समय गुजार करै है तब श्रीकृष्णचन्द्र आप गावें हैं और ग्वालबाल जिन के चरित्रन को गावें हैं वनमाला पहिरे हैं बलदेवजी जिनके संग हैं १० कहूं राजहंसन में रोई

न्यावनौकसइयान्हिसतांनिसर्गः ७ धन्येयमद्यधरणीतृणवीरुधस्त्वत्पादस्पृशोद्रुमलताःकरजाभिमृष्टाः ॥ नद्योऽद्रयःखगमृगाःसदयावलोकैर्गोप्योन्तरेण भुजयोरपियत्स्पृहाश्रीः ८ श्रीशुकउवाच ॥ एवंवृन्दावनंश्रीमत् कृष्णःप्रीतमनाःपशून् ॥ रेमेसंचारयन्नद्रेःसरिद्रोधस्सुसानुगः ९ क्वचिद्गायतिगायत्सु मदान्धालिष्वनुव्रतैः ॥ उपगीयमानचरितः स्रग्वीसंकर्षणान्वितः १० क्वचिच्च कलहंसानामनुकूजतिकूजितम् ॥ अभिनृत्यतिनृत्यन्तं बर्हिणंहासयन्क्वचित् ११ मेघगम्भीरयावाचा नामभिर्दूरगान्पशून् ॥ क्वचिदाह्वयतिप्रीत्यागोगोपालमनोज्ञया १२ चकोरक्रौञ्चचक्राह्वभारद्वाजांश्चबर्हिणः ॥ अनुरौतिस्मसत्त्वानां भीतवद्व्याघ्रसिंहयोः १३ क्वचित्क्रीडापरिश्रान्तं गोपोत्सङ्गोपबर्हणम् ॥ स्वयंविश्रमयत्यार्य पादसंवाहनादिभिः १४ नृत्यतोगायतःक्वापिवल्गतोयुद्ध्यतोमिथः ॥ गृहीतहस्तौगोपालान् हसन्तौप्रशशंसतुः १५ क्वचित्पल्लवतल्पेषु नियुद्धश्रमकर्शितः ॥ वृक्षमूलाश्रयःशेते गोपोत्सङ्गोपबर्हणः १६ पादसंवाहनंचक्रुः केचित्तस्यमहात्मनः ॥ अपरेहतपाप्मानोव्यजनैःसमवीजयन् १७ अन्येतदनुरूपाणि मनोज्ञानिमहात्मनः ॥ गाय

हंस बोलै है ताके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र आप बोलै हैं कभऊँ अपने संग के मित्रनको हँसायबे के लिये मोर नाचतो देखिके वाके सम्मुख आपहू जामा फैलायकै नाचै हैं ११ कभऊँ एक गऊ जब दूरि निकसि जायहै तब मेघ जैसे गरजे ऐसे गरज के प्रसन्न होय के उनको नाम लैलैके बुलावें हैं वह बोली गऊन को ग्वालबालन कू बहुत प्यारी लगै है १२ चकई चकोर चकवा भडरिया मोर इनकी सी बोली बोलैं हैं कभऊँ एक व्याघ्र सिंह ते डरपि के और सब जानवर भाजै हैं तब आपहू भाजै है या प्रकार लीला करै है १३ काहूसमय खेलत खेलत बलदेवजी थकजायहैं तब काहू गोपकी गोदको तकिया बनाय के सोइ जाइ हैं तब श्रीकृष्णचन्द्र आय उनके चरण दाबिके पंखा करिके श्रम दूरि करै है १४ कभऊं एकसमय ग्वालबाल नाचैं गावैं दौरैं हैं आपस में कुश्तीलड़ें तब उनके हाथ पकरिके हँसिके कृष्ण बलदेव दोनों भय्या कहै हैं भले नाचे भले गाये या प्रकार बड़ाई करै हैं १५ काहू समय जब कुश्ती में परिश्रम होय है तब श्रीकृष्णचन्द्र वृक्षकी जड़में पत्तान की शय्या पै गोपों की गोदकी तकिया करिके सोवै हैं हे राजा परीक्षित् ! कोई ग्वाल बाल महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र के चरण दाबतभये पाप जिनके दूरिभये ऐसे जे ग्वाल हैं ते पत्तानके

पंखान ते वयारि करतभये और स्नेह भरी जिनकी बुद्धि ऐसे जे ग्वालहैं ते महात्मा श्रीकृष्णचन्द्रकों नींद जिनतें आय जाय ऐसे प्यारे प्यारे मलारके पद हौले हौले गावतभये १६ । १७ । १८ या प्रकार अपनी माया सूं अपनो ईश्वररूप जिनने छिपायो चरित्रकरिके गोपबालक को अनुकरण करैं लक्ष्मी जिनके चरण पलोटैं वे श्रीकृष्णचन्द्र ग्रामके रहनवारे व्रजवासीन के संग उनहीं की तुल्य खेलतभये बीच बीच कभऊँ ईश्वरपने की चेष्टा दिखाय देईहै १६ ईश्वरपने की चेष्टा दिखायवेके लिये कहै हैं रामकृष्णके मित्र श्रीदामा नाम गोपहो सुबल स्तोक कृष्ण आदिलैके और गोपहै ते प्रेम ते यह बोलतभये २० हे राम ! हे राम ! हे बड़े भुजावारे ! हे दुष्टन के मारनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ! यहा ते थोड़ी सी दूरि पै तालवन है २१ वा तालवन में बहुत से तालन के फल टूटे परे हैं औरहू टूटिके गिरे हैं परन्तु दुष्ट धेनुकासुर वहांरहै है ताने रोकि राखो है न वह आप खाय है न काहू को खान देय है २२ हे राम ! हे श्रीकृष्णचन्द्र ! गधाको रूप धरे वह असुर बडो पराक्रमी है

न्तिस्ममहाराज स्नेहक्लिन्नधियःशनैः १८ एवंनिगूढात्मगतिःस्वमायया गोपात्मजत्वंचरितैर्विडम्बयन् ॥ रेमेरमालालितपादपल्लवोग्राम्यैःसमंग्राम्यवदीशचेष्टितः १६ श्रीदामानामगोपालो रामकेशवयोःसखा ॥ सुबलस्तोककृष्णाद्यागोपाःप्रेम्णेदमब्रुवन् २० रामराममहाबाहो कृष्णदुष्टनिबर्हण ॥ इतोविदूरेसुमहद्वनंतालालिसंकुलम् २१ फलानितत्रभूरीणिपतन्तिपतितानिच ॥ सन्तिकिंत्ववरुद्धानि धेनुकेनदुरात्मना २२ सोऽतिवीर्योऽसुरोराम हेकृष्णखररूपधृक् ॥ आत्मतुल्यबलैरन्यैर्ज्ञातिभिर्बहुभिर्वृतः २३ तस्मात्कृतनराहाराद्भीतैर्नृभिरमित्रहन् ॥ नसेव्यतेपशुगणैःपक्षिसङ्घैर्विवर्जितम् २४ विद्यन्तेभुक्तपूर्वाणि फलानिसुरभीणिच ॥ एषवैसुरभिर्गन्धोविषूचीनोऽवगृह्यते २५ प्रयच्छतानिनःकृष्ण गन्धलोभितचेतसाम् ॥ वाञ्छाऽस्तिमहतीराम गम्यतांयदिरोचते २६ एवंसुहृद्वचःश्रुत्वा सुहृत्प्रियचिकीर्षया ॥ प्रहस्यजग्मतुर्गोपैर्वृतौतालवनंप्रभू २७ बलःप्रविश्यबाहुभ्यां तालान्संपरिकम्पयन् ॥ फलानिपातयामास मतङ्गजइवौजसा २८ फलानांपततांशब्दं निशम्यासुररासभः ॥ अभ्यधावत्क्षितितलं सनगंपरिकम्पयन् २६ समेत्यतरसाप्रत्यग्द्वाभ्यांपद्भ्यांबलंबली ॥ निहत्योरसिकाशब्दं मुञ्चन्पर्यसरत्खलः ३० पुनरासाद्यसंरब्धउपक्रोष्टापराक्स्थितः ॥ चरणावपरौराजन् बलायप्राक्षिपद्रुषा ३१

और अपनी बराबर बल जिनके ऐसे ज्ञाति भाई बहुत जाके संग हैं २३ हे दुष्टनके मारनवारे ! कैसो वह दुष्ट है मनुष्यनकूं खाय जाय वाके भय तें मनुष्य वहां नहीं जाय हैं पशुनके समूह और पक्षीन के समूह कोई भी वहां नहीं जाय हैं २४ काहूने पहिले खाये नहीं ऐसे सुगन्धियुक्त वा वनमें फल हैं न मानो तो ताकूं सूँघिलेउ चारों ओर सुगन्धि फैलिरही है २५ हे श्रीकृष्णचन्द्र ! सुगन्धि से लोभित जिनके चित्त ऐसे हम हैं तिनकों वे फलदेउ हमारी बड़ी वाञ्छा है तुमकों अच्छी लगै तो वा तालवन में चलै २६ या प्रकार मित्रनको वचन श्रवण करिके हँसिकै मित्रन के प्रिय करिवेके लिये मित्रन को संग लैके समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र बलदेव दोनों भय्या तालवन में जात भये २७ वहां जायके बलदेवजी ने ताल बजाय के भुजान ते फल पटके जैसे बल ते मतवारो हाथी पटकै है २८ पृथ्वी पै फल जो गिरे तिनको शब्द श्रवण करिके गर्दभरूप धेनुकासुर पर्वतन सहित पृथ्वीको कंपायमान करत दौरिके सम्मुख आवत भयो २६ बली जोरावर धेनुकासुर श्री

घता सूं आय के पिछले दोनों पांवनको छाती में मारि के शब्द करिके दुष्ट भाजत भयो ३० हे राजन् परीक्षित ! क्रोध में भरो भयो धेनुकासुर फेरि आय के मुख फेरिके ठाढो भयो क्रोध करिके वलदेवजी कू पिछले पांवन की दुलत्ती फेंकत भयो ३१ वलदेवजी धेनुकासुर के दोनों पांव पकरिके एक हाथ ते फिराय के वृक्षके ऊपर फेंकत भये फिरावत में वाके प्राण निकसिगये ३२ धेनुकासुर को मारि वृक्ष पै फेंक्यो तासूं बड़ो भारी तालवृक्ष टूटि के गिरयो तासूं दूसरो पास में तालवृक्ष हो सो गिरो ताकी चपेट सूं और हिलि के तालवृक्ष गिरे या प्रकार अनेक ताल वृक्ष गिरतभये ३३ वलदेवजी ने खेल करिके फेंको जो गधाकी देह ताकी चपेट जो लगी तासूं सबरे तालके वृक्ष हिलत भये जैसे बड़ो आंधी मेह चलैहै ३४ अन्त जिनको नहीं जगत्के ईश्वर भगवान् वलदेवजी हैं तिनमें यह कछु आश्चर्य नहीं है जिन वलदेवजी में यह सब विश्व ओतप्रोत होय रह्योहै जैसे कपड़ा ताने वाने में ओतप्रोतहै ३५ जब धेनुकासुर गधानमें मुखिया मारयो

सतंगृहीत्वाप्रपदोर्भ्रामयित्वैकपाणिना ॥ चिक्षेपतृणराजाग्रे भ्रामणत्यक्तजीवितम् ३२ तेनाहतोमहातालोवेपमानोबृहच्छिराः ॥ पार्श्वस्थंकम्पयन्भग्नःसचान्यंसोऽपिचापरम् ३३ वलस्यलीलयोत्सृष्टखरदेहहताहताः ॥ तालाश्चकम्पिरेसर्वे महावातेरिताइव ३४ नैतच्चित्रंभगवति ह्यनन्तेजगदीश्वरे ॥ ओतप्रोतमिदंयस्मिंस्तन्तुष्वङ्गयथापटः ३५ ततःकृष्णश्चरामञ्च ज्ञातयोधेनुकस्यये ॥ क्रोष्टारोऽभ्यद्रवन्सर्वे संरब्धाहतवान्धवाः ३६ तांस्तानापततःकृष्णोरामश्चनृपलीलया ॥ गृहीतपश्चाच्चरणान्प्राहिणोत्तृणराजसु ३७ फलप्रकरसंकीर्णा दैत्यदेहैर्गतासुभिः ॥ रराजभूःसतालाग्रैर्घनैरिवनभस्तलम् ३८ तयोस्तत्सुमहत्कर्मनिशम्यविबुधादयः ॥ मुमुचुःपुष्पवर्षाणि चक्रुर्वाद्यानितुष्टुवुः ३९ अथतालफलान्यादन्मनुष्यागतसाध्वसाः ॥ तृणञ्चपशवश्चेरुर्हतधेनुककानने ४० कृष्णःकमलपत्राक्षः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ स्तूयमानोऽनुगैर्गोपैः साग्रजोव्रजमाव्रजत् ४१ तंगोरजश्छुरितकुन्तलबद्धबर्हवन्यप्रसूनरुचिरेक्षणचारुहासम् ॥ वेणुंक्कणन्तमनुगैरनुगीतकीर्त्तिं गोप्योदिदृक्षितदृशोऽभ्यगमन्समेताः ४२ पीत्वामुकुन्दमुखसारघमक्षिभृङ्गैस्तापंजहुर्विरहजंव्रज

गयो तब धेनुकासुर की जाति के सम्पूर्ण गधा क्रोधमें भरिके कृष्ण वलदेव के सम्मुख दौरिके आवत भये ३६ हे राजन् परीक्षित ! कृष्ण वलदेव दोनों भय्या जे जे गधा आये तिनके पाव पकरिके तालके वृक्षन के ऊपर फेंकत भये ३७ लाल लाल फल टूटि के गिरे हैं श्वेत श्वेत गदहनके मारे देह जो परे हैं लीलीलीली लतानकी वृक्षसी जो परी तासों धरती बहुत शोभायमान लगति भई जैसे लाल सुपेद लीली घटानमूं आकाश सुन्दर लगैहै ३८ देवता या प्रकार उत्कृष्टकर्मा श्रीकृष्ण वलदेव जीको सुनिके प्रसन्न होय के फूल वर्षावत भये बड़े नाना प्रकारके बाजे बाजत भये देवता स्तुति करत भये ३९ जब धेनुकासुर मारो गयो ताके पीछे भय जिनको दूरि होय गयो तब बहुत मनुष्य तालके फल खातभये तब वा वनमें गऊ घासकूं चरत भई ४० कमलपत्र से विशाल जिनके नेत्र और पवित्र जिनकी कथान कोश्रवण हरे कृष्ण गोविन्द नामको कीर्तन वे श्रीकृष्णचन्द्र जब ग्वालबालन ने स्तुति करी तब वलदेवजी सहित व्रज में आवत भये ४१ गऊन के खुरनकी रज जो उड़ी है तासों अलकैं जिनकी धूसरी होय रही हैं मोरपुच्छन के मुकुटन कूं पहिरे वनके फूलन के तुर्रा टांगे सुन्दर जिनकी चितवन मनोहर जिनकी हँसनि वासुरी

कूं वजावें ग्वालवाल जिनके यशको गावें उन श्रीकृष्णचन्द्र के देखिवे के लिये सव गोपी जुर मिलके आवतभई ४२ व्रजकी योपिता नेत्ररूपी भौंरान सों श्रीकृष्णके मुखकमल ते सुन्दरताकरूपी अमृत है ताय पीके दिन दिन में श्रीकृष्णके विरहमें जो तापहै ताय छोड़त भई लाजभरी मुसिकानि कटाक्षभरी चितवनि सूं सत्कार करें हैं ताय प्राप्तहोय के व्रज में जातभई ४३ पुत्रनमें जिनको प्यार वे यशोदा रोहिणी अपने पुत्रन कूं जैसी उनकी कामना होय जैसो समय देखें हैं तैसोही आशीर्वाद देय हैं ४४ व्रजमें आयके स्नान उवटनो दावनो इत्यादिकन सूं मार्गको परिश्रम दूरि भयो ऐसे श्रीकृष्ण वलदेवजी सुन्दर पीताम्बर पहिरे माला गन्ध चन्दन जिनके लगो सो वड़ी शोभा को प्राप्त होतभये ४५ कृष्ण वलदेव दोनों भय्यान कूं माता थार परोसि लाई जो सुन्दर सामग्री है ताय भोजन करिके मय्याने लड़ाये तव शय्या पै जाय के व्रज में सुखपूर्वक शयन करत भये ४६ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार वृन्दावनविहारी श्रीकृष्ण भगवान् कभऊं एक वल-

योपितोऽह्नि ॥ तत्सत्कृतिंसमधिगम्यविवेशगोष्ठं सव्रीडहासविनयंयदपाङ्गमोक्षम् ४३ तयोर्यशोदारोहिण्यौ पुत्रयोःपुत्रवत्सले ॥ यथाकामंयथाकालं व्यधत्तांपरमाशिषः ४४ गताध्वानश्रमौतत्र मज्जनोन्मर्दनादिभिः ॥ नीवींवसित्वारुचिरांदिव्यस्रग्गन्धमण्डितौ ४५ जनन्युपहृतंप्राश्य स्वाद्वन्नमुपलालितौ ॥ संविश्यवरशय्यायां सुखंसुषुपतुर्व्रजे ४६ एवंसभगवान्कृष्णोवृन्दावनचरःक्वचित् ॥ ययौराममृतेराजन् कालिन्दींसखिभिर्वृतः ४७ अथगावश्च गोपाश्चनिदाघातपपीडिताः ॥ दुष्टंजलंपपुस्तस्यास्तृषार्त्ताविषदूषितम् ४८ विषाम्भस्तदुपस्पृश्य दैवोपहतचेतसः ॥ निपेतुर्व्यसवःसर्वे सलिलान्तेकुरूद्वह ४९ वीक्ष्यतान्वैतथाभूतान् कृष्णोयोगेश्वरेश्वरः ॥ ईक्षयाऽमृतवर्षिण्या स्वनाथान्समजीवयत् ५० तेसम्प्रतीतस्मृतयः समुत्थायजलान्तिकात् ॥ आसन्सुविस्मिताःसर्वे वीक्ष्यमाणाःपरस्परम् ५१ अन्वमंसततद्राजन् गोविन्दानुग्रहेक्षितम् ॥ पीत्वाविषंपरेतस्य पुनरुत्थानमात्मनः ५२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेधेनुकवधोनामपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

देव जी विना आपही ग्वालवालकन कूं संग लैके यमुनातीर पै जातभये ४७ गरमी की धूप सों व्याकुल जे गऊ और ग्वालवाल हैं ते प्यास सूं पीड़ित होयके ता यमुनाको कालीके विषको जल है ताकूं पीवत भये ४८ हे कुरुवंशीन में भये राजा परीक्षित्! वा विषके जलकों पीके दैवने चित्त जिनके हरिलिये प्राण जिनके निकसिगये समस्त ग्वालवाल गऊ किनारे पर गिरत भये ४९ योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् अपने मित्र ग्वालवाल और गऊनको मरे देखिके अपनी अमृतवर्षिणी दृष्टिते देखिके सवको जिवावत भये ५० शीघ्रही स्मरण जिनको होय आयो वे व्रजवासी जलके किनारे पैते उठिके वड़ो आश्चर्य्य मानत भये आपुस में देखन लगे ५१ विषकों पीके प्राण जिनके निकसिगये फिरि जो अपनो उठिवो है ताहि श्रीकृष्णचन्द्र की कृपाकी चितवन सों हम जिये या प्रकार व्रजवासी मानतभये ५२ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेधेनुकासुरवधोनामपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥ * ॥ * ॥

(षोडशेकालियस्योक्तो निग्रहोयमुनाह्रदे ॥ तत्पत्नीभिःस्तुतेनाथ कृष्णेनानुग्रहःकृतः १ हत्वारासभदैतेयान् जग्ध्वातालफलान्यलम् ॥ गीतोऽनृत्यत्फणारङ्गे कालियस्यकलानिधिः २ सोलहवें अध्यायमें यमुनाके दहमें कालीनागका दण्ड कहाहै फिर तिसकी स्त्रियोंसे स्तुति कियेगये कृष्णजी ने कृपाकीहै १ गधाके स्वरूपवारे दैत्योंको मारकर तालके फलों को भोजनकर कलानिधि कृष्णजी प्रसन्न होकर काली के फणमें नाचते भये हैं २) श्रीशुकदेवजी कहै है कि हे राजन् परीक्षित् ! प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र कालीसर्प्प सूं कालिन्दी यमुना कों बिगरी देखिके शुद्ध करिवे के कारण वा कालीसर्प्प कूं निकासत भये १ अब राजा परीक्षित् पूंछै हैं कि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अगाध जल के भीतर कैसे काली कूं दण्ड देतभये यह काली बहुत युगन तें आयके वास जैसे करत भयो हे शुकदेवजी ! यह मेरे आगेकहिये २ राजा कहै हैं हे श्रीशुकदेवजी ! व्यापक अपनी इच्छापूर्व्वक वर्तें जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनको गोवन के पालन करिके जो बड़ो चरित्र हैं सोही अमृतहै ताय श्रवण करिकै कौन तृप्त होय ३ श्री शुकदेवजी कहैहैं कि हे राजन् परीक्षित् ! कालिन्दी यमुना में कालीनागकों कोई एक दह होत भयो विषकी अग्नि सूं जल जामें औटो

श्रीशुकउवाच ॥ विलोक्यदूषितांकृष्णां कृष्णःकृष्णाहिनाविभुः ॥ तस्याविशुद्धिमन्विच्छन् सर्प्पन्तमुदवासयत् १ राजोवाच ॥ कथमन्तर्जलेऽगाधे न्यगृह्णाद्भगवानहिम् ॥ सवैबहुयुगावासं यथाऽऽसीद्विप्रकथ्यताम् २ ब्रह्मन्भगवतस्तस्य भूम्नःस्वच्छन्दवर्त्तिनः ॥ गोपालोदारचरितं कस्तृप्येतामृतंजुषन् ३ श्रीशुकउवाच ॥ कालिन्द्यांकालियस्यासीद्ध्रदःकश्चिद्विषाग्निना ॥ श्रप्यमाणपयोयस्मिन् पतन्त्युपरिगाःखगाः ४ विप्रुष्मता विषोदोर्मिमारुतेनाभिमर्शिताः ॥ म्रियन्तेतीरगायस्य प्राणिनःस्थिरजङ्गमाः ५ तंचण्डवेगविषवीर्यमवेक्ष्यतेन दुष्टांनदींचखलसंयमनावतारः ॥ कृष्णःकदम्बमधिरुह्यततोऽतितुङ्गमास्फोट्यगाढरशनोन्यपतद्विषोदे ६ सर्प्पह्रदःपुरुषसारनिपातवेगसंक्षोभितोरगविषोच्छ्वसिताम्बुराशिः ॥ पर्य्यक्प्लुतो विषकषायविभीषणोर्मिर्धावन्धनुःशतमनन्तबलस्यकिंतत् ७ तस्यह्रदेविहरतोभुजदण्डघूर्णवार्घोषमङ्गवरवारणविक्रमस्य ॥ आश्रुत्यतत्स्वसदनाभिम

करै आकाश के उडे पक्षी जामें गिरिपरैं ४ छीटान कूं लिये विषके जलसूं स्पर्श करिके जो पवन चलै है ताके स्पर्श करे ते किनारे के वृक्ष शुष्क होयगये ५ बड़ो जाको वेग ऐसे विषको जाके वल ऐसे कालीसर्प्प कूं देखिके और ताते बिगरी जो यमुना ताकूं देखिकै दुष्ट को दण्ड दैवे के लिये जिनको अवतार ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कदम्ब पै चढ़िकै खैंचिकरि पीताम्बर ते फेंट बांधि के ऊँचो कदम्ब है तापै ते खरम ठोंकिके विषके जलमें कूदत भये अब राजा कहै हैं कि महाराज अबहीं तो तुम ने कही कि तटके समस्त वृक्ष सूखि गये अब कहो हो कि कदम्ब पै चढ़िके कूदत भये कदम्ब कहाते आयो तहा कहै हैं या कदम्ब के भाग्य में कृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को स्पर्श लिखो हो याते यह नहीं सूखो अथवा और पुराण में कथा है गरुड़जी ने स्वर्ग ते लायके अमृत को कलश एक समय याके ऊपर धरचो हो सो अमृतकी बूंद परी याते यह अमर होयगयो ६ पुरुषन में श्रेष्ठ श्रीकृष्णचन्द्र जा समय वामें कूदे तब उनके बोझ ते खेद कों प्राप्त भयो जो सर्प्प ताके विषते ऊपर कों जल जाको उछरो विषसूं कसैली भयानक जामें लहरैं उठैं वह काली भयानक सर्प्प को देह जल्दी देसी सौ धनुष् चारों ओर फैलिगयो अनन्त जिनको वल तिन श्रीकृष्णचन्द्र

को यह कितनो पराक्रम है ७ हे राजन् परीक्षित् ! श्रेष्ठ हाथी केसो जिनको पराक्रम जा समय काली के दह में परे ता समय श्रीकृष्णचन्द्र के हाथन ते जो जलशब्द भयो ताकूं श्रवण करिके और तिन श्रीकृष्णचन्द्र तें अपने घर को नाश देखिके ऐसो जोरावर कौन है जो मेरे घरमें आयके यूम करे जब वापै न सम्हारो गयो तब श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख आवत भयो ८ देखिवे योग्य सुकुमार मेघकी तुल्य निर्म्मल जिनको स्वरूप भृगुलता को जिनके चिह्न पीतम्बरको पहिरे मुसिकानिते सुन्दर जिनको मुख निर्भय खेलैं कमल से जिन के चरणारविन्द तिन श्रीकृष्णचन्द्र के वक्षःस्थल में दशन करिके वह काली क्रोधकरिके वनमाली के अंग में लिपटि गयो ९ सर्पदेह में लिपटि गयो नहीं दीसै है चेष्टा जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को देखिके तिन के प्यारे मित्र ग्वालबाल बहुत दुःखित होतभये श्रीकृष्णचन्द्र में देह मित्र धन स्त्री समस्त कामना जिन ने अर्पण करि दीनी और दुःख शोक भय सों सुधि बुधि जिनकी बिसरि गई ऐसे वे गोप

वंनिरीक्ष्य चक्षुःश्रवाःसमसरत्तदमृष्यमाणः ८ तंप्रेक्षणीयसुकुमारघनावदातंश्रीवत्सपीतवसनंस्मितसुन्दरास्यम् ॥ क्रीडन्तमप्रतिभयंकमलोदराङ्घ्रिं संदश्यमर्मसुरुषाभुजयाचच्छाद ९ तन्नागभोगपरिवीतमदृष्टचेष्टमालोक्यतत्प्रियसखाःपशुपाभृशार्त्ताः ॥ कृष्णेऽर्पितात्मसुहृदर्थकलत्रकामादुःखानुशोकभयमूढधियोनिपेतुः १० गावोवृषावत्सतर्यः क्रन्दमानाःसुदुःखिताः ॥ कृष्णेन्यस्तेक्षणाभीतारुदन्त्यइवतस्थिरे ११ अथव्रजेमहोत्पातास्त्रिविधाह्यतिदारुणाः ॥ उत्पेतुर्भुविदिव्यात्मन्यासन्नभयशंसिनः १२ तानालक्ष्यभयोद्विग्ना गोपानन्दपुरोगमाः ॥ विनारामेणगाःकृष्णं ज्ञात्वाचारयितुंगतम् १३ तैर्दुर्निमित्तैर्निधनं मत्वाप्राप्तमतद्विदः ॥ तत्प्राणास्तन्मनस्कास्ते दुःखशोकभयातुराः १४ आबालवृद्धवनिताः सर्वेऽङ्गपशुवृत्तयः ॥ निर्जग्मुर्गोकुलाद्दीनाः कृष्णदर्शनलालसाः १५ तांस्तथाकातरान्वीक्ष्य भगवान्माधवोबलः ॥ प्रहस्यकिञ्चिन्नोवाच प्रभावज्ञोऽनुजस्यसः १६ तेऽन्वेषमाणादयितं कृष्णंसूचितयापदैः ॥ भगवल्लक्षणैर्जग्मुः पदव्यायमुनातटम् १७ तेतत्रतत्राब्जयवाङ्कुशाशनिध्वजोपपन्नानिपदानिविश्पतेः ॥ मार्गेगवामन्यपदान्तरान्तरेनि

पृथ्वी में पछार खाय खाय के गिरत भये १० गौ बैल छोटी छोटी बछियां अतिदुःखित होय के रम्हावें हैं कृष्णकी ओर टकटकी लगाय के देखि रहे हैं डरके मारे रोवत से ठाढे हैं ११ ताके पीछे बडे बडे तीन तरहके उत्पात उठतभये धरती हाली आकाशतें तारे टूटतभये पुरुषनकी बाईं भुजा बाईं आंखि फरकत भई यह उत्पात शीघ्र भयको जतावे है १२ नन्दजी जिनमें मुख्य वे गोप उन उत्पातन को देखिके भयतें व्याकुल होतभये बलदेवजी बिना कृष्ण अकेलो आज गायचरायवे को गयो १३ उन खोंटे उत्पातन सूं कृष्णचन्द्र को निधन मानिके श्रीकृष्णचन्द्र के प्रभावको नहीं जानें और तिन श्रीकृष्णचन्द्र में जिनके प्राण और मन लगि रहे हैं दुःख शोक भय के मारे अतिपीड़ित बाल वृद्ध स्त्री समस्त पशुकी तुल्य बड़ो जिनके मोह श्रीकृष्णचन्द्र के देखिवे की जिनकों उत्कण्ठा वे समस्त दीनहोय गोकुल सों ढूंढिवे को निकसत भये १४।१५ मधुवंश में भये ऐसे भगवान् बलदेवजी व्रजवासीन कूं व्याकुल देखिके हँसि के कछु न बोलत भये काहे ते कि वे अपने छोटे भय्या श्रीकृष्णचन्द्रके प्रभाव को जानेहैं इनके हँसनेही ते सबके प्राण बचे क्योंकि जाको बडो भय्या हँसै है तो जानि परै है कि कछु कुशलहै १६ ते सम्पूर्ण

णचन्द्र भगवान् महापति के पावनके जो चिह्न कमल यव अंकुश वज्र ध्वजाकी रेखायुक्त चरणन कूं देखत देखत जल्दी सों जातभये १८ वा दह के भीतर काली सर्प जिनके लपटि रह्यो चेष्टा जिनकी जात रही ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिके किनारे पै जड़ जिनकी बुद्धि होयगई ऐसे ग्वाल वाळ पछार खायके गिरे तिनकों देखिके और चारों ओर रम्हात डोलैं जे गऊ बछिया तिनकूं देखिके व्रजवासी अतिकष्ट कूं पावतभये १९ अन्त जिनको नहीं छः प्रकार के ऐश्वर्य करि पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र तिनमें मन जिनको लग्यो ऐसी गोपी तिन श्रीकृष्णचन्द्र को प्यार मुसिकान चितवनि वातनकी सुधि करिके अतिशय करिके प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र को सर्पने ग्रसिलियो यह जानि के बहुत दुःखसों व्याकुल होयकै प्यारे विना तीनों लोकन कू सूनो देखतभई २० पुत्र श्रीकृष्ण दहमें व्रजवासी प्यारे कृष्णको ढूंढत कृष्णचन्द्र के चरणन के खोज देखत देखत यमुना के किनारे पै जातभये १७ हे राजन् परीक्षित्! ते व्रजवासी गायन के रस्तामें औरन के पांवनके बीच में श्रीकृ-

॥ गोपांश्चमूढधिषणान्परितःपशूंश्च संक्रन्दतःपरमकरीक्ष्यमाणाययुरङ्गसत्वराः १८ अन्तर्ह्रदेभुजगभोगपरीतमारात्कृष्णंनिरीहमुपलभ्यजलाशयान्ते ॥ ग्रस्तेऽहिनाप्रियतमेभृशदुःखतप्ताः शून्यंप्रियव्यतिहृतंददृशमलमापुरार्त्ताः १९ गोप्योऽनुरक्तमनसोभगवत्यनन्ते तत्सौहृदस्मितविलोकगिरःस्मरन्त्यः ॥ तास्ताव्रजप्रियकथाःकथयन्त्यआसन्कृष्णाननेऽर्पितदृशोमृतकप्रतीकाः २१ कृष्णप्राणान्निर्विशतो नन्दादीन्वीक्ष्यतंह्रदम् ॥ प्रत्यषेधत्सभगवान् रामःकृष्णानुभाववित् २२ इत्थंस्वगोकुलमनन्यगतिंनिरीक्ष्य सस्त्रीशुस्त्रिलोकम् २० ताःकृष्णमातरमपत्यमनुप्रविष्टां तुल्यव्यथाःसमनुगृह्यशुचःस्रवन्त्यः ॥ कुमारमतिदुःखितमात्महेतोः ॥ आज्ञायमर्त्यपदवीमनुवर्त्तमानः स्थित्वामुहूर्त्तमुदतिष्ठदुरङ्गबन्धात् २३ तत्प्रथ्यमानवपुषाव्यथितात्मभोगस्त्यक्त्वोन्नमय्यकुपितःस्वफणान्भुजङ्गः ॥ तस्थौश्वसञ्श्वसनरन्ध्रविषाम्बरीषस्तब्धेक्षणोल्मुकमुखोहरिमीक्षमाणः २४ तंजिह्वयाद्विशिखयापरिलेलिहानं द्वेसृक्किणीह्यतिकरालविषाग्निदृष्टिम् ॥ क्रीडन्नमुंपरिससारयथाखगेन्द्रो बभ्रामसोऽप्यवसरंप्रसमीक्षमाणः २५ एवंपरिभ्रमहतौजसमुन्नतांसमानम्यतत्पृथुशिरःस्वधि

गिरे तहां यशोदा माता अतिदुःखित होयके आंखिनमें आसू चलेआवैं पुत्र कृष्णके, मुखकी ओर टकटकी लगायके देखैं मृतककी तुल्य जाकी चेष्टा होतभई ता समय और गोपी व्रजकी प्यारी प्यारी वातें कहि कहि के समझावति भई २१ श्रीकृष्णमें जिनके प्राण कालीके दहमें पुत्रशोक के मारे धसते नन्दजी सूं आदिलैके जे व्रजवासी हैं तिनकूं देखिके श्रीकृष्ण के प्रभावकों जाननवारे भगवान् बलदेवजी रोकतभये २२ या प्रकार अपने कूं अनन्यगति कहिके और कोई छुड़ावनवारो नहीं यह जानि के और स्त्री बालकन सहित गोकुलवासी मेरे लिये बहुत दुःखित हैं यह विचारि के मनुष्यनकी तुल्य लीला करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र दो घड़ीपर्य्यन्त वा सर्प की कुण्डली में रहिके फिर वाते बाहिर निकसत भये २३ श्रीकृष्णचन्द्र ने अपनो देह बढ़ायो तातें सर्प के देह में अतिदुःख भयो कहा कहा दुःख भयो नस नस टूटन लगीं तब कृष्ण को छोड़िकै क्रोध करिकै अपने फणनकूं उठाय के बड़े बड़े स्वासन कूं लैके स्थित होय के नकुअन में जाके विष आय गयो ता क्रोध तें आंखिन के पलक न लगें बरती लकडी की तुल्य जाको मुख या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र की ओर देखत जाय है २४ दो हैं जाकी फॉक ऐसी जीभ ते दोनों ओठन कों चाटै विषकी आगि भरी

जाकी चितवनि वा काली कूं खेलत खेलत फिरावत भये जैसे गरुड़ सर्प्प को फिरावे है कालीभी श्रीकृष्णचन्द्र के पकरिवे को अवसर देखत फिरत हैं श्रीकृष्ण अपनो दाउँ विचारैं काली अपनो दाउँ विचारै श्रीकृष्णचन्द्रको मन तो यह है कि हमारो दाॅउ लगे तो याके फणन पै चढ़ि के नृत्य करैं काली के मन में यह है कि मेरो दाॅउ लगे तो मैं याके लिपटि जाऊँ ऐसे अपनो अपनो दाॅउ विचारै है २५ ऐसे फिरे तें वल जाको घटिगयो कालीके ऊँचे फणनको लचाय के ऊपर चढ़ि के कृष्णचन्द्र नाचत भये काली के फणन में जो मणिरत्न लगे हैं तिन सूं लगि के चरणारविन्द अरुण होयगये कदाचित् कहो कि चञ्चल सर्प्प के फणन पै कैसे नृत्य करत भये तहाॅ कहै हैं ये श्रीकृष्णचन्द्र समस्तकलान के आप गुरु हैं कोई तरवारन की धार पै नाचै कोई वाॅस पै चढ़ के नाचै हम देखो काली के शिरपै नाचै है २६ कृष्णचन्द्र काली के फणन पै नृत्य करवे को ठाढ़े भये तिनको देखि के ता समय गन्धर्व सिद्ध सुरगण चारण देवागना ये सब प्रसन्न होय के मृदङ्ग ढोलक नगाड़े लै लै के वजावत गावत भये पुष्प वर्षावत भेंटें लैके स्तुति करत शीघ्र आवत भये २७ मुख्य हैं शिर जाके ऐसो जो काली है ताको

रूढआद्यः ॥ तन्मूर्द्धरत्ननिकरस्पर्शातिताम्रपादाम्बुजोऽखिलकलादिगुरुर्ननर्त्त २६ तन्नर्त्तुमुद्यतमवेक्ष्यतदातदीयगन्धर्वसिद्धसुरचारणदेववध्वः ॥ प्री
त्यामृदङ्गपणवानकवाद्यगीतपुष्पोपहारनुतिभिःसहसोपसेदुः २७ यद्यच्छिरोननमतेऽङ्गशतैकशीर्ष्णस्तत्तन्ममर्दखलदण्डधरोऽङ्घ्रिपातैः ॥ क्षीणायुषो
भ्रमतउल्बणमास्यतोऽसृङ्नस्तोवमन्परमकश्मलमापनागः २८ तस्याक्षिभिर्गरलमुद्वमतःशिरस्सु यद्यत्समुन्नमतिनिःश्वसतोरुषोच्चैः ॥ नृत्यन्पदाऽनु
नमयन्दमयाम्बभूव पुष्पैःप्रपूजितइवेहपुमान्पुराणः २९ तच्चित्रताण्डवविरुग्णफणातपत्रोरक्तंमुखैरुरुवमन्नृपभग्नगात्रः ॥ स्मृत्वाचराचरगुरुंपुरुषंपुरा
णं नारायणंतमरणंमनसाजगाम ३० कृष्णस्यगर्भजगतोऽतिभरावसन्नं पार्ष्णिप्रहारपरिरुग्णफणातपत्रम् ॥ दृष्ट्वाऽहिमाद्यमुपसेदुरमुष्यपत्न्यआर्त्ताः
श्लथद्वसनभूषणकेशबन्धाः ३१ तास्तंसुविग्नमनसोऽथपुरस्कृतार्भाः कायंनिधायभुविभूतपतिंप्रणेमुः ॥ साध्व्यःकृताञ्जलिपुटाःशमलस्यभर्त्तुर्मोक्षेप्सवः

जो जो शिर ऊंचो उठै है ताय ताय दुष्टन के दण्ड देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र पाॅव की ठोकर सों नवावत भये क्षीण भई है अवस्था जाकी इत उत भ्रमत डोलै जो काली ताके मुख ते नासिका ते भयङ्कर रुधिर निकसो या प्रकार काली दुष्ट सर्प्प कों मर्दन करत भये २८ नेत्रन ते विष जाके निकसो क्रोधकरिके बड़े बड़े श्वासन कों लेइ जो काली है ताको जो जो शिर ऊंचो उठै है ताके ऊपर नृत्य करिके चरण की ठोकर सों नवाय के दण्ड देत भये या समय गन्धर्व देवतान के आनन्द जो भयो सो शेषनाग की शय्या पै शयन करैं जो नारायण हैं तिनकी तुल्य यशोदा-नन्दन श्रीकृष्णचन्द्र की पुष्पन करिके पूजा करत भये अथवा दूसरो अर्थ देवता गन्धर्व अप्सराननें ता समय फूलन करिकै पूजन करो और व्रजवासीन ने नारायण की तुल्य श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन करो अथवा याही पद को तीसरो अर्थ फूलन सों पूजन करे से प्रसन्न होयके कालीको दण्ड देत भये यह वाको भलो करत भये २९ हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र ने जो चित्र विचित्र ताडव नृत्य करो तासूं फणरूपी छत्र जाके ढीले होय गये देह की नस नस ढीली होयगई ऐसो काली मुख ते रुधिर वमन करत स्थावर जङ्गम के गुरु पुराणपुरुष नारायण की

सुधि करिके मन ते नारायण की शरण लेत भयो ३० ब्रह्माण्ड जिनके गर्भमें उन श्रीकृष्ण के बोझते दबो एँड़ीन की ठोकरन के मारे फणरूपी छत्र जाको ढीलो होयगयो ऐसे कालीनाग को देखिके गहने कपड़े जिनके अस्तव्यस्त होयगये केश जिनके खुलि गये ऐसी या काली की स्त्री पीड़ित होय के श्रीकृष्णचन्द्र की शरण लेत भई ३१ अतिव्यग्र जिनके मन छोटे छोटे अपने बच्चान कों आगे करिके हाथ जोरि के जे नाग की पतिव्रता पत्नी हैं ते साष्टाङ्ग धरती में गिरि के समस्त प्राणीन के पति श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करत भई पतिके पाप छुड़ायवे के लिये श्री कृष्णचन्द्र भगवान् की शरण लेति भई ३२ अब नागपत्नी कहती हैं या अपराधी कों तुमने दण्ड दियो सो योग्य हैं तुम्हारो अवतार दुष्टन के दण्ड देवे कू है वैरी और पुत्रन कूं बराबर देखोहो दुष्ट विचार के दण्ड देउ हो और पुत्रन के ऊपर अनुग्रह करोहो दुष्टन कों दण्ड दैवो यह तुम्हारे विषमता नहींहै ३३ या सर्प को तुमने दण्ड दीनो याके ऊपर बड़ो अनुग्रह कियो तुम्हारे दण्ड दिये ते दुष्टन के समस्त पाप जात रहे हैं या अपराध ते याको सर्पयोनि भई वह अपराध दूरि होयगयो तुम्हारो क्रोधहै सो कृपारूप है ३४ दूरि भयोहै मान जाको औरन कूं भी देय

शरणंदंशरणंप्रपन्नाः ३२ नागपत्न्यऊचुः ॥ न्याय्योहिदण्डःकृतकिल्बिषेऽस्मिंस्तवावतारःखलनिग्रहाय ॥ रिपोःसुतानामपितुल्यदृष्टेर्धत्सेदमंफलमेवा नुशंसन् ३३ अनुग्रहोऽयंभवताकृतोहिनो दण्डोसतान्तेखलुकल्मषापहः ॥ यद्दन्दशूकत्वममुष्यदेहिनः क्रोधोऽपितेऽनुग्रहएवसंमतः ३४ तपःसुतप्तंकिमने नपूर्वं निरस्तमानेनचमानदेन ॥ धर्मोऽथवासर्वजनानुकम्पया यतोभवांस्तुष्यतिसर्वजीवः ३५ कस्यानुभावोऽस्यनदेवविद्महे तवाङ्घ्रिरेणुस्पर्शाधि कारः ॥ यद्वाञ्छयाश्रीर्ललनाचरत्तपोविहायकामान्सुचिरंधृतव्रता ३६ ननाकपृष्ठंनचसार्वभौमं नपारमेष्ठ्यंनरसाधिपत्यम् ॥ नयोगसिद्धीरपुनर्भवंवा वा ञ्छन्तियत्पादरजःप्रपन्नाः ३७ तदेषनाथापदुरापमन्यैस्तमोजनिःक्रोधवशोऽप्यहीशः ॥ संसारचक्रेभ्रमतःशरीरिणो यदिच्छतःस्याद्विभवःसमक्षः ३८ न मस्तुभ्यंभगवते पुरुषायमहात्मने ॥ भूतावासायभूताय परायपरमात्मने ३९ ज्ञानविज्ञाननिधये ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ अगुणायाविकाराय नमस्तेप्राकृता

ऐसो जो काली है ताने पूर्वजन्म में कहा तप करो है अथवा समस्तजनन के ऊपर कृपा करिके धर्म कहा करयो है या कारण ते सम्पूर्ण के जिवावनवारे तुम या काली के ऊपर सन्तुष्ट भये ३५ हे प्रकाशवान्! यह सर्प तुम्हारे चरणारविन्द की रजके स्पर्श करिवेको अधिकारी भयो सो कौन तपस्या को फल है यह हम नहीं जाने हैं जिन चरणारविन्द के स्पर्श के लिये लक्ष्मी जो उत्तम स्त्री है सो कामनान को छोड़िके व्रतको धारण करिकै बहुत दिनपर्यन्त तप करतभई ३६ जिन पुरुषन ने तुम्हारे चरणारविन्दकी रजकों शरण लियो है वे पुरुष काहू वस्तुकी चाह नहीं करै हैं पृथ्वी को चक्रवर्ती राज्य चाहै हैं अणिमादिक अष्टसिद्धिन की चाह नहीं करै हैं और मोक्षकूं भी नहीं चाहै है ३७ हे नाथ! लक्ष्मी ते आदिलैके बड़े बडे जो हैं तिनको दुर्लभ ऐसी तुम्हारे चरणारविन्द की रज है ताकूं तमोगुण ते जाको जन्म भयो क्रोधके वश ऐसो सर्पन को राजा काली सो विना उपाय पावत भयो अपने कर्म्मन के वशते संसारचक्र में भ्रमे तुम्हारे चरणार विन्दकी रजको शरण चाहै ऐसे शरीरधारी कू मनकी चाहती सम्पत्ति मिलै है ३८ छःप्रकार के ऐश्वर्ययुक्त समस्त देह में अन्तर्यामी रूप करिके रहित उनमें रहो हो तथापि उनमें ढकि

नहीं जावो हौ पृथ्वी अप् तेज वायु आकाश इनके आश्रय पञ्चभूतन ते पहिले रहौ समस्त के कारण आप कारण करिके रहित ऐसे तुमहौ तिनको नमस्कार है ३९ ज्ञान विज्ञान कहा चैतन्य-शक्ति तिन करिके परिपूर्ण हौ व्यापक हौ अनन्तशक्ति जिनमें रहैं निर्गुण निर्विकार माया के प्रवर्त्तक जो तुमहो तिनकू नमस्कार है ४० कालरूप हौ कालशक्ति के आश्रय हौ कालके अंग जौन चाण लवादिक तिनके देखनवारे हौ विश्वरूपहौ विश्वकेदेखनवारे हौ और विश्वके उत्पन्न करनवारे हौ विश्वके कारण हौ ४१ पृथ्वी जल वायु आकाश शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध और दश इन्द्रिय प्राण मन बुद्धि चित्त इन रूपहौ और तीनप्रकारको जो अहंकार तासूं अपने अंशरूप जे जीव तिनकू अपने स्वरूप को भय जिन छिपाय राखो है ४२ अहंकार ते आच्छादित नहीं याते अनन्त हो दृष्टिगोचर नहीं याते सूक्ष्महौ उपाधि के करे विकार नहीं याते निर्विकार हौ सर्वज्ञहौ कोई कहै है कोई कहै नहीं है कोई कहै सर्वज्ञहै कोई कहै अचिन्तनीय है कोई कहै बद्ध है कोई कहै मुक्तहै कोई कहै एकहै कोई कहै अनेकहैं इत्यादिक जो अनेक नानाविध झगड़े हैं तिनमें माया ते जो जैसे कहे है तामें तैसेही होयजायहै नाम नामी यह जो एक शक्तिको भेद ताते अनेक

यत्र ४० कालायकालनाभाय कालावयवसाक्षिणे ॥ विश्वायतद्रूपद्रष्ट्रे तत्कर्त्रेविश्वहेतवे ४१ भूतमात्रेन्द्रियप्राणमनोबुद्ध्याशयात्मने ॥ त्रिगुणेनाभिमानेन गूढस्वात्मानुभूतये ४२ नमोऽनन्तायसूक्ष्मायकूटस्थायविपश्चिते ॥ नानावादानुरोधायवाच्यवाचकशक्तये ४३ नमःप्रमाणमूलायकवयेशास्त्रयोनये ॥ प्रवृत्तायनिवृत्ताय निगमायनमोनमः ४४ नमःकृष्णायरामायवसुदेवसुतायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतांपतयेनमः ४५ नमोगुणप्रदीपाय गुणात्मच्छादनायच ॥ गुणवृत्त्युपलक्षाय गुणद्रष्ट्रेस्वसंविदे ४६ अव्याकृतविहाराय सर्व्वव्याकृतसिद्धये ॥ हृषीकेशनमस्तेऽस्तु मुनयेमौनशीलिने ४७ परावरगतिज्ञाय सर्वाध्यक्षायतेनमः ॥ अविश्वायचविश्वाय तद्द्रष्ट्रेऽस्यचहेतवे ४८ त्वंह्यस्यजन्मस्थितिसंयमान्प्रभो गुणैरनीहोऽकृतकालशक्ति

रूप करिके प्रतीक्षा करिवे योग्य जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार है ४३ नेत्रन सों आदिलेके जे इन्द्रिय हैं तिनके प्रकाशके करनवारे हौ और उनके ज्ञानके विषयीहो वेद जिनके श्वास ते भयो है प्रवृत्त रूप निवृत्तरूप वेदरूप जो तुमहो तिनको नमस्कार है ४४ शुद्ध अन्तःकरण में प्रकाश करनवारे भक्तन के रक्षकहौ और कृष्ण संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध रूप तुमहो तिनकूं नमस्कार है ४५ सतोगुण रजोगुण तमोगुण के प्रकाश करनवारे मन बुद्धि चित्त अहंकारके प्रकाश करनवारे अर्थात् इनके अधिष्ठाता हो ताही ते चाररूप हो तिन गुणनसूं उपासना कूं चित्र विचित्र फलदेवे के लिये अपने आत्मा कूं ढकिके अनेकरूप करिके प्रकाशौ हौ मन बुद्धि चित्त अहंकार करि चैतन्य निश्चयकूं आदिलेके जो वृत्ती हैं तिन करिके जानिवे में आवोहौ मन बुद्धि चित्त अहंकार के साक्षी जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है ४६ नहीं विचार करिवेमें आवै महिमा जिनकी और सम्पूर्ण विश्वको उत्पत्ति करिनो प्रकाश करिनो यह जो कारणहै तिनसों जानिवे में आवोहौ इन्द्रियन के प्रेरक आत्मा में रमण करोहौ सत्स्वभाव जिनको ऐसे जो तुमहो तिनको नमस्कार है ४७ छोटे बड़े सम्पूर्ण जीवनके स्वरूप को जानौहौ समस्त विश्वके साक्षीहो विश्व जिनके स्वरूपमें नहीं और विश्वके स्वरूपमें आप नहीं विश्वके निषेधके अवधिहो जैसे सर्प्पके प्रकाशको जेवरी आश्रय तैसे आप विश्व प्रकाशिवेके आश्रयहो आरोप और निषेध के साक्षीहो विश्वको आरोप

और निषेध तिनके ज्ञान अज्ञान सों कारणहो यावत्पर्य्यन्त अज्ञान है तावत्पर्य्यन्त विश्व मानिवे में आवै है या प्रकार नागपत्नी कालीके दण्ड की प्रशंसा करिके कृष्णचन्द्र को प्रसन्न करिके कहतभई अब तुम्हारे अधीन प्राणी हैं तिनको कहा अपराध है ऐसे मनमें विचार केप्रार्थना करै हैं ४८ हे प्रभो ! चेष्टा करिके रहित जो तुमहो सो कालशक्ति कूं धारण करिके सतोगुण रजोगुण तमोगुण सूं या विश्वको उत्पन्न करौ हौ पालनकरौ हौ प्रलयकरौ हौ हे अमोघविहार अर्थात् सफल है विहार क्रीड़ा जिनकी ! ऐसे जो तुमहो सो शात घोरमूढ़ स्वभाव है तिन्हें चैतन्य करिके खेलौ हौ ४९ त्रिलोकी में शात स्वभाव घोरस्वभाव मूढ़स्वभाव या प्रकार तीन स्वभाव के जे प्राणी हैं ते तुम्हारे खेलिवेके खिलौनाहैं साधुनकी रक्षा करिवेके लिये कृपर चाहिके इच्छा करो हौ तासूं अब तुमको शात जिनके स्वभाव वे प्राणी प्यारे लगें हैं ५० स्वामीको यह धर्म्म है कि एकवार अपनी प्रजापै अपराध वनि आवै ताकूं एक वेर सहिलेय हैं हे शान्तस्वरूप ! मूढ़ तुम्हारे स्वरूप कूं नहीं जाने ऐसो जो काली ताके ऊपर रक्षा करिवे के योग्य हौ ५१ हे भगवन् ! या सर्प्प के प्राण निकसे जाय हैं आपके बोझ के मारे सो अब याके ऊपर कृपा करो साधु जिनको

धृक् ॥ तत्तत्स्वभावान्प्रतिबोधयन्सतःसमीक्षयाऽमोघविहारईहसे ४९ तस्यैवतेऽमूस्तनवस्त्रिलोक्यांशान्ताअशान्ताउतमूढयोनयः ॥ शान्ताःप्रियास्तेह्यधुनाऽवितुंसतां स्थातुश्चतेधर्मपरीप्सयेहतः ५० अपराधःसकृद्भर्त्रासोढव्यःस्वप्रजाकृतः ॥ क्षन्तुमर्हसिशान्तात्मन् मूढस्यत्वामजानतः ५१ अनुगृह्णीष्वभगवन्प्राणांस्त्यजतिपन्नगः ॥ स्त्रीणांनःसाधुशोच्यानां पतिःप्राणःप्रदीयताम् ५२ विधेहितेकिङ्करीणामनुष्ठेयंतवाज्ञया ॥ यच्छ्रद्धयाऽनुतिष्ठन्वैमुच्यते सर्वतोभयात् ५३ श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंसनागपत्नीभिर्भगवान्समभिष्टुतः ॥ मूर्च्छितंभग्नशिरसं विससर्जाङ्घ्रिकुट्टनैः ५४ प्रतिलब्धेन्द्रियप्राणःकालियः शनकैर्हरिम् ॥ कृच्छ्रात्समुच्छ्वसन्दीनः कृष्णंप्राहकृताञ्जलिः ५५ वयंखलाःसहोत्पत्त्या तामसादीर्घमन्यवः ॥ स्वभावोदुस्त्यजोनाथ लोकानांयदसद्ग्रहः ५६ त्वयासृष्टमिदंविश्वं धातुर्गुणविसर्जनम् ॥ नानास्वभाववीर्यौजोयोनिबीजाशयाकृतिः ५७ वयञ्चतत्रभगवन् सर्पाजात्युरुमन्यवः ॥ कथंत्यजामस्त्व

शोच करैं ऐसी जो स्त्रीजाति हम हैं तिनको यह पति है सोई प्राण है याते यह पतिरूप प्राण हम कूं कृपा करिदीजिये ५२ तुम्हारी हम दासी हैं तुम्हारी आज्ञा करिवे लायक हैं जो आप आज्ञा करैंगे ताइ हम श्रद्धापूर्वक करेंगे तो सम्पूर्ण भय ते छूट जायँगे तुम आज्ञा करोगे तो प्राणीन कूं न काटेंगे ५३ श्रीशुकदेवजी कहे है कि हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार नागपत्नीन ने श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुतिकरी तव भगवान् मूर्च्छा जाको आय गई चरणन की ठोकर ते माथो जाको फूटि गयो ऐसे काली सर्प्प कूं छोड़त भये ५४ इन्द्रियनमें प्राणन में चेत जव भयो तव काली सर्प्प हौले हौले वड़े श्वास लेतभयो वड़ो गरीव होय के हाथ जोरि के यह वोल्यो ५५ हे नाथ ! जाते हम उत्पन्न भये है तवतेही हम दुष्ट हैं तामसी हमारो स्वभाव है वड़ो हमारो क्रोधहै लोकन को खोटो आग्रहरूप जो स्वभाव है सो छूटे नहीं अथवा दूसरो अर्थ जा स्वभाव ते मिथ्या देह में आग्रह है सो नहीं छूटै है ५६ हे सम्पूर्ण के रचनवारे ! सतोगुण रजोगुण तमोगुण अनेक प्रकार सृजवे में आवैं ऐसो जो यह विश्व तुमने रचो है तामें सव के न्यारे २ स्वभाव पराक्रम तेज योनि बीज आशयरूप हैं ५७ हे भगवन् ! ता विश्व में हम सर्प्प वनाये जन्मतेही हमारे वड़ो क्रोध भयो

माया करि मोहित होय रहे हैं हम से छोड़ी न जाय ऐसी अपनी मायाकूं आपुही की कृपा ते छूटे ५८ सम्पूर्ण के जाननवारे जगत् के ईश्वर तुमहो सो तुमहीं माया के छुड़ायवे के कारणहौ जो काम तुमने सौंप्यो तापे हम ऐसे दुष्ट रहे सो तुमहूं से न चूके यह मानिके हमारे ऊपर कृपाकरो चाहो दण्डदेउ आप परमेश्वर सब करिवे योग्यहो ५९ पृथ्वी को बोझ उतारिवे के लिये मनुष्यरूप जिनने धरो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् या काली सर्प को वचन श्रवण करिके बोलत भये हे सर्प ! या दह में मति रहो समुद्रको जावो देर मतिकरो अपनी जाति के सर्प बालक स्त्रीन कूं संग लै समुद्र को जावो गऊ मनुष्य यमुनाजल पीवेंगे ६० जो मैंने तोको आज्ञा करी याहि जो कोई मनुष्य ध्यान करै अथवा सन्ध्या प्रातःकाल या चरित्रको पाठकरै वाको तो ते भय नहीं होय यह हमारी आज्ञा है मेरे खेलिवे को ठिकानो यह दह है यामें जो मनुष्य स्नानकरै पितृ देवतान कूं तर्पण करै व्रत करिके मेरो ध्यानकरै मेरो पूजन करै वह पुरुष समस्त पापन ते

न्मायां दुरत्ययजांमोहिताःस्वयम् ५८ भवान्हिकारणंतत्र सर्वज्ञोजगदीश्वरः ॥ अनुग्रहंनिग्रहंवा मन्यसेतद्विधेहिनः ५९ श्रीशुकउवाच ॥ इत्याकर्ण्यवचः प्राह भगवान्कार्य्यमानुषः ॥ नात्रस्थेयंत्वयासर्प समुद्रंयाहिमाचिरम् ॥ स्वज्ञात्यपत्यदाराढ्यो गोनृभिर्भुज्यतांनदी ६० यएतत्संस्मरेन्मर्त्यस्तुभ्यंमदनुशासनम् ॥ कीर्त्तयन्नुभयोःसन्ध्योर्नयुष्मद्भयमाप्नुयात् ६१ योऽस्मिन्स्नात्वामदाक्रीडे देवादींस्तर्पयेज्जलैः ॥ उपोष्यमांस्मरन्नर्चेत्सर्वपापैःप्रमुच्यते ६२ द्वीपं रमणकंहित्वा ह्रदमेतमुपाश्रितः ॥ यद्भयात्ससुपर्णस्त्वां नाद्यान्मत्पदलाञ्छितम् ६३ श्रीशुकउवाच ॥ एवमुक्तोभगवता कृष्णेनाद्भुतकर्मणा ॥ तंपूजयामासमुदा नागपत्न्यश्चसादरम् ६४ दिव्याम्बरस्रङ्मणिभिः परार्ध्यैरपिभूषणैः ॥ दिव्यगन्धानुलेपैश्च महत्योत्पलमालया ६५ पूजयित्वाजगन्नाथं प्रसाद्यगरुडध्वजम् ॥ ततःप्रीतोऽभ्यनुज्ञातःपरिक्रम्याभिवन्द्यतम् ६६ सकलत्रसुहृत्पुत्रो द्वीपमब्धेर्जगामह ॥ तदैवसाऽमृतजला यमुनानिर्विषाऽभवत् ॥ अनुग्रहाद्भगवतः क्रीडामानुषरूपिणः ६७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकालियनिर्यापणंनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥ ❀ ॥

छूटि जाय है ६१ । ६२ गरुड़ के भय ते रमणकद्वीप कू छोड़िके या दह में आयके रह्यो है वह गरुड़ तो कूं न खायगो तेरे माथे पै मेरे चरणन को चिह्न है या कारण ते ६३ ऋषीश्वर कहै हैं कि अद्भुत जिनके कर्म ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने या प्रकार काली सर्प कूं कही तब काली सर्प बड़े आनन्द सूं श्रीकृष्णचन्द्र की पूजा करत भयो और कालीकी स्त्री हैं ते आनन्द ते पूजा करतभई ६४ दिव्य वस्त्र माला मणि और बड़े मोलके गहने दिव्य जिनमें सुगन्धि ऐसे केशर कस्तूरी चन्दन बड़े बड़े कमलनसूं गरुड़ जिनकी ध्वजामें ऐसे जगत् के नाथ श्रीकृष्ण तिनकी पूजा करिके प्रसन्न करिके पीछे आज्ञा जाकूं दई वह काली सर्प प्रसन्न होयके परिक्रमा करि प्रणाम करिके ६५ । ६६ अपनी स्त्री बालकन कूं संग लैके समुद्र के द्वीपमें जात भयो क्रीड़ा करिवेके निमित्त मनुष्यरूप जिनने धरो ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की कृपा तें ताई समय यमुनाजी को विष दूरि होयके अमृत सों जल होत भयो ६७ इति श्रीमन्महाभागवततार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकालियनिर्यापणोनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(नागंसप्तदशेनागालयंतंनिरयापयत् ॥ वन्धूनस्वदुःखतःश्रान्तान्सुप्तांस्तत्रदवादपात् ? सत्रहवें अध्याय में कृष्णजी कालीनाग को यमुनाजी से निकाल देतेभये और अपने दुःख से श्रान्त सोतेहुए वन्धुओं को अग्नि से रक्षा करते भये १) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करै हैं कि सर्पन के रहिवे को स्थान रमणकद्वीप है ताकूं काली सर्प कौन कारण ते छोडत भयो और गरुड को अकेले कालीनेही अपराध करो अथवा और सर्पन ने भी यह कथा हमारे आगे वर्णन कीजिये ' शुकदेवजी राजा से कहे हैं हे महाबाहु राजा परीक्षित्! गरुड़ नित्यप्रति रमणकद्वीप में सर्पन कूं भक्षण करिवे को आवै हो तब सम्पूर्ण सर्पन ने आपुस में विचार करि मास मास को अपनो दुःख निवृत्त करिवे के लिये वृक्षकी जड़ में एकान्त गरुड़ की भेंट निश्चय करि दीनी २ सो अपनी अपनी बारी सूं भेंट रखि आवैं और पर्व पर्व में महात्मा गरुड को भेंट देय हैं ३ विषके पराक्रम को जाके मद ऐसो कद्रू को पुत्र काली सो गरुड़ को तुच्छ मानि के सर्पान्न जो गरुड

राजोवाच ॥ नागालयंरमणकं कस्मात्तत्याजकालियः ॥ कृतंकिंवासुपर्णस्य तेनैकेनासमञ्जसम् १ श्रीशुकउवाच ॥ उपहार्यैःसर्पजनैर्मासिमासीहयोबलिः ॥ वानस्पत्योमहाबाहो नागानांप्राग्निरूपितः २ स्वंस्वंभागंप्रयच्छन्तिनागाःपर्वणिपर्वणि ॥ गोपीथायाऽऽत्मनःसर्वेसुपर्णायमहात्मने ३ विषवीर्यमदाविष्टः काद्रवेयस्तुकालियः ॥ कदर्थीकृत्यगरुडं स्वयंतंबुभुजेबलिम् ४ तच्छ्रुत्वाकुपितोराजन् भगवान्भगवत्प्रियः ॥ विजिघांसुर्महावेगः कालियंसमुपाद्रवत् ५ तमापतन्तंतरसाविषायुधः प्रत्यभ्ययादुच्छ्रितनैकमस्तकः ॥ दद्भिःसुपर्णंव्यदशद्ददायुधः करालजिह्वोच्छ्वसितोग्रलोचनः ६ तंतार्क्ष्यपुत्रःसनिरस्यमन्युमान् प्रचण्डवेगोमधुसूदनासनः ॥ पक्षेणसव्येनहिरण्यरोचिषा जघानकद्रूसुतमुग्रविक्रमः ७ सुपर्णपक्षाभिहतः कालियोऽतीवविह्वलः ॥ ह्रदंविवेशकालिन्द्यास्तदगम्यंदुरासदम् ८ तत्रैकदाजलचरं गरुडोभक्ष्यमीप्सितम् ॥ निवारितःसौभरिणा प्रसह्यक्षुधितोऽहरत् ९ मीनान्सुदुःखितान्दृष्ट्वा दीनान्मीनपतौहते ॥ कृपयासौभरिःप्राह तत्रत्यक्षेममाचरन् १० अत्रप्रविश्यगरुडोयदिमत्स्यान्सखादति ॥ सद्यःप्राणैर्वियुज्येत सत्य

को भोग है ताहि एक दिन आपही खात भयो ४ हे राजन् परीक्षित्! भगवान् के प्यारे ऐसे भगवान् गरुड़जी हैं सो हमारो भोजन काली खाय गयो यह बात श्रवण करिके क्रोध करि काली कूं मारिवे के लिये दौरिके काली के पास आवत भयो ५ विषही जाके शस्त्र ऐसो काली सर्प ऊंचे फणन कूं उठाय के दौरि के आयो जो गरुड़है ताके सम्मुख जात भयो दन्त जाके आयुध भयानक जाकी जीभ पलक जिन में लगें ऐसी भयानक जाकी आँखें ऐसो काली दाँतन ते गरुड़ को काटत भयो ६ अति है क्रोध जिनके जल्दी चलै बढो पराक्रम जिनके ऐसे भगवान् के वाहन तार्क्ष्य के पुत्र गरुड़जी सर्प कूं अपने अंग में ते छुड़ाय के सुवर्ण के सो जाको प्रकाश ऐसे वायें पंख सूं कद्रू के पुत्र काली कूं मारत भये ७ गरुड को पंख जाके लगो वह काली सर्प व्याकुल होय के सौभरिऋषीश्वरके शाप ते यहाँ आय भी न सके जल में पराक्रमहू न चले ऐसो यमुनाजी को दह है ८ ता दह में एक समय गरुड़ जल में डोले मछरीन को खान की इच्छा करिके तब सौभरिऋषिने मने करो तथापि क्षुधा के मारे जोरावरी खाय गयो ९ जब मछरीन को राजा एक वड़ो मच्छ मरिगयो तब और मछरीन कूं दीन देखि कै उनके बचिवे के

लिये सौभरिऋषि यह कहत भये १० या दह में गरुड आयके जो मछरीन कूं खाय तो तुरत गरुड़ के प्राण निकसि जायँ यह बात मैं सत्य कहूं हूं या प्रकार प्राणीमात्र की रक्षा में है तात्पर्य जिनको ऐसे सौभरिऋषि यह शापदेतभये ११ गरुड को सौभरिऋषि को शाप भयो यह बात कालीही जानै है और कोई नहीं जानै है इसलिये गरुड़ के भय ते काली वास करे हो सो श्रीकृष्णचन्द्र ने निकासि दियो १२ सुन्दर माला पहिरे केशरि लगाये वस्त्रन कूं पहिरे मणिन के जड़ाऊ सुवर्ण के गहने पहिरे श्रीकृष्णचन्द्र दह में ते बाहर निकसे तब उनकों देखि के समस्त व्रजवासी ठाढे होय गये जैसे प्राण आये ते इन्द्रिय चैतन्य होय जायँ हैं या प्रकार आनन्द में भरे व्रजवासी प्रसन्न होय के छाती लगाय के मिलत भये १३ । १४ हे कुरुवंश में भये राजा परीक्षित् ! यशोदाजी रोहिणीजी नन्दजी गोपी गोप समस्त श्रीकृष्णचन्द्र कूं आये देखि के चेष्टा जिनकी वगद आई मनोरथ जिनके पूरे भये या प्रकार होतभये १५ श्रीकृष्णचन्द्र

मेतद्ब्रवीम्यहम् ११ तंकालियःपरंवेद नान्यःकश्चनलेलिहः ॥ अवात्सीद्गरुडाद्भीतःकृष्णेनचविवासितः १२ कृष्णंह्रदाद्विनिष्क्रान्तंदिव्यस्रग्गन्धवाससम् ॥ महामणिगणाकीर्णं जाम्बूनदपरिष्कृतम् १३ उपलभ्योत्थिताःसर्वे लब्धप्राणाइवासवः॥ प्रमोदनिभृतात्मानोगोपाःप्रीत्याऽभिरेभिरे १४ यशोदारोहिणीनन्दो गोप्योगोपाश्चकौरव ॥ कृष्णंसमेत्यलब्धेहा आसल्लँब्धमनोरथाः १५ रामश्चाच्युतमालिङ्ग्य जहासास्यानुभाववित् ॥ नगागावोवृषावत्सालेभिरेपरमांमुदम् १६ नन्दंविप्राःसमागत्य गुरवःसकलत्रकाः ॥ ऊचुस्तेकालियग्रस्तोदिष्ट्यामुक्तस्तवाऽऽत्मजः १७ देहिदानंद्विजातीनांकृष्णनिर्मुक्तिहेतवे ॥ नन्दःप्रीतमनाराजन् गाःसुवर्णंतदाऽदिशत् १८ यशोदाऽपिमहाभागा नष्टलब्धप्रजासती ॥ परिष्वज्याङ्कमारोप्य मुमोचाश्रुकलांमुहुः १९ तांरात्रिंतत्रराजेन्द्रक्षुत्तृड्भ्यांश्रमकर्शिताः ॥ ऊषुर्व्रजौकसोगावःकालिन्द्याउपकूलतः २० तदाशुचिवनोद्भूतो दावाग्निःसर्वतोव्रजम् ॥ सुप्तंनिशीथआवृत्य प्रदग्धुमुपचक्रमे २१ ततउत्थायसम्भ्रान्ता दह्यमानाव्रजौकसः ॥ कृष्णंययुस्तेशरणं मायामनुजमीश्वरम् २२ कृष्णकृष्णमहाभाग हेरामामितवि

के प्रभाव के जाननवारे बलदेवजी छाती ते लगाय के हँसत भये वृक्ष, गऊ बैल बछरान कों देखि के बडे प्रसन्न होत भये १६ स्त्रीन कूं संग लैके गुरु पुरोहित ब्राह्मण नन्दजी के पास आय के कहत भये कि काली ने डस्यो तुम्हारो पुत्र श्रीकृष्ण सो वाते अब छूटो बड़ो मंगल भयो १७ जासमय श्रीकृष्णचन्द्र नाग ते छूटि के आये ता समय की वधाई में नन्दरायजी प्रसन्न होय के हे राजन् परीक्षित् ! गौ सुवर्ण दान करि ब्राह्मणन को देत भये १८ पतिव्रता श्रीयशोदा जी नष्ट भये ऐसे पुत्र श्रीकृष्णचन्द्रकूं प्राप्तहोय के छाती ते लगाय गोद में बैठार वेर वेर नेत्रनमें ते आँसू छोडत भई १९ नष्ट भये ऐसे पुत्र कूंपाय के हे राजन् परीक्षित् ! भूँख प्यास करिके पीडित व्रजवासी गऊ सम्पूर्ण वा दिन रात्रि कूं यमुनाजी के किनारे वास करतभये २० एक दिन अर्द्धरात्र समय गरमी की ऋतु में शुष्कवन में व्रजवासी सब सोयगये तब चारों ओर ते घेर के दैत्य जराइवे कों उपाय करत भयो २१ ता पीछे सब व्रजवासी जरन लगे तब उठिके हरबरान लगे माया करिके मनुष्य रूप धरो ऐसे समर्थ श्रीकृष्णकों शरण लेतभये २२ हे कृष्ण ! हे कृष्ण! हे महाभाग! हे राम ! हे बड़े पराक्रमी! तेरे हम व्रजवासीन को भयानक यह अग्नि जरावै है हे समर्थ ! सम्हारी

न जाय ऐसी यह कालरूप अग्नि है तासूं हम तेरे मित्र हैं तिनकूं बचाय काऊ और ते जामें भय नहीं ऐसे तेरे चरण हम पै नहीं छोड़े जायँ अग्नि में जरिबे ते भी हम नहीं डरपैं हैं किन्तु तेरे चरणन के वियोग ते डरपैं हैं २३ । २४ या प्रकार विश्व के ईश्वर अनन्तशक्तिन कूं धारण करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अपने व्रजवासीन की व्याकुलता देखि के भयानक अग्नि कूं पान करत भये २५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेदावाग्निमोचनंनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(अष्टादशेततोग्रीष्मेवसन्तगुणलक्षिते ॥ अघातयद्बलेनालं मलम्बंलीलयाहरिः १ कृत्वानृत्यंफणाग्रेषु कालियस्यसकौतुकम् ॥ बलंमलम्बतुङ्गांसमारोहयदरातिहा २ अठारहवें अध्यायमें वसन्तऋतुके गुणों से लक्षित ग्रीष्मऋतुमें कृष्णजी बलदेवजी से लीलापूर्वक मलम्बासुरको नाश करा देते भये १ कौतुकसमेत कृष्णजी कालियनाग के फणोंके अग्रों में नाचकर बलदेवजी

क्रम ॥ एषघोरतमोवह्निस्तावकान् ग्रसते हि नः २३ सुदुस्तरान्नःस्वान्पाहिकालाग्नेःसुहृदःप्रभो ॥ नशक्नुमस्त्वच्चरणं संत्यक्तुमकुतोभयम् २४ इत्थंस्वजनवैक्लव्यं निरीक्ष्यजगदीश्वरः ॥ तमग्निमपिवत्तीव्रमनन्तोऽनन्तशक्तिधृक् २५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेदावाग्निमोचनंनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथकृष्णःपरिवृतोज्ञातिभिर्मुदितात्मभिः ॥ अनुगीयमानोन्यविशद्व्रजंगोकुलमण्डितम् १ व्रजेविक्रीडतोरेवं गोपालच्छद्ममायया ॥ ग्रीष्मोनामर्तुरभवन्नातिप्रेयाञ्शरीरिणाम् २ सचवृन्दावनगुणैर्वसन्तइवलक्षितः ॥ यत्राऽऽस्तेभगवान्साक्षाद्रामेणसहकेशवः ३ यत्रनिर्झरनिर्ह्रादनिवृत्तस्वनझिल्लिकम् ॥ शश्वत्तच्छीकरर्जीषद्रुममण्डलमण्डितम् ४ सरित्सरःप्रस्रवणोर्मिवायुना कह्लारकञ्जोत्पलरेणुहारिणा ॥ नविद्यतेयत्रवनौकसांदवो निदाघवह्न्यर्कभवोऽतिशाद्वले ५ अगाधतोयह्रदिनीतटोर्मिभिर्द्रवत्पुरीष्याःपुलिनैःसमन्ततः ॥ नयत्रचण्डांशुकराविषोल्बणा भुवोरसंशाद्वलितञ्चगृह्णते ६

को मलम्बासुर के ऊंचे कांधेपर चढ़ादेते भये २) श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित् ते कहै हैं कि हे राजन्! प्रसन्न है मन जिनको ऐसे जाति के व्रजवासीनकूं संग लैके आगि पिये के पीछे व्रजवासी जिनके चरित्रन कू गावत आवें ऐसे श्रीकृष्ण गऊनके समूह सूं शोभायमान जो व्रजहै तामें आवतभये १ गौवन को चरायवे को है मिष जामें ऐसी माया करिके या प्रकार व्रजमें खेलें जो श्रीकृष्णचन्द्र बलदेव हैं गरमीऋतु आवत भई यह गरमी की ऋतु देहधारीन कूं बहुत प्यारी नहीं लगे है २ गरमी की ऋतु वृन्दावन के गुणन सूं वसन्तऋतु की तुल्य दिखाई देयहै या वृन्दावन में साक्षात् केशव भगवान् बलदेवजी कू सगलैके रहै हैं ३ जा वृन्दावन में झरना झरै है तिनके शब्द सूं झींगुर जे बोलै हैं तिनकी बोली नहीं सुनाई देय है सदा झरना जो झरै हैं तिनके छींटान सों हरे जो वृक्ष हैं तिनके समूहन सों शोभायमान वृन्दावन होय रह्यो है ४ हरी हरी घास जामें होय रही है वा वृन्दावन में कह्लार कञ्ज उत्पल यह जो कमलकी जातिहैं तिनकी गन्धयुक्त नदी सरोवर झरनान सूं स्पर्श करिके जो पवन चलै है तासू वृन्दावनवासीन कूं गरमी की ऋतु मे अग्निकी तथा सूर्यकी गरमाई नहीं सतावे है ५ बड़ो जिनमें जल ऐसे सरोवरन के

किनारे सूं लगिके जो लहरें उठे हैं तिनसूं टापूनकी तथा किनारेनकी पृथ्वी में सजलताई आवे है वा पृथ्वी की सजलताई कूं और हरियाली कूं विषकी तुल्य भयानक सूर्य्यकी किरणें नहीं सुखाये हैं ६ पुष्प जहां फूलि रहे अनेक जातिके जीव जन्तु पक्षी जिनमें बोलें भौंरा जहा गावें कोकिला सारस पक्षी जामें बोलैं ऐसो शोभायमान वृन्दावनहै तामें श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र वलदेवजी कू संग लैके और गोप गऊन कूं संगलैके बांसुरी वजायके खेलिवे कूं जातभये ७।८ पत्ता मोरपुच्छ फूलन के गुन्जा माला खरिया गेरू मनसिलसूं शृंगार करिके राम कृष्णसूं आदिलैके व्रजवासी कभऊँ नाचत भये कभऊँ गावत भये कभऊँ कुश्ती लड़तभये ६ कृष्णचन्द्र जब नृत्य करें हैं तब कोई ग्वालवाल गावतभये और बांसुरी हथेरी सींगी इन वाजेनकूं वजावत भये कोई भले नाचे या प्रकार बड़ाई करतभये १० हे राजन् परीक्षित्! गोपरूप में छिपे देवता और गोपालरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र वलदेव तिनकी बड़ाई करतभये जैसे नट नटकी बडाई करें है ११ मूड़नो जिनको भयो

वनंकुसुमितंश्रीमन्नदच्चित्रमृगद्विजम् ॥ गायन्मयूरभ्रमरं कूजत्कोकिलसारसम् ७ क्रीडिष्यमाणस्तत्कृष्णोभगवान्वलसंयुतः ॥ वेणुंविरणयन्गोपैर्गो-धनैःसंवृतोऽविशत् ८ प्रवालबर्हस्तवकस्रग्धातुकृतभूषणाः ॥ रामकृष्णादयोगोपाननृतुर्युयुधुर्जगुः ६ कृष्णस्यनृत्यतःकेचिज्जगुःकेचिदवादयन् ॥ वेणुपाणितलैःशृङ्गैः प्रशशंसुरथापरे १० गोपजातिप्रतिच्छन्नादेवागोपालरूपिणः ॥ ईडिरेकृष्णरामौच नटाइवनटंनृप ११ भ्रामणैर्लङ्घनैःक्षेपैरास्फोटन विकर्षणैः ॥ चिक्रीडतुर्नियुद्धेन काकपक्षधरौक्कचित् १२ क्कचिन्नृत्यत्सुचान्येपु गायकौवादकौस्वयम् ॥ शशंसतुर्महाराज साधुसाध्विितिवादिनौ १३ क्कचिद्बिल्वैःक्कचित्कुम्भैः क्कचामलकमुष्टिभिः ॥ अस्पृश्यनेत्रबन्धाद्यैःक्कचिन्मृगखगेहया १४ क्कचिच्चदर्दुरप्लावैर्विविधैरुपहासकैः ॥ कदाचित्स्पन्दोलिकयाक्कहिंचिन्नृपचेष्टया १५ एवंतौलोकसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चेरतुर्वने ॥ नद्यद्रिद्रोणिकुञ्जेपु काननेपुसरस्सुच १६ पशूंश्चारयतोगोपैस्तद्वनेरामकृष्णयोः ॥ गोपरूपीप्रलम्बोऽगादसुरस्तज्जिहीर्षया १७ तंविद्वानपिदाशार्हो भगवान्सर्वदर्शनः ॥ अन्वमोदततत्सख्यं वधंतस्यविचिन्तयन् १८ तत्रोपाहूयगोपालान्

नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी दोनों भय्या कभऊँ छाई मांई खेले हैं कभऊँ कूदे हैं कभऊँ धक्का धक्की करे हैं कभऊँ खम्भ ठोकें हैं कभऊँ खैंचाखैंची करें हैं या प्रकार क्रीड़ा करिके खेलत भये १२ हे राजन् परीक्षित्! कभऊँ एक ग्वालवाल नाचै हैं तब श्रीकृष्णचन्द्र वलदेव दोनों भय्या आप गावें हैं और बाजे वजायके भले नाचे भले नाचे या प्रकार बड़ाई करतभये १३ कभऊँ वेलके फलन कूं फेंके हैं कभऊँ कुम्भ वृक्षके फलनकूं फेंके हैं कभऊँ आमले मुठीन में लैलैके फेंके हैं कभऊँ छुआ छुई कभऊँ आंखिमिचौनी आदिलेके खेल खेलत भये कभऊँ एक पशुपक्षी वनिके खेलें हैं १४ कभऊँ एक मेंड़काकी तुल्य फुदकें हैं कभऊँ टेढ़ी पाग करिके भाँड़न कीसी नकल करें हैं कभऊँ वृक्ष में झूला डारि के झूले हैं कभऊँ श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी राजा बने हैं ग्वालवालन कों सिपाही बनावें हैं ग्वालिन दही लैके आवे हैं तिनसूं करलेय हैं १५ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी दोनों भय्या संसारमें प्रसिद्ध जो खेलहैं तिनकूंकरिके नदीनमें गोवर्द्धन पर्वतकी गुफान में कुंजन में वनन में सरोवरन में विचरत भये १६ ता वृन्दावन में गोपनकूं संग लैके गऊनकूं चरावें जे श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी हैं तिनकों लैने के कारण प्रलम्बासुर गोपरूप

घरिके आवतभयो १७ दाशार्हवंश में प्रकटभये समस्त बातनके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् मनमें जाने हैं कि यह असुर आयो याहि मारें तथापि वाके न जानिवे के लिये बड़ाई करत भये भलीभई भलीभई मित्र तू अब जल्दी आयगयो १८ खेलके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र ता समय ग्वालबालन कूं बुलायके कहतभये हे ग्वालवालो ! हम बराबरके दोनों मिलिके खेल खेलैंगे १९ ता समय ग्वाल हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी दोनोंन कों मुख्य बनावतभये कोई ग्वाल श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर होतभये और कोई ग्वाल बलदेवजी की ओर होतभये पीठिपै चढ़िवो और चढ़ायके ले चलिवो यह जिनके स्वरूप ऐसे अनेकप्रकार के खेल खेलतभये या खेलमें जे बालक खेल जीतें तो पीठिपै चढ़ै हैं और जे हारे ते चढ़ाय के ले चलै हैं चढ़त चढ़ावत गायनकूं चरावत श्रीकृष्ण जिनमें मुख्य वे ग्वाल भाडीर वनमें जातभये २० । २१ । २२ हे राजन् परीक्षित् ! बलदेवजीकी ओरके श्रीदामा वृषभकूं आदिलैके बालक जा समय खेलमें जीते तब श्रीकृष्णचन्द्रकूं आदिलैके

कृष्णःप्राहविहारवित् ॥ हेगोपाविहरिष्यामोद्वन्द्वीभूययथायथम् १९ तत्रचक्रुःपरिवृढौगोपारामजनार्दनौ ॥ कृष्णसङ्घट्टिनःकेचिदासन्रामस्यचापरे २०
आचेरुर्विविधाःक्रीडावाह्यवाहकलक्षणाः ॥ यत्रारोहन्तिजेतारोवहन्तिचपराजिताः २१ वहन्तोवाह्यमानाश्चचारयन्तश्चगोधनम् ॥ भाण्डीरकंनामवटंजग्मुः
कृष्णपुरोगमाः २२ रामसङ्घट्टिनोयर्हिश्रीदामवृषभादयः ॥ क्रीडायांजयिनस्तांस्तानूहुःकृष्णादयोनृप २३ उवाहकृष्णोभगवाञ्छ्रीदामानंपराजितः ॥
वृषभंभद्रसेनस्तुप्रलम्बोरोहिणीसुतम् २४ अविषह्यंमन्यमानःकृष्णंदानवपुङ्गवः ॥ वहन्द्रुततरंप्रागादवरोहणतःपरम् २५ तमुद्वहन्धरणिधरेन्द्रगौरवं
महासुरोविगतरयोनिजंवपुः ॥ सआस्थितःपुरटपरिच्छदोबभौतडिद्द्युमानुडुपतिवाडिवाम्बुदः २६ निरीक्ष्यतद्वपुरलमम्बरेचरत्प्रदीप्तदृग्भ्रुकुटितटोग्रदंष्ट्रकम् ॥ ज्वलच्छिखंकटककिरीटकुण्डलत्विषाऽद्भुतंहलधरईषदत्रसत् २७ अथागतस्मृतिरभयोरिपुंबलोविहायसाऽर्थमिवहरन्तमात्मनः ॥ रुषाऽहनच्छिरसिदृढ

जे बालक ते पीठिपै चढ़ायके चलतभये २३ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जब हारे तब श्रीदामा गोपकूं ऊपर अपने चढ़ायके चलतभये भद्रसेन ग्वाल वृषभकों चढ़ावतभयो प्रलम्बासुर रोहिणीपुत्र बलदेवजी कूं चढ़ावत भयो २४ दानवनमें श्रेष्ठ प्रलम्बासुर है सो श्रीकृष्णचन्द्र कू जोरावर मानिके बलदेवजीकूं पीठिपै चढ़ाय के शीघ्रता ते दौरिके उतरिवे को करारहो तहा ते आगे जातभयो २५ महाअसुर पर्वत के समान भारी बलदेवजी तिनकों पीठ पै चढ़ायके भज्यो तासू बल जाको थकिगयो तब अपने असुररूप को धरिके सुवर्णके गहने पहिरे सुन्दर लगतभयो चन्द्रमासहित जैसे मेघ सुन्दर लगैहै इहां चन्द्रमा समान बलदेवजीहैं और मेघ समान असुरहै बिजुरी सदृश वाके गहनेंहैं २६ आकाशपर्यन्त प्रकाशमान ऊंचे जाके नेत्र भौंहन सूं लगी भयानक जाकी दाढ़ैं हैं लाल ताम्रवर्ण जाके बारहैं कड़ा कुण्डल मुकुट की शोभाहै तासूं अद्भुत असुरको रूप देखिके हलके धारण करनवारे बलदेवजी यह कैसो गोप ऐसे कछु मनमें डरपतभये २७ पहिले तो किंचित् भय मानों ता पीछे सुधि आय गई कि यह तो असुर है भय जिनको दूरि होयगयो ऐसे बलदेवजी अपने गोपन ते छुड़ाय के आपकू ले जाय जोरावरी असुर है ताके मूडमें क्रोध करिके जोरते मुक्का मा

रतभये जैसे देवतान में मुख्य इन्द्र वज्रते पर्वत को मारैंहैं २८ मुक्काके लगे ते तुरत जाको माथो फटिगयो सुधि जाकी जातरही ऐसो प्रलम्बासुर बड़ो शब्द करत इन्द्र के वज्रके मारे पहाड़ गिरै है तैसे मरिके गिरतभयो २९ बड़े बलवान् बलदेवजी ने मारो जो प्रलम्बासुर है ताकूं देखिके ग्वालबालन ने बड़ो आश्चर्य्य मानो भली करी २ ऐसे कहत भये ३० चिरञ्जीवरहो ऐसे बलदेवजी कों आशीर्वाद देत भये प्रशंसा के योग्य जो बलदेवजी हैं तिनकी प्रशंसा करतभये और जैसे कोई मरिके बगद आवे है ऐसे बलदेवजी सों मिलिके प्रेम विह्वल जिनकेमन होतभये ३१ पापी प्रलम्बासुर मरो तब देवतान के बड़ो आनन्द होत भयो बलदेवजी के ऊपर फूलन की वर्षा करत भलीकरी २ ऐसे स्तुति करत भये ३२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धे प्रलम्बवधोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

ढेनमुष्टिना सुराधिपोगिरिमिववज्ररंहसा २८ सआहतःसपदिविशीर्णमस्तकोमुखाद्वमन्रुधिरमपस्मृतोऽसुरः॥ महारवंव्यसुरपतत्समीरयन् गिरिर्यथा मघवतआयुधाहतः २९ दृष्ट्वाप्रलम्बंनिहतं बलेनबलशालिना ॥ गोपाःसुविस्मिताआसन् साधुसाध्वितिवादिनः ३० आशिषोऽभिगृणन्तस्तं प्रशशंसुस्तदर्हणम् ॥ प्रेत्यागतमिवालिङ्ग्य प्रेमविह्वलचेतसः ३१ पापेप्रलम्बेनिहतेदेवाःपरमनिर्वृताः ॥ अभ्यवर्षन्बलंमाल्यैः शशंसुःसाधुसाध्विति ३२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेप्रलम्बवधोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ क्रीडासक्तेषुगोपेषु तद्गावोदूरचारिणीः ॥ स्वैरंचरन्त्योविविशुस्तृणलोभेनगह्वरम् १ अजागावोमहिष्यश्च निर्विशन्त्योवनाद्वनम् ॥ इषीकाटवींनिर्विविशुः क्रन्दन्त्योदावतर्षिताः २ तेऽपश्यन्तःपशून्गोपाः कृष्णरामादयस्तदा ॥ जातानुतापानविदुर्विचिन्वन्तोगवांगतिम् ३ तृणैस्तत्खुरदच्छिन्नैर्गोष्पदैरङ्कितैर्गवाम् ॥ मार्गमन्वगमन्सर्वेनष्टाजीव्याविचेतसः ४ मुञ्जाटव्यांभ्रष्टमार्गं क्रन्दमानंस्वगोधनम् ॥ संप्राप्यतृषिताःश्रान्तास्ततस्तेसंन्यवर्त्तयन् ५ ताआहूताभगवता मेघगम्भीरयागिरा ॥ स्वनाम्नांनिनदंश्रुत्वा प्रतिनेदुःप्रहर्षिताः ६ ततःसमन्ताद्वनधूमकेतुर्यदृच्छयाऽभूत्क्षयकृद्

(वनविशेनिविष्टन्तु गोपगोकुलमच्युतः ॥ मुञ्जारण्यामरण्याग्ने ररक्षतन्निपानतः १ उन्नीसयें अध्याय में कृष्णजी मुंजवनमें प्रवेश कियेहुए गोपों और गौवों के समूहों को वनकी अग्निपानकर उस अग्निसे रक्षा करते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहै है कि हे राजन् परीक्षित्! ग्वालबाल समस्त खेलमें आसक्त भये तब उनकी गौ दूरि अपनी इच्छा सों चरत २ सघन वन में जातभई १ ओ-सरें गऊ भैंसि हैं ते एक वनमें बसिके दूसरे वनमें धसिके मूंजको वनहै तामें धसत भई दाव जो लागी है तासूं प्यासी रम्हाय हैं ता समय श्रीकृष्ण राम सूं आदिलेके ग्वाल हैं ते गऊन के देखे विना व्याकुल होयके ढूंढन लगे कहां गऊ चली गई यह न जानत भये २। ३ जीविका के साधन जिनके गये याही ते चित्त स्थिर नहीं ऐसे ग्वालबाल गौवनके खुरन ते दातन ते काटे जो घास है तिनको और खुरन के खोजनको देखत २ जहां होय के गऊ गईहीं तहां आवतभये ४ मूंजके वन में धसिगयो रस्ता जाको रुकिगयो दु खित शब्द करत जो गऊनको समूह ताकूं देखिके प्यास

जिनको लगी ढूंढिवे को खेद जिनको भयो वे व्रजवासी उलटेही वगदत भये ५ मेघ कीसी जाकी गर्जन ऐसी वाणी सूं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने बुलाई जे गऊहैं ते अपनेर नामकूं श्रवण करिके हर्षित होयके रम्हात भई यामें यह जतावें हे तुम्हारी बोली तो सुनी है परन्तु मार्ग में अग्नि जो लगिरही है तासूं आय नहीं सके हैं ६ ता पीछे वनमें धूम है ध्वजा जाको ऐसो बड़ो अग्नि अनायास वनवासी जीवन कू जरायवे के लिये लगत भयो और पवन जो चली तासों भभक गयो ७ सुलगती जे लकड़िया हैं तिनसूं वृत्तनकू प्राणीन कूं जरावे है गोप गऊ चारों ओर ते लगी जो अग्निहै ताकूं देखिकै भयभीत होय बलदेवजी सहित जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी शरण आयके बोलतभये जैसे मृत्युके भयते व्याकुल होयके प्राणी हरिको शरण लेइहै ८ हे कृष्ण २ ! बडे पराक्रमी नहीं प्रमाण करिवे में आवै है पराक्रम जाको ऐसे हे राम ! वनकी अग्नि हमको जरावै है तुम्हारी शरण आये हैं हमारी रक्षाकरो ९ हे कृष्ण ! हे समस्त धर्मन के जाननवारे !

नौकसाम् ॥ समीरितःसारथिनोल्बणोल्मुकैर्विलेलिहानःस्थिरजङ्गमान्महान् ७ तमापतन्तंपरितोदवाग्निं गोपाश्चगावःप्रसमीक्ष्यभीताः ॥ ऊचुश्चकृष्णंसबलंप्रपन्ना यथाहरिंमृत्युभयार्दिताजनाः ८ कृष्णकृष्णमहावीर्य हेरामामितविक्रम ॥ दावाग्निनादह्यमानान् प्रपन्नांस्त्रातुमर्हथः ९ नूनंत्वद्बान्धवाः कृष्ण नचार्हन्त्यवसीदितुम् ॥ वयंहिसर्वधर्मज्ञ त्वन्नाथास्त्वत्परायणाः १० श्रीशुकउवाच ॥ वचोनिशम्यकृपणं बन्धूनांभगवान्हरिः ॥ निमीलयतमाभैष्ट लोचनानीत्यभाषत ११ तथेतिमीलिताक्षेषु भगवानग्निमुल्बणम् ॥ पीत्वामुखेनतान्कृच्छ्राद्योगाधीशोऽमोचयत् १२ ततश्चतेऽक्षीण्युन्मील्य पुनर्भाण्डीरमापिताः ॥ निशाम्यविस्मिताआसन्नात्मानंगाश्चमोचिताः १३ कृष्णस्ययोगवीर्यन्तद्योगमायानुभावितम् ॥ दावाग्नेरात्मनःक्षेमं वीक्ष्यतेमेनिरेऽमरम् १४ गाःसन्निवर्त्यसायाह्नेसहरामोजनार्दनः ॥ वेणुंविरणयन्गोष्ठमगाद्गोपैरभिष्टुतः १५ गोपीनांपरमानन्दआसीद्गोविन्ददर्शने ॥ क्षणंयुगशतमिवयासांयेनविनाऽभवत् १६ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेदावाग्निपानंनामैकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥ ❀ ॥

हम तेरे मित्र कष्ट पायवे योग्य नहीं हैं निश्चय करिके तुमहीं हमारे नाथहो तुम्हारोही हमको आसरो है १० अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं सबके दुःखनके हरनवारे भगवान् मित्रनको दीनवचन सुनिके कहतभये भय मतिकरो नेन अपने अपने मूँदिलेउ ११ ता प्रकार सब गोपनके नेत्र मुँदवायके योगके ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र भयानक अग्नि कू मुखते पीके मित्रनकूं कष्ट ते छुडावत भये १२ ता पीछे वे गोप नेन खोलें तो फिर भांडीर वनंग लायके बैठार दिये अपनेकूं और गौवन कूं अग्नि ते छूटे देखिके विस्मित होतभये १३ योगमायाते बनायो ऐसो अग्नि ते छूटिवो रूप जो श्रीकृष्णचन्द्रको प्रभावहै ताकूं देखिके कृष्ण हमसे मनुष्य नहीं हैं देवता हैं ऐसे सब गोप मानतभये १४ बलदेवजी सहित श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्यासमय वन ते गौवनको लेके बांसुरी बजावत गोप जिनकी स्तुतिकरें ऐसे व्रजमें आवतभये १५ कृष्णचन्द्र के दर्शनकरे ते गोपीनकों परमआनन्द होतभयो दर्शन विना एकक्षण सौयुगकी बराबर वीतत भयो १६ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेदावाग्निपानंनामैकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(विशेप्राट्शरच्छोभावर्णनेनवनोचिताः ॥ प्राट्क्रीडानिरूप्यन्तेगोपरामयुजोहरेः १ हेयोपादेयमानेनप्राट्शरदृतुश्रियोः ॥ वर्णनेत्वद्भुतैश्वर्यकृष्णलीलाविवक्षया २ वीसयें अध्यायमें वर्षाऋतु और शरदृऋतुकी शोभा वर्णन से गोप और बलदेवजीसंयुक्त कृष्णजीकी वनके उचित वर्षाकी क्रीड़ा निरूपणहैं १ त्यागने और ग्रहण करने के योग्य मानसे वर्षा और शरदृऋतु की शोभा वर्णन में कृष्णलीला कहने की इच्छा से अद्भुत ऐश्वर्य वर्णित है २) अग्नि ते अपने को छुड़ायो यह जो श्रीकृष्ण बलराम को अद्भुतकर्म्म है ताय गोप स्त्रीन ते कहत भये प्रलम्बासुरको वध ताय भी कहत भये १ बृद्धबृद्ध गोप गोपी यह बात सुनि के विस्मय मानि के ब्रज में आये जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिन्हें मुख्य देवता मानत भये २ गरमी की ऋतु के पीछे वर्षाऋतु आवत भई ता वर्षा ऋतु में कितनेहू जीव उत्पन्न होय हैं और कितनेहू जीव नष्ट होय हैं और कितनेहूं जीवन की जीविका होयहै सूर्य्य चन्द्रमा के मण्डल प्रकाशित होय हैं आकाश में क्षोभ होय है ऐसी वर्षा ऋतु प्राप्त भई ३ विजुली जिनमें चमक के गर्जन जिन में होय ऐसे सघन नीले वादर हैं सूर्य्य चन्द्रमा तारागणन को प्रकाश जामें ढकि रह्यो ऐसो आकाश वर्षाऋतु में सुन्दर लगत भयो

श्रीशुकउवाच ॥ तयोस्तदद्भुतंकर्म दावाग्नेर्मोक्षमात्मनः ॥ गोपाःस्त्रीभ्यःसमाचख्युः प्रलम्बवधमेवच १ गोपवृद्धाश्चगोप्यश्च तदुपाकर्ण्यविस्मिताः ॥ मेनिरेदेवप्रवरौ कृष्णरामौव्रजंगतौ २ ततःप्रावर्त्तत्प्राट् सर्वसत्त्वसमुद्भवा ॥ विद्योतमानपरि धिर्विस्फूर्जितनभस्तला ३ सान्द्रनीलाम्बुदैर्व्योमसविद्यु त्स्तनयित्नुभिः ॥ अस्पष्टज्योतिराच्छन्नं ब्रह्मेवसगुणंबभौ ४ अष्टौमासान्निपीतंयद्भूम्याश्चोदमयंवसु ॥ स्वगोभिर्मोक्तुमारेभे पर्जन्यःकालआगते ५ तडित्वन्तोमहामेघाश्चण्डश्वसनवेपिताः ॥ प्रीणनंजीवनंह्यस्य मुमुचुःकरुणाइव ६ तपःकृशादेवमीढा आसीद्वर्षीयसीमही ॥ यथैवकाम्यतपसस्तनुः सम्प्राप्यतत्फलम् ७ निशामुखेषुखद्योतास्तमसाभान्तिनग्रहाः ॥ यथापापेनपाखण्डा नहिवेदाःकलौयुगे ८ श्रुत्वापर्जन्यनिनदं मण्डूकाव्यसृज

जैसे सतोगुण रजोगुण तमोगुण सूं ढक्यो जीव ऐसे सुन्दर लगै है विजुली गर्जन वादरन कू सतोगुण रजोगुण तमोगुण की उपमा है यह त्यागिवे योग्य दृष्टान्त है जीव को ऐसी नहीं चाहिये जो गुणन करि आवृत होइ जाय ४ आठ महीनापर्य्यन्त सूर्य्य ने अपनी किरणन करि पृथ्वी को जल रूप द्रव्य सोको है ताय वर्षाऋतु आई तब वर्षायवे को प्रारम्भ करत भयो या श्लोक में राजा की उपमा जताई जो अपनी प्रजा सूं सुकाल में कर लेइ है और अकाल में उनको अन्न देकै पालन करै यह ग्रहण करिवे योग्य दृष्टान्त है राजा कूं ऐसोही उचित है ५ बड़ी पवन ने चलायमान किये विजुली जिनमें चमके ऐसे बड़े मेघ या विश्वकों पुष्ट करनवारे जीवन जल को वर्षावतभये जैसे करुणायुक्त पुरुष दुःखीन कों देखि के वाके ऊपर कृपा करिके ताके सुख के लिये अपने प्राणतक देइ हैं तैसे बड़े मेघ अपनी विजुली रूप नेत्रन तें सन्तप्त विश्व को देखिके पवनसूं चलायमान होय के जल कूं वर्षावै हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है महान् पुरुषन को ऐसाही चाहिये ६ गरमी की धूप सों सूख गई इन्द्र ने वर्षा करि सींची ऐसी पृथ्वी वर्षाऋतु में फूलत भई यह वर्षाऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे कोई पुरुष पुत्र की अथवा धनकी इच्छा करिके तप करैहै तब वाको देह सूख जाय है तप को फल मिले पीछे फिरि देह जैसे पुष्ट होय है यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुष को ऐसो उचित नहीं है जो सकाम तप करै ७ वर्षाऋतु में सन्ध्यासमय पटवीजना

प्रकाश करे हैं तारागण नहीं प्रकाश करे हैं यामें दृष्टान्त देइ हैं जैसे कलियुग में पाप सू पाखण्ड मार्ग चले है वेदमार्ग अस्त होय है यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुपन कूं ऐसो उचित नहीं है जो पाखण्डमार्ग में प्रवृत्त होय ८ वर्षाऋतु में मेघकी गर्जन सुनि के मेढ़क बोलत भये यामें दृष्टान्त है जैसे विद्यार्थी पहिले, चुप बैठ रहे हैं गुरु जब सन्ध्योपासन कर चुके हैं तब पाठ लैके पढ़े हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है विद्यार्थी को यही उचित है गुरु जब बुलावें तब पाठ लेय ९ जल शीघ्र सूखजाय ऐसी क्षुद्रनदी जब वर्षाऋतुमें जल वर्षे है तब मर्याद छोड़ २ के उमड २ के बहत भई— जैसे इन्द्रियन के वशते पुरुषके देह द्रव्य सम्पत्ति खोटे मार्गमें लगे हैं यह त्याज्य दृष्टान्त है ऐसो न चाहिये जो कुमार्ग में लगावें १० वर्षाऋतु में हरे २ घास जा में उत्पन्न भये लाल लाल वीरबहूटी डोलें छतोना फूलि आये ऐसी पृथ्वी शोभित होत भई यह तो वर्षाऋतु वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे राजानकी सेना डेरा तम्बूनसूं हरे लाल बनाती बिछोनान सूं सुन्दरलगै हैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है राजान कूं ऐसोही चाहिये जो बनाती बिछोना बिछावें फटे टूटे न राखें ११ वर्षाऋतु में हरे २ अन्न जो उपजे हैं तिनकूं देखिके खेतवारेन कूं आनन्द होतहै दैवकी बातकूं नहीं

नृगिरः ॥ तूष्णींशयानाःप्राग्यद्वद्ब्राह्मणानियमात्यये ९ आसन्नुत्पथवाहिन्यः क्षुद्रनद्योऽनुशुष्यतीः ॥ पुंसोयथास्वतन्त्रस्य देहद्रविणसम्पदः १० हरिता हरिभिःशष्पैरिन्द्रगोपैश्चलोहिता ॥ उच्छिलीन्ध्रकृतच्छाया नृणांश्रीरिवभूरभूत् ११ क्षेत्राणिसस्यसम्पद्भिः कर्षकाणांमुदन्ददुः ॥ धनिनामुपतापञ्च दैवा धीनमजानताम् १२ जलस्थलौकसःसर्वे नववारिनिषेवया ॥ अबिभ्रद्रुचिरंरूपं यथाहरिनिषेवया १३ सरिद्भिःसंगतःसिन्धुश्चुक्षुभेश्वसनोर्मिमान् ॥ अपक्व योगिनश्चित्तं कामाक्तंगुणयुग्यथा१४ गिरयोवर्षधाराभिर्हन्यमानानविव्यथुः ॥ अभिभूयमानाव्यसनैर्यथाऽधोक्षजचेतसः १५ मार्गाबभूवुःसन्दिग्धास्तृणै श्छन्नाह्यसंस्कृताः॥ नाभ्यस्यमानाःश्रुतयोद्विजैःकालहताइव १६ लोकबन्धुपुमेघेषु विद्युतश्चलसौहृदाः ॥ स्थैर्यंनचक्रुःकामिन्यः पुरुषेपुगुणिष्विव १७ धनु

जानिकर जिन मनुष्यन ने अन्नकी भरती करी तिनकूं दुःख होतभयो—हम तो यह जानीही कि एक के दो करेंगे पर यहां तो आधी जमा रहिगई यह त्याज्य दृष्टान्त है ऐसो व्यवहार करनो न चाहिये जामें सबको बुरो विचारवो आवै १२ समस्त प्राणीन के वर्षाऋतुके नये जलको सेवन है तासूं सुन्दर रूप होत भये यह तो वर्षाऋतुको वर्णन है जैसे हरि भगवान् को सेवन करे ते सुन्दर रूप होय जायहैं यह ग्राह्य दृष्टान्त है मनुष्य कों ऐसेही उचित है १३ वर्षाऋतु में नदी जो आयके मिलीं पवन चले तासूं लहर जामें उठें ऐसे समुद्रको जल चलायमान होत भयो यह तो वर्षाऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे विषयी मनुष्यको चित्त विषयन में चलायमान होयहै यह त्याज्य दृष्टान्त है योगीन को ऐसो न चाहिये जो विषयनते चलायमान होय १४ वर्षाऋतु में पर्वतन के ऊपर मेघ वर्षे तासूं यत्किञ्चित्हू उनको खेद नहीं होयहै धुइ२के उनकी शिला स्वच्छ होयजायें है यह तो वर्षाऋतु को वर्णन यामें दृष्टान्तहै जैसे जिन पुरुषन के चित्त भगवान्में लगे हैं उनके ऊपर कैसोहू कष्ट आवे अर्थात् पुत्र मरिजाय धननष्ट होय जाय यामें कष्ट नहीं माने हैं यह ग्राह्य दृष्टान्तहै दुःख में मनुष्य व्याकुल न होयजाय १५ वर्षाऋतु में तृण जो बढ़े तासों मार्ग ढकिगये सन्दिग्ध होयगये अर्थात् या ग्रामको कौन मार्ग है यह जानिबे में नहीं आवै यह वर्षाऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे ब्राह्मण एक बेर वेद पढ़िके पोथी बाँधिके धरिदेइ हैं फिरि बहुत दिन में खोलिके

देखें तब उनको सन्देह होय है या श्रुतिको अर्थ कैसे है यह त्याज्य दृष्टान्त है ब्राह्मणन को ऐसो उचित नहीं है जो बहुत दिनमें पोथी खोलैं किन्तु खोलिके देखो करें १६ लोकनके हितकारी मेघ हैं तिनमें चलायमान बिजुरी स्थिरता न करत भई कभऊँ काहू बादरमें जाय चमके है कभऊँ काहू बादरमें जाय चमके है यह वर्षाऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे विवेकी पुरुषनमें व्यभिचारिणी स्त्री स्थिर नहीं रहै यह ग्राह्य दृष्टान्त है जो व्यभिचारिणी स्त्रीन को विश्वास न करें १७ वर्षाऋतुमें गर्जनको शब्द जामें भयो करे ऐसे आकाशमें प्रत्यंचा रोदा विना इन्द्रको धनुष शोभाको प्राप्त होतभयो यह वर्षाऋतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्त है गुणनको बनो जो संसार तामें निर्गुण पुरुष जैसे सुन्दर लगै है १८ वर्षाऋतुमें अपनी चादनी सूं प्रकाशमान जे बादरहैं तिनसूं आच्छन्न होयके चन्द्रमा सुन्दर नहीं लगै हैं यह तो वर्षाऋतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त हैं जैसे मैं पण्डितहूं दाताहूं सर्वज्ञहूं शूरवीरहूं ऐसो जो अभिमान मानै है तासूं पुरुष सुन्दर नहीं लगै है यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुषको ऐसो उचित नहीं है १९ वर्षाऋतुमें मेघनके आयवेको जो आनन्द है तासूं हर्षित होयके मोर शब्द करतभये यह तो वर्षाऋतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्त है घरनमें खेद जिनकों रह्योआवै याही

वियतिमाहेन्द्रंनिर्गुणञ्चगुणिन्यभात् ॥ व्यक्तेगुणव्यतिकरेऽगुणवान्पुरुषोयथा १८ नरराजोडुपश्छन्नः स्वज्योत्स्नाराजितैर्घनैः ॥ अहंमत्याभासितयास्वभासापुरुषोयथा १९ मेघागमोत्सवाहृष्टाः प्रत्यनन्दञ्छिखण्डिनः ॥ गृहेषुतप्तानिर्विण्णा यथाऽच्युतजनागमे २० पीत्वाऽपःपादपाःपद्भिरासन्नानात्ममूर्तयः ॥ प्राक्क्षामास्तपसाश्रान्तायथाकामानुसेवया २१ सरस्स्वशान्तरोधस्सुन्यूषुरङ्गापिसारसाः ॥ गृहेष्वशान्तकृत्येषु ग्राम्याइवदुराशयाः २२ जलौघैर्निरभिद्यन्त सेतवोवर्षतीश्वरे ॥ पाखण्डिनामसद्वादैर्वेदमार्गाःकलौयथा २३ व्यमुञ्चन्वायुभिर्नुन्नाभूतेभ्योऽथामृतंघनाः ॥ यथाऽऽशिषोविश्पतयः कालेकालेद्विजेरिताः २४ एवंवनन्तद्वर्षिष्ठं पक्वखर्जूरजम्बुमत् ॥ गोगोपालैर्वृतोरन्तुंसबलःप्राविशद्धरिः २५ धेनवोमन्दगामिन्य ऊधोभारेणभूयसा ॥ ययुर्भगव

ते वैराग्यवान् को चित्त ऐसे पुरुष साधुन के आये ते हर्षित होय है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै गृहस्थीनकूं यही चाहिये जो अपने यहां साधु सज्जन आवें तो यह न कहैं कि हमहीं भूखे मरे हैं याकूं कहां ते लावैं २० वर्षाऋतु में वृक्ष अपनी जड़नसूं जलपीके हरे हरे लाल लाल पत्तान करि शोभित भये यह वर्षाऋतुको वर्णन हैं यामें दृष्टान्त है तपके करेतें मनुष्यन के प्रथम देह दुर्बल होय जाइहै जब फिरि पुष्टिकारक भोजन मिले ते पुष्ट होयके लाल होयजाय हैं यह त्याज्य दृष्टान्त है मनुष्य खाने पीने के लिये तप न करें २१ वर्षाऋतु में काटे कीच जिनके किनारे पर रहे आवें ऐसे सरोवरनमें चकवा चकवी वास करतभये यह वर्षाऋतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है काहूसमय काम निबरैनहीं ऐसे घरन में दुष्ट जिनके चित्त ऐसे विषयीपुरुष वास करै है यह त्याज्य दृष्टान्त है मनुष्यनको ऐसो न चाहिये जो सर्वदा घरमें शिर दिये रहें कछु भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को भी भजन करेजायँ जामें उनको कल्याण होय २२ वर्षाऋतु में इन्द्र वर्षै तब खेतकी मर्यादा टूटि जातभई यह तो वर्षाऋतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्त है पाखण्डीन के शब्द सुनिके जैसे वेदमार्ग दूरि होयजाय है यह त्याज्य दृष्टान्त है मनुष्य पाखण्डीन के शब्द सुनिके वेदमार्ग को त्याग न करै २३ वर्षाऋतु में बादर पवन सूं चलायमान होयके प्राणीन कों अमृत जल वर्षावत भये यह वर्षाऋतुको वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे समय समयमें राजा पुरोहित के कहे ते दान पुण्य करै है यह ग्राह्य दृष्टान्त है पुरो-

हितन कूं ऐसोही चाहिये जो कहिके राजाते दानकराय कर दीनन कूं दिवावें २४ जम्बूफलन की तुल्य खजूर जामें पकी ऐसे श्रेष्ठ वृन्दावन में श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कूं संगलैके और गऊ गोपन कूं संगलैके रमण करिवे को जातभये २५ बडेबडे जो ऐनके बोझ हैं तिनसूं हौलेहौले चलें ऐसी गऊनकूं श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् प्रीति करिके नाम लैके बुलाई तब स्तनन में ते दूध जिनके टपके ऐसी गऊ दौरिदौरिके आवतिभई २६ वननकी रहनवारी जो भीलिनी हैं तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न देखतभये मकरंद जिनमें चुचाय ऐसे वृक्षनकी लतानकूं और गोवर्द्धनपर्वत में ते झरना झरें हैं तिनकूं देखतभये और झरनान के जलके शब्दको सुनतभये निकट जो गुफा है तिनकूं देखतभये २७ कभऊँएक वर्षा होयहै तब श्रीकृष्णचन्द्र वृक्षकी खोतरि में गिरिराज की गुफामें जाय बैठे हैं वन के कन्द मूल फलन के भोजन करिके मित्रन के संग खेलत भये २८ इतने में यशोदाजीकी पठाई ग्वालिनी दही भात लैके आवतभई ताइ जलके समीप शिलाके ऊपर परोसिके भोजन करायबे योग्य जे गोपहैं तिनकू और बलदेवजी कूं सग लैके भोजन करत भये २९ हरी हरी घासन के ऊपर बैठिके नेत्र मीचके रोथें पेट जिनके भरे ऐसे बैल बछरान कूं और अपने ऐन के बोझते जिनके

ताहूता द्रुतंप्रीत्यास्नुतस्तनीः २६ वनौकसःप्रमुदिता वनराजीर्मधुच्युतः ॥ जलधारागिरेर्नादानासन्नाददृशेगुहाः २७ क्वचिद्वनस्पतिक्रोडे गुहायांना भिवर्षति ॥ निर्विश्यभगवान्रेमे कन्दमूलफलाशनः २८ दध्योदनंसमानीतं शिलायांसलिलान्तिके ॥ सम्भोजनीयैर्बुभुजे गोपैःसङ्कर्षणान्वितः २९ शाद्वलोपरिसंविश्य चर्वतोमीलितेक्षणान् ॥ तृप्तान्वृषान्वत्सतरान् गाश्चस्वोधोभरश्रमाः ३० प्रावृट्श्रियंचतांवीक्ष्य सर्वभूतमुदावहाम् ॥ भगवान्पू जयाञ्चक्र आत्मशक्त्युपबृंहिताम् ३१ एवंनिवसतोस्तस्मिन्रामकेशवयोर्व्रजे ॥ शरत्समभवद्व्यभ्रा स्वच्छाम्ब्वपरुषानिला ३२ शरदानीरजोत्पत्त्या नीराणिप्रकृतिंययुः ॥ भ्रष्टानामिवचेतांसि पुनर्योगनिषेवया ३३ व्योम्नोऽब्दंभूतशाबल्यं भुवःपङ्कमपांमलम् ॥ शरज्जहाराश्रमिणां कृष्णेभक्तिर्यथाऽशु

भ्रम ऐसी गौवनकूं देखिके ३० सब प्राणीन कूं आनन्द की देनवारी वर्षाऋतुकी शोभाहै ताकूं देखिके अपनी शक्ति ते बढ़ी ऐसी वर्षाऋतुकों देखिके श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् प्रशसा करतभये या वृन्दावन में कैसी वर्षाऋतु सुन्दरलगे है ३१ या प्रकार व्रजमें श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी वास करतसन्ते बादर जामें दूरि होयगये निर्मल जामें जल मंद जामें पवन चले ऐसी शरदृऋतु प्राप्तहोतभई ३२ कमल जामें उपजे ऐसी शरदृऋतुमें जल निर्मल होतभये जैसे बिगरे योगीन के चित्त फिरि योग करेते शुद्ध होयजायहैं यह ग्राह्य दृष्टान्तहै योगिन कूं यही चाहिये बिगरे चित्तकों योग करि के सुधारि लेवें ३३ वर्षाऋतुमें आकाशमें बादर गर्जो करे हैं शरदृऋतुमें बादरनकी गर्जन जातरहै है वर्षाऋतु में प्राणी मिलिके एक स्थान में रहैहैं शरदृऋतु में न्यारे न्यारे बिछुरि जायहैं पृथ्वी की कीच शुष्क होइगई जलनको मैल दूरि होयगयो यह तो शरदृऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इन चारों आश्रमीन को भगवान् की भक्ति भये सूं क्लेश जातरहै हैं ब्रह्मचारी गुरुन के लिये जल जबताई भरो करें यावत्पर्यन्त भक्ति उदय नहीं होय भक्ति भये पीछे जल भरिवे को परिश्रम नहीं रहै है गुरुभी जब वाके भक्ति होयजाय है तब वाकों टहलकी आज्ञा नहीं करे हैं ऐसे आकाशकी गर्जन शरदृऋतु में दूरि होयगई गृहस्थी के जबताई भक्ति उदय नहीं होयहै तबताई अपने संतानादिकनमें रहे आवे हैं भक्ति भये पीछे एकान्त

वास करिवे की इच्छा होयहै तब उनको संग छोड़ि देइहैं ताही प्रकार प्राणीनको जो एक वासहै सो छूटत भयो ऐसेही वानप्रस्थ जबताईं भक्ति उदय नहीं होयहै तवताईं देह मलिन राखै हैं भक्ति भये पीछे जैसे वाकी मलिनता दूरि होय जाय है ऐसे पृथ्वी की कीच शुष्क होय जायहै और जैसे संन्यासीन कों कामवासनारूप मैल श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् में भक्ति भये ते दूरि होय है ऐसे शरदृतु में जलको मैल दूरि होतभयो या प्रकार शरदृतुको वर्णन है ३४ वादर में ते जलकी वर्षा होयचुकी तब शरदृतु में श्वेतश्वेत रुईकेसे पहल सुन्दर लगतभये यह तो,शरदृतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे द्रव्य पुत्र और लोकवासना जिनकी दूरि होयगई और पापदूरि होयगये शान्त जिनके स्वभाव ऐसे मुनीश्वर सुन्दरलगे हैं यह ग्राह्य दृष्टान्तहै मुनीश्वरन को यही उचित है जो वासनानकूं दूरिकरे ३५ पर्वत कहूं मंगलरूप तोय झरनान सूं वहावे हैं और कहूं नहीं वहावे हैं यह शरदृतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्तहै जैसे ज्ञानीपुरुष समय समय ज्ञानरूप अमृतके पात्र कूं देखिके उपदेश करै हैं सबकूं नहीं करै है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै विवेकीन कूं यही योग्यहै पात्र देखिके उपदेशकरैं सबकूं नहीं करैं ३६ शरदृतु में सरोवरन के थोड़े जलके रहनवारे जीव

भम् ३४ सर्वस्वंजलदाहित्वा विरेजुःशुभ्रवर्चसः ॥ यथात्यक्तैषणाःशान्तामुनयोमुक्तकिल्बिषाः ३५ गिरयोमुमुचुस्तोयं क्वचिन्नमुमुचुःशिवम् ॥ यथा ज्ञानामृतंकाले ज्ञानिनोददतेनवा ३६ नैवाविन्दन्क्षीयमाणं जलंगाधजलेचराः ॥ यथायुरन्वहंक्षय्यं नरामूढाःकुटुम्बिनः ३७ गाधवारिचरास्तापमवि न्दञ्छरदर्कजम् ॥ यथादरिद्रःकृपणः कुटुम्ब्यविजितेन्द्रियः ३८ शनैःशनैर्जहुःपङ्कं स्थलान्यामंचवीरुधः ॥ यथाऽहंममतांधीराः शरीरादिष्वनात्मसु ३९ निश्चलाम्बुरभूत्तूष्णीं समुद्रःशरदागमे ॥ आत्मन्युपरतेसम्यङ्मुनिर्व्युपरतागमः ४० केदारेभ्यस्त्वपोऽगृह्णन् कर्षकादृढसेतुभिः ॥ यथाप्राणैःस्रवज्ज्ञानं तन्निरोधेनयोगिनः ४१ शरदर्कांशुजांस्तापान् भूतानामुडुपोऽहरत् ॥ देहाभिमानजंबोधो मुकुन्दोव्रजयोषिताम् ४२ खमशोभतनिर्मेघं शरद्विमल

नित्य नित्य जो जल घटतजाय है ताकूं नहीं जानतभये यह तो शरदृतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे अज्ञानी कुटुम्बी पुरुष घरनमें रहिके नित्य नित्य जो आयुर्बल घटै है ताकूं नहीं जाने हैं यह त्याज्य दृष्टान्त है पुरुषकों ऐसी भूल न चाहिये जो आयुर्बल की खबरि न राखे ३७ शरदृतु में थोड़े जलके रहनवारे जीव सूर्यके तेजते जल गरम होयजायहै तासूं क्लेशित होतभये यह शरदृतु को वर्णन है जैसे कुटुम्बी पुरुष इन्द्रियन के नहीं जीतने सूं दरिद्री कृपण घर में रहिके क्लेश कूं पावै है यह त्याज्य दृष्टान्तहै जो घरमें क्लेशहोय तो निकसिजाय ३८ शरदृतु में स्थलनकी हौले हौले कीच शुष्क होतभई लतानकी कचाई जातरही यह तो शरदृतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे मिथ्या देह गेह में विवेकीपुरुष मायाकृत अहन्ता ममता कू त्यागि देइहै यह ग्राह्य दृष्टान्तहै विवेकीन कू यही उचितहै जो अभिमान कूं त्यागैं ३९ शरदृतु जब आई तब समुद्र को जल निर्मल भयो यहतो शरदृतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे आत्मज्ञान भये पीछे मुनीश्वरनको पढ़िवो लिखिवो छूटिजाय है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै आत्माके जाने,पीछे पढ़िवे गुनिवे सूं कहा कामहै ४० शरदृतु में खेतवारे मनुष्य खेतकी जबर जबर मैंड़ बाधिके जल कूं रोकतभये यह शरदृतु को वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे योगिराज इन्द्रियन की रस्ता ज्ञानकू रोक्यो करै हैं इन्द्रियन कूं रोकिके रोको करै है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै योगीन कूं यही उचित है ज्ञान कूं निकसन न देंय

इन्द्रियन कूं रोकिके राखें ४१ शरदृऋतु में सूर्य्य की किरणन सूं गरमी जो होय है ताकूं रात्रिसमय चन्द्रमा उदय होयके हरत भयो यह शरदृऋतुको वर्णन है यामें दृष्टान्तहै जैसे ज्ञानभये पीछे देह को अभिमानरूप जो ताप है सो दूरि होय है और जैसे व्रजकी स्त्रीनके ताप मुकुन्द भगवान् दूरि करे हैं ४२ शरदृऋतुमें मेघ दूरि होयगये आकाश निर्मल होयगयो तारागण जामें निकसे ऐसो आकाश शोभाकूं प्राप्त होत भयो यह शरदृऋतुको वर्णनहै यामें दृष्टान्तहै जैसे वेदके अर्थको दिखावे ऐसो सत्त्वगुणीचित्त सुन्दर लगे है यह ग्राह्य दृष्टान्तहै चित्त वही सुन्दर है जामें वेदके अर्थ को ज्ञान होय ४३ शरदृऋतुमें समस्त जाको मण्डल ऐसो चन्द्रमा आकाशमें तारागणन सहित सुन्दर लगत भयो यह शरदृऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे पृथ्वी में यादवन के पति श्रीकृष्णचन्द्र यादवन सहित सुन्दर लगे हैं ४४ शरदृऋतु में जाड़ो गरमी भी नहीं सतावे हैं और पुष्पन को स्पर्श करिके जो पवन चले है ताके स्पर्श ते मनुष्य ताप को त्यागत भये यह शरदृऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे गोपी श्रीकृष्ण कूं आलिंगन करिके ताप कूं त्यागत भई यह ग्राह्य दृष्टान्तहै मनुष्यको यही उचित है भगवान् को स्पर्श करिके संसारिक तापन कों त्यागे ४५ शरदृऋतु

तारकम् ॥ सत्त्वयुक्तंयथाचित्तं शब्दब्रह्मार्थदर्शनम् ४३ अखण्डमण्डलोव्योम्नि रराजोडुगणैःशशी ॥ यथायदुपतिःकृष्णो वृष्णिचक्रावृतोभुवि ४४ आश्लिष्यसमशीतोष्णं प्रसूनवनमारुतम् ॥ जनास्तापंजहुर्गोप्यो नकृष्णहृतचेतसः ४५ गावोमृगाःखगानार्यःपुष्पिण्यःशरदाऽभवन् ॥ अन्वीयमानाःस्ववृषैःफलैरीशक्रियाइव ४६ उदहृष्यन्वारिजानिसूर्योत्थानेकुमुद्विना ॥ राज्ञातुनिर्भयालोका यथादस्यून्विनानृप ४७ पुरग्रामेष्वाग्रयणै रैन्द्रियैश्चमहोत्सवैः ॥ बभौभूःपक्वसस्याढ्या कलाभ्यांनितरांहरेः ४८ वणिङ्मुनिनृपस्नाता निर्गम्यार्थान्प्रपेदिरे ॥ वर्षरुद्धायथासिद्धाः स्वपिण्डान्कालआगते ४९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेशरद्वर्णनंनामविंशतितमोऽध्यायः २० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

में गऊ हरिणी पक्षिणी स्त्री पुष्पवती होत भई इनके पति इनके पीछे लागे डोलै हैं यह शरदृऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है जैसे ईश्वर की प्रसन्नताके लिये पुरुष योग यज्ञ तप करे हैं तिनके पीछे फल लग्यो डोलै है ४६ शरदृऋतु में कुमोदनी विना सरोवरन में कमल फूलतभये यह शरदृऋतु को वर्णन है यामें दृष्टान्त है हे राजन् परीक्षित्! जैसे चोरन विना लोक निर्भय होय के आनन्द पावे हैं ४७ शरदृऋतु में पुर ग्राम में नवीन अन्न के भोजन के जे वैदिक उत्सवहैं और इन्द्रियन के पुष्ट करिवे के जे विवाहादिक लौकिक उत्सव है तिनसूं और अन्न जामें पके हरि भगवान् के अंश कलारूप श्रीवलदेव कृष्णचन्द्रजी क्रीड़ाकरे है ऐसी पृथ्वी अतिसुन्दर लगति भई ४८ वर्षाऋतु के रुके जैसे वनिया मुनीश्वर राजा ब्रह्मचारी शरदृऋतु में अपने अपने कर्म्मन में लगत भये वनियाँ अपने व्यापार कूं गये संन्यासी विचरिवेकूं गये राजा विजय करिवे कू गये ब्रह्मचारी विद्या पढ़िवे कूं गये मित्र योगादिकन सूं सिद्ध होय जाये तें जब ताईं आयुर्बल रहे तब ताईं रहे आवे है पीछे जब समय आवै तब योगादिकनके अनुसार जे देवतानके देह हैं तिनकूं जैसे पावे हैं ४९ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेशरद्वर्णनंनामविंशतितमोऽध्यायः २० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(एकविंशेशरद्रम्यवृन्दावनगतेहरौ ॥ तद्वेणुस्वनमाकर्ण्यगोपीभिर्गीतमीर्यते १ इकीसवें अध्याय में शरद्ऋतु में सुन्दर वृन्दावन में प्राप्तहुये कृष्णचन्द्रजी ने वंशी बजाई तब तिसका शब्द सुनकर गोपियों ने गीत गाये हैं १) शरद्ऋतु में निर्मल भये और कमलन की सुगन्धियुक्त पवन चले ऐसो जो वृन्दावन है तामें गौ ग्वालन कूं संग लैके श्रीकृष्णचन्द्र जात भये १ फूली जो वन की पंक्ती तिनकी सुगन्धि ते मतवारे भौंरा पत्तीन के समूहन की वोली सूं सरोवर नदी पर्व्वत गूंजे ऐसे वृन्दावन में ग्वालबाल बलदेव जी सहित श्रीकृष्णचन्द्र गऊन को चरावत बाँसुरी बजावत भये २ प्रमादात्मक काम को जामें उदय होय ऐसो वंशी को शब्द श्रवण करिके कई एक व्रज की स्त्री कृष्णचन्द्र के पीछे अपनी सखीन के आगे कहत भई ३ जा समय कछु कहन को प्रारम्भ करो ता समय कृष्णचन्द्र के रूपको स्मरण होय आयो तासूं कामदेव के वेगसूं मन जिनके चलायमान होय गये वे व्रजकी स्त्री हे राजन् परीक्षित्! कहिवे कूं समर्थ न होत भई ४

श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंशरत्स्वच्छजलं पद्माकरसुगन्धिना ॥ न्यविशद्वायुनावातं सगोगोपालकोऽच्युतः १ कुसुमितवनराजिशुष्मिभृङ्गद्विजकुलघुष्टसरःसरिन्महीध्रम् ॥ मधुपतिरवगाह्यचारयन्गाः सहपशुपालबलश्चुकूजवेणुम् २ तद्व्रजस्त्रियआश्रुत्य वेणुगीतंस्मरोदयम् ॥ काश्चित्परोक्षंकृष्णस्य स्वसखीभ्योऽन्ववर्णयन् ३ तद्वर्णयितुमारब्धाः स्मरन्त्यःकृष्णचेष्टितम् ॥ नाशकन्स्मरवेगेन विक्षिप्तमनसोनृप ४ बर्हापीडंनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासःकनककपिशं वैजयन्तीञ्चमालाम् ॥ रन्ध्रान्वेणोरधरसुधया पूरयन्गोपवृन्दैर्वृन्दारण्यंस्वपदरमणंप्राविशद्गीतकीर्तिः ५ इतिवेणुरवंराजन् सर्वभूतमनोहरम् ॥ श्रुत्वाव्रजस्त्रियःसर्वावर्णयन्त्योऽभिरेभिरे ६ ॥ गोप्यऊचुः ॥ अक्षण्वतांफलमिदंनपरंविदामःसख्यःपशूननुविवेशयतोर्वयस्यैः ॥ वक्त्रंव्रजेशसुतयोरनुवेणुजुष्टं यैर्वानिपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ७ चूतप्रवालबर्हस्तबकोत्पलाब्जमालाऽनुपृक्तपरिधानविचित्रवेषौ ॥ मध्येविरेजतुरलंपशुपालगोष्ठ्यां रङ्गेयथानटवरौ क्वच गायमानौ ८ गोप्यःकिमाचरदयंकुशलंस्मवेणुर्दामोदराधरसुधामपिगोपिकानाम् ॥ भुङ्क्तेस्वयंयदवशिष्टरसंह्रदिन्यो हृष्यत्त्व

मोरपुच्छ को मुकुट धारण करिके काछनी पहिरि के नट की तुल्य श्रेष्ठ रूप को धारण करिके कानन में कचनार के फूल उरसि के सुवर्ण की तुल्य पीताम्बर को धारण करिके वैजयन्तीमाला को पहिरके बाँसुरी के छेदनकूं अधरामृत सूं पूर्ण करत गोपन के समूह जिनके यशकों गावें वे श्रीकृष्णचन्द्र अपने चरणारविंद के चिह्न सों रमणीक जो वृन्दावन है तामें जात भये ५ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार सब प्राणीन के मनकी हरनवारी बाँसुरी की टेर है ताकूं व्रजकी स्त्री सुनिके आपुस में कहै हैं और कहति कहति परमआनन्दरूप जो कृष्ण हैं तिनको मनसूं आलिंगन करत भई ६ अब गोपी कहै हैं हे सखी! नेत्रवान् पुरुष को यही फल है और फल हम नहीं जाने हैं जो सखा सहित गौवन कूं वन में चरावें जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनको मुखारविन्द जिन पुरुषन ने देखो है तिननेही वही फल सेवन करो है और कहती हैं हे सखी! गौर मुख की तो शोभा हई परन्तु बाँसुरी को बजावें स्नेह भरे कटाक्ष जामें ते निकसे वा सामरे मुख की शोभा देखी चाहिये ७ आमके पात मोरपुच्छ फूलन के गुच्छा उत्पल अब्ज अर्थात् कमलनकी माला तिनसूं लगे भये जो नीलाम्बर पीताम्बर तिनसूं चित्रविचित्र जिनके देह ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव

दोनों भय्या गान करत ग्वालमण्डलीमें बहुत सुन्दर लगत भये जैसे रंगभूमि दो नटन सूं सुन्दरलगे है ८ और गोपीकहे हैं हे गोपियो ! यह वांसुरी कौन पुण्य करत भई जापुण्यके प्रभाव ते हम गोपीन के पीवे योग्य जो अधरामृत है ताको रस आपुही आप इच्छापूर्वक पीवे है जिन सरोवरन के जलते या वाँसुरी को वाँस सींच्यो है उन सरोवरन में कमल नहीं फूले हैं मानों आनन्द सू रोमाश्च होय आवे हैं और जिन वृक्षनके वंश में या वाँसुरी को बाँस भयो है उन वृक्षन के मद नहीं चुवे है मानों आनन्द के आँसू बहे हैं धन्य हमारे कुल को वाँस जाकी वाँसुरी कृष्णचन्द्र के मुख तें लगी है जैसे श्रेष्ठ पुरुष अपने वंशमें पुत्र को भगवान्‌का भक्त देखि के आनन्द मानि के आँसू बहावे हैं ९ गोपी कहे हैं यह वृन्दावन पृथ्वी के यश को बढावे है धन्य वह पृथ्वी है जामें वृन्दावनसदृश धामहै देवकी पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द जो परे हैं तिनसूं अतिशय करिके परमशोभा जाने पाई है और श्रीकृष्णचन्द्र वाँसुरी को बजावे हैं ताकी टेर श्रवण करिके और मन्द जाकी गर्जन ऐसी नीली घटा देखिके मोर मसन्न होय के नाचे हैं तिनको नाच देखिके सब जीव जन्तु निश्चय होय के बैठे हैं यह आनन्द और लोकन में नहीं है १० और गोपी कहे हैं मूर्ख

चोऽश्रुमुमुचुस्तरवोयथार्याः ९ वृन्दावनंसखिभुवोवितनोतिकीर्त्तिं यद्देवकीसुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि ॥ गोविन्दवेणुमनुमत्तमयूरनृत्यं प्रेक्ष्याद्रिसान्वपर तान्यसमस्तसत्त्वम् १० धन्याःस्ममूढमतयोऽपिहरिण्यएता यानन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेषम् ॥ आकर्ण्यवेणुरणितंसहकृष्णसाराः पूजांदधुर्विरचितांप्र णयावलोकैः ११ कृष्णंनिरीक्ष्यवनितोत्सवरूपशीलं श्रुत्वाचतत्क्वणितवेणुविचित्रगीतम् ॥ देव्योविमानगतयःस्मरनुन्नसारा भ्रश्यत्प्रसूनकबरामुमुहु र्विनीव्यः १२ गावश्चकृष्णमुखनिर्गतवेणुगीतपीयूषमुत्तभितकर्णपुटैःपिबन्त्यः ॥ शावाःस्नुतस्तनपयःकवलाःस्मतस्थुर्गोविन्दमात्मनिदृशाऽश्रुकलाः स्पृशन्त्यः १३ प्रायोबताम्बविहगामुनयोवनेऽस्मिन् कृष्णेक्षितंतदुदितंकलवेणुगीतम् ॥ आरुह्यये द्रुमभुजान्रुचिरप्रवालान्शृण्वन्त्यमीलितदृशोविग ताऽन्यवाचः १४ नद्यस्तदातदुपधार्य्यमुकुन्दगीतमावर्त्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः ॥ आलिङ्गनस्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारेर्गृह्णन्तिपादयुगलंकमलोपहाराः १५

पशुजाति ये हरिणी धन्यहैं वांसुरी की टेर श्रवण करिके अपने पति को संग लैके धारण कियो है विचित्र रूप जाने ऐसे नन्दनन्दन श्रीकृष्णको स्नेह भरी चितवनसूं सन्मान करे हैं हमरे पति तो बड़े श्रेष्ठहैं जो हमको देखनहू न देइहैं ११ और गोपी कहे हैं स्त्रीनकूं आनन्द को देनवारो जाको रूप और स्वभाव ऐसे कृष्णचन्द्रकूं देखिके और बाजी जो वांसुरी ताको चित्रविचित्र गीत श्रवण करिके विमानन में बैठी चलीजायँ कामदेवते धीरज जिनको गयो चोटीनमेंते फूल झरिझरि गिरे नारे जिनके खुलिगये ऐसी देवाङ्गना याके स्वरूपको देखिके मोहित होतभई और जो हम मोहित होय जायँ तो कहा आश्चर्य्य है १२ श्रीकृष्णचन्द्र के मुख ते निकसो जो वांसुरी को गीतरूप अमृत है ताइ गौ कामरूपी दोनानसूं उठाय के पीवत भई और श्रीकृष्णचन्द्रकूं दृष्टिते आलिङ्गन करत आसू जिनके चलेजायँ चित्रसी लिखी ठाढी होतभई ताही प्रकार बछरा उनके चोखत ठाढ़े होत भये १३ हे मैया ! जा वृन्दावनमें जे पक्षी है ते मुनीश्वर हैं मनोहर जिनके पात ऐसे वृक्षनकी शाखा पै बैठिके नेत्रनकूं मूंदिके छोड़ी है बोली जिनने ऐसे प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन करे हैं और वांसुरीको मनोहर गीतहै ताकूं श्रवण करे हैं १४ मुकुन्द भगवान्‌की वांसुरी की टेर श्रवण करिके

नदीन में भ्रमर परे हैं तासूं यह जतावें हैं कि ये भ्रमर नहीं परे हैं हमारी छाती में कामदेव के गड़ेला परे हैं और धार जिनकी टूटि जायहै मानों आलिङ्गन करिके ढकि लेंगी ऐसे लहरला हा :न ते कमल भेंट लैके मुरारि श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्दकूं पकरे हैं १५ भय्या बलदेवजीकूं और गोपनकूं संग लैके धूपमें व्रजकी गऊन को चरावें वासुरीकूं बजावें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं देखिके मेघ प्रेमसूं बढ़िकै उदय होयके अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर छोटी २ बुन्दन की वर्षा करत भयो साचो मित्र याको मेघ है यह सामरो है और वह सामरो है याके पीताम्बर वामें बिजुरी याके मोतीनको हार वाके बगुलानकी पंक्ति वह गर्जे याकी मुरली गर्जे वह जलकी वर्षा करे यह अमृत की वर्षा करे याको वाको सब लक्षण मिलै है १६ और ये बनकी भीलिनी धन्य हैं श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द की अरुणतासूं जाकी शोभा ऐसी केशर कस्तूरी रतिसमय प्यारी के स्तनन में लगी श्रीकृष्णचन्द्र की डोला फिरी ते तृणन में घासमें लगी वाके शरीर के देखेते कामदेव जिन को उदय होय आयै वे भीलिनी तृणनमें ते केशर लैके कुचनपै मुहपै लगाय के कामदेव की पीड़ाकूं दूरि करति भई १७ हे अबला ! हे सखियो ! यह गोवर्द्धन पर्वत हरिके दासनमें अतिश्रेष्ठ दासहै

दृष्ट्वाऽऽतपे व्रजपशून्सहरामगोपैः सञ्चारयन्तमनुवेणुमुदीरयन्तम् ॥ प्रेमप्रवृद्ध उदितः कुसुमावलीभिः सख्युर्व्यधात्स्ववपुषाऽम्बुद आतपत्रम् १६ पूर्णाः पुलिन्द्य उरुगायपदाब्जरागश्रीकुङ्कुमेन दयितास्तनमण्डितेन ॥ तद्दर्शनस्मररुजस्तृणरूषितेन लिम्पन्त्य आननकुचेषु जहुस्तदाधिम् १७ हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो यद्रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ॥ मानन्तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत् पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः १८ गा गोपकैरनुवनं नयतोरुदारवेणु स्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सु सख्यः ॥ अस्पन्दनं गतिमतां पुलकस्तरूणां निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् १९ एवंविधा भगवतो या वृन्दावनचारिणः ॥ वर्ण यन्त्यो मिथो गोप्यः क्रीडास्तन्मयतां ययुः २० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे एकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ हेमन्ते प्रथमे मासि नन्दव्रजकुमारिकाः ॥ चेरुर्हविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चनव्रतम् १ आप्लुत्याम्भसि कालिन्द्या जलान्ते चोदितेऽरुणे ॥

राम श्रीकृष्णचन्द्रके चरण जे लगे हैं तिनसूं याके बडो आनन्द होयहै गऊ गोपनकूं संग लैके कृष्ण बलराम आवे हैं तिनकूं जल हरीघास कन्दर अर्थात् गुफा कन्द मूल इनको भेटधरिके उनको सत्कार करे हैं १८ हे सखियो ! गौ और गोपनकूं संग लैके उनमें कृष्णचन्द्र बलदेवजी तिनकी मनोहर वासुरी को मनोहर शब्द सुनिके यह आश्चर्य्य होय है वृक्षनकी जंगम गति और जलके जीवनकी वृक्षनकी तुल्य गति होय जायहै अर्थात् वे एक स्थानपै ठाढे रहे हैं और कैसे कृष्ण बलदेव हैं निर्योग अर्थात् दोहन समय गौवन के पाउँ बांधिवे की रस्सी जिनने शिरपर लपेटि लीनी है और गौवन के बांधिवे की रस्सी कन्धापै धरी है तासूं उत्तम गोपनकी तुल्य जिनकी शोभा बनी है १९ वृन्दावन में विहार करैं जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी या प्रकार लीलान कूं गोपी आपुसमें वर्णन करत तन्मय होति भई २० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यां दशमस्कन्धे पूर्वार्द्धे एकविंशोऽध्यायः २१ ॥ ※ ॥ ※ ॥ ※ ॥ ※ ॥

(द्वाविंशे गोपकन्यानां वस्त्राहरणलीलया ॥ वरं दत्त्वागतः कृष्णो यज्ञशालामितीर्यते १ बाईसवें अध्यायमें गोपोंकी कन्याओं के कपड़े चुरानेकी लीला से उनको वर देकर कृष्णजी यज्ञशालाको

गये हैं यह वर्णनहै १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! हेमन्त ऋतुमें प्रथम मास अगहन के महीनामें नन्दरायजी के व्रजमें कुमारी कन्या मूंग भातको भोजन करिके व्रत करिके अरुणोदयके समय यमुनाजी के जलमें स्नान करिके किनारेपै बैठिके वारूकी कात्यायनी देवीकी प्रतिमा बनायके चन्दन सुगन्धि के फूल बलि धूप दीपन सूं और छोटी बड़ी सामग्रीनसूं नवपल्लव फल चाउरन सूं पूजा करतभई १ । २ । ३ हे कात्यायनि ! हे महामाये ! हे महायोगिनि ! हे अधीश्वरि ! हे हे देवि ! नन्दगोपको पुत्रहै ताइ हमारो पति करु तोकों नमस्कारहै ४ या मन्त्रकूं जपिके कुमारिका पूजा करति भई या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रमें चित्त जिनके लगे वे कन्या महीनाको व्रत करतभई नन्दको पुत्र पतिहोउ यह इच्छा करिके भद्रकाली देवीकी पूजाकरत भई प्रात काल उठिके अपने अपने नामलेके आपुस में परस्पर हाथ पकरिके नित्य नित्य यमुनाजी में स्नान करिबे कूं जात ऊंचे स्वरसूं श्रीकृष्णचन्द्र कूं गावतभई ५ । ६ यमुनाजी पै आइके कभऊं एकपहिले दिन

कृत्वाप्रतिकृतिंदेवीमानर्चुर्नृपसैकतीम् २ गन्धैर्माल्यैःसुरभिभिर्बलिभिर्धूपदीपकैः ॥ उच्चावचैश्चोपहारैःप्रवालफलतण्डुलैः ३ कात्यायनिमहामायेमहायोगिन्यधीश्वरि ॥ नन्दगोपसुतंदेविपतिंमेकुरुतेनमः ४ इतिमन्त्रंजपन्त्यस्ताःपूजांचक्रुःकुमारिकाः ॥ एवंमासंव्रतंचेरुः कुमार्यःकृष्णचेतसः ५ भद्रकालींसमानर्चुर्भूयान्नन्दसुतःपतिः ॥ उषस्युत्थायगोत्रैःस्वैरन्योन्याबद्धबाहवः ॥ कृष्णमुच्चैर्जगुर्यान्त्यःकालिन्द्यांस्नातुमन्वहम् ६ नद्यांकदाचिदागत्य तीरेनिक्षिप्यपूर्ववत् ॥ वासांसिकृष्णंगायन्त्यो विजह्रुःसलिलेमुदा ७ भगवांस्तदभिप्रेत्य कृष्णोयोगेश्वरेश्वरः ॥ वयस्यैरागतस्तत्रवृतस्तत्कर्मसिद्धये ८ तासांवासांस्युपादायनीपमारुह्यसत्वरः ॥ हसद्भिःप्रहसन्बालैःपरिहासमुवाचह ९ अत्रागत्याबलाःकामं स्वंस्वंवासःप्रगृह्यताम् ॥ सत्यंब्रवाणिनोनर्मयद्यूयंव्रतकर्शिताः १० नमयोदितपूर्वंवा अनृतंतदिमेविदुः ॥ एकैकशःप्रतीच्छध्वंसहैवेतसुमध्यमाः ११ तस्यतत्क्ष्वेलितंदृष्ट्वागोप्यःप्रेमपरिप्लुताः ॥ व्रीडिताःप्रेक्ष्यचान्योन्यंजातहासानिर्ययुः १२ एवंब्रुवतिगोविन्दे नर्मणाक्षिप्तचेतसः ॥ आकण्ठमग्नाःशीतोदे वेपमानास्तमब्रुवन् १३ माऽनयंभोःकृथास्त्वां

कीसी नाईं अपने वस्त्र किनारे पै धरिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं गावत बड़े आनन्दपूर्वक जलमें विहार करतभई ७ योगेश्वरन के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं मनोरथ जानिके बराबर के मित्रनकूं संगलैके तिनके मनोरथ सिद्ध करिवे के लिये ता यमुनाके तीरपर जातभये ८ कन्यान के वस्त्रलैके शीघ्र कदम्बपै चढ़िके हँसत भये और संगके बालक हँसतभये हँसी की बातें कहतभये ९ और कहतभये कि हे अबलाओ ! यहा आयके अपने अपने वस्त्र लेजावो मैं सत्य कहूं हूं तुम व्रत करे ते दुर्बल होरहीहो यातें हासी नहीं करूं हूं १० पहिले मैं मिथ्या कभी नहीं बोल्योहूं या बात को ये मेरे मित्र जाने हैं एक एक आयके लेजावो अथवा हे सुमध्यमाः अर्थात् सुन्दरहै कटि जिनकी ! तुम एक संगही आयके लेजावो यामें हमारे आग्रह नहीं है ११ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र की हासी देखिके गोपी प्रेममें मग्न होयके लज्जा सहित आपुस में देखि देखिके हँसति भई वस्त्रहीन हैं याते जलके बाहर नहीं निकसती भई १२ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने कही जब हँसीकी बात सुनि के हरिगये हैं वस्त्र जिनके ऐसी शरमीली गोपी थोड़े जलके भीतर कंठताईं डूबरहीं जाड़ेके मारे कांपत कांपत श्रीकृष्णचन्द्रसूं बोलतभई १३ हे कृष्णचन्द्र ! अनीति मतकरो तुम नन्द गोपके

पुत्र वृजमें प्रशंसा के योग्यहो अपने प्यारे जा शीतसूं कम्पित जो हम हैं तिनकूं वस्त्रदेउ १४ हे श्यामसुन्दर! हम तुम्हारी दासी हैं जो तुम कहोगे सोई हम करेंगी हे धर्म्म के जाननेवारे! हमारे वस्त्र देउ नहीं देउ तो राजा नन्द ते अथवा कंसते हम कहेंगी १५ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् कहे हैं जो तुम मेरी दासीहो और मेरो कह्यो करोगी हे शुचिस्मिताः अर्थात् सुन्दरहै मुसिकानि जिनकी! ऐसी जो तुमहो सो यहां आयके अपने अपने वस्त्र लेजावो १६ ताके पीछे शीतसूं कंपित वृतकरिके कर्शित जो समस्त कुमारिका हाथन ते अपनी अपनी योनिकूं ढँकिके जलके वाहर निकसत भई १७ सुन्दर प्रेम ते प्रसन्नकरे ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र नहीं खण्डित भयो है कन्यापन जिनको ऐसी कुमारिकान कूं देखिके उनके वस्त्र कन्धा पै धरिके प्रसन्न होय के मुसिकाय के यह वोले १८ वृत कों करिके नंगी होय के यमुना जलमें स्नान करत भई तासूं जलको देवता जो वरुण है ताको अपराध भयो ताके दूरि करिवेके लिये हाथ जोरि माथे ते लगायके धरती में प्रणाम करिके वस्त्र पहि-

तु नन्दगोपसुतंप्रियम् ॥ जानीमोऽङ्गव्रजश्लाघ्यं देहिवासांसिवेपिताः १४ श्यामसुन्दरतेदास्यःकरवामतवोदितम् ॥ देहिवासांसिधर्मज्ञ नोचेद्राज्ञेब्रुवा
महे १५॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भवत्योयदिमेदास्यो मयोक्तंवाकरिष्यथ ॥ अत्राऽऽगत्यस्ववासांसिप्रतीच्छन्तुशुचिस्मिताः १६ ततोजलाशयात्सर्वादारि
काःशीतवेपिताः ॥ पाणिभ्यांयोनिमाच्छाद्य प्रोत्तेरुःशीतकर्शिताः १७ भगवानाहतावीक्ष्यशुद्धभावप्रसादितः ॥ स्कन्धेनिधायवासांसि प्रीतःप्रोवाच
सस्मितम् १८ यूयंविवस्त्रायदपोधृतव्रताव्यगाहतैतत्तदुदेवहेलनम् ॥ बद्ध्वाञ्जलिंमूर्ध्न्यपनुत्तयेंऽहसः कृत्वानमोऽधोवसनंप्रगृह्यताम् १९ इत्यच्युतेनाभि
हितंव्रजावला मत्वाविवस्त्राप्लवनंव्रतच्युतिम् ॥ तत्पूर्तिकामास्तदशेषकर्मणांसाक्षात्कृतंनेमुरवद्यमृग्यतः २० तास्तथाऽवनताद्दृष्ट्वा भगवान्देवकीसुतः ॥
वासांसिताभ्यःप्रायच्छत्करुणस्तेनतोपितः २१ दृढंप्रलब्धास्त्रपयाचहापिताः प्रस्तोभिताःक्रीडनवच्चकारिताः ॥ वस्त्राणिचैवापहृतान्यथाऽप्यमुंताना
भ्यसूयन्प्रियसङ्गनिर्वृताः २२ परिधायस्ववासांसिप्रेष्ठसङ्गमसज्जिताः ॥ गृहीतचित्तानोचेलुस्तस्मिँल्लज्जायितेक्षणाः २३ तासांविज्ञायभगवान्स्वपा

रो १९ या प्रकार श्रीकृष्ण ने उनते कही तब व्रजवाला वस्त्र त्यागिके जो नग्न स्नान करिवो है ताकूं वृतके खण्डन करनवारो मानिके ता वृत के पूर्ण करिवेके लिये व्रत के और समस्त कर्मन के फल के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं नमस्कार करत भई क्योंकि जा कारण ते श्रीकृष्णचन्द्रही सम्पूर्ण पापनके दूर करनवारे हैं २० देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अधीनता करें ऐसी जो कुमारिका तिनकूं देखिके और उनके भाव सूं सन्तुष्ट होयके करुणा जिनके आइगई उन कों वस्त्र देतभये २१ बहुत करिके ठगी लाज जिनकी छुटाई हांसी जिनकी करी खिलौना कीसी नाई ठाढी करी वस्त्र जिनके ले लिये तथापि कुमारिका श्रीकृष्णके संग आनन्द मानिके श्रीकृष्ण की निन्दा न करतभई २२ अपने अपने वस्त्र पहिर के प्यारे संगने वश करि लीनी चित्त जिनके हरिगये तिन श्रीकृष्णचन्द्र की ओर लाज करिके देखें ऐसी कुमारिका श्रीकृष्णके पास ते न जातभई २३ अपने चरणारविन्दके स्पर्शकी चाहना करिके धारोहै व्रत जिनने ऐसी कुमारीनके मनो-

रथ जानिके दामोदर भगवान् अवलान सूं बोलतभये २४ श्रीकृष्ण भगवान् कहे हैं हे सुशीलाओ ! जालिये तुमने मेरो पूजन करो वह मनोरथ लाजके मारे तुमने नहीं कह्यो तथापि मैंने जानो
और मैंने तुम्हारे मनोरथ को अनुमोदन करो याते यह मनोरथ सत्य होइगो २५ मोमें जिनने बुद्धि लगाई है उनकों काम विषयभोग के लिये नहीं होय है जैसे भूंजेरंधे अन्न बहुधा उपजिवे के
योग्य नहीं होय है २६ हे अबलाओ ! तुम व्रजको जावो तुम्हारे मनोरथ पूरे भये हे पतिव्रताओ ! जाको मनमें विचारिके यह तुम व्रत करतभई कात्यायनी देवीकी पूजा करतभई या कारण जे
शरद्ऋतुकी रात्री आवेंगी तिनमें मेरे संग रमण करोगी २७ भगवान् श्रीकृष्ण ने आज्ञा जिन कूं दीनी कामना जिनकी पूर्ण भई वे कुमारिका श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को ध्यानकरत
कष्ट ते वृजको जातभई ८ याके पीछे देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण गोपन कूं संगलैके बलदेवजी को संग लैके गौवनकूं चरावत वृन्दावनमें ते दूरि चले जातभये २९ बड़ी तीक्ष्ण जो गरमी

मयाऽनुमोदितःसोऽसौ सत्योभवितुमर्ह
दस्पर्शकाम्यया ॥ धृतव्रतानांसङ्कल्पमाहदामोदरोऽबलाः २४ सङ्कल्पोविदितःसाध्व्योभवतीनांमदर्चनम् ॥
ति २५ नमय्यावेशितधियांकामःकामायकल्पते ॥ भर्जिताक्वथिताधानाःप्रायोबीजायनेष्यते २६ यातावलाव्रजंसिद्धामयेमारंस्यथक्षपाः ॥ यदुद्दिश्यव्र
तमिदं चेरुरार्यार्चनंसतीः २७ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यादिष्टाभगवतालब्धकामाःकुमारिकाः ॥ ध्यायन्त्यस्तत्पदाम्भोजंकृच्छ्रान्निर्विविशुर्व्रजम् २८ अथगो
पैःपरिवृतो भगवान्देवकीसुतः ॥ वृन्दावनाद्गतोदूरं चारयन्गाःसहाग्रजः २९ निदाघार्कातपेतिग्मे छायाभिःस्वाभिरात्मनः ॥ आतपत्रायितान्वीक्ष्य द्रु
मानाहव्रजौकसः ३० हेस्तोककृष्णहेअंशो श्रीदामन्सुबलार्जुन ॥ विशालर्षभतेजस्विन्देवप्रस्थवरूथप ३१ पश्यतैतान्महाभागान् परार्थैकान्तजीवि
तान् ॥ वातवर्षातपहिमान् सहन्तोवारयन्तिनः ३२ अहोएषांवरंजन्म सर्वप्राण्युपजीवनम् ॥ सुजनस्येवयेषांवै विमुखायान्तिनार्थिनः ३३ पत्रपुष्पफ
लच्छायामूलवल्कलदारुभिः ॥ गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैःकामान्वितन्वते ३४ एतावज्जन्मसाफल्यं देहिनामिहदेहिषु ॥ प्राणैरर्थैर्धियावाचा श्रे
यएवाचरेत्सदा ३५ इतिप्रवालस्तवकफलपुष्पदलोत्करैः ॥ तरूणांनम्रशाखानां मध्येनयमुनांगतः ३६ तत्रगाःपाययित्वाऽपः सुमृष्टाःशीतलाःशिवाः ॥

की धूपहै तामें अपनी छायासूं छाया करिके ऐसे वृक्षनकूं देखिके श्रीकृष्णचन्द्र व्रजवासीन सूं कहत भये ३० हे बालककृष्ण ! हे अंशो ! हे श्रीदामन् ! हे सुबल ! हे अर्जुन ! हे विशाल ! हे
ऋषभ ! हे तेजस्विन् ! हे देवप्रस्थ ! हे वरूथप ! इन बड़भागी वृक्षनकूं तुम देखो तो ये बड़े बड़भागी हैं परोपकारके लिये एकान्त वास करे हैं पवन वर्षा घूप शीत आप सहे हैं और हमें इनते बचावें
हैं ३१ । ३२ अहो इन वृक्षनकों सब प्राणीनके उपकार को करनवारो जन्म धन्य है जैसे काहू दयावान् पुरुषके पास याचक मनुष्य विमुख नहीं जायँ ऐसे इन वृक्षनके पास आयके प्राणी विमुख
नहीं जाय हैं ३३ पात फूल फल छाया जड बक्कल लकड़ी सुगन्ध गोंद भस्म कोइला कोंपल इन करिके सब प्राणीन की कामना पूर्ण करे हैं ३४ या संसार में देहधारीन को इतनोही जन्म सफल
है जो अपने प्राण धन बुद्धि वचन इन सूं सदा परायो भलोहीकरे हैं ३५ या प्रकार पात गुच्छा फलन फूलन दलनके समूहन ते शाखा जिनकी नइरही उन वृक्षनके बीचमें होयके श्रीकृष्णचन्द्र यमुना

तीर पै जातभये ३६ हे राजन् परीक्षित्! ता यमुना तीर पै गोपहैं ते निर्म्मल शीतल मंगलरूप जल गौवन कूं प्याय के आपहू स्वाद सूं पीवत भये ३७ हे राजन् परीक्षित्! ता यमुनाजी के समीप वाग में इच्छापूर्वक गऊनकूं चरावत गोपन कूं क्षुधा जब लागी तब श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी के पास आयके यह कहत भये॥३८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

(त्रयोविंशेतनोगोपैरन्नयाच्ञापदेशतः ॥ तत्पत्न्यनुग्रहात्कृष्णो दीक्षितानन्वतापयत् १ तेईसवें अध्याय में कृष्णजी गोपोंकेद्वारा दीक्षायुक्त ब्राह्मणों से अन्न मांगते भये तब वे नहीं देते भये उनकी स्त्रियां लेजाकर देतीभई तब कृष्णजी स्त्रियोंकी कृपाते ब्राह्मणों को तापयुक्त करते भये १) हे राम! हे राम! हे वड़ेपराक्रमी! हे कृष्ण दुष्टनके मारनवारे! यह क्षुधा दुष्टिनी हमें वहुत सतावे है याकी शान्ति करो १ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार गोपन ने जा समय प्रार्थनाकरी तब देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण भक्तिमती जो ब्राह्मणन की स्त्री तिनके ऊपर प्र-

ततोनृपस्वयंगोपाः कामंस्वादुपपुर्जलम् ३७ तस्याउपवनेकामं चारयन्तःपशून्नृप ॥ कृष्णरामावुपागम्य क्षुधार्ताइदमब्रुवन् ३८॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

गोपाऊचुः ॥ रामराममहावीर्य कृष्णदुष्टनिवर्हण ॥ एषावैबाधतेक्षुन्नस्तच्छान्तिंकर्त्तुमर्हथः १ श्रीशुकउवाच ॥ इतिविज्ञापितोगोपैर्भगवान्देवकीसुतः ॥ भक्तायाविप्रभार्यायाः प्रसीदन्निदमब्रवीत् २ प्रयातदेवयजनं ब्राह्मणाब्रह्मवादिनः ॥ सत्रमाङ्गिरसंनाम ह्यासतेस्वर्गकाम्यया ३ तत्रगत्वौदनंगोपायाचतास्मद्विसर्जिताः ॥ कीर्त्तयन्तोभगवतआर्यस्यममचाभिधाम् ४ इत्यादिष्टाभगवता गत्वायाचन्ततेतथा ॥ कृताञ्जलिपुटाविप्रान् दण्डवत्पतिताभुवि ५ हेभूमिदेवाःशृणुत कृष्णस्यादेशकारिणः ॥ प्राप्ताञ्जानीतभद्रंवोगोपान्नोरामचोदितान् ६ गाश्चारयन्तावविदूरओदनं रामाच्युतौवोलषतोवुभुक्षितौ ॥ तयोर्द्विजाओदनमर्थिनोर्यदि श्रद्धाचवोयच्छतधर्मवित्तमाः ७ दीक्षायाःपशुसंस्थायाः सौत्रामण्याश्चसत्तमाः ॥ अन्यत्रदीक्षितस्यापि नान्नमश्नन्हि

सन्न होयके यह वोलत भये २ वेदके पढनवारे ब्राह्मण स्वर्गकी कामना करिके आंगिरस नाम यज्ञ करे हैं देवतानको पूजन जहां होइ है तहां जावो ३ हे गोपो! ता यज्ञ में जायके भात मांगो हमारे भेजे जावो तुम्हें कहा लाज आवै है वड़े भय्या भगवान् वलदेवजी को नाम लीजो उनके भेजे आये हैं ४ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञा ग्रहण करिके वे गोप जायके तैसेही मागत भये और ब्राह्मणनके हाथ जोरि पृथ्वी में परिके दण्डवत् करतभये ५ हे भूमिदेवो! तुम हमारी वात सुनो श्रीकृष्णचन्द्र की आज्ञाके करनवारे वल्देवजी के भेजे हम गोप तिहारे पास आये है तिनकूं जानो हो तुम्हारो कल्याण होउ ६ श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी दोनों भय्या गौ चरावत समीपआये हैं भूखे हैं तुम्हारे भातकी चाहना करे हैं हे ब्राह्मणो! हे धर्म के जाननवारेन में उत्तम! तुम्हारे भातहै जो श्रद्धाहै तो मागे जो कृष्ण वलदेव हैं तिनकूं देउ ७ हे श्रेष्ठो! दीक्षाते आरम्भ लैके पशुके हिंसनते पहिले सौत्रामण्य यज्ञते और ठौर दीक्षावारे के अन्नके खाते दोष नहींलगेहै यामें

पशुको हिंसन तुम्हारे होय चुको है सौत्रामणय यज्ञ तुम्हारे है नहीं तुम्हारे अन्न भोजन करिवेकोदोष नहीं ८ या प्रकार वे ब्राह्मण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की याचनाकूं सुनिके अनसुनी करतभये खोटे स्वर्ग में जायवे की जिनके आशाहै वड़े कर्मन को करे हैं हैं तो मूर्ख और हम वड़े ज्ञानी है ऐसे आपको माने हैं ९ देश काल न्यारो न्यारो चरु पुरोडाशादिक द्रव्य मन्त्र तन्त्र ऋत्विज् अग्नि देवता यजमान क्रतु यज्ञ धर्म यह सब कृष्णमय है १० सो साक्षात् परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रिय जामें पहुँचे नहीं तिनको खोटी जिनकी बुद्धि मरणधर्मा देह को आत्मा माने ऐसे ब्राह्मण मनुष्यजातिके अवज्ञा करतभये ११ श्रीशुकदेवजी कहैहैं कि हे परंतप अर्थात् शत्रुनके तापके करनवारे राजा परीक्षित् ! वे ब्राह्मण देयेंगे अथवा नहीं ऐसे भी न कहतभये गोप निराश होयके वगदिके राम कृष्णते तैसेही कहतभये कि भले दुष्टनके पास भेज देयेंगे अथवा न देयेंगे कुछ भी न कही १२ जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपनकी वात सुनिके लोकनकी रीति

दुष्यति ८ इतितेभगवद्याच्ञां शृण्वन्तोऽपिनशुश्रुवुः ॥ क्षुद्राशाभूरिकर्माणोबालिशावृद्धमानिनः ९ देशःकालःपृथग्द्रव्यंमन्त्रतन्त्रर्त्विजोऽग्नयः ॥ देवतायजमानश्च क्रतुर्धर्मश्चयन्मयः १० तंब्रह्मपरमंसाक्षाद्भगवन्तमधोक्षजम् ॥मनुष्यदृष्ट्यादुष्प्रज्ञामर्त्यात्मानोनमेनिरे ११ नतेयदोमितिप्रोचुर्ननेतिचपरन्तप ॥ गोपानिराशाःप्रत्येत्य तथोचुःकृष्णरामयोः १२ तदुपाकर्ण्यभगवान्प्रहस्यजगदीश्वरः ॥ व्याजहारपुनर्गोपान् दर्शयल्लौकिकींगतिम् १३ मां ज्ञापयतपत्नीभ्यः ससङ्कर्षणमागतम् ॥ दास्यन्तिकाममन्नंवः स्निग्धामय्युषिताधिया १४ गत्वाऽथपत्नीशालायां दृष्ट्वाऽऽसीनाःस्वलङ्कृताः ॥ नत्वाद्विजसतीर्गोपाः प्रश्रिताइदमब्रुवन् १५ नमोवोविप्रपत्नीभ्योनिबोधतवचांसिनः ॥ इतोऽविदूरेचरता कृष्णेनेहेषितावयम् १६ गाश्चारयन्सगोपालैः सरामोदूरमागतः ॥ बुभुक्षितस्यतस्यान्नं सानुगस्यप्रदीयताम् १७ श्रुत्वाऽच्युतमुपायातंनित्यंतद्दर्शनोत्सुकाः ॥ तत्कथाक्षिप्तमनसोबभूवुर्जातसंभ्रमाः १८ चतुर्विधंबहुगुणमन्नमादायभाजनैः ॥ अभिसस्रुःप्रियंसर्वाः समुद्रमिवनिम्नगाः १९ निषिध्यमानाःपतिभिर्भ्रातृभिर्बन्धुभिःसुतैः ॥ भगवत्युत्तमश्लोके दीर्घश्रुत

दिखाय के हँसिके फेरि गोपनते कहतभये अपनो कामकरो जिनको इच्छाहै ते खेद नहींमाने हैं कौन ऐसो मागनवारो है जाको मानभंग नहीं होयहै १३ संकर्षण भय्यासहित कृष्णचन्द्र आये हैं यह मेरीवात ब्राह्मणनकी स्त्रीन ते कहो जायके वे तुमको बहुतसी सामग्री भोजनकू देवेंगी शरीर ते वे घरनमें रहे हैं मन तो उनको मेरे विषेही लगिरहो है याही ते मोमें उनको बड़ो प्यारहै १४ श्रीकृष्णके कहे पीछे स्त्री जहा शृंगारकरे वैठीरहीं तहा सभामें गोप जायके तिनकूं देखिके ब्राह्मणनकी स्त्रीन कूं नमस्कार करिके अधीनतापूर्वक यह बोलत भये १५ हे ब्राह्मणन की स्त्रियो ! तुमको नमस्कारहै हमारी वातसुनो यहा ते समीप कृष्ण वैठे है तिनने हमें भेजे है १६ गोप और बलदेवजी भय्याको संगलैके गौचरावत चरावत दूरि आयगये हैं सो वह भूखे है वाके मित्र हम भूखे हैं तुम कछु भोजनकी सामग्री देउ १७ नित्य श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनकी चाहना जिनके लगिरही है तिनकी वात श्रवण करिके हरिगये है मन जिनके वे ब्राह्मणन की स्त्री श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयो सुनिके हर्षवती होतिभई १८ वड़े वड़े पात्रन में सुन्दर सुगन्धि जामें आवै ऐसी चार प्रकारकी सामग्री भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चोष्य-अर्थात् चना चवेना रोटी पूरी भक्ष्य-दालि भात इत्यादिक

भोज्य—कढ़ी क्षीर इत्यादिक लेह्य—गाँड़ो आम इत्यादिक चोष्य इनको लैके सब ब्राह्मणनकी स्त्री प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र के पास आवति भई जैसे नदी समुद्र के सम्मुख उमड़ उमड़ के जाय हैं १९ पति भय्या बन्धु पुत्रनने मनेकरी तथापि उत्तम जिनको यश ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् में बहुत दिनते गुण सुनिके मन जिनको लग्यो वे ब्राह्मणनकी स्त्री अशोक वृक्षके नये पल्लवन करि शोभायमान जो यमुनाजी के समीप बागहै तामें गोपन कूं और बड़े भय्या बलदेवजी कूं सग लिये श्रीकृष्णचन्द्र डोलै हैं तिनको दृष्टि करिके देखतभई २० । २१ कैसे श्रीकृष्णको देखो है ताको वर्णन करे हैं श्यामसुन्दर स्वरूप सुवर्णकी तुल्यहै रंग जाको ऐसे पीताम्बर कू पहिरे वनके फूल माला मोरपुच्छ खरिया गेरु पात इन करिके शोभायमान नटकी तुल्य जिनको रूप है मित्र के कन्धा पै एक हाथधरे दूसरे हाथ सूं कमल घुमावैं कानन में कमल के फूल उरसे अलकें छुटि के कपोलन पै आयरहीं मन्द मन्द जिनकी मुसकानि ऐसे श्रीकृष्णको दर्शन करति भई २२ बहुत दिन तें सुने जे प्यारे के गुण तेईभये कर्णफूल तिन सूं जा श्रीकृष्णचन्द्रमें मन जिनके लगिरहे हैं वे ब्राह्मणन की स्त्री दर्शनकरे पीछे तिन श्रीकृष्णचन्द्र कूं नेत्रद्वारा अन्तःकरण में लेजायके

धृताशयाः २० यमुनोपवनेऽशोकनवपल्लवमण्डिते ॥ विचरन्तंवृतंगोपैः साग्रजंददृशुःस्त्रियः २१ श्यामंहिरण्यपरिधिंवनमाल्यबर्हधातुप्रवालनटवेषमनुव्रतांसे ॥ विन्यस्तहस्तमितरेणधुनानमब्जं कर्णोत्पलालककपोलमुखाब्जहासम् २२ प्रायःश्रुतप्रियतमोदयकर्णपूरैर्यस्मिन्निमग्नमनसस्तमथाक्षिरन्ध्रैः ॥ अन्तःप्रवेश्यसुचिरंपरिरभ्यतापं प्राज्ञंयथाऽभिमतयोविजहुर्नरेन्द्र २३ तास्तथात्यक्तसर्वाशाः प्राप्ताआत्मदिदृक्षया ॥ विज्ञायाखिलदृग्द्रष्टा प्राहप्रहसिताननः २४ स्वागतंवोमहाभागा आस्यतांकरवामकिम् ॥ यन्नोदिदृक्षयाप्राप्ताउपपन्नमिदंहिवः २५ नन्वद्धामयिकुर्वन्ति कुशलाःस्वार्थदर्शनाः ॥ अहैतुक्यव्यवहितांभक्तिमात्मप्रियेयथा २६ प्राणबुद्धिमनःस्वात्मदारापत्यधनादयः ॥ यत्सम्पर्कात्प्रियाआसंस्ततःकोन्वपरःप्रियः २७ तद्यातदेवयजनं पतयोवोद्विजातयः ॥ स्वसत्रंपारयिष्यन्तियुष्माभिर्गृहमेधिनः २८ पत्न्यऊचुः ॥ मैवंविभोऽर्हतिभगवान्गदितुंनृशंसंसत्यंकुरुष्वनिगमंतवपादमूलम् ॥ प्राप्ताव

बहुत बेरताई आलिंगन करिके हे राजन् परीक्षित् ! अपने तापको त्यागत भई-दृष्टान्त अहङ्कारवृत्तिहैं ते सुषुप्ति अवस्थाकी साक्षी हैं ताकूं आलिंगन करिके और ताहीमें लीनहोयके जैसे तापकूं त्यागे हैं २३ पुत्रादिक गृहादिकन की आशा जिनने छोड़दई अपने दर्शन करिवेके लिये आई जे ब्राह्मणनकी स्त्री हैं तिनकूं जानिके सबकी बुद्धि देखनवारे श्रीकृष्णचन्द्र हँसिके बोलतभये २४ हे बड़भागिनियो ! तुम भले आई आवो हम तुम्हारो कहा सत्कार करैं जो हमारे दर्शन करिवे को आईहो यह तुमको योग्यहै २५ अपने अर्थ कूं देखनवारे विवेकीपुरुष आत्मा प्यारो जो मैं हूं ता मो में फलकी अनिच्छा करिके निरन्तर भक्ति करें हैं २६ प्राण बुद्धि मन अपनो देह स्त्री पुत्र धनकूं आदि लैके सब वस्तु जा आत्माके सम्बन्धते प्यारी लगे हे ता आत्माते परे और कौन प्रियहै २७ ता कारण हे सुशीलाओ ! तुम अपने यज्ञ में जावो गृहस्थ तुम्हारे पति ब्राह्मण तुम जाउगी तब अपने यज्ञको पूर्ण करेंगे २८ या प्रकार कृष्णचन्द्र को वचन सुनिके ब्राह्मणन की पत्नी कहतभई हे महाराज ! आप ऐसो कठोर वचन कहिवेके योग्य नहीं हो 'नमेभक्ताःप्रणश्यन्ति' अर्थात् मेरे भक्तनको नाश नहीं होयहै यह गीतामें लिखोहै 'नसपुनरावर्तते' अर्थात् मोको प्राप्त होयके फेरि

नहीं आवै है यह आपकी आज्ञा है ताको सत्य करो तुमने अपने चरणते ठुकराइ दीनी जो तुलसी की माला ताइ बड़े आदर ते शिर पै चढ़ायवे के लिये सब भय्या बन्धून कूं त्यागिके हम तुम्हारे चरणनके नीचे आई हैं २९ हम जायके कहा करें हमारे पति माता पिता पुत्र भय्या बन्धु और अपने प्यारे कोई अंगीकार नहीं करेंगे और क्योंकरि करेंगे ता कारणते तुम्हारे चरणारविन्द में हमारे देह परे हैं स्वर्गादिकहू को सुख नहीं चाहे हैं हे काम लोभ भयादिक शत्रुनके दण्ड देनवारे। हमको अपनो दास्यभाव देउ ३० या प्रकार सुनिके श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले पति तुमको दोष नहीं लगावेंगे माता पिता भय्या पुत्रादिक भी दोष नहीं लगावेंगे मेरी आज्ञा जिनको भई ऐसे लोक भी दोष नहीं लगावेंगे आकाश में देवताहू घर कूं जाउ ऐसे कहत भये ३१ या संसार में शरीर ते स्पर्श भये ते प्रीति नहीं रहे है स्नेह नहीं बढ़े है या कारण तुम घरमें रहि के मन मोमें लगावो शीघ्र मोको पावोगी ३२ मेरे स्मरण करे ते दर्शन ध्यान करे ते निरन्तर

यंतुलसिदामपदावसृष्टंकेशैर्निवोढुमतिलङ्घ्यसमस्तबन्धून् २९ गृह्णन्तिनोनपतयःपितरौसुतावानभ्रातृबन्धुसुहृदःकुतएवचान्ये ॥ तस्माद्भवत्प्रपदयोःप्रतिनात्मनांनोनान्याभवेद्गतिररिन्दमतद्विधेहि ३० श्रीभगवानुवाच ॥ पतयोनाभ्यसूयेरन् पितृभ्रातृसुतादयः ॥ लोकाश्चयेमयोपेता देवाअप्यनुमन्वते ३१ नप्रीतयेऽनुरागाय ह्यङ्गसङ्गोनृणामिह ॥ तन्मनोमयियुञ्जाना अचिरान्मामवाप्स्यथ ३२ स्मरणाद्दर्शनाद्ध्यानान्मयिभावोनुकीर्त्तनात् ॥ नतथासन्निकर्षेण प्रतियाततोगृहान् ३३ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्ताद्विजपत्न्यस्तायज्ञवाटंपुनर्गताः ॥ तेचानसूयवःस्वाभिःस्त्रीभिःसत्रमपारयन् ३४ तत्रैकाविधृताभर्त्रा भगवन्तंयथाश्रुतम् ॥ हृदोपगुह्यविजहौ देहंकर्मानुबन्धनम् ३५ भगवानपिगोविन्दस्तेनैवान्नेनगोपकान् ॥ चतुर्विधेनाशयित्वा स्वयञ्चबुभुजेप्रभुः ३६ एवंलीलानरवपुर्नृलोकमनुशीलयन् ॥ रेमेगोगोपगोपीनांरमयन्रूपवाक्कृतैः ३७ अथानुस्मृत्यविप्रास्ते अन्वतप्यन्कृतागसः ॥ यद्विश्वेश्वरयोर्याच्ञामहन्मनृविडम्बयोः ३८ दृष्ट्वास्त्रीणांभगवति कृष्णेभक्तिमलौकिकीम् ॥ आत्मानंचतयाहीनमनुतप्ताव्यगर्हयन् ३९ धिग्जन्मनस्त्रिवृद्वि

कीर्त्तन करे ते जैसे मो में भाव होयहै तैसे पास रहे ते नहीं होयहै ताते तुम शीघ्र अपने घरकों जावो ३३ श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने कही तब वे यज्ञ करनवारे ब्राह्मणन की स्त्री फेरि यज्ञ जहा होतहो तहा आवतिभई दोष जिनने नहीं लगायो वे ब्राह्मण अपनी स्त्रीनकों संगलैके यज्ञ पूर्ण करत भये ३४ तहां एक ब्राह्मण ने अपनी स्त्री रोकी वाने जैसो श्रीकृष्ण भगवान् को रूप कानन ते सुनो तैसो ध्यान करि हृदय में आलिंगन करिके कर्म्मनके अधीन जो देह है ताइ छोड़त भई ३५ गौवन के पालन करनवारे जो समर्थ श्रीकृष्ण भगवान् हैं सो भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य चार प्रकार की सामग्रीन कूं गोपन कों भोजन करायके आपहू भोजन करत भये ३६ या प्रकार लीला करिके मनुष्य रूप को धरिके लोकन कैसो आचरण करिके गौ गोप गोपीनकूं रूप वाणी चरित्रनसूं आनन्द देत आपहू रमण करत भये ३७ याके पीछे अपराध जिनने करो ऐसे ब्राह्मण स्मरण करिके दुःख पावतभये मनुष्य को आचरण करे ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव तिनके मांगिवे कों नहीं सुनतभये ३८ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र में स्त्रीनकी अलौकिक भक्ति देखिके और अपने कों भक्तिरहित देखिके दुःखित होयके अपनी निन्दा करत भये ३९ शुद्ध

माता पिता ते सावित्री यज्ञोपवीत भये ते-यज्ञकी दीक्षा लिये ते यह तीन प्रकार को हमारो जन्म है ताकूं धिक्कार है और हमारो व्रत करिवे कूं बहुत शास्त्र पढ़िवे कूं हमारे कुल कूं हमारे कर्म्मन
की चतुराई कूं धिक्कार है क्यों हम परमेश्वर ते विमुख होयगये ४० निश्चय भगवान् की माया योगीन कों भुलावनवारी है या माया सूं मनुष्यन में गुरु ब्राह्मण जो हम हैं ते स्वार्थ में मोहित
होत भये ४१ अहो बड़ो आश्चर्य्य है जगत् के गुरु श्रीकृष्णचन्द्र में स्त्रीन की कैसी भक्ति भईहै जो भक्ति घर जिनको नाम ऐसी मृत्युकी फासीनकूं काटत भई ४२ इन स्त्रीनके यज्ञोपवीत नहीं
होयँ गुरुकुल में वास भी नहीं करें तप और आत्मा को विचारहू नहीं करें पवित्रहू नहीं रहें अच्छे कर्म्मन कूं नहीं करें ४३ तथापि उत्तमहै यश जिनको ऐसे योगेश्वरनके ईश्वर भगवान्हें तिनमें
टारी न टरै ऐसी भक्ति होत भई स्नान सन्ध्या जप तप करें जो हम हैं तिनको भक्ति न होतभई ४४ निश्चय करिके अपने अर्थ को जाने नहीं घरके व्यापार में भूले रहें जे हम हैं तिनकूं साधुन

द्यां धिग्व्रतंधिग्बहुज्ञताम् ॥ धिक्कुलंधिक्क्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ४० नूनंभगवतोमाया योगिनामपिमोहिनी ॥ यद्वयंगुरवोनृणां स्वार्थेमुह्यामहे
द्विजाः ४१ अहोपश्यतनारीणामपिकृष्णेजगद्गुरौ ॥ दुरन्तभावंयोऽविध्यन्मृत्युपाशान्गृहाभिधान् ४२ नासांद्विजातिसंस्कारो ननिवासोगुराव
पि ॥ नतपोनात्ममीमांसा नशौचंनक्रियाःशुभाः ४३ अथापिह्युत्तमश्लोकेकृष्णेयोगेश्वरेश्वरे ॥ भक्तिर्दृढानचास्माकं संस्कारादिमतामपि ४४ ननुस्वा
र्थविमूढानां प्रमत्तानांगृहेहया ॥ अहोनःस्मारयामास गोपवाक्यैःसतांगतिः ४५ अन्यथापूर्णकामस्य कैवल्याद्याशिषांपतेः ॥ ईशितव्यैःकिमस्माभि
रीशस्यैतद्विडम्बनम् ४६ हित्वाऽन्यान्भजतेयंश्रीः पादस्पर्शाशयाऽसकृत् ॥ आत्मदोषापवर्गेण तद्याच्ञाजनमोहिनी ४७ देशःकालःपृथग्द्रव्यंमन्त्रतन्त्र
र्त्विजोग्नयः ॥ देवतायजमानश्चक्रतुर्धर्म्मश्चयन्मयः ४८ सएषभगवान्साक्षाद्विष्णुर्योगेश्वरेश्वरः ॥ जातोयदुष्वित्यशृण्मह्यपिमूढानविद्महे ४९ अ
होवयंधन्यतमायेषांनस्तादृशीःस्त्रियः ॥ भक्त्यायासांमतिर्जाता अस्माकंनिश्चलाहरौ ५० नमस्तुभ्यंभगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ॥ यन्मायामोहितधि

की गति श्रीकृष्णचन्द्र गोपन के वचन सुनिके सुधि करावत भये ४५ पूर्ण जिनको मनोरथ मोक्ष कूं आदि लेके सब मनोरथन के पति श्रीकृष्ण हैं तिनकूं ईश्वर के वशीभूत जे जीव हम तिनसूं
कहा प्रयोजन है भात को मागिवो यह तौ ईश्वरको खेलहै ४६ लक्ष्मी ब्रह्मादिकन कों छोड़िके चरणारविन्द के स्पर्शकी चाहना करिके अपनो चञ्चलता दोष दूर करिवे के लिये जिनको सदा
भजनकरे है तिन श्रीकृष्णचन्द्र को मागिवो जनन को मोह करनवारो है ४७ देश काल न्यारो न्यारो चरु पुरोडाशादिक द्रव्य मन्त्र तन्त्र ऋत्विज् अग्नि देवता यजमान यज्ञ धर्म्म यह सब
कृष्णमयहै सो साक्षात् भगवान् विष्णु योगेश्वरन के ईश्वर यादवन में आयके जन्मे हैं यह बात सुनीही तौ भी हम मूर्ख अज्ञानी जानत न भये ४८ । ४९ कोई ब्राह्मण कहनलगे अहो हम बड़े
धन्यहैं हमारे ऐसी भक्तिमती स्त्री हैं जिनकी भक्ति सूं हमारेभी हरि भगवान् में भक्ति होतभई ५० नहीं कुण्ठितहै बुद्धि जिनकी ऐसे भगवान् जो श्रीकृष्णचन्द्र तुमहो तिनकूं नमस्कारहै जिनकी

मायासूं मोहित है बुद्धि जिनकी ऐसे हम कर्म्मन में भटकतहैं ५१ अपनी माया करि मोहित है चित्त जिनको और नहीं जानो है प्रभाव जिनको ऐसे जो हम हैं तिनको अपराध श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् क्षमा करेंगे ५२ श्रीकृष्णचन्द्र को कियो है अपराध जिनने ऐसे ब्राह्मण अपने अपराधकी सुधि करिके कृष्ण बलदेवके दर्शन करिवेकी इच्छाभई तथापि कंसके भयते न जात भये ५३ ॥
इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेयज्ञपत्न्युद्धरणंनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(चतुर्विंशेमहेन्द्रस्य मखंव्यावर्त्यहेतुभिः ॥ कृष्णःप्रवर्त्तयामास गोवर्द्धनमहोत्सवम् १ भूसुराणांक्रियागर्वं निरस्यस्वःसुरेपुन ॥ मत्तन्मदभङ्गाय तन्मखंसमवारयत् २ चौबीसयें अध्यायमें हेतुओं से इन्द्रके यज्ञको मनाकर कृष्णजी गोवर्द्धन के महोत्सवको प्रवृत्त करतेभये १ और ब्राह्मणों की क्रियाके अभिमान को दूरकर इन्द्रके मदके भङ्गकरने के लिये इन्द्रकी यज्ञको नहीं कराते भये २)

युष्मन्मामःकर्म्मवर्त्मसु ५१ सवैनआद्यःपुरुषः स्वमायामोहितात्मनाम् ॥ अविज्ञातानुभावानां क्षन्तुमर्हत्यतिक्रमम् ५२ इतिस्वाघमनुस्मृत्य कृष्णेतेकृतहेलनाः ॥ दिदृक्षवोऽप्यच्युतयोः कंसाद्भीतानचाचलन् ५३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेयज्ञपत्न्युद्धरणंनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ भगवानपितत्रैव बलदेवेनसंयुतः ॥ अपश्यन्निवसन्गोपानिन्द्रयागकृतोद्यमान् १ तदभिज्ञोऽपिभगवान्सर्वात्मासर्वदर्शनः ॥ प्रश्रयाऽवनतोपृच्छद् वृद्धान्नन्दपुरोगमान् २ श्रीभगवानुवाच ॥ कथ्यतांमेपितःकोऽयं सम्भ्रमोवउपागतः ॥ किंफलंकस्यचोद्देशः केनवासाध्यतेमखः ३ एतद्ब्रूहिमहान्कामोमह्यंशुश्रूषवेपितः ॥ नहिगोप्यंहिसाधूनां कृत्यंसर्वात्मनामिह ४ अस्त्यस्वपरदृष्टीनाममित्रोदास्तविद्विषाम् ॥ उदासीनोऽरिवद्वर्ज्यआत्मवत्सुहृदुच्यते ५ ज्ञात्वाऽज्ञात्वाचकर्माणि जनोऽयमनुतिष्ठति ॥ विदुषःकर्मसिद्धिःस्यात्तथानाविदुषोभवेत् ६ तत्रतावत्क्रियायोगोभवतां किंविचारितः ॥ अथवालौकिकस्तन्मे पृच्छतःसाधुभण्यताम् ७ नन्दउवाच ॥ पर्जन्योभगवानिन्द्रो मेघास्तस्यात्ममूर्त्तयः ॥ तेऽभिवर्षन्तिभूतानां

श्रीशुकदेवजी कहे हैं श्रीकृष्णभगवान् भय्या बलदेव सहित ब्रज में वास करत भये इन्द्रके यज्ञ करिवे की त्यारी जिनने करी ऐसे गोपन कूं देखत भये १ समस्त जीवन के आत्मा भगवान् अर्थात् सबन में व्यापक याही ते सब बातन कों जानें ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो इन्द्रके यज्ञकी त्यारी होयरही है तथापि अधीनता सों नन्दरायजी जिनमें मुख्य ऐसे वृद्धगोपनसों पूंछतभये २ श्रीभगवान् कहे हे हे पिता ! तुमको कहा सम्भ्रम होय रह्योहै यह मेरे आगे कहो वृथा सम्भ्रम नहीं है यज्ञ होयगो ऐसे कदाचित् पिता कहैं ताको उत्तर श्रीकृष्णचन्द्र देइ हैं यज्ञको कहा फलहै और कौन देवता है कौन याके करिवे को अधिकारी है कौन वस्तुन ते यज्ञ होय है ३ यह तुम मोसूं कहो हे पिता ! मेरी सुनिवे की इच्छाहै या संसारमें सबके आत्मा ऐसे साधुहैं तिनको कर्म्म छिपायवे योग्य नहीं है ४ साधु के अपनो परायो यह दृष्टि नहीं है मित्र उदासीन वैरी भी जिनके नहीं हैं उदासीन तो शत्रुकी तुल्य वर्जितहै सुहृद्‌है सो आत्माकी तुल्य कहाहै याते मंत्रनमें वर्जित नहीं है ५ यह प्राणी जानिके और विना जानिके कर्म्म करे है परन्तु जानिके जो कर्म्म करे है वाकूं जो फल मिले है तैसे विना जाने कर्म्म करनवारे को नहीं मिले है ६ तहा यह जो तुम सब त्यारी यज्ञ

की करो हौ सो शास्त्रकी रीतिते करोहौ अथवा लोकरीतिते करोहौ यह मै पूंछूंहूं मेरे आगे भलेप्रकार कहो ७ पूर्व पुरुषनते चल्यो आयो है यह बात नन्दरायजी कहे हैं मेघरूप भगवान् इन्द्रहै मेघ वाकी प्यारी मूर्त्तिहैं वे मेघ प्राणीनके करनवारो जो जीवन जलहै ताकूं वर्षावेंहैं ८ हे पुत्र! मेघनको राजा ईश्वर इन्द्रहै ताय हम औरहू सम्पूर्ण पुरुष ताके जलते उत्पन्नभये जे अन्नहैं तिनसूं पूर्ण करे हैं ९ यज्ञकरे पीछे शेष जो अन्नहै तामूं जीविका करिके धर्म्म करे हैं और धर्म्म अर्थ काम इन कूं सेवनकरे हैं उद्यम करनवारे जे पुरुष हैं तिनकूं फलदाता इन्द्रही हैं १० जे पुरुष ऐसी परम्पराते चल्यो आयो जो धर्म्महै ताकूं काम लोभ भय द्वेष ते त्यागि देहैं वे कल्याणकूं नहीं पावे हैं ११ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार नन्दरायजी को वचन सुनिके और व्रजवासीनको वचन सुनिके इन्द्रके ऊपर क्रोध करिवे के लिये श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् पिताते बोलतभये १२ भगवान् कहेहैं कर्मनते जीव जन्मेहै और कर्मनतेही देह त्यागेहै और सुख दुःख भय कल्याण

तच्छेषेणोपजीवन्ति त्रिवर्गफलहेतवे ॥ पुंसां प्राणनंजीवनंपयः ८ तंतातवयमन्येच वार्मुचांपतिमीश्वरम् ॥ द्रव्यैस्तद्रेतसासिद्धैर्यजन्तेक्रतुभिर्नराः ९ तच्छेषेणोपजीवन्ति त्रिवर्गफलहेतवे ॥ पुंसां पुरुषकाराणां पर्जन्यःफलभावनः १० यएवंविसृजेद्धर्मं पारंपर्यागतंनरः ॥ कामाल्लोभाद्भयाद्द्वेषात्सवैनाप्नोतिशोभनम् ११ श्रीशुकउवाच ॥ वचो निशम्यनन्दस्य तथाऽन्येषांव्रजौकसाम् ॥ इन्द्रायमन्युंजनयन् पितरंप्राहकेशवः १२ श्रीभगवानुवाच ॥ कर्मणाजायतेजन्तुः कर्मणैवविलीयते ॥ सुखंदुःखंभयंक्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते १३ अस्तिचेदीश्वरःकश्चित्फलरूप्यन्यकर्मणाम् ॥ कर्त्तारंभजतेसोऽपि नह्यकर्तुःप्रभुर्हिसः १४ किमिन्द्रेणेहभूतानां स्वस्वकर्मानुवर्त्तिनाम् ॥ अनीशेनान्यथाकर्तुं स्वभावविहितंनृणाम् १५ स्वभावतन्त्रोहिजनः स्वभावमनुवर्तते ॥ स्वभावस्थमिदंसर्वं सदेवासुरमानुषम् १६ देहानुच्चावचाञ्जन्तुः प्राप्योत्सृजतिकर्मणा ॥ शत्रुर्मित्रमुदासीनःकर्मैवगुरुरीश्वरः १७ तस्मात्संपूजयेत्कर्म स्वभावस्थःस्वकर्मकृत् ॥ अञ्जसा येनवर्त्तेत तदेवास्यहिदैवतम् १८ आजीव्यैकतरंभावं यस्त्वन्यमुपजीवति ॥ नतस्माद्विन्दतेक्षेमं जारंनार्यसतीयथा १९ वर्त्तेतब्रह्मणाविप्रोराजन्योरक्षया भुवः ॥ वैश्यस्तुवार्त्तयाजीवेच्छूद्रस्तुद्विजसेवया २० कृषिवाणिज्यगोरक्षाकुसीदन्तुर्यमुच्यते ॥ वार्त्ताचतुर्विधातत्र वयंगोवृत्तयोऽनिशम् २१ सत्त्वंरज

१४ अपने अपने कर्म्मनके अनुसार कर्मनतेही पावे है १३ कर्म्मन के फलको देनवारो जो कोई और ईश्वरहै वह कर्म्म करे जो पुरुष ताहीकूं फल देइहै और जो कर्म्म नहीं करे ताकूं फल नहीं देइहै १४ जीव स्वभाव के वशहै और स्वभावही कूं वर्ते जे प्राणी हैं तिनकूं या संसारमें इन्द्रते कहा प्रयोजनहै मनुष्यनके पूर्वजन्मके संस्कारते रच्यो जो कर्म्म है ताकूं अन्यथा करिवे कूं इन्द्रहू असमर्थहै १५ जीव स्वभाव के वशहै और स्वभावही कूं वर्ते है देवता असुर मनुष्यन सहित यह समस्त विश्व स्वभाव में रहे है १६ कर्म्मनतेही यह जीव बड़े छोटे देहनकूं पाइके छोडे है कर्म्मही शत्रु मित्र उदासीन गुरु और ईश्वर है १७ तो कारण ते स्वभाव में स्थितहोय के अपने कर्म्मन कूं करे ऐसे पुरुष कर्म्म की पूजाकरे अनायासपूर्वक या पुरुष को निर्वाह होय वही याको देवता है १८ जो पुरुष एक पदार्थ को सेवन करिके दूसरे को सेवन करेहै याते यह पुरुष कल्याणकों नहीं पावे है—दृष्टान्त—जैसे व्यभिचारिणी स्त्री परपुरुष को सेवन करिके कल्याण को नहीं पावे है १९ ब्राह्मण वेद पढ़िके जीविका करे क्षत्रिय पृथ्वी

की रक्षा करिके और वैश्य व्यापार करिके शूद्र ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य की सेवाकरे २० खेती और वाणिज्य गौकी रक्षा करनो व्याज लेनो यह चार प्रकारकी वैश्यकी जीविकाहै तिन चारोंन में हमारे तो सदा गौवनकी जीविकाहै २१ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन तीनोन सूं विश्वको पालन उत्पत्ति नाश होयहै रजोगुण सूं स्त्री पुरुष मिलिके नानाप्रकार को जगत् उत्पन्न होइहै २२ रजोगुणके प्रेरे मेघ सर्वत्र जलकों वर्षावे है तिन जलन सूं प्रजा जीवे है इन्द्र कहा करैहै २३ हमारे पुर देश ग्राम घर कछु नहीं है हे पिता! वन हमारो घरहै और नित्य वननमें पर्व्वतन में बसेहैं २४ तातें गौ ब्राह्मण गोवर्द्धन पर्व्वत इनके यज्ञको प्रारम्भ करो ये इन्द्र के यज्ञकी सामग्री हैं तिन सूं यज्ञ करो २५ खीर ते आदि लेके दालिपर्य्यन्त अनेकप्रकार की सामग्री करो गेहूं की पूरी पुआ कचौरी गोभा करो सम्पूर्ण दूध इकठौरो करो २६ वेदके पढ़नवारे ब्राह्मणहैं ते भलेप्रकार होम करो तिन ब्राह्मणनको बहुत प्रकारकी सामग्री गौ दक्षिणा तुम देउ २७ और जो अन्य चाण्डालसूं

स्तमइति स्थित्युत्पत्त्यन्तहेतवः ॥ रजसोत्पद्यतेविश्वमन्योऽन्यंविविधंजगत् २२ रजसाचोदितामेघावर्षन्त्यम्बूनिसर्वतः ॥ प्रजास्तैरेवसिध्यन्तिमहेन्द्रःकिं करिष्यति २३ ननःपुरोजनपदानग्रामानगृहावयम् ॥ वनौकसस्तातनित्यंवनशैलनिवासिनः २४ तस्माद्गवांब्राह्मणानामद्रेश्चारभ्यतांमखः ॥ यइन्द्रया गसम्भारास्तैरयंसाध्यतांमखः २५ पच्यन्तांविविधाःपाकाः सूपान्ताःपायसादयः ॥ संयावापूपशष्कुल्यः सर्वदोहश्चगृह्यताम् २६ हूयन्तामग्नयःसम्यग्ब्रा ह्मणैर्ब्रह्मवादिभिः ॥ अन्नंबहुविधंतेभ्योदेयंवोधेनुदक्षिणाः २७ अन्येभ्यश्चाश्वचाण्डालपतितेभ्योयथाऽर्हतः ॥ यवसंचगवांदत्त्वागिरयेदीयतांबलिः २८ स्वलङ्कृताभुक्तवन्तःस्वनुलिप्ताःसुवाससः ॥ प्रदक्षिणञ्चकुरुतगोविप्रानलपर्व्वतान् २९ एतन्ममंततातक्रियतांयदिरोचते ॥ अयंगोब्राह्मणादीनां मह्यं चदयितोमखः ३० श्रीशुकउवाच ॥ कालात्मनाभगवता शक्रदर्पजिघांसता ॥ प्रोक्तंनिशम्यनन्दाद्याः साध्वगृह्णन्ततद्वचः ३१ तथाचव्यदधुःसर्वं य थाऽऽहमधुसूदनः ॥ वाचयित्वास्वस्त्ययनं तद्द्रव्येणगिरिद्विजान् ३२ उपहृत्यबलीन्सर्वानादृतायवसंगवाम् ॥ गोधनानिपुरस्कृत्यगिरिंचक्रुःप्रदक्षिणम् ३३ अनांस्यनडुद्युक्तानि तेचारुह्यस्वलङ्कृताः ॥ गोप्यश्चकृष्णवीर्याणि गायन्त्यःसद्विजाशिषः ३४ कृष्णस्त्वन्यतमंरूपं गोपविश्रम्भणंगतः ॥ शैलोऽस्मी

आदिलैके पतितपर्य्यन्त सबको यथायोग्य भोजन करावो गौवनकों घास देके गोवर्द्धन पर्वत कों बलिदेउ २८ सुन्दर आभूषण पहिरके भोजनकरिके शृंगार करिके गौ ब्राह्मण अग्नि पर्व्वतकी परिक्रमा करो २९ हे पिता! यह मेरो मत है जो तुमको अच्छालगै तो तुम करो यह यज्ञ गौ ब्राह्मण गोवर्द्धन पर्व्वतकूं प्यारोलगे ३० इन्द्रको गर्व दूरि करिवे के लिये कालरूप भगवान् को दयो सुनिके नन्दादिक समस्तव्रजवासी तिनको वचन भले प्रकार मानतभये ३१ जैसे मधुसूदन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने कह्यो तैसेही सब व्रजवासी करतभये स्वस्तिवाचन बँचायके सम्पूर्ण इन्द्रके यज्ञ की सामग्री सूं पर्व्वत द्विज ब्राह्मणनकू घासदेके आदरयुक्त व्रजवासी गौवनकूं आगे करिके गोवर्द्धन पर्व्वत की परिक्रमा देतभये ३२। ३३ वे व्रजवासी बन ठन के बैल जिनमें जुते ऐसे गाड़ान में चढ़िके और गोपी हैं तेऊ गाड़ानमें चढ़िके श्रीकृष्णचन्द्रकी लीलान कूं गावत ब्राह्मण आशीर्वाद देत परिक्रमा करतभये ३४ श्रीकृष्णचन्द्र सब व्रजवासीन सहित अपने रूपको आपही नम-

स्कार करतभये और यह कहत भये तुम देखो तो यह गोवर्द्धन पर्व्वतरूप धरिके हमारे ऊपर अनुग्रह करे है यह गोवर्द्धन पर्व्वत जे पुरुष वनमें रहिके याकी अवज्ञा करे हैं तिनकूं सर्पादिक को रूप धरिके मारे है याते हमारो भलोहोय गौवनको सुखहोय याते गोवर्द्धन पर्व्वत कूं नमस्कार करे हैं ३५ । ३६ । ३७ या प्रकार सम्पूर्ण गोप वासुदेव भगवान्की आज्ञा ते गोवर्द्धन पर्व्वत गौ ब्राह्मणको यज्ञ भलेप्रकार करिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं संग लैके व्रजकों आवतभये ३८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेइन्द्रमखभङ्गश्चतुर्विंशतितमोऽध्यायः २४ ॥ ॥

(पञ्चविंशेरुषाशक्रे व्रजनाशायवर्षति ॥ उद्धृत्यगिरिमाधारादरक्षद्गोकुलंप्रभुः १ पच्चीसवें अध्याय में क्रोधमें व्रजके नाशके लिये इन्द्रके वरसने में कृष्णजी गोवर्द्धन पर्व्वतको आधारसे उठाकर गोकुलकी रक्षा करतेभये १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! वह इन्द्र ता समय अपनी पूजाको लोप जानिके श्रीकृष्ण जिनके नाथ ऐसे नन्दरायजी सूं आदिलैके जे गोप हैं तिनपै कोप

तेभुरनुसूरि बलिमादद्भ्रुद्धपुः ३५ तस्मैनमोव्रजजनैः सहचक्रेऽऽत्मनाऽऽत्मने ॥ अहोपश्यतशैलोऽसौ रूपीनोऽनुग्रहंव्यधात् ३६ एपोऽवजानतोमर्त्यान्कामरूपीवनौकसः ॥ हन्तिह्यस्मैनमस्यामः शर्मणेआत्मनोगवाम् ३७ इत्यद्रिगोद्विजमखंवासुदेवप्रणोदिताः ॥ यथाविधायतेगोपाःसहकृष्णाव्रजंययुः ३८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेइन्द्रमखभङ्गश्चतुर्विंशतितमोऽध्यायः २४ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इन्द्रस्तदात्मनःपूजां विज्ञायविहतांनृप ॥ गोपेभ्यःकृष्णनाथेभ्योनन्दादिभ्यश्चुकोपसः १ गणंसांवर्त्तकंनाम मेघानांचान्तकारिणाम् ॥ इन्द्रःप्राचोदयत्क्रुद्धोवाक्यंचाहेशमान्युत २ अहोश्रीमदमाहात्म्यंगोपानांकाननौकसाम् ॥ कृष्णंमर्त्यमुपाश्रित्य येचक्रुर्देवहेलनम् ३ यथादृढैःकर्ममयैः क्रतुभिर्नामनौनिभैः ॥ विद्यामान्वीक्षिकींहित्वा तितीर्षन्तिभवार्णवम् ४ वाचालंबालिशंस्तब्धमज्ञंपण्डितमानिनम् ॥ कृष्णंमर्त्यमुपाश्रित्य गोपामेचक्रुरप्रियम् ५ एषांश्रियावलिप्तानां कृष्णेनाध्मापितात्मनाम् ॥ धुनुतश्रीमदस्तम्भं पशून्नयतसंक्षयम् ६ अहंचैरावतंनागमारुह्यानुव्रजेव्रजम् ॥ मरुद्गणैर्महावीर्यैर्नन्दगोष्ठजिघांसया ७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंमघवताऽऽज्ञप्तामेघानिर्मुक्तबन्धनाः ॥ नन्दगोकुलमासारैः पीडयामासुरोजसा ८

करतभयो १ प्रलय करनवारे सांवर्त्तक नाम मेघगण हैं ताकूं भेजत भयो मैं ईश्वर हूं वह जाके मनमें अभिमान वह इन्द्र यह वचन कहतभयो २ अहो बड़ो आश्चर्य है वनके रहनवारे गौवन के चरावनवारे ग्वालजाति तिनके कैसो धन को मद भयो है ये ग्वाल जो मनुष्य कृष्ण है ताको आश्रय लैके मो देवता को अपराध करयो ३ जो दृढ नाम करिके नाव की तुल्य ये कर्ममय यज्ञ है तिनसूं आत्मा को कल्याण होय या विद्या कों छोडिके संसार समुद्र के पार अनायास लग्यो चाहे है ४ ये गोप वाचाल मूर्ख काहू को माने नहीं अज्ञानी अपने को पण्डित माने ऐसे मनुष्य श्रीकृष्णचन्द्र को आश्रय लैके मेरी अवज्ञा करत भये ५ ये गोप लक्ष्मी सूं मतवारे कृष्णने जिनके देह पुष्ट करे इनको धनमद भयो है ताय दूरि करि देउ और इनके पशून को नाश करि देउ ६ मैं भी ऐरावत हाथी पै चढिके बड़े पराक्रमी मरुद्गण देवतान कूं संग लैके नन्दके व्रजको नाश करिवे के लिये व्रजमें तुम्हारे पीछेही आऊं हूं ७ शुकदेवजी कहे हैं या प्रकार इन्द्रने जिनकों आज्ञा करी

रस्सा जिनके खोलि दिये वे मेघ नन्दराय के गोकुल में वल ते बड़ी वर्षा करिके पीडा देतभये ८ बिजली जिनमें चमके गर्जन सों शब्द करें तीव्र मरुद्गणनने चलायमान करे ऐसे बादर जलके कंकर ओलेन की वर्षा करत भये ९ थूनी के तुल्य स्थूल वर्षा की धारा वारंवार बादरनमें ते वर्षा जल के समूह जे उमड़े तिनसूं पृथ्वी डूबि गई ऊंचे नीचे गाड गढेला कछु न दिखाई देत भये १० बड़ी वर्षा वड़े पवन सों भयो है कँपकँपाहट जिन के ऐसे पशु और गोप गोपी हैं ते शीत सों दुःखित होय के गोविन्द कृष्ण की शरण लेतभये ११ जलकी धारा ने वर्षा तिनसूं पीड़ित होय के गौ शिरनकूं नीचे करिके और बछरान कों छाती के नीचे करिके कम्पित भगवान् के चरण के समीप जात भई १२ हे कृष्ण २ ! हे महाभाग! हे समर्थ ! हे भक्तन के ऊपर हित के करन वारे ! तुमहीं जाके नाथ ऐसे गोकुल कूं और हम कूं क्रोधी जो इन्द्र हैं ताते रक्षा करो १३ बड़ी २ शिला जो वर्षी तासूं पीड़ित अचेतन गोकुल कूं देखि के रात के दुःखन के हरनवारे श्रीकृष्ण

निद्योतमानाविद्युद्भिः स्तनन्तःस्तनयित्नुभिः ॥ तीव्रैर्मरुद्गणैर्नुन्नाववृषुर्जलशर्कराः ९ स्थूणास्थूलावर्षधारामुञ्चत्स्वभ्रेष्वभीक्ष्णशः ॥ जलौघैःप्लाव्यमाना भूर्नादृश्यतनतोन्नतम् १० अत्यासारातिवातेन पशवोजातवेपनाः ॥ गोपागोप्यश्चशीतार्तागोविन्दंशरणंययुः ११ शिरःसुतांश्च कायेन प्रच्छाद्यासारपीडिताः ॥ वेपमानाभगवतः पादमूलमुपाययुः १२ कृष्णकृष्णमहाभागत्वन्नाथंगोकुलंप्रभो ॥ त्रातुमर्हसिदेवान्नः कुपिताद्भक्तवत्सल १३ शिलावर्षनिपातेन हन्यमानमचेतनम् ॥ निरीक्ष्यभगवान्मेने कुपितेन्द्रकृतंहरिः १४ अपर्त्वत्युल्बणंवर्षमतिवातंशिलामयम् ॥ स्वयागेनिहतेऽस्माभिरिन्द्रोनाशायवर्षति १५ तत्रप्रतिविधिंसम्यगात्मयोगेनसाधये ॥ लोकेशमानिनांमौढ्याद्धरिष्येश्रीमदन्तमः १६ नहिसद्भावयुक्तानां सुराणामीशविस्मयः ॥ मत्तोऽसतांमानभङ्गः प्रशमायोपकल्पते १७ तस्मान्मच्छरणंगोष्ठंमन्नाथंमत्परिग्रहम् ॥ गोपायेस्वात्मयोगेन सोऽयंमेव्रत आहितः १८ इत्युक्त्वैकेनहस्तेन कृत्वागोवर्धनाचलम् ॥ दधारलीलयाकृष्णश्छत्राकमिवबालकः १९ अथाहभगवान्गोपान्हेऽम्बतातव्रजौकसः ॥ यथोपजोषंविशत गिरिगर्तंसगोधनाः २०

भगवान् क्रोधी इन्द्र को कर्तव मानत भये १४ ऋतु विना भयानक शिलामय वर्षा भई और पवन चले सो हमने इन्द्र को यज्ञ मेटि दियो तासूं इन्द्र हमारे नाश के लिये वर्षावे है १५ ता वर्षा के दूरि करिने को उपाय अपनी सामर्थ्य सूं रचूंगो और अज्ञान ते अपने को लोकन के ईश्वर माने जे इन्द्रादिक देवता हैं तिनकूं मद ते जो अज्ञान भयो है ताय दूरि करोंगो १६ मेरी भक्ति अथवा सत्त्वगुण जिन देवतान के है तिनके हमहीं ईश हैं यातें ये असाधु हैं असाधुन को मेरे मान खण्डन होय है ताही में उनको भलो है १७ ता कारण ते मेरी शरण आयो और मैंहीं जाको नाथ मेरो परिकर ऐसो यह व्रज है ताकी अपने योगबलते रक्षा करूंगो यह मैंने सङ्कल्प करो है १८ ऐसे कहि के एक हाथ ते गोवर्द्धन पर्व्वत कूं उखारि के लीला करिके श्रीकृष्णचन्द्र उठावत भये जैसे बालक छतोना कूं उठावे है १९ पर्व्वत उठाये पीछे भगवान् श्रीकृष्ण गोपन ते कहत भये हे मैया ! हे पिता ! हे व्रजवासियो ! गौअन कूं लेले के सुख सों पर्व्वतके नीचे आय जावो २०

मेरे हाथ ते पर्व्वत गिरि परेगो हम दबि जायँगे ऐसो भय तुम मति मानो पवन वर्षा के भय ते डरपो मति तुम्हारी मैंने रक्षा करीहै २१ श्रीकृष्णने भरोसो जिनकूं दियो वे व्रजवासी गौ गाड़ा पुरोहितन कूं संग लैके आनन्दपूर्व्वक पर्व्वत के नीचे गढ़ेला में बसत भये २२ भूख प्यासको दुःख और सुखकी चाहना त्यागि के व्रजवासी ठाढ़े देखो करें सातदिन पर्य्यन्त पर्वत कू धारण करतभये और जहाँ ठाढ़े तहाँ ते तनकहूं न डिगत भये २३ इन्द्र श्रीकृष्णचन्द्र के प्रभाव कों सुनिके अति आश्चर्य्य मानि के गर्व जाको दूरि भयो नहीं सिद्ध भयोहै मनोरथ जाको ऐसो इन्द्र अपने मेघन कूं मने करत भयो २४ बादर जामें दूर होय गये सूर्य्य उदय होय आयो ऐसे आकाश कों देखिके भयानक पवन वर्षा कों थम्यो देखि के गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्ण गोपन ते बोलत भये २५ हे गोपो! स्त्री धन बालकन कूं लैके तुम या पर्व्वत के नीचेते निकसो भयको त्यागो अब पवन वर्षा थमिगई नदीनके जलहू उतरिगये २६ श्रीकृष्ण ने इतनी बात कही ताके पीछे गोप अपने२

नत्रासइहवः कार्योमद्धस्तादिनिपातने ॥ वातवर्षभयेनालं तत्त्राणंविहितंहिवः २१ तथानिर्विविशुर्गर्तं कृष्णाश्वासितमानसाः ॥ यथावकाशंसधनाः सव्रजाःसोपजीविनः २२ क्षुत्तृड्व्यथांसुखापेक्षां हित्वातैर्व्रजवासिभिः ॥ वीक्ष्यमाणोदधाद्रिं सप्ताहंनाचलत्पदात् २३ कृष्णयोगानुभावंतंनिशाम्येन्द्रोऽतिविस्मितः ॥ निःस्तम्भोभ्रष्टसङ्कल्पःस्वान्मेघान्संन्यवारयत् २४ खंव्यभ्रमुदितादित्यंवातवर्षंचदारुणम् ॥ निशाम्योपरतंगोपान्गोवर्द्धनधरोऽब्रवीत् २५ निर्यातत्यजतत्रासं गोपाःसस्त्रीधनार्भकाः ॥ उपारतंवातवर्षं व्युदप्रायाश्चनिम्नगाः २६ ततस्तेनिर्ययुर्गोपाः स्वंस्वमादायगोधनम् ॥ शकटोढोपकरणं स्त्रीबालस्थविराःशनैः २७ भगवानपितंशैलं स्वस्थानेपूर्ववत्प्रभुः ॥ पश्यतांसर्वभूतानां स्थापयामासलीलया २८ तंप्रेमवेगान्निभृताव्रजौकसो यथासमीयुः परिरम्भणादिभिः ॥ गोप्यश्चसस्नेहमपूजयन्मुदा दध्यक्षताद्भिर्युयुजुःसदाशिषः २९ यशोदारोहिणीनन्दोरामश्चबलिनांवरः ॥ कृष्णमालिङ्ग्ययुयुजुराशिषःस्नेहकातराः ३० दिविदेवगणाःसाध्याः सिद्धगन्धर्वचारणाः ॥ तुष्टुवुर्मुमुचुस्तुष्टाः पुष्पवर्षाणिपार्थिव ३१ शङ्खदुन्दुभयोनेदुर्दिविदेवप्रणोदिताः ॥ जगुर्गन्धर्वपतयस्तुम्बुरुप्रमुखानृप ३२ ततोऽनुरक्तैःपशुपैःपरिश्रितोराजन्स्वगोष्ठंसबलोव्रजद्धरिः ॥ तथाविधान्यस्यकृतानिगोपिका गायन्त्यईयुर्मुदिता

गौधन के समूहन कूं लैके और गाड़ान में सब वस्तुधरिके स्त्री बालक वृद्ध सब हौले हौले निकसतभये २७ समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं सो भी ता पर्व्वत कूं अपने ठिकाने पै पहिलेकी तुल्य समस्त प्राणिन के देखते लीला करिके धरतभये २८ प्रेम ते भरे व्रजवासी सम्मुख आयके जैसो जाकूं उचितहो तैसे मिलतभये और स्नेह भरी जे गोपी तेऊ आनन्द सों दही अक्षत जलन सूं पूजा करत आशीर्वाद देतभई २९ यशोदाजी रोहिणीजी नन्दरायजी और बलिन में बलवान् श्रीबलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र कूं छाती ते लगाय स्नेह ते कायर होय के आशीर्वाद देतभये ३० शुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित्! स्वर्ग में देवतानके गण साध्यगण सिद्ध गन्धर्व्व चारण सन्तुष्टहोयके फूलनकी वर्षा करतभये ३१ हे राजन् परीक्षित्! स्वर्ग के देवता शङ्ख नगारे बजावत भये और तुंबुरु जिनमें मुख्य ऐसे गन्धर्वपति गावतभये ३२ ता पीछे हे राजन् परीक्षित्! बलदेवसहित श्रीकृष्णचन्द्र प्यारे मित्रन कूं संगलैके व्रज में आवतभये और आनन्द जिनके भयो ऐसी गोपीन के

हृदय कूं आनन्द देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र के गोवर्द्धन उठाइवे ते आदिलेके चरित्रन कूं गावतभई ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोवर्द्धनोद्धरणंनामपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥
(षड्विंशेविस्मितान्गोपान्कृष्णस्याद्भुतकर्मभिः ॥ नन्दोगर्गोक्तिमाश्राव्यतदैश्वर्यमवर्णयत् १ छब्बीसयें अध्याय में नन्दजी कृष्णजी के अद्भुत कर्मोंसे विस्मययुक्त गोपों को गर्गजी के वचन सुनाकर कृष्णजी के ऐश्वर्यको वर्णन करते भये १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! गोपहैं ते गोवर्द्धन उठायवेकूं आदिलेके जे श्रीकृष्णचन्द्र के कर्म्म हैं तिन्हें देखिके प्रभाव जानि के व्रजवासी बड़ो आश्चर्य्य मानिके नन्दरायजी के पास आय के बोलत भये १ या बालकके बड़े अद्भुत चरित्र हैं और ग्रामके रहनवारे हम तिनके आयके अपने योग्य नहीं ऐसो जन्म कैसे लियो है २ जो सात वर्षको बालक एक हाथ ते लीला करिके हाथी जैसे कमलकूं उठावे है तैसे पर्व्वतकूं उठाय के कैसे ठाढ़ो होतभयो ३ नेत्रहू तब तो नहीं खोले ऐसे छोटे से बालक ने बड़ो जाको वेग

हृदिस्पृशः ३३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोवर्द्धनोद्धरणंनामपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एवंविधानिकर्माणि गोपाःकृष्णस्यवीक्ष्यते ॥ अतद्वीर्यविदःप्रोचुःसमभ्येत्यसुविस्मिताः १ बालकस्ययदेतानि कर्माण्यत्यद्भुतानि वै ॥ कथमर्हत्यसौजन्म ग्राम्येष्वात्मजुगुप्सितम् २ यःसप्तहायनोबालः करेणैकेनलीलया ॥ कथंबिभ्रद्गिरिवरं पुष्करंगजराडिव ३ तोकेनामीलिताक्षेण पूतनायामहौजसः ॥ पीतःस्तनःसहप्राणैः कालेनेववयस्तनोः ४ हिन्वतोऽधःशयानस्य मास्यस्यचरणावुदक् ॥ अनोऽपतद्विपर्यस्तं रुदतःप्रपदाहतम् ५ एकहायनआसीनो ह्रियमाणोविहायसा ॥ दैत्येनयस्तृणावर्त्तमहन्कण्ठग्रहातुरम् ६ क्वचिद्धैयङ्गवस्तैन्ये मात्राबद्धउलूखले ॥ गच्छन्नर्जुनयोर्मध्ये बाहुभ्यांतावपातयत् ७ वनेसंचारयन्वत्सान्सरामोबालकैर्वृतः ॥ हन्तुकामंबकंदोर्भ्यां मुखतोऽरिमपाटयत् ८ वत्सेषुवत्सरूपेण प्रविशन्तंजिघांसया ॥ हत्वान्यपातयत्तेन कपित्थानिचलीलया ९ हत्वारासभदैतेयं तद्बन्धूंश्चबलान्वितः ॥ चक्रेतालवनंक्षेमं परिपक्कफलान्वितम् १० प्रलम्बंघातयित्वो

वा पूतना के स्तनको प्राणसहित कैसे पीवतभयो जैसे काल देह जीवन अथवा आयुर्बलकूं पीवेहै ४ तीन महीना को गाड़ानके नीचे पालनेमें सोयो रोवत रोवत चरणनकों ऊँचो उछारो चरणकी ठोकर लगिके गाडो उलटिके कैसे गिरत भयो ५ एक वर्ष दिन को यह कृष्ण ऑगनमें बैठ्योहो दैत्य तृणावर्त्त आकाशमें हरिके लैगयो ता दैत्य को गरो घोटि कैसे मारत भयो ६ कभऊँ एक माखन चुरायो हो तब माता यशोदा ने उलूखल सों बॉध्यो तब यमलार्ज्जुन वृक्ष के बीच में आय के हाथन ते उनको कैसे उखारि के डारत भयो ७ वन में बलदेव और बालकों सहित बछरा चरावत रहो ता समय बकासुर मारिबे कों आयो ताकों दोनों हाथन ते चोंच पकरिके कैसे चीर डारत भयो ८ बछरान में बछरा को रूप धरिके मारिबे की इच्छा करिके आयो जो वत्सासुरहै ताकूं मारि के वाके देह ते लीला करिके कैथ के वृक्ष पै कैसे पटकत भयो ९ बलदेवसहित धेनुकासुर दैत्यको मारि और वाके संग के बन्धून कों मारि के फल जामें पकि रहे वा तालवन में कल्याण करतभये १०

बड़े बलवान् बलदेव जी हे तिन पे भयानक मलम्बासुर दैत्य कों मरवाय के और वन में आगि लगी ताते व्रज के पशून कूं और गोपन कूं छुड़ावत भये ११ अतिभयानक जाको विष ऐसे काली सर्प को दण्ड देके वाके मदकूं दूरि करिके जोरावरी दह में ते निकासि के यह श्रीकृष्ण यमुना कूं निर्विष करत भयो १२ हे नन्द ! हम सब व्रजवासीन कों अतिअनुराग है अर्थात् ऐसो प्यार है कैसोहू छुड़ावो न जाय और ता कृष्णहू को हम में स्वाभाविक प्यार कैसो है अर्थात् यह कृष्ण सबको आत्मा है यह शंका होय है १३ सातवर्ष को बालक कहा इतनो बड़ो पर्व्वत उठावै ताते हे व्रजनाथ ! तेरे पुत्रमें हमकूं शंका होइ है कदाचित् परमेश्वर न होइ १४ या मकार गोपन की वार्त्ता सुनि के नन्दराय जी बोले हे गोपो ! मेरी बात सुनो तासूं या बालक में ते तुम्हारी शंका जाय गर्गाचार्य्य या बालक को नाम धरिके मो को जे जे गुण बताय गये हैं ते ते श्रवण करो १५ या बालक के तीन रंग होत भये और युग युग में देह धरे हैं पहिले जाको

ग्रं बलेनबलशालिना ॥ अमोचयद्व्रजपशून् गोपांश्चारण्यवह्नितः ११ आशीविषतमाहीन्द्रं दमित्वाविमदं ह्रदात् ॥ प्रसह्योद्वास्ययमुनांचक्रेऽसौनिर्विषोदकाम् १२ दुस्त्यजश्चानुरागोऽस्मिन् सर्वेषांनोव्रजौकसाम् ॥ नन्दतेतनयेऽस्मासु तस्याप्यौत्पत्तिकःकथम् १३ कसप्तहायनोबालः क्वमहाद्रिविधारणम् ॥ ततोनोजायतेशङ्का व्रजनाथतवात्मजे १४ नन्दउवाच ॥ श्रूयतांमेवचोगोपाव्येतुशङ्काचवोऽर्भके ॥ एनंकुमारमुद्दिश्य गर्गोमेयदुवाचह १५ वर्णास्त्रयःकिलास्यासन् गृह्णतोऽनुयुगंतनूः ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगतः १६ प्रागयंवसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः ॥ वासुदेवइतिश्रीमानभिज्ञाःसंप्रचक्षते १७ बहूनिसन्तिनामानि रूपाणिचसुतस्यते ॥ गुणकर्म्मानुरूपाणि तान्यहंवेदनोजनाः १८ एषवःश्रेयआधास्यद्गोपगोकुलनन्दनः ॥ अनेनसर्वदुर्गाणि यूयमञ्जस्तरिष्यथ १९ पुरानेनव्रजपते साधवोदस्युपीडिताः ॥ अराजकेरक्ष्यमाणा जिग्युर्दस्यून्समेधिताः २० यएतस्मिन्महाभागाः प्रीतिंकुर्वन्तिमानवाः ॥ नारयोऽभिभवन्त्येतान्विष्णुपक्षानिवासुराः २१ तस्मान्नन्दात्मजोऽयन्ते नारायणसमोगुणैः ॥ श्रियाकीर्त्यानुभावेन तत्कर्मसुनविस्मयः २२ इत्यद्धामांसमादिश्य गर्गेचस्वगृहंगते ॥ मन्येनारायणस्यांशं कृष्णमक्लिष्टकारिणम् २३ इतिनन्दवचःश्रुत्वा गर्गगीतंव्रजौक

श्वेतवर्ण हो फिर रक्तवर्ण हो फिर श्यामवर्ण हो अब जाने कृष्ण रूप धरो है १६ यह तुम्हारो पुत्र पहिले कबहूँ वसुदेव के जन्मो है याते जे कोई जाने हैं ते वासुदेव कहे हैं १७ तुम्हारे पुत्र के नाम बहुत हैं और रूपहू बहुत हैं जैसे जैसे यामें गुण होयँगे तैसे तैसे कर्म्म करेगो तिनके अनुसार नाम होयँगे १८ यह तुम्हारो कल्याण करेगो और गोपन कूं गौवन कू आनन्द देइगो या कृष्ण की सहाय ते तुम समस्त कष्टन ते सहज में छूटि जाउगे १९ हे व्रजराज ! पहिले तुम्हारे पुत्र कृष्ण ने राजारहित पृथ्वी में चोरन ने सताये जे साधु तिनकी रक्षा करी तब साधु वृद्धि कू माप्त होय के चोरन कूं जीतत भये २० जे बड़भागी पुरुष या कृष्ण में मीति करे हैं तिनकूं वैरी नहीं सतावे हैं जैसे विष्णु जिनके रक्षा करनवारे ऐसे देवतानकूं असुर नहीं सतावे हैं २१ ता कारण ते हे नन्द ! तुम्हारो यह पुत्र गुणन में शोभा में कीर्त्ति करिके मभाव करिके नारायण की तुल्य है याके कर्म्मन में आश्चर्य्य मत मानियो २२ या मकार साक्षात् गर्गाचार्य्य मो ते

कहिके अपने घरको चले गये वा दिन ते दुःख जिनमें न होय ऐसे कर्म्मन कूं करत जो श्रीकृष्ण है ताकों नारायण को अंश मानूं हूं २३ या प्रकार व्रजवासी गर्गाचार्य्य को कह्यो नन्द जी को वचन सुनिके प्रसन्न होय के नन्द जी को पूजन करतभये और श्रीकृष्ण में ते शंका उनकी दूरि भई २४ यज्ञ को जो नाश है ताते क्रोध करिके इन्द्र ने वर्षा करी ता समय वज्र पत्थर पवन सूं पीड़ित ग्वालबाल पशु स्त्रीन कूं अपनी शरण आयो देखि के दया जिन को आय गई ऐसे श्रीकृष्ण मुसिकाय के बालक जैसे छतोना कूं उखार लेय है ऐसे एक हाथ सों गोवर्द्धन पर्व्वत कूं उखारि के धारण करिके व्रज की रक्षा करत भये इन्द्र के मद के दूरि करनवारे गौवन के इन्द्र श्रीकृष्ण हमारे ऊपर प्रसन्न होउ २५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोपसंशयनोदनंनामषड्विंशतितमोऽध्यायः २६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

सः ॥ दृष्टश्रुतानुभावास्ते कृष्णस्यामिततेजसः ॥ मुदितानन्दमानर्चुः कृष्णंचगतविस्मयाः २४ देवेवर्षतियज्ञविप्लवरुषा वज्राश्मपर्षानिलैः सीदत्पाल पशुस्त्रियात्मशरणंदृष्ट्वाऽनुकम्प्युत्स्मयन् ॥ उत्पाट्यैककरेणशैलमबलोलीलोच्छिलीन्ध्रंयथा बिभ्रद्गोष्ठमपान्महेन्द्रमदभित्प्रीयान्नइन्द्रोगवाम् २५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोपसंशयनोदनंनामषड्विंशतितमोऽध्यायः २६ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ गोवर्द्धनेधृतेशैलआसाराद्रक्षितेव्रजे ॥ गोलोकादाव्रजत्कृष्णं सुरभिःशक्रएवच १ विविक्तउपसङ्गम्य व्रीडितःकृतहेलनः ॥ पस्पर्शपादयोरेनं किरीटेनार्कवर्चसा २ दृष्टश्रुतानुभावोऽस्य कृष्णस्यामिततेजसः ॥ नष्टत्रिलोकेशमदइन्द्रआहकृताञ्जलिः ३ इन्द्रउवाच ॥ विशुद्धसत्त्वंतव धामशान्तं तपोमयंध्वस्तरजस्तमस्कम् ॥ मायामयोऽयंगुणसंप्रवाहोनविद्यतेतेऽग्रहणानुबन्धः ४ कुतोनुतद्धेतवईशतत्कृतालोभादयोयेऽबुधलिङ्गभावाः ॥ तथाऽपिदण्डंभगवान्बिभर्ति धर्मस्यगुप्त्यैखलनिग्रहाय ५ पितागुरुस्त्वंजगतामधीशो दुरत्ययःकालउपात्तदण्डः ॥ हितायस्वेच्छातनुभिःसमीहसे

(सप्तविंशेतदालक्ष्य कृष्णस्यप्रभवंपरम् ॥ वर्ण्यतेसुरभीन्द्राभ्यामभिषेकमहोत्सवः १ सत्ताईसवें अध्याय में कृष्णजी के श्रेष्ठ जन्म को देखकर सुरभी और इन्द्र से अभिषेकका महान् उत्सव वर्णित है १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णने गोवर्द्धन पर्व्वत उठायके व्रजकी रक्षाकरी तब स्वर्गलोकते सुरभी गौ और इन्द्रलोकते इन्द्र श्रीकृष्णके पास आवतभये? कियो है अपराध जाने याही ते लज्जित जो इन्द्र है सो एकान्त में आयके सूर्य्यकेसो जाको तेज ऐसे किरीट कों श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द सूं लगावत भयो २ नहीं प्रमाण करिवे में आवै तेज जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को प्रभाव जा प्रकार काननते श्रवण कर्यो हो ताही प्रकार नेत्रनते देखो ता समय त्रिलोकी को ईश्वर मैं हूं यह मद जाकों जातरह्यो वह इन्द्र हाथ जोरि के बोलत भयो ३ इन्द्र कहे हैं तुम्हारो स्वरूप शुद्ध सत्त्वगुणी है शान्त है अर्थात् एकरूप है सर्वज्ञ है रजोगुण तमोगुण जामें नहीं है माया को कार्य अज्ञान सूं जीवन को लगिरह्यो जो संसारहै सो तुम्हारे स्वरूप में नहीं है ४ हे ईश! देहसम्बन्ध तुमको नहीं है तो ता देहसम्बन्ध ते होई और फिर देह कहे कारण ऐसे जे काम लोभादिक हैं ते कहां ते होयँगे ऐसे कामलोभादिक तो अज्ञानी कों

होइ हैं तुम्हारे काम लोभादिक तो नहींहैं तथापि धर्म्मकी रक्षा करिवे के लिये और दुष्टन के मद दूरि करिवे के लिये तुम दण्ड देउहो ५ तुम जगत् के पिताहो गुरुहो ईश्वरहो जाको नाश नहीं ऐसे दण्ड के ग्रहण करनवारे कालरूप हो जीवन के हित करिवे के लिये और आप कूं जगदीश्वर माने हैं तिनके मान दूरि करिवे के लिये अपनी इच्छा सूं रूप धरिके लीला करो हो तुम्हारी लीलाही में हमारे मान दूरि होय जाय हैं ६ जो मो सारिखे अज्ञानी आपे कूं जगत् के ईश्वर माने हैं ते भय के समय भय के दूर करनवारे तुमहो तिनको दर्शन करिके शीघ्रही ईश्वरत्व को मद त्यागे हैं और गर्व्व को छोड़िके तुम्हारी भक्ति कूं करे हैं तुम्हारी सहजकी चेष्टा है सोई दुष्टन कों दण्डरूप है ७ हे समर्थ ! ऐश्वर्य के मद में डूबिरह्यो तुम्हारे प्रभावकूं न जानिके तुम्हारो अपराध कियो ऐसो मूढ़चित्त जो मैं हूं ताके ऊपर क्षमाकरो हे ईश्वर ! फिरि मेरी ऐसी बुद्धि न होइ यह मैं प्रार्थना करूं हूं ८ हे अधोक्षज अर्थात् इन्द्रियन करि जानिवे में नहीं आवो ! हे देव

मानंविधुन्वञ्जगदीशमानिनाम् ६ येमद्विधाज्ञाजगदीशमानिनस्त्वांवीक्ष्यकालेऽभयमाशुतन्मदम् ॥ हित्वाऽर्यमार्गंप्रभजन्त्यपस्मयाईहाखलानाम
पितेऽनुशासनम् ७ सत्वंममैश्वर्यमदप्लुतस्य कृतागसस्तेऽविदुषःप्रभावम् ॥ क्षन्तुंप्रभोऽथार्हसिमूढचेतसोमैवंपुनर्भून्मतिरीशमेऽसती ८ तवावतारोऽयमधो
क्षजेह स्वयंभराणामुरुभारजन्मनाम् ॥ चमूपतीनामभवायदेव भवाययुष्मच्चरणानुवर्त्तिनाम् ६ नमस्तुभ्यंभगवते पुरुषायमहात्मने ॥ वासुदेवायकृष्णाय
सात्वतांपतयेनमः १० स्वच्छन्दोपात्तदेहाय विशुद्धज्ञानमूर्त्तये ॥ सर्वस्मैसर्वबीजाय सर्वभूतात्मनेनमः ११ मयेदंभगवन्गोष्ठनाशायासारवायुभिः ॥ चे
ष्टितंविहतेयज्ञे मानिनातीव्रमन्युना १२ त्वयेशानुगृहीतोऽस्मि ध्वस्तस्तम्भोवृथोद्यमः ॥ ईश्वरंगुरुमात्मानं त्वामहंशरणंगतः १३ श्रीशुकउवाच ॥ ए
वंसङ्कीर्त्तितःकृष्णो मघोनाभगवानमुम् ॥ मेघगम्भीरयावाचा प्रहसन्निदमब्रवीत् १४ श्रीभगवानुवाच ॥ मयातेऽकारिमघवन् मखभङ्गोऽनुगृह्णता ॥ म
दनुस्मृतयेनित्यं मत्तस्येन्द्रश्रियाभृशम् १५ मामैश्वर्यश्रीमदान्धोदण्डपाणिंनपश्यति ॥ तंभ्रंशयामिसम्पद्भ्यो यस्यचेच्छाम्यनुग्रहम् १६ गम्यतांशक्रभ

अर्थात् प्रकाशवान् ! या संसार में तुम्हारो जो अवतार है सो पृथ्वी को भार और बड़ो भार जिनते होय ऐसे सेना के पालन करनवारे जे मुख्य हैं तिनके मारिवे के कारण और तुम्हारे चरणन के सेवन करनवारे जे भक्त तिनके कल्याण के निमित्त आप हो ९ तुम जो भगवान् महात्मा पुरुष हो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है शुद्ध अन्तःकरण के प्रकाशक भक्तनके रक्षक वासुदेव भगवान् ! श्रीकृष्ण जो तुमहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है १० अपने भक्तनके ऊपर कृपा करिवे के लिये देह जिनने धरो और शुद्ध ज्ञानरूपी जिनकी मूर्ति सर्वरूप सबके कारण सब प्राणीन के आत्मा जो तुमहो सो तुमकूं नमस्कार है ११ हे भगवन् ! जब यज्ञ नाशकूं प्राप्तभयो तब बड़ो जाके क्रोध ऐसो अभिमानी जो मैं हूं ताने व्रज के नाश करिवेके लिये वर्षा करिके पवन चलाय के करिवे योग्य नहीं हो सो करो १२ तुमने मोपै अनुग्रह करो मेरो गर्व्व दूरिहोय गयो उद्यम हू वृथा भयो सबके ईश्वर आत्मा गुरु जो तुमहो तिनकी मैं शरण प्राप्तभयो १३ या प्रकार इन्द्र ने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुतिकरी तब हँसिके मेघकी तुल्य गर्जे के इन्द्र ते बोलतभये १४ भगवान् कहे हैं हे इन्द्र ! मैंने तेरे ऊपर अनुग्रह करिवे के लिये तू नित्यही इन्द्रकी शोभा करिके भूलि

रख्यो हो ताकूं सुधि करायवे के लिये मैं तेरे यज्ञको नाश करतभयो १५ ऐश्वर्य्यमद धनमद सूं आंधरो जो पुरुष है सो दण्डको देनवारो जो मैं हूं ताकूं नहीं देखे है जाके ऊपर मैं कृपा करिवे की इच्छा करूं हू ता पुरुषकी सम्पत्ति हरिलेउ हूं १६ हे इन्द्र ! अब तुम जावो तुम्हारो कल्याण हो अहंकार त्यागि के मेरी आज्ञा कूं करियो सावधान होके अपने अधिकार पै रहो १७ इन्द्र स्तुति करिचुको ताके पीछे उदार जाको चित्त ऐसी सुरभी गौ अपनी सन्तानसहित आयके गोपरूपी जो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकों नमस्कार करिके सम्बोधन देके बोलत भई १८ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! हे विश्वकेआत्मा ! हे विश्वके उपजावनवारे ! हे अच्युत अर्थात् हे अखण्डरूप ! इन्द्रने तो हमें मारेही है परन्तु हे लोकनकेनाथ ! तुमने बचाये १९ हे जगत्‌केपति ! तुम हमारे श्रेष्ठ देवताहो और तुमहीं गौ ब्राह्मण के देवताहो और जे साधु हैं तिनके कल्याण के लिये हमारे इन्द्र होउ २० ब्रह्माके प्रेरे हम तुम्हें अपने इन्द्र अभिषेक करेंगे हे विश्वके आत्मा ! पृथ्वी

द्रंवः क्रियतांमेऽनुशासनम् ॥ स्थीयतांस्वाधिकारेषु युक्तैर्वःस्तम्भवर्जितैः १७ अथाहसुरभिःकृष्णमभिवन्द्यमनस्विनी ॥ स्वसन्तानैरुपामन्त्र्य गोपरूपिण मीश्वरम् १८ ॥ सुरभिरुवाच ॥ कृष्णकृष्णमहायोगिन् विश्वात्मन्विश्वसंभव ॥ भवतालोकनाथेन सनाथावयमच्युत १९ त्वंनःपरमकन्दैवं त्वंनइन्द्रोज गत्पते ॥ भवायभवगोविप्रदेवानांयेचसाधवः २० इन्द्रंनस्त्वाऽभिपेक्ष्यामोब्रह्मणानोदितावयम् ॥ अवतीर्णोऽसिविश्वात्मन् भूमेर्भारापनुत्तये २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंकृष्णमुपामन्त्र्य सुरभिःपयसाऽऽत्मनः ॥ जलैराकाशगङ्गाया ऐरावतकरोद्धृतैः २२ इन्द्रःसुरर्षिभिःसार्कंनोदितोदेवमातृभिः ॥ अभ्य षिञ्चतदाशार्हं गोविन्दइतिचाभ्यधात् २३ तत्रागतास्तुम्बुरुनारदादयोगन्धर्वविद्याधरसिद्धचारणाः ॥ जगुर्यशोलोकमलापहंहरेःसुराङ्गनाःसंननृतुर्मुदा न्विताः २४ तन्तुष्टुवुर्देवनिकायकेतवोऽव्यवाकिरंश्चाद्भुतपुष्पवृष्टिभिः ॥ लोकाःपरांनिर्वृतिमाप्नुवंस्त्रयोगावस्तदागामनयन्पयोद्रुताम् २५ नानारसौ घाःसरितोवृक्षाआसन्मधुस्रवाः ॥ अकृष्टपच्यौषधयोगिरयोबिभ्रदुन्मणीन् २६ कृष्णेभिषिक्तएतानिसत्त्वानिकुरुनन्दन ॥ निर्वैराण्यभवंस्तात क्रूराण्यपि

को भार उतारिवे के लिये तुमने अवतार लियो है २१ श्री शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीचित्! या प्रकार कहिके श्रीकृष्णचन्द्रको वह कामधेनु अपने दुग्धते अभिषेक करतभई और दाशार्हवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र को अदिति सूं आदिलेके मातान ने प्रेर्यो ऐसो इन्द्र सो देवता ऋषिसहित आयके ऐरावत की सूंड़में आकाशगंगाको जल है तासूं स्नान करावतभयो और गोविन्द यह नाम धरत भयो २२ । २३ ता समय आये जे तुंबुरु नारदजी ते आदिलेके गन्धर्व विद्याधर सिद्ध चारणहैं ते लोकनके पापनको दूरि करिवे के लिये श्रीकृष्णचन्द्र के यशको गावतभये और अतिआनन्दित होयके देवांगना नृत्य करतभई २४ देवतानमें मुख्य जे हैं ते श्रीकृष्णचन्द्रकी स्तुति करतभये अद्भुतपुष्पनकी वर्षा करतभये तीनों लोक परमआनन्दकूं पावतभये ता समय गौ धरतीकूं दूधते भिजोवत भई २५ श्रीकृष्णचन्द्र को जा समय गोविन्दाभिषेक भयो ता समय नदी अनेकतरहके रसनकी वहनवारी होतिभई और वृक्षन में ते मदकी धारा चुवतिभई विना जोते खेत आपही पकतभये पर्व्वत अपनी गुफामें ते मणिन कूं वाहर निकास करि धरतभये २६ कौरवन के आनन्द के देनवारे श्रीकृष्णको गोविन्दाभिषेक भयो तासमय क्रूर जिनके स्वभाव ऐसे सिंहादिक जीवनके वैरभाव दूर होत

भये २७ या प्रकार गोकुल के रक्षा करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र कूं गोविन्दाभिषेक करिके आज्ञा जा कूं दीनी वह इन्द्र देवतानकूं संग लेके स्वर्ग कूं जातभयो २८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगोविन्दाभिषेकोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(अष्टाविंशेततोनन्दानयनंवरुणालयात् ॥ वैकुण्ठदर्शनंचाथगोपानामनुवर्ण्यते १ गोवर्द्धनंसमुद्धृत्यवशेकृत्वासुरेश्वरम् ॥ नन्दानयनतःकृष्णोवरुणंचवशेऽनयत् २ अट्ठाईसवें अध्याय में कृष्ण जी वरुणजी के स्थान ते नन्द जी को लिवा लाये हैं और गोपों को वैकुण्ठ का दर्शन दिया है यह वर्णन है १ गोवर्द्धन पर्वत को कृष्णजी उठाकर इन्द्र को वश में कर नन्दजी को वरुण के यहां से लाकर वरुण को वशमें कर देते भये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं नन्दजी ने एकादशी के दिन निराहार व्रत करिके भगवान् को पूजन कियो दूसरे दिन द्वादशी दो घरी ही ता समय पारनो करिवे के लिये अरुणोदय ते पहिले रात्रि में धर्म्मशास्त्र के वलते स्नान करिवे के लिये यमुना जलमें धसत भये १ तब वरुणजीका राक्षसदूत रात्रि में आसुरी वेला में वैठेहुये जलमें जानकर नन्दजी

निसर्गतः २७ इतिगोगोकुलपतिंगोविन्दमभिषिच्यसः ॥ अनुज्ञातोययौशक्रोवृतोदेवादिभिर्दिवम् २८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेइन्द्रस्तुतिर्नामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकादश्यांनिराहारःसमभ्यर्च्यजनार्दनम् ॥ स्नातुंनन्दस्तुकालिन्द्यां द्वादश्यांजलमाविशत् १ तंगृहीत्वाऽनयद्भृत्यो वरुणस्यासुरोऽन्तिकम् ॥ अविज्ञायासुरींवेलां प्रविष्टमुदकंनिशि २ चुक्रुशुस्तमपश्यन्तःकृष्णरामेतिगोपकाः ॥ भगवांस्तदुपश्रुत्य पितरंवरुणाहृतम् ॥ तदन्तिकंगतोराजन्स्वानामभयदोविभुः ३ प्राप्तंवीक्ष्यहृषीकेशं लोकपालःसपर्यया ॥ महत्यापूजयित्वाहतद्दर्शनमहोत्सवः ४ ॥ वरुणउवाच ॥ अद्यमेनिभृतोदेहोऽद्यैवार्थोऽधिगतःप्रभो ॥ त्वत्पादभाजोभगवन्नवापुःपारमध्वनः ५ नमस्तुभ्यंभगवते ब्रह्मणेपरमात्मने ॥ नयत्रश्रूयतेमाया लोकसृष्टिविकल्पना ६ अजानतामामकेन मूढेनाकार्यवेदिना ॥ आनीतोऽयंतवपिता तद्भवान्क्षन्तुमर्हति ७ ममाप्यनुग्रहंकृष्ण कर्तुमर्हस्यशेषदृक् ॥ गोविन्दनीयतामेष पितातेपितृ

को वरुणजी के पास पकडकर लेगया २ नन्दराय जी कूं न देखिके गोप संगगये ते हे कृष्ण ! हे राम ! ऐसे पुकारत भये ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र पिताकों वरुण हरिके ले गयो यह बात सुनिके हे राजन् परीक्षित् ! अपने भक्तनकूं अभयके देनवारे समर्थ श्रीकृष्ण वरुणके पास जातभये ३ श्रीकृष्ण के दर्शन करे ते बड़ो जाके आनन्द भयो ऐसो लोकन को पालनवारो वरुण है सो इन्द्रियन के ईश्वर श्रीकृष्ण कों आयो देखि वड़ी पूजा की सामग्रीन सूं पूजा करिके बोलत भयो ४ वरुण कहे है आजही तुम्हारे दर्शनकरे ते मेरो जन्म सफल भयो हे समर्थ ! आज मोकूं अर्थ की प्राप्ति भई हे भगवन् ! तुम्हारे चरणारविन्द को जो भजन करे है ते संसार को पार मोक्ष है ताकूं पावत भये ५ परिपूर्ण समस्त जीवन के साक्षी जिनकी वरावर काहू को ऐश्वर्य नहीं ऐसे जो भगवान् हो तिनकों नमस्कार है और जिनके स्वरूप में लोकनकी जो सृष्टि है ताकी रचनवारी जो माया सो तुम में अविद्यमान सी रहे है ६ धर्म्मकी महिमा कों नहीं जाने कार्य्य कूं नहीं जाने

ऐसो मूढ जो मेरो टहलुआ तुम्हारे पिताकों ले आयो सो अपराध क्षमा करो ७ हे समस्त पदार्थन के देखनवारे कृष्ण! मेरे ऊपर तुम अनुग्रह करिवे कों योग्य हो हे गोविन्द अर्थात् गौवन के इन्द्र! हे पितृवत्सल अर्थात् हे पिता के हित के करनवारे ! अपने पिता कूं आप ले जावो ८ श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार ब्रह्मादिकन के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जब वरुण ने प्रसन्न करे तब अपने पिता कूं और सब वन्धून कूं आनन्द देत आवत भये ९ कबहूँ देखिवे में नहीं आयो ऐसो वरुण को ऐश्वर्य और श्रीकृष्णचन्द्र में जाकी अतिप्रीति देखिके नन्दरायजी आश्चर्य मानि के अपनी जाति के गोपन सूं कहत भये मोकों लेजाय के एक कोन में बैठारि दियो पश्चात् यह कृष्ण गयो तब याकूं देखिके वरुण ने नमस्कार करि पूजा करी १० हे राजन् परीक्षित्! उत्कण्ठायुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे व्रजवासी श्रीकृष्णचन्द्र कूं ईश्वर मानि के विचार कर कहतभये कहा हमकूं अपने वैकुण्ठधाम में प्राप्त करोगे ब्रह्मादिकनके ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र अपने भक्त

वत्सल ८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रसादितःकृष्णो भगवानीश्वरेश्वरः॥ आदायागात्स्वपितरं बन्धूनाञ्चावहन्मुदम् ९ नन्दस्त्वतीन्द्रियंदृष्ट्वा लोकपाल महोदयम् ॥ कृष्णेचसन्नतिंतेषां ज्ञातिभ्योविस्मितोब्रवीत् १० तेत्वौत्सुक्यधियोराजन् मत्वागोपास्तमीश्वरम् ॥ अपिनःस्वगतिंसूक्ष्मामुपाधास्यदधी श्वरः ११ इतिस्वानांसभगवान्विज्ञायाखिलदृक्स्वयम् ॥ सङ्कल्पसिद्धयेतेषांकृपयैतदचिन्तयत् १२ जनोवैलोकएतस्मिन्नविद्याकामकर्मभिः ॥ उच्चाव चासुगतिषु नवेदस्वांगतिंभ्रमन् १३ इतिसंचिन्त्यभगवान् महाकारुणिकोहरिः ॥ दर्शयामासलोकंस्वं गोपानांतमसःपरम् १४ सत्यंज्ञानमनन्तंयद्ब्र ह्मज्योतिःसनातनम् ॥ यद्धिपश्यन्तिमुनयो गुणापायेसमाहिताः १५ तेतुब्रह्मह्रदंनीतामग्नाःकृष्णेनचोद्धृताः ॥ ददृशुर्ब्रह्मणोलोकं यत्राक्रूरोऽध्यगा त्पुरा १६ नन्दादयस्तुतंदृष्ट्वा परमानन्दनिर्वृताः ॥ कृष्णंचतत्रच्छन्दोभिः स्तूयमानंसुविस्मिताः १७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनन्द मोक्षोनामाष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

स्वरूप को दर्शन करावेंगे ११ या प्रकार सब के देखनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने व्रजवासीन को मनोरथ जानि के उनके मनोरथ पूर्ण करिवे के लिये कृपा करिके यह विचारतभये १२ या संसार में प्राणी देह में अहङ्कार काम कर्म इन करिके देवता पशु पक्षी आदि लेके जो जो योनि हैं तिनमें भटकत अपनो स्वरूप नहीं जाने हैं १३ या प्रकार बडे करुणावान् समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् विचारि के गोपन कू ब्रह्मरूप दिखावत भये फेरि माया ते परे जो वैकुण्ठधाम है ताको दर्शन करावत भये १४ अब ब्रह्मरूप को वर्णन करे हे सत्य अर्थात् वाधरहित! ज्ञानस्वरूप है अनन्त अर्थात् देखिने में न आवै हैं! ज्योति अर्थात स्वयंप्रकाश है गुणन के निषेध में सावधान जे मुनीश्वर हैं ते वाहू कूं देखे हैं १५ ते सम्पूर्ण व्रजवासी ब्रह्मरूप दह में प्राप्त करे वामें डूबे फिरि श्रीकृष्ण ने निकासे तब श्रीकृष्ण वैकुण्ठलोक को दर्शन करावत भये यहाँ शंका है ब्रह्म में डूबे तिन कूं वैकुण्ठ को दर्शन नहीं बने है तहाँ कहे हैं जिन श्रीकृष्णचन्द्र की कृपा ते पहिले अक्रूरजी देखत भये नहीं विचार करिवे में जिनको ऐश्वर्य ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र में कछु बात अनुचित नहीं है १६ नन्दजी सूं आदि लेके व्रजवासी वैकुण्ठधाम को दर्शन करयो तहाँ वेद जिनकी स्तुति

करें ऐसे श्रीकृष्ण को दर्शन करिके परमानन्द देह तासू सुखी होय के वड़ो आनन्द मानतभये १७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनन्दमोक्षोनामाष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥ *॥

(ऊनत्रिंशेतुरासार्थमुक्तिप्रत्युक्तयोर्हरेः ॥ गोपीभीरासंरम्भे तस्यचान्तर्द्धिकौतुकम् १ ब्रह्मादिजयसंरूढमूढकन्दर्पदर्पहा ॥ जयतिश्रीपतिर्गोपीरासमण्डलमण्डनः २ उनतीसयें अध्याय में रास के लिये गोपियों से कृष्णजी की उक्ति प्रत्युक्ति वर्णन हैं और रास के संरम्भ में कृष्णजी के अन्तर्द्धान होजानेका कौतुक भी वर्णन है १ ब्रह्मादिकों के जीतने में आरूढ मूर्ख कामदेव के अभिमान के नाश करनेवाले गोपियों के रासमण्डल के मण्डन लक्ष्मीपतिजीकी जयहो २) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हे हे राजन् परीक्षित् ! गोपकन्यान ते जिन रात्रिनकी प्रतिज्ञा करीही वे शरदृऋतुकी रात्रि प्राप्त होतभई कैसी हैं चमेली जिनमें फूलिरही ऐसी रात्रिन कूं देखिके योगमाया को आश्रय लेके रमण करिवे के मनोरथ करतभये १ सुखदायक जो किरणें हैं तिनसूं पूर्वदिशा के मुख कों अरुणकरत ता समय चन्द्रमा उदय होतभयो—दृष्टान्त—जैसे परदेशते वहुतदिन में पुरुष आयके अपनी प्यारी के मुख पै केशर लगायके अरुण करेहै २ परिपूर्ण जाको मण्डल और लक्ष्मीके

श्रीशुकउवाच ॥ भगवानपिताराात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥ वीक्ष्यरन्तुंमनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः १ तदोडुराजःककुभःकरैर्मुखं प्राच्याविलिम्पन्नरुणेनशन्तमैः ॥ सचर्षणीनामुदगाच्छुचोमृजन्प्रियःप्रियायाइवदीर्घदर्शनः २ दृष्ट्वाकुमुद्वन्तमखण्डमण्डलंरमाननाभंनवकुङ्कुमारुणम् ३ वनंचतत्कोमलगोभिरञ्जितं जगौकलंवामदृशांमनोहरम् ॥ निशम्यगीतंतदनङ्गवर्द्धनंव्रजस्त्रियःकृष्णगृहीतमानसाः ॥ आजग्मुरन्योऽन्यमलक्षितोद्यमाः सयत्र कान्तोजवलोलकुण्डलाः ४ दुहन्त्योऽभिययुःकाश्चिद्दोहंहित्वासमुत्सुकाः ॥ पयोऽधिश्रित्यसंयावमनुद्वास्यापरायथुः ५ परिवेषयन्त्यस्तद्धित्वापाययन्त्यः शिशून्पयः ॥ शुश्रूषन्त्यःपतीन्काश्चिदश्नन्त्योऽपास्यभोजनम् ६ लिम्पन्त्यःप्रमृजन्त्योऽन्याअञ्जन्त्यःकाश्चलोचने ॥ व्यत्यस्तवस्त्राभरणाःकाश्चित्कृष्णान्तिकंययुः ७ तावार्यमाणाःपतिभिःपितृभिर्भ्रातृबन्धुभिः ॥ गोविन्दापहृतात्मानोनन्यवर्तन्तमोहिताः ८ अन्तर्गृहगताःकाश्चिद्गोप्योऽलब्धविनिर्ग

मुसकीसी जाकी कांति नवीन केशर की तुल्य अरुण ऐसे चन्द्रमा कूं देखिके और ताकी कोमल किरणन सूं रँगो जो वृन्दावन ताहि देखिके मनोहरहै दृष्टि जिनकी ऐसी स्त्रीन के मनको हरनवारो मधुर गीत गावतभये ३ प्रेमात्मक काम को वढावनवारो जो गीत है ताय श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र ने मन जिनके हरे वे व्रजकी स्त्री जहां पति कृष्ण हैं तहां आवतिभई और अमुकी चलेगी ऐसे आपुस में कहत शीघ्रता सूं चलीं तासूं कानन के कुण्डल जिनके हलत आये ४ उत्कण्ठा जिनके भई ऐसी कोई गोपी गौवनको दुहावत दोहनी कूं पटकिके आवतिभई और कोई गोपी चूल्हे पै दूध औटिवेकूं धरिके आवतिभई कोई गोपी चूल्हे पै रावड़ी चढाय ताको नहीं उतारिके आवतिभई ५ कोई पातर परोसी जब कानमें वंशीकी टेरसुनी तब छोड़िके आवतिभई और कोई गोपी अपने बालकनकों दूध प्यावेंही उनको छोड़िके आवति भई कोई गोपी अपने पतिनकी सेवा करेंही उनकूं छोड़िके आवतिभई कोई भोजन करतेसे चलीआई ६ कोई गोपी घरनकूं लीपततें कोई नेन में अंजन लगावततें और कोई पांवन के गहने हाथनमें पहरिके और हाथनके पांवन में पहरि के और लहँगा ओढिके वोढनी पहरिके श्रीकृष्णचन्द्र के पास जातभई ७ पति पिता माता भ्राता

ज्ञातिन ने मने भी करी परन्तु श्रीकृष्णचन्द्र ने मन जिनके हरे वे गोपी नहीं मानतभई ८ कोई गोपी घरन में मूंदि दीनी निकसिवेको रस्ता न मिलो ता समय वे गोपी पहिले ध्यान जिनको लग्यो हो वाके स्मरण ते आँखि मूदिके फेर श्रीकृष्णचन्द्र को अन्तःकरण में ध्यान करतभई ९ सहारो न जाय ऐसे प्यारे के विरहरूप तीव्र ताप सों पाप जिनके दूरहोयगये और ध्यान में प्राप्तभये जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनके आलिंगन करे ते जो सुख है तिनसे पुण्यबन्धन दूरिहोयगये १० वे गोपी जारबुद्धि करिके परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र कूं पाइके बन्धन जिनके कटिगये ऐसी गोपी गुणन को बन्यो जो देह ताकूं तत्कालही त्यागतभई ११ अथ राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं कि हे महाराज! गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को अतिसुन्दर जानेहीं ब्रह्मरूप करिके नहीं जानेहीं गुणमय जिनकी बुद्धि उन गोपीन को गुणनको प्रवाह संसार कैसे छूटिगयो १२ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्! यह बात मैंने तोते पहलेही कहीही शिशुपाल श्रीकृष्णचन्द्र सूं वैर करत जैसे मुक्ति पाइगयो तैसे

माः ॥ कृष्णंतद्भावनायुक्तादध्युर्मीलितलोचनाः ९ दुःसहप्रेष्ठविरहतीव्रतापधुताशुभाः ॥ ध्यानप्राप्ताच्युताश्लेषनिर्वृत्याक्षीणमङ्गलाः १० तमेवपरमात्मानं जारबुद्ध्याऽपिसङ्गताः॥ जहुर्गुणमयंदेहं सद्यःप्रक्षीणबन्धनाः ११ राजोवाच ॥ कृष्णंविदुःपरंकान्तं नतुब्रह्मतयामुने ॥ गुणप्रवाहोपरमस्तासांगुणधियांकथ म् १२ श्रीशुकउवाच ॥ उक्तंपुरस्तादेतत्ते चैद्यःसिद्धिंयथागतः ॥ द्विषन्नपिहृषीकेशं किमुताधोक्षजप्रियाः १३ नृणांनिःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतोनृ प ॥ अव्ययस्याप्रमेयस्य निर्गुणस्यगुणात्मनः १४ कामंक्रोधंभयंस्नेहमैक्यंसौहृदमेवच ॥ नित्यंहरौविदधतोयान्तितन्मयतांहिते १५ नचैवंविस्मयःका र्योभवताभगवत्यजे ॥ योगेश्वरेश्वरेकृष्णे यतएतद्विमुच्यते १६ तादृष्ट्वाऽन्तिकमायाताभगवान्व्रजयोषितः ॥ अवदद्वदतांश्रेष्ठोवाचःपेशैर्विमोहयन् १७ श्रीभगवानुवाच ॥ स्वागतंवोमहाभागाःप्रियंकिंकरवाणिवः ॥ व्रजस्यानामयंकच्चिद्ब्रूतागमनकारणम् १८ रजन्येषाघोररूपा घोरसत्त्वनिषेविता ॥ प्रतियातव्रजंनेह स्थेयंस्त्रीभिःसुमध्यमाः १९ मातरःपितरःपुत्राभ्रातरःपतयश्चवः ॥ विचिन्वन्तिह्यपश्यन्तोमाकृध्वंबन्धुसाध्वसम् २० दृष्टंवनंकुसुमितंराके

श्रीकृष्ण की प्यारी गोपीन कूं प्राप्तभई यामें कहा सन्देह है १३ हे राजन् परीक्षित्! अविनाशी अप्रमेय अर्थात् प्रमाण करिवे में न आवे निर्गुण अर्थात् प्राकृतगुणरहित गुणन के आत्मा भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को, मनुष्यन के कल्याण करिवे के लिये रूप प्रकट भयो है १४ काम क्रोध भय स्नेह एकभाव सौहृद जे पुरुष नित्य हरि भगवान् में करे हैं वे पुरुष तन्मय होयजाय हैं १५ हे राजन्! अजन्मा योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् में तुम आश्चर्य्य मतिकरो जिन में प्रेमकरे ते स्थावरहू संसार में ते छुटिजायं है १६ बोलनवारेन में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र व्रजकी स्त्रीन कूं अपने पास आई देखिके वाणीन के विलासनकरि मोहित करिके बोलतभये १७ श्रीभगवान् बोले हे बड़भागिनियो! भले आई आवो मैं तुम्हारो कहा आदरकरों व्रजमें कुशल है कैसे आई यह कारण कहो १८ यह भयानक रात्री है सिंह व्याघ्र घोर प्राणी डोले हैं याते तुम अपने घरनको जावो हे सुमध्यमाः अर्थात् सुन्दरहै कटि जिनकी! स्त्रीजाति होयके यहां मतिरहो १९ तुम्हारे माता पिता पुत्र भ्राता पति तुमकूं बिना देखे ढूंढ़त डोलें हैं बन्धून कों हरबराहट मति करो २० फुलवारी जामें फूलिरही चन्द्रमा की किरणन सों रँगिरह्यो यमुना ते लगिके मन्द पवन

जो चले तासों हलें जे वृक्षनके पात तिनसूं शोभायमान जो वन है सो तुमने देख्यो २१ ताते तुम व्रजमें जावो ढीलमतिकरो तुम पतिव्रताहो पतिनकी सेवाकरो वछरा रम्हाउ है बालक रोवे हैं बालकनकूं स्तन प्यावो गौवनकूं दुहो २२ अथवा मेरे स्नेह से वशीभूतहै अन्तःकरण जिनको ऐसी तुम आई सो तुमको योग्यही है क्यों सब मोमें प्यार करे हैं २३ हे मंगलरूपिणियो ! निष्क पट होय के पतिकी सेवाकरो देवरन की सेवाकरो पुत्रनको पोषणकरो यही स्त्रीनको परमधर्म्म है २४ जो कदाचित् अपनो पति खोंटे स्वभावयुक्त होइ दुर्भाग्यहोइ अथवा वृद्ध होइ मूर्ख होइ रोगी होइ दरिद्री होइ तथापि स्वर्गकी जिनके चाहना है ऐसी स्त्रीनकूं त्यागिवे योग्य नहीं है और जो पतित होवै तो त्यागिवे योग्य है २५ कुलकी स्त्रीनकूं जारपुरुष के सेवन करे ते स्वर्ग नहीं मिले है और यश जाय जारपुरुषको सेवन तुच्छ है दुःख को देनवारो है सर्वत्र निन्दाके योग्यहै २६ मेरी बातनके श्रवण करे ते ध्यान करे ते निरन्तर कीर्तन करे ते जैसे मोमें भाव होइहै तैसे

शकररञ्जितम् ॥ यमुनाऽनिललीलैजत्तरुपल्लवशोभितम् २१ तद्यातमाचिरंगोष्ठं शुश्रूषध्वंपतीन्सतीः ॥ क्रन्दन्तिवत्सावालाश्च तान्पाययतदुह्यत २२
अथवामदभिस्नेहाद्भवत्योयन्त्रिताशयाः ॥ आगताह्युपपन्नंवः प्रीयन्तेमयिजन्तवः २३ भर्त्तुःशुश्रूषणंस्त्रीणां परोधर्मोह्यमायया ॥ तद्बन्धूनांचकल्याण्यः
प्रजानांचानुपोषणम् २४ दुःशीलोदुर्भगोवृद्धोजडोरोग्यधनोऽपिवा ॥ पतिःस्त्रीभिर्नहातव्योलोकेप्सुभिरपातकी २५ अस्वर्ग्यमयशस्यंच फल्गुकृच्छ्रंभ
यावहम् ॥ जुगुप्सितंचसर्वत्र औपपत्यंकुलस्त्रियाः २६ श्रवणाद्दर्शनाद्ध्यानान्मयिभावोऽनुकीर्त्तनात् ॥ नतथासन्निकर्षेण प्रतियाततोगृहान् २७
श्रीशुकउवाच ॥ इतिविप्रियमाकर्ण्य गोप्योगोविन्दभाषितम् ॥ विषण्णाभग्नसङ्कल्पाश्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम् २८ कृत्वामुखान्यवशुचःश्वसनेनशुष्य
द्बिम्बाधराणिचरणेनभुवंलिखन्त्यः ॥ अस्रैरुपात्तमषिभिःकुचकुङ्कुमानि तस्थुर्मृजन्त्यउरुदुःखभराःस्मतूष्णीम् २९ प्रेष्ठंप्रियेतरमिवप्रतिभाषमाणं कृष्णंत
दर्थविनिवर्त्तितसर्वकामा ॥ नेत्रेविमृज्यरुदितोपहतेस्मकिञ्चित्संरम्भगद्गदगिरोऽब्रुवतानुरक्ताः ३० गोप्यऊचुः ॥ मैवंविभोऽर्हतिभवान्गदितुंनृशंसं संत्य

पास रहे ते नहीं होइहै ताते अपने घरनकूं जावो २७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार गोपी गोविन्द को वचन श्रवण करिके दुःखित भई नहीं सिद्धभयो है मनोरथ जिनको याते बड़ी चिन्ता कूं पावत भई २८ चिन्ताके श्वास ते सूखे हैं कुँदुरु के फलके समान अरुण ओष्ठ जिनके ऐसे मुखन कूंनीचे करिके चरण के अंगूठा सूं धरती पै लिखत जायँ तथा रुदनते नेत्रन सूं नकज्जलसहित आसू चले हैं तिनसूं कुचनकी केशर धुइगई अतिदुःख के बोझते गोपी चुप होयके ठाढ़ी होति भई २९ हैं तो प्यारे परन्तु जाउ जाउ ऐसे कुप्यारे की तुल्य वचन कहैं जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं ताके श्रवण के आवेशते गद्गद वाणी जिनकी होय आई क्यों श्रीकृष्ण के लिये घरबार को सब काम जिनने छोड़ि दियो ऐसी गोपीन के रोयबे ते आसू जिनमें बहैं ऐसे नेत्रनकूं पोछि पोछि आसक्त होय के बोलत भई ३० गोपी कहे हैं हे समर्थ ! जाउ जाउ ऐसो कठोर वचन मति कहो हम सब विषयन कूं त्यागि के तेरे चरण सेवन करति भई हे दुराग्रही ! हमकूं मति त्यागे जैसे आदिपुरुष

भगवान् की शरण सर्व त्याग करिके मुमुक्षु जायहैं तो मुमुक्षु पुरुषनकूं वह भजे हैं तैसे तेरे लिये सर्वस्व त्यागि के हम आई हैं हमारो सेवनकर मति त्यागे ३१ हे कृष्ण धर्मवेत्ता ! तुमने पति पुत्र सुतनकी सेवाकरो यह स्त्रीनको परमधर्म है जो वह्यो सो हमारे धर्म्म मुनिवेकी इच्छा नहीं है काहे ते हमें चाहना नहीं है तुम धर्म्म के उपदेश करनवारे नहीं हो तुम देहधारीनके प्यारे हो तुम ने कही पत्यादिकन की सेवा करनो धर्म्म है सो आत्मासहित पत्यादि प्यारे लगे हैं स्त्री को पति प्यारो लगे है सो आत्मासों लगे है आत्मा निकसे पीछे देहको बाधिके लेजाय हैं जराय देय हैं सो सब के आत्मा तुमहो तुमसों जो जीव बहिर्मुख है सो दग्ध होनेके योग्यहै ३२ अपने आत्मा नित्यप्यारे तुमहो तिनमें विवेकी पुरुष प्रीति करे हैं दुःखके देनवारे पति पुत्रादिकनसूं कहा प्रयोजनहै ताते तुम हमपै प्रसन्नहोउ हे परमेश्वर ! हे कमलदललोचन ! बहुत दिनते तुममें आशारूपी लतालगाई है ताको जाउ जाउ ऐसे कुठारी रूप वचन ते कैसे काटोहो देखो विषके वृक्षकोभी आप बढ़ायके विवेकी नहीं काटिवे कों समर्थ होयहै ३३ तुमने कही जाउ सो हम कैसे जायँ जो चित्त सुखपूर्व्वक घरनमें लगोहो सो तुमने हरिलियो और जिन हाथन ते घरको काम करेंही ते तुमने हरिलिये हे गोपियो !

ज्यसर्वविषयांस्तवपादमूलम् ॥ भक्ता भजस्वदुरवग्रहमात्यजास्मान्देवोयथाऽऽदिपुरुषोभजतेमुमुक्षून् ३१ यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग स्त्रीणांस्वधर्मइतिध र्मविदात्वयोक्तम् ॥ अस्त्वेवमेतदुपदेशपदेत्वयीशे प्रेष्ठोभवांस्तनुभृतांकिलबन्धुरात्मा ३२ कुर्वन्तिहित्वयिरतिंकुशलाःस्वआत्मन्नित्यप्रियेपतिसुतादिभि रार्तिदैःकिम् ॥ तन्नःप्रसीद परमेश्वरमास्मछिन्द्याआशांभृतांत्वयिचिरादरविन्दनेत्र ३३ चित्तंसुखेनभवताऽपहृतंगृहेषु यन्निर्विशत्युतकरावपिगृह्यकृत्ये ॥ पादौपदंनचलतस्तवपादमूलाद्यामःकथंव्रजमथोकरवामकिंवा ३४ सिञ्चाङ्गनस्त्वदधरामृतपूरकेण हासावलोककलगीतजहृच्छयाग्निम् ॥ नोचेद्वयंविर हजाग्न्युपयुक्तदेहाध्यानेनयामपदयोःपदवींसखेते ३५ यर्ह्यम्बुजाक्षतवपादतलंरमायादत्तक्षणंक्वचिदरण्यजनप्रियस्य ॥ अस्प्राक्ष्मतत्प्रभृतिनान्यसमक्षम ङ्ग स्थातुंत्वयाऽभिरमितावतपारयामः ३६ श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमेतुलस्यालब्ध्वाऽपिवक्षसिपदंकिलभृत्यजुष्टम् ॥ यस्याःस्ववीक्षणकृतेऽन्यसुरप्रयास

अब तुम जावो परसों के दिन तुम सबके चित्त विचार करिके देइंगे ऐसे श्रीकृष्णने कही तहां गोपीकहे हैं तुम्हारे चरण छोड़िके हमारे पांव एक पैंड़हू नहीं चले हैं व्रजमें कैसे जावेंगी जायके हम कहा करें ३४ हे सखे ! यामें कहा भली बुरी बात करे हैं जैसे दवी अग्निको निकासिके सुलगावें हैं घीकीधारापरेते प्रज्वलित होयहै ऐसे हमारे हृदयमें कामकी अग्नि सोइ रही है तेरी हँसन चितवन सुन्दर गीतरूपी पवनसूं प्रज्वलितभई है ऐसे हमारे हृदयमें याको अधरामृतके प्रभाव सों बुझायदेउ और जो न बुझावोगे तो एक अग्नि जरायवेको बहुत होयहै यहा तो दोइ हैं एक तो काम की दूसरी विरह की तासों हमारे देहनकी जरिके ढेरी होय जायगी याते अपनी हँसनि चितवनि अधरामृतरूप धारानसों बुझाय देउ जैसे योगीजन ज्ञानरूप अग्नि करिके शरीरन को जराय के ध्यान करिके समीप कूं प्राप्तहोयहैं ३५ श्रीकृष्ण कहे हैं तुम अपने पतिन के पास जावो वे कामदेवकी आगि बुझावेंगे तहा गोपी कहे हैं हे कमलदललोचन ! वनवासी जाको प्यारे ऐसे तुमहो और लक्ष्मीकों जाने आनन्द दीनो ऐसे तुम्हारे चरणनको तरवा हम कभऊं स्पर्श करतभई ता दिनते तेरेसङ्ग रमणकियो ता दिन ते औरके सम्मुख ठाढ़ी भी न होसके हैं ३६ लक्ष्मी सदा वक्षःस्थलमें रहे तथापि भक्त जाको

सेवन करे ऐसी तुम्हारे चरणनकी रेणु कूं तुलसी सौत सहत चाहना करतभई जा लक्ष्मीकी चितवनि के लिये और देवता तपस्या करिके परिश्रम करे हैं ता लक्ष्मीकी तुल्य हम भी तुम्हारे चरण की रज कूं प्राप्तभई हैं अर्थात् शरणलीनी है ३७ हे दुःख के काटनवारे ! तेरे भजिवे में आशा जिनकी लगिरही है ऐसे हम घर छोड़िके तेरे चरणन के पास आई हैं तुम हमारे ऊपर प्रसन्नहो तेरी सुन्दर मुसिक्यानि चितवन सूं बढ़ो जो कामदेव तासूं देह जिनकी पजरिरही ऐसी जो हम हैं तिनकूं दे पुरुषन के शोभा करनवारे! अपनी दासी करिके राखो ३८ अलकावली जापै छूटिरहीं और कुण्डलनकी कान्ति जिनमें परे ऐसे जाके कपोल ओष्ठ में जाके अमृत है हाससहित जाकी चितवनि ऐसे तेरे मुख को देखिके अभयदान जाने भक्तन कूं दियो तुम्हारो भुजदण्डन को युगल है ताकूं देखिके लक्ष्मी कूं एकही प्रीति को उपजावनवारो तुम्हारो वक्षःस्थल है ताकूं देखिके हम तुम्हारी दासी होईहैं ३९ हे कृष्ण! मनोहर जामें पद ऐसो बड़ो बाँसुरी को गीत है तासों मोहित होयके

स्तद्वद्वयंचतवपादरजःप्रपन्नाः ३७ तन्नःप्रसीदवृजिनार्दनतेऽङ्घ्रिमूलं प्राप्ताविसृज्यवसतीस्त्वदुपासनाशाः ॥ त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषणदेहिदास्यम् ३८ वीक्ष्यालकावृतमुखंतवकुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरसुधंहसितावलोकम् ॥ दत्ताभयंचभुजदण्डयुगंविलोक्य वक्षःश्रियैकरमणञ्चभवामदास्यः ३९ कास्त्र्यङ्गतेकलपदायतवेणुगीतसंमोहितार्यचरितान्नचलेत्त्रिलोक्याम् ॥ त्रैलोक्यसौभगमिदञ्चनिरीक्ष्यरूपंयद्गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ४० व्यक्तंभवान्व्रजभयार्त्तिहरोऽभिजातोदेवोयथाऽऽदिपुरुषःसुरलोकगोप्ता ॥ तन्नोनिधेहिकरपङ्कजमार्त्तबन्धो तप्तस्तनेषुचशिरस्सुचकिङ्करीणाम् ४१ श्रीशुकउवाच ॥ इतिविक्लवितंतासां श्रुत्वायोगेश्वरेश्वरः ॥ प्रहस्यसदयंगोपीरात्मारामोऽप्यरीरमत् ४२ ताभिःसमेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोत्फुल्लमुखीभिरच्युतः ॥ उदारहासद्विजकुन्ददीधितिर्व्यरोचतैणाङ्कइवोडुभिर्वृतः ४३ उपगीयमानउद्गायन् वनिताशतयूथपः ॥ मालांबिभ्रद्वैजयन्तींव्यचरन्मण्डयन्वनम् ४४ नद्याःपुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमवालुकम् ॥ रेमेतत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ४५ बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरुनीवी

त्रिलोकी में ऐसी कौनसी स्त्री है जो अपने धर्म्म ते चलायमान न होय त्रिलोकी में सुन्दर यह तेरो रूप है ताकूं देखिके गौ पक्षी वृक्ष मृग ये रोमांचित होतभये देखो तेरे रूपते पशु पक्षी सारिखे मोहित होयगये हम मोहित होयँ यामें कहा आश्चर्य्य है ४० तुम निश्चय वृजकेभय पीड़ा दूरि करिवे के लिये जन्मे हो जैसे आदिपुरुष नारायण स्वर्गलोककी रक्षा करे हैं ता कारण ते हे दीनन के बन्धु! हम तेरी दासी हैं तिनके कामदेव ते तपे जे स्तन हैं और शिर हैं तिनपै अपने हस्तकमल कूं धरो ४१ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन परीक्षित! या प्रकार योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन को विलाप सुनि के हँसि के दया जिन को आइ गई आत्माराम हू हैं तथापि गोपीन के संग रमण करतभये ४२ प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रकी चितवन सूं प्रफुल्लित जिनके मुख ऐसी इकट्ठी भई जे गोपी हैं तिन सहित उदार जिनकी चेष्टा और उदार जिनकी हँसनि दन्तनमें कुन्दकलीकी तुल्य कान्ति ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये जैसे तारागणसहित चन्द्रमा सुन्दर लगे है ४३ गोपी जिनकू गावें और स्त्रीन के सैकरान यूथन कूं पालनकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप गावत वैजयन्ती माला पहिरिके वनकूं शोभायमान करत विहार करतभये शीतल जामें वारूके विछौना विछ-

रहे ऐसी यमुनाजीकी पुलिन में गोपीन सहित आयके रमण करतभये तहा यमुनाजीकी लहर जो आवे हैं तिनसूं आनन्द जिनमें कमल जहां फूले हैं तिनकी सुगन्धि कों लेके पवन जहा चले हैं, ४४ । ४५ भुजान को पसारिवो आलिंगन को करिवो कर अलक ऊरु नीवी स्तन इनको स्पर्श करिवो परिहास के वचन कहिवो नखन के चिह्न क्रीड़ा चितवनि हाँसीन सूं व्रजसुन्दरीनकूं भगवान् कामउद्दीपन करत रमण करतभये ४६ या प्रकार महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र तें मान जिनने पायो ऐसी गोपी मानवती होयके पृथ्वी की स्त्रीन में अपनेकूं अधिक मानतभई ब्रह्मा और महादेव के वश के करनहारे श्रीकृष्णचन्द्र तिन गोपीन कूं सौभाग्य के मद सूं अपने अधीन देखिके उनके गर्व दूरिकरिवे के लिये और कृपा करिवे के लिये ता रासमण्डल मेंही अन्तर्द्धान होतभये ४७।४८

इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडावर्णनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

स्तनालभननर्मनखाग्रपातैः ॥ क्ष्वेल्याऽवलोकहसितैर्व्रजसुन्दरीणामुत्तम्भयन्रतिपतिंरमयांचकार ४६ एवंभगवतः कृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः ॥ आत्मानंमेनिरेस्त्रीणांमानिन्योऽभ्यधिकंभुवि ४७ तासांतत्सौभगमदंवीक्ष्यमानंचकेशवः ॥ प्रशमायप्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ४८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेभगवतोरासक्रीडावर्णनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अन्तर्हितेभगवतिसहसैवव्रजाङ्गनाः ॥ अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्यइवयूथपम् १ गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ॥ आक्षिप्तचित्ताःप्रमदारमापतेस्तास्ताविचेष्टाजगृहुस्तदात्मिकाः २ गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाःप्रियस्यप्रतिरूढमूर्त्तयः ॥ असावहंत्वित्यबलास्तदात्मिकान्यवेदिषुःकृष्णविहारविभ्रमाः ३ गायन्त्यउच्चैरमुमेवसंहताविचिक्युरुन्मत्तकवद्वनाद्वनम् ॥ पप्रच्छुराकाशवदन्तरंबहिर्भूतेषुसन्तंपुरुषंवनस्पतीन् ४ दृष्टोवःकच्चिदश्वत्थप्लक्षन्यग्रोधनोमनः ॥ नन्दसूनुर्गतोहृत्वाप्रेमहासावलोकनैः ५ कच्चित्कुरवकाशोकनागपुन्नागचम्पकाः ॥ रामा

(त्रिंशेविरहसंतप्तगोपीभिःकृष्णमार्गणम् ॥ उन्मत्तवद्वनेयत्रं भ्रमन्तीभिर्वनेवने १ तीसवें अध्याय में विरह से अत्यन्त तप्त वन वन में घूमतीहुई गोपियों ने उन्मत्तकी नाई कृष्णजी को ढूंढो है १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! जा समय श्रीकृष्णचन्द्र रासमण्डल में ते अन्तर्द्धान भये ता समय तत्कालही व्रजकी स्त्री गोपी उनके देखे विना व्याकुल होतभई जैसे हाथी के देखे विना हथिनी व्याकुल होयहै श्रीकृष्णचन्द्र की चलनि स्नेहभरी मुसिकानि विलासपूर्वक चितवनि मधुरबोलीनकी क्रीड़ान सूं मन जिनके पकरे गये ऐसी गोपी तन्मय होतिभई १ । २ कृष्णचन्द्र को गमन हासभरी चितवनि मधुरवाणीन के विहार करि प्यारे में आरूढ होय के कृष्ण रूप बनिके कहत भईं कि मैं कृष्णहूं मैं कृष्णहूं या प्रकार चेष्टा करती भईं ३ सब गोपी मिलिके श्रीकृष्णचन्द्र सूं ऊंचो स्वर करिके गावत मतवारे की तुल्य वन वन ढूंढति भई सब प्राणीन में आकाश की तुल्य व्यापक जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन कूं वृक्षन ते पूंछत भईं ४ हे पीपर के वृक्ष! हे प्लक्ष अर्थात् पाकरके वृक्ष! हे वट के वृक्ष! नन्दको पुत्र श्रीकृष्ण प्रेम भरी चितवनि हाँसी करिके हमारो चित्त चुरायके लेगयो तुमने देखो होय तो बताय देउ ५ कहूं वनमें कुरा

के वृक्ष हैं तिनसूं पूंछे हैं कहूं नागकेशरि के वृक्ष कहूं चम्पा के वृक्ष तिन सूं कहती हैं मानिनी जो हम हैं तिनके गर्व्व हरनवारी जाकी मुसिकानि ऐसो रामको छोटो भय्या कहूं तुमने जात देखो है ६ कहूं वन में कहे हैं हे तुलसी कल्याणरूपिणी गोविन्द के चरणन की प्यारी! भौंरा जामें गुंजारकरें तेरी मालाकूं पहिरे तेरो अतिप्यारो श्रीकृष्णचन्द्र कहू देख्यो होय तो बतायदेउ ७ हे मालती! हे चमेली! हे जाया! हे जुही! मधुवंश में भये श्रीकृष्णचन्द्र हस्तस्पर्श करिके तुमसू प्रीति करिके कहा गये तुमने देखे होयँ तो बताय देउ ८ अब गोपी आपुस में कहे हैं हे सखियो! ये फलयुक्त वृक्षहैं सब प्राणीनको तृप्त करे हैं इन से पूंछो हे आम के वृक्ष! हे चिरोंजी के वृक्ष! हे कटहर के वृक्ष! हे विजयसालके वृक्ष! हे कचनारके वृक्ष! हे जामनके वृक्ष! हे मदार के वृक्ष! हे बेलके वृक्ष! हे मोरशिरी के वृक्ष! हे आम्रके वृक्ष! हे लोटन कदम्ब! तुम हे परोपकारी यमुनातीरवासियो! याते हमें बताय देउ तुमने कहूं श्रीकृष्णचन्द्र जातदेखे ९ कोई सखी कहेहै कि या पृथ्वीसूं

नुजोमानिनीनामितोदर्पहरस्मितः ६ कच्चित्तुलसिकल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ॥ सहत्वाऽलिकुलैर्बिभ्रद्दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ७ मालत्यदर्शिवः कच्चिन्मल्लिकेजातियूथिके ॥ प्रीतिंवोजनयन्यातः करस्पर्शेनमाधवः ८ चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ॥ येऽन्येपरार्थभवकायमुनोपकूलाः शंसन्तुकृष्णपदवींरहितात्मनांनः ९ किन्तेकृतंक्षितितपोबतकेशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ॥ अप्यङ्घ्रिसम्भवउरुक्रमविक्रमाद्वा आहोवराहवपुषःपरिरम्भणेन १० अप्येणपत्न्युपगतःप्रिययेहगात्रैस्तन्वन्दृशांसखिसुनिर्वृतिमच्युतोवः ॥ कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः कुन्दस्रजःकुलपतेरिहवातिगन्धः ११ बाहुंप्रियांसउपधायगृहीतपद्मोरामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ॥ अन्वीयमानइहवस्तरवःप्रणामं किंवाऽभिनन्दतिनरन्प्रणयावलोकैः १२ पृच्छतेमालतानाहूनप्याशिलष्टावनस्पतेः ॥ नूनन्तत्करजस्पृष्टाबिभ्रत्युत्पुलकान्यहो १३ इत्युन्मत्तवचोगोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ॥ लीलाभगवतस्तास्ताह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः १४ कस्याश्चित्पूतनायन्त्याः कृष्णायन्त्यपिबत्स्तनम् ॥ तोकायित्वारुदत्यन्या पदा

बूझो हे पृथ्वी! तैने कहा तप कियो है जो केशव भगवान् को चरणस्पर्श भयो तासूं तोकों आनन्दसहित रोमाञ्च भये हैं तासूं सुन्दर लगे है यह आनन्द प्यारे को चरण लग्यो है तासूं भयो है अथवा वामनजी ने पहिले तो कूं तीन पैंड़ नापी है अथवा वाते पहिले वराहजी तो कू दाढ पै धरि के ले आये हैं तब को आनन्द है परन्तु वे आनन्द तो पुराने परि गये अबहीं प्यारे को चरण तैंने स्पर्श कीनो है तेंने निश्चय देखो है हमें बताय दे १० हे सखी! हिरण की स्त्री हिरणी अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी कूं संग लैके अपने अंगनसूं तुम्हारी दृष्टि कू आनन्द देत यहाँ आयो है प्यारी कूं संग लैके गयो ताको जतावनवारो यह लक्षण है कृष्णचन्द्र को प्यारी ते जो अंगसंग है तासूं कुचन की केशरि सूं रँगी, गई जो कुन्द की माला ताकी यह सुगन्धि आवे है ११ राम को छोटो भय्या प्यारी के कन्धे पै भुजाको धरि के कमल फिरावत तुलसी की माला की सुगन्धि सूं मतवारे भौंरा जाके पीछे चले जायँ हे वृक्षो! स्नेह भरी चितवन सूं तुम्हारी दण्डवत् यहाँ आयके लीनी है १२ वृक्षन ते लिपटी जे लता हैं तिन ते पूंछो निश्चय प्यारे के नख इनके लगे हैं तासूं रोमाञ्च होय आये हैं १३ या प्रकार मतवारे कीसी जिनकी बोलनि श्रीकृष्णमें जि-

नको मन श्रीकृष्णके ढूंढिवे में विकल होय के गोपी श्रीकृष्णकी तिन तिन लीलान को अनुकरण करतभई १४ कोई गोपी पूतना बनी ताको कोई गोपी कृष्ण बनिके स्तन पीवत भई और गोपी बालक बनिके रुदन करत शकटासुर बनी जो कोई गोपी है ताके पावकी ठोकर मारतभई १५ एक गोपी तृणावर्त दैत्य बनिके कृष्णके बालकरूपको धरे जो और गोपीहै ताको हरतभई कोई गोपी घुंघुरू बांधिके पावन कों घसीटत घोटुवन चलतभई १६ दो गोपी कृष्ण बलदेव बनी और कोई गोप बनी और कोई वत्सासुर बनी ताकूं मारतभई एक गोपी बकासुर बनी ताय और गोपी मारतभई १७ जैसे श्रीकृष्णचन्द्र बुलावें हैं तैसे दूरगई जो गऊहैं तिनकूं बुलायके श्रीकृष्णको अनुकरण करें बांसुरी को बजावें क्रीडा करें जो गोपी हैं ताय और गोपी स्यावासि २ ऐसे बड़ाई करत भई १८ एक गोपीके कन्धा पै हाथधरि चलिके और गोपीते कहतभई मेरी मनोहर जो नृत्यलीलाहै ताकूं तुम देखो या प्रकार ता श्रीकृष्ण में तिनको मन जाय लगो १६ पवन वर्षा ते भय

ऽहन्श कटायतीम् १५ दैत्यायित्वाजहारान्यामेकाकृष्णार्भभावनाम् ॥ रिङ्गयामासकाऽप्यङ्घ्रीकर्षन्तीघोषनिःस्वनैः १६ कृष्णरामायितेद्वेतु गोपायन्त्य श्चकाश्चन ॥ वत्सायतींहन्तिचान्या तत्रैकातुबकायतीम् १७ आहूयदूरगायद्वत्कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ॥ वेणुंक्वणन्तींक्रीडन्तीमन्याःशंसन्तिसाध्विति १८ कस्याञ्चित्स्वभुजंन्यस्य चलन्त्याहापरानन्नु ॥ कृष्णोऽहंपश्यतगतिं ललितामितितन्मनः १६ माभैष्टवातवर्षाभ्यां तत्त्राणंविहितंमया ॥ इत्युक्त्वैकेनहस्तेन यतन्त्युन्निदधेऽम्बरम् २० आरुह्यैकापदाक्रम्य शिरस्याहापरांनृप ॥ दुष्टाहेगच्छजातोऽहं खलानांनन्नुदण्डधृक् २१ तत्रैकोवाचहेगोपा दावाग्निंपश्य तोल्बणम् ॥ चक्षूंष्याश्वपिदध्वंवोविधास्येक्षेममञ्जसा २२ बद्धाऽन्ययास्रजाकाचित्तन्वीतत्रउलूखले ॥ भीतासुदृक्पिधायास्यं भेजेभीतिविडम्बनम् २३ एवंकृष्णंपृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् ॥ व्यचक्षतवनोद्देशे पदानिपरमात्मनः २४ पदानिव्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ॥ लक्ष्यन्तेहिध्वजाम्भो जवज्राङ्कुशयवादिभिः २५ तैस्तैःपदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ॥ वध्वाःपदैःसुपृक्तानि विलोक्यार्त्ताःसमब्रुवन् २६ कस्याःपदानिचैतानि या

मतिकरो मैं तुम्हारी रक्षा करूंगो यह कहिके एक हाथ ते यत्न करिके जैसो गोवर्द्धन पर्व्वत श्रीकृष्णचन्द्रने उठायो तैसे अपनी ओढनी कूं ऊंची उठावति भई २० हे राजन् परीक्षित्! एक गोपी और गोपी के ऊपर चढ़िके पांव शिर ऊपर धरिके एक गोपी ते कहतभई हे दुष्ट सर्प! तू यहां ते निकसि जा मैं दुष्टनके दण्डको देनवारो जन्मो हों २१ ता समय एक गोपी बोलतभई हे गोपियो! यह वनमें भयानक दवलगी है ताकूं देखो जल्दी देसी नेत्र मूंदिलेउ मैं या आगि कूं बुझाऊंगो अनायास देखे विना कल्याण करूंगो २२ कोई एक दुर्बल अंगकी गोपी मालासूं उलूखलमें बांधि दीनी तब डरपिके सुन्दर जामें नेत्र ऐसे मुखकू ढकिके डरपेको अनुकरण करतिभई २३ याप्रकार वृन्दावनकी लता वृक्षन ते पूंछतपूंछत आगे वनमें जायके परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्रके चरणके खोज देखत भई २४ ध्वजा कमल वज्र अंकुश यव इनते आदिलेके जो चिह्न हैं तिनसूं महात्मा जो नन्दको वेटा ताको निश्चय चरणहै या प्रकार खोज लखे हे २५ अवला जे गोपी हैं ते चरणन के जो खोज हैं तिनसूं श्रीकृष्णचन्द्र के जायवे को जो मार्ग है ताय ढूंढ़तभई आगे जायके श्रीकृष्ण के चरणन के खोजमें प्यारी के चरणन के खोज देखिके यह बोलत भई २६ ये कौनके खोजहैं

नन्दको पुत्र काहूको अपने संग लैगयो है और वाके कन्धेपै हाथ धरि लियो है जैसे हाथी हथिनी के ऊपर सूंड़ि धरिलेयहै २७ निश्चय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको याने आराधन कीनोहै जा कारण हम सबकों त्यागिके प्रसन्न होयके प्यारो गोविन्द याकूं एकान्त में लैगयो २८ हे सखियो ! यह गोविन्द के चरण की रेणुकूं ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी सम्पूर्ण अपने पाप दूरि करिवे के लिये माथे पै चढ़ावे हैं २९ ता प्यारी के पावन के खोज हमको व्याकुल बहुत करे हैं देखो हम सबको त्यागिके अकेली एकान्तमें श्रीकृष्णचन्द्र को अधरामृत भोग करे है ३० आगे चलिके कहे हैं यहां वाके पावनके खोज नहीं दीखे हैं सखी तिनुका अंकुरा लगिके कोमल चरणनमें खेदभयो है तब प्यारेने प्यारीकूं उठायलियो है ३१ या प्रकार गोपी खोजनकूं देखत अचेत होय के विचरतिभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकूं छोड़िके वनमें जा गोपीकूं अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीन में अपने कूं श्रेष्ठ मानतभई क्योंकि चाहनाकरे जे गोपी हैं तिनें छोड़िके यह प्यारो मेरो सेवन करेहै ३२ कामी श्री

तायानन्दसूनुना ॥ अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोःकरिणायथा २७ अनयाऽऽराधितोनूनं भगवान्हरिरीश्वरः ॥ यन्नोविहायगोविन्दः प्रीतोयामनयद्रहः २८ धन्याअहोअमीआल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ॥ यान्ब्रह्मेशोरमादेवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये २९ तस्याअमूनिनःक्षोभं कुर्वन्त्युच्चैःपदानियत् ॥ यैकाऽपहृत्यगोपीनां रहोभुङ्क्तेऽच्युताधरम् ३० नलक्ष्यन्तेपदान्यत्र तस्यानूनंतृणाङ्कुरैः ॥ खिद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्निन्येप्रेयसींप्रियः ३१ अत्रप्रसूनावचयः प्रियार्थेप्रेयसाकृतः ॥ प्रपदाक्रमणेएते पश्यतासकलेपदे ३२ केशप्रसाधनंत्वत्र कामिन्याःकामिनाकृतम् ॥ तानिचूडयताकान्तामुपविष्टमिहध्रुवम् ३३ रेमेतयाचात्मरतआत्मारामोऽप्यखण्डितः ॥ कामिनांदर्शयन्दैन्यं स्त्रीणांचैवदुरात्मताम् ३४ इत्येवंदर्शयन्त्यस्ताश्चेरुर्गोप्योविचेतसः ॥ यांगोपीमनयत्कृष्णो विहायान्याःस्त्रियोवने ३५ साचमेनेतदात्मानं वरिष्ठंसर्वयोषिताम् ॥ हित्वागोपीःकामयानामामसौभजतेप्रियः ३६ ततोगत्वावनोद्देशं दृप्ताकेशवमब्रवीत् ॥ नपारयेऽहंचलितुं नयमांयत्रतेमनः ३७ एवमुक्तःप्रियामाह स्कन्धमारुह्यतामिति ॥ ततश्चान्तर्दधेकृष्णः सावधूरन्वतप्यत ३८ हाना

कृष्णचन्द्र ने कामिनी के या स्थानमें केश बाहि के सुधारे हैं प्यारी कूं बैठाय के केश गुहे जो प्यारोहै सो या स्थानमें निश्चय बैठतभयो ३३ श्रीशुकदेवजी कहे हैं आत्माराम अर्थात् अपने स्वरूप में रमण करे अखण्डित अर्थात् स्त्रीन के कटाक्षके वश नहीं ऐसेहू श्रीकृष्णचन्द्र ता प्यारी के संग रमण करतभये काहे के लिये कामीपुरुषन कूं दीनसों दिखायवे के लिये कामीपुरुष ऐसे स्त्रीनके वशीभूत अधीन होय जाय हैं जैसे कहैं तैसेही करे है स्त्री ऐसी दुष्टा होयहैं जो इच्छा में आवै सोई करावैंहैं ३४ या प्रकार गोपी अचेतहोय होयके खोजन कों देखतभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकूं छांडि के वनमें जा गोपी कूं अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीनमें अपनेकूं श्रेष्ठ मानतभई चाहना करे जो गोपी हैं तिनें त्यागि के यह प्यारो मेरे संग सेवन करे है ३५ । ३६ ता पीछे वह गोपी गर्वित होय के केशव श्रीकृष्णचन्द्र ते बोलत भई मोपै चलो नहीं जायहै जहाँ तुम्हारो मन होय तहाँ ले चलो ३७ या प्रकार जब प्यारी ने कही तब श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी वे कहे हैं मेरे कन्धापै

चढिलेउ तब चढनेलगी तबहीं श्रीकृष्णचन्द्र अन्तर्द्धान होय गये वह गोपी विलाप करतभई ३८ हा नाथ! हे रमावनवारे! हे महाभुज! तुम कहाँ हो कहाँ हो हे सखे! तुम्हारी दासी कृपण मैं हूं
ताको अपनो समीप होय के दर्शन देउ ३९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! वे सब इकट्ठी गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को दूर ते मार्ग ढूंढत ढूंढत प्यारे के वियोग में मोहित और अतिदुःखित
वा सखी कूं देखत भई ४० ता प्यारीने कही जो बात है ताकूं सुनि के और माधव भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सूं ता प्यारी ने सत्कार पायो ताको सुनि के और गर्व भगे ते अपमान भयो ता
कूं सुनिके गोपी बड़े आश्चर्य कूं प्राप्त होति भई ४१ चन्द्रमा की चाँदनी को मकाश जहाँतक हो तहाँताई तो गोपी वनमें ढूंढत भई आगे वृक्षनकी छाया को अँधेरो देखिके बगदि आई ४२
ता श्रीकृष्णमें मन जिनके लगि रहे ताही की बातनकूं कहैं ताही की चेष्टान कूं ग्रहण करें ताको रूप होय के तिन के गुणन कूं गावत देहन की घरनकी सुधि भूलि गई ४३ फेरि बगदि

थरमणश्रेष्ठ क्वासिक्वासिमहाभुज ॥ दास्यास्तेकृपणायामे सखेदर्शयसन्निधिम् ३९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अन्विच्छन्त्योभगवतोमार्गंगोप्योविदूरतः ॥ ददृ
शुःप्रियविश्लेषमोहितांदुःखितांसखीम् ४० तयाकथितमाकर्ण्य मानप्राप्तिंचमाधवात् ॥ अवमानंचदौरात्म्याद्विस्मयंपरमंययुः ४१ ततोविशन्वनंचन्द्र
ज्योत्स्नायावद्विभाव्यते ॥ तमःप्रविष्टमालक्ष्य ततोनिववृतुःस्त्रियः ४२ तन्मनस्कास्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मिकाः ॥ तद्गुणानेवगायन्त्योनात्मा
गाराणिसस्मरुः ४३ पुनःपुलिनमागत्य कालिन्द्याःकृष्णभावनाः ॥ समवेताजगुःकृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ४४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशम
स्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांकृष्णान्वेषणंनामत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
गोप्यऊचुः ॥ जयतितेऽधिकंजन्मनाव्रजः श्रयतइन्दिराशश्वदत्रहि ॥ दयितदृश्यतांदिक्षुतावकास्त्वयिधृतासवस्त्वांविचिन्वते १ शरदुदाशयेसाधु
जातसत्सरसिजोदरश्रीमुषादृशा ॥ सुरतनाथतेऽशुल्कदासिकावरदनिघ्नतोनेहकिंवधः २ विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात् ॥ वृष

के यमुना जी के पुलिन में आय के श्रीकृष्णकी जिनके भावना लगि रही तिनके आयवेकी पैड़ो देखें सम्पूर्ण जुरिमिलि के श्रीकृष्णचन्द्र कूं गावत भई ४४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपि
यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडाया कृष्णान्वेषणंनामत्रिंशतितमोऽध्यायः ३० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
(एकत्रिंशेनिराशास्ताःपुनःपुलिनमागताः ॥ कृष्णमेवानुगायन्त्यःमार्थयन्तेतदागमम् ? इकतीसवें अध्याय में गोपियां निराश होकर फिर यमुना जी के किनारे आकर कृष्णजी को गान करती
हुई तिनके आगमनकी प्रार्थना करती भई १) अब सम्पूर्ण गोपी कहे हैं तुम्हारे जन्म लिये ते यह व्रज अधिक सुन्दर लगे है और याही ते लक्ष्मी जो है सो निरन्तर शोभायमान करे है या प्रकार
सब व्रज में आनन्द होय रह्यो है हे प्यारे! तो में प्राणन कूं धरिके तेरी गोपी तो कूं दिशानमें ढूंढत डोले हैं १ हे सम्भोग के पति! हे मनोवाञ्छित फलके देनवारे! शरद्ऋतु के सरोवरनमें भली
मकार उपजे जो श्रेष्ठ कमल ताके भीतरकी शोभाकूं चुरावै ऐसी तेरी दृष्टि तासूं विना मोलकी दासी हमहैं तिनकूं तुम मारोहो या संसारमें मारिवो नहीं कहावै है कहा शस्त्रही ते मरे है दृष्टिसूं नहीं मरे है

कहा याते तैंने दृष्टिसूं हमारे प्राण हरिलीने हैं तिनके देवेके लिये दिखाई दे २ बहुत मृत्युन ते कृपाकरिके रक्षाकरी अब क्यों कामदेवकों भेजिके दृष्टिसूं मारोहो विषके जल ते जो मृत्युही ताते रक्षा करी अघासुर आयो ताते इन्द्रने वर्षाकरी पवन चलाईही ताते बिजलीकी आगि ते वृषासुर ते यमकेपुत्र व्योमासुर और सम्पूर्ण भयते हे श्रेष्ठ! तैंने वेरवेरमें रक्षाकरी है अब क्यों हमें छोडेहै ३ तुम यशोदा के पुत्र नहीं हो सब देहधारीन के बुद्धिके साक्षी हो ब्रह्मा ने विश्व की रक्षा करिबे के लिये प्रार्थना करी तब हे सखे! यादवन के कुलमें प्रकट भये ४ हे यादवन में श्रेष्ठ! हे कान्त! संसार के भयते तुम्हारे चरण सेवन करें जे पुरुष हैं तिनकूं अभयरूपी कामनान के देनवारे लक्ष्मी के हाथ को पकरनवारो जो तुम्हारो हस्तकमल है ताकूं हमारे माथे पै धरो ५ हे सखे! हे वीर! हे व्रजवासीनके दुःख के हरनवारे! अपने भक्तनके गर्व कों दूरि करनवारी जाकी मुसिकानि सो हम तुम्हारी दासी हैं तिनकूं सेवन करो पहिले स्त्री हम हैं तिनको अपनो मुखकमल दिखावो ६ प्रणत

मयात्मजाद्विश्वतोभयादृषभतेवयंरक्षितामुहुः ३ नखलुगोपिकानन्दनोभवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ॥ विखनसाऽर्थितोविश्वगुप्तये सखउदेयिवान्सात्वतांकुले ४ विरचिताभयंवृष्णिधुर्यते चरणमीयुषांसंसृतेर्भयात् ॥ करसरोरुहंकान्तकामदंशिरसिधेहिनःश्रीकरग्रहम् ५ व्रजजनार्त्तिहन्वीरयोषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ॥ भजसखेभवत्किङ्करीःस्मनोजलरुहाननंचारुदर्शय ६ प्रणतदेहिनांपापकर्शनं तृणचरानुगंश्रीनिकेतनम् ॥ फणिफणार्पितन्तेपदाम्बुजं कृणुकुचेषुनःकृन्धिहृच्छयम् ७ मधुरयागिरावल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञयापुष्करेक्षण ॥ विधिकरीरिमावीरमुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्वनः ८ तवकथाऽमृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंकल्मषापहम् ॥ श्रवणमङ्गलंश्रीमदाततं भुविगृणन्तितेभूरिदाजनाः ९ प्रहसितंप्रियप्रेमवीक्षणं विहरणञ्चतेध्यानमङ्गलम् ॥ रहसिसंविदोयाहृदिस्पृशः कुहकनोमनःक्षोभयन्तिहि १० चलसियद्व्रजाच्चारयन्पशून्नलिनसुन्दरंनाथतेपदम् ॥ शिलतृणाङ्कुरैःसीदतीतिनः कलिलतांमनःकान्तगच्छति ११ दिनपरिक्षयेनीलकुन्तलैर्वनरुहाननंबिभ्रदावृतम् ॥ घनरजस्वलंदर्शयन्मुहुर्मनसिनःस्मरंवीरयच्छसि १२

अर्थात् नम्र जे देहधारी हैं तिनके पापको दूरि करनवारो गौवनके पाछे पाछे चले काली के फण पै नाचे ऐसो तेरो चरणकमल है ताकूं हमारे कुचन पै धरिके कामदेव की व्यथाकूं दूरि कर ७ हे कमलदललोचन! सुन्दर है वाक्य जामें ऐसी तेरी मधुरवाणी सों हे वीर! तेरी दासी मोहित भई जे हम हैं तिनकूं जीवन दे ८ संतप्त-पुरुषन कों जिवावनवारो कविन ने बड़ाई जाकी करी पापन को दूरि करनवारो कानन कों मंगलरूप शान्त ऐसो तुम्हारो कथारूप अमृत कूं जे पुरुष पृथ्वी में कहे हैं वे बड़े दाताहैं ९ तेरो हँसीसहित मुख प्रेम भरी चितवनि ध्यान में मङ्गलरूप तेरो विहार हृदयकूं स्पर्श करनवारी एकान्त की बातें हमारे मनकूं क्षोभ करे है १० हे नाथ! जासमय गौ चरायवे कूं व्रज ते चलोहो तब तुम्हारो कमलकी तुल्य सुन्दर चरण सो काकरी तृण अंकुर लगिके कष्ट कू पावे है तासूं हे कान्त! हमारो मन चञ्चल होयहै ११ सन्ध्या समय नील जे केशहैं तिनसूं ढक्यो ऐसे कमलतुल्य मुखकूं धारण करिके गौवनकी रज जो उड़ी है

तासूं धूसरो जो मुखहै ताकूं वेर वेर दिखाइके हे वीर ! हमारे मन में कामदेव को भेजो हो संग नहीं गयो है यह तुम्हारो निश्चय कपट है १२ नम्र जे देहधारी हैं तिनकूं कामना देनवारो ब्रह्मा ने पूजनकरो पृथ्वी की शोभा को करनवारो आपत्ति में ध्यानयोग्य सुखरूप ऐसो तुम्हारो चरणकमल है ताकूं हे रमावनवारे ! हे कामदेव की पीड़ा के दूर करनवारे ! हमारे कुचनपै धरो १३ हे वीर ! कामदेवकूं बढ़ावो शोक कू दूरकरो बजै जो बाँसुरी है ताने भलेप्रकार अधरामृत चुम्बनकरो चक्रवर्ती आदि लैके जे सुख हैं तिनको दूरकरो १४ जब तुम दिन में बन में जावो हो तब तुम्हारे देखे बिना आधोक्षण युगकी तुल्य बीते है यह बिना देखेको दुःख कहो और घूमघुमारे केश जापै छुटिरहे ऐसो तेरो मुख देखे हैं तिनकी आँखिनपै पलक लगावनवारो ब्रह्मा मूढ़ है या प्रकार पलकलगिवे को अन्तराय नहीं सहारो जाय यह दर्शन में सुख कह्यो १५ पति पुत्र वंश के भय्या बन्धुन कूं त्यागिके बेरे गीतसूं मोहित होयके हम तुम्हारे पास आईं गायवेकी गतीन कूं जाने जो

प्रणतकामदंपद्मजार्चितं धरणिमण्डनंध्येयमापदि ॥ चरणपङ्कजंशन्तमञ्चतेरमणनःस्तनेष्वर्पयाधिहन् १३ सुरतवर्धनंशोकनाशनं स्वरितवेणुनासुष्ठुचुम्बितम् ॥ इतररागविस्मारणंनृणां वितरवीरनस्तेऽधरामृतम् १४ अटतियद्भवानह्निकाननं त्रुटिर्युगायतेत्वामपश्यताम् ॥ कुटिलकुन्तलंश्रीमुखंचतेजड उदीक्षतांपक्ष्मकृद्दृशाम् १५ पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्यतेऽन्त्यच्युतागताः ॥ गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितवयोषितःकस्त्यजेन्निशि १६ रहसिसंविदंहृच्छयोदयं प्रहसिताननंप्रेमवीक्षणम् ॥ बृहदुरःश्रियोवीक्ष्यधामते मुहुरतिस्पृहामुह्यतेमनः १७ व्रजवनौकसांव्यक्तिरङ्गते वृजिनहन्त्र्यलंविश्वमङ्गलम् ॥ त्यजमनाक्चनस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजांयन्निषूदनम् १८ यत्तेसुजातचरणाम्बुरुहंस्तनेषु भीताःशनैःप्रियदधीमहिकर्कशेषु ॥ तेनाटवीमटसितद्व्यथतेनकिंस्वित्कूर्पादिभिर्भ्रमतिधीर्भवदायुषांनः १९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीगीतंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

तू है ताते तेरे पास हे अच्युत ! हम आई हे कपटी ! रात्रि में आई जे स्त्री हैं तिनकूं तेरे बिना ऐसो कौन है जो त्यागेगो १६ कामदेवको उदय जासों होय ऐसे एकान्त को संकेत देखिके हँसी सहित मुखको देखिके प्रेमकी चितवनि देखिके लक्ष्मीके रहिबेको ठिकानो तेरो वक्षःस्थल देखिके हमारे बड़ी चाहनाभई है और हमारो मन मोहित होयहै १७ अंग अर्थात् हे श्रीकृष्णचन्द्र ! तुम्हारो प्रकट होनो व्रजवासीनके वनवासीन के दुःख को दूर करनवारो है अतिशय करिके विश्वको मंगलरूपहै याते तेरी चाहना जिनको लगिरहीहै ऐसी जो हमहैं तिनकूं थोड़ीसी कछु वस्तुहै ताकूंदे कृपणता मतिकरै कहा अपने जनहैं तिनके हृदयके रोगके दूर करावनवारो अतिगोप्य औषधहै ताय तुहीं जाने है यह गोपीन को गूढ़ अभिप्रायहै १८ कठोर स्तनपै जो तेरो चरणकमलहै ताय भय ते हौले हौले धरतभई ज्यों कहूं कोमलचरणमें गडि न जाय ता चरणको वनमें उठाय उठाय डोले करे है कहा चरणमें काँटे काँकर लगिके खेद नहीं होयहै यह जब विचारकरै तब तुमहीं जिनके जीवन ऐसी जो हमहैं तिनकी बुद्धि मोहितहोइहै १९ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायागोपीगीतंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

(द्वात्रिंशेविरहालापविक्लिन्नहृदयोहरिः ॥ तत्राविर्भूयगोपीस्ताःसान्त्वयामासमानयन् १ स्वप्रेमामृतकल्लोलविह्वलीकृतचेतसः ॥ सदयंनन्दयन्गोपीरुद्रतोनन्दनन्दनः २ बत्तीसवें अध्याय में विरह के वार्तालाप सों खेदयुक्त हृदयहोकर कृष्णजी तहाही प्रकटहोकर तिन गोपियों को मान करतेहुये शान्त करतेभये १ अपने प्रेमरूपी अमृतके कल्लोल से विह्वलकिये हुये चित्तवाली गोपियोंको दयासमेत कृष्णजी आनन्दयुक्त करतेहुये प्राप्तहोजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गोपी हैं ते गावत चित्रविचित्र विलाप करत श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनकी जिनके लालसा वे गोपी बड़े स्वर ते रुदन करतभई १ मुसिकाय है मुखकमल जाको शूरवंश में जन्म जाको पीताम्बर कूं पहिरे वनमाला को धारण करे साक्षात् मन्मथ कामदेव ताके मन कूं मोहितकरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन के बीचमें प्रकट होतभये २ प्रीतिपूर्वक प्रसन्न होयके प्रफुल्लित है नेत्र जिनके ऐसी सम्पूर्ण अबला श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिके एक संग उठतभई जैसे देहमें प्राण आये ते हाथ पाव उठे हैं ३ कोई गोपी श्रीकृष्णचन्द्र कों हस्तकमल बड़े आनन्दपूर्वक अपने हाथसूं पकरत भई कोई गोपी चन्दन जामें लग्यो ऐसी भुजाकूं कन्धापै आप उनके हाथकों धरतभई ४ कृश

श्रीशुकउवाच ॥ इतिगोप्यःप्रगायन्त्यःप्रलपन्त्यश्चचित्रधा ॥ रुरुदुःसुस्वरंराजन् कृष्णदर्शनलालसाः १ तासामाविरभूच्छौरिःस्मयमानमुखाम्बुजः ॥ पीताम्बरधरःस्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः २ तंविलोक्यागतंप्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽबलाः ॥ उत्तस्थुर्युगपत्सर्वास्तन्वःप्राणमिवागतम् ३ काचित्कराम्बुजं शौरेर्जगृहेऽञ्जलिनामुदा ॥ काचिद्दधारतद्बाहुमंसेचन्दनभूषितम् ४ काचिदञ्जलिनाऽगृह्णात्तन्वीताम्बूलचर्वितम् ॥ एकातदङ्घ्रिकमलं सन्तप्तास्तनयोरधात् ५ एकाभ्रुकुटिमाबध्य प्रेमसंरम्भविह्वला ॥ घ्नन्तीवैक्षत्कटाक्षेपैः सन्दष्टदशनच्छदा ६ अपराऽनिमिषद्दृग्भ्यांजुषाणातन्मुखाम्बुजम् ॥ आपीतमपिनातृप्यत्सन्तस्तच्चरणंयथा ७ तंकाचिन्नेत्ररन्ध्रेण हृदिकृत्यनिमील्यच ॥ पुलकाङ्ग्युपगुह्यास्ते योगीवानन्दसंप्लुता ८ सर्वास्ताःकेशवालोकपरमोत्सवनिर्वृताः ॥ जहुर्विरहजन्तापं प्राज्ञंप्राप्ययथाजनाः ९ ताभिर्विधूतशोकाभिर्भगवानच्युतोवृतः ॥ व्यरोचताधिकंतात पुरुषःशक्तिभिर्यथा १० ताःसमा

है अंग जाको ऐसी कोई गोपी श्रीकृष्णके मुखमें ते ताम्बूल को उगारहै ताय अपने हाथ में लेतु भई और काम ते तपायमान जो एक गोपी है सो श्रीकृष्णचन्द्र को चरणकमल है ताय अपने स्तनन पै धरतभई ५ एक गोपी अपनी भौंह चढ़ायके कोपके आवेश सूं विकल होयके अपने ओष्ठकूं दातनते दाबिके कटाक्षरूपी बाणन ते मारती सी देखत भई ६ और गोपी नहीं लगेहै पलक जिनमें ऐसी दृष्टिसे श्रीकृष्णचन्द्र को मुखकमल भले प्रकार देख्यो भी है परन्तु फेर फेर देखत नहीं तृप्त होतभई जैसे साधु जिनके चरणारविन्द देखत नहीं तृप्तहोइ हैं ७ रोमाञ्च जाके होयआवें देहमें ऐसी कोई गोपी नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके नेत्रन कूं मूंदिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं आलिंगन करतभई जैसे योगीजन आनन्दमें व्याप्त होय है केशव श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिके परमआनन्दहै तासूं सुखी होयके सम्पूर्ण गोपी विरहके तापकों त्यागत भई जैसे ईश्वरकों पायके मुमुक्षुजन तापकूं छोड़े हैं अथवा सुषुप्ति अवस्थाको साक्षी है ताय पायके जाग्रत्रूप अवस्थावान् जीव जैसे तापकूं छोड़े है ८ । ९ दूरभये हैं शोक जिनके ऐसी गोपीनके बीचमें अच्युत भगवान् हे परीक्षित् ! अधिकसुन्दर लगतभये जैसे परमात्मा सत्त्वगुण सूं आदिलेके जे शक्ति हैं तिनसूं सुन्दर

लगे है अथवा उपासकपुरुष ज्ञान बल वीर्य्य सूं आदिलेके जे शक्ति हैं तिनसूं सुन्दर लगे है १० तिन गोपीन कों संग लेके फूले जे कुन्द मंदार तिनकी सुगन्धिकी पवन सूं भौंरा जामें गुञ्जारकरें ऐसे यमुनाजी के पुलिन में आयके सुन्दर लगतभये ११ फेर कैसे पुलिन हैं शरद्ऋतु के चन्द्रमा की किरणन के समूह ते रात्रिको अन्धकार जामें ते दूर होयगयो है फेर कैसो है यमुना की तरंगन सूं कोमल वारु के विछौना जामें विछरहे हैं १२ ता श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनमें जो आनन्दहै तासूं दूरभये है हृदय के रोग जिनके वे गोपी मनोरथको जो अन्तहै ताकूं पावतभई अर्थात् मनोरथ उनके पूरे होतभये जैसे ज्ञानकाण्डमें श्रुति परमेश्वर कूं देखिके आनन्दसूं पूर्ण होयँ काम के सम्पूर्ण बन्धनन कूं त्यागे हैं कुचनकी केशर जिनमें लगी ऐसी अपनी ओढनीन कूं उतार उतार के श्रीकृष्णचन्द्र के बैठिने को तकिया गादी बनावतभई १३ योगेश्वरन के हृदय के भीतर जिनकों कल्पित आसन है वे ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तीनलोक की शोभा कों एक एकही स्थान कहा तीन

दायकालिन्यानिर्विश्यपुलिनंविभुः ॥ विकसत्कुन्दमन्दारसुरभ्यनिलषट्पदम् ११ शरच्चन्द्रांशुसन्दोहध्वस्तदोषातमःशिवम् ॥ कृष्णायाहस्ततरलाचितकोमलवालुकम् १२ तद्दर्शनाह्लादविधूतहृद्रुजोमनोरथान्तंश्रुतयोयथाययुः ॥ स्वैरुत्तरीयैःकुचकुङ्कुमाङ्कितैरचीक्लृपन्नासनमात्मबन्धवे १३ तत्रोपविष्टो भगवान्सईश्वरोयोगेश्वरान्तर्हृदिकल्पितासनः ॥ चकासगोपीपरिषद्गतोऽर्चितस्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदंवपुर्दधत् १४ सभाजयित्वातमनङ्गदीपनं सहासलीलेक्षणविभ्रमभ्रुवा ॥ संस्पर्शनेनाङ्ककृताङ्घ्रिहस्तयोः संस्तुत्यईषत्कुपिताबभाषिरे १५ गोप्यऊचुः ॥ भजतोऽनुभजन्त्येकएकएतद्विपर्ययम् ॥ नोभयांश्चभजन्त्येकएतन्नोब्रूहिसाधुभोः १६ श्रीभगवानुवाच ॥ मिथोभजन्तियेसख्यः स्वार्थैकान्तोद्यमाहिते ॥ नतत्रसौहृदंधर्मः स्वार्थार्थन्तद्धिनान्यथा १७ भजन्त्यभजतोयेवै करुणाःपितरोयथा ॥ धर्मोनिरपवादोऽत्र सौहृदञ्चसुमध्यमाः १८ भजतोऽपिनवैकेचिद् भजन्त्यभजतःकुतः ॥ आत्मारामाह्यासकामाअकृतज्ञागुरुद्रुहः १९ नाहंतुसख्योभजतोऽपिजन्तून्भजाम्यमीषामनुवृत्तिवृत्तये ॥ यथाऽधनोलब्धधनेविनष्टेतच्चिन्तयाऽन्यन्निभृतोनवेद २०

लोक की शोभा जामें आयरही ऐसे रूप कों धरिके ता आसन पै बैठारि के गोपीन ने जिनको पूजन करो ऐसे गोपीन की सभा में सुन्दर लगतभये १४ कामदेव के बढावनवारे जे श्रीकृष्ण हैं तिनकी हास लीलापूर्वक चितवनि सों चलायमान जो भृकुटी हैं तिनसूं सत्कार करिके गोदमें धरे जो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण तिनकूं हाथन ते दाबत स्तुतिकरिके कछु एक क्रोध ते गोपी बोलत भई १५ सम्पूर्ण गोपी कहे हैं कि हे महाराज! एक पुरुष तो भजतेन को भजे हैं वे कौनसे हैं और एक ऐसे हैं कि नहीं भजतेन को भजे हैं वे कौन हैं और एक भजतेन कों न भजनेन कों दोनोंनकों नहीं भजे हैं वे कौनसे हैं सो हे कृष्ण! यह हमारे आगे भलेप्रकार समझा के कहो १६ श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे सखियो! जे पुरुष परस्पर भजे हैं अर्थात् जितनो वे उनको चाहैं तितनो वे उनको चाहैं वे पुरुष तो आप स्वार्थी हैं वे भजनमें स्नेह सुख धर्म्म कछुओ नहीं है वह तो केवल अपनोही भजन है १७ और जे नहीं भजतेन कों भजे हैं वे पुरुष दो प्रकार के हैं एक तो करुणावान् दूसरे स्नेही जैसे माता पिताकों पुत्र नहीं चाहे है परन्तु वे वाके ऊपर कृपा करे हैं और या भजन में निर्दोष धर्म्म है हे सुमध्यमाः सुन्दर है कटि जिनकी! हे

गोपियो! या भजन में स्नेह भी है १८ कोई पुरुष भजतेनकू भी नहीं भजे है अभजतेन कूं कहाँ ते भजेंगे वे चारप्रकार के हैं एकतो आत्मारामी में रमण करे हैं और एक पूर्णमनोरथ हैं जिनके कोई बातकी चाहना नहीं है और एक अकृतज्ञ हैं उपकार कूं नहीं समझे हैं और एक गुरुद्रोही है जो उपकारकरे ताहीते द्रोह करे है १९ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे सखियो! जो कोई प्राणी मेरो भजन करे हैं तिनको आपनों और ध्यान लगायवे के लिये मैं उनकूं नहीं भजूंहूं जैसे दरिद्री पुरुष कों धन मिले है और वह धन जातरहे है तब वह वाकी चिन्ता के मारे भूख प्यास नहीं जाने है २० हे अबलाओ! मेरे लिये छोडी है लोकमर्यादा वेदमर्यादा पति पुत्र जिनने ऐसी तुमहो तिनकी वृत्ति लगायवे के लिये तुमकूं देखिवेकों नहीं आयो तुम्हारे पासही छिपिके रहतभयो कहू दूरि नहीं गयोहो याते हे प्रियाओ! यह कृष्ण बुरो है ऐसे मो प्यारे में दोष मति लगावो २१ निर्दूषित है सग जिनको ऐसी तुमहो तिनके उपकार को बदलो मोपै देवतानकी बराबर अवस्था होती तौभी नहीं होसके है क्यों जो छोड़ी न जायँ ऐसो घरकी बेड़ीन कू काटिके मेरो सेवन करतभई यातें तुमहीं कहिदेउ कि कृष्ण हमारो ऋणिया नहीं है तो मेरो छुटकारो है

एवंमदर्थोज्झितलोकवेदस्वानांहिवोमय्यनुवृत्तयेऽबलाः ॥ मयापरोक्षंभजतातिरोहितं मासूयितुंमाऽर्हथतत्प्रियंप्रियाः २१ नपारयेऽहंनिरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यंविबुधायुषाऽपिवः ॥ यामाऽभजन्दुर्जरगेहशृङ्खलाः संवृश्च्यतद्वः प्रतियातुसाधुना २२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीसान्त्वनंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंभगवतोगोप्यः श्रुत्वावाचःसुपेशलाः ॥ जहुर्विरहजंतापं तदङ्गोपचिताशिषः १ तत्रारभतगोविन्दोरासक्रीडामनुव्रतैः ॥ स्त्रीरत्नैरन्वितःप्रीतैरन्योऽन्याबद्धबाहुभिः २ रासोत्सवःसंप्रवृत्तो गोपीमण्डलमण्डितः ॥ योगेश्वरेणकृष्णेन तासांमध्येद्वयोर्द्वयोः ॥ प्रविष्टेनगृहीतानां कण्ठेस्वनिकटंस्त्रियः ३ यंमन्येरन्नभस्तावद्विमानशतसंकुलम् ॥ दिवौकसांसदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ४ ततोदुन्दुभयोनेदुर्निपेतुःपुष्पवृष्टयः ॥ ज

मोपै तुम्हारे उपकार को बदलो नहीं होयसके है २२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीसान्त्वनंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

(त्रयस्त्रिंशेततोगोपीमण्डलीमध्यगोहरिः ॥ प्रियास्तारमयामास ह्लादिनीजनकेलिभिः १ तेतीसवें अध्याय में गोपियोंकी मण्डली के मध्य में प्राप्त कृष्णजी तिन प्यारी गोपियों को ह्लादिनीजन केलियों से रमण करातेभये १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार जा श्रीकृष्ण के हस्त चरण कूं आदिले के अंगनसूं बढे हैं मनोरथ जिनके ऐसी गोपी भगवान् श्रीकृष्ण के वचन श्रवण करिके विरह के तापकूं त्यागतभई १ तहां गोविन्द श्रीकृष्ण हैं सो अपनी आज्ञाकी करनवारी प्रसन्न होय आपुस में हाथ जिनने पकरि लिये ऐसी स्त्रीन में रत्न जो गोपी हैं तिनकूं सङ्ग लेके रासक्रीड़ा को आरम्भ करतभये २ गोपीन के समूह हैं तिनसों शोभायमान ऐसो रासको उत्सव है सो योगके ईश्वर श्रीकृष्ण रचत भये मण्डलरूप करिके ठाढ़ीभई जे गोपी हैं तिनके दो दो के बीच में कण्ठ में गलबाहीं डारि गान करत आपहू ठाढ़े भये ३ जिन श्रीकृष्णचन्द्र कूं सब गोपी प्यारो मेरे पास है वह कहे प्यारो मेरे पासहै या प्रकार अपने अपने पास मानत भई रास देखिवेकी

इच्छा जिनके भई ऐसे देवता अपनी स्त्रीनकूं लेके आये तिनके विमाननसूं आकाश छाय रह्यो है ४ देवतान के आये पीछे नगारे बजतभये फूलनकी वर्षा होतभई मुख्य मुख्य गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रीन को संगलेके श्रीकृष्ण के निर्म्मल यशको गावतभये ५ प्यारे श्रीकृष्णसहित जे स्त्री हैं तिन के कंकण नूपुर किंकिणीन को रासमण्डल में बड़ो झनकार शब्द होतभयो ६ जैसे दो दो सोने के मणियान के बीचमें एक एक नीलमणि सुन्दर लगे हैं तैसे वा रासमण्डल में दो दो गोपीन के बीच में एक एक भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अतिसुन्दर लगत भये ७ पावन की धरनि भुजान की हलनि मुसिकानि सहित भृकुटीन की चढनि कमरन की लचकनि कुचनकी और वस्त्रनकी हलनि कपोलन पै कुण्डलन की हलनि तिनसूं पसीना मुंहपै जिनके आय गये चोटिनकी नारेन की गांठि जिनकी खुलगई ऐसी श्रीकृष्णचन्द्र की वधू गोपी श्रीकृष्ण कूं गावत जैसे मेघमण्डल में बिजुली सुन्दर लगे हैं तैसे सुन्दर लगतभई ८ नाना रंगनसूं कण्ठ जिनके रंगिरहे रतिही जिनको

जगुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकास्तद्यशोमलम् ५ वलयानांनूपुराणां किङ्किणीनाञ्चयोषिताम् ॥ सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले ६ तत्रातिशुशुभेताभिर्भगवान्देवकीसुतः ॥ मध्येमणीनांहैमानां महामरकतोयथा ७ पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासैर्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुण्डलैर्गण्डलोलैः ॥ स्विद्यन्मुख्यःकवररशनाग्रन्थयःकृष्णवध्वोगायन्त्यस्तंतडितइवतामेघचक्रेविरेजुः ८ उच्चैर्जगुर्नृत्यमानारक्तकण्ठ्योरतिप्रियाः ॥ कृष्णाभिमर्शमुदितायद्गीतेनेदमावृतम् ९ काचित्समंमुकुन्देनस्वरजातीरमिश्रिताः ॥ उन्निन्येपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति ॥ तदेवध्रुवमुन्निन्येतस्यैमानञ्चबह्वदात् १० काचिद्रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्यगदाभृतः ॥ जग्राहबाहुनास्कन्धंश्लथद्वलयमल्लिका ११ तत्रैकांसगतंबाहुंकृष्णस्योत्पलसौरभम् ॥ चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमाचुचुम्बह १२ कस्याश्चिन्नाट्यविक्षिप्तकुण्डलत्विषमण्डितम् ॥ गण्डंगण्डेसन्दधत्याअदात्ताम्बूलचर्वितम् १३ नृत्यन्तीगायतीकाचित्कूजन्नूपुरमेखला ॥ पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधात्स्तनयोःशिवम् १४ गोप्योलब्ध्वाऽच्युतंकान्तं श्रियएकान्तवल्लभम् ॥ गृहीतकण्ठ्यस्तद्दोर्भ्यां

प्यारी श्रीकृष्णको स्पर्श जिनको होय तासूं बड़ो जिनके आनन्द वे गोपी नृत्य करत ऊँचे स्वर से गावतभई जिनको गीत या विश्व में छायरह्यो ९ कोई गोपी मुकुन्द जे श्रीकृष्ण हैं तिनके संग उच्चस्वरन के आलापन की गतिन कूं उठावत भई कैसे स्वरन की जातिलीनी श्रीकृष्णने जो स्वर उठायो है तिनमें मिली हैं तब श्रीकृष्ण प्रसन्न होयके स्याबास स्याबास ऐसे बड़ाई करत भये ताते स्वरनकी जाति लीनीही तिनकूं ध्रुवताल में बांधिके गावतभई जो गोपी हैं सो गोपी को श्रीकृष्णचन्द्र बहुत मान देत भये १० कोई गोपी रासमें श्रमित होयके पासमें गदाके धारण करनवारे श्रीकृष्ण ठाढे हैं तिनके कन्धाको हाथते पकरतभई कङ्कण फूलनके हार जाके शिथिल होयगये ११ तासमय रोमाञ्च जाके होय आये ऐसी एक गोपी कमलकी तुल्य जामें सुगन्धि आवै चन्दन जामें लग्यो ऐसी श्रीकृष्णकी भुजाको अपने कन्धापै धरिके चुम्बन करतभई १२ नृत्यसूं चलायमान जो कपोल ताकूं श्रीकृष्ण के कपोलन ते लगावै ऐसी जो गोपी है ताकूं श्रीकृष्ण बीरी को उगार देतभये १३ नूपुर कंधनी जाके बजें ऐसी कोई एक गोपी नृत्य करत गावत श्रम जाको भयो तब पास श्रीकृष्ण ठाढे हैं तिनको मंगलरूप हस्तकमल अपने स्तनन पै धरति भई १४

लक्ष्मी कूं अत्यन्त प्यारे ऐसे अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र कूं सुन्दर पति पाइ के तिनकी भुजान सूं कण्ठ में गलबाहीं डारि के श्रीकृष्ण कौं गावती विहार करत भई १५ कानन में नीलकमल और अलकावली तिनसूं शोभायमान जो कपोल और पसीनान के विन्दु तिनसूं शोभायमान जिनके मुख केशन ते झरझर के फूल गिरें जिनके वे गोपी भौंरा जहॉ गवैया रासकी सभा में कङ्कण नूपुर के झनकारे जे वाजे हैं तिनसूं श्रीकृष्ण के संग नृत्य करत भई गवैया बजवैया गन्धर्व्व किन्नरादिक रास देखिके मोहित होय गये तब नूपुर कंकणन के वाजे बजे भौंरा गवैया भये सब रिझवैया होयके पावन के ऊपर फूल वर्षावत भये १६ या प्रकार लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण आलिङ्गन हाथन को स्पर्श स्नेह भरी चितवनि बड़े विलास हास हैं तिनसूं बालक अपनी परछाई सूं खेलै है तैसे व्रजसुन्दरीन के संग रमण करत भये १७ हे कुरूद्वह अर्थात् कौरन के वंश को आनन्द देनवारे राजा परीक्षित्! तिन श्रीकृष्णके अंग में जो आनन्द तासूं विवशहै इन्द्रिय जि-

गायन्त्यस्तंविजह्रिरे १५ कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रियोवलयनूपुरघोषवाद्यैः ॥ गोप्यःसमंभगवताननृतुःस्वकेशस्रस्तस्रजोभ्रमरगायकरा
सगोष्ठ्याम् १६ एवंपरिष्वङ्गकराभिमर्शस्निग्धेक्षणोद्दामविलासहासैः ॥ रेमेरमेशोव्रजसुन्दरीभिर्यथाऽर्भकःस्वप्रतिबिम्बविभ्रमः १७ तदङ्गसङ्गप्रमदाकु
लेन्द्रियाः केशान्दुकूलंकुचपट्टिकांवा ॥ नाञ्जःप्रतिव्योढुमलंव्रजस्त्रियोविस्रस्तमालाभरणाःकुरूद्वह १८ कृष्णविक्रीडितंवीक्ष्य मुमुहुःखेचरस्त्रियः ॥ का
मार्दिताःशशाङ्कश्च सगणोविस्मितोऽभवत् १९ कृत्वातावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः ॥ रेमेसभगवांस्ताभिरात्मारामोऽपिलीलया २० तासामति
विहारेण श्रान्तानांवदनानिसः ॥ प्रामृजत्करुणःप्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना २१ गोप्यःस्फुरत्पुरटकुण्डलकुन्तलत्विङ्गण्डश्रियासुधितहासनिरीक्षणेन ॥
मानंदधत्यऋषभस्यजगुःकृतानि पुण्यानितत्कररुहस्पर्शप्रमोदाः २२ ताभिर्युतःश्रममपोहितुमङ्गसङ्गघृष्टस्रजःसकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ॥ गन्धर्व्वपालि
भिरनुद्रुतआविशद्वाः श्रान्तोगजीभिरिभराडिवभिन्नसेतुः २३ सोऽम्भस्यलंयुवतिभिःपरिषिच्यमानः प्रेम्णेक्षितःप्रहसतीभिरितस्ततोऽङ्ग ॥ वैमानिकैः

तकी और खिसिले हैं माला गहने जिनके ऐसी व्रज की स्त्री गोपी हैं ते केशन कूं रेशमी वस्त्रन कूं कुचन के वस्त्रन कूं सम्हारवे कूंन समर्थ होतभई १८ श्रीकृष्ण की रासक्रीडा देखिके आकाश में देवांगना काम सूं पीड़ित होय के मोहित होत भई तारागण सहित चन्द्रमा आश्चर्य्य मानके चलिवो भूलि गयो तब और ग्रह भी जहॉ के तहॉ रहत भये तासूं राति जो वढ़ि गई तिनमें सुख पूर्व्वक विहार करतभये १९ जितनी गोपन की स्त्रीरहीं तितनेही अपने रूप करिके आत्माराम भगवान् श्रीकृष्ण गोपीन के संग लीला करत रमत भये २० अत्यन्त विहार सूं श्रम जिनको भयो ऐसी गोपीन के मुख के पसीना को देखिके करुणा जिनके आय गई ऐसे श्रीकृष्ण हैं सो प्रेमसों सुख को देनवारो अपनो हाथ तासूं पोंछत भये २१ श्रीकृष्ण के हस्तकमल के लगिवे ते है आनन्द जिनके ऐसी जे गोपी हैं ते प्रकाशमान सुवर्ण के कुण्डल और केशन की कान्ति सों शोभायमान अमृतसमान हाससमेत चितवनिसों कृष्णजी को पूजन करतीभई और तिनके पुण्यकारी कर्मो को गावत भई २२ रासक्रीड़ा को श्रम जिनको भयो ऐसे श्रीकृष्ण तिन गोपिनकों संग लेके श्रम दूरि करिवे के लिये जलमें धसत भये कुचनकी केशर जामें लगी अंगसंग सू रगड़ी ऐसी

जो माला है ताकी सुगन्धि सूं गन्धर्व्वन की तुल्य भौंरा गावत गावत पीछे चले जाय हैं जैसे हथिनीन कूं संगलैके हाथी जलविहार करिबे कूं जाय है २३ अङ्क अर्थात् हे राजन् परीक्षित् ! इत उत ते जल में स्त्रीन कू छींटा देय हैं श्रीकृष्ण कूं देखिके प्रेम ते हेरो हैं विमानन में बैठे देवता जिनकी स्तुति करें पुष्पन की वर्षा करें हाथी की तुल्य जिनकी लीला ऐसे आत्माराम श्रीकृष्ण तहूं जल में अथवा गोपीन के मण्डल में विहार करत भये २४ जलविहार करे पीछे जल के स्थल के पुष्प हैं तिनकी सुगन्धि जिन में आवै ऐसी पवन सों सेवित हैं दिशान के अन्त जामें ऐसो जो यमुनाजी को बाग है तामें भौंरा गोपी जिनके संग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र विहार करत भये मद जाके चुवे ऐसो हाथी जैसे हथिनीन के संग विहार करे है २५ या प्रकार प्रकाशमान जे रात्री हैं तिनकूं चन्द्रमा की किरणन सूं सत्य जिनको सङ्कल्प अनुरागवती जो गोपी हैं तिनके समूह में विराजमान अपने विषे वीर्य्य जिनने रोको ऐसे श्रीकृष्ण शरदृऋतुमें रमण करत काव्यन ने कहे जे रस हैं तिनके आश्रय ऐसी शरदृऋतु के चन्द्रमा की किरणन सूं प्रकाशमान जे रात्रि है तिनें सेवन करतभये २६ राजा परीक्षित् प्रश्न करें हैं हे महाराज शुकदेवजी ! धर्म्म के स्थापन करिबे के लिये और

कुसुमवर्षिभिरीड्यमानोरेमेस्वयंस्वरतिरत्रगजेन्द्रलीलः २४ ततश्चकृष्णोपवने जलस्थलप्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ॥ चचारभृङ्गप्रमदागणावृतोयथाम दच्युद्द्विरदःकरेणुभिः २५ एवंशशाङ्कांशुविराजितानिशाः ससत्यकामोऽनुरतावलागणः ॥ सिषेवआत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्व्वाःशरत्काव्यकथारसा श्रयाः २६ ॥ राजोवाच ॥ संस्थापनायधर्मस्य प्रशमायेतरस्यच ॥ अवतीर्णोहिभगवानंशेनजगदीश्वरः २७ सकथंधर्मसेतूनां वक्ताकर्त्ताऽभिरक्षिता ॥ प्रतीपमाचरद्ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् २८ आप्तकामोयदुपतिः कृतवान्वैजुगुप्सितम् ॥ किमभिप्रायएतन्नःसंशयंछिन्धिसुव्रत २९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्टईश्वराणाञ्चसाहसम् ॥ तेजीयसांनदोषाय वह्नेःसर्वभुजोयथा ३० नैतत्समाचरेज्जातु मनसाऽपिह्यनीश्वरः ॥ विनश्यत्याचरन्मौ ढ्याद्यथारुद्रोऽब्धिजंविषम् ३१ ईश्वराणांवचःसत्यं तथैवाचरितंक्वचित् ॥ तेषांयत्स्ववचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत्समाचरेत् ३२ कुशलाचरितेनैषामिहस्वार्थो

अधर्म्म के नाश करिबे के लिये जगत् के ईश्वर श्रीकृष्ण भगवान् परिपूर्ण रूप करिके अवतरे हैं और धर्म्म की मर्य्यादान के कहनवारे करनवारे रक्षा करनवारे श्रीकृष्ण बिरानी स्त्रीनको स्पर्श करनो यह अधर्म्म कैसे करतभये पूर्णकाम यादवनके पति श्रीकृष्ण निंदित कर्म्म कैसे करतभये याको कहा अभिप्रायहै सुन्दरहै व्रत जिनको ऐसे हे शुकदेवजी ! यह जो हमारो सन्देहहै ताय दूरि करो २७।२८।२९ यह वचन श्रवण करिके श्रीशुकदेवजी बोले हे राजन् परीक्षित् ! सामर्थ्यवान् कूं धर्म्म को उल्लांघिबो देख्यो है और सामर्थ्यवान् कूं साहसहू देख्यो है ब्रह्मा अपनी पुत्री के पीछे भाज्यो चन्द्रमा बृहस्पति की स्त्रीके पास गयो जैसे अग्निमें बुरी भली वस्तु डारो ताकूं जराय देइ वाकू दोष नहीं लगेहै ऐसे तेजस्वी पुरुषनकूं दोष नहीं लगेहै ३० असामर्थ्यवान् पुरुष इन कू मन से हू न करे और जो अज्ञान ते करे तो मारो जाय जैसे रुद्र बिना और कोई समुद्र के विष कूं पीवे तो मारो जाय ३१ ईश्वरों के वचनही कों सत्यमाने और उनके आचरणकूं कहूं सत्य माने जैसो उनने कह्यो है ताही के अनुसार बुद्धिमान् पुरुष करे राम कृष्ण दोउ अवतारभये हैं रामचंद्रने जैसो कह्यो तैसोहीकरोहै याते उनको कहनो करनो दोनों करै श्रीकृष्णने गीतामें जो कह्यो

है ताय करै और उनने जे लीला करी है तिनको न करे किन्तु ध्यान करे ३२ हे प्रभो अर्थात् राजन् परीक्षित् ! या संसार में अहङ्कार जिनके नहीं ऐसे सामर्थ्यवान् पुरुष जो अच्छोकर्म करें तासूं उनकों पुण्य नहीं होयहै और निकृष्टकर्म करने सूं पाप नहीं होयहै पुण्य पाप तो देह में अहंकार के वश सूं लगे है अहंकाररहित पुरुष कूं कछु दोष नहीं है ३३ समस्त प्राणी पशु पक्षी मनुष्य देवता जीव इनके ईश्वर जो श्रीकृष्ण हैं तिनकूं पुण्य पाप नहीं लगे है यामें कहा कहनो है ३४ जिनके चरणारविन्द को पराग अर्थात् मकरन्दके सेवन करे ते तृप्तभये जे भक्तहैं ते और योगके प्रभाव सों दूरभये हैं सम्पूर्ण कर्मबन्धन जिनके ऐसे जे मुनीश्वर ज्ञानी ते बन्धनसूं रहित होयके अपनी इच्छापूर्व्वक विचरैहै और इच्छाकरिके धारण कियोहै रूप जिनने ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं बन्धन कहा ते होय ३५ गोपी और तिनके पतिन के सम्पूर्ण देहधारीन के साक्षीरूप होयके जो देहके भीतर रहे है तिन श्रीकृष्णने क्रीडा करिबे के लिये देह धारण करेहै ३६

नविद्यते ॥ विपर्ययेणवानर्थो निरहङ्कारिणांप्रभो ३३ किमुताखिलसत्त्वानांतिर्यङ्मर्त्यदिवौकसाम् ॥ ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलान्वयः ३४ यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता योगप्रभावविधुताखिलकर्मबन्धाः ॥ स्वैरञ्चरन्तिमुनयोऽपिननह्यमानास्तस्येच्छयात्तवपुषःकुतएवबन्धः ३५ गोपीनांतत्पतीनाञ्चसर्वेषामेवदेहिनाम् ॥ योऽन्तश्चरतिसोऽध्यक्षःक्रीडनेनेहदेहभाक् ३६ अनुग्रहायभूतानांमानुषंदेहमास्थितः ॥ भजतेतादृशीःक्रीडायाःश्रुत्वातत्परोभवेत् ३७ नासूयन्खलुकृष्णाय मोहितास्तस्यमायया ॥ मन्यमानाःस्वपार्श्वस्थान् स्वान्स्वान्दारान्व्रजौकसः ३८ ब्रह्मरात्रउपावृत्तेवासुदेवानुमोदिताः ॥ अनिच्छन्त्योययुर्गोप्यःस्वगृहान्भगवत्प्रियाः ३९ विक्रीडितंव्रजवधूभिरिदञ्चविष्णोःश्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथवर्णयेद्यः ॥ भक्तिंपरांभगवतिप्रतिलभ्यकामं हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेणधीरः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धे रासक्रीडावर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकदादेवयात्रायां गोपालाजातकौतुकाः ॥ अनोभिरनडुद्युक्तैः प्रययुस्तेऽम्बिकावनम् १ तत्रस्नात्वासरस्वत्यां देवंपशुपतिंविभुम् ॥

प्राणीनके ऊपर अनुग्रह करिबे के लिये मनुष्य देहधारणकरिके मनुष्य लीला करी हैं जिन लीलानके श्रवण करे ते मनुष्य कृष्णपरायण होयजाय ३७ ता श्रीकृष्णकी मायामें मोहित जे व्रजवासी ते श्रीकृष्णको दोष नहीं लगावत भये अपनी अपनी स्त्रीनको अपने अपने पास मानतभये ३८ ब्रह्ममुहूर्त्त अर्थात् चारघड़ी रात्रि रहे श्रीकृष्णके कहेते घर आइवेकी इच्छा जिनके नहीं ऐसी प्यारी गोपी अपने अपने घरकूं आवतभई ३९ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने परमकौतुक जो व्रजवधू गोपीन के संग रासलीला है ताय जो पुरुष श्रद्धापूर्व्वक श्रवणकरे और कथन करे वह पुरुष भगवान्में परमभक्ति पायके थोड़े दिनमें धीर होयके जल्दी देसी हृदयके कामरूप रोग कों त्यागे है ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेरासक्रीडावर्णनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

(चतुस्त्रिंशेऽहिनाग्रस्तं नन्दंहरिरमूमुचत् ॥ विद्याध्रंचाङ्गिरःशापान्छङ्खचूडंतथाऽवधीत् १ रासापदेशतःकाम किङ्करीकृत्यकामतः ॥ अनुगृह्णन्वशंनिन्ये तथाविद्याधराधिपम् २ चौतीसवें अध्याय में अङ्गिराजी के शाप सों सुदर्शन विद्याधर सर्परूप होकर नन्दजी को ग्रसताभया तिससे कृष्णजी नन्दजी को छुड़ातेभये और शङ्खचूड़ को मारते भये १ रास के अपदेश सूं कामते का-

मदेव को दूतकर ग्रहणकर वश में मास करतेभये और विद्याधरों के स्वामी सुदर्शन को भी वश करतेभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! एकसमय भयो है कौतुक जिनके ऐसे व्रजवासी देवीकी यात्रा करिने के लिये बैल जिनमें जुते ऐसे गाडान में बैठि के देवी के वन में जातभये १ ता वनमें सरस्वती नदी में स्नान करिके पशुपति जो महादेव हैं तिनकी हे राजन् परीक्षित्! भक्तिपूर्वक पूजा करिके अम्बिकादेवीकीभी पूजा करत भये २ सम्पूर्ण व्रजवासी महादेव हमारे ऊपर प्रसन्न होयँ या कारण गऊ, सोना, वस्त्र और मधुयुक्त मधुर अन्न ब्राह्मणन कूं दान करत भये ३ बडो है भाग्य जिनको ऐसे नन्द सू आदिलैके समस्तव्रजवासी वा दिनरात्रि कूं जल को आचमन करिके तीर्थ व्रत करते सरस्वती के किनारे वसतभये ४ वा वन में कोई एक अत्यन्त भूखो सर्प अकस्मात् आयके सोतेहुये नन्दरायजी को ग्रसत भयो ५ सर्प ने जब ग्रस्यो तब नन्दरायजी पुकारत भये हे कृष्ण! हे कृष्ण! यह बडो सर्प है मोकों निगले जायहै हे पुत्र! मैं तेरी

आनर्चुरर्हणैर्भक्त्या देवीञ्चनृपतेऽम्बिकाम् २ गावोहिरण्यंवासांसि मधुमध्वन्नमादृताः ॥ ब्राह्मणेभ्योददुःसर्वे देवोनःप्रीयतामिति ३ ऊषुःसरस्वतीतीरे जलंप्राश्यधृतव्रताः ॥ रजनींतांमहाभागानन्दसुनन्दकादयः ४ कश्चिन्महानहिस्तस्मिन् विपिनेऽतिबुभुक्षितः ॥ यदृच्छयागतोनन्दं शयानमुरगोऽग्रसीत् ५ सचुक्रोशाहिनाग्रस्तः कृष्णकृष्णमहानयम् ॥ सर्पोमांग्रसतेतात प्रपन्नंपरिमोचय ६ तस्यचाक्रन्दितंश्रुत्वा गोपालाःसहसोत्थिताः ॥ ग्रस्तञ्चदृष्ट्वाविभ्रान्ताः सर्पंविव्यधुरुल्मुकैः ७ अलातैर्दह्यमानोऽपि नामुञ्चत्तमुरङ्गमः ॥ तमस्पृशत्पदाभ्येत्य भगवान्सात्वतांपतिः ८ सवैभगवतः श्रीमत्पादस्पर्शहताशुभः ॥ भेजेसर्पवपुर्हित्वा रूपंविद्याधरार्चितम् ९ तमपृच्छद्धृषीकेशः प्रणतंसमुपस्थितम् ॥ दीप्यमानेनवपुषा पुरुषंहेममालिनम् १० कोभवान्परयालक्ष्म्या रोचतेऽद्भुतदर्शनः ॥ कथंजुगुप्सितामेतां गतिंवाप्रापितोवशः ११ ॥ सर्पउवाच ॥ अहंविद्याधरःकश्चित्सुदर्शनइतिश्रुतः ॥ श्रिया स्वरूपसम्पत्त्या विमानेनाचरन्दिशः १२ ऋषीन्विरूपानाङ्गिरसः प्राहसंरूपदर्पितः ॥ तैरिमांप्रापितोयोनिं प्रलब्धैःस्वेनपाप्मना १३ शापोमेऽनुग्रहायैव

शरण आयो हूं तू मोको छोड़ाउ ६ या प्रकार नन्दजी की पुकार सुनिके हरबराहट जिनके भयो ऐसे व्रजवासी शीघ्रही उठिके नन्दजी कूं सर्प निगलेहै ऐसे देखिके सुलगती लकरियान सूं सर्पको मारत भये ७ सुलगती लकरियान सूं मारोगयो तथापि नन्दरायजी को न छोड़त भयो तब भक्तनकी रक्षा करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वा सर्प के चरणनकी ठोकर मारत भये भगवान् श्रीकृष्ण को सुन्दर जो चरणहै ताके लगे से पाप जाके दूरभये वह सर्प देहकों त्यागिके विद्याधर जाको पूजन करैं ऐसे स्वरूप कों धारण करतभयो ८। ९ प्रकाशमान रूपकों धरिके सुवर्णकी माला पहिरे हाथजोरि ठाढ़ो जो पुरुषहै ताय श्रीकृष्ण पूंछतभये १० परमशोभायमान अद्भुत है दर्शन जिनको ऐसे तुम कौनहो विवश होयके यह निन्दित सर्पकी योनि तुमको कैसे मिली है? ११यह सुनिके वह सर्प बोल्यो हे महाराज! सुदर्शन नाम करिके विख्यातमैंकोई विद्याधरहों सम्पत्ति और शरीरकी जो सुन्दरता है तासूं गर्वित होयके विमान में बैठिके दिशान में विचरत भयो १२ स्वरूपको है मद जाके ऐसो मैं अंगिरावंशमें भये ऐसे विरूप जो अष्टावक्रादिक ऋषि हैं तिनकी हांसी करत भयो तब उनने शाप दीनों तासूं मेरी सर्पयोनि होयगई १३ करुणावान् ऋषीश्व-

रनने मेरे ऊपर कृपा करिवे के लिये मो कों शाप दियो जा कारण ते त्रिलोकी के गुरु तुमहौ तिनके चरणारविन्द को स्पर्श करेते पाप दूर भये और जो वे शाप न देते तो तुम्हारे चरण मेरे कहा ते लगते १४ ससार ते डरपि के शरण आये पुरुष के भयके दूरि करनवारे तुमही तिनसों पूंछौं हौ हे सब पापन के दूरि करनवारे तुम्हारे चरणस्पर्शसूं मेरे सब पाप दूरि होयगये १५ हे महायोगिन्! हे महापुरुष! हे महासाधुन के पति! हे प्रकाशयुक्त! हे समस्त लोकन के ईश्वरनके ईश्वर! तुम्हारी शरण आयो जो मैं हौं सो मो कों आज्ञादेउ १६ हे अच्युत अर्थात् अखण्डरूप! तुम्हारो दर्शन करे ते शीघ्रही ब्राह्मण के शाप ते छूटिगयो जिनको नामोच्चारण सब श्रोतानकूं अपनेनकूं पवित्र करे है तुम्हारे चरणस्पर्श ते मैं पवित्र भयो यामें कहा कहनो है या प्रकार दाशार्हवंश में भये जे श्रीकृष्ण तिनकी आज्ञालेके परिक्रमा देके प्रणाम करिके वह सुदर्शन स्वर्गकूं जात भयो और नन्दरायजी कष्ट ते छूटत भये १७। १८ श्रीकृष्णचन्द्र को वैभव देखिके आ-

कृतस्तैःकरुणात्मभिः ॥ यदहंलोकगुरुणापदास्पृष्टोहताशुभः १४ तंत्वाऽहंभवभीतानां प्रपन्नानांभयापहम् ॥ आपृच्छेशापनिर्मुक्तः पादस्पर्शादमीवहन् १५ प्रपन्नोऽस्मिमहायोगिन् महापुरुषसत्पते ॥ अनुजानीहिमांदेव सर्वलोकेश्वरेश्वर १६ ब्रह्मदण्डाद्विमुक्तोऽहं सद्यस्तेऽच्युतदर्शनात् ॥ यन्नाम गृह्णन्नखिलान्श्रोतॄनात्मानमेवच ॥ सद्यःपुनातिकिंभूयस्तस्यस्पृष्टःपदाहिते १७ इत्यनुज्ञाप्यदाशार्हंपरिक्रम्याभिवन्द्यच ॥ सुदर्शनोदिवंयातःकृच्छ्रान्नन्दश्चमोचितः १८ निशाम्यकृष्णस्यतदात्मवैभवं व्रजौकसोविस्मितचेतसस्ततः ॥ समाप्यतस्मिन्नियमंपुनर्व्रजं नृपाययुस्तत्कथयन्तआदृताः १९ कदाचिदथगोविन्दोरामश्चाद्भुतविक्रमः ॥ विजह्रतुर्वनेरात्र्यां मध्यगौव्रजयोषिताम् २० उपगीयमानौललितं स्त्रीजनैर्बद्धसौहृदैः ॥ स्वलंकृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौविरजोऽम्बरौ २१ निशामुखंमानयन्तावुदितोडुपतारकम् ॥ मल्लिकागन्धमत्तालिजुष्टंकुमुदवायुना २२ जगतुःसर्वभूतानां मनःश्रवणमङ्गलम् ॥ तौकल्पयन्तौयुगपत्स्वरमण्डलमूर्च्छितम् २३ गोप्यस्तद्गीतमाकर्ण्य मूर्च्छितानाविदन्नृप ॥ स्रंसद्दुकूलमात्मानंस्रस्तकेशस्रजन्ततः २४ एवंविक्रीडतोः

श्चर्य कूं प्राप्तभये है चित्त जिनके ऐसे व्रजवासी ता पीछे तीर्थ में नियमकूं पूर्ण करिके बडेआनंद तें श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र को कहत व्रजमें आवत भये १९ काहू समय एक यात्राके पीछे गोविन्द और अद्भुत है पराक्रम जिनको ऐसे बलराम दोनों भय्या वन के विषे रात्रि में व्रजकी स्त्रीनके बीच में विहार करतभये २० बाधो है स्नेह जिनने ऐसी स्त्री ललित तिनसूं दोनों भय्या सुन्दर आभूषण पहिरे केशर चन्दन लगाये वनमालाकूं पहिरे निर्मल वस्त्र पहिरके गावे हैं २१ उदय भये हैं तारागण चन्द्रमा जामें ऐसो सन्ध्यासमय ताको सत्कार करे हैं चमेली की सुगन्ध सों मत्त होयके भौंरा गुञ्जार करे हैं कुमोदनी जो फूली हैं तिनसों लगिके पवन चले हैं २२ सब प्राणीन के मनकूं कानकूं आनन्द को देनवारो जो गीत है ताकूं गावत भये स्वरनके मण्डलकी मूर्च्छना कहा आलापचारी ताकूं एक संग लेइ हैं २३ हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण बलदेवको गायवो सुनिके मूर्च्छा जिनको आयगई ऐसी गोपीनके वस्त्र ढीलेहोयगये चोटीनकी गांठ खुलिगई ऐसे

अपनने कूं न जानतभई २४ या प्रकार कृष्ण वलदेव दोनों भय्या मतवारे की तुल्य क्रीड़ा करत गान करत रहे इतने में शंखचूड़ जाकों नाम ऐसो कुवेर को टहलुआ आवत भयो २५ हे राजन्परीक्षित्! कृष्ण वलदेव के देखत भय जाके नहीं ऐसो जो शंखचूड़ कृष्ण वलदेव हैं रक्षक जिनके ऐसे पुकारत जे गोपीन के समूह तिनें खदेर के उत्तरदिशा लेजात भयो २६ जैसे सिंहकी पकरी गौ पुकारे हैं तैसे हे कृष्ण वलदेव! या प्रकार पुकारें ऐसी जो अपनी पुकार ताय देखिके कृष्ण वलदेव दोनों भय्या शंखचूड़ के पीछे दौरत भये २७ मत डरपो २ ऐसो भय के दूरि करनवारो वचन जिनको शाल के वृक्ष हाथ में लिये शीघ्रता सूं कृष्ण वलदेव दौरिके गुह्यकन में अधम जो शंखचूड़ है ताके पीछे जात भये २८ कालमृत्यु की तुल्य पीछे दौरे चले आवें जो श्रीकृष्ण वलदेव तिन्हें देखिके स्त्रीनकूं छोड़िके मूढ़ जो शंखचूड़ है सो अपने प्राण वचायवे के लिये भाजतभयो २९ जहा जहा शंखचूड़ दौरके गयो तहां तहा गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र

स्वैरं गायतोःसंप्रमत्तवत् ॥ शङ्खचूडइतिख्यातो धनदानुचरोऽभ्यगात् २५ तयोर्निरीक्षतोराजंस्तन्नाथंप्रमदाजनम् ॥ क्रोशन्तंकालयामासदिश्युदीच्यामशङ्कितः २६ क्रोशन्तंकृष्णरामेति विलोक्यस्वपरिग्रहम् ॥ यथागादस्युनाग्रस्ताभ्रातरावन्वधावताम् २७ माभैष्टेत्यभयारावौ शालहस्तौतरस्विनौ ॥ आसेदतुस्तंतरसात्वरितंगुह्यकाधमम् २८ सवीक्ष्यतावनुप्राप्तौ कालमृत्यूइवोद्विजन् ॥ विसृज्यस्त्रीजनंमूढः प्राद्रवज्जीवितेच्छया २९ तमन्वधावद्गोविन्दो यत्रयत्रसधावति ॥ जिहीर्षुस्तच्छिरोरत्नं तस्थौरक्षन्स्त्रियोबलः ३० अविदूरइवाभ्येत्य शिरस्तस्यदुरात्मनः ॥ जहारमुष्टिनैवाङ्ग सहचूडामणिंविभुः ३१ शङ्खचूडंनिहत्यैवं मणिमादायभास्वरम् ॥ अग्रजायाददत्प्रीत्या पश्यन्तीनाञ्चयोषिताम् ३२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेशङ्खचूडवधोनामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ गोप्यःकृष्णेवनंयातेतमनुद्रुतचेतसः॥ कृष्णलीलाःप्रगायन्त्योनिन्युर्दुःखेनवासरान् १ गोप्यऊचुः ॥ वामबाहुकृतवामकपोलोवल्गि

वाक शिरकी मणि लेवे के लिये पीछे भाजत भये और वलदेवजी स्त्रीनकी रक्षाके लिये ठाडे होतभये ३० हे राजन् परीक्षित्! थोड़ीसी दूर जायके श्रीकृष्णचन्द्र दुष्टहै मन जाको ऐसो शंखचूड़ है ताके मुष्टिक मारिके शिरसहित माथे की मणिकूं लेतभये ३१ श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार शंखचूड़ दैत्य कों मारिके प्रकाशयुक्त जो मणिहै ताय लैके समस्त स्त्रीनके देखत वड़े भय्या वलदेवजीको प्रसन्नता ते देत भये ३२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेशंखचूडवधोनामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(पञ्चत्रिंशेवनंयातेकृष्णेगोकुलयोषितः ॥ युगमश्लोकाभ्युगीतेननिन्युर्दुःखेनवासरान् १ पैंतीसवें अध्याय में कृष्णजी के वन चले जानेमें गोकुलकी स्त्रिया दो श्लोक के गीतसूं दुःखसूं दिनों को वितातीभई १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्णचन्द्र जब वनमेंगये तब श्रीकृष्णमें लगे हैं मन जिनके ऐसी गोपी विरहमें उनकी लीलानको गाय गायके बड़ेकष्टते दिननकूं व्यतीत

करतभई १ अब गोपी आपुसमें कहे हैं हे गोपियो ! वाई भुजापै वांयें कपोलकों धरिके भृकुटीनकों चढ़ायके मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र अधर के ऊपर वांसुरी कों धरिके कोमल अंगुलीनसूं वाके छिद्रन कूं दाविके जा समय आकाश में है गमन जिनको ऐसे देवतानकी स्त्री अपने पतिन सहित वासुरी को सुनिके प्रथम आश्चर्य मानिके लाजसहित कामदेव के वाणनसूं चित्त जिनने सौंप दिये है नारेनकी सुधि जिनकों न रही या प्रकार मोहकों प्राप्त होतभई २।३ हे अवलाओ ! यह आश्चर्य सुनो हारकी तुल्य निर्म्मल जाकी हँसनि वांसुरी के बजावत समय नीचो मुख करिके जो हँसे है ताकी हारन में प्रकाशित हँसनि होय है अथवा हार की तुल्य छाती में शोभायमान जाकी हँसनि है और छाती में बिजलीकी तुल्य प्रकाशमान स्थिर लक्ष्मी जाके रहै पीड़ित जननको सुख देन वारो यह नन्दको पुत्र जा समय वासुरी कूं बजावे है तब दूरिते वांसुरी को शब्द श्रवण करिके हरिगये है चित्त जिनके ऐसे गौ बैल हरिणन के समूह के समूह दन्तन ते कौर काटिके वाह पकरे भये कानन को ऊँचे करिके सोवत से चित्र लिखेकी तुल्य ठाढे होतभये अज्ञानी पशुपक्षीन की यह दशाहै यह आश्चर्य है ४।५ अब अचेतन नदीन में आश्चर्य है यह कहे हैं हे सखी ! मोर॰

तभ्रुरधरार्पितवेणुम् ॥ कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं गोप्यईरयतियत्रमुकुन्दः २ व्योमयानवनिताःसहसिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य्यसलज्जाः ॥ काममार्गणसमर्पितचित्ताःकश्मलंययुरपस्मृतनीव्यः ३ हन्तचित्रमबलाःशृणुतेदं हारहासउरसिस्थिरविद्युत् ॥ नन्दसूनुरयमार्त्तजनानांनर्मदोयर्हिकूजितवेणुः ४ वृन्दशोव्रजवृषामृगगावोवेणुवाद्यहृतचेतसआरात् ॥ दन्तदष्टकवलाधृतकर्णानिद्रितालिखितचित्रमिवासन् ५ बर्हिणस्तवकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः ॥ कर्हिचित्सबलआलिसगोपैर्गाःसमाह्वयतियत्रमुकुन्दः ६ तर्हिभग्नगतयःसरितोवै तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम् ॥ स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपितभुजाःस्तिमितापः ७ अनुचरैःसमनुवर्णितवीर्य्यआदिपूरुषइवाचलभूतिः ॥ वनचरोगिरितटेषुचरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयतिगाःसयदाहि ८ वनलतास्तरवआत्मनिविष्णुं व्यञ्जयन्त्यइवपुष्पफलाढ्याः ॥ प्रणतभारविटपामधुधाराःप्रेमहृष्टतनवःससृजुःस्म ९ दर्शनीयतिलकोवनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ॥ अलिकु

पुच्छ खरिया गेरू मनशिल पात इनसूं मल्लकी तुल्य स्वरूपकरिके कभऊं एक बलदेव भय्या सहित गोपनसहित जो मुकुन्द हैं सो जा समय वांसुरी बजायके गौवनको बुलावे हैं ता समय वांसुरी को शब्द श्रवण करिके नदीन के प्रवाह बहते सूं बन्द होयजाय हैं और पवन सूं उडिके गई जो ताके चरणन की रज है ताकूं हमारी तुल्य आकांक्षा करे हैं और हमारीही तुल्य नहीं है उत्कृष्ट पुण्य जिनके ऐसी नदीन कूं मिले नहीं है प्रेम ते जिनकी लहर कँपे जल जिनके निश्चल होय जाइ हैं ६।७ गोप ग्वालबाल देवता जिनके यशकूं गावें नारायणकी तुल्य सदा स्थिरहै लक्ष्मी जाके वनको विचरनवारो कृष्ण जा समय गोवर्द्धन पर्व्वतकी शिखर पै चरें जे गौ हैं तिनें वासुरी बजायके बुलावे है ता समय फूल फल जिनमें लगे उनके बोझते शाखा जिनकी झुकि रहीं प्रेमकरिके हर्षित हैं चित्त जिनके ऐसे वनके लता वृक्ष अपनपे में विष्णुकों प्रगटकरतसे मकरन्दकी धारा बहावतभये ८।९ सुन्दरनमें अतिसुन्दर अथवा सुन्दर देखिवे लायक है सामरे ललाट में केशर को तिलक जिनके वनमालानमें दिव्यहै सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसी की सुगन्धि सों मतवारे भौंरान के समूह तिनको मिलो भयो गीत बड़ो उच्च शब्द ताय आदर से ग्रहण करिके अधर के ऊपर वांसुरी कूं

धरिके वजावें हैं ता समय सरोवरन में सारस हंस और पक्षीनके चित्त हरेगये आयके श्रीकृष्णचन्द्र के पास बैठतभये कैसे पक्षी हैं चित्तकों रोके नेत्रनकों मूंदे मौनकों धारणकरे हैं १० । ११ हे गोपियो ! मालान के जे कानन में कुण्डल हैं तिनसूं शोभायमान भयो है आनन्द जाके ऐसो बलदेव भय्या सहित कृष्ण सब विश्वकों आनन्द देके बासुरी के शब्द सों पूर्ण करे ता समय या महान् कृष्णको अपराध न होय ऐसे मेघ मनमें शंका मानिके मन्द मन्द गरजे हैं और अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षावें हैं छत्र करिके छाया करे हैं सो वह मेघ याको सांचो मित्र है यहू सामरो है यहू सामरो है १२ । १३ हे यशोदा ! अनेक प्रकार के गोपनके खेलन में निपुण ऐसो तुम्हारो पुत्र अधर के ऊपर बासुरी कों धरिके आपसे आपही सीखे ऐसे षड्ज निषाद ऋषभ गान्धार कूं आदिले के स्वर हैं तिनके आलापवे के भेद उठावत भयो ता समय इन्द्र महादेव ब्रह्मा ये हैं मुख्य जिनमें ऐसे बुद्धिमान् देवता हैं ते मन्द मध्यतार सूं बासुरी कों सुनिके मोहित

लैरलघुगीतमभीष्टमाद्दियन्यर्हिसन्धितवेणुः १० सरसिसारसहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतसएत्य ॥ हरिमुपासततेयतचित्ताहन्तमीलितदृशोधृतमौनाः ११
सहबलःस्रगवतंसविलासःसानुषुक्षितिभृतोव्रजदेव्यः ॥ हर्षयन्यर्हिवेणुरवेणजातहर्षउपरम्भतिविश्वम् १२ महदतिक्रमणशङ्कितचेतामन्दमन्दमनुगर्ज्जतिमेघः ॥ सुहृदमभ्यवर्षत्सुमनोभिश्छाययाचविदधत्प्रतपत्रम् १३ विविधगोपरसेपुविदग्धोवेणुवाद्यउरुधानिजशिक्षाः ॥तवसुतःसतियदाधरबिम्बेदत्तवेणुरनयत्स्वरजातीः १४ सवनशस्तदुपधार्य्यसुरेशाःशक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ॥ कवयआनतकन्धरचित्ताःकश्मलंययुरनिश्चिततत्त्वाः १५ निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ॥ व्रजभुवश्शमयन्खुरतोदं वर्ष्मधुर्यगतिरीडितवेणुः १६ व्रजतितेनवयंसविलासवीक्षणार्पितमनोभववेगाः ॥ कुजगतिंगमितानविदामःकश्मलेनकबरंवसनंवा १७ मणिधरःक्वचिदागणयन्गामालयादयितगन्धतुलस्याः ॥ प्रणयिनोऽनुचरस्यकदांऽसे प्रक्षिपन्भुजमगायतयत्र १८ क्वणितवेणुरववञ्चितचित्ताः कृष्णमन्वसतकृष्णगृहिण्यः ॥ गुणगणार्णमनुगत्यहरिण्योगोपिकाइवविमुक्तगृहाशाः १९ कुन्ददामकृतकौतु

होतभये नीचेकों नारिलचायके कौन स्वरकूं गावें है ऐसे निश्चय नहीं करिसके हैं १४।१५ ध्वजा वज्र कमल अंकुश इनके चित्रविचित्र चिह्न जिनमें ऐसे अपने चरणकमल करिके व्रजभूमिको गौवनके खुर परे ते जो खेद है ताकूं शान्त करतभये मतवारे हाथीकी तुल्य जाकी चलनि ऐसो कृष्ण बासुरीको वजायके जा समय चले हैं ता समय विलासपूर्वक चितवनि सूं राखो है कामदेवको वेग जिनमें ऐसी हम वृक्षनकी तुल्य जड़ होयके हमकू चोटीकी सुधि न रही और वस्त्रनकी सुधि न रही १६ ।१७ प्यारी है सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसीकी मालाकूं पहिरे मणिनकी सुमिरनी हाथमें लैके गौवन को गिनत प्यारे मित्र के कन्धापै हाथ धरिके जा समय गावें हैं और बजी जो बांसुरी ताकी टेर सुनि के चित्त जिनके हरिगये ऐसी हरिणनकी स्त्री हरिणी ते गुणनको समुद्र जो कृष्णचन्द्र ताके पास आयके गोपीन की तुल्य घरकी आशान कूं त्यागि के सेवन करतभई १८ । १९ हे यशोदे ! गोपीन के आनन्द दिवे के लिये कुन्दकी मालानसूं आनन्दपूर्वक शृङ्गार जाने किये स्नेहीन के

आनन्दकूं देनवारो यह तेरो पुत्र नन्दकुमार गोप गौवन कूं संगलेके जा समय यमुना में विहार करे है ता समय चन्दन की सी सुगन्धि जामें आवै शीतल जामें स्पर्श है तासों श्रीकृष्णचन्द्र को सन्मान करत अनुकूल मन्द पवन चले है गन्धर्व्वादिक वन्दीजननकीसी नाई बाजे बजावत गायके फूलनकी वर्षा करिके सेवन करतभये २०।२१ व्रजकों गौवनकों हितको करनवारो इन्द्रने जब वर्षाकरी तब गोवर्द्धन उठायके रक्षाकरी वडे वडे ब्रह्मादिक आयके चरणन में प्रणाम करें ऐसो कृष्ण सन्ध्यासमय सब गौवन कों एकत्र करिके मित्र जाके यशकों गावैं ऐसो कृष्ण बांसुरी कूं बजावत श्रमभरी शोभा सों आनन्द देत गौवनकी रज जाकी माला में छायरही चन्द्रमाकी तुल्य प्रकाशमान ऐसो यह देवकी के उदरमें प्रकटभयो जो कृष्ण सो हमारे मनोरथ देवे के लिये आवे है २२। २३ कछुएक मन्द मन्द नेत्र जिनके घूमें अपने स्नेहीन कों मानको देनवारो वनमाला कूं पहिरे पके बेरकीसी नाईं पांडु जाको मुख कुण्डलनकी कान्ति सूं कोमल कपोलन कूं शोभाय-

कवेपोगोपगोधनवृतोयमुनायाम्॥ नन्दसूनुरनघेतववत्सोनर्मदःप्रणयिनांविजहार २० मन्दवायुरनुवात्यनुकूलं मानयन्मलयजस्पर्शेन॥ वन्दिनस्त मुपदेवगणाये वाद्यगीतबलिभिःपरिवव्रुः २१ वत्सलोव्रजगवांयदगध्रोवन्द्यमानचरणःपथिवृद्धैः॥ कृत्स्नगोधनमुपोह्यदिनान्ते गीतवेणुरनुगेडितकीर्त्तिः २२ उत्सवंश्रमरुचाऽपिदृशीनामुन्नयन्खुररजश्छुरितस्रक्॥ दित्सयैतिसुहृदाशिषएप देवकीजठरभूरुडुराजः २३ मदविघूर्णितलोचनईपन्मानदःस्वसुहृदांवनमाली॥ बदरपाण्डुवदनोमृदुगण्डं मण्डयन्कनककुण्डललक्ष्म्या २४ यदुपतिर्द्विरदराजविहारोयामिनीपतिरिवैपदिनान्ते॥ मुदितवक्त्रउपयाति दुरन्तं मोचयन्व्रजगवांदिनतापम् २५ श्रीशुकउवाच॥ एवंव्रजस्त्रियोराजन् कृष्णलीलानुगायतीः॥ रेमिरेऽहस्सुतच्चित्तास्तन्मनस्कामहोदयाः २६ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवृन्दावनक्रीडायांगोपिकायुगलगीतंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच॥ अथतर्ह्यागतोगोष्ठमरिष्टोवृषभासुरः॥ महींमहाककुत्कायः कम्पयन्खुरविक्षताम् १ रम्भमाणःखरतरं पदाचविलिखन्महीम्॥ उद्य

मान करत मतवारे हाथी के सो जाको विहार प्रसन्न जाको मुख ऐसो यह यादवन को पति श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्यासमय जैसे चन्द्रमा उदय होयहै तैसे व्रजकी गौ हम हैं वड़ो जो दिन को ताप है ताय दूर करत आवे हैं २४। २५ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र में है जीवन जिनकों और वढ़े हैं उत्सव जिनके ऐसे व्रजकी स्त्री श्रीकृष्णकी लीलान कों गाय गाय के दिनन को वितावत भई २६॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपियदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवृन्दावनक्रीडायागोपिकायुगलगीतंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५॥ * ॥ * ॥

(षट्त्रिंशेतुहतेऽरिष्टे नारदोक्तयाबलाच्युतौ॥ वसुदेवसुतौज्ञात्वा कंसोऽक्रूरंसमादिशत् १ गोपीरासान्तरायान्तं शङ्खचूडंनिहत्यस.॥ अहन्गोपीमहानन्दासहदुष्टमरिष्टकम् २ छत्तीसवें अध्याय में अरिष्टासुर के मारेजाने में कंस नारदजी के कहने सूं बलदेव और कृष्णजी को वसुदेवजी के पुत्र जानकर अक्रूरजीको आज्ञा देताभया १ कृष्णजी गोपियों के रासके भीतर आयेहुये शङ्खचूड को मारकर गोपियों के वड़े आनन्दके न सहनेवाले अरिष्टासुरको भी मार डालतभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार देवता गन्धर्व्वादिक गावें नृत्य करें वाजेनकों बजावें

फूलनकी वर्षा जिनके ऊपर करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कों आये देखिके परमउत्सव भयो याके पीछे ताही समय व्रजमें बैल को रूप धरिके अरिष्टासुर आवतभयो बड़ो है ठाट और देह जाको खुरनसूं खोदी जो पृथ्वी ताकूं कँपावे है १ बहुत रम्हायहै पावन सूं धरती कूं खोदतआवे है पूंछ उठाय के खेतनकी मेडन को सींग के अग्र सूं खोदेहै २ बीच बीच में गोबर करत जाय मूत्र करत जायहै भयानक जाकी आँखिहैं हे राजन् परीक्षित्! अरिष्टासुर के रम्हायबे को कठोर शब्द सुनिके गौवन के स्त्रीन के विना समय गर्भ गिरिपरे डरकेमारे पतन होयगये जाके ठाट के ऊपर पर्वत मानि के मेघ आय बैठे हैं तीक्ष्ण पैने जाके सींग ऐसे अरिष्टासुरको देखिके सम्पूर्ण गोप और गोपी भयके मारे डरपतभये हे राजन् परीक्षित्! पशु खिरकन कूं छोडिके डरकेमारे भाजत भये ३।४।५ हे कृष्ण! हे कृष्ण! ऐसे पुकारतभये समस्तव्रजवासी गोविन्दकी शरण आवतभये याके पीछे गोकुलवासीनकों भयके मारे भजते देखिके ६ मति भयकरो याप्रकार सावधान करत अरिष्टासुरको अपने पास बुला-

म्यपुच्छंवप्राणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् २ किञ्चित्किञ्चिच्छकृन्मुञ्चन्मूत्रयन्स्तब्धलोचनः ॥ यस्यनिर्ह्रादितेनाङ्गनिष्ठुरेणगवांनृणाम् ३ पतन्त्यकालतो गर्भाः स्रवन्तिस्मभयेनवै ॥ निर्विशन्तिघनायस्यककुद्यचलशङ्कया ४ तन्तीक्ष्णशृङ्गमुद्वीक्ष्य गोप्योगोपाश्चतत्रसुः ॥ पशवोदुद्रुवुर्भीता राजन्सन्त्य ज्यगोकुलम् ५ कृष्णकृष्णेतितेसर्वेगोविन्दंशरणंययुः ॥ भगवानपितद्वीक्ष्यगोकुलंभयविद्रुतम् ६ माभैष्टेतिगिराश्वास्य वृषासुरमुपाह्वयत् ॥ गोपालैः पशुभिर्मन्दत्रासितैःकिमसत्तम ७ बलदर्पहाऽहंदुष्टानां त्वद्विधानांदुरात्मनाम्॥ इत्यास्फोट्याच्युतोऽरिष्टं तलशब्देनकोपयन् ८ सख्युरंसेभुजाभोगंप्र सार्यावस्थितोहरिः ॥ सोऽप्येवंकोपितोऽरिष्टः खुरेणावनिमुल्लिखन् ॥ उद्यत्पुच्छभ्रमन्मेघः क्रुद्धःकृष्णमुपाद्रवत् ९ अग्रन्यस्तविषाणाग्रः स्तब्धासृग्लो चनोऽच्युतम् ॥ कटाक्षिप्याद्रवत्तूर्णमिन्द्रमुक्तोऽशनिर्यथा १० गृहीत्वाशृङ्गयोस्तंवाअष्टादशपदानिसः ॥ प्रत्यपोवाहभगवान् गजःप्रतिगजंयथा ११ सो पविद्धोभगवता पुनरुत्थायसत्वरः ॥ अपतत्स्विन्नसर्वाङ्गोनिःश्वसन्क्रोधमूर्छितः १२ तमापतन्तंसनिगृह्यशृङ्गयोः पदासमाक्रम्यनिपात्यभूतले ॥ नि

वन भये हे मूर्ख! हे असाधु! ग्वाल गौवन के डरपावन ते तोकों कहा होयगो ७ दुष्ट हैं मन जिनके ऐसे तो सारिखे दुष्टनको बल और मद दूरिकरोहों या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र खम्भ ठोंकिकें अरिष्टासुर कूं क्रोध करायके मित्र के कन्धा पै सर्प के आकार भुजाहै ताकू पसारिके ठाढे होतभये या प्रकार क्रोध जाको करायो ऐसो अरिष्टासुर खुरन ते धरती कूं खोदत पूंछ उठायके बादरन कूं इत उत करिके क्रोधकरिके श्रीकृष्णचन्द्र के पास आवतभयो ८।९ आगे कूं सींग जाने करिलिये पलक जिनमें न लगे ऐसी लाल लाल जाकी आँखें ऐसो जो अरिष्टासुरहै सो श्रीकृष्णकी ओर कटाक्ष सूं तिरछो देखिके इन्द्रको छोड़ो वज्र जैसे तैसे जल्दी आवतभयो १० भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अरिष्टासुरके सींग पकरिके जैसे हाथीकों हाथी धक्का देडहै ऐसे अठारहपैंड उलटे पावन धकावत भये ११ भगवान् श्रीकृष्णने अरिष्टासुरकों ढकेलि दियो तब फेर उठिके पसीना जाके अंगमें आय गयो क्रोधमें मूर्च्छित होयके बड़े २ श्वास कूं लेत दौरिके आवतभयो १२ श्रीकृष्ण आयो जो अ-रिष्टासुर है ताके सींग पकरिके पृथ्वी पै पछारतभये पाँवते छाती दाबिके जैसे गीले कपड़ा कों निचोरेहै तैसे उमेठिके सींग उखारि के मारत भये अरिष्टासुर गिरत भयो चलायमान हैं नेत्र जाके

ऐसो अरिष्टासुर रुधिर कों वमन करत मूत्र गोबर करत पाँवन कूं पटकत कष्टते मरतभयो देवता श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षाय के स्तुति करतभये १३।१४ या प्रकार अरिष्टासुर कूं मारिके जाति के मित्रन ने स्तुतिकरी तव गोपीन के नेत्रन कूं आनन्द देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र व्रजमें आवतभये १५ अद्भुत जिनके कर्म्म ऐसे श्रीकृष्णने अरिष्टासुर मारो तव देवता केसो जिनके ज्ञान ऐसे भगवान् नारदजी कंसते जाय के कहतभये १६ यशोदा के कन्याभई है और देवकीके कृष्ण भयोहै वलदेव रोहिणी के पुत्रहैं तेरे भयके मारे वसुदेवजी अपने मित्र नन्दजीके घर रातों रात पहुँचाय आये हैं और तैंने भेजे ने सव दैत्य कृष्ण वलदेव ने मारे यह वचन नारदजी को श्रवण करिके कंस कोपसूं विकल इन्द्रिय होतभयो १७। १८ ऐसो कंस वसुदेव के मारिवे के लिये पैनी तरवार लेत भयो तव नारदजी मने करतभये और तिन वसुदेवजी के पुत्र कृष्ण वलदेव ते अपनी मृत्यु जानिके देवकी सहित वसुदेव के पाँवनमें वेड़ी डारतभयो इतनी वात कहिके नारदजी जव गये तव कंस

ष्पीडयामासयथार्द्रमम्बरंकृत्वाविपाणेनजघानसोऽपतत् १३ असृग्वमन्मूत्रशकृत्समुत्सृजन् क्षिपंश्चपादाननवस्थितेक्षणः ॥ जगामकृच्छ्रंनिर्ऋतेरथक्ष यं पुष्पैःकिरन्तोहरिमीडिरेसुराः १४ एवंककुद्मिनंहत्वा स्तूयमानःस्वजातिभिः ॥ विवेशगोष्ठंसबलोगोपीनांनयनोत्सवः १५ अरिष्टेनिहतेदैत्येकृष्णे नाद्भुतकर्मणा ॥ कंसायाथाहभगवान्नारदोदेवदर्शनः १६ यशोदायाःसुतांकन्यां देवक्याःकृष्णमेवच ॥ रामञ्चरोहिणीपुत्रं वसुदेवेनबिभ्यता १७ न्य स्तौस्वमित्रेनन्देवै याभ्यान्तेपुरुषाहताः ॥ निशम्यतद्भोजपतिः कोपात्प्रचलितेन्द्रियः १८ निशातमसिमादत्तवसुदेवजिघांसया॥ निवारितोनारदेनत त्सुतौमृत्युमात्मनः १९ ज्ञात्वालोहमयैःपाशैर्बबन्धसहभार्यया ॥ प्रतियातेतुदेवर्षौकंसआभाष्यकेशिनम् २० प्रेषयामासहन्येतां भवतारामकेशवौ ॥ त तोमुष्टिकचाणूरशलतोशलकादिकान् २१ अमात्यान्हस्तिपांश्चैव समाहूयाहभोजराट् ॥ भोभोनिशम्यतामेतद्वीरचाणूरमुष्टिकौ २२ नन्दव्रजेकिला साते सुतावानकदुन्दुभेः ॥ रामकृष्णौततोमह्यं मृत्युःकिलनिदर्शितः २३ भवद्भ्यामिहसंप्राप्तौ हन्येतांमल्ललीलया ॥ मञ्चाःक्रियन्तांविविधामल्लरङ्गपरि श्रिताः॥ पौराजानपदाःसर्व्वे पश्यन्तुस्वैरसंयुगम् २४ महामात्रत्वयाभद्ररङ्गद्वार्युपनीयताम् ॥ द्विपःकुवलयापीडोजहितेनममाहितौ २५ आरभ्यतांधनु

केशीकूं वुलाय के भेजतभयो और राम कृष्णकों तु मारि आउ यह कहत भयो ता पीछे मुष्टिक चाणूर शल तोशल आदि लैके जे मल्लहैं तिनें वुलाय के और मंत्रीन कूं वुलाय के और हाथीन के महावतनकूं वुलायके भोजवंशीनको राजा कंस वोलतभयो हे वीर ! हे चाणूर! हे मुष्टिक ! यह मेरी वात श्रवण करो १९।२०।२१।२२ नन्दके गोकुल में वसुदेव के पुत्र कृष्ण वलदेव रहे हैं उनते विधाता नारदजीने मेरी निश्चय मृत्यु वताई है २३ ये जव आवें ता समय पावनसूं दाविके मल्ललीला करिके मारि डारियो और मल्लन की जो रंगभूमि है तामें अनेकप्रकार के मंचानन कूं वनावो पुरवासी और देशवासी सम्पूर्ण तिनपै वैठिके मल्लनकी कुश्ती देखेंगे २४ हे महावत! मद्गलरूप कुवलयापीड़ हाथी कूं रंगभूमि के दरवाजे पै ठाढ़ो करदेउ मेरे वैरी कृष्ण वलदेव आवें तव उनें कुवलयापीड़ हाथी पै मरवाय डारियो और चतुर्दशी के दिन विधिपूर्वक धनुर्यज्ञकी त्यारी करो और सम्पूर्ण कामनान के पूर्ण करनवारे महादेवजी के पूजन के लिये पवित्र पवित्र

पशु मारिके लावो २५ । २६ अपने अर्थके तत्त्वको जाननवारो कंस अपने टहलुआनकूं या प्रकार आज्ञादेके और यादवनमें श्रेष्ठ जो अक्रूर हैं तिनें बुलायके हाथसूं हाथ पकरिके यह कहतभयो २७ हे दानपति अक्रूर ! तुम एक मेरो मित्रताको कार्य्य करो या समय भोजवंशी यादवनमें और कोई तुम ते सिवाय आदरसहित अतिशय करिके हितको करनवारो नहीं है २८ बडे कार्य्य के करनवारे साधु अक्रूर तुमहो तिनको मैंने आश्रय लीनो है जैसे इन्द्र विष्णुको आश्रय लैके अपने मनोरथकू पायगयो २९ अव तुम नन्द के व्रजकों जावो ता नन्दके व्रजमें वसुदेव के पुत्र रहे हैं तिनें या रथ में बैठारि के शीघ्रही लैआवो ३० विष्णुको आश्रय लैके देवतानने मेरे मारिवे के लिये कृष्ण बलदेव प्रकट करे हैं नन्दते आदिलैके सम्पूर्ण व्रजवासीनसहित कृष्ण बलदेवकों यहां लेआवो और कहियो कि राजा कंसको चलिके भेंट देआवो ३१ यहां लिवाय के लावोगे तब कालकी तुल्य कुवलयापीड हाथी पै घात कराऊँगो हाथीते कदाचित् छूटि जायँगे तो बिजली

र्यागश्चतुर्दश्यांयथाविधि ॥ विशसन्तुपशून्मेध्यान् भूतराजायमीढुपे २६ इत्याज्ञाप्यार्थतन्त्रज्ञ आहूययदुपुङ्गवम् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिंततोऽक्रूरमुवा
चह २७ भोभोदानपतेमह्यं क्रियतांमैत्रमादृतः ॥ नान्यस्त्वत्तोहिततमोविद्यतेभोजवृष्णिषु २८ अतस्त्वामाश्रितःसौम्य कार्य्यगौरवसाधनम् ॥ यथेन्द्रोवि
ष्णुमाश्रित्य स्वार्थमध्यगमद्विभुः २९ गच्छनन्दव्रजंतत्र सुतावानकदुन्दुभेः ॥ आसातेताविहानेन रथेनानयमाचिरम् ३० निसृष्टःकिलमेमृत्युर्देवैर्वैकुण्ठ
संश्रयैः ॥ तावानयसमंगोपैर्नन्दाद्यैःसाभ्युपायनैः ३१ घातयिष्यइहानीतौकालकल्पेनहस्तिना ॥ यदिमुक्तौततोमल्लैर्घातयेवैद्युतोपमैः ३२ तयोर्निह
तयोस्तप्तान् वसुदेवपुरोगमान् ॥ तद्बन्धून्निहनिष्यामि वृष्णिभोजदशार्हकान् ३३ उग्रसेनञ्चपितरं स्थविरंराज्यकामुकम् ॥ तद्भ्रातरंदेवकञ्चयेचान्येविद्वि
षोमम ३४ ततश्चैषामहीमित्र भवित्रीनष्टकण्टका ॥ जरासन्धोममगुरुर्द्विविदोदयितःसखा ३५ शम्बरोनरकोबाणोमय्येवकृतसौहृदाः ॥ तैरहंसुरपक्षीयान्
हत्वाभोक्ष्येमहींनृपान् ३६ एतज्ज्ञात्वानयक्षिप्रं रामकृष्णाविहार्भकौ ॥ धनुर्मखनिरीक्षार्थंद्रष्टुंयदुपुरश्रियम् ३७ अक्रूरउवाच ॥ राजन्मनीषितंसम्यक्तव

तुल्य जे मल्ल तिनपै घात कराऊँगो ३२ कृष्ण बलदेव जासमय हत होय जायँगे तब उनके दुःखके मारे व्याकुल ऐसे वसुदेव तें लेके तिनके भय्या बन्धूनकूं मरवाऊंगो और वृष्णि भोज दशार्ह वंश में भये जे यादव तिन सबको मरवाऊँगो ३३ और उग्रसेन मेरो वृद्धपिता है तो भी जाके राज्य की चाहनाहै याहू कूं मरवाऊँगो और ताके भय्या देवककों और मेरे वैरी जितने हैं तिनकों सबकों मरवाऊँगो ३४ ताके पीछे हे मित्र अक्रूर ! यह पृथ्वी कण्टकरहित होयगी जरासन्धहै सो मेरो श्वशुर है द्विविद मेरो प्यारो मित्र है ३५ शम्बरासुर नरकासुर बाणासुर इनने मोमें स्नेह कियोहै इनकों संग लेके देवतानकी ओर के राजाहैं तिनकूं मारिके पृथ्वी को भोग करूंगो यह बात अपने मनमें जानिके राम कृष्ण बालकन कों यहां शीघ्र लिवाय आवो वहां जायके यह कहियो मामा धनुर्यज्ञ करे हैं ताकूं चलिके देखिआवो यादवनको पुर मथुराहै ताकी शोभा देखि आवो ३६।३७ यह वचन राजा कंसको श्रवण करिके अक्रूरजी बोले हे राजन् कंस ! तुमने भलो

विचारो है तुम्हारी मृत्युको दूर करनवारो यह उपाय है परन्तु होने और न होने में मनुष्य समता करे दैव जो प्रारब्ध है सोही फल को दाता है ३८ यह पुरुष दैव करिके हत जो मनोरथ हैं तिनकूं ऐसे कहिके करे है जो मनोरथ पूर्ण होयजाय तब तो मन में हर्ष माने है न होय तब शोक करे है यामें कहा ध्वनि निकसी कि तुम कहोहौ कृष्ण बलदेव कों मरवाऊँगो न जाने वेई तुमकों मारें तथापि तुम्हारी आज्ञा करूंगो ३९ या प्रकार राजा कंस अक्रूर कों आज्ञादेके मंत्रिनको छोड़िके महलमें जातभयो तैसे अक्रूर अपने घर जातभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादश-मस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरसम्प्रेपणंनामपट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(सप्तत्रिंशेहतेकेशिन्यच्युतोभाविकर्मभिः ॥ नारदेनस्तुतःक्रीडन् व्योमासुरमथावधीत् १ वृपवेपासुरंयद्वत्केशिनंहयवेपिणम् ॥ कंसप्राणसखंहत्वा कंसंव्यसुमिवाकरोत् २ सैंतीसवें अध्याय में

वस्त्वावद्यमार्जनम् ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योःसमंकुर्याद्दैवंहिफलसाधनम् ३८ मनोरथान्करोत्युच्चैर्जनोदैवहतानपि ॥ युज्यतेहर्पशोकाभ्यां तथाऽप्याज्ञांकरोमिते ३९ श्रीशुकउवाच ॥ एवमादिश्यचाक्रूरं मन्त्रिणश्चविसृज्यसः ॥ प्रविवेशगृहंकंसस्तथाऽक्रूरःस्वमालयम् ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धेऽक्रूरसम्प्रेपणंनामपट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ केशीतुकंसप्रहितःखुरैर्महीं महाहयोनिर्जरयन्मनोजवः ॥ सटावधूताभ्रविमानसंकुलं कुर्वन्नभोह्रेपितभीपिताखिलः १ तंत्रासयन्तंभगवान्स्वगोकुलं तद्ध्रेपितैर्वालविघूर्णिताम्बुदम् ॥ आत्मानमाजौमृगयन्तमग्रणीरुपाह्वयत्सव्यनदन्मृगेन्द्रवत् २ सतंनिशाम्याभिमुखोमुखेनखं पिबन्निवाभ्यद्रवदत्यमर्पणः ॥ जघानपद्भ्यामरविन्दलोचनंदुरासदश्चण्डजवोदुरत्ययः ३ तद्वञ्चयित्वातमधोक्षजोरुपाप्रगृह्यदोर्भ्यांपरिविध्यपादयोः ॥ सावज्ञमुत्सृज्य धनुःशतान्तरे यथोरगंतार्क्ष्यसुतोव्यवस्थितः ४ सलब्धसंज्ञःपुनरुत्थितोरुपाव्यादायकेशीतरसाऽपतद्धरिम् ॥ सोऽप्यस्यवक्त्रेभुजमुत्तरंस्मयन् प्रवेशयामा

कृष्णजी केशीराक्षस के मारेजाने में नारदजी से स्तुति को प्राप्त होकर व्योमासुर को मारते भये १ बैलके वेपवाले अरिष्टासुर और घोड़ेके वेपवाले केशीराक्षस कंस के प्राणके तुल्य मित्रको कृष्णजी मारकर कंसको प्राणरहितकी नाईं करदेतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! मनहू ते हैं अधिक वेग जाको ऐसो कंसको पठायो केशी दैत्य बडे घोड़ाको रूपधरिके टापन तें पृथ्वी कूं खोदत फुरहरी लैके कन्धाके ऊपर बारन सूं आकाश में इत उत विमानन कों चलायमान करत आवतभयो हींसने मेंही समस्त विश्व जाने डरपायो है कठोर हींसनसूं गोवन के समूहन कों भय जाने करयो पुच्छ हलाय बादर जाने चलायमान किये युद्ध करिवे कूं श्रीकृष्णचन्द्र कूं ढूंढे ऐसे केशी दैत्यकों भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र आगे निकसिके अपने पास बुलावतभये तब श्री कृष्ण कूं देखिके सिंहकी तुल्य शब्द करनभयो १ । २ केशी श्रीकृष्णकों देखिके मुख सूं मानों आकाशकूं पीजायगो ऐसे मुखकों फारिके सम्मुख दौरिके धावत भयो कोई जाकों जीति न सके बड़ो जाके वेग महादुःसह करिके जीत्यो जाय ऐसो केशीदैत्य कमलदललोचन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके पिछिले पावनकी दुलत्ती मारतभयो ३ इन्द्रियनकों जिनमें पहुँच नहीं ऐसे भगवान् श्री

कृष्णचन्द्र ता दैत्यकी दुलत्ती बचायके क्रोधकरि हाथनसों वाके दोनों पाँव पकरिके घन्न घन्न फिरायके जैसे गरुड़ सर्पकूं फेंकि देयहै ऐसे अवज्ञा करिके सौ धनुषपर फेंकिके ठाढ़े होतभये ४ जब चेत जाको भयो ऐसो केशी दैत्य फेरि उठिके मुख फारिके क्रोधयुक्त दौरिके श्रीकृष्णके पास आवत भयो तब कृष्णजी उसके मुँहमें हँसकर बायें भुजाकों इसप्रकार प्रवेश करदेतेभये जैसे बिल में साप प्रवेश करजाता है ५ जैसे तप्त लोहलगे तें जरे है ऐसे भगवान्‌की भुजालगे ते केशीके दात उखरिके गिरतभये औषध न करनेसे जैसे जलन्धररोग उदर में बढ़े है ऐसे केशीके उदरमें श्रीकृष्णचन्द्रकी भुजा फूलतभई ६ केशी के उदर में फूली जो श्रीकृष्णकी भुजाहै तासों श्वास जाको रुकिगयो अङ्ग में पसीना जाके आयगयो नेत्रन के तारे निकसिआये ऐसो केशी पाँवन को पटकत लीदकरत प्राणरहित होयके पृथ्वीमें गिरतभयो ७ पकी ककरीकी तुल्य विदीर्ण और प्राण जाके निकसिगये ऐसो जो केशी को देह ताते बड़ी है भुजा जाकी ऐसे श्रीकृष्ण अपनी भुजा कूं निकासिके गर्व्व जिनके नहीं बिना परिश्रमही शत्रु जिनने मारयो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर पुष्पनकी वर्षा करिके आश्चर्य्य मानिके देवता स्तुति करत भये ८ श्रीशुकदेवजी कहे

सयथोरगंबिले ५ दन्तानिपेतुर्भगवद्भुजस्पृशस्तेकेशिनस्तप्तमयःस्पृशोयथा ॥ बाहुश्चतद्देहगतोमहात्मनोयथाऽऽमयःसंववृधेउपेक्षितः ६ समेधमानेनसकृष्णबाहुना निरुद्धवायुश्चरणांश्चविक्षिपन् ॥ प्रस्विन्नगात्रःपरिवृत्तलोचनःपपातलेण्डंव्यसृजन्क्षितौव्यसुः ७ तद्देहतःकर्कटिकाफलोपमाद्व्यसोरपाकृष्यभुजंमहाभुजः ॥ अविस्मितोऽयत्नहतारिरुत्स्मयैःप्रसूनवर्षैर्दिविषद्भिरीडितः ८ देवर्षिरुपसंगम्य भागवतप्रवरोनृप ॥ कृष्णमक्लिष्टकर्माणं रहस्येतदभाषत ९ कृष्णकृष्णाप्रमेयात्मन् योगेशजगदीश्वर ॥ वासुदेवाखिलावास सात्वतांप्रवरप्रभो १० त्वमात्मासर्वभूतानामेकोज्योतिरिवैधसाम् ॥ गूढोगुहाशयःसाक्षी महापुरुषईश्वरः ११ आत्मनात्माश्रयःपूर्व्वं माययासमृजेगुणान् ॥ तैरिदंसत्यसङ्कल्पः सृजस्यत्स्यवसीश्वरः १२ सत्वंभूधरभूतानां दैत्यप्रमथरक्षसाम् ॥ अवतीर्णोविनाशाय सेतूनांरक्षणायच १३ दिष्ट्यातेनिहतोदैत्योलीलयाऽयंहयाकृतिः ॥ यस्यहेषितसंत्रस्तास्त्यजन्त्यनिमिषादिवम् १४ चाणूरं

हैं हे राजन् परीक्षित् ! भक्तनमें श्रेष्ठ श्रीनारदजी क्लेशरहित हैं कर्म्म जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके एकान्त में यह कहत भये ९ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिवे में आवै है स्वरूप जिनको ऐसे योगके ईश ! हे जगत्‌के ईश्वर ! हे वासुदेव ! हे अखिलावास अर्थात् सबके आश्रय ! हे सात्वतप्रवर अर्थात् सब यादवन में श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! १० जैसे काष्ठनमें ज्योति तैसे सब प्राणीन में व्यापक गूढ़ अर्थात् सब में रहो हौ परन्तु उनको दिखाई नहीं देउहो क्यों बुद्धिके परेहो साक्षीहौ स्वरूप देखिवे में नहीं आवै है महापुरुष ईश्वरहौ ११ मैं ईश्वर हूं और सब मेरे वशहैं यह काहे ते तहां नारदजी कहे हैं अपने आधीन जो तुमहौ सो प्रथम माया करिके सत्त्व रज तम इन गुणन कूं उत्पन्न करिके सम्पूर्ण विश्व कों उत्पन्न करो हौ पालन और संहार करो हौ और फेर वैसे हौ सत्यसङ्कल्प अर्थात् काहू साधन की अपेक्षा नहीं है या कारण तुमहीं ईश्वरहौ १२ सो तुम राजारूप जो दैत्य राक्षस हैं तिनके नाश करिवे के लिये और धर्म मर्य्यादानकी रक्षा करिवे के लिये अवतार लियो है १३ घोड़ा के रूपकों धरिके यह दैत्य आयो सो लीला करिके तुमने मारयो यह बड़ो मङ्गल भयो जाके हींसन को शब्द सुनिके भयके मारे

देवता स्वर्ग कूं त्यागिदेइ हैं १४ हे विभो अर्थात् समर्थ ! परसों के दिन तुम्हारे हाथन ते चाणूर मुष्टिक और मल्लन कूं तथा कुवलयापीड़ हाथी कों कंसकों मारो ऐसो देखोंगो १५ ता कंसके मरे पीछे शंखासुर कालयवन मुरदैत्य नरकासुर इनको वध देखोंगो स्वर्ग में ते इन्द्रकूं जीतिके कल्पवृक्षकों लावोगे ताय देखोंगो १६ अपनो पराक्रम मोलदेके राजानकी कन्यानकों ब्याहोगे सो देखोंगो हे जगत् के पति ! द्वारका में जायके नृगराजा कों पाप सूं छुडावोगे सो देखोंगो १७ जाम्बवती स्त्री ब्याहिके स्यमन्तकमणिकूं दायजेमें लावोगे सो देखोंगो सादीपनि गुरुके अपने धामते मरे पुत्र सजीव लायके देउगे सो देखोंगो १८ मिथ्यावासुदेव कों मारिके काशीपुरी को जरावोगे दन्तवक्र कों मारोगे राजा युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल को मारोगे ताय मैं देखोंगो १९ द्वारकावास करिके जे जे लीला करोगे तिन लीलानकों कवीश्वर पृथ्वी में गावेंगे सो सब हम देखेंगे २० याके पीछे कालरूप तुम या पृथ्वी को बोझ उतारिवे के लिये अर्जुन के रथवान् होयके सैन्यानकूं मारोगे

मुष्टिकंचैव मल्लानन्यांश्चहस्तिनम् ॥ कंसंचनिहतंद्रक्ष्ये परश्वोऽहनितेविभो १५ तस्यानुशङ्खयवनमुराणांनरकस्यच ॥ पारिजातापहरणमिन्द्रस्यचपराजयम् १६ उद्वाहंवीरकन्यानां वीर्यशुल्कादिलक्षणम् ॥ नृगस्यमोक्षणंपापाद्द्वारकायांजगत्पते १७ स्यमन्तकस्यचमणेरादानंसहभार्यया ॥ मृतपुत्रप्रदानंच ब्राह्मणस्यस्वधामतः १८ पौण्ड्रकस्यवधंपश्चात्काशिपुर्याश्चदीपनम् ॥ दन्तवक्रस्यनिधनंचैद्यस्यचमहाक्रतौ १९ यानिचान्यानिवीर्याणि द्वारकामावसन्भवान् ॥ कर्त्ताद्रक्ष्याम्यहंतानि गेयानिकविभिर्भुवि २० अथतेकालरूपस्य क्षपयिष्णोरमुष्यवै ॥ अक्षौहिणीनांनिधनं द्रक्ष्याम्यर्ज्जुनसारथेः २१ विशुद्धविज्ञानघनंस्वसंस्थया समाप्तसर्वार्थममोघवाञ्छितम् ॥ स्वतेजसानित्यनिवृत्तमायागुणप्रवाहंभगवन्तमीमहि २२ त्वामीश्वरंस्वाश्रयमात्ममायया विनिर्मिताशेषविशेषकल्पनम् ॥ क्रीडार्थमद्यात्तमनुष्यविग्रहं नतोऽस्मिधुर्यंयदुवृष्णिसात्वताम् २३ श्रीशुकउवाच ॥ एवंयदुपतिंकृष्णंभागवतप्रवरोमुनिः ॥ प्रणिपत्याभ्यनुज्ञातोययौतद्दर्शनोत्सवः २४ भगवानपिगोविन्दो हत्वाकेशिनमाहवे ॥ पशूनपालयत्पालैः प्रीतैर्व्रजसुखावहः २५ एकदातेप

ताय देखेंगे २१ केवल ज्ञानही है एक मूर्त्ति जिनकी याही ते स्वरूपानन्द सम्यक्प्रकार सूं प्राप्त भये हैं मनोरथ जिनके फलसहित है इच्छा जिनकी अपने तेज से नित्य माया सूं निवृत्त और छः प्रकार के ऐश्वर्ययुक्त जो तुम हो तिन की शरण प्राप्त भयो हों २२ तुम ईश्वर हों अर्थात् औरन के वश करनवारेहौ अपने आश्रय और के वश नहींहौ अपने अधीन जो माया तासूं महत्तत्त्व अहंकारते आदि लैके समस्त तत्त्व क्रीड़ा करिवे के लिये जिनने रचेहैं और ग्रहण कियो है मनुष्यरूप जिनने यदु वृष्णि सात्वतन में श्रेष्ठ जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है २३ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! भक्तन में श्रेष्ठ मननशील श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनमें बड़ोहै उत्सव जिनके ऐसे नारदजी याप्रकार यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं प्रणामकरि आज्ञालेके जातभये २४ व्रजवासीनके सुखके करनवारे भगवान् गोविन्द श्री कृष्ण युद्धमें केशीकों मारिके पशूनके पालन करनवारे जे ग्वाल हैं तिनसहित पशून कूं पालन करतभये २५ एकसमय गौनन के पालनकर्त्ता

ग्वालवाल हैं ते गोवर्द्धन पर्व्वत के शिखर पै गौवन कों चरावत चोर पालन कों मिष करिके छिपा छिपी को खेल करतभये २६ हे राजन् परीक्षित् ! ता खेल में कितेकहू बालक चोर बने और कितेकहू रखवारे बने कितेकहू भेड बने ऐसे निर्भय होयके खेलत भये २७ इतनेमें बडो मायावी मयदैत्य को पुत्र व्योमासुर गोपाल को रूप धरिके चोर बनिके जे बालक भेड़ बने हैं तिनमें ते चुरायके लेजातभयो २८ व्योमासुर जे बालक भेड बने है तिनमें ते चुराय के पर्व्वत की गुफामें धरिके शिलासे गुफाको द्वार मूंदतभयो तिनमें से कोई चार पांच बाकी रहिगये २९ साधुनकों शरण के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र मनमें विचार करो कि हम तो खेलकरो है यह साचोहीं चोर आय पहुँच्यो ऐसे ता व्योमासुरकी चोरी जानिके गोपनकों संग लैके जाय जो व्योमासुरहै ताकूं जैसे सिंह बल करिके भेड़ियाकूं पकरे है ऐसे पकरतभये ३० वली व्योमासुर पर्व्वतकी बराबर अपनो रूप धरिके अपनेकों छुड़ायो चाहै परन्तु नहीं छूटतभयो श्रीकृष्ण ने पकरो है तासों आतुरहै ३१ अच्युत जो

शून्पालांश्चारयन्तोऽद्रिसानुषु ॥ चक्रुर्निलायनक्रीडाश्चोरपालापदेशतः २६ तत्रासन्कतिचिच्चोराः पालाश्चकतिचिन्नृप ॥ मेषायिताश्चतत्रैके विजह्रुरकुतोभयाः २७ मयपुत्रोमहामायोव्योमोगोपालवेषधृक् ॥ मेषायितानपोवाह प्रायश्चोरायितोबहून् २८ गिरिदर्य्यांविनिक्षिप्यनीतंनीतंमहाऽसुरः ॥ शिलयापिदधेद्वारञ्चतुःपञ्चावशेषिताः २९ तस्यतत्कर्मविज्ञाय कृष्णःशरणदःसताम् ॥ गोपान्नयन्तञ्जग्राह वृकंहरिरिवौजसा ३० सनिजंरूपमास्थाय गिरीन्द्रसदृशंबली ॥ इच्छन्विमोक्तुमात्मानं नाशक्नोद्ग्रहणातुरः ३१ तन्निगृह्याच्युतोदोर्भ्यां पातयित्वामहीतले ॥ पश्यतांदिविदेवानां पशुमारममारयत् ३२ गुहापिधानंनिर्भिद्य गोपान्निःसार्यकृच्छ्रतः ॥ स्तूयमानःसुरैर्गोपैः प्रविवेशस्वगोकुलम् ३३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धे व्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ अक्रूरोऽपिचतांरात्रिं मधुपुर्य्यांमहामतिः ॥ उषित्वारथमास्थाय प्रययौनन्दगोकुलम् १ गच्छन्पथिमहाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे ॥

श्रीकृष्ण है सो व्योमासुरकी दोनों भुजा पकरिके पृथ्वी में पटकिके स्वर्गके देवतानके देखत देखत श्वास घोटिके मारतभये ३२ गुफाके ढकनाकों फोरिके गोपन कों कष्ट ते बाहर निकासि के ऊपर देवता विमाननमें स्तुतिकरें पृथ्वीमें गोप जिनकी स्तुतिकरें ऐसे श्रीकृष्ण अपने गोकुलमें आवतभये ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेव्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

(अष्टत्रिंशेऽथाध्यायेऽक्रूरोगोकुलंगतः ॥ तत्रैवरामकृष्णाभ्यांगृहंनीत्वासुसत्कृतः १ प्रातःकेशिवधेवृत्तेद्वादशेनिर्गतेमुनौ ॥ ततोव्योमेहतेऽक्रूरःसायंगोकुलमागमत् २ अड़तीसवें अध्याय में जैसे ध्यान करतेहुये अक्रूरजी गोकुलको गये तैसेही बलदेवजी और कृष्णजीने घरमें लेजाकर अच्छी तरहसे सत्कार किया १ प्रातःकाल बारहवें केशी राक्षसके नाशहोजानेमें नारदमुनिके चलेजाने में फिर व्योमासुर के नाश होजानेमें सांझ को अक्रूरजी गोकुल में प्राप्त होजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! बड़ी है बुद्धि जिनकी ऐसे अक्रूरजी वा दिन रात्रि कू मधु

भाक्तिपरामुपगतएवमेतदचिन्तयत् २ किंमयाचरितंभद्रं किंतप्तंपरमन्तपः ॥ किंवाऽथाप्यर्हतेदत्तं यद्द्रक्ष्याम्यद्यकेशवम् ३ ममैतद्दुर्लभंमन्यउत्तमश्लोकदर्शनम् ॥ विषयात्मनोयथाब्रह्मकीर्त्तनंशूद्रजन्मनः ४ मैवंममाधमस्यापिस्यादेवाच्युतदर्शनम् ॥ ह्रियमाणःकालनद्या कचित्तरतिकश्चन ५ ममाद्यामङ्गलंनष्टं फलवांश्चैवमेभवः ॥ यन्नमस्येभगवतो योगिध्येयाङ्घ्रिपङ्कजम् ६ कंसोवताद्याकृतमेत्यनुग्रहं द्रक्ष्येऽङ्घ्रिपद्मंप्रहितोमुनाहरेः ॥ कृतावतारस्य दुरत्ययंतमः पूर्वेऽतरन्यन्नखमण्डलत्विषा ७ यदर्चितंब्रह्मभवादिभिःसुरैःश्रियाचदेव्यामुनिभिःससात्वतैः ॥ गोचारणायानुचरैश्चरद्वने यद्गोपिकानां कुचकुङ्कुमाङ्कितम् ८ द्रक्ष्यामिनूनंसुकपोलनासिकं स्मितावलोकारुणकञ्जलोचनम् ॥ मुखंमुकुन्दस्यगुडालकावृतं प्रदक्षिणंमेप्रचरन्तिवैमृगाः ९ अप्यद्यविष्णोर्मनुजत्वमीयुषो भारावतारायभुवोनिजेच्छया ॥ लावण्यधाम्नोभवितोपलम्भनं मह्यंननस्यात्फलमञ्जसादृशः १० यईक्षिताऽहंरहितोऽप्यसतसतोः स्वतेजसाऽपास्ततमोभिदाभ्रमः ॥ स्वमाययात्मन्रचितैस्तदीक्षयाप्राणाक्षधीभिः सदनेष्वभीयते ११ यस्याखिलामीवहभिःसुमङ्गलैर्वाचोविमि

पुरी में वसि के प्रातःकाल रथमें बैठि के नन्दजी के गोकुल में जातभये १ बडो है भाग्य जिनको ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जात कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र में परमभक्ति कूं पावतभये और यह विचार करतभये २ मैंने कौन मंगलकर्म्म करो है अथवा तपकरो है या सत्पात्रन कूं दानकरो है जाके प्रभावते ब्रह्मा महादेव के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तिनको दर्शन करूंगो ३ मोको श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह मैं दुर्लभमानूं हूं विषयन में है मन जाको शूद्रकुलमें जन्म ऐसे पुरुष कों वेद को उच्चारण जैसे दुर्लभहै ४ ऐसे मतकहो श्रीकृष्णको दर्शन होय किन्तु अधम जो मैं हूं ताकूं श्री-कृष्णको दर्शन निश्चय होइगो जैसे नदीन के प्रवाह में बहे जे तृणहैं तिनमें कोई किनारे पै लगेहैं तैसे कामन के वश होय के जो जीवहैं तिनमें कोई तरे हैं ५ मै श्रीकृष्ण के लिवायवे कूं चल्यो हूं याते मेरो अव मंगलरूप भयो मेरो जन्म सफलभयो योगी जिनको ध्यानकरैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के चरणकमलको नमस्कार करूंगो ६ बड़ो आश्चर्य्य है अत्यन्त दुष्ट कंसने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह करो है जो कंस को भेजो मैं आयो अवतार जिनने लियो ऐसे भक्तन के मनके हरनवारे श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को मैं दर्शन करूंगो प्रथम अम्बरीषसूं आदिलेके जे राजाभये हैं ते जा श्रीकृष्ण के नखमण्डल की कान्ति सूं तरिवे में न आवे ऐसो संसाररूपी अन्धकार कूं तरिजातभये ७ जो चरणारविन्द ब्रह्मा महादेव सू आदिलेके देवतान ने और प्रकाशमान जो लक्ष्मी ताने मुनीश्वरन ने भक्तन ने पूज्यो है और गौवन के चरायवे के लिये जो चरणारविन्द ग्वालवालन के संग वनमें फिर्यो है और जा चरणारविन्द में गोपीन के कुचन की केशर लगी है वा चरणारविन्द को दर्शन करूंगो ८ सुन्दर जामें कपोल नासिका और मुसिकानि भरी चितवनि अरुण डोरा जिनमें आय रहे ऐसे कमल से जामें नेत्र घूमघुमारी अलकें छूटि रही ऐसो श्री-कृष्णचन्द्र के मुख को निश्चय दर्शन करूंगो हरिण मेरे दाहिने आये हैं ९ पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपनी इच्छा सूं अव जाने मनुष्य रूप धारण करो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सुन्दर रूप को दर्शन करूंगो तव मेरे नेत्र सफल होयँगे १० तहां कोई शंका करे है कि हमारी तुल्य कर्म्मन को करनवारो दिखाई देय है तुम कैसे भगवान् कहो हौ ताको उत्तर तीन श्लोक करिके देय हैं

कार्यरूप जगत् और कारणरूप महदादिक तत्त्व तिनकूं जो श्रीकृष्णचन्द्र चितवनि सूं करे हैं तथापि उनके अहङ्कार नहीं है अपने तेज सूं अज्ञान भेद भ्रम को जिनने दूरि करे है अपने आधीन जो माया है ता माया की ओर चितवनि करिके अपने में रचे जे जीव हैं तिन सूं वृन्दावन के वृक्षन के नीचे और गोपीन के घरन में लीला करिके वद्धमे दिखाई देयहैं ११ जिन श्रीकृष्ण के अहंकार नहींहै तो आत्माराम हैं तिनकूं लीलाकरिवो कैसे बनेहै या शङ्काको उत्तर कहे हैं कि भक्तन के ऊपर कृपा करिवे के लिये लीला करे हैं सबके पापन के दूर करनवारे जे सुन्दर मंगल रूप श्रीकृष्णचन्द्रके गुण जन्म कर्म सूं मिली जे वाणी ते जगत् कूं जिवावें हैं और शोभायमान करे हैं पवित्र करे है और जिन वाणीन में श्रीकृष्णचन्द्र के लीला गुण जन्म कर्म नहीं गाये हैं उनकों जे कहेहैं और श्रवण करेहैं ते अपवित्र हैं जैसे मृत्यु भयो शरीर अपवित्र है यादवन के कुलमें जिन श्रीकृष्णचन्द्र ने अवतार लियो है अपनी मर्यादान को पालनकरें जे देवतान में श्रेष्ठहैं तिनको सुखके करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ईश्वर लीला करिके यशको फैलावत व्रजमें रहेहैं सबकों मंगलरूप जो यश है ताकों देवता गावे हैं १२। १३ महत्पुरुषन कों सुन्दर गति के देन-

श्रागुणकर्मजन्मभिः ॥ प्राणन्तिशुम्भन्तिपुनन्तिवैजगद्यास्तद्विरक्ताःशवशोभनामताः १२ सचावतीर्णःकिलसात्वतान्वयेस्वसेतुपालामरवर्यशर्मकृत् ॥
यशोवितन्वन्व्रजआस्तईश्वरो गायन्तिदेवायदशेषमङ्गलम् १३ तन्त्वद्यनूनंमहतांगतिंगुरुं त्रैलोक्यकान्तंदृशिमन्महोत्सवम् ॥ रूपंदधानंश्रियईप्सितास्पदं द्रक्ष्येममासन्नुषसःसुदर्शनाः १४ अथावरूढःसपदीशयोरथात्प्रधानपुंसोश्चरणंस्वलब्धये ॥ धियाधृतंयोगिभिरप्यहंध्रुवं नमस्यआभ्यांचसखीन्वनौकसः १५ अप्यङ्घ्रिमूलेपतितस्यमेविभुः शिरस्यधास्यन्निजहस्तपङ्कजम् ॥ दत्ताभयंकालभुजङ्गरंहसा प्रोद्वेजितानांशरणैषिणांनृणाम् १६ समर्हणंयत्रनिधायकौशिकस्तथावलिश्चापजगत्त्रयेन्द्रताम् ॥ यद्वाविहारेव्रजयोषितांश्रमं स्पर्शेनसौगन्धिकगन्ध्यपानुदत् १७ नमय्युपैष्यत्यरिबुद्धिमच्युतः कंसस्यदूतःप्रहितोऽपिविश्वदृक् ॥ योऽन्तर्बहिश्चेतसएतदीहितं क्षेत्रज्ञईक्षत्यमलेनचक्षुषा १८ अप्यङ्घ्रिमूलेऽवहितंकृताञ्जलिं मामीक्षितासस्मित

वारे गुरु त्रिलोकी में सुन्दर नेत्रनवारे पुरुषन कूं आनन्द के देनवारे लक्ष्मीकों वाञ्छित रहिवे को ठिकानो अतिसुन्दर रूपको धारण करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को आज मैं निश्चय दर्शन करोंगो प्रातःकाल के समय मेरे श्रेष्ठ सगुन भये हैं १४ दर्शन करे पीछे शीघ्र रथमें ते उतरि के ईश्वर राम कृष्णकों निश्चय प्रणाम करोंगो और इन सहित वनवासी सखान को प्रणाम करोंगो जिन राम कृष्ण को चरणारविन्द योगीन ने आत्मलाभके लिये केवल मनमें ध्यान कियो है ताकों मैं साक्षात् प्रणाम करोंगो १५ चरण में परो जो मैं हूं ताके शिर पै समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ कों धरैंगे कालरूप सर्पकी फुंकार सों डरपि के शरण कूं चाहैं ऐसे मनुष्यन कूं अभयदान जा हाथ ने दियो है १६ जिन श्रीकृष्ण के हाथमें इन्द्र पूजा राखिके इन्द्रता पावतभयो तैसेही राजा बलि संकल्प राखिके त्रिलोकीकी इन्द्रता पावतभयो रासक्रीड़ा में व्रजकी स्त्री गोपीन के श्रम को जो पसीना है ताकूं जा हाथ ते पोंछत भयो और कमलकीसी जा हाथ में सुगन्धि आवै वा हाथ को मेरे शिरपर धरे १७ कंस को सन्देशो लैके कंस को भेज्यो जाऊंहों तथापि समस्त विश्व के जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र वैरी कंस के पास ते यह आयो है याते मोकों न मानेंगे और जो अन्त-

र्यभी श्रीकृष्ण मेरे चित्त के बाहर भीतर जो चेष्टा है ताकूं नित्य ज्ञान करिके देखे हैं ऊपर ते कंस को भेज्यो जाऊंहौं भीतर तें श्रीकृष्णको ध्यान लगिरह्यो है जा बातकों नित्य ज्ञान करिके अन्तर्यामी जाने हैं १८ चरणारविन्द में गिर्यो हाथ जाने जोरि लिये ऐसो जो मैं हूं ताकूं मुसिकायके श्रीकृष्णचन्द्र करुणाभरी दृष्टि सों जासमय देखेंगे तासमय शीघ्रही दूरि भयेहैं सबपाप जाके गयो है भय जाको ऐसो मैं बड़े आनन्द कों पाऊंगो १९ अतिशय करिके हितकारी जाति कों श्रीकृष्ण के बिना और कोई देवता नहीं ता मोकों श्रीकृष्णचन्द्र अपनी लम्बी भुजा पसारिके छाती ते लगावेंगे ता समय यह देह पवित्र होय जायगो और कर्मरूप बन्धनहै सोभी या देहको छूटि जायगो २० श्रीकृष्ण ते मिलिके नारि झुकायके हाथ जोरिके जब ठाढ़ो होऊँगो तब हे अक्रूर ! हे काका ! या प्रकार बड़ो जिनको यश वे श्रीकृष्ण मोतें कहेंगे ता समय हम सफलजन्म होयँगे बड़ोंने जाको आदर नहीं कियोहै वा पुरुष कों धिक्कार है २१ तिन श्रीकृष्ण के कोई प्यारो और अ-

गार्द्रयादृशा ॥ सपद्यपध्वस्तसमस्तकिल्बिषो वोढामुदंवीतविशङ्कऊर्जिताम् १९ सुहृत्तमंज्ञातिमनन्यदैवतं दोर्भ्यांबृहद्भ्यांपरिरप्स्यतेऽथमाम् ॥ आत्माहितीर्थीक्रियतेनदैवमे बन्धश्चकर्मात्मकउच्छ्वसित्यतः २० लब्धाङ्गसङ्गंप्रणतंकृताञ्जलिं मांवक्ष्यतेऽक्रूरततेत्युरुश्रवाः ॥ तदावयंजन्मभृतोमहीयसा नैवादृतोयोधिगमुष्यजन्मतत् २१ नतस्यकश्चिद्दयितःसुहृत्तमोनचाप्रियोद्वेष्यउपेक्ष्यएववा ॥ तथाऽपिभक्तान्भजतेयथातथा सुरद्रुमोयद्वदुपाश्रितोऽर्थदः २२ किंचाऽग्रजोमाऽवनतंयदूत्तमः स्मयन्परिष्वज्यगृहीतमञ्जलौ ॥ गृहंप्रवेश्याप्तसमस्तसत्कृतं संप्रक्ष्यतेकंसकृतंस्वबन्धुषु २३ श्रीशुकउवाच ॥ इतिसंचिन्तयन्कृष्णं श्वफल्कतनयोऽध्वनि ॥ रथेनगोकुलंप्राप्तःसूर्यश्चास्तगिरिंनृप २४ पदानितस्याखिललोकपालकिरीटजुष्टामलपादरेणोः ॥ ददर्श गोष्ठेक्षितिकौतुकानि विलक्षितान्यब्जयवाङ्कुशाद्यैः २५ तद्दर्शनाह्लादविवृद्धसंभ्रमः प्रेम्णोर्ध्वरोमाऽश्रुकलाकुलेक्षणः ॥ रथादवस्कन्द्यसतेष्वचेष्टतप्रभोरमून्यङ्घ्रिरजांस्यहोइति २६ देहंभृतामियानर्थो हित्वादम्भंभियंशुचम् ॥ सन्देशाद्यो हरेर्लिङ्गदर्शनश्रवणादिभिः २७ ददर्शकृष्णंरामञ्च व्रजेगोदोहनंग

तिशय करिके हितकारी भी नहींहै कोई कुप्यारो नहीं और न कोई वैरीहै न कोई छोडिबे योग्यहै तथापि जो भक्त जैसे भजेहैं तिनकों तैसेही भजेहैं जैसे कल्पवृक्ष जो सेवन करैहै ताहीकों वह फल देयहै २२ यादवन में श्रेष्ठ बड़े भय्या बलदेवजी नीची नारि करिके ठाढ़ो जो मैं हूं ताय मुसिकाय के आलिंगन करिके हाथ पकरिके घर में लेजायके पाये हैं समस्त सत्कार जाने ऐसो जो मैं हूं तासों अपने बन्धु यादवन में कंसके कर्त्तव्यकों पूंछेंगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार श्वफल्क के पुत्र अक्रूर मार्ग में श्रीकृष्णचन्द्र को चिन्तन करत रथ में बैठकर गोकुल पहुँचे इतने में सूर्य्य अस्ताचल को प्राप्त होयगयो २४ सम्पूर्ण लोकन के पालन करनवारे ब्रह्मादिक देवता अपने मुकुटनके ऊपर जिनके चरणनकी रेणु कों धारण करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के चरणन के खोज अक्रूरजी व्रजमें देखत भये कैसे खोजहैं पृथ्वी के गहनेरूप हैं कमल यव अंकुश के जिनमें चिह्नहैं २५ श्रीकृष्णचन्द्र के चरणचिह्न के दर्शन के आनन्द ते भयोहै सम्भ्रम जिनके प्रेम से रोमाञ्च जिनके होय आये नेत्रन में आंसू आयगये ऐसे अक्रूरजी रथते उतरिके अहो मेरे प्रभु के चरणनकी रज ऐसे कहत कहत चरणन के खोजन में लोटत भये २६

देहधारीन को इतनोही पुरुषार्थ है कंसके सन्देश ते आदिलेके दम्भ भय शोच छोड के श्रीकृष्णके चरणन के दर्शन श्रवणादिकसूं जो अक्रूरको प्रेमभयो २७ व्रजमें गोशाला में गौ दुहिवेको गये जे श्रीकृष्ण और वलदेवजी को अक्रूरजी देखतभये पीताम्बर और नीलाम्बर कूं पहिरे हैं शरदृतु के कमल से जिनके नेत्र २८ किशोर जिनकी अवस्था श्याम और गौर जिनको स्वरूप लक्ष्मी की शोभाके स्थान लम्बी जिनकी भुजा सुन्दर जिनको मुख सुन्दरन में अतिसुन्दर हाथीके छोनो के तुल्य जिनको पराक्रम है २९ ध्वजा वज्र अंकुश कमल को जिनमें चिह्न ऐसे चरणन सूं व्रजको शोभायमान करेहैं महात्मा हैं कृपा भरी मुसिकानि लिये जिनकी चितवनि है उदार रुचिर जिनकी क्रीड़ा है मोतीन के हार और वनमाला पहिरे पवित्र चन्दन केशर जिनके लगी है स्नान किये निर्म्मल जिनके वस्त्रहैं प्रकृति पुरुषरूपहैं काहे ते आदिकारणहैं जगत्के पालन करनवारे हैं पृथ्वीको भार उतारिवे के लिये वलराम केशव दो रूप धरिके अवतार लिये हैं ३०।३१।३२

तौ ॥ पीतनीलाम्बरधरौ शरदम्बुरुहेक्षणौ २८ किशोरौश्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौबृहद्भुजौ ॥ सुमुखौसुन्दरवरौ बालद्विरदविक्रमौ २९ ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैश्चिह्नितैरङ्घ्रिभिर्व्रजम् ॥ शोभयन्तौमहात्मानौ सानुक्रोशस्मितेक्षणौ ३० उदाररुचिरक्रीडौ स्रग्विणौवनमालिनौ ॥ पुण्यगन्धानुलिप्ताङ्गौ स्नातौविरजवाससौ ३१ प्रधानपुरुषावाद्यौ जगद्धेतूजगत्पती ॥ अवतीर्णौजगत्यर्थे स्वांशेनवलकेशवौ ३२ दिशोवितिमिराराजन् कुर्वाणौप्रभयास्वया ॥ यथामारकतःशैलो रौप्यश्चकनकाचितौ ३३ रथात्तूर्णमवप्लुत्य सोऽक्रूरःस्नेहविह्वलः ॥ पपातचरणोपान्ते दण्डवद्रामकृष्णयोः ३४ भगवद्दर्शनाह्लादबाष्पपर्य्याकुलेक्षणः ॥ पुलकाचिताङ्गऔत्कण्ठ्यात् स्वाख्यानेनाशकन्नृप ३५ भगवांस्तमभिप्रेत्य रथाङ्गाङ्कितपाणिना ॥ परिरेभेभ्युपाकृष्य प्रीतःप्रणतवत्सलः ३६ सङ्कर्षणश्चप्रणतमुपगुह्यमहामनाः ॥ गृहीत्वापाणिनापाणी अनयत्सानुजोगृहम् ३७ पृष्ट्वाऽथस्वागतंतस्मै निवेद्यचवरासनम् ॥ प्रक्षाल्यविधिवत्पादौ मधुपर्कार्हणमाहरत् ३८ निवेद्यगांचातिथये संवाह्यश्रान्तमादृतः ॥ अन्नंबहुगुणंमेध्यं श्रद्धयोपाहरद्विभुः ३९ तस्मैभुक्तवतेप्रीत्या

हे राजन् परीक्षित्! अपने तेजते दिशान के अन्धकार को दूर करे हैं सुवर्ण करिके जैसे नीलमणि को पर्व्वत अथवा रूपे को पर्व्वत जगमगायहै ३३ स्नेह में विह्वल होयके अक्रूरजी शीघ्र रथमें ते उतरि के रामकृष्ण के चरणन में दण्डवत् करतभये ३४ हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण के दर्शन सूं जो आनन्द भयो तासूं नेत्रन में आसू भरिआये उत्कण्ठाते अंगमें रोमाञ्च होय आये मैं अक्रूर दण्डवत् करूं हूं ऐसे कहिवे को न समर्थ होतभये ३५ हितके करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अक्रूर एतदर्थ आये हैं यह जानिके चक्रकी जामें रेखा ऐसे अपने हाथते पकरिके प्रसन्न होय के छाती सों लगाय के मिलतभये मिलिवे को कारण यह है कि कंस के मारिवे की सामर्थ्य श्रीकृष्ण ने जताई ३६ वड़ोहै मन जिनको ऐसे संकर्षण वलदेवजी दण्डवत् जिनने करी ऐसे अक्रूरजीकों छाती सूं लगाय के अपने हाथ ते दोनों हाथ पकरि के घरमें श्रीकृष्ण सहित लिवाय जात भये ३७ भलेआये ऐसे कुशल पूंछि के अक्रूरजी कों आसन विछाय के विधिपूर्व्वक पांवन कों धोयके मधुपर्क देके पूजन करतभये ३८ विधिपूर्व्वक पूजा करिके वैल अक्रूरजी के निवेदन करो मार्गमें परिश्रम जिनको भयो ऐसे अक्रूरजी के चरणारविन्द आदरसों दाविके वहुत जामें गुण

ऐसी पवित्र अन्नकी सामग्री भोजनार्थ अतिश्रद्धा सों अक्रूरजी के आगे निवेदन करतभये ३९ अक्रूरजी भोजन जब करिचुके तब परमधर्म्म के जाननवारे बलदेवजी बीरी चन्दन केशर अतर फूलन के हार इत्यादिकन सूं प्रसन्न करतभये ४० सन्मान जिनको करो ऐसे अक्रूरजी ते नन्दजी पूंछतभये निर्दयी कंसके जीवत तुम्हारो कैसे जीवनहोयहै कसाई जिनको पालक वे मेंढ़ कैसे जियें ४१ प्राणन को पोषणवारो दुष्ट कंस विलाप करै जो अपनी बहिनि ताके पुत्रन कों मारत भयो ता कंसकी प्रजा तुमहो तुम्हारी कहा कुशल विचारें ४२ या प्रकार मधुरवचन तें पूंछि के नन्दजी ने सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्गके परिश्रम कों त्यागतभये ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरागमनंनामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ * ॥

(नवत्रिंशेपुरींगच्छत्यच्युतेगोपिकोक्तयः ॥ अक्रूरेणाथकालिन्द्यां विष्णुलोकस्यदर्शनम् १ उनतालीसयें अध्याय में मथुरापुरी को जातेहुये श्रीकृष्णजी में गोपियों की उक्ति और अक्रूरजी

रामःपरमधर्मवित् ॥ सुखवासैर्गन्धमाल्यैः परांप्रीतिंव्यधात्पुनः ४० पप्रच्छसत्कृतंनन्दः कथंस्थनिरनुग्रहे ॥ कंसेजीवतिदाशार्ह सौनपालाइवावयः ४१
योऽवधीत्स्वस्वसुस्तोकान् क्रोशन्त्याअसुतृप्खलः ॥ किंनुस्वित्तत्प्रजानांवःकुशलंविमृशामहे ४२ इत्थंसूनृतयावाचा नन्देनसुसभाजितः ॥ अक्रूरःप
रिपृष्टेन जहावध्वपरिश्रमम् ४३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धेऽक्रूरागमनंनामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ सुखोपविष्टःपर्य्यङ्के रामकृष्णोरुमानितः ॥ लेभेमनोरथान्सर्व्वान् पथियान्सचकारह १ किमलभ्यंभगवति प्रसन्नेश्रीनिकेतने ॥ त
थाऽपितत्पराराजन्नहिवाञ्छन्तिकिञ्चन २ सायन्तनाशनंकृत्वाभगवान्देवकीसुतः ॥ सुहृत्सुवृत्तंकंसस्यपप्रच्छान्यच्चिकीर्षितम् ३ श्रीभगवानुवाच ॥ ता
तसौम्यागतःकच्चित्स्वागतंभद्रमस्तुवः ॥ अपिस्वज्ञातिबन्धूनामनमीवमनामयम् ४ किंनुनःकुशलंपृच्छे एधमानेकुलामये ॥ कंसेमातुलनाम्न्यङ्ग स्वानां
नस्तत्प्रजासुच ५ अहोअस्मदभूद्भूरि पित्रोर्वृजिनमार्य्ययोः ॥ यद्धेतोःपुत्रमरणं यद्धेतोर्बन्धनंतयोः ६ दिष्ट्याऽद्यदर्शनंस्वानां मह्यंवःसौम्यकाङ्क्षितम् ॥ स

करके यमुनाजी में विष्णुलोक का दर्शन भयो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! शय्याके ऊपर सुखपूर्वक बैठे कृष्ण बलदेवने बड़ो सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जे जे मनोरथ करतेगये हैं ते ते समस्त पूर्णभये १ छः प्रकारके ऐश्वर्य्य करि परिपूर्ण शोभा के स्थान ऐसे श्रीकृष्ण जब प्रसन्नभये तब कौनसी वस्तुकी प्राप्ति न भई हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण-परायण जे भक्तहैं तिनें कछु वस्तुकी चाहना नहीं है २ देवकीके पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्या समय ब्यारू करिके अपने यादवन में जो कंस को बर्तावहै ताय अक्रूरजी सूं पूंछतभये और जो कछु करिवेको विचारहै ताय पूंछतभये ३ श्रीभगवान् श्रीकृष्ण बूझे हैं हे काका! हे साधु! तुम भलेआये तुम्हारो कल्याण होउ जातिके भैया बन्धूनकों सुखहै आरोग्यहै ४ अंग अर्थात् हे अक्रूर! मामाहै नाम जाको ऐसो कंस हमारे कुलकों रोग बढो तब अपने भय्या बन्धूनकी ता कंसके प्रजाकी कहा कुशल पूंछें ५ हमारे निरपराध माता पिताकूं हमारे लिये बडो दुःख भयो हमारे लिये उनके

पुत्र मरे हमारे लिये उनकों बन्धन भयो ६ हे साधु! बहुतदिन ते तुम्हारे दर्शनकी अभिलाषा रही अब आपनेनको दर्शनभयो बड़ो मङ्गलभयो हे काका! तुम्हारो आयबो कैसे भयो यह हमते वर्णन करो ७ श्रीशुकदेवजी बोले मधुवंशोद्भव अक्रूरजी श्रीकृष्णने पूंछे तब सम्पूर्ण वृत्तान्त कहतभये कंस यादवनसूं बैर करे है और वसुदेवके मारिवेको उद्यमकरे है धनुर्यज्ञके देखिवेको तो मिषहै चाणूरादिकनपै घात करायवे के लिये मोहिं भेजोहै वसुदेव के श्रीकृष्णको जन्मभयो है यह बात नारदजी कंसते कहि आये हैं सो सम्पूर्ण अक्रूरजी श्रीकृष्ण ते कहतभये ८।९ श्रीकृष्णचन्द्र और बड़े बड़े शत्रून के पराजय करनवारे श्रीवलदेवजी अक्रूरको वचन श्रवण करिके पिता नन्दजी सूं हँसिके राजाकंसको संदेशो जतावतभये १० नन्दजी गोपनको आज्ञा देतभये सम्पूर्ण दूध दही लै लेउ गाड़ान को जोतो ११ कल्हिके दिन मथुरा जायँगे राजाकंसकों रस देयँगे यामें यह बोधन करो कि जब देहमें रोग वृद्धिकूं प्राप्त होयहै तब रस देयहैं ऐसे कंसरूपी रोग बढ़ो है याकों रस देयँगे सुन्दर

ज्ञातंवरर्थतांतात तवागमनकारणम् ७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ पृष्टोभगवतासर्वंवर्णयामाससमाधवः ॥ वैरानुबन्धंयदुषुवसुदेववधोद्यमम् ८ यत्संदेशोयदर्थंवा दूतःसंप्रेषितःस्वयम् ॥ यदुक्तंनारदेनास्य स्वजन्मानकदुन्दुभेः ९ श्रुत्वाऽक्रूरवचःकृष्णोबलश्चपरवीरहा ॥ प्रहस्यनन्दंपितरं राज्ञादिष्टंविजज्ञतुः १० गोपान्समादिशत्सोऽपि गृह्यतांसर्वगोरसः ॥ उपायनानिगृह्णीध्वं युज्यन्तांशकटानिच ११ यास्यामःश्वोमधुपुरीं दास्यामोनृपतेरसान् ॥ द्रक्ष्यामःसुमहत्पर्व यान्तिजानपदाःकिल ॥ एवमाघोषयत्क्षत्त्रानन्दगोपःस्वगोकुले १२ गोप्यस्तास्तदुपश्रुत्य बभूवुर्व्यथिताभृशम् ॥ रामकृष्णौपुरींनेतुमक्रूरंव्रजमागतम् १३ काश्चित्तत्कृतहृत्तापश्वासम्लानमुखश्रियः ॥ स्रंसद्दुकूलवलयकेशग्रन्थ्यश्चकाश्चन १४ अन्याश्चतदनुध्याननिवृत्ताशेषवृत्तयः ॥ नाभ्यजानन्निमंलोकमात्मलोकंगताइव १५ स्मरन्त्यश्चापराःशौरेरनुरागस्मितेरिताः ॥ हृदिस्पृशश्चित्रपदागिरःसंमुमुहुःस्त्रियः १६ गतिंसुललितांचेष्टांस्निग्धहासावलोकनम् ॥ शोकापहानिनर्माणिप्रोद्दामचरितानिच १७ चिन्तयन्त्योमुकुन्दस्य लीलाविरहकातराः ॥ समेताःसङ्घशःप्रोचुरश्रुमुख्योऽच्युताशयाः १८

भारी पर्व देखेंगे और देशवासीहू जायँगे ऐसे नन्दरायजी अपने गोकुल के कोतवालकों बुलायके ढौंड़ी पिटावत भये १२ श्रीकृष्णही हैं एक जीवन जिनके वे गोपी जा समय श्रीकृष्ण बलरामकों मथुरापुरी में लेजायवेकूं व्रजमें अक्रूरजी आये हैं यह बात सुनिके अत्यन्त दुःखित होतभई १३ अब गोपीन के दुःखके लक्षण कहै हैं श्रीकृष्ण मथुरा जायँगे यह बात सुनिके भयो जो हृदयमें ताप ता सों फिर गोपीन के मुख कुम्हिलायगये शिथिलभये हैं वस्त्र कंकण केशनकी ग्रन्थि जिनकी ऐसी कोई गोपी होतभई १४ ता श्रीकृष्ण के ध्यानकरे ते निवृत्तभई है इन्द्रियनकी वृत्ति जिनकी अर्थात् नेत्रन ते देखिवो कानन ते सुनिवो वाणी ते बोलिवो नासिका तें सूंघिवो सब जिनको छूटिगयो ऐसी और गोपी हैं ते मुक्तिभये तिनकी तुल्य या देहको न जानतभई १५ कोई गोपी स्नेहते मुसिकाय के हृदयको आनन्ददायक चित्रविचित्र जिनकी बोलनि ऐसे वचननकी सुधिकरिके मोहित होतभई १६ मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्णचन्द्रकी मनोहर चलनि स्नेह भरी चितवनि शोककी दूरि करनवारी बोलनि इत्यादिक चेष्टानकूं बड़े चरित्रनकूं स्मरण करतभई १७ यह सत्य जायगो यह भय जिनकों भयो विरह में कातर अश्रु जिनके मुँह पै बहिआये श्रीकृष्ण भगवान् में जिनको मनहै ऐसी

हजारन गोपीन के झुण्ड जुरि मिलिके समस्त आपुसमें यह कहतभई १८ गोपी कहती हैं अहो विधाता! तेरे कहूं दया नहीं है देहधारीन कों मिलाय के मित्रता करावै स्नेह लगावै फेरि उनके मनोरथ पूर्ण न होन पावैं तब तक उनकों ऐसो न्यारो न्यारो करिदेय है जैसे बालक खिलौनाकों इकठौरो करिके फेरि न्यारो न्यारो करदेयहै यह तेरो कर्तव व्यर्थ है १९ तेरो यह कर्म निन्दितहै अब यह कहे हैं घूमघुमारी छल्लादार अलकें जापै छुटिरहीं सुन्दर जामें कपोल ऊँची जामें नासिका शोककी हरनवारी मन्दमन्द जामें मुसिकानि तासों सुन्दर ऐसे प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रको मुख दिखायके हमारे नेत्रनतें न्यारो करे है यह तेरो कर्म बुरो है दान करिके लेइहै याते तू बड़ो कठोरहै २० अक्रूर लेजायहै मैंतो नहीं लेजाऊं हों कदाचित् ऐसे विधाता कहै तहां गोपी कहै हैं अरे विधाता निर्दयी! अक्रूर या नाम धरिके आयो जो तू है सो तैंने हमको कृष्णरूप नेत्र दिये हैं तिनकूं अज्ञानी की तुल्य हरिके लेजायहै कदाचित् कहो कि कृष्णको हरिकेलिये जाऊं हूं तुम्हारे नेत्रनकों तौ नहीं हरोहों तहां कहेहैं हमारे नेत्रनको तो हरेई है जो तैंने नेत्र दियो है तासूं श्रीकृष्णके एक अंगमें सम्पूर्ण विश्वकी चतुराई देख लेतभई कृष्णरूप बिना आंधरीगोपी कौनकों देखेंगी २१ क्षणमें भङ्गहै

गोप्यऊचुः ॥ अहोविधातस्तवनक्वचिद्दया संयोज्यमैत्र्याप्रणयेनदेहिनः ॥ तांश्चाकृतार्थान्वियुनङ्क्ष्यपार्थकंविक्रीडितंतेऽर्भकचेष्टितंयथा १९ यस्त्वंप्रदर्श्यासितकुन्तलावृतं मुकुन्दवक्त्रंसुकपोलमुन्नसम् ॥ शोकापनोदस्मितलेशसुन्दरं करोषिपारोक्ष्यमसाधुतेकृतम् २० क्रूरस्त्वमक्रूरसमाख्ययास्मनश्चक्षुर्हिदत्तंहरसेबताज्ञवत् ॥ येनैकदेशेऽखिलसर्गसौष्ठवं त्वदीयमद्राक्ष्मवयंमधुद्विषः २१ ननन्दसूनुःक्षणभङ्गसौहृदःसमीक्षतेनःस्वकृतातुराबत ॥ विहायगेहान्स्वजनान्सुतान्पतींस्तद्दास्यमद्धोपगतानवप्रियः २२ सुखंप्रभातारजनीयमाशिषः सत्याबभूवुःपुरयोषितांध्रुवम् ॥ याःसम्प्रविष्टस्यमुखंव्रजस्पतेःपास्यन्त्यपाङ्गोत्कलितस्मितासवम् २३ तासांमुकुन्दोमधुमञ्जुभाषिभिर्गृहीतचित्तःपरवान्मनस्व्यपि ॥ कथंपुनर्नःप्रतियास्यतेबलाग्राम्याःसलज्जस्मितविभ्रमैर्भ्रमन् २४ अद्यध्रुवंतत्रदृशोभविष्यतेदाशार्हभोजान्धकवृष्णिसात्वताम् ॥ महोत्सवःश्रीरमणंगुणास्पदंद्रक्ष्यन्तिमेचाध्वनिदेवकीसुतम् २५ मैतद्विधस्याकरु

स्नेह जाको ऐसो यह नन्द को पुत्र याकी मुसिकानि सों मोहित भई घर भय्या बन्धून कों त्यागि के औ पुत्र पतिन कों छोड़िके साक्षात् जाकी दासी भई हैं हाय हाय हमें देखेहू नायहै याकूं नये नये प्यारे लगे हैं २२ मथुराकी स्त्रीन कूं या रात्रि को सवेरो अच्छो होयगो क्योंकि उनके मनोरथ निश्चय साचे होयँगे जब मथुरामें जायगो तब कटाक्षन कों लिये मुसिकानि रूप जामें रस ऐसे मुख कों आदर ते देखेंगी कदाचित् दो तीन दिन को जाय हैं तुम ते जाको प्यारहै बाबा संग जाय है लिवाय के चल्यो आवैगो ऐसी व्याकुल क्यों होउ हौ तहां गोपी कहे हैं मथुरा की स्त्रीन की मीठी मनोहर बातन सूं प्यारे को चित्त पकरो जायगो उनकी लाज भरी मुसिकानि कटाक्षन सों मन जाको चलायमान होग जायगो दोहा कवित्तन के अर्थ करैं ऐसी चतुर स्त्रीन की आँखि जब प्यारो देखैगो तब हे सखियो! धैर्यवान् बाबा के अधीन है तथापि गाँव की रहनवारी हम है तिनके पास फेरि काहेको आवैगो २३ । २४ आज तौ मथुरा में दाशार्हवंशी भोजवंशी अन्धकवंशी यादव हैं तिनही आखिनकों निश्चय आनन्द होयगो लक्ष्मी के रमावनवारे समस्त जिनमें गुण ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण तिनकूं जे पुरुष मार्ग में देखेंगे तिनकी आंखिन

कों निश्चय बडो आनन्द होयगो २५ या सारिसे निर्दयी को अक्रूर यह सुन्दर नाम मति होउ जो यह निर्दयी बहुत दुःखित जो हम हैं तिनके विना पूंछे माणन ते प्यारो कृष्ण है ताकूं हमारी आखिन ते दूर लिये जायहै २६ कठोरहै बुद्धि जाकी ऐसो यह कृष्ण रथमें जाय बैठ्यो है अभागे गोप जल्दी गाड़ा हाँकैं ऐसे श्रीकृष्ण के पीछे उतावल करेंहैं और वृद्धभी या कूं नाहीं नहीं करे हैं अरी सखियो! कौन कों दोष देई आज हमारो दैवही उलटो होय गयो दैव सूधो हो तो तौ कोई विघ्न होय जातो बुरो शकुन विचारि के प्यारो यहाही रहतो न जातो २७ गोपी कहे हैं चलिके या श्रीकृष्ण कों मने करैं याके रथ के आगे आड़ी परिके कहैंगी जो जाय है तो हमारी छाती पै रथ को पहिया धरिके जा हमारे यह कुल के वडेवूढे कहा करेंगे आधोक्षण छुटे नहीं ऐसो मुकुन्दको संग तासू दैवने विछुराई हैं याही ते दीन हमारो चित्त भयो है २८ जा श्रीकृष्णकी स्नेहभरी मनोहर मुसिकानि मनोहर वार्में लीलापूर्वक चितवनि आलिं-

ण्यस्यनामभूदक्रूरइत्येतदतीवदारुणः ॥ योऽसावनाश्वास्यसुदुःखितंजनंप्रियात्प्रियन्नेष्यतिपारमध्वनः २६ अनार्द्रधीरेपसमास्थितोरथं तमन्वमीत्वरय न्तिदुर्मदाः ॥ गोपाअनोभिःस्थविरैरुपेक्षितं दैवञ्चनोऽद्यप्रतिकूलमीहते २७ निवारयामःसमुपेत्यमाधवं किन्नोऽकरिष्यन्कुलवृद्धबान्धवाः ॥ मुकुन्दसङ्गा न्निमिषार्द्धदुस्त्यजाद्दैवेनविध्वंसितदीनचेतसाम् २८ यस्यानुरागललितस्मितवल्गुमन्त्रलीलावलोकपरिरम्भणरासगोष्ठ्याम् ॥ नीताःस्मनःक्षणमिवक्ष णदाविनातं गोप्यःकथंन्वतितरेमतमोदुरन्तम् २९ योऽह्नःक्षयेव्रजमनन्तसखःपरीतोगोपैर्विशन्खुररजश्छुरितालकस्रक् ॥ वेणुंक्वणन्स्मितकटाक्षनिरीक्षणे न चित्तंक्षिणोत्यमुमृतेनुकथंभवेम ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रुवाणाविरहातुराभृशं व्रजस्त्रियःकृष्णविषक्तमानसाः ॥ विसृज्यलज्जांरुरुदुःस्मसुस्वरं गोवि न्ददामोदरमाधवेति ३१ स्त्रीणामेवंरुदन्तीनामुदितेसवितर्यथ ॥ अक्रूरश्चोदयामासकृतमैत्रादिकोरथम् ३२ गोपास्तमन्वसज्जन्तनन्दाद्याःशकटैस्ततः ॥ आदायोपायनंभूरिकुम्भान्गोरससम्भृतान् ३३ गोप्यश्चदयितंकृष्णमनुव्रज्यानुरञ्जिताः ॥ प्रत्यादेशंभगवतःकाङ्क्षन्त्यश्चावतस्थिरे ३४ तास्तथातप्यतीर्वीक्ष्य

गन इनकरिके रासकी सभामें वड़ी वड़ी रात्री एक क्षणकी तुल्य विताई हे गोपियो! या कृष्ण विना विरहरूपी दुःखके समुद्रकों कैसे तरेंगी २९ वलदेवहै सखा जाको गौवन के खुरनकी रज सूं धूसरी हैं अलक और माला जाकी ऐसो कृष्ण सन्ध्यासमय ग्वालवालन को संग लैके बांसुरी को बजावत आवैहै मुसिकानि कटाक्षभरी चितवनि सों चित्तको चुरावै है अव या विना कैसे जीवेंगी ३० अब श्रीशुकदेवजी कहेंहैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार अत्यन्त विरह में व्याकुल श्रीकृष्णमें लगे हैं मन जिनके ऐसी व्रजकी स्त्री गोपी लाज छोड़िके हे गोविन्द! हे दामोदर! हे माधव! ऐसे पुकारपुकार के रोवतभई ३१ या प्रकार स्त्री रुदन करेंही इतने में सूर्य्य उदय होइ आयो ता पीछे सन्ध्योपासन जिनने करो ऐसे अक्रूरजी रथकों हाकतभये ३२ नन्दादिक सम्पूर्ण गोप वड़ी वड़ी भेंट लैके दूध दही माखनतें भरे जे कलशहैं तिनकूं लैके गाडानमें बैठिके पीछेतें जातभये ३३ श्रीकृष्णमें आसक्तहै मन जिनको ऐसी गोपी श्रीकृष्णके पीछे जायके अभऊँ प्यारो

वगदि के आवै ऐसे श्रीकृष्णको वगदिवे को पैंडो ठाढी देखतभई ३४ यादवनमें उत्तम श्रीकृष्ण अपने चलिवे के समय गोपीन को व्याकुल देखिके जल्दी आऊंगो ऐसे प्रेम सहित दूतनसें वचन कहवाय के शान्त करतभये ३५ जहा ताई रथकी ध्वजा दीख्यो करी तराताई और जहा ताई रथकी धूरि उड़ती दीखी तवताई श्रीकृष्ण में लगेहैं चित्त जिनके ऐसी गोपी अबहूं वगदि आवें ऐसे विचार करत चित्रकी तुल्य लिखीसी ठाढी होतभई ३६ श्रीकृष्ण के वगदिवे की गई है आश जिनके वे गोपी वगदि कें आवति भई श्रीकृष्णकी लीलान कों गाय गायके गयेहैं शोक जिनके ऐसे दिनन कों वितावत भई ३७ हे राजन् परीक्षित्! पवनकी तुल्यहै वेग जाको ऐसो रथ तामें बैठिके वलदेव अक्रूरसहित श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् पाप दूर करनवारी जो यमुना है तहां प्राप्त होतभये ३८ ता यमुना तीरमें हाथ पांव धोइ आचमन करि मीठो निर्म्मल जल पीके वगीचा में आयके वलदेव सहित रथमें बैठतभये ३९ अक्रूरजी श्रीकृष्ण वलदेव कूं रथमें बैठारि के उनते

स्वप्रस्थानेयदूत्तमः ॥ सान्त्वयामाससप्रेमैरायास्यइतिदौत्यकैः ३५ यावदालक्ष्यतेकेतुर्यावद्रेणूरथस्यच ॥ अनुप्रस्थापितात्मानोलेख्यानीवोपलक्षिताः३६ तानिराशानिववृतुर्गोविन्दविनिवर्तने ॥ विशोकाअहनीनिन्युर्गायन्त्यःप्रियचेष्टितम् ३७ भगवानपिसम्प्राप्तोरामाक्रूरयुतोनृप॥ रथेनवायुवेगेन कालिन्दीमघनाशिनीम् ३८ तत्रोपस्पृश्यपानीयं पीत्वामृष्टंमणिप्रभम् ॥ वृक्षषण्डमुपव्रज्यसरामोरथमाविशत् ३९ अक्रूरस्तावुपामन्त्र्य निवेश्यचरथोपरि ॥ कालिन्द्याह्रदमागत्यस्नानंविधिवदाचरत् ४० निमज्ज्यतस्मिन्सलिले जपन्ब्रह्मसनातनम् ॥ तावेवददृशेऽक्रूरोगमकृष्णौसमन्वितौ ४१ तौरथस्थौकथमिहसुतावानकदुन्दुभेः ॥ तर्हिस्वित्स्यन्दनेनस्तइत्युन्मज्ज्यव्यचष्टसः ४२ तत्रापिचयथापूर्वमासीनौपुनरेवसः ॥ न्यमज्जद्दर्शनंयन्मे मृषाकिंसलिलेतयोः ४३ भूयस्तत्रापिसोऽद्राक्षीत् स्तूयमानमहीश्वरम् ॥ सिद्धचारणगन्धर्वैरसुरैर्नतकन्धरैः ४४ सहस्रशिरसंदेवं सहस्रफणमौलिनम् ॥ नीलाम्बरंविसश्वेतंशृङ्गैःश्वेतमिवस्थितम् ४५ तस्योत्सङ्गेघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ पुरुषंचतुर्भुजंशान्तं पद्मपत्रारुणेक्षणम् ४६ चारुप्रसन्नवदनं चारुहासनिरीक्ष

आज्ञा मागिके यमुना के तीर पै आयके विधिपूर्व्वक स्नान करतभये ४० ता जल में गोता मारिके गायत्री को जपकरत अक्रूरजी राम कृष्ण को देखत भये ४१ वसुदेव के पुत्र रामकृष्ण रथ में बैठे हैं यहां कैसे आयगये कदाचित् रथ में से उतर तों न आये मैं निकसि के देखों तो या प्रकार अक्रूरजी कहतभये ४२ फेरि अक्रूरजी निकसि के देखें तो पहिलेकीसी नाई रथ में बैठे हैं ता समय अक्रूरजी विस्मित होतभये कि जो जलके भीतर मोकों दोनोंको दर्शन भयो सो कहा मिथ्या है ऐसे विचारि के फेरि गोता मारत भये तव सिद्ध चारण गन्धर्व्व असुर नतक सम्पूर्ण स्तुतिकरे हैं शेषजी विराजमान हैं ऐसे देखत भये ४३ । ४४ हजार हैं शिर जिनके मुकुटसहित हजार फण हैं नील वस्त्र कूं धारण करे कमल के नालकी तुल्य श्वेत है वर्ण जिनको ऐसे कैलास की तुल्य प्रकाशमान देखत भये ४५ कुण्डली करिके विराजमान तिनके ऊपर मेघों के समान श्याम पीतवस्त्रन कों धारण करे चार हैं भुजा जिनके शान्तस्वरूप पुरुष कमल के पत्ताकी तुल्य हैं अरुण नेत्र जिनके ४६ सुन्दर प्रसन्नहै मुख जिनको सुन्दर हासभरी चितवनि सुन्दर भृकुटी और नासिका सुन्दर कर्ण सुन्दर कपोल और अरुण ओष्ठ लम्बी मोटी है भुजा जिनकी विशाल हृदयमें लक्ष्मी

जिनके विराजमान गोल ग्रीवा त्रिवली जावै परिरही ऐसी सुन्दर जिनकी नाभि पीपर के पत्ता की तुल्य चिकनो उदर ४७ । ४८ बृहत् जिनकी कमर और श्रोणी ता करिके शोभायमान हैं दोनों गाठें जंघा जिनकी लम्बी हैं दोनों गुल्फ जिनकी लाल हैं नख जिनके प्रकाश करिके सुन्दर हैं कोमल अंगुली और अंगूठे तिनसूं सुन्दर है चरणकमल जिनको ४९ । ५० बहुत मोलन के जे मणि हैं तिनसों जटित जो किरीट कड़े बाजूबन्द और कमर में करधनी यज्ञोपवीत मोतिन के हार चरणन में नूपुर कानन में कुण्डल तिनसूं प्रकाशमान हैं ५१ कमल और शङ्ख चक्र गदाकूं धारण किये भृगुलता को चिह्न जाकी छाती में प्रकाशमान कौस्तुभमणिकी जिनके धुकधुकी वनमाला धारे ५२ सुनन्द नन्द जिनमें मुखिया ऐसे पार्षद सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार ब्रह्मा महादेव ते आदिलेके देवताओं के स्वामी मरीचि को आदिलैके जो नव ब्राह्मण प्रह्लाद नारद वसु जिनमें मुख्य ऐसे उत्तमभक्त हैं ते न्यारे न्यारे भावते निर्म्मल वचननते जिनकी स्तुति

णम् ॥ सुभ्रून्नसंचारुकर्णसुकपोलारुणाधरम् ४७ प्रलम्बपीवरभुजं तुङ्गांसोरःस्थलाश्रियम् ॥ कम्बुकण्ठंनिम्ननाभिं वलिमत्पल्लवोदरम् ४८ बृहत्कटितट श्रोणिकरभोरुद्वयान्वितम् ॥ चारुजानुयुगं चारु जङ्घायुगलसंयुतम् ४९ तुङ्गगुल्फारुणनखव्रातदीधितिभिर्वृतम् ॥ नवाङ्गुल्यङ्गुष्ठदलैर्विलसत्पादपङ्कजम् ५० सुमहार्हमणिव्रातकिरीटकटकाङ्गदैः ॥ कटिसूत्रब्रह्मसूत्रहारनूपुरकुण्डलैः ५१ भ्राजमानंपद्मकरं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ श्रीवत्सवक्षसम्भ्राजत्कौस्तुभंवनमालिनम् ५२ सुनन्दनन्दप्रमुखैः पार्षदैःसनकादिभिः ॥ सुरेशैर्ब्रह्मरुद्राद्यैर्नवभिश्चद्विजोत्तमैः ५३ प्रह्लादनारदवसुप्रमुखैर्भागवतोत्तमैः ॥ स्तूयमानंपृथग्भावैर्वचोभिरमलात्मभिः ५४ श्रियापुष्ट्यागिराकान्त्या कीर्त्यातुष्ट्येलयोर्ज्जया ॥ विद्ययाऽविद्ययाशक्त्या माययाचनिषेवितम् ५५ विलोक्यसुभृशंप्रीतोभक्त्यापरमयायुतः ॥ हृष्यत्तनूरुहोभावपरिक्लिन्नात्मलोचनः ५६ गिरागद्गदयाऽस्तौषीत्सत्त्वमालम्ब्यसात्वतः ॥ प्रणम्यमूर्ध्नाऽवहितःकृताञ्जलिपुटःशनैः ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥ ❁ ॥

अक्रूरउवाच ॥ नतोऽस्म्यहन्त्वाऽखिलहेतुहेतुं नारायणंपूरुषमाद्यमव्ययम् ॥ यन्नाभिजातादरविन्दकोशाद्ब्रह्माविरासीद्यतएषलोकः १ भूस्तोयम

करे हैं ५३ । ५४ श्री पुष्टि वाणी कान्ति कीर्त्ति तुष्टि इला ऊर्ज्जा विद्या अविद्या शक्ति माया ये जिनकों निरन्तर सेवन करेहैं ५५ ऐसे परिपूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके अत्यन्त प्रसन्न होयके परमभक्ति जिनकों भई आनन्द ते देह में रोमाञ्च जिनके भये भक्ति सूं नेत्रन में आंसू भरि आये ऐसे अक्रूरजी माथेसूं प्रणाम करिके सावधान होयके हाथजोरिके हौलेसे सत्त्वगुण को आश्रय लैके गद्गदवाणी सूं स्तुति करतभये ५६ । ५७ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥ * ॥ * ॥

(चत्वारिंशेततोऽक्रूरः कृष्णंमत्वेश्वरेश्वरम् ॥ प्रणम्यभक्त्यातुष्टाव सगुणागुणभेदतः १ चालीसवें अध्याय में अक्रूरजी कृष्णजी को ईश्वरों के ईश्वर मानकर सगुण और निर्गुणभेद ते भक्ति सूं प्रणामकर स्तुति करतेभये १) अब अक्रूरजी कहेहैं समस्त कारणनके कारण नारायण आदिपुरुष अविनाशी जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार करूंहूं जिनकी नाभि में भयो जो कमल तातें

ब्रह्मा होत भयो ता ब्रह्माते यह लोक उत्पन्न भयो १ पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश अहङ्कार महत्तत्त्व पुरुष मन इन्द्रिय समस्त इन्द्रियन के अर्थ विषय सम्पूर्ण देवता ये जगत् के कारण हैं ते तुम्हारे अंग ते भये हैं २ ब्रह्मा ते आदिलैके जड़ जो सम्पूर्ण तत्त्व हैं ते अपने स्वरूप कों नहीं जाने हैं जीव है सो तत्त्वन को जाने है अपने स्वरूप कों जाने है माया के गुणन ते बँधो जीव गुणन ते न्यारो ऐसो जो तुम्हारो स्वरूपहै ताहि नहीं जाने है ३ ब्रह्मा के उपासकहैं ते महापुरुष ईश्वर तुम हो तुम्हारी पूजा करेंहै इन्द्रिय पञ्चभूत देवता इनके साक्षी अन्तर्य्यामी जो तुमहो तिन की साधु पूजा करे हैं ४ कोई एक कर्म्मन में निष्ठा जिनकी ऐसे जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य है ते ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद हैं तिनसों यज्ञन को विस्तार करिके अनेक हैं रूप जिनके ऐसे देवतान को नाम लैलै के पूजनकरे हैं ५ कोई एक ज्ञानी पुरुष समस्तकर्म्मनको त्यागिके समाधि में आय के ज्ञानरूप जो तुमहो तिनको पूजन करे है ६ और जे पुरुष है ते विष्णुकी दीक्षा लैके तुमहीं हो

ग्निःपवनःखमादिर्महानजादिर्मनइन्द्रियाणि ॥ सर्वेन्द्रियार्थाविबुधाश्चसर्व्वेयेहेतवस्तेजगतोऽङ्गभूताः २ नैतेस्वरूपंविदुरात्मनस्ते ह्यजादयोऽनात्मतया गृहीताः ॥ अजोऽनुबद्धःसगुणैरजायागुणात्परंवेदनतेस्वरूपम् ३ त्वांयोगिनोयजन्त्यद्धा महापुरुषमीश्वरम् ॥ साध्यात्मंसाधिभूतञ्चसाधिदैवञ्चमाधवः ४ त्रय्याचविद्ययाकेचित्त्वां वैतैतानिकाद्विजाः ॥ यजन्तेविततैर्यज्ञैर्नानारूपामराख्यया ५ एकेत्वाऽखिलकर्म्माणिसंन्यस्योपशमंगताः ॥ ज्ञानिनोज्ञानयज्ञेनयजन्तिज्ञानविग्रहम् ६ अन्येचसंस्कृतात्मानोविधिनाऽभिहितेनते ॥ यजन्तित्वन्मयास्त्वांवै बहुमूर्त्त्येकमूर्त्तिकम् ७ त्वामेवान्येशिवोक्तेन मार्गेणशिवरूपिणम् ॥ बह्वाचार्यविभेदेनभगवन्समुपासते ८ सर्व्वएवयजन्तित्वां सर्वदेवमयेश्वरम् ॥ येऽप्यन्यदेवताभक्तायद्यप्यन्यधियःप्रभो ९ यथाद्रिप्रभवानद्यः पर्जन्यापूरिताःप्रभो ॥ विशन्तिसर्व्वतःसिन्धुं तद्वत्त्वांगतयोऽन्ततः १० सत्त्वंरजस्तमइति भवतःप्रकृतेर्गुणाः ॥ तेषुहिप्राकृताःप्रोता आब्रह्मस्थावरादयः ११ तुभ्यंनमस्तेऽस्त्वविषक्तदृष्टये सर्व्वात्मनेसर्व्वधियाञ्चसाक्षिणे ॥ गुणप्रवाहोऽयमविद्ययाकृतः प्रवर्त्ततेदेवनृतिर्यगात्मसु १२ अ

एक मुख्य ऐसे वैष्णव हैं ते तुमने कही जो नारदपञ्चरात्र में पूजाकी विधि है तासूं वासुदेव सङ्कर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध इन भेदनकरिके बहुत जिनके रूप नारायण रूप करिके एक जिनको रूप ऐसे तुमहो तिनकी पूजा करैंहैं ७ और जे पुरुष हैं शिवने कह्यो जो मार्गहै तासूं शिवरूप जो तुमहो तिनकी हे भगवन्! अनेक प्रकारके हैं भेद जाके ऐसो शैवमार्ग पाशुपतमार्ग है ता करिके उपासना करे हैं ८ हे सर्वदेवतारूप! हे समर्थ! जे पुरुष और देवतान के भक्त हैं और देवतान में उनके मन लगि रहे हैं वे सबही ईश्वर तुमहौ तिनकी पूजाकरे हैं ९ हे प्रभो! जैसे पर्व्वतन ते निकसी मेघ ने जलसूं पूर्णकरी ऐसी नदी चारों ओर ते बहि बहिके समुद्र में जा मिली हैं तैसे सब देवतान के मार्ग अन्तमें तुमही में आय मिले हैं १० तुम्हारी जो प्रकृति माया ताके सत्त्व रज तम ये तीनों गुणहैं तिन तीनों गुणनमें तृण ते आदिलैके ब्रह्मापर्यन्त सब जीव प्रविष्ट भये हैं अर्थात् तीनों गुणन में रहे हैं वे गुण मायामें रहे हैं या क्रमते जो उपाधि को नाशहै ताते सब जीव तुमही में प्रवेश करे हैं ११ संसार में नहीं लिप्त है बुद्धि जिनकी सब के आत्मा सब प्राणीन के बुद्धि के साक्षी तुमहो तिनको नमस्कार है अविद्याको भयो गुण को प्रभाव संसार देवता मनुष्य पशु पक्षी

ये देह जिनकी ऐसे प्राणी हैं तिनमें संसार वर्ते है १२ अग्नि तुम्हारो मुखहै पृथ्वी तुम्हारो चरणहै सूर्य्य नेत्र आकाश नाभि दिशा कानहैं स्वर्ग मस्तकहै देवता तुम्हारी भुजाहैं और समुद्र कोंग्वि हैं पवन प्राणरूप बलरूप कल्पना करो १३ वृक्ष ओषधि देह के रोमहैं मेघ तुम्हारे केशहैं पर्वत तुम्हारे हाड़ और नखहैं रात्रि दिन पलकनको खोलिवो मूंदिवो है प्रजापति तुम्हारो मेढ्रहै वर्षा तुम्हारो वीर्य्य कहे हैं १४ तुम जो अविनाशी पुरुषहो तिनमें पालन सहित लोकहैं ते रचे हैं बहुत जीवन करिके व्याप्त हैं जैसे जलमें छोटे छोटे कीड़ा चले हैं गूलर में भुनगा उड़े हैं ऐसे मनकी वृत्ति ते जानिवे में आवो जो तुमहो तिनमें अनन्त ब्रह्माण्ड फिरे हैं १५ या संसार में खेलिवे के लिये जो जो रूप धरे हैं तिनसों दूरभये हैं शोक जिनके ऐसे लोकहैं ते आनन्दसूं तुम्हारे यशको गावे हैं १६ सत्यव्रत को माया दिखायवे के लिये मत्स्यरूप धरिके प्रलय के समुद्र में विचरे जो तुमहौ तिनकों नमस्कार है मधुकैटभ दैत्यनको मारिवे के लिये हयग्रीव रूप जिनने धस्यो ऐसे

ग्निर्मुखन्तेऽवनिरङ्घ्रिरीक्षणं सूर्य्योनभोनाभिरथोदिशःश्रुतिः ॥ द्यौःकंसुरेन्द्रास्तवबाहवोऽर्णवाः कुक्षिर्मरुत्प्राणबलंप्रकल्पितम् १२ रोमाणिवृक्षौषधयःशिरोरुहामेघाःपरस्यास्थिनखानितेऽद्रयः ॥ निमेषणंराज्यहनीप्रजापतिर्मेढ्रस्तुवृष्टिस्तववीर्य्यमिष्यते १४ त्वय्यव्ययात्मन्पुरुषेप्रकल्पितालोकाःसपालाबहुजीवसंकुलाः ॥ यथाजलेसंजिहतेजलौकसोऽप्युदुम्बरेवामशकामनोमये १५यानियानीहरूपाणिक्रीडनार्थंबिभर्षिहि ॥ तैरामृष्टशुचोलोकामुदागायन्तितेयशः १६ नमःकारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचरायच ॥ हयशीर्ष्णेनमस्तुभ्यंमधुकैटभमृत्यवे १७ अकूपारायबृहते नमोमन्दरधारिणे ॥ क्षित्युद्धारविहाराय नमःशूकरमूर्त्तये १८ नमस्तेऽद्भुतसिंहायसाधुलोकभयापह ॥ वामनायनमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनायच १९ नमोभृगूणांपतये दृप्तक्षत्रवनच्छिदे ॥ नमस्तेरघुवर्य्याय रावणान्तकरायच २० नमस्तेवासुदेवायनमःसङ्कर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतांपतयेनमः २१ नमोबुद्धायशुद्धायदैत्यदानवमोहिने ॥ म्लेच्छप्रायक्षत्रहन्त्रेनमस्तेकल्किरूपिणे २२ भगवञ्जीवलोकोऽयंमोहितस्तवमायया ॥ अहंममेत्यसद्ग्राहो भ्राम्यतेकर्म्मवर्त्मसु २३ अहं

जो तुमहौ तिनकों नमस्कार है १७ मन्दराचल पर्वत के धारण करनवारे बड़े कच्छपरूप तुमहो तिनकूं नमस्कार है पृथ्वी के लायवे के लिये वराहरूप जिनने धस्यो ऐसे जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है १८ साधुन के भयके दूर करनवारे अद्भुत नृसिंहरूप जिनने धरयो ऐसे जो तुमहो तिन कूं नमस्कार है वामन होयकै तीनों लोक जिनने नापे ऐसे जो तुमहौ तिनें नमस्कार है १९ गर्वीलो जो क्षत्रियरूप वन है ताके काटनवारे भृगुवंशीन के पति परशुरामरूप तुम हो तिनकों नमस्कार है रावण के मारनवारे रघुवंशीन में श्रेष्ठ रामचन्द्ररूप तुम हो तिनकों नमस्कार है २० यादवों के पति वासुदेवरूप तुम हो तिनें नमस्कार है सङ्कर्षणरूप तुम हो तिनें नमस्कार है प्रद्युम्नरूप तुमहो तिनें नमस्कार है अनिरुद्धरूप तुमहो तिनें नमस्कार है २१ दैत्य दानवन के मोहन करनवारे शुद्ध बुद्धरूप जो तुम हो तिनें नमस्कार है म्लेच्छ क्षत्रिय होय जाय हैं तिनें मारोगे ऐसे कल्कीरूप तुमहो तिनें नमस्कार है २२ हे भगवन्! यह जीव तुम्हारी मायामें भूलि रह्योहै मैं मेरो

ऐसे देह गेहादिक में और कर्म्ममार्गन में भ्रमणकरे है २३ हे विभो ! आत्मा कहिये देह पुत्र घर स्त्री धन भय्या वन्धु इत्यादिक जो स्वप्नकी तुल्य तिनकों सत्य मानिके भ्रमोहूं २४ अनित्य आत्मा दुःखरूपहैं तिनकूं नित्य आत्मा सुखरूप जानूं हूं सुख दुःख में है क्रीडा जाके अज्ञान जामें भरो ऐसो जो मैं हूं सो अपने प्यारे जो तुमहो तिनको नहीं जानूं हूं २५ जैसे अज्ञानी पुरुष काहूसों ढंक्यो जलहै ताकों छोडि के सूर्य्य की किरणन सों वारू चमके तामें जलके लिये जायहै तैसे माया सू ढँके तुम हो तिनको त्यागिके देहादिकन में लगि रह्यो है २६ कृपणहै बुद्धि जाकी अर्थात् विषयन में लगिरही है बुद्धि जाकी ऐसो मैं कामकर्म्मन सूं चलायमान मन है ताके रोकिने में नहीं समर्थ हौं जोरावर इन्द्रिय मन कूं इत उत चलायमान करे हैं २७ जो मैं पराधीन हौं सो तुम्हारे चरणन की शरण आयो हौं तुम्हारे चरणन की शरणागत असाधुन को दुर्लभ है हे अन्तर्यामी ! तुम्हारे चरणन की शरण तुम्हारी कृपाते भयो है यह मैं मानूं हूं पुरुषको जब संसार छूटनहार होय है तब हे कमलनाभ ! साधुन की सेवा करे है साधुन की सेवा ते तुम में आयके मति लगे है तुम्हारी कृपा विना साधुनकी सेवा भी नहीं बने है तुम में मतिहू नहीं लगिसकेहै २८ विज्ञानहै

चात्मात्मजागारदारार्थस्वजनादिषु ॥ भ्रमामिस्वप्नकल्पेषु मूढःसत्यधियाविभो २४ अनित्यानात्मदुःखेषु विपर्य्ययमतिर्ह्यहम् ॥ द्वन्द्वारामस्तमोविष्टोन जानेत्वात्मनःप्रियम् २५ यथाऽबुधोजलंहित्वा प्रतिच्छन्नंतदुद्भवैः ॥ अभ्येतिमृगतृष्णां वै तद्वत्त्वाऽहंपराङ्मुखः २६ नोत्सहेऽहंकृपणधीः कामकर्म्महतंमनः ॥ रोद्धुंप्रमाथिभिश्चाक्षैर्ह्रियमाणमितस्ततः २७ सोऽहंतवाङ्घ्र्युपगतोऽस्म्यसतांदुरापं तच्चाप्यहंभवदनुग्रहईशमन्ये ॥ पुंसोभवेद्यर्हिसंसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभसदुपासनयामतिःस्यात् २८ नमोविज्ञानमात्राय सर्व्वप्रत्ययहेतवे ॥ पुरुषेशप्रधानायब्रह्मणेऽनन्तशक्तये २९ नमस्तेवासुदेवाय सर्व्वभूतक्षयायच ॥ हृषीकेशनमस्तुभ्यं प्रपन्नंपाहिमांप्रभो ३० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरस्तुतिर्नामचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ स्तुवतस्तस्यभगवान् दर्शयित्वाजलेवपुः ॥ भूयःसमाहरत्कृष्णोनटोनाट्यमिवात्मनः १ सोऽपिचान्तर्हितंवीक्ष्य जलादुन्मज्ज्य

मूर्त्ति जिनकी समस्त ज्ञानके कारण पुरुष काल माया इनरूप ब्रह्म जो तुमहो और अनन्त जिनकी शक्ति तिनकों मैं नमस्कारकरूंहूं २९ हे समर्थ ! हे इन्द्रियनके प्रेरण वारे चित्तके अधिष्ठाता ! सब प्राणीन के आश्रय जो तुमहो तिनकूं मैं नमस्कार करों हूं और शरण आयो जो मैंहूं ताकी रक्षाकरो ३० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरस्तुतिर्नामचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥

(एकचत्वारिंशकेऽहन्रजकंप्रविशन्पुरीम् ॥ ततोवरानदात्तुष्टःसुदाम्नोवायकस्यच १ सशङ्कमक्रूरमनःप्रबोद्ध्यस्वधामसन्दर्शनसत्कृपातः ॥ स्वराजधानींमथुरामपश्यदलंकृतानन्तमहोत्सवाढ्याम् २)

इकतालीसवें अध्याय में कृष्णजी मथुरापुरी में प्रवेशकर धोबी को मारकर सुदामा माली को प्रसन्नहोकर वर देतेभये १ और शङ्कासमेत अक्रूरजी के मन को समझाकर अपने धामके दर्शन की अच्छी दयासूं अलंकृत अपार भारी उत्सवों सों युक्त अपनी राजधानी मथुराजीको देखतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! स्तुतिकरें जो अक्रूरहै तिनको भगवान् जलके भीतर रूप दिखायके फेर समेटतभये जैसे नट अपने स्वांगको दिखायके समेटे है १ अक्रूरजी श्रीकृष्णचन्द्रको जलमें ते अन्तर्द्धान भये देखिके उछरि के जल्दी देसी सम्पूर्ण सन्ध्योपासन करिके आ-

श्चर्य मानि के रथ में आवत भये २ श्रीकृष्ण अक्रूरजी सूं पूछत भये पृथ्वी में आकाशमें जलमें तुमने आश्चर्य्य सों कहा देख्यो है कछु आश्चर्य्य देखो होय ऐसे मोहिं देखौ हौ ३ या संसार में पृथ्वी में आकाश में जलमें आश्चर्य्य हैं ते सब आश्चर्य्य विश्वरूप तुम हौ तिन में भरे हैं तुम्हारो दर्शन करो मैंने कहा आश्चर्य्य नहीं देख्यो या प्रकार अक्रूरजी कहतभये ४ तो तुम में सब आश्चर्य्य भरे है तिन तुम्हारो दर्शन मैंने कियो हे ब्रह्मन्! पृथ्वीमें आकाश में या जलमें कहा आश्चर्य्य देखिवो बाकी रह्यो है ५ ऐसे कहि के गान्दिनी के पुत्र अक्रूरजी रथको हाँकत भये तीसरे पहर के समय रामकृष्ण कूं मथुरापुरी में लावत भये ६ हे राजन् परीक्षित्! मार्ग में ग्राम के रहनवारे पुरुष तहाँ तहाँ आय के वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण बलदेव कों देखि के प्रसन्न होय के वा रूप में दृष्टि लगाय के नहीं निकासत भये अर्थात् देखतही ठाढे रहि गये ७ तब ताई नन्द गोप सू आदि लेके सब व्रजवासी आगे आयके मथुराके बागमें कृष्ण बलदेवके आयवे को पैंडो देखत ठाढे होत

सत्वरः ॥ कृत्वाचावश्यकंसर्वं विस्मितोरथमागमत् २ तमपृच्छद्धृषीकेशःकिन्तेदृष्टमिवाद्भुतम् ॥ भूमौवियतितोयेवा तथात्वांलक्षयामहे ३ अक्रूरउवाच ॥ अद्भुतानीहयावन्ति भूमौवियतिवाजले ॥ त्वयिविश्वात्मकेतानि किम्मेऽदृष्टंविपश्यतः ४ यत्राद्भुतानिसर्व्वाणि भूमौवियतिवाजले ॥ तंत्वाऽनुपश्यतोब्रह्मन् किम्मेदृष्टमिहाद्भुतम् ५ इत्युक्त्वाचोदयामास स्यन्दनंगान्दिनीसुतः ॥ मथुरामनयद्रामं कृष्णञ्चैवदिनात्यये ६ मार्गेग्रामजनाराजंस्तत्रतत्रोपसङ्गताः ॥ वसुदेवसुतौवीक्ष्य प्रीतादृष्टिंनचाददुः ७ तावद्व्रजौकसस्तत्रनन्दगोपादयोऽग्रतः ॥ पुरोपवनमासाद्य प्रतीक्षन्तोऽवतस्थिरे ८ तान्समेत्याहभगवानक्रूरंजगदीश्वरः ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रश्रितंप्रहसन्निव ९ भवान्प्रविशतामग्रे सहयानःपुरींगृहम् ॥ वयंत्विहावमुच्याथ ततोद्रक्ष्यामहे पुरीम् १० अक्रूरउवाच ॥ नाहंभवद्भ्यांरहितः प्रवेक्ष्येमथुरांप्रभो ॥ त्यक्तुन्नार्हसिमांनाथ भक्तंनेभक्तवत्सल ११ आगच्छयामगेहान्नः सनाथान्कुर्वधोक्षज ॥ सहाग्रजःसगोपालैः सुहृद्भिश्चसुहृत्तमः १२ पुनीहिपादरजसा गृहान्नोगृहमेधिनाम् ॥ यच्छौचेनानुतृप्यन्ति पितरःसाग्नयःसुराः १३ अवनिज्याङ्घ्रियुगलमासीच्छ्लोक्योबलिर्महान् ॥ ऐश्वर्यमतुलंलेभे गतिंचैकान्तिनांतुया १४ आपस्तेऽङ्घ्र्यवनेजन्यस्त्रींल्लोकाञ्छुचयोऽपुनन् ॥ शिरसाधत्तयाःशर्वः

भये ८ जगत्के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तिन व्रजवासीनके पास आयके नम्र जे अक्रूर हैं तिनको हाथ ते हाथ पकरि मुसिकात से बोलत भये ९ हे काका! तुम आगे रथ कूं लिवाय पुरी में जावो अपने घर जावो हम यहाँ तनिक विश्राम लैके पीछे मथुरापुरी कूं देखेंगे या प्रकार श्रीकृष्ण भगवान् कहतभये १० अब अक्रूरजी कहे हैं हे प्रभो! तुम विना अकेलो मथुरापुरीमें न जाऊंगो हे नाथ! हे भक्तन के ऊपर हित के करनवारे! तुम्हारो भक्त हूं ताय त्यागो मति ११ तुम आवो हम तुम घरचलें हे अधोक्षज! हे सुहृदन में उत्तम! अपने बलदेव भय्यासहित और ग्वालबालन सहित हमारे घर चलिके हमें सनाथकरो १२ तुम चरणनकी रज सूं हम गृहस्थन के घरकूं पवित्रकरो तुम्हारो चरणन को धोवन तासू पितृ अग्नि देवता तृप्त होयहैं १३ तुम्हारो चरण युगल धोइके राजा बलि को बड़ो पवित्र यश होतभयो बड़े ऐश्वर्य्य कों प्राप्तभयो अनन्यभक्तनको जो गति मिलै है ताय पावतभयो १४ तुम्हारे चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गारूप होयके

त्रिलोकी कूं पवित्र करे हैं जिन जलन कूं शिवजी अपने शिरपै धारण करे हैं जिन जलन के स्पर्शते साठि हजार राजा सगरके पुत्र स्वर्ग कूं गये १५। १६ अब श्रीकृष्ण भगवान् बोले बड़े भय्या बलदेवजी कों संग लैके मैं तुम्हारे घर आऊंगो यादवन सों द्रोह करे जो कंसहै ताय मारिके सुहृदनको प्रिय विस्तार करूंगो १७ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण को वचन कह्यो सुनिके अक्रूरजी विमन होयके पुरी में जायके रामकृष्ण कूं लेआयो ऐसे कंस ते कहिके अपने घर कूं जातभये १८ या पीछे तीसरे पहर के समय बलदेव भय्या सहित भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपन कूं सङ्गलैके देखिवे के लिये मथुरापुरी में जातभये १९ अब मथुरापुरी को कृष्ण ने देख्यो ताकों वर्णन करे हैं स्फटिकमणिन के ऊंचे शहरपनाह के और घरन के द्वार बनेहैं तिनमें बड़े बड़े सोने के किंवार चढ़े हैं और वन्दनवार बंधे हैं तांबेके पीतरके अन्न भरिवे के कोठे बने हैं चारोंओर चौड़ी खाई बनी है उद्यान दूरिके बाग रमणीय निकट के बाग तिनसों अतिशोभायमान पुरीहै २० सुवर्णके चौर-

स्वर्याताःसगरात्मजाः १५ देवदेवजगन्नाथ पुण्यश्रवणकीर्तन ॥ यदूत्तमोत्तमश्लोक नारायणनमोऽस्तुते १६ श्रीभगवानुवाच ॥ आयास्येभवतोगेहमहमार्य्यसमन्वितः ॥ यदुचक्रद्रुहंहत्वा वितरिष्येसुहृत्प्रियम् १७ श्रीशुकउवाच ॥ एवमुक्तो भगवता सोऽक्रूरोविमनाइव ॥ पुरींप्रविष्टःकंसायकर्मावेद्यगृहंययौ १८ अथापराह्णेभगवान् कृष्णःसङ्कर्षणान्वितः ॥ मथुरांप्राविशद्गोपैर्दिदृक्षुःपरिवारितः १९ ददर्शतांस्फाटिकतुङ्गगोपुरद्वारांबृहद्धेमकपाटतोरणाम् ॥ ताम्रारकोष्ठांपरिखादुरासदामुद्यानरम्योपवनोपशोभिताम् २० सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कुटैः श्रेणीसभाभिर्भवनैरुपस्कृताम् ॥ वैडूर्य्यवज्रामलनीलविद्रुमैर्मुक्ताहरिद्भिर्वलभीषुवेदिषु २१ जुष्टेषुजालामुखरन्ध्रकुट्टिमेष्वाविष्टपारावतबर्हिनादिताम् ॥ संसिक्तरथ्यापणमार्गचत्वरां प्रकीर्णमाल्याङ्कुरलाजतण्डुलाम् २२ आपूर्णकुम्भैर्दधिचन्दनोक्षितैः प्रसूनदीपावलिभिःसपल्लवैः ॥ सवृन्दरम्भाक्रमुकैःसकेतुभिःस्वलंकृतद्वारगृहांसपट्टिकैः २३ तांसंप्रविष्टौवसुदेवनन्दनौ वृतौवयस्यैर्नरदेववर्त्मना ॥ द्रष्टुंसमीयुस्त्वरिताःपुरस्त्रियोहर्म्याणिचैवारुरुहुर्नृपोत्सुकाः २४ काश्चिद्विपर्य्यग्धृतवस्त्रभूषणाविस्मृत्यचैकंयुगलेष्व

स्ता और माहूकारानके महल और बड़ेबड़े कारीगर मनुष्यन के मकान तिन करिके शोभायमान पुरी है वैडूर्यमणि हीरा निर्म्मल नीलमणि मूंगा मोती पन्ना इनके काम जिन में भये महलन के छज्जे हैं २१ जाली झरोखान में बैठे परेवा मोर जहां बोले हैं तिनको शोर होयरह्यो है छिरकाव जिनमें भये ऐसे राजमार्ग चौराहे गली जामें बने हैं तिनमें पुष्पनकी माला अंकुर धानकी खीलें चावल ये मंगलद्रव्य फैलि रहे हैं २२ दही चन्दनसूं छिरके फूल जिनपै धरे ऊपर दीवानकी पंक्ति धरी आमकी डार जिनपै धरी ध्वजा जिनमें फहराय दरियाई के कपड़ा जिनकी नारि सों बंधे गुच्छों सहित केरा के वृक्ष सुपारी के वृक्ष जिनके पास लगे ऐसे जल के भरे कलश द्वारेन के ऊपर धरे ऐसी शोभायमान पुरीहै २३ बराबर के मित्रन कू संगलैके मथुरापुरी के बीच बाजार में होयके निकसे जे वसुदेवके पुत्र श्रीकृष्ण बलदेवहैं तिनके देखिवे कों पुर की स्त्री दौरि दौरिके आवति भई हे राजन् परीक्षित्! देखिवे की इच्छा भई जिनकों वे स्त्री महलन पै चढ़तिभई २४ कोई

स्त्री उतावल के मारे ओढनीन कों पहिर के लहँगान कों ओढिके हाथन के गहने पांवन में पहिरके आवत भई कोई एक स्त्री एक हाथ में एक पांव में गहनो पहिर के आवतभई कोई एक स्त्री एक कानमें करनफूल पहिरके एक पाव में पाइजेव पहिरके आवत भई और स्त्री एकही आखिमें काजल लगायके आवतभई २५ कोई एक स्त्री भोजन करेंहीं ताकूं छोड़िके आवतभई कहूँ व्याहहोयरहो होजब कृष्ण बलदेव आये सुने तब देखिवेकों दूल्हो आपको भाज्यो दुलहिन आपकों भाजी बराती आपकों भाजे और कोई स्त्री आगनमें तेल लगावेंहीं वे बिना स्नान करेंही आवतिभई कोई सोवत सूं उठिके आवति भई कोई स्त्री अपने वालकन कों दूध प्यावेंहीं कृष्ण बलदेव आये सुने तब उनको रोवते छोड़िके आवत भई मानों बालक या लिये रोवें हैं तुम तो दर्शनकरिवे कों चली हमें क्यों छोड़े जाउहो हमकों हूं लेचलो २६ मतवारे हाथीकीतुल्य पराक्रम जिनको ऐसे कमलदललोचन श्रीकृष्णचन्द्र ढिठाई लीलापूर्व्वक हँसनि चितवनि सू तिन स्त्रीनके मन चुरावतभये लक्ष्मीको रमावें

थापराः ॥ कृतैकपत्रश्रवणैकनूपुरानाङ्क्त्वाद्वितीयंत्वपराश्चलोचनम् २५ अश्नन्त्यएकास्तदपास्यसोत्सवा अभ्यज्यमानाअकृतोपमज्जनाः ॥ स्वपन्त्यउत्थायनिशम्यनिःस्वनं प्रपाययन्त्योऽभमपोह्यमातरः २६ मनांसितासामरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितावलोकनैः ॥ जहारमत्तद्विरदेन्द्रविक्रमो दृशांददच्छ्रीरमणात्मनोत्सवम् २७ दृष्ट्वामुहुःश्रुतमनुद्रुतचेतसस्तं तत्प्रेक्षणोत्स्मितसुधोक्षणलब्धमानाः ॥ आनन्दमूर्त्तिमुपगुह्यदृशात्मलब्धं हृष्यत्त्वचोजहुरनन्तमरिन्दमाधिम् २८ प्रासादशिखरारूढाः प्रीत्युत्फुल्लमुखाम्बुजाः ॥ अभ्यवर्षन्सौमनस्यैःप्रमदाबलकेशवौ २९ दध्यक्षतैःसोदपात्रैः स्रग्गन्धैरभ्युपायनैः ॥ तावानर्चुःप्रमुदितास्तत्रतत्रद्विजातयः ३० ऊचुःपौराअहोगोप्यस्तपःकिमचरन्महत् ॥ याह्येतावनुपश्यन्ति नरलोकमहोत्सवौ ३१ रजकंकञ्चिदायातं रङ्गकारंगदाग्रजः ॥ दृष्ट्वाऽयाचतवासांसि धौतान्यत्युत्तमानिच ३२ देह्यावयोःसमुचितान्यङ्गवासांसिचार्हतोः ॥ भविष्यतिपरंश्रेयोदातुस्तेनात्रसंशयः ३३ सयाचितोभगवता परिपूर्णेनसर्वतः ॥ साक्षेपंरुपितःप्राहभृत्योराज्ञःसुदुर्मदः ३४ ईदृशान्येववासांसि नित्यंगिरिवनेचराः ॥ परिधत्त

ऐसो अपनो रूप है तासूं तिन स्त्रीनकी आखिनकों आनन्द देत भये २७ वेर वेर बातें सुनिके ता श्रीकृष्णमें लगे हैं चित्त जिनके और तिनकी चितवनि मुसिकानिरूपी अमृतको जो सींचिवो है तासों पायो है सत्कार जिनने रोमाञ्च जिनके होय आये ऐसी स्त्री श्रीकृष्णकों देखिके नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके आनन्दरूप श्रीकृष्ण को आलिङ्गन करिके हे काम लोभादिकन को दण्ड देनवारे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण के बिना मिले तें भई जो कामदेव की पीड़ा है ताकों त्यागत भई २८ महलन की शिखर पै चढ़ी प्रसन्नता सों प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री बलदेव श्रीकृष्ण के ऊपर फूल वर्षावत भईं २९ दही अक्षत जलके भरे पात्र माला चन्दन भेंट लैके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य प्रसन्न होय के कृष्ण बलदेव कूं पूजन करत भये ३० समस्त मथुरावासी आश्चर्य मानि के यह कहत भये गोपीन ने कहा उत्कृष्ट तप कियो है जे गोपी मनुष्यलोक कों बड़े उत्सवरूप श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकूं देखे हैं ३१ वस्त्रन को धोवनवारो और रंगनवारो ऐसो एक धोबी मार्ग में सम्मुख आवतो देखिके ताके धुये अतिउत्तम जे वस्त्र हैं तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र मांगत भये ३२ हे धोबी! पात्र हम हैं तिनके योग्य जे वस्त्र हैं तिनें तू दे तो दाता को अभी कल्याण होयगो यामें

सन्देह नहीं है ३३ सब ओरते परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धोवी ते वस्त्र माँगे तब कंस को टहलुआ बड़ो जाके गर्व्व वह धोवी क्रोध करिके डाटि के बोलत भयो ३४ नित्य पर्वतन के वन के फिरनवारे ऐसेही कपड़ा पहिरनवारे हौ हे उद्धतो ! राजा के वस्त्रन पै क्यों मन चलावो हौ ३५ हे मूर्खो ! तुम यहाँ ते शीघ्रही निकसि जावो जो अपनो जीवन चाहौ तो ऐसे फेरि मति माँगियो राजा कंस के प्यादे बहुत फिरे हैं जो धूम करे है ताहि बाँधे हैं मारे हैं लूटे हैं तुम तो ये वस्त्र माँगो हौ मोहिं यह दीखे है कि तुम्हारेऊ कोई उतारि लेइगो ३६ या प्रकार बकै जो धोवी है ताके शिर कों देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र कोप करिके अपने हाथ के थाप सूं काटत भये ३७ जब मुख्य धोवी मारो गयो तब वाके टहलुवा धोवी हैं ते वस्त्रनकी पोट पटकि पटकि के चारोंओरको भाजतभये ता समय श्रीकृष्ण तथा बलदेव जी अपने प्यारे वस्त्र हैं तिनकों पहिर के बाकी जे रहे ते गोपनकों देत भये और जे रहे ते वहा ही छोड़त भये ३८।३९ वस्त्र पहिर के चले ताके पीछे प्रसन्न

किमुद्वृत्तारातजद्रव्याण्यभीप्सथ ३५ यातआशुबालिशामैवं प्रार्थ्यंयदिजिजीविषा ॥ वध्नन्तिघ्नन्तिलुम्पन्ति दृप्तंराजकुलानिवै ३६ एवंविकत्थमानस्य कुपितोदेवकीसुतः ॥ रजकस्यकराग्रेण शिरःकायादपातयत् ३७ तस्यानुजीविनःसर्वे वासःकोशान्विसृज्यवै ॥ दुद्रुवुःसर्वतोमार्गं वासांसिजगृहेऽच्युतः ३८ वसित्वात्मप्रियेवस्त्रे कृष्णःसङ्कर्षणस्तथा ॥ शेषाण्यादत्तगोपेभ्योविसृज्यभुविकानिचित् ३९ ततस्तुवायकःप्रीतस्तयोर्वेषमकल्पयत् ॥ विचित्रवर्णैश्चैलेयैराकल्पैरनुरूपतः ४० नानालक्षणवेषाभ्यां कृष्णरामौविरेजतुः ॥ स्वलंकृतौबालगजौपर्वणीवसितेतरौ ४१ तस्यप्रसन्नोभगवान् प्रादात्सारूप्यमात्मनः ॥ श्रियंचपरमांलोकेबलैश्वर्यस्मृतीन्द्रियम् ४२ ततःसुदाम्नोभवनंमालाकारस्यजग्मतुः ॥ तौदृष्ट्वासमुत्थाय ननामशिरसाभुवि ४३ तयोरासनमानीय पाद्यञ्चार्घ्यार्हणादिभिः ॥ पूजांसानुगयोश्चक्रे स्रक्ताम्बूलानुलेपनैः ४४ प्राहनःसार्थकंजन्म पावितंचकुलंप्रभो ॥ पितृदेवर्षयोमह्यं तुष्टाह्यागमनेनवाम् ४५ भवन्तौकिलविश्वस्य जगतःकारणंपरम् ॥ अवतीर्णाविहांशेनक्षेमायचभवायच ४६ नहिवांविषमादृष्टिः सुहृदोर्जगदात्मनोः ॥

जो दर्जी है सो तिन राम कृष्ण को लाल हरे पीरे रंग के जे वस्त्र हैं तिनके माला चम्पकली बाजूबन्द अनेक प्रकार के आभूषण बनाय,के शोभा करत भयो ४० कृष्ण बलदेव दोनों भय्या अनेक प्रकार के दर्जी ने बनाये जे वस्त्रन के आभूषण तिन सों शोभायमान लगे हैं जैसे पर्व्व में सामरे गोरे शृङ्गारकिये हाथी के छोना सुन्दर लगे हैं ४१ ता दर्जी के ऊपर प्रसन्न भये जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपनी बराबर को रूपताय देत भये या लोक में सम्पत्ति देत भये बल ऐश्वर्य्य स्मरण और हाथ पाँव नाक कान आँखि जे अच्छे बने रहैं इनकी चतुराई देतभये ४२ ताके पाछे सुदामा माली के घर कृष्ण बलदेव जातभये तिन कों देखिके धरती में शिर लगाय प्रणाम करत भयो ४३ तिन कृष्ण बलदेव कों आसन बिछाय के बैठावत भयो और पाद्य अर्घ इत्यादिक पूजा की सामग्रीन सूं पूजा करत भयो माला पान की बीरी चन्दन इत्यादिक अर्पण करत भयो ४४ माली कहत भयो हे प्रभो ! तुम्हारे आइवे सूं हमारो जन्म सार्थक भयो कुल पवित्रभयो और हमारे पितर देवता ऋषि सन्तुष्ट भये ४५ तुम निश्चय या ससार के परमकारण हो जगत् के कल्याण के निमित्त और वृद्धि के लिये अंश करिके अवतार लिये हौ ४६ जगत् के हितकारी आत्मा तु-

मईं हो तुम्हारे विपमदृष्टि नहीं है सव भाणीन में सम वर्तोहौ भजन करनवारेनकों भजो हो ४७ तुममो भृत्यको आज्ञा करो मैं तुम्हारी कहा पूजा करों पुरुषकों जो तुम्हारो दर्शन होइ यह वड़ो अनुग्रहहै ४८ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार जानि के प्रसन्नहै मन जाको ऐसो सुदामा माली सुन्दर सुगन्धिन के फूलन की वनी जो माला हैं तिनैं निवेदन करत भयो ४९ ते माला पहिरके मित्रन सहित सुन्दर लगैं प्रसन्न भये जे वर के देनवारे राम कृष्ण हैं ते शरण आयो जो सुदामा है ताकूं वर देत भये ५० सुदामा मालीभी सब के आत्मा श्रीकृष्ण हैं तिनमें टारी न टरे ऐसी भक्ति माँगत भयो भगवान् के भक्तन में स्नेह रहै और जीवमात्र में दया रहै यह वर माँगत भयो ५१ ता माली को यही वर दैके और ताके वंश में सर्व्वदा रही आवै ऐसी सम्पत्ति दैके बल आयु यश शोभा दैके बलदेवजी कों संग लैके ताके घरते निकसत भये ५२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेपुरप्रवेशोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ * ॥

समयोःसर्वभूतेषु भजन्तंभजतोरपि ४७ तावाज्ञापयतंभृत्यं किमहंकरवाणिवाम् ॥ पुंसोऽत्यनुग्रहोह्येष भवद्भिर्यन्नियुज्यते ४८ इत्यभिप्रेत्यराजेन्द्र सुदामाप्रीतमानसः ॥ शस्तैःसुगन्धैःकुसुमैर्मालांविरचितांददौ ४९ ताभिःस्वलंकृतौप्रीतौ कृष्णरामौसहानुगौ ॥ प्रणतायप्रपन्नाय ददतुर्वरदौवरान् ५० सोऽपिवव्रेऽचलांभक्तिं तस्मिन्नेवाखिलात्मनि ॥ तद्भक्तेषुचसौहार्दं भूतेषुचदयांपराम् ५१ इतितस्मैवरंदत्त्वा श्रियंचान्वयवर्द्धिनीम् ॥ बलमायुर्यशःकान्तिं निर्जगामसहाग्रजः ५२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेपुरप्रवेशोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथव्रजन्राजपथेनमाधवः स्त्रियंगृहीताङ्गविलेपभाजनाम् ॥ विलोक्यकुब्जांयुवतींवराननांपप्रच्छयान्तींप्रहसन्रसप्रदः १ कात्वंवरोर्वेतदुहानुलेपनं कस्याङ्गनेवाकथयस्वसाधुनः ॥ देह्यावयोरङ्गविलेपमुत्तमंश्रेयस्ततस्तेनचिराद्भविष्यति २ ॥ सैरन्ध्र्युवाच ॥ दास्यस्म्यहंसुन्दरकंससम्मता त्रिवक्रनामाह्यनुलेपकर्म्मणि ॥ मद्भावितंभोजपतेरतिप्रियं विनायुवांकोऽन्यतमस्तदर्हति ३ रूपपेशलमाधुर्य्यहसितालापवीक्षितैः ॥ धर्षिता

(द्विचत्वारिंशकेकुब्जोन्नमनंधनुषोभिदा ॥ वधस्तद्रक्षिणांकंसारिष्टंरङ्गोत्सवादिच १ बयालीसवें अध्याय में कुबरी को कृष्णजी सीधीकर धनुष् को तोड़कर धनुष् के रक्षकों को मारतेभये और कंस को अरिष्ट और रङ्गभूमि के उत्सवादिका वर्णन है १) श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! माली के घरते निकसे पीछे मथुरा में भये सुख के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र सो राजमार्ग जो बाजार है तामें आयके ग्रहण किये हैं चन्दन के पात्र जाने सुन्दरहै मुख जाको ऐसी चली आवै जो तरुण कुबरी स्त्री है ताकों देखिके हँसिके पूछतभये १ सुन्दरहै जंघा जाकी ऐसी स्त्री तू कौनकी है चन्दन कौन को है हमारे आगे भलेप्रकार कहो यह उत्तम चन्दन हमकों देइ तौ अभी तेरो कल्याण होयगो २ यह सुनिके कुबरी बोली हे सुन्दर! मैं कंसकी दासीहौं कुबरी मेरो नामहै चन्दन घिसिवो यह मेरो काम है मेरो घिसो चन्दन कंस को अच्छो लगै है अब तुम विना और चन्दन लगायवे कों कौन पात्र है ३ सुन्दररूप सुकुमारि और रसिकता हँसनि बोलनि चितवनि सूं

मोहित है मन जाको ऐसी कुवरी कृष्ण वलदेव कों गहरो चन्दन देतभई ४ केशर जामें परी ऐसो चन्दन सामरे अङ्ग में श्रीकृष्ण ने लगायो कस्तूरी जामें मिली ऐसो चन्दन गोरे अङ्ग में वलदेवजी ने लगायो नाभिते ऊपर के अङ्गन में चन्दन लगायके दोनों भय्या वहुत सुन्दर लगत भये ५ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् अपने दर्शन को फल दिखायवे के लिये सुन्दर जाको मुख तीन स्थान ते टेढ़ी जो कुब्जा है ताकूं सीधी करिवे को मन करतभये ६ कुब्जा के पांवन को अपने चरणते दाविके दो अंगुली जामें ऊँचीकरी ऐसे हाथ कों ठोडी के नीचे लगायके श्रीकृष्ण कुब्जा के देह को सूधो करत भये ७ ता समय सूधे वरावर हैं अङ्ग जाके वड़े हैं कमर और स्तन जाके ऐसी कुब्जा श्रीकृष्ण के स्पर्श करते शीघ्र उत्तम स्त्री होतभई ८ सूधी भई पीछे रूप गुण उदारता ये सव कुब्जामें आयगये तव कामदेव जाके होयआयो वह कुब्जा डुपट्टा को पकरिके श्रीकृष्ण ते वोलत भई ९ हे वीर ! तुम आवो घर कों चलो तुम मोपै छोड़े नहीं जावोहौ हे पुरुषनमें श्रेष्ठ ! तुमने मेरो

स्मादद्दौसान्द्रमुभयोरनुलेपनम् ४ ततस्तावङ्गरागेण स्ववर्णेतरशोभिना ॥ सम्प्राप्तपरभागेन शुशुभातेऽनुरञ्जितौ ५ प्रसन्नोभगवान्कुब्जां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ॥ ऋज्वींकर्त्तुमनश्चक्रे दर्शयन्दर्शनेफलम् ६ पद्भ्यामाक्रम्यप्रपदेद्व्यङ्गुल्युत्तानपाणिना ॥ प्रगृह्यचिवुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ७ सातदर्जुसमानाङ्गी बृहच्छ्रोणिपयोधरा ॥ मुकुन्दस्पर्शनात्सद्योवभूवप्रमदोत्तमा ८ ततोरूपगुणौदार्य्यसम्पन्नाप्राहकेशवम् ॥ उत्तरीयान्तमाकृष्य स्मयन्तीजातहृच्छया ९ एहिवीरगृहंयामो नत्वांत्यक्तुमिहोत्सहे ॥ त्वयोन्मथितचित्तायाःप्रसीदपुरुषर्षभ १० एवंस्त्रियायाच्यमानःकृष्णोरामस्यपश्यतः॥ मुखंवीक्ष्यानुगानांच प्रहसंस्तामुवाचह ११ एष्यामितेगृहंसुभ्रूः पुंसामाधिविकर्शनम् ॥ साधितार्थोगृहाणांनः पान्थानांत्वंपरायणम् १२ विसृज्यमाध्व्यावाण्यातां व्रजन्मार्गेवणिक्पथैः ॥ नानोपायनताम्बूलस्रग्गन्धैःसाग्रजोऽर्चितः १३ तद्दर्शनस्मरक्षोभादात्मानंनाविदन्स्त्रियः ॥ विस्रस्तवासःकबरवलयालेख्यमूर्त्तयः १४ ततःपौरान्पृच्छमानो धनुषःस्थानमच्युतः ॥ तस्मिन्प्रविष्टोददृशे धनुरैन्द्रमिवाद्भुतम् १५ पुरुषैर्बहुभिर्गुप्तमर्चितंपरमर्द्धिम

मन चलायमान कीनो है मेरे ऊपर प्रसन्नहोउ १० या प्रकार स्त्री ने कही ता समय श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी मुख देखिके मित्रन को मुख देखिके मुसिकाय के कुब्जा ते वोलतभये ११ सुन्दर है भृकुटी जिनकी यामें कहा कह्यो तुम्हारी भृकुटी हमारे मन कों खैंचे है हमारो उपरना काहे को खैंचेहौ कंस कों मारिके अपने सुहृदन को कार्य्य सिद्धकरिके पुरुषनके मन के दुःख कों दूर करन वारो तुम्हारो घर है तामें आऊँगो वालव्रह्मचारी काहू सों जान नहीं पहिचान नहीं हमारे घर नहीं परदेशी हैं तिनकूं तुमही आश्रयहौ तुम्हारे न आवेंगे तो जाइँगे कहाँ मीठे मीठे वचन कहिके कुब्जा कों छोड़िकै चले तव वनियान ने अनेक भेंट पान माला चन्दन लैके वलदेव सहित कृष्णको पूजन कस्यो १२।१३ श्रीकृष्ण के दर्शन करे तें व्याप्यो जो कामदेव ताके क्षोभते स्त्री आपेकूं नहीं जानत भई वस्त्र जिनके ढीले होयगये चोटी खुलिगई कङ्कण खिसलआये चित्रसी लिखी ठाढ़ी रहिगई १४ ता पीछे अच्युत श्रीकृष्ण मथुरावासीन ते धनुष् को ठिकानो पूंछत पूंछत गये धनुष्की शाला में इन्द्र के धनुष्की तुल्य अद्भुत धनुष्परो देखतभये १५ हजारन पुरुष जाकी रक्षाकरें हैं पूजा होइरही है वड़ी जाकी शोभा है पुरुषन ने मनेकरो तौ भी श्रीकृष्ण जोरावरी धनुष्को

उठावत भये १६ खेलकरत बायें हाथ ते उठायके चिल्ला चढाइके पलभर में मनुष्यन के देखत देखत बीचते खैंचिके जैसे मतवारो हाथी गाड़े कूं तोरडारे है तैसे तोरिके डारतभये १७ जा समय धनुष टूटो तब वाको शब्द आकाश में और स्वर्ग में पृथ्वी में दिशान में व्याप्त होतभयो ऐसे शब्दकों सुनिके कंस कों भय होतभयो १८ धनुष के रक्षक जे हैं ते अपने अनुचरनसहित क्रोध करिके हाथन में हाथ लेके श्रीकृष्ण के पकरिबेके लिये लेउ लेउ ऐसे कहत चारोंओर ते घेरतभये १९ घेर लेने के पीछे श्रीकृष्ण बलदेव दोनों भय्या मारिबे कों पकरिबे कों आये जे पुरुषहैं तिनें देखि के क्रोध करिके धनुषको एक टूक लैके तिन पुरुषन कों मारतभये २० कंसने भेजी जो सेनाहै ताकूं मारिके धनुष्शालाके बाहर निकसिके मथुरापुरी कम्पित देखिके हर्षित होयके चितवतभये २१ मथुरापुरी के वासी स्त्री पुरुष राम कृष्णको अद्भुत कर्म्म देखिके धृष्टता देखिके पराक्रम देखिके देवतान में उत्तम मानतभये २२ ते कृष्ण बलदेव अपनी इच्छापूर्वक विचरे हैं इतने में सूर्य्य

त ॥ वार्यमाणोनृभिःकृष्णः प्रसह्यधनुराददे १६ करेणवामेनसलीलमुद्धृतंसज्यञ्चकृत्वानिमिषेणपश्यताम् ॥ नृणांविकृष्यप्रबभञ्जमध्यतोयथेक्षुदण्डंमदकर्युरुक्रमः १७ धनुषोभज्यमानस्य शब्दःखंरोदसीदिशः ॥ पूरयामासयंश्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् १८ तद्रक्षिणःसानुचराः कुपिताआततायिनः ॥ गृहीतुकामाआवव्रुर्गृह्यतांबध्यतामिति १९ अथतान्दुरभिप्रायान् विलोक्यबलकेशवौ ॥ क्रुद्धौधन्वनआदाय शकलेतांश्चजघ्नतुः २० बलञ्चकंसप्रहितं हत्वाशालामुखात्ततः ॥ निष्क्रम्यचेरतुर्हृष्टौ निरीक्ष्यपुरसम्पदः २१ तयोस्तदद्भुतंवीर्य्यं निशाम्यपुरवासिनः ॥ तेजःप्रागल्भ्यरूपञ्च मेनिरेविबुधोत्तमौ २२ तयोर्विचरतोःस्वैरमादित्योऽस्तमुपेयिवान् ॥ कृष्णरामौवृतौगोपैः पुराच्छकटमीयतुः २३ गोप्योमुकुन्दविगमेविरहातुरायाआशासताशिषऋतामधुपुर्यभूवन् ॥ संपश्यतांपुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतरान्नुभजतश्चकमेऽयनंश्रीः २४ अवनिक्ताङ्घ्रियुगलौभुक्त्वाक्षीरोपसेचनम् ॥ ऊषतुस्तांसुखंरात्रिं ज्ञात्वाकंसचिकीर्षितम् २५ कंसस्तुधनुषोभङ्गं रक्षिणांस्वबलस्यच ॥ वधंनिशम्यगोविन्दरामविक्रीडितंपरम् २६ दीर्घप्रजागरोभीतो दुर्निमित्तानिदुर्म्मतिः ॥ बहून्यचष्टोभयथामृत्योर्दौत्यकराणिच २७ अदर्शनंस्वशिरसःप्रतिरूपेचसत्यपि ॥ असत्यपिद्वितीयेच द्वैरूप्यंज्योतिषांतथा २८ छिद्रप्रतीति

अस्त होतभयो सन्ध्या समय भयो तब कृष्ण बलदेव दोनों भय्या गोपन को सङ्ग लैके मथुरापुरी ते निकसे जहां गाड़ा छूटे हैं तहां आवत भये २३ श्रीकृष्णकूं व्रज में ते निकसती बेर गोपीन ने विरह में व्याकुल होयके जे जे बातें कहीहीं ते सबही श्रीकृष्ण के अंगकी शोभा देखिकै मथुरावासीनकूं साची होत भई लक्ष्मीजी भजें जे ब्रह्मादिक हैं तिनें छोड़िके जाही रूप की चाहना करे हैं २४ धोये हैं चरण जिनने ऐसे श्रीकृष्ण बलदेवजी दूधभात को भोजन करिके कंसको विचार जानिके या रात्रिकों सुखते बसत भये २५ कंस धनुष कों टूटो सुनिके वाके रखवारेन को मरयो सुनिके अपनी सेना को वध सुनो यह कृष्ण बलदेव को केवल खेलहै पराक्रम नहीं हो यह सुनिके चिन्ताके मारे रात्रिको निद्रा नहीं आई डरप्यो दुष्टहै बुद्धि जाकी ऐसो कंस मृत्युके जतावन वारे जागत में सोवत में बहुतसे खोंटे स्वप्न हैं तिनें देखत भयो २६।२७ दर्प्पण में जल में मुख देखे तो अपनो शिर नहीं दिखाई देइहै चन्द्रमा सूर्य्य दो दो रूप नहीं हैं परन्तु वाकों दो दो दि-

खाई दिये २८ अपनी परछाई में छिद्रदीखे अंगुरी देके कान में देखे तो घूं घूं शब्द नहीं सुनोजाय वृत्त सोने के दिखाई दिये कीचमें रेत में अपने पांवन के खोज न दीखे २९ स्वप्नमें भूत प्रेत छाती सूं लगाय लगाय के मिले हैं गधा पै चढ़ो विषकों खात गुड़हर के फूलन की माला पहिरे अकेलो तेलमें भीज्यो नग्न दक्षिणदिशाकों चल्यो जायहै यह स्वप्न देखत भयो ३० और ऐसे ऐसे स्वप्न में जागत में खोटे खोटे सगुन देखिके मृत्युतें डरप्यो जो कंस है सो चिन्ता के मारे सोवत न भयो ३१ हे कुरुवंशमें भये राजन् परीक्षित्! जैसे तैसे करिके वह रात्रि बीती सवेरो भयो जलमें तें सूर्य्य निकसो ता समय कंस मल्लनकी कुश्ती लड़वायवेको जो बड़ो उत्सवहै ताकों करावत भयो ३२ पुरुष रङ्गभूमि की पूजा करत भये तुरही भेरि वजतभई माला पताका वस्त्रनकी वन्दनवार इनते मचान शोभायमान करे ३३ तिन मंचानन के ऊपर ब्राह्मण क्षत्रिय जिनमें मुख्य ऐसे पुरवासी देशवासी आय के सुखपूर्वक बैठत भये ३४ कंस अपने प्रधान दीवान कूं संगलैके

स्वच्छायायांप्राणघोषानुपश्रुतिः ॥ स्वर्णप्रतीतिर्वृक्षेषु स्वपदानामदर्शनम् २९ स्वप्नेप्रेतपरिष्वङ्गः खरयानंविषादनम् ॥ यायान्नलदमाल्येकस्तैलाभ्यक्तोदिगम्बरः ३० अन्यानिचेत्थंभूतानि स्वप्नजागरितानिच ॥ पश्यन्मरणसंत्रस्तो निद्रांलेभेनचिन्तया ३१ व्युष्टायांनिशिकौरव्य सूर्ये चाद्भ्यःसमुत्थिते ॥ कारयामासवैकंसोमल्लक्रीडामहोत्सवम् ३२ आनर्चुःपुरुषारङ्गं तूर्यभेर्यश्चजघ्निरे ॥ मञ्चाश्चालंकृताःस्रग्भिः पताकाचैलतोरणैः ३३ तेषुपौराजानपदाब्रह्मक्षत्रपुरोगमाः ॥ यथोपजोषंविविशूराजानश्चकृतासनाः ३४ कंसःपरिवृतोऽमात्यैराजमञ्चउपाविशत् ॥ मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेनविदूयता ३५ वाद्यमानेषुतूर्येषु मल्लतालोत्तरेषुच ॥ मल्लाःस्वलंकृताःदृप्ताः सोपाध्यायाःसमागताः ३६ चाणूरोमुष्टिकःकूटः शलस्तोशलएवच ॥ तआसेदुरुपस्थानं वल्गुवाद्यप्रहर्षिताः ३७ नन्दगोपादयोगोपाभोजराजसमाहुताः ॥ निवेदितोपायनास्तएकस्मिन्मञ्चआविशन् ३८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेमल्लरङ्गोपवर्णनंनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथकृष्णश्चरामश्च कृतशौचौपरन्तप ॥ मल्लदुन्दुभिनिर्घोषं श्रुत्वाद्रष्टुमुपेयतुः १ रङ्गद्वारंसमासाद्य तस्मिन्नागमवस्थितम् ॥ अपश्य

खण्डमण्डलन के जे राजा हैं तिन के बीच में एक राजमचान है ताके ऊपर बैठत भयो भय के मारे हृदय जाको कम्पित है ३५ नगाड़े वजे हैं मल्ल चट चट खम्भ ठोके हैं जॉघियान कूं पहिर के सिन्दूर को बिन्दा लगाय के धूरि मलि के छोटी २ जिनके चुटिया बड़ो जिन के गर्व ऐसे उस्तादन को संग लैके आवत भये ३६ अब मल्लन के नाम लेइ हैं चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये अखाड़े में आवत भये मनोहर बाजेन कू सुनि के हर्ष जिनके भयो है ३७ कसके बुलाये नन्दगोप सों आदिलैके और गोप हैं ते कंस को भेट देके एक मंचान पै बैठत भये ३८ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेमल्लरङ्गोपवर्णनन्नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(त्रिचत्वारिंशकेहत्वागजेन्द्रंरामकृष्णयोः ॥ रङ्गप्रवेशोभाग्यंचाणूरेणचभाषणम् १ तैंतालीसवें अध्यायमें बलदेव और कृष्णजी कुवलयापीड़ हाथी को मारकर रङ्गभूमि में प्रवेश करते भये

और वहां पर चाणूर सूं वार्तालाप भयो है १) अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे शत्रुन के तपावनवारे राजा परीक्षित्! धोबी कों मारिके धनुष् कों तोरिके हमने अपनो ऐश्वर्य्य जतायो तथापि हमारे माता पिता को नहीं छोड़े हैं और हम कूं मारयो चाहे है याते या मामा के मारिवेमें हमें कुछ दोष नहीं है या प्रकार दोष के दूरि करिवे को विचार जिनने विचारो ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या जहाँ मल्ल खम्भ ठोके हैं नगाड़े बजे हैं तिनको शब्द सुनि के देखिवे कों जात भये १ श्रीकृष्णचन्द्र रङ्गभूमिके दरवाजे पै जाय के देखें तो कुवलयापीड़ हाथी ठाढ़ो है कैसो हाथीहै महावतने अपने ऊपर हिलायो है २ शूरके वंश में भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र फेंट बाँधि के मुख पै छुटिरहीं जे कुटिल अलकें हैं तिनकों सम्हारि के गलेकी लम्बी माला कों जनेऊ की तुल्य कंधान पै पहिर के मेघ की तुल्य गर्ज के बोलतभये ३ अरे महावत! हमकों मार्ग दे शीघ्र हाथी कू हटाय ले नहीं हटावेगो तो हाथीसहित तोकों यमलोककों पठाऊँगो ४ या प्रकार डाटि कै जब कही ता

त्कुवलयापीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् २ बद्धापरिकरंशौरिः समुह्यकुटिलालकान् ॥ उवाचहस्तिपंवाचा मेघनादगभीरया ३ अम्बष्ठाम्बष्ठमार्गंनोदेह्यप क्रममाचिरम् ॥ नोचेत्सकुञ्जरंत्वाद्यनयामियमसादनम् ४ एवंनिर्भर्त्सितोऽम्बष्ठःकुपितःकोपितंगजम् ॥ चोदयामासकृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ५ करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेणतरसाऽग्रहीत् ॥ कराद्विगलितःसोऽमुं निहत्याङ्घ्रिष्वलीयत ६ संक्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिःसकेशवम् ॥ परामृशत्पुष्करेणस प्रसह्यविनिर्गतः ७ पुच्छेप्रगृह्यातिबलं धनुषःपञ्चविंशतिम् ॥ विचकर्षयथानागं सुपर्णइवलीलया ८ सपर्यावर्त्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽच्युतः ॥ बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेनेवबालकः ९ ततोऽभिमुखमभ्येत्यपाणिनाहत्यवारणम् ॥ प्राद्रवन्पातयामासस्पृश्यमानःपदेपदे १० सधावन्क्रीडयाभूमौपतित्वा सहसोत्थितः ॥ तंमत्वापतितंक्रुद्धोदन्ताभ्यांसोहनत्क्षितिम् ११ स्वविक्रमेप्रतिहते कुञ्जरेन्द्रोऽत्यमर्षितः ॥ चोद्यमानोमहामात्रैःकृष्णमभ्यद्रवद्रुषा १२ त मापतन्तमासाद्यभगवान्मधुसूदनः ॥ निगृह्यपाणिनाहस्तं पातयामासभूतले १३ पतितस्यपदाक्रम्य मृगेन्द्रइवलीलया ॥ दन्तमुत्पाट्यतेनेभं हस्तिपां

समय महावत कुपित होय कै कालमृत्यु यम इनकी तुल्य है क्रोध जाके ऐसे हाथी को श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर हूलत भयो ५ हाथी श्रीकृष्ण के पास जाय के जल्दी देसी अपनी सूंड में पकरत भयो श्रीकृष्ण हाथी की सूंड़ में ते खिसिल के वाके मूड़ में मुक्का मारिके पांवन में छिप जात भये ६ श्रीकृष्ण को देखिके क्रोध जाके होय आयो सूंघासाँघी की है दृष्टि जाके ऐसे हाथी ने जब सूंड़ पकरिवे को चलाई ता समय पूँछ पकरि पिछिले पाँवन में निकसि गये ७ बड़े बली हाथी की पूँछ पकरि के जैसे गरुड सर्प को घसीटै है या प्रकार पचीस धनुषपर्य्यन्त लीला करिके घसीटत भये ८ पूँछ को पकरे जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं पकरिवे कों दाहिनी ओर हाथी आवै है तब बाई ओर भ्रमावे हैं और बाई ओर आवै है तब दाहिनी ओर भ्रमावे हैं जैसे गौ के बछरा के सङ्ग बालक फिरे हैं ऐसे फिरे है ९ ता पीछे हाथी के सामहें आय के थाप मारिके दौरि के पटकत भये पैरमें हाथी स्पर्श करे है १० श्रीकृष्ण तनिक दौरि के खेलिवे के लिये धरती में गिरि के शीघ्रता सूं ठाढे होय गये तब श्रीकृष्ण कूं गिरयो मानि के वह हाथी दाँतन सूं पृथ्वी को खोदत भयो ११ अपनो बल जब घटि गयो तब हाथी के बडो क्रोध भयो महावत ने जब अंकुश मारिके हूल्यो तब क्रोध करिके

श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर दौरत भयो १२ मधु दैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख चलो जो हाथी ताकी हाथ सूं सूंड़ पकरिके पृथ्वी में पटकत भये १३ सिंह की तुल्य गर्जो जो हाथी है ताय पॉव के नीचे दावि के लीला करिके वाके दॉत उखारि के दॉत सों महावत कूं श्रीकृष्णचन्द्र मारतभये १४ जब हाथी मरि गयो तब वाकों छोड़ि के हाथ में हाथी के दॉत लैके कॉधे पै धरि के जात भये रुधिर और मधु की बूंद जिनके लगि रही हैं और पसीनानकी बूंद जिनके मुखकमल पै आइ रही हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये कितनेक गोप जिनके सङ्ग हाथी के दाँतही सुन्दर शस्त्र जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या हे राजन् परीक्षित्! रङ्गभूमि में जात भये १५। १६ ता समय मल्लनको वज्रतुल्य दृष्टिआये मनुष्यनको अतिसुन्दर जानिपरे और स्त्रीनको साक्षात् कामदेव स्वरूप धरिके चले आवे हैं ऐसे जानिपरे गोपों को भाईबन्धु जानिपरे दुष्ट राजानको मृत्यु देनवारे हैं ऐसे जानिपरे अपने पिता माता वसुदेव देवकी हैं तिनकूं हमारे पुत्र चले आवे हैं या विधि जानिपरे भोजपति जो कंसहै ताकों यह जानिपरे कि मेरी मृत्यु चलीआवे है अज्ञानीनकों भयङ्कर रूप दृष्टिपरे और ज्ञानीन कों परमतत्त्वरूप दृष्टिपरे यादवन कों परमदेवतारूप जानि परे जैसी जाकी भावना ताको तैसेही जानिपरे या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कों सङ्ग लैके रङ्गभूमि में जातभये १७ हे राजन् परीक्षित्! कुवलयापीड़ हाथी कूं मरयो देखिके जीतवे में न आवें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कूं देखिके धैर्ययुक्तहू कंस है परन्तु डरपत भयो १८ बड़ी जिनकी भुजा विचित्र जिनके वेष आभूषण माला वस्त्रनकूं धारणकरे ऐसे कृष्ण बलदेव रङ्गभूमि में जायके सुन्दर लगत भये उत्तम रूपको धारण करनवारे नट जैसे सुन्दर लगे हैं या प्रकार अपनी कान्ति कर देखनवारे पुरुषन के मन कूं चुरावे हैं १९ हे राजन् परीक्षित्! मंचानन के ऊपर बैठे जे पुरवासी देशवासी जन हैं ते पुरुषन में श्रेष्ठ जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकों देखिके आनन्द के वेग ते डहडहे नेत्र मुख जिनके होयगये ऐसे नेत्रन करिके मुखकी शोभा देखिके तृप्त न होत भये २० नेत्र ऐसे चलावे हैं मानों रूपकों पीजायँगे जिह्वा ऐसी चलावें मानो चाटि जायँगे नासिका ऐसी चलावें मानों सूंघि लेईंगे भुजा ऐसी चलावे हैं मानो लिपिटजायँगे जैसो श्रीकृष्ण को रूप कानन ते सुनो हो तैसोही आंखिन ते देखिके उनके रूप गुण माधुर्य्य ढिठाई सूं बुद्धि जिनकूं होयआई ऐसे पुरुष आपुस में कहत भये २१। २२ ये जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं ते

सन्नाहनद्धरिः १४ मृतकंद्विपमुत्सृज्य दन्तपाणिःसमाविशत्॥ अंसन्यस्तविषाणोऽसृङ्मदविन्दुभिरङ्कितः॥ विरूढस्वेदकणिकावदनाम्बुरुहोबभौ १५ वृतौ गोपैःकतिपयैर्बलदेवजनार्दनौ॥ रङ्गंविविशतूराजन्गजदन्तवरायुधौ १६ मल्लानामशनिर्नृणांनरवरःस्त्रीणांस्मरोमूर्त्तिमान् गोपानांस्वजनोऽसतांक्षितिभुजांशास्तास्वपित्रोःशिशुः॥मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषांतत्त्वंपरंयोगिनांवृष्णीनांपरदेवतेतिविदितोरङ्गंगतःसाग्रजः१७हतंकुवलयापीडंदृष्ट्वातावपिदुर्जयौ॥ कंसोमनस्व्यपितदाभृशमुद्विविजेनृप १८ तौरेजतूरङ्गगतौमहाभुजौविचित्रवेषाभरणस्रगम्बरौ॥ यथानटावुत्तमवेषधारिणौ मनःक्षिपन्तौप्रभयानिरीक्षताम् १९ निरीक्षतावुत्तमपूरुषौजनामञ्चस्थितानागरराष्ट्रकानृप॥ प्रहर्षवेगोत्कलितेक्षणाननाः पपुर्नतृप्तानयनैस्तदाननम् २० पिबन्तइवचक्षुर्भ्यांलिहन्तइव जिह्वया॥ जिघ्रन्तइवनासाभ्यांश्लिष्यन्तइवबाहुभिः २१ ऊचुःपरस्परंतेवैयथादृष्टंयथाश्रुतम्॥ तद्रूपगुणमाधुर्यप्रागल्भ्यस्मारिताइव २२ एतौभगवतः

साक्षात् भगवान् हरि नारायण हैं अंशकरिके या संसार में वसुदेवके घर अवतरे हैं २३ यह जो सांवरो बालक है ताने देवकी के जन्म लियो है अवताई छिप्यो रह्यो पिताने गोकुल में पहुँचाय दियो हौ नन्दराय के घर में वृद्धिकूं प्राप्तभयो २४ या कृष्ण ने पूतना मारी ववूरे के स्वरूपकों धरिके आयो जो तृणावर्त्त दैत्य ताकूं मारतभये और यमलार्ज्जुन वृक्ष उखारि के डारि दिये शंखचूड़ मार्यो केशीदानव मार्यो धेनुकासुर मारो अघासुर आदिलैके और सब दानव मारे २५ या कृष्णने गौ और ग्वाल वनमें दव लगी ताते छुटाये काली सर्प्पकों दण्ड दियो इन्द्रको मद दूर कियो २६ सात दिन पर्य्यन्त यह कृष्ण गोवर्द्धन पर्व्वतकूं हाथ में लिये रह्यो वर्षा पवन वज्रपात ते गोकुलकी रक्षाकरी २७ गोपी हैं ते या कृष्ण कों नित्य प्रसन्न हँसनि चितवनि जामें श्रम दूर कियो २६ सात दिन पर्य्यन्त ... या प्रकार जामें नहीं ऐसे मुखकों देखिकै अनेक तापनकूं दूरि करतभई २८ या कृष्णते यह यदु को वंश बहुत विख्यात होयके सम्पत्ति यश बड़ाई कूं पावेगो और या कृष्णते रक्षा होयगी या प्रकार

॥ कालमेतंवसन्गूढोवव्रृधेनन्दवेश्म साक्षाद्धरेर्नारायणस्यहि ॥ अवतीर्णोविहांशेनवसुदेवस्यवेश्मनि २३ एषवैकिलदेवक्यां जातोनीतश्चगोकुलम् ॥ कालमेतंवसन्गूढोवव्रृधेनन्दवेश्म ॥ का
नि २४ पूतनाऽनेननीताऽन्तंचक्रवातश्चदानवः ॥ अर्ज्जुनौगुह्यकःकेशीधेनुकोऽन्येचतद्विधाः २५ गावःसपालाएतेनदावाग्नेःपरिमोचिताः ॥ कालियोदमितःसर्प्पइन्द्रश्चविमदःकृतः २६ सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽद्रिप्रवरोमुना ॥ वर्षवाताशनिभ्यश्च परित्रातश्चगोकुलम् २७ गोप्योऽस्यनित्यमुदितहसितप्रेक्षणंमुखम् ॥ पश्यन्त्योविविधांस्तापांस्तरन्तिस्माश्रमंमुदा २८ वदन्त्यनेनवंशोऽयंयदोःसुबहुविश्रुतः ॥ श्रियंयशोमहत्त्वञ्च लप्स्यतेपरिरक्षितः २९ अयंचास्याग्रजःश्रीमान्रामःकमललोचनः ॥ प्रलम्बोनिहतोयेनवत्सकोयेबकादयः ३० जनेष्वेवंब्रुवाणेषु तूर्य्येषुनिनदत्सुच ॥ कृष्णरामौसमाभाष्य चाणूरोवाक्यमब्रवीत् ३१ हेनन्दसूनोहेरामभवन्तौवीरसम्मतौ ॥ नियुद्धकुशलौश्रुत्वा राज्ञाहूतौदिदृक्षुणा ३२ प्रियंराज्ञःप्रकुर्वन्त्यःश्रेयोविन्दन्तिवैप्रजाः ॥ मनसाकर्मणावाचा विपरीतमतोऽन्यथा ३३ नित्यंप्रमुदितागोपावत्सपालायथास्फुटम् ॥ वनेषुमल्लयुद्धेनक्रीडन्तश्चारयन्तिगाः ३४ तस्माद्राज्ञःप्रियंयूयं वयञ्चकरवामहे ॥ भूतानिनःप्रसीदन्ति सर्वभूतमयोनृपः ३५ तन्निशम्याब्रवीत्कृष्णोदेशकालोचितंवचः ॥ नियुद्धमात्मनोऽभीष्टंमन्यमानोऽभिनन्द्यच ३६

कहत भये २९ कमल से जाके नेत्र ऐसो सुन्दर या कृष्ण को बड़ो भय्या यह राम ताने प्रलम्बासुर वत्सासुर बकासुर आदिक मारे क्यों जी मारे तौ कृष्णने बलदेव को नाम क्यों लेय हैं तहां कहे हैं देखी सुनी बातन में भेद होइ जाय है ३० सब मनुष्य या प्रकार कहत हैं तौलौं नगाड़े बाजे इतने में चाणूर कृष्ण बलदेव कों सम्बोधन दैके बोलत भयो ३१ हे नन्द के पुत्र! हे राम! बल तुम में अधिक है कुश्ती अच्छी कर जानो हो यह श्रवण करिके कंसराय सूं देखिवे के लिये बुलाये गये हौ ३२ प्रजा मन करिके कर्म करिके वचन करिके राजाको प्रिय करैं तौ कल्याण पावे हैं और जे विपरीत करे हैं वे नहीं पावे है ३३ प्रतिदिन बछरानके चरावनवारे गोप प्रसन्न होयके वनमें कुश्ती को खेल करिके गौ चरावे हैं यह बात प्रकट है ३४ ता कारण हम तुम राजा कंसको प्रियकरें राजा प्रसन्न होयगो तौ सब प्राणी हमारे ऊपर प्रसन्न होयँगे ३५ चाणूर को वचन सुनिके श्रीकृष्णचन्द्र कुश्ती करिवो आपको योग्य मानिके बड़ाई करिके देश

समयके उचित वाक्य बोलतभये ३६ या कंसकी तुम प्रजाहो हम वनकी रहनवारी प्रजाहैं राजा कंसको प्रिय नित्य करें याहीमें हमारो भलो है ३७ देखो हम बालकहैं अपनी बराबरके बालकन के सङ्ग कुश्ती लड़ेंगे जैसे उचितहोइ तैसी कुश्ती करो मल्लनकी सभामें अधर्म्म न होय ३८ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिके चाणूर बोलो तुम बालक नहीं हौ और बलीन सें बलवान् बलदेव बालक नहीं है किशोर नहीं हौ हजार हाथीको जामें बल ऐसो कुवलयापीड़ हाथी खेलमें ही मारिलियो ३९ ताते हमारे संग कुश्ती तुम करौ यह अनीति नहीं है हे वृष्णिवंश में भये कृष्ण! मेरी तुम्हारी कुश्ती होय बलदेव के संग मुष्टिककी होय ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकुवलयापीडवधोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥ * ॥

(चतुश्चत्वारिंशकेतुमल्लकंसादिमर्द्दनम् ॥ कंसयोषित्समाश्वासस्ताभ्यापित्रोश्चदर्शनम् १ चवालीसवें अध्याय में मल्ल और कंसादिकों को कृष्ण बलदेवजी ने नाशकर कंसकी स्त्रियों को

प्रजा भोजपतेरस्य वयञ्चापिवनेचराः ॥ करवामप्रियंनित्यंतन्नःपरमनुग्रहः ३७ बालावयंतुल्यबलैः क्रीडिष्यामोयथोचितम् ॥ भवेन्नियुद्धंमाऽधर्मःस्पृशेन्मल्लसभासदः ३८ ॥ चाणूरउवाच ॥ नबालोनकिशोरस्त्वंबलश्चबलिनांवरः ॥ लीलयेभोहतोयेन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ३९ तस्माद्भवद्भ्यांबलिभिर्योद्धव्यं नानयोऽत्रवै॥मयिविक्रमवार्ष्णेयबलेनसहमुष्टिकः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकुवलयापीडवधोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः४३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एवंचर्चितसङ्कल्पो भगवान्मधुसूदनः ॥ आससादाथचाणूरं मुष्टिकंरोहिणीसुतः १ हस्ताभ्यांहस्तयोर्बद्ध्वा पद्भ्यामेवचपादयोः ॥ विचकर्षतुरन्योन्यं प्रसह्यविजिगीषया २ अरत्नीद्वेअरत्निभ्यां जानुभ्यांचैवजानुनी ॥ शिरःशीर्ष्णोरसोरस्तावन्योऽन्यमभिजघ्नतुः ३ परिभ्रामणविक्षेपपरिरम्भावपातनैः ॥ उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योऽन्यंप्रत्यरुन्धताम् ४ उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैःस्थापनैरपि ॥ परस्परंजिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ५ तद्बलाबलवद्युद्धंसमेताःसर्वयोषितः॥ ऊचुःपरस्परंराजन्सानुकम्पावरूथशः ६ महानयंबताधर्मएषांराजसभासदाम्॥येबलाबलवद्युद्धंराज्ञोऽन्विच्छन्तिपश्यतः ७

समझायो और वसुदेव देवकी के दर्शन कियो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार निश्चय कियो है सङ्कल्प जिनने नीलाम्बर पीताम्बरकी कच्छैं बाँधि खम्भ ठोंकि के ठाढ़े होय गये ऐसे मधुदैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण चाणूर से जुटतभये रोहिणीनन्दन बलदेवजी मुष्टिक से जुटतभये १ हाथन सूं हाथ पांवन सूं पांव मिलायके आपुस में जीतिवे की इच्छा करिके परस्पर बलात्कारते खैंचतभये २ अरत्नीन सों अरत्नी मिलाय कै घोंटूनसों घोंटू मिलाय के शिरसों शिर मिलाय कै छाती सों छाती मिलाय कै कृष्ण चाणूर दोनों आपुस में कुश्ती करतभये ३ अब जैसे जैसे परस्पर दाव पेंच करे हैं परिभ्रमण अर्थात् फिरावनो विक्षेप अर्थात् धक्का देनो परिरम्भ अर्थात् हाथते बिडारनो अवपातन अर्थात् नीचो पटकि देनो उत्सर्पण अर्थात् छोड़िके पीछे से आगे आइ जानो अपसर्पण अर्थात् पीछे जायके ठाढ़े होनो इन दावन करिके लड़तभये ४ उत्थापन अर्थात् पाव और घोंटू मिलिके गिरे हे तिनकों उखार देनो चालन अर्थात् बँधे दांवकों दूर करदेनो स्थापन अर्थात् हाथ पाव पकरिके मिलाय देनो या प्रकार परस्पर देहको पीड़ा देतभये ५ स्त्रीनके समूहके समूह इकठौरी होयके बैठी हैं ते कहे है देखो यह कृष्ण

तो निर्बलहै और चाणूर सबलहै यह विचार के दया जिनकों आइ गई ऐसी स्त्री आपुस में बोलतभई ६ ये राजसभा के बैठनवारेन कूं बड़ो अधर्म्म होयगो राजा के देखते निर्बल सबलकी कुश्ती करावे हैं ७ देखो वज्रसे कठोर जिनके सबअङ्ग पर्व्वतसे ऊंचे ऊंचे मल्ल कहा और श्रीकृष्णको स्वरूप अतिसुकुमार जिनके अङ्ग और यौवन अवस्था जिनकी भई नहीं किशोर अवस्था जिनकी ऐसे बालक कहा ८ या सभामें निश्चय धर्म्म नाश होइहै जहां अधर्म्म होय ता सभामें कबहूं न बैठे ९ और स्त्री कहे हैं विवेकी पुरुष कों ऐसी सभामें जानो योग्य नहीं है सभाके बैठनवारेन के दोषनकूं स्मरण करिके बात कों जानिके चुप बैठयो रहै तो दोषभागी होय काहूकी झूठी सांची कहै तो दोषलगे अथवा हम काहूकी बुरी जानें न भली जानें ऐसे कानन पै हाथ धरे तो दोष भागी होय या कारण सभामें जाय नहीं १० शत्रुके चारों ओर दौराधूपी करे जो कृष्ण है ताके मुखकी शोभा देखो तो कुश्ती में जोर करे है याते मुखके ऊपर पसीनान की बूंद आय रही हैं जैसे कमलकोश के ऊपर ओसकी बूंद परे तैसे ११ और स्त्री कहे हैं अरुण जामें नेत्र ऐसे बलदेवजी के मुखकी शोभा कूंदेखो मुष्टिकके ऊपर क्रोध जिनको आइरह्यो हासी सहित जो क्रोध आवे

क्वव्रजसारसर्वाङ्गौमल्लौशैलेन्द्रसन्निभौ॥ क्वचातिसुकुमाराङ्गौकिशोरौनाप्तयौवनौ ८ धर्म्मव्यतिक्रमोह्यस्य समाजस्यध्रुवंभवेत्॥ यत्राधर्म्मःसमुत्तिष्ठेन्नस्थेयंतत्रकर्हिचित् ९ नसभांप्रविशेत्प्राज्ञःसभ्यदोषाननुस्मरन्॥ अब्रुवन्विब्रुवन्नज्ञोनरःकिल्बिषमश्नुते १० वल्गतःशत्रुमभितःकृष्णस्यवदनाम्बुजम्॥ वीक्ष्यतांश्रमवार्युप्तं पद्मकोशमिवाम्बुभिः ११ किंनपश्यतरामस्य मुखमाताम्रलोचनम्॥ मुष्टिकंप्रतिसामर्षं हाससंरम्भशोभितम् १२ पुण्याबतव्रजभुवोयदयंनृलिङ्गगूढःपुराणपुरुषोवनचित्रमाल्यः॥ गाःपालयन्सहबलःक्वणयंश्चवेणुं विक्रीडयाञ्चतिगिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः १३ गोप्यस्तपःकिमचरन्यदमुष्यरूपं लावण्यसारमसमोर्द्ध्वमनन्यसिद्धम्॥ दृग्भिःपिबन्त्यनुसवाभिनवंदुरापमेकान्तधामयशसःश्रियऐश्वरस्य १४ यादोहनेऽवहननेमथनोपलेपप्रेङ्खेङ्खनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ॥ गायन्तिचैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्योधन्याव्रजस्त्रियउरुक्रमचित्तयानाः १५ प्रातर्व्रजाद्व्रजतआविशतश्चसायं गोभिःसमं

तासूं सुन्दर लगे हैं १२ और गोपी कहे हैं वे व्रजभूमि बड़ीपवित्र हैं जिनके वनके चित्रविचित्र फूलन कूं उरसे पुराणपुरुष श्रीकृष्ण बलदेव सहित मनुष्य रूपमें छिपि के गौवन कूं चरावत समय वासुरी कूं बजावत और ब्रह्मा लक्ष्मी जाके चरणकी पूजाकरैं वह प्यारो खेलत डोले है १३ और स्त्री कहे हैं देखो गोपी कहा तप करत भई जा कारण जिनतें श्रेष्ठ और कोई सुन्दर नहीं और जिनकी बराबर कोई नहीं जाते अधिक नहीं देखो आभूषण वस्त्र विनाही सुन्दर लगे है यश लक्ष्मी ऐश्वर्य्य इनको एकान्तस्थान अर्थात् सर्व्वदा वासकरैं ऐसो जो प्यारेको स्वरूप ताकूं दृष्टि करिके देखे हैं जे गोपी गाय दुहावती बेर धान्य छरती बेर दधि फिरावती बेर उपलेपकी बेर बालकनकूं झुलावतसमय बालक जब रोवें तब उनकों राखती बेर घरनमें बुहारी देनो यासूं आदिलैके जो काम हैं तिनकूं करती बेर श्रीकृष्णमें आसक्तहोय कृष्ण गुण गावे हैं तासमय प्रेमानन्द सूं आसू जिनके नेत्रनमें आयजायें हैं कृष्णमें जो चित्तलगे हैं तासूं सब विषय जिनकूं आयके प्राप्त होयहैं सखियो व्रजकी स्त्री धन्य हैं १४।१५ प्रातःकाल जब व्रज ते गौ चरायवे कों जाइ हैं सन्ध्या समय गौवन कूं लैके वाँसुरी बजावत जब आवे हैं ता समय गोपी या कृष्ण की बाँसुरी सुनिके शीघ्र अपने घर सूं

निकसि कै मार्ग में आइकै बहुत हैं पुण्य जिनके ऐसी सुन्दर मुसिकानि दयापूर्व्वक जामें चितवनि ऐसे मुखको दर्शन करें हैं वे गोपी बड़भागिनी हैं १६ हे भरतवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! या प्रकार स्त्री आपुसमें कहे हैं ता समय योग के ईश्वर सबके दुःख के दूर करनवारे भगवान् शत्रु कूं मारिवे कूं मन करतभये १७ भयसमेत स्त्रीनकी बात सुनि के पुत्रन में स्नेह सूं जो शोक है तासूं व्याकुल पुत्रनके बलकूं जाने नहीं ऐसे माता पिता देवकी वसुदेव दुःखित होतभये और नन्द वसुदेव दोनों पछितातभये हाय! हाय! क्यों मैं अक्रूर के कहे तें इन दोनों कों मथुरापुरी में लायो घरमें पकरिके कोठरी में मूंदि क्यों न राखे ऐसे नन्दजी पछितात भये १८ अनेक प्रकार के जे कुश्ती के दाँव पेंच है तिन सूं श्रीकृष्ण चाणूर जैसे आपुसमें लड़त भये तैसेही बलदेव और मुष्टिक लड़त भये १९ वज्रपातकी तुल्य कठोर भगवान् के अङ्ग परे तिन सूं चाणूरके अङ्ग चुरकुट होयगये तासूं अत्यन्त दुःखित होतभये २० शिकरा कैसो है वेग जाके ऐसो चाणूर दोनों हाथकी मुष्टि बाँधिके क्रोधमें भरि

क्रणयतोऽस्यनिशम्यवेणुम् ॥ निर्गम्यतूर्णमबलाःपथिभूरिपुण्याः पश्यन्तिसस्मितमुखंसदयावलोकम् १६ एवंप्रभाषमाणासुस्त्रीषुयोगेश्वरोहरिः ॥ शत्रुंहन्तुंमनश्चक्रे भगवान्भरतर्षभ १७ सभयाःस्त्रीगिरःश्रुत्वा पुत्रस्नेहशुचातुरौ ॥ पितरावन्वतप्येतां पुत्रयोरबुधौबलम् १८ तैस्तैर्नियुद्धविधिभिर्विविधैरच्युतेतरौ ॥ युयुधातेयथाऽन्योन्यं तथैवबलमुष्टिकौ १९ भगवद्गात्रनिष्पातैर्वज्रनिष्पेषनिष्ठुरैः ॥ चाणूरोभज्यमानाङ्गोमुहुर्ग्लानिमवापह २० सश्येनवेगउत्पत्यमुष्टीकृत्यकरावुभौ ॥ भगवन्तंवासुदेवंक्रुद्धोवक्षस्यबाधत २१ नाचलत्तत्प्रहारेण मालाहतइवद्विपः ॥ बाह्वोर्निगृह्यचाणूरं बहुशोभ्रामयन्हरिः २२ भूपृष्ठेपोथयामास तरसाक्षीणजीवितम् ॥ विस्रस्ताकल्पकेशस्रगिन्द्रध्वजइवापतत् २३ तथैवमुष्टिकःपूर्वं स्वमुष्ट्याभिहतेनवै ॥ बलभद्रेणबलिना तलेनाभिहतोभृशम् २४ प्रवेपितःसरुधिरमुद्वमन्मुखतोऽर्दितः ॥ व्यसुःपपातोर्व्युपस्थे वाताहतइवाङ्घ्रिपः २५ ततःकूटमनुप्राप्तं रामःप्रहरतांवरः ॥ अवधील्लीलयाराजन् सावज्ञंवाममुष्टिना २६ तर्ह्येवहिशलःकृष्णपदापहतशीर्षकः ॥ द्विधाविदीर्णस्तोशलकउभावपिनिपेततुः २७ चाणूरेमुष्टिकेकूटे शले

के ऊपरकू उछरिके भगवान् वासुदेव की छाती में मारतभयो २१ जैसे हाथी फूलनकी मालाकी चोट से नहीं डिगे है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र चाणूर की मुष्टि के मारे न डिगत भये हरि श्रीकृष्ण चाणूर के दोनों हाथ पकरि के बहुत घुमाइ कै वेग करिके पृथ्वी में पटकतभये चीण भयो है जीवन जाको शिथिलभये हैं आभूषण बार और माला जाके ऐसो चाणूर जैसे गौड़देशमें प्रसिद्ध इन्द्रध्वजा गिरे है तैसे गिरत भयो २२। २३ ताही प्रकार पहिले मुष्टि जिनके लगी ऐसे बलदेवजी ने थाप जाके मारी ऐसो मुष्टिक कम्पित होय मुखते रुधिर कूं वमन करत पीड़ित हो के प्राण जाके निकसि गये जैसे पवनको मारो वृक्ष उखरि परे है ता प्रकार गिरतभयो २४।२५ हे राजन् परीक्षित! ता पीछे आयो जो कूट मल्ल है ताकूं मारनवारेन में श्रेष्ठ बलदेवजी लीला करिके बाई मुष्टिसूं अवज्ञाकरिके मारतभये २६ शल तोशलने विचारी दण्डवत् के मिपसूं पाव पकरिके पटकि देंगे परन्तु सबके बाहर भीतरकी जाननवारे हैं जा समय दण्डवत् करिवेकों आये तासमय मारी जो लात तासू शिर फटिगयो ऐसो शल और तोशल दो टूक विदीर्ण होइकै दोनों पृथ्वी में गिरतभये २७ चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये मुख्य मल्ल जब मरिचुके ता पीछे और सब मल्ल अपने प्राण बचायवे के

लिये भाजत भये २८ बराबर के गोपन कों अखाड़े में खैंचिकै नगाड़े वजें नृत्यादिक को करें पांवनमें नूपुर जिनके वजे ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव गोपनके सङ्ग मिलिकै विहार करतभये २९ श्रीकृष्णचन्द्र और बलदेवजी के चरित्र देखिकै कंस के विना सम्पूर्ण जन प्रसन्न होतभये ब्राह्मण जिनमें मुख्य ऐसे सज्जनपुरुष भले भले ऐसे कहिकै स्तुति करतभये ३० बड़े बड़े मल्ल मरिगये कितनेऊ भाजिगये तब भोजवंशीनको राजा कंस नगाड़े थमाय देतभयो और यह वचन बोलो ३१ खोटे जिनके कर्म्म ऐसे वसुदेव के बेटानकूं पुरते बाहर निकासि देउ और इनको धन छिनाइ लेउ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसे नन्दको बाधिलेउ ३२ खोटीहै बुद्धि जाकी ऐसे असाधु वसुदेवकूं जल्दी मारो शत्रुन में मिलिरह्यो ऐसे पिता उग्रसेन कूं टहलुआन सहित बाधिलेउ ३३ या प्रकार कंस जब बकन लग्यो तब बड़ो क्रोध जिनके भयो ऐसे अव्यय भगवान् धीरेसूं उछरिकै ऊंचे मंचानपै चढ़तभये ३४ धैर्यवान् कंस है सो चली आवै ऐसी जो अपनी मृत्युहै ताकूं देखिकै आसन

तोशलकेहते ॥ शेपाःप्रदुद्रुवुर्मल्लाः सर्वेप्राणपरीप्सवः २८ गोपान्वयस्यानाकृष्य तैःसंसृज्यविजह्रतुः ॥ वाद्यमानेपुतूर्येपुवल्गन्तौरुनन्नूपुरौ २९ जनाः प्रजहृषुःसर्वे कर्मणारामकृष्णयोः ॥ ऋतेकंसंविप्रमुख्याः साधवःसाधुसाध्विति ३० हतेपुमल्लवर्य्येपु विद्रुतेपुचभोजराट् ॥ न्यवारयत्स्वतूर्य्याणि वाक्यंचेदमुवाचह ३१ निःसारयतदुर्वृत्तौ वसुदेवात्मजौपुरात् ॥ धनंहरतगोपानां नन्दंबध्नीतदुर्म्मतिम् ३२ वसुदेवस्तुदुर्म्मेधा हन्यतामाश्वऽसत्तमः ॥ उग्रसेनःपिताचापि सानुगःपरपक्षगः ३३ एवंविकत्थमानेवै कंसेप्रकुपितोऽव्ययः ॥ लघिम्नोत्पत्यतरसा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् ३४ तमाविशन्तमालोक्य मृत्युमात्मनआसनात् ॥ मनस्वीसहसोत्थाय जगृहेसोऽसिचर्म्मणी ३५ तंखड्गपाणिंविचरन्तमाशु श्येनंयथादक्षिणसव्यमम्बरे ॥ समगृहीतदुर्विपहोग्रतेजायथोरगंतार्क्ष्यसुतःप्रमह्य ३६ प्रगृह्यकेशेपुचलत्किरीटं निपात्यरङ्गोपरितुङ्गमञ्चात् ॥ तस्योपरिष्टात्स्वयमब्जनाभः पपातविश्वाश्रयआत्मतन्त्रः ३७ तंसंपरेतंविचकर्षभूमौ हरिर्यथेभंजगतोविपश्यतः ॥ हाहेतिशब्दःसुमहांस्तदाऽभूदुदीरितःसर्वजनैर्नरेन्द्र ३८ सनित्यदोद्विग्नधियातमीश्वरं पिबन्वदन्वाविचरन्स्वपञ्छ्वसन् ॥ ददर्शचक्रायुधमग्रतोयतस्तदेवरूपंदुरवापमाप ३९ तस्यानुजाभ्रातरोऽष्टौ कङ्कन्यग्रोधकादयः ॥ अभ्यधावन्नभिक्रुद्धाभ्रातुर्निर्वेशका

से उठिकै ढाल तलवार लेत भयो ३५ तलवार हाथमें लैके आकाश में जैसे शिकरा पक्षी डोलै है तैसे दाई बाई ओर जल्दी जल्दी फिरै जो कंस है ताय सहारिवे में न आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तार्क्ष्य को पुत्र गरुड़ जैसे सर्पकूं पकरिलेइ है तैसे पकरतभये ३६ हलो है किरीटमुकुट जाको ऐसो जो कंस है ताके केशनकों पकरिकै ऊंचे मंचानपै तें रंगभूमि में पटकि के कमल है नाभिमें जिनके सम्पूर्ण विश्व जिनके उदर में अपने अधीन ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कंस के ऊपर कूदत भये ३७ सिंह जैसे हाथीकूं खींचे है तैसे सब जगत् के देखत मृत्युभयो जो कंसहै ताकूं पृथ्वी में घसीटत भये हे नरन के राजा परीक्षित्! ता समय समस्त प्रजान के बड़ो हाहाकार शब्द होतभयो ३८ कंस प्रतिदिन चलायमान चित्तसूं जल पीवत बात कहत मार्गे चलत सोवत श्वास लेत चक्रहै आयुध जिनके ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण के दुःख से प्राप्त होनेवाले स्वरूपकूं पावत भयो ३९ ता कंस के कङ्क न्यग्रोध सूं आदि लैके छोटे भय्या अत्यन्त क्रोध करिकै भय्या कंसको बदलो लेवे के

लिये दौरिके आवत भये ४० रोहिणी के सुत बलदेव जी ताही समय क्रोध करिके हाथनमें शस्त्र लैके आये जे कंस के भय्या हैं तिनकूं सिंह जैसे पशून कूं मारे तैसे बेडान कों उठायके मारत भये ता समय आकाश में नगाड़े बाजतभये भगवान् की विभूति ब्रह्मा महादेवकों आदि लैके जे देवता हैं ते प्रसन्न होयकै श्रीकृष्ण के ऊपर पुष्पनकी वर्षा करिके स्तुति करतभये स्त्री नृत्य करत भई ४१।४२ हे महाराज ! पति के मरणसूं अतिदुःखित आँसू आँखिन में जिनके आइ गये ऐसी जे कंसकी स्त्री हैं ते शिरनकूं कूटत जहाँ उनकी लोथि परीही तहाँ आवति भई ४३ वीरशय्या में परे जे पति हैं तिनकूं आलिंगन करिकै शोकातुर जे स्त्री हैं ते वारंवार आँखिन में ते आँसू वहायकै पुकारि पुकारि के विलाप करति भई ४४ हा नाथ! हे प्यारे! हे धर्म्म के जाननवारे! हे करुणानाथ! हे वत्सल! तुम आप मरि के घरवार सहित बालकवारेन सहित हमकों क्यों मारि गये या प्रकार विलाप करत भई ४५ हे पुरुषनमें श्रेष्ठ! तुम विना हम रण्डा होइ कै सुन्दर नहीं लगे हे ऐसे तुम पति विना

रिणः ४० तथाऽतिरभसांस्तांस्तु संयत्तान्रोहिणीसुतः ॥ अहन्परिघमुद्यम्यपशूनिवमृगाधिपः ४१ नेदुर्दुन्दुभयोव्योम्नि ब्रह्मेशाद्याविभूतयः ॥ पुष्पैःकिरन्तस्तंप्रीत्या शशंसुर्ननृतुःस्त्रियः ४२ तेषांस्त्रियोमहाराज सुहृन्मरणदुःखिताः ॥ तत्राभीयुर्विनिघ्नन्त्यः शीर्षाण्यश्रुविलोचनाः ४३ शयानान्वीरशय्यायां पतीनालिङ्ग्यशोचतीः ॥ विलेपुःसुस्वरंनार्योविसृजन्त्योमुहुःशुचः ४४ हानाथप्रियधर्मज्ञ करुणानाथवत्सल ॥ त्वयाहतेननिहतावयन्तेसगृहप्रजाः ४५ त्वयाविरहितापत्या पुरीयंपुरुषर्षभ ॥ नशोभतेवयमिव निवृत्तोत्सवमङ्गला ४६ अनागसांत्वंभूतानां कृतवान्द्रोहमुल्बणम् ॥ तेनेमांभोदशांनीतोभूनध्रुक्कोलभेतशम् ४७ सर्वेषामिहभूतानामेषहिप्रभवाप्ययः ॥ गोप्ताचतदवध्यायी नक्कचित्सुखमेधते ४८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ राजयोषितआश्वास्य भगवाल्लोँकभावनः ॥ यामाहुर्लौकिकींसंस्थां हतानांसमकारयत् ४९ मातरंपितरंचैव मोचयित्वाऽथबन्धनात् ॥ कृष्णरामौववन्दाते शिरसास्पृश्यपादयोः ५० देवकीवसुदेवश्च विज्ञायजगदीश्वरौ ॥ कृतसंवन्दनौपुत्रौ सस्वजातेनशङ्कितौ ५१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकंसवधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

मथुरापुरी भी सुन्दर नहीं लगे है सम्पूर्ण मंगल उत्सव जामें तें दूर होइ रहे हैं तथापि उनकों ऐसी ही दिखाई देत है ४६ निरपराध प्राणीन तें तुम वड़ो द्रोह करत भये ताते तुम्हारी यह दशा भई है जो मरे परे हौ प्राणीन तें वैर करिके कौन पुरुष सुख पावै है ४७ या संसार में समस्त प्राणीन को उत्पत्तिकर्त्ता नाशकर्त्ता पालनकर्त्ता यह कृष्णही है याकी जो पुरुष अवज्ञा करै वह सुख नहीं भोगे है ४८ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! लोकनके पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र राजा कंस की स्त्रीन को समझाय मरे हैं तिनकी दाहादिक क्रिया करावत भये ४९ माता पिता देवकी वसुदेव कूं कंसके वन्दीखाने तें छुटावत भये राम कृष्ण दोनों भय्या माता पिता के चरणनमें शिर लगाय कै प्रणाम करत भये ५० देवकी वसुदेव प्रणाम जिनने करी ऐसे पुत्रन कूं जगत् के ईश्वर मानिके भयभीत होयकै नहीं मिलत भये ५१ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकंसवधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥ ❀ ॥

(पञ्चचत्वारिंशकेऽथपितृनन्दादिसान्त्वनम् ॥ उग्रसेनाभिषेकश्च गुरोर्वासात्पुरागमः १ पैंतालीसवें अध्यायमें वसुदेव देवकी और नन्दादिकों को कृष्णजी समझाकर उग्रसेनजीका अभिषेक कर सान्दीपनि गुरुजीके यहा रहकर वहा सों मथुरापुरी में आगमन वर्णन है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! पुरुषनमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णचन्द्र माता पितान कूं अपनो न भयो मानिके मोकूं परमेश्वर मति जानो जननको मोहन करनवारी अपनी मायाकूं फैलावतभये हमकों पुत्र मानिकै अभी संसारके सुख भोगे नहीं हैं पहिलेही ये परमेश्वरहैं यह ज्ञान इनकूं होइ आयोहै मैं प्रसन्नभये तब इनको ज्ञान कहा दुर्लभहै मो में पुत्रभाव करिकै जो प्रेम करनो है सो दुर्लभहै याते अभी ये परमेश्वरहैं ये इनकों ज्ञान मो में न होय या लिये अपनी माया फैलावतभये १ यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण बलदेवजीकूं संग लैके माता पिताकेपास आवतभये विनयपूर्व्वक नमिकै हे माता! हे पिता ! ऐसे आदरपूर्व्वक प्रसन्न होयके बोलतभये २ हे पिता ! सर्व्वदा तुम्हारे चाहनाही बनीरही

श्रीशुकउवाच ॥ पितरावुपलब्धार्थौ विदित्वापुरुषोत्तमः ॥ माभूदितिनिजांमायां ततानजनमोहिनीम् १ उवाचपितरावेत्यसाग्रजःसात्वतर्षभः ॥ प्रश्रयावनतःप्रीणन्नम्बतातेतिसादरम् २ नास्मत्तोयुवयोस्तात नित्योत्कण्ठितयोरपि ॥ बाल्यपौगण्डकैशोराः पुत्राभ्यामभवन्क्वचित् ३ नलब्धोदैवहतयोर्वासोनौभवदन्तिके ॥ यांबालाःपितृगेहस्थाविन्दन्तेलालितामुदम् ४ सर्वार्थसम्भवोदेहोजनितःपोषितोयतः ॥ नतयोर्यातिनिर्वेशं पित्रोर्मर्त्यःशतायुषा ५ यस्तयोरात्मजःकल्पआत्मनाचधनेनच ॥ वृत्तिंनदद्यात्तंप्रेत्य स्वमांसंखादयन्तिहि ६ मातरंपितरंवृद्धं भार्य्यांसाध्वींसुतंशिशुम् ॥ गुरुंविप्रंप्रपन्नञ्च कल्पोबिभ्रच्छ्वसन्मृतः ७ तन्नावकल्पयोःकंसान्नित्यमुद्विग्नचेतसोः ॥ मोघमेतेव्यतिक्रान्तादिवसावामनर्चतोः ८ तत्क्षन्तुमर्हथस्तात मातर्नौपरतन्त्रयोः ॥ अकुर्वतोर्वांशुश्रूषां क्लिष्टयोर्दुर्हृदाभृशम् ९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिमायामनुष्यस्य हरेर्विश्वात्मनोगिरा ॥ मोहितावङ्कमारोप्य परिष्वज्यापतुर्मुदम् १० सिञ्चन्तावश्रुधाराभिः स्नेहपाशेनचावृतौ ॥ नकिञ्चिदूचतूराजन्बाष्पकण्ठौविमोहितौ ११ एवमाश्वास्यपितरौ भगवान्देवकीसुतः ॥ मा

हम पुत्रनतें बाल्यअवस्था पौगण्डअवस्था किशोरअवस्थाके सुख कभऊ तुमकों न होतभये ३ दैवके मारे हमहैं तुम्हारे निकट वासहू न करिसके पिताके घरमें बालकरहे हैं लालन पालनहोइहै आनन्दको पावे हैं हमको कछुओ प्राप्त न भयो ४ धर्म्म अर्थ काम मोक्ष सब पदार्थ जाते होइं ऐसो यह देह जिन माताने उत्पन्न कियो उनकी यह मरणधर्म्मा मनुष्य सौवर्ष सेवाकरे तथापि उऋण नहीं होइहै ५ जो पुत्र समर्थ होइ के देहसूं अथवा धनते माता पिताकूं जीविका नहीं देवै वाको परलोकमें यमके दूत वाको मांस वाही कूं काटि काटि के खवावे हैं ६ माता पिता वृद्ध सुशीला स्त्री पुत्र बालक गुरु ब्राह्मण और जो कोई शरण आयो है इनको जो समर्थ मनुष्य भरण पोषण न करै तो वह मरे तुल्य है ७ असमर्थ कंस के भय के मारे नित्य है चञ्चल मन जिनको ऐसे हम हैं ता कारण तुम्हारी सेवा विनाकरे हमारे इतने दिन व्यर्थ बीतगये ८ हे पिता ! हे माता ! परारे अधीन याते तुम्हारी सेवा न करी दुष्ट जाको हृदय ऐसे कंससूं अत्यन्त दुःखित हमहैं तिनपर तुम क्षमा करिवेकूं योग्यहौ ९ या प्रकार माया करिके मनुष्यरूप जिनने धर्यो ऐसे विश्वके आत्मा हरि हैं तिनके वचननसूं मोहित होयके देवकी वसुदेव पुत्रकों गोदमें बैठायके आलिंगन करिके आनन्द कूं

पावतभये १० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! स्नेह के रससानते बँधे मोहित होयगये ऐसे देवकी वसुदेव हैं ते नेत्रन ते आंसुन की धारन ते कृष्ण वलदेव कूं भिजोवत कछु भी न वोलतभये ११ देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण या प्रकार माता पिता को समाधान करिके नाना जो उग्रसेन हैं तिनकों यदून को राजा करत भये १२ श्रीकृष्ण वोलत भये हे महाराज! हम तुम्हारी प्रजाहैं तिन कूं तुम आज्ञा करिवे कों योग्यहौ ययाति को शापहै यातें यादवन कों सिंहासन पै वैठिवो योग्य नहीं है राज्य करिवो योग्य नहीं है तुमहू यादवहौ मेरी आज्ञातें तुमकूं दोष नहीं है या प्रकार भगवान् कहत भये १३ मैं वृद्ध कहा अब राज्य करोंगो तहा श्रीकृष्ण कहे हैं मैं टहलुआ होयकै तुम्हारे पास रहूंगो वड़े वड़े देवादिक तुमकों भेंट देयँगे और राजा देयँगे यामें कहा कहनो है १४ कंस के डरके मारे भाजि गये ऐसे जो अपनी जाति के नाते गोते के सम्पूर्ण यदु वृष्णि अन्धक मधु दाशार्ह कुकुरादिक हैं तिनकों दिशान ते वुलायकै विदेश में जे वसे हैं तासूं

तामहंतूग्रसेनं यदूनामकरोन्नृपम् १२ आहचास्मान्महाराज प्रजाश्चाज्ञप्तुमर्हसि ॥ ययातिशापाद्यदुभिर्नासितव्यंनृपासने १३ मयिभृत्यउपासीने भवतो विबुधादयः ॥ बलिंहरन्त्यवनताःकिमुतान्येनराधिपाः १४ सर्वान्स्वान्ज्ञातिसम्बन्धान्दिग्भ्यःकंसभयाकुलान् ॥ यदुवृष्ण्यन्धकमधुदाशार्हकुकुरादिकान् १५ सभाजितान्समाश्वास्य विदेशावासकर्शितान् ॥ न्यवासयत्स्वगेहेषुवित्तैःसन्तर्प्यविश्वकृत् १६ कृष्णसङ्कर्षणभुजैर्गुप्तालब्धमनोरथाः ॥ गृहेषुरेमिरेसिद्धाःकृष्णरामगतज्वराः १७ वीक्षन्तोऽहरहःप्रीता मुकुन्दवदनाम्बुजम् ॥ नित्यंप्रमुदितंश्रीमत्सदयस्मितवीक्षणम् १८ तत्रप्रवयसोप्यासन् युवानोऽतिबलौजसः ॥ पिबन्तोऽक्षैर्मुकुन्दस्य मुखाम्बुजसुधांमुहुः १९ अथनन्दंसमासाद्य भगवान्देवकीसुतः॥ सङ्कर्षणश्चराजेन्द्र परिष्वज्येदमूचतुः २० पितर्युवाभ्यांस्निग्धाभ्यां पोषितौलालितौभृशम् ॥ पित्रोरभ्यधिकाप्रीतिरात्मजेष्वात्मनोऽपिहि २१ सपितासाचजननी यौपुष्णीतांस्वपुत्रवत् ॥ शिशून्बन्धुभिरुत्सृष्टानकल्पैःपोषरक्षणे २२ यातयूयंव्रजंतात वयंचस्नेहदुःखितान् ॥ ज्ञातीन्वोद्रष्टुमेष्यामोविधायसुहृदांसुखम् २३ एवंसान्त्वय्यभगवान् नन्दंसव्र

कृश होयरहे हैं ऐसे जे यादव हैं तिनको सत्कार करिके वहुत से धन दैके तृप्त करिके सव विश्वके करनवारे श्रीकृष्ण अपने अपने घरन में बसावत भये १५। १६ कृष्ण वलदेव की भुजान सों रक्षा जिनकी भई प्राप्तभये हैं मनोरथ जिनके ऐसे यादवन के श्रीकृष्ण वलदेव के दर्शनते गये हैं ताप जिनके ऐसे पूर्ण होयकै घरमें रमण करत भये प्रसन्न होयके यादव नित्य जामें आनन्द दया सहित जामें मुसिकानि चितवनि ऐसे मुकुन्द के मुखकों नित्य देखेहैं १७।१८ मुकुन्द के मुखकमल में अमृत है जो ताकूं नेत्रों सूं पीके ता समय कोई वृद्ध हैं तौ भी वड़ो जिनके वल ऐसे तरुण होतभये १९ याके पीछे हे राजन् परीक्षित्! भगवान् देवकी के पुत्र और वलदेवजी नन्दराय के पास आयकै मिलिकै यह वोलतभये २० हे पिता! तुम स्नेहीनने हमारो पोषण करयो वहुत लाड़ करयो माता पिताकों अपने पुत्रन में अधिक प्यार होयहै वही पिता है वही माताहै जो अपने पुत्रकी तुल्य पोषण करैं पोषण करिवे में जिनकी सामर्थ्य न भई ऐसे हमारे माता पिता ने हमकों वालकपने तेही छोड़ि दियोहै २१।२२ हे पिता! तुम व्रजकों जावो अपने सुहृदनकों सुख करिके स्नेहते दुःखित जो तुम ज्ञातिकेहौ तिने देखिवेको हम पीछे आवेंगे २३ याप्रकार अच्युत

भगवान् श्रीकृष्ण व्रजवासीन सहित नन्दरायजी कूं समझायकै वस्त्र आभूषण सोने चादी के वासन दैके वड़े आदरते पूजन करतभये २४ या प्रकार श्रीकृष्णको वचन सुनिकै नन्दरायजी श्रीकृष्ण वलदेव कों छाती तें लगायकै प्रेममें व्याकुल होयकै नेत्रनमें आसू भरि आये व्रजवासीनकों सङ्गलैके व्रजकों जात भये २५ याके पीछे हे राजन् परीक्षित् ! शूरके पुत्र वसुदेवजी ब्राह्मण पुरोहित वुलाय के पुत्रनको यथायोग्य द्विजन्मासंस्कार करावत भये २६ तिन अलंकृत ब्राह्मणन कों पूजनकर गौनें शृङ्गार करिके दक्षिणा देत भये रेशमी झूल जिन पै परी सोनेकी माला पहिरे ऐसी वछरान सहित दान करतभये २७ वड़े बुद्धिमान् वसुदेवजी कृष्ण रामके जन्मनक्षत्रके समय जिन गौवनको मनते दान करतभये कंसने अधर्म्म करिके हरिलीनी जे गौवें है तिनकी सुधि करिके दान करतभये २८ ता पीछे प्राप्तभये हैं संस्कार जिनके सुन्दर हैं व्रत जिनके ऐसे कृष्ण वलदेव द्विजन्मान को संस्कार पायकै यदुकुल के पुरोहित जो गर्गाचार्य्य हैं तिनसूं गायत्री को उपदेश

जगच्युतः ॥ वासोऽलङ्कारकुप्याद्यैरर्हयामाससादरम् २४ इत्युक्तस्तौपरिष्वज्यनन्दःप्रणयविह्वलः ॥ पूरयन्नश्रुभिर्नेत्रे सहगोपैर्व्रजंययौ २५ अथशूरसुतो राजन्पुत्रयोःसमकारयत् ॥ पुरोधसाब्राह्मणैश्च यथावद्द्विजसंस्कृतिम् २६ तेभ्योऽदाद्दक्षिणागावोरुक्ममाल्यःस्वलंकृताः ॥ स्वलंकृतेभ्यःसंपूज्य सवत्साःक्षौममालिनीः २७ याःकृष्णरामजन्मर्क्षेमनोदत्तामहामतिः॥ ताश्चाददादनुस्मृत्यकंसेनाधर्मतोहृताः २८ ततश्चलब्धसंस्कारौद्विजत्वंप्राप्यसुव्रतौ ॥ गर्गाद्यदुकुलाचार्य्याद्गायत्रंव्रतमास्थितौ २९ प्रभवौसर्वविद्यानांसर्व्वज्ञौजगदीश्वरौ ॥ नान्यसिद्धामलज्ञानंगूहमानौनरेहितैः ३० अथोगुरुकुलेवासमिच्छन्तावुपजग्मतुः ॥ काश्यंसान्दीपनिंनामह्यवन्तिपुरवासिनम् ३१ यथोपसाद्यतौदान्तौगुरौवृत्तिमनिन्दिताम् ॥ ग्राहयन्तावुपेतौस्मभक्त्यादेवमिवादृतौ ३२ तयोर्द्विजवरस्तुष्टः शुद्धभावानुवृत्तिभिः ॥ प्रोवाचवेदानखिलान्साङ्गोपनिषदोगुरुः ३३ सरहस्यंधनुर्वेदं धर्म्मान्न्यायपथांस्तथा ॥ तथाचान्वीक्षिकींविद्यांराजनीतिञ्चषड्विधाम् ३४ सर्वंनरवरश्रेष्ठौ सर्वविद्याप्रवर्त्तकौ ॥ सकृन्निगदमात्रेण तौसञ्जगृहतुर्नृप ३५ अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या संयतौतावतीः

लैके ब्रह्मचर्य्य व्रतमें रहतभये २९ समस्तविद्या जिनते होई याहीते सर्व्वज्ञ अर्थात् सव वातके जाननवारे सव जगत् के ईश्वर ऐसे जे कृष्ण वलदेव हैं ते स्वतःसिद्ध जो निर्म्मल ज्ञानहै ताय मनुष्यन की तुल्य चेष्टा करे हैं छिपावें है यज्ञोपवीत भये पीछे गुरुकुलमें वसिवे की इच्छा जिनके भई ऐसे कृष्ण वलदेव कश्यप जिनको गोत्र उज्जैनपुरी में वसें सान्दीपनि गुरु हैं तिनके पास जातभये ३० । ३१ इन्द्रिय जिनने जीती ऐसे कृष्ण वलदेव भले प्रकार गुरुनके पास जायके वड़ेआदर तें भक्तिपूर्व्वक जैसे नारायण को सेवन करे हैं ऐसे गुरु को सेवन करतभये ३२ शुद्धभाव सूं जो सेवे हैं तासूं सन्तुष्टभये ऐसे जो द्विजन्मान में श्रेष्ठ गुरुहैं ते श्रीकृष्ण वलदेवकूं शिक्षादिक अंगन सहित उपनिषद् सहित जो वेद हैं तिनकों पढ़ावत भये ३३ मन्त्र देवता को जो ज्ञानहै ता सहित शस्त्र चलायवे को जो धनुर्वेद है ताय और धर्म्मशास्त्र न्याय मीमांसादिकहैं तिनें और तर्कविद्याहै ताय और शत्रुते मिलाप करनो युद्ध करनो वाके ऊपर चढ़जानो समीप जायकै रहनो अपनी ओर फोरिलेनो मिलाप करनो यह छः प्रकारकी राजनीति है ताय पढ़तभये ३४ सम्पूर्ण मनुष्यन में उत्तमन में उत्तम सव विद्यानके चलावनवारे सावधान जो कृष्ण वलदेव सो हे राजन्

परीक्षित्! गुरुके विना वतायेही सब विद्यानकों पढतभये ३५ चौंसठ रात्रिन में गायवो बजायवो नृत्य करिवे सूं आदि लैके जो चौंसठ कला हैं तिनें सीखतभये जब विद्या पढि चुके तब हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण बलदेव दोनों भय्या गुरुते गुरुदक्षिणाकी आज्ञाकरो ऐसे कहतभये ३६ सान्दीपनि ब्राह्मण कृष्ण बलदेव की अद्भुत महिमा देखिके मनुष्यन में ऐसी चमत्कारी बुद्धि देखिकै स्त्री ने कही प्रभासक्षेत्रमें समुद्रमें डूबिके मरो जो मेरो पुत्रहै ताहि देउ यह वर मागो स्त्री के कहेते वही वर मांगतभये ३७ तथास्तु ऐसे अङ्गीकार करिकै बड़े हैं पराक्रम जिनके बड़ो रथ जिनको ऐसे कृष्ण बलदेव रथमें बैठिके प्रभासक्षेत्रमें समुद्रके किनारे पै जायके एक क्षणभर बैठतभये तब समुद्र कृष्ण बलदेव आये हैं यह जानिकै तिनकी पूजा लावतभयो ३८ तब भगवान् श्रीकृष्ण ता समुद्र ते कहतभये जो हमारे गुरुको बालक तैंने यहां बडी लहरन करि डुबायो है वो गुरुको पुत्र लायकै दे ३९ तब समुद्र बोल्यो हे देव अर्थात् प्रकाशमान कृष्ण! मैंने तो तुम्हारे गुरुको

कलाः ॥ गुरुदक्षिणयाऽऽचार्य्यंछन्दयामासतुर्नृप ३६ द्विजस्तयोस्तंमहिमानमद्भुतं संलक्ष्यराजन्नतिमानुषींमतिम् ॥ संमन्त्र्यपत्न्यासमहार्णवेमृतं बालंप्रभासेवरयाम्बभूवह ३७ तथेत्यथारुह्यमहारथौरथं प्रभासमासाद्यदुरन्तविक्रमौ ॥ वेलामुपव्रज्यनिषीदतुःक्षणंसिन्धुर्विदित्वाऽर्हणमाहरत्तयोः ३८ तमाहभगवानाशुगुरुपुत्रःप्रदीयताम् ॥ योऽसाविहत्वयाग्रस्तोबालकोमहतोर्मिणा ३९ ॥ समुद्रउवाच ॥ नैवाहार्षमहंदेवदैत्यःपञ्चजनोमहान् ॥ अन्तर्जलचरःकृष्ण शङ्खरूपधरोऽसुरः ४० आस्तेतेनाहृतोनूनं तच्छ्रुत्वासत्वरंप्रभुः ॥ जलमाविश्यतंहत्वा नापश्यदुदरेऽर्भकम् ४१ तदङ्गप्रभवंशङ्खमादायरथमागमत् ॥ ततःसंयमनींनाम यमस्यदयितांपुरीम् ४२ गत्वाजनार्दनःशङ्खं प्रदध्मौसहलायुधः ॥ शङ्खनिर्ह्रादमाकर्ण्य प्रजासंयमनोयमः ४३ तयोःसपर्य्यांमहतीं चक्रेभक्त्युपबृंहिताम् ॥ उवाचावनतःकृष्णं सर्वभूताशयालयम् ॥ लीलामनुष्यहेविष्णोयुवयोःकरवामकिम् ४४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गुरुपुत्रमिहानीतंनिजकर्म्मनिबन्धनम् ॥ आनयस्वमहाराज मच्छासनपुरस्कृतः ४५ तथेतितेनोपानीतं गुरुपुत्रंयदूत्तमौ ॥ दत्त्वास्वगुरवेभूयोवृणीष्वेतितमूचतुः ४६

पुत्र नहीं डुबायो है मेरे भीतर रहनवारो शङ्खरूप कों धरे ऐसो बड़ो दैत्य है वह हरि लैगयो है निश्चय वाके पास है यह सुनिके समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रतासूं जल में धसिके पञ्चजन दैत्य कूं मारिकै वाके पेटमें बालक कूं नहीं देखतभये ४० । ४१ ता दैत्य के अंगमें ते निकसो जो शङ्ख है ताकूं लैके श्रीकृष्ण रथ पै आवत भये यमराजकी अतिप्यारी सयमनी पुरी है तामें आवत भये ४२ तहा जायकै बलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र शङ्ख बजावत भये प्रजाकों दण्ड देनवारो धर्म्मराज शङ्ख को शब्द सुनिकै कृष्ण बलदेव की भक्तिपूर्व्वक पूजा करत भयो सब प्राणीन के हृदयमें विराजमान जो कृष्ण तिनसों हाथ जोरिकै यह बोलतभयो हे विष्णु भगवान्! लीला करिकै तुम मनुष्यरूप हौ तुम्हारी कहा सेवा करौं ४३ । ४४ अब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे महाराज! यहां गुरुको पुत्र तू लेआयो है ताको देउ तब यमराज ने कही अपने कर्म्मन तें बँधो परो है कैसे लाऊँ तब श्रीकृष्ण कहेहैं मेरी आज्ञा भई मेरी आज्ञातें कर्म्म जोरावर नहीं है ४५ जो आज्ञा ऐसे कहिकै यमराज ने लाय दियो जो गुरुको पुत्रहै ताको यादवन में उत्तम जो कृष्ण बलदेवहैं ते अपने गुरुकों देके और वरमागो ऐसे कहत भये ४६

तब गुरु कहतभये हे पुत्र ! तुमने गुरुसेवा भलेप्रकार करी तुम सारिसेन को गुरु में भयो मेरे कौन बातकी चाहना बाकी रही ४७ हे वीरो ! तुम अपने घर कों जावो या लोक में और परलोक में तुम्हारी पवित्र कीर्त्ति होउ तुम्हारे वेद हैं ते नवीन पढेभये स्फुरण बने रहैं ४८ या प्रकार गुरुने आज्ञा जिनकों दीनी ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव दोनों अथवा पवनकी तुल्य शीघ्र चलैं मेघकी तुल्य जाकी गर्जन ऐसे रथमें बैठिके हे राजन् परीक्षित् ! अपने पुर कू आवतभये ४९ राम कृष्ण भगवान् बहुत दिन तें नहीं देखे ऐसी प्रजा अब दर्शन करिकै बड़े आनन्द कों प्राप्त होतभये जैसे गयो धन मिलिवे सू आनन्द होय तैसे आनन्द होत भयो ५० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगुरुपुत्रानयनंनामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥ * ॥ * ॥

(षट्चत्वारिंशकेवोपगुद्धवंप्रेष्यतद्गिरा ॥ यशोदानन्दयोश्चक्रेकृष्णःशोकापनोदनम् १ कामचारंद्विजातिःसन्परित्यज्यातिसंयतः ॥ गुरोर्ज्ञानमनुप्राप्यसखागोपीरुपाविशत् २ छियालीसवें

गुरुरुवाच ॥ सम्यक्सम्पादितोवत्सभवद्भ्यांगुरुनिष्क्रयः ॥ कोनुयुष्मद्विधगुरोः कामानामवशिष्यते ४७ गच्छतंस्वगृहंवीरौ कीर्त्तिर्वामस्तुपावनी ॥ छन्दांस्ययातयामानिभवन्त्विहपरत्रच ४८ गुरुणैवमनुज्ञातौ रथेनानिलरंहसा ॥ आयातौस्वपुरंतात पर्जन्यनिनदेनवै ४९ समनन्दन्प्रजाःसर्वादृष्ट्वाराम जनार्दनौ ॥ अपश्यन्त्योबह्वहानिनष्टलब्धधनाइव ५० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगुरुपुत्रानयनंनामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ वृष्णीनांप्रवरोमन्त्री कृष्णस्यदयितःसखा ॥ शिष्योबृहस्पतेःसाक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमः १ तमाहभगवान्प्रेष्ठं भक्तमेकान्तिनंक्वचित् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रपन्नार्त्तिहरोहरिः २ गच्छोद्धवव्रजंसौम्य पित्रोर्नौप्रीतिमावह ॥ गोपीनांमद्वियोगाधिं मत्सन्देशैर्विमोचय ३ तामन्मनस्कामत्प्रा णामदर्थेत्यक्तदैहिकाः ॥ येत्यक्तलोकधर्माश्च मदर्थेतान्बिभर्म्यहम् ४ मयिताःप्रेयसांप्रेष्ठे दूरस्थेगोकुलस्त्रियः ॥ स्मरन्त्योऽङ्गविमुह्यन्तिविरहौत्कण्ठ्य विह्वलाः ५ धारयन्त्यतिकृच्छ्रेण प्रायःप्राणान्कथञ्चन ॥ प्रत्यागमनसन्देशैर्बल्लव्योमेमदात्मिकाः ६ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तउद्धवोराजन् सन्देशंभर्त्तुराहृ

अध्याय में कृष्णजी उद्धवजी को गोकुल में पठाकर यशोदा और नन्दजी के शोक को दूर करदेतेभये १ और अत्यन्तसंयत होकर जनेऊ होजाने पर कामचार को छोड़कर गुरुते ज्ञानको प्राप्त होकर मित्र उद्धव को गोपियों के यहा प्रवेश करातेभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के प्यारे मन्त्री सखा साक्षात् बृहस्पति के शिष्य बुद्धिमानन में श्रेष्ठ जो उद्धव जी हैं १ शरणागतन के दुःख दूर करनवारे मनोहर भगवान् श्रीकृष्ण प्यारे एकान्ती भक्त उद्धवजी सूं एकान्त में हाथ पकरि के बोलतभये २ हे उद्धव ! हे साधु ! तुम व्रजकों जावो हमारे पिता माता कों प्रसन्न करो और गोपीनकों मेरे बिछुरिवे में कष्ट भयो है ताय मेरो सन्देश ले जायके दूरकरो ३ मेरे विषे जिनके मन और प्राण लगि रहे हैं मेरे अर्थ पति पुत्रादिक त्यागि दिये हैं मैं ही प्यारो जिनको आत्मा हूं मोमें मन करिके रहे हैं मेरे लिये या लोक परलोक के सुखन के उपाय जिनने त्यागि दिये है तिनकूं मैं सुख देऊं हूं ४ प्यारेन को प्यारो मैं जब ते दूरआयो हौं तबसे वे गोकुलकी स्त्री हे उद्धव ! मेरी सुधि करिके विरहमें जो मेरी चाह होइहै तासूं बेबश होयकै मोहित होय जायँ है ५ मेरी प्यारी मोहीं में जिनके मन वे गोपी गोकुलमें

कृष्णचन्द्रके सन्देशेकूं लैके रथ में बैठिकै नन्दरायजी के गोकुलकू जातभये ७ सूर्यास्तसमय सुन्दर जो नन्दरायजीको व्रजहै तामें प्राप्त होतभये सन्ध्यासमय गौ जो आवें तिनके खुरनसों रेणु जो उड़ी हैं तासू उद्धवजी को रथ ढकिगयो ८ पुष्पवती गौवनके लिये चारोंओर युद्धकरै ऐसे मतवारे बैल वहां बहुतहैं तिनको शब्द जहां होयरह्यो है ऐनके बोझन तें ब्याई गौ दौरिदौरि के अपने बछरानके पास जो आवेहैं तिनसों शोभायमान व्रज है ६ जहां तहां सफेद गौवन के बछरा फुदकत डोले हैं गौवनके दुहिवे को शब्द जहां होयरह्यो है अर्थात् जा समय दोहा दोहनी कों घोंटन पै धरिकै दुहैं ता समय छुरछुर होयहै जब आधीसी दोहनी होय आवै तब घरंघरं होयहै मुँहताई भरिआवै तब घम्म घम्म होयहै और कोई कहे है बछरा छोडो कोई कहे है दोहनी लावो कोई कहे है लेउ कोई कहे है

प्राप्तोनन्दव्रजंश्रीमान्निम्लोचतिविभावसौ ॥ छन्नयानःप्रविशतां पशूनांखुररेणुभिः ८ वासितार्थेऽभियु तः ॥ आदायरथमारुह्य प्रययौनन्दगोकुलम् ७ ध्वद्भिर्नादितंशुष्मिभिर्वृषैः ॥ धावन्तीभिश्चवास्राभिरूधोभारैःस्ववत्सकान् ६ इतस्ततोविलङ्घद्भिर्गोवत्सैर्मण्डितंसितैः ॥ गोदोहशब्दाभिरवैर्वेणूनांनिःस्व नेनच १० गायन्तीभिश्चकर्म्माणि शुभानिबलकृष्णयोः ॥ स्वलंकृताभिर्गोपीभिर्गोपैश्चसुविराजितम् ११ अग्न्यर्कातिथिगोविप्रपितृदेवार्चनान्वितैः ॥ धूपदीपैश्चमाल्यैश्च गोपावासैर्मनोरमम् १२ सर्व्वतःपुष्पितवनं द्विजालिकुलनादितम् ॥ हंसकारण्डवाकीर्णैःपद्मषण्डैश्चमण्डितम् १३ तमागतंसमागम्य कृष्णस्यानुचरंप्रियम् ॥ नन्दःप्रीतःपरिष्वज्य वासुदेवधियार्चयत् १४ भोजितंपरमान्नेन संविष्टंकशिपौसुखम् ॥ गतश्रमंपर्य्यपृच्छत्पादसंवाहनादिभिः १५ कच्चिदङ्गमहाभाग सखानःशूरनन्दनः ॥ आस्तेकुशल्यपत्याद्यैर्युक्तोमुक्तःसुहृद्वृतः १६ दिष्ट्याकंसोहतःपापः सानुगःस्वेनपाप्मना ॥ साधूनांधर्म्मशीला नां यदूनांद्वेष्टियःसदा १७ अपिस्मरतिनःकृष्णोमातरंसुहृदःसखीन् ॥ गोपान्व्रजंचात्मनाथं गावोवृन्दावनंगिरिम् १८ अप्यायास्यतिगोविन्दःस्व

देउ ऐसो शोर जहां होयरह्यो है बांसुरी बजैं तिनको शब्द जहां होयरह्योहै तासूं वह व्रज शोभायमानहै १० बलदेव श्रीकृष्णके मङ्गलरूप कर्मनकूं गावैं ऐसी बनीठनी गोपी और गोपहैं तिनसों व्रज शोभायमान है ११ अग्नि सूर्य्य अभ्यागत गौ ब्राह्मण पितृ देवता इनके पूजनकी सामग्री जहां धरी हैं धूप होय रही दीवा जिनमें बरैं फूल जिनमें धरे ऐसे जे गोपन के घरहैं तिनसों वह व्रज मनोरमहै १२ सब ओर ते फुलवारी जामें फूलिरही पक्षी बोलैं भौंरा गुञ्जैं राजहंस कारण्डव पक्षी जिनमें बैठे ऐसे कमलनके समूह तिनसों वह व्रज शोभायमानहै १३ श्रीकृष्णके प्यारे अनुचर उद्धवजी हैं तिनकों आये जानि कै नन्दरायजी प्रसन्न होयकै मिलतभये कृष्ण के पास ते आये हैं यह जानिकै पूजन करत भये १४ परमश्रेष्ठ सामग्रीन को भोजन करायकै शय्यापै सुखपूर्व्वक पौढायकै चरण दाबिकै मार्गको खेद मिटायकै उद्धवजी तें नन्दरायजी पूंछतभये १५ कृष्णकी कुशल पूंछिवे में आसूनसों कण्ठ रुकिजायगो यह शङ्का विचारिकै प्रथम वसुदेवजी की कुशल पूंछेहैं हे वड़भागी उद्धव! शूरके पुत्र हमारे सखा वसुदेव लरिकाबारेन सहित कहा कुशलपूर्व्वक हैं कंसके बन्दीखाने तें छूटे हैं भय्या बन्धु हितकारी जाके पास हैं १६ पापी कंस सम्पूर्ण

टहलुआन सहित अपने पापन तें मरयो यह बडो मङ्गल भयो धर्म्ममें जिनको स्वभाव ऐसे जे साधु यादव है तिनसूं कंस सर्व्वदा वैर करे हो १७ हे उद्धवजी ! वह कृष्ण कभऊं हमारी और अपनी माता की सुधि करे है सुहृद् सखा गोप हैं तिनकी सुधि करे है आपुही जाकी रक्षा करनवारो या व्रजकी सुधि करे है गौ वृन्दावन गोवर्द्धन पर्व्वतकी कभऊं सुधि करे है १८ गौवनके हित को करनवारो कृष्ण जब कभऊं अपने भय्या बन्धूनके देखिवेकों आवेगो ता समय सुन्दर जामें नासिका सुन्दर मुसिकानि चितवनि ऐसे वाके मुखकूं देखेंगे १९ दावाग्नि तें पवन तें इन्द्र की वर्षा तें विष सर्प्प तें अघासुर तें और बडी २ मृत्युनं तें महात्मा कृष्ण ने हमारी रक्षाकरी २० हे उद्धवजी ! श्रीकृष्ण के पराक्रमन की लीलापूर्व्वक कटाक्षभरी चितवनि की हँसानि की बोलनि की जब सुधि करे हैं तब हमारी सम्पूर्ण क्रिया शिथिल होय जाय है २१ मुकुन्द के चरणन के खोज जिनमें परे ऐसी नदी पर्व्वत वन में स्थान हैं तिनें और वाके खेलिबे के स्थान हैं तिनें जब देखे हैं तब हमारो मन कृष्णमय होय जाय है २२ देवतान के कार्य्य करिवे के निमित्त या संसार में आये जे कृष्ण हैं तिनें देवतान में उत्तम मानूं हूं बड़ो गम्भीर गर्गाचार्य्य को वचनहू ऐसे

जनान्सकृदीक्षितुम् ॥ तर्हिद्रक्ष्यामतद्वक्त्रं सुनसंसुस्मितेक्षणम् १९ दावाग्नेर्वातवर्षाच्चविषसर्प्पाच्चरक्षिताः ॥ दुरत्ययेभ्योमृत्युभ्यःकृष्णेनसुमहात्मना २० स्मरतांकृष्णवीर्य्याणिलीलाऽपाङ्गनिरीक्षितम् ॥ हसितंभाषितंचाङ्गसर्व्वानःशिथिलाःक्रियाः २१ सरिच्छैलवनोद्देशान्मुकुन्दपदभूषितान् ॥ आक्रीडानीक्षमाणानां मनोयातितदात्मताम् २२ मन्येकृष्णञ्चरामञ्च प्राप्ताविहसुरोत्तमौ ॥ सुराणांमहदर्थाय गर्गस्यवचनंयथा २३ कंसंनागायुतप्राणं मल्लौगजपतिंतथा ॥ अवधिष्टांलीलयैव पशूनिवमृगाधिपः २४ तालत्रयंमहासारंधनुर्यष्टिमिवेभराट् ॥ बभञ्जैकेनहस्तेन सप्ताहमदधाद्गिरिम् २५ प्रलम्बोधेनुकोऽरिष्टस्तृणावर्त्तोबकादयः ॥ दैत्याःसुरासुरजितोहतायेनेहलीलया २६ श्रीशुकउवाच ॥ इतिसंस्मृत्यसंस्मृत्य नन्दःकृष्णानुरक्तधीः ॥ अत्युत्कण्ठोभवत्तूष्णींप्रेमप्रसरविह्वलः २७ यशोदावर्ण्यमानानि पुत्रस्यचरितानिच ॥ शृण्वन्त्यश्रूण्यवास्राक्षीत्स्नेहस्नुतपयोधरा २८ तयोरित्थंभगवति कृष्णेनन्दयशोदयोः ॥ वीक्ष्यानुरागंपरमंनन्दमाहोद्धवोमुदा २९ उद्धवउवाच ॥ युवांश्लाघ्यतमौनूनन्देहिनामिहमानद ॥ नारायणेऽखिलगुरौ यत्कृतामतिरीदृ

सुनो है २३ दशहजार हाथी को जामें बल ऐसे कस कों और मल्लन कों तैसेही कुवलयापीड हाथी कों सिंह जैसे पशूनकूं मारे है ऐसे कृष्ण लीला करिके मारत भये २४ बड़ो भारी तीन ताल की बराबर धनुष् है ताय एक हाथ ते उठाय कै जैसे हाथी लठियाकूं तोरे ऐसे तोरत भये और सात दिन पर्य्यन्त गोवर्द्धन पर्व्वत कों धारण करत भये २५ प्रलम्बासुर धेनुकासुर अरिष्टासुर तृणावर्त्त बकासुर कों आदिलेके और जे सुर असुरन के जीतनवारे दैत्य हैं ते कृष्ण ने लीलाही करिके मारे २६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कृष्णमें लगी है बुद्धि जिन की ऐसे नन्दरायजी या प्रकार सुधि करिकै आसू कण्ठ में भरि आये प्रेम के भाव में व्याकुल होय कै चुप होत भये २७ वर्णन करे जे पुत्र के चरित्र तिनें यशोदाजी सुनिकै स्नेह जो बढ़ो तासूं स्तनन में दूध उमँगि आयो नेत्रन में तें आसू बहावति भई २८ या प्रकार नन्दराय यशोदा को भगवान् श्रीकृष्ण में परम अनुराग देखिके उद्धवजी नन्दजीते बोलत भये २९ उद्धवजी कहे हैं

हे मानके देनवारे नन्दराय ! या संसार में देहधारीन के मध्यमें निश्चय तुम प्रशंसाके योग्य हौ या कारण सबके गुरु नारायण तिनमें ऐसी मति लगाई है ३० ये जो कृष्ण बलदेव हैं ते विश्व के निमित्त उपादान कारण हैं याही ते पुरुष प्रकृतिरूप हैं सब प्राणीन में प्रवेश करिकै अनेकप्रकार के प्राणीन कों अनेकप्रकार को जो ज्ञान है ताके साक्षी है और अनादि हैं ३१ प्राणन की छुटती विरिया यह पुरुष क्षणभर शुद्ध मन को जा श्रीकृष्ण में लगाय कै जल्दी देसी कर्म्मन की वासनान कूं छोड़िकै सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान ब्रह्मरूप होयकै परमगतिकूं पावै है ३२ सब के आत्मा कारण और कारण करिके मनुष्य रूप जिनने धरो ऐसे परिपूर्ण नारायण में अतिशय करिकै भक्तिकरो तुमकों कहा करनो बाकी रह्यो ३३ अच्युत श्रीकृष्ण थोड़ेही दिन में व्रज में आवैंगे भक्तनके पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्ण जो माता पिता तुमहौ तिनकूं आनन्द देवेंगे ३४ सब यादवन के वैरी कंस कूं रंगभूमि में मारिकै तुम्हारे पास आयकै श्रीकृष्ण जो क-

शी ३० एतौहिविश्वस्यचबीजयोनीरामोमुकुन्दःपुरुषःप्रधानम् ॥ अन्वीयभूतेषुविलक्षणस्यज्ञानस्यचेशातइमौपुराणौ ३१ यस्मिञ्जनःप्राणवियोगकाले क्ष णंसमावेश्यमनोविशुद्धम् ॥ निर्हृत्यकर्म्माशयमाशुयाति परांगतिंब्रह्ममयोऽर्कवर्णः ३२ तस्मिन्भवन्तावखिलात्महेतौ नारायणेकारणमर्त्यमूर्त्तौ ॥ भावं विधत्तांनितरांमहात्मन्किंवाऽवशिष्टंयुवयोस्सुकृत्यम् ३३ आगमिष्यत्यदीर्घेण कालेनव्रजमच्युतः ॥ प्रियंविधास्यतेपित्रोर्भगवान्सात्वतांपतिः ३४ ह त्वाकंसंरङ्गमध्ये प्रतीपंसर्व्वसात्वताम् ॥ यदाहवःसमागत्य कृष्णःसत्यंकरोतितत् ३५ माखिद्यतंमहाभागौद्रक्ष्यथःकृष्णमन्तिके ॥ अन्तर्हृदिसभूताना मास्तेज्योतिरिवैधसि ३६ नह्यस्यास्तिप्रियःकश्चिन्नाप्रियोवाऽस्त्यमानिनः ॥ नोत्तमोनाधमोवापिसमानस्यासमोऽपिवा ३७ नमातानपितातस्यनभार्य्या नसुतादयः ॥ नात्मीयोनपरश्चापि नदेहोजन्मएवच ३८ नचास्यकर्मवालोके सदसन्मिश्रयोनिषु ॥ क्रीडार्थंसोऽपिसाधूनांपरित्राणायकल्पते ३९ सत्त्वं रजस्तमइतिभजतेनिर्गुणोगुणान् ॥ क्रीडन्नतीतोऽत्रगुणैःसृजत्यवतिहन्त्यजः ४० यथाभ्रमरिकादृष्ट्याभ्राम्यतीवमहीयते ॥ चित्तेकर्त्तरितत्रात्मा कर्त्तेवा धियास्मृतः ४१ युवयोरेवनैवायमात्मजोभगवान्हरिः ॥ सर्वेषामात्मजोह्यात्मा पितामातासईश्वरः ४२ दृष्टंश्रुतंभूतभवद्भविष्यत् स्थास्नुश्चरिष्णुर्महद

हत भये ताय सत्य करेंगे ३५ हे बड़भागियो ! तुम खेद मतिकरो कृष्णकूं अपने पासही देखोगे जैसे लकड़ी में ज्योति रहे है ऐसे सब प्राणीन के हृदयमें रहे हैं ३६ या कृष्णके कोई प्यारो नहीं है और कुप्यारो कोई नहीं है कोई उत्तम नहीं अधम नहीं है और कोई समान नहीं है और वह सब नहीं है और वाके मान नहीं है ३७ न वाके माता है न पिता है न स्त्री है न पुत्रादिक है वाके देह भी नहीं है और वाको जन्म भी नहीं है ३८ या कृष्ण के कर्म्महू नहीं हैं संसार में देवादिकनकी मनुष्यादिकनकी नृसिंहादिकनकी जे योनि हैं तिनमें खेलिबे के लिय और साधुनकी रक्षा करिबे के लिये प्रकटहोइहै ३९ निर्गुण भगवान् सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन तीनमायाके गुणनकूं अंगीकार करे है गुणनसूं न्यारे अजन्मा भगवान् क्रीड़ा करिके विश्वकों उपजावै है पालन करे है संहारकरेहै ४० जैसे बालक भ्राईं माई फिरेहै तब वाकी दृष्टिफिरेहै तासों पृथ्वी फिरतीसीदिखाई देइहै या प्रकार चित्त जो कर्त्ताहै तामें अहंकारकरिके आत्मा सोभी कर्त्तासों दिखाई देहहै ४१

ये भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारेही पुत्र नहीं हैं सबके पुत्रहैं आत्मा हैं पिता है माताहै और ईश्वर हैं ४२ जो कछु देखिवे में आवे और जो सुनिवे में आवै जो कछु होय चुको और जो होयहै और जो होइगो और जो कछु स्थावर है जङ्गम है जो कछु बड़ो छोटो है सो सब श्रीकृष्ण बिना अतिशय करिकै कहिवे कूं योग्य नहीं है परमार्थरूप श्रीकृष्ण हैं सोई सर्वरूप हैं ४३ हे राजन् परीक्षित् ! नन्दजी और श्रीकृष्ण के अनुचर उद्धवजीकों याही प्रकार वार्त्ता करत करत सब रात्रि बीतिगई गोपी प्रातःकाल उठिकै दियान को बारिकै देहरीन को पूजन करिकै दही मथति भई ४४ दियान करिकै प्रकाशमान जे मणिन के जड़ाऊ गहने हैं तिनसों सुन्दर लगत भई नेतीन कों खैंचे हैं तासू भुजान में कङ्कण हलैं हैं नितम्ब जिनके हलत जाय हैं स्तनन पै हार हैं ते भी हलत जाय हैं कुण्डलन करिकै प्रकाशमान कपोलहैं अरुण केशरकी खौरि जिनके मुखपै लगी है ४५ कमलदललोचन श्रीकृष्ण कूं गावैं जो गोपी हैं तिनको गीत स्वर्गपर्यन्त जातभयो दही के मथिवे

दलपकञ्च ॥ विनाऽच्युताद्वस्तुतरांनवाच्यं सएनसर्वंपरमार्थभूतः ४३ एवंनिशामाश्रुवतोर्व्यतीता नन्दस्यकृष्णानुचरस्यराजन् ॥ गोप्यःसमुत्थाय निरूप्यदीपान् वास्तून्समभ्यर्च्यदधीन्यमन्थन् ४४ तादीपदीप्तैर्मणिभिर्विरेजूरज्जूर्विकर्षद्भुजकङ्कणस्रजः ॥ चलन्नितम्बस्तनहारकुण्डलत्विषत्कपोलारुणकुङ्कुमाननाः ४५ उद्गायतीनामरविन्दलोचनं व्रजाङ्गनानान्दिवमस्पृशद्ध्वनिः॥ दध्नश्चनिर्मन्थनशब्दमिश्रितोनिरस्यतेयेनदिशाममङ्गलम् ४६ भगवत्युदितेसूर्य्ये नन्दद्वारिव्रजौकसः ॥ दृष्ट्वारथंशातकौम्भं कस्यायमितिचाब्रुवन् ४७ अक्रूरआगतःकिंवा यःकंसस्यार्थसाधकः ॥ येननीतो मधुपुरींकृष्णःकमललोचनः ४८ किंसाधयिष्यत्यस्माभिर्भर्तुःप्रीतस्यनिष्कृतिम् ॥ इतिस्त्रीणांवदन्तीनामुद्धवोऽगात्कृताह्निकः ४९ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेनन्दशोकापनयनंनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ तंवीक्ष्यकृष्णानुचरंव्रजस्त्रियः प्रलम्बबाहुंनवकञ्जलोचनम् ॥ पीताम्बरंपुष्करमालिनंलसन्मुखारविन्दंपरिमृष्टकुण्डलम् १ शुचिस्मितः

को जो शब्द है सो भी गीतमें मिलिरह्यो है जिन गोपीन के गीततें दिशान में सम्पूर्ण अमङ्गल दूर होय जाय हैं ४६ भगवान् सूर्य्य उदयभयो तब नन्दरायजी के दरवाजे पै सुनहरी साजको रथ ठाढो देखिकै यह कौन को रथ है या प्रकार कहत भई ४७ कहा कंस के कार्य्य को साधक अक्रूर आयो है जो अक्रूर कमलदललोचन कृष्ण कूं मथुरा लैगयो हो अपने स्वामी कंसको मरवाय कै अब क्यों आयो है कहा हमें लेजाय कै हमारे मासके पिण्ड बनायके देयगो या प्रकार गोपी आपुसमें बात करेहीं इतने में उद्धवजी सन्ध्योपासन करिकै आवतभये ४८। ४९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(सप्तचत्वारिंशकेऽथकृष्णादेशेनगोपिका ॥ बोधयित्वोद्धवस्तत्त्वमनुज्ञाप्यागमत्पुरीम् ? सैंतालीसवें अध्याय में उद्धवजी कृष्णजी की आज्ञासे गोपियों को तत्त्व समझाकर आज्ञा लेकर मथुरापुरी को प्राप्त होजाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! लक्ष्मी जिनकी भुजा नवीन कमल से जिनके नेत्र पीताम्बर कों पहिरे कमल की जिनके माला प्रकाशमान

मुखारविन्द स्वच्छ कानन में कुण्डल पहिरे ऐसे कृष्ण के अनुचर उद्धवजी हैं तिनैं देखिकै व्रज की स्त्री बड़ो आश्चर्य्य मानत भई १ सुन्दर है रूप जाको ऐसो यह कौन है कहा ते आयो है श्रीकृष्णचन्द्र के सो जाको वेषहै वैसेही गहनेन को पहिरे है ऐसी सब गोपी श्रीकृष्ण के चरणारविन्द को जिनके आश्रय ऐसे उद्धवजी को चारों ओर ते घेरत भई अधीनता करिके नइ रहीं ऐसी गोपी लाज भरी हँसनि चितवनि मीठी बोलनि सूं सत्कार जिनको कियो एकान्त आसन पै बैठे ऐसे उद्धवजी कों श्रीकृष्ण के पास ते सन्देश लैके आये हैं यह जानि कै पूँछति भई २। ३ यादवन के पति श्रीकृष्ण के तुम सेवकहो यह हम जाने हैं माता पिता के प्रसन्न करिवे के निमित्त तुम कृष्णसूं भेजे हो ४ यादवन में और ऐसो कोई नहीं है जो वाकों स्मरण आवै माता पिता को स्नेह बड़े वैराग्यवान् पुरुष पै भी नहीं छूटे है ५ औरन सों अपने कार्य्य के निमित्त मित्रता यहां जताई यावत्पर्य्यन्त काम परो तावत् मित्रता राखी जैसे पुरुष स्त्रीन ते प्यार करै और

कोऽयमपीच्यदर्शनःकुतश्चकस्याच्युतवेषभूषणः॥ इतिस्मसर्व्वाःपरिवव्रुरुत्सुकास्तमुत्तमश्लोकपदाम्बुजाश्रयम् २ तंप्रश्रयेणावनताःसुसत्कृतंसव्रीडहासेक्षणसूनृतादिभिः॥ रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञायसन्देशहरंरमापतेः ३ जानीमस्त्वांयदुपतेःपार्षदंसमुपागतम्॥ भर्त्रेहप्रेषितःपित्रोर्भवान्प्रियचिकीर्षया ४ अन्यथागोव्रजेतस्य स्मरणीयंनचक्ष्महे॥ स्नेहानुबन्धोबन्धूनां मुनेरपिसुदुस्त्यजः ५ अन्येष्वर्थकृतामैत्री यावदर्थविडम्बनम्॥ पुम्भिःस्त्रीषुकृतायद्वत्सुमनस्स्विवषट्पदैः ६ निःस्वंत्यजन्तिगणिकाअकल्पंनृपतिंप्रजाः॥ अधीतविद्याआचार्य्यमृत्विजोदत्तदक्षिणम् ७ खगावीतफलंवृक्षंभुक्त्वाचातिथयोगृहम्॥ दग्धंमृगास्तथाऽरण्यं जारोभुक्त्वारतांस्त्रियम् ८ इतिगोप्योहिगोविन्दे गतवाक्कायमानसाः॥ कृष्णदूतेव्रजंयाते उद्धवेत्यक्तलौकिकाः ९ गायन्त्यःप्रियकर्म्माणि रुदन्त्यश्चगतह्रियः॥ तस्यसंस्मृत्यसंस्मृत्य यानिकैशोरबाल्ययोः १० काचिन्मधुकरंदृष्ट्वा ध्यायन्तीकृष्णसङ्गमम्॥ प्रियप्रस्थापितंदूतं कल्पयित्वेदमब्रवीत् ११ गोप्युवाच॥ मधुपकितवबन्धोमास्पृशाङ्घ्रिंसपत्न्याःकुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः॥ वहतुमधुपतिस्तन्मानिनी

भौंरा फूलनसूं प्यार करे है या विधि या कृष्णने हम से प्रीति करीरही परन्तु दरिद्री पुरुषकूं जैसे वेश्या त्यागे हैं असमर्थ राजाकूं जैसे प्रजा त्यागे है और विद्यार्थी जैसे विद्या पढ़िके गुरुको त्यागे हैं और दक्षिणा पायकै पुरोहित जैसे यजमान कों त्यागे हैं ६।७ पक्षी जैसे फलनिवृत्त वृक्षकों छोड़े हैं अभ्यागत भोजन करिकै जैसे गृहकों त्यागे हैं हरिण जलेहुये वनकों जैसे त्यागे हैं जार पुरुष भोग करिकै जैसे स्त्री कों त्यागे है या प्रकार कृष्ण हम कों त्यागि गयो ८ श्रीकृष्ण के दूत उद्धवजी व्रज में आये ता समय गोपीन की वाणी देह मन कृष्ण गोविन्द में जाय लगे लौकिक व्यवहार खानपानादिक सब छूटि गये ९ प्यारे के कर्म्मन कूं गावे हैं श्रीकृष्ण के किशोर और बालअवस्था के जे चरित्र हैं तिनकों स्मरण करिकै लाज त्यागि के रुदन करत उद्धव जी ते पूँछत भई कोई एक गोपी उद्धव जी को स्वरूप देखिकै श्रीकृष्ण के सङ्ग को ध्यान करिकै प्यारेने प्रसन्न करिवे के निमित्त दूत भेजो है ताय भ्रमर मानि कै यह बोलत भई १०। ११ हे मधुप अर्थात् पुष्पनके रसके पीवनवारे ! हे कपटी कृष्ण के मित्र ! हमारे चरणनकूं स्पर्श मति करै भौंरा को देह तो कारो और मुख पीरो होयहै ताकों देखिके कहे है सौति के कुचन सों मीड़ी

ऐसी जो पुष्पन की माला ताकी केशर तेरी दाढ़ी मूछन सों लगी है जो तू स्पर्श करैगो तो स्नान करिवो होयगो कदाचित् कहो कि मैं तुम्हारे प्रसन्न करिवे कों कृष्णसूं भेजो हूं तहां गोपी कहे है वे जो मथुराकी स्त्री हैं तिनहीं कूं प्रसन्न करो जैसे तू हमारे पास आयो है ऐसेही यादवन की स्त्रीनके पास जात होयगो कृष्ण को दूत ऐसो निर्लज्जहै १२ गोपियो ऐसे तुम वा कृष्णको क्यों अनादर करो हौ वाने तुम्हारो कहा अनादर करयो है तहा कहे है मोहन करनवारो अपनो अधरामृतहै ताय एक वेर प्यायकै तू जैसे फूलन कों छोड़ि देइ है ऐसे वह कृष्ण तुरत हमें छोड़ि देत भयो लक्ष्मी वा कृष्ण के चरणकमलकूं कैसे सेवन करे है तहा कहे है मैंने जानिलीनी कृष्ण के मीठे मीठे वचननसूं वाको चित्त हरयो गयो है तासू वह परी रहै है १३ बहुत भूंमुं भूंमुं शब्दकरै जो भौंरा है ताय हमारे प्रसन्न करिवे के लिये कृष्णकूं गावे है यह मानिकै कहे है हे छः पांव के भौंरा ! देख पशु जितने हैं ते चार पांव के हैं तू छःपांवको है याते तू डेढ पशुहै कैसे कहा गावे है सो तू नहीं जाने है यादवन को पति कृष्ण ताकों तू हमारे आगे बहुत गावे है बहुत पुरानो है हमारो देखो भारो है और सखी गायवो अपने घरमें बैठे होय ताकूं अच्छो लगै है जा दिन ते

नांप्रसादं यदुसदसिविडम्व्यंयस्यदूतस्त्वमीदृक् १२ सकृदधरसुधांस्वांमोहिनींपाययित्वा सुमनसइवसद्यस्तत्यजेऽस्मान्भवादृक् ॥ परिचरतिकथंतत्पा दपद्मंतुपद्मा ह्यपिवतहृतचेताउत्तमश्लोकजल्पैः १३ किमिहबहुषडङ्घ्रेगायसित्वंयदूनामधिपतिमगृहाणामग्रतोनःपुराणम् ॥ विजयसखसखीनांगीयतांत त्प्रसङ्गःक्षपितकुचरुजस्तेकल्पयन्तीष्टमिष्टाः १४ दिविभुविचरसायांकाःस्त्रियस्तदुरापाः कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्ययाःस्युः ॥ चरणरजउपास्तेयस्यभू तिर्वयंकाअपिचकृपणपक्षेह्युत्तमश्लोकशब्दः १५ विसृजशिरसिपादंवेद्म्यहंचाटुकारैरनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्यदौत्यैर्मुकुन्दात् ॥ स्वकृतइहविसृष्टापत्यप त्यन्यलोकाव्यसृजदकृतचेताःकिन्नुसन्धेयमस्मिन् १६ मृगयुरिवकपीन्द्रंविव्यधेलुब्धधर्मा स्त्रियमकृतविरूपांस्त्रीजितःकामयानाम् ॥ बलिमपिबलिम

कृष्ण मथुरा गये हैं ता दिन ते हमारे घरहै न बार है हमपै ते तू कहा लियो चाहे है जो तेरो गायवो सुनें तोकूं रीझदेयँ एक ठौर तोकों बतावे हैं वहां जा अर्ज्जुन को सखा कृष्ण ताकी सखी मथुराकी स्त्री हैं उनके आगे वाको प्रसङ्ग तू गाउ मथुरा की स्त्रीनके कुचन के रोग अब गये हैं कृष्णकी प्यारी स्त्री तोकों रीझदेइँगी १४ माता ऐसे मति कहो तेरी सुधि करिकै कामदेव ते व्याकुल होयकै तोइ प्रसन्न करिवे के लिये मैं भेजो गयोहौं तहां गोपी कहे हैं कपट करिकै रुचिर जाकी हासी भृकुटीन की चढ़नि ऐसो जो कृष्ण है ताकों स्वर्ग में पृथ्वी में रसातल में जे स्त्री हैं ते कौनसी नापैद हैं लक्ष्मी जाके चरणनकी रजको सेवन करे हैं तहा हमारी कहां चलै है भौंरा वा कृष्णको उत्तमश्लोक यह नाम सुनो है जब हम गरीबिनीनकी सुधिलेयगो तब यह नाम रहैगो नहीं तो जात रहैगो १५ अपने पावन सों लगो ऐसो जो भौंराहै ताय हमपै क्षमा करायवे कूं आयो है ऐसे मानिकै गोपी कहे हैं अपने शिरकों मेरे पावन में ते उठायले पांवन में तें नहीं उठै ऐसो जो भौंरा है तासूं कहे है मुकुन्द तें सीखकै दूत कर्म्मन करिकै प्यारे वचन की जो रचना है तिनकरिकै मनाइवे में चतुर जो तू है ताते तेरी सम्पूर्ण वातमें जानूं हू जब कभऊं रास में मान करती तब अपनो मुकुट उतारिकै हमारे चरणनमें धरतो बहुत खुशामद करतो जैसे वाकी वातनको विश्वास नहीं आवै है ऐसी तेरी वातन को विश्वास नहीं आवै है क्योंजी ऐसो वाने कहा

अपराध कियो है तहां गोपी कहे हैं या संसार में कृष्ण के लिये पति पुत्र यह लोक परलोक सब हमने त्यागि दियो जाकों मनको ठिकानो नहीं ऐसो कृष्ण हमको त्यागि कै चलो गयो अब बातें हम कहा मिलाप करैं या प्रकार गोपी कहत भई १६ कृष्ण के पहिले कर्म्मन की सुधि करिकै हम या कृष्णते भय करे हैं यह वर्णन करे हैं हे भौरा ! कारे रङ्ग के जे हैं तिनकी कथा हमने सुनि राखी है पहिले अयोध्या में दशरथ को पुत्र राम भयो ताने सुग्रीव की ओर होयकै वधिककी तुल्य वालि कों मारयो व्याध तो मास खायवे के कारण मारै है याने तो व्यर्थही मारयो बन्दर को कोई मांसहू नहीं खायहै दूर्वादल श्याम राम के सुन्दर रूप पै रीझकै रावण की बहिन शूर्पणखा आई सीताके वश होयकै लक्ष्मणकूं सिखायकै वाके नाक कान काटि लिये दूसरे कारे रङ्ग को वामन रूप भयो वह राजा बलि पै तें तीन पांव पृथ्वी के मिष सब पृथ्वी लैके कांउ कांउ करिकै जैसे कौआ घर घेरलेंइ हैं तैसे वाकों बांधत भयो तातें हम कारेन की मित्रता सूं पूर्ण भई अब कदाचित् भूलिकै कारेन तें मित्रता न करैंगी उद्धवजी कहे हैं जब तें मैं आयो हौं तबतें वाहीकी बातकों कहो हौ तहां गोपी कहे हैं जैसे वामें और गुणहैं तैसे यह अवगुणहै वाकूं दु:खदायी जाने हैं तथापि वाकी बात हम पै छूटै नहीं है १७ कछु गोपी और कहे है यह बात हम जाने हैं कृष्णकी कथा धर्म्म अर्थ कामकी जडहै ताकी उखारनवारी है तथापि हमपै त्यागी नहीं जायहै

स्त्वाऽवेष्टयद्वाङ्क्षवद्यस्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः १७ यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्म्माविनष्टाः ॥ सपदिगृहकुटु म्बंदीनमुत्सृज्यदीनाबहवइहविहङ्गाभिक्षुचर्यांचरन्ति १८ वयमृतमिवजिह्मव्याहृतंश्रद्दधानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाःकृष्णवध्वोहरिण्यः ॥ ददृशुरसकृदेत त्तन्नखस्पर्शतीव्रस्मररुजउपमन्त्रिन्भण्यतामन्यवार्ता १९ प्रियसखपुनरागाःप्रेयसाप्रेषितः किंवरयकिमनुरुन्धेमाननीयोऽसिमेऽङ्ग ॥ नयसिकथमिहास्मा न्दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं सततमुरसिसौम्यश्रीर्वधूःसाकमास्ते २० अपिबतमधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनास्ते स्मरतिसपितृगेहान्सौम्यबन्धूंश्चगोपान् ॥ क्वचिदपि

देखो जा श्रीकृष्णको लीलाचरित्ररूपी अमृत सो कानन कूं अतिप्रिय अमृत ताकी जो कणिका ताकूं एक बार सेवन करनेसों दूरभये हैं रागादिक जिनके याही ते असत्की तुल्य ऐसे जे पुरुष हैं ते दु:खरूप जे पुत्र पौत्रादिक हैं तिनकों त्यागि कै भोगनकों छोड़ि कै पक्षी की तुल्य घर घर भीख मांगत डोले हैं १८ भौंरा कहे है ऐसे अब क्यों कहो हौ पहिलेही ता कृष्ण के सङ्ग एकांत में क्यों न कहत भई तापर गोपी कहे हैं जैसे अज्ञानिनी कृष्णसार हरिण की स्त्री हरिणी वधिकके गीतसूं मोहितहोय घायल होय हैं ऐसे हम वा कपटी कृष्णको वचन सत्य मानिकै यह देखत भई कहा जाके नखनके स्पर्श तें बडी कामदेव की पीड़ा भई है उपमन्त्रिन् अर्थात् दूत ! वा कपटी की बात जान दे और बात कहे १९ इत उत फिर फिराय कै फेरि आयो जो भौंरा है तासूं कहे हैं हे प्यारे के सखा ! तू फेरि आयो तो कूं प्यारे कृष्ण ने भेजो है कहा हे दूत ! मोकूं पूजा करिवे योग्यहै जो तेरे इच्छाहोय सो वर मागिले लक्ष्मी सों संग जाको छूटै नहीं ऐसे कृष्ण के पास हमें ले जायो चाहे है हे भौंरा ! वह लक्ष्मी सर्वदा संग रहे है तथापि छाती पै चढे है ताकूं दूरि करिगो तब हम चलैगी २० मथुरापुरी में सूधो नन्दको पुत्र कहा अब रहे है हे भौंरा ! कभऊं वाकों अपने माता पिता नन्दको स्मरणआवे है और अपने भय्या बन्धुन की सुधि करे है और कभऊ गोपीनको स्मरण करेहै कभऊं वह कृष्ण हम दासीनकी बात चलावै है अगरकी तुल्य जामें सुगन्धि ऐसी

अपनी भुजाकूं हमारे शिरपै कभऊं आयकै धरैगो २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार उद्धवजी श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन की चाहना गोपीन की सुनि कै प्यारे श्रीकृष्ण के सन्देशनसूं समभ्रत भये २२ उद्धवजी गोपीनसूं कहे हैं तुम ने वासुदेव भगवान् श्रीकृष्ण में मन लगायो है अहो गोपियो! तुम निश्चय करिके कृतार्थ भई और लोकनमें तुम्हारो यशहोयगो २३ दान व्रत तप होम जप वेदपाठ इन्द्रियन को रोकिवो और अनेक प्रकार के कल्याणके उपाय सब करिवे को फल यही है जो कृष्ण में भक्ति होय २४ बड़े मुनीश्वरन को दुर्लभ ऐसी भक्ति तुम ने उत्तमश्लोक भगवान् श्रीकृष्ण में करी यह बड़ो मंगल है २५ पुत्र पति देह भय्या बन्धु घरन कूं त्यागिकै परमपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण तुम ने पतिकरे यह बड़ो मङ्गलभयो २६ हे बड़-भागिनियो! इन्द्रियन को जिनमें गमन नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र में विरह सूं एकान्त भक्ति तुम्हारे भई यह तुमने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह कियो २७ तुमकों सुख देनवारो ऐसो प्यारे को सन्देश

सकृथानःकिङ्करीणांगृणीते भुजमगुरुसुगन्धंमूर्ध्न्यधास्यत्कदानु २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अथोद्धवोनिशम्यैवं कृष्णदर्शनलालसाः ॥ सान्त्वयन्प्रियसन्देशैर्गोपीरिदमभाषत २२ ॥ उद्धवउवाच ॥ अहोयूयंस्मपूर्णार्था भवत्योलोकपूजिताः ॥ वासुदेवेभगवतियासामित्यर्पितंमनः २३ दानव्रततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः ॥ श्रेयोभिर्विविधैश्चान्यैः कृष्णेभक्तिर्हिसाध्यते २४ भगवत्युत्तमश्लोके भवतीभिरनुत्तमा ॥ भक्तिःप्रवर्त्तितादिष्ट्या मुनीनामपिदुर्लभा २५ दिष्ट्यापुत्रान्पतीन्देहान् स्वजनान्भवनानिच ॥ हित्वावृणीतयूयंयत् कृष्णाख्यंपुरुषंपरम् २६ सर्वात्मभावोऽधिकृतोभवतीनामधोक्षजे ॥ विरहेणमहाभागा महान्मेऽनुग्रहःकृतः २७ श्रूयतांप्रियसन्देशोभवतीनांसुखावहः ॥ यमादायागतोभद्राअहंभर्तूरहस्करः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भवतीनांवियोगोमे नहिसर्वात्मनाक्वचित् ॥ यथाभूतानिभूतेषु खंवाय्वग्निर्जलंमही ॥ तथाऽहंचमनःप्राणभूतेन्द्रियगुणाश्रयः २९ आत्मन्येवात्मनात्मानं सृजेहन्म्यनुपालये ॥ आत्ममायाऽनुभावेन भूतेन्द्रियगुणात्मना ३० आत्माज्ञानमयःशुद्धो व्यतिरिक्तोऽगुणान्वयः ॥ सुषुप्तिस्वप्नजाग्रद्भिर्मायावृत्तिभिरीयते ३१ येनेन्द्रियार्थान्ध्यायेत मृषास्वप्नवदुत्थितः ॥ तन्निरुन्ध्यादिन्द्रियाणि विनिद्रःप्रत्यपद्यत ३२ एतदन्तःसमाम्नायोयोगः

सुनो श्रीकृष्ण के रहस्य कार्य्य के करनवारे ऐसे सन्देश कूं लैके हे मङ्गलरूपिणियो! मैं आयो हौं २८ अब भगवान् गोपीन कूं उपदेश करे हैं सब को उपादानकारण मैं हूं ऐसे मोसों तुम कभऊं दूरि नहीं हो जैसे आकाश पवन तेज जल पृथ्वी ये पञ्चतत्त्व समस्त प्राणीन के देहमें रहे हैं तैसे मन प्राण पञ्चभूत इन्द्रिय और गुण इनको आश्रय हूं २९ अपनपे में अपने करिकै अपने कूं उत्पन्न करूं हूं संहार और पालन करूं हूं अपनी माया के प्रभाव करिकै पञ्चभूत इन्द्रिय तीनों गुण इन रूप जो अपनपो है ता करिकै सृष्टिकू उत्पन्न पालन प्रलय करूंहू ३० यहा एक शङ्का है आत्मा पञ्चभूत रूप होय तौ वाकूं पञ्चभूतन के सङ्ग दोष लगे है तहां उत्तर करे हैं आत्मा तो शुद्ध है काहे ते माया के गुणन में जाय है सब ते न्यारो है ज्ञानरूप है अहंकार ते जानिवे में आवे ऐसे आत्मा की न्यारी अवस्था है शुद्धता कैसे तहां कहे हैं सुषुप्ति स्वप्न जाग्रत् ये जो मनकी वृत्ति हैं तिनसूं प्रतीत होय है आपसूं नहीं है ३१ अनेक अवस्था मानूं प्रतीत होय है मन

के रुकिवे में जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्था जातिरहे हैं यह दिखायवे कूं मन को निरोध विधान करे हैं जागिकै जैसे मिथ्या स्वप्ने को ध्यान करे है ऐसे मिथ्या विषयन कूं जा मनसूं विचार करिकै इन्द्रियन कूं पावै है ता मनकूं आलस्य छोड़िकै रोको मन जब जाको रुकै है तब कृतार्थ होय है यह कहे है वेद पढ़े को अष्टांगयोग करे को आत्मा अनात्मा के विचारकरे को त्याग तप इन्द्रियन को जीतिवो सांच वोलिवो इत्यादि कर्म्मन सू विवेकीन को मन रुकै यही फल हैं जैसे नदीनको अन्त समुद्र में होय है ३२। ३३ प्यारे में तुम्हारी दृष्टि सूं दूर करूं हूं सो तुम्हारो मन मेरे विषे लग्यो रहै और मेरो ध्यान करौ तौ करती वेर दूर रहूं हूं जैसे दूर रहे जो प्यारो तामें स्त्री को मन लग्यो रहे है ऐसो जो नेत्रन के आगे रहै तामें चित्त नहीं रहे है ३४। ३५ छूटी हैं सम्पूर्ण वृत्ति जाकी ऐसे मनकों मो कृष्ण में लगायकै नित्य मेरो ध्यान करती रहोगी तौ शीघ्र मोकूं प्राप्त होउगी ३६ रात्रि में वनमें विहार करने में हूं ता मेरे सङ्ग नहीं प्राप्तभयो है रास जिनकों ऐसी

साङ्ख्यंमनीषिणाम् ॥ त्यागस्तपोदमःसत्यं समुद्रान्ताइवापगाः ३३ यत्त्वहंभवतीनांवै दूरेवर्त्तेप्रियोदृशाम् ॥ मनसःसन्निकर्षार्थमदनुध्यानकाम्यया ३४ यथादूरचरेप्रेष्ठे मनआविश्यवर्त्तते ॥ स्त्रीणाश्चनतथाचेतः सन्निकृष्टेऽक्षगोचरे ३५ मय्यावेश्यमनःकृत्स्नं विमुक्ताशेषवृत्तियत् ॥ अनुस्मरन्त्योमां नित्यमचिरान्मामुपैष्यथ ३६ यामयाक्रीडितारात्र्यां वनेऽस्मिन्व्रजआस्थिताः ॥ अलब्धरासाः कल्याण्योमापुर्मद्वीर्यचिन्तया ३७॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रियतमादिष्टमाकर्ण्यव्रजयोषितः ॥ ताऊचुरुद्धवंप्रीतास्तत्सन्देशागतस्मृतीः ३८॥ गोप्यऊचुः ॥ दिष्ट्याऽहितोहतःकंसोयदूनांसानुगोऽघकृत् ॥ दिष्ट्याप्तैर्लब्धसर्व्वार्थैः कुशल्यास्तेऽच्युतोऽधुना ३९ कच्चिद्गदाग्रजःसौम्यकरोतिपुरयोषिताम् ॥ प्रीतिंनःस्निग्धसव्रीडहासोदारेक्षणार्चितः ४० कथंरतिविशेषज्ञः प्रियश्चवरयोषिताम् ॥ नानुबध्येततद्वाक्यैर्विभ्रमैश्चानुपूजितः ४१ अपिस्मरतिनःसाधो गोविन्दःप्रस्तुतेक्वचित् ॥ गोष्ठीमध्येपुरस्त्रीणां ग्राम्याःस्वैरकथान्तरे ४२ ताःकिंनिशाःस्मरतियासुतदाप्रियाभिर्वृन्दावनेकुमुदकुन्दशशाङ्करम्ये ॥ रेमेक्वणच्चरणनूपुररासगोष्ठ्यामस्माभिरीडितमनोज्ञक

गोपी पतिन की रोकी वृज में रहीं ते हे मंगलरूपिणियो ! मेरी लीलान को ध्यानकरि करिकै मोहीं कूं पावतभई ३७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! या प्रकार प्यारे श्रीकृष्णने उपदेश करो ताय श्रवण करिकै व्रजकी स्त्री गोपी प्रसन्न होय कै उद्धवजीसों वोलतभई ३८ अब सम्पूर्ण गोपी कहे हैं कृष्णके सन्देशनसूं स्मरण जिनकों होय आयो यादवन कों दुःख को देनवारो अपने भृत्यन सहित वैरी कंस मरचो यह बड़ो मंगल भयो पाये हैं सम्पूर्ण मनोरथ जिनने ऐसे हितून सहित श्रीकृष्ण प्रसन्नहैं यह बड़ो मंगल भयो ३९ हे साधु उद्धव ! गदको बड़ो भय्या कृष्ण हमसूं जो प्रीति करै हो सो प्रीति कहा मथुरा की स्त्रीनसूं करे है वे सुन्दर लाजभरी हँसनि उदरभरी चितवनिसूं वाको सत्कार करे हैं ४० रतिविशेष को जाननवारो प्यारो कृष्ण मथुराकी स्त्रीनके वचननसूं विलासनसूं जब सत्कार करेंगी तब कैसे न बँधेगो ४१ हे साधु उद्धव ! गोविंद कभऊं प्रसंग पायकै मथुराकी स्त्रीनकी सभामें बैठिकै जब वातें करै हैं तब गांवकी स्त्री जो हम तिनकी कभऊं वात स्मरण करे हैं ४२ उद्धवजी श्रीकृष्णकों कभऊं उन रात्रिनको स्मरण आवै है जिनमें कुमोदनी कुन्द फूल रहे चन्द्रमाकी चांदनी सों रमणीय वृन्दावन है तामें पांवन में भन्न २ नूपुर वजत

जायँ रास में हम जो प्यारी हैं तिनके सङ्ग रमण करतभयो सो कदाचित् स्मरणकरे है या नहीं ४३ हम जाकी सब मनोहर कथान कूं गावे हैं जैसे ग्रीष्मऋतुकरि दग्ध जो वन है ताके सिञ्चन करिवे कों जैसे इन्द्र आवे है तैसे वा कृष्ण के लिये जो शोकहै तासूं पजरी भई जो हमहैं तिनकूं हाथके स्पर्श करिकै जीवन करत दाशार्हवंशोत्पन्न श्रीकृष्ण कभऊं यहां आवैगो या नहीं यह गोपी कहे हैं ४४ और गोपी कहे हैं आवैगो २ यह कहा लगाई है कृष्ण यहां काहे कों आवैगो अव वाकों राज्य मिल गयो है शत्रु मारि लियो है राजानकी कन्या व्याहि लीनी हैं प्रसन्न हैं सब मित्र वाके पास हैं अब यहाँ कहा करेगो ४५ और गोपी कहे हैं वीर लक्ष्मी को पति सब वस्तु जाकों प्राप्त याहीतें परिपूर्ण ऐसो जो कृष्ण ताकूं वनकी रहनवारी हम हैं तिनसूं और राजानकी कन्या हैं तिन सूं कहा प्रयोजन, है ४६ आशा को त्याग है सोई बड़ो सुखहै यह पिंगला वेश्याने एकादश में कह्यो है निराशा बराबर सुख नहीं है यह जाने हैं तथापि कृष्ण ते हमारी आशा छुटे नहीं है ४७ कृष्णकी एकान्त की, जो बात है ताय त्यागिवे कों कौन समर्थ होयगो वाके राखिवे की इच्छा नहीं तथापि लक्ष्मी अंग में तें न्यारी नहीं होय है ४८ उद्धव ता कृष्ण कूं हम भूलि जायँ तो दुः-

थःकदाचित् ४३ अप्येष्यतीहदाशार्हस्तप्ताःस्वकृतयाशुचा ॥ सञ्जीवयन्नुनोगात्रैर्यथेन्द्रोवनमम्बुदैः ४४ कस्मात्कृष्णइहायाति प्राप्तराज्योहताहितः ॥ नरेन्द्रकन्याउद्वाह्य प्रीतःसर्व्वसुहृद्वृतः ४५ किमस्माभिर्वनौकोभिरन्याभिर्वामहात्मनः ॥ श्रीपतेराप्तकामस्य क्रियेतार्थःकृतात्मनः ४६ परंसौख्यंहिनैरा श्यं स्वैरिण्यप्याहपिङ्गला ॥ तज्जानतीनांनःकृष्णे तथाप्याशादुरत्यया ४७ कउत्सहेतसंत्यक्तुमुत्तमश्लोकसंविदम् ॥ अनिच्छतोऽपियस्यश्रीरङ्गान्नच्य वतेक्वचित् ४८ सरिच्छैलवनोद्देशागावोवेणुरवाइमे ॥ सङ्कर्षणसहायेन कृष्णेनाचरिताःप्रभो ४९ पुनःपुनःस्मारयन्ति नन्दगोपसुतंबत ॥ श्रीनिकेतै स्तत्पदकैर्विस्मर्त्तुंनैवशक्नुमः ५० गत्याललितयोदारहासलीलावलोकनैः ॥ माध्व्यागिराहृतधियः कथंतद्विस्मरामहे ५१ हेनाथहेरमानाथ व्रजनाथार्त्ति नाशन ॥ मग्नमुद्धरगोविन्द गोकुलंवृजिनार्णवात् ५२ श्रीशुकउवाच ॥ ततस्ताःकृष्णसन्देशैर्व्यपेतविरहज्वराः ॥ उद्धवंपूजयाञ्चक्रुर्ज्ञात्वात्मानमधो

ख न होय सो भूलनो हमकूं नहीं होय है यह गोपी कहे हैं हे प्रभु उद्धव ! हम बिचारी कहूं दो घरी कूं जायँ परन्तु वाकूं भूले नहीं हैं कदाचित् यमुना पै जायँ तो वाकी कारी लहर हमें खायवे कों दौरे है जब गोवर्द्धन पर्वत कूं देखे हैं तब सुधि आय जायहै वही गोवर्द्धन है जाहि सात दिन हाथ पै राख्यो फेर वन और गौवन में जायँ हैं तब सुधि आय जायहै जिनें धौरी घूमरि कहिकै बुलावे हो फेरि बाँसुरी श्रवण करे वाकी सुधि आय जाय है वाकों कैसे भूलैं जाने बलदेव जी कूं संग लैके ऐसे आचरण करे हैं ४९ हे उद्धवजी ! नन्द गोप को पुत्र जो कृष्ण है ताके सुन्दर शोभायमान जो चरणन के खोज हैं तिनकूं देखि कै भूलिवे कूं समर्थ नहीं होय हैं विरह में वारंवार स्मरण करावे हैं ५० मनोहर जिनकी चलनि उदार हँसनि लीलापूर्व्वक चितवनि मनोहर वचन इन सूं हमारी बुद्धि हरि लीनी वा कृष्ण कूं कैसे भूलैं ५१ अब तो मथुरा की ओर हाथ उठाय के पुकारत भई हे नाथ ! हे रमानाथ ! हे व्रजनाथ ! हे दुःखन के दूरकरनवारे ! हे गोविन्द ! यह नाम तौ गौवन को पालन करोगे तवहीं रहेगो नहीं तो या नामकों हाथ झारि वैठो और जा समय इन्द्र वर्षो तब यह सङ्कल्प कर्यो हो कि अपने व्रजकी मैं रक्षा करुंगो सो अब तो तुम्हारेही विरह

रूप समुद्र में गोकुल डूब्यो जाय है शीघ्र आय कै याको उद्धार करो ५२ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! श्रीकृष्ण के संदेशनसूं दूर भये हैं विरह के ताप जिनके ऐसी गोपी श्री कृष्ण कों परमेश्वर जानि कै और परमेश्वर को अपनो आत्मा निश्चय करिके उद्धव जी की पूजा करतभई ५३ गोपीन के शोक दूर करिवे के निमित्त कितनेहू मास उद्धव जी व्रजमें वास करत भये कृष्णचन्द्र की लीला कथा गाय गाय के वृजवासीन कूं आनन्द देत भये ५४ जितने दिन पर्य्यन्त उद्धव जी नन्द के व्रज में वसे उतने दिन व्रजवासीन कों कृष्ण की वातनसूं क्षण समान वीतत भये ५५ नदी वन पर्व्वत गुफा पुष्पितवृक्ष इत्यादिकन कूं देखिकै हरिदास उद्धव जी व्रजवासीन कों श्रीकृष्ण कों स्मरण करावत भये ५६ गोपीन के चित्तकूं या प्रकार श्रीकृष्ण में लगिवो है तासूं मन की व्याकुलता देखिकै परमप्रसन्न होय के उद्धव जी गोपीन कूं दण्डवत् करत बोलतभये ५७ इन गोपन की स्त्रीन को पृथ्वी पै जन्म सफल है काहे से सबके आत्मा जो गोविन्द

क्षजम् ५३ उवासकतिचिन्मासान् गोपीनांविनुदञ्शुचः ॥ कृष्णलीलाकथाङ्गायन् रमयामासगोकुलम् ५४ यावन्त्यहानिनन्दस्यव्रजेऽवात्सीत्सउद्धवः ॥ व्रजौकसांक्षणप्रायाण्यासन्कृष्णस्यवार्त्तया ५५ सरिद्वनगिरिद्रोणीर्वीक्षन्कुसुमितान्द्रुमान् ॥ कृष्णंसंस्मारयन्रेमे हरिदासोव्रजौकसाम् ५६ दृष्ट्वैवमादि गोपीनां कृष्णावेशात्मविक्लवम् ॥ उद्धवःपरमप्रीतस्तानमस्यन्निदंजगौ ५७ एताःपरंतनुभृतोभुविगोपवध्वो गोविन्दएवनिखिलात्मनिरूढभावाः ॥ वाञ्छ न्तियद्भवभियोमुनयोवयञ्च किंब्रह्मजन्मभिरनन्तकथारसस्य ५८ क्वेमाःस्त्रियोवनचरीर्व्यभिचारदुष्टाः कृष्णेक्वचैषपरमात्मनिरूढभावाः ॥ नन्वीश्वरोऽ नुभजतोऽविदुषोऽपिसाक्षाच्छ्रेयस्तनोत्यगदराजइवोपयुक्तः ५९ नायंश्रियोऽङ्गउनितान्तरतेःप्रसादः स्वर्योषितांनलिनगन्धरुचांकुतोऽन्याः ॥ रासोत्सवे ऽस्यभुजदण्डगृहीतकण्ठलब्धाशिषांयउदगाद्व्रजवल्लवीनाम् ६० आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यां वृन्दावनेकिमपिगुल्मलतौषधीनाम् ॥ यादुस्त्यजंस्वज नमार्य्यपथंचहित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवींश्रुतिभिर्विमृग्याम् ६१ यावैश्रियाऽर्चितमजादिभिराप्तकामैर्योगेश्वरैरपियदात्मनिरासगोष्ठ्याम् ॥ कृष्णस्यतद्

हैं तिन में इन को परमप्रेम भयो है जा प्रेम कूं संसार तें भयभीत जे मुमुक्षु पुरुष हैं और मुक्त हैं और हम भक्त हैं ते इच्छा करे हैं अनन्त श्रीकृष्ण की कथा में जा पुरुष को अनुराग है वाकूं ब्रह्म जन्म सूं कहा प्रयोजन है अथवा एक तो शुद्ध माता पितासूं द्वितीय गायत्री उपदेश सूं तृतीय यज्ञदीक्षा सूं जे ब्राह्मण के तीन जन्म हैं तिनसूं कहा प्रयोजन है ५८ वृन्दावन की विचरनवारी व्यभिचारदृष्टि करिकै दूषित गोपी स्त्री कहाँ और परमात्मा श्रीकृष्ण में है आरूढ भाव जिनके निरन्तर भगवान् को स्मरण करे हैं ऐसे अज्ञानी पुरुष को भी कल्याण करे हैं जैसे कोई मनुष्य अमृत को सेवन करे वह अमर होय है ५९ सर्व्वकाल अंग में रही आवै ऐसी लक्ष्मी पै भी यह प्रसन्नता न भई और कमल के गन्ध कीसी है कान्ति जिनकी ऐसी देवांगनान कूं जो प्रसाद नहीं मिल्यो सो रासके उत्सव में श्रीकृष्ण के भुजदण्डनसूं गलवाहीं लगाय कै पाये हैं मनोरथ जिनने ऐसी वृजसुन्दरीन कूं मिलत भयो ६० इन गोपीन के चरणरज को सेवन करनवारो वृन्दावन में गुल्म लता ओषधिन में कछु मेरो जन्म होय जे गोपी छोड़ी न जायँ ऐसे अपने भय्या बन्धु बड़ेन को जो मार्ग है ताकों त्यागि के वेद जाकों ढूंढें ऐसे मुकुन्द श्रीकृष्ण

के मार्ग कू सेवन करत भई ६१ लक्ष्मी ने जाको पूजन करो और पूर्ण हैं काम जिनके ऐसे ब्रह्मादिकन ने जा चरणारविन्द को पूजन करो योगेश्वरनने अपने विषे जाको पूजन करो ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के चरणारविन्द कूं राससभा में स्तनन के ऊपर धरि के आलिङ्गन करिकै ताप कों दूर करत भई ६२ नन्द के व्रजकी स्त्रीन के चरण की रज कों वारंवार नमस्कार करूं हूं जिन गोपीन ने हरिकथा जो गाई है सो तीनों लोकन कों पवित्र करे है ६३ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! याके पीछे गोपीन सूं यशोदा जी सूं नन्दराय जी गोपन सूं आज्ञा माँगि के दाशार्हवंशोत्पन्न उद्धव जी गमन समय रथ में बैठत भये ६४ उद्धव जी के विदा होने समय नन्दराय जी सूं आदि लेके समस्तव्रजवासी अनेकप्रकार की भेटन कों हाथ में लेके उद्धव जी के पास आय के स्नेह ते आँसू जिनके नेत्रन में ते भरिआये ऐसे होकर बोलत भये ६५ हमारे मनकी वृत्ति श्रीकृष्णके चरणारविन्द में लगीरहै और हमारी वाणी वा कृष्ण को नाम

भगवतश्चरणारविन्दं न्यस्तंस्तनेषुविजहुःपरिरभ्यतापम् ६२ वन्देनन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ॥ यासांहरिकथोद्गीतं पुनातिभुवनत्रयम् ६३ श्रीशुकउवाच ॥ अथगोपीरनुज्ञाप्य यशोदानन्दमेवच ॥ गोपानामन्त्र्यदाशार्होयास्यन्नारुरुहेरथम् ६४ तन्निर्गतंसमासाद्य नानोपायनपाणयः ॥ नन्दादयोऽनुरागेण प्रावोचन्नश्रुलोचनाः ६५ मनसोवृत्तयोनस्युःकृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ॥ वाचोऽभिधायिनीर्नाम्नांकायस्तत्प्रह्वणादिषु ६६ कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्रक्वापीश्वरेच्छया ॥ मङ्गलाचरितैर्दानैर्मतिर्नःकृष्णईश्वरे ६७ एवंसभाजितोगोपैः कृष्णभक्त्यानराधिप ॥ उद्धवःपुनरागच्छन्मथुरांकृष्णपालिताम् ६८ कृष्णायप्रणिपत्याह भक्त्युद्रेकंव्रजौकसाम् ॥ वासुदेवायरामायराज्ञेचोपायनान्यदात् ६९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेउद्धवप्रतियानेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथविज्ञायभगवान् सर्वात्मासर्वदर्शनः ॥ सैरन्ध्रयाःकामतप्तायाः प्रियमिच्छन्गृहंययौ १ महार्होपस्करैराढ्यं कामोपायोपबृंहि

लियो करे हमारो शरीर वा कृष्ण कूं प्रणाम करो करे ६६ अपने कर्म्मानुसार ईश्वर की इच्छा तें जो काहू योनि में हम जायँ तो जो कछु हमने मङ्गलरूप कर्म्म करे हैं अथवा दान करे हैं तिनको यही फल माँगे हैं कि कृष्ण में हमारी प्रीति रहै ६७ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार गोपीन ने कृष्ण में जैसी भक्ति तैसी भक्ति करिकै सत्कार जिनको करो ऐसे उद्धव जी सों श्रीकृष्ण जाको पालन करैं ऐसी मथुरा पुरी में फेर आवत भये ६८ श्रीकृष्ण कों प्रणाम करिकै उद्धव जी व्रजवासीन की भक्ति की अधिकता कहत भये और वसुदेव कों प्रणाम करिकै बलदेव जी कों प्रणाम करिकै राजा उग्रसेन कों भेट देत भये ६९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेउद्धवप्रतियानेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(अष्टचत्वारिंशकेऽथकृष्णः कुब्जामरीरमत् ॥ अक्रूरस्यगृहंगत्वातंगजाह्वयमादिशत् १ सैरन्ध्रीकाममापूर्य्यपूरयित्वामनोरथान् ॥ अक्रूरस्यततःकृष्णस्तेनपार्थानसान्त्वयत् २ अड़तालीसवें अध्याय में कृष्णजी कुब्जा के साथ रमण करतभये और अक्रूरजी के घर जाकर तिनको हस्तिनापुर भेजते भये १ कुब्जा की कामना पूरीकर और अक्रूरजी के मनोरथों को भी पूर्णकर अक्रूरजी

कूं कुन्ती के पुत्रों को समझावते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! उद्धव जी जब ब्रज ते आये ताके पीछे सब के आत्मा और सब के देखननारे छःप्रकार के ऐश्वर्य करिकै युक्त ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कामसूं तपायमान जो कुब्जा है ताके प्रिय करिबे के लिये वाके घर जात भये १ कैसो घर है ताको वर्णन करे हैं बड़ेमोलकी अनेक तरहकी जामें वस्तु धरी हैं काम के उद्दीपन करननारे चित्र जामें लिखे हैं मोतीन की झालरि जिनमें लटकें ऐसी पताका फहराय हैं चँदोवा तनि रहे हैं शय्या बिछ रही है सुन्दर आसन बिछे हैं सुगन्धि की धूप लगि रही है दीवा प्रज्व लित होय रहे हैं माला अतर अरगजा धरे हैं तिनसों शोभायमान घर है २ श्रीकृष्ण कों अपने घरमें आये देखिकै कुब्जा जल्दीदेसी आसनपै ते उठिकै हरबराहट जाके भयो या प्रकार सखीन कों सङ्ग लिये श्रीकृष्ण के पास आवत भई सुन्दर आसन बिछायकै चरण धोइकै सत्कार करत भई ३ तैसेही भलेप्रकार पूजन जिनको कियो ऐसे उद्धवजी आसनकूं हाथ लगाय कै पृथ्वी में

तम् ॥ मुक्तादामपताकाभिर्वितानशयनासनैः ॥ धूपैःसुरभिभिर्दीपैःस्रग्गन्धैरपिमण्डितम् २ गृहंतमायान्तमवेक्ष्यसासनात्सद्यःसमुत्थायहिजातसम्भ्रमा ॥ यथोपसङ्गम्यसखीभिरच्युतंसभाजयामाससदासनादिभिः ३ तथोद्धवःसाधुतयाऽभिपूजितोन्यपीददुर्व्यामभिमृश्यचासनम् ॥ कृष्णोऽपितूर्णंशयनंमहाध नं विवेशलोकाचरितान्यनुव्रतः ४ सामज्जनालेपदुकूलभूषणस्रग्गन्धताम्बूलसुधासवादिभिः ॥ प्रसाधितात्मोपससारमाधवं सव्रीडलीलोत्स्मितविभ्रमे क्षितैः ५ आहूयकान्तांनवसङ्गमह्रिया विशङ्कितांकङ्कणभूषितेकरे ॥ प्रगृह्यशय्यामधिवेश्यरामया रेमेऽनुलेपार्पणपुण्यलेशया ६ साऽनङ्गतप्तकुचयो रुरसस्तथाऽक्ष्णोर्जिघ्रन्त्यनन्तचरणेनरुजोमृजन्ती ॥ दोर्भ्यांस्तनान्तरगतंपरिरभ्यकान्तमानन्दमूर्त्तिमजहादतिदीर्घतापम् ७ सैवंकैवल्यनाथंतंप्राप्यदु ष्प्रापमीश्वरम् ॥ अङ्गरागार्प्पणेनाहोदुर्भगेदमयाचत ८ आहोष्यतामिहप्रेष्ठदिनानिकतिचिन्मया ॥ रमस्वनोत्सहेत्यक्तुंसङ्गन्तेम्बुरुहेक्षण ९ तस्यैकामव रंदत्त्वा मानयित्वाचमानदः ॥ सहोद्धवेनसर्वेशः स्वधामागमदर्च्चितम् १० दुराराध्यंसमाराध्य विष्णुंसर्वेश्वरेश्वरम् ॥ योवृणीतेमनोग्राह्यमसत्त्वात्कुमनी

बैठतभये लौकिक लीलान कूं करैं ऐसे श्रीकृष्ण हू जल्दीदेसी सुन्दर बिछी जो शय्या है तापै जातभये ४ स्नान करिकै चन्दन लगाय सुन्दर वस्त्र पहिन गहने माला अतर अरगजा ताम्बूल और अमृत की सी नाई मादक जे वस्तु हैं तिनसूं अपनपे कूं बनाय ठनायकै लाजभरी लीलापूर्व्वक मुसिकानि कटाक्ष भरी चितवनि सूं मोहति भई ५ नवीन समागम की लज्जा सू शङ्कारहित जो कुब्जा है ताकूं बुलायकै कङ्कण करिकै शोभायमान जो हाथ है ताकों पकरिकै शय्या पै बैठायकै चन्दन को देनो जाके पुण्य को लेश ऐसी जो कुब्जा स्त्री है ताके संग श्रीकृष्ण रमण करतभये ६ कामदेव सू तप्त जे कुच हैं तिनकों ताही प्रकार छाती और नेत्रन कों जो ताप है ताय अनन्त श्रीकृष्ण के चरणारविन्द कूं लगाय कै और वा चरणारविन्द कूं सूंघिकै स्तनन के मध्य में प्राप्तभये जो सुन्दर आनन्दमूर्त्ति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकों भुजानसूं आलिंगन करिकै बहुत दिनन सूं बढ़ो जो तापहै ताकूं त्यागति भई ७ चन्दन के अर्पण करे ते मोक्षके देनवारे दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्ण ईश्वर हैं तिनैं पायके अभागिनी कुब्जा यह मागति भई ८ अहो प्यारे कुछ दिन वसिके मेरे संग रमण करो हे कमलनेत्र ! तुम मोपै त्यागे नहीं जावो हो ९ एक वेर तेरे नित्यहोय जावो करूंगो

ऐसे ता कुब्जा कों कामवर दैके वाको सन्मान करिकै मानके देनवारे ब्रह्मादिकन के ईश्वर श्रीकृष्ण उद्धवजी कों सङ्गलैके सुन्दर जो अपनो घर है तामें आवतभये १० सम्पूर्ण ईश्वरन के ईश्वर दुःख करिकै आराधन करिवे में आवैं ऐसे जो विष्णु तिनैं प्रसन्न करिकै जो पुरुष विषयनको वरमागे वह वडो कुबुद्धि है क्योंकि विषय तुच्छहैं ११ वलदेव उद्धवजी कों सङ्गलैके समर्थ श्रीकृष्ण कछु कार्य्य करायवे के लिये अक्रूर को भलो मनाइवेके निमित्त अक्रूर के घर जातभये १२ अक्रूरजी मनुष्यन में श्रेष्ठ अपने वन्धु जे श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिनकों दूर ते देखिके प्रसन्न होयकै मिलिकै आनन्द पावतभये १३ कृष्ण वलदेव उद्धवजी ने नमस्कार जिनकों करो ऐसे अक्रूरजी पश्चात् कृष्ण वलदेव कों प्रणाम करतभये और आसन पै बैठे जे कृष्ण वलदेव तिनकी पूजा करतभये १४ हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण वलदेवके चरण कों धोवन जो जलहै ताय शिरपै चढावत भये पूजा सू दिव्य वस्त्र चन्दन माला उत्तम गहनेन सूं पूजा करिकै चरण धोइकै प्रणाम करतभये और गोदमें

ष्यसौ ११ अक्रूरभवनंकृष्णः सहरामोद्धवःप्रभुः ॥ किञ्चिच्चिकीर्षयन्प्रागादक्रूरप्रियकाम्यया १२ सतान्नरवरश्रेष्ठानाराद्वीक्ष्यस्वबान्धवान् ॥ प्रत्युत्थायप्रमुदितःपरिष्वज्याभिनन्द्यच १३ ननामकृष्णंराममश्चसतैरप्यभिवादितः ॥ पूजयामासविधिवत्कृतासनपरिग्रहान् १४ पादावनेजनीरापोधारयञ्छिरसानृप ॥ अर्हणेनाम्बरैर्दिव्यैर्गन्धस्रग्भूषणोत्तमैः १५ अर्चित्वाशिरसानम्य पादावङ्कगतौमृजन् ॥ प्रश्रयावनतोऽक्रूरः कृष्णरामावभाषत १६ दिष्ट्यापापोहतःकंसः सानुगोवामिदंकुलम् ॥ भवद्भ्यामुद्धृतंकृच्छ्राद्दुरन्ताच्चसमेधितम् १७ युवांप्रधानपुरुषौ जगद्धेतूजगन्मयौ ॥ भवद्भ्यांनविनाकिञ्चित्परमस्तिनचापरम् १८ आत्मसृष्टमिदंविश्वमन्वाविश्यस्वशक्तिभिः ॥ ईयतेबहुधाब्रह्मन्श्रुतिप्रत्यक्षगोचरम् १९ यथाहिभूतेषुचराचरेषु मह्यादयोयोनिषुभान्तिनाना ॥ एवंभवान्केवलआत्मयोनिष्वात्मात्मतन्त्रोबहुधाविभाति २० सृजस्यथोलुम्पसिपासिविश्वं रजस्तमःसत्त्वगुणैःस्वशक्तिभिः ॥ नबध्यसेतद्गुणकर्मभिर्वा ज्ञानात्मनस्तेक्वचबन्धहेतुः २१ देहाद्युपाधेरनिरूपितत्वाद्भवोनसाक्षान्नभिदात्मनःस्यात् ॥ अतोनबन्धस्तवनैवमोक्षः स्यातांनिकामस्त्वयिनोऽविवेकः २२

चरणन कूं धरिकै दावतभये अधीनतापूर्व्वक नइकै अक्रूरजी कृष्ण वलदेवजी सूं वोलतभये १५। १६ मन्त्रीनसहित पापी कंस मारो वडेकष्टतें तुमने या गोकुल कों उद्धार कियो और कुलकों नदायो यह वड़ो मङ्गलभयो तुम प्रकृतिरूप हौ जगत् के कारण हौ जगन्मय हौ तुम ते पृथक् कछु कार्य्य कारण नहींहै १७। १८ आपने रचो जो विश्वहै तामें अपनी शक्तिनसहित प्रवेश करिकै हे ब्रह्मन् अर्थात् परमेश्वर! श्रवण करिवे में देखिवे में वहुत प्रकारके प्रतीत होउ हौ १९ स्थावर जङ्गम जे देह हैं तिनमें पृथ्वी कों आदि लैके जे पञ्चभूत हैं तिनकूं अनेकप्रकार करिकै प्रकाशो हौ ऐसे आपने प्यारी अकेले जो तुमहो सो आपुही जिनके कारण ऐसे पञ्चभूत और पञ्चभूतन के वने देह तिनमें वहुत रूप करिकै प्रकाशो हौ २० रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण अपनी शक्ति हैं तिन सों विश्वकों उत्पन्न प्रलय पालन करो हौ ते गुण और उत्पत्त्यादिक कर्म्म तिन सों वँधे नहीं हो ज्ञानरूप तुमहौ तिनकूं वन्धन करनवारी अविद्या नहीं है २१ देहादि उपाधि झूंठी साची कहिवे में नहीं आवै ताते आत्माको साचात् जन्म नहीं है जन्म जाको कारण ऐसो भेद नहीं है तुम में अविद्या नहींहै याते वँधे नहींहौ छूटे भी नहींहौ ऐसे वन्ध मोक्ष दोनों तुम

को नहीं हैं उलूखलमें मोकों बँधो सुनो है यमुना के भीतर खुल्यो देखो है बन्ध मोक्ष कैसे नहींहै हमारे अज्ञानकरिकै बन्ध मोक्ष दिखाई देउहौ तुम बँधेहौ न छूटेहौ २२ जगत् के कल्याण करिवे के निमित्त तुमने कह्यो जो सनातन वेदमार्गहै सो जासमय असाधुन के पाखण्ड मार्गसे बाधित होयहै तासमय सत्त्वगुण रूपकों धारण करोहौ २३ हे प्रभो ! या संसारमें पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपने अंश बलदेवसहित वसुदेवजी के घरमें जन्मे हौ देवतानतें इतर जे असुर तिनके अंशनते उत्पन्नभये जे राजाहैं तिनकी सैकरान अक्षौहिणीन के वध करोगे और यदुकुल के यशकूं बढ़ावोगे २४ हे ईश ! आज हमारो घर निश्चय बड़भागी है सब देवता पितृ प्राणी मनुष्य देवरूप जो तुमहौ तिनके चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गारूप तीनों लोकनकूं पवित्रकरे है सो तुम जगत्के गुरु अधोक्षज भगवान् हमारे घरमें आयेहो याते हमारो घर बड़भागी है २५ भक्त हैं प्यारे जिनकों सत्य है वाणी जिनकी सबके हितकारी कृतके जाननवारे ऐसे जो तुमहौ तिनकूं त्यागि

त्वयोदितोऽयंजगतोहिताय यदायदावेदपथःपुराणः ॥ बाध्येत पाखण्डपथैरसद्भिस्तदा भवान्सत्त्वगुणंबिभर्त्ति २३ सत्वंप्रभोऽद्यवसुदेवगृहेऽवतीर्णःस्वांशेनभारमपनेतुमिहासिभूमेः ॥ अक्षौहिणीशतवधेनसुरेतरांशराज्ञाममुष्यचकुलस्ययशोवितन्वन् २४ अद्येशनोवसतयःखलुभूरिभागायःसर्व्वदेवपितृभूतनृदेवमूर्त्तिः ॥ यत्पादशौचसलिलंत्रिजगत्पुनाति सत्वंजगद्गुरुरधोक्षजयाःप्रविष्टः २५ कःपण्डितस्त्वदपरंशरणंसमीयाद्भक्तप्रियादृतगिरःसुहृदःकृतज्ञात् ॥ सर्व्वान्ददातिसुहृदोभजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौनयस्य २६ दिष्ट्याजनार्दनभवानिहनःप्रतीतोयोगेश्वरैरपिदुरापगतिःसुरेशैः ॥ छिन्ध्याशुनःसुतकलत्रधनाप्तगेहदेहादिमोहरशनांभवदीयमायाम् २७ इत्यर्चितःसंस्तुतश्च भक्तेनभगवान्हरिः ॥ अक्रूरंसस्मितंप्राह गीर्भिःसंमोहयन्निव २८ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वंनोगुरुःपितृव्यश्च श्लाघ्योबन्धुश्चनित्यदा ॥ वयंतुरक्ष्याःपोष्याश्च अनुकम्प्याःप्रजाहिवः २९ भवद्विधामहाभागानिषेव्याअर्हसत्तमाः ॥ श्रेयस्कामैर्नृभिर्नित्यं देवाःस्वार्थानसाधवः ३० नह्यम्मयानितीर्थानि नदेवामृच्छिलामयाः ॥ तेपुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेवसाधवः ३१ सभवान्सु

कै ऐसो बुद्धिमान् कौनहै जो अन्यकी शरण लेइ भजन करनवारेन कूं सम्पूर्ण कामनान कों देउहौ और अपने आत्माकूं भी देउहौ और तुम्हारे यह उत्तम है यह नीचहै यह भेद नहींहै २६ हे जनार्दन ! अपने घरमें आयके दर्शनदीनो यह बड़ो मङ्गलभयो योगेश्वर और देवता ये तुम्हारे स्वरूपकूं नहीं जाने हैं पुत्र स्त्री धन हितकारी घर देहादिकनमें मोहकी रस्सीरूप जो तुम्हारी मायाहै सो हमकों लगिरही है ताय जल्दी काटौ २७ भक्त जो अक्रूर है ताने पूजन और स्तुतिकरी ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण वाणीनसूं मोहित करत मुसिकायकै अक्रूर जीतें बोलतभये २८ श्रीकृष्ण भगवान् कहे है तुम हमारे गुरुहौ चचाहौ नित्य स्तुति करिवे योग्यहौ बन्धुहौ हम तुम्हारे लरिकावारेहैं हमारी रक्षाकरो पोषणकरो हमपै कृपाकरो २९ हे पूज्यनमें श्रेष्ठ ! तुम सदृश बड़भागी कल्याण की जिनके चाहना ऐसे मनुष्यन सों नित्य सेवा करिवे लायकहौ देवता आप स्वार्थी हैं साधु महात्मा आप स्वार्थी नहीं होयहैं ३० कहा जलमय तीर्थ नहीं हैं और मृत्तिका शिलान के बने देवता नहीं हैं किन्तु हैं परन्तु वे सब बहुत दिन पर्य्यन्त सेवा करनेते पवित्र करे हैं और साधु जे हैं ते दर्शनही ते पवित्र करेहै ३१ हे अक्रूरजी ! हमारे सुहृदनमें उत्तमहौ याते

पाण्डवन के कल्याण करिवे के लिये हस्तिनापुर कूं जावो ३२ पिता पाण्डुके मरणभये पीछे माता जो कुन्ती है तासहित दुःखित जे पाण्डव बालक हैं तिनकों धृतराष्ट्र अपने पुरमें ले आयो है याके पास रहे हैं यह हमने सुनी है ३३ लुब्धहै बुद्धि जाकी ऐसो अम्बिकाको पुत्र राजा धृतराष्ट्र भय्या के पुत्र पाण्डवनमें समता नहीं राखे हैं दुष्ट जे दुर्योधनकूं आदिलैके पुत्र हैं तिनके अधीन होयग्यो है आंधरी जाकी दृष्टिहै ३४ तुम अब हस्तिनापुरकी जावो बुरीभली उनकी सब खबरि लावो हम जानिकै पाण्डवन कों जामें सुखहोय वह उपाय करेंगे ३५ या प्रकार अक्रूरजी सों कहिकै छ प्रकार के ऐश्वर्य्ययुक्त हरि श्रीकृष्णचन्द्र बलदेव और उद्धवजी कों संगलैके अपने घर आवतभये ३६ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेऽक्रूरप्रेषणोनामाष्टचत्वारिंशोऽध्याय. ४८ ॥

(ऊनपञ्चाशत्तमेतुगत्वाऽक्रूरोगजाह्वयम् ॥ राज्ञःस्वभ्रातृपुत्रेषुबुद्ध्वावैषम्यमागमत् १ उनचासवें अध्याय में अक्रूरजी हस्तिनापुर जाकर धृतराष्ट्र राजाको अपने भाई के पुत्रोंमें विषमता जानकर

हृदांवैनः श्रेयाञ्छ्रेयश्चिकीर्षया ॥ जिज्ञासार्थंपाण्डवानां गच्छस्वत्वंगजाह्वयम् ३२ पितर्य्युपरतेबालाः सहमात्रासुदुःखिताः ॥ आनीताःस्वपुरंराज्ञाव सन्तइतिशुश्रुम ३३ तेषुराजाऽम्बिकापुत्रो भ्रातृपुत्रेषुदीनधीः ॥ समोनवर्त्ततेनूनंदुष्पुत्रवशगोऽन्धदृक् ३४ गच्छजानीहितद्वृत्तमधुनासाध्वसाधुवा ॥ विज्ञायतद्विधास्यामोयथाशंसुहृदांभवेत् ३५ इत्यक्रूरंसमादिश्य भगवान्हरिरीश्वरः ॥ सङ्कर्षणोद्धवाभ्यां वैततःस्वभवनंययौ ३६ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेऽक्रूरप्रेषणोनामाऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सगत्वाहास्तिनपुरं पौरवेन्द्रयशोऽङ्कितम् ॥ ददर्शतत्राम्बिकेयंसभीष्मंविदुरंपृथाम् १ सहपुत्रञ्चबाह्लीकं भारद्वाजंसगौतमम् ॥ कर्णंसुयोधनंद्रौणिं पाण्डवान्सुहृदोऽपरान् २ यथावदुपसङ्गम्य बन्धुभिर्गान्दिनीसुतः ॥ सम्पृष्टस्तैःसुहृद्वार्त्तां स्वयंचापृच्छदव्ययम् ३ उवासकतिचिन्मासान्राज्ञोवृत्तविवित्सया ॥ दुष्प्रजस्याल्पसारस्यखलच्छन्दानुवर्त्तिनः ४ तेजओजोबलंवीर्य्यंप्रश्रयादींश्चसद्गुणान् ॥ प्रजानुरागंपार्थेषुनसहद्भिश्चिकीर्षितम् ५

मथुरापुरी में प्राप्त होजाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! पुरवंशी राजान के यशते शोभायमान जो हस्तिनापुर है तामें जायके अम्बिकाको पुत्र धृतराष्ट्र तिनें अक्रूर जी देखत भये और भीष्मपितामह विदुर कुन्ती और सोमदत्त पुत्रसहित बाह्लीक भारद्वाज अर्थात् द्रोणाचार्य्य गौतम अर्थात् कृपाचार्य्य कर्ण दुर्योधन अश्वत्थामा पाचों पाण्डव और जे सुहृद् हैं तिन सबकूं देखत भये १ । २ गान्दिनीकेपुत्र अक्रूरजी बन्धुनकेसङ्ग यथायोग्य मिलिकै ते बन्धु सुहृदनकी वार्त्ता अक्रूरजी तें पूंछतभये और अक्रूरजी आप उनते कुशल क्षेम पूंछत भये ३ दुष्ट हैं पुत्र जाके और अल्प है बुद्धि जाकी दुष्ट कर्णादिकन के कहे में चलै ऐसो राजा धृतराष्ट्र ताके वृत्तान्त जानिवे के कारण कितनेऊं मासपर्य्यन्त अक्रूरजी वहाँ वास करतभये ४ तेज अर्थात् प्रभाव ओजोबल अर्थात् शस्त्र चलायवे की निपुणता वीर्य्य अर्थात् शूरता पाण्डवन में प्रजा को स्नेह वीरता सों आदि लैके जे अच्छे गुण हैं तिनें नहीं सहारें ऐसे जे धृतराष्ट्र के पुत्र हैं तिनकी और जो कछु आगे करिवे

की इच्छा है ताय और धृतराष्ट्र के पुत्रन ने विषके देवे सूं आदि लेके जो कछु अन्याय करयो है सो सम्पूर्ण वार्त्ता कुन्ती और विदुर अक्रूरजी के आगे कहत भये ५।६ कुन्ती आयो जो भय्या अक्रूर है तासूं मिलि कै और अपने जन्मस्थानको स्मरण करिके नेत्रन में आँसू बहावति अक्रूर जी तें बोलत भई ७ हे सौम्य अर्थात् साधु! मेरे माता पिता कभऊं मेरो स्मरण करे है मेरे भय्या बहिन भय्या के पुत्र कुलकी स्त्री सखी ये सब कभऊं मेरी सुधि करे है शरणागतन को पालक भक्तन के ऊपर हित को करनवारो भय्या को पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कभऊं अपनी फूफी के पुत्रन की सुधि करे है कमल की तुल्य हैं नेत्र जाके ऐसो राम कभऊं सुधि करे है ८। ९ भेड़ियान के बीच में हरिणी जैसे घिर जाय ऐसे वैरीन के बीच में घिरी भई शोच करूं जो मैं हूं ताय वचन करिकै श्रीकृष्ण कहा समझावैगो पिता जिनके मरि गये ऐसे बालकन कों कहा समझावैगो १० हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे महायोगिन्! हे विश्व के आत्मन्! हे विश्व के पालनकर्त्ता! हे गोविन्द!

कृतश्चधार्त्तराष्ट्रैर्यद्गरदानाद्यपेशलम् ॥ आचख्यौसर्वमेवास्मै पृथाविदुरएवच ६ पृथातुभ्रातरंप्राप्तमक्रूरमुपसृत्यतम् ॥ उवाचजन्मनिलयंस्मरन्त्यश्रुकलेक्षणा ७ अपिस्मरन्तिनःसौम्यपितरौभ्रातरश्चमे ॥ भगिन्योभ्रातृपुत्राश्च जामयःसख्यएवच ८ भ्रात्रेयोभगवान्कृष्णः शरण्योभक्तवत्सलः ॥ पैतृष्वस्त्रेयान्स्मरति रामश्चाम्बुरुहेक्षणः ९ सपत्नमध्येशोचन्तीं वृकाणांहरिणीमिव ॥ सान्त्वयिष्यतिमांवाक्यैः पितृहीनांश्चबालकान् १० कृष्णकृष्णमहायोगिन् विश्वात्मन्विश्वभावन ॥ प्रपन्नांपाहिगोविन्द शिशुभिश्चावसीदतीम् ११ नान्यत्तवपदाम्भोजात्पश्यामिशरणंनृणाम् ॥ बिभ्यतांमृत्युसंसारादीश्वरस्यापवर्गिकात् १२ नमःकृष्णायशुद्धायब्रह्मणेपरमात्मने ॥ योगेश्वराययोगाय त्वामहंशरणंगता १३ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यनुस्मृत्यस्वजनंकृष्णंचजगदीश्वरम् ॥ प्रारुदद्दुःखिताराजन् भवतांप्रपितामही १४ समदुःखसुखोऽक्रूरो विदुरश्चमहायशाः ॥ सान्त्वयामासतुःकुन्तीं तत्पुत्रोत्पत्तिहेतुभिः १५ यास्यन् राजानमभ्येत्य विषमंपुत्रलालसम् ॥ अवदत्सुहृदांमध्ये बन्धुभिःसौहृदोदितम् १६ अक्रूरउवाच ॥ भोभोवैचित्रवीर्यत्वं कुरूणांकीर्त्तिवर्द्धन ॥ भ्रातर्यु

बालकन सहित दुःखित होय कै तेरी शरण आई जो मैं हूं ताकी रक्षा करो ११ मृत्युरूपी संसार ते भयभीत जे मनुष्य हैं तिनके ईश्वर तुम हौ और मोक्षके देनवारो जो चरणकमल है तासों अन्य कों शरण नहीं देखौं हूं १२ शुद्ध अर्थात् धर्म्मात्मा ब्रह्म अपरिच्छिन्न अर्थात् ढकिवे में नहीं आवै परमात्मा अर्थात् जीव के सखा योगेश्वर अर्थात् अणिमादिक शक्तियुक्त योग अर्थात् ज्ञानरूप ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र तुमहौ तिनकों नमस्कार है तुम्हारो मैंने शरण लियो है १३ अब श्रीशुकदेव जी कहै हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार जगत् के ईश्वर अपने भतीजे श्रीकृष्ण तिनकी सुधि करिकै तुम्हारी परदादी कुन्ती दुःखित होयकै रुदन करत भई १४ बराबर है दुःख और सुख जिनके ऐसे अक्रूर और बड़ो है यश जिनके ऐसे विदुर जी कुन्ती कूं समझावै हैं तुम्हारे पुत्र धर्म्म पवन इन्द्र इत्यादिकन के अंशतें उत्पन्न भये तुम इतनो शोच क्यों करो हौ या प्रकार कहत भये १५ चलते समय अपने पुत्रन में है स्नेह जाके और भतीजेन में विषमता जाके ऐसे राजा धृतराष्ट्र के पास जायकै सुहृदन के मध्य में जे रामकृष्णादिक बन्धु हैं तिन ने स्नेह ते कहे जे वचन हैं तिनें अक्रूर जी कहतभये १६ अब अक्रूरजी कहै हैं हे वैचित्रवीर्य्य कुल-

राष्ट्र कौरवन की कीर्त्ति के बढ़ावनवारे भय्या पाण्डु मरे तिनके पीछे अब तुम राजसिंहासन पै बैठे हौ अर्थात् राजा पाण्डु के पुत्र युधिष्ठिरादिक बैठे हैं तुम राज्य बैठे सो उचित नहीं है यह कटाक्ष करे है १७ अब अक्रूरजी कहे हैं बहुत उत्तम राज्य करो परन्तु या प्रकार वर्तोगे तो कल्याण होयगो सो अक्रूर जी कहे हैं धर्म्म करिकै पृथ्वी को पालन करोगे और शील करिकै प्रजा को आनन्द देउगे और भतीजेनमें और पुत्रन में समता राखोगे तब संसार में कल्याण और यशको पावोगे १८ और जो विषमता राखोगे तौ संसार में निन्दा होयगी और मरिकै नरक में जावोगे ता कारण पाण्डवन में और अपने पुत्रन में समता राखो १९ हे राजन् धृतराष्ट्र! या संसार में काहू को सत्सग सर्वकाल नहीं रहे है और अपनो देह भी सदा नहीं रहेहै देखो विचार करिकै स्त्री पुत्र ये सर्वदा कहाँ ते रहेंगे २० जीव अकेलोही जन्म लेइहै और अकेलोही मृत्यु पावै है अकेलोही पुण्यको फल सुख है ताकूं भोगे है और अकेलोही पाप को फल

परतेपाण्डावधुनासनमास्थितः १७ धर्मेणपालयन्नुर्वीप्रजाःशीलेनरञ्जयन् ॥ वर्त्तमानःसमःस्वेषु श्रेयःकीर्त्तिमवाप्स्यसि १८ अन्यथात्वाचरँल्लोके गर्हितो यास्यसेतमः ॥ तस्मात्समत्वेवर्त्तस्वपाण्डवेष्वात्मजेषु च १९ नेहचात्यन्तसंवासःकर्हिचित्केनचित्सह ॥ राजन्स्वेनापिदेहेन किमुजायात्मजादिभिः २० एकःप्रसूयतेजन्तुरेकएवप्रलीयते ॥ एकोऽनुभुङ्क्तेसुकृतमेकएवचदुष्कृतम् २१ अधर्मोपचितंवित्तं हरन्त्यन्येऽल्पमेधसः ॥ सम्भोजनीयापदेशैर्जलानीव जलौकसः २२ पुष्णातियानधर्मेण स्वबुद्ध्यातमपण्डितम् ॥ तेऽकृतार्थंप्रहिण्वन्तिप्राणारायःसुतादयः २३ स्वयंकिल्बिषमादाय तैस्त्यक्तोनार्थकोविदः ॥ असिद्धार्थोविशत्यन्धंस्वधर्मविमुखस्तमः २४ तस्माल्लोकमिमंराजन्स्वप्नमायामनोरथम् ॥ वीक्ष्यायम्यात्मनाऽऽत्मानंसमःशान्तोभवप्रभो २५ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ यथावदतिकल्याणीं वाचंदानपतेभवान् ॥ तथाऽनयानतृप्यामि मर्त्यःप्राप्ययथाऽमृतम् २६ तथाऽपिसूनृतासौम्य हृदिनस्थीयतेचले ॥ पुत्रानुरागविषमे विद्युत्सौदामिनीयथा २७ ईश्वरस्यविधिंकोनुविधुनोत्यन्यथापुमान् ॥ भूमेर्भारावताराय योऽवतीर्णोयदोःकुले २८ योदुर्विमर्शपथ

दुःख है ताकूं भोग करे है २१ अज्ञानी पुरुष ने जो पाप करिकै धनसञ्चय कर्यो है ताकूं स्त्री पुत्र भय्या बन्धु होयके लेइ हैं जैसे जल की रहनवारी मछरीन को जिवावनवारो जल है ताकूं वाके पुत्र पीलेइ है तब वाकों कष्ट होय है २२ पापही है एक मार्ग को खर्च जाके ऐसो पुरुष नरक में परे है यह कहे हैं अधर्म्म तें अपने मानिके प्राण धन पुत्रादिकन को भरण पोषण करे हैं और जब भोग जिनकूं नहीं मिले है तब वा अज्ञानी पुरुष कूं त्यागि देइ हैं २३ जब पुत्रादिक जाकों त्यागि देइ हैं तब सब के पाप कों अपने शिर पै धरिकै वही पूर्ण नरक में परे है २४ ता कारण हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र! स्वप्न और बाजीगर की माया तथा मनको विचार ये सब तुमकूं मिथ्याभूत दिखाई देय हैं तैसेही या संसार कूं मिथ्याभूत समझिकै आपही अपने मनको रोकिके समता राखौ शान्तहोउ २५ राजा धृतराष्ट्र कहे हैं हे दाननके पति अक्रूर! जे तुम कल्याणकारक श्रेष्ठ वचन कहो हौ तिनकूं श्रवण करत करत मेरो मन तृप्त नहीं होयहै जैसे मनुष्य अमृतकूं पान करत करत तृप्त नहीं होय है या प्रकार २६ तथापि हे अक्रूर! मेरो चञ्चल पुत्रन में स्नेह है तासूं विषम जो हृदय है तामें तुम्हारी प्यारी बात ठहरे नहीं है जैसे स्फटिकमणि के सुदामा पर्वत पै

बिजुरी चमकिकै स्थिर नहीं रहेहै या प्रकार २७ ऐसो तुम जानो हौ फेरि मोह क्यों करो हौ जो या प्रकार कदाचित् अक्रूरजी कहो ताको उत्तर धृतराष्ट्र देइ हैं ईश्वरकी माया कूं कौन पुरुष अन्यथा करिसकै हैं जो ईश्वर ने पृथ्वी को भार उतारिवे के कारण यादवन के कुलमें आयकै अवतार लियो है २८ जो ईश्वर विचारमें न आवै ऐसी जो अपनी माया है तासूं या विश्व कूं उत्पन्न करिकै और तामें प्रवेश करिकै कर्म्म और कर्म्मन के फलन कू न्यारे न्यारे करिके जीवन कों देइ है जानिवे न आवै ऐसो जो विहार अर्थात् खेल है सोई है मुख्य कारण जा संसारचक्र को ऐसे जो परमेश्वर तुमहौ तिनकूं नमस्कार है २९ अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित्! या प्रकार यदुवंशोत्पन्न अक्रूरजी धृतराष्ट्र को अभिप्राय जानिकै सुहृदन सूं आज्ञा मांगिकै फेरि

यानिजमाययेदं सृष्ट्वागुणान्विभजतेतदनुप्रविष्टः ॥ तस्मैनमोदुरवबोधविहारतन्त्रसंसारचक्रगतयेपरमेश्वराय २९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यभिप्रेत्यनृपतेरभिप्रायंसयादवः ॥ सुहृद्भिःसमनुज्ञातः पुनर्यदुपुरीमगात् ३० शशंसरामकृष्णाभ्यांधृतराष्ट्रविचेष्टितम् ॥ पाण्डवान्प्रतिकौरव्य यदर्थंप्रेषितःस्वयम् ३१ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥ पूर्व्वार्द्धः समाप्तिमगमत् ॥

इति श्रीमद्भागवतेदशमस्कन्धपूर्व्वार्द्धःसमाप्तः ॥

मथुरापुरीमें आवतभये ३० हे कुरुवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित्! वलदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने आय जिस कारण अक्रूरजी कों पाण्डवन के पास भेजो हो सो सब धृतराष्ट्र की कथित वार्त्ता अभिप्राय आयकै श्रीवलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्रजी सूं कहतभयो ३१ इति श्रीमच्छुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीशाखाध्येतृवैयाघ्रपदगोत्रजातविश्वामित्रपुराधिपश्रीमन्नृपतिजयविशोरदेवात्मजश्रीगिरिप्रसादवर्म्माज्ञयापण्डिताङ्गदशर्म्मशास्त्रिरचितायांश्रीमन्महाभागवतार्थस्वरूपिण्यादशमस्कन्धेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

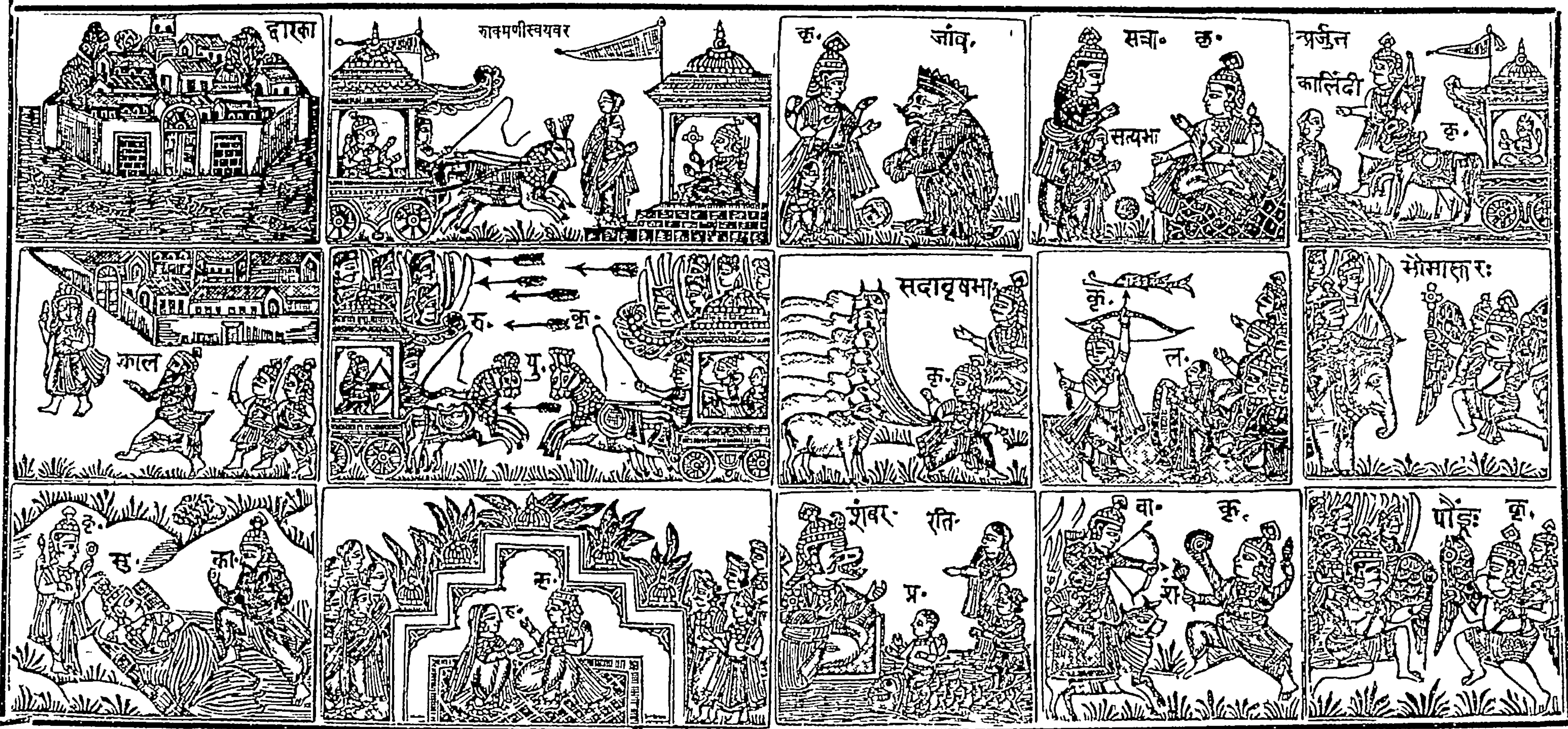
समाप्तश्चायम्पूर्व्वार्द्धः ॐ तत्सत् श्रीगोपीजनवल्लभार्प्पणमस्तु ॐ शान्तिः ३ ॥



॥ इति श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धपूर्वार्द्धम् ॥

॥ अथ श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धउत्तरार्द्धम् ॥

दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध




द्विविद
रा


कृ.
सुदामा.


रा.
सुभद्रा
रेवती
अर्जुन
पति


शिशु
कृष्ण
राजसूयज्ञ


शाल्व
प्रद्यु.


कुरुक्षेत्र


यात्रासमूह


रोम
राम
भस्मा
कृष्ण.
शिव


परब्रह्म
वेदा

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः (ततः श्चाशस्तमेतुजरासन्धभयादिव ॥ कारयित्वाम्बुधौदुर्गंतंनिनाय निजंजनम् १ कपटान्कपटैरेवहत्वादैत्यानयत्नतः ॥ अजयद्यजरासन्धं धर्म्मेणैवतुधार्मिकम् २ अब पूर्वार्द्ध कहे पीछे पचासके अध्यायमें जो कथाहै ताको वर्णन करे हैं जरासन्ध के भयतेही मानों समुद्र में किला बनाय के श्रीकृष्ण अपने यादवन कों ले जातभये १ कपटी दैत्यन कों कृष्णजी कपटों सों विना यत्नही सूं मारिकै धर्म्मात्मा जरासन्धको धर्मही सूं जीतते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे भरतवंशीन में भये राजन् परीक्षित् ! अस्ति और प्राप्ति ये दोनों कंसकी रानीहैं ते अपने पति कंसके मरण सूं दुःखित होयके पिताके घर जातिभई १ दुःखित जे अस्ति प्राप्ति हैं ते अपनो पिता जो मगधदेशको राजा जरासन्धहै ताकों सम्पूर्ण अपने विधवापनेको कारण जतावति भई २ हे राजन् परीक्षित् ! ताही काल दुःखके भरे अप्रिय वचन सुनिकै जरासन्ध जामाताको शोक न सहिकै यादवनसूं रहित पृथ्वीकूं करिवेको उपाय करतभयो ३ तेईस अक्षौहिणी सेना कूं सङ्गलैके जरासन्ध यादवन की राजधानी जो मथुरा है ताय सम्पूर्ण दिशान ते घेरत भयो ४ मर्य्यादा त्यागिकै मानों समुद्र उमड़्यो चल्यो आवे है या प्रकार जरासन्धकी सेना कूं आवति

श्रीशुकउवाच ॥ अस्तिःप्राप्तिश्चकंसस्य महिष्यौभरतर्षभ ॥ मृतेभर्त्तरिदुःखार्ते ईयतुःस्मपितुर्गृहान् १ पित्रेमगधराजाय जरासन्धायदुःखिते ॥ वेदयाञ्चक्रतुःसर्वमात्मवैधव्यकारणम् २ सतदप्रियमाकर्ण्य शोकामर्षयुतोनृप ॥ अयादवींमहींकर्तुं चक्रेपरममुद्यमम् ३ अक्षौहिणीभिर्विंशत्या तिसृभिश्चापिसंवृतः ॥ यदुराजधानींमथुरां न्यरुणत्सर्वतोदिशम् ४ निरीक्ष्यतद्बलंकृष्णउद्वेलमिवसागरम् ॥ स्वपुरंतेनसंरुद्धं स्वजनञ्चभयाकुलम् ५ चिन्तयामासभगवान् हरिःकारणमानुषः ॥ तद्देशकालानुगुणं स्वावतारप्रयोजनम् ६ हनिष्यामिबलंह्येतद्भुविभारंसमाहितम् ॥ मागधेनसमानीतंवश्यानांसर्वभूभुजाम् ७ अक्षौहिणीभिःसङ्ख्यातं भटाश्वरथकुञ्जरैः ॥ मागधस्तुनहन्तव्योभूयःकर्त्ताबलोद्यमम् ८ एतदर्थोऽवतारोऽयं भूभारहरणायमे ॥ संरक्षणायसाधूनां कृतोऽन्येषांवधायच ९ अन्योऽपिधर्मरक्षायै देहःसंभ्रियतेमया ॥ विरामायाप्यधर्मस्य कालेप्रभवतःक्वचित् १० एवंध्यायतिगोविन्दआकाशात्सूर्य

देखिकै और ता सेना सों आवृत मथुरापुरी कों देखिकै और स्वजन जे अपने यादव हैं तिनकूं व्याकुल देखिकै ५ पृथ्वी कों भार उतारिवे के कारण मनुष्यरूप जिनने धर्‍यो ऐसे सब के दुःखके हरनवारे श्रीकृष्ण ता समय देश कालके योग्य अपने अवतारको प्रयोजन है ताहि देखिकै विचार करतभये ६ जरासन्ध कूं छोड़िकै या सेना को वधकरूं अथवा जरासन्ध कों मारिकै सेना कूं ग्रहण करूं अथवा सेनासहित जरासन्ध कूं मारूं ऐसे तीनप्रकार के मनमें सङ्कल्प विकल्प करिकै प्रथम विचार जो सेनावध है ताही कू निश्चय करतभये क्योंकि पृथ्वी को भाररूप यह सेनाहै याही कूं मारूंगो सम्पूर्ण देशन के राजान की सेनाकों जरासन्ध लेआयो है ऐसो समय वारवार न मिलैगो ७ प्यादे अश्व रथ हस्ती इह चतुरङ्गिणी अनेक अक्षौहिणी सेना कोही मारिवे योग्य है जरासन्ध को मारिवो योग्य नहीं है काहे से यह काम को है सम्पूर्ण कूं समेटि के यहा ले आवैगो मैं कहां कहा फिरूंगो ८ भूमि को बोझ उतारिवे कों और साधुन की रक्षा करिवे कों और दुष्टन के वध करिवे के निमित्त मैंने अवतार लियो है ९ कोई समय पाइकै पृथ्वी पै बढ़े जे अधर्म्मी हैं तिनके नष्ट करिवे के कारण और धर्म्म की रक्षा करिवे के कारण औरहू देह कों

में धारण करूं हूं १० या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र विचार करे है इतने में सूर्य की तुल्य जिनको तेज ध्वजा कवच जिनमें धरे और रथवान् सहित दो रथ शीघ्रही आकाश तें उतरत भये ११ वाही समय अनायासपूर्वक आये जे दिव्यशस्त्र हैं तिनें देखिकै हृषीकेश श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजीसों बोलतभये १२ हे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! तुमहीं जिनकी रक्षा करनवारे ऐसे यादवन कूं दुःख आयकै प्राप्त भयो है तुम देखो यह रथ आयो है प्यारे शस्त्र आये हैं १३ रथमें वैठिकै सेना कूं मारो अपने यादवन कों कष्ट दूरिकरो हे ईश ! साधून के कल्याण के निमित्त या संसार में हमारो तुम्हारो जन्म है १४ तेईस अक्षौहिणी सेना आयकै प्राप्त भई है ताको पृथ्वी पै वोझ है ताकूं दूरि करो या प्रकार दाशार्हवंशोत्पन्न जे कृष्ण वलदेव हैं ते विचार करिकै कवचन कूं पहिरिकै सुन्दर शस्त्रनकूं लैकै रथमें वैठिकै कछु थोड़ी सी सेना सङ्गलैकै पुरके वाहिर निकसिके दारुकहै सारथी जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शङ्ख कूं वजावत भये १५ । १६ ताके पीछे जरासन्ध

वर्चसौ ॥ रथावुपस्थितौसद्यः ससूतौसपरिच्छदौ ११ आयुधानिचदिव्यानिपुराणानियदृच्छया ॥ दृष्ट्वातानिहृषीकेशः सङ्कर्षणमथाब्रवीत् १२ पश्यार्यव्य सनंप्राप्तं यदूनांत्वावतांप्रभो ॥ एषतेरथआयातो दयितान्यायुधानिच १३ यानमास्थायजह्येतद्व्यसनात्स्वान्समुद्धर ॥ एतदर्थंहिनौजन्म साधूनामीशशर्मकृत् १४ त्रयोविंशत्यनीकाख्यं भूमेर्भारमपाकुरु ॥ एवंसंमन्त्र्यदाशार्हौ दंशितौरथिनौपुरात् १५ निर्जग्मतुःस्वायुधाढ्यौ बलेनाल्पीयसावृतौ ॥ शङ्खन्दध्मौविनिर्गत्य हरिर्दारुकसारथिः १६ ततोभूत्परसैन्यानां हृदिवित्रासवेपथुः ॥ तावाहमागधोवीक्ष्य हेकृष्णपुरुषाधम १७ नत्वयायोद्धुमिच्छामि बालेनैकेनलज्जया ॥ गुप्तेनहित्वयामन्द नयोत्स्येयाहिबन्धुहन् १८ तवरामयदिश्रद्धा युध्यस्वधैर्यमुद्वह ॥ हित्वावामच्छरैश्छिन्नन्देहंस्वर्याहिमांजहि १९ श्रीभगवानुवाच ॥ नवैशूराविकत्थन्ते दर्शयन्त्येवपौरुषम् ॥ नगृह्णीमोवचोराजन्नातुरस्यमुमूर्षतः २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ जरासुतस्तावभिसृत्यमाधवौ महाबलौघेनबलीयसावृणोत् ॥ ससैन्ययानध्वजवाजिसारथीसूर्यानलौवायुरिवाभ्ररेणुभिः २१ सुपर्णतालध्वजचिह्नितौरथावलक्षयन्त्योहरिरामयोर्मृधे ॥ स्त्रियःपुराट्टालकहर्म्यगोपुरं समाश्रिताःसंमुमुहुःशुचार्दिताः २२ हरिःपरानीकपयोमुचांमुहुःशिलीमुखात्युल्बणवर्षपीडितम् ॥ स्वसैन्यमालोक्यसुरासुर

की सेना के हृदय भयभीत होयकै कम्पित होत भये कृष्ण वल देवकूं देखिकै जरासन्ध वोलतभयो हे कृष्ण अधम ! तूं अकेलो वालक है तेरे सङ्ग युद्ध न करूंगो मोकूं लज्जा आवै है हे वन्धून के मारनवारे ! हे मूर्ख ! भाजनवारो तूं है तातें तेरे सङ्ग युद्ध न करूंगो १७ । १८ हे राम ! जो तेरे श्रद्धाहोय तो धीरज धरिकै युद्ध कर मेरे वाणन करिकै कट्यो जो देह है ताकूं त्यागि कै स्वर्ग कूं जा अथवा संग्रामके वीचमें मोहिं मारिले १९ अव श्रीभगवान् कहे हैं शूरवीर हैं ते वकै नहीं हैं अपने पुरुषार्थकूं दिखावें हैं हे राजन् ! जरासन्ध आसन्नमृत्यु जो तू है तातें तेरो वचन मैं नहीं मानूं हूं २० जैसे पवन वादर धूरि ये सूर्य अग्नि कूं घेरि लेइ है तैसे माधव जे श्रीकृष्ण वलदेव हैं तिनके पासजायकै जरासन्ध वडीवलवती जो सेना है तासूं प्यादे रथ ध्वजा घोड़ा रथवान् इनसू घेरतभयो २१ गरुड़ की ताल की ध्वजाके हैं चिह्न जिनमें ऐसे जे राम कृष्णके रथ हैं ते युद्ध में नहीं दीखे तव पुर अटारी महल दरवाजेन पै ठाढ़ी जे स्त्री हैं ते शोकसूं व्याकुल होयकै मोहकरतिभई २२ शत्रुकी

सेना रूप नादरन मेंसूं वारंवार वाणन की भयङ्कर जो वर्षा भई तासूं पीड़ित अपनी सेना कूं श्रीकृष्णचन्द्र देखिकै देवता असुर जाकी पूजा करैं ऐसो जो धनुषनमें उत्तम शार्ङ्ग धनुष है ताहि टङ्कारत भये २३ तरकस ते तीर निकासि कै शीघ्र प्रत्यञ्चामें लगाय कै प्रत्यञ्चाकूं खैंचिकै तीक्ष्ण वाणन के समूहनसूं रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कूं मारिकै जैसे सिलगति लकड़ीको घुमावने सूं चक्र बँधे है तैसे वाणन के पीछे वाण लगावतभये २४ मस्तक जिनके कटिगये ऐसे हजारन हाथी गिरतभये वाणन सूं कटी है नारि जिनकी ऐसे घोड़ा गिरतभये रथनके कटि के घोड़े और ध्वजा गिरत भई और रथवान् और नायक गिरतभये कटी है भुजा जंघा नारि जिनकी ऐसे प्यादे गिरतभये २५ युद्धमें कटे जो प्यादे हाथी घोड़ा तिनके अंगनमें ते निकसिकै असंख्याक रुधिरनकी नदी वहाति भई रुधिर की नदीनकों प्रसिद्ध नदीन सों रूपक बांधिकै वर्णन करै है नदीनमें सर्प रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन की भुजा मानों सर्प है नदीन में कछुवा रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन के शिर कटिकै कछुवाके मानिन्द वहे हैं नदीन में टापू होइ हैं रुधिरकी नदीन में मरे हाथी टापून के मानिन्द परे हैं नदीन में ग्राह होइ हैं रुधिर की नदीन में घोड़ा ग्राह के मानिन्द मरे परे हैं

र्चितं व्यस्फूर्जयच्छार्ङ्गशरासनोत्तमम् २३ गृह्णन्निषङ्गादथसन्दधच्छरान् विकृष्यमुञ्चञ्छितबाणपूगान् ॥ निघ्नन्रथान्कुञ्जरवाजिपत्तीन् निरन्तरंयद्व दलातचक्रम् २४ निर्भिन्नकुम्भाःकरिणोनिपेतुरनेकशोऽश्वाःशरवृक्णकन्धराः ॥ रथाहताश्वध्वजसूतनायकाःपदातयश्छिन्नभुजोरुकन्धराः २५ सञ्छि द्यमानद्विपदेभवाजिनामङ्गप्रसूताःशतशोऽसृगापगाः ॥ भुजाऽहयःपूरुषशीर्षकच्छपाहतद्विपद्वीपहयग्रहाकुलाः २६ करोरुमीनानरकेशशैवलाधनुस्त रङ्गायुधगुल्मसङ्कुलाः ॥ अच्छूरिकावर्त्तभयानकामहामणिप्रवेकाभरणाश्मशर्कराः २७ प्रवर्त्तिताभीरुभयावहामृधे मनस्विनांहर्षकरीःपरस्परम् ॥ विनि घ्नताऽरीन्मुसलेनदुर्मदान् सङ्कर्षणेनापरिमेयतेजसा २८ बलंतदङ्गार्णवदुर्गभैरवं दुरन्तपारंमगधेन्द्रपालितम् ॥ क्षयंप्रणीतंवसुदेवपुत्रयोर्विक्रीडितंतज्जग दीशयोःपरम् २९ स्थित्युद्भवान्तंभुवनत्रयस्ययःसमीहतेऽनन्तगुणःस्वलीलया ॥ नतस्यचित्रंपरपक्षनिग्रहस्तथाऽपिमर्त्यानुविधस्यवर्ण्यते ३० जग्राहविर

तिनसूं व्याप्त होय रही हैं २६ नदीन में मत्स्य होइ हैं रुधिर की नदीन में हथेरी पिंडरी मत्स्यके मानिन्द हैं नदीन में सिवार होइ है रुधिर की नदीन में मनुष्यन के केश सिवार के मानिन्द बहे डोले हैं नदीन में तरंग उठे हैं रुधिरकी नदीन में धनुष् तरंग के मानिन्द हैं नदीन में झारझङ्काड़होइ हैं रुधिर की नदीन में शस्त्र हैं ते झाड़ झङ्काड़ के मानिन्द हैं नदीन में भ्रमर परै है तिन सूं अति भयङ्कर होइ हैं रुधिर की नदीन में ढालैं मानों भयङ्कर भ्रमर फिरे हैं नदीनमें काकर पत्थर होइ हैं रुधिर की नदीन में मणि गहने काकर पत्थरके तुल्य हैं २७ बड़ोहै तेज जिनकों ऐसे बल- देवजीने संग्राम विषे दुर्मद हैं मद जिनके ऐसे शत्रुनकूं मूसल तें मारि मारिकै रुधिरनकी नदी बहाई कैसी नदी हैं भयभीत मनुष्यनकों भयकी देनवारी और शूरवीरनकों आनन्दकी देनवारी है २८ जरासन्ध पालन करे समुद्रकी तुल्य दुर्गम भयङ्कर न जाकी थाह है और न पारहै ऐसी जो वह सेनाहै ताकूं हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण बलदेव ने मारिमारिकै नाश करि दीनो वसुदेव के पुत्र ज- गत् के ईश्वर जे कृष्ण बलदेव हैं तिनकूं सेनाको नाश करिनो क्रीडामात्रही है कछु पराक्रम नहीं है २९ अनन्त हैं गुण जिनके ऐसे भगवान् श्री कृष्णचन्द्र अपनी लीला करिके तीनों लोकनकूं

उत्पन्न पालन संहार करे हैं तिन श्रीकृष्णकूं शत्रु जरासन्ध की सेनाको मारिवो कछु आश्चर्य नहीं है तथापि मनुष्यन के अनुकरण करे जो श्रीकृष्ण तिनके कर्म आश्चर्य से कहिवे में आवे हैं ३०रथ जाको टूटिगयो सेना जाकी नष्टभई केवल प्राण शेष रहे ऐसे बड़े बलवान् जरासन्धकूं जैसे सिंह सिंहकूं पकरे हैं ता प्रकार बल करिकै बलदेवजी पकरतभये ३१ वरुणके मनुष्यन को रस्सान में बांधिलियो शत्रु जाने मारे ऐसे जरासन्धकूं श्रीकृष्ण छुड़ावतभये क्योंकि जरासन्ध सों और कछु काम करावनो है ३२ शूरवीर जाको सत्कार करे ऐसे जरासन्धकूं त्रिलोकी के नाथ श्रीकृष्ण बलदेव ने जा समय छोड़ि दियो तब लज्जित होयकै मनमें विचारत भयो कि घरजायकै कहा करूंगो बनमें जायकै तप करूंगो तासमय मार्गमें राजानने मने कस्यो ३३ धर्म के उपदेश करनवारे हैं पद जिनमें ऐसे नीतिके दृष्टिकारक वचनन कूं कहिकै जरासन्धकूं समझायो तुम्हारो कोई दुष्कर्म आयगयो याते तुच्छ यादवन ने तुमकूं जीत लियो अब तुम लाज मतिकरो ३४

रथंरामोजरासन्धंमहावलम् ॥ हतानीकावशिष्टासुं सिंहःसिंहमिवौजसा ३१ वध्यमानंहतारातिं पाशैर्वारुणमानुषैः ॥ वारयामासगोविन्दस्तेनकार्यचि
कीर्षया ३२ समुक्तोलोकनाथाभ्यां व्रीडितोवीरसम्मतः ॥ तपसेकृतसङ्कल्पोवारितःपथिराजभिः ३३ वाक्यैःपवित्रार्थपदैर्नयनैःप्राकृतैरपि ॥ स्वकर्मबन्ध
प्राप्तोयं यदुभिस्तेपराभवः ३४ हतेषुसर्वानीकेषु नृपोबार्हद्रथस्तदा ॥ उपेक्षितोभगवतामगधान्दुर्मनाययौ ३५ मुकुन्दोऽप्यक्षतबलोनिस्तीर्णारिबलार्ण
वः ॥ विकीर्यमाणःकुसुमैस्त्रिदशैरनुमोदितः ३६ माथुरैरुपसङ्गम्य विज्वरैर्मुदितात्मभिः ॥ उपगीयमानविजयःसूतमागधवन्दिभिः ३७ शङ्खदुन्दुभयोने
दुर्भेरीतूर्याण्यनेकशः ॥ वीणावेणुमृदङ्गानि पुरंप्रविशतिप्रभौ ३८ सिक्तमार्गांहृष्टजनां पताकाभिरलङ्कृताम् ॥ निर्घुष्टांब्रह्मघोषेण कौतुकाबद्धतोरणाम्
३९ निचीयमानोनारीभिर्माल्यदध्यक्षताङ्कुरैः ॥ निरीक्ष्यमाणःसस्नेहं प्रीत्युत्कलितलोचनैः ४० आयोधनगतंवित्तमनन्तंवीरभूषणम् ॥ यदुराजायतत्स
र्वमाहृतंप्रादिशत्प्रभुः ४१ एवंसप्तदशकृत्वस्तावत्यक्षौहिणीबलः ॥ युयुधेमागधोराजायदुभिःकृष्णपालितैः ४२अक्षिण्वंस्तद्बलंसर्वं वृष्णयःकृष्णतेजसा॥

जासमय सम्पूर्णसेना नष्टहोयगई श्रीकृष्ण ने छोड़िदियो तासमय बृहद्रथ के वंशोत्पन्न जरासन्ध उदासीन होयकै मगधदेशनकूं जातभयो ३५ नहीं नष्टभई है सेना जिनकी तस्यो है शत्रुकी सेनारूप सागर जिनने देवतानने पुष्पनकी वर्षाकरी और प्रशंसापूर्वक स्तुतिकरी तब श्रीकृष्णचन्द्र अपनीमथुरापुरीमें आवतभये गये हैं खेद जिनके प्रसन्नभये हैं मन जिनके ऐसे मथुरावासीन सूं मिलकै सूत मागध वन्दीजन जिनके विजय के वचन गावतभये ३६। ३७ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जा समय मथुरापुरी में आये तब शङ्ख नगारे अनेकन भेरी तुरही वीणा बांसुरी मृदङ्ग ये सब बाजे बजावत भये ३८ मार्गमें छिरकाव होय रहे प्रसन्न हैं मनुष्य जामें पताकानसूं शोभायमान वेदध्वनि जामें होयरही श्रीकृष्णचन्द्र के आगमन के आनन्दसूं घर घर बन्दनवार जामें बँधी है ऐसी मथुरापुरीकी शोभा होतिभई ३९ श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर स्त्री पुष्प दधि अक्षत अंकुरनकी वर्षा करतिभई स्नेह ते प्रफुल्लित जो नेत्र हैं तिनसूं श्रीकृष्णकूं देखे हैं ४० शूरवीर राजानकी शोभाको करनवारो रणभूमि में पस्यो जो बहुत धनहै ताकूं लायकै श्रीकृष्णचन्द्र राजा उग्रसेन कूं देतभये ४१ श्रीकृष्णचन्द्र जिनके पालन करनवारे ऐसे यादवन सूं मगधदेश को राजा जरासन्ध सत्रह वार तेईस २

अन्नौहिणी सेनानिके युद्ध करतभयो ४२ यादव श्रीकृष्णके तेजतें जरासन्धकी सम्पूर्ण सेनाको नाश करतभये हे राजन् परीक्षित्! सम्पूर्ण सेना जब कटिगई शत्रुने छोड़ि दियो तब जरासन्ध अपने देशकूं जातभयो ४३ अठारहीं बार फेर युद्ध होनहारहो ताके बीच में ही नारदजी को भेज्योवीर जो कालयवनहै सो आय कै दिखाई देतभयो ४४ संसारमें जाके तुल्य कोई योद्धा नहीं ऐसो कालयवन यादवन कूं अपनी बराबरके मानि कै तीन किरोड़ म्लेच्छन कूं सङ्ग लैके मथुरापुरीकूं घेरत भयो ४५ बलदेवजीहैं सहाय जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कालयवनकूं आयो देखिके चिन्ता करतभये बड़ो आश्चर्य है यादवन कूं दोनों ओरतें बड़ो कष्टआयोहै अब तो यह बड़ो बली कालयवन हमकूं घेरे है फेर जरासन्धहू आज अथवा कालिह अथवा परसों पर्यन्त आवैगोही ४६।४७ जो या समय हम याते युद्ध करेंगे और बीच में जरासन्ध आय गयो तो हमारे बन्धून कूं मारेगो और जो न मारेगो तो बलवान् है बाँधिकै अपने पुर में लेजायगो ४८ यातें मनुष्य जहाँ न जाय

हतेषु स्वेष्वनीकेषु त्यक्तोऽयादरिभिर्नृपः ४३ अष्टादशमसंग्राम आगामिनितदन्तरा ॥ नारदप्रेषितोवीरोयवनःप्रत्यदृश्यत ४४ रुरोधमथुरामेत्यतिसृभिर्म्लेच्छकोटिभिः ॥ नृलोकेचाप्रतिद्वन्द्वोवृष्णीञ्छ्रुत्वात्मसंमितान् ४५ तंदृष्ट्वाचिन्तयत्कृष्णः सङ्कर्षणसहायवान् ॥ अहोयदूनांवृजिनं प्राप्तंह्युभयतोमहत् ४६ यवनोऽयंनिरुन्धेस्मानद्यतावन्महाबलः ॥ मागधोप्यद्यवाश्वोवा परश्वोवागमिष्यति ४७आवयोर्युद्ध्यतोरस्ययद्यागन्ताजरासुतः ॥ बन्धून्वधिष्यत्यथवा नेष्यतेस्वपुरंबली ४८ तस्मादद्यविधास्यामोदुर्गंद्विपददुर्गमम् ॥ तत्रज्ञातीन्समाधाय यवनंघातयामहे ४९ इतिसम्मन्त्र्यभगवान्दुर्गंद्वादशयोजनम् ॥ अन्तःसमुद्रेनगरंकृत्स्नाद्भुतमचीकरत् ५० दृश्यतेयत्रहित्वाष्ट्रं विज्ञानंशिल्पनैपुणम् ॥ रथ्याचत्वरवीथीभिर्यथावास्तुविनिर्मितम् ५१ सुरद्रुमलतोद्यानविचित्रोपवनान्वितम् ॥ हेमशृङ्गैर्दिविस्पृग्भिःस्फाटिकाट्टालगोपुरैः ५२ राजतारकुटैःकोष्ठैर्हेमकुम्भैरलङ्कृतैः ॥ रत्नकूटैर्गृहैर्हेमैर्महामरकतस्थलैः ५३ वास्तोष्पतीनाञ्चगृहैर्वल्लभीभिश्चनिर्मितम् ॥ चातुर्वर्ण्यजनाकीर्णं यदुदेवगृहोल्लसत् ५४ सुधर्मांपारिजातञ्च महेन्द्रःप्राहिणोद्धरेः ॥ यत्रचावस्थितोमर्त्यो मर्त्यधर्मैर्न

सकै ऐसो एक किला बनावेंगे तामें अपने ज्ञाति के यादवन कूं राखिकै कालयवन कूं मारेंगे ४९ या विधि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मन में विचार करिकै अड़तालीस कोस को समुद्र के बीच में किला और ता किले के बीच में आश्चर्य अद्भुत नगर रचत भये ५० कैसो नगर है कि जा नगर में सम्पूर्ण विश्वकर्मा की कारीगरी दिखाई देय है राजा के निकसिबे के बड़े बड़े बाजार और गली और चौक जामें बने हैं ५१ बीच बीच में हवेली बनिबे की जगह छिकि गई है कल्पवृक्ष और लता हैं जिनमें ऐसे फलन के बाग और चित्र विचित्र फुलवारी के बगीचा लगि रहे हैं स्वर्ण के जिनके शिखर आकाश कूं स्पर्श करैं ऐसे ऊँचे स्फटिक मणिन के अटा बनि रहे हैं और ऊँचे ऊँचे किला के द्वार बने हैं घोड़ान के बँधिबे के और अन्न भरिबे के लोहे पीतल के स्थान बने हैं तिनके ऊपर सोने के कलश धरे हैं तिनसूं सुन्दर लगे हैं पद्मराग मणि के जिनके शिखर और महामरकतमणिन की जिनमें धरती ऐसे सुवर्ण के घर जहाँ बने हैं ५२।५३ देवतान के मन्दिर बने हैं और चित्रसारी बनी हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चार वर्ण जामें बसे हैं यादवन के और देव राजा उग्रसेन के महल जे बने हैं तिनसूं शोभायमान है ५४ जा न-

भोग छूटे १७ और तुम्हारे पुत्र रानी ज्ञातिके भय्या वन्धु दीवान मधान मन्त्री राज्यकी प्रजा ये सम्पूर्ण अब कोई नहीं बचे हैं सबको कालने नाश करि दियो १८ काल बलवाननमें बलवान् है भगवान्की शक्तिहै समर्थ अविनाशी है जैसे पशूनको पालन करनवारो ग्वालिया पशून कूं चलावै है ऐसे काल आप क्रीडा करिकै समस्त प्रजाकूं इत उतचलावै है १९ सम्पूर्ण देवता कहे हैं हे राजन् मुचुकुन्द ! तुम्हारो कल्याणहोय मोक्षके विना जो कोई वरचाहो सो मागिलेउ मोक्षको दाता तौ केवल एक अविनाशी विष्णु भगवान् ईश्वरहै २० या प्रकार जब देवतानने कह्यो तब बड़ो है यश जाको ऐसो राजा मुचुकुन्द बहुत दिन देवतानकी जो रक्षाकरी तासूं अतिश्रमितहै या कारण शयनके अर्थ निद्रा वर मांगतभयो हे देवताओ ! जो कोई सोवत में मेरी निद्राको भङ्गकरै वह उसी समय भस्म होय जाय या विधिको वर मागो सोई देवतानने दियो तब राजा मुचुकुन्द देवतान ने दीनी जो निद्रा तासूं पर्व्वतकी गुफामें जायकै सोवतभयो २१ । २२ देवतान ने वरदियो कि

र्वउज्झिताः १७ सुतामहिष्योभवतोज्ञातयोऽमात्यमन्त्रिणः ॥ प्रजाश्चतुल्यकालीयानाधुनासन्तिकालिताः १८ कालोबलीयान्बलिनांभगवानीश्वरो ऽव्ययः ॥ प्रजाःकालयतेक्रीडन्पशुपालोयथापशून् १९ वरंवृणीष्वभद्रन्तेऋतेकैवल्यमद्यनः ॥ एकएवेश्वरस्तस्य भगवान्विष्णुरव्ययः २० एवमुक्तःस वैदेवानभिवन्द्यमहायशाः ॥ निद्रामेवततोवव्रेराजाश्रमविकर्षितः ॥ यःकश्चिन्ममनिद्रायाभङ्गंकुर्य्यात्सुरोत्तमाः २१ सहिभस्मीभवेदाशुतथोक्तैश्चसुरैस्तदा ॥ अशयिष्टगुहाविष्टोनिद्रयादेवदत्तया २२स्वापंयातंयस्तुमध्ये बोधयेत्त्वामचेतनः ॥ सत्वयादृष्टमात्रस्तु भस्मीभवतुतत्क्षणात् २३यवनेभस्मसान्नीते भगवा न्सात्वतर्षभः ॥ आत्मानन्दर्शयामास मुचुकुन्दायधीमते २४ तमालोक्यघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ श्रीवत्सवक्षसम्भ्राजत्कौस्तुभेनविराजितम् ॥ २५ चतुर्भुजंरोचमानं वैजयन्त्याचमालया ॥ चारुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् २६ प्रेक्षणीयंनृलोकस्य सानुरागस्मितेक्षणम् ॥ अपीच्यवयसंमत्तमृगे न्द्रोदारविक्रमम् २७ पर्य्यपृच्छन्महाबुद्धिस्तेजसातस्यधर्षितः ॥ शङ्कितःशनकैराजा दुर्धर्षमिवतेजसा २८ ॥ मुचुकुन्दउवाच ॥ कोभवानिहसम्प्राप्तोवि पिनेगिरिगह्वरे ॥ पद्भ्यांपद्मपलाशाभ्यां विचरस्युरुकण्टके २९ किंस्वित्तेजस्विनांतेजोभगवान्वाविभावसुः ॥ सूर्य्यःसोमोमहेन्द्रोवा लोकपालोपरोऽपि

जावो तुम अचेतनसोवो जो तुम्हें बीचमें जगावैगो वह तुम्हारी दृष्टि परे तें तत्काल जरिकै भस्म होय जायगो २३ जा समय कालयवन जरिकै भस्म होयगयो ता समय यादवनमें श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बुद्धिमान् मुचुकुन्दकूं अपनो दर्शन करावतभये २४ मेघकी तुल्य श्यामवर्ण पीतवस्त्र धारणकरे हृदयमें भृगुलताको जिनके चिह्नहै प्रकाशमान कौस्तुभमणि धारण करे हैं तासों शो- भायमान हैं २५ चतुर्भुज वैजयन्ती माला सूं प्रकाशमान हैं सुन्दर प्रसन्न जिनको मुख सो मकराकृति कुण्डलन सूं प्रकाशमान है २६ मनुष्यनकों देखिबे योग्य स्नेह भरी मुसिकानि सहित जिनकी चितवनि नवीन जिनकी अवस्था मतवारे सिंहकी तुल्य जिनकों पराक्रमहै २७ ऐसे श्रीकृष्णकूं देखिकै बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णचन्द्र के तेजसूं पराभव कूं प्राप्तभये ऐसे राजा मुचुकुन्द भय मानिकै हौले हौले पूछतभये २८ अब राजा मुचुकुन्द पूछेहैं या वनमें पर्व्वत की गुफामें कौन कहासे आयेहौ कमलसे कोमल तुम्हारे चरण यहां बहुत काटेनमें फिरो हौ २९ तेजस्वीन के तुम तेज

स्वरूप हो अथवा भगवान् अग्निरूप हो अथवा सूर्य्य हो किंवा चन्द्रमा हो अथवा इन्द्रहो किंवा समस्त लोकनके पालनकर्त्ता हो अथवा कोई देवता हो ३० ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में से विष्णु भगवान् हो यह में जानूंहूं दिया जैसे अपने प्रकाश ते अँधेरे कूं दूरि करे है ऐसे अपने तेज सूं या गुफाको अन्धकार तुमने दूरि करो है ३१ हे मनुष्यन में श्रेष्ठ ! हमारी सुनिवे की इच्छा है हमारे आगे निष्कपट होयकै जो तुमैं अच्छी लगै तो अपनो जन्म कर्म्म नाम गोत्र बताओ ३२ हे पुरुषन में श्रेष्ठ समर्थ ! हम तो इक्ष्वाकु के वंशमें उत्पन्नभये क्षत्रियन में अधम मान्धाता के पुत्र मुचुकुन्द हैं ३३ बहुत दिनन जो जाग्यो हूं तासूं मोकूं खेदभयो और नींद सूं मेरी इन्द्रिय चलायमान भई हैं या उद्यान वनमें में अपनी इच्छापूर्व्वक सोवे हो अबहीं काहूने आयकै मोकूं उठायो हो ३४ जाने हमें जगायो वह पुरुष अपने पाप ते जरिकै भस्म होयगयो वाके जरे पीछे हे शत्रुनके नाशक ! शोभायमान तुम देखे ३५ नहीं सहिवे में आवै ऐसो जो तुम्हारो तेज है तासूं मेरो तेज

वा ३० मन्येत्वांदेवदेवानां त्रयाणांपुरुषर्षभम् ॥ यद्बाधसेगुहाध्वान्तं प्रदीपःप्रभयायथा ३१ शुश्रूषतामव्यलीकमस्माकंनरपुङ्गव ॥ स्वजन्मकर्मगोत्रंवा कथ्यतांयदिरोचते ३२ वयन्तुपुरुषव्याघ्र ऐक्ष्वाकाःक्षत्रबन्धवः ॥ मुचुकुन्दइतिप्रोक्तोयौवनाश्वात्मजःप्रभो ३३ चिरप्रजागरश्रान्तो निद्रयापहतेन्द्रियः ॥ शयेऽस्मिन्विजनेकामं केनाप्युत्थापितोऽधुना ३४ सोऽपिभस्मीकृतोनूनमात्मीयेनैवपाप्मना ॥ अनन्तरंभवाञ्छ्रीमाँल्लक्षितोऽमित्रशातनः ३५ तेजसा तेविषह्येण भूरिद्रष्टुंनशक्नुमः ॥ हतौजसोमहाभाग माननीयोऽसिदेहिनाम् ३६ एवंसम्भाषितोराज्ञा भगवान्भूतभावनः ॥ प्रत्याहप्रहसन्वाण्यामेघनाद गभीरया ३७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ जन्मकर्म्माभिधानानि सन्तिमेऽङ्गसहस्रशः ॥ नशक्यन्तेऽनुसङ्ख्यातुमनन्तत्वान्मयाऽपिहि ३८ क्वचिद्रजांसिविममे पार्थिवान्युरुजन्मभिः ॥ गुणकर्म्माभिधानानि नमेजन्मानिकर्हिचित् ३९ कालत्रयोपपन्नानि जन्मकर्म्माणिमेनृप ॥ अनुक्रमन्तोनैवान्तं गच्छन्तिपरमर्षयः ४० तथाप्यद्यतनान्यङ्ग शृणुष्वगदतोमम ॥ विज्ञापितोविरिञ्चेनपुराहंधर्म्मगुप्तये ॥ भूमेर्भारायमाणानामसुराणांक्षयायच ४१ अवतीर्णोयदुकुले गृह

दूरि होयगयो बहुत देखिवे की सामर्थ्य नहीं है हे महाभाग ! देहधारीन कूं तुम मानिवे योग्यहो ३६ या प्रकार राजा मुचुकुन्द ने कही तब प्राणीन के पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हँसिकै मेघ जैसे गरजे है ता प्रकार गर्जिके बोलतभये ३७ अब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहै हैं मुचुकुन्द मेरे जन्म कर्म्म नामन को अन्त नहीं है असख्यात हैं याते में नहीं गिन सकूं हूं ३८ कदाचित् कोई पुरुष बहुत जन्मन में पृथ्वी की धूरिकूं तो गिनि भी लेइ परन्तु मेरे गुण कर्म्म नाम जन्म गिनती में नहीं आवे हैं ३९ हे राजन् मुचुकुन्द ! भूत भविष्यद् वर्त्तमान तीनों काल में विद्यमान ऐसे जे मेरे जन्म कर्म्म हैं तिनकी बड़े बड़े ऋषीश्वर संख्या करे हैं तथापि अन्त नहीं पावे हैं ४० तथापि हे मुचुकुन्द ! अबके जन्म कर्म्म नाम कहूं हूं मोते श्रवण करो धर्म्म की रक्षाकरिवे के कारण और पृथ्वी पै बोझ जिनको भयो ऐसे जे असुर हैं तिनको नाश करिवेके लिये पहिले ब्रह्माने मेरी विनती करीरही ४१ तासूं यादवन के कुल में वसुदेव के घर प्रकट भयो हूं वसुदेवको पुत्र

हूं याते मोहिं वासुदेव कहे हैं ४२ कालनेमि कंस मैंने मार्यो साधुन के द्वेषी प्रलम्बसे आदि लैके असुर मैंने मारे हे राजन् मुचुकुन्द ! यह जो कालयवन है सो तेरी तीक्ष्णदृष्टि द्वारा दग्ध होयगयो ४३ हे राजन् मुचुकुन्द ! पहिले तुमने मेरी बहुत प्रार्थना करीरही और मैं भक्तवत्सल हौं याकारण तोपै अनुग्रह करिवे कूं या गुफा में आयो हूं ४४ हे राजान में ऋषि मुचुकुन्द ! मै प्रसन्न हौं तुम मोपै वर मागो मेरी शरणआये पीछे फेर प्राणी कूं शोच नहीं रहे है ४५ अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित् ! यह श्रीकृष्णचन्द्र ने जब कही तब राजा मुचुकुन्द प्रसन्नहोय के वृद्ध गर्गाचार्य्य जो कहिगयेहैं तिनको (अष्टाविंशतिमेयुगे भगवान् वरिष्यतीति) वचन स्मरणकरिकै साक्षात् परिपूर्ण नारायण देव है यह जानिकै प्रणाम करिकै बोलत भयो ४६ अब राजा मुचुकुन्द आठ श्लोकन करिकै स्तुति करेहै हे ईश्वर ! तुम्हारी माया करिकै यह मनुष्य मोहित होयगयो है याते मिथ्याभूत जो माया की दृष्टि है तासूं नहीं देखे है याही ते तुम्हें नहीं भजेहै

आनकदुन्दुभेः ॥ वदन्तिवासुदेवेतिवसुदेवसुतंहिमाम् ४२ कालनेमिर्हतःकंसः प्रलम्बाद्याश्चसद्द्विपः ॥ अयंचयवनोदग्धोराजंस्तेतिग्मचक्षुपा ४३ सोऽहं तवानुग्रहार्थंगुहामेतामुपागतः ॥ प्रार्थितःप्रचुरंपूर्वं त्वयाहंभक्तवत्सलः ४४ वरान्वृणीष्वराजर्षे सर्व्वान्कामान्ददामिते ॥ मांप्रपन्नोजनःकश्चिन्नभूयोऽर्हतिशोचितुम् ४५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तस्तंप्रणम्याह मुचुकुन्दोमुदान्वितः ॥ ज्ञात्वानारायणंदेवं गर्ग्गवाक्यमनुस्मरन् ४६ ॥ मुचुकुन्दउवाच ॥ विमोहितोऽयंजनईशमायया त्वदीययात्वांनभजत्यनर्थदृक् ॥ सुखायदुःखप्रभवेषुसज्जते गृहेषुयोषित्पुरुषश्चवञ्चितः ४७ लब्ध्वाजनोदुर्लभमत्रमानुषं कथञ्चिदव्यङ्गमयत्ततोऽनघ ॥ पादारविन्दंनभजत्यसन्मतिर्गृहान्धकूपेपतितोयथापशुः ४८ ममैपकालोऽजितनिष्फलोगतोराज्यश्रियोन्नद्धमदस्यभूपतेः ॥ मर्त्यात्मबुद्धेःसुतदारकोशभूष्वासज्जमानस्यदुरन्तचिन्तया ४९ कलेवरेस्मिन्घटकुड्यसन्निभेनिरूढमानोनरदेवइत्यहम् ॥ वृतोरथेभाश्वपदात्यनीकपैर्गांपर्य्यटंस्त्वाऽगणयन्सुदुर्मदः ५० प्रमत्तमुच्चैरितिकृत्यचिन्तया प्रवृद्धलोभंविपयेषुलालसम् ॥ त्वमप्रमत्तःसहसाभिपद्यसे क्षुल्लेलिहानोऽहिरिवाखुमन्तकः ५१

कहा स्त्री और कहा पुरुष दोनों ठगि गये हैं सुख के कारण दुःख जिनमें होय ऐसे घरन में अटकि जाय है ४७ कर्म्म भूमि जो यह पृथ्वी है तामें आयकै यह मनुष्य सुन्दर हाथ पाँव आँखि नाक कान ऐसे मनुष्य देह कों पायकै हे अनघ ! तुम्हारे चरणारविन्द को भजन नहीं करेहै जैसे हरी घास के निमित्त पशु अन्धकूप में गिरे है ऐसे खोटी जाकी मति ऐसो पुरुष विषयन के निमित्त अन्धकूप रूप जे घर हैं तिनमें पर्यो रहे है ४८ हे अजित अर्थात् जीतवेमें न आवो ! केवल यह प्राणीही भूलि रहे हैं सो बात नहीं मेरी भी यही गति है मोकों इतने दिन निष्फलही बीतगये राज्यकी सम्पत्ति पायके मोकूं बडो गर्व होयगयो है पृथ्वी को पालन करनवारो राजाहौं मनुष्यदेह में मेरी आत्मबुद्धि है अर्थात् देहकों आत्मा माने हौं पुत्र स्त्री खजाने पृथ्वी इनकी बडी चिन्ता में आसक्त होय रह्यो हौं ४९ जैसे कच्चो घड़ा क्षण में फूटिजाय वारू कीभीति जैसे क्षण में गिरि परै या प्रकार देह को भी भरोसो नहीं है ता देह में राजा मैं हूं या प्रकार बढ्यो है अभिमान जाके रथ हाथी घोड़ा प्यादे इनकी जो सेना है ताको पालन करैं ऐसे जे मुख्य सेनाध्यक्ष तिनकूं सङ्ग लैकै पृथ्वीपै डोलेहौं कालरूप जो तुमहो तिनको स्मरणही

नहीं बरयो ऐसो मतवारो रह्यो याते मेरो समय निष्फल गयो ५० आज यह काम करनो कालिह वह काम करनो है या प्रकार की चिन्ता में मतवारो होय रह्यो दश होयँ अब बीस होयँ पचास होयँ हजार होयँ लाख होयँ या प्रकार लोभ बढ़त जाय है विषयन में चाहना जाके ऐसे पुरुष कूं कालरूप तुम शीघ्र मारि लेउ हो क्षुधा के मारे ओंठन कूं चाटै ऐसो सर्प जैसे मूसे कूं मारि लेय है ५१ मनुष्यन को देव अर्थात् राजा यह नाम जाको ऐसो यह देह सुवर्ण के साज के रथन पै वा हाथीनपै बैठि कै डोले है ऐसो देह दुरत्ययकाल करिकै मरे पीछे कुत्ता स्यार भक्षण करि जायँ तो विष्ठा होय जाय पर्यो रहै तो कीरा परि जायँ अग्नि से जराय देउ तो भस्म होय जाय है यह तीन नामन कूं धारण करे है ५२ सम्पूर्ण दिशान कूं जीत कै युद्ध करिवे लायक कोई शत्रु बाकी न रह्यो चक्रवर्ती राजा सिंहासन पै बैठ्यो बरावर के राजा आय के प्रणाम जाकूं करें ऐसो भी चक्रवर्ती राजा है तथापि मैथुन को है सुख जिन में ऐसी स्त्रीन के घर में जैसे लकड़ी के बल बन्दर नाचे ऐसे नाच्यो करे है ५३ सब विषयन के भोगकूं त्यागि के तप में है बड़ी श्रद्धा जाके अर्थात् पृथ्वी में सोवै ब्रह्मचर्य्य सूं रहै व्रतन कूं करै विषयनके भोगवेकूं दान पुण्य करै है और विचारे है कि या

पुरारथैर्हेमपरिष्कृतैश्चरन् मतङ्गजैर्वानरदेवसंज्ञितः ॥ सएवकालेनदुरत्ययेनतेकलेवरोविट्कृमिभस्मसंज्ञितः ५२ निर्जित्यदिक्चक्रमभूतविग्रहोवरासनस्थःसमराजवन्दितः ॥ गृहेषुमैथुन्यसुखेषुयोषितांक्रीडामृगःपूरुषईशनीयते ५३ करोतिकर्माणितपःसुनिष्ठितोनिवृत्तभोगस्तदपेक्षयाददत् ॥ पुनश्चभूयेयमहंस्वराडिति प्रवृद्धतर्षोनसुखायकल्पते ५४ भवापवर्गोभ्रमतोयदाभवेज्जनस्यतर्ह्यच्युतसत्समागमः ॥ सत्सङ्गमोयर्हितदैवसद्गतौपरावरेशेत्वयिजायते मतिः ५५ मन्येममानुग्रहईशतेकृतोराज्यानुबन्धापगमोयदृच्छया ॥ यःप्रार्थ्यतेसाधुभिरेकचर्य्यया वनंविविक्षद्भिरखण्डभूमिपैः ५६ नकामयेऽन्यंतवपादसेवनादकिञ्चनप्रार्थ्यतमाद्वरंविभो ॥ आराध्यकस्त्वांह्यपवर्गदंहरेवृणीतआर्य्योवरमात्मबन्धनम् ५७ तस्माद्विसृज्याशिषईशसर्वतोरजस्तमःसत्त्वगुणानुबन्धनाः ॥ निरञ्जनंनिर्गुणमद्वयंपरंत्वांज्ञप्तिमात्रंपुरुषंव्रजाम्यहम् ५८ चिरमिहवृजिनार्त्तस्तप्यमानोऽनुतापैरवितृषषडमित्रोऽलब्धशान्तिःकथञ्चित् ॥ श

जन्म में तप करूंगो तब दूसरे जन्म में जायकै इन्द्र होऊंगो या प्रकार तृष्णा जाके बढ़ी है वा पुरुषकूं कभूं सुख नहीं होय है ५४ ऐसे आठ श्लोकन करिकै ईश्वरतें वहिर्मुखन कूं संसार कहिकै अब संसार की निवृत्ति कहे हैं हे अच्युत! या संसार में जन्म मरण कूं प्राप्त भयो जो जीव है ताकूं जा समय तुम्हारे अनुग्रह करिकै संसार को अन्त होइ तासमय तुम्हारे भक्तन को सङ्ग होइ तासमय सब सङ्ग कूं दूरिकरि कार्य्य कारण के नियन्ता जो तुम ईश्वर हौ तिनमें भक्ति होय है ता भक्तितें संसार छूटै है ५५ हे ईश्वर! मेरो अनायासपूर्वक राज्यबन्धन छूटिगयो यह तुमने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह कर्यो यह मैं मानूं हूं राज्य के छूटिवे के लिये अकेलो होयकै वनमें जाइवेकी इच्छाकरैं ऐसे जे चक्रवर्त्ती राजा हैं तेभी प्रार्थना करे हैं कि हमारो कोई तरह राज्य छूटिजाइ तौ अकेलेहोयके वनमें जाय बैठें ५६ हे समर्थ! निष्किञ्चन साधु जाकी प्रार्थनाकरैं ऐसो तुम्हारे चरणारविन्दको सेवनहै ताते और काहू वरकी चाहना नहीं करेंहैं हे हरे! मोक्षके देनवारे जो तुमहौ तिनको आराधन करिकै ऐसो कौन विवेकी पुरुष है जो आत्माको बन्धनरूप वर है ताकूं मांगैगो ५७ हे ईश अर्थात् सबके प्रेरणा करनवारे! ता कारण रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण इनको बन्धन और ऐश्वर्य्य तथा शत्रुको मरण

और-धर्म्मादिक को करिवो ये हैं स्वरूप जिनके ऐसे जे मनोरथ हैं तिन सवकूं त्यागिकै ज्ञानघन अज्ञान जो उपाधि तासू न्यारे ऐसे निर्गुण अद्वैत पुरुप तुमहो तिनकी मैं शरण आयो हूं ५८ हे ईश ! या संसार में वहुत दिनन ते दुःखन करिके पीड़ित हू नहीं गई है तृष्णा जिनकी ऐसी जे छः इन्द्रिय शत्रु जाके नहीं पाई है शान्ति जाने हे शरण के देनवारे! हे परमात्मन्! हे ईश्वर! ज्यों त्यों करिकै शोक जामें नहीं भयकों दूर करनवारो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको शरण लियो है मेरी रक्षाकरो ५९ अव श्रीभगवान् कहे हैं हे चक्रवर्त्ती राजन्! वरदेने कहिकै तुमकूं लोभ उत्पन्न कियो तथापि कामना करिकै तुम्हारी मति चलायमान न भई ६० मैने वरदेने कहिकै लोभ उत्पन्न कियो सो तोकूं सावधान कर्यो यह तू जानि मेरे जे एकान्ती भक्त है तिनकूं कदाचित् वर आयके प्राप्तहोय तथापि उनकी वुद्धि चलायमान नहीं होय है ६१ प्राणायामादिकन करिके मनकों अवरोध करै वे मेरे भक्त नहीं ऐसे जे पुरुषहैं तिनकी नहीं गई है वासना जामें ऐसो मन है सो हे राजन् मुचुकुन्द !

रणदसमुपेतस्त्वत्पदाब्जंपरात्मन्नभयमृतमशोकंपाहिमापन्नमीश ५९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सार्वभौममहाराजमतिस्तेविमलोर्जिता ॥ वरैःप्रलोभितस्यापि नकामैर्विहतायतः ६० प्रलोभितोवरैर्यत्त्वमप्रमादायविद्धितत् ॥ नधीर्मय्येकभक्तानामाशीर्भिर्भिद्यतेक्वचित् ६१ युञ्जानानामभक्तानां प्राणायामादिभिर्मनः ॥ अक्षीणवासनंराजन्दृश्यतेपुनरुत्थितम् ६२ विचरस्वमहींकामं मय्यावेशितमानसः ॥ अस्त्वेवंनित्यदातुभ्यं भक्तिर्मय्यनपायिनी ६३ क्षात्रधर्मस्थितोजन्तून्न्यवधीर्मृगयादिभिः ॥ समाहितस्तत्तपसा जह्यघंमदुपाश्रितः ६४ जन्मन्यनन्तरेराजन् सर्वभूतसुहृत्तमः ॥ भूत्वाद्विजवरस्त्वंवै मामुपैष्यसिकेवलम् ६५ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंसोऽनुगृहीतोङ्गकृष्णेनेक्ष्वाकुनन्दनः ॥ तंपरिक्रम्यसंनम्यनिश्चक्रामगुहामुखात् १ सवीक्ष्यक्षुल्लकान्मर्त्यान् पशून्वीरुद्वनस्पतीन् ॥ मत्वाकलियुगंप्राप्तंजगामदिशमुत्तराम् २ तपःश्रद्धायुतोधीरोनिःसङ्गोमुक्तसंशयः ॥ समाधायमनःकृष्णे प्राविशद्गन्धमादनम् ३ वदर्य्याश्रममासा

फेरि विषयन में जातो दीसे है ६२ हे राजन् मुचुकुन्द ! मेरे विषे मनकूं लगाइकै जहां इच्छा आवै तहां विचरो तुम्हारी नित्य दृढभक्ति मो में होउ ६३ क्षात्रधर्म्म में रहिके शिकार खेलिके जो तैंने जीवनकी हिंसाकरी सो अव सावधान होयकै मेरो आश्रय लैके तप करिके वा पापकूं दूरकर ६४ हे राजन् मुचुकुन्द ! दूसरे जन्म में सव प्राणीन के हितके करनवारे ब्राह्मण होयके शुद्धरूप जो मैं हूं ताकूं पावोगे ६५ इति श्रीमन्महाभागवततात्पर्यरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(द्विपञ्चाशत्तमेगावन्भयादिवगतःपुरीम् ॥ अन्वमोदतसन्देशंरुक्मिण्याद्विजवर्णितम् १ वावनवें अध्याय में भयकी नाई शीघ्र चलकर कृष्णजी पुरीको प्राप्त होगये और ब्राह्मणके वर्णित रुक्मिणीजीके सन्देशको सुनकर प्रसन्न होतेभये १) अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! याप्रकार श्रीकृष्ण ने अनुग्रह जापै कर्यो ऐसो इक्ष्वाकुनन्दन मुचुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र की परिक्रमा दैकै नमस्कार करिके गुफामें तें वाहर निकसतभयो १ राजा मुचुकुन्द मनुष्यन कूं पशूनकू लतान कूं और छोटे २ वृक्षनकूं देखिकै, कलियुग आयगयो यह जानिके उत्तरदिशा कूं जातभये २ तप

रेवती है ताय बलदेवजीकूं देतभयो यह प्रथम कहिआये हैं १५ हे कौरवनके कुलकूं आनन्दके देनवारे राजन् परीक्षित्! भगवान् गोविन्द हैं सो भी स्वयंवर में लक्ष्मी को अंश विदर्भदेश में जन्मी ऐसी जो भीष्मक की कन्या है ताय ब्याहतभये १६ शाल्व तें आदिलैके शिशुपाल की ओर के राजानकूं जल्दी जीतिके सब लोकनके देखते जैसे देवतानकूं जीतिके गरुड अमृत कूं लायो है या प्रकार लावतभये १७ अब राजा परीक्षित् कहे हैं सुन्दर जाको मुख ऐसी भीष्मक राजाकी पुत्री रुक्मिणी कूं युद्धमें तें हरिकै श्रीकृष्णचन्द्र ब्याहतभये यह हमने तुम्हारेही मुखतें सुनी है हे शुकदेवजी! जरासन्ध शाल्व इत्यादिक राजानकूं जीतिकै जैसे रुक्मिणी कूं लावतभये बड़ो है तेज जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को चरित्र श्रवणकर्यो चाहों हूं हे ब्रह्मन्! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा पवित्र हैं मनोहर हैं लोकनके पापनकूं दूर करे हैं नित्य नवीन हैं सुनिवे के सार कूं जाने ऐसो कौन पुरुष है जो ऐसी कथानकूं सुनिकै तृप्त होय १८। १९। २० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे

श्रियोमात्रांस्वयंवरे१६ प्रमथ्यतरसाराज्ञःशाल्वादींश्चैद्यपक्षगान्॥ पश्यतांसर्व्वलोकानां तार्क्ष्यपुत्रःसुधामिव १७॥ राजोवाच॥ भगवान्भीष्मकसुतां रुक्मिणींरुचिराननाम्॥ राक्षसेनविधानेनउपयेमइतिश्रुतम् १८ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामिकृष्णस्यामिततेजसः॥ यथामागधशाल्वादीञ्जित्वाकन्यामुपाहरत् १९ ब्रह्मन्कृष्णकथाःपुण्यामाध्वीर्लोकमलापहाः॥ कोनुतृप्येतशृण्वानःश्रुतज्ञोनित्यनूतनाः २०॥ श्रीशुकउवाच॥ राजासीद्भीष्मकोनाम विदर्भाधिपतिर्महान्॥ तस्यपञ्चाभवन्पुत्राः कन्यैकाचवरानना २१ रुक्म्यग्रजोरुक्मरथोरुक्मबाहुरनन्तरः॥ रुक्मकेशोरुक्ममाली रुक्मिण्येषांस्वसासती २२ सोपश्रुत्यमुकुन्दस्य रूपवीर्य्यगुणश्रियः॥ गृहागतैर्गीयमानास्तंमेनेसदृशंपतिम् २३ तांबुद्धिलक्षणौदार्यरूपशीलगुणाश्रयाम्॥ कृष्णश्चसदृशीं भार्य्यां समुद्वोढुंमनोदधे २४ बन्धूनामिच्छतांदातुं कृष्णायभगिनींनृप॥ ततोनिवार्यकृष्णद्विड्रुक्मीचैद्यममन्यत २५ तदवेत्यासितापाङ्गीवैदर्भीदुर्म्मनाभृशम्॥ विचिन्त्याप्तंद्विजंकञ्चित् कृष्णायप्राहिणोद्द्रुतम् २६ द्वारकांससमभ्येत्य प्रतीहारैःप्रवेशितः॥ अपश्यदाद्यंपुरुषमासीनंकाञ्चनासने २७

राजन् परीक्षित्! विदर्भदेशको पालन करनवारो भीष्मक जाकों नाम ऐसो बड़ो राजा होतभयो ताभीष्मक राजाके पाच पुत्र होतभये और सुन्दर है मुख जाको ऐसी एक कन्या होतिभई २१ तिन में बड़ो रुक्मी तासूं छोटो रुक्मरथ तासूं छोटो रुक्मबाहु तासूं छोटो रुक्मकेश तासूं छोटो रुक्ममाली ये पांच पुत्र होतभये इन पाचोंनकी बहिनि पतिव्रता रुक्मिणी होति भई २२ घरमें आये जे नारदादिक मुनि हैं तिनने गाये ऐसे जे मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्ण तिनको सुन्दर रूप पराक्रम गुणशोभा इनकूं श्रवण करिके रुक्मिणी अपनी बराबरिको मानति भई २३ यहां सुन्दर बुद्धि लक्षण उदारता रूप शील और गुणयुक्त रुक्मिणीकूं श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र अपनी बराबरीकी स्त्री ब्याहिवेकूं मनमें करतभये २४ माता पिता और भय्या बन्धुनकी सबकी यह इच्छाही कि रुक्मिणी श्रीकृष्णचन्द्रकूं देयँगे परन्तु श्रीकृष्णको शत्रु जो रुक्मी है सो हम अपनी बहिनि कृष्णकू न ब्याहैंगे ऐसे निषेध करिके या लायकवर शिशुपाल है या प्रकार मानतभयो २५ सुन्दर हैं नील कटाक्ष जाके ऐसी विदर्भदेशके राजाकी पुत्री रुक्मिणी श्रीकृष्णके ब्याहिवे कूं मेरो भय्या मनेकरे है यह जानिकै बहुत उदास मन जाको ऐसी रुक्मिणी कोई एक अपनो स्नेही ब्राह्मण है ताय वि-

करिवेमें श्रद्धा जिनकी भई सङ्ग छोड़ि दियोहै सन्देह जिनके मिटिगये हैं ऐसे राजा मुचुकुन्द श्रीकृष्णमें मन लगायके गन्धमादन पर्वतपै जातभये ३ नरनारायण को स्थान जो बदरिकाश्रम है तामें जायके सम्पूर्ण द्वंद्व अर्थात् सुख दुःख भूख प्यास शीत उष्ण इनकूं सहिकैं शान्त जिनको स्वरूप ऐसो जो मुचुकुन्द है सो तप करिके हरिको आराधन करतभयो ४ म्लेच्छ जाकूं घेरिरहे ऐसी जो मथुरापुरी है तामें भगवान् श्रीकृष्ण फेरि आयके म्लेच्छनकी सेना मारिके और उनको धनहै ताय लैके द्वारकामें पहुँचावतभये ५ श्रीकृष्णचन्द्रके कहेतें मनुष्य बैलनके ऊपर धनकूं लादिकै लैचले तब जरासन्ध तेईस अक्षौहिणी सेनाकूं सङ्गलैके आवतभयो ६ हे राजन् परीक्षित्! माधव जे श्रीकृष्ण बलदेवहैं ते शत्रुकी सेनाकूं देखिकैं मनुष्यलीलामें आयकै शीघ्र भाजतभये ७ नहींहै भय जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव बहुत जो धनहै ताकूं मार्गमेंही त्यागिके बहुत भयभीतकी तुल्य कमलसे कोमल चरण हैं तिनहींसूं बहुत दूरि भाजत भये ८ ईश्वर जो श्रीकृष्ण बलदेवहैं तिन

द्यनरनारायणालयम् ॥ सर्व्वद्वन्द्वसहःशान्तस्तपसाराधयद्धरिम् ४ भगवान्पुनराव्रज्य पुरीयवनवेष्टिताम् ॥ हत्वाम्लेच्छबलंनिन्ये तदीयंद्वारकांधनम् ५ नीयमानेधनेगोभिर्नृभिश्चाच्युतचोदितैः ॥ आजगामजरासन्धस्त्रयोविंशत्यनीकपः ६ विलोक्यवेगरभसं रिपुसैन्यस्यमाधवौ ॥ मनुष्यचेष्टामापन्नौ राजन्दुद्रुवतुर्द्रुतम् ७ विहायवित्तंप्रचुरमभीतौभीरुभीतवत् ॥ पद्भ्यांपद्मपलाशाभ्यां चेलतुर्बहुयोजनम् ८ पलायमानौतौदृष्ट्वा मागधःप्रहसन्बली ॥ अन्वधावद्रथानीकैरीशयोरप्रमाणवित् ९ प्रद्रुत्यदूरंसंश्रान्तौतुङ्गमारुहतांगिरिम् ॥ प्रवर्षणाख्यंभगवान्नित्यदायत्रवर्षति १० गिरौनिलीनावाज्ञाय नाधिगम्यपदंनृप ॥ ददाहगिरिमेधोभिः समन्तादग्निमुत्सृजन् ११ ततउत्पत्यतरसादह्यमानतटादुभौ ॥ दशैकयोजनोत्तुङ्गान्निपेततुरधोभुवि १२ अलक्ष्यमाणौरिपुणा सानुगेनयदूत्तमौ ॥ स्वपुरंपुनरायातौ समुद्रपरिखांनृप १३ सोऽपिदग्धावितिमृषा मन्वानोबलकेशवौ ॥ बलमाकृष्यसुमहन्मगधान्मागधोययौ १४ आनर्त्ताधिपतिःश्रीमान् रैवतो रेवतींसुताम् ॥ ब्रह्मणाचोदितःप्रादाद्बलायेतिपुरोदितम् १५ भगवानपिगोविन्दउपयेमेकुरूद्वह ॥ वैदर्भींभीष्मकसुतां

के बलकूं नहीं जानिकैं बली जो मगध देशको राजा जरासन्धहै सो कृष्ण बलदेवकूं भाजे देखिकेहँसिकै बहुतसे रथनकूं सङ्गलैके पीछे दौरत भयो ९ बहुत दूर जो भाजे तातें श्रम जिनकूं भयो ऐसे कृष्ण बलदेव हैं ते प्रवर्षण नामक जो ऊँचो पर्वतहै तापै चढ़तभये कैसो पर्वतहै इन्द्र जापै नित्य वर्षा करे है १० हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण बलदेव कूं पर्वतमें छिपे जानिके ता पर्वत में ढूंढिकैं तिनके छिपिवेको स्थान न मिल्यो तब चारयो ओरतें आगि लगायकै जरावतभयो ११ जरो है शिखर जाको ऐसो जो चवालीस कोस ऊँचो पर्वतहै तापै तें कृष्ण बलदेव दोनों भय्या उछरिकैं जरासन्धकी फौजकूं उलाँघिकैं नीचे पृथ्वीमें कूदतभये १२ हे राजन् परीक्षित्! टहलुआन सहित वैरी जो जरासन्ध है ताने न देखे ऐसे यादवन में उत्तम जे कृष्ण बलदेव हैं ते समुद्र जाकी खाई ऐसी द्वारकापुरी में आवतभये १३ मगधदेश को राजा जरासन्ध है सो भी कृष्ण बलदेव कू मिथ्या जरिगये मानिकैं बड़ी फौजकूं सङ्गलैकै मगधदेशन कूं जातभयो १४ अब श्रीकृष्णके विवाह कहिबे के लिये प्रथम बलदेवजीके विवाह नवमस्कन्धमें कहिआये है तथापि फेर एक श्लोकमें कहे हैं शोभायमान आनर्त्तदेशको राजा रैवतहै सो ब्रह्मा के कहेते अपनी पुत्री

श्रवण करे जे तुम्हारे गुण ते कानन की रस्ता हृदय में जाय कै अंग के ताप कूं हरें ऐसे तुम्हारे गुणन कूं सुनिकै नेत्रवारे पुरुषन के नेनन कूं सुनिके लाज त्यागि कै मेरो चित्त तुम में लग्यो है ३७ हे मुकुन्द अर्थात् मुक्ति के देनवारे ! मनुष्य न में श्रेष्ठ गुणवान् जो तुमहौ तिनमें बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसी कौन कुल की कन्या कुल स्वभाव रूप विद्या अवस्था द्रव्य प्रभाव इन करिकै कोई उपमा जिनकी देबे में न आवे मनुष्यलोक के मनकू आनन्द के देनवारे जो तुमहौ तिमकों विवाह समय पति न करै ३८ हे समर्थ ! ता कारण मैंने तुम पति करे हो तुम कूं अपनो देह अर्पण कर्यो है मोकूं अपनी स्त्री करो हे कमललोचन ! शूरवीर जो तुम तिनको भाग जो मैं हूं ताय शिशुपाल शीघ्र आयके न छीवे जैसे सिंह के भाग कूं स्यार नहीं छी सके ३९ बावली कुआं तलाउ बाग यज्ञ दान नियम व्रत देवता ब्राह्मण गुरु इनकी पूजा करिकै ईश्वर भगवान् प्रसन्न करे हैं तौ श्रीकृष्णचन्द्र हाथ पकरि कै ले जावो दमघोप को पुत्र शिशुपाल तें आदि लैकै राजा न आवें ४० हे अजित अर्थात् जीतिवे में न आवो ! काल्हि विवाह होयगो तामें तुम छिपिकै विदर्भ देश में आवो और अकेले मति आवो पीछे तें सेना कू लगाये आवोगे शिशुपाल और मगधदेश

मावीरभागमभिमर्शतुचैद्यआराद्गोमायुवन्मृगपतेर्ब्र सिंहनरलोकमनोऽभिरामम् ३८ तन्मेभवान्खलुवृतःपतिरङ्गजायामात्मार्पितश्चभवतोत्रविभोविधेहि ॥ लिमम्बुजाक्ष ३९ पूर्त्तेष्टदत्तनियमव्रतदेवविप्रगुर्वर्चनादिभिरलंभगवान्परेशः ॥ आराधितोयदिगदाग्रजएत्यपाणिंगृह्णातुमेनदमघोपसुतादयोऽन्ये ४० श्वोभाविनित्वमजितोद्वहनेविदर्भान्गुप्तःसमेत्यपृतनापतिभिःपरीतः ॥ निर्मथ्यचैद्यमगधेन्द्रबलंप्रसह्य मांराक्षसेनविधिनोद्वहवीर्यशुल्काम् ४१ अन्तःपुरान्तरचरीमनिहत्यबन्धूंस्त्वामुद्वहेकथमितिप्रवदाम्युपायम् ॥ पूर्वेद्युरस्तिमहतीकुलदेवयात्रा यस्यांबहिर्नववधूर्गिरिजामुपेयात् ४२ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजःस्नपनंमहान्तोवाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोपहत्यै ॥ यर्ह्यम्बुजाक्षनलभेयभवत्प्रसादं जह्यामसून्व्रतकृशाञ्छतजन्मभिःस्यात् ४३ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ इत्येतेगुह्यसन्देशायदुदेवमयाहृताः ॥ विमृश्यकर्त्तुंयच्चात्र क्रियतांतदनन्तरम् ४४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेरुक्मिण्युद्वाहेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

को राजा जरासन्ध इनकी जो फौजहै तायजीतिकै पराक्रमही है मोल जाको ऐसी जो तुम्हारे आधीन मैं हूं ताय यहाँ तें हरि के अन्त विवाह करोगे ४१ कदाचित् कहो कि तुम तो रुक्मिणी पुर के भीतर हो तुम्हारे भय्या बन्धुन के मारे विना कैसे ब्याहूं ऐसी जो तुम मनमें शङ्का करो तो उपाय बताऊं हूं विवाह सें पूर्व दिन बड़ी कुलदेवी अम्बिका की यात्रा होयहै ता यात्रा करिबे के लिये और देवी की पूजा करिवे कों नववधू कन्या बाहिर जाय हैं तहाँ ते मेरो लेजायवो सुगम है जैसे पार्वती कूं शिवजी लेगये ४२ जिनके चरणारविन्द की रज सूं स्नान करिवे कूं बड़े २ साधु महान् अपने अज्ञान दूरि करिवे के लिये इच्छा करे हैं हे कमलदललोचन ! जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न न होउ तो व्रत करिवे तें दुर्बल जो मेरे प्राण हैं तिनें त्यागि देऊंगी कदाचित् कहो कि प्राण त्यागिवे ते कहा होयगो तहाँ रुक्मिणी कहे है वारंवार प्राण त्याग करूंगी तो सौ जन्म में तौ प्रसन्न होउगे ४३ अब ब्राह्मण कहे है हे यादवन के देव ! गुप्त संदेशो लैके मैं आयो हू जो यहाँ करिबे योग्य कार्य्य होय ताय विचारि कै शीघ्र करो विलम्ब मति करो ४४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिण्युद्वाहेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

चारिकै श्रीकृष्णके लिवायवे कूं भेजतिभई २६ वह ब्राह्मण जा समय द्वारकापुरीमें प्राप्तभयो तब द्वारपालनने भीतर पहुँचायो तहां सुवर्ण के सिंहासनपै बैठे जो आदिपुरुष नारायण हैं तिनको दर्शन करतभयो २७ ब्राह्मणहै देवता जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ता ब्राह्मण कूं देखिके आप सिंहासनपैते उतरिके ब्राह्मणको सिंहासनपर बैठायके जैसे अपनी देवता पूजा करेहैं ऐसे वाको पूजनकरत भये २८ भोजनकरयो अरु जिनको गयो ऐसे ब्राह्मणके पास साधुनकी गतिरूप जो श्रीकृष्णहैं सो आयके अपने हाथतें उनके चरणारविन्दकूं सहरावत निर्विग्रह होयके पूछतभये २९ हे द्विजनमें श्रेष्ठ ! ब्राह्मण वृद्धसम्मत जो तुम्हारो धर्म्म है सो बहुत कष्टतें तौ नहीं चले है सर्व्वदा तुम्हारे मनमें सन्तोष रहे है ३० जा काहू प्रकारकरिके ब्राह्मण सन्तुष्ट होयके वर्ते अर्थात् जो कछु वस्तु आयके प्राप्तहोइ वाहीमें सन्तोष करिकै रहै, अपने धर्म्म सूं च्युत न होय तो वही उसके सम्पूर्ण फलको देनवारोहै ३१ और जाके मनमें सन्तोष नहीं है वह ब्राह्मण इन्द्रहोयजाउ तथापि लोकन ते लोकनमें डोल्यो करे

दृष्ट्वाब्रह्मण्यदेवस्तमवरुह्यनिजासनात् ॥ उपवेश्यार्हयाञ्चक्रे यथात्मानंदिवौकसः २८ तंभुक्तवन्तंविश्रान्तमुपगम्यसताङ्गतिः ॥ पाणिनाऽभिमृशन्पादावव्यग्रस्तमपृच्छत २९ कच्चिद्द्विजवरश्रेष्ठ धर्मस्तेवृद्धसंमतः ॥ वर्त्ततेनातिकृच्छ्रेणसन्तुष्टमनसःसदा ३० सन्तुष्टोयर्हिवर्त्तेत ब्राह्मणोयेनकेनचित् ॥ अहीयमानःस्वाद्धर्मात्सह्यस्याखिलकामधुक् ३१ असन्तुष्टोऽसकृल्लोकानाप्नोत्यपिसुरेश्वरः ॥ अकिञ्चनोऽपिसन्तुष्टः शेतेसर्व्वाङ्गविज्वरः ३२ विप्रान्स्वलाभसन्तुष्टान् साधून्भूतसुहृत्तमान् ॥ निरहङ्कारिणःशान्तान्नमस्येशिरसाऽसकृत् ३३ कच्चिद्वःकुशलंब्रह्मन्राजतोयस्यहिप्रजाः ॥ सुखंवसन्तिनिषयेपाल्यमानाःसमेप्रियः ३४ यतस्त्वमागतोदुर्गंनिस्तीर्य्येहयदिच्छया ॥ सर्व्वंनोब्रूह्यगुह्यञ्चेत्किंकार्य्यंकरवामते ३५ एवंसंपृष्टसंप्रश्नोब्राह्मणःपरमेष्ठिना ॥ लीलागृहीतदेहेनतस्मैसर्व्वमवर्णयत् ३६ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ श्रुत्वागुणान्भुवनसुन्दरशृण्वतांतेनिर्विश्यकर्णविवरैर्हरतोऽङ्गतापम् ॥ रूपंदृशांदृशिमतामखिलार्थलाभंत्वय्यच्युताविशतिचित्तमपत्रपंमे ३७ कात्वामुकुन्दमहतीकुलशीलरूपविद्यावयोद्रविणधामभिरात्मतुल्यम् ॥ धीरापतिंकुलवतीनवृणीतकन्याकालेनृ

है तृष्णा के मारे एक स्थानमें स्थिर होयके नहीं रहे है और जाके पास कुछभी नहीं है और मनमें सन्तोषहै वह ब्राह्मण सब अङ्गन के खेदनकूं दूरि करिके आनन्दपूर्व्वक सोवेहै ३२ आपही तें विना मागे प्राप्तभई जो वस्तुहै ताहीमें सन्तोषहै जिनके और सब प्राणीन ते हितकूं करें विद्यावान् कुलीन अहङ्काररहित शान्त जिनके स्वभाव ऐसे जे साधु ब्राह्मणहैं तिनें शिरनवायकैमैं प्रणामकरूंहूं ३३ हे ब्राह्मण ! जाकी तुम प्रजा हो ता राजा तें तुमकूं कुशल है जा राजा के देश में ब्राह्मणन को पालन होइ वह राजा मोकूं प्यारो लगे है ३४ समुद्र को उल्लंघन करिकै जिस कार्य्य के करिबे की इच्छा करिकै जा स्थान तें तुम या किला में प्राप्त भये हौ जो कथनयोग्य बात होय तो हमारे आगे सम्पूर्ण कहौ हम तुम्हारो कहा कार्य्य करें ३५ श्रेष्ठ आसन पै विराजमान होय लीला करिके धारण करो है मनुष्य देह जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने पूंछी है पूछिबे लायक बात जासूं ऐसो ब्राह्मण श्रीकृष्ण तें सब वर्णन करत भयो ३६ रुक्मिणी ने आप एकान्त में लिखिकै दीनी जो पत्री है ताय खोलिकै प्रेमके हैं चिह्न जामें ऐसी पत्री ब्राह्मण श्रीकृष्ण कूं दिखायकै उनकी आज्ञा ते पत्री कूं बांचे हैं रुक्मिणी कहे है हे त्रिलोकी में सुन्दर ! हे अच्युत अर्थात् अखण्डरूप !

(त्रिपञ्चाशत्तमेगत्वाविदर्भानसुतेहितः ॥ रुक्मिणीमहरत्कृष्णोमिपताद्विपताबलात् १ तिरपनवें अध्यायमें अद्भुत चेष्टायुक्त कृष्णजी विदर्भदेशमें जाकर शत्रुओंके देखतेही जबर्दस्ती सों रुक्मिणीजीको हर लेतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! यदुकुल कूं आनन्द के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी को संदेशो सुनिकै ब्राह्मण को अपने हाथ में हाथ पकरिकै हँसकर बोलत भये १ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं जैसे रुक्मिणी को मेरे विषे चित्त लग्यो है ऐसेही रुक्मिणी में मेरोहू चित्त लग्यो है चिन्ता के मारे रात्रि में नींद नहीं आवे है मैं जानूं हौं रुक्मी ने द्वेष करिके मेरे ब्याह कूं मने करदियो है २ दुष्टराजान कूं लड़ाई में जीति कै मो विना और कू जाने नहीं दोषरहित हैं अङ्ग जाके ऐसी रुक्मिणी कूं जैसे काष्ठ मन्थन करिके अग्नि निकासि लेहैं हैं तैसे ले आऊंगो श्रीशुकदेवजी बोले मुरदैत्य के मारनवारे जो भगवान् हैं सो रुक्मिणी के विवाह को नक्षत्र जानि कै हे रथवान्! रथ कूं शीघ्र

श्रीशुकउवाच ॥ वैदर्भ्याःसतुसन्देशं निशम्ययदुनन्दनः ॥ प्रगृह्यपाणिनापाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ तथाहमपितच्चित्तोनिद्राञ्चनलभेनिशि ॥ वेदाहंरुक्मिणोद्वेषान्ममोद्वाहोनिवारितः २ तामानयिष्यउन्मथ्य राजन्यापसदान्मृधे ॥ मत्परामनवद्याङ्गीमेधसोऽग्निशिखामिव ३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ उद्वाहर्क्षञ्चविज्ञाय रुक्मिण्यामधुसूदनः ॥ रथःसंयुज्यतामाशु दारुकेत्याहसारथिम् ४ सचाश्वैःशैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकैः ॥ युक्तंरथमुपानीय तस्थौप्राञ्जलिरग्रतः ५ आरुह्यस्यन्दनंशौरिर्द्विजमारोप्यतूर्णगैः ॥ आनर्त्तादेकरात्रेण विदर्भानगमद्धयैः ६ राजासकुण्डिनपतिः पुत्रस्नेहवशंगतः ॥ शिशुपालायस्वांकन्यां दास्यन्कर्म्माण्यकारयत् ७ पुरंसंमृष्टसंसिक्तमार्गरथ्याचतुष्पथम् ॥ चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैःसमलङ्कृतम् ८ स्रग्गन्धमाल्याभरणैर्विरजोम्बरभूषितैः ॥ जुष्टंस्त्रीपुरुषैःश्रीमद्गृहैरगुरुधूपितैः ९ पितृन्देवान्समभ्यर्च्य विप्रांश्चविधिवन्नृप ॥ भोजयित्वायथान्यायं वाचयामासमङ्गलम् १० सुस्नातांसुदतींकन्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ॥ अहतांशुकयुग्मेन भूषितांभूषणोत्तमैः ११ चक्रुःसामर्ग्यजुर्मन्त्रैर्वध्वारक्षांद्विजोत्तमाः ॥ पुरो

जोतो या प्रकार रथवान् सूं कहत भये ३ । ४ शैब्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक ये हैं नाम जिनके ऐसे जे घोड़ा हैं तिन कूं रथ में जोति कै सम्मुख लाय कै रथवान् हाथ जोरि कै बोलत भयो ५ शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रथमें बैठिकै और ब्राह्मण कूं बैठारिकै,शीघ्रगामी जे घोड़ा हैं तिनसूं आनर्त्तदेश तें चलिकै एक रात्रिमें ही विदर्भदेश में आवत भये ६ पुत्र जो रुक्मी ताके वश होय के वाके कहेमें चलै ऐसो जो कुण्डिनपुरको राजा प्रजाको पालन करनवारो भीष्मकहै सो शिशुपाल कू अपनी कन्या देवेके लिये पुरकी शोभा और पितृ देवतानके पूजन कूं आदिलैकेकर्म्म करावत भयो ७ राजा भीष्मक अपने पुरकूं शोभायमान करावत भयो कैसो पुरहै बुहारी जिनमें भई छिरकाव होयरह्यो ऐसे राजमार्ग हैं चित्र विचित्र ध्वजा पताका बन्दनवार करिकै वह पुर शोभायमानहै ८ माला चन्दन फूलन के गहने स्वच्छ वस्त्र इनसों शोभायमान ऐसे स्त्री पुरुष जा पुर में डोलेहैं अगरकी धूप जिनमें लगिरही ऐसेशोभायमान घरहैं ९ हे राजन् परीक्षित्! पितृ देवतानको पूजन करिकै ब्राह्मणन कों विधिपूर्वक भोजन करायकै राजा भीष्मक रुक्मिणीको यथावत् स्वस्तिवाचन करावत भये १० अब कन्याकी शोभा वर्णन करे हैं स्नानजाने करयो सुन्दर जाके दांत

ऐसी कन्याहै विवाह,को वड्कण जाके बँध्यो नवीन वस्त्रनकूं पहिरे उत्तम आभूपणन करि शोभायमान है ११ द्विजोत्तम ब्राह्मण हैं ते सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद के मन्त्रन कूं पढ़िके वधू जो रुक्मिणीहै ताकी रक्षा करतभये अथर्ववेद के मन्त्रन को जाननवारो जो पुरोहित है सो सूर्यादिक ग्रहनकी शान्तिकरिवे के लिये होम करतभयो १२ विधिके जाननवारेन में श्रेष्ठ जो राजा भीष्मक है सो ब्राह्मणन कूं सुवर्ण रूपो वस्त्र और गुड़ मिलाय के तिल और दुग्धकी गौ इनको दान करतभयो १३ यह तो रुक्मिणी के पिता की वात कही अब लड़िका के पिताकी वात कहे हैं—जैसे राजा भीष्मकने कन्या को मङ्गल करायो ऐसेही चँदेलीको पालन करनवारो राजा दमघोप है सो अपने पुत्र शिशुपालको मन्त्र के जाननवारे ब्राह्मणनसूं सम्पूर्ण विवाहके उचित मङ्गलकर्म करावतभयो १४ मद जिनके चुवे सुवर्णकी है माला जिनके ऐसे हाथीन के समूह और रथ प्यादे घोड़ा इनकी चतुरंगिणी सेनाकूं सगलेकै राजा दमघोप कुण्डिनपुरमें आवतभयो १५ विदर्भ देशको जो राजा भीष्मक

हितोऽथर्वविद्वै जुहावग्रहशान्तये १२ हिरण्यरूप्यवासांसि तिलांश्चगुडमिश्रितान् ॥ प्रादाद्धेनूश्चविप्रेभ्योराजाविधिविदांवरः १३ एवंचेदिपतीराजा दमघोपःसुतायवै ॥ कारयामासमन्त्रज्ञैः सर्वमभ्युदयोचितम् १४ मदच्युद्भिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हेममालिभिः ॥ पत्त्यश्वसङ्कुलैःसैन्यैःपरीतःकुण्डिनंययौ१५ तंवैविदर्भाधिपतिः समभ्येत्याभिपूज्यच ॥ निवेशयामाससुदा कल्पितान्यनिवेशने १६ तत्रशाल्वोजरासन्धो दन्तवक्रोविदूरथः॥आजग्मुश्चैद्यपक्षीयाः पौण्ड्रकाद्याःसहस्रशः १७ कृष्णरामद्विपोयत्ताः कन्यांचैद्यायसाधितुम् ॥ यद्यागत्यहरेत्कृष्णोरामाद्यैर्यदुभिर्वृतः १८ योत्स्यामःसंहतास्तेन इतिनिश्चितमानसाः ॥ आजग्मुर्भूभुजःसर्वे समग्रबलवाहनाः १९ श्रुत्वैतद्भगवान्रामोविपक्षीयनृपोद्यमम् ॥ कृष्णंचैकंगतंहर्तुं कन्यांकलहशङ्कितः २० बलेनमहतासार्द्धं भ्रातृस्नेहपरिप्लुतः ॥ त्वरितःकुण्डिनंप्रागाद्गजाश्वरथपत्तिभिः २१ भीष्मकन्यावरारोहा काङ्क्षन्त्यागमनंहरेः ॥ प्रत्यापत्तिमपश्यन्तीद्विजस्याचिन्तयत्तदा २२ अहोत्रियामान्तरितउद्वाहोमेऽल्पराधसः ॥ नागच्छत्यरविन्दाक्षोनाहंवेद्म्यत्रकारणम् ॥ सोऽपिनावर्त्ततेऽद्यापि मत्सन्देशहरोद्विजः २३

है सो शिशुपालके पास आयकै पूजन करिकै वनायों,जो और एक स्थान है तामें मसन्नहोयके वसावतभयो १६ तहा शाल्व जरासन्ध दन्तवक्र विदूरथ शिशुपाल और पौण्ड्रक आदिलैकै हजारन राजा आवतभये १७ कृष्ण राम तें वैर करिवे को है यत्न जिनको और कन्याकूं शिशुपाल के विवाह करिवे के लिये उद्यम जिनने कर्योहै कदाचित् रामसों आदिलैके यादवन कूं संगलैके कृष्ण आयकै कन्याकूं चुरायकै लै जायगो तौ वाके संग युद्ध करेंगे ऐसे मन्में निश्चय करिके अच्छे २ सिपाही घोड़ा हाथीनकूं सगलैके सम्पूर्ण राजा आवतभये १८। १९ भगवान् वलदेवजी शत्रु शिशुपाल के पक्ष के राजानको उद्यम सुनिकै और कन्या लेवे कूं श्रीकृष्ण अकेले गयो है वहा कलह होयगी यह शङ्का मानिकै भय्या श्रीकृष्णको स्नेह जिनकूं आयगयो ऐसे वलदेवजी हाथी घोड़ा रथ प्यादेनकी चतुरंगिणी सेनाकूं लैकै शीघ्र कुण्डिनपुरमें आवतभये २०।२१ श्रेष्ठहैं जंघा जाकी ऐसी भीष्मककी कन्या रुक्मिणी हरि जो श्रीकृष्ण हैं तिनके आयवे को पैंडो देखा ब्राह्मण पत्री लैके गयोहो वह जो लौटिके न आयो तव चिन्ता करति भई २२ मन्दभागिनी जो मैं हूं ता मेरे विवाह में एक रात्री अब वाकी रहीहै परन्तु कमल से हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र नहीं आयपहुँचे

याको कारण मैं नहीं जानूं हूं मेरो संदेशो ब्राह्मण लैकेगयो सो भी नहीं आयो है २३ नहीं है दोष जिनमें ऐसे श्रीकृष्णने मेरे पाणिग्रहण को निश्चय उपाय कियो होइगो परन्तु कन्या अभीतें पाती लिखि लिखि भेजेहै यह दोष देखिकै नहीं आये २४ मो अभागिनीकूं विधाता ईश्वर अनुकूल नहींहै और देवी गौरी रुद्राणी पार्वती सती ये अनुकूल नहींहैं—या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णने हरयोहै मन जाको ऐसी बाला जो रुक्मिणी है सो चिन्ता करिकै आसू जिनमें भरिआये ऐसे नेत्रनकूं मूंदति भई अबताईं श्रीकृष्णके आयवे को समय वीत्यो नहीं जाने है २५ । २६ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णके आइवे को पैंडो देखै ऐसी जो रुक्मिणी ताकी वाईं ऊरु भुजा नेत्र ये अङ्ग फरकत भये स्त्रीन के वायें अङ्ग फरकने शुभ होइ है प्यारी बात के जनावनवारे हैं २७ याके पीछे ब्राह्मण तुम आगे जाय के खबरि करो या प्रकार श्रीकृष्ण ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसो ब्राह्मण अन्तःपुर में डोलै फिरै जो राजा की पुत्री रुक्मिणी है ताय देखत भयो २८ पतिव्रता

अपिमय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वाकिञ्चिज्जुगुप्सितम् ॥ मत्पाणिग्रहणेनूनं नायातिहिकृतोद्यमः २४ दुर्भगायानमेधाता नानुकूलोमहेश्वरः ॥ देवीवाविमुखा गौरी रुद्राणीगिरिजासती २५ एवंचिन्तयतीबालागोविन्दहृतमानसा ॥ न्यमीलयतकालज्ञा नेत्रेचाश्रुकलाकुले २६ एवंवध्वाःप्रतीक्षन्त्या गोविन्दागमनंनृप ॥ वामऊरुर्भुजोनेत्रमस्फुरन्प्रियभाषिणः २७ अथकृष्णविनिर्दिष्टः सएवद्विजसत्तमः ॥ अन्तःपुरचरींदेवींराजपुत्रींददर्शह २८ सातंप्रहृष्टवदनमव्यग्रात्मगतिंसती ॥ आलक्ष्यलक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता २९ तस्याआवेदयत्प्राप्तंशशंसयदुनन्दनम् ॥ उक्तञ्चसत्यवचनमात्मोपनयनंप्रति ३० तमागतंसमाज्ञाय वैदर्भीहृष्टमानसा ॥ नपश्यन्तीब्राह्मणायप्रियमन्यन्ननामसा ३१ प्राप्तौश्रुत्वास्वदुहितुरुद्वाहप्रेक्षणोत्सुकौ ॥ अभ्ययात्तूर्यघोषेण रामकृष्णौसमर्हणैः ३२ मधुपर्कमुपानीयवासांसिविरजांसिच ॥ उपायनान्यभीष्टानि विधिवत्समपूजयत् ३३ तयोर्निवेशनंश्रीमदुपकल्प्यमहामतिः ॥ ससैन्य

जो रुक्मिणी है सो प्रसन्न है मुख जाको और नहीं चञ्चलहै देह की गति जाकी ऐसे ब्राह्मण कूं देखि कै कार्य्य करिके आयो है या लक्षण कूं जानि के पवित्र जाकी मुसिकानि ऐसी रुक्मिणी पूंछति भई २९ तब रुक्मिणी तें श्रीकृष्णचन्द्र आये हैं यह ब्राह्मण कहत भयो और राजान कूं जीति कै रुक्मिणी कूं ले आऊंगो यह सत्य वचन जो श्रीकृष्णचन्द्र ने कह्यो हो ताकूं भी कहत भयो ३० श्रीकृष्ण कू आये जानिकै हर्षित है मन जाको ऐसे विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी विचार करे है कि या समय ब्राह्मण कूं सर्व्वस्व देऊं सो भी थोड़ो है ऐसे ब्राह्मण के देवे योग्य कोई वस्तु नहीं देखिकै प्रणामही करत भई पश्चात् धन भी देत भई ३१ अपनी कन्या को विवाह देखिवे की इच्छा करिके आये जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनें सुनि के राजा भीष्मक नगाड़े बजावत पूजन की सामग्री लैके सम्मुख जात भयो ३२ मधुपर्क लायकै आगे धरत भयो सुन्दर वस्त्र और अनेक प्रकार की भेंट निवेदन करिकै विधिपूर्व्वक राजा भीष्मक जैसे कन्या के वरकी पूजा करे हैं या प्रकार श्रीकृष्ण बलदेव को पूजन करत भयो ३३ बड़ो बुद्धिमान् राजा भीष्मक कृष्ण बलदेव के लिये सुन्दर स्थान बनाइ कै सेना टहलुआन सहित यथायोग्य आ-

तिथ्य करत भयो ३४ या प्रकार एक ठौर भये जे राजा हैं तिनमें जैसो जाको पराक्रम है जैसी अवस्था है और जैसो जाके वल है जितनो जाके धन है ताको ताही प्रकार सम्पूर्ण वस्तुन करिकै राजा भीष्मक पूजन करत भयो ३५ विदर्भपुर के जे वासी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयो सुनिकै नेत्ररूप अञ्जलीन सूं श्रीकृष्ण के मुखकमल कूं पीवत भये ३६ दोषरहित जो रुक्मिणी है सो श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री होइवे योग्य है ऐसेही श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी के पति होनेके योग्य हैं ३७ जो कुछ हमने पुण्य करे हैं ताके प्रभाव करिकै त्रिलोकी को करनवारो ईश्वर प्रसन्न होय कै अनुग्रह करो और हम यही अनुग्रह चाहे है कि श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी को पाणिग्रहण करैं ३८ या प्रकार प्रेमवद्ध होय कै सम्पूर्ण पुरवासी कहत भये कन्या जो रुक्मिणी है सो पुर तें वाहिर निकसि कै प्यादे जाकी रक्षा करैं ऐसी देवी अम्बिका के मन्दिर में जाति भई ३९ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को भले प्रकार ध्यान करत अम्बिका भवानी के चरणारविन्द के

योःसानुगयोरातिथ्यंविदधेयथा ३४ एवंराज्ञांसमेतानां यथावीर्यंयथावयः ॥ यथाबलंयथावित्तं सर्वैःकामैःसमर्हयत् ३५ कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुरवासिनः ॥ आगत्यनेत्राञ्जलिभिःपपुस्तन्मुखपङ्कजम् ३६ अस्यैवभार्याभवितुं रुक्मिण्यर्हतिनापरा ॥ असावप्यनवद्यात्मा भैष्म्याःसमुचितःपतिः ३७ किञ्चित्सुचरितंयन्नस्तेनतुष्टस्त्रिलोककृत् ॥ अनुगृह्णातुगृह्णातु वैदर्भ्याःपाणिमच्युतः ३८ एवंप्रेमकलाबद्धावदन्तिस्मपुरौकसः ॥ कन्याचान्तःपुरात्प्रागाद्भटैर्गुप्ताऽम्बिकालयम् ३९ पद्भ्यांविनिर्ययौद्रष्टुं भवान्याःपादपल्लवम् ॥ साचानुध्यायतीसम्यग्मुकुन्दचरणाम्बुजम् ४० यतवाङ्मातृभिःसार्द्धं सखीभिःपरिवारिता ॥ गुप्ताराजभटैःशूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ॥ मृदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्चजघ्निरे ४१ नानोपहारबलिभिर्वारमुख्याःसहस्रशः ॥ स्रग्गन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यःस्वलङ्कृताः ४२ गायन्तश्चस्तुवन्तश्चगायकावाद्यवादकाः ॥ परिवार्यवधूंजग्मुः सूतमागधवन्दिनः ४३ आसाद्यदेवीसदनं धौतपादकराम्बुजा ॥ उपस्पृश्यशुचिःशान्ताप्रविवेशाऽम्बिकान्तिकम् ४४ तांवैप्रवयसोबालां विधिज्ञाविप्रयोषितः ॥ भवानींवन्दयाञ्चक्रुर्भवपत्नीभवान्विताम् ४५ नमस्येत्वाऽम्बिकेऽभीक्ष्णंस्वसन्तानयुतांशिवाम् ॥ भूयात्पतिर्मेभगवान्कृष्णस्तदनुमोदताम् ४६ अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासःस्रङ्माल्यभूषणैः ॥ नानो

दर्शन के निमित्त पाँवनही जात भई ४० मौन धारण कियो है पुरोहितानी सङ्ग और सखी सहेली जाके सङ्ग हैं कवच पहिरि पहिरि कै शस्त्र हाथन में लैके पहरदार राजा के सिपाही रक्षा निमित्त जाके सङ्ग हैं मृदङ्ग शङ्ख ढोल तुरही भेरि ये वाजे सङ्ग वजत भये ४१ उत्तम उत्तम हजारन वेश्या सङ्ग में नाचत जाति भई माला चन्दन वस्त्र गहनेन सूं शृङ्गार करिके और अनेकप्रकार की सामग्री भेंट लैके द्विजन की स्त्री सग जाति भई ४२ गवैया हैं ते और वाजेन के वजवैया हैं ते और सूत जागा वन्दीजन हैं ते रुक्मिणी कू वीच में करिके गावत और स्तुति करत जात भये ४३ देवी के मन्दिर में जाय कमलरूपी पाव हाथ धोइ आचमन करि पवित्र होयकै शान्त है स्वरूप जाको ऐसी रुक्मिणी अम्बिका देवीके पास जातिभई ४४ विधिकी जाननवारी जे वृद्ध ब्राह्मणन की स्त्री हैं ते वाला जो रुक्मिणी है तापै महादेव की पत्नी महादेवसहित जो भवानी है ताकी पूजा करावति भई ४५ हे अम्बिके पार्वती! अपने सन्तानसहित जो मङ्गलरूपिणी तुम हौ तिनैं वारवार

प्रणाम करूं हूं भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो मेरे पति होउ या प्रकार शिर नवाइ कै रुक्मिणी प्रार्थना करत भई ४६ जल चन्दन अक्षत धूप वस्त्र माला फूल गहने और नानाप्रकारकी सामग्रीन की भेटन सूं और न्यारी न्यारी जे दीवान की पंक्ति हैं तिन सूं देवीकी पूजा करति भई ४७ताही प्रकार तिन सामग्रीन सूं और नोन के पुआ पान कलाये सुपारी गाड़े इन सूं सौभाग्यवती जे ब्राह्मणन की स्त्री हैं तिनकी पूजा करत भई ४८ रुक्मिणी देवी कूं और ब्राह्मणन की स्त्रीन कूं नमस्कार करत भई और प्रसाद है ताइ लेत भई ब्राह्मणन की स्त्री आशीर्वाद देत भई ४९ ताके पीछे मौन कूं त्यागि के जड़ाऊ जो मुँदरी है तासूं शोभायमान जो हाथ है तासूं दासी को हाथपकरिके देवी के मन्दिर सूं बाहिर निकसतिभई ५० ईश्वर की मायाकी तुल्य बड़ेबड़े जे शूरवीर राजान की मोहनवारी सुन्दर जाकी कटि कुण्डलनकरि शोभायमान हैं मुख जाको रजोदर्शन जाके भयो नहीं रत्नकी जड़ाऊ कौंधनी पहिरे प्रकटभये हैं स्तन जाके और मुखपै छूटे जे केशहैं तिन सूं नेत्र जाके चलायमान हैं ५१ सुन्दर जाकी मुसिक्यानि कुँदुरू के फल की तुल्य अरुण जे ओष्ठ हैं तिनकी कान्तिसूं अरुणता जिनमें झलकै ऐसे जे दांत हैं तेईहैं मानों कुन्दकली जाके

पहारबलिभिःप्रदीपावलिभिःपृथक् ४७ विप्रस्त्रियःपतिमतीस्तथातैःसमपूजयत् ॥ लवणापूपताम्बूलकण्ठसूत्रफलेक्षुभिः ४८ तस्यैस्त्रियस्ताःप्रददुःशेषां युयुजुराशिषः ॥ ताभ्योदेव्यैनमश्चक्रे शेषाञ्चजगृहेवधूः ४९ मुनिव्रतमथत्यक्त्वा निश्चक्रामाम्बिकागृहात् ॥ प्रगृह्यपाणिनाभृत्यांरत्नमुद्रोपशोभिना ५० तांदेवमायामिववीरमोहिनीं सुमध्यमांकुण्डलमण्डिताननाम् ॥ श्यामांनितम्बार्पितरत्नमेखलां व्यञ्जत्स्तनीकुन्तलशङ्कितेक्षणाम् ५१ शुचिस्मितांबिम्बफलाधरद्युतिशोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ॥ पदाचलन्तींकलहंसगामिनीं सिञ्जत्कलानूपुरधामशोभिना ५२ विलोक्यवीरामुमुहुःसमागता यशस्विनस्तत्कृतहृच्छयार्दिताः ॥ यांवीक्ष्यतेनृपतयस्तदुदारहासव्रीडावलोकहृतचेतसउज्झितास्त्राः ५३ पेतुःक्षितौगजरथाश्वगताविमूढायात्राच्छलेनहरयेऽर्पयतींस्वशोभाम् ॥ सैवंशनैश्चलयतीचलपद्मकोशौ प्राप्तिंतदाभगवतःप्रसमीक्षमाणा ५४ उत्सार्यवामकरजैरलकानपाङ्गैः प्राप्तान्ह्रियैक्षतनृपान् ददृशेऽच्युतंसा ॥ तांराजकन्यांरथमारुरुक्षतीं जहारकृष्णोद्विषतांसमीक्षताम् ५५ रथंसमारोप्यसुपर्णलक्षणं राजन्यचक्रंपरिभूयमाधवः ॥ ततोययौरामपुरो

राजहंस हंसिनी की तुल्य है गमन जाको झनतकार शब्दकूं करै ऐसो जो सुन्दरनूपुर ताकी जो शोभा ता करिकै है शोभा जाकी ऐसे चरणनसूं चलैहै ऐसी रुक्मिणीकूं देखिकै जे बड़ेबड़े यशस्वी राजा तिनकूं व्यापो जो कामदेव तासूं पीड़ित होयके मोहित होत भये ता रुक्मिणी की उदार हँसनि लज्जापूर्वक चितवनि इनसूं हरि गये हैं चित्त जिनके ऐसे जे राजा हैं ते हथियारनकूं छोड़ि के ५२।५३ हाथी रथ घोड़ा पै तें मूढ होयकै पृथ्वी में गिरत भये कैसी रुक्मिणी है यात्राके मिष करिकै श्रीकृष्णचन्द्रकूं अपनी शोभा दिखावै है या प्रकार चलायमान कमलकोश की तुल्य कोमल जे चरण हैं तिनें हौले हौले चलाय के ता समय श्रीकृष्ण के आयवेको पैंड़ो देखे ऐसी जो रुक्मिणी है ५४ सो बायें हाथ के जे नख हैं तिन सूं अलकन कूं उठाय कै आये जे राजा हैं तिनें कटाक्ष करिके लाजसूं देखतभई और आगे ठाढ़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनें देखतभई रथमें बैठ्यो चाहे ऐसी जो भीष्मक राजाकी कन्या रुक्मिणी हैताय श्रीकृष्णचन्द्र शत्रुनके देखत हरतभये ५५ गरुड़की

है ध्वजा जामें ऐसे रथमें बैठारिकै क्षत्रियनकी सेनाकूं जीतिके श्रीकृष्ण जातभये जैसे स्यारनके बीचमेंते अपने भागकूं लैके सिंह चल्योजायहै ऐसे रामहैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवनसहित रुक्मिणी कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र हौले हौले जात भये ५६ जरासन्ध है मुख्य जिन में ऐसे अभिमानी राजा हैं ते यशको जामें नाश ऐसो अपनो अपमान है ताय नहीं सहारतभये अहो हम कूं धिक्कारहै जैसे सिंहन के यशकूं स्यार हरै ऐसे धनुर्धारी जे हम हैं तिनको यश ग्वारियानने हरिलियो ५७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीहरणंनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

(चतुःपञ्चाशत्तमेतुजित्वाराज्ञोऽरिपक्षगान् ॥ रुक्मिणंचविरूप्याथभैष्म्याःपाणिंपुरेऽग्रहीत् १चौवनवें अध्याय में शत्रुके पक्ष के राजाओं को कृष्णजी जीतकर रुक्मीको विरूपकर द्वारकापुरीमें रुक्मिणीजी के साथ विवाह करतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार अत्यन्तहै क्रोध जिनके कवचनकूं पहिरे ऐसे जे सम्पूर्ण राजा है ते अपनी अपनी सवारीनपै चढि

गमैःशनैः सृगालमध्यादिवभागहृद्धरिः ५६ तंमानिनःस्वाभिभवंयशःक्षयंपरेजरासन्धवशानसेहिरे ॥ अहोधिगस्मान्यशआत्तधन्वनां गोपैर्हृतंकेसरि णांमृगैरिव ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीहरणंनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इतिसर्वेसुसंरब्धावाहनारुह्यदंशिताः॥ स्वैःस्वैर्बलैःपरिक्रान्ताअन्वीयुर्धृतकार्मुकाः १ तानापततआलोक्य यादवानीकयूथपाः ॥ तस्थुस्तत्सम्मुखाराजन् विस्फूर्ज्यस्वधनूंषिते २ अश्वपृष्ठेगजस्कन्धेरथोपस्थेचकोविदाः ॥ मुमुचुःशरवर्षाणि मेघाअद्रिष्वपोयथा ३ पत्युर्बलंशरासारै श्छन्नंवीक्ष्यसुमध्यमा ॥ सव्रीडमैक्षत्तद्वक्त्रं भयविह्वललोचना ४ प्रहस्यभगवानाहमास्मभैर्वामलोचने ॥ विनङ्क्ष्यत्यधुनैवैतत्तावकैःशात्रवंबलम् ५ तेषांत द्विक्रमंवीरागदसङ्कर्षणादयः ॥ अमृष्यमाणानाराचैर्जघ्नुर्हयगजान्रथान् ६ पेतुःशिरांसिरथिनामश्विनांगजिनांभुवि ॥ सकुण्डलकिरीटानि सोष्णी षाणिचकोटिशः ७ हस्ताःसासिगदेष्वासाः करभाऊरवोऽङ्घ्रयः ॥ अश्वाश्वतरनागोष्ट्रखरमर्त्यशिरांसिच ८ हन्यमानबलानीकावृष्णिभिर्जयकाङ्क्षिभिः॥

के सेनाकूं संग लैके धनुषनकूं उठायकै पीछेतें आवत भये १ यादवनकी सेनाके जे यूथहैं तिनके पालन करनवारे जे मुख्य मुख्य यादवहैं ते राजानकूं देखिकै हे राजन् परीक्षित् ! अपने धनुषन कूं टंकार करिकै सम्मुख ठाढे होत भये २ युद्धःकरने में निपुण जे राजा हैं ते घोडान की पीठि पै हाथीन के कन्धा पै रथ के ऊपर बैठिके जैसे पर्वतन के ऊपर मेघ जल वर्षावें हैं ऐसे बाणन की वर्षा करतभये ३ सुन्दरहै कटि जाकी ऐसी जो रुक्मिणी है सो पति जो श्रीकृष्णहैं तिनकी सेनाकूं बाणन सूं ढकी देखिके भयकरिके विह्वल है नेत्र जाके ऐसी लाजसूं श्रीकृष्णको मुख है ताय देखतिभई ४ भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो हँसिके बोलत भये हे वामलोचने अर्थात् मनोहर है नेत्र जाके ! ऐसी जो तू सो भय मति करै अबहीं तुम्हारी ओर के जे यादव हैं ते शत्रुन की सेना कूं अबहीं नाश कर देंगे ५ गद सङ्कर्षण कूं आदि लैके जे शूरवीर हैं ते तिनके पराक्रम कूं नहीं सहिसके घोड़ा हाथी रथ हैं तिनें बाणन सूं नाश करत भये ६ रथन में बैठे हैं तिन के और घोड़ान पै चढे हैं तिनके और हाथीन पै बैठे हैं तिनके कुण्डल मुकुट पगड़ीन सहित करोड़न शिर कटिकै पृथ्वी पै गिरत भये ७ तरवार गदा धनुषन सहित जे हाथ हैं ते कटिके गिरत भये करभन की

तुल्य जे जंघा हैं ते कटिके गिरतभये घोड़ा रावर हाथी ऊंट गधा मनुष्य इनके कटिके शिर गिरत भये ८ जीतिवे की है इच्छा जिनके ऐसे जे यादव हैं तिन ने मारे हैं सेना के झुण्ड जिन के ऐसे जरासन्ध सूं आदि लैके राजा हैं ते विमुख होयकै जात भये ९ मानो स्त्री जाकी हरिगई ऐसो व्याकुल शोभा जाकी हत भई उत्साह जाको गयो मुख जाको शुष्क होयगयो ऐसो राजा शिशुपाल है ताके पास आयकै सब राजा बोलत भये १० हे पुरुषन में सिंह राजा शिशुपाल ! तुम अपने मनकी उदासीनता कूं त्यागो देहधारीन कूं सुख और दुःख सर्वदा नहीं रहे हैं ११ जैसे काठकी पुतरी नचावनवारेकी इच्छा करिके नाचेहै ऐसेही ईश्वर के अधीन जो जीवहै ताकूं सुख दुःख होयहै १२ कृष्णतें सत्रहवार तेईस अक्षौहिणी सेनालैके युद्धमें हार्यो केवल एकवेर जीत्यो तथापि मैं शोच नहीं करूं हूं कदाचित् हर्ष नहीं मानू हूं दैवके वश जो काल है ताने समस्तजगत् चलायमान कियोहै यह मैं जानूंहूं १३ । १४ बड़े बड़े शूरवीरन के यूथ तिनके पालन करन

राजानोविमुखाजग्मुर्जरासन्धपुरःसराः ९ शिशुपालंसमभ्येत्य हृतदारमिवाऽऽतुरम् ॥ नष्टत्विषंगतोत्साहं शुष्यद्वदनमब्रुवन् १० भोभोःपुरुषशार्दूल दौर्मनस्यमिदंत्यज ॥ नप्रियाप्रिययोराजन्निष्ठादेहिषुदृश्यते ११ यथादारुमयीयोषिन्नृत्यतेकुहकेच्छया ॥ एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहतेसुखदुःखयोः १२ शौरेःसप्तदशाहंवै संयुगानिपराजितः ॥ त्रयोविंशतिभिःसैन्यैर्जिग्यएकमहंपरम् १३ तथाप्यहंनशोचामि नप्रहृष्यामिकर्हिचित् ॥ कालेनदैवयुक्तेन जानन्विद्रावितंजगत् १४ अधुनापिवयंसर्वे वीरयूथपयूथपाः ॥ पराजिताःफल्गुतन्त्रैर्यदुभिःकृष्णपालितैः १५ रिपवोजिग्युरधुनाकालआत्मानुसारिणि ॥ तदावयंविजेष्यामोयदाकालःप्रदक्षिणः १६ एवंप्रबोधितोमित्रैश्चैद्योऽगात्सानुगःपुरम् ॥ हतशेषाःपुनस्तेऽपि ययुःस्वंस्वंपुरंनृपाः १७ रुक्मीतुराक्षसोद्वाहं कृष्णद्विडसहन्स्वसुः ॥ पृष्ठतोऽन्वगमत्कृष्णमक्षौहिण्यावृतोवली १८ रुक्म्यमर्षीसुसंरब्धः शृण्वतांसर्वभूभुजाम् ॥ प्रतिजज्ञेमहाबाहुर्दंशितःसशरासनः १९ अहत्वासमरेकृष्णमप्रत्यूह्यचरुक्मिणीम् ॥ कुण्डिनंनप्रवेक्ष्यामि सत्यमेतद्ब्रवीमिवः २० इत्युक्त्वारथमारुह्य सारथिंप्राहसत्वरः ॥ चोदयाश्वान्यतःकृष्ण

वारेनके जे यूथ तिनके पालन करनवारे जे हमहैं ते थोड़ीहै सेना जिनकी कृष्णहै पालन करनवारो जिनको ऐसे यादवन तें अब हारिगये १५ या समय उनके दिन अच्छे है तासूं हम शत्रुनकूं जीतत भये जब हमारे दिन अच्छे आवेंगे तब हम जीतेंगे १६ याप्रकार मित्रनने समझायो तब शिशुपाल अपने चाकर टहलुआनकूं संगलैके अपने देशकूं जातभयो मरेन ते बाकी बचे जे राजा हैं ते भी अपने २ पुरन कूं जातभये १७ कृष्णको वैरी जो रुक्मी है सो बहिनिको युद्धमें ते हरिके लेजायबोहै ताकूं नहीं सहिकै एक अक्षौहिणी सेना कों संगलैके बली जो रुक्मी है सो कृष्णके पीछे दौरत भयो १८ असहनता जाकूं आइगई क्रोधित होयकै कवच जाने पहिर लियो धनुष् ग्रहण करिकै सब राजान के श्रवण करत बड़ी है भुजा जाकी ऐसो रुक्मी प्रतिज्ञा करतभयो १९ युद्ध में कृष्ण के मारे विना और रुक्मिणीके बगदाये विना कुण्डिनपुरमें न आऊंगो यह मैं सत्य कहूंहूं २० रुक्मी या प्रकार कहिके रथ में बैठि के रथवान् सूं कहत भयो कि जहाँ कृष्ण है तहाँ शीघ्र घोड़ान

कूं हाँकिकै लै चलो वाके संग मेरो युद्ध होयगो २१ बड़ी है दुष्टबुद्धि जाकी गौवन को चरावनवारो जो कृष्ण है ताके पराक्रम के मद कूं पैने बाणन सूं मारि के अब हरिलेउंगो ऐसो कृष्ण जोरावरी मेरी बहिनि कूं हरिलेगयो है २२ खोंटी है बुद्धि जाकी ऐसो रुक्मी है सो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के बल कू न जानि के कुत्सित शब्दन कूं कहत अकेलो रथकूं दौरायके ठाढो रहु २ ऐसे गोविन्द श्रीकृष्ण कू पुकारत भयो २३ दृढ धनुष् कू खैंचिकै श्रीकृष्ण के तीन बाण मारत भयो और हे यादवन के कुल कूं दोष के लगावनवारे! यहाँ तू क्षण भर ठाढो रह ऐसे कहत भयो २४ अरे जैसे होम की सामग्री कूं कौआ लैजाय है ऐसे मेरी बहिनि कूं चुराय कै कहां लिये जाय है बड़ोमायावी कपट करिकै युद्धकरै जो तू है ता तेरो मद में अब हरिलेउंगो २५ मेरे बाणन सूं पीड़ित होयके जबताईं न सोवैगो तबताईं कन्या कूं त्यागि दे अब श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकाय कै वाके धनुष् कूं काटिकै छःबाणन सूं रुक्मी को वेधतभये २६ आठ बाण करिके रथ के चारों

स्तस्यमेसंयुगंभवेत् २१ अद्याहंनिशितैर्बाणैर्गोपालस्यसुदुर्मतेः॥ नेष्येवीर्य्यमदंयेन स्वसामेप्रसभंहृता २२ विकत्थमानःकुमतिरीश्वरस्याप्रमाणवित॥ रथेनैकेनगोविन्दं तिष्ठतिष्ठेत्यथाह्वयत् २३ धनुर्विकृष्यसुदृढं जघ्नेकृष्णंत्रिभिःशरैः॥ आहचात्रक्षणंतिष्ठ यदूनांकुलपांसन २४ कुत्रयासिस्वसारंमेमुषित्वाध्वाङ्क्षवद्धविः॥ हरिष्येऽद्यमदंमन्द मायिनःकूटयोधिनः २५ यावन्नमेहतोबाणैःशयीथामुञ्चदारिकाम्॥ स्मयन्कृष्णोधनुश्छित्त्वाषड्भिर्विव्याधरुक्मिणम् २६ अष्टभिश्चतुरोवाहान्द्वाभ्यांसूतंध्वजंत्रिभिः॥ सचान्यद्धनुरादायकृष्णंविव्याधपञ्चभिः २७ तैस्ताडितःशरौघैस्तु चिच्छेदधनुरच्युतः॥ पुनरन्यदुपादत्त तदप्यच्छिनदव्ययः २८ परिघंपट्टिशंशूलं चर्म्मासीशक्तितोमरौ॥ यद्यदायुधमादत्त तत्सर्वंसोऽच्छिनद्धरिः २९ ततोरथादवप्लुत्य खड्गपाणिर्जिघांसया॥ कृष्णमभ्यद्रवत्क्रुद्धःपतङ्गइवपावकम् ३० तस्यचापततःखड्गं तिलशश्चर्मचेषुभिः॥ छित्त्वाऽसिमाददेतिग्मं रुक्मिणंहन्तुमुद्यतः ३१ दृष्ट्वाभ्रातृवधोद्योगं रुक्मिणीभयविह्वला॥ पतित्वापादयोर्भर्त्तुरुवाचकरुणंसती ३२ योगेश्वराप्रमेयात्मन् देवदेवजगत्पते॥ हन्तुंनार्हसिकल्याण भ्रा

घोड़ान कूं और दो बाणन सूं रथवान् कूं वेधतभये तीन बाणन करिकै ध्वजा काटतभये इतने में रुक्मी और धनुष् कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र कूं पांच बाणनसूं वेधतभयो २७ बाणन करिके ताड़ित जे अच्युत श्रीकृष्ण हैं ते रुक्मी को धनुष् काटतभये तब फेरि रुक्मी और धनुष् लेतभयो ताहू कूं नहीं है नाश जिनके ऐसे भगवान् काटतभये २८ परिघ अर्थात् वेंड़ा पट्टिश अर्थात् पट्टा त्रिशूल ढाल तरवार बरछी नेजा और जे जे हथियार रुक्मी लेतभयो ते ते सब कृष्णचन्द्र काटतभये २९ ता पीछे रुक्मी रथमें तें कूदिकै हाथ में तरवार लैकै मरिवे की इच्छा करिकै जैसे पतङ्ग आगि के सम्मुख जाय ऐसे श्रीकृष्ण के सम्मुख जातभयो ३० चल्यो आवै जो रुक्मी है ताकीढाल तरवार कूं बाणन तें तिल तिल भरि काटिकै पैनी धारकी तरवार लैके श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मी के मारिवे कूं उद्यत होतभये ३१ भय्या के मारिवे को उद्यम देखिके भयसू व्याकुल होयकै पतिव्रता जो रुक्मिणी है सो पति जो श्रीकृष्णचन्द्र हे तिनके चरणन में गिरिके करुणा जामें आय जाय ऐसे वचनकू बोलतभई ३२ हे योगके ईश्वर! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिवे में आवै है स्वरूप जिनको! हे देवतानके देव! हे जगत्के पालन करनवारे श्रीकृष्ण! हे महाभुज!

अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ऐसे जो तुमहो सो मेरे भय्याकूं मतिमारो तुम्हें योग्य नहीं है ३३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! त्रास करिकै अङ्ग जाके काँपे शोक करिकै मुख जाको शुष्क होगयो और कण्ठ जाको रुकिगयो कायरता सूं गिरी है सुवर्ण की माला जाकी ऐसी रुक्मिणी ने ता समय श्रीकृष्णचन्द्र के चरण पकरे ता समय करुणा आइगई तासूं रुक्मी कूं नहीं मारतभये ३४ दुष्टकर्मन कूं करै ऐसो जो रुक्मी है ताकूं वस्त्र तें बांधिकै दाढ़ीसहित मूड़ मूंडिकै वाको अभद्ररूप करतभये तरताई यादवन में जे शूरवीर हैं ते अद्भुत जो रुक्मी की सेनाहै ताय जैसे हाथी कमलिनीन कूं मर्दन करे है या प्रकार मर्दन करतभये ३५ बलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके रुक्मीकूं देखतभये कैसो रुक्मी है शिर जाको मुडिगयो मृतक के तुल्य बँध्यो ठाड़ो देखिकै करुणा जिनकूं आय गई ऐसे सामर्थ्यवान् जे बलदेवजी हैं ते कहतभये ३६ हे कृष्ण ! तैंने यह निन्दितकर्म करयो हमारी यामें निन्दा होयगी शिर दाढ़ी मुड़ाय कै बुरो रूप करिदेनो

तहंमेमहाभुज ३३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तयापरित्रासविकम्पिताङ्गयाशुचावशुष्यन्मुखरुद्धकण्ठया ॥ कातर्य्यविस्रंसितहेममालया गृहीतपादः करुणोन्यवर्तत ३४ चैलेनबद्ध्वातमसाधुकारिणं सश्मश्रुकेशंप्रवपन्व्यरूपयत् ॥ तावन्ममर्दुःपरसैन्यमद्भुतं यदुप्रवीरानलिनींयथागजाः ३५ कृष्णान्तिकमुपव्रज्य ददृशुस्तत्ररुक्मिणम् ॥ तथाभूतंहतप्रायंदृष्ट्वासङ्कर्षणोविभुः ॥ विमुच्यबद्धंकरुणोभगवान्कृष्णमब्रवीत् ३६ असाध्विदंत्वयाकृष्णकृतमस्मज्जुगुप्सितम् ॥ वपनंश्मश्रुकेशानां वैरूप्यंसुहृदोवधः ३७ मैवास्मान्साध्व्यसूयेथाभ्रातुर्वैरूप्यचिन्तया ॥ सुखदुःखदोनचाऽन्योस्ति यतःस्वकृतभुक्पुमान् ३८ बन्धुर्वधार्हदोषोऽपि नबन्धोर्वधमर्हति ॥ त्याज्यःस्वेनैवदोषेण हतःकिंहन्यतेपुनः ३९ क्षत्रियाणामयंधर्मः प्रजापतिविनिर्मितः ॥ भ्राताऽपिभ्रातरंहन्याद्येनघोरतरस्ततः ४० राज्यस्यभूमेर्वित्तस्य स्त्रियोमानस्यतेजसः ॥ मानिनोऽन्यस्यवाहेतोः श्रीमदान्धाःक्षिपन्तिहि ४१ तवेयंविषमाबुद्धिःसर्वभूतेषुदुर्हृदाम् ॥ यन्मन्यसेसदाऽभद्रं सुहृदांभद्रमज्ञवत् ४२ आत्ममोहोनृणामेष कल्पतेदेवमायया ॥ सुहृद्दुर्हृदुदासीनइतिदेहात्ममानिनाम् ४३ एकएवपरोह्यात्मा सर्वेषामपि

यही अपने नातेदार को मारनो है अब याकूं छोड़िदे ३७ अब रुक्मिणी कू समझावे हैं हे सुशीले ! भय्याको कुरूप होयगयो या ईर्षा तें हम कूं दोष मति लगावै यह पुरुष अपने कर्मन को फल भोगे है सुख दुःखको देनवारो और कोई नहीं है ३८ फेर श्रीकृष्ण कूं समझावे हैं अपने नातेदार ने मारिबे योग्य अपराध करो भी होइ तथापि न मारै वाकू अपराधी करिकै त्यागिदेनो यह पहिलेही अपने दोषकरि मरि रह्यो है फेरि वाकूं कहा मारिये ३९ फेरि रुक्मिणी कूं समझावें हैं क्षत्रियन को यही धर्म विधाता ने बनायो है जा धर्म सूं भय्या भय्या कूं मारि डारे मारे भयुरेन की कौन बात है यह बड़ो घोरधर्म है ताते हमारो कहा दोष है ४० फेरि श्रीकृष्ण कूं समझावे हैं हे कृष्ण ! राज्य के निमित्त पृथ्वी के लिये धनके लिये स्त्री के लिये प्रतिष्ठा के लिये तेजके लिये और और वस्तुके लिये श्रीमदान्ध अभिमानी राजा लड़े हैं हमकूं उचित नहीं है ४१ फेरि कृष्ण कूं समझावे हैं सब प्राणीन में दुष्ट जाको हृदय अर्थात् सब बात को बुरो विचारैं ऐसे जे शिशुपालादिक हैं तिनको बुरो चाहो हो और अपने भय्याको भलो चाहो हो रुक्मिणी तुम्हारी विषम बुद्धि है अज्ञानी पुरुषनकू जैसे होय तैसे ४२ यह हमारो मित्र है यह शत्रु है यह बराबर है या

प्रकार देहाभिमानी पुरुषन कूं देवमाया करिकै एक मोह रच्यो है ४३ समस्त देहधारीन में एकही शुद्ध आत्मा है वाही कूं अज्ञानीपुरुष अनेकरूप करिकै माने हैं जैसे जलके भरे घटमें एकही सूर्य को प्रतिबिम्ब अनेक होयकै दीखे है जैसे एक आकाश घटादिकन में बहुत रूप करिकै दीखैहै ४४ तैसे द्रव्य अर्थात् अधिभूत प्राण इन्द्रिय अध्यात्मगुण आधिदैविक इतने है स्वरूप जाके ऐसे आत्मा में अविद्या ने रचे हैं वेही देहधारीन कूं संसार में भटकावे हैं ४५ हे पतिव्रता रुक्मिणी! मिथ्यादेह आत्मा कूं संयोग नहीं है और या देहतें वियोग भी नहीं है देह मिथ्या काहे ते है तहां कहे हैं देह कूं प्रकाशकर्ता आत्मा ते है जैसे सूर्य ते चक्षु इन्द्रिय रूप कूं प्रकाशे है ४६ जन्म मरणादिक जे छः विकार हैं ते देहकूं है आत्मा कूं कदाचित् नहीं हैं जैसे चन्द्रमाकी कला घटै वढ़े हैं चन्द्रमा कदाचित् घटै वढ़ै नहीं है जैसे अमावसके दिन कलानके घटने तें चन्द्रमाको नाशकहिये है तैसे या आत्माकू देहके नाश तें मरण कहिवे में आवे है ४७ जैसे पुरुष सोवतमें स्वप्नमें अपनपे कूं और विषयन के

देहिनाम् ॥ नानेवगृह्यतेमूढैर्यथाज्योतिर्यथानभः ४४ देहआद्यन्तवानेष द्रव्यप्राणगुणात्मकः ॥ आत्मन्यविद्ययाक्लृप्तः संसारयतिदेहिनम् ४५ नात्मनोऽन्येनसंयोगो वियोगश्चासतःसति ॥ तद्धेतुत्वात्तत्प्रसिद्धेर्दृग्रूपाभ्यांयथारवेः ४६ जन्मादयस्तुदेहस्य विक्रियानाऽऽत्मनःक्वचित् ॥ कलानामिवनैवेन्दोर्मृतिर्ह्यस्यकुहूरिव ४७ यथाशयानआत्मानं विषयान्फलमेवच ॥ अनुभुङ्क्तेऽप्यसत्यर्थेतथाऽऽप्नोत्यबुधोभवम् ४८ तस्मादज्ञानजंशोकमात्मशोषविमोहनम् ॥ तत्त्वज्ञानेननिर्हृत्य स्वस्थाभवशुचिस्मिते ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगवतातन्वी रामेणप्रतिबोधिता ॥ वैमनस्यंपरित्यज्य मनोबुद्ध्यासमादधे ५० प्राणावशेषउत्सृष्टोद्विड्भिर्हतबलप्रभः ॥ स्मरन्विरूपकरणं वितथात्ममनोरथः ५१ अहत्वादुर्मतिंकृष्णमप्रत्यूह्ययवीयसीम् ॥ कुण्डिनंनप्रवेक्ष्यामीत्युक्त्वातत्रावसद्रुषा ५२ भगवान्भीष्मकसुतामेवंनिर्जित्यभूमिपान् ॥ पुरमानीयविधिवदुपयेमेकुरूद्वह ५३ तदामहोत्सवोनृणां यदुपुर्यांगृहेगृहे ॥ अभूदनन्यभावानां कृष्णेयदुपतौनृप ५४ नरानार्यश्चमुदिताः प्रमृष्टमणिकुण्डलाः ॥ पारिबर्हमुपाजह्रुर्वरयोश्चित्रवाससोः ५५ सावृष्णिपुर्युत्तभितेन्द्रकेतुभिर्वि

भोगिवे को फल कैं न सुख ताकूं मिथ्या भोगकरै ताहीप्रकार अज्ञानी पुरुष संसार कू पावै है ४८ पवित्र है मुसिकानि जाकी ऐसी रुक्मिणी ता कारण तें अज्ञान तें भयो जो आत्मा कूं शोक करन वारो मोहहै ताय तत्त्वज्ञान सूं दूरि करिकै अपने शान्तिरूप में स्वस्थ होवो ४९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार भगवान् बलदेवजी ने समझाई तब सुकुमार हैं अङ्ग जाके ऐसी रुक्मिणी मनकी उदासीनता त्यागिके बुद्धितें मनकूं सावधान करतिभई ५० केवल प्राणही जाके बाकी रहे शत्रुननें छोड़िदियो सेना जाकी मारीगई प्रभाव जाको गयो व्यर्थ भयो है मनोरथ जाको शिर मूडिके भयो है कुरूप जाको खोटी है बुद्धि जाकी ऐसे श्रीकृष्ण कूं मारे विना और छोटी बहिनी के बगदाये विना या कुण्डिनपुर में न आऊँगो या प्रतिज्ञा के मारे वहां भोजकटपुर वसायकै रहतभयो ५१। ५२ हे कौरवन कूं आनन्द के देनवारे राजन् परीक्षित्! भगवान् जे श्रीकृष्णहैं ते या प्रकार राजान कूं जीतिकै भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी कूं द्वारकापुरी में लायकै विधिपूर्वक विवाह करतभये ५३ हे राजन् परीक्षित्! यादवनकी पुरी द्वारकामें यादवनके पालन करनवारे जे श्रीकृष्ण हैं तिनमें अनन्य है भाव जिनको ऐसे मनुष्यन के घरमें मङ्गल होतभयो ५४

आनन्द जिनके भयो उज्ज्वल हैं मणिनके जडाऊ गहने जिनके ऐसे स्त्री पुरुष चित्रविचित्र हैं वस्त्र जिनके ऐसे दूलहो दुलहिनि जो रुक्मिणी कृष्ण हैं तिनके देवेके लिये सुन्दर २ वस्तु लावतभये ५५ ऊँची ध्वजा और चित्रविचित्र माला वस्त्र रत्ननकी बन्दनवारे तिनसूं और द्वारद्वारपै धानकीखीलें अंकुर फूल और जलके भरे कलश और अगरकी धूप दीप इत्यादिकनसूं वह यादवनकी पुरी द्वारका सुन्दर लगतिभई ५६ बुलाये जे प्यारे राजा हैं तिनके हाथिन के मदचुवे तासूं शोभायमान है और छिरकाव होयगयो है और दरवाजेन पै केला सुपारीन के जे वृक्ष लगे हैं तिनसूं शोभायमान है ५७ खुशीके मारे दौरे दौरे फिरें ऐसे जे द्वारकावासी हैं तिनमें कुरुदेश सृञ्जयदेश कैकयदेश विदर्भदेश यदुदेश और कुन्तिदेश के वासी जे राजा हैं ते विवाह में मिलिकै आनन्दकूं पावतभये ५८ जहां तहां गायो जो रुक्मिणीको हरिकै लै जायवो है ताकूं राजा और राजानकी कन्या श्रवण करिकै बडो आश्चर्य मानति भई ५९ हे राजन् परीक्षित् ! द्वारकापुरीमें पुरवासीनके लक्ष्मीपति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं और लक्ष्मी जो रुक्मिणी है ता सहित दर्शन करिकै अति आनन्द होत भयो ६० इति श्रीमन्महाभागवतार्थप्रकाशिकायां दशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीविवाहोत्सवेचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

चित्रमाल्याम्बररत्नतोरणैः ॥ बभौप्रतिद्वार्य्युपक्लृप्तमङ्गलैरापूर्णकुम्भागुरुधूपदीपकैः ५६ सिक्तमार्गामदच्युद्भिराहूतप्रेष्ठभूभुजाम् ॥ गजैर्द्वास्सुपरामृष्टरम्भापूगोपशोभिता ५७ कुरुसृञ्जयकैकेयविदर्भयदुकुन्तयः ॥ मिथोमुमुदिरेतस्मिन् सम्भ्रमात्परिधावताम् ५८ रुक्मिण्याहरणंश्रुत्वा गीयमानंततस्ततः ॥ राजानोराजकन्याश्च बभूवुर्भृशविस्मिताः ५९ द्वारकायामभूद्राजन् महामोदःपुरौकसाम् ॥ रुक्मिण्यारमयोपेतंदृष्ट्वाकृष्णंश्रियःपतिम् ६० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिण्युद्वाहोत्सवेचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ कामस्तुवासुदेवांशो दग्धःप्राग्रुद्रमन्युना ॥ देहोपपत्तयेभूयस्तमेवप्रत्यपद्यत १ सएवजातोवैदर्भ्यां कृष्णवीर्य्यसमुद्भवः ॥ प्रद्युम्नइतिविख्यातः सर्वतोऽनवमःपितुः २ तंशम्बरःकामरूपी हृत्वातोकमनिर्दशम् ॥ सविदित्वात्मनःशत्रुं प्रास्योदन्वत्यगाद्गृहम् ३ तंनिर्जगारबलवान्

(पञ्चपञ्चाशत्तमेतुप्रद्युम्नोऽजनिकृष्णतः ॥ शम्बरेणाहृतःसोऽथहत्वातंकान्तयाऽगमत् १ प्रद्युम्नहानिलाभाद्यैःशम्बराहरणादिना॥कुटुम्बिनामपत्यादिसुखदुःखमसूसुचत् २ पचपनवें अध्याय में श्रीकृष्णजीसूं प्रद्युम्नजी उत्पन्न होतभये और शम्बरासुरने प्रद्युम्नजी को हरलिया फिर प्रद्युम्नजी शम्बरासुर को मारकर स्त्री समेत द्वारकापुरी में प्राप्त हो जातेभये १ कृष्णजी प्रद्युम्नकी हानि और लाभादिकों और शम्बरासुरके हरने आदिसूं कुटुम्बियोंको सुख और दुःख सूचित करतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! वासुदेवको अंश जो कामदेव है सो रुद्रके क्रोध करिकै पहले भस्म होयगयो फेरि देह पाइवेके लिये वासुदेव हैं तिनमें प्रवेश करतभयो १ वही कामदेव श्रीकृष्ण के वीर्य्य में होय रुक्मिणी के जन्मलैके प्रद्युम्न नाम करिकै विख्यातहोतभयो पिता श्रीकृष्णसूं सब ओरतें गुणनमें न्यून नहीं है २ इच्छापूर्वक रूपकूं धारणकरै ऐसो जो शम्बरासुर है सो अपनो शत्रु जानिकै दश दिनके बालककूं हरिकै समुद्रमें डारिकै घरकूं आवतभयो ३ बड़ो बलवान् मत्स्य

बालककू निगलतभयो वा मत्स्यकूं मछरीनकी है जीविका जाके ऐसो धीवर बडो जाल डारिकै और मछरीनके सङ्ग पकरतभयो ४ वा बडे मत्स्यकूं लाय कै धीवर शम्बरासुरकी भेट करत भयो शम्बरासुर ने रसोइयानकूं दियो रसोइया रसोई में लाय कै छुरीते अद्भुत मत्स्यकूं विदीर्ण करतभये ५ ता मछरीके उदर में बालककूं देखिके रसोइया मायावती जो शम्बरासुरकी स्त्री है ताय देत भये शङ्कित है चित्त जाको ऐसी मायावती सूं आयके सब वृत्तान्त नारदजी कहतभये यह बालकको स्वरूप तेरो पति कामदेव है श्रीकृष्ण तें रुक्मिणी में उत्पन्नभयो है या प्रकार उत्पत्ति और शम्बरासुर समुद्र में डारिआयो वहाँ याकूं मत्स्य निगलिगयो या प्रकार मत्स्य के उदरमें प्रवेशहै ताय कहत भये ६ वह जो शम्बरासुरकी स्त्री है सो कामदेव की स्त्री रही रति वाको नाम बड़ी यशस्विनीही पति कामदेव को देह दग्ध होय गयो सो वाके देहके उत्पन्न होयवेकी प्रतीक्षाकरैही ७ वह जो मायावती कामदेवकी स्त्रीहै सो,शम्बरासुरने भूंग भात करवेके निमित्त अपने पास राखीरही

मीनःसोऽप्यपरैःसह ॥ वृतोजालेनमहता गृहीतोमत्स्यजीविभिः ४ तंशम्बरायकैवर्त्ताउपाजहुरुपायनम् ॥ सूदामहानसंनीत्वाऽवद्यन्स्वधितिनाऽद्भुतम्
५ दृष्ट्वातदुदरेबालं मायावत्यैन्यवेदयन् ॥ नारदोऽकथयत्सर्वंतस्याःशङ्कितचेतसः ॥ बालस्यतत्त्वमुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ६ साचकामस्यवैपत्नी
रतिर्नामयशस्विनी ॥ पत्युर्निर्दग्धदेहस्य देहोत्पत्तिंप्रतीक्षती ७ निरूपिताशम्बरेणसासूपौदनसाधने ॥ कामदेवंशिशुंबुद्ध्वा चक्रेस्नेहंतदार्भके ८ ना
तिदीर्घेणकालेनसकार्ष्णीरूढयौवनः ॥ जनयामासनारीणां वीक्षन्तीनाञ्चविभ्रमम् ९ सातंपतिंपद्मदलायतेक्षणं प्रलम्बबाहुंनरलोकसुन्दरम् ॥ सव्रीडहा
सोत्तभितभ्रुवेक्षती प्रीत्योपतस्थेरतिरङ्गसौरतैः १० तामाहभगवान्कार्ष्णिर्मातस्तेमतिरन्यथा ॥ मातृभावमतिक्रम्यवर्त्तसेकामिनीयथा ११ ॥ रतिरुवाच ॥
भवान्नारायणसुतः शम्बरेणाऽऽहृतोगृहात् ॥ अहन्तेऽधिकृतापत्नी रतिःकामोभवान्प्रभो १२ एषत्वानिर्दशंसिन्धावाक्षिपच्छम्बरोऽसुरः ॥ मत्स्योऽग्रसीत्त
दुदरादितःप्राप्तोभवान्प्रभो १३ तमिमञ्जहिदुर्द्धर्षंदुर्ज्जयंशत्रुमात्मनः ॥ मायाशतविदंत्वञ्च मायाभिर्मोहनादिभिः १४ परिशोचतितेमाता कुररीवग

सो उस बालक कूं कामदेव जानिकै ता समय बालक में स्नेह करति भई ८ थोडे सेही दिननमें प्राप्तभईहै यौवन अवस्था जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र प्रद्युम्न देखनवारी स्त्रीनकूं मोह उत्पन्न करतभये ९ कमलदलसे बडेहैं नेत्र जिनके लम्बीहैं भुजा जिनकी मनुष्यलोक में सुन्दर ऐसे पति प्रद्युम्न कूं लाजभरी मुसकानि सूं उठी जो भृकुटी तासूं देखिकै प्रीति करिकै सुरतसम्बन्धी जे भावहैं तिन करिकै सेवन करति भई १० अब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी रतिसैं बोलतभये हे मातः ! तुम्हारी मति और प्रकार भई है मातृभावकूं त्यागि कै अब स्त्री की तुल्य आचरण करौ हौ ११ अब रति बोले है हे प्रभो ! तुम नारायण के पुत्रहौ शम्बरासुर तुमकूं चुरायकै घरमेंतें लै गयोहो मैं तुम्हारी स्त्री हूं रति मेरो नाम है तुम कामदेवहौ १२ नहीं व्यतीतभये हैं दश दिन जिनके ऐसे तुमहौ तिनकूं शम्बरासुर समुद्र में पटकत भयो तब मत्स्य तुमकूं निगलतभयो हे प्रभो ! तुम मत्स्य के पेट में तें आये हौ १३ तिरस्कार करिवे में न आवै ऐसो जो अपनो शत्रु शम्बरासुर है सो सैकरन मायान को जाननवारो है ताकूं मोहनादिक मायान सूं मारौ १४ पुत्रके स्नेह करि अतिव्याकुल दीन भयो है पुन जाको ऐसी तुम्हारी माता कुररी अर्थात् टिटि-

हरीकी तुल्य शोच करे है विना बछराकी गौंकी तुल्य आतुर है १५ या प्रकार मायावती स्त्री कहिकै सब मायान की नाश करनवारी जो महामाया विद्या है ताय महात्मा प्रद्युम्नजी हैं तिनें देत भई १६ प्रद्युम्नजी शम्बरासुर के पास आयकै असह्य वचननसूं तिरस्कार करिकै कलह उत्पन्न करिकै युद्ध करिवे के अर्थ बुलावत भये १७ खोटे वाक्यन सूं तिरस्कार जाको कर्यो ऐसो शम्बरासुर जैसे ठोकर लगे ते सर्प फुंकारे है या प्रकार क्रोधकरिकै लाल हैं नेत्र जाके ऐसो शम्बरासुर गदा हाथमें लैके निकसतभयो १८ शम्बरासुर गदाकूं फिरायकै महात्मा प्रद्युम्नजी के ऊपर फेंकिकै वज्रपातकी तुल्य जो कठोर शब्द है तासूं अधिक शब्द करतभयो १९ भगवान् प्रद्युम्नजी अपने ऊपर चली आवै जो गदाहै ताय गदासूं दूरि करिकै वैरी शम्बरासुर के ऊपर क्रोध करिकै हे राजन् परीक्षित् ! अपनी गदा फेंकतभये २० शम्बरासुर मय कारीगरने दिखाई ऐसी दैत्यनकी माया ताको आश्रयलैके आकाश में जायके श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी के ऊपर पत्थरन की वर्षा

तप्रजा ॥ पुत्रस्नेहाकुलादीना विवत्सा गौरिवाऽऽतुरा १५ प्रभाष्यैवं ददौ विद्यां प्रद्युम्नाय महात्मने ॥ मायावती महामायां सर्वमायाविनाशिनीम् १६ स च शम्बरमभ्येत्य संयुगाय समाह्वयत् ॥ अविषह्यैस्तमाक्षेपैः क्षिपन्सञ्जनयन्कलिम् १७ सोऽधिक्षिप्तो दुर्वचोभिः पदाहत इवोरगः ॥ निश्चक्राम गदापाणिरमर्षात्ताम्रलोचनः १८ गदामाविध्य तरसा प्रद्युम्नाय महात्मने ॥ प्रक्षिप्य व्यनदन्नादं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् १९ तामापतन्तीं भगवान् प्रद्युम्नो गदया गदाम् ॥ अपास्य शत्रवे क्रुद्धः प्राहिणोत्स्वगदां नृप २० स च मायां समाश्रित्य दैतेयीं मयदर्शिताम् ॥ मुमुचेऽस्त्रमयं वर्षं कार्ष्णौ वैहायसोऽसुरः २१ बाध्यमानोऽस्त्रवर्षेण रौक्मिणेयो महारथः ॥ सत्त्वात्मिकां महाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् २२ ततो गौह्यकगान्धर्वपैशाचोरगराक्षसीः ॥ प्रायुङ्क्त शतशो दैत्यः कार्ष्णिर्व्यधमयत्सताः २३ निशातमसिमुद्यम्य सकिरीटं सकुण्डलम् ॥ शम्बरस्य शिरः कायात्ताम्रश्मश्रोजसाऽहरत् २४ आकीर्यमाणो दिविजैः स्तुवद्भिः कुसुमोत्करैः ॥ भार्ययाऽम्बरचारिण्या पुरीं नीतो विहायसा २५ अन्तःपुरवरं राजल्ँललनाशतसङ्कुलम् ॥ विवेश पत्न्या गगनाद्विद्युतेव बलाहकः २६ तं दृष्ट्वा जलदश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ प्रलम्बबाहुं ताम्राक्षं सुस्मितं रुचिराननम् २७ स्वलङ्कृतमुखाम्भोजं नीलवक्रालकादिभिः ॥ कृष्णं मत्वा स्त्रियो ह्रीता निलिल्यु

करतभयो २१ पत्थरनकी वर्षासूं पीड़ित ऐसे जो रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्नजी सो समस्त मायानकी नाश करनवारी सत्त्वगुणी जो अपनी मायाहै ताय बुलावतभये २२ पीछे शम्बरासुरहै सो गुह्यक गन्धर्व्व पिशाच सर्प राक्षसनकी सैकरान माया छोड़तभयो ता समय श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नजी सब मायानको नाश करतभये २३ प्रद्युम्नजी पैनी तरवार उठायकै किरीट और कुण्डलसहित और रक्त दाढ़ी सहित जो शम्बरासुर को शीशहै ताय बल करिकै धरतें काटतभये २४ स्तुति करते जे देवता हैं तिनने पुष्पनके ढेरनकी जिनपै वर्षा करी ऐसे प्रद्युम्नजी आकाश की विचरनवारी स्त्री ने आकाशमार्ग होयकै द्वारकापुरी में पहुंचाय दिये २५ हे राजन् परीक्षित् ! सैकरान स्त्री जामें रहैं ऐसो जो अन्तःपुर है तामें आकाश तें उतरिकै जैसे बिजुरी सहित मेघ आवै या प्रकार आवतभये २६ वर्षाकी घटानकी तुल्य सांवरे रेशमी पीरे वस्त्रनकूं पहिरे लम्बी जिनकी भुजा अरुण जिनके नेत्र सुन्दर जिनकी मुसिकानि मनोहर जिनको मुख नीली टेढ़ी अलकावलीन सूं शोभायमान जिनको

मुखारविन्द ऐसे प्रद्युम्नजी कूं देखिकै श्रीकृष्ण आयेहैं यह मानिकै स्त्री लज्जितहोयकै जहां तहां छिपती भई २७। २८ कुत्र स्त्री कोई विलक्षणता देखिकै श्रीकृष्ण नहीं हैं ऐसे जानिकै प्रसन्नहोइ कै आश्चर्य मानिकै स्त्रीन में श्रेष्ठ जो रतिहै तासहित जो प्रद्युम्नजी हैं तिनके पास आवतिभई २९ याके पीछे ता समय स्नेह करिकै स्तनन में दूध चुवै और नीले हैं कटाक्ष जाके मनोहर हैं वचन जाके ऐसे विदर्भ देश के राजाकी पुत्री रुक्मिणीहै सो नष्टभयो जो अपनो पुत्र है ताको स्मरण करतभई ३० मनुष्यन में श्रेष्ठ कमलकी तुल्यहैं नेत्र जाके ऐसो यह बालक कौन होहै और कौन स्त्रीने याकूं गर्भ में राख्यो है और याकूं यह कौन स्त्री प्राप्तभई है ३१ मेरो भी पुत्र नष्ट होयगयो सूतिकागृह में तें वाकूं कोई लैगयो है जो कदाचित् कहूं जीवतहोयगो तो याही की बराबरि होयगो और ऐसोई वाको रूप होयगो ३२ शार्ङ्ग है धनुष् जिनको ऐसे श्रीकृष्णकी तुल्यरूप याने कैसो पायो है याको स्वरूप और हाथ पांवनकी चलनि बोलनि हँसनि चितवनि सब श्रीकृष्णकी समान हैं ३३

स्तत्रनत्रह २८ अत्रधार्य्यशनैरीपद्वैलक्षण्येनयोषितः ॥ उपजग्मुःप्रमुदिताःसस्त्रीरत्नंसुविस्मिताः २९ अथतत्राऽसितापाङ्गी वैदर्भीवल्गुभाषिणी ॥ अस्मरत्स्वसुतंनष्टं स्नेहस्नुतपयोधरा ३० कोन्वयंनरवैदूर्यः कस्यवा कमलेक्षणः ॥ धृतःकयावाजठरे केयंलब्धात्वनेनवा ३१ ममचाप्यात्मजोनष्टो नीतोयः सूतिकागृहात् ॥ एतत्तुल्यवयोरूपोयदि जीवतिकुत्रचित् ३२ कथंत्वनेनसम्प्राप्तंसारूप्यंशार्ङ्गधन्वनः ॥ आकृत्याऽवयवैर्गत्यास्वरहासावलोकनैः ३३ सएव वाभवेन्नूनं योमेगर्भेधृतोऽर्भकः ॥ अमुष्मिन्प्रीतिरधिकावामःस्फुरतिमेभुजः ३४ एवंमीमांसमानायां वैदर्भ्यांदेवकीसुतः ॥ देवक्यानकदुन्दुभ्यामुत्तमश्लोकआगमत् ३५ विज्ञातार्थोऽपिभगवांस्तूष्णीमासजनार्दनः ॥ नारदोऽकथयत्सर्वंशम्बराहरणादिकम् ३६ तच्छ्रुत्वामहदाश्चर्यं कृष्णान्तःपुरयोषितः ॥ अभ्यनन्दन्बहूनब्दान्नष्टंमृतमिवाऽऽगतम् ३७ देवकीवसुदेवश्च कृष्णरामौतथास्त्रियः ॥ दम्पतीतौपरिष्वज्य रुक्मिणीचययुर्मुदम् ३८ नष्टंप्रद्युम्नमायातमाकर्ण्यद्वारकौकसः ॥ अहोमृतइवाऽऽयातो बालोदिष्ट्येतिहाब्रुवन् ३९ यंवैमुहुःपितृसरूपनिजेशभावास्तन्मातरोयदभजन्रहरूढभावाः ॥

जो बालक मैंने गर्भ में धारण कर्यो हो निश्चय वह यहीहै यामें मेरी प्रीति बढ़ैहै और मेरी बाईभुजा फरकति है ३४ विदर्भ देशके राजाकी पुत्री रुक्मिणी या प्रकार विचार करैही इतने में उत्तम है यश जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र देवकी वसुदेव कू संगलैकै आवतभये ३५ पत्नी सहित पुत्र आयो है या बातकूं जनार्दन श्रीकृष्णचन्द्र जाने हैं तथापि चुपहोतभये इतने में नारदजी आयकै शम्बरासुर हरिकै लैगयो समुद्रमें पटकि आयो तब मछरी निगलिगई याकूं आदिलैकै सब वृत्तान्त कहतभये ३६ कृष्णके अन्तःपुरकी स्त्री हैं सो बडो आश्चर्य श्रवण करिकै बहुत दिनन सूं देखे नहीं मृतक जैसे जगदिके आवै या प्रकार आये जे प्रद्युम्नजी तिनकी प्रशंसा करतिभई ३७ देवकी वसुदेव और श्रीकृष्ण बलदेव तथा और स्त्री हैं ते और रुक्मिणीजी स्त्री पुरुष जे प्रद्युम्न हैं तिनसूं मिलिके आनन्द कूं प्राप्त होतभये ३८ समस्तद्वारकावासी नष्टभये प्रद्युम्न कूं आये सुनिकै अहो बडो आश्चर्यहै मृतककी तुल्य यह बालक आवतभयो ऐसे कहत भये ३९ पिता जो श्रीकृष्ण हैं तिनकी बराबरि है स्वरूप जिनको ऐसे प्रद्युम्नजीमें हमारे पति है यह एक क्षण में भाव जिनकूं भयो ऐसी प्रद्युम्नजीकी माता रुक्मिणीकूं आदिलैकै श्रीकृष्णकी रानी हैं ते प्रद्युम्नजी को

सेवन करतभई यह कछु आश्चर्य नहीं है रूपी वास करै ऐसे जो श्रीकृष्ण तिनके पुत्र कामदेव तिनको मनमें स्मरणमात्रसूं मन चलायमान होइहै साक्षात् मूर्तिमान् के दर्शन करे तें स्त्री सेवनकरें यामें कहा कहनो है ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थेरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेप्रद्युम्नोत्पत्तिनिरूपणंनामपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ * ॥ * ॥

(पट्पञ्चाशत्तमेमिथ्याऽभियोगेमणिमाहरत् ॥ कन्याजाम्बवतःप्रापकृष्णःसत्राजितस्तदा १ पुत्रादिकामसौख्यस्यनिष्ठामुक्त्वाऽतिचञ्चलाम् ॥ अर्थस्यानर्थतामाहस्यमन्तहरणादिना २ छप्पनवें अध्याय में झूंठे कलङ्क में कृष्णजी जाम्बवान् सों मणि लाते भये और उसकी कन्या और सत्राजित् की कन्या कूं प्राप्त होते भये १ पुत्रादिकाम सुख की अत्यन्त चञ्चल निष्ठा कहकर स्यमन्तक मणिके हरणआदि सूं अर्थ की अर्थता कहते हैं २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! कियो है पाप जाने ऐसो सत्राजित् अपने पाप की निवृत्ति के अर्थ अपनी कन्या कूं स्यमन्तक

चित्रंनतत्खलुरमास्पदबिम्बबिम्बेकामेस्मरेऽक्षिविषयेकिमुतान्यनार्यः ४० इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेप्रद्युम्नोत्पत्तिनिरूपणंनामपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सत्राजितःस्वतनयां कृष्णायकृतकिल्बिषः ॥ स्यमन्तकेनमणिना स्वयमुद्यम्यदत्तवान् १ ॥ राजोवाच ॥ सत्राजितःकिमकरोद्ब्रह्मन् कृष्णस्यकिल्बिषम् ॥ स्यमन्तकःकुतस्तस्य कस्माद्दत्तासुताहरेः २ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आसीत्सत्राजितःसूर्योभक्तस्यपरमःसखा ॥ प्रीतस्तस्मैमणिंप्रादात्सूर्यस्तुष्टःस्यमन्तकम् ३ सतंबिभ्रन्मणिंकण्ठे भ्राजमानोयथारविः ॥ प्रविष्टोद्वारकांराजंस्तेजसानोपलक्षितः ४ तंविलोक्यजनादूरात्तेजसामुष्टदृष्टयः ॥ दीव्यतेऽक्षैर्भगवते शशंसुःसूर्यशङ्किताः ५ नारायणनमस्तेऽस्तु शङ्खचक्रगदाधर ॥ दामोदरारविन्दाक्षगोविन्दयदुनन्दन ६ एषआयातिसविता त्वांदिदृक्षुर्जगत्पते ॥ मुष्णन्गभस्तिचक्रेण नृणांचक्षूंषितिग्मगुः ७ नन्वन्विच्छन्तितेमार्गंत्रिलोक्यांविबुधर्षभाः ॥ ज्ञात्वाऽद्यगूढंयदुषु द्रष्टुंत्वांयात्यजःप्रभो ८

नाम मणिके साथ श्रीकृष्णचन्द्र कूं देवे को उपाय कारिके देतभयो १ अब राजा परीक्षित् कहे हैं हे शुकदेवजी! सत्राजित् श्रीकृष्णचन्द्र को कहा अपराध करत भयो और स्यमन्तकमणि कहाँ तें आई और कौन कारण अपनी कन्या श्रीकृष्णचन्द्र कूं दीनी यह सब हमारे आगे वर्णन करो २ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं सत्राजित् सूर्य्य को भक्त परममित्र हो सूर्य्य प्रसन्न होय कै सन्तुष्ट होयकै सत्राजित्कूं स्यमन्तकमणि देत भये ३ सत्राजित् मणिकूं कण्ठ में पहिरि कै सूर्य्य के प्रकाशकी तुल्य प्रकाशमान होय कै द्वारकापुरी में आये ता समय हे राजन् परीक्षित्! वाके तेज सूं सत्राजित् आवै है यह जानिवे में नहीं आवत भयो ४ तेज की चिकाचौंधी सू मिची है दृष्टि जिनकी ऐसे जन हैं ते सत्राजित् कू दूरि तें आवत देखिकै राजा उग्रसेन की सभा में चौपरि खेलें जे श्रीकृष्णहैं तिनसू यह सूर्य्य आवै है ऐसे शङ्कित होयकै कहतभये ५ हे नारायण! हे शङ्ख चक्र गदा धारण करनवारे! हे दामोदर! हे कमलनेत्र! हे गोविन्द! हे यादवनकूं आनन्दके देनवारे! तुम कूं नमस्कार है ६ हे जगत् के पति! तुम्हारे दर्शन के लिये यह सूर्य्य आवै है तीक्ष्ण किरणन के समूह तें मनुष्यन के नेत्रन कूं चुरावत आवै है हे प्रभो! ७ त्रिलोकी के देवतान में जे श्रेष्ठ हैं ते तु-

म्हारे मार्ग कूं ढूंढे हैं यादवन में तुमकूं छिप्यो जानिकैं देखिवे के लिये सूर्य आवै है ८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र अज्ञानी पुरुषन के वचन सुनिकें हँसिकै बोलत भये यह सूर्यदेव नहीं है मणि करिकै प्रकाशमान सत्राजित् आवै है ९ करे है मङ्गलोत्सव जामें ऐसो जो अपनो घर है तामें आय कै देवता के मन्दिर में सत्राजित् ब्राह्मणन तें पूजा कराय मणिकूं धरावत भयो १० हे प्रभो राजन् परीक्षित् ! वह मणि प्रतिदिन चार मनको भार ऐसे आठ भार सुवर्ण उगलैही और जहाँ वा मणि होइ ता देश में दुर्भिक्ष न परे है और अकालमृत्यु तथा अरिष्ट अर्थात् अमङ्गल नहीं होइ है सर्प नहीं काटै है मनुष्यन की देह में दुःख नहीं होय हैं और अशुभ नहीं होय हैं मायावी पुरुष वा देश में नहीं बसे हैं ११ एक समय यादवन के राजा उग्रसेन के लिये श्रीकृष्णचन्द्र ने मणि जाते माँगी ऐसो सत्राजित् लोभ के वशहोय के मणि कूं न देत भयो श्रीकृष्ण कूं नाहीं कैसे करू यहू न विचारत भयो १२ बडो है प-

श्रीशुकउवाच ॥ निशम्यबालवचनं प्रहस्याम्बुजलोचनः ॥ प्राहनासौरविर्देवः सत्राजिन्मणिनाज्वलन् ९ सत्राजित्स्वगृहंश्रीमत्कृतकौतुकमङ्गलम् ॥ प्रविश्यदेवसदने मणिंविप्रैर्न्यवेशयत् १० दिनेदिनेस्वर्णभारानष्टौसमृजतिप्रभो ॥ दुर्भिक्षमार्य्यरिष्टानि सर्पाधिव्याधयोऽशुभाः ॥ नसंन्तिमायिनस्तत्र यत्राऽऽस्तेऽभ्यर्चितोमणिः ११ सयाचितोमणिंक्कापि यदुराजायशौरिणा ॥ नैवार्थकामुकःप्रादाद्याच्ञाभङ्गमतर्कयन् १२ तमेकदामणिंकण्ठे प्रतिमुच्यमहाप्रभम् ॥ प्रसेनोहयमारुह्य मृगयांव्यचरद्वने १३ प्रसेनंसहयंहत्वा मणिमाच्छिद्यकेसरी ॥ गिरिंविशञ्जाम्बवता निहतोमणिमिच्छता १४ सोऽपिचक्रेकुमारस्य मणिंक्रीडनकंबिले ॥ अपश्यन्भ्रातरंभ्राता सत्राजित्पर्यतप्यत १५ प्रायःकृष्णेननिहतोमणिग्रीवोवनंगतः ॥ भ्राताममेतितच्छ्रुत्वा कर्णेकर्णेऽजपञ्जनाः १६ भगवांस्तदुपश्रुत्य दुर्यशोलिप्तमात्मनि ॥ मार्ष्टुंप्रसेनपदवीमन्वपद्यतनागरैः १७ हतंप्रसेनमश्वञ्च वीक्ष्यकेसरिणावने ॥ तञ्चाद्रिपृष्ठे निहतमृक्षेणददृशुर्जनाः १८ ऋक्षराजबिलंभीममन्धेनतमसावृतम् ॥ एकोविवेशभगवानवस्थाप्यबहिःप्रजाः १९ तत्रदृष्ट्वामणिश्रेष्ठं बालक्रीडनकंकृतम् ॥

काश जाको ऐसी मणिकूं एकसमय सत्राजित् को भय्या प्रसेन कण्ठ में पहिरि कै घोड़ा पै चढ़िकै वन में शिकार खेलिवे कू जात भयो १३ घोड़ा सहित जो प्रसेन है ताय मारि कै मणि कूं लैके पर्व्वत में जाय जो सिंह है ताय मणि लेवे की इच्छा जाकूं ऐसो जाम्बवान् ऋक्ष मारत भयो १४ जाम्बवान् अपने बिल में जाय कै मणि को खिलौना करत भयो सत्राजित् अपने भय्या प्रसेन कू शिकार खेलि कै वनमें ते नहीं आयो देखिकैं शोच करत भयो १५ मणि कण्ठ में पहिरि कै मेरो भय्या वन में गयो हो और या मणि पै कृष्ण को दाँत हो यातें बहुधा यह जानि पड़ै है भय्या कूं कृष्ण ने मारयो या प्रकार सत्राजित् के मुख तें श्रवण करिकै सम्पूर्ण मनुष्य कान कान में कहत भये १६ भगवान् श्रीकृष्ण अपने कूं लग्यो जो दुर्यशरूप कलङ्क है ताय श्रवण करिकै द्वारकावासीन कू प्रसेन के खोज ढूंढिवे कू जात भये १७ वनमें सिंह ने मारयो जो प्रसेन और घोड़ा ताय देखि कै और आगे पर्वत के ऊपर ऋक्ष ने मारयो जो सिंह है ताय समस्त द्वारकावासी मनुष्य देखत भये १८ अंधेरे जामें छाय रह्यो बड़ो भयानक जो ऋक्षराज जाम्बवान् को बिल है तामें सब प्रजा कू बाहिर ठाढ़ी करिकै श्रीकृष्णचन्द्र आपही भीतर जात भये १९

तहाँ बिलमें बालक के खेलिबे कूं खिलौना करी ऐसी जो मणिहै ताय देखिकै मणिके लेबे को मनोरथ करिकै बालक के पास ठाढे होतभये २० प्रथम कबू देखे नहीं ऐसे मनुष्य श्रीकृष्ण-
चन्द्र कूं डरपे कीसी नाई धाइ पुकारतिभई बलीनमें बली जाम्बवान् ऋक्ष धाइकी पुकार श्रवण करिकै क्रोधितहोय सम्मुख दौरिकै आवत भयो २१ क्रोधी जाम्बवान् श्रीकृष्ण के प्रभाव कूं
नहीं जानिकै और साधारण पुरुष मानिकै अपने स्वामी श्रीकृष्णके संग युद्ध करत भयो २२ परस्पर जीतिबे की है इच्छा जिनकों ऐसे श्रीकृष्ण और जाम्बवान् हैं तिनकों शस्त्र पत्थर वृक्ष भुजा
इनसूं बड़ो भयानक युद्ध होत भयो जैसे मास के लिये दो शिकरा पक्षी लड़ेहैं तैसे २३ वज्रपातकी तुल्य कठोर जे मुष्टि हैं तिनसूं खेदरहित अट्ठाईस दिन राति परस्पर युद्ध होत भयो २४
कृष्णचन्द्र की मुष्टिन के परिबे तें ढीली भई है नस जाकी और घट्योहै बल जाको पसीना अंगमें जाके आयगयो ऐसो जाम्बवान् बड़ो आश्चर्य्य मानिकै बोलत भयो २५ सम्पूर्ण प्राणीन

सवैभगवतातेनयुयु २१ तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्क्रुद्धोजाम्बवान्बलिनांवरः ॥ आयुधाश्मद्रुमैर्दोर्भिःक्रव्यार्थेश्येनयोरिव २३ आ
हर्तुंक्रनमतिस्तस्मिन्नरनस्थेऽर्भकान्तिके २० तमपूर्वंनरंदृष्ट्वाधात्रीचुक्रोशभीतवत् ॥ तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्क्रुद्धोजाम्बवान्बलिनांवरः २१ सवैभगवतातेनयुयु
धेस्वामिनाऽऽत्मनः ॥ पुरुषंप्राकृतंमत्वाकुपितोनानुभाववित् २२ द्वन्द्वयुद्धंसुतुमुलमुभयोर्विजिगीषतोः ॥ आयुधाश्मद्रुमैर्दोर्भिःक्रव्यार्थेश्येनयोरिव २३ आ
सीत्तदष्टाविंशाहमितरेतरमुष्टिभिः ॥ वज्रनिष्पेषपरुषैरविश्रममहर्निशम् २४ कृष्णमुष्टिविनिष्पातनिष्पिष्टाङ्गोरुबन्धनः ॥ क्षीणसत्त्वःस्विन्नगात्रस्तमाहा
तीवविस्मितः २५ जानेत्वांसर्वभूतानांप्राणओजःसहोबलम् ॥ विष्णुंपुराणपुरुषंप्रभविष्णुमधीश्वरम् २६ त्वंहिविश्वसृजांस्रष्टा सृज्यानामपियच्चसत् ॥
कालःकलयतामीशःपरआत्मातथाऽऽत्मनाम् २७ यस्येषदुत्कलितरोषकटाक्षमोक्षैर्वर्त्मादिशत्क्षुभितनक्रतिमिङ्गिलोऽब्धिः ॥ सेतुःकृतःस्वयशउज्ज्वलिता
चलङ्कारक्षःशिरांसिभुविपेतुरिषुक्षतानि २८ इतिविज्ञातविज्ञानमृक्षराजानमच्युतः ॥ व्याजहारमहाराज भगवान्देवकीसुतः २९ अभिमृश्यारविन्दाक्षः
पाणिनाशङ्करेणतम् ॥ कृपयापरयाभक्तं प्रेमगम्भीरयागिरा ३० मणिहेतोरिहप्राप्तावयमृक्षपतेबिलम् ॥ मिथ्याऽभिशापंप्रमृजन्नात्मनोमणिनाऽमुना ३१

के जे प्राण तिनमें जो बल है और सहोबल अर्थात् इन्द्रिय हृदय देह इत्यादिकनको बल तुमहौ यह मैं जानूं हूं काहे ते विष्णु भगवान् तुमहौ पुराणपुरुषहौ कृपालुहौ सबके ईश्वर हौ २६
विश्व के सृजनवारे जे ब्रह्मादिक हैं तिनके तुम निश्चय निमित्त कारणहौ और उत्पत्तिके योग्य जे पदार्थ हैं तिनके उपादान कारण हौ और सबके प्रेरणवारे हैं तिनके ईश्वर कालरूप तुम
हौ तथा आत्मा जे जीव हैं तिनके उत्कृष्ट आत्माहौ २७ विष्णु पुराण पुरुषहौ याही तें मेरे इष्टदेव रघुनाथहौ यह कहे हैं जिन रघुनाथजी को कछु एक प्रकाशो जो क्रोध है तासूं जो
कटाक्षन को छुटिबो है तिनसूं दुःखितहैं मगर और बड़े बड़े ग्राह जामें ऐसो समुद्र मार्ग देतभयो और जिन रामचन्द्रने अपनो यश प्रकट करिबेके लिये पुल बांध्यो लङ्का जराई प्रधान करिकै राक्षस
रावण के शिर काटिकै पृथ्वी में डारतभये सो तुम मेरे स्वामी रघुनाथहौ यह मैं जानूं हूं २८ या प्रकार भयोहै ज्ञान जाकू ऐसो जो ऋक्षराज जाम्बवान्है तासूं हे राजन् परीक्षित् ! देवकीके पुत्र
अच्युतभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये २९ कमल से हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुखको देनवारो जो अपनो हाथहै ताय परमकृपाकरिकै भक्त जो जाम्बवान् है ताकेऊपर धरिकै प्रेमगर्भित

वाणी करिकै बोलतभये ३० हे ऋक्षन के राजा जाम्बवान् ! हम मणि लेवे के कारण तेरे यहां विलमें आये हैं मिथ्या कलङ्क हमकूं लग्यो है ताय मणि लैजायकै दूरि करेंगे ३१ याप्रकार जातें
कही ऐसो जाम्बवान् बड़े आनन्दपूर्वक अपनी कन्याजाम्बवती ताय मणिसहित पूजा करिवे के निमित्त श्रीकृष्णकूं देतभयो ३२ सङ्गगये जे द्वारकावासी मनुष्यहैं ते जाम्बवान्के विलमें घसे जे श्री
कृष्ण हैं तिनको निकसिवो नहीं देखिकै वारह दिन प्रतीक्षा करिकै दुःखितहोइ द्वारकापुरी में आवत भये ३३ विलमें तें श्रीकृष्णचन्द्र निकसे नहीं यह वात श्रवण करिकै देवकी रुक्मिणी वसुदेव
और मित्रजन तथा ज्ञाति के मनुष्य सम्पूर्ण शोच करतभये ३४ सम्पूर्ण द्वारकावासी दुःखितहोयकै सत्राजित्कूं गारी देतसन्ते श्रीकृष्णचन्द्रकी प्राप्तिके निमित्त महामाया जो दुर्गादेवी है ताकी पूजा
करतभये ३५ देवीकी पूजा करिवे तें श्रीकृष्णचन्द्रकू देखेंगो याप्रकार द्वारकावासीनकूं देवीने आशीर्वाद दियो तब सिद्धभयो है मनोरथ जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्त्री कूं संगलैके द्वारकावासीन

इत्युक्तःस्वांदुहितरं कन्यांजाम्बवतींमुदा ॥ अर्हणार्थंसमणिना कृष्णायोपजहारह ३२ अदृष्ट्वानिर्गमंशौरेः प्रविष्टस्यबिलंजनाः ॥ प्रतीक्ष्यद्वादशाहानिदुः
खिताःस्वपुरंययुः ३३ निशम्यदेवकीदेवी रुक्मिण्यानकदुन्दुभिः ॥ सुहृदोज्ञातयोऽशोचन् बिलात्कृष्णमनिर्गतम् ३४ सत्राजितंशपन्तस्ते दुःखिताद्वार
कौकसः ॥ उपतस्थुर्महामायां दुर्गांकृष्णोपलब्धये ३५ तेषांतुदेव्युपस्थानात्प्रत्यादिष्टाऽऽशिषासच ॥ प्रादुर्बभूवसिद्धार्थःसदारोहर्षयन्हरिः ३६ उपलभ्य
हृषीकेशं मृतंपुनरिवाऽऽगतम् ॥ सहपत्न्यामणिग्रीवं सर्वेजातमहोत्सवाः ३७ सत्राजितंसमाहूय सभायांराजसन्निधौ ॥ प्राप्तिंचाख्यायभगवान् मणिंत
स्मैन्यवेदयत् ३८ सचातिव्रीडितोरत्नं गृहीत्वाऽवाङ्मुखस्ततः ॥ अनुतप्यमानोभवनमगमत्स्वेनपाप्मना ३९ सोऽनुध्यायंस्तदेवाघंबलवद्विग्रहाकुलः ॥
कथंमृजाम्यात्मरजःप्रसीदेद्वाऽच्युतःकथम् ४० किंकृत्वासाधुमह्यंस्यान्नशपेद्वाजनोयथा ॥ अदीर्घदर्शनंक्षुद्रं मूढंद्रविणलोलुपम् ४१ दास्येदुहितरंतस्मै
स्त्रीरत्नंरत्नमेवच ॥ उपायोऽयंसमीचीनस्तस्यशान्तिर्नचान्यथा ४२ एवंव्यवसितोबुद्ध्या सत्राजित्स्वसुतांशुभाम् ॥ मणिंचस्वयमुद्यम्य कृष्णायोपजहा

कूं आनन्द देत प्रकट होतभये ३६ जैसे कोई मृतक पुरुष फेरि जगदि कै आवै है ऐसे मणिकूं पहिरिकै स्त्री कूं संग लैके आये जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें प्राप्तहोयकै समस्त द्वारकावासीनके वडो
आनन्द होतभयो ३७ सभामें राजा उग्रसेनके पास सत्राजित्कूं बुलायकै जाम्बवान् ऋक्षतें ते मणि लाये हैं यह कहिकै भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सत्राजित् कूं देतभये ३८ सत्राजित् मणिकूं लैकै
अतिलज्जित होय मुख नीचो करिकै अपने पाप तें पश्चात्ताप करत घरकूं जातभयो ३९ वलवान् श्रीकृष्णसूं जो विरोध परयो तासूं व्याकुल जो सत्राजित् है सो अपने पूर्व अपराधकूं रात्रिदिन
विचारकरत अपने पापकूं कैसे दूरिकरूं और कैसे अच्युत भगवान् प्रसन्नहोयँ ऐसे विचार करतभयो ४० कौन कर्म्म करे तें मेरो भलोहोइ मैंने विना विचारे श्रीकृष्ण कूं दोष लगायदीनो मैं कृपण
मन्दबुद्धि हूं द्रव्यको लोभी हूं अव मोकूं जैसे प्राणी बुरो न कहैं ऐसो कोई कार्य्य करूंगो यह विचार करतभयो ४१ या प्रकार विचार करिकै अव उपाय निश्चय करेहैं श्रीकृष्णचन्द्र कूं मैं
अपनी कन्यादेउँगो और पीछे तें भेंट में मणिदूंगो यही सुन्दर उपाय है और तरह मेरो अपराधदूरि न होयगो याप्रकार बुद्धिसूं निश्चय करिकै सत्राजित् मंगलरूप जो अपनी कन्याहै ताय और

मणिकूं आपही उपाय करिकै श्रीकृष्णकूं देतभयो ४२।४३ सुन्दर स्वभाव रूप उदारता ये गुण जामें विद्यमान और कृतवर्म्मा ते आदि लैकै यादवन ने मांगी ऐसी जो सत्यभामा है ताय भगवान्
श्रीकृष्णचन्द्र विधिपूर्वक व्याहतभये ४४ हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्णचन्द्र कहतभये हमकूं मणि नहीं चाहिये सूर्य्यभक्त जो तुमहौ तिनहींके मणिरहै और याको जो सुवर्ण होय ताय हमारे भिजवाय
दियोकरो–तुम्हारे पुत्र नहींहै तुम्हारो जो धनहै सो हमारोही है यह भगवान्को गूढअभिमायहै ४५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेपट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥
(सप्तपञ्चाशत्तमेतुपुनःशतधनुर्वधे ॥ मासस्यदुर्यशोमार्ष्टिकृष्णोक्रूराद्धृतान्मणेः १ अक्रूरमुररीकृत्य मणेःपात्रमयाच्युतः ॥ उपामन्त्र्यतमेकान्तेसरामोऽगाद्गजाह्वयम् २ सत्तावनवें अध्याय में फिर
शतधन्वा के वधमें कृष्णजी अक्रूरजीसों मणि लेकर मासहुये कलङ्कको दूर करतेभये १ अक्रूर को कृष्णजी मणिका पात्र अंगीकारकर उनसे एकान्तमें सलाहकर वलदेवजी समेत हस्तिनापुर जाते

बहुभिर्याचितांशीलरूपौदार्य्यगुणान्विताम् ४४ भगवानाहनमणिं मतीच्छामोवयंनृप॥ तवाऽऽस्तांदेव
रह ४३ तांसत्यभामांभगवानुपयेमेयथाविधि ॥ ॥ ❀ ॥
भक्तस्य वयञ्चफलभागिनः ४५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेपट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ विज्ञातार्थोऽपिगोविन्दो दग्धानाकर्ण्यपाण्डवान् ॥ कुन्तीञ्चकुल्यकरणे सहरामोययौकुरून् १ भीष्मंकृपंसविदुरं गान्धारींद्रोणमे
वच॥ तुल्यदुःखौचसङ्गम्य हाकष्टमितिहोचतुः २ लब्ध्वैतदन्तरंराजञ्छतधन्वानमूचतुः ॥ अक्रूरकृतवर्म्माणौ मणिःकस्मान्नगृह्यते ३ योऽस्मभ्यंसम्प्रति
श्रुत्यकन्यारत्नंविगर्ह्यनः ॥ कृष्णायादान्नसत्राजित्कस्माद्भ्रातरमन्वियात् ४ एवंभिन्नमतिस्ताभ्यांसत्राजितमसत्तमः ॥ शयानमवधील्लोभात्सपापःक्षीण
जीवितः ५ स्त्रीणांविक्रोशमानानां क्रन्दन्तीनामनाथवत्॥ हत्वापशून्सौनिकवन्मणिमादायजग्मिवान् ६ सत्यभामाचपितरं हतंवीक्ष्यशुचाऽर्पिता॥
व्यलपत्ताततातेतिहाहतास्मीतिमुह्यती ७ तैलद्रोण्यांमृतंप्रास्य जगामगजसाह्वयम् ॥ कृष्णायविदितार्थाय तप्ताऽऽचख्यौपितुर्वधम् ८ तदाकर्ण्येश्वरौ

भये २) पाण्डव लाक्षागृह तें विल में होयकै वाहिर निकसिगये या मकार जानेहैं तथापि पाण्डवनकूं जरे सुनिकै और कुन्तीकू जरी सुनिकै कुलोचित व्यवहार करिवेके लिये वलदेवजीकूं संग
लैकै श्रीकृष्णचन्द्र कुरुदेशन कूं जातभये १ भीष्मपितामह विदुरसहित कृपाचार्य्य गान्धारी द्रोणाचार्य्य इनसूं मिलिकै वरावरि है दुःख जिनके ऐसे कृष्ण वलदेव हैं ते हाय पाण्डव जरिगये
वड़ो कष्टभयो या मकार कहिकै वोलतभये २ कछु एक दिननके पश्चात् हे राजन् परीक्षित्! अक्रूर और कृतवर्म्मा ये दोनों शतधन्वा तें वोलतभये सत्राजित् तें मणि क्यों न छिनाय लेउ—जो
सत्राजित् अपनी कन्या रत्न हमकूं त्यागिकै कृष्णकूं व्याहिदीनी वह सत्राजित् भय्या मसेनके पीछे क्यों नहीं जाय अर्थात् मरे क्यों नहीं ३।४ या मकार अक्रूर और कृतवर्म्माने वहकाईहै वुद्धि जाकी
क्षीणभयो है जीवन जाको ऐसो पापी असाधु जो शतधन्वा है सो शय्यापै सोवते सत्राजित् को शिर काटतभयो ५ स्त्री जे हैं ते अनाथकी तुल्य पुकारि पुकारिकै रोदन कर्यो करी कसाई जैसे पशून
कूं मारै ऐसे शतधन्वा सत्राजित्कूं मारिकै जातभयो ६ सत्यभामा अपने पिता सत्राजित् कूं मर्यो देखिकै अहो पिता! अहो पिता! हाय मैं मरी या मकार मोहित होयकै विलाप करतिभई ७

मृतक जो पिता को देह है ताकूं तैलकी कोठी में राखिकै सत्यभामा हस्तिनापुर कूं जाति भई सत्राजित्कूं शतधन्वाने मार्यो यह बात श्रीकृष्णचन्द्रने जानिलीनी तथापि मेरो पिता शतधन्वा ने मार्यो यह बात दुःखित होय कै कहति भई ८ हे राजन् परीक्षित् ! ईश्वर जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं ते सत्राजित् को मरण श्रवण करिकै मनुष्यलीला में आयकै अहो हमकूं बडो कष्ट है या प्रकार कहिकै आखिन में तें आसू लायकै विलाप करतभये ९ सत्यभामा और भय्या बलदेवजी इनकूं संगलैकै श्रीकृष्णचन्द्र हस्तिनापुरतें द्वारकापुरी में आयकै शतधन्वाके मारिबे को और बातें मणि लेबे को प्रारम्भ करतभये १० श्रीकृष्ण ने मेरे मारिबे को उपाय कियोहै यह बात शतधन्वा जानिकै प्राण बचायबे के लिये भयभीतहोयकै कृतवर्म्मातें सहाय के निमित्त कहतभयो तब वह कृतवर्म्मा बोलत भयो ११ ईश्वर जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनको अपराध मैं न करूंगो कृष्ण बलदेव को अपराध करिकै कौनको कल्याण होयगो १२ या कृष्ण ते द्वेष करिकै कंस लक्ष्मी ते भ्रष्ट होयकै

राजन्ननुमृत्यनृलोकताम् ॥ अहोनःपरमंकष्टमित्यस्राक्षौविलेपतुः ९ आगत्यभगवांस्तस्मात्सभार्य्यःसाग्रजःपुरम् ॥ शतधन्वानमारेभे हन्तुंहर्त्तुंमणिंततः १० सोऽपिकृष्णोद्यमंज्ञात्वा भीतःप्राणपरीप्सया ॥ साहाय्येकृतवर्म्माणमयाचतसचाब्रवीत् ११ नाहमीश्वरयोःकुर्य्यां हेलनंरामकृष्णयोः ॥ कोनुक्षेमाय कल्पेततयोर्वृजिनमाचरन् १२ कंसःसहानुगोऽपीतोयद्द्वेषात्त्याजितःश्रिया ॥ जरासन्धःसप्तदशसंयुगाद्विरथोगतः १३ प्रत्याख्यातःसचाक्रूरं पार्ष्णिग्राहमयाचत ॥ सोऽप्याहकोविरुध्येतविद्वानीश्वरयोर्बलम् १४ यइदंलीलयाविश्वं सृजत्यवतिहन्तिच ॥ चेष्टांविश्वसृजोयस्यनविदुर्मोहिताऽजया १५ यःसप्तहायनःशैलमुत्पाट्यैकेनपाणिना ॥ दधारलीलयाबालउच्छिलीन्ध्रमिवार्भकः १६ नमस्तस्मैभगवते कृष्णायाद्भुतकर्म्मणे ॥ अनन्तायादिभूतायकूटस्थायाऽऽत्मनेनमः १७ प्रत्याख्यातःसतेनापिशतधन्वामहामणिम् ॥ तस्मिन्न्यस्याश्वमारुह्य शतयोजनगंययौ १८ गरुडध्वजमारुह्यरथंरामजनार्दनौ ॥ अन्वयातांमहावेगैरश्वैराजन्गुरुद्रुहम् १९ मिथिलायाउपवने विसृज्यपतितंहयम् ॥ पद्भ्यामधावत्संत्रस्तः कृष्णोऽप्यन्वद्रवद्रुषा २० पदातिर्भगवांस्त

भय्यान सहित मरिगयो और जरासन्ध सत्रह बार युद्धमें हारिकै अन्तमें विरथ होयकै गयो १३ कृतवर्म्मा ने शतधन्वा तें मने करदीनी तब अक्रूर तें सहाय करिबे के लिये कहत भयो तब अक्रूरहू बोलतभये ईश्वर जो श्रीकृष्णहैं तिनके पराक्रम कू जानिकै कौन पुरुष उनतें विरोध करैगो १४ जो ईश्वर लीला करिकै या विश्वकी उत्पत्ति पालन नाशकरे है और माया सूं मोहित होयकै उनकी चेष्टाकूं ब्रह्मादिक नहीं जाने हैं १५ जो सातवर्ष की अवस्था में श्रीकृष्णचन्द्र एकहाथसूं गोवर्द्धन पर्व्वतकूं उखारिकै जैसे बालक छतौनाकूं उठाय लेइहै ऐसे उठावतभये १६ अद्भुतहैं कर्म्म जिनके ऐसे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनके अर्थ नमस्कारहै अन्त जिनको नहीं सबके आदिकारण निर्विकार सबके आत्मा तिनकूं नमस्कारहै १७ या प्रकार अक्रूर ने जब नाहीं करी तब शतधन्वा मणिकूं अक्रूर के पास धरिके चार सौ कोस चलै ऐसे घोडापै चढिकै भाजतभयो १८ राम और श्रीकृष्णहू ते गरुडके छापकी है ध्वजा जामें ऐसो जो रथहै तामें सवारहोयकै शीघ्रगामी जे घोडाहैं तिन करिकै हे राजन् परीक्षित् ! श्वशुरको मारनवारो जो शतधन्वाहै ताके पीछे दौरत भये १९ शतयोजनतें अधिक न चलिसकै ऐसो जो घोडाहै सो मिथिलापुरीके बाग में गिरगो ताय

त्यागिकै भयभीत होयकै पाव प्यादो भाजतभयो और श्रीकृष्णकूं क्रोध करिकै पीछे दौरतभये २० पांव प्यादो जो शतधन्वा है ताकूं पांवप्यादे श्रीकृष्ण भगवान् दौरिकै पकरिकै तीदणधारके चक्र सूं शतधन्वा को शिर काटिकै वाके वस्त्रन में मणिकूं ढूंढतभये २१ नहीं मिली है मणि जिनकूं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजीके पास आयकै कहतभये देखो शतधन्वाकूं वृथाही मारयो वापै मणि नहीं निकसी २२ ताके पीछे बलदेवजी कहतभये शतधन्वा काहू पुरुषके पास मणिकूं धरि आयो है वा पुरुष कूं ढूंढो और तुम द्वारकाकूं जावो २३ श्रीकृष्ण सब बातकूं जाने हैं माणि क्यों मोतें छिपाउ कियो है यह मानिकै बलदेवजी मनमें क्रोध करिकै बोलतभये याको अभिप्राय यह है कि द्रव्य ऐसो निषिद्ध पदार्थहै याके लिये श्रीकृष्ण बलदेवजी को मन बिगरिगयो तो मनुष्यनकी कहा कथा है मेरो अतिप्रिय विदेह देशको राजा बहुलाश्व है ताय देखिवे कूं जाऊंगो हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार श्रीकृष्ण तें कहिकै यादवनकूं आनन्द देनवारे बलदेवजी मिथिलापुरीमें प्रवेश

स्य पदातिस्तिग्मनेमिना ॥ चक्रेणशिरउत्कृत्य वाससोर्व्यचिनोन्मणिम् २१ अलब्धमणिरागत्य कृष्णआहाग्रजान्तिकम् ॥ वृथाहतःशतधनुर्मणिस्त त्रनविद्यते २२ ततआहबलोनूनं समणिःशतधन्वना ॥ कस्मिंश्चित्पुरुषेन्यस्तस्तमन्वेषपुरंव्रज २३ अहंविदेहमिच्छामि द्रष्टुंप्रियतमंमम ॥ इत्युक्त्वामिथि लांराजन्विवेशयदुनन्दनः २४ तंदृष्ट्वासहसोत्थाय मैथिलःप्रीतमानसः ॥ अर्हयामासविधिवदर्हणीयंसमर्हणैः २५ उवासतस्यांकतिचिन्मिथिलायांसमा विभुः ॥ मानितःप्रीतियुक्तेन जनकेनमहात्मना ॥ ततोऽशिक्षद्गदांकाले धार्त्तराष्ट्रःसुयोधनः २६ केशवोद्वारकामेत्य निधनंशतधन्वनः ॥ अप्राप्तिञ्चमणेः प्राह प्रियायाःप्रियकृद्विभुः २७ ततःसकारयामास क्रियाबन्धोर्हतस्यवै ॥ साकंसुहृद्भिर्भगवान् यायाःस्युःसाम्परायिकाः २८ अक्रूरःकृतवर्म्माच श्रुत्वाशत धनोर्वधम् ॥ व्यूषतुर्भयवित्रस्तौ द्वारकायाःप्रयोजकौ २९ अक्रूरेप्रोषितेऽरिष्टान्यासन्वैद्वारकौकसाम् ॥ शारीरामानसास्तापामुहुर्दैविकभौतिकाः ३० इ त्यङ्गोपदिशन्त्येके विस्मृत्यप्रागुदाहृतम् ॥ मुनिवासनिवासेकिं घटेतारिष्टदर्शनम् ३१ देवेऽवर्षतिकाशीशः श्वफल्कायागतायवै ॥ स्वसुतांगान्दिनीं

करतभये २४ प्रसन्न है मन जाको ऐसो मिथिलापुरी को राजा बलदेवजीकूं आये देखिकै शीघ्र उठिकै पूजन करिवे योग्य जे बलदेवजी हैं तिनकी पूजनकी सामग्रीनसूं पूजा करतभयो २५ ता मिथिलापुरी में समर्थ बलदेवजी कितनेक वर्ष वास करतभये प्रीतियुक्त महात्मा जो जनकहै तातें सत्कार जिनने पायो ऐसो धृतराष्ट्र को पुत्र दुर्य्योधन सो बलदेवजी सूं गदा चलायवो सीखत भयो २६ प्रिय कार्य्य के करनवारे समर्थ केशव भगवान् द्वारकापुरी में आयकै शतधन्वाको नाश और मणिकी अप्राप्ति है ताय प्यारी जो सत्यभामा है तासूं कहतभये २७ ताके पीछे भगवानश्री- कृष्णचन्द्र अपने सुहृदनकूं सगलैकै मृतक सत्राजित् की परलोककी साधन जे क्रिया हैं तिनैं करावतभये २८ सत्राजित् तें मणिके हरिलेने में शिक्षा करनवारे जे अक्रूर और कृतवर्म्मा हैं ते शतधन्वा को मरण सुनिकै श्रीकृष्णसूं भयभीत होयके द्वारकापुरी तें भाजतभये २९ द्वारका तें अक्रूर कू भिजवाय दियो ता समय द्वारकावासीनकूं देवता और मनुष्य ये हैं कारण जिनके ऐसे जे शरीर के मनके ताप हैं ते और अरिष्ट हैं ते वारंवार द्वारकापुरी में होनभये ३० हे राजन् परीक्षित्! कोई एक ऋषि हैं ते प्रथम श्रीकृष्ण की महिमा कही है तासूं फेरि कहे हैं मुनिनको है वास जिनमें ऐसे

श्रीकृष्णचन्द्र या द्वारकापुरी में रहैं तहां दुःखहोई यहबात कहा बनेहै ३१ या प्रकार दूषित करिकै फेरि और ह्यपिनको मत कहे हैं एकसमय इन्द्र जब न वर्षो तब काशीको राजा अपनी कन्या गान्दिनी कूं प्राप्तभये जो श्वफल्क हैं तिनें देतभयो तब काशी के देशन में मेघ वर्षतभयो ३२ पिता श्वफल्क की तुल्य है प्रभाव जाको ऐसो अक्रूर जहां जहां रहे तहां तहां इन्द्र वर्षाकरै और ता देश में प्राणीनकूं खेद नहीं होय है मरी नहीं परे है ३३ या प्रकार वृद्धन कों वचन सुनिकै केवल अक्रूरही यहां ते गयो सो नहीं मणिहूगई यहबात श्रवण करि निश्चय करिकै अक्रूर कूं काशीते बुलाय कै श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये ३४ अक्रूरकी पूजाकरिकै हे काका अक्रूर ! याप्रकार सम्बोधन दैकै प्यारी प्यारी बात कहिकै सब विश्व के जाननहारे अक्रूर के मनकी जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकाय के बोलत भये ३५ हे दानन के पति अक्रूर ! शतधन्वा स्यमन्तकमणि तुम्हारे पास धरिगयोहै सो तुम्हारे पास है यह हम पहिले तेही जाने हैं ३६ सत्राजित् के पुत्र नहीं याते जाकू पिण्ड

प्रादात्ततोऽवर्षत्समकाशिपु ३२ तत्सुतस्तत्प्रभावोऽसावक्रूरोयत्रयत्रह ॥ देवोऽभिवर्षतेतत्रनोपतापानमारिकाः ३३ इतिवृद्धवचःश्रुत्वानैतावदिहकारणम् ॥ इतिमत्त्वासमानाय्यप्राहाक्रूरंजनार्दनः ३४ पूजयित्वाऽभिभाष्यैनंकथयित्वाप्रियाःकथाः ॥ विज्ञाताऽखिलचित्तज्ञःस्मयमानउवाचह ३५ ननुदानपतेन्यस्तस्त्वय्यास्तेशतधन्वना ॥ स्यमन्तकोमणिःश्रीमान्विदितःपूर्वमेवनः ३६ सत्राजितोऽनपत्यत्वाद्गृह्णीयुर्दुहितुःसुताः ॥ दायंनिनीयापःपिण्डान्विमुच्यर्णंचशेषितम् ३७ तथाऽपिदुर्धरस्त्वन्यैस्त्वय्यास्तांसुव्रतेमणिः ॥ किन्तुमामग्रजःसम्यङ्नप्रत्येतिमणिंप्रति ३८ दर्शयस्वमहाभाग बन्धूनांशान्तिमावह ॥ अव्युच्छिन्नामखास्तेऽद्यवर्त्तन्तेरुक्मवेदयः ३९ एवंसामभिरालब्धःश्वफल्कतनयोमणिम् ॥ आदायवाससाच्छन्नंददौसूर्यसमप्रभम् ४० स्यमन्तकंदर्शयित्वाज्ञातिभ्योरजआत्मनः ॥ विमृज्यमणिनाभूयस्तस्मैप्रत्यर्पयत्प्रभुः ४१ यस्त्वेतद्भगवतईश्वरस्यविष्णोर्वीर्याढ्यंवृजिनहरंसुमङ्गलञ्च ॥ आख्यानंपठतिशृणोत्यनुस्मरेद्वादुष्कीर्तिंदुरितमपोह्ययातिशान्तिम् ४२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

जलदान दैकै ऋण चुकायकै शेष धन रहेगो ताय वाकी कन्या के पुत्र लेंइगे यह शास्त्र की आज्ञाहै ३७ सुन्दरहै व्रत जिनको ऐसे हे अक्रूर ! तुम हमतें कदाचित् न कहो तथापि हम जानेहैं मणि और पै नहीं रहिसकै तुम्हारे पास है तहा अक्रूरजी कहे हैं हमारे पास है तुम्हें कहा प्रयोजनहै तब श्रीकृष्ण कहे हैं बड़े भय्या बलदेवजी या मणिके पीछे मेरो विश्वास नहीं करे हैं ३८ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे बड़भागी अक्रूर ! तुम मणि दिखायके बन्धुनकूं शान्तिकरौ मेरे पास मणि नहीं है यह मति कहौ जो कदाचित् मणि न होवै तो सुवर्ण की वेदी बनाय बनाय कै अखण्ड यज्ञ कहांतें काशी में जायकै करते ३९ या प्रकार साम भेदन करिकै समझायो ऐसो श्वफल्क को पुत्र अक्रूर वस्त्र तें ढकी सूर्य्य केसो है तेज जाको ऐसी मणि लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकूं देतभयो ४० श्रीकृष्णचन्द्र स्यमन्तक मणि अक्रूरजी तें लैकै जाति के भय्या बन्धुनकू दिखायकै मणि कृष्णने लीनी है यह जो अपने कों मिथ्या कलङ्क लग्यो ताइ दूरि करिकै फेरि प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र अक्रूरजी कूं नहैं मणि समर्पण करत भये ४१ ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको कह्यो वीर्य्ययुक्त पुरुषन के दुःख को हरनवारो सुन्दर मंगलरूप जो स्यमन्तक मणिको प्रसंग है याकूं जो कोई पुरुष पढ़े

श्रवण करै स्मरण करै वह कुत्सित पाप कूं कलङ्क कूं दूरि करिकै कल्याण कूं पावै है ४२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥
(अष्टमश्चाशत्तमेतुकृष्णःपञ्चकरेऽग्रहीत् ॥ कालिन्दींमित्रविन्दाञ्चसत्याभद्राञ्चलक्ष्मणाम् १ कालिन्दींनिजलाभायतपःपरमुपेयुषीम् ॥ परिणेष्यन्प्रियात्रासमिन्द्रप्रस्थमुपागमत् २ अट्ठावनवें अध्याय में कृष्णजी कालिन्दी मित्रविन्दा सत्या भद्रा और लक्ष्मणा इन पाचों का व्याह करते भये १ अपने लाभ के लिये श्रेष्ठ तपस्या करती हुई कालिन्दीजी को कृष्णजी प्राप्त होकर प्यारे स्थानवाले हस्तिनापुरको प्राप्त होतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकि तें आदिलैकै पहिले लाक्षागृहमें जरिगये यह श्रवण करीही फेरि द्रुपद के घरमें सबने देखे ऐसे जे पाण्डव हैं तिनें देखिवे के लिये श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रप्रस्थ में जातभये १ सबके ईश्वर जे श्रीकृष्ण हैं तिनें आये देखिकै जैसे प्राण के आये तें इन्द्रिय चैतन्य होयँ ऐसे वीर पाण्डव उठत भये २ श्रीकृष्णचन्द्र के मिलिवे में अङ्गसंग जो भयो तासू गये हैं पाप जिनके ऐसे वीर पाण्डव स्नेहभरी मुसिकानिसहित श्रीकृष्णचन्द्र को मुखारविन्द देखिकै आनन्दकूं प्राप्त होत

श्रीशुकउवाच ॥ एकदापाण्डवान्द्रष्टुं प्रतीतान्पुरुषोत्तमः ॥ इन्द्रप्रस्थंगतःश्रीमान् युयुधानादिभिर्वृतः १ दृष्ट्वातमागतंपार्था मुकुन्दमखिलेश्वरम् ॥ उत्तस्थुर्युगपद्वीराः प्राणामुख्यमिवाऽऽगतम् २ परिष्वज्याच्युतंवीरा अङ्गसङ्गहतैनसः ॥ सानुरागस्मितंवक्त्रं वीक्ष्यतस्यमुदंययुः ३ युधिष्ठिरस्य भीमस्य कृत्वापादाभिवन्दनम् ॥ फाल्गुनंपरिरभ्याथ यमाभ्यांचाभिवन्दितः ४ परमासनआसीनं कृष्णाकृष्णमनिन्दिता ॥ नवोढाव्रीडिताकिञ्चिच्छनैरेत्याभ्यवन्दत ५ तथैवसात्यकिःपार्थैः पूजितश्चाभिवन्दितः ॥ निषसादाऽऽसनेऽन्येच पूजिताःपर्युपासिताः ६ पृथांसमागत्यकृताभिवादनस्तयातिहार्दार्द्रदृशाऽभिरम्भितः ॥ आपृष्टवांस्तांकुशलंसहस्नुषां पितृष्वसारंपरिपृष्टबान्धवः ७ तमाहप्रेमवैक्लव्यरुद्धकण्ठाश्रुलोचना ॥ स्मरन्तीतान्बहून्क्लेशान् क्लेशापायात्मदर्शनम् ८ तदैवकुशलंनोभूत्सनाथास्तेकृतावयम् ॥ ज्ञातीन्नःस्मरताकृष्णभ्रातामेप्रेषितस्त्वया ९ नतेऽस्तिस्वपरभ्रान्तिर्विश्वस्यसुहृदात्मनः ॥ तथाऽपि

भये ३ श्रीकृष्णचन्द्र बड़े जे युधिष्ठिर और भीमसेन हैं तिनके चरणन में नमस्कार करिकै और बराबरि को जो अर्जुन है तासू मिलतभये पीछे छोटे जो नकुल और सहदेव हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करतभये ४ श्रेष्ठ आसन पै बैठे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें पाँच पाण्डवन की स्त्री है तथापि निन्दा जाकी नहीं ऐसी नई विवाहिता लज्जावती जो द्रौपदी है सो हौले हौले आइ के प्रणाम करतिभई ५ जैसे पृथाके पुत्र जे पाण्डव हैं तिनने पूजा जाकी करी अभिवादन करचो ऐसो सात्यकि यादव आसनपै बैठत भयो पूजा जिनकी करी ऐसे औरहू श्रीकृष्णचन्द्र के संग बैठत भये ६ फेरि श्रीकृष्णचन्द्र कुन्ती के पास आयकै प्रणाम करतभये कुन्ती स्नेहभरी चितवनि सों आलिंगनकरतिभई श्रीकृष्णचन्द्र पतोहूसहित पिता की बहिनि जो कुन्ती है तासे कुशल पूंछत भये श्रीकृष्ण के बन्धुनकी कुशल कुन्ती ने पूछी है ७ प्रेमकी व्याकुलता तें रुक्यो है कण्ठ जाको नेत्रनमें आंसू जाके आयगये ऐसी कुन्ती कौरवन ने जे कष्ट दिये हैं तिनकी सुधि करिकै भक्तन के क्लेश कूं दूरि करिवे के लिये दर्शन देहँ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सूं बोलत भई ८ हे कृष्ण ! जाति के बन्धु जे हम हैं तिनको स्मरण करिकै जा समय तुमने मेरे भय्या अक्रूरकूं खबरिके लिये भेज्योहो ताही

समय हमारी कुशल होतिभई और तैंने हम मनाथ करे ९ समस्त विश्व के हितकारी आत्मा जो तुमहौ तिनके यह अपनो है यह पराया है यह भ्रम जिनके नहीं तथापि जो कोई तुम्हारो सर्वदा स्मरण करैहै तिनके हृदय में स्थित होयकै सब क्लेशनकूं दूरि करोहौ १० अब राजा युधिष्ठिर कहै हैं हे ब्रह्मादिकन के ईश्वर ! हमने कहा कल्याण कियो है यह मैं नहीं जानूं हूं जो तुम योगेश्वरनके देखिवे में न आवो सो हम विषयासक्तन कूं दिखाई दिये ११ या प्रकार राजा युधिष्ठिर ने प्रार्थना जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रप्रस्थनिवासीनके नेत्रनकूं आनन्ददेत वर्षा ऋतुके महीना वास करतभये १२ एक समय शूरवीर जे शत्रुहैं तिनके मारनवारे जो अर्जुनहैं सो वानरके छापेकीहै ध्वजा जामें ऐसे रथ में चढ़िके गाण्डीव धनुष्कूं लैकै बाणनको भरयो तरकस लैकै कवचधारिकै बहुत सर्प और मृगहैं जामें ऐसो बड़ो वनहै तामें श्रीकृष्ण के संग शिकार खेलिवे कूं जातभयो १३।१४ ता वन में व्याघ्र सूकर भैंसा रुरु अर्थात् हिरण शरभ अर्थात् आठपांव के जीव रोज गेंड़ा

स्मरतांशश्वत्क्लेशान्हंसिहृदिस्थितः १० ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ किंनआचरितंश्रेयोनवेदाहमधीश्वर ॥ योगेश्वराणांदुर्दर्शोयन्नोदृष्टःकुमेधसाम् ११ इतिवै वार्षिकान्मासान् राज्ञासोऽभ्यर्थितःसुखम् ॥ जनयन्नयनानन्दमिन्द्रप्रस्थौकसांविभुः १२ एकदारथमारुह्य विजयोवानरध्वजम् ॥ गाण्डीवंधनुरादाय तूणौचाक्षयसायकौ १३ साकंकृष्णेनसन्नद्धो विहर्तुंगहनंवनम् ॥ बहुव्यालमृगाकीर्णं प्राविशत्परवीरहा १४ तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रान् सूकरान्महिषान्रुरून् ॥ शरभान्गवयान्खड्गान् हरिणाञ्छशशल्लकान् १५ तान्निन्युःकिङ्करा राज्ञे मेध्यान्पर्वण्युपागते ॥ तृट्परीतःपरिश्रान्तोबीभत्सुर्यमुनामगात् १६ तत्रोपस्पृश्यविशदंपीत्वावारिमहारथौ ॥ कृष्णौददृशतुःकन्यां चरन्तींचारुदर्शनाम् १७ तामासाद्यवरारोहांसुद्विजांरुचिराननाम् ॥ पप्रच्छप्रेषितःसख्या फाल्गुनःप्रमदोत्तमाम् १८ कात्वंकस्यासिसुश्रोणि कुतोऽसिकिंचिकीर्षसि ॥ मन्येत्वांपतिमिच्छन्तीं सर्वंकथयशोभने १९ ॥ कालिन्द्युवाच ॥ अहंदेवस्य सवितुर्दुहितापतिमिच्छती ॥ विष्णुंवरेण्यंवरदंतपःपरममास्थिता २० नान्यंपतिंवृणेवीरतमृतेश्रीनिकेतनम् ॥ तुष्यतांमेसभगवान्मुकुन्दोऽनाथसंश्रयः २१

मृग खरहा सेही इनकूं बाणन तें वेधतभये १५ अमावास्या पूर्णमासी ये पर्व जब आयके प्राप्तभये तब टहलुआ हैं ते पवित्र जे पशु हैं तिनें राजा युधिष्ठिर के पास लावतभये शिकारखेलिवे में श्रम जाकूं भयो प्यासलागी तब अर्जुन यमुनापै जातभयो १६ महारथी जे श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं ते यमुना के तटपै आयकै निर्मल जलको आचमन करिके पीके जब ठाढ़े भये तब सुन्दर एक कन्या तैसी देखतभये १७ सुन्दर हैं जंघा जाकी श्रेष्ठ है दांत जाके मनोहरहै मुख जाको ऐसी जो प्रमदा कन्याहै ताके पास भेज्यो जो श्रीकृष्ण ने अर्जुनहै सो पूंछतभयो १८ हे सुश्रोणि अर्थात् सुन्दरहै कटिजाकी ! तुम कौनहौ और कौनकी पुत्रीहौ कहांते आईहौ तुम्हारे मनमें कहा करिवे की है तुम्हारे पति करिवेकी इच्छाहै मैं जानौंहूं हे सुन्दरी ! सब बातकहौ १९ कालिन्दी कहै है मैं सूर्यदेवकी पुत्रीहूं वरके देनवारे जो विष्णुहैं तिनें पति करिवे की इच्छा करिकै बड़ो तप करूंहूं २० हे वीर ! सुन्दर जे श्रीकृष्ण हैं तिनके विना और कूं पति न करूंगी अनाथ के आश्रय जो मुकुन्द भगवान् हैं सो मेरे ऊपर प्रसन्नहोउ २१

कालिन्दी नाम करिके विख्यातहूं और मेरे पिता सूर्य ने वनायो जो यमुनाको जलहै तामें यावत्पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन न होइगो तवलों वासकरूंगी २२ जीतीहै निद्रा जाने ऐसो जो अर्जुन है सो वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्रके पास आयकै जैसे कालिन्दीने कही तैसेही कहतभयो कालिन्दी मेरेनिमित्त तप करे है या वातकूं जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र रथमें वैठायकै धर्मराज राजा युधिष्ठिर के पास आवत भये २३ ता समय पाण्डवन ने जिनकूं आज्ञादीनी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र देवतानको कारीगर जो विश्वकर्म्मा है तासूं कहिके पाण्डवन के लिये चित्र विचित्र अद्भुत नगर निर्म्माण करावत भये २४ अपने पाण्डवन के प्रिय करिवे के लिये इन्द्रप्रस्थ में वास करें ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् सो इन्द्रको जो खाण्डव वनहै ताय अग्नि कूं देवेके लिये अर्जुन के रथवान् होत भये २५ हे राजन् परीक्षित् ! जव अग्नि कूं खाण्डव वनदियो तव अग्नि प्रसन्न होयकै अर्जुनकू धनुष् और श्वेत रङ्गके घोड़ा तीरनके भरे तरकस और हथियारन सूं भेदन न होय ऐसो कवच देतभयो २६

कालिन्दीतिनामाख्याता वसामियमुनाजले ॥ निर्म्मितेभवनेपित्रा यावदच्युतदर्शनम् २२ तथाऽवदद्गुडाकेशो वासुदेवायसोऽपिताम् ॥ रथमारोप्यतद्विद्वान् धर्म्मराजमुपागमत् २३ यदैवकृष्णःसन्दिष्टः पार्थानांपरमाद्भुतम् ॥ कारयामासनगरं विचित्रंविश्वकर्म्मणा २४ भगवांस्तत्रनिवसन् स्वानांप्रियचिकीर्षया ॥ अग्नयेखाण्डवन्दातुमर्जुनस्याऽऽससारथिः २५ सोऽग्निस्तुष्टोधनुरदाद्धयाञ्छ्वेतान्रथंनृप ॥ अर्जुनायाक्षयौतूणौ वर्म्मचाभेद्यमस्त्रिभिः २६ मयश्चमोचितोवह्नेःसभांसख्यउपाहरत् ॥ यस्मिन्दुर्य्योधनस्याऽऽसीज्जलस्थलदृशिभ्रमः २७ सतेनसमनुज्ञातः सुहृद्भिश्चानुमोदितः ॥ आययौद्वारकांभूयः सात्यकिप्रमुखैर्वृतः २८ अथोपयेमेकालिन्दीं सुपुण्यर्त्वृक्षऊर्ज्जिते ॥ वितन्वन्परमानन्दंस्वानांपरममङ्गलम् २९ विन्दानुविन्दावावन्त्यौदुर्य्योधनवशानुगौ ॥ स्वयंवरेस्वभगिनीं कृष्णेसक्तांन्यषेधताम् ३० राजाधिदेव्यास्तनयां मित्रविन्दांपितृष्वसुः ॥ प्रसह्यहृतवान्कृष्णो राजन्राज्ञांप्रपश्यताम् ३१ नग्नजिन्नामकौशल्यआसीद्राजाऽतिधार्म्मिकः ॥ तस्यसत्याऽभवत्कन्या देवीनाग्नजितीनृप ३२ नतांशेकुर्नृपावोढुमजित्वासप्तगोवृषान् ॥

अग्नि तें वचायो ऐसो जो मयनामा दैत्यहै सो सभा वनायकै अर्जुनकूं देतभयो जा सभा में जलमें स्थल और स्थल में जल या प्रकार दुर्योधनकी दृष्टिमें भ्रम होतभयो २७ राजा युधिष्ठिरने आज्ञा जिनकूं दीनी सुहृदन ने प्रशंसा जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकी जिनमें मुख्य ऐसे यादवनकूं संगलैकै फेरि द्वारकापुरी में आवतभये २८ जाके पीछे सुन्दर पवित्र ऋतु नक्षत्रमें कालिन्दी कूं व्याहतभये परममङ्गलरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने यादवनकूं परमानन्द देतभये २९ दुर्य्योधनकी आज्ञामें वर्ते ऐसे जे उज्जैनपुरी के राजा विन्द और अनुविन्द दोनों भयाहैं ते श्रीकृष्णचन्द्रमें मन जाको लग्यो ऐसी जो अपनी वहिनि है ताय स्वयंवर में मने करतभये ३० पिता वसुदेवकी वहिनि जो राजाधिदेवी ताकी पुत्री जो मित्रविन्दा है ताय श्रीकृष्णचन्द्र सव राजान के देखत हे राजन् परीक्षित् ! वल करिकै लावत भये ३१ हे राजन् परीक्षित् ! अयोध्यापुरी को पालन करनवारो वड़ो धर्म्मात्मा राजा नग्नजित नाम करिकै होतभयो ता राजा के प्रकाशमान सत्यानाम करिकै कन्या होतिभई पिताको नाम नग्नजित् है यातें ताकूं नाग्नजिती भी कहे हैं ३२ पैने हैं सींग जिनके वीर डाढ़िमें न आवें राजान की गन्ध न सुहाय ऐसे मरखने जो सात वैल हैं

तिनके नाथे विना राजा हैं ते नाग्नजिती कूं नहीं व्याहत भये ३३ यादवन के पति भगवान् हैं सो सात बैलन कूं एक संग नाथै वह या कन्या कूं व्याहै यह बातकूं श्रवण करिकै बड़ी सेना कूं संग लैके अयोध्यापुरी में जात भये ३४ अयोध्यापुरी को राजा नग्नजित् प्रसन्न होयके उठिकै भले आये या प्रकार प्रशंसा करिकै सुन्दर आसन बिछाय कै चरण धोइ कै बड़ी पूजाकी सामग्रीन सूं पूजन करत भयो ३५ राजा नग्नजित् की कन्या है सो आये जो लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण हैं तिनें अपने योग्य वर देखि कै इच्छा करति भई और कहति भई कि जो मैंने व्रत-न करिकै मनमें धास्यो है तो यह श्रीकृष्णचन्द्र मेरो पति होउ और मेरे मनोरथन कूं सत्य करो ३६ जिन भगवान्के चरणकमल की रज कूं लक्ष्मी और कमल तें है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा तथा महादेव और लोकपाल ये समस्त शिर पै धारण करे हैं ऐसे तुम ईश्वर अपनी करी ये धर्म मर्यादा हैं तिनके पालन करिबे की इच्छा करिकै लीला करिकै नृसिंहादि मूर्त्तिन कूं

तीक्ष्णशृङ्गान्सुदुर्द्धर्षान् वीरगन्धासहान्खलान् ३३ तांश्रुत्वावृषजिल्लभ्यांभगवान्सात्वतांपतिः ॥ जगामकौशल्यपुरं सैन्येनमहतावृतः ३४ सकोशलपतिःप्रीतः प्रत्युत्थानासनादिभिः ॥ अर्हणेनापिगुरुणाऽपूजयत्प्रतिनन्दितः ३५ वरंविलोक्याभिमतंसमागतं नरेन्द्रकन्याचकमेरमापतिम् ॥ भूयादयंमेपतिराशिषोऽमलाः करोतुसत्यायदिमेधृतोव्रतैः ३६ यत्पादपङ्कजरजःशिरसाबिभर्त्ति श्रीरब्जजःसगिरिशःसहलोकपालैः ॥ लीलातनुःस्वकृतसेतुपरीप्सयेशः कालेदधत्सभगवान्ममकेनतुष्येत् ३७ अर्चितंपुनरित्याह नारायणजगत्पते ॥ आत्मानन्देनपूर्णस्य करवाणिकिमल्पकः ३८ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ तमाहभगवान्हृष्टः कृतासनपरिग्रहः ॥ मेघगम्भीरयावाचासस्मितंकुरुनन्दन ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नरेन्द्रयाच्ञाकविभिर्विगर्हिता राजन्यबन्धोर्निजधर्मवर्त्तिनः ॥ तथाऽपियाचेतवसौहृदेच्छया कन्यांत्वदीयांनहिशुल्कदावयम् ४० ॥ राजोवाच ॥ कोऽन्यस्तेऽभ्यधिकोनाथ कन्यावरइहेप्सितः ॥ गुणैकधाम्नोयस्याङ्गे श्रीर्वसत्यनपायिनी ४१ किन्त्वस्माभिःकृतःपूर्वं समयःसात्वतर्षभ ॥ पुंसांवीर्यपरीक्षार्थं कन्यावरपरीप्सया ४२ सप्तैतेगोवृषावीर दुर्दा

धारण करो हो सो तुम भगवान् मेरे ऊपर कैसे प्रसन्न होउगे ३७ पूजन करिकै फेरि नग्नजित् राजा कहत भये हे नारायण! हे जगत् के पति! आत्मा के आनन्द करिकै पूर्ण जो तुम हो तिनको मैं तुच्छ कहा पूजन करूं ३८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे कौरवन के कुल कूं आनन्द देनवारे राजा परीक्षित्! आसन पै बैठि करि श्रीकृष्णचन्द्र मेघ की तुल्य गर्ज करिकै मुसिकात राजा नग्नजित् तें बोलत भये ३९ हे राजन् नग्नजित्! निजधर्मवर्त्ती जे क्षत्रिय हैं तिनकूं याचना करिबो कविन ने मने कस्यो है तथापि स्नेह करिकै हम तुम्हारी कन्या कूं माँगे हैं कछु मोल के देनवारे हम नहीं हैं ४० अब राजा नग्नजित् कहे है हे नाथ! समस्त गुण जिन में रहैं और लक्ष्मी सर्वदा जिनके अंग में वास करैं ऐसे तुम तें अधिक या संसार में कौन वर है ताकूं कन्या देउँगो ४१ हे यादवन में श्रेष्ठ! पुरुषन के पराक्रम की परीक्षा लेवे के निमित्त और कन्याके वरकी परीक्षा के लिये हमने प्रथम एक प्रतिज्ञा करी है ४२ हे वीर कृष्ण! शिक्षा जिनकू न

भई और वशमें न आवें ऐसे सात बैल है तिनके मारे टूटे हैं अंग जिनके ऐसे बहुत राजानके पुत्र परे हैं ४३ हे यदुनन्दन ! हे लक्ष्मी के पति ! जो तुम इन बैलन कूं अपने वश करि लेउ तौ मेरी कन्या कूं सम्मत वरहौ ४४ समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार राजा नग्नजित्‌की प्रतिज्ञा श्रवण करिके फेंट बाँधि के अपने सात रूप धरि के लीलाही करिके बैलन कूं पकरत भये ४५ दूरि भयो है गर्व जिनको गयो है बल जिनको ऐसे बैलन कूं शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रस्सानतें बाँधि के जैसे बालक काष्ठ के बैल कूं खेंचे है ऐसे खेंचत भये ४६ ताके पीछे आश्चर्यवान् राजा नग्नजित् प्रसन्न होयके श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनी कन्या देत भयो समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं सो अपनी बराबरि की कन्या है ताय विधिपूर्वक व्याहत भये ४७ राजा नग्नजित् की रानी हैं ते अपनी कन्या कूं प्यारो पति पाय के परमानन्द पावत भई और बड़ो उत्सव भयो ४८ शङ्ख भेरी नगाड़े बजत भये और गीत बाजे बजावत भये ब्राह्मणन के आशीर्वाद होत भये सु-

न्ताद्दुरवग्रहाः ॥ एतैर्भग्नाः सुबहवो भिन्नगात्रा नृपात्मजाः ४३ यदिमे निगृहीताः स्युस्त्वयैव यदुनन्दन ॥ वरो भवानभिमतो दुहितुर्मे श्रियःपते ४४ एवं समयमाकर्ण्य बद्ध्वा परिकरं प्रभुः ॥ आत्मानं सप्तधा कृत्वा न्यगृह्णाल्लीलयैव तान् ४५ बद्ध्वा तान्दामभिः शौरिर्भग्नदर्पान्हतौजसः ॥ व्यकर्षल्लीलया बद्धान् बालो दारुमयान्यथा ४६ ततः प्रीतः सुतां राजा ददौ कृष्णाय विस्मितः ॥ तां प्रत्यगृह्णाद्भगवान् विधिवत्सदृशीं प्रभुः ४७ राजपत्न्यश्च दुहितुः कृष्णं लब्ध्वा प्रियं पतिम् ॥ लेभिरे परमानन्दं जातश्च परमोत्सवः ४८ शङ्खभेर्यानका नेदुर्गीतवाद्यद्विजाशिषः ॥ नरा नार्यः प्रमुदिताः सुवासः स्रगलङ्कृताः ४९ दशधेनुसहस्राणि पारिबर्हमदाद्विभुः ॥ युवतीनां त्रिसाहस्रं निष्कग्रीवसुवाससाम् ५० नवनागसहस्राणि नागाच्छतगुणान्रथान् ॥ रथाच्छतगुणानश्वानश्वाच्छतगुणान्नरान् ५१ दम्पती रथमारोप्य महत्या सेनया वृतौ ॥ स्नेहप्रक्लिन्नहृदयो यापयामास कोशलः ५२ श्रुत्वैतद्रुरुधुर्भूपा नयन्तं पथि कन्यकाम् ॥ भग्नवीर्याः सुदुर्मर्षा यदुभिर्गोवृषैः पुरा ५३ तानस्यतः शरव्रातान् बन्धुप्रियकृदर्जुनः ॥ गाण्डीवी कालयामास सिंहः क्षुद्रमृगानिव ५४ पारिबर्हमुपागृह्य द्वारकामेत्य स-

न्दर वस्त्र मालान सूं शोभायमान नर नारी हैं ते प्रसन्न होत भये ४९ सामर्थ्यवान् राजा नग्नजित् दाइजे में दश हजार गौ देत भयो धुकधुकी है कण्ठ में जिनके सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे ऐसी तीन हजार दासी देत भयो ५० नवहजार हाथी देत भयो और हाथीनसूं सौगुणे अर्थात् नवलाख रथ और रथन सूं सौगुणे अर्थात् नवकिरोड़ घोडा देतभयो और घोडानसूं सौगुणे अर्थात् नवअर्ब मनुष्य देत भयो ५१ स्नेह करिकै व्याप्त है हृदय जाको ऐसो कोशलदेशको राजा नग्नजित् अपनी कन्यासहित श्रीकृष्णचन्द्र कूं रथ में बैठारि के बड़ी सेनाकूं संग लैके पहुँचावत भयो ५२ यादवन और बैलन ने पहिले राजान को मद दूरि करि दियो है तथापि असहनता जिनके विद्यमान ऐसे राजा कृष्ण या कन्या कू लिये जाय है यह बात श्रवण करिकै मार्ग में आय के रोकत भये ५३ बन्धु जे कृष्णचन्द्र हैं तिनके प्यारको करनवारो गाण्डीव है धनुष् जाको ऐसो अर्जुन सो बाणन कूं चलावैं ऐसे जे राजा हैं तिनें सिंह जैसे छोटे छोटे जानवर मृगन कूं भजावै ऐसे भजावतभयो ५४

यादवन में श्रेष्ठ देवकी के पुत्र भगवान् हैं सो दाइजे कूं लैके द्वारकापुरी में आयके सत्या जो रानीहै ताके सग रमण करत भये ५५ पिता वसुदेव की बहिनि जो श्रुतकीर्त्ति है ताकी पुत्री कैकयदे-
शोत्पन्न भद्राहै ताय सन्तर्दनादि भ्रयाननें दीनी ताकूं श्रीकृष्णचन्द्र व्याहत भये ५६ सुन्दर जामें लक्षण ऐसी जो मद्रदेशके राजाकी कन्या लक्ष्मणाहै ताय गरुड जैसे अमृतकू लावै है या प्रकार
अकेले श्रीकृष्णचन्द्र स्वयंवर में हरि कै लावत भये ५७ भौमासुर के बन्दीखाने में तें छुडाय कै लाये सुन्दर हैं रूप जिन के ऐसी हजारन स्त्री श्रीकृष्णचन्द्र के और भी होती भई ५८ ॥ इति श्री
मन्महाभागवतार्थबुधिरञ्जन्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽष्टमहिष्युद्वाहोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ऊनषष्टितमेभौमंहत्वातेनाहृताहरिः ॥ कन्याःसहस्रशःमापपारिजातंदिवोऽहरत् १ परिणीयततस्ताभिस्तन्मनोरथपूरणैः ॥ आत्मारामोऽप्यसौरेमेतद्गृहेषुगृहस्थवत् २ उनसठवें अध्याय में भौमासुर
को मारकर कृष्णजी तिससूं हरीहुई हजारों कन्याओं को माप्त होते भये और स्वर्ग सूं कल्पवृक्ष हरते भये १ फिर मनोरथ पूरण करनेवाली तिन स्त्रियों सूं आत्माराम कृष्णजी विवाहकर तिनके घरन

त्यया ॥ रेमेयदूनामृषभोभगवान्देवकीसुतः ५५ श्रुतकीर्त्तेःसुतांभद्रामुपयेमेपितृष्वसुः ॥ कैकेयींभ्रातृभिर्दत्तां कृष्णःसन्तर्दनादिभिः ५६ सुतांचमद्राधिप
तेर्लक्ष्मणांलक्षणैर्युताम् ॥ स्वयंवरेजहारैकः ससुपर्णःसुधामिव ५७ अन्याश्चैवंविधाभार्याःकृष्णस्याऽऽसन्सहस्रशः ॥ भौमंहत्वातन्निरोधादाहृताश्चारु
दर्शनाः ५८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽष्टमहिष्युद्वाहोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

राजोवाच ॥ यथाहतोभगवता भौमोयेनचताःस्त्रियः ॥ निरुद्धाएतदाचक्ष्व विक्रमंशार्ङ्गधन्वनः १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इन्द्रेणहृतच्छत्रेण हृतकुण्डल
बन्धुना ॥ हृतामराद्रिस्थानेन ज्ञापितोभौमचेष्टितम् ॥ सभार्योगरुडारूढः प्राग्ज्योतिषपुरंययौ २ गिरिदुर्गैःशस्त्रदुर्गैर्जलाग्न्यनिलदुर्गमम् ॥ मुरपाशायुतै
र्घोरैर्दृढैःसर्वतआवृतम् ३ गदयानिर्बिभेदाद्रीञ्छस्त्रदुर्गाणिसायकैः ॥ चक्रेणाग्निंजलंवायुं मुरपाशांस्तथाऽसिना ४ शङ्खनादेनयन्त्राणि हृदयानिमन

में गृहस्थ की नाई रमते भये २) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करें हैं हे शुकदेवजी ! श्रीकृष्णचन्द्रने भौमासुरकूं मारयो और जैसे भौमासुरने ये स्त्री रोंकीहीं यह समस्त वृत्तान्त शार्ङ्ग है धनुष् जिनको ऐसे
भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको पराक्रम हमारे आगे वर्णन कीजिये १ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! छत्र जाको हरिकै लैगयो और माता अदितिके कुण्डल लैगयो सुमेरुपर्वत मेंतें मणि
निकासिकै लै गयो या इन्द्रने भौमासुरकी कर्त्तव्यता जाय कै श्रीकृष्णकूं जताई भौमासुर हमकूं अत्यन्त दुःख देतहै यह इन्द्रकी वार्त्ता सुनिकै श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़के ऊपर चढिकै सत्यभामा रानी
कूं सङ्ग लैके माग्ज्योतिष नाम करिकै जो भौमासुर को नगर है तहां जात भये २ अब भौमासुर के नगरको वर्णन करे है पर्व्वतन के जहां किला है शस्त्रन के किला हैं जल चारयो ओर भरयो है
अग्नि के और पवन के किला हैं इनमें कोई जाय न सकै ऐसे भयानक गढ है मुरदैत्य की हजारन दृढ भयानक फांसी है तिनसूं चारयो ओर तें व्याप्तहै ३ श्रीकृष्णचन्द्र गदा तें पर्व्वतनें तिनें तोरत
भये और बाणनसूं शस्त्रनके गढहैं तिनें काटत भये चक्रसूं अग्निकूं बुझावत जलकू शोषत पवनकूं रोंकत भये ऐसेही तलवारसूं मुरदैत्य के पाशनकूं काटत भये ४ और शङ्ख जो बजायो ताके

शब्द करिकै अनेक युद्धके यन्त्र हैं ते उलटे चलन लगे और शूरन के मन हृदय थर थर कांपत भये गदाके धारण करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र बड़ी जो गदा है तासूं भौमासुर के नगरको कोट है ताय तोरत भये ५ मलयकाल के वज्र के शब्दकी तुल्य है भयङ्कर शब्द जाको ऐसो जो पाञ्चजन्य शङ्ख है ताको शब्द सुनिकै पाच हैं शिर जाके ऐसो खाई के जलके भीतर सोवै जो मुरदैत्य है सो उठत भयो ६ अतिखोंटी है चितवनि जाकी मलयकाल के सूर्य्य और अग्नि के तुल्य है तेज जाको भयंकर है रूप जाको ऐसो जो मुरदैत्य है सो त्रिशूल हाथमें लैके पाचों मुख फारिकै त्रिलोकी कूं मानों निगलि जायगो ऐसो दौरिकै श्रीकृष्णचन्द्रके सम्मुख आवत भयो जैसे गरुड़ सर्प के सम्मुख जाय ऐसे ७ मुरदैत्य त्रिशूलकूं फिरायकै बड़े जोरतें गरुड के ऊपर चलायके पाचों मुख फारिकै शब्द करत भयो बड़ो जो शब्द है सो द्यावापृथ्वी समस्त दिशान और अन्तरिक्षमें फैलिकै ब्रह्माण्ड कूं व्याप्त करत भयो ८ ता समय श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़ के ऊपर चल्यो आवै जो त्रिशू-

स्त्रिनाम् ॥ प्राकारंगदयागुर्व्या निर्बिभेदगदाधरः ५ पाञ्चजन्यध्वानिंश्रुत्वायुगान्ताशनिभीषणम् ॥ मुरःशयानउत्तस्थौ दैत्यःपञ्चशिराजलात् ६ त्रिशूलमुद्यम्यसुदुर्निरीक्षणोयुगान्तसूर्य्यानलरोचिरुल्बणः ॥ ग्रसंस्त्रिलोकीमिवपञ्चभिर्मुखैरभ्यद्रवत्तार्क्ष्यसुतंयथोरगः ७ आविध्यशूलंतरसागरुत्मते निरस्यवक्त्रैर्व्यनदत्सपञ्चभिः ॥ सरोदसीसर्व्वदिशोऽम्बरंमहानापूरयन्नण्डकटाहमावृणोत् ८ तदाऽपतद्वैत्रिशिखंगरुत्मते हरिःशराभ्यामभिनत्त्रिधौजसा ॥ मुखेपुनंचापिशरैरताडयत्तस्मैगदांसोऽपिरुषा व्यमुञ्चत ९ तामापतन्तींगदयागदांमृधे गदाग्रजोनिर्बिभिदेसहस्रधा ॥ उद्यम्यबाहूनभिधावतोऽजितः शिरांसिचक्रेणजहारलीलया १० व्यसुःपपाताऽम्भसिकृत्तशीर्षोनिकृत्तशृङ्गोऽद्रिरिवेन्द्रतेजसा ॥ तस्यात्मजाःसप्तपितुर्वधातुराः प्रतिक्रियाऽमर्षजुषःसमुद्यताः ११ ताम्रोऽन्तरिक्षःश्रवणोविभावसुर्वसुर्नभस्वानरुणश्चसप्तमः ॥ पीठंपुरस्कृत्यचमूपतिंमृधे भौमप्रयुक्तानिरगन्धृतायुधाः १२ प्रायुञ्जतासाद्यशरानसीन्गदाः शक्त्यृष्टिशूलान्यजितेरुषोल्बणाः ॥ तच्छस्त्रकूटंभगवान्स्वमार्गणैरमोघवीर्य्यस्तिलशश्चकर्त्तह १३ तान्पीठमुख्याननयद्यमालयं निकृत्तशी-

ल है ताके वाणन तें तीन टूक करत भये और मुरदैत्य के पाचों मुखन में पाच वाण मारत भये मुरदैत्य भी क्रोध करिकै श्रीकृष्ण के ऊपर गदा चलावत भयो ९ गद के बड़े भय्या जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो युद्ध में चली आवै जो मुरदैत्य की गदा है ताको अपनी गदासूं हजारन टूक करतभये तासमय भुजान कूं उठाय कै दौरिकै सम्मुख आयो जो मुरदैत्य है ताके शिरनकूं श्रीकृष्णचन्द्र लीलाही करिकै चक्रसूं काटतभये १० कटे हैं शिर जाके गये हैं प्राण जाके ऐसो मुरदैत्य है सो इन्द्रके वज्रसूं कट्यो है शिखर जाको ऐसो पर्व्वत जैसे गिरतभयो ऐसे जलमें गिरतभयो पिता जो मर्यो है तासूं आतुर बदलो लेने के लिये असहनता जिनके आइ गई ऐसे मुरदैत्य के सातपुत्र ताम्र अन्तरिक्ष श्रवण विभावसु वसु नभस्वान् अरुण ये सहारिकै भौमासुर के कहे तें शस्त्रन कूं लैकै लड़िबेकूं सेनाको पालनकरनवारो जो पीठ नामक मुख्य है ताय आगे करिकै निकसतभये ११ । १२ रोष करिकै भयानक जे मुरदैत्य के पुत्र हैं ते आयकै श्रीकृष्ण के ऊपर क्रोध करिकै वाण तरवार गदा बर्छी गुर्ज त्रिशूल इत्यादिक शस्त्र चलावत भये तब बड़ो है पराक्रम जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने वाणन तें तिनके चलायेभये जे शस्त्र हैं तिन तिल तिलकी बराबरि

टूक करिकै काटत भये १३ पीठ है मुख्य जिनमें ऐसे जे मुरदैत्यके पुत्र हैं तिनके शिर ऊरु भुजा पाँव कवच इनकूं काटिकै मारिकै यमलोक कूं पहुँचावत भये पृथ्वी को पुत्र जो नरकासुर है सो श्री कृष्ण के चक्र बाणनसूं कटे देखि के असहनता जाके आइगई सो मद जिनके चुवे समुद्र नें तें निकसे ऐसे जे हाथी हैं तिनकूं संगलैके निकसनभयो १४ सूर्य के ऊपर जैसे बिजुली सहित मेघहोइ ऐसे गरुड़ के ऊपर सत्यभामा सहित बैठे भे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनें देखिके भौमासुर बरछी चलावतभयो और सम्पूर्ण जे योद्धा हैं ते एक संग वेधत भये १५ गदके बड़े भय्या जो श्रीकृष्ण है सो चित्र विचित्र हैं पक्ष जिनके ऐसे बाणनसूं भौमासुर की सेनाको काटत भये कटे हैं भुजा जंघा ग्रीवा देहजामें मरे हैं घोडा हाथी जामें ऐसी करत भये १६ हे कुरुवंश कूं आनन्द देनवारे राजा परीक्षित्! जो जो शस्त्र योद्धान ने चलाये तिन सबकूं श्रीकृष्णचन्द्र तीक्ष्ण तीन तीन बाणनसूं एक एक टूक काटतभये १७ श्रीकृष्ण ऊपर जाके चढे ऐसे गरुड़ने अपनी चोंच और पक्षन तें मारे जे हाथी हैं ते

पौरुषं ताक्ष्र्यं मर्मगः ॥ स्वानीकपानच्युतचक्रसायकैस्तथानिरस्तान्नरकोधरासुतः १४ निरीक्ष्यदुर्मर्षण आस्रवन्मदैर्गजैःपयोधिप्रभवैर्निराक्रमत् ॥ दृ
ष्ट्वासभार्यंगरुडोपरिस्थितं सूर्योपरिष्टात्सतडिद्घनंयथा ॥ कृष्णंसतस्मैव्यसृजच्छतघ्नीं योधाश्चसर्वेयुगपत्स्मविव्यधुः १५ तद्भौमसैन्यंभगवान्गदाग्रजो
विचित्रवाजैर्निशितैःशिलीमुखैः ॥ निकृत्तबाहूरुशिरोध्रविग्रहं चकारतर्ह्येवहताश्वकुञ्जरम् १६ यानियोधैःप्रयुक्तानि शस्त्रास्त्राणिकुरूद्वह ॥ हरिस्तान्यच्छि
नत्तीक्ष्णैःशरैरेकैकशस्त्रिभिः १७ उह्यमानःसुपर्णेन पक्षाभ्यांनिघ्नतागजान् ॥ गरुत्मताहन्यमानास्तुण्डपक्षनखैर्गजाः १८ पुरमेवाऽऽविशन्नार्त्तानरकोयुध्य
युध्यत ॥ दृष्ट्वाविद्रावितंसैन्यं गरुडेनार्दितंस्वकम् १९ तंभौमःप्राहरच्छक्त्यावज्रःप्रतिहतोयतः ॥ नाकम्पततयाविद्धोमालाहतइवद्विपः २० शूलंभौमोऽ
च्युतंहन्तुमाददेवितथोद्यमः ॥ तद्विसर्गात्पूर्वमेव नरकस्यशिरोहरिः ॥ अपाहरद्गजस्थस्य चक्रेणक्षुरनेमिना २१ सकुण्डलंचारुकिरीटभूषणं बभौपृथिव्यां
पतितंसमुज्ज्वलत्॥हाहेतिसाध्वित्यृषयःसुरेश्वरामाल्यैर्मुकुन्दंविकिरन्तईडिरे २२ ततश्चभूःकृष्णमुपेत्यकुण्डले प्रतप्तजाम्बूनदरत्नभास्वरे ॥ सवैजयन्त्याव

पीड़ितहोयकै पुरमें जातभये और नरकासुर रणमें युद्ध करतभयो गरुड़ने पीडा जाकूं दीनी ऐसी जो अपनी सेना है ताकू भाजी देखिके १८ । १९ भौमासुर गरुड के बरछी मारतभयो ता बरछी सू बज्रहू ताड़ितहोतभयो बरछी जाके लगी तथापि गरुड फूलकी माला लगेतें हाथी जैसे चलायमान न होय ऐसे चलायमान नहीं होतभयो वृथाहै उद्यम जाको ऐसो भौमासुर श्रीकृष्णके मारिवे कूं त्रिशूल लेतभयो भौमासुर त्रिशूल चलाय न सक्यो ताते पहिलेही हाथी पै बैठ्यो जो भौमासुर है ताकूं शिर पैनी धार के चक्रसूं श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये २०।२१ कुण्डलन सहित जो मनोहर किरीट है तासूं शोभायमान पृथ्वी में पर्यो प्रकाशमान जो भौमासुरको शिरहै सो सुन्दर लगतभयो ऋषि देवताहैं ते हाय हाय भले भले कहत फूलनकी वर्षा श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपरकरत स्तुति करत भये २२ भौमासुर मर्यो ताके पीछे पृथ्वी श्रीकृष्ण के पास आयकै तपायमान जो सुवर्ण है तामें रत्नजडे तिनसूं प्रकाशमान जे कुण्डलहैं तिनें और वैजयन्ती वनमाला और प्रचेता को

छत्र तथा महामणि देतभई २३ हे राजन् परीक्षित्! विश्व के ईश्वर देवतान में श्रेष्ठ ब्रह्मादिक जिनकी पूजा करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कू हाथ जाने जोरि लिये ऐसी नम्र जो पृथ्वी है सो भक्तिपूर्वक श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर बुद्धि लगायके स्तुति करतभई २४ अब पृथ्वी कहे है हे देवन के देव ईश्वर! हे शङ्ख चक्र गदाके धारण करनवारे! तुमकूं नमस्कार है हे परमात्मन्! भक्तनकी इच्छाके लिये धारण कियोहै साकाररूप जिनने ऐसे जो तुमही तिनें नमस्कारहै २५ कमल है नाभिमें जिनकी ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कारहै कमलकी माला धारणकरे जे तुमहो तिनकूं नमस्कारहै कमलकी तुल्यहै नेत्र जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है कमलकी तुल्य हैं चरण जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है २६ तुम जो भगवान् वासुदेव अर्थात् समस्त प्राणी जिनमें वासकरें ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है विष्णु अर्थात् सबके हृदयमें व्यापक जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है पुरुष सम्पूर्ण कार्यन के आदि कारण जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है पूर्णज्ञानस्वरूप जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है २७ और आप अजन्मा हो या विश्वके उत्पत्तिकर्त्ता हो ब्रह्म हो याही तें अजन्मा हो अनन्तशक्ति हो याही तें विश्वके उत्पत्तिकर्त्ता हो तहां शङ्का है क्योंभी पित्रादिक हैं ते पुत्रादिकनके उत्पत्तिकर्त्ता

नमालयाऽर्पयत्प्राचेतसंछत्रमथोमहामणिम् २३ अस्तौषीदथविश्वेशंदेवीदेववरार्चितम् ॥ प्राञ्जलिःप्रणताराजन् भक्तिप्रवणयाधिया २४ ॥ भूमिरुवाच ॥ नमस्तेदेवदेवेशशङ्खचक्रगदाधर ॥ भक्तेच्छोपात्तरूपायपरमात्मन्नमोऽस्तुते २५ नमःपङ्कजनाभाय नमःपङ्कजमालिने ॥ नमःपङ्कजनेत्राय नमस्तेपङ्कजाङ्घ्रये २६ नमोभगवतेतुभ्यं वासुदेवायविष्णवे ॥ पुरुषायाऽऽदिबीजाय पूर्णबोधायतेनमः २७ अजायजनयित्रेऽस्यब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ परावरात्मन्भूतात्मन् परमात्मन्नमोऽस्तुते २८ त्वंवैसिसृक्षुरजउत्कटंप्रभो तमोनिरोधायबिभर्ष्यसंवृतः ॥ स्थानायसत्त्वंजगतोजगत्पते कालःप्रधानंपुरुषोभवान्परः २९ अहंपयोज्योतिरथानिलोनभोमात्राणिदेवामनइन्द्रियाणि ॥ कर्त्तामहानित्यखिलंचराचरं त्वय्यद्वितीयेभगवन्नयंभ्रमः ३० तस्याऽऽत्मजोऽयंतवपादपङ्कजं भीतःप्रपन्नार्त्तिहरोपसादितः ॥ तत्पालयैनंकुरुहस्तपङ्कजं शिरस्यमुष्याऽखिलकल्मषापहम् ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिभूम्याऽर्थितोवाग्भिर्भगवान्

हैं और पित्रादिकन के उत्पत्तिकर्त्ता उनके पूर्वपुरुष हैं और पूर्वपुरुषन के उत्पत्तिकर्त्ता पञ्चभूत हैं और पञ्चभूतन के अपने कर्मद्वारा जीव हैं मैं कहा कहूं हूं तहां पृथ्वी कहेहै हे कार्य्यकारणरूप! हे समस्त प्राणीनके आत्मा! हे परमात्मा! तुम सर्व्वरूपहो तुमकू नमस्कार है २८ यहां एक शङ्का है कि तीनों गुणन करिके विश्वकूं उत्पत्ति पालन संहार करें हैं और तीनों गुण मायाकेहैं और माया को क्षोभकरनवारो पुरुष है और कालनिमित्त है यह बात प्रसिद्ध है मैं कहा कहूं हूं तहां पृथ्वी कहे है—आवरण रहित जो तुमहो सो हे समर्थ! जा समय विश्वकू रच्यो चाहो हो तब तुम रजोगुण कूं धारणकरो हो और हे जगत्के पति! जगत् के पालन करिवेकूं सत्त्वगुणकूं धारण करोहो तथा नाश करिवे के निमित्त तमोगुणकूं धारण करोहो और कालरूप तुमहो मायारूप तुमहो पुरुषरूप तुमहो और सबतें न्यारेहो याते सबके उत्पन्नकर्त्ता तुमहीं हो २९ मैं पृथ्वी जल ज्योति पवन आकाश शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध देवता मन इन्द्रिय अहंकार तत्त्व या प्रकार समस्त स्थावर जंगम हे भगवन! तुम जे अद्वितीय हो तिनमें यह भ्रम है ३० हे शरणागतन के दुःखके हरनवारे! भौमासुरको पुत्र भगदत्त भयभीत होयके तुम्हारो जो चरणकमल है तामें आयके पर्यो है ताते याको पालन

करो और समस्त क्लेशनको हरनवारो जो तुम्हारो हस्तकमल है ताय याके शिरमें राखो ३१ भक्तिपूर्वक नम्रहोयके पृथ्वी ने याणी करि याप्रकार स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवानहैं सो अभयदैके सर्वसम्पत्तियुक्त जो भौमासुरको घर है तामें जातभये ३२ भौमासुरने पराक्रमकरिके हरीं ऐसी जे अनेक राजानकी सोलहहजार कन्या हैं तिनें भौमासुरके महलन में देखतभये ३३ नरन में वीर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें आये देखिकै सम्पूर्ण स्त्री मोहितहोयकै देवने प्राप्तकरे ऐसे मनोवाञ्छित पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें मनकूं वर करतिभई ३४ यह मेरो पतिहोउ यह विधाता अनुमोदनकरौ या प्रकार समस्त कन्याभावकरिकै श्रीकृष्णचन्द्र में अपनो अपनो मन लगावति भई ३५ स्वच्छहैं वस्त्र जिनके ऐसी जे कन्या हैं तिनें पालकीन में बैठारिकै द्वारकापुरी में भिजवावत भये बड़ेबड़े खजाने और रथ घोडा और जो बड़ी द्रव्य है ताय भिजवावतभये ३६ चार चारहैं दांत जिनके शीघ्रगामी श्वेतरंग ऐसे चौंसठि ऐरावत के कुलके हाथी हैं तिनें श्रीकृष्णचन्द्र भिजवावतभये ३७

भक्तिनम्रया ॥ दत्त्वाऽभयंभौमगृहं प्राविशत्सकलर्द्धिमत् ३२ तत्रराजन्यकन्यानां षट्सहस्राधिकायुतम् ॥ भौमाहृतानांविक्रम्य राजभ्योददृशेहरिः ३३ तंप्रविष्टंस्त्रियोवीक्ष्य नरवीरंविमोहिताः ॥ मनसावव्रिरेऽभीष्टं पतिंदैवोपसादितम् ३४ भूयात्पतिरयंमह्यंधातातदनुमोदताम् ॥ इतिसर्वाः पृथक्कृष्णे भावेनहृदयंदधुः ३५ ताःप्राहिणोद्द्वारवतींसुमृष्टविरजोऽम्बराः ॥ नरयानैर्महाकोशान्रथाश्वान्द्रविणंमहत् ३६ ऐरावतकुलेभांश्च चतुर्दन्तांस्तरस्विनः ॥ पाण्डुरांश्चचतुःषष्टिं प्रेषयामासकेशवः ३७ गत्वासुरेन्द्रभवनंदत्त्वाऽदित्यैचकुण्डले ॥ पूजितस्त्रिदशेन्द्रेण सहेन्द्राण्याचसभार्यया ३८ चोदितोभार्ययोत्पाट्य पारिजातंगरुत्मति ॥ आरोप्यसेन्द्रान्विबुधान्निर्जित्योपानयत्पुरम् ३९ स्थापितःसत्यभामाया गृहोद्यानोपशोभनः ॥ अन्वगुर्भ्रमराःस्वर्गात्तद्गन्धासवलम्पटाः ४० ययाचआनम्यकिरीटकोटिभिः पादौस्पृशन्नच्युतमर्थसाधनम् ॥ सिद्धार्थएतेनविगृह्यतेमहानहोसुराणांचतमोऽधिगाढ्यताम् ४१ अथोमुहूर्त्तएकस्मिन्नानागारेषुताःस्त्रियः ॥ यथोपयेमेभगवांस्तावद्रूपधरोऽव्ययः ४२ गृहेषुतासामनपाय्यतर्क्यकृन्निरस्तसाम्यातिशयेष्ववस्थितः ॥

इन्द्रलोक में जायकै अदिति कू कुण्डल दिये तब इन्द्राणी सहित इन्द्रने सत्यभामासहित श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजाकरी ३८ सत्यभामा ने श्रीकृष्णचन्द्र सूं कही तब कल्पवृक्षकूं उखारि गरुड़ के ऊपर धरिके इन्द्रसहित देवतानकू जीतिकै द्वारकापुरी में आवत भये ३९ सत्यभामा के महलके बगीचाकूं शोभायमान करै ऐसो कल्पवृक्ष बगीचा में लगावतभयो ताकी गन्ध सूंघिबे के निमित्त स्वर्गसूं चलिके भौंरा आवत भये ४० किरीटन के जे अग्रभागहैं तिनें चरणन में लगायके नमस्कार करिकै सम्पूर्ण अर्थके सिद्ध करनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनसूं विनती करतभयो तब सिद्धभयेहैं मनोरथ जाके ऐसो इन्द्र श्रीकृष्ण के संग युद्ध करनभयो देवतानकूं बड़ो अज्ञानहै ये अपने कू जयवानेहैं तिनें धिक्कार है ४१ याकेपीछे एकही मुहूर्तमें सोलहहजार एकसौ आठ महल हैं तिनमें सर्वत्र परिपूर्ण ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो जितनी स्त्रीहैं उतनेही स्वरूप धरिकै सबनकूं यथायोग्य ब्याहतभये ४२ पुरुषन के विचार में न आवैं ऐसे कर्म हैं तिनकूं करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो और गृहस्थन के घर हैं उनकी बराबरि नहीं है तो अधिक कहाँ तें होइंगे ऐसे जो रानीन के घर हैं तिनमें सर्वदा रहिकै अपने स्वरूप के आनन्द सूं परिपूर्णहैं तथापि गृहस्थ के धर्म कर्मकूं

करत जैसे साधारण गृहस्थ तैसे लक्ष्मी के अंश जे स्त्री हैं तिनके सङ्ग रमण करतभये ४३ ब्रह्मादिक देवता जिनके मार्ग कूं नहीं जानें ऐसे जे लक्ष्मी के पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं या प्रकार पति पायकै बढ्यो जो आनन्द है तासूं स्नेहभरी हँसनि चितवनि है ताय और हास्य चितवनिपूर्वक नवीन सङ्गम है ताय और नवीन संगम में बोलनि है ताय और ता बोलनि में लाज है ताय सेवन करतिभई ४४ एक एक रानी के पास सौ सौ दासी हाथ जोरे ठाढ़ी हैं तथापि सन्मुख जायकै लिवाइलाइवो आसन बिछायवो सुन्दर पूजा-करनी चरणधोवनो बीरी लगावनो चरण दाबनो पङ्खा करनो अतर अरगजा लगाइवो पुष्प चढ़ावनो केशन को सुधारिवो शय्या बिछावनो स्नान करावनो भेंट को धरिवो इनकरिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवा आपही करतीभई ४५ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थचन्द्रिकायांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपारिजातहरणनरकवधोनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(अथषष्टितमेकृष्ण· परिहासेनरुक्मिणीम् ॥ कोपयित्वाततःप्रेमकलहेतामसान्त्वयत् १ रामारामजनानन्दमहोदयविडम्बनैः ॥ रुक्मिण्या·प्रेमकलहच्छद्मनैश्वर्यमीर्य्यते २ साठवें अध्याय में

रेमेरमाभिर्निजकामसंप्लुतोयथेतरोगार्हकमेधिकांश्चरन् ४३ इत्थंरमापतिमवाप्यपतिंस्त्रियस्ताब्रह्मादयोऽपिनविदुःपदवींयदीयाम् ॥ भेजुर्मुदाऽविरतमेधितयाऽनुरागहासावलोकनवसङ्गमजल्पलज्जाः ४४ प्रत्युद्गमासनवरार्हणपादशौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ॥ केशप्रसारशयनस्नपनोपहार्यैर्दासीशताअपिविभोर्विदधुःस्मदास्यम् ४५इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपारिजातहरणनरकवधोनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः५९॥

श्रीशुकउवाच ॥ कर्हिचित्सुखमासीनं स्वतल्पस्थंजगद्गुरुम् ॥ पतिंपर्य्यचरद्भैष्मी व्यजनेनसखीजनैः १ यस्त्वेतल्लीलयाविश्वं सृजत्यत्त्यवतीश्वरः ॥ सहिजातःस्वसेतूनां गोपीथाययदुष्वजः २ तस्मिन्नन्तर्गृहेभ्राजन्मुक्तादामविलम्बिना ॥ विराजितेवितानेनदीपैर्मणिमयैरपि ३ मल्लिकादामभिःपुष्पैर्द्विरेफकुलनादिते ॥ जालरन्ध्रप्रविष्टैश्चगोभिश्चन्द्रमसोऽमलैः ४ पारिजातवनामोदवायुनोद्यानशालिना ॥ धूपैरगुरुजैराजन्जालरन्ध्रविनिर्गतैः ५

कृष्णजी परिहास सूं रुक्मिणीजी को कोपकराकर फिर प्रेमकलह में तिनको शान्त करते भये १ रामाराममहानन्द विडम्बनों सों रुक्मिणीजी के प्रेमकलह के छद्म सूं ऐश्वर्य वर्णित है २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! काहूसमय एक शय्यापै सुखपूर्वक बैठे ऐसे जगत् के गुरु अपने पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें भीष्मक राजा की पुत्री रुक्मिणी सखीनसहित चमर करिकै सेवन करतिभई १ जो अजन्मा भगवान् लीला करिकै या विश्वकू उत्पन्न सहार पालन करे हैं वेभगवान् अपनी धर्ममर्यादानकी रक्षा करिवे के निमित्त यादवन में आयके प्रकट होतभये २ अब वर और शय्या को वर्णन करे हैं प्रकाशमान मोतीनकी झालरि जामें लटकै ऐसो चँदोवा तन्यो है तासूं प्रकाशमान है और मणिन के दीपक धरे हैं तिन सूं प्रकाशमान है ३ चमेली की माला है तिनसूं शोभायमान और फूल हैं तिनमें भौंरान के समूह गुञ्जत हैं जारी झरोकान में होयकै आई जे चन्द्रमाकी निर्मल किरण तिनसूं शोभायमान ४ बागीचा करिकै शोभायमान ऐसे कल्पवृक्षकी सुगन्ध है तासूं शोभायमान जारी झरोकान में होयकै निकसी ऐसी अगर की धूप हैं तिनसूं शोभायमान ऐसो जो महल है ता महल के भीतर शय्या बिछी है तापै दूध के

फेनकी तुल्य कोमल श्वेत जो विछौना विछो है ताके ऊपर सुखपूर्वक बैठे ऐसे जगत् के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र तिनें रुक्मिणी सेवन करतिभई ५। ६ हीराकी डॉड़ी जाकी ऐसो जो चमर ताय सखी के हाथ मेंते लैके श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर ढोरै ऐसी जो रुक्मिणी है सो या प्रकार ईश्वर को सेवन करतभई ७ रुक्मिणी श्रीकृष्ण के पास मणिन के जड़ाऊ नूपुर हैं तिनसूं झनत्कार शब्द करति सुन्दर लगतिभई कैसी रुक्मिणी है ताको वर्णन करे हैं अंगुरीन में मुंदरीनकूं पहिरे और पहुँचे में कड़ूला हैं हाथ में जड़ाऊ डॉड़ी को चँवर है सारी के छोर सूं ढके जे कुच हैं तिनमें केसरि लगी है तासूं अरुण जो मोतीन को हार है ताकूं कटिमें पहिरे जो बड़े मोलकी कोंधनी तासूं शोभायमान है ८ लीला करिकै धारण करयो है देह जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तिनके योग्य है रूप जाको और नहीं है आप विना गति जाकी ऐसी रूपवती लक्ष्मी जो रुक्मिणी है ताय देखिकै प्रसन्न होय मुसिक्यायकै श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो अलकें कुण्डल धुकधुकी इनसूं शोभायमान जो मुख

पयःफेननिभेशुभ्रे पर्यङ्केकशिपूत्तमे ॥ उपतस्थेसुखासीनं जगतामीश्वरंपतिम् ६ वालव्यजनमादाय रत्नदण्डंसखीकरात् ॥ तेनवीजयतीदेवी उपासां चक्रईश्वरम् ७ सोपाच्युतंक्वणयतीमणिनूपुराभ्यां रेजेऽङ्गुलीयवलयव्यजनाग्रहस्ता ॥ वस्त्रान्तगूढकुचकुङ्कुमशोणहारभासानितम्बधृतयाचपरार्ध्यकाञ्च्या ८ तांरूपिणीश्रियमनन्यगतिंनिरीक्ष्य यालीलयाधृततनोरनुरूपरूपा ॥ प्रीतःस्मयन्नलककुण्डलनिष्ककण्ठवक्त्रोल्लसत्स्मितसुधांहरिराबभाषे ६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ राजपुत्रीप्सितासूपैर्लोकपालविभूतिभिः ॥ महानुभावैःश्रीमद्भी रूपौदार्यबलोर्जितैः १० तान्प्राप्तानर्थिनोहित्वा चैद्यादीन्स्मरदुर्मदान् ॥ दत्ताभ्रात्रास्वपित्राच कस्मान्नोववृषेऽसमान् ११ राजभ्योबिभ्यतःसुभ्रूः समुद्रंशरणंगतान् ॥ बलवद्भिःकृतद्वेषान् प्रायस्त्यक्तनृपासनान् १२ अस्पष्टवर्त्मनांपुंसामलोकपथमीयुषाम् ॥ आस्थिताःपदवींसुभ्रूःप्रायःसीदन्तियोषितः १३ निष्किञ्चनावयंशश्वन्निष्किञ्चनजनप्रियाः ॥ तस्मात्प्रायेणनह्याढ्या मांभजन्तिसुमध्यमे १४ ययोरात्मसमंवित्तं जन्मैश्वर्याकृतिर्भवः ॥ तयोर्विवाहोमैत्रीच नोत्तमाधमयोःक्वचित् १५ वैदर्भ्येतद

है तामें मन्द मन्द मुसिकाय जो रुक्मिणी हैं तासूं बोलतभये ६ अब श्रीवासुदेवजी कहे हैं हे भीष्मराजाकी पुत्री रुक्मिणी! इन्द्र कुबेर वरुणकी तुल्य है वैभव जिनके बड़े हैं प्रभाव रूप उदारता बल जिनमें ऐसे जे राजा हैं तिनने तुम्हारी चाहनाकरी १० बड़ी चाहना जिनके कामदेव सूं पीड़ित ऐसे शिशुपाल सूं आदिलैके राजा तुम्हारे लेबेके लिये आये तिनें छोड़िकै तुम्हारी बराबरि करिबे के नहीं ऐसे हमहे तिनें कौन कारणतें व्याहति भई और तुम्हारो भय्या पिता उनें दैभी चुक्यो हो ११ हे सुभ्रु! अर्थात् सुन्दरहैं भ्रुकुटी जाकी राजानतें हम डरपैं हैं समुद्रको आयकै शरणो लियो है जोरावरन ते शत्रुताकी है बहुधा राजसिंहासन हूं छोड़ि दियो है १२ नहीं जानिबे में आवै है मार्ग्ग जिनको ऐसी स्त्रीनके कहे में न चलैं ऐसे पुरुषनको जे स्त्री हाथ पकरे हैं अर्थात् व्याही जाय हैं हे सुभ्रु! अर्थात् सुन्दर हैं भ्रुकुटी जाकी ऐसी रुक्मिणी वे स्त्री बहुधा दुःखित होय हैं १३ और हम निष्किञ्चन हैं और निष्किञ्चनजनकूं मैं प्यारो हौं ता कारण हे सुमध्यमे रुक्मिणी! जो कोई धनवारे हैं ते हम दरिद्री होय जायँगे या भयतें बहुधा मेरो भजन नहीं करे हैं १४ जिनके बराबरि को धन है बराबरि को जन्म है बराबरि को ऐश्वर्य है और बराबरि को रूप जाति है और सदा

जिनको एकसों निर्वाह होय है तिनकोही विवाह और मित्रता होयहै छोटे बड़े को कदाचित् नहीं होय है १५ हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री रुक्मिणी ! नहीं है बड़ो विचार जाके ऐसी तू है तानें बराबरि केनको ब्याहहोय है यह बात जाने बिना गुणन करिकै हीन जो हमहैं तिनकूं वरोहै परन्तु तुम कहाकरो भिक्षुक नारदादिकन ने हमारी झूंठी बड़ाई करी तासूं तुम्हारे मन में आइगई १६ अबहूं तुम अपनी बराबरि को क्षत्रियहोय ताको हाथ पकरिलेउ जा क्षत्रिय तें या लोक परलोकके मनोरथन कूं पावोगी १७ रुक्मिणी कहेहैं–तुम क्यों ले आयेहो–तहां श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं–हे वामोरु ! शिशुपाल शाल्व जरासन्ध दन्तवक्र कूं आदि लैके जे राजा हैं ते मोसूं सब शत्रुता करे हैं तेरो बड़ो भय्या रुक्मभी वैर करे है १८ हे मंगलरूपिणी ! पराक्रम के मद करिके आंधरे गर्व्वन्त जे राजा हैं तिनको गर्व्व दूरि करिवे के निमित्त तब तोकूं लै आयोहों और असाधुनको तेजहै ताकू मैं हरिलेउं हूं १९ हम घरमें देहमें उदासीनहैं हमारे स्त्रीकी पुत्रकी द्रव्यकी चाहना नहींहै आत्मा

विज्ञाय त्वयादीर्घसमीक्षया ॥ वृतावयंगुणैर्हीना भिक्षुभिःश्लाघितामुधा १६ अथाऽऽत्मनोऽनुरूपंवै भजस्वक्षत्रियर्षभम् ॥ येनत्वमाशिषःसत्याइहामुत्रच लप्स्यसे १७ चैद्यशाल्वजरासन्धदन्तवक्त्रादयोनृपाः ॥ ममद्विषन्तिवामोरुरुक्मीचापितवाग्रजः १८ तेषांवीर्यमदान्धानां दृप्तानांस्मयनुत्तये ॥ आनीताऽसिमयाभद्रे तेजोऽपहरताऽसताम् १९ उदासीनावयंनूनं नस्त्र्यपत्यार्थकामुकाः ॥ आत्मलब्ध्याऽऽस्महेपूर्णा गेहयोर्ज्योतिरक्रियाः २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एतावदुक्त्वाभगवानात्मानंवल्लभामिव ॥ मन्यमानामविश्लेषात्तद्दर्पघ्नउपारमत् २१ इतित्रिलोकेशपतेस्तदाऽऽत्मनः प्रियस्यदेव्यश्रुतपूर्वमप्रियम् ॥ आश्रुत्यभीताहृदिजातवेपथुश्चिन्तांदुरन्तांरुदतीजगामह २२ पदासुजातेननखारुणश्रिया भुवंलिखन्त्यश्रुभिरञ्जनासितैः ॥ आसिञ्चतीकुङ्कुमरूषितौस्तनौ तस्थावधोमुख्यतिदुःखरुद्धवाक् २३ तस्याःसुदुःखभयशोकविनष्टबुद्धेर्हस्ताच्छ्लथद्वलयतोव्यजनंपपात ॥ देहश्चविक्लवधियःसहसैवमुह्यन्रम्भेववायुविहताप्रविकीर्य्यकेशान् २४ तद्दृष्ट्वाभगवान्कृष्णः प्रियायाःप्रेमबन्धनम् ॥ हास्यप्रौढिमजानन्त्याः करुणःसोऽन्वकम्पत २५ पर्य्यङ्कादवरु

के आनन्दसूं सदा पूर्ण रहे हैं ज्योति की तुल्य साक्षीमात्र क्रिया रहित वर्तेहैं २० अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! रुक्मिणी के मनके हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो कभऊं न्यारी न होय तातें अपनपेकों बहुत वल्लभा मानैं ऐसी रुक्मिणी तें इतनो कहिकै चुप होतभये २१ या प्रकार त्रिलोकी केईश्वर पालन करनवारे अपने प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र तिनको कभऊं न सुन्यो ऐसो कुप्यारो वचनहै ताय श्रवण करिकै हृदयमें भयोहै कम्प जाके ऐसी रुक्मिणी देवी है सो भयभीत होयकै रोदन करति बड़ी चिन्ताकूं पावतिभई २२ नख करिकै अरुण है कान्ति जाकी ऐसो जो सुकुमार चरण है तासूं पृथ्वी कूं लिखै है और अञ्जन सू श्याम जे आंसू आंखिन में तें चलै हैं तिनसूं केसरि जिनमें लगी ऐसे स्तननकूं भिजोवत नीचे कूं है मुख जाको अत्यन्त दुःखसूं रुकी है वाणी जाकी ऐसी रुक्मिणी ठाढी चुपहोति भई २३ अप्रिय वचन सुन्यो तासूं भयो जो दुःख और त्यागि देनेकी शङ्काकरिकै भयो जो शोकहै तिनसूं गईहै बुद्धि जाकी ऐसी जो रुक्मिणीहै ताके ढीले भये हैं कङ्कण जामें ऐसो जो हाथ है ताते चमर गिरतभयो व्याकुल है बुद्धिजाकी ऐसी रुक्मिणीकी देह शीघ्र मोहितहोयकै केशनकूं फैलायकै जैसे केलाको वृक्ष गिरै है या प्रकार गिरत

यइ २४ हास्य की जो ढिठाई है ताय न जाने ऐसी जो प्यारी रुक्मिणी है ताको प्रेमबन्धन देखिके करुणा जिनके आइगई ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कृपा करत भये २५ चारि हैं भुजा जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र पलँग पैतें शीघ्र नीचे उतरिके रुक्मिणी कूं उठाइके केशनकूं सम्हारिके मुखकूं कमल की तुल्य जो कोमल हाथ है तासूं पोंछत भये २६ आंसू जिनमें भरिरहे ऐसे नेत्रनकूं और शोककरिके ताडित जे स्तन हैं तिनें पोंछिके हे राजन् परीक्षित्! नहीं है और विषय जाके ऐसी पतिव्रता रुक्मिणी है ताय भुजानसूं आलिङ्गन करिके हासी जो करी तासूं भ्रमायमान है चित्त जाको और कठोर हासी योग्य नहीं कृपणा ऐसी जो रुक्मिणी है ताय सत्पुरुषनकी गति समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र समझावत भये २७।२८ तब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहें हे विदर्भ देशके राजाकी पुत्री! मैंनें ईर्षा मति करो तू मेरे बिना और काहूकू नहीं जानेहै यह मैं जानूं हूं हे सुन्दरी! तू कहा कहैगी यह सुनिवे के लिये हासी करीही २९ स्नेहके कोप करिके फरकै हैं ओठ जामें और चञ्चल कटाक्ष करत

ह्याशु तामुत्थाप्य चतुर्भुजः ॥ केशान्समुह्य तद्वक्त्रं प्रामृजत्पद्मपाणिना २६ प्रमृज्याश्रुकले नेत्रे स्तनौ चोपहतौ शुचा ॥ आश्लिष्य बाहुना राजन्ननन्यविषयां सतीम् २७ सान्त्वयामास सान्त्वज्ञः कृपया कृपणां प्रभुः ॥ हास्यप्रौढिभ्रमच्चित्तामतदर्हां सतां गतिः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मा मा वैदर्भ्यसूयेथा जाने त्वां मत्परायणाम् ॥ त्वद्वचः श्रोतुकामेन क्ष्वेल्याचरितमङ्गने २९ मुखञ्च प्रेमसंरम्भस्फुरिताधरमीक्षितुम् ॥ कटाक्षेपारुणापाङ्गं सुन्दरभ्रुकुटीतटम् ३० अयं हि परमो लाभो गृहेषु गृहमेधिनाम् ॥ यन्नर्मैरीयते यामः प्रियया भीरु भामिनि ३१ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ सैवं भगवता राजन् वैदर्भी परिसान्त्विता ॥ ज्ञात्वा तत्परिहासोक्तिं प्रियत्यागभयं जहौ ३२ बभाषे ऋषभं पुंसां वीक्षन्ती भगवन्मुखम् ॥ सव्रीडहासरुचिरस्निग्धापाङ्गेन भारत ३३ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ नन्वेवमेतदरविन्दविलोचनाऽऽह यद्वै भवान्भगवतोऽसदृशी विभूम्नः ॥ क्व स्वे महिम्न्यभिरतो भगवांस्त्र्यधीशः क्वाहं गुणप्रकृतिरज्ञगृहीतपादा ३४ सत्यं भयादिव गुणेभ्य उरुक्रमान्तः शेते समुद्र उपलम्भनमात्र आत्मा ॥ नित्यं कदिन्द्रियगणैः कृतविग्रहस्त्वं त्वत्सेवकैर्नृपपदं विधुतं तमोऽन्धम् ३५ त्वत्पादपद्ममकरन्दजुषां मुनीनां

टाक्ष जामें और टेढी हैं भ्रकुटी जामें ऐसो जो मुख है ताकी शोभा देखिवे के लिये हांसी करीही ३० हे डरपोकनी! अपनी प्यारी के संग हांसी करिके समय व्यतीत करनो गृहस्थीनकूं घर में बडो लाभ है ३१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने शान्त करी ऐसी जो विदर्भ देश के राजा की पुत्री रुक्मिणी है सो प्यारेने मोतें हांसी करी है यह जानि के और प्यारो मोकूं त्यागि देइगो यह जो मन में भयो ताय ताकूं त्यागति भई ३२ हे भरत वंशोत्पन्न राजन् परीक्षित्! लाज भरी हँसनि मनोहर स्निग्ध कटाक्षनसूं सुन्दर जो मुख है ताय देखत पुरुषन में श्रेष्ठ कृष्णचन्द्र तिनसूं बोलति भई ३३ श्रीकृष्णचन्द्र ने जो अपने में अवगुण कहे तिनकूं गुण करिके रुक्मिणी वर्णन करे है प्रथम श्रीकृष्णने कही तुम हमारी बराबरि की नहींहौ हमारो हाथ कैसे पकर्यो ताको उत्तर रुक्मिणी देइ है हे कमलदललोचन! तुम हो तिनकी बराबरि मैं नहीं हूं इस प्रकारसे ऐश्वर्ययुक्त जो तुमहो तिनकी बात सत्य है अपनी महिमा करिकै आप आत्मा तीनों ब्रह्मादिकनके ईश्वर ऐसे तुमहो और सकामपुरुषन ने जाके पाँव पकरे ऐसी सत्त्वगुणी तमोगुणी रूप जो माया मैं हूं सो कहा मो में आप में बडो अन्तर है ३४ और जो

कृष्णने कही कि राजान के भयके मारे समुद्र में आयके रहेहैं ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै हे उरुक्रम! अर्थात् बड़ो है पराक्रम जिनको यातें तुमकूं भय नहीं है यह कहो यह बात सत्यहै सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण हैं तेही राजा हैं तिनके भयतेही मानों समुद्रकी जैसे थाह नहीं है ऐसे हृदयकी बातजानिबे में नहीं आवे है ऐसो जो प्राणीन को हृदय है तामें चैतन्यघन जो तुमहौ सो निश्चलता करिकै प्रकाशोहौ और जोरावरन नें हमने वैरकस्यो है यह जो तुमने कही सोभी सत्यहै क्योंकि विषयन में लगी हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे पुरुषन ने तुमतें विरोध कस्यो है उनमें तुम्हारी अप्रतीतिहै और जो श्रीकृष्णने कही हमारे राज्य आसन नहीं है ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै बहुत जामें अविवेक ऐसो जो राज्यआसन है सो तुम्हारे सेवक छोड़ि देईहैं तुमने छोड्यो यामें कहा कहनोहै ३५ और जो श्रीकृष्णने कही कि हमारो मार्ग जानिबे में नहीं आवै है और स्त्रीनके अधीन मैं नहीं हूं ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै तुम्हारे चरणारविन्द के मकरन्द को सेवनकरैं ऐसे जे मुनिहैं तिनको मार्ग पशुरूप जे मनुष्यह तिन पै प्रकट नहीं होयहै और जानिबे में नहीं आवै है तुम्हारो मार्ग जानिबे में न आवै यामें कहा आश्चर्य है हे व्यापक! तुम्हारे अनुवर्ती जे भक्तहैं तिनकी चेष्टा न्यारी

वर्त्मास्फुटंनृपशुभिर्ननुदुर्विभाव्यम् ॥ यस्मादलौकिकमिवेहितमीश्वरस्य भूमंस्तवेहितमथोअनुयेभवन्तम् ३६ निष्किञ्चनोननुभवान्नयतोऽस्तिकिञ्चिद्यस्मैबलिंबलिभुजोऽपिहरन्त्यजाद्याः ॥ नत्वाविदन्त्यसुतृपोऽन्तकमाढ्यतान्धाःप्रेष्ठोभवान्बलिभुजामपितेऽपितुभ्यम् ३७ त्वंवैसमस्तपुरुषार्थमयःफलात्मायद्वाञ्छयासुमतयोविसृजन्तिकृत्स्नम् ॥ तेषांविभोसमुचितोभवतःसमाजः पुंसःस्त्रियाश्चरतयोःसुखदुःखिनोर्न ३८ त्वंन्यस्तदण्डमुनिभिर्गदितानुभावआत्माऽऽत्मदश्चजगतामितिमेवृतोऽसि ॥ हित्वाभवद्भ्रुवउदीरितकालवेगध्वस्ताशिषोऽब्जभवनाकपतीन्कुतोऽन्ये ३९ जाड्यंवचस्तवगदाग्रजयस्तुभूपान्विद्राव्यशार्ङ्गनिनदेनजहर्थमांत्वम् ॥ सिंहोयथास्वबलिमीशपशून्स्वभागंतेभ्योभयाद्यदुदधिंशरणंप्रपन्नः ४० यद्वाञ्छयानृपशिखामणयोऽङ्गवैन्यजाय

है तुम्हारी न्यारी है यामें कहा आश्चर्य है ३६ और निष्किञ्चन जे पुरुषहैं तिनकूं हम प्रिय लगेहैं और धनिक पुरुषहैं ते हम दरिद्री होयजायँगे या डरके मारे हमारो भजन नहीं करे हैं यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै जिनतें कछु न्यारो नहीं ऐसे तुम निष्किञ्चन हौ दरिद्रतारूपी निष्किञ्चनता तुममें नहीं बने है प्रजान तें भेंट लेउ ऐसे जे ब्रह्मादिक देवता ते तुमकू भेंट देइहैं प्राणनकूं पोषणकरैं धनाढ्यताके मद करिकै आँधरे ऐसे जे पुरुषहैं ते कालरूप जो तुमहौ तिनकूं नहीं जाने है ब्रह्मादिकनकूं तुम प्यारे हौ ३७ जिनके बराबरिको जन्महै तिनको विवाह और मित्रता होयहै यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै तुम सम्पूर्ण पुरुषार्थरूपहौ परमानन्दरूपहौ सुन्दरहै बुद्धि जिनकी वे पुरुष तुम्हारी प्राप्तिके लिये सब वस्तु त्यागिदेइहैं हे प्रभो! उनपुरुषन को और तुम्हारो सेवा सेवकभावहै सुख दुःखसूं व्याकुल परस्पर ऐसे स्त्री पुरुषहैं तिनके स्वामी सेवकभाव नहीं है ३८ और भिखारीनने झूंठी बड़ाईकरी है यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै छूट्यो है कालको दण्ड जिनतें ऐसे जे मुनीश्वरहैं तिनने गायो है प्रभाव जिनको ऐसे जो जगत्के आत्मा और भक्तनकूं मोक्षके देनवारे यह जानिकै मैंने तुमैं वरो है कहा करिकै तुम्हारी भ्रुकुटी को जो चढ़ाइबो तासूं प्रकट भयो जो काल ताको जो वेग तासूं दूरि गये हैं मनोरथ जिनके ऐसे जे ब्रह्मादिक हैं तिनकूं त्यागि कै तुम्हें वरो है और तुच्छन की कहा चलाई है ३९ अपने

में मेरो स्नेह होय तब श्रीकृष्ण ने कही स्नेह भये ते तोकूं कहा लाभ होइगो ताको उत्तर देइहै तुम्हारे चरणारविन्द में अनुरागहै सोई बड़ो लाभहै और जा समय या विश्वके बढ़ायवे के लिये रजोगुण कूं अङ्गीकार करिकै मो माया की ओर देखोगे वही बड़ो अनुग्रह है ४६ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने जे जे बातें कहीं तिनको उत्तर दैके प्रसन्न है चित्त जाको ऐसी रुक्मिणी मन्त्र सो कहे है हे मधुसूदन ! तुमने कही अपनी बराबरि के क्षत्रियको भजउ हाथ पकरि लेउ यह मैं मिथ्या नहीं मानूं हूं जैसे काशी के राजा की पुत्री अम्बा अम्बिका अम्बालिका ये तीनों कन्यानमें तें अम्बा कन्याकी शाल्वराजा में जैसे रतिभई तैसे मेरी रति तौ तुम्हारे विषेही भई है ४७ और हे अच्युत ! विवाहिता जो व्यभिचारिणी स्त्री है वाको मन नवीन पुरुषन में जात है विवेकी पुरुष ऐसी खोंटी स्त्री कूं राखे नहीं है कदाचित् राखै तौ या लोक और परलोक में भ्रष्टहोय है ४८ अब श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे राजपुत्री रुक्मिणी ! तुम्हारी बात सुनिवे के लिये मैंने ऐसी कही है मेरे वचनको

द्व्यय उपात्तरजोऽतिमात्रो मामीक्षसे तदुहनः परमानुकम्पा ४६ नैवालीकमहंमन्ये वचस्ते मधुसूदन ॥ अम्बाया इव हि प्रायः कन्यायाः स्याद्रतिः क्वचित् ४७ व्यूढायाश्चापि पुंश्चल्या मनोऽभ्येति नवं नवम् ॥ बुधोऽसतीं न बिभृयात्तां बिभ्रदुभयच्युतः ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साध्व्येतच्छ्रोतुकामैस्त्वं राजपुत्रि प्रलम्भिता ॥ मयोदितं यदन्वात्थ सर्वं तत्सत्यमेव हि ४९ यान्यान्कामयसे कामान् मय्यकामाय भामिनि ॥ सन्ति ह्येकान्तभक्तायास्तव कल्याणि नित्यदा ५० उपलब्धं पतिप्रेम पातिव्रत्यञ्च तेऽनघे ॥ यद्वाक्यैश्चाल्यमानाया न धीर्मय्यपकर्षिता ५१ ये मां भजन्ति दाम्पत्ये तपसा व्रतचर्यया ॥ कामात्मानोऽपवर्गेशं मोहिता मम मायया ५२ मां प्राप्य मानिन्यपवर्गसम्पदं वाञ्छन्ति ये सम्पद एव तत्पतिम् ॥ ते मन्दभाग्या निरयेऽपि ये नृणां मात्रात्मकत्वान्निरयः सुसङ्गमः ५३ दिष्ट्या गृहेश्वर्य्यसकृन्मयि त्वया कृताऽनुवृत्तिर्भवमोचनी खलैः ॥ सुदुष्करासौ सुतरां दुराशिषो ह्यसुम्भराया निकृतिं जुषः स्त्रियाः ५४ न त्वादृशीं प्रणयिनीं गृहिणीं गृहेषु पश्यामि मानिनि यया स्वविवाहकाले ॥ प्राप्तान्नृपान्नवगणय्य रहोहरो मे प्रस्थापितो द्विज उपश्रुतसत्कथस्य ५५ भ्रातुर्विरूपकरणं युधि निर्जि

जो जो तुमने उत्तर कह्यो सो सब सत्य है ४६ हे भामिनी ! हे मङ्गलरूपिणी ! जो जो वस्तुकी तुम चाहना करो हो सो सो एकान्त भक्तिहै जाकी ऐसी जो तू है ता तेरे नित्य बनी रहे हैं ५० हे निष्पाप रुक्मिणी ! तुमने पतिमें प्रेमपायो और पतिव्रताको जो धर्म्म है सो तुमने पायो वचनन करिकै डिगाई तथापि तुम्हारी बुद्धि सो मोतें चलायमान न भई ५१ विषयन में है आत्मा और मन जिनको ऐसे पुरुष तपस्या करिकै ब्रह्मचर्य्य करिकै स्त्री पुरुषके भोग को जो सुख है ताके लिये मेरो भजन करे हैं वे पुरुष मेरी माया तें मोहितहैं अर्थात् भूलि रहेहैं ५२ हे मानिनी ! मोक्षसहित सम्पूर्ण सम्पत्तिनको देनवारो मैं हूं ताय पायकै विषयनकी चाहना करे हैं विषयनको देनवारो मैं हूं ताकी चाहना नहीं करे है वे पुरुष अभागे हैं जो विषय मनुष्यन कूं कुत्तानकी सूकरन की योनि में हूं मिले हैं विषयन में मन रहे हैं ५३ हे घरकी महारानी ! संसारकी छुड़ावनवारी चाहना जामें नहीं ऐसे मनकी वृत्ति तैंने मोमें लगायो खोंटो है अभिप्राय जाको याहीते अपने प्राणनको भरणपोषणकरै दूसरे कूं ठगे ऐसी जो स्त्रीहै ताके मनकी वृत्ति मोमें नहीं लगेहै ५४ हे भामिनी ! सोलहहजार एकसौ आठ महलन में तुम्हारी बराबरि प्यारकी करनवारी और

स्त्री नहीं देखूं हूं जा तैने अपने विवाह के समय आये जे राजा हैं तिनकूं त्यागिकै मेरी वात सुनिकै पाती लिखिकै मेरे पास ब्राह्मण भिजवायो ५५ युद्ध में तेरे भइया रुक्मीकूं जीतिलियो वाको शिर मूड़िकै विरूप करिदियो हो और अनिरुद्ध के विवाह में चौपरि खेलत वाकूं मार्यो यह भइया के मारिवे को दुःख हमारे त्यागिवे के भयके मारे सहार्यो और कछु न कही ऐसी ऐसी तेरी वातन ने हमको वशकरि राखे हैं ५६ मेरे बुलायवेकूं कोई जाने नहीं ऐसे एकान्ती दूत कूं मेरे पास भेज्यो जा मोकूं आयवे में विलम्ब भयो तो या विश्वकूं शून्य मानिकै और राजा मेरे योग्य नहीं है यह निश्चय करिकै देहके त्यागिवे की इच्छा करति भई यह वात तेरे विना कापै वनैहै हम तेरी कहा प्रशंसा करैं ५७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार आत्माराम जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मनुष्यन को अनुकरण करिकै हास्यकी वातैं करि करिके स्त्रीनके संग रमण करत भये ५८ समर्थ सम्पूर्ण लोकनके गुरु सवके दुःखके हरनवारे जे श्रीकृष्ण

तस्य प्रोद्वाहपर्वणिखिचतद्धमक्षगोष्ठ्याम् ॥ दुःखंसमुत्थमसहोऽस्मदयोगभीत्या नैवाब्रवीःकिमपितेनवयंजितास्ते ५६ दूतस्त्वयाऽऽत्मलभनेसुविविक्तमन्त्रः प्रस्थापितोमयिचिरायतिशून्यमेतत् ॥ मत्वाजिहासइदमङ्गमनन्ययोग्यं तिष्ठेततत्त्वयिनयंप्रतिनन्दयामः ५७॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंसौरतसंलापैर्भगवाञ्जगदीश्वरः ॥ स्वरतोरमयारेमे नरलोकंविडम्बयन् ५८ तथाऽन्यासामपिविभुर्गृहेषुगृहवानिव ॥ आस्थितोगृहमेधीयान् धर्माल्लोकगुरुर्हरिः ५९ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णरुक्मिणीसंवादोनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकैकशस्ताःकृष्णस्य पुत्रान्दशदशावलाः ॥ अजीजनन्ननवमान् पितुःसर्वात्मसम्पदा १ गृहादनपगंवीक्ष्यराजपुत्र्योऽच्युतंस्थितम् ॥ प्रेष्ठंन्यमंसतस्वंस्वंनतत्तत्त्वविदःस्त्रियः २ चार्वब्जकोशवदनायतबाहुनेत्रसप्रेमहासरसवीक्षितवल्गुजल्पैः ॥ सम्मोहिताभगवतोनमनोविजेतुंस्वैर्विभ्रमैःसमशकन्वनिताविभूम्नः ३ स्मायावलोकलवदर्शितभावहारिभ्रूमण्डलप्रहितसौरतमन्त्रशौण्डैः ॥ पत्न्यस्तुषोडशसहस्रमनङ्गबाणैर्यस्येन्द्रि

चन्द्रैं सो और रानीनके महलन में रहिकै गृहस्थनकेसे धर्म सिखावें हैं ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णरुक्मिणीसंवादोनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥ ❁ ॥

(एकषष्टितमेशौरेःपुत्रपौत्रादिसन्ततिः ॥ अनिरुद्धविवाहेचरुक्मिणोरामतोवधः १ अष्टाधिकशतद्व्यष्टसहस्रस्त्रीसमुद्भवान् ॥ कोटिशःपुत्रपौत्रादीन्हरिर्दारैरयोजयत् २ इकसठवें अध्यायमें कृष्णजीके पुत्र और पौत्रादिकोंकी सन्तति और अनिरुद्धजीके विवाह में वलदेवजी सूं रुक्मी का नाश वर्णन है १ कृष्णजी सोलहहजार एकसौ आठ स्त्रियों सं उत्पन्न करोड़न पुत्र पौत्रादिकन के विवाह कर देतेभये २) अवश्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्रकी एक एकरानी पिता श्रीकृष्णचन्द्रकी तुल्य हैं रूप गुण जिनमें ऐसे दश दश पुत्रनकूं उत्पन्न करती भई १ घरते कहूं वाहर जायँ नहीं अपने पासरहैं आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं राजानकी पुत्री देखिकै और श्रीकृष्ण आत्माराम हैं या वात कूं नहीं जानिकै अपनो अपनो प्यारो मानति भई २ व्यापक जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं तिनको कमलकोश अर्थात् मध्य ताकी तुल्य है सुकुमार मुख वड़ी भुजा वड़े नेत्र प्रेमसहित हँसनि रसभरी चितवनि मनोहर वोलनि इत्यादिकनसूं मोहित जे स्त्री

है ते अपने अनेक विलासन करिकै पूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको मन मोहित करिवे कूं नहीं समर्थ होति भई ३ गूढ हँसनिपूर्वक जो कटाक्षन सूं जतायो अभिप्राय ता करिकै मनको हरनवारो जो भृकुटीरूप मण्डल है ता करिकै पठाये जे सुरतिसम्बन्धी मन्त्र हैं तिनसूं पैने जे कामदेव के बाण और जे कामशास्त्रविहित प्रसिद्ध साधन हैं तिन करिकै सोलह हजार रानी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्रके मनकूं चलायमान करिवे कूं समर्थ न होतिभई ४ ब्रह्मादिक जिनके मार्ग कूं नहीं जानें ऐसे लक्ष्मीके पति श्रीकृष्णचन्द्र कूं या प्रकार पति पाय के छिनके बढ्यो जो आनन्द तासूं स्नेहभरी हँसनि चितवनि है ताय और हास्य चितवनिपूर्वक नवीन सङ्गम है ताय और ता नवीन सङ्गममें बोलनि है ताय और बोलनिमें जो लाज है ताय सेवन करतिभई ५ एकएक रानीके सन्मुख सो सौ दासी हाथ जोरे ठाढ़ी हैं तथापि सन्मुख जायकै प्रेम करिकै लिवाय लाइवो आसन बिछायवो सुन्दर पूजन करिवो चरणधोइवो बीरी लगाइवो चरणको दाविवो पङ्खाकरिवो अतर अरगजा लगाइवो पुष्प चढावनो

यं विमथितुं करणैर्न शेकुः ४ इत्थं रमापतिमवाप्य पतिं स्त्रियस्ता ब्रह्मादयोऽपि न विदुः पदवीं यदीयाम् ॥ भेजुर्मुदाऽविरतमेधितयानुरागहासावलोकनवसङ्गम... लालसाद्यम् ५ प्रत्युद्गमासनवरार्हणपादशौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ॥ केशप्रसारशयनस्नपनोपहार्यैर्दासीशता अपि विभोर्विदधुः स्मदास्यम् ६ तासां या दश पुत्राणां कृष्णस्त्रीणां पुरोदिताः ॥ अष्टौ महिष्यस्तत्पुत्रान् प्रद्युम्नादीन्गृणामि ते ७ चारुदेष्णः सुदेष्णश्च चारुदेहश्च वीर्यवान् ॥ सुचारुश्चारुगुप्तश्च भद्रचारुस्तथाऽपरः ८ चारुचन्द्रो विचारुश्च चारुश्च दशमो हरेः ॥ प्रद्युम्नप्रमुखा जाता रुक्मिण्यां नावमाः पितुः ९ भानुः सुभानुः स्वर्भानुः प्रभानुर्भानुमांस्तथा ॥ चन्द्रभानुर्बृहद्भानुरतिभानुस्तथाऽष्टमः १० श्रीभानुः प्रतिभानुश्च सत्यभामात्मजा दश ॥ साम्बः सुमित्रः पुरुजिच्छतजिच्च सहस्रजित् ११ विजयश्चित्रकेतुश्च वसुमान्द्रविडः क्रतुः ॥ जाम्बवत्याः सुता ह्येते साम्बाद्याः पितृसम्मताः १२ वीरश्चन्द्रोऽश्वसेनश्च चित्रगुर्वेगवान्वृषः ॥ आमः शङ्कुर्वसुः श्रीमान् कुन्तिर्नाग्नजितेः सुताः १३ श्रुतः कविर्वृषो वीरः सुबाहुर्भद्र एकलः ॥ शान्तिर्दर्शः पूर्णमासः कालिन्द्याः सोमकोऽवरः १४ प्रघोषो गात्रवान्सिंहो बलः

केशनकूं सुधारिवो शय्या बिछावनो स्नान करावनो भेंटको धरिवो इन करिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवा करतिभई ६ दश दश हैं पुत्र जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णकी रानी हैं तिनमें जे आठ पटरानी प्रथम कही है तिनके प्रद्युम्न कूं आदि लैकै जे पुत्र हैं तिनें तेरेआगे कहूं हूं ७ प्रद्युम्न हैं मुख्य जिनमें गुणन में पितासूं कमती नहीं ऐसे चारुदेष्ण सुदेष्ण बलवान् चारुदेह सुचारु चारुगुप्त तैसेही भद्रचारु चारुचन्द्र विचारु चारु ये दशपुत्र श्रीकृष्णचन्द्रसूं रुक्मिणीमें उत्पन्न होतभये ८। ९ भानु सुभानु स्वर्भानु प्रभानु भानुमान् चन्द्रभानु बृहद्भानु तैसेही आठवों अतिभानु १० श्रीभानु प्रतिभानु ये दश पुत्र सत्यभामा के उत्पन्न होत भये और साम्ब सुमित्र पुरुजित् शतजित् सहस्रजित् ११ विजय चित्रकेतु वसुमान् द्रविड क्रतु ये साम्ब सूं आदि लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकी तुल्य है गुण जिनमें ऐसे दश पुत्र जाम्बवती के होत भये १२ वीरचन्द्र अश्वसेन चित्रगु वेगवान् वृष आम शंकु तथा शोभायमान वसु और कुन्ति ये दश नाग्नजिती के पुत्र होत भये १३ श्रुत कवि वृष वीर सुबाहु और भद्र है नाम जाको ऐसो एक पुत्र शान्ति दर्श पूर्णमास और इन सब सूं छोटो सोमक ये दश पुत्र कालिन्दी के होत भये १४ प्रघोष गात्रवान् सिंह बल प्रबल ऊर्द्धग महाशक्ति सह ओज

अपराजित ये दशपुत्र लक्षमणा के होतभये १५ वृक हर्ष अनिल गृध्र वर्द्धन उन्नाद महाश पावन वह्नि क्षुधि ये दश मित्रविन्दाके पुत्र होत भये १६ संग्रामजित् बृहत्सेन शूर प्रहरण अरिजित् जय सुभद्र वाम आयु सत्यक ये दश पुत्र भद्रा के उत्पन्न होत भये ये श्रीकृष्णचन्द्र की आठ रानीन के पुत्र कहे अब आठ रानीन ते न्यारी जो रोहिणी है ताके दीप्तिमान् ताम्रतप्त कूं आदि लैके पुत्र होत भये जैसे रोहिणी के पुत्र कहे ऐसेही और सोलह हजार रानीन के भी दश दश पुत्र जानिलीजै हे राजन् परीक्षित्! भोजकटपुर में रुक्मी की जो पुत्री रुक्मवतीहै तामें प्रद्युम्न जी तें बलवान् अनिरुद्ध नाम करिकै पुत्र होतभयो हे राजन् परीक्षित्! ये जो श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्रहैं तिनके पुत्र औरनाती करोड़न होत भये और श्रीकृष्ण तें जन्मे जे पुत्रहैं तिनकी सोलह हजार माता होतिभई १७।१८।१९ अब राजा परीक्षित् कहे है संग्राम के विषे श्रीकृष्णने तिरस्कार जाको करयो ऐसो रुक्मी वैरी श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी हैं तिन कूं अपनी कन्या कैसे विवाहन भयो वह तो कृष्ण के मारिवे

प्रबलऊर्द्धगः॥ माद्र्याःपुत्रामहाशक्तिः सहओजोऽपराजितः १५ वृकोहर्षोऽनिलोगृध्रोवर्द्धनोन्नादएवच॥ महाशःपावनोवह्निर्मित्रविन्दात्मजाःक्षुधिः१६ संग्रामजिद्बृहत्सेनः शूरःप्रहरणोऽरिजित्॥ जयःसुभद्रोभद्रायावामआयुश्चसत्यकः १७ दीप्तिमांस्ताम्रतप्ताद्या रोहिण्यास्तनयाहरेः॥ प्रद्युम्नाच्चानिरुद्धोभूद्रुक्मवत्यांमहाबलः १८ पुत्र्यांतुरुक्मिणोराजन् नाम्नाभोजकटेपुरे॥ एतेषांपुत्रपौत्राश्च बभूवुःकोटिशोनृप॥ मातरःकृष्णजातानां सहस्राणिच षोडश १९॥ राजोवाच॥ कथंरुक्म्यरिपुत्राय प्रादाद्दुहितरंयुधि॥ कृष्णेनपरिभूतस्तं हन्तुंरन्ध्रंप्रतीक्षते॥ एतदाख्याहिमेविद्वन् द्विषोर्वैवाहिकंमिथः २० अनागतमतीतंच वर्त्तमानमतीन्द्रियम्॥ विप्रकृष्टंव्यवहितं सम्यक्पश्यन्तियोगिनः २१॥ श्रीशुकउवाच॥ वृतःस्वयंवरेसाक्षादनङ्गोऽङ्गयुतस्तया॥ राज्ञःसमेतान्निर्जित्यजहारैकरथोयुधि २२ यद्यप्यनुस्मरन्वैरं रुक्मीकृष्णावमानितः॥ व्यतरद्भागिनेयाय सुतांकुर्वन्स्वसुःप्रियम् २३ रुक्मिण्यास्तनयांराजन् कृतवर्म्मसुतोबली॥ उपयेमेविशालाक्षीं कन्यांचारुमतींकिल २४ दौहित्रायानिरुद्धाय पौत्रींरुक्म्यददाद्धरेः॥ रोचनांबद्धवैरोऽपिस्वसुःप्रियचिकी

को उपाय करे हो हे विवेकी शुकदेवजी! शत्रुनको आपुस में विवाह कैसे भयो यह मेरे आगे वर्णन कीजिये २० जो कदाचित् कहो कि हम या बात कूं कहा जानैं ताको उत्तर राजा देइ है योगीश्वर हैं ते जो आगे होनहार है ताय और जो बीतगई है ताय और जो वर्त्तमान है ताय और जो हमारे देखिवे सुनिवे में नहीं आवै है ताय दूरि की बात है ताय और भीतिकी ओट में जो वस्तु धरी है ताय भले प्रकार देखि लेइ हैं २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! रुक्मी की पुत्री जो रुक्मवतीहै ताके स्वयंवरमें आये जे राजाहैं तिनैं जीति कै एक है रथ जिन के ऐसे अङ्गसहित जो कामदेव प्रद्युम्नजी हैं सो युद्ध में हरि कै लावत भये २२ यद्यपि रुक्मीको श्रीकृष्ण ने तिरस्कार कस्यो या वैर को स्मरण करै है तथापि बहिनि के भलो मनाइवे के लिये भानजो जो प्रद्युम्न है ताकूं अपनी कन्या देत भयो २३ श्रीकृष्णचन्द्र की सब रानीन के एक एक कन्या भई यह दिखाइवे के लिये बडी रानी जो रुक्मिणी है ताकी कन्या को विवाह कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! सुन्दरहै बुद्धि जाकी विशाल हैं नेत्र जाके ऐसी रुक्मिणी की पुत्री है ताय बलवान् जो कृतवर्मा को पुत्र है सो विवाहत भयो २४ यद्यपि वैर बँधि रह्यो है तथापि रुक्मी

अपनी बहिनि को भलो मनाइवे के कारण श्रीकृष्ण को नाती अपनो दौहितो ऐसो जो अनिरुद्ध है ताकूं अपनी रोचना नाम नातिनी कूं देत भयो नाते में विवाह करनो अधर्म है या बात कूं रुक्मी जाने भी है परन्तु स्नेह के रस्सान में बँधो है या कारण विवाहि देत भयो २५ हे राजन् परीक्षित्! ता विवाह में रुक्मिणी बलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र और साम्ब प्रद्युम्न कूं आदि लैकै श्री कृष्णचन्द्र के पुत्र हैं ते रुक्मी के भोजकटनागपुर में जात भये २६ विवाह होयचुक्यो ता पीछे कलिङ्गदेश को राजा है मुख्य जिनमें ऐसे गर्ववन्त जे राजा हैं ते रुक्मी तें बोलत भये पासेन करिकै बलदेव कूं जीति लेउ २७ हे राजन् रुक्मी! यह बलदेव पासे खेल नहीं जाने है परन्तु याकूं खेलिवे को व्यसन बडो है या प्रकार जातें कही ऐसो रुक्मी बलदेवजी कू बुलाय कै तिनके सङ्ग पासेन करिकै खेलत भयो २८ बलदेवजी सौ मोहरन को ता पीछे हजार मोहरन को फेरि दश हजार मोहरन को दाँव लगावतभये वह दाँव रुक्मी जीतत भयो ता समय कलिङ्गदेश को राजा दांत

पैया ॥ जानन्नधर्मं तद्यौनं स्नेहपाशानुबन्धनः २५ तस्मिन्नभ्युदये राजन् रुक्मिणी रामकेशवौ ॥ पुरं भोजकटं जग्मुः साम्बप्रद्युम्नकादयः २६ तस्मिन्निवृत्त उद्वाहे कालिङ्गप्रमुखा नृपाः ॥ दृप्तास्ते रुक्मिणं प्रोचुर्बलमक्षैर्विनिर्जय २७ अनक्षज्ञो ह्ययं राजन्नपि तद्व्यसनं महत् ॥ इत्युक्तो बलमाहूय तेनाक्षै रुक्म्यदीव्यत २८ शतं सहस्रमयुतं रामस्तत्राऽऽददे पणम् ॥ तं तु रुक्म्यजयत्तत्र कालिङ्गः प्राहसद्बलम् ॥ दन्तान्सन्दर्शयन्नुच्चैर्नामृष्यत्तद्धलायुधः २९ ततो लक्षं रुक्म्यगृह्णाद्ग्लहं तत्राजयद्बलः ॥ जितवानहमित्याह रुक्मी कैतवमाश्रितः ३० मन्युनाक्षुभितः श्रीमान् समुद्र इव पर्वणि ॥ जात्यारुणाक्षोऽतिरुषा न्यर्बुदं ग्लहमाददे ३१ तं चापि जितवान्रामो धर्मेण च्छलमाश्रितः ॥ रुक्मी जितं मयात्रेमे वदन्तु प्राश्निका इति ३२ तदाऽब्रवीन्नभोवाणी बलेनैव जितो ग्लहः ॥ धर्मतो वचनेनैव रुक्मी वदति वै मृषा ३३ तामनादृत्य वैदर्भो दुष्टराजन्यचोदितः ॥ सङ्कर्षणं परिहसन् बभाषे कालचोदितः ३४ नैवाक्षकोविदा यूयं गोपाला वनगोचराः ॥ अक्षैर्दीव्यन्ति राजानो बाणैश्च न भवादृशाः ३५ रुक्मिणैवमधिक्षिप्तो राजभिश्चोपहासितः ॥ क्रुद्धः परिघमुद्यम्य जघ्ने तं नृम्णसंसदि ३६ कलिङ्गराजं तरसा गृहीत्वा द

दिखाय कै बलदेवजी की बहुत हाँसी करत भयो तब हल है हथियार जिनके ऐसे बलदेवजी हाँसी कूं नहीं सहारत भये २९ ता पीछे रुक्मी लाख मोहर को दाँव लगावत भयो ताकूं बलदेवजी जीते ता समय कपटकरिकै मैंने जीत्यो है या प्रकार रुक्मी कहतभयो ३० मावस पूर्णमासी कूं समुद्र में जैसे क्षोभ होय है या प्रकार क्रोध करिकै क्षोभ जिनके भयो और स्वाभाविक है अरुण नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी अत्यन्त रोष करिकै दश करोड़ मोहरन को दाँव लगावत भये ३१ धर्म करिकै वह जो दाँव है ताय बलदेवजी जीतत भये तब रुक्मी छल करिकै कहत भयो कि मैं जीत्यो हों ये मेरे पास के राजा हैं इनें बूझि लेउ या प्रकार रुक्मी को और बलदेवजी को विवाद होयरह्यो इतने में आकाशवाणी भई धर्म तें बलदेवजी दाँव जीते हैं रुक्मी को वचन मिथ्या है ३२।३३ ता समय आकाशवाणी को अनादर करिकै दुष्ट राजान ने सिखायो ऐसो जो विदर्भदेश को राजा रुक्मी है सो बलदेवजी की हाँसी करत काल को प्रेर्यो यह वचन बोलत भयो ३४ गौवन के चरावनवारे वनवासी तुम पासे नहीं खेल जानो हो पांसेन सूं और बाणनसूं राजा खेले हैं तुम सरीसे नहीं खेले हैं ३५ या प्रकार रुक्मी ने अनादर जिनको करयो और राजान ने हाँसी करी

ऐसे बलदेवजी क्रोध करिकै वेंडो उठाय कै मंगलसभा में रुक्मी कूं मारत भये ३६ ता समय भाज्यो जो कलिङ्गदेश को राजा है ताय दशवें पैंड पै दौरि कै क्रोध करिकै जिन दांतन कूं दिखाय कै हाँसी करीही तिन दातनकूं बलदेवजी झारि डारत भये ३७ बलदेवजी ने वेंडे सूं मारे याते हाथ जिनके टूटे जंघा शिर रुधिर सूं भीने ऐसे और जे राजा हैं ते भयभीत होयकै भाजतभये ३८ हे राजन् परीक्षित्! रुक्मी सारो मारो गयो ता समय रुक्मिणी बलदेवके स्नेह टूटिवे के डरके मारे श्रीकृष्ण भली बुरी कछुहू नहीं कहत भये भली भई यह कहते तौ रुक्मिणी बुरो मानती बुरी यह कहते तौ बलदेवजी बुरो मानते याते चुपही होतभये ३९ श्रीकृष्णचन्द्र हैं आश्रय जिनके याहीतें सिद्धभये हैं सम्पूर्ण मनोरथ जिनके ऐसे राम सूं आदि लैके यादवहैं ते नवीनवधूसहित जो अनिरुद्ध हैं ताय सुन्दर रथमें वैठायकै रुक्मीके भोजकटपुर तें द्वारकापुरीमें आवतभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे अनिरुद्धविवाहेरुक्मिवधोनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥ (द्वियुक्षष्टितमेप्रोक्तमनिरुद्धस्यरोधनम् ॥ कन्ययारममाणस्यबाणेनबहुबाहुना १ अनिरुद्धोद्वहेऽन्यस्मिन्बाणयादवसंयुगे ॥ श्रीकृष्णःश्रीहरंजित्वाबाणबाहूनथाऽच्छिनत् २ बासठवें अध्याय

शमेपदे ॥ दन्तानपातयत्क्रुद्धोयोऽहसद्विवृतैर्द्विजैः ३७ अन्येनिर्भिन्नबाहूरुशिरसोरुधिरोक्षिताः ॥ राजानोदुद्रुवुर्भीताबलेनपरिघार्दिताः ३८ निहतेरुक्मिणिश्यालेनाब्रवीत्साध्वसाधुवा ॥ रुक्मिणीबलयोराजन्स्नेहभङ्गभयाद्धरिः ३९ ततोऽनिरुद्धंसहसूर्ययावरंरथंसमारोप्ययुःकुशस्थलीम् ॥ रामादयोभोजकटाद्दशार्हाःसिद्धाखिलार्थामधुसूदनाश्रयाः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽनिरुद्धविवाहेरुक्मिवधोनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

राजोवाच ॥ बाणस्यतनयामूषामुपयेमेयदूत्तमः ॥ तत्रयुद्धमभूद्घोरंहरिशङ्करयोर्महत् ॥ एतत्सर्वंमहायोगिन्समाख्यातुंत्वमर्हसि १ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ बाणःपुत्रशतज्येष्ठो बलेरासीन्महात्मनः ॥ येनवामनरूपाय हरयेऽदायिमेदिनी २ तस्यौरसःसुतोबाणः शिवभक्तिरतःसदा ॥ मान्योवदान्योधीमांश्च सत्यसन्धोदृढव्रतः ॥ शोणिताख्येपुरेरम्येसराज्यमकरोत्पुरा ३ तस्यशम्भोःप्रसादेन किङ्करा इवतेऽमराः ॥ सहस्रबाहुर्वाद्येन ताण्डवेऽतोषयन्मृडम् ४

में बाणासुर की कन्या से रमण करतेहुये अनिरुद्धजी का बहुत भुजावाले बाणासुरने बन्धन करदियो १ दूसरे अनिरुद्धजी के विवाहमें बाणासुर और यादवोंके युद्धमें श्रीकृष्णजी श्रीमहादेवजी को जीतकर बाणासुर के भुजाओं को काटते भये २) अब राजा परीक्षित् कहे हैं कि हे शुकदेवजी! यादवन में उत्तम अनिरुद्धजी बाणासुर की कन्या ऊषाकूं विवाहत भये और विवाह पै श्रीकृष्णचन्द्र और महादेवको घोर युद्ध होतभयो सो सम्पूर्ण मेरे सम्मुख कहिवे कूं योग्यहो १ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! विष्णुने जब वामनरूप धारण करिकै पृथ्वी मागी तब सम्पूर्ण पृथ्वी जिनने दानकरी ऐसे महात्मा राजा बलिके सौ पुत्र होतभये तिन में ज्येष्ठ पुत्र शिवको अत्यन्त भक्त सबको मान्य ज्ञानवान् बुद्धिमान सत्यसङ्कल्प दृढ है व्रत जाको ऐसो बाणासुर नाम करिकै होतभयो शोणित नाम करिकै रमणीकपुर में राज्य करतभयो २ । ३ ता बाणासुर के शिवजी की कृपा करिकै सम्पूर्ण देवता टहलुवान की तुल्य ठाढ़े रहे एक समय ताण्डव नृत्यमें हजार हाथनसूं बाजेकूं बजाय शिवजी कूं बाणासुर ने प्रसन्नकरयो तब सब प्राणीन के ईश्वर शरण्य भक्तवत्सल भगवान् शिवजी बाणासुरकूं वरदेवे की इच्छा करतभये तब शिवजी

तें तुम मेरे पुरकी रक्षाकरो यह वर मागत भयो ४ । ५ पराक्रम सूं दुष्ट है मद जाके ऐसो बाणासुर है सो अपने पासरहें जो शिवजी तिनके चरणारविन्द कूं सूर्य्य जैसो है तेज जाको ऐसो जो किरीट है तासूं स्पर्श करिकै एक समय बोलत भयो ६ हे लोकन के गुरु ईश्वर महादेव! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जिन के ऐसे जे पुरुष हैं तिनके मनोरथन के पूर्ण करनवारे कल्पवृक्षरूप जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है ७ और हे देव! तुमने हजार भुजा मोकूं दीनी हैं इनको अवतक केवल बोझही भयो है याते त्रिलोकी में तुम्हारे बिना और कोई मोकूं बराबरि को युद्ध करिवेकूं नहीं मिले है ८ खुजली जिन में चलै ऐसी भुजान सूं युद्ध करिवे के लिये हे सम्पूर्ण के कारण शिवजी! मैं पर्व्वतन कूं चूर्ण करत दिशान के हाथी हैं तिनके पास जानभयो तब मेरे भयके मारे वेभी दिशान कूं छोड़िके भाजत भये ९ या प्रकार ता बाणासुर को वचन सुनिकै भगवान् शिवजी क्रोध करिकै कहतभये हे मूढ़! जा समय तेरी ध्वजा टूटेगी ता समय मेरी बराबरि के सूं तेरो युद्ध होयगो १०

भगवान्सर्व्वभूतेशः शरण्योभक्तवत्सलः ॥ वरेणच्छन्दयामास सतंवत्रेपुराऽधिपम् ५ सएकदाऽऽहगिरिशं पार्श्वस्थंवीर्य्यदुर्म्मदः ॥ किरीटेनार्कवर्णेनसंस्पृशंस्तत्पदाम्बुजम् ६ नमस्येत्वांमहादेव लोकानांगुरुमीश्वरम् ॥ पुंसामपूर्णकामानां कामपूरामराङ्घ्रिपम् ७ दोःसहस्रंत्वयादत्तं परंभारायमेऽभवत् ॥ त्रिलोक्यांप्रतियोद्धारं नलेभेत्वदृतेसमम् ८ कण्डूत्यानिभृतैर्दोर्भिर्युयुत्सुर्दिग्गजानहम् ॥ आद्यायांचूर्णयन्नद्रीन् भीतास्तेऽपिप्रदुद्रुवुः ९ तच्छ्रुत्वाभगवान्क्रुद्धःकेतुस्तेभज्यतेयदा ॥ त्वद्दर्पघ्नंभवेन्मूढसंयुगंमत्समेनते १० इत्युक्तःकुमतिर्हृष्टः स्वगृहंप्राविशन्नृप ॥ प्रतीक्षन्गिरिशादेशं स्ववीर्य्यनशनंकुधीः ११ तस्योषानामदुहिता स्वप्नेप्राद्युम्निनारतिम् ॥ कन्याऽलभतकान्तेनप्रागदृष्टश्रुतेनसा १२ सातत्रतमपश्यन्तीक्वासिकान्तेतिवादिनी ॥ सखीनांमध्यउत्तस्थौविह्वलाव्रीडिताभृशम् १३ बाणस्यमन्त्रीकुम्भाण्डश्चित्रलेखाचतत्सुता ॥ सख्यपृच्छत्सखीमूषां कौतूहलसमन्विता १४ कंत्वंमृगयसेसुभ्रूः कीदृशस्तेमनोरथः ॥ हस्तग्राहंनतेऽद्यापि राजपुत्र्युपलक्षये १५॥ ऊषोवाच ॥ दृष्टःकश्चिन्नरःस्वप्ने श्यामःकमललोचनः ॥ पीतवासाबृहद्बाहुर्योषितांहृदय

हे राजन् परीक्षित्! शिवजी ने या प्रकार जातें कही ऐसो कुबुद्धि बाणासुर अपने घरकूं जातभयो और अपनो बल बुद्धि पराक्रम को है नाश जामें ऐसी शिवजीकी आज्ञा है ताको पैंड़ो देखैहै ११ ऊषा है नाम जाको ऐसी बाणासुर की कन्या है सो अपनी कन्यापन की अवस्था में स्वप्नमें प्रद्युम्नजी के पुत्र अनिरुद्धके सङ्ग रति पावतिभई कैसे अनिरुद्ध हैं प्रथम कभऊं देखे हैं न सुनेहैं १२ पीछे ऊषा तहां अनिरुद्धकूं नहीं देखिकै बड़ी लज्जित होयकै हे कान्त! तुम कहांगये या प्रकार पुकारति विह्वल होयकै सखीनके बीचमें गिरतिभई १३ बाणासुरको मन्त्री जो कुम्भाण्डहै ताकी पुत्री चित्रलेखा सखीहै सो आश्चर्य्य मानिकै अपनी सखी ऊषासूं पूंछतिभई १४ हे सुभ्रु अर्थात् सुन्दर हैं भृकुटी जाकी ऐसी! हे ऊषा! तू कौनकूं ढूंढैहै और तेरो कैसो मनोरथहै हे राजाकी पुत्री! तेरे हाथ को पकरनवारो पतिहै ताय अबतक मैं नहीं देखूं हूं पति पति तूं कैसे पुकारति है १५ या प्रकार चित्रलेखा को वचन सुनिकै ऊषा बोलति भई सांवरो स्वरूप कमल से हैं नेत्र जाके पीताम्बर कू

पहिरे बड़ी है भुजा जाकी स्त्रीनकूं मनोहर ऐसो पुरुष स्वप्नमें मैंने देख्यो है १६ वह जो कान्त है ताय मैं ढूंढूंहूं अपनो अधरामृत प्याइकै इच्छा जाके बनी रही ऐसी जो मैं हूं ताय दुःख के समुद्र में पटकिकै कहूं चल्यो गयो १७ यह वचन सुनिकै चित्रलेखा बोली हे ऊषा! तेरो दुःख मैं दूरि करूंगी जा पुरुष ने तेरो मन हरयो है वह जो त्रिलोकी में कहूं होइगो तौ ले आऊंगी परन्तु वाइ बताय दे १८ चित्रलेखा इतनो कहिकै देवता गन्धर्व सिद्ध चारण पन्नग इनके चित्र लिखति भई दैत्य विद्याधर यक्ष मनुष्य इन सबकूं लिखति भई १९ और मनुष्यन में यादवन के चित्र लिखति भई शूरसेन को चित्र तथा वसुदेवको बलदेवजी को तथा कृष्ण और प्रद्युम्नजीको चित्रलिखति भई जब प्रद्युम्नजी को चित्र ऊषाने देख्यो तब तौ श्वशुर जानिकै लज्जित होतिभई २० शुकदेवजी कहे हैं हे पृथ्वीपति राजा परीक्षित्! अनिरुद्ध कूं लिख्यो देखिकै लाज सूं नीचे कूं है मुख जाको ऐसी ऊषा मेरे मनको हरनवारो पुरुष यही है ऐसे मुसिकायकै सखीतें कहतिभई २१

जमः १६ तमहंमृगयेकान्तं पाययित्वाऽधरंमधु ॥ क्वापियातःस्पृहयतींक्षिप्त्वामांवृजिनार्णवे १७॥ चित्रलेखोवाच ॥व्यसनंतेऽपकर्षामि त्रिलोक्यांयदि भाव्यते॥तमानेष्येनरंयस्ते मनोहर्त्तातमादिश १८ इत्युक्त्वादेवगन्धर्वसिद्धचारणपन्नगान् ॥ दैत्यविद्याधरान्यक्षान् मनुजांश्चयथाऽलिखत् १९ मनुजेषुचसावृष्णीञ्छूरमानकदुन्दुभिम्॥ व्यलिखद्रामकृष्णौच प्रद्युम्नंवीक्ष्यलज्जिता २० अनिरुद्धंविलिखितंवीक्ष्योषाऽवाङ्मुखीह्रिया॥सोऽसावसाविति प्राहस्मयमानामहीपते २१ चित्रलेखातमाज्ञायपौत्रंकृष्णस्ययोगिनी॥ ययौविहायसाराजन्द्वारकांकृष्णपालिताम् २२ तत्रसुप्तंसुपर्य्यङ्के प्राद्युम्निंयोगमास्थिता॥ गृहीत्वाशोणितपुरं सख्यैप्रियमदर्शयत् २३ साचतंसुन्दरवरं विलोक्यमुदितानना॥ दुष्प्रेक्ष्येस्वगृहेपुम्भी रेमेप्राद्युम्निनासमम् २४ परार्ध्यवासःस्रग्गन्धधूपदीपासनादिभिः॥ पानभोजनभक्ष्यैश्च वाक्यैःशुश्रूषयाऽर्चितः २५ गूढःकन्यापुरेशश्वत्प्रवृद्धस्नेहयातया॥ नाहर्गणान्सबुबुधे ऊषयाऽपहृतेन्द्रियः २६ तांतथायदुवीरेण भुज्यमानांहतव्रताम्॥ हेतुभिर्लक्षयाञ्चक्रुरापीतांदुरवच्छदैः २७ भटाआवेदयाञ्चक्रूराजंस्तेदुहितुर्वयम्॥ विचेष्टितंलक्षयामः

योगको है बल जाकूं ऐसी चित्रलेखा है सो ताय श्रीकृष्णचन्द्र को नाती जानिकै आकाशमार्ग होयकै हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण जाको पालनकरै ऐसी द्वारकापुरीमें जातभई २२ योगको आश्रयलैकै चित्रलेखा है सो द्वारकापुरी में पलंग के ऊपर सोवै ऐसे जे अनिरुद्ध हैं तिनें शोणितपुरमें लायकै सखी जो ऊषा है ताय प्यारे कूं दिखावति भई २३ सुन्दर वर जो अनिरुद्ध है ताइ देखिकै प्रसन्न है मुख जाको ऐसी जो ऊषा है सो पुरुषन के देखिवे में न आवै ऐसो जो अपनो घर है तामें अनिरुद्ध के संग रमण करति भई २४ बड़े मोलके वस्त्र, माला, सुगन्ध, धूप, दीप, आसन इत्यादिकन सूं और पीवे की सामग्री तथा भोजन और भक्षण वचनन सूं पूजन करातिभई २५ ऐसे अनिरुद्धजी कन्याके पुरमें छिपकै निरन्तर बढ्यो है स्नेह जाको ऐसी जो ऊषा है ताने हरी है इन्द्रिय जिनकी ऐसे अनिरुद्धजी मोहित होइकै वास करत कितने दिन रात्रि चले जाइ हैं ऐसे नहीं जानत भये २६ यादवन में वीर जो अनिरुद्ध है ताने भोगी याही तें दूरिभयो है कन्यापन को व्रत जाको अत्यन्त प्रसन्न ऐसी जो ऊषा है ताके छिपाइवे में न आवें ऐसे जो कारण हैं तिनकूं देखिके प्यादे हैं ते बाणासुरसूं आइकै कहतभये २७ हे राजन् बाणासुर! कन्याके कुलकूं दोष लगावनवारो कुत्सित

तुम्हारी कन्या को चलन है ताय हम देखे है २८ हे समर्थ वाणासुर! हम सावधान होइकै घर के भीतर कोई पुरुष जाकूं देखि न सकै या प्रकार जाकी रखवारी करी ऐसी कन्याके दोषकूं नहीं जाने हैं कहां तें होयगयो है २९ कन्या को दोष जाने सुन्यो याते बड़ोहै दुःख जाके ऐसो वाणासुर शीघ्रही कन्या के घरमें जायकै यादवन में उत्तम जे अनिरुद्ध हैं तिनकूं देखत भयो ३० कामदेव के पुत्र त्रिभुवन में एक सुन्दर श्यामस्वरूप पीताम्बर कूं पहिरे कमल से नेत्र बड़ी जिनकी भुजा काननमें कुण्डल और केश जिनकी कान्ति सूं और मुसिकानिपूर्वक चितवनि सूं शोभायमान जिनको मुख ३१ सब ओर तें मङ्गलरूप जो प्यारी है ताके सङ्ग पासे खेले हैं ता प्यारी के अङ्ग सङ्ग सूं स्तनन की केसरि जामें लगी ऐसी जो बसन्तऋतु की चमेली की माला है ताय पहिरे ऐसे जे अनिरुद्ध हैं तिने ऊषाके आगे बैठे देखिकै आश्चर्य मानतभयो ३२ शत्रून कू लिये अनेक प्यादेनसहित आयो जो वाणासुर है ताय देखिकै मधुवंशोत्पन्न अनिरुद्धजी लोहे को वेंडो उठाय के मारिवे के

कन्यायाःकुलदूषणम् २८ अनपायिभिरस्माभिर्गुप्तायाश्चगृहेप्रभो ॥ कन्यायादूषणंपुम्भिर्दुष्प्रेक्षायानविद्महे २९ ततःप्रव्यथितोबाणो दुहितुःश्रुतदूषणः ॥ त्वरितःकन्यकागारंप्राप्तोऽद्राक्षीद्यदूद्वहम् ३० कामात्मजंतंभुवनैकसुन्दरंश्यामंपिशङ्गाम्बरमम्बुजेक्षणम् ॥ बृहद्भुजंकुण्डलकुन्तलत्विषास्मितावलोकेन चमण्डिताननम् ३१ दीव्यन्तमक्षैःप्रिययाभिनृम्णया तदङ्गसङ्गस्तनकुङ्कुमस्रजम् ॥ बाह्वोर्दधानंमधुमल्लिकाश्रितां तस्याग्रआसीनमवेक्ष्यविस्मितः ३२ सतंप्रविष्टंवृनमाततायिभिर्भटैरनीकैरवलोक्यमाधवः ॥ उद्यम्यमौर्वंपरिघंव्यवस्थितोयथान्तकोदण्डधरोजिघांसया ३३ जिघृक्षयातान्परितःप्रसर्पतः शुनो यथासूकरयूथपोऽहनत्॥तेहन्यमानाभवनाद्विनिर्गतानिर्भिन्नमूर्द्धोरुभुजाःप्रदुद्रुवुः ३४ तंनागपाशैर्बलिनन्दनोबली घ्नन्तंस्वसैन्यंकुपितोबबन्धह॥ऊषाभृशं शोकविषादविह्वलाबद्धंनिशम्याश्रुकलाक्ष्यरौदिषीत् ३५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽनिरुद्धबन्धनोनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अपश्यतांचानिरुद्धं तद्बन्धूनांचभारत ॥ चत्वारोवार्षिकामासाव्यतीयुरनुशोचताम् १ नारदात्तदुपाकर्ण्य वार्तांबद्धस्यकर्मच ॥

लिये जैसे दण्ड कूं धारण करिकै काल दौरे है तैसे ठाढ़े होतभये ३३ पकरिवे के लिये चारयो ओर तें चले आवें ऐसे जो प्यादे हे तिने सूकरन के यूथको पालन करनवारो जो मुख्य सूकर है सो जैसे कुत्तान कू मारे है ऐसे मारतभये मार जिनकूं दीनी याही तें टूटे हैं माथे ऊरु भुजा जिनकी ऐसे जे प्यादे हैं ते निकसिके भाजतभये ३४ राजा बलि कूं आनन्द को देनवारो ऐसो जो बली वाणासुर है सो क्रोध करिकै अपनी सेना कूं मारै जो अनिरुद्ध है ताय रस्सान तें बांधतभयो ता समय अत्यन्त जो शोक और खेद तिनसूं व्याकुल आसू जाके नेत्रनमें आयगये ऐसी जो ऊषा है सो वे अनिरुद्धजी कूं देखिकै रोवति भई ३५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेअनिरुद्धबन्धनोनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥ * ॥ * ॥

(त्रिषष्टितमेचाथवाणयादवसङ्गरे ॥ स्तुतिर्ज्वरेणरुद्रेणबाणबाहुभिदोहरेः १ तिरसठवें अध्याय में वाणासुर और यादवों के युद्धमें महादेवजी के ज्वरसूं वाण सुर की भुजा काटनेवाले कृष्णजी की स्तुति वर्णितहै १) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! अनिरुद्ध के देखे विना भय्या बन्धुन कूं शोच करत वर्षा के चार महीना वीततभये १ ता समय

नारदजी तें अनिरुद्धजी के बन्धनको [illegible] और वात सब श्रवण करिकै श्रीकृष्णचन्द्र है देवता जिनके ऐसे जे यादव है ते बाणासुर के शोणितपुर कूं जातभये २ प्रद्युम्न युयुधान गद साम्ब सारण नन्द उपनन्द और भद्रा तें आदिलेके रामकृष्ण के आज्ञाकारी मुख्य मुख्य यादव है ते सम्पूर्ण मिलिकै बारह अक्षौहिणी सेना सूं बाणासुरके पुर कूं चाल्यो और ते घेरतभये ३ । ४ यादवन ने बाणासुर के पुरके तोड़े जो बाग परकोटा अँटारी दरवाजे तिनकूं देखिकै क्रोधमें भरिकै बारह अक्षौहिणी सेनालैके बाणासुर निकसतभयो ५ बाणासुर के लिये अपने पुत्र ने स्कन्द है तिनकूं और गणनकूं सङ्गलैके नांदिया पै चढिकै रामकृष्ण तें युद्ध करिवे के लिये भगवान्शिवजी आयकै प्राप्त होतभये ६ हे राजन् परीक्षित! श्रीकृष्णचन्द्र और शिवजीको बडो भयानक घोर युद्ध होतभयो कैसो रोमाञ्च ठाढे होंय ऐसो आश्चर्य युद्ध होतभयो और प्रद्युम्न को स्वामिकार्त्तिक को युद्ध होत भयो ७ कुम्भाण्ड और कूपकर्ण को युद्ध बलदेवजी के सङ्ग भयो श्रीकृष्ण

प्रययुः शोणितपुरं वृष्णयः कृष्णदेवताः २ प्रद्युम्नो युयुधानश्च गदः साम्बोऽथ सारणः ॥ नन्दोपनन्दभद्राद्या रामकृष्णानुवर्त्तिनः ३ अक्षौहिणीभिर्द्वादश भिः समेताः सर्व्वतोदिशम् ॥ रुरुधुर्बाणनगरं समन्तात्सात्वतर्षभाः ४ भज्यमानपुरोद्यानप्राकाराट्टालगोपुरम् ॥ प्रेक्षमाणो रुषाविष्टस्तुल्यसैन्योऽभिनिर्ययौ ५ बाणार्थे भगवान्रुद्रःससुतैः प्रमथैर्वृतः ॥ आरुह्य नन्दिवृषभं युयुधे रामकृष्णयोः ६ आसीत्सुतुमुलं युद्धमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ कृष्णशङ्करयोराजन् प्रद्युम्नगुहयोरपि ७ कुम्भाण्डकूपकर्णाभ्यां बलेन सह संयुगः ॥ साम्बस्य बाणपुत्रेण बाणेन सह सात्यकेः ८ ब्रह्मादयः सुराधीशा मुनयः सिद्धचारणाः ॥ गन्धर्व्वाप्सरसो यक्षा विमानैर्द्रष्टुमागमन् ९ शङ्करानुचराञ्छौरिर्भूतप्रमथगुह्यकान् ॥ डाकिनीर्यातुधानांश्च वेतालान्सविनायकान् १० प्रेतमातृपिशाचांश्च कूष्माण्डान्ब्रह्मराक्षसान् ॥ द्रावयामास तीक्ष्णाग्रैः शरैः शार्ङ्गधनुश्च्युतैः ११ पृथग्विधानि प्रायुङ्क्त पिनाक्यस्त्राणि शार्ङ्गिणे ॥ प्रत्यस्त्रैः शमयामास शार्ङ्गपाणिरविस्मितः १२ ब्रह्मास्त्रस्य च ब्रह्मास्त्रं वायव्यस्य च पार्व्वतम् ॥ आग्नेयस्य च पार्जन्यं नैजं पाशुपतस्य च १३ मोहयित्वा तु गिरिशं जृम्भणास्त्रेण जृ

के पुत्र साम्ब को बाणासुर के पुत्रके सङ्ग होतभयो और बाणासुर को सात्यकी के सङ्ग युद्धभयो ८ देवतान में मुख्य जे ब्रह्मादिक हैं ते और मुनि सिद्ध चारण गन्धर्व्व अप्सरा यक्ष ये सम्पूर्ण विमानन में बैठिकै युद्ध देखिवे कूं आवतभये ९ ता समय शङ्कर महादेवके अनुचर जे भूत प्रेत गुह्यक डाकिनी यातुधान वेताल विनायक प्रेतमातृ पिशाच कूष्माण्ड ब्रह्मराक्षस इन सबकूं शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र अपने शार्ङ्ग धनुष् में तें निकासि के पैनी है भाल जिनकी ऐसे बाणनसूं भजावत भये १० । ११ पिनाक नाम धनुष् है विद्यमान जिनके ऐसे शिवजी श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर न्यारे न्यारे शस्त्र चलावतभये नहीं है आश्चर्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शिवजी कूं बराबरि के शस्त्रन सूं शान्त करतभये १२ शिवने ब्रह्मास्त्र चलायो ताकूं ब्रह्मास्त्र तें शान्त करतभये जब वायु है देवता जाको ऐसो अस्त्र शिवजीने चलायो तब श्रीकृष्णचन्द्र पर्व्वत है देवता जाको ऐसे अस्त्रकूं चलावत भये ता समय पर्व्वतसूं रुकिकै पवन थमिगयो पश्चात् अग्नि है देवता जाको ऐसे अस्त्रकूं चलायकै शिवजी अग्नि लगावत भये ता समय श्रीकृष्णचन्द्र मेघहै देवता जाको ऐसे अस्त्रकू चलायके मेघ बरसाय के अग्नि कूं शान्त करतभये फेर शिवजी अपनो पाशुपत अस्त्र चलावत

भये ताकूं श्रीकृष्णचन्द्र अपने नारायणास्त्र सूं शान्त करतभये १३ फेरि श्रीकृष्णचन्द्र ने जृम्भणास्त्र चलायो तासूं शिवजी जम्भाईलई तासूं मोहित करिकै बाणासुरकी सेनाकूं तरवारि गदा बाणन
ँ मारतभये १४ प्रद्युम्नजीके बाणनके समूहन तें चारयो ओर तें पीड़ित ऐसो जो स्वामिकार्तिकेयहै सो अपने अङ्गन में तें रुधिर बहावत वाहन जो मोर है ताकूं भजायकै रणमें तें भाजत भयो
१५ कुम्भाण्ड और कूपकर्ण हैं ते मूसलके मारे पृथ्वीमें गिरतभये तब मरे हैं स्वामी जिनके ऐसी जो उनकी सेनाहै सो सम्पूर्ण भाजति भई १६ अपनी सेनाकूं जहां तहां बिखरी देखिकै बढ़ो है
असहनता जाकै ऐसो रथी बाणासुर है सो संग्राम में सात्यकी यादव कूं छोड़िके श्रीकृष्णचन्द्रके सम्मुख आवतभयो १७ रणमें बढ़ो है मद जाके ऐसो बाणासुर ५०० पञ्चशत धनुषकूं एक सङ्ग
खैंचिके एक एक धनुष पै दो दो बाण लगावत भयो १८ ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बाणासुर के ५०० पञ्चशत धनुषनकूं एक सङ्ग अपने धनुष सूं काटतभये फेरि बाणासुर के रथवान् कूं

ऽभिनत् ॥ बाणस्यपृतनांशौरिर्जघानासिगदेषुभिः १४ स्कन्दःप्रद्युम्नबाणौघैरर्द्यमानःसमन्ततः ॥ असृग्विमुञ्चन्गात्रेभ्यः शिखिनाऽपाक्रमद्रणात् १५
कुम्भाण्डःकूपकर्णश्च पेततुर्मुसलार्दितौ ॥ दुद्रुवुस्तदनीकानि हतनाथानिसर्वतः १६ विशीर्यमाणंस्वबलं दृष्ट्वाबाणोऽत्यमर्षणः ॥ कृष्णमभ्यद्रवत्सङ्ख्ये
रथीहित्वैवसात्यकिम् १७ धनूंष्याकृष्ययुगपद्बाणःपञ्चशतानि वै ॥ एकैकस्मिञ्छरौद्वौद्वौ सन्दधेरणदुर्मदः १८ तानिचिच्छेदभगवान् धनूंषियुगपद्ध
रिः ॥ सारथिंरथमश्वांश्च हत्वाशङ्खमपूरयत् १९ तन्माताकोटरानाम नग्नामुक्तशिरोरुहा ॥ पुरोऽवतस्थेकृष्णस्य पुत्रप्राणरिरक्षया २० ततस्तिर्यङ्मुखो
नग्नामनिरीक्षन्गदाग्रजः ॥ बाणश्चतावद्विरथश्छिन्नधन्वाऽविशत्पुरम् २१ विद्राविते भूतगणे ज्वरस्तुत्रिशिरास्त्रिपात् ॥ अभ्यधावतदाशार्हं दहन्निवदि
शोदश २२ अथनारायणोदेवस्तंदृष्ट्वाव्यसृजज्ज्वरम् ॥ माहेश्वरोवैष्णवश्चयुयुधातेज्वरावुभौ २३ माहेश्वरःसमाक्रन्दन् वैष्णवेनबलार्दितः ॥ अलब्ध्वा
ऽभयमन्यत्र भीतोमाहेश्वरोज्वरः ॥ शरणार्थीहृषीकेशं तुष्टावप्रयताञ्जलिः २४ ॥ ज्वरउवाच ॥ नमामित्वाऽनन्तशक्तिंपरेशं सर्वात्मानंकेवलंज्ञप्तिमात्रम् ॥ नि

घोड़ानकूं मारिकै रथकूं तोरिकै जीतको शङ्ख बजावतभये १९ ता समय कोटराहै नाम जाको ऐसी जो बाणासुर की माताहै सो अपने केशनकूं खोलिकै नङ्गी होयकै पुत्र के प्राण बचायवे के लिये
श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख ठाढ़ी होतिभई २० नङ्गी स्त्रीकूं शास्त्रमें देखिवो मनेहै या कारण श्रीकृष्णचन्द्र मुख फेरिके ठाढ़े होतभये इतने में टूट्यो है रथ जाको कट्यो है धनुष जाको ऐसो बाणासुर
रणमें तें भाजिकै पुरमें जातभयो २१ भूतनके गण जा समय भाजिगये तब तीनहैं शिर जाके और तीनि हैं पाव जाके ऐसो जो ज्वरहै सो दशो दिशानकूं जरावत दाशार्हवंशोत्पन्न जो श्रीकृष्णचन्द्र
हैं तिनके पास आवतभयो २२ तब नारायणदेव श्रीकृष्णचन्द्र शिवजी के ज्वरकूं आयो देखिकै अपनो शीतज्वर है तायं छोड़तभये शिवजी को ज्वर और भगवान् को ज्वर ये दोनों आपुस में
युद्ध करतभये २३ विष्णु के शीतज्वर ने बलते पीड़ा जाकूं दीनी ऐसो जो शिवजीको तप्तज्वरहै सो रोदन करत भयभीत होयकै अपनी रक्षाके अर्थ और कोई निर्भय स्थान नहीं पाय कै शरण
का अर्थी होकर हाथ जोरिकै श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुति करतभयो २४ अनन्त हैं शक्ति जिनकी ब्रह्मादिकन के ईश्वर सब के आत्मा शुद्ध चैतन्यघन विश्व के उत्पत्ति पालन संहार करनवारे

ऐसे जे तुमहौ तिनकूं नमस्कार करूं हूं विश्वको उत्पादन पालन संहार ब्रह्म ते होयहै मोतें नहीं जो ऐसे श्रीकृष्ण कहैं ताको उत्तर ज्वर देइ है वेद जाको वर्णन करैं ऐसो जो ब्रह्म है सो तुमहीं हौ सर्वविकार रहित हौ यातें कहिवे में नहीं आवो हो २५ काल दैव कर्म्म जीव स्वभाव द्रव्य स्पर्श रूप रस गन्ध शरीर प्राण अहङ्कार विकार अर्थात् ग्यारह इन्द्रिय और पञ्चमहाभूत अर्थात् पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इन तत्वनको बनो यह देहहै सो जैसे बीज तें अंकुर फेरि बीज होइहै या प्रकार कर्म्मन तें देह फेरि देहतें कर्म्म फेरि कर्म्मन तें देह ऐसे जलत्रो सो प्रवाह चल्यो जायहै यही तुम्हारी मायाहै ताके निषेध के अवधिहो अर्थात् माया जिनमें नहीं ऐसे तुमहौ तिनकी शरण में आयो हूं २६ कदाचित् कहो कि मैं देवकी को पुत्रहौं ऐसो मो में कैसे बने है ताको उत्तर कहे है लीला करिकै मत्स्यादिक अवतारनकूं लैके देवतान को पालनकरो हौ तथा वर्णाश्रम के धर्म्मन कूं पालन करो हौ और धर्म्म के करनवारे जे साधु हैं तिनको पालन करो हौ हिंसासहित जो पापमार्ग हैं तिनको नाशकरो हौ या कारण पृथ्वी को बोझ उतारिवे के लिये तुम्हारो जन्महै २७ शान्ति करिवेकूं आवै शीतल उग्र अत्यन्त भयानक जो तुम्हारो

त्वं हि ब्रह्म परंज्योतिर्गूढंब्रह्मणि वाङ्मये। यं पश्यन्त्यमलात्मान आकाशमिव केवलम् ॥ कालोदैवंकर्मजीवःस्वभावोद्रव्यंक्षेत्रंप्राणआत्माविकारः ॥ तत्सङ्घातोबीजरोहप्रवाहस्त्वन्मायैषा तन्निषेधंप्रपद्ये २६ नानाभावैर्लीलयैवोपपन्नैर्देवान्साधूँल्लोकसेतून्बिभर्षि ॥ हंस्युन्मार्गान्हिंसयावर्त्तमानाञ्जन्मैतत्ते भारहारायभूमेः २७ तप्तोऽहंतेतेजसा दुःसहेन शान्तोग्रेणात्युल्बणेनज्वरेण ॥ तावत्तापोदेहिनांतेऽङ्घ्रिमूलं नोसेवेरन्यावदाशानुबद्धाः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिशिरस्तेप्रसन्नोऽस्मि व्येतु तेमज्ज्वराद्भयम् ॥ योनौस्मरतिसंवादं तस्यत्वन्नभवेद्भयम् २९ इत्युक्तोऽच्युतमानम्य गतोमाहेश्वरोज्वरः ॥ बाणस्तुरथमारूढः प्रागाद्योत्स्यञ्जनार्दनम् ३० ततोबाहुसहस्रेण नानायुधधरोऽसुरः ॥ मुमोचपरमक्रुद्धोबाणांश्चक्रायुधेनृप ३१ तस्यास्यतोऽस्त्राण्यसकृच्चक्रेणक्षुरनेमिना ॥ चिच्छेदभगवान्बाहू ञ्छाखाइववनस्पतेः ३२ बाहुषुच्छिद्यमानेषु बाणस्यभगवान्भवः ॥ भक्तानुकम्प्युपव्रज्य चक्रायुधमभाषत ३२ ॥ श्रीरुद्रउवाच ॥ त्वंहिब्रह्मपरंज्योतिर्गूढंब्र

तेजरूप ज्वरहै तासूं मैं तपायमान भयोहूं देहधारीनकूं तबहीतांई तापहै जबलों आशा बाधिकै तुम्हारे चरणके तरवाको सेवन न करैं २८ अब श्रीभगवान् कहै है हे तीन शिरके ज्वर! तेरे ऊपर मैं प्रसन्न भयो हूं मेरे ज्वरते तेरो भय जातरहो और जो पुरुष तेरे हमारे संवादकूं कहे वाकूं तू भय मतिदीजो २९ या प्रकार जातें कही ऐसो जो माहेश्वर ज्वरहु सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करि-के जातभयो पश्चात् बाणासुर रथमें बैठिकै श्रीकृष्णचन्द्र तें युद्ध करिवे के लिये आवतभयो ३० हजार भुजान में अनेक प्रकार के शस्त्रन कूं धारण करे जो बाणासुर है सो बडो क्रोध करिकै हे राजन् परीक्षित्! चक्रहै शस्त्र जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर शस्त्रनकूं छोड़तभयो ३१ निरन्तर शस्त्रनकूं चलावै ऐसो जो बाणासुरहै ताकी भुजान कूं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र छुराकी तुल्यहै पैनी धार जाकी ऐसे चक्रसूं जैसे माली वृक्षकूं छाटै है ऐसे छाटतभये ३२ बाणासुरकी भुजा कटिगईं ता समय भक्त बाणासुर के ऊपर कृपा है जिनकी ऐसे जो भगवान् शिवजी हैं सो आयकै चक्रहै हथियार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तें बोलतभये ३३ अब शिवजी स्तुति करै हैं हे परब्रह्म! तुम्हारे विना जाने यह बाणासुर युद्ध करै है यामें आश्चर्य नहीं है या कारण वाणीमय जो वेदहै तामें

तुम छिपेभये परब्रह्महौ और ज्योति सूर्य्यादिकनके तुम प्रकाश करनवारे यातें काहू के जानिबे में नहीं आवोहौ कदाचित् कहो तौ कैसे प्रतीत होय है तहां शिवजी कहे हैं निर्म्मल हैं मन जिन के ऐसे पुरुष आकाशकी तुल्य निर्लेप निर्गुण तुमें देखे हैं ३४ क्यों जी निर्गुण को ज्ञान तौ रहो तहां शिवजी कहे हैं लीला करिकै तुमने आश्रय करयो जो ब्रह्माण्ड है सो भी जानिबे में नहीं आवे है जैसे गूलरके फल के भीतर रहैं जे जीवहैं ते गूलरके फलकूं नहीं जाने हैं तैसे या अभिप्राय सूं ब्रह्माण्ड रूप करिकै शिवजी स्तुति करे हैं आकाश तुम्हारी नाभिहै अग्नि तुम्हारो मुखहै जल तुम्हारो वीर्य्यहै स्वर्ग तुम्हारो शिरहै दिशा तुम्हारे कान हैं पृथ्वी तुम्हारो चरणहै चन्द्रमा मनहै और सूर्य्य तुम्हारे नेत्र है मैं शिव तुम्हारो आत्माहूं समुद्र तुम्हारो उदर है इन्द्र तुम्हारी भुजा हैं ३५ वृक्ष जिनके रोमहैं मेघ केशहैं ब्रह्मा जिनकी बुद्धिहै प्रजापति लिङ्ग है धर्म्म जिनको हृदय है लोकन करिकै कल्पना करिबे में आवो ऐसे तुम पुरुष हो ३६ सो हे अखण्डरूप! यह तुम्हारो अवतार धर्म्म की रक्षा करिबे के कारण और जगत् के कल्याणके निमित्त है और पालन जिनको तुमने करयो ऐसे हम सप्तलोकन को पालन करे हैं ३७ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति

ह्याणिवाक्प्रये ॥ यंपश्यन्त्यमलात्मानआकाशमिवकेवलम् ३४ नाभिर्नभोऽग्निर्मुखमम्बुरेतोद्यौःशीर्षमाशाःश्रुतिरङ्घ्रिरुर्व्वी ॥ चन्द्रोमनोयस्यदृगर्कआत्मा अहंसमुद्रोजठरंभुजेन्द्रः ३५ रोमाणियस्यौषधयोऽम्बुवाहाः केशाविरिञ्चोधिषणाविसर्गः ॥ प्रजापतिर्हृदयंयस्यधर्मः सवैभवान्पुरुषोलोककल्पः ३६ तवावतारोऽयमकुण्ठधामन् धर्म्मस्यगुप्त्यैजगतोभवाय ॥ वयञ्चसर्वेभवतानुभाविता विभावयामोभुवनानिसप्त ३७ त्वमेकआद्यःपुरुषोऽद्वितीयस्तुर्य्यःस्वदृग्घेतुरहेतुरीशः ॥ प्रतीयसेऽथापियथाविकारं स्वमाययासर्व्वगुणप्रसिद्ध्यै ३८ यथैवसूर्य्यःपिहितःस्वछायया छायांचरूपाणिचसंचकास्ति ॥ एवंगुणेनापिहितोगुणांस्त्वमात्मप्रदीपोगुणिनश्चभूमन् ३९ यन्मायामोहितधियः पुत्रदारगृहादिषु ॥ उन्मज्जन्तिनिमज्जन्ति प्रसक्तावृजिनार्णवे ४० देवदत्तमिमंलब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ॥ योनाद्रियेतत्वत्पादौ सशोच्योह्यात्मवञ्चकः ४१ यस्त्वांविसृजतेमर्त्यआत्मानंप्रियमीश्वरम् ॥ विपर्य्ययेन्द्रियार्थार्थं

तीन हैं अवस्था जिनकी ऐसे जे पुरुष हैं तिनके तुम कारणहौ और शुद्धहौ याही तें अद्वितीय पुरुष हौ और सब विश्वके कारण हौ आप कारण करिकै रहितहौ तथापि सम्पूर्ण विषय हैं तिनके प्रकाश करिबे के लिये अपनी माया करिकै जैसो जो देह तामें तैसेही प्रतीत होउहौ ३८ अपनी छायारूपी जो बादर हैं तिन सों मनुष्यन कूं दृष्टि करिकै ढक्यो जों सूर्य है सो बादरन कूं प्रकाशे है और बादरनके बाहर रूप हैं तिनकूं प्रकाशे है हे भूमन्! या प्रकार अहङ्कार जो अपनो कार्य्य है तासूं जीवनके देखिबे में ढके जो तुमहो सो प्रकाशो हौ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुणहैं तिनमें और जे गुणहैं उपाधि जिनकूं ऐसे जे जीवहैं तिनकूं प्रकाशो हौ ३९ जिनकी माया करिकै मोहित हैं बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष हैं ते पुत्र स्त्री गृहादिकन में अटकिकै दुःखरूपी समुद्र में उछरे डूबे हैं देवादिक योनिन कूं पावें हैं यह उछरनो है और वृक्षादिक योनिनकूं पावे हैं यह डूबनो है ४० ईश्वरने दीनी जो मनुष्य योनि है ताय प्राप्त होयकै नहीं जीती हैं इन्द्रिय जाने ऐसो पुरुष तुम्हारे चरणनको आदर नहीं करेहै वह पुरुष शोच करिबे योग्यहै और आत्माको ठगनवारो है ४१ प्यारे पुत्रादिकन के लिये जो पुरुष प्यारे जो तुम आत्मा हौ तिनकूं

अ० ८३

त्यागे है वह पुरुष अमृतकूं त्यागिकै विषकूं पीवै है ४२ मैं शिव और ब्रह्मा देवता तथा निर्मल हैं अन्तःकरण जिनके ऐसे मुनि हैं ते आत्मा प्यारे जो ईश्वर तुमहौ तिनकी सब प्रकार करिकै शरण प्राप्त भये हैं ४३ जगत् के उत्पत्ति पालन नाश इनके कारण और सबमें समान शान्तस्वरूप हितकारी आत्मा ईश्वर अनन्य और कोई बराबरि जिनकी नहीं बड़ो कोई नहीं जगत् के आत्मा आश्रय ऐसे जो तुम देवहौ तिनें संसार त्यागिवेके लिये हम भजे हैं ४४ हे प्रकाशमान! यह बाणासुर मोकूं वाञ्छित है मेरो प्यारो है आज्ञाकारी है मैंने याकूं अभय दीनो है यातें जैसी तुम्हारी दैत्यनके पति प्रह्लाद के ऊपर कृपा है ऐसी याके ऊपर कृपा करौ ४५ तब श्रीभगवान् कृष्णजी बोले हे शिवजी! तुम हमतें कहौ सो तुम्हारो प्रिय हम करेंगे तुमने जो निश्चय करयो सो हमने भले प्रकार मान्यो ४६ विरोचनके पुत्र राजा बलि तिनको पुत्र यह बाणासुर है सो मारिबे योग्य नहीं है काहे ते मैंने प्रह्लाद को वर दीनो है कि तेरे वंश में जो होयगो ताकूं मैं

विषमत्त्यमृतंत्यजन् ४२ अहंब्रह्माऽथविबुधामुनयश्चामलाशयाः ॥ सर्वात्मनाप्रपन्नास्त्वामात्मानंप्रेष्ठमीश्वरम् ४३ तंत्वाजगत्स्थित्युदयान्तहेतुंसमंप्रशान्तंसुहृदात्मदैवम् ॥ अनन्यमेकंजगदात्मकेतंभवापवर्गायभजामदेवम् ४४ अयंममेष्टोदयितोऽनुवर्त्ती मयाऽभयंदत्तममुष्यदेव ॥ सम्पाद्यतांतद्भवतःप्रसादोयथाहिदैत्यपतौप्रसादः ४५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ यदात्थभगवंस्त्वन्नःकरवामप्रियंतव ॥ भवतोयद्व्यवसितं तन्मेसाध्वनुमोदितम् ४६ अवध्योऽयंममाप्येषवैरोचनिसुतोऽसुरः ॥ प्रह्लादायवरोदत्तो नवध्योमेतवान्वयः ४७ दर्पोपशमनायास्य प्रवृक्णाबाहवोमया ॥ सूदितंचबलंभूरि यच्चभारायितंभुवः ४८ चत्वारोऽस्यभुजाःशिष्टाभविष्यन्त्यजरामराः ॥ पार्षदमुख्योभवतोनकुतश्चिद्भयोऽसुरः ४९ इतिलब्ध्वाऽभयंकृष्णं प्रणम्यशिरसाऽसुरः ॥ प्राद्युम्निं रथमारोप्य सवध्वामुपानयत् ५० अक्षौहिण्यापरिवृतं सुवासःसमलङ्कृतम् ॥ सपत्नीकंपुरस्कृत्ययमौरुद्रानुमोदितः ५१ स्वराजधानींसमलङ्कृतांध्वजैःसतोरणैरुक्षितमार्गचत्वराम् ॥ विवेशशङ्खानकदुन्दुभिस्वनैरभ्युद्यतःपौरसुहृद्द्विजातिभिः ५२ यएवंकृष्णविजयं शङ्करेणचसंयुगम् ॥ संस्मरेत्प्रातरुत्थाय नतस्यस्यात्पराजयः ५३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽनिरुद्धानयनंनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

नहीं मारूंगो ४७ फेरि कृष्ण कहत भये कि याको गर्व दूरि करिवेके लिये मैंने याकी हजार भुजा काटी हैं और पृथ्वी पै जो बोझ होय रह्यो है सो मैंने दूरि करि दियो है ४८ काटिबे तें चार भुजा ये बाकी रहीं ते अजर अमर होइंगी और यह दैत्य बाणासुर नहीं पहुंचे है भय जाकूं ऐसो तुम्हारे पार्षदनमें मुख्य होयगो ४९ याप्रकार अभय पायकै बाणासुर श्रीकृष्णचन्द्र कूं बारबार प्रणाम करिकै ऊषासहित अनिरुद्धकूं रथमें बैठारिकै विदा करतभयो ५० अक्षौहिणी सेना जाके संग सुन्दर वस्त्रनसूं शोभायमान ऐसे स्त्रीसहित जो अनिरुद्ध हैं तिनकूं आगे करिकै शिवजीने अनुमोद जिनको करयो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जातभये ५१ तोरणन सहित जे ध्वजा हैं तिनसूं शोभायमान मार्गमें तथा चौराहेन में छिरकाउ जामें होइ रह्यो ऐसी जो अपनी द्वारावती राजधानी है तामें पुरवासी सुहृद् व ब्राह्मणनतें सत्कार जिनने पायो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो शङ्ख ढोल नगाड़ेनके जो शब्द हैं तिन सहित प्रवेश करतभये ५२ यह जो श्रीकृष्णकी जीतहै ताय और श्रीकृष्णको शिव

की को युद्ध है ताय जो पुरुष प्रात-समय उठिके स्मरण करै है ताकी कभऊं हार नहीं होय है ५३ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऊषाचरित्रवर्णनेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

(चतु षष्टितमे तु कृष्णोनृगशापादमोचयत् ॥ ब्रह्मस्वहारिदोषोक्त्या राज्ञोदत्तानशिक्षयत् १ विभूतिभाग्यभोगादिमदोन्नद्धमनोरथान् ॥ अन्वशास यदून् कृष्णोनृगोद्धानप्रसङ्गतः २ चौंसठवें अध्याय में कृष्णजी नृगजी को शापसूं छुड़ातेभये और ब्राह्मण ॥ द्रव्यके हरनेवाले दोषोंकी उक्तिसूं अभिमानी राजाओं को शिक्षा देतेभये १ विभूतिभाग्यभोगादि मदसूं बढ्यो मनोरथवाले यदुवंशियों को कृष्णजी नृगके उद्धारके प्रसंगसूं शिक्षादेतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय साम्ब प्रद्युम्न चारु भानु गद इत्यादिक यादवनके पुत्रहैं ते विहार करिवेके निमित्त वनमें जातभये १ ता वनमें बहुत देरताई क्रीडा करिकै प्यास जिनकूं लगी ऐसे यादवनके पुत्र हैं ते जलकूं ढूंढत बिना जलको कूप है तामें अद्भुत एक जीव परयो देखत भये २ पर्वत की

श्रीशुकउवाच ॥ एकदोपवनंराजञ्जग्मुर्यदुकुमारकाः ॥ विहर्त्तुंसाम्बप्रद्युम्नचारुभानुगदादयः १ क्रीडित्वासुचिरंतत्र विचिन्वन्तःपिपासिताः ॥ जलंनिरुदकेकूपे ददृशुःसत्त्वमद्भुतम् २ कृकलासंगिरिनिभं वीक्ष्यविस्मितमानसाः ॥ तस्यचोद्धरणेयत्नं चक्रुस्तेकृपयाऽन्विताः ३ चर्मजैस्तान्तवैःपाशैर्बद्ध्वापतितमर्भकाः ॥ नाशक्नुवन्समुद्धर्त्तुं कृष्णायाचख्युरुत्सुकाः ४ तत्राऽऽगत्यारविन्दाक्षो भगवान्विश्वभावनः ॥ वीक्ष्योज्जहारवामेन तंकरेणसलीलया ५ सउत्तमश्लोककराभिमृष्टोविहायसद्यःकृकलासरूपम् ॥ सन्तप्तचामीकरचारुवर्णः स्वर्ग्यद्भुतालङ्करणाम्बरस्रक् ६ पप्रच्छविद्वानपितन्निदानं जनेषुविख्यापयितुंमुकुन्दः ॥ कस्त्वंमहाभागवरेण्यरूपोदेवोत्तमंत्वांगणयामिनूनम् ७ दशामिमांवाकतमेनकर्म्मणा सम्प्रापितोऽस्यतदर्हःसुभद्र ॥ आत्मानमाख्याहिविवित्सतांनो यन्मन्यसेनःक्षममत्रवक्तुम् ८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिस्मराजासंपृष्टः कृष्णेनानन्तमूर्त्तिना ॥ माधवंप्रणिपत्याह किरीटेनार्कवर्च

बराबरि जो करकेटा है ताय देखिकै आश्चर्ययुक्त हैं मन जिनके कृपा जिनकूं आइ गई ऐसे जे यादवन के बालक हैं ते करकेटा के निकासिवे को उपाय करतभये ३ बालक हैं ते गिरयो जो करकेटा है ताय चाम के और सूत के रस्सान सूं बांधिकै निकासिवे कूं नहीं समर्थ होतभये तब उत्कण्ठायुक्त जे बालक हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र तें आइकै कहत भये ४ विश्व के करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र है सो तहां आइके करकेटा कूं देखिकै लीला करिकै बायें हाथ ते निकासतभये ५ उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के हाथ लगे तें शीघ्रही करकेटा के रूपकूं त्यागि कैं तप्त सुवर्णकी तुल्य सुन्दर वर्ण जाको अद्भुत आभूषण वस्त्र मालानकूं धारण करे देवरूप होत भयो ६ मुक्ति के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ताके करकेटा होइवे के कारणकूं जानेभी हैं परन्तु जनन में विख्यात करिवेके निमित्त पूंछतभये हे बड़भागी ! श्रेष्ठ है रूप तेरो ऐसो तू कौन है मैं तोकूं देवतान में उत्तम निश्चय देवता मानूं हूं ७ हे मंगलरूप ! या लायक तू नहीं है कौन कर्म तें तोकूं करकेटा की योनि प्राप्त भई जो हमकूं कहने योग्य मानो हो तो जानो चाहें जो हम हैं तिनके आगे अपनोरूप कहो ८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! अनन्त हैं मूर्त्ति जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र

ने या प्रकार पूंछनो ऐसो जो राजा नृग है सो सूर्य्य की तुल्य है तेज जाको ऐसे किरीट सूं श्रीकृष्णचन्द्रकूं प्रणाम करिकै बोलतभयो ६ राजानृग कहेहै हे समर्थ ! मैं इक्ष्वाकुको पुत्र नृग नाम राजा हूं दानी राजान की बात चली होयगी तब मेरो नामहू आपके कानमें परो होइगो १० हे नाथ ! सब प्राणीन की बुद्धि के साक्षी तुम हौ सो कहा जानो हौ काल करिकै ज्ञान जिनको ताड़ित नहीं भयो है तथापि तुमने बूझी है तौ तुम्हारी आज्ञा तें कहूंगो ११ हे नाथ ! जितनी पृथ्वीकी रेणुका हैं और जितने आकाश में तारागण हैं तथा जितनी वर्षा की बूंदें हैं तितनी गौवनको मैंने दान करो है १२ दूध देनवारी तरुण जिनकी अवस्था शील रूप गुण जिनमें विद्यमान कपिला और नीतिपूर्वक संचय करी सुवर्ण सूं सींग और रूपे सूं खुर जिन के मढे बछरा जिनके संग और वस्त्र माला गहनेनकूं पहिरे ऐसी गौवें देत भयो १३ भले प्रकार शोभायमान गुण शील जिन में विद्यमान दूधविना दुःखित कुटुम्बी पाखण्डरहित हैं आचार जिनके तपस्या करिकै प्रसिद्ध वेदकूं

सा ९ ॥ नृगउवाच ॥ नृगोनामनरेन्द्रोऽहमिक्ष्वाकुतनयःप्रभो ॥ दानिष्वाख्यायमानेषु यदितेकर्णमस्पृशम् १० किंनुतेऽविदितंनाथ सर्वभूतात्मसाक्षिणः ॥ कालेनाव्याहतदृशोवक्ष्येऽथापितवाऽऽज्ञया ११ यावन्त्यःसिकताभूमेर्यावन्त्योदिवितारकाः ॥ यावन्त्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः १२ पयस्विनीस्तरुणीःशीलरूपगुणोपपन्नाःकपिलाहेमशृङ्गीः ॥ न्यायार्जितारूप्यखुराःसवत्सादुकूलमालाभरणाददावहम् १३ स्वलङ्कृतेभ्योगुणशीलवद्भ्यःसीदत्कुटुम्बेभ्यऋतव्रतेभ्यः ॥ तपःश्रुतब्रह्मवदान्यसद्भ्यःप्रादांयुवभ्योद्विजपुङ्गवेभ्यः १४ गोभूहिरण्यायतनाश्वहस्तिनः कन्याःसदासीस्तिलरूप्यशय्याः ॥ वासांसिरत्नानिपरिच्छदान्रथानिष्टंचयज्ञैश्चरितंचपूर्तम् १५ कस्यचिद्द्विजमुख्यस्य भ्रष्टागौर्ममगोधने ॥ संपृक्ताऽविदुषासाच मयादत्ताद्विजातये १६ तांनीयमानांतस्वामी दृष्ट्वोवाचममेतितम् ॥ ममेतिप्रतिग्राह्याह नृगोमेदत्तवानिति १७ विप्रौविवदमानौमामूचतुःस्वार्थसाधकौ ॥ भवान्दाताऽपहर्त्तेति तच्छ्रुत्वामेऽभवद्भ्रमः १८ अनुनीतावुभौविप्रौ धर्मकृच्छ्रगतेनवै ॥ गवांलक्षंप्रकृष्टानां दास्याम्येषाप्रदीयताम् १९ भवन्तावनुगृह्णीतां किङ्करस्याविजानतः ॥

पढ़ावें तरुण जिनकी अवस्था ऐसे द्विजन में श्रेष्ठ ब्राह्मणनकूं दान करिकै देतभयो १४ गौ पृथ्वी सुवर्ण महल घोड़ा हाथी इत्यादिक दानकरे और दासीनसहित कन्यादान करे तिल रूपा शय्या वस्त्र रत्न और आच्छादन के श्रेष्ठ वस्त्र रथन के दानकरे यज्ञकरे कुआं तालाव बावली बनवाये १५ ऐसो मैं हों परन्तु मोकूं एक सङ्कट आय कें प्राप्तभयो सो श्रवण करो कोई एक अयाचक ब्राह्मण की गौ भाजिकै मेरी गौवन में मिलिगई वह गौ मैंने बिना जाने ब्राह्मण कूं दान करिदीनी १६ वा गौ को मालिकहै सो वा गौ कूं ले जाती देखिकै यह गौ मेरी है या प्रकार कहत भयो दूसरो ब्राह्मण कहत भयो कि यह गौ मोकूं राजा नृगने दान करिकै दीनी है १७ या प्रकार आपुस में विवाद करैं अपने अपने प्रयोजनकू सिद्ध करचो चाहैं ऐसे दोनों ब्राह्मण आयकै कहतभये जाकू दान करिकै दीनी ही वह ब्राह्मण कहतभयो कि राजा तुही याको दाता है और जाकी गौ है कि कहा को दाताहै विरानी गौ पुण्य करै है यह वार्ता श्रवण करिकै मोकूं भ्रमभयो १८ धर्म्म में कष्ट जाकूं प्राप्तभयो ऐसो जो मैं हूं ताने दोनों ब्राह्मणन की विनती करी कि महाराज या गौ के बदले सुन्दरी सुन्दरी एक लक्ष गौ देऊँगो यह गौ दीजिये १९ मैं तुम्हारो दासहूं मैंने जानी नहीं

कि यह गौ तुम्हारीहै मेरे ऊपर अनुग्रह करो घोर नरकमें गिरूं जो मैंहूं ताकी कष्ट तें रक्षाकरो २० हे राजन् नृग! और तेरी लाख गौ मोकूं नहीं अपेक्षितहैं जो दान करिकै दीनी है सोई लेऊंगो यह कहिकै जा ब्राह्मण कूं गौ दीनी ही वह गौकूं त्यागिकै घरकूं जातभयो २१ हे देवतानके देव जगत्के पालन करनवारे! याके पीछे यमके दूत आयकै धर्मराजके पास मोकूं लैगये तहा धर्मराज ने मोसूं पूंछी २२ हे राजन् नृग! तुम्हारे दान और धर्मको लोकके प्रकाशको मैं अन्त नहींदेखूं हूं परन्तु यत्किञ्चित् तुम्हारो पापहै और सम्पूर्ण शुभहै सो प्रथम तुम पाप भोगोगे अथवा शुभ २३ या प्रकार धर्मराज ने कह्यो तब प्रथम पाप भोगोंगो ऐसे मैंने कह्यो ताही समय धर्मराजने आज्ञाकरी कि याकूं गिराइ देउ करकेटाकी योनिमें अपनी रक्षाकरै हे प्रभो! गिरतेही अपनो करकेटाको रूप देखत भयो २४ हे केशव! ब्राह्मणनको भक्त दाता तुम्हारे दर्शनकी इच्छा जाके ऐसो मैं तुम्हारो दासहूं ताकूं अब पर्यन्त नहीं नष्ट भई है २५ हे प्रभो! योगेश्वर वेदरूप नेत्र करिकै

समुद्धरतमांकृच्छ्रात्पतन्तंनिरयेऽशुचौ २० नाहंप्रतीच्छेवैराजन्नित्युक्त्वास्वाम्यपाक्रमत् ॥ नान्यद्गवामप्ययुतमिच्छामीत्यपरोययौ२१ एतस्मिन्नन्तरेयाम्यैर्दूतैर्नीतोयमक्षयम् ॥ यमेनपृष्टस्तत्राहं देवदेवजगत्पते २२ पूर्वंत्वमशुभंभुङ्क्षउताहोनृपतेशुभम् ॥ नान्तंदानस्यधर्मस्य पश्येलोकस्यभास्वतः २३ पूर्वंदेवाशुभंभुञ्जइतिप्राहपतेतिसः ॥ तावदद्राक्षमात्मानं कृकलासंपतन्प्रभो २४ ब्राह्मण्यस्यवदान्यस्य तवदासस्यकेशव ॥ स्मृतिर्नाद्यापिविध्वस्ताभवत्संदर्शनार्थिनः २५ सत्वंकथंममविभोऽक्षिपथःपरात्मा योगेश्वरैःश्रुतिदृशाऽमलहृद्विभाव्यः ॥ साक्षादधोक्षजउरुव्यसनान्धबुद्धेः स्यान्मेऽनुदृश्यइहयस्यभवापवर्गः २६ देवदेवजगन्नाथ गोविन्दपुरुषोत्तम ॥ नारायणहृषीकेश पुण्यश्लोकाच्युताव्यय २७ अनुजानीहिमांकृष्णयान्तंदेवगतिंप्रभो ॥ यत्रक्वापिसतश्चेतो भूयान्मेत्वत्पदास्पदम् २८ नमस्तेसर्वभावाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ कृष्णायवासुदेवाय योगानांपतयेनमः २९ इत्युक्त्वातंपरिक्रम्य पादौस्पृष्ट्वास्वमौलिना ॥ अनुज्ञातोविमानाग्र्यमारुहत्पश्यतांनृणाम् ३० कृष्णःपरिजनंप्राह भगवान्देवकीसुतः ॥ ब्रह्मण्यदेवोधर्मात्मा राजन्याननुशिक्षयन् ३१

निर्मल हृदयमें जिनकी भावनाकरै और इन्द्रियनकी जिनमें पहुँच नहीं ऐसे परमात्मा जो तुमहौ सो अतिदुःखन करिकै अंधरी है बुद्धि जाकी ऐसो मैं हू ताकूं कैसे प्रत्यक्ष दिखाई दीनी है यह आश्चर्य्य है या संसार में जा पुरुष को संसार छूटनहार होइहै ताकूं तुम्हारो दर्शन होइहै २६ हे देवनके देव! हे जगत्के नाथ! हे गोविन्द! हे पुरुषन में उत्तम! हे नारायण! हे इन्द्रियनके प्रेरणवारे! हे पवित्र है यश जिनको ऐसे! हे अखण्डरूप! हे अविनाशी! २७ हे कृष्ण! हे समर्थ! अब मैं स्वर्गमें जातहूं मोकूं आज्ञादेउ जहा कहूं मैं रहूं तहा मेरो चित्त तुम्हारे चरणनमें लग्यो रहै २८ सब कार्य्यको है जन्म जिनतें विश्वके कर्त्ता तथापि विकाररहित हौ काहे तें अनन्त माया है शक्ति जिनकी ऐस तुमहौ तिनै और वासुदेव अर्थात् सब प्राणीनके आश्रय कृष्ण अर्थात् सर्वदा आनन्दरूप (कृषिर्भूवाचकःशब्दोनश्चनिर्वृतिवाचकः ॥ तयोरैक्यंपरंब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयतइति) वेदनके कहे जे यज्ञादिक कर्म्म और स्मृतिन के कहे जे कुआ बावली तालाव इत्यादिक कर्म्मनके फलदाता जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार है २९ राजा नृग या प्रकार कहिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी परिक्रमा दैके अपने मुकुट तें चरणकूं स्पर्श करिकै आज्ञालैकै सब प्राणीनके देखत विमान में चढ़तभयो ३० ब्राह्मण-

न की भक्ति करिकै देवगर्भ में है मन जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो क्षत्रियनकी शिक्षाके लिये अपने जे परिवार यदव हैं तिनसूं कहतभये ३१ अग्निकी तुल्यहै तेज जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तिनको थोडो भी भोग्यो ब्रह्म अंश नहीं पचैहै और अपने कूं ईश्वर मानै जे राजा हैं तिनकी कौन कथाहै ३२ हलाहल जो विषहै ताकूं मैं विष नहीं मानूं हूं याके दूरि करिवे की औषधहै परन्तु ब्रह्म अंशहै सो विषहै या पृथ्वीमें ब्रह्मअंशके दूरि करिवेको उपाय नहीं ३३ विषहै सो खानवारे कूं मारै है अग्निलगै सो जलसूं शान्त होइहै और अग्निके जराइवे में जड वाकी रहि जातिहै परन्तु ब्रह्म अंशरूप जो लकड़ी है तामें तें जन्मी जो अग्नि सो मूलसहित कुलकूं भस्मकरै है ३४ शास्त्रने याको निषेध कर्यो ऐसो जो ब्रह्मअंशहै सो भोगे तें तीन पीढ़ीन को नाशकरै है जो भोगे ताकू याके पुत्रकूं याके पौत्रकू और राजा के बलतें अथवा छीनकै जो ब्रह्मअंशको भोगकरै तौ दश अगिली और दश पिछली एक आप ऐसे इकईस पीढीको नाशकरै है ३५ जो कि

दुर्जरंबतब्रह्मस्वं भुक्तमग्नेर्मनागपि ॥ तेजीयसोऽपिकिमुत राज्ञामीश्वरमानिनाम् ३२ नाहंहालाहलंमन्येविषंयस्यप्रतिक्रिया ॥ ब्रह्मस्वंहिविषंप्रोक्तंनास्य प्रतिविधिर्भुवि ३३ हिनस्तिविषमत्तारं वह्निरद्भिःप्रशाम्यति ॥ कुलंसमूलंदहति ब्रह्मस्वारणिपावकः ३४ ब्रह्मस्वंदुरनुज्ञातं भुक्तंहन्तित्रिपूरुषम् ॥ प्रसह्यतु बलाद्भुक्तं दशपूर्वान्दशापरान् ३५ राजानोराजलक्ष्म्यान्धानात्मपातंविचक्षते ॥ निरयंयेऽभिमन्यन्तेब्रह्मस्वंसाधुबालिशाः ३६ गृह्णन्तियावतःपांसून्क्रन्दतामश्रुबिन्दवः ॥ विप्राणांहृतवृत्तीनां वदान्यानांकुटुम्बिनाम् ३७ राजानोराजकुल्याश्चतावतोऽब्दान्निरङ्कुशाः ॥ कुम्भीपाकेषुपच्यन्ते ब्रह्मदायापहारिणः ३८ स्वदत्तांपरदत्तांवा ब्रह्मवृत्तिंहरेच्चयः ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायांजायतेकृमिः ३९ नमेब्रह्मधनंभूयाद्यद्गृध्वाऽल्पायुषोनराः ॥ पराजिताश्च्युताराज्याद्भवन्त्युद्वेजिनोऽहयः ४० विप्रंकृतागसमपि नैवद्रुह्यतमामकाः ॥ घ्नन्तंबहुशपन्तंवा नमस्कुरुतनित्यशः ४१ यथाऽहंप्रणमेविप्राननुकालंसमाहितः ॥ तथानमतयूयञ्च योऽन्यथामेसदण्डभाक् ४२ ब्राह्मणार्थोह्यपहृतोहर्तारंपातयत्यधः ॥ अजानन्तमपिह्येनं नृगंब्राह्मणगौरिव ४३ एवंविश्राव्यभगवान्मुकुन्दो

लक्ष्मीसूं आपरे ऐसे जे राजा हैं ते अपनो नरकमें गिरिवो नहीं देखे हैं जे मूर्ख पुरुष ब्रह्मअंश पै मन चलावै है वे पुरुष नरकमें जायवे की इच्छा करे हैं ३६ कुटुम्बी उदार हरिगई है जीविका जिनकी याते रोदन करै ऐसे जे ब्राह्मणहैं तिनके नेत्रनतें आंसूनकी बूंद गिरिकै जितनी पृथ्वी की रेणु भीजै हैं तितने वर्षपर्यंत ब्राह्मण के धनके हरनवारे निरंकुश जे राजा हैं ते और राजान के दीवान प्रधान टहलुआ हैं ते कुम्भीपाक नरक में पड़े है ३७। ३८ जो पुरुष अपनी दीनी अथवा और की दीनी ब्राह्मण की जीविका है ताय हरै वह पुरुष साठिहजार वर्षपर्यन्त विष्ठा को कीड़ा होइहै ३९ मेरे घरमें ब्राह्मण को धन मति आवो जे मनुष्य ब्राह्मण के धनकी चाहना करे हैं वे अल्पायु होइहैं पराजय कूं प्राप्त होइ है और राज्य तें भ्रष्ट होय कै मनुष्यन कूं भय के देनवारे सर्प होइहै ४० अपराध कूं करै मारतो आवै बहुत गारी देइ ऐसे ब्राह्मणतें भी द्रोह मतिकरो नित्य नित्य नमस्कारही करो ४१ जैसे सावधान होइकै समय समय तें ब्राह्मणनकू मैं नमस्कार करूं हूं तैसे तुमहूं नमस्कार करो और जो कोई मेरी आज्ञाकू न मानैगो वह पुरुष मेरे दण्ड कू पावेगो ४२ हर्यो जो ब्राह्मण को धन है सो हरनवारे कूं नरक में डारै है या बात

कूं कोई मिथ्या मति मानियो विना जाने नृग राजाने ब्राह्मणकी गौ ब्राह्मण कूं दीनीरही तासूं यह जैसे नरक में गिर्‍यो तैसे ४३ समस्त लोकन के पवित्र करनवारे जो मुकुन्द भगवान् हैं सो या प्रकार द्वारकावासीन कूं सुनायकें अपनो जो मन्दिरहै तामें जात भये ४४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थप्रकाशिकायां दशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेनृगोपाख्याननामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥ * ॥

(पञ्चषष्टितमेरामश्चक्रेगोकुलमागतः ॥ रममाणस्तुगोपीभिःकालिन्द्याःकर्षणमदात् १ रामस्यचरितंचित्रंकालिन्द्याःकर्षणादियत् ॥ पौण्ड्रकान्तादिकृष्णस्यपृथगुक्तमतःपरम् २ पैंसठवें अध्यायमें गोकुल में प्राप्त होकर गोपियों से रमण करतेहुये वलदेवजी मद तें यमुनाजी को खेंचते भये १ यमुनाजी का खेंचना आदि वलदेवजीका आश्चर्य चरित जो है ताके पीछे कृष्णजी का पौण्ड्रक वा नाश आदि अलग कहो है २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे कुरुवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित् ! इच्छा जिनके भई ऐसे भगवान् वलदेवजी रथमें वैठिकै सुहृदनके देखिवेके लिये नन्दजी के गोकुल में जातभये १ वहुत दिन तें उत्कण्ठा जिनके लगी ऐसे गोप गोपी मिलत भये वलदेवजीने माता पिता जे नन्द यशोदा हैं तिनकूं प्रणाम करी तब उनने आशीर्वाद दीने २

द्वारकौकसः॥पावनःसर्वलोकानांविवेशनिजमन्दिरम्४४इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेनृगोपाख्यानंनामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

श्रीशुकउवाच ॥ वलभद्रःकुरुश्रेष्ठ भगवान्रथमास्थितः ॥ सुहृद्दिदृक्षुरुत्कण्ठःप्रययौनन्दगोकुलम् १परिष्वक्तश्चिरोत्कण्ठैर्गोपैर्गोपीभिरेवच॥ रामोऽभिवाद्यपितरावाशीर्भिरभिनन्दितः २ चिरंनःपाहिदाशार्ह सानुजोजगदीश्वरः॥ इत्यारोप्याङ्कमालिङ्ग्यनेत्रैःसिषिचतुर्जलैः३गोपवृद्धांश्चविधिवद्यविष्ठैरभिवन्दितः॥ यथावयोयथासख्यं यथासम्बन्धमात्मनः ४ समुपेत्याथगोपालान्हास्यहस्तग्रहादिभिः ॥ विश्रान्तंसुखमासीनं पप्रच्छुःपर्युपागताः ५ पृष्टाश्चानामयंस्वेषु प्रेमगद्गदयागिरा ॥ कृष्णेकमलपत्राक्षे संन्यस्ताखिलराधसः ६ कच्चिन्नोबान्धवाराम सर्वेकुशलमासते ॥ कच्चित्स्मरथनोराम यूयंदारसुतान्विताः ७ दिष्ट्याकंसोहतःपापो दिष्ट्यामुक्ताःसुहृज्जनाः ॥ निहत्यनिर्जित्यरिपून् दिष्ट्यादुर्गंसमाश्रिताः ८ गोप्योहसन्त्यःपप्रच्छूरामसंदर्शनादृताः ॥

हे दशार्हवंशोत्पन्न जगत् के ईश्वर वलदेवजी ! छोटे भय्या श्रीकृष्ण सहित तुम हमारी वहुत दिनपर्यन्त रक्षा करो या प्रकार गोद में वैठारि कै छाती में लगायकै नेत्रन में ते वहे जे आंसू तिन सूं वलदेवजी कूं भिजोवतभये ३ विधिपूर्वक वृद्ध गोपनकूं प्रणाम करिकै छोटे गोपन ने इनकूं प्रणाम करी ऐसे वलदेवजी जैसी जाकी अवस्था और जैसी जातें मित्रतारही और जैसो जातें सम्बन्धरहो ४ तैसेही तिनकूं हास्य और हाथ को पकरिबो इत्यादिकन सूं मिलि कै श्रम जिनको गयो सुख सूं वैठे ऐसे वलदेवजीके पास आयकै पूछत भये ५ वलदेवजी ने पूंछे ऐसे व्रजवासी प्रेमवश होय कै गद्गद वाणी करिकै अपने यादवन की कुशल पूंछत भये कमलपत्रसे हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी प्राप्ति के लिये समस्त विषय जिनने त्यागि दिये ६ हे राम ! सम्पूर्ण हमारे वन्धु यादव प्रसन्न हैं अव तुम्हारे विवाह भये तुम्हारे पुत्र भये तुम कछु हमारी सुधि करो हौ ७ पापी कंस मर्‍यो यह वड़ो मङ्गल भयो और हमारे मित्रजन वन्दीखाने तें छूटे यह वड़ो मङ्गलभयो शत्रुनकूं मारि और जीतिकै तुम द्वारकापुरीमें क़िला वनाइकै रहे यह वड़ो मङ्गल भयो ८ राम के दर्शन में है आदर जिनके ऐसी जे गोपी हैं ते हँसि कै पूंछति

भई पुरके स्त्रीजन हैं तिनकूं प्यारो ऐसो कृष्ण मुरारी है ६ वह कृष्ण कभऊ अपने बन्धूनकी भी सुधि करे है अपने पिता माता की सुधि करे है कभऊं अपनी माताकूं एक बार देखन कूं भी आवैगो बड़ी हैं भुजा जाकी ऐसो कृष्ण कभऊं हमारी सेवा की सुधि करे है १० हे दशार्हकुलोत्पन्न समर्थ बलदेवजी ! या कृष्णके लिये माता पिता भय्या पति पुत्र बहिनि स्वजन ये सब दुःख करिकै भी छोडे न जायँ ऐसे हमने छोडि दिये ११ तिन हमकूं शीघ्रही छोडिकै स्नेह कूं तोरिकै कृष्ण जात भयो कदाचित् कहो कि जब गयो हो तब क्यों नहीं रोक्यो ताको जवाब देई हैं वाके मनमें विश्वास आइ गयो तासूं न रोक्यो वाके वचनको विश्वास तुम करो हो यह बलदेवजी कहैं ताको उत्तर वाके मीठे मीठे वचन स्त्रीनके मन में कैसे न आवें कहनवारी बहुत हैं याते नाना प्रकार के वचन हैं १२ तहाँ और गोपी कहे हैं नहीं स्थिर है चित्त जाको ऐसे कृष्णको जो है वचन ताय विवेकिनी जे पुरकी स्त्री हैं ते कैसे सत्य माने हैं और गोपी कहे हैं चित्र विचित्र है कथा जाकी

कच्चिदास्ते सुखं कृष्णः पुरस्त्रीजनवल्लभः ९ कच्चित्स्मरति वा बन्धून्पितरं मातरं च सः ॥ अप्यसौ मातरं द्रष्टुं सकृदप्यागमिष्यति ॥ अपि वा स्मरतेऽस्माकमनुसेवां महाभुजः १० मातरं पितरं भ्रातॄन् पतीन्पुत्रान्स्वसॄरपि ॥ यदर्थे जहिम दाशार्ह दुस्त्यजान्स्वजनान्प्रभो ११ तानः सद्यः परित्यज्य गतः सञ्छिन्नसौहृदः ॥ कथं नु तादृशं स्त्रीभिर्न श्रद्धीयेत भाषितम् १२ कथं नु गृह्णन्त्यनवस्थितात्मनो वचः कृतघ्नस्य बुधाः पुरस्त्रियः ॥ गृह्णन्ति वै चित्रकथस्य सुन्दरस्मितावलोकोच्छ्वसितस्मरातुराः १३ किं नस्तत्कथया गोप्यः कथाः कथयतापराः ॥ यात्यस्माभिर्विना कालो यदि तस्य तथैव नः १४ इति प्रहसितं शौरेर्जल्पितं चारुवीक्षितम् ॥ गतिं प्रेमपरिष्वङ्गं स्मरन्त्यो रुरुदुः स्त्रियः १५ सङ्कर्षणस्ताः कृष्णस्य सन्देशैर्हृदयंगमैः ॥ सान्त्वयामास भगवान् नानाऽनुनयकोविदः १६ द्वौ मासौ तत्र चावात्सीन्मधुं माधवमेव च ॥ रामः क्षपासु भगवान् गोपीनां रतिमावहन् १७ पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ॥ यमुनोपवने रेमे सेविते स्त्रीगणैर्वृतः १८ वरुणप्रेषिता देवी वारुणी वृक्षकोटरात् ॥ पतन्ती तद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत् १९ तं गन्धं मधुधाराया वायुनोपहृतं बलः ॥ आघ्रायोपगत

ऐसो जो कृष्ण ताकी सुन्दर मुसकानि चितवनि सूं क्षोभित जो कामदेव तासूं आतुर होयकै सत्य माने हैं १३ और गोपी कहे है हे गोपियो ! वाकी बातसूं हमें कहा काम है और बात क्यों न कहो हमारे बिना जैसे वाको काल व्यतीत होइ है तैसे वाके बिना हमारो भी काल व्यतीत होय है वाकूं सुख सूं बीते है हमकूं दुःखसूं बीते है इतनोही अन्तर है १४ या प्रकार श्रीकृष्णकी हँसनि बोलनि सुन्दरि चितवनि पांवनकी चलनि प्रेमपूर्वक आलिंगन इनकी सुधि करिकै सब स्त्री रोदनकरति भई १५ अनेक प्रकार समझायवे में निपुण ऐसे जो भगवान् सङ्कर्षण हैं सो मनोहर जो श्रीकृष्ण के संदेश हैं तिनकूं कहिकै समझावत भये १६ ता व्रजमें भगवान् बलदेवजी रात्रिनमें गोपीन कूं आनन्द देत चैत्र वैशाख दो महीने पर्यन्त बास करत भये १७ पूर्ण चन्द्रमा की कला हैं तिन करिकै शोभायमान कुमोदिनीनकी सुगन्धयुक्त पवन जहां आवै ऐसो जो यमुनाजी को बाग है तामें स्त्रीनकूं संगलैके रमण करतभये १८ वरुण की पठाई हुई वारुणी जो मदिरा देवी है सो वृक्षनकी खोतरि में तें गिरिके समस्त वनकूं ताय अपने गन्ध करिकै सुगन्धित करतभई १९ पवन ने प्राप्तकरी ऐसी जो मदिरा के धारकी सुगन्ध है ताय सूंघिकै बलदेवजी तहां आयकै स्त्रीन

कू संगलै है मदिरा पान करत भये २० स्त्रीन ने गाये हैं चरित्र जिनके और हलहै शस्त्र जिनको मतवारे अमल करिके विह्वल है नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी वनमें विचरतभये २१ वनमाला पहिरे एक कान में कुण्डल पहिरे मतवारे वैजयन्ती माला कूं धारणकरे तासू शोभायमान पसीना के बिन्दुन करिके शोभायमान मन्द मन्द हास्ययुक्त जो कमलरूप मुख है ताय धारणकरे २२ जलक्रीड़ा करिबे के लिये ईश्वर समर्थ बलदेवजी यमुनाकूं बुलावतभये तब मतवारे हैं या कारणतें बलदेवजीके वचनको अनादर करिके नहीं आवति भई ऐसी जो यमुना नदी है ताय क्रोधकरिके हलके अग्रभागसू खैंचतभये २३ हे पापिनी ! या कारण तें नहीं आई है अपनी इच्छापूर्वक विचरै जो तू है ताके हलके अग्रभागसूं सैकरान खण्ड करूंगो २४ हे राजन्परीक्षित् ! या प्रकार डराई जो यमुना है सो भयभीत होयकै चकित होइकै चरणन में गिरिकै यदुनन्दन बलदेवजी सूं बोलतभई २५ हे राम ! हे राम ! हे महाबाहो अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ! हे संसारके स्वामी !

स्तत्र ललनाभिःसमंपपौ २० उपगीयमानचरितो वनिताभिर्हलायुधः ॥ वनेषुव्यचरत्क्षीबो मदविह्वललोचनः २१ स्रग्व्येककुण्डलोमत्तो वैजयन्त्या चमालया ॥ बिभ्रत्स्मितमुखाम्भोजं स्वेदप्रालेयभूषितम् २२ सआजुहावयमुनां जलक्रीडार्थमीश्वरः ॥ निजंवाक्यमनादृत्य मत्तइत्यापगांबलः ॥ अनागतांहलाग्रेण कुपितोविचकर्षह २३ पापेत्वंमामवज्ञाय यन्नायासिमयाऽऽहुता ॥ नेष्येत्वांलाङ्गलाग्रेण शतधाकामचारिणीम् २४ एवंनिर्भर्त्सिताभीता यमुनायदुनन्दनम् ॥ उवाचचकितावाचं पतितापादयोर्नृप २५ रामराममहाबाहो नजानेतवविक्रमम् ॥ यस्यैकांशेनविधृता जगतीजगतःपते २६ परंभावंभगवतो भगवन्मामजानतीम् ॥ मोक्तुमर्हसिविश्वात्मन् प्रपन्नांभक्तवत्सल २७ ततोव्यमुञ्चद्यमुनां याचितोभगवान्बलः ॥ विजगाहजलंस्त्रीभिःकरेणुभिरिवेभराट् २८ कामंविहृत्यसलिलादुत्तीर्णायासिताम्बरे ॥ भूषणानिमहार्हाणि ददौकान्तिःशुभांस्रजम् २९ वसित्वावाससीनीले मालां* मामुच्यकाञ्चनीम् ॥ रेजेस्वलङ्कृतोलिप्तो माहेन्द्रइववारणः ३० अद्यापिदृश्यतेराजन् यमुनाकृष्टवर्त्मना ॥ बलस्यानन्तवीर्य्यस्यवीर्य्यंसूचयतीवहि ३१

तुम्हारे पराक्रम कूं मैं नहीं जानूं हूं जिन तुम्हारो एक अंश जो शेषजी हैं तिनने समस्त पृथ्वी कूं सहस्र फणन में ते एक फण पै धारण करि राखी है २६ हे भगवन् ! तुम्हारे श्रेष्ठ प्रभावकूं नहीं जानू हूं अब शरण आई जो मैं हूं ताकूं हे विश्वके आत्मा ! हे भक्तन पै हितकरनवारे ! छोड़िबे कूं योग्यहो २७ ता पीछे याचना जिनतें करी ऐसे जे भगवान् बलदेवजी हैं सो यमुनाकों छोड़िदेतभये जैसे हाथी हथिनीन के संग विहार करै ऐसे यमुना में विहार करते भये २८ इच्छापूर्वक विहार करिकै जलमें ते निकसे ऐसे जे बलदेवजी हैं तिनकूं लक्ष्मी नीलाम्बरकी धोती उपरना हैं तिनैं देतभई बड़े मोलके आभूषण और सुन्दरमाला देतभई २९ नीलाम्बर की धोती और नीलाम्बर कोही उपरना पहिरिकै सुवर्ण की माला पहिरिकै भले प्रकार शोभायमान चन्दन जिनके लग्यो ऐसे

* यथोक्तवैष्णवे ॥ वरुणप्रहितांचास्मै मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ समुद्राभेतथायुग्मे नीलेवस्त्रेप्यच्छताति (हरिवंशेच मरुणाति लक्ष्मीवाक्यम्) जातरूपमयैकंकुण्डलंवरभूषणम् ॥ आदिपद्मचपद्मालयंदिव्यश्रवणभूषणम् ॥ देवमातादितिर्दद्याद्वपौराणी भूषणक्रियामित्यादि १ ॥

बलदेवजी हैं सो इन्द्रको हाथी जैसे सुन्दर लगे है या प्रकार शोभायमान होतभये ३० हे राजन् परीक्षित ! अब पर्यन्त भी यमुनाजी खिंची दिखाई देइ है अनन्तहै पराक्रम जिनको ऐसे बलदेव जीके पराक्रमकूं यमुनाजी जनावै है ३१ व्रजकी स्त्रीनके संग विलासन करिके चलायमानहै चित्त जिनको ऐसे बलदेवजीको व्रजमें रमण करत एक राति जैसे बीते ऐसे सम्पूर्ण रात्रि बीतत भई ३२ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थप्रकाशिकायां दशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवविजयेयमुनाऽऽकर्षणनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥ * ॥ * ॥

(षट्षष्टितमेकाश्यांगत्वाऽहन्पौण्ड्रं हरिः ॥ तन्मित्रंचततोदृप्तंसुदक्षिणव धादिकम् १ छाछठवें अध्याय में कृष्णजी काशी जी में जाकर पौण्ड्रक और उसके मित्र और सुदक्षिण का वध आदिक करते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहैहैं हे राजन् परीक्षित् ! जब बलदेव जी नन्दराय के व्रजमें आये तब अज्ञानी जो करूष देश को राजा पौण्ड्रक है सो मैं वासुदेवहूं या प्रकार मन में

एवंसर्वानिशायाता एकेवरमतोव्रजे ॥ रामस्याक्षिप्तचित्तस्य माधुर्यैर्व्रजयोषिताम् ३२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवविजये यमुनाऽऽकर्षणंनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ नन्दव्रजंगतेरामे करूषाधिपतिर्नृप ॥ वासुदेवोऽहमित्यज्ञोदूतंकृष्णायप्राहिणोत् १ त्वंवासुदेवोभगवानवतीर्णोजगत्पतिः ॥ इतिप्रस्तोभितोबालैर्मेनआत्मानमच्युतम् २ दूतंचप्राहिणोन्मन्दः कृष्णायाव्यक्तवर्त्मने ॥ द्वारकायांयथाबालो नृपोबाल*कृतोऽबुधः ३ दूतस्तुद्वारकामेत्य सभायामास्थितंप्रभुम् ॥ कृष्णंकमलपत्राक्षं राजसन्देशमब्रवीत् ४ वासुदेवोऽवतीर्णोहमेकएवनचापरः ॥ भूतानामनुकम्पार्थं त्वंतुमिथ्याऽभिधान्त्यज ५ यानित्वमस्मच्चिह्नानि मौढ्याद्विभर्षिसात्वत ॥ त्यक्त्वैहिमांत्वंशरणं नोचेद्देहिममाहवम् ६ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कत्थनंतदुपाकर्ण्य पौण्ड्रक

विचार करके श्रीकृष्णचन्द्रके पास दूत भेजत भयो १ तू वासुदेव अवतर्योहै जगत्को पतिहै याप्रकार अज्ञानी पुरुषन ने जब तेरी प्रशंसा करी तब तू अपने मनमें अच्युत मानतभयो सो तू अच्युत नहीं है ऐसे कहिकै दूत भेजत भयो २ नहीं है प्रकट मार्ग जिनको ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके पास द्वारकापुरी में अज्ञानी पौण्ड्रक दूत भेजतभयो जैसे बालकन ने खेल में बनायो ऐसो जो अज्ञानी बालक है सो आपे को राजा माने है ऐसे अपने को पौण्ड्रक वासुदेव मानतभयो ३ कमलपत्रकी तुल्य हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णकूं दूत जाय के सभा में बैठे देखिकै राजा पौण्ड्रक को संदेशो कहत भयो ४ प्राणीनके ऊपर कृपाकरिबे के लिये एकही मैं वासुदेव अवतर्यो हूं दूसरो नहीं है तैंने मिथ्याही अपनो नाम वासुदेव धरि राख्यो है ताय त्यागि दे ५ हे यादवमूर्ख ! तासूं मेरे चिह्न जे गदा पद्म हैं तिनें धारण करैहै तिनकूं शीघ्र त्यागिकैं मेरी शरणआउ और जो नहीं छोडे तौ मेरे संग युद्ध करिबे की त्यारी करु ६ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं

* बालैर्नृपत्वेन क्रीडायाम्परिकल्पितइत्यर्थः ४ ॥

हे राजन् परीक्षित्! मन्द है बुद्धि जाकी ऐसो जो पौण्ड्र है ताको संदेशो श्रवण करिकै ता समय राजा उग्रसेन तें आदि लैके जे सभासद् हैं ते अतिशय करिकै हँसतभये ७ हँसिकै भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र दूततें बोलतभये हे मूढ! कृत्रिम जे सुदर्शनादिक चिह्न हैं तिनसूं तू अपनी ऐसी बड़ाई करै है तिनकूं तोपै ते छुड़ाइ लेउँगो ८ हे अज्ञानी! जा समय तू अपने मुख कूं ढँकिकै और उजली चील्ह गीध बगुलानने आयकै घेरयो ऐसो तू मरिकै सोवैगो ता समय कुत्तानको शरण लेइगो अर्थात् वे तोकूं भक्षण करेंगे ९ तासमय जो सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्रने अनादर करिकै कह्यो सो तैसेही दूत अपनो स्वामी जो मिथ्या वासुदेव है ताकूं सब श्रवण करावत भयो और श्रीकृष्णचन्द्रहू रथमें बैठि कै काशीपुरी में जातभये क्योंकि ता समय पौण्ड्रक भी अपनो मित्र काशी को राजा है ताके आयो है याते ता समय श्रीकृष्णचन्द्रहू प्राप्त होतभये १० ता समय महारथी जो पौण्ड्रक है सो भी श्रीकृष्णचन्द्र के युद्ध को उद्यम है ताय जानिकै दो अक्षौहिणी सेना सङ्ग लैके शीघ्रही

स्याल्पमेधसः॥ उग्रसेनादयःसभ्या उच्चकैर्जहसुस्तदा ७ उवाचदूतंभगवान्परिहासकथामनु ॥ उत्स्रक्ष्येमूढचिह्नानि यैस्त्वमेवंविकत्थसे ८ मुखंतदपिधायाज्ञ कङ्कगृध्रवटैर्वृतः॥ शयिष्यसेहतस्तत्र भविताशरणंशुनाम् ९ इतिदूतस्तदाक्षेपं स्वामिनेसर्वमाहरत्॥कृष्णोऽपिरथमास्थाय काशीमुपजगामह १० पौण्ड्रकोपितदुद्योगमुपलभ्यमहारथः ॥ अक्षौहिणीभ्यांसंयुक्तोनिश्चक्रामपुराद्द्रुतम् ११ तस्यकाशिपतिर्मित्रं पार्ष्णिग्राहोऽन्वयान्नृप ॥ अक्षौहिणीभिस्तिसृभिरपश्यत्पौण्ड्रकंहरिः १२ शङ्खार्यसिगदाशार्ङ्गश्रीवत्साद्युपलक्षितम्॥ बिभ्राणंकौस्तुभमणिं वनमालाविभूषितम् १३कौशेयवाससीपीते वसानंगरुडध्वजम् ॥ अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् १४ दृष्ट्वातमात्मनस्तुल्यवेषंकृत्रिममास्थितम् ॥ यथानटंरङ्गगतं विजहासभृशंहरिः १५ शूलैर्गदाभिःपरिघैः शक्त्यृष्टिप्रासतोमरैः ॥ असिभिःपट्टिशैर्बाणैः प्राहरन्नरयोहरिम् १६ कृष्णस्तुतत्पौण्ड्रककाशिराजयोर्बलंगजस्यन्दनवाजिपत्तिमत्॥ गदासिचक्रेषुभिरार्दयद्भृशं यथायुगान्तेहुतभुक्पृथक्प्रजाः १७ आयोधनंतद्रथवाजिकुञ्जरद्विपत्खरोष्ट्रैररिणाऽवखण्डितैः॥ बभौचितंमोदवहंमनस्विनामा

काशीपुरी तें बाहर निकसत भयो ११ ता पौण्ड्रकको मित्र काशीकी रक्षा करनवारो जो राजा है सो मित्रकी सहाय करिवेके लिये पीछे तें आवत भयो तब तीन अक्षौहिणी सेना जाके संग ऐसे पौण्ड्रककू भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र देखत भये १२ शङ्ख चक्र तरवारि गदा धनुष भृगुलता इनसूं आदि लैके जे चिह्न हैं तिनसूं देख्यो जाय है और कौस्तुभमणि कूं धारण करे वनमाला कूं पहिरिकै शोभायमान है १३ रेशमी पीरेधोती उपरनानकूं पहिरे गरुडको छापो जाकी ध्वजामें है बडे मोलके है मुकुट और आभूषण जाके मकराकृत कुण्डलन करिकै प्रकाशमान है १४ जैसे रङ्गभूमिमें वेष बनायकै प्राप्तभयो जो नट है तैसे अपनी बराबरिके बनाये भये रूपकूं धारणकरे ऐसो जो मिथ्या वासुदेव है ताय देखिकै श्रीकृष्णचन्द्र बहुत हँसतभये क्योंकि नकली ने ज्योंकी त्यों नकल उतारी है १५ त्रिशूल गदा नेंड़े बरछी गुर्ज नेजा तोमर तरवारि पट्टा बाण ये हथियार वैरी श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर चलावत भये १६ जैसे प्रलयकी अग्नि जरायुज स्वेदज अण्डज उद्भिज्ज इन चार प्रकारके प्राणीनकूं पीड़ा देइ है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मिथ्यावासुदेवकूं और काशीके राजा कूं और तिनके हाथी रथ घोडा प्यादे हैं जामें ऐसी जो चतुरंगिणी सेना है ताय गदा तरवारि चक्र

बाण इनसूं बहुत पीड़ा देतभये १७ चक्रसूं काटेभये जे रथ घोड़ा हाथी प्यादे गये ऊंट जामें परे ऐसी जो रणभूमिहै सो सुन्दर लगतभई जो कोई शूरवीर हैं तिनकूं देखिकै आनन्द होतभयो जैसे प्रलयकालमें भयानक शिवजीके खेलिवेको स्थान सुन्दर लगै है या प्रकार १८ सेना मारे पीछे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते पौण्ड्रकतें कहतभये भो भोः पौण्ड्रक ! तू दूतके वचन सूं मोते कहत भयो वे तेरे शस्त्र छुड़ाइ देउंगो १९ हे अज्ञानी ! मेरो नाम जो वासुदेवहै सो तेंने अपनो नाम झूठोही धरिलीनो यह तेरो नाम छूटि जायगो और जो तेरे आगे युद्ध न करूंगो तो तेरो शरण लेउंगो २० या प्रकार तिरस्कार करिकै पैनेबाणनसूं पौण्ड्रकको रथ तोरिकै जैसे इन्द्र अपने वज्रतें पर्व्वत के शिखर काटै है तैसे चक्रतें श्रीकृष्णचन्द्र पौण्ड्रकको शिर काटत भये २१ तैसेही काशीके राजाको बाणन करिकै देहतें शिर उखारिकै काशीपुरीमें पटकत भये जैसे कमल कोशकूं पवन पटकैहै ऐसे पटकतभये २२ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र मित्रसहित जो पौण्ड्रकहै ताय

क्रीडनंभूतपतेरिवोल्बणम् १८ अथाहपौण्ड्रकंशौरिर्भो भोःपौण्ड्रकयद्भवान् ॥ दूतवाक्येनमामाह तान्यस्त्राण्युत्सृजामिते १९ त्याजयिष्येऽभिधानंमे यत्त्वयाऽज्ञमृषाधृतम् ॥ व्रजामिशरणंतेऽद्य यदिनेच्छामिसंयुगम् २० इतिक्षिप्त्वाशितैर्बाणैर्विरथीकृत्यपौण्ड्रकम् ॥ शिरोऽवृश्चद्रथाङ्गेनवज्रेणेन्द्रोयथागिरेः २१ तथाकाशिपतेःकायाच्छिरउत्कृत्यपत्रिभिः ॥ न्यपातयत्काशिपुर्यां पद्मकोशमिवानिलः २२ एवंमत्सरिणंहत्वा पौण्ड्रकंससखंहरिः ॥ द्वारकामाविशत्सिद्धैर्गीयमानकथामृतः २३ सनित्यंभगवद्ध्यानप्रध्वस्ताऽखिलबन्धनः ॥ बिभ्राणश्चहरेराजन्स्वरूपंतन्मयोऽभवत् २४ शिरःपतितमालोक्यराजद्वारेसकुण्डलम् ॥ किमिदंकस्यवावक्त्रमितिसंशयिरेजनाः २५ राज्ञःकाशिपतेर्ज्ञात्वामहिष्यःपुत्रबान्धवाः ॥ पौराश्चहाहताराजन् नाथनाथेतिप्रारुदन् २६ सुदक्षिणस्तस्यसुतःकृत्वासंस्थाविधिंपितुः ॥ निहत्यपितृहन्तारं यास्यम्यपचितिंपितुः २७ इत्यात्मनाऽभिसंधाय सोपाध्यायोमहेश्वरम् ॥ सुदक्षिणोऽर्चयामास परमेणसमाधिना २८ प्रीतोऽविमुक्तेभगवांस्तस्मैवरमदाद्विभुः ॥ पितृहन्तृवधोपायं सवव्रेवरमीप्सितम् २९ दक्षिणाग्निंपरिचरब्राह्मणैःसममृत्विजम्

मारिकै सिद्धनने गायो है कथारूप अमृत जिनको ऐसे श्रीकृष्ण द्वारकापुरीमें आवतभये २३ हे राजन् परीक्षित् ! भगवान्के ध्यानतें दूरि भये हैं सब मनोरथ जाके ऐसो पौण्ड्रक हरिके स्वरूप कूं हरिको नाम मिथ्या मानिकै अपनो नाम हरिमय मानतभयो २४ काशीमें राजाके द्वारपै कुण्डल सहित परयो जो शिर है ताय देखिकै यह कहांहै कौनको मुख है या प्रकार मनुष्य सन्देह करत भये २५ पीछे हे राजन् परीक्षित् ! काशीके राजाको शिर जानिकै रानी हैं ते और पुत्र भय्या बन्धु तथा पुरवासी हैं ते हे नाथ ! हाय हाय मरे मरे याप्रकार कहि कहिके रोदन करतभये २६ ता काशी के राजाको सुदक्षिण नाम करिकै पुत्रहै सो अपने पिताकी परलोक क्रिया करिकै पिताको मारनवारो कृष्णहै ताय मारिकै पिताको ऋण चुकाऊंगो २७ या प्रकार बुद्धिसूं निश्चय करिकै उपाध्यायन सहित जो सुदक्षिणहै सो परम समाधि लगायकै शिवजीको पूजन करतभयो २८ विशेष करिकै अविमुक्त जो भगवान् शिवजी हैं सो प्रसन्न होयकै ता सुदक्षिणकूं तू वर मांग या प्रकार कहत भये तब सुदक्षिणहै सो पिताको मारनवारो जो है ताके वधको उपाय वाञ्छित वरहै ताय मांगत भयो २९ ऋत्विज कैसो नाई (ऋत्विजगृहितजमित्स्वनियोगकरणंयज्ञस्यदेवमूर्तिंजमितिश्रु-

तेः) अपनी आज्ञाको करनवारो ऐसो जो कृत्याको अग्निहै ताय ब्राह्मणनकूं सायलेकै सेवन करि वह अग्नि प्रमथगण हैं तिनकूं संगलैकै मारणकी जो विधिहै ता करिकै तेरे मनोरथ सिद्ध करैगो ३० ब्राह्मणकी भक्ति करिके रहित जो पुरुषहै तापै चलावैगो तो तेरो सङ्कल्प सिद्ध होयगो यामें कहा कह्यो ब्राह्मणकी भक्ति करें जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनपै चलावैगो तो उलटो परेगो या प्रकार आज्ञा जाकूं दीनी ग्रहण कर्‌यो है नियम जाने ऐसो जो सुदक्षिणहै सो श्रीकृष्णकूं घातसूं मारिबेके लिये जैसे शिवजी ने आज्ञादीनी तैसेही करत भयो ३१ वह जो कुण्ड है तासूं अति भयानक मूर्त्तिमान् अग्नि उठतभयो तप्त ताम्रकी तुल्यहै शिखा और दाढ़ी जाकी नेत्र और मुखसूं अंगारनकूं उगिलै ३२ दांतन करिकै भयानक जे भ्रुकुटीदण्ड तिनसूं कठोर है मुख जाको अपनी जीभतें ओंठनके अग्रभागकूं चाटै जाज्वल्यमान जो त्रिशूलहै ताकूं भ्रमण करेहै ३३ और बड़े तालसे लम्बे पाव हैं तिनपूं पृथ्वी कूं कँपावत और दशो दिशानकूं जरावत भूत प्रेतन

अभिचारविधानेन सचाग्निःप्रमथैर्वृतः ३० साधयिष्यतिसङ्कल्पमब्रह्मण्येप्रयोजितः ⊛ ॥ इत्यादिष्टस्तथाचक्रेकृष्णायाभिचरन्व्रती ३१ ततोऽग्निरुत्थितः कुण्डान्मूर्त्तिमानतिभीषणः ॥ तप्तताम्रशिखाश्मश्रुरङ्गारोद्गारिलोचनः ३२ दंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीदण्डकठोरास्यःस्वजिह्वया ॥ आलिहन्सृक्किणीनग्नोविधुन्वंस्त्रिशिखंज्वलत् ३३ पद्भ्यांतालप्रमाणाभ्यां कम्पयन्नवनीतलम् ॥ सोऽभ्यधावद्वृतोभूतैर्द्वारकांप्रदहन्दिशः ३४ तमाभिचारदहनमायान्तंद्वारकौकसः ॥ विलोक्यतत्रसुःसर्वे वनदाहेमृगायथा ३५ अक्षैःसभायांक्रीडन्तं भगवन्तंभयातुराः ॥ त्राहित्राहित्रिलोकेश वह्नेःप्रदहतःपुरम् ३६ श्रुत्वातज्जनवैक्लव्यं दृष्ट्वास्वानांचसाध्वसम् ॥ शरण्यःसंप्रहस्याह माभैष्टेत्यवितास्म्यहम् ३७ सर्वस्यान्तर्बहिःसाक्षी कृत्यांमाहेश्वरींविभुः ॥ विज्ञायतद्विघातार्थं पार्श्वस्थं चक्रमादिशत् ३८ तत्सूर्य्यकोटिप्रतिमंसुदर्शनं जाज्वल्यमानंप्रलयाऽनलप्रभम् ॥ स्वतेजसाखंककुभोऽथरोदसी चक्रंमुकुन्दास्त्रमथाग्निमार्दयत् ३९

कूं संगलैकै वह अग्नि द्वारकापुरी में आवतभयो ३४ वनके पजरिबे में मृग जैसे त्रासकूं पावे हैं ऐसे चलीआवै जो कृत्याग्नि है ताय देखिकै समस्त द्वारकावासी त्रासकूं पावतभये ३५ पासेन सूं सभामें खेलें ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनसूं भयकरिकै व्याकुल जे द्वारकावासी हैं ते हे त्रिलोकीके ईश्वर! अग्नि करिके पजरै जो पुरहै ताकी तुम रक्षाकरो ऐसे कहतभये ३६ मनुष्यनकी व्याकुलताहै ताय सुनिकै और अपने पुरमें यादवनकूं हरबराहटहै ताय देखिकै शरणागतनके रक्षक जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो हँसिकै भय मतिकरो मैं रक्षा करूंगो या प्रकार कहतभये ३७ सबके भीतर बाहर के देखनवारे समर्थ जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो महादेवकी कृत्याग्नि है यह जानिकै ताके नाश करिबे के निमित्त पास ठाड़ो जो चक्रहै ताकूं आज्ञा करतभये ३८ करोड़ सूर्य्यकी बराबरि है तेज जाको प्रलयकालकी अग्निकी तुल्य है कान्ति जाकी अपने तेज करिकै आकाश दिशा यावा पृथ्वी इनकूं प्रकाशै ऐसो जो मुकुन्द को अस्त्र चक्र सुदर्शनहै सो ता अग्निकूं पीड़ा देतभयो ३९

⊛ अब्रह्मण्ये प्रयोजित इति कृष्णे प्रयोजितो विपरीतो भविष्यतीति सूचितम् तस्य ब्रह्मभक्तत्वात् १ ॥

हे राजन् परीक्षित्! चक्रहै हाथमें जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके अस्त्रकेतेजतें ताड़ितभयो याहीतें टूट्यो है मुख जाको ऐसो जो कृत्याको अग्निहै सो उलटो नगादिकें काशीमें आइकें मन्त्रके दरा-वनवारे ऋत्विजन सहित जो सुदक्षिण है ताय जरावतभयो क्योंकि अपनो कर्यो अभिचार है यामें कहा द्योतन कर्यो कि जो शत्रुपै चलिजाय तौ चलिजाय नहीं तौ जो चलावै ताकूं मारै ४० ता अग्निके पीछे आयो ता श्रीकृष्णचन्द्र को चक्रहै सो मञ्चान सहित जो सभाहैं ताय और हवेली दूकान पुरके दरवाजे और खजानेन सहित अटारी कोठे हाथी घोडा अन्न इनकी शाला जामें वनी ऐसी जो काशी है ताय जरावत भयो ४१ नहीं क्लेशयुक्त है कर्म्म जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको जो सुदर्शन चक्रहै सो सम्पूर्ण काशीकूं जरायके फेरि पास आयकें ठाड़ो होतभयो ४२ उत्तम है यश जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को यह पराक्रमहै ताय जो मनुष्य सावधान होयकैं श्रवण करै अथवा श्रवण करावै वह सम्पूर्ण पापननें छूटि जाय है ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपौण्ड्रकादिवधोनामपट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

कृत्याऽनलःप्रतिहतःसरथाङ्गपाणेरस्त्रौजसासनृपभग्नमुखोनिवृत्तः ॥ वाराणसींपरिसमेत्यसुदक्षिणंतं सर्त्विग्जनंसमदहत्स्वकृतोऽभिचारः* ४० चक्रंच विष्णोस्तदनुप्रविष्टं वाराणसींसाट्टसभालयापणाम् ॥ सगोपुराट्टालककोष्ठसङ्कुलां सकोशहस्त्यश्वरथान्नशालाम् ४१ दग्ध्वावाराणसींसर्वां विष्णोश्चक्रंसुदर्शनम् ॥ भूयःपार्श्वमुपातिष्ठत्कृष्णस्याक्लिष्टकर्म्मणः ४२ यएनंश्रावयेन्मर्त्यउत्तमश्लोकविक्रमम् ॥ समाहितोवाशृणुयात्सर्व्वपापैःप्रमुच्यते ४३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपौण्ड्रकादिवधोनामपट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

राजोवाच ॥ भूयोऽहंश्रोतुमिच्छामि रामस्याद्भुतकर्म्मणः ॥ अनन्तस्याप्रमेयस्य यदन्यत्कृतवान्प्रभुः १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ नरकस्यसखाकश्चिद्द्विविदोनामवानरः ॥ सुग्रीवसचिवःसोऽथभ्रातामैन्दस्यवीर्यवान् २ सख्युःसोऽपचितिंकुर्व्वन् वानरोराष्ट्रविप्लवम् ॥ पुरग्रामाकरान्घोषानदहद्वह्निमुत्सृजन् ३ क्वचित्सशैलानुत्पाट्यतैर्देशान्समचूर्णयत् ॥ आनर्त्तान्सुतरामेव यत्राऽऽस्तेऽमित्रहाहरिः ४ क्वचित्समुद्रमध्यस्थोदोर्भ्यामुत्क्षिप्यतज्जलम् ॥ देशा

(सप्तषष्टितमेरामोगिरौरैवतकेमदात् ॥ स्त्रैरंयुवतिभिःक्रीडन्नवधीद्द्विविदंखलम् १ सड़सठवें अध्याय में बलदेव जी मद सूं इच्छापूर्वक रैवतक पर्वत मे स्त्रियों के साथ क्रीडा करते हुये दुष्ट द्विविद को मारते भये १) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे शुकदेवजी! अद्भुत हैं कर्म्म जिनके अनन्त जिनको नहीं प्रमाण करिवे में न आवें ऐसे जे राम बलदेवजी और जे चरित्र करत भये तिनकों मैं फेरि सुनिवे की इच्छा करूं हूं मेरे आगे वर्णन कीजिये १ तब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! नरकासुर को मित्र सुग्रीव को मन्त्री मैन्द को भय्या बड़ो पराक्रमी कोई द्विविद नाम करिकै वानर हो २ सो अपने मित्र नरकासुर को ऋण चुकायवे के निमित्त पुर ग्राम खानि खिरक छप्पर इनकूं जरावत देशन को नाश करत भयो ३ कभऊं यह वानर पर्वतन कूं उखारि

* अभिचर्यतमग्निनऽभिचार कृत्यान ॥

कै देशनके ऊपर पटकिकै चूर्ण करत भयो और जिन देशन में कि मित्र नरकासुर के मारनवारे श्रीकृष्णचन्द्र रहे हैं उन देशन कूं बहुत कष्ट देतभयो ४ दश हजार हाथी को है बल जामें ऐसो द्विविद वानर समुद्र के बीच में ठाडो होयकै भुजान तें जलकूं उछारि कै समुद्र के तट के जो देशहैं तिनकूं डुबावत भयो ५ दुष्ट वानर है सो बडे बडे ऋषिन के आश्रमन में जाय कै वृक्षन कूं तोरि कै मल मूत्र करिकै यज्ञ की अग्नि कूं दूषित करत भयो ६ बड़ो है गर्व जाके ऐसो जो वन्दर है सो पुरुष और स्त्रीन कूं पकरिकै पर्वत की गुफा में कन्दरान में धरिकै जैसे भृङ्गी कीड़ान कूं मूंदि देइहै ऐसे मूदत भयो ७ या प्रकार देशनमें उपद्रव करत कुलकी स्त्रीनकूं दोष लगायकै मनोहर गीतहै ताकू सुनिकै वानर रैवतक पर्वतमें जातभयो ८ ता रैवतक पर्वत में जायकै यादवन के पालनवारे कमलकी माला पहिरे सुन्दर देखिवे योग्य हैं सब अंग जिनके स्त्रीन के वीचमें वैठे ऐसे जो राम बलदेव जी हैं तिनें देखत भयो ९ कैसे बलदेवजी देखे सो कहे हैं—वरुणहै देवता जाको ऐसी

नागायुतप्राणोवेलाकूलानमज्जयत् ५ आश्रमानृषिमुख्यानां कृत्वाभग्नवनस्पतीन् ॥ अदूषयच्छकृन्मूत्रैरग्नीन्वैतानिकान्खलः ६ पुरुषान्योषितोदृप्तः क्ष्माभृद्द्रोणीगुहासुसः ॥ निक्षिप्यचाप्यधाच्छैलैः पेशस्कारीवकीटकम् ७ एवंदेशान्विप्रकुर्वन् दूषयंश्चकुलस्त्रियः ॥ श्रुत्वासुललितंगीतं गिरिंरैवतकंययौ ८ तत्रापश्यद्यदुपतिं रामंपुष्करमालिनम् ॥ सुदर्शनीयसर्वाङ्गं ललनायूथमध्यगम् ९ गायन्तंवारुणींपीत्वा मदविह्वललोचनम् ॥ विभ्राजमानंवपुषा प्रभिन्नमिववारणम् १० दुष्टःशाखामृगःशाखामारूढःकम्पयन्द्रुमान् ॥ चक्रेकिलकिलाशब्दमात्मानंसम्प्रदर्शयन् ११ तस्यधार्ष्ट्यंकपेर्वीक्ष्य तरुण्योजातिचापलाः ॥ हास्यप्रियाविजहसुर्बलदेवपरिग्रहाः १२ ताहेलयामासकपिर्भ्रूक्षेपैःसम्मुखादिभिः ॥ दर्शयन्स्वगुदंतासां रामस्यचनिरीक्षतः १३ तंग्राव्णा प्राहरत्क्रुद्धोबलःप्रहरतांवरः ॥ सवञ्चयित्वाग्रावाणं मदिराकलशंकपिः १४ गृहीत्वाहेलयामास धूर्तस्तंकोपयन्हसन् ॥ निर्भिद्यकलशंदुष्टोवासांस्यास्फालयद्बलम् १५ कदर्थीकृत्यबलवान्विप्रचक्रेमदोद्धतः ॥ तंतस्याविनयंदृष्ट्वादेशांश्चतदुपद्रुतान् १६ क्रुद्धोमुसलमादत्तहलंचारिजिघांसया ॥ द्विविदो

मदिराकूं पीकै गावै मद करिकै विह्वल हैं नेत्र जिनके मतवारे हाथीकी तुल्य देह करिकै प्रकाशमान हैं १० दुष्ट जो शाखामृग वन्दरहै सो वृक्षकी शाखानपै चढिकै उनकूं हलावत आपेकूं दिखायकै किचिर किचिर शब्द करतभयो ११ वह जो वन्दरहै ताकी धृष्टता देखिकै स्वभाव तें चञ्चल हँसी जिनकूं प्यारीलगै ऐसी जो बलदेवजीके सगकी स्त्रीहैं तेहू हँसतिभई १२ वह जो वन्दरहै सो भ्रुकुटी चढायकै सामहें घुड़किकै स्त्रीनकूं अपनी गुदा दिखायकै बलदेवजी के देखत स्त्रीनकी अवज्ञा करतभयो १३ प्रहार करनवारेन में श्रेष्ठ ऐसे बलदेवजी क्रोध करिकै वन्दरके पत्थर मारतभये वह धूर्त्त वन्दर पत्थर कूं बचाय के मदिराको कलशहै ताय लैकै हँसिकै बलदेवजी कूं क्रोध कराय कै अवज्ञा करतभयो दुष्ट जो वन्दर है सो मदिरा के कलश कूं फोरिकै स्त्रीन के वसन कूं खैंचि कै फारत भयो बडो बलवान् मद करिकै उद्धत जो वन्दर है सो बलदेवजी की कदर्थना करिकै दुःख देतभयो ता वन्दर की अनम्रता देखिकै और उपद्रव जिनमें मचायो ऐसे देशनकूं देखिकै १४।१५।१६

और जिनकूं आयगयो ऐसे बलदेवजी ता वैरी के मारिवे कूं हल मूसल लेत भये बड़ो पराक्रमी बन्दर है सो वो हाथ में शालवृक्ष कूं उखारिके १७ शीघ्रता सूं पास आय के ता वृक्षकी चोट बलदेवजी के माथे में मारत भयो पर्वतकी तुल्य माथे पै चल्यो आवै जो शाल को वृक्ष है ताय १८ बलवान् बलदेवजी पकरत भये और अपने मूसलकूं वा बन्दर के मारत भये मूसल करिके फट्यो है माथो जाको ऐसो जो बन्दर है सो मूसल की चोट कू नहीं मानिकै जैसे गेरू की धार ते पर्वत सुन्दर लगे है ऐसे रुधिर की धारा जो बही तासूं सुन्दर लगतभयो बड़ो है क्रोध जाके ऐसो बन्दर फेरि और जो वृक्ष है ताकूं बलतें उखारिके वाके पत्तानकूं साफ करिकै बलदेवजी के मारत भयो तब बलदेवजी वा वृक्षके टूकटूक करतभये ताके पीछे और जो वृक्ष है ताकूं उखारिकै बलदेवजी के मारत भयो तब वा वृक्षके बलदेवजी सौ टूक करतभये १९। २०। २१ या प्रकार भगवान् बलदेवजी के साथ युद्ध करिकै फेरि फेरि जब वृक्ष कटि गये तब चारयो ओर तें

ऽपिमहावीर्य्यःशालमुद्यम्यपाणिना।१७ अभ्येत्यरभसातेनबलंमूर्द्धन्यताडयत् ॥ तन्तुसङ्कर्षणोमूर्द्ध्नि पतन्तमचलोयथा १८ प्रतिजग्राहबलवान् सुनन्देनाहनच्चतम् ॥ मुसलाहतमस्तिष्कोविरेजेरक्तधारया १९ गिरिर्यथागैरिकया प्रहारंनानुचिन्तयन् ॥ पुनरन्यंसमुत्क्षिप्य कृत्वानिष्पत्रमोजसा २० तेनाहनत् सुसंक्रुद्धस्तंबलःशतधाऽच्छिनत् ॥ ततोऽन्येनरुषाजघ्नेतंचापिशतधाऽच्छिनत् २१ एवंयुद्ध्यन्भगवताभग्नेभग्नेपुनःपुनः ॥ आकृष्यसर्वतोवृक्षान्निर्वृक्षमकरोद्वनम् २२ ततोऽमुञ्चच्छिलावर्षंबलस्योपर्यमर्षितः ॥ तत्सर्वंचूर्णयामासलीलयामुसलायुधः २३ सबाहूतालसङ्काशौ मुष्टीकृत्यकपीश्वरः ॥ आसाद्यरोहिणीपुत्रंताभ्यांवक्षस्यरूरुजत् २४ यादवेन्द्रोऽपितंदोर्भ्यांत्यक्त्वामुसललाङ्गले ॥ जत्रावभ्यर्दयत्क्रुद्धःसोऽपतद्रुधिरंवमन् २५ चकम्पेतेनपततासटङ्कःसवनस्पतिः ॥ पर्वतःकुरुशार्दूल वायुनानौरिवाम्भसि २६ जयशब्दोनमःशब्दःसाधुसाध्वितिचाम्बरे ॥ सुरसिद्धमुनीन्द्राणामासीत्कुसुमवर्षिणाम् २७ एवंनिहत्यद्विविदंजगद्व्यतिकरावहम् ॥ संस्तूयमानोभगवाञ्जनैःस्वपुरमाविशत् २८ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेद्विविदवधोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः६७॥

वृक्षन कूं उखारिकै नहीं रह्यो है एक हू वृक्ष जामें ऐसो वा वनकूं करत भयो २२ ताके पीछे भई है असहनता जाके ऐसो जो बन्दर है सो बलदेवजी के ऊपर पत्थर बरसावत भयो मूसलहै हथियार जिनको ऐसे बलदेवजी बन्दरने पत्थर जे बरसाये तिनें लीला करिकै चूर्ण करतभये २३ बन्दरनको ईश्वर जो वह बन्दर है सो ताड़वृक्ष की बराबरि बड़ी भुजाई तिनकी मूठी बाँधिकै रोहिणीपुत्र जो बलदेवजी हैं तिनके पास जायकै छातीमें मुष्टि मारतभयो २४ यादवन के इन्द्र जो बलदेवजी हैं सो भी हल मूसलकू त्यागिकै क्रोध करिकै भुजान तें बन्दरके कण्ठकूं मर्दन करतभये ता समय वह बन्दर रुधिरको वमन करि गिरिकै मरतभयो २५ हे कौरवनमें सिंहरूप राजा परीक्षित्! गिर्यो जो बन्दर है तासूं झरनानसहित और वृक्षनसहित जो पर्वत है सो कांपतभये जैसे जलमें पवनसूं नौका कांपै या प्रकार २६ आकाशमार्ग में देवता सिद्ध मुनीश्वर हैं ते फूलनकी वर्षा करत जयशब्द और नमःशब्द और भले भले शब्द करतभये २७ या प्रकार जगत् को नाश करनवारो जो बन्दर

⊛ मस्ति ह मस्तिष्कमथशीर्ष २ ॥

है ताय मारिकै जननने स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान् बलदेवजी द्वारकापुरीमें आवत भये २८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेद्विविदवधोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

(अष्टषष्टितमेसाम्बोनिरुद्धःकौरवैर्युधि ॥ तद्विमोक्षायरामेणगजाह्वयविकर्षणम् १ अडसठवें अध्यायमें कौरवोंने साम्बको संग्राममें बाध लियो तब उनके छुड़ाने के लिये बलदेवजीने हस्तिनापुरको खींचोहै १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! युद्धमें जीतनवारो जो जाम्बवतीको पुत्र साम्बहै सो दुर्योधनकी पुत्री जो लक्ष्मणाहै ताय स्वयंवर में तें हरिकै लावतभयो १ तासमय सम्पूर्ण कौरव क्रोधकरिकै बोलतभये यह बालक बडो अनम्रहै हमारो अनादर करिकै नहीं है काम जाके ऐसी हमारी कन्याकूं बलतें हरतभयो २ अनम्र जो यह बालकहै ताय बाधिलेउ यादव हमारो कहा करेंगे जे यादव हमारी प्रसन्नतासूं वृद्धिकूं प्राप्तभये हैं हमारी दीनी भई पृथ्वीको भोग करे हैं ३ या बालककूं बंध्यो सुनिकै जो यादव यहा आवेंगे तौ दूरि भयो है गर्व जिनको

श्रीशुकउवाच ॥ दुर्योधनसुतांराजल्लक्ष्मणांसमितिंजयः ॥ स्वयंवरस्थामहरत् साम्बोजाम्बवतीसुतः १ कौरवाःकुपिताऊचुर्दुर्विनीतोऽयमर्भकः ॥ क

दर्थीकृत्यनःकन्यामकामामहरद्बलात २ बध्नीतेमंदुर्विनीतं किंकरिष्यन्तिवृष्णयः ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितां दत्तांनोभुञ्जतेमहीम् ३ निगृहीतंसुतंश्रुत्वाय

द्येष्यन्तीहवृष्णयः ॥ भग्नदर्पाःशमंयान्ति प्राणाइवसुसंयताः ४ इतिकर्णःशलोभूरिर्यज्ञकेतुःसुयोधनः ॥ साम्बमारेभिरेबद्धुं कुरुवृद्धानुमोदिताः ५ दृष्ट्वाऽ

नुधावतः साम्बोधार्त्तराष्ट्रान्महारथः ॥ प्रगृह्यरुचिरंचापं तस्थौसिंहइवैकलः ६ तंतेजिघृक्षवःक्रुद्धास्तिष्ठतिष्ठेतिभाषणः ॥ आसाद्यधन्विनोबाणैःकर्णाग्र

ण्यःसमाकिरन् ७ सोऽपविद्धःकुरुश्रेष्ठ कुरुभिर्यदुनन्दनः ॥ नामृष्यत्तदाचिन्त्यार्भः※सिंहःक्षुद्रमृगैरिव ८ विस्फूर्ज्यरुचिरंचापं सर्वान्विव्याधसायकैः ॥ कर्णा

दीन्षड्रथान्वीरस्तावद्भिर्युगपत्पृथक् ९ चतुर्भिश्चतुरोवाहानेकैकेनचसारथीन् ॥ रथिनश्चमहेष्वासांस्तस्यतत्तेऽभ्यपूजयन् १० तन्तुतेविरथंचक्रुश्चत्वारश्च

ऐसे प्राणायाम करे तें जैसे इन्द्रिय शान्त होती हैं ऐसे शान्तिकूं पावेंगे ४ याप्रकार भीष्मजीने अनुमोदन जिनकूं कर्यो ऐसे कर्ण शल भूरि यज्ञकेतु दुर्योधन भीष्म सहित ये छः बांधिबेको उपाय करतभये ५ महारथी जो साम्ब है सो पीछे दौरे चले आवें जे छः धृतराष्ट्रके अनुयायी तिनें देखिकै सुन्दर धनुष् हाथमें लेके सिंहकी तुल्य अकेलोही ठाढो होत भयो ६ कर्ण है मुख्य जिनमें ऐसे धनुषके धारण करनवारे छः हैं ते क्रोधमें भरिकै साम्बके पकरिवेके लिये ठाढोरहु ठाढोरहु ऐसे कहत पास आय कै बाणन कूं चलावत भये ७ हे राजन् परीक्षित् ! यादवन कूं आनन्द के देनवारे अचिन्त्य भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को पुत्र जो साम्ब है ताके कौरवनने बाण मारे तब क्षुद्र जानवरन के पराक्रम कूं सिंह जैसे नहीं सहारे है ऐसे नहीं सहारत भयो ८ वीर जो साम्ब है सो मनोहर धनुषकूं चढाय कै कर्णादिक जे छः रथी हैं तिनें छः बाणन करिकै एक सङ्ग बेधतभयो ९ चार बाण करिकै रथके चारों घोड़ान कूं और एक एक बाण करिकै रथवानन कूं बेधन भयो बड़े बड़े हैं धनुष् जिनके ऐसे जे छः रथी हैं ते साम्ब के पराक्रमकी प्रशंसा करतभये १० तिन कौरवनमें ते चारजने तौ चारों घोडानकूं मारत भये और एकजनो रथवानकूं मारतभयो एक धनुषकूं तोरत

※ अचिन्त्यस्यभगवतोऽर्भोऽर्भक अचिन्त्यश्चासावर्भश्चेति वा ५ ॥

भयो या प्रकार सब मिलिकै साम्ब कूं विरथ करत भये ११ कौरव हैं ते कष्ट सूं युद्ध में बालक साम्बकूं विरथ करिकै बांधिकै अपनी कन्याहै ताय लैके जीतिकै अपने पुरमें जात भये १२ हे राजन् परीक्षित्! नारदके कहे ते साम्ब कूं बँध्यो सुनिकै भयो है क्रोध जिनके ऐसे यादव राजा उग्रसेन के कहे तें कौरवन सूं लड़िवे को उद्यम करत भये १३ कलियुग के पापन के नाश करनवारे जो बलदेवजी हैं सो कौरव यादवन को परस्पर विरोध न होइ यह विचारिकै कवच जिनने पहिरे हथियार बांधे जे यादव हैं तिनें समझाय कै १४ सूर्य की तुल्य है कान्ति जाकी ऐसे रथ में बैठि कै ब्राह्मण कूं सङ्ग लिये कुलमें वृद्ध हैं तिनकूं सङ्ग लैके जैसे ग्रहणरहित चन्द्रमा गमन करे है ऐसे हस्तिनापुरकूं जात भये १५ बलदेवजी हस्तिनापुर में जाय कै वस्ती के बाहर बगीचा में ठहरि कै कौरवनको अभिप्राय जानिवे के लिये धृतराष्ट्र के पास उद्धवजी कूं भेजत भये १६ उद्धवजी अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्र कूं प्रणाम करिकै भीष्मजी कूं और बाह्लीक सहित द्रोणाचार्य्य कूं

तुरोहयान्॥ एकस्तुसारथिंजघ्ने चिच्छेदान्यःशरासनम् ११ तम्बद्ध्वाविरथीकृत्यकृच्छ्रेणकुरवोयुधि॥ कुमारंस्वस्यकन्याञ्च स्वपुरंजयिनोऽविशन् १२तच्छ्रुत्वानारदोक्तेन राजन्सञ्जातमन्यवः॥कुरून्प्रत्युद्यमञ्चक्रुरुग्रसेनप्रचोदिताः१३शान्तयित्वातुतान्रामः सन्नद्धान्वृष्णिपुङ्गवान्॥ नैच्छत्कुरूणांवृष्णीनां कलिंकलिमलापहः १४ जगामहास्तिनपुरं रथेनाऽऽदित्यवर्चसा॥ ब्राह्मणैःकुलवृद्धैश्च वृतश्चन्द्र इवग्रहैः १५ गत्वागजाह्वयंरामो बाह्योपवनमास्थितः॥ उद्धवंप्रेषयामास धृतराष्ट्रंबुभुत्सया। १६ सोऽभिवन्द्याम्बिकापुत्रं भीष्मंद्रोणञ्चबाह्लिकम्॥दुर्योधनञ्चविधिवद्राममागतमब्रवीत् १७ तेऽतिप्रीतास्तमाकर्ण्य प्राप्तंरामंसुहृत्तमम्॥ तमर्चयित्वाऽभिययुःसर्वेमङ्गलपाणयः१८तंसङ्गम्ययथान्यायं गामर्घ्यञ्चन्यवेदयन्॥तेषांयेतत्प्रभावज्ञाः प्रणेमुःशिरसाबलम् १९बन्धून्कुशलिनःश्रुत्वा पृष्ट्वाशिवमनामयम् ॥परस्परमथोरामोबभाषेऽविक्लवंवचः २०उग्रसेनःक्षितीशेशो यद्वआज्ञापयत्प्रभुः॥ तदव्यग्रधियःश्रुत्वा कुरुध्वमाविलम्बितम् २१ यद्यूयं❀बहवस्त्वेकंजित्वाऽधर्मेणधार्मिकम्॥ अबध्नीताथतन्मृष्ये†बन्धूनामैक्यकाम्यया२२वीर्यशौर्यबलोन्नद्धमात्मशक्तिसमंवचः॥कुरु

दुर्योधन कूं विधिपूर्वक प्रणाम करिकै बलदेवजी आये हैं यह कहत भये १७ बड़े हितकारी बलदेवजी हैं तिनकूं आये सुनिकै अतिप्रसन्न भये ऐसे जे सम्पूर्ण कौरव हैं ते उद्धवजी को पूजन करिकै भेंटन कू हाथ में लैके बलदेवजी के सम्मुख जातभये १८ ते कौरव रीतिपूर्वक बलदेवजीतें मिलिकै गौ और अर्घ्य है ताय देत भये और तिन कौरवन में जे बलदेवजी के प्रभावकूं जाने हैं ते शिर नवाइ कै प्रणाम करत भये १९ समस्त बन्धुन की कुशल श्रवण करि आपुस में कुशल क्षेम पूंछिकै पीछे जाके श्रवण करे तें व्याकुलता होइ ऐसो वचन बलदेवजी कहत भये २० सामर्थ्यवान् पृथ्वी के ईश्वर राजा उग्रसेनने जो आज्ञा तुमकूं करी है ताय एकाग्रबुद्धिसूं श्रवणकरिकै शीघ्रकरो २१ अब राजा उग्रसेनको वचन कहे हैं बहुत जो तुमहो तिनने अधर्म करिकै धर्मात्मा बालक कूं बांधि लियो यह जो तुम्हारो अपराध है सो बन्धुनकी आपुस में ऐक्यता रहै विरोध न होय याकारण हमने सहार लियो अब तुम शीघ्र साम्बकूं लायकै अर्पण करो २२ पराक्रम शूरता बलको

❀ यद्यूयमित्युग्रसेनवाक्यम् ७ ॥ † मृष्ये सहे अयाशु तमानीय समर्पयतेतिशेषः ७ ॥

भरयो और अपनी सामर्थ्य के समान ऐसो जो बलदेवजी को वचन है ताय श्रवण करिकै कोप करिकै कौरव बोलतभये २३ अहो बड़े आश्चर्य्य की बातहै देखो काल की गति बड़ी दुरत्यय है पावके पहिरिवेकी जूती मुकुट करिकै सेवित जो शिरहै तापै चढ़यो चाहे है २४ इनके यहातें जब तें पृथाकूं ब्याहिकै लाये तबतें यादवनतें सम्बन्ध भयो है हमारे संग पलंगपै सोवै हैं संग बैठहैं संग भोजन करे हैं यादव हमने अपनी बराबरि के करिलिये और हमनेही इनकूं राज्यासनदियो है २५ चमर पङ्खा शङ्ख श्वेतछत्र किरीट आसन शय्या ये वस्तु हमारी दीनी यादव भोगकरे हैं २६ जैसे सर्पनकू जो दूध पिवावै ताहीकूं काटै हैं ऐसे देनवारेनकूं उलटे भये ऐसे यादवन कू राज्यकी वस्तु छत्र चामरादिक हैं तिनके देवेशूं पुष्टभये हमारी प्रसन्नता सू बढ़े अब हमही कूं आज्ञा करतहैं बड़े कष्टकी बातहै इनकू लाजहू न आई ऐसे यादव बड़े निर्लज्जहैं २७ भीष्म द्रोण अर्ज्जुन इत्यादि कौरवनके दिये बिना वस्तु कूं इन्द्रहू कैसे ग्रहण करै जैसे भेड़ सिंह के मुख

यो बलदेवस्य निशम्योचुः प्रकोपिताः २३ अहो महच्चित्रमिदं कालगत्या दुरत्यया ॥ आरुरुक्षत्युपानद्वै शिरो मुकुटसेवितम् २४ एते यौनेन सम्बद्धाः सहशय्यासनाशनाः ॥ वृष्णयस्तुल्यतां नीता अस्मद्दत्तनृपासनाः २५ चामरव्यजने शङ्खमातपत्रं च पाण्डुरम् ॥ किरीटमासनं शय्यां भुञ्जन्त्यस्मदुपेक्षया २६ अलं यदूनां नरदेवलाञ्छनैर्दातुः प्रतीपैः फणिनामिवामृतम् ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचिता हि यादवा आज्ञापयन्त्यद्य गतत्रपा बत २७ कथमिन्द्रोऽपि कुरुभिर्भीष्मद्रोणार्ज्जुनादिभिः ॥ अदत्तमवरुन्धीत सिंहग्रस्तमिवोरणः २८ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ जन्मबन्धुश्रियोन्नद्धमदास्ते भरतर्षभ ॥ आश्राव्य रामं दुर्वाच्यमसभ्याः पुरं ग्विशन् २९ दृष्ट्वा कुरूणां दौःशील्यं श्रुत्वाऽवाच्यानि चाच्युतः ॥ अवोचत्कोपसंरब्धो दुष्प्रेक्ष्यः प्रहसन्मुहुः ३० नूनं नानामदोन्नद्धाः शान्तिं नेच्छन्त्यसाधवः ॥ तेषां हि प्रशमो दण्डः पशूनां लगुडो यथा ३१ अहो यदून्सुसंरब्धान्कृष्णं च कुपितं शनैः ॥ सान्त्वयित्वाऽहमेतेषां शममिच्छन्निहागतः ३२ त इमे मन्दमतयः कलहाभिरताः खलाः ॥ तं मामवज्ञाय मुहुर्दुर्भाषान्मानिनोऽब्रुवन् ३३ नोग्रसेनः किल विभुर्भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ॥ शक्रादयो लोकपाला यस्यादेशा

की वस्तुकूं कैसे ग्रहण करि सकैहै २८ अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे भरतवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! श्रेष्ठ कुलमें जन्म बन्धु धन इनसूं बढ़े हैं मद जिनके ऐसे जे असाधु कौरव हैं ते कहिवे योग्य नहीं ऐसे वचन बलदेवजीकूं सुनायकै पुरमें जातभये २९ कौरवनकी दुष्टता देखि और कहिवे योग्य नहीं ऐसे वचन श्रवण करिकै क्रोधमें भरिकै देखे न जायँ ऐसे बलदेवजी बारंबार हँसिकै बोलतभये ३० नानाप्रकारके मदहैं तिनसूं मर्य्यादा जिनने त्यागिदीनी ऐसे जे असाधु कौरवहैं ते निश्चय शान्ति नहीं चाहे हैं इन दुष्टनके शान्ति करिवे कूं दण्डही है जैसे पशु लट्ठ मारेतेही समझै हैं याप्रकार ३१ बड़ो है क्रोध जिनके ऐसे यादवनकूं हौले हौले समझायकै और क्रोधमें भरे जे श्रीकृष्ण हैं तिनकूं समझायकै इन कौरवनको मिलाप करायवेके निमित्त मैं यहाँ आयो हूं ३२ परन्तु मन्द हैं बुद्धि जिनकी कलहप्रिय अभिमानी कौरवहैं ते मेरी अवज्ञा करिकै निन्दितवचन कहत भये ३३ भोज वृष्णि अन्धक ये यादवनके गोत्रहैं तिनके ईश्वर इन्द्रते आदिलैके बड़े

बड़े लोकपाल देवता जिनकी आज्ञा वर्त्तें हैं सो कहा कौरवनकूं आज्ञा करिवेकू समर्थ नहीं हैं ३४ जिन श्रीकृष्णचन्द्रने इन्द्रकी सभा पावनर्पू खूंदी और देवतानको कल्पवृक्ष लायकै अपने महलके बगीचामें लगायो ते कहा योग्य नहीं हैं ३५ ब्रह्मादिकन की ईश्वरी जो लक्ष्मी है सो साक्षात् जिनके चरणारविन्दको सेवनकरै वे श्रीकृष्णचन्द्र लक्ष्मी के पति सो कहा राजानकी वस्तुनके योग्य नहीं हैं ३६ जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्दकी रजहै सो समस्त लोकनके पालन करनवारे जे ब्रह्मादिक तिनके मुकुटन करिके युक्त जे माथे हैं तिनपै धारण करी है और सेवन करयो जो गङ्गातीर्थ ताहूकू पवित्र करनवारो है जिनके अशके अंश जे ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी हैं ते और हम सम्पूर्ण बहुत दिन पर्यन्त चरणारविन्द की रेणुकूं माथे पै धारण करे हैं इन श्रीकृष्णचन्द्र कूं राज्यासन कहा पदार्थ है ३७ कौरवनने जो पृथ्वी को टूकदियो है ताय यादव भोगे हैं और हम पांवकी जूती ठहरे कौरव शिर ठहरे ३८ अहो ऐश्वर्य्य करिके मतनारे की तुल्य अभिमानी जे कौरवहैं

नुवर्त्तिनः ३४ सुधर्म्माऽऽक्रम्यतेयेन पारिजातोऽमराङ्घ्रिपः ॥ आनीयभुज्यतेसोऽसौ नकिलाध्यासनार्हणः ३५ यस्यपादयुगंसाक्षाच्छ्रीरुपास्तेऽखिलेश्वरी ॥ सनार्हतिकिलश्रीशोनरदेवपरिच्छदान् ३६ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजोऽखिललोकपालैर्मौल्युत्तमैर्धृतमुपासिततीर्थतीर्थम् ॥ ब्रह्माभवोऽहमपियस्यकलाःकलायाःश्रीश्चोद्वहेमचिरमस्यनृपासनंक्व ३७ भुञ्जतेकुरुभिर्दत्तंभूखण्डंवृष्णयःकिल ॥ उपानहःकिलवयं स्वयंतुकुरवःशिरः ३८ अहोऐश्वर्य्यमत्तानांमत्तानामिवमानिनाम् ॥ असम्बद्धागिरोरूक्षाःकःसहेतानुशासिता ३९ अद्यनिष्कौरवींपृथ्वीं करिष्यामीत्यमर्षितः ॥ गृहीत्वाहलमुत्तस्थौ दहन्निवजगत्त्रयम् ४० लाङ्गलाग्रेणनगरमुद्विदार्य्यगजाह्वयम् ॥ विचकर्षसगङ्गायांप्रहरिष्यन्नमर्षितः ४१ जलयानमिवाघूर्णं गङ्गायांनगरंपतत् ॥ आकृष्यमाणमालोक्य कौरवाजातसम्भ्रमाः ४२ तमेवशरणंजग्मुः सकुटुम्बाजिजीविषवः ॥ सलक्ष्मणंपुरस्कृत्य साम्बंप्राञ्जलयःप्रभुम् ४३ रामरामाखिलाधार प्रभावंनविदामते ॥ मूढानांनःकुबुद्धीनां क्षन्तुमर्हस्यतिक्रमम् ४४ स्थित्युत्पत्त्यप्ययानांत्वमेकोहेतुर्निराश्रयः ॥ लोकान्क्रीडनकानीश क्रीडतस्तेवदन्तिहि ४५ त्वमेवमूर्ध्नी

तिनके कर्कश टेढ़े वचनकूं सुनिके दण्डको देनवारो होयकै ऐसो कौन पुरुषहै जो सहिसकैगो ३९ अब इन कौरवन करिकै रहित पृथ्वी कूं करिदेउंगो या प्रकार भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलकूं ग्रहण करिकै मानों त्रिलोकी कूं भस्म करिदेइंगे ऐसे क्रोध करिकै ठाढ़े होतभये ४० भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलके अग्रभाग ते हस्तिनापुर कूं उखारिकै नाश करिवे के लिये गङ्गामें खेंचत भये ४१ नौकाकी तुल्य भ्रमण करत गङ्गाजी में गिरयो जाय ऐसे नगरकूं देखिकै भयो है भ्रम जिनके ऐसे कौरव लक्ष्मणासहित जो सांब है ताय आगे करिकै हाथ जोरि कै कुटुम्बसहित जीवनकी इच्छा करिकै समर्थ जे बलदेवजी हैं तिनकी शरण जातभये ४२।४३ हे राम ! हे राम ! हे सबके आश्रय ! तुम्हारे प्रभावकूं नहीं जानें जे हम मूढ़ कुबुद्धि हैं तिनके ऊपर तुम क्षमा करिवे योग्यहौ ४४ स्थिति उत्पत्ति नाश इनके तुम एक निराश्रय कारणहौ हे ईश ! क्रीडा करो जो तुमहौ तिन तुम्हारे लोकनकूं खिलौना कहे हैं ४५ हे अनन्त ! हे सहस्रमूर्द्धन् अर्थात् हजार

1 लाङ्गलाग्रेण दशेण प्राकारमूले निखातेन उद्विदार्य्य उत्पाट्य ५ ॥ ❀ जिजीविषवः जीवितुमिच्छवः ६ ॥

हैं मस्तक जिनके! ऐसे जे तुमहौ सो या पृथ्वीमण्डल कूं लीला करिकै मस्तकपै धारण करो हौ अन्त समय समस्त विश्वकूं उदरमें धरिकै शेषशय्या पै शयनकरो हौ सो अद्वितीय ब्रह्म तुमहौ ४६ हे भगवन्! सत्त्वगुण कूं धारण करो जो तुम हौ तिनको कोप सबकी शिक्षा देवेके लिये है द्वेष करिके मत्सरता करिकै नहीं है हे भगवन्! विश्वकी स्थितिके निमित्त और पालन करिवे के लिये कोप को तात्पर्य्य है ४७ हे समस्त प्राणीन के आत्मा! हे सम्पूर्ण शक्ति के धारण करनवारे! तुमकूं नमस्कार है हे विश्व के धारण करनवारे! तुम्हारी हम शरण आये हैं ४८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! कांपे हैं स्थान जिनके उद्वेगयुक्त शरण आये ऐसे जे कौरव हैं तिनने प्रसन्न करे तब बलदेवजी प्रसन्न होयकै मति भय करो या प्रकार अभयदान करतभये ४६ राजा दुर्य्योधन अपनी कन्याके दाइजे में साठि साठि वर्ष की अवस्था के बारह हजार हाथी और बारह हजार घोड़ा देतभयो ५० सुवर्ण को साज जिनपै पर्यो सूर्य्य कैसो है चमचमाहट जिनको ऐसे छः हजार रथ देत

दमनन्तलीलया भूमण्डलंबिभर्षिसहस्रमूर्द्धन् ॥ अन्तेचयःस्वात्मनिरुद्धविश्वःशेषेऽद्वितीयःपरिशिष्यमाणः ४६ कोप⊛स्तेऽखिलशिक्षार्थं नद्वेषान्नच मत्सरात् ॥बिभ्रतोभगवन्सत्त्वंस्थितिपालनतत्परः ४७ नमस्तेसर्व्वभूतात्मन् सर्व्वशक्तिधराव्यय ॥ विश्वकर्म्मन्नमस्तेऽस्तु त्वां†वयंशरणंगताः ४८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रपन्नैःसंविग्नैर्वेपमानायनैर्बलः ॥ प्रसादितःसुप्रसन्नोमाभैष्टेत्यभयंददौ ४६ दुर्य्योधनःपारिबर्हंकुञ्जरान्षष्टिहायनान् ॥ ददौचद्वादश शतान्ययुतानितुरङ्गमान् ५० रथानांषट्सहस्राणिरौक्माणांसूर्य्यवर्चसाम् ॥ दासीनांनिष्ककण्ठीनांसहस्रंदुहितृवत्सलः ५१ प्रतिगृह्यतुतत्सर्व्वं भगवान् सात्वतर्षभः ॥ ससुतःसस्नुषःप्रागात्सुहृद्भिरभिनन्दितः ५२ ततःप्रविष्टःस्वपुरंहलायुधः समेत्यबन्धूननुरक्तचेतसः ॥ शशंससर्व्वंयदुपुङ्गवानां मध्येसभायां कुरुषुस्वचेष्टितम् ५३ अद्यापिचपुरंह्येतत्सूचयद्रामविक्रमम् ॥ समुन्नतंदक्षिणतोगङ्गायामनुदृश्यते ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे उत्तरार्द्धेहास्तिनपुरकर्षणरूपसङ्कर्षणविजयोनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

भयो और पुत्रीपै है प्यार जाको ऐसो दुर्य्योधन धुकधुकी हैं कण्ठमें जिनके ऐसी हजारदासी देत भयो ५१ यादवन में श्रेष्ठ जो भगवान् बलदेव हैं सो सम्पूर्ण दाइजे कूं ग्रहण करिकै बहू बेटाकू सङ्ग लैके कौरवन को अभिनन्दन ग्रहण करिकै आवत भये ५२ कौरवन ने विदा करे ता पीछे हल है हथियार जिनको ऐसे बलदेवजी अपने पुरमें आय कै स्नेह भरे हैं चित्त जिनके ऐसे बन्धुन सूं मिलि कै उत्तम यादवन की सभा में बैठि कै कौरवन तें जे जे बातें करी ते ते सब कहतभये ५३ अब पर्य्यन्त हस्तिनापुर बलदेवजी के पराक्रम कूं सूचन करत दक्षिणदिशा की ओर तें गङ्गाजी में झुक्यो दिखाई देत है ५४ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेसङ्कर्षणविजयोनामाऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

⊛ कोपइतिपाठान्तरेसम्बोधनम् १ ॥ †त्वामितिसम्बोधनम् २ ॥

(एकोनसप्ततितमेऽध्याये इत्थं प्रतिमन्दिरम् ॥ कृष्णस्य नारदो दृष्ट्वा विस्मितोऽगात्स्तुवन् १ उनहत्तरवें अध्याय में नारदजी कृष्णजी की प्रत्येक मन्दिर की गार्हस्थ्य देखकर विस्मययुक्त होकर स्तुति करते हुये चले जाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! नरकासुर कूं मार्यो सुनिकै तैसेही अकेले श्रीकृष्णचन्द्र ने बहुत स्त्री व्याही यह बात सुनिकै देखिवे की इच्छा जिनके भई ऐसे नारदजी द्वारकापुरी में आवत भये १ कैसे नारद हैं यह बड़ो आश्चर्य है कि एक देह तें एक सङ्ग न्यारे न्यारे घरन में सोलहहजार स्त्रीन कूं एक संग व्याहत भये २ या प्रकार उत्कण्ठा जिनके भई है अब द्वारकापुरी को वर्णन करे हैं फूले जे उद्यान अर्थात् विना लगाये वन और उपवन अर्थात् बस्ती के समीप लगाये भये बगीचा तिनमें पक्षी भौंरा जो बोले है तिनको शोर जामें होयरह्यो है ३ फूले जे इन्दीवर अम्भोज कह्लार कुमुद उत्पल ये कमलन के भेद हैं तिन करिकै व्याप्त ऐसे जे सरोवर हैं तिनमें उच्चस्वर करिकै हंस सारस जे बोले हैं तिनको शोर

श्रीशुकउवाच ॥ नरकं निहतं श्रुत्वा तथोद्वाहं च योषिताम् ॥ कृष्णेनैकेन बह्वीनां तद्दिदृक्षुः स्म नारदः १ चित्रं बतैतदेकेन वपुषा युगपत्पृथक् ॥ गृहेषु द्व्यष्टसाहस्रं स्त्रिय एक उदावहत् २ इत्युत्सुको द्वारवतीं देवर्षिर्द्रष्टुमागमत् ॥ पुष्पितोपवनारामद्विजालिकुलनादिताम् ३ उत्फुल्लेन्दीवराम्भोजकह्लारकुमुदोत्पलैः ॥ छुरितेषु सरस्सूच्चैः कूजितां हंससारसैः ४ प्रासादलक्षैर्नवभिर्जुष्टां स्फाटिकराजतैः ॥ महामरकतप्रख्यैः स्वर्णरत्नपरिच्छदैः ५ विभक्तरथ्यापथचत्वरापणैः शालासभाभी रुचिरां सुरालयैः ॥ संसिक्तमार्गाङ्गणवीथिदेहलीं पतत्पताकाध्वजवारितातपाम् ६ तस्यामन्तःपुरं श्रीमदर्चितं सर्वधिष्ण्यपैः ॥ हरेः स्वकौशलं यत्र त्वष्ट्रा कार्त्स्न्येन दर्शितम् ७ तत्र षोडशभिः सद्म सहस्रैः समलङ्कृतम् ॥ विवेशैकतमं शौरेः पत्नीनां भवनं महत् ८ विष्टब्धं विद्रुमस्तम्भैर्वैदूर्यफलकोत्तमैः ॥ इन्द्रनीलमयैः कुड्यैर्जगत्या चाहतत्विषा ९ वितानैर्निर्मितैस्त्वष्ट्रा मुक्तादामविलम्बिभिः ॥ दान्तैरासनपर्यङ्कैर्मण्युत्तमपरिष्कृतैः १० दासीभि

जामें होयरह्यो है ४ स्फटिकमणि चांदी और महामरकतमणिन करिकै प्रकाशमान सुवर्ण की रत्नन की सामग्री जिनमें धरी ऐसे नवलाख जामें महल बने हैं ५ न्यारे न्यारे बने जे राजमार्ग और गली कूचा बाजार तिन करिकै और शाला सभा देवतानके मन्दिर बने हैं तिन करिकै शोभायमान द्वारका है छिरकाउ जिनमें होयरह्यो ऐसे मार्ग आँगन गली देहरी जामें बनी हैं छोटी छोटी पताका जिनमें फहरायँ ऐसी बड़ी बड़ी ध्वजा हैं तिनसूं धूप जिनमें नहीं आवै है ६ वा द्वारकापुरीमें सम्पूर्ण लोकपाल जाकी पूजा करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को अन्तःपुर है ता अन्तःपुरकी रचना में विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण अपनी चतुराई दिखाई है ७ सोलहहजार महलन करिकै शोभायमान अन्तःपुर है तामें श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके जे भवन हैं तिनमें तें एक भवन में नारदजी जातभये ८ कैसे भवन में गये हैं ताको वर्णन करे हैं मूंगान के खम्भ जामें लगे हैं और वैदूर्य मणिके फलकोत्तम अर्थात् खम्भधरन की चौकी बनी है इन्द्रनीलमणि की भीति बनी हैं नहीं गई है शोभा जाकी ऐसी जहाँ भूमि बनी है ९ मोतन की झालरि जिनमें लगी ऐसे विश्वकर्मा ने बनाये जे चँदोवा हैं तिन करिकै वह भवन शोभायमान है मणि जिनमें लगी तिनसूं शोभायमान ऐसे हाथी-

दाँत के चौकी और पलंग बिछे हैं तिन करिकै शोभायमान है १० धुकधुकी जिनके कण्ठ में सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे ऐसी जे दासी हैं तिन करिकै शोभायमान है जामा पगड़ी पटुका मणिन के कुण्डल पहिरे ऐसे जे पुरुष हैं तिन करिकै शोभायमानहै ११ हे राजन् परीक्षित्! रत्नन के दीपान की जे पंक्ति लगि रही हैं तिनके प्रकाश करिके अन्धकार जा भवन में तें दूरि भयो और वरन के भीतर अगर की जो धूप दीनी ताको धुआँ जाली झरोखान में होय के निकसे ताय देखि कैं मानों बादर आये हैं यह जानि कै मोर शब्द कूं करिकै भवन के चित्र विचित्र छज्जेन के ऊपर नृत्य करैंहैं १२ ता महल में अपनी बरानारि के गुण रूप अवस्था गहने जिनके ऐसी हजार दासीनकूं सङ्ग लैके सर्व्वकाल सुवर्णकी डांडी को चमर पखा लैके यादवन के पति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ऊपर ढोरै ऐसी जो श्री रुक्मिणी है ता सहित श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन नारदजी करत भये १३ समस्त धर्म्म के जाननवारेन में श्रेष्ठ जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ते नारदजी कूं देखि कै रुक्मिणी सहित

निष्ककण्ठीभिः सुवासोभिरलङ्कृतम् ॥ पुम्भिःसकञ्चुकोष्णीपसुवस्त्रमणिकुण्डलैः ११ रत्नप्रदीपनिकरद्युतिभिर्निरस्तध्वान्तंविचित्रवलभीषुशिखण्डिनो ऽङ्ग ॥ नृत्यन्तियत्रविहितागुरुधूपमक्षैर्निर्यान्तमीक्ष्यघनबुद्धयउन्नदन्तः १२ तस्मिन्समानगुणरूपवयःसुवेषदासीसहस्रयुतयाऽनुसवंगृहिण्या ॥ विप्रोददर्शचमरव्यजनेनरुक्मदण्डेनसात्वतपतिंपरिवीजयन्त्या १३ तंसन्निरीक्ष्यभगवान्सहसोत्थितः श्रीपर्य्यङ्कतःसकलधर्म्मभृतांवरिष्ठः ॥ आनम्यपादयुगलंशिरसाकिरीटजुष्टेनसाञ्जलिरवीविशदासनेस्वे १४ तस्यावनिज्यचरणौतदपःस्वमूर्ध्ना बिभ्रज्जगद्गुरुतरोऽपिसतांपतिर्हि ॥ ब्रह्मण्यदेवइतियद्गुणनामयुक्तं तस्यैवयच्चरणशौचमशेषतीर्थम् १५ सम्पूज्यदेवऋषिवर्य्यमृषिःपुराणोनारायणोनरसखोविधिनोदितेन ॥ वाण्याऽभिभाष्यमितयाऽमृतमिष्टयातं प्राहप्रभोभगवतेकरवामहेकिम् १६ ॥ नारदउवाच ॥ नैवाऽद्भुतंत्वयिविभोऽखिललोकनाथमैत्रीजनेषुसकलेषुदमःखलानाम् ॥ निःश्रेयसायहिजगत्स्थितिरक्षणाभ्यां स्वैरावतारउरुगायविदामसुष्ठु १७ दृष्टंतवाङ्घ्रियुगलंजनतापवर्गंब्रह्मादिभिर्हृदिविचिन्त्यमगाधबोधैः ॥ संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बंध्यायंश्च

पलंगपै तें शीघ्र उठिकै किरीटयुक्त शोभायमान जो शिर है तासूं चरणन में नमस्कार करिकै हाथ जोरिकै अपने आसनपै बैठतभये १४ जगत्के अतिशय करिकै गुरु साधुनके रक्षक ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नारदजी के चरण धोइके चरणारविन्द को धोवन जल है ताय अपने माथेपै चढावत भये जिन श्रीकृष्णचन्द्र को चरणोदक गङ्गा सबकूं पवित्र करै है तिनमें ब्रह्मण्यदेव यह गुणयुक्त नाम ज्यों को त्यों बनो है १५ नर हैं सखा जिनको ऐसे ऋषिन में श्रेष्ठ नारायण नारदजी हैं तिनको शास्त्रोक्तविधिपूर्व्वक पूजन करिकै अमृत की तुल्य प्रमाणीभूत मधुरवाणी करिकै सम्भाषण करतभये कि नारदजी आप आये बड़ो मङ्गलभयो हे समर्थ भगवान्! हम तुम्हारो कहा पूजन करैं यह कहतभये १६ अब नारदजी कहैहैं हे समर्थ! सब जीवन ते मित्रता करौ हौ और दुष्टन कूं दण्ड देत हौ ऐसे समस्त लोकनके नाथ जो तुम हौ तिनमें आश्चर्य नहीं है बहुतप्रकार गायबे में आवो जगत् की स्थिति और रक्षासहित कल्याण करिबेके लिये अपनी इच्छापूर्वक अवतार लेतहौ यह मैं भले प्रकार जानूं हूं दुष्टनकू दण्ड देनो और साधुन को सत्कार करनो यह तुम कूं योग्य है १७ जननकूं मोक्षको देनवारो चरणकमलहै ताकूं बडो है ज्ञान जिनके ऐसे ब्रह्मादिक देवता हृदयमें ध्यान करैं २९

संसाररूप कुवां में डूबो जो जीव है ताकूं निकासिवे को आश्रय ऐसो तुम्हारे चरणारविन्दको दर्शन कर्यो जैसे सुधि रही आवै तैसे चरणारविन्द को ध्यान करत मैं विचरूं यह अनुग्रह मेरे ऊपर करो १८ हे राजन् परीक्षित्! योगेश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी योगमाया जानिवे के लिये श्रीकृष्णचन्द्र की और रानी है ताके महल में जात भये १९ ता महल मेंभी प्यारी सत्यभामा के सङ्ग और उद्धवजी के सङ्ग चौपरि खेलें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनें नारदजी देखत भये परम भक्तिपूर्व्वक उठिकै आसन बिछाय कै अर्घ्य दैकै पूजन करत भये २० तुम कब आये या प्रकार अज्ञानी की तुल्य श्रीकृष्णचन्द्र नारदजीते पूंछत भये पूर्ण जो तुम हौ तिनको हम अपूर्ण कहा पूजन करैं २१ हे ब्रह्मन्! हम पूर्ण नहींहै तथापि हम तें कछु कहौ हमारो यह जन्म है ताय सार्थक करो नारदजी आश्चर्य मानि कै वहां तें उठिकै और मन्दिर में जात भये २२ ता महल में भी छोटे २ बालकन कूं खिलावें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं देखत भये ता पीछे और महल में जायकै देखें

राम्यनुगृहाणयथास्मृतिःस्यात् १८ ततोऽन्यदाविशद्गेहं कृष्णपत्न्याःसनारदः ॥ योगेश्वरेश्वरस्याङ्गयोगमायाविवित्सया १९ दीव्यन्तमक्षैस्तत्रापि प्रिययाचोद्धवेनच ॥ पूजितःपरयाभक्त्या प्रत्युत्थानासनादिभिः २० पृष्टश्चाविदुषेवाऽसौ कदायातोभवानिति ॥ क्रियतेकिंनुपूर्णानामपूर्णैरस्मदादिभिः २१ अथापिब्रूहिनोब्रह्मञ्जन्मैतच्छोभनंकुरु ॥ सतुविस्मितउत्थाय तूष्णीमन्यदगाद्गृहम् २२ तत्राप्यचष्टगोविन्दंलालयन्तंसुताञ्शिशून् ॥ ततोऽन्यस्मिन्गृहेऽपश्यन्मज्जनायकृतोद्यमम् २३ जुह्वन्तंचवितानाग्नीन् यजन्तंपञ्चभिर्मखैः ॥ भोजयन्तंद्विजान्क्वापि भुञ्जानमवशेषितम् २४ क्वापिसन्ध्यामुपासीनं जपन्तंब्रह्मवाग्यतम् ॥ एकत्रचासिचर्मभ्याञ्चरन्तमसिवर्त्मसु २५ अश्वैर्गजैरथैःक्वापि विचरन्तंगदाग्रजम् ॥ क्वचिच्छयानंपर्यङ्केस्तूयमानञ्चबन्दिभिः २६ मन्त्रयन्तंचकस्मिंश्चिन्मन्त्रिभिश्चोद्धवादिभिः ॥ जलक्रीडारतंक्वापिवारमुख्याऽबलावृतम् २७ कुत्रचिद्द्विजमुख्येभ्योददतंगाःस्वलङ्कृताः ॥ इतिहासपुराणानि शृण्वन्तंमङ्गलानिच २८ हसन्तंहास्यकथया कदाचित्प्रियया गृहे ॥ क्वापिधर्मंसेवमानमर्थकामौचकुत्रचित् २९ ध्यायन्तमेकमासीनं

तो स्नान को उपाय करै हैं २३ काहू महलमें श्रीकृष्णचन्द्र अग्निमें अग्निहोत्र करै हैं और महल में पञ्चयज्ञ करै है काहू महल में ब्राह्मणन कूं भोजन कराय कै ब्राह्मणनको बच्यो जो प्रसाद ताय आप भोजन करै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २४ काहू महलमें सन्ध्योपासन करै है और कहूं मौन होयकै गायत्री जपै हैं एक महल में ढाल तलवार लैकै फिरै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन करतभये २५ काहू महलमें घोड़ान पै हाथीन पै रथन पै चढ़िकै डोलै हैं और काहू महलमें पलंगपै सोवैं बन्दीजन जिनकी स्तुतिकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २६ काहू महल में उद्धवादिक मन्त्रिन के सङ्ग सलाह करत देखे और काहू महल में श्रेष्ठ स्त्रियों के सङ्ग जल में विहार करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २७ काहू महल में शृङ्गार करिकै गौवन कूं ब्राह्मणन के अर्थ देहैं और काहू महलमें इतिहास पुराण मङ्गलरूपी वाक्य श्रवण करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करतभये २८ काहू महल में हांसीकी बात कहिकै प्यारी के सङ्ग श्रीकृष्णचन्द्र हँसे हैं और काहू महल में अपने धर्म्म को सेवन करैहैं काहू महलमें अर्थ और कामकूं सम्पादन करैहैं २९ काहू महल में माया सूं अतीत जो परब्रह्म है ताको

एक आसन पै बैठिकै ध्यान करे हैं और काहू महलमें काम भोग पूजन इन करिकै गुरुनकी शुश्रूषा करे हैं ३० काहू महल में काहू सों विरोध की बात करे हैं और काहू महल में मिलाप की बात करे हैं और काहू महल में बलदेवजी के सङ्ग साधुन कूं सुख होइ यह विचार करे हैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये ३१ काहू महल में पुत्रनको समय पै सदृश स्त्रीन कूं देखिकै विवाह करे हैं और कहूं अपनी कन्या कूं सदृश वर देखिकै द्रव्यन करिकै विवाह करे है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कू देखत भये ३२ काहू महल में कन्यान कूं जमाइन कूं विदा करे हैं और काहू महल में पुत्रन कूं सुसरारि भेजिकै उनकी स्त्रीन कू बुलावे हैं या प्रकार योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के सन्तानन के बड़े उत्सव देखिकै लोक आश्चर्य्य कूं प्राप्त होत भये ३३ काहू महल में बड़े यज्ञन करिकै अपनी कला जे देवता हैं तिनको पूजन करे हैं और काहू महल में अमुक रस्तामें कुंआ बनवावो बाग लगावो नवीन मन्दिर बनवावो या प्रकार धर्म्म कूं करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं नारदजी देखत

पुरुषंप्रकृतेःपरम् ॥ शुश्रूषन्तंगुरून्क्वापि कामैर्भोगैःसपर्य्यया ३० कुर्वन्तंविग्रहंकैश्चित्सन्धिंचान्यत्रकेशवम् ॥ कुत्रापिसहरामेण चिन्तयन्तंसतांशिवम् ३१ पुत्राणांदुहितॄणाञ्च कालेविध्युपयापनम् ॥ दारैर्वरैस्तत्सदृशैःकल्पयन्तंविभूतिभिः ३२ प्रस्थापनोपानयनैरपत्यानांमहोत्सवान् ॥ वीक्ष्ययोगेश्वरेशस्य येषांलोकाविसिस्मिरे ३३ यजन्तंसकलान्देवान् क्वापिक्रतुभिरूर्जितैः ॥ पूर्त्तयन्तंक्वचिद्धर्मं कूपाराममठादिभिः ३४ चरन्तंमृगयांक्वापि हयमारुह्यसैन्धवम् ॥ घ्नन्तंततःपशून्मेध्यान्परीतंयदुपुङ्गवैः ३५ अव्यक्तलिङ्गंप्रकृतिष्वन्तःपुरगृहादिषु ॥ क्वचिच्चरन्तंयोगेशं तत्तद्भावबुभुत्सया ३६ अथोवाचहृषीकेशं नारदःप्रहसन्निव ॥ योगमायोदयंवीक्ष्य मानुषीमीयुषोगतिम् ३७ विदामयोगमायास्ते दुर्दर्शाअपिमायिनाम् ॥ योगेश्वरात्मन्निर्भाता भवत्पादनिषेवया ३८ अनुजानीहिमांदेव लोकांस्तेयशसाप्लुतान् ॥ पर्य्यटामितवोद्गायल्लीलाभुवनपावनीम् ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मन्धर्मस्यवक्ताऽहं कर्त्तातदनुमोदिता ॥ तच्छिक्षयँल्लोकमिममास्थितःपुत्रमाखिद ४० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्याचरन्तंसद्धर्मान् पावनान्गृहमेधिनाम् ॥ तमेवसर्वगेहेषु सन्तमेक

भये ३४ काहू महल में तें सिन्धु देशके घोड़ा पै चढ़िकै यादवन कूं संग लैके शिकार खेलिबे के लिये जाय हैं तहां विचित्र विचित्र पशूनकूं मारें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखत भये ३५ काहू महलमें अपनो रूप छिपाय कै अन्तःपुरके भीतर जे गृहादिक है तिनमें जो प्रजा हैं ताको अभिप्राय जानिवेके लिये विचरें ऐसे योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देखत भये ३६ मनुष्यन की जाति कूं प्राप्तभये ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी योगमाया को वैभव है ताय देखिकै सम्पूर्ण लीलान के देखे पीछे नारदजी हँसिकै बोलतभये ३७ हे योगेश्वर ! तुम्हारे चरणारविन्द की सेवा करिकै मेरे मन में प्रकाशी ऐसी जो तुम्हारी योगमाया है ताय हम केवल जाने हैं और तुम्हारो जो सत्यरूप है ताय नहीं जाने हैं ३८ हे देव ! तुम्हारो यश जिनमें फैलि रह्यो समस्त लोकनके पवित्र करनवारी जे तुम्हारी लीला हैं तिनमें गावत विचरूं यह आज्ञा तुम मोकू देउ या प्रकार नारदजी कहतभये ३९ अब श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे ब्रह्मन् ! मैं धर्म को कहनवारो हूं औरकूं धर्म्मकर्त्ता देखिकै प्रशंसा करूं हूं ता कारण लोकन कूं सिखाइवे के लिये कर्म करूं हूं हे पुत्र ! तू अपने मनमें खेद मति करै ४० अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गृहस्थ पुरुषनके पवित्र

करनवारे श्रेष्ठ धर्म्मन कूं करैं ऐसे अकेले श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनेंही समस्त घरन में नारदजी देखतभये ४१ अनन्त है पराक्रम जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की योगमाया को बड़ो उदयहै ताय बारंबार देखिकै भयो है कौतुक जिनके ऐसे नारदजी आश्चर्य्य मानतभये ४२ या प्रकार अर्थ काम धर्म्म इनमें श्रद्धायुक्त हैं मन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने भले प्रकार पूजन जिनको करयो ऐसे नारदजी प्रसन्नतापूर्व्वक श्रीकृष्णचन्द्रको मनमें स्मरण करत जातभये ४३ या प्रकार मनुष्यनके मार्ग में वर्तें समस्त जीवन के कल्याण करिबे के निमित्त ग्रहण करी है अनेक मूर्त्ति जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सोलह हजार श्रेष्ठ स्त्रीनके बीचमें लाजभरी स्नेहकी चितवनि हँसनि तिनसूं सेवितहोयकै रमण करतभये ४४ हे राजन् परीक्षित्! विश्वकी प्रलय और उत्पत्तिके कारण ऐसे जे हरि भगवान् हैं तिनके और से जे बने नहीं ऐसे जे असाधारण कर्म्म हैं तिनें या संसारमें जे पुरुष गावे हैं अथवा श्रवणकरैं बड़ाई करैं उन पुरुषनको मोक्षके देननारे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन में भक्ति होइहै ४५ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिप्पयादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णगार्हस्थ्यदर्शनंनामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥ * ॥ * ॥ ॥

न्ददर्शह ४१ कृष्णस्यानन्तवीर्य्यस्य योगमायामहोदयम् ॥ मुहुर्दृष्ट्वाऋषिरभूद्विस्मितोजातकौतुकः ४२ इत्यर्थकामधर्म्मेषु कृष्णेनश्रद्धितात्मना ॥ सम्यक्सभाजितःप्रीतस्तमेवानुस्मरन्ययौ ४३ एवंमनुष्यपदवीमनुवर्त्तमानोनारायणोऽखिलभवायगृहीतशक्तिः ॥ रेमेऽङ्गषोडशसहस्रवराङ्गनानां सव्रीडसौहृदनिरीक्षणहासजुष्टः ४४ यानीहविश्वविलयोद्भववृत्तिहेतुः कर्माण्यनन्यविषयाणिहरिश्चकार ॥ यस्त्वङ्गगायतिशृणोत्यनुमोदतेवा भक्तिर्भवेद्भगवति ह्यपवर्गमार्गे ४५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णगार्हस्थ्यदर्शनंनामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथोषस्युपवृत्तायां कुक्कुटान्कूजतोऽशपन् ॥ गृहीतकण्ठ्यःपतिभिर्माधव्योविरहातुराः १ वयांस्यरूरुवन्कृष्णंबोधयन्तीववन्दिनः ॥ गायत्स्वलिष्वनिद्राणि मन्दारवनवायुभिः २ मुहूर्त्तंतन्तुवैदर्भी नामृष्यदतिशोभनम् ॥ परिरम्भणविश्लेषात्प्रियबाह्वन्तरङ्गता ३ ब्राह्मेमुहूर्त्तउत्थाय वार्यु

(ततस्तुसप्ततिनमेकृष्णस्याह्निककर्म्मणि ॥ दूतनारदयोःकार्य्यकार्य्यमन्त्रविचारणम् १ जगन्मङ्गलचारित्रमाह्निकंजगदीशितुः ॥ नारदेनकचित्किञ्चिद्दृष्टमाहयथाक्रमम् २ सत्तरवें अध्यायमें कृष्ण जीके दिनके कर्म्म में दूत और नारदजी के कार्य्य में सलाह करनी योग्यहै यह वर्णनहै १ संसारके स्वामी कृष्णजी के संसारके मङ्गल दिनके चरित्र नारदजी कबहूं कुछ देखतभये तिनको क्रमसूं कहते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने ग्रहणकरे हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णचन्द्रकी रानी हैं ते प्रातःकाल होत आयो तब मुरगा बोले तिनें विरहमें व्याकुल होयकै कोशति भई कि अरे अभागे अबहीं ते तुम बोले श्रीकृष्णचन्द्र प्रातःकाल जानिकै उठेंगे १ प्रातःसमय गई है निद्रा जिनकी ऐसे पक्षी बोलतभये और कल्पवृक्षकी पवन सूंघिके भौंरा गूंजतभये सो मानों श्रीकृष्णचन्द्र कूं वन्दीजन गावे हैं २ प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र की भुजान के बीचमें प्राप्तभई ऐसी जो विदर्भदेश के राजाकी पुत्री रुक्मिणी है सो आलिङ्गन को जो वियोगहै ताय देखिकै अतिसुन्दर जो प्रातःकाल है ताय नहीं सहतिभई ३ प्रसन्न हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे मधुवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्म मुहूर्त्त अर्थात् सूर्य्योदय तें दो घड़ी पहिले उठिकै जल

कै आचमन करिकै माया तें परे जो अपनो स्वरूप है ताको ध्यान करतभये ४ कैसे स्वरूप को ध्यानकरो ताको वर्णन करे हैं एक अखण्ड स्वयंज्योति स्वरूप उपाधिरहित अविनाशी सर्व्वकाल अविद्यारहित ब्रह्म जाको नाम या विश्व की उत्पत्ति और नाश इनको कारण अपनी शक्ति करिकै लखिवे में आवे ऐसो सत्तामात्र आनन्दरूपहै ५ ध्यानकरे पीछे निर्म्मल जलमें विधिपूर्व्वक स्नान जिनने कस्यो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र धोती उपरनाकूं पहिरिके सन्ध्योपासनादि जे कर्म्म और अग्निहोत्र इनकूं करिकै मौन होयकै गायत्री जप करतभये ६ उदयभयो जो सूर्य्य है ताय अर्घ्यदैके अपने अंश जे देवता ऋषि पितृहैं तिनको तर्पण करिकै ज्ञानवान् श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्मणन को पूजन करतभये ७ सुवर्ण सूं सींग जिनके मढे बड़ी सूधी मोतिनकी माला जिनके परी दूधदेहैं एकवारकी व्यानी बछरा जिनके संग सुन्दर वस्त्रनकी झूलें ओढे ८ रूपे सूं खुरनके अग्रभाग जिनके मढे ऐसीं गौ एक एक महलमें तें प्रतिदिन शोभायमान सत्पात्र जे ब्राह्मण हैं तिनकूं रेशमी वस्त्र मृगछाला और

पस्पृश्यमाधवः ॥ दध्यौप्रसन्नकरणआत्मानंतमसःपरम् ४ एकंस्वयंज्योतिरनन्यमव्ययं स्वसंस्थयानित्यनिरस्तकल्मषम् ॥ ब्रह्माख्यमस्योद्भवनाशहेतुभिःस्वशक्तिभिर्लक्षितभावनिर्वृतिम् ५ अथाप्लुतोऽम्भस्यमलेयथाविधिक्रियाकलापंपरिधायवाससी ॥ चकारसन्ध्योपगमादिसत्तमोहुतानलोब्रह्मजजापवाग्यतः ६ उपस्थायार्कमुद्यन्तंतर्पयित्वाऽऽत्मनःकलाः ॥ देवानृषीन्पितॄन्वृद्धान्विप्रानभ्यर्च्यचात्मवान् ७ धेनूनांरुक्मशृङ्गीणां साध्वीनांमौक्तिकस्रजाम् ॥ पयस्विनीनांगृष्टीनांसवत्सानांसुवाससाम् ८ ददौरूप्यखुराग्राणां क्षौमाजिनतिलैःसह ॥ अलङ्कृतेभ्योविप्रेभ्योबद्वंबद्धं+दिनेदिने ९ गोविप्रदेवतावृद्धगुरून्भूतानिसर्व्वशः ॥ नमस्कृत्याऽऽत्मसंभूतीर्मङ्गलानिसमस्पृशत् १० आत्मानंभूषयामास नरलोकविभूषणम् ॥ वासोभिर्भूषणैःस्वीयैर्दिव्यस्रगनुलेपनैः ११ अवेक्ष्याज्यंतथाऽऽदर्शं गोवृषद्विजदेवताः ॥ कामांश्चसर्व्ववर्णानांपौरान्तःपुरचारिणाम् ॥ प्रदाप्यप्रकृतीःकामैःप्रतोष्यप्रत्यनन्दत १२ संविभज्याग्रतोविप्रान्

तिल इनसहित दान करतभये ९ अपनी विभूति जे गौ ब्राह्मण देवता वृद्ध गुरु हैं तिनें नमस्कार करिकै मङ्गलवस्तु जे कपिला तें आदिलैकै गौ हैं तिनको स्पर्श करतभये १० नरलोक कूं भूषणरूप जो अपनी आत्माहै ताय वस्त्रनसूं और दिव्यमाला अरगजा चन्दन इत्यादिकन सूं शोभायमान करतभये ११ घृतमें मुखारविन्द कू देखिकै तैसेही दर्पण में देखिके गौ बैल ब्राह्मण देवता इनको दर्शन करिकै पुरके अन्तःपुरके रहनवारे जे सर्व्व वर्णहैं तिनकी मनोवाञ्छित जे कामना हैं तिनकूं दैकै और प्रधान दीवानहैं तिनें कामनासूं सन्तुष्ट करिके आनन्दकू पावतभये और माला बीरी चन्दन अरगजा इनें प्रथम ब्राह्मणन कूं दैके सुहृदन कूं दैकै प्रधान दीवान कूं दैकै आप अङ्गीकार करतभये यामें गृहस्थन को धर्म्म दिखायो अर्थात् गृहस्थनको ऐसो चाहिये जो सबकू दैके आप अङ्गीकार

+ बद्धमिति हिरण्येनपरिवृतान्कृष्णान् शुक्लरक्तोमृगान् मण्यादिभरितोऽददाश्वतबद्धानिमसचेति श्रुत्युक्तानि सप्तोत्तरशतबद्धाये कौर्म्यपुराणचतुर्दशलक्षरेण गणितानि यथोक्त गरतमेवाविद्वत्यनयमस्क्न्येमृगान् शुक्ल्दा कृष्णान् सुवर्णप्रारिकृतान् अदान्रूर्मणिमण्यारे नियुतानिचतुर्दशेति ततश्चयबद्धस्यएकाह्नोकेनसमुद्रत चतुर्दशानांलक्षाणांतस षिकशताशक ॥ बद्धचतुरशीत्यग्रसहस्राणित्रयोदशातिदिने दिनेचप्रतिगृह्यचेति ४ ॥

करै १०। १३ इतने में रथवान् सुग्रीवसूं आदिलैके जे घोड़े हैं तिनकूं जोतिकै परमअद्भुत रथकूं लायकै प्रणाम करिकै आगे ठाड़ो होतभयो १४ रथवान् को हाथ सूं हाथ पकरिकै सात्यकि उद्धव कूं संगलैके रथमें बैठतभये जा प्रकार सूर्य्य सुमेरु पर्व्वत के ऊपर तैसे १५ लाज भरी प्रेमकी चितवनिसूं अन्तःपुरकी स्त्रीन ने देखे जासूं भयो है हास्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बड़े कष्ट तें उन स्त्रीनकूं छोड़िकै उनके मनकूं हरिकै निकसतभये १६ या प्रकार सब घरनतें न्यारे २ निकसिकै पीछे सब एकरूप होयकै सब यादवनकूं संगलैके श्रीकृष्णचन्द्र सुधर्म्मा सभामें जातभये हे राजन् परीक्षित्! सुधर्म्मा सभामें जे गये हैं तिनकूं क्षुधा पिपासा शीत गर्मी शोक मोह ये बाधा नहीं करे हैं १७ ता सभामें श्रेष्ठ सिंहासनपै बैठे मनुष्यनमें श्रेष्ठ यादव जिनके आसपास बैठे तिनमें उत्तम व्यापक श्रीकृष्ण-चन्द्र अपनी कान्ति करिकै दिशान कूं प्रकाशमान करतभये जैसे आकाश में तारागणन के बीचमें चन्द्रमा शोभा कूं प्राप्तहोइहै तैसे १८ हे राजन् परीक्षित्! ता सभाके बीचमें भांड़हैं ते नानाप्रकारकी

स्रग्गन्धाम्बरालङ्कारान् तेपनैः॥ सुहृदः प्रकृतीर्दारानुपायुङ्क्त ततः स्वयम् १३ तावत्सूत उपानीय स्यन्दनं परमाद्भुतम्॥ सुग्रीवाद्यैर्हयैर्युक्तं प्रणम्यावस्थितोऽग्रतः १४ गृहीत्वा पाणिना पाणी सारथेस्तमथारुहत्॥ सात्यक्युद्धवसंयुक्तः पूर्वाद्रिमिव भास्करः १५ ईक्षितोऽन्तःपुरस्त्रीणां सव्रीडप्रेमवीक्षितैः॥ कृच्छ्राद्विसृष्टो निरगाज्जातहासो हरन्मनः १६ सुधर्माख्यां सभां सर्वैर्वृष्णिभिः परिवारितः॥ प्राविशद्यन्निविष्टानां न सन्त्यङ्ग षडूर्मयः १७ तत्रोपविष्टः परमासने विभुर्बभौ स्वभासा ककुभोऽवभासयन्॥ वृतो नृसिंहैर्यदुभिर्यदूत्तमो यथोडुराजो दिवि तारकागणैः १८ तत्रोपमन्त्रिणो राजन् नानाहास्यरसैर्विभुम्॥ उपतस्थुर्नटाचार्या नर्तक्यस्ताण्डवैः पृथक् १९ मृदङ्गवीणामुरजवेणुतालदरस्वनैः॥ ननृतुर्जगुस्तुष्टुवुश्च सूतमागधवन्दिनः २० तत्राहुर्ब्राह्मणाः केचिदासीना ब्रह्मवादिनः॥ पूर्वेषां पुण्ययशसां राज्ञां चाकथयन्कथाः २१ तत्रैकः पुरुषो राजन्नागतोऽपूर्वदर्शनः॥ विज्ञापितो भगवते प्रतीहारैः प्रवेशितः २२ स नमस्कृत्य कृष्णाय परेशाय कृताञ्जलिः॥ राज्ञामावेदयद्दुःखं जरासन्धनिरोधजम् २३ ये च दिग्विजये तस्य सन्नतिं न ययुर्नृपाः॥ प्रसह्य रुद्धास्तेनासन्नयुते द्वे गिरिव्रजे २४ कृष्ण कृष्णाप्रमेयात्मन् प्रपन्नभयभञ्ज

हासी की वार्ता करिकै श्रीकृष्णचन्द्र को सेवन करतभये और नटनमें जे मुख्य हैं ते और नृत्यकी करनवारी स्त्री हैं ते अपने न्यारे २ जे गवय्या हैं तिनकूं संगलैकै सम्मुख ठाढ़े होतभये १९ मृदंग वीणा मुरज बासुरी झांझ शङ्ख इनकूं बजाय कै नृत्य करतभये गान करतभये और सूत मागध वन्दीजन हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के सन्मुख स्तुति करतभये २० कोई एक ब्राह्मण कहिबे में अतिबुद्धि-मान् ते वेदकी ऋचा पढ़िके व्याख्या करतभये कोई ब्राह्मण पवित्र है यश जिनको ऐसे पहिले राजान की कथान कूं कहतभये २१ हे राजन् परीक्षित्! प्रथम कभऊं देख्यो नहीं ऐसो एक अपूर्व्व नवीन पुरुष आवतभयो जब ड्योढ़ीवारेन ने श्रीकृष्णचन्द्र ते जायकै खबरि करी तब कृष्णचन्द्रने कही जावो लिवाय लावो तब वाकूं सभाके भीतर पहुँचाय दियो २२ ब्रह्मादिकन के ईश्वर जे श्री कृष्णचन्द्र हैं तिनकूं वह पुरुष हाथ जोरिकै नमस्कार करिकै जरासन्ध ने रोंके जे बीसहजार आठसै राजा हैं तिनके दुःख कूं कहतभयो २३ जरासन्ध के दिग्विजय के समय जिन राजान ने आयकै भेंट न दीनी ते बीसहजार आठसै राजा हैं तिनें पकरिकै गिरिव्रजनाम किलाहै तामें रोंकिदेतभयो २४ हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिबेमें आवे है प्रभाव जिन

को ! हे शरणागतनके भयके काटनवारे ! या संसार तें भयभीत तुम तें न्यारी है बुद्धि जिनकी ऐसे हम तुम्हारी शरण आये हें २५ जो लोक अतिशय करिकै पापकर्म्ममें लगि रहा है सो तुमने बतायो अपनो जामें भलो होइ ऐसो तुम्हारो पूजन सेवनरूप जो कर्म्म है ताय भूलिरहा है जो तुम बलवान् या संसार में जीवे की आशा है ताकूं शीघ्र काटो हो ऐसे जो कालरूप तुमहो तिनकूं नमस्कार है २६ जगत् के ईश्वर जो तुमहो सो या संसार में साधुनकी रक्षा करिबे के लिये और दुष्टनकूं दण्ड देवे के लिये अंश करिके अवतार लिये हो कोई जरासन्ध सरीखो जोरावर तुम्हारी आज्ञाकूं नहीं माने है अथवा जे प्राणी अपने कर्म्मनको फल भोगे हें यह हम नहीं जाने हैं अर्थात् यह जरासन्ध तुम तें जोरावर है जाके कर्म्म में दुःख लिखो है याही तें हम रोंकि राखे हैं २७ हे ईश्वर ! पराधीन स्वप्नकी तुल्य मिथ्या जो राजापनेको सुख को बोझ है ताय सर्व्वदा जामें भय लग्यो रहै ऐसो मृतककी तुल्य जो शरीर है तासूं धारण करे हैं अपनपे में रहे आवो ऐसे सुख

न ॥ वयंत्वांशरणंयामोभयभीताःपृथग्धियः २५ लोकोविकर्म्मनिरतःकुशलेप्रमत्तःकर्म्मण्ययन्त्वदुदितेभवदर्चनेस्वे॥ यस्तावदस्यबलवानिहजीविताशां
सद्यश्छिनत्त्यनिमिषायनमोऽस्तुतस्मै २६ लोकेभवाञ्जगदिनःकलयाऽवतीर्णः सद्रक्षणायखलनिग्रहणायचान्यः ॥ कश्चित्त्वदीयमतियातिनिदेशमीश
किंवाजनःस्वकृतमृच्छतितन्नविद्मः२७स्वप्नायितंनृपसुखंपरतन्त्रमीशशश्वद्भयेनमृतकेनधुरंवहामः॥हित्वातदात्मनिसुखंत्वदनीहलभ्यंक्लिश्यामहेऽतिकृप
णास्तवमाययेह २८ तन्नोभवान्प्रणतशोकहराङ्घ्रियुग्मोबद्धान्वियुङ्क्ष्वमगधाह्वयकर्म्मपाशात्॥ योभूभुजोऽयुतमतङ्गजवीर्यमेकोबिभ्रद्रुरोधभवनेमृगराडि
वावीः २९ योवैत्वयाद्विनवकृत्वउदात्तचक्रभग्नोमृधेखलुभवन्तमनन्तवीर्य्यम्॥जित्वानृलोकनिरतंसकृदूढदर्पोयुष्मत्प्रजारुजतिनोऽजिततद्विधेहि ३० ॥दू
तउवाच॥ इतिमागधसंरुद्धा भवद्दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ प्रपन्नाःपादमूलंते दीनानांशंविधीयताम् ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ राजदूतेब्रुवत्येवं देवर्षिःपरमद्युतिः ॥

रूप जो तुमहो तिनें त्यागिकै या संसार में तुम्हारी माया करिकै कृपण जे हम हैं ते दुःखकूं प्राप्तभये हैं २८ ता कारण हे कृष्ण ! मैं तुम्हारो हूं तुम कूं नमस्कार है या प्रकार जिनने कही तिन पुरुषन के शोक कू हरे हैं चरणारविन्द जिनके ऐसे तुम जरासन्ध है नाम जाको ऐसी कर्म्मरूप फांसी सूं बँधे जो हम हैं तिनें छुड़ावो कदाचित् कहो कि तुमहीं पराक्रम करिकै क्यों न छुटिजावो ताको उत्तर राजा देइ है जो अकेलो जरासन्ध दश हजार हाथीन के बलकू धारण करिकै जैसे सिंह भेंड़न कूं रोंकत भयो ऐसे बीसहजार आठसै राजा हैं तिनें रोंकतभयो २९ ग्रहण कियोहै चक्र जिनने ऐसे हे कृष्ण ! तुम हो तिनसूं अठारह वार जरासन्ध लड़्यो तामें सत्रह वार तुमने हराय दियो पश्चात् बड़ो है पराक्रम जिनको ऐसे जो तुम हो सो मनुष्यलीला करो हो तिनें एकवार जीति कै बढ़्यो है गर्व जाके ऐसो जरासन्ध तुम्हारी प्रजा हम हैं तिनें पीड़ा देइ है यहाँ जो आपकूं योग्य होय सो करो ३० अब दूत कहे है या प्रकार जरासन्ध के रोंके तुम्हारे दर्शन की चाहनावाले तुम्हारे चरणारविन्दको शरण जिनने लियो ऐसे दीन राजान कूं जामें सुख होवै सो कीजै ३१ श्रीशुकदेव जी बोले कि हे परीक्षित् ! या प्रकार राजान को दूत कहे

हो इनने में श्रेष्ठ है कान्ति जिनकी पीरी जटान कूं धारण करे ऐसे श्रीमन्नारदजी जैसे सूर्य प्रकट होइ है ऐसे प्रकट होतभये ३२ सम्पूर्ण लोकनके महान् ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं
सो नारदजीकूं आये देखि कै अपनी सभा में जे बैठे हे तिन सहित शिर नवायकै प्रणाम करतभये ३३ आसन पै बैठे ऐसे नारदजी को विधिपूर्वक सत्कार करिकै श्रद्धापूर्वक मधुर मधुर
वचनन करिकै तृप्त करतभये ३४ श्रीकृष्ण पूंछै हैं नारद जी त्रिलोकी में कहूं भय तो नहीं है लोकन में फिरो जो तुमहो तिनसूं हमें बडो लाभहै घर बैठेही सबरी खबरि मिलि जायहै ३५ ईश्वर
के निर्म्माणकरे लोकन में ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम न जानो अब पाण्डवनकी कहा करिबे की इच्छा है यह हम तुमतें पूंछे हैं ३६ तब नारदजी बोले हे समर्थ! ब्रह्मा के मोह करन
वारे जे तुमहौ तिनकी मायान को पार नहीं ऐसी मैंने बहुत माया देखी हैं हे व्यापक! अपनी शक्तिन करिकै प्राणीन के भीतर विचरो हौ अग्नि की तुल्य ढक्यो है तेज जिनको ऐसे तुम मो

विभ्रत्पिङ्गजटाभारं प्राद्ुरासीद्यथारविः ३२ तंदृष्ट्वाभगवान्कृष्णः सर्व्वलोकेश्वरेश्वरः॥ववन्दउत्थितःशीर्ष्णाससभ्यःसानुगोमुदा ३३ सभाजयित्वाविधि
वत्कृतासनपरिग्रहम् ॥ बभाषेसूनृतैर्वाक्यैः श्रद्धयातर्पयन्मुनिम् ३४ अपिस्विदद्यलोकानां त्रयाणामकुतोभयम्॥ ननुभूयान्भगवतोलोकान्पर्यटतो
गुणः ३५ नहितेऽविदितंकिञ्चिल्लोकेष्वीश्वरकर्तृषु ॥ अथपृच्छामहेयुष्मान्पाण्डवानांचिकीर्षितम् ३६ ॥ श्रीनारदउवाच॥ दृष्टामयातेबहुशोदुरत्यया
मायाविभोविश्वसृजश्चमायिनः॥भूतेषुभूमंश्चरतःस्वशक्तिभिर्वह्नेरिवच्छन्नरुचोनमेऽद्भुतम् ३७ तवेहितंकोऽर्हतिसाधुवेदितुं स्वमाययेदंसृजतोनियच्छतः॥
यद्विद्यमानात्मतयाऽवभासते तस्मैनमस्तेस्वविलक्षणात्मने ३८ जीवस्ययःसंसरतोविमोक्षणं नजानतोऽनर्थवहाच्छरीरतः ॥ लीलावतारैःस्वयशःप्रदीप
कंप्राज्वालयत्त्वातमहंप्रपद्ये ३९ अथाप्याश्रावयेब्रह्मन् नरलोकविडम्बनम्॥ राज्ञःपैतृष्वस्रेयस्य भक्तस्यचचिकीर्षितम् ४० यक्ष्यतित्वांमखेन्द्रेण राजसूयेन
पाण्डवः ॥पारमेष्ठ्यकामोनृपतिस्तद्भवाननुमोदताम् ४१ तस्मिन्देवक्रतुवरेभवन्तंवैसुरादयः॥ दिदृक्षवःसमेष्यन्ति राजानश्चयशस्विनः ४२ श्रवणात्कीर्

तें पूँछो हौ यह आश्चर्य नहीं है ३७ अपनी माया करिकै या विश्वकूं उपजावो हौ और संहारकरो हौ ऐसे जो तुमहौ तिनकी चेष्टा कौन पुरुष भलेप्रकार जानिबे कूं योग्य है अपने स्वरूप क-
रिकै विचार में न आ.रे ऐसे जे तुमहो तिनको नमस्कार है ३८ अविद्या करिकै अनर्थ कूं प्राप्तकरनवारो जो देह है तासूं जन्म मृत्युहूं पावै और ता अविद्या करिकै शरीर तें छूटिबे के उपाय कूं
नहीं जानै ऐसो जो जीवहै ताकू लीलावतारन करिकै दीपकरूप जो अपनो यश है ताय प्रकाश करतभये जो तुम हौ तिन तुम्हारी शरण प्राप्तभयो हूं ३९ तौ भी हे ब्रह्मन्! मनुष्यन को अ-
नुकरण करो जो तुमहौ तिनकू तुम्हारी फूफी को पुत्र भक्त ऐसो राजायुधिष्ठिर जो कछु कर्‍यो चाहे है ताय सुनाऊंहूं ४० पाण्डुको पुत्र चक्रवर्त्ती राज्य करिबे की इच्छाभई ऐसो जो राजा
युधिष्ठिर है सो यज्ञराट् जो राजसूययज्ञ है ता करिकै तुम्हारो पूजन कर्‍यो चाहैहै यह आप अनुमोदन करौ ४१ हे देव! या यज्ञमें तुम्हारे दर्शन करिबे के निमित्त इन्द्रादिक देवता आवेंगे और बड़े

यशस्वी राजा आवेंगे ४२ हे ईश्वर ! ब्रह्मरूप जो तुमही तिनकी कथान के श्रवण करे तें तुम्हारो ध्यान करे तें चाण्डाल हैं तेऊ पवित्र होइ जाय हैं तुम्हारे दर्शन करे तें पवित्र होइँ यामें कहा कहनो है ४३ हे त्रिलोकी के मंगलरूप ! तुम्हारो निर्म्मल यश स्वर्ग में रसातल में पृथ्वी में फैलि रह्यो है और दिशान कूं चँदोवा की तुल्य शोभायमान करे है कैसो फैलो है सो कहे है स्वर्ग में मन्दाकिनीरूप पाताल में भोगवतीरूप और या संसारमें तुम्हारो चरणोदक गङ्गारूप होयकै सम्पूर्ण विश्व कूं पवित्र करे है या कारण तुम्हारे चले तें यज्ञमें बड़ो मंगल होयगो ४४ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार नारदजी ने कही तब ता सभा में अपनी ओर के जे यादव बैठे हैं तिनकूं जरासन्ध के जीतिबे की इच्छा करिकै जब अच्छी लगी तब मनोहर वचनन सूं मुसिक्यात अपने भक्त उद्धवजी सू श्रीकृष्णचन्द्र बोलत भये ४५ श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं उद्धवजी तुम हमारे परमनेत्र हौ परमहितकारी हौ गुह्य वातन के अभिप्राय

त्तनाद्ध्यानात्पूयन्तेऽन्तेऽवसायिनः ॥ तवब्रह्ममयस्येशकिमुतेक्षाऽभिमर्शिनः ४३ यस्यामलन्दिवियशःप्रथितंरसायां भूमौचतेभुवनमङ्गलदिग्वितानम् ॥ मन्दाकिनीतिदिविभोगवतीतिचाधोगङ्गेतिचेहचरणाम्बुपुनातिविश्वम् ४४ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तत्रतेष्वात्मपक्षेष्वगृह्णत्सुविजिगीषया ॥ वाचःपेशैःस्मयन्भृत्यमुद्धवंप्राहकेशवः ४५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वंहिनःपरमंचक्षुःसुहृन्मन्त्रार्थतत्त्ववित् ॥ तथाऽत्रब्रूह्यनुष्ठेयंश्रद्दध्मःकरवामतत् ४६इत्युपामन्त्रितोभर्त्रा सर्व्वज्ञेनापिमुग्धवत् ॥ निदेशंशिरसाऽऽधायउद्धवःप्रत्यभाषत ४७॥इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेभगवद्यानेसप्ततितमोऽध्यायः७०॥

श्रीशुकउवाच ॥ इत्युदीरितमाकर्ण्य देवर्षेरुद्धवोऽब्रवीत् ॥ सभ्यानांमतमाज्ञाय कृष्णस्यचमहामतिः १ ॥ उद्धवउवाच ॥ यदुक्तमृषिणादेव साचिव्यं यक्ष्यतस्त्वया ॥ कार्य्यंपैतृष्वस्रेयस्य रक्षाचशरणैषिणाम् २ यष्टव्यंराजसूयेनदिक्चक्रजयिनाविभो ॥ अतोजरासुतजयउभयार्थोमतोमम ३ अस्माकंच

कूं जानो हौ याते जो यहाँ योग्य होय ताय बतावो वाकूं हम श्रद्धापूर्व्वक करेंगे ४६ सब बातके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र मानों कछु नहीं जाने हैं ऐसे भोरे की तुल्य होय के पूंछें ऐसे जो उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र की आज्ञा कूं शिरपै धरिकै बोलत भये ४७ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेभगवद्यानेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥ * ॥ * ॥

(अथैकसप्ततितमउद्धवस्यतुमन्त्रतः ॥ इन्द्रप्रस्थंगतेकृष्णेपार्थानापरमोत्सवः १ राजसूयमिषंकृत्वाभीमदुर्य्योधनादिषु ॥ कलिमुत्पाद्यतद्वाराभूभारमहरत्प्रभुः २ इकहत्तरवें अध्याय में उद्धवजी की सलाह सूं हस्तिनापुर कूं कृष्णजी के जाने मों कुन्तीके पुत्रोंका परमोत्सव वर्णितहै १ कृष्णचन्द्रजी राजसूयका बहानाकर भीमसेन और दुर्य्योधन आदिकों में लड़ाई उत्पन्न कराकर ताके द्वारा पृथ्वीके भारको हरतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार बड़ीहै बुद्धि जिनकी ऐसे उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र को कह्यो वचन सुनिकै और नारदजी को मत कहा है कि यज्ञमें जायगो ताय जानिकै और सभाके बैठनवारे जे यादव हैं तिनको मत कहा कि राजान की रक्षा करिबो ताय जानिकै और श्रीकृष्णचन्द्र को मत कहा कि दोनों कार्य्य करनो ताय जानिकै बोलतभये १ उद्धवजी कहे हैं हे प्रकाशवान् श्रीकृष्णचन्द्र ! नारदजीने जो कह्यो कि तुम्हारो पूजन करयो चाहै ऐसो राजा युधिष्ठिर है ताकीऊ सहायता करिवो योग्यहै और शरणा-

गत जे राजा हैं तिनकी रक्षाकरनो भी योग्यहै २ हे समर्थ ! सम्पूर्ण दिशान के राजानकी है जीत जामें ऐसो राजसूय यज्ञ करिकै पूजन होयगो याहीतें जरासन्धहू जीत्यो जायगो यामें दोनों कार्य्य सिद्ध होयँगे यज्ञ और शरणागतन की रक्षा ३ यज्ञमें आप चलोगे याही ते हमारे बड़े मनोरथ सिद्धहोयँगे और हे गोविन्द ! बँधे राजानकूं छुडावोगे यामें आपको बडो यशहोइगो ४ बडी चाहना करिकै जरासन्धके मारिवे की इच्छाकरें ऐसे यादवन कूं देखिकै कहे हैं जरासन्ध की बराबरि है बल जामें ऐसो जो भीमसेन है ताके विना दश हजार हाथीके समानहै बल जामें ऐसो जरासन्ध बड़े वली राजानके जीतिवे में नहीं आवे है क्योंकि भीमसेन तेंही विधनाने वाकी मृत्यु रची है ५ द्वंद्वयुद्धमें जरासन्ध जीत्यो जायगो और सैकड़न अक्षौहिणी सेनानकूं संगलैकै जो पुरुष जीत्यो चाहै तौ न जीति सकैगो वह जरासन्ध ब्राह्मणन को भक्तहै याते वाके पास जायकै ब्राह्मण मांगै तौ कभऊं मने न करैगो ६ वृकनामा अग्निहै उदरमें जाके ऐसो जो भीमसेन है सो ब्राह्मण को वेष धरिकै जरासन्धतें युद्धकी भिक्षा मांगै तुम्हारे निकटमें मैं द्वन्द्वयुद्ध करूंगो तौ भीमसेन जरासन्धकूं मारैगो यामें कछु सन्देह नहीं है ७ प्राकृतरूप करिकै रहित जो तुमहौ तिन तुम्हारे कर्म्म जे विश्वकूं उत्पत्ति

महानर्थोह्येतेनैवभविष्यति ॥ यशश्चतवगोविन्द राज्ञोबद्धान्विमुञ्चतः ४ सवैदुर्विषहोराजानागायुतसमोबले ॥ बलिनामपिचान्येषां भीमसमबलंविना ५ द्वैरथेसतुजेतव्योमाशताक्षौहिणीयुतः॥ ब्रह्मण्योऽभ्यर्थितोविप्रैर्नप्रत्याख्यातिकर्हिचित् ६ ब्रह्मवेषधरोगत्वा तंभिक्षेतवृकोदरः॥ हनिष्यतिनसन्देहोद्वैरथेतव सन्निधौ ७ निमित्तंपरमीशस्य विश्वसर्गनिरोधयोः॥ हिरण्यगर्भःशर्वश्चकालस्यारूपिणस्तव ८ गायन्तितेविशदकर्म्मगृहेषुदेव्योराज्ञांस्वशत्रुवधमा त्मविमोक्षणंच ॥ गोप्यश्चकुञ्जरपतेर्जनकात्मजायाःपित्रोश्चलब्धशरणामुनयोवयञ्च ९ जरासन्धवधःकृष्णभूर्य्यर्थायोपकल्पते॥ प्रायःपाकविपाकेनतवचा भिमतःक्रतुः १० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युद्धववचोराजन् सर्व्वतोभद्रमच्युतम् ॥ देवर्षिर्यदुवृद्धाश्चकृष्णश्चप्रत्यपूजयन् ११ अथाऽऽदिशत्प्रयाणाय भग

करिवो नाश करिवो तिनमें ब्रह्मा और महादेव ये नाममात्र है तातें तुमहीं पास रहिकै जरासन्धको संहार करोगे भीमसेन तो तो केवल नाम होयगो ८ राजानकी रानी हैं ते अपने घरमें तुम्हारे निर्म्मल यशनकूं गावें हैं और जब उनके बालक रोवें हैं तब कहे हैं हे पुत्र ! तुम काहे कूं रोदन करोहौ जो कोई अनाथ होइ सो रोवै तुम्हारे शिरपै तौ नाथ श्रीकृष्णचन्द्रहैं मतिरोवो जैसे गोपी शङ्ख- चूड़को मारिवो और अपनो छुटिवो गावें हैं और गजराजको छुटिवो ग्राहकी मृत्यु जैसे गावें हैं और जनकनन्दनी जानकी को छुटिवो रावणको मारिवो जैसे गावें हैं और माता पिताको छुटिवो कंसको मारिवो पाई है शरण जिनने ऐसे मुनि और हम भक्त गावें हैं ऐसे जरासन्धको मारिवो और अपने पतिनको छुटिवो गावें हैं ९ हे कृष्ण ! जरासन्धके मरेतें बड़ो कार्य्य सिद्ध होयगो शिशु- पालादिकन को मारिवो सहजमें होय जायगो राजानके पुण्यको फल उदय होयगो और यज्ञ होइ यह तुमकूं सम्मत है राजा युधिष्ठिर के पासगये ते सब बात बनेगी १० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! सब ओर तें मङ्गलरूप बड़ी जामें युक्ति ऐसो जो उद्धवजी को वचनहै ताकी नारदजी बड़ाई करतभये और यादवन में मुख्य हैं ते बड़ाई करतभये और श्रीकृष्णचन्द्र बड़ाई करतभये यामें आयो कहा अनिरुद्ध तें आदिलैकै यादव हैं ते बड़ाई न करतभये ११ याके पीछे देवकी के पुत्र समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द चलिवे के निमित्त टहलुवा और दारुक रथवान्

हाथीन के महावतन तें आदिलेकै जे हैं तिनैं और वसुदेवादिकन तें आदिलेकै जे यादव हैं तिनैं आज्ञा करतभये १२ सागग्रीन सहित प्रथम स्त्रीनकूं चलायकै सङ्कर्षणजी तें आज्ञामांगिकै यादवन के राजा जो उग्रसेन हैं तिनतें भी आज्ञामांगिकै हे शत्रुन के मारनवारे राजन् परीक्षित् ! सारथी लैकै आयो गरुड़की ध्वजा जामें ऐसो जो अपनो रथ है तामें चढ़तभये १३ ता पीछे रथ हाथी प्यादे सवार इनमें जे मुख्य हैं तिन करिकै तीव्र अपनी सेना है ताकूं लैकै मृदंग भेरी नगाड़े शङ्ख रणसिंहा इनके शब्दकरिकै शोर जामें होइ रह्यो ऐसी जे दिशा हैं तिनमें तें निकसतभये १४ सुन्दर वस्त्र गहने चन्दन माला पहिरे ढाल तलवार हाथ में लिये दोनोंओर सिपाही जिनके चलेजायँ मनुष्य हैं वहनवारे घोड़ा जिनमें ऐसी जे सोनेकी पालकी हैं तिनमें बैठिकै पतिव्रता जे श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं ते अपने पुत्रकूं संग लैकै अपने पति जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पीछे जात भईं १५ चाकरन की स्त्री और वेश्या हैं ते शृंगार करिकै चटाईन के बने घर तथा कम्मलन के और बनातन के डेरा तम्बू इत्यादिक जे सम्पूर्ण वस्तु हैं तिनकों मनुष्य ऊँट बैल भैंसा गधा खच्चर गाड़ा हाथी इनपै लादि कै जात भये १६ बड़ो है शोर जामें ऐसी सेना है सो बड़े बड़े ध्वजानके वस्त्र छत्र चामर

वान्देवकीसुतः ॥ भृत्यान्दारुकजैत्रादीननुज्ञाप्यगुरून्विभुः १२ निर्गमय्यावरोधान्स्वान् ससुतान्सपरिच्छदान् ॥ सङ्कर्षणमनुज्ञाप्य यदुराजञ्चशत्रुहन् सूतोपनीतंस्वरथमारुहद्गरुडध्वजम् १३ ततोरथद्विपभटसादिनायकैःकरालयापरिवृतआत्मसेनया ॥ मृदङ्गभेर्यानकशङ्खगोमुखैःप्रघोषघोषितककुभोनिराक्रमत् १४ नृवाजिकाञ्चनशिबिकाभिरच्युतंसहात्मजाःपतिमनुसुव्रताययुः ॥ वराम्बराभरणविलेपनस्रजःसुसंवृतानृभिरसिचर्मपाणिभिः १५ नरोष्ट्रगोमहिषखराश्वतर्यनःकरेणुभिःपरिजनवारयोषितः ॥ स्वलंकृताःकटकुटिकम्बलाम्बराद्युपस्कराययुरधियुज्यसर्वतः १६ बलंबृहद्ध्वजपटछत्रचामरैर्वरायुधाभरणकिरीटवर्मभिः ॥ दिवांऽशुभिस्तुमुलरवंबभौरवेर्यथाऽर्णवःक्षुभिततिमिङ्गिलोर्मिभिः १७ अथोमुनिर्यदुपतिनासभाजितःप्रणम्यतंहृदिविदधद्विहायसा ॥ निशम्यतद्व्यवसितमाहृतार्हणोमुकुन्दसन्दर्शननिर्वृतेन्द्रियः १८ राजदूतमुवाचेदंभगवान्प्रीणयन्गिरा ॥ माभैष्टदूतभद्रंवोघातयिष्यामिमागधम् १९ इत्युक्तःप्रस्थितोदूतोयथावदवदन्नृपान् ॥ तेऽपिसंदर्शनंशौरेःप्रत्यैक्षन्यन्मुमुक्षवः २० आनर्त्तसौवीरमरूंस्तीर्त्वाविनशनंहरिः ॥ गिरीन्नदीरतीयाय पुरग्रामव्रजाकरा

इन करिकै और सुन्दर हथियार गहने किरीट बख्तर इत्यादिकनकी चमक है ता करिकै और सूर्यकी किरण हैं तिन करिकै दिवस में सुन्दर लगति भई जैसे क्षोभ कूं प्राप्तभये जे ग्राह और लहर हैं तिन करिकै जैसे समुद्र सुन्दर लगे है १७ याके पीछे यादवन के पति श्रीकृष्णचन्द्रने सत्कार जिनको करयो और पूजादीनी और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन तें सुखी हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे मुनि नारद हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करिकै और श्रीकृष्णचन्द्र ने निश्चय करयो है ताय श्रवण करिकै और उनके स्वरूप कों हृदय में ध्यान करिकै आकाशमार्ग में होय कै जातभये १८ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वाणी करिकै दूत कूं प्रसन्न करत भये हे दूत ! तुम राजान सूं जायकै कहो कि तुम मति भय करो तुम्हारो कल्याण होयगो जरासन्ध कूं मैं मारूंगो १९ याप्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने कही तब दूत तहां से चलिकै राजान के पास आयकै श्रीकृष्णचन्द्र आवे हैं याप्रकार कहत भयो तब जरासन्ध के बन्दीखाने तें छूटिवे की इच्छा जिनके ऐसे राजा हैं ते श्री

कृष्णचन्द्र को दर्शन कब होयगो ऐसे बैठो देखत भये २० ता पीछे आनर्त्त सौवीर मारवाड़ कुरुक्षेत्र इन देशन कूं उल्लङ्घन करिकै तथा पर्व्वत नदीनकूं और पुर ग्राम व्रज आकर इन सबन कूं उल्लाघि कै २१ ताके पीछे दृषद्वती और सरस्वती नदी कूं तारिकै और पञ्चाल देशन कू तथा मत्स्यदेशन कूं उलाघिकै मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रप्रस्थ में आवत भये २२ मनुष्यन कूं दुर्लभ जिनको दर्शन ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आये श्रवण करिकै प्रसन्न होय कै अजातशत्रु राजा युधिष्ठिरहैं सो उपाध्यायन कूं सङ्ग लैकै पुरके बाहर निकसत भये २३ गीत और बाजेनको जो शब्द है ता करिकै और बड़ो जो वेद को शब्द है ता करिकै राजा युधिष्ठिर हैं सो जैसे आदरयुक्त इन्द्रिय प्राण लेबे कों आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख लिवाइबे कूं आवत भये २४ श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिकै आर्द्र है हृदय जाको ऐसो जो पाण्डु को पुत्र राजा युधिष्ठिर है सो बहुत दिनन में देखे अत्यन्त प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं बारंबार आलिंगन करतभये २५ लक्ष्मी के रहिबे को निर्म्मल स्थान ऐसो जो श्रीकृष्णचन्द्र को अंग है ताय भुजानतें आलिंगन करिकै दूरि भये हैं पाप जाके हर्षित है तनु जाको नेत्रन में अश्रुयुक्त और विस्मृत हैं समस्त लौकिक

न् २१ ततोदृषद्वतींतीर्त्वामुकुन्दोऽथसरस्वतीम् ॥ पञ्चालानथमत्स्यांश्च शक्रप्रस्थमथागमत् २२ तमुपागतमाकर्ण्यप्रीतोदुर्दर्शनंनृणाम् ॥ अजातशत्रुर्निरगात् सोपाध्यायःसुहृद्वृतः २३ गीतवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेणभूयसा ॥ अभ्ययात्सहृषीकेशं प्राणाःप्राणमिवाऽऽदृतः २४ दृष्ट्वाविक्लिन्नहृदयः कृष्णंस्नेहेनपाण्डवः ॥ चिराद्दृष्टंप्रियतमं सस्वजेऽथपुनःपुनः २५ दोर्भ्यांपरिष्वज्यरमामलालयं मुकुन्दगात्रंनृपतिर्हताशुभः ॥ लेभेपरांनिर्वृतिमश्रुलोचनोहृष्यत्तनुर्विस्मृतलोकविभ्रमः २६ तंमातुलेयंपरिरभ्यनिर्वृतो भीमःस्मयन्प्रेमजवाकुलेन्द्रियः ॥ यमौकिरीटीचसुहृत्तमंमुदा प्रवृद्धबाष्पाःपरिरेभिरेऽच्युतम् २७ अर्जुनेनपरिष्वक्तोयमाभ्यामभिवादितः ॥ ब्राह्मणेभ्योनमस्कृत्य वृद्धेभ्यश्चयथाऽर्हतः २८ मानितोमानयामास कुरुसृञ्जयकेकयान् ॥ सूतमागधगन्धर्वान्वन्दिनश्चोपमन्त्रिणः २९ मृदङ्गशङ्खपटहवीणापणवगोमुखैः ॥ ब्राह्मणाश्चारविन्दाक्षंतुष्टुवुर्ननृतुर्जगुः ३० एवंसुहृद्भिःपर्यस्तः पुण्यश्लोकशिखामणिः ॥ संस्तूयमानोभगवान् विवेशालंकृतंपुरम् ३१ संसिक्तवर्त्मकरिणांमदगन्धतोयैश्चित्रध्वजैःकनकतोरणपूर्णकुम्भैः ॥ मृष्टात्मभिर्नवदुकूलविभूषणस्रग्गन्धैर्नृ

व्यवहार जातें ऐसो राजा युधिष्ठिर परमसुख कूं पावतभयो २६ मामा के पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकू आलिंगन करिकै प्रसन्न जो भीमसेन है सो प्रेम के वेग करिकै आकुल हैं इन्द्रिय जाकी ऐसो होत भयो बढ़े है नेत्रन में आंसू जिनके ऐसे नकुल सहदेव और किरीट है विद्यमान जाके ऐसो अर्ज्जुन ये सब अत्यन्त हितकारी जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनैं आनन्दपूर्वक आलिंगन करत भये २७ अर्ज्जुन बराबरि को है यातें श्रीकृष्णचन्द्र कूं छाती ते लगाय कै मिलत भयो और नकुल सहदेव ने नमस्कार करी यथायोग्य ब्राह्मणन कूं और वृद्धनकूं नमस्कार करिकै २८ मानिबे के योग्य ऐसे जे कुरुदेश सृञ्जयदेश और केकय देश के राजा है तिनैं और सूत मागध गन्धर्व भाट बन्दीजनहैं तिनैं सत्कार करत भये २९ मृदंग शङ्ख ढोल वीणा नगाड़े बांसुरी इनकू बजाय कै ब्राह्मण कमल के समान नेत्रनवाले श्रीकृष्णजी की स्तुति करत भये और नाचत गावतभये ३० याप्रकार सुहृदनकूं संग लैकै पुण्यहै यश जिनको ऐसे जे युधिष्ठिरादिकहैं तिनके मुकुटमणि ऐसे

जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सबने स्तुति करी तब शोभायमान जो युधिष्ठिर को पुर तामें प्रवेश करत भये ३१ हाथीन के मद चुवे तासूं और सुगन्धयुक्त जे जल हैं तिनसूं छिरकाव जामें होय रह्यो ऐसे जामें मार्ग हैं चित्रविचित्र जे ध्वजा है तिन करिकै सुवर्ण के तोरण और जल के पूर्ण कलश तथा नवीन वस्त्र गहने माला केसरि अतर अरगजा इन करिकै शृंगार कियो है आत्मा जिनने ऐसे जे पुरुष और स्त्री हैं तिन करिकै शोभायमान ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर हैं तिनके महल देखत भये ३२ महल को वर्णन करैं हैं प्रकाशमान दीपान की पंक्तिन करिकै और महल के झरोखान में तें निकसी जो धूपकी सुगन्धता करिकै शोभायमान हैं और प्रकाशमान जामें पताका हैं तथा रूपे के शिखरन के ऊपर सोने के कलश विराजमान हैं ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर के महल देखत भये ३३ मनुष्यन के नेत्रनकूं सौन्दर्य्यरूपी अमृत के पीवे को पात्र ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं आये श्रवण करिकै उत्कण्ठा करिके ढीले भये हैं केशन के और वस्त्रन के बन्धन जिनके ऐसी जे स्त्री हैं ते घरन के कार्य्यन कूं शीघ्र त्यागिकै और शय्यान के ऊपर पतिन कूं त्यागि कै देखिवे केनिमित्त राजमार्ग जो बाजार है तामें आवति भई ३४ हाथी घोड़ा रथ प्यादे इनकी भीर जामें होय

भिर्युवतिभिश्चविराजमानम् ३२ उद्दीप्तदीपवलिभिःप्रतिसद्मजालनिर्यातधूपरुचिरंविलसत्पताकम्॥मूर्द्धन्यहेमकलशैरजतोरुशृङ्गैर्जुष्टंददर्शभवनैःकुरुरा

जधाम ३३ प्राप्तंनिशम्यनरलोचनपानपात्रमौत्सुक्यविश्लथितकेशदुकूलबन्धाः॥ सद्योविसृज्यगृहकर्म्मपतींश्चतल्पे द्रष्टुंययुर्युवतयःस्मनरेन्द्रमार्गे ३४

तस्मिन्सुसंकुलइभाश्वरथद्विपद्भिःकृष्णंसभार्य्यमुपलभ्यगृहाधिरूढाः॥ नार्य्योविकीर्य्यकुसुमैर्मनसोपगुह्यसुस्वागतंविदधुरुत्स्मयवीक्षितेन ३५ ऊचुःस्त्रि

यःपथिनिरीक्ष्यमुकुन्दपत्नीस्तारागणोडुपसहाःकिमकार्य्यमूभिः॥ यच्चक्षुषांपुरुषमौलिरुदारहासलीलावलोककलयोत्सवमातनोति ३६ तत्रतत्रोपसङ्गम्य

पौरामङ्गलपाणयः॥ चक्रुःसपर्य्यांकृष्णाय श्रेणीमुख्याहतैनसः ३७ अन्तःपुरजनैःप्रीत्या मुकुन्दःफुल्ललोचनैः॥ ससम्भ्रमैरभ्युपेतः प्राविशद्राजमन्दिरम्

३८ पृथाविलोक्यभ्रात्रेयं कृष्णंत्रिभुवनेश्वरम्॥ प्रीतात्मोत्थायपर्य्यङ्कात्सस्नुषापरिषस्वजे ३९ गोविन्दंगृहमानीयदेवदेवेशमादृतः॥ पूजायांनाविदत्कृ

रही ऐसो जो राजमार्ग है तामें रानीन सहित जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं देखिकै घरन के ऊपर चढ़ी जे स्त्री हैं ते फूलन कूं बरसाय कै मनसूं आलिंगन करिकै मुसिकानिपूर्वक जो चितवनि है तासूं देखिकै भले आये या प्रकार कहति भई ३५ जैसे चन्द्रमा सहित तारागण ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकी रानी हैं तिनैं मार्ग में देखिकै इन रानीन ने कहा पुण्य कर्यो है देखो पुरुषन में मुकुटतुल्य श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जिन स्त्रीनके नेत्रनकूं उदारहास लीलापूर्वक चितवनि के लेशसूं आनन्दकूं विस्तार करै है ऐसे सब स्त्री कहति भई ३६ दूरि भये हैं पाप जिनके ऐसे जे पंक्तिन में मुख्य मुख्य पुरके वासी हैं ते पान सुपारी बताशे नारियल ये सब मंगलवस्तु हैं तिनकूं हाथ में लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजा करत भये ३७ प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके खुशी के मारे हरबराहट जिनकूं भयो ऐसे जे अन्तःपुरके वासीजन हैं तिनने प्रीतिपूर्वक सम्मुख आयकै सत्कार जिनकूं कियो ऐसे जे मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा के मन्दिर में जात भये ३८ त्रिलोकी के ईश्वर अपने भय्याके पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं देखिकै प्रसन्न है मन जाको ऐसी कुन्ती अपनी बहू द्रौपदी सहित पलग पैतैं उठिकै श्रीकृष्णचन्द्र सूं मिलति भई ३९ देवन के देव और ब्रह्मादिकनके ईश्वर जो गोविन्द ३०

श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें घर में लायके आनन्द करिके सुधि जाकूं नहीं ऐसे राजा युधिष्ठिर है सो पूजा करिवे की जो विधि है ताय भी न जानत भये ४० हे राजन् परीक्षित्! द्रौपदी और बहिन जो सुभद्रा है ताने प्रणाम जिनकूं करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो पिता वसुदेवकी बहिन जो कुन्ती है ताकूं और बड़ेन की स्त्री हैं तिनकूं प्रणाम करतभये ४१ सासु कुन्ती ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसी जो द्रौपदी है सो सम्पूर्ण जो श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं रुक्मिणी सत्यभामा भद्रा जाम्बवती इनको पूजन करतिभई ४२ कालिन्दी मित्रविन्दा लक्ष्मणा पतिव्रता नाग्नजिती इनकूं और जे संगआई हैं तिनकूं वस्त्र माला अतर अरगजा चन्दन इत्यादिकन करिके पूजा करतिभई ४३ धर्मराज जो राजा युधिष्ठिर हैं सो सेना टहलुवान मन्त्रिन और रानीन सहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें नित्य नये सुख सूं रासत भये ४४ अर्ज्जुनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अग्नि कूं खाण्डववन सू तृप्त करिके जा मय नामा दैत्य ने राजा युधिष्ठिर कूं दिव्यसभा बनायके दीनी वा मय दैत्य कूं

त्यंप्रमोदोपहतोनृपः ४० पितृष्वसुर्गुरुस्त्रीणांकृष्णश्चक्रेऽभिवादनम् ॥ स्वयंचकृष्णयाराजन् भगिन्याचाभिनन्दितः ४१ श्वश्र्वासंचोदिताकृष्णा कृष्णपत्नीश्चसर्वशः ॥ आनर्च रुक्मिणींसत्यां भद्रांजाम्बवतींतथा ४२ कालिन्दींमित्रविन्दाञ्च शैब्यांनाग्नजितींसतीम् ॥ अन्याश्चाभ्यागतायास्तुवासःस्रङ्मण्डनादिभिः ४३ सुखंनिवासयामास धर्म्मराजोजनार्दनम् ॥ससैन्यंसानुगामात्यं सभार्य्यञ्चनवंनवम् ४४ तर्पयित्वाखाण्डवेन वह्निंफाल्गुनसंयुतः ॥ मोचयित्वामयंयेन राज्ञेदिव्यासभाकृता ४५ उवासकतिचिन्मासान् राज्ञःप्रियचिकीर्षया ॥ विहरन्रथमारुह्य फाल्गुनेनभटैर्वृतः ४६ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णस्येन्द्रप्रस्थगमनंनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकदातुसभामध्यआस्थितोमुनिभिर्वृतः ॥ ब्राह्मणैःक्षत्रियैर्वैश्यैर्भ्रातृभिश्चयुधिष्ठिरः १ आचार्य्यैःकुलवृद्धैश्चज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ शृण्वतामेवचैतेषामाभाष्येदमुवाचह २ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ क्रतुराजेनगोविन्द राजसूयेनपावनीः ॥ यक्ष्येविभूतीर्भवतस्तत्सम्पादयनःप्रभो ३ त्वत्पादुके

वन तें छुड़ावत भये ४५ रथ में सवार होयके अर्ज्जुन कूं तथा और योद्धान कूं संग लैकें विहार करत राजा युधिष्ठिरके प्रिय करिवे के निमित्त कितने मासपर्य्यन्त वास करतभये ४६ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णस्येन्द्रप्रस्थगमनंनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ततोद्विसप्ततितमेराज्ञाकार्य्येनिवेदिते ॥ दुर्ज्जयंमागधंयुक्त्याभीमेनाघातयद्धरिः ? बहत्तरवें अध्याय में राजा युधिष्ठिरसूं कार्य्य निवेदित होवे मों जरासन्ध कूं दुःख सूं जीतवेवाला समझकर कृष्ण नें भीमसेनसूं नाश करातेभये ?) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! एक समय मुनीश्वर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भय्या आचार्य्य और कुल में वृद्ध तथा ज्ञातिके सम्बन्धी बान्धव इन सहित सभाके बीच बैठे ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो इन सबके श्रवण करत भो कृष्णभक्तवत्सल ! या प्रकार सम्बोधन देकें बोलतभये १ । २ हे समर्थ! यज्ञन को राजा जो राजसूय यज्ञ है ता करिकें पवित्रकर्त्ता रे जे तुम्हारे देवता हैं तिन को पूजन करूंगो यह कार्य्य आप सिद्ध करो ३ अभद्रकी नाशकरनवारी जे तुम्हारी चरणपादुका हैं तिनको जे पुरुष सेवन ध्यान

और पवित्र होयकै वाणी सूं नाम लेत हैं हे कमलनाभ ! वेही पुरुष संसार तें छूटत हैं और जो चाहना करे हैं वे मनोरथ उनहीं के सिद्ध होय हैं और कैसोही चक्रवर्ती क्यों न होय विना भक्ति कछु नहीं होय है ४ ता कारण हे देवनके देव ! यह लोक या संसार में तुम्हारे चरणारविन्दकी सेवा के प्रभावकूं देखे हैं सो हे समर्थ ! जे पुरुष कर्म्मादिकनकूं मोक्ष माने कौरव सृञ्जय हैं तिनको मोह दूरि करिवे के निमित्त जे तुम्हें भजे हैं तिनकूं और जे नहीं भजे हैं तिनकूं अपने भजनको प्रताप दिखावो ५ सबके आत्मा समदर्शी आत्मसुख को अनुभव जिनकूं ऐसे ब्रह्म जो तुम हो तिनके अपनो विरानो यह भेदबुद्धि नहीं है जैसे कल्पवृक्ष को जो सेवन करै ताही कूं फल प्राप्त होइहै ऐसेही जो तुम्हारो सेवन करै तिनही पै प्रसन्न होत हौ जैसी जो सेवा करै ताकूं तैसोही फल देउहौ यामें विपरीत नहीं है ६ अब श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले हे राजन् युधिष्ठिर ! हे शत्रुनके नाश करनवारे ! तुमने यह भलो निश्चय करयो है या यज्ञ करे तें लोकनमें तुम्हारी मंगल रूप कीर्त्ति फैलेगी ७ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर ! यह सब यज्ञनको राजा राजसूय यज्ञ तुमने करनो विचारो है सो ऋषि और पितृ तथा देवता और सुहृद् तथा हम और समस्त प्राणीन कूं प्यारो

अविरतंपरियेचरन्तिध्यायन्त्यभद्रनशनेशुचयोगृणन्ति ॥ विन्दन्तिनेकमलनाभभवापवर्गमाशासतेयदिन आशिषईशनान्ये ४ तद्देवदेवभवतश्चरणार विन्दसेवानुभावमिहपश्यतुलोकएषः॥ येत्वांभजन्तिनभजन्त्युतवोभयेपानिष्ठाप्रदर्शयविभोकुरुसृञ्जयानाम् ५ नब्रह्मणःस्वपरभेदमतिस्तवस्यात्सर्व्वात्म नःसमदृशःस्वसुखानुभूतेः ॥ संसेवतांसुरतरोरिवतेप्रसादः सेवाऽनुरूपमुदयोनविपर्य्ययोत्र ६॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सम्यग्व्यवसितंराजन्भवताशत्रुकर्श न ॥ कल्याणीयेनतेकीर्त्तिर्लोकाननुभविष्यति ७ ऋषीणांपितृदेवानां सुहृदामपिनःप्रभो॥ सर्व्वेषामपिभूतानामीप्सितःक्रतुराडयम् ८ विजित्यनृपतीन् सर्व्वान् कृत्वाचजगतींवशे॥ संभृत्यसर्व्वसम्भारानाहरस्वमहाक्रतुम् ९ एतेतेभ्रातरोराजँल्लोकपालांशसम्भवाः ॥ जितोस्म्यात्मवतातेऽहं दुर्जयोयोऽकृ तात्मभिः १० नकश्चिन्मत्परंलोके तेजसायशसाश्रिया॥ विभूतिभिर्वाऽभिभवेद्देवोऽपिकिमुपार्थिवः ११ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ निशम्यभगवद्गीतं प्रीतःफुल्लमु खाम्बुजः॥ भ्रातॄन्दिग्विजयेऽयुङ्क्त विष्णुतेजोऽपबृंहितान् १२ सहदेवंदक्षिणस्यामादिशत्सहसृञ्जयैः ॥ दिशिप्रतीच्यांनकुलमुदीच्यामव्यसाचिनम् ॥

है ८ समस्त राजानकूं जीतिकै सम्पूर्ण पृथ्वी कूं वशमें करिकै समस्त वस्तुन कूं इकठौरी करिकै बडे यज्ञकूं तुम करो ९ हे राजन् युधिष्ठिर ! ये तेरे भय्या लोकनके पालन करनवारे जे देवता तिनके अंश तें उत्पन्न भये हैं परन्तु इन्द्रिय जिनने जीती नहीं हैं यातें मैं वशमें नहीं आऊं हूं और इन्द्रियजित् जो तू है ताके वशमें हूं १० मेरो आश्रय जाने लियो ऐसो जो पुरुष है ताकूं लोक में तेज यश श्री और वैभव करिकै कोई देवता भी पराभव नहीं करिसकै है तौ राजा कहा तें करि सकैगो ११ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिकै प्रसन्नता सूं प्रफुल्लित है मुख जाको ऐसो राजा युधिष्ठिरहै सो भगवान्के तेज तें बढे ऐसे जे अपने भ्राता हैं तिनें दिशान के जीतिवे के लिये भेजत भये १२ सृञ्जयदेश के राजान कूं संग करिकै दक्षिण दिशाके राजान के जीतिवे कूं सहदेव कूं आज्ञा देत भये और मत्स्यदेश के राजान कूं संग करिकै पश्चिमदिशा के राजान के जीतिवे कूं नकुल कूं आज्ञा देत भये और केकयदेश के राजान

कूं संग करिकै उत्तरदिशाके राजान के जीतिवे कूं अर्जुन कूं आज्ञा देत भये और मद्रदेश के राजानकूं संग करिकै पूर्वदिशा के राजान के जीतिवे कूं भीमसेन कूं आज्ञा देत भये १३ हे राजन् परीक्षित्! सहदेव नकुल अर्ज्जुन भीमसेन जे वीर हैं ते सम्पूर्ण दिशान तें राजान कूं बल करिकै जीति के यज्ञ कर्यो चाहे ऐसो अजातशत्रु जो राजा युधिष्ठिर है ताकूं बहुत द्रव्य लाय कै देत भये १४ और सब दिशानके राजा जीते गये परन्तु पूर्वदिशा को राजा जरासन्ध जीतिवे में नहीं आयो या बात कूं श्रवण करिकै अतिचिन्ता जाकूं भई ऐसो राजा युधिष्ठिर ताकूं जो उपाय उद्धवजी ने श्रीकृष्णचन्द्र कूं बतायो हो सो उपाय श्रीकृष्णचन्द्र राजा युधिष्ठिर तें कहत भये १५ तब तो भीमसेन अर्जुन श्रीकृष्णचन्द्र तीनों ब्राह्मण बनिकै हे राजन् परीक्षित्! जहां बृहद्रथ को पुत्र जरासन्ध गिरिव्रज नाम किला में रहे है तहां जात भये १६ ब्राह्मण को वेष धारण करे ऐसे जे क्षत्रिय हैं ते अभ्यागतन के आइवे के समय ब्रह्मभक्त गृहस्थ घरमें रहे ऐसो जो राजा जरा-

प्राच्यांवृकोदरंमत्स्यैः केकयैःसहमद्रकैः १३ तेविजित्यनृपान्वीराआजह्रुर्दिग्भ्यओजसा॥ अजातशत्रवेभूरिद्रविणंनृपयक्ष्यते१४श्रुत्वाऽजितंजरासन्धंनृपतेर्ध्यायतोहरिः॥ आहोपायंतमेवाऽद्यउद्धवोयमुवाचह १५ भीमसेनोऽर्जुनःकृष्णोब्रह्मलिङ्गधरास्त्रयः॥ जग्मुर्गिरिव्रजंतात बृहद्रथसुतोयतः १६ तेगत्वातिथ्यवेलायांगृहेषुगृहमेधिनम्॥ ब्रह्मण्यंसमयाचेरन्राजन्याब्रह्मलिङ्गिनः १७ राजन्विद्ध्यतिथीन्प्राप्तानर्थिनोदूरमागतान्॥ तन्नःप्रयच्छभद्रन्ते यद्वयंकामयामहे १८ किन्दुर्मर्षंतितिक्षूणांकिमकार्यमसाधुभिः॥ किन्नदेयंवदान्यानांकःपरःसमदर्शिनाम् १९ योऽनित्येनशरीरेण सतांगेयंयशोध्रुवम्॥ नाचिनोतिस्वयंकल्पः सवाच्यःशोच्यएवसः २० हरिश्चन्द्रो❀रन्तिदेवउञ्छवृत्तिःशिविर्बलिः॥ व्याधःकपोतोबहवोह्यध्रुवेणध्रुवंगताः२१॥श्रीशुकउवाच॥स्वरैराकृ

सन्ध है ताते भिक्षा मागत भये १७ हे राजन् जरासन्ध! हम दूरि तें आये हैं मांगनवारे अतिथि हैं तिनें तुम जानो जो हम चाहना करे हैं वह वस्तु तुम हम कूं देउ तुम्हारो कल्याण होयगो यह वस्तु हम मागें हैं या प्रकार नाम लैके क्यों न कहो तहां कहे हैं नाम लैकै पुत्र मांगोगे तौ पुत्र कब दियो जायगो और मुकुट तें आदिलैकै आभूषण मागोगे तौ भिखारीन कूं कैसे देउँगो तथा रत्नजटित गहनो पुत्रादिकों के योग्य है सो दूसरे कूं कैसे दियो जाय ऐसे जरासन्ध कहै ताको उत्तर कहे हैं १८ सहनशील जे पुरुष हैं ते कहा नहीं सहि सके है दुर्जनन स् क्या नहीं करने योग्य है और दातान कूं कौन वस्तु देवे योग्य नहीं है और समदर्शीन के कौन दूसरो शत्रु है याते नाम लेवे तें कहा है जो मांगें सो देउ १९ साधु जाकूं गावें ऐसे नित्य यशकूं जो पुरुष अनित्य देह तें आप समर्थ होयकै नहीं करै वह पुरुष निन्दा योग्य है और शोच करिवे योग्य है २० राजा हरिश्चन्द्र तथा रन्तिदेव और मुद्गलऋषि राजा शिवि तथा बलि बधिक और कपोतपक्षी और ऐसे बहुत

❀ वद रन्तिदेवः ... [illegible] ... एवमन्येचबहवोऽध्रुवेणशरीरेणध्रुवंगताइति ५ ॥

महात्मा या अनित्य देह करिकै ध्रुवलोक में जातभये २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! कर्कश बोलनि और स्वरूप इनकों तथा धनुष के प्रत्यञ्चा के घट्टे जिनमें परिरहे ऐसे पहुँचने कूं देखिकै ये क्षत्रियन में नीच हैं यह जानिकै द्रौपदी के स्वयंवर में पहिले मैंने देखे हैं यह विचार करतभयो २२ ये क्षत्रियन में नीच है परन्तु ब्राह्मण को स्वांग धरेहैं या कारण दियो न जाय ऐसो जो अपनो आत्मा है ताय भी इनकू भिक्षा देउँगो कदाचित् मांगैगे तो २३ विष्णु भगवान् ने ब्राह्मण को स्वरूप वामन अवतार धारिकै ऐश्वर्य्यतें भ्रष्ट जाकू करि दियो ऐसो राजा वलि ताकी निर्म्मल कीर्ति अब पर्य्यन्त पृथ्वी पै सुनी जाति है २४ इन्द्र के अर्थ लक्ष्मी हरिवे के लिये ब्राह्मण को रूप धरिकै प्राप्त भये ऐसे जे विष्णु भगवान् हैं तिनकूं जाने भी हैं कि मेरे छलिवे के लिये आये हैं और शुक्राचार्य्य ने मने भी करयो तथापि दैत्यन को राजा वलि है सो वामनजी कूं पृथ्वी दान करत भयो २५ एक दिन जो यह देह पतनहोयगी परन्तु जीवतहूं क्षत्रियकी देहसूं ब्राह्मण के अर्थ निर्म्मल यश कूं न करे तो या देहसूं कहा प्रयोजन है २६ या प्रकार निश्चय करिकै उदार है बुद्धि जाकी ऐसो राजा जरासन्ध है सो श्रीकृष्ण अर्ज्जुन भीमसेन इनसूं कहतभयो

निभिस्तांस्तु प्रकोष्ठैर्ज्याहतैरपि॥राजन्यबन्धून्विज्ञाय दृष्टपूर्वानचिन्तयत् २२ राजन्यबन्धवोह्येतेब्रह्मलिङ्गानिबिभ्रति॥ददामिभिक्षितेभ्यआत्मानमपि दुस्त्यजम् २३ बलेर्नुश्रूयतेकीर्त्तिर्विततादिक्ष्वकल्मषा॥ऐश्वर्य्याद्भ्रंशितस्यापिविप्रव्याजेनविष्णुना २४ श्रियंजिहीर्षतेन्द्रस्यविष्णवेद्विजरूपिणे॥जानन्नपिमहींप्रादाद्वार्य्यमाणोऽपिदैत्यराट् २५ जीवताब्राह्मणार्थाय कोन्वर्थःक्षत्रबन्धुना॥देहेनपतमानेन नेहताविपुलंयशः २६ इत्युदारमतिःप्राह कृष्णार्ज्जुनवृकोदरान्॥हेविप्राव्रियतांकामोददाम्यात्मशिरोऽपिवः २७॥श्रीभगवानुवाच॥युद्धंनोदेहिराजेन्द्र द्वन्द्वशोयदिमन्यसे॥युद्धार्थिनोवयंप्राप्ताराजन्यानान्नकाङ्क्षिणः २८ असौवृकोदरःपार्थस्तस्यभ्राताऽर्ज्जुनोह्ययम्॥अनयोर्मातुलेयंमां कृष्णंजानीहितेरिपुम् २९ एवमावेदितोराजा जहासोच्चैःस्म मागधः॥ आहचामर्षितोमन्दायुद्धंतर्हिददामिवः ३० नत्वयाभीरुणायोत्स्येयुधिविक्लवचेतसा॥मथुरांस्वपुरींत्यक्त्वा समुद्रंशरणंगतः ३१ अयंतुवयसाऽतुल्योनातिसत्त्वोनमेसमः॥अर्ज्जुनोनभवेद्योद्धा भीमस्तुल्यबलोमम ३२ इत्युक्त्वाभीमसेनाय प्रादायमहतींगदाम्॥द्वितीयांस्वयमादाय निर्जगामपु

हे ब्राह्मणो! जो तुम्हारे इच्छा होय सो वर मांगो तब श्रीकृष्ण फेरि पक्की करैहैं जो मांगें सो देउगे तब जरासन्ध कहे है वारंवार कहा कहो हौ शिरपर्य्यन्त मांगोगे तो देउँगो २७ तबतो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले हे राजान के इन्द्र राजन् जरासन्ध! तुम्हारे मन में आवै तौ द्वन्द्वयुद्ध देव युद्ध के निमित्त हम क्षत्रिय तुम्हारे पास आये हैं अन्न के लेनवारे ब्राह्मण हम नहीं हैं २८ तब जरासन्ध ने पूंछयो तुम कौनहौ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं वृकनामा अग्नि जाके उदर में ऐसो पृथा को पुत्र यह भीमसेन है और याको भय्या यह अर्ज्जुन है और इनके मामा को पुत्र तेरो पहिलो वैरी मैं श्रीकृष्णचन्द्र हूं यह जानिले २९ या प्रकार श्रवण करिकै मगधदेशको राजा जरासन्ध बहुत हँसत भयो पीछे क्रोध में भरिकै हे मूर्खो! मैं तुमकू युद्ध देउँगो या प्रकार कहत भयो ३० अरे डरपोकना व्याकुल है चित्त जाको ता तेरे संग मैं युद्ध नहीं करूंगो मेरे डरतें तूं अपनी मथुरापुरी त्यागि कै समुद्र में जायकै वस्यो है ३१ अर्ज्जुन है सो मो तें अवस्था में न्यून है और न मेरी

बराबरि बलवान् हैं याते अर्जुन योद्धा न होयगो हां भीमसेन मेरी बराबरि बल में है याके संग युद्ध होयगो ३२ इतनी बात करिके भीमसेन कूं बड़ी गदा देके और दूसरी गदा आप लैके पुर तें बाहर निकसत भयो ३३ ता पीछे बढ़ो है मद जिनको ऐसे वीर जे भीमसेन जरासन्धहैं ते परस्पर मिलिके रणभूमि में वज्रकी तुल्य जे गदा हैं तिन करिके प्रहार करत भये ३४ रणभूमि में प्राप्त जे नट हैं तिनके बायें दाहिने जे विचित्र मण्डल हैं तिनमें जैसे फिरें ऐसे भीमसेन और जरासन्ध हैं तिनको युद्ध सुन्दर लगत भयो ३५ ता पीछे हे राजन् परीक्षित् ! दांत हैं विद्यमान जिनके ऐसे हाथीन के दांतन को जैसे शब्द होयहै तैसे दोनों वीरन की चली जे गदा हैं तिनको वज्र जैसे पिसे ऐसे चटचटा शब्द होत भयो ३६ युद्धकरें बढ़ो है कोप जिनकेऐसे हाथीन की लड़ाई में आक की लकड़ी जैसे चूर्ण होय जाय है तैसे भुजान के वेग तें आपुसमें चलीं ऐसी जे गदाहैं ते कन्धा कमर पांव हाथ जंघा जनु इनसूं लगिकै चूर्ण होतभई ३७ या प्रकार जब दोनों की गदा टूटिगई तब क्रोधी जे मनुष्यन में वीर भीमसेन जरासन्धहैं ते लोहे की तुल्य है स्पर्श जिनको ऐसी मुक्कीनकी मार शरीरमें मारतभये हाथीन की तुल्य आपुस में मारें ऐसे जे जरासन्ध

राद्वहिः ३३ ततःसमेखलेवीरौ संयुक्तावितरेतरौ ॥ जघ्नतुर्वज्रकल्पाभ्यांगदाभ्यांरणदुर्मदौ ३४ मण्डलानिविचित्राणि सव्यंदक्षिणमेवच ॥ चरतोःशुशुभेयुद्धं नटयोरिवरङ्गिणोः ३५ ततश्चटचटाशब्दो वज्रनिष्पेपसन्निभः ॥ गदयोःक्षिप्तयोराजन् दन्तयोरिवदन्तिनोः ३६ तेवैगदेभुजजवेननिपात्यमाने अन्योऽन्यतोंऽसकटिपादकरोरुजत्रून् ॥ चूर्णीबभूवतुरुपेत्ययथार्कशाखे संयुध्यतोर्द्विरदयोरिवदीप्तमन्य्वोः ३७ इत्थंतयोःप्रहतयोर्गदयोर्नृवीरौ क्रुद्धौस्वमुष्टिभिरयःस्पर्शैरपिष्टाम् ॥ शब्दस्तयोःप्रहरतोरिभयोरिवाऽऽसीन्निर्घातवज्रपरुषस्तलताडनोत्थः ३८ तयोरेवंप्रहरतोःसमशिक्षाबलौजसोः ॥ निर्विशेषमभूद्युद्धमक्षीणजवयोर्नृप ३९ एवंतयोर्महाराजयुध्यतोःसप्तविंशतिः ॥ दिनानिनिरगंस्तत्रसुहृद्वन्निशितिष्ठतोः ४० एकदामातुलेयंवैप्राहराजन्वृकोदरः ॥ नशक्तोऽहंजरासन्धं निर्जेतुंयुधिमाधव ४१ शत्रोर्जन्ममृतीविद्वाञ्जीवितंचजराकृतम् ॥ पार्थमाप्याययन्स्वेन तेजसाऽचिन्तयद्धरिः ४२ सञ्चिन्त्यारिवधोपायं भीमस्यामोघदर्शनः ॥ दर्शयामासविटपं पाटयन्निवसंज्ञया ४३ तद्विज्ञायमहासत्त्वोभीमःप्रहरतांवरः ॥ गृहीत्वापादयोःशत्रुंपातयामासभूतले ४४

भीमसेन हैं तिनकी मुक्की लगिके उठ्यो जो शब्द है सो जैसे बिना बादर वज्रपातको शब्द होय ता प्रकार कठोर शब्द होत भयो ३८ हे राजन् परीक्षित ! नहीं घट्योहै वेग जिनको और बराबरि दाउँ पेंच बल प्रभाव जिनको मुक्कीमारें ऐसे जे भीमसेन जरासन्ध हैं तिनको बराबर युद्ध होत भयो ३९ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार दिनमें तो युद्ध करें और रातिमें मित्रकी तुल्य एकठौरे रहैं ऐसे जे भीमसेन जरासन्धहैं तिन कूं युद्धकरत सत्ताईस दिन बीतगये ४० हे राजन् परीक्षित् ! एकसमय वृकनामा अग्नि है उदर में ऐसो भीमसेन है सो मामा के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनसूं बोलत भयो हे माधव ! युद्ध में जरासन्ध कूं मैं नहीं जीति सकूं हूं ४१ शत्रु जो जरासन्ध है ताको जन्म भयो है ताय और जैसे याकी मृत्यु होयगी ताय और जरानाम राक्षसी ने दो टूक जोरिकै जिवाय दियो ताय जानें ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने तेज करिकै भीमसेन कूं पुष्टि करिकै जरासन्ध की मृत्यु को उपाय विचारत भये ४२ सफल है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैंसो

वैरी जरासन्ध के मारिवे को चिन्तन करिकैं तुनका चीरकैं सैन करिकै भीमसेन कूं दिखावत भये जैसे मैने यह तुनका चीरयो है ऐसे तूं याकूं चीर डारु ४३ मारनवारेन में श्रेष्ठ बड़ो बलवान् भीमसेन है सो श्रीकृष्णचन्द्र ने जो सकेत कस्यो ताय जानिकै वैरी जो जरासन्ध है ताके पाव पकरिकै पृथ्वी में पटकत भयो ४४ जैसे बडो हाथी वृक्षकी शाखाकूं पकरिकै चीर डारे है तैसे पावसूं वाके एक पावकूं दावि कै दूसरे पाव कूं भुजान तें पकरिकै गुदा के बीचतें चीरिकै डारत भयो ४५ एक एक है पांव जंघा अण्डकोश कमर पीठि स्तन कन्धा जिनमें एक एक भुजा नेत्र भ्रुकुटी और कान जिनमें ऐसे दो टूक करे तिनें प्रजा देखत भई ४६ मगधदेश को राजा जरासन्ध मरयो तासमय बड़ो हाहाकार शब्द होत भयो और अर्ज्जुन तथा श्रीकृष्णचन्द्र भीमसेन कूं आलिङ्गन करिकै पूजन करत भये ४७ नहीं प्रमाण करिवे में आवै है स्वरूप जिनको ऐसे समर्थ सब प्राणीन के पालनवारे श्रीकृष्ण जरासन्ध के पुत्र सहदेव कू मगधदेश को राजतिलक देत भये और जरासन्ध ने जो वीस हजार आठसै राजा रोंके हैं तिनें बन्दीखाने तें छुड़ावत भये ४८ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेजरासन्धवधोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥ ॥

एकंपादंपदाऽऽक्रम्यदोर्भ्यामन्यंप्रगृह्यसः ॥ गुदतःपाटयामासशाखामिवमहागजः ४५ एकपादोरुवृषणकटिपृष्ठस्तनांसके ॥ एकबाह्वक्षिभ्रूकर्णे शकलेद दृशुःप्रजाः ४६ हाहाकारोमहानासीन्निहतेमगधेश्वरे ॥ पूजयामासतुर्भीमंपरिरभ्यजयाच्युतौ ४७ सहदेवंतत्तनयं भगवान्भूतभावनः ॥ अभ्यषिञ्चद मेयात्मा मगधानापतिंप्रभुः ॥ मोचयामासराजन्यान् संरुद्धामागधेनये ४८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेजरासन्धवधोनामद्विस प्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अयुतेद्वेशतान्यष्टौ लीलयायुधिनिर्जिताः ॥ तेनिर्गतागिरिद्रोण्यांमलिनामलवाससः १ क्षुत्क्षामाःशुष्कवदनाःसंरोधपरिकर्शिताः ॥ ददृशुस्तेघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् २ श्रीवत्साङ्कं चतुर्बाहुं पद्मगर्भारुणेक्षणम् ॥ चारुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ३ पद्महस्तंगदाशङ्खरथाङ्गैरु

(ततस्त्रिसप्ततितमेमोचयित्वानृपान्हरिः ॥ राजार्हभोगैःस्वान्देशान्प्रस्थाप्यपुनरागमत् १ अत्युन्नद्धजरासन्धवधात्तद्रुद्धभूपतीन् ॥ विमोचयत्कृपयाकृष्णोनिजरूपमदर्शयत् २ तिहत्तरवें अध्याय में कृष्णजी राजाओं को छुड़ाकर राजाओं के योग्य भोगनसूं अपने देशोंको बिदाकर फिर हस्तिनापुरमें प्राप्त होजातेभये १ कृष्णजी अत्यन्त उन्नद्ध जरासन्धके नाशसूं ताके रोंके हुये राजाओंको छुड़ा कर दया सूं उनको अपनो रूप दिखलाते भये २) अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! मलिनहैं रूप और वस्त्र जिनके क्षुधा करिकै कृश सूखे हैं मुख जिनके रोंकने सूं क्लेशयुक्त ऐसे बीस हजार आठसै राजा गिरिद्रोणी किलामें रुंके हैं तिनकू लीला करिकै संग्राममें छुटावतभये ते समस्तराजा बन्दीखाने तें बाहर निकसिकै मेघकी तुल्यहै श्यामरूप जिनको पीरे वस्त्रनकू पहिरे ऐसे श्री कृष्णचन्द्र कूं देखतभये १।२ अव जैसे स्वरूपको श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन कस्यो सो वर्णन करे हैं भृगुलताको चिह्न जिनके हृदयमें और चार जिनके भुजा और कमलके गर्भकी तुल्य अरुणहैं नेत्र जिनके

सुन्दर प्रसन्न मुखहै और प्रकाशमान मकराकृत कुण्डलनकूं धारण करे हैं ३ कमल जिनके हाथमें विराजमान गदा शंख चक्र इनकूं धारण करे और किरीट हार कड़ा कौंधनी बाजूबन्द इनकूं पहिरे हैं ४ और प्रकाशमान सुन्दर मणि ग्रीवामें तथा गलेमें पावपर्यन्त वनमाला कूं धारणकरे ऐसे रूपकूं देखिकै राजान कूं लूटिसी परि गई देखिके नेत्र ऐसे चलावें मानों रूपको पीजायंगे जीभ ऐसी चलावें मानो चाटि जायगे नाक ऐसी फुलावें मानों सूंघि जायंगे भुजा ऐसी चलावें मानों स्वरूपको आलिङ्गन करिलेंगे पाप जिनके दूरिभये ऐसे राजा हैं ते शिरन सूं श्रीकृष्णचन्द्रके चरणनमें प्रणाम करतभये ५ । ६ श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन तें जो आनन्दभयो तासूं दूरि भयो है बन्दीखाने को क्लेश जिनको हाथ जोरे ऐसे समस्त राजा हृषीकेश जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं तिनकी वाणीन करिकै स्तुति करतभये ७ इन्द्रादिक देवतान के देव जो ब्रह्मादिक तिनके ईश्वर हे शरणागतनके कष्ट के हरनवारे! हे अविनाशी ! हे कृष्ण ! या घोर संसार तें दुःखितभये तुम्हारो शरण लियो ऐसे जे हम हैं तिनकी रक्षा करो ८ हे नाथ ! हे मधुसूदन ! यह जो जरासन्ध है ताय दोष लगायकै हम नहीं देखे हैं हे प्रभो ! राजा जे हमहैं तिनको राज्य भ्रष्टभयो यह तुम्हारो अनुग्रहभयो ९ राज्य ऐश्वर्य

पत्ताक्षिनम् ॥ किरीटहारकटककटिसूत्राङ्गदाञ्चितम् ४ भ्राजद्वरमणिग्रीवं निवीतंवनमालया ॥ पिबन्तइवचक्षुर्भ्यांलिहन्तइवजिह्वया ५ जिघ्रन्तइवनासाभ्यां रम्भन्तइवबाहुभिः ॥ प्रणेमुर्हतपाप्मानोमूर्द्धभिःपादयोर्हरेः ६ कृष्णसन्दर्शनाह्लादध्वस्तसंरोधनक्लमाः ॥ प्रशशंसुर्हृषीकेशं गीर्भिःप्राञ्जलयोनृपाः ७ राजानऊचुः ॥ नमस्तेदेवदेवेश प्रपन्नार्तिहराव्यय ॥ प्रपन्नान्पाहिनःकृष्णनिर्विण्णान्घोरसंसृतेः ८ नैनंनाथानुसूयामो मागधंमधुसूदन ॥ अनुग्रहोयद्भवतोराज्ञांराज्यच्युतिर्विभो ९ राज्यैश्वर्यमदोन्नद्धोनश्रेयोविन्दतेनृपः ॥ त्वन्मायामोहितोनित्यामन्यतेसम्पदोऽचलाः १० मृगतृष्णांयथाबालामन्यन्तउदकाशयम् ॥ एवंवैकारिकींमायामयुक्तावस्तुचक्षते ११ वयंपुराश्रीमदनष्टदृष्टयोजिगीषयाऽस्याइतरेतरस्पृधः ॥ घ्नन्तःप्रजाःस्वाअतिनिर्घृणाःप्रभो मृत्युंपुरस्त्वाऽविगणय्यदुर्मदाः १२ तएवकृष्णाद्यगभीररंहसा दुरन्तवीर्येणविचालिताःश्रियः॥कालेनतन्वाभवतोऽनुकम्पया विनष्टदर्पाश्चरणौस्मरामते १३ अथोनराज्यंमृगतृष्णिरूपितं देहेनशश्वत्पततारुजांभुवा॥उपासितव्यंस्पृहयामहेविभो क्रियाफलंप्रेत्यचकर्णरोचनम् १४ तन्नःसमादिशोपायं येनते

के मद करिकै छोड़ी है मर्य्यादा जाने ऐसो जो राजा है सो तौ कल्याण कूं नहीं प्राप्त होयहै और तुम्हारी माया सूं मोहित होयकै अनित्य जे सम्पदा हैं तिनें अचल माने है १० जैसे अज्ञानी बालक सूर्य्य की किरणनसूं चमकै जो दावहै ताय जलको सरोवर माने हैं ऐसेही अज्ञानी पुरुष हैं ते नानारूपि असत्रूपी जो माया है ताय सत्य माने है ११ धन के मद करिकै फूटे हैं नेत्र जिनके और पृथ्वीके जीतिवे की इच्छा करिकै आपुस में भई है ईर्षा जिनके अपनी प्रजानकूं मारे अत्यन्त निर्दयी और हे समर्थ ! आगे तुम कालरूप ठाढे हो तिनको अनादर करिकै पहिले दुष्ट है मद जिनको ऐसे हम होत भये १२ हे कृष्ण ! गम्भीर वेग और बड़ो पराक्रम जाको ऐसो तुम्हारी मूर्ति जो काल है ताने हम लक्ष्मी तें भ्रष्टकरे सो तुम्हारी कृपाकरिकै दूरिभये हैं गर्व जिन के ऐसे हम तुम्हारे चरणनको स्मरण करेहैं १३ हे विभो ! याके पीछे नित्य आयु जाकी क्षीणहोय और रोगनकी खानि अर्थात् एक न एक रोग जामें उत्पन्नहोय ऐसी जो देह है तासूं मृगतृष्णारूप जो

मिथ्या राज्य है ताकी इच्छा हम नहीं करे हैं और कर्म्मन के फल जे स्वर्गादिक हैं तिनकी इच्छा हम नहीं करे हैं ते केवल कानन सूं श्रवणमात्र हैं १४ या संसार में भूले जे हम हैं तिनकूं तुम्हारे चरणारविन्द की भूल न होइ ऐसो उपाय बतावो १५ भक्तन के क्लेश कूं दूरि करनवारे शुद्ध अन्तःकरण के प्रकाशक हरि परमात्मा और तुम्हारो नाम लेइ ताके क्लेश के काटनवारे गोविन्द ऐसे जो तुमहो तिनकूं प्रणाम करे हैं १६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! जरासन्ध के बन्दीखाने तें छूटे ऐसे जे राजा हैं तिनने स्तुति जिनकी करी ऐसे जे शरण के योग्य करुणावान् जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते मनोहर वाणी करिकै राजान तें बोलतभये १७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे राजाओ ! जैसे तुम ने चाहना करी तैसे सबको ईश्वर जो आत्मा मैं हूं ता मो में आज ते लैके तुम्हारी निश्चय दृढ़भक्ति भई १८ हे राजाओ ! सत्यवादी जे तुमहो तिनने मेरो भजन करियो यह भलो सत्यसङ्कल्प निश्चय कियो है और मनुष्यन कूं धन ऐश्वर्य्य सूं मद है तासूं इच्छापूर्व्वक विचारिवो और उन्मत्तता है ताय देखूं हूं १९ कृतवीर्य्य को पुत्र चक्रवर्त्ती राजा सहस्रबाहु एकसमय जमदग्नि ऋषिकी गौ हरिकै लै आयो तब वाकूं परशुरामजी ने पुत्रन

चरणाब्जयोः ॥ स्मृतिर्यथानविरमेदपिसंसरतामिह १५ कृष्णायवासुदेवायहरयेपरमात्मने ॥ प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दायनमोनमः १६ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ संस्तूयमानोभगवान् राजभिर्मुक्तबन्धनैः ॥ तानाहकरुणस्तात शरण्यःश्लक्ष्णयागिरा १७॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अद्यप्रभृतिवोभूपामय्यात्मन्यखिलेश्वरे ॥ सुदृढाजायते भक्तिर्बाढमाशंसितंतथा १८ दिष्ट्याव्यवसितंभूपाभवन्तऋतभाषिणः ॥ श्रियैश्वर्य्यमदोन्नाहं पश्यउन्मादकंनृणाम् १९ हैहयोनहुषोवेनोरावणोनरकोऽपरे ॥ श्रीमदाद्भ्रंशिताःस्थानाद्देवदैत्यनरेश्वराः २० भवन्तएतद्विज्ञायदेहाद्युत्पाद्यमन्तवत् ॥ मांयजन्तोऽध्वरैर्युक्ताःप्रजाधर्म्मेणरक्षथ २१ सन्तन्वन्तःप्रजातन्तून्सुखंदुःखंभवाभवौ ॥ प्राप्तंप्राप्तञ्चसेवन्तोमच्चित्ताविचरिष्यथ २२ उदासीनाश्चदेहादावात्मारामाधृतव्रताः ॥ मय्यावेश्यमनःसम्यङ्मामन्तेब्रह्मयास्यथ २३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यादिश्यनृपान्कृष्णोभगवान्भुवनेश्वरः ॥ तेषांन्ययुङ्क्तपुरुषान्स्त्रियोमज्जनकर्म्मणि २४ सपर्य्यांका

सहित मारयो और राजा नहुष मदोन्मत्त होयकै इन्द्राणी के पास जायबे के लिये ब्राह्मणन कूं पालकीमें लगाय के चल्यो तब ब्राह्मणन ने वाकूं ऐश्वर्य्य तें भ्रष्ट करिकै सर्प करिदियो और राजा वेन मतवारो होयकै ब्राह्मणनको तिरस्कार करयो तब ब्राह्मणनने हुङ्कार शब्द करिकै मारयो और राक्षसनके राजा रावणने सीताकी आकांक्षाकरी तब रामचन्द्रने मारयो तथा दैत्यनको राजा नरकासुर अदितिके कुण्डल हरिलायो तब मैंनेही मारयो और कितनेहूं देवता तथा दैत्य राजा धनके मदतें स्थानन तें भ्रष्ट होयगये २० और तुम सम्पूर्ण हौ ते उत्पन्न जे देहादिक हैं ते नाश होयँगे यह जानिकै यज्ञन करिकै मेरो पूजन और प्रजाकी रक्षाकरो २१ और पुत्रादिकन कूं उत्पन्न करो सुख दुःख जन्म मृत्यु जो प्राप्त होय ताको सेवन करो मो में चित्तकूं लगायकै विचरो २२ आत्मामें है रमण जिनको धारण कियो है व्रत जिनने ऐसे जे तुमहौ ते देह में और घरन में उदासीन होयकै भले प्रकार मो में मन लगावोगे तो अन्तमें मो ब्रह्मकूं पावोगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! त्रिलोकी के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो या प्रकार राजानकूं आज्ञा करिकै तिनको उबटन स्नान और इन कर्म्मन के करायबे के निमित्त स्त्री पुरुषनकूं लगावत

भये २४ हे भरतवंशोत्तम राजन् परीक्षित्! सुन्दर स्नान जिनने करे ऐसे जे राजा हैं तिनकी जरासन्ध के पुत्र सहदेव सूं राजान के योग्य जे वस्त्र आभूषण माला चन्दन इन करिकै पूजन करावत
भये २५ सुन्दर स्नान जिनने किये वस्त्र आभूषण करिके शोभित और नानाप्रकार के भोगन करिके युक्त ऐसे जे राजा हैं तिनकूं श्रेष्ठ अन्न भोजन करायकै राजान के योग्य जे ताम्बूलादिक हैं तिनें
देत भये २६ मुकुन्द श्रीकृष्णने पूजा जिनकी करी और प्रकाशमान कुण्डलन कूं पहिरे बन्दीखानेके क्लेशनें छुडाये ऐसे जे राजा हैं ते जैसे वर्षा ऋतु के पीछे आकाश में तारागण सुन्दर लगे हैं ऐसे
सुन्दर लगतभये २७ मणि और सुवर्ण के गहनेन करिकै शोभायमान जे राजा हैं तिने सुन्दर घोडा जिनमें लगे ऐसे जे रथ हैं तिनमें बैठाय के मनोहर वचनन सूं प्रसन्न करिकै श्रीकृष्णचन्द्र उनके देश-
नकूं भिजवावत भये २८ बडे महात्मा जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने बन्दीखाने के कष्ट तें छुडाये ऐसे जे राजा हैं ते जगत् के पति जे श्रीकृष्ण हैं तिनको ध्यान और उनके कर्मनको ध्यान करत मार्ग में
जातभये २९ ते समस्त राजा जैसे महापुरुष श्रीकृष्णचन्द्र ने छुडाये और जैसे पूजा कराई यह सब वृत्तान्त अपनी प्रजाके आगे कहत भये और जा प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने शिक्षा दीनी तैसेही आल-

रयामास सहदेवेनभारत ॥ नरदेवोचितैर्वस्त्रैर्भूषणैःस्रग्विलेपनैः २५ भोजयित्वावरान्नेन सुस्नातान्समलंकृतान् ॥ भोगैश्चविविधैर्युक्तांस्ताम्बूलाद्यैर्नृपो
चितैः २६ तेपूजितामुकुन्देन राजानोमृष्टकुण्डलाः ॥ विरेजुर्मोचिताःक्लेशात्प्रावृडन्तेयथाग्रहाः २७ रथान्सदश्वानारोप्य मणिकाञ्चनभूषितान् ॥ प्री
णय्यसूनृतैर्वाक्यैः स्वदेशान्प्रत्ययापयत् २८ तएवंमोचिताःकृच्छ्रात् कृष्णेनसुमहात्मना ॥ ययुस्तमेवध्यायन्तः कृतानिचजगत्पतेः २९ जगदुःप्रकृति
भ्यस्तं महापुरुषचेष्टितम् ॥ यथाऽन्वशासद्भगवांस्तथाचक्रुरतन्द्रिताः ३० जरासन्धंघातयित्वा भीमसेनेनकेशवः ॥ पार्थाभ्यांसंयुतःप्रायात्सहदेवेनपूजितः
३१ गत्वातेखाण्डवप्रस्थं शङ्खान्दध्मुर्जितारयः ॥ हर्षयन्तःस्वसुहृदोदुर्हृदांचासुखावहाः ३२ तच्छ्रुत्वाप्रीतमनसइन्द्रप्रस्थनिवासिनः ॥ मेनिरेमागधंशान्तं
राजाचाप्तमनोरथः ३३ अभिवन्द्याथराजानं भीमार्जुनजनार्दनाः ॥ सर्वमाश्रावयाञ्चक्रुरात्मनायदनुष्ठितम् ३४ निशम्यधर्मराजस्तत्केशवेनानुकम्पि
तम् ॥ आनन्दाश्रुकलांमुञ्चन् प्रेम्णानोवाचकिञ्चन ३५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णाद्यागमनेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

स्य छोडिके करतभये ३० केशव जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भीमसेन करके जरासन्ध को घातकरायके और सहदेव सूं पूजन अपनो करायके भीमसेन अर्जुन कूं सङ्गलैके आवतभये ३१ दुष्ट है
हृदय जिनको ऐसे जे शत्रु हैं तिनकूं दुःख के देनवारे और अपने सुहृदन कूं आनन्द के देनवारे ऐसे जे श्रीकृष्ण भीमसेन अर्जुन हैं ते वैरी जरासन्ध कूं मारिकै इन्द्रप्रस्थ में जायकै शङ्खनकूं बजावत
भये ३२ शङ्खनको शब्द सुनिकै प्रसन्न है मन जिनके ऐसे जे इन्द्रप्रस्थ के निवासी हैं ते जरासन्धकी मृत्यु भई यह मानतभये और राजा युधिष्ठिर के मनोरथ पूर्ण होते भये ३३ याके पीछे भीमसेन अर्जुन
श्रीकृष्णचन्द्र आयकै राजा युधिष्ठिर कूं प्रणाम करिकै अपने जो कछु करे सो सब सुनावतभये ३४ धर्मराज के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं सो तथा महादेव के वश करनवारे श्रीकृष्णचन्द्रने जो कार्य
करयो ताय श्रवण करिकै नेत्रन सूं आनन्द के आंसूनकी धार बहावत प्रेममें विह्वल होयकै कछु न बोलत भये ३५ इति श्रीमद्भागवतभाषार्थेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

(चतुर्युक्तमपतितमेगजसूयक्रियाद्विजैः ॥ अग्रपूजागसद्वेनचैद्यघातादिवर्ण्यते १ राजसूयमुखे हत्वाजरासन्धंतदन्तरे ॥ चैद्यंतदन्तेकुर्वन्तं वीजंकलिमिवावपत् २ चौहत्तरवें अध्याय में ब्राह्मणों ने राजसूययज्ञ की क्रिया कराई तामें प्रथमही पूजा के प्रसङ्गसूं शिशुपालका नाश आदि वर्णित है १ राजसूययज्ञके मुखमें जरासन्ध को मारकर ताके बीच में शिशुपाल को मारकर अन्तमें लड़ाईका बीज सा बोते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार राजा युधिष्ठिर जरासन्धको वध सुनिके और श्रीकृष्णको प्रभाव सुनिके प्रसन्नहोयके श्रीकृष्णचन्द्र सूं बोलतभये १ जे पुरुष त्रिलोकी के गुरुहैं सब लोकन के बड़े ईश्वरहैं वे भी दुर्लभ पायके तुम्हारी आज्ञाकूं शिरपै धारण करेहैं २ हे व्यापक! कमल से हैं नेत्र जिनके ऐसे तुमहो सो ईश्वर आपेकूं मानें ऐसे जो कृपण हम हैं तिनकी आज्ञाकूं हे व्यापक! तुम धारण करो हो यह अत्यन्त अनुकरण है ३ एक अद्वितीय अर्थात् कोई जिनकी बराबर नहीं और कोई जिनतें बड़ो नहीं ऐसे जो परमात्मा तुमहो तिनको तेज परोपकार के लिये जो कर्म हैं तिनसूं न्यूनभी नहीं होयहै जैसे सूर्य्य को उदय अस्तमें आवत जात में तेज घटै बढ़ै नहीं है ४ कदाचित् कहो कि मैं परमेश्वरहूं तो सबकी आज्ञा करनो यह मन्द कर्म क-

श्रीशुकउवाच ॥ एवंयुधिष्ठिरोराजा जरासन्धवधंविभोः ॥ कृष्णस्यचानुभावंतं श्रुत्वाप्रीतस्तमब्रवीत् १ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ येस्युस्त्रैलोक्यगुरवः सर्व्वे लोकमहेश्वराः ॥ वहन्तिदुर्लभंलब्ध्वा शिरसैवानुशासनम् २ सभवानरविन्दाक्षोदीनानामीशमानिनाम्॥धत्तेऽनुशासनंभूमंस्तदत्यन्तविडम्बनम् ३ न ह्येकस्याद्वितीयस्यब्रह्मणःपरमात्मनः ॥ कर्म्मभिर्वर्द्धतेतेजोह्रसतेचयथारवेः४ नवैतेऽजितभक्तानांममाहमितिमाधव ॥ त्वन्तवेतिचनानाधीःपशूनामिववैकृता ५॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्त्वायाज्ञिये काले वव्रेयुक्तान्मक्त्वात्विजः ॥ कृष्णानुमोदितःपार्थोब्राह्मणान्ब्रह्मवादिनः ६ द्वैपायनोभरद्वाजःसुमन्तुर्गौतमोऽसितः॥ वसिष्ठश्च्यवनःकण्वोमैत्रेयःकवषस्त्रितः ७ विश्वामित्रोवामदेवःसुमतिर्जैमिनिःक्रतुः ॥ पैलःपराशरोगर्गोवैशम्पायनएवच ८ अथर्व्वाकश्यपोधौम्योरामोभार्गवआसुरिः॥ वीतिहोत्रोमधुच्छन्दावीरसेनोऽकृतव्रणः ९ उपहूतास्तथाचान्ये द्रोणभीष्मकृपादयः॥ धृतराष्ट्रःसहसुतोविदुरश्चमहामतिः१० ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्रायज्ञदिदृक्षवः ॥ तत्रेयुःसर्वराजानोराज्ञांप्रकृतयोनृप ११ ततस्तेदेवयजनंब्राह्मणाःस्वर्णलाङ्गलैः ॥ कृष्ट्वातत्रयथाम्नायं दीक्षया

रनो योग्य नहीं है सो कहे हैं हे मधुवंशोत्पन्न श्रीकृष्ण! हे अजित अर्थात् काहू के जीतिवे में न आवो! जैसे अज्ञानी पुरुषन के देह में अहङ्कार और देह के सङ्गीन में ममता रहे है ऐसे तुम्हारे भक्तन के मैं मेरो तू तेरो यह बुद्धि नहीं होय है ५ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण ने प्रशंसा जाकी करी ऐसो कुन्ती को पुत्र जो राजा युधिष्ठिर है सो या प्रकार कहिकै यज्ञ करिबे योग्य जे वसन्तादि काल हैं तामें वेद के पढ़नवारे जे योग्य ब्राह्मण हैं तिनें होता उद्गाता अध्वर्यु इत्यादिक वरण करतभयो ६ द्वैपायन भरद्वाज सुमन्तु गौतम असित वसिष्ठ च्यवन कण्व मैत्रेय कवष त्रित ७ विश्वामित्र वामदेव सुमति जैमिनि क्रतु पैल पराशर गर्ग वैशम्पायन ८ अथर्वा कश्यप धौम्य परशुरामभार्गव आसुरि वीतिहोत्र मधुच्छन्द वीरसेन अकृतव्रण ९ तैसेही बुलाये जे और द्रोणाचार्य भीष्मजी कृपाचार्य तें आदि लैके सोपि हे ते आवत भये और पुत्रनसहित धृतराष्ट्र और बड़ेबुद्धिमान् विदुरजी आवत भये तथा यज्ञ देखिवे के निमित्त ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और सम्पूर्ण

राजा हैं ते और उनके प्रधान दीवानहैं ते हे राजन् परीक्षित्! ता यज्ञ में सब आवतभये १०।११ ता पीछे ब्राह्मण हैं ते यज्ञ करिवे की भूमि में सुवर्ण के हल चलाय के भूमिशोधन करिकै जैसे वेद में विधिहै तैसेही राजा युधिष्ठिर कू यज्ञदीक्षा करतभये १२ जैसे पहिले वरुण के यज्ञमें सुवर्णकी सामग्रीपात्र होतभये ऐसेही याहू यज्ञमें होतभये और ब्रह्मा महादेव कूं सङ्ग लैकै तथा इन्द्रादिक देवतान कू सङ्ग लैके लोकपाल हैं ते आवतभये १३ गणनसहित सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और बड़े २ सर्प हैं ते और मुनीश्वर यक्ष राक्षस खग किन्नर चारण इनके समूह आवत भये १४ और आये जे राजा हैं तिनकी सम्पूर्ण स्त्री हैं ते पाण्डु को पुत्र जो राजा युधिष्ठिरहै ताके राजसूययज्ञमें आवति भई १५ नहीं भयो है आश्चर्य जिनके ऐसे सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त जो राजा युधिष्ठिर है ताको यश अनेकप्रकार सिद्धभयो या प्रकार मानतभये जैसे देवतान ने वरुणकूं यज्ञ करायो तैसेही देवतान की तुल्यहै कान्ति जिनकी ऐसे जे ऋत्विज् हैं ते राजसूय यज्ञ करिकै विधिपूर्वक महाराज युधिष्ठिर सूं यजन करावतभये १६ अतिशय करिकै सावधान पृथ्वीके पालन करनवारे राजा युधिष्ठिर ने जा दिन सोमवल्ली कूटी गई वा दिन यज्ञ करावनवारेन को तथा

ऋक्किरेनृपम् १२ हैमाःकिलोपकरणावरुणस्ययथापुरा॥ इन्द्रादयोलोकपालाविरिञ्चिभवसंयुताः १३ सगणाःसिद्धगन्धर्व्वाविद्याधरमहोरगाः॥ मुनयोयक्षरक्षांसि खगकिन्नरचारणाः १४ राजानश्चसमाहूताराजपत्न्यश्चसर्व्वशः॥ राजसूयंसमीयुःस्मराज्ञःपाण्डुसुतस्यवै १५ मेनिरेकृष्णभक्तस्य सूपपन्नमविस्मिताः अयाजयन्महाराजं याजकादेववर्चसः॥ राजसूयेनविधिवत्प्राचेतसमिवामराः १६ सौत्येहन्यवनीपालोयाजकान्सदसस्पतीन्॥ अपूजयन्महाभागान् यथावत्सुसमाहितः १७ सदस्याग्र्यार्हणार्हंवै विमृशन्तःसभासदः॥ नाध्यगच्छन्ननैकान्त्यात्सहदेवस्तदाऽब्रवीत् १८ अर्हतिह्यच्युतःश्रैष्ठ्यंभगवान्सात्वतां पतिः॥ एषवैदेवताःसर्व्वादेशकालधनादयः १९ यदात्मकमिदंविश्वं क्रतवश्चयदात्मकाः॥ अग्निराहुतयोमन्त्राःसाङ्ख्ययोगश्चयत्परः २० एकएवाद्वितीयोऽसावैतदात्म्यमिदंजगत्॥ आत्मनाऽऽत्माश्रयःसभ्याःसृजत्यवतिहन्त्यजः २१ विविधानीहकर्म्माणिजनयन्यदवेक्षया॥ ईहतेयदयंसर्व्वःश्रेयोधर्म्मादिलक्षणम् २२ तस्मात्कृष्णायमहतेदीयतांपरमार्हणम्॥ एवंचेत्सर्व्वभूतानामात्मनश्चार्हणंभवेत् २३ सर्व्वभूतात्मभूताय कृष्णायानन्यदर्शिने॥ देयंशान्ताय

बड़भागी जे सभामें मुख्य हैं तिनकी पूजन करयो १७ सभाके बैठनवारेन में प्रथम पूजन योग्य कौनहै यह विचार करत करत एक की अपेक्षा एक बड़ो है यातें काहूको निश्चय जब न भयो तब युधिष्ठिर को भय्या सहदेव बोलतभयो १८ भक्तन के पालन करनवारे अखण्ड जिनको रूप समस्तदेवता देश काल धनादिरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं ते या यज्ञमें पूजा करिवे के पात्र हैं १ यह समस्त विश्व या श्रीकृष्णको ईश्वररूप है और यज्ञादिक है तेहू श्रीकृष्णरूप है अग्नि आहुति मन्त्र साङ्ख्य योग ये सब श्रीकृष्णपरायण है २० हे सभाके बैठनवारे! नहीं है जन्म जाको ऐसो एक अद्वितीय जो यह श्रीकृष्ण है सो आपही स्वरूप जाको ऐसो यह विश्व है ताय अपने आतमाही करिकै दूसरे की सहायता विना उत्पन्न पालन नाश करे है २१ सब जनन के अनुग्रह तें या संसार में अनेक तरहके तपयोगादि कर्म्म हैं तिनकूं करिके धर्म्मादिक है स्वरूप जाको ऐसे कल्याण कूं करै है अनेकप्रकार के सम्पूर्ण कर्म्म और कर्म्मन के फल ये सब श्रीकृष्ण के

अधीन हैं २२ ता कारण सबते बडे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं पूजादेउ इनकूं देने में सब प्राणीनकी पूजा होजायगी और जो कोई पूजायोग्य होयगो ताहू की होजायगी २३ जो पुरुष पूजा के अनन्त फल की चाहना करै वह पुरुष सब प्राणीन के आत्मा और भेदभाव जिनके नहीं ऐसे शान्त परिपूर्ण रूप जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं पूजा देइ २४ श्रीकृष्ण के प्रभाव कूं जानै ऐसो सहदेव इतनी कहिकै चुपहोत भयो ता समय सम्पूर्ण जे श्रेष्ठ पुरुष हैं ते सहदेव को वचन श्रवण करिकै भले २ या प्रकार बड़ाई करतभये २५ स्नेह करिकै विह्वल प्रसन्न जो राजा युधिष्ठिर है सो तिन ब्राह्मणन ने कह्यो जो वचन है ताय सुनिकै और सभा में बैठे हैं तिन के हृदयको अभिप्राय जानिकै इन्द्रियन के प्रेरण करनवारे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको पूजन करत भयो २६ स्त्री भ्रयया मन्त्री सब कुटुम्ब के पुरुषनसहित जो राजा युधिष्ठिर है सो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण धोइकै लोकन को पवित्र करनवारो जो चरणारविन्दको धोवन जल है ताय आनन्द करिकै शिरपै चढ़ावत भयो २७ पीरे रेशमी वस्त्र और बहुत मोल के जे आभूषण हैं तिनसूं पूजन करिकै आसूभरे नेत्रन में जाके ऐसो राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिबेकूं नहीं समर्थ होतभयो २८ या

पूर्णाय दत्तस्यानन्त्यमिच्छता २४ इत्युक्त्वा सहदेवोऽभूत्तूष्णीं कृष्णानुभाववित् ॥ तच्छ्रुत्वा तुष्टुवुः सर्वे साधुसाध्विति सत्तमाः २५ श्रुत्वा द्विजेरितं राजा ज्ञात्वा हार्दं सभासदाम् ॥ समर्हयद्धृषीकेशं प्रीतः प्रणयविह्वलः २६ तत्पादाववनिज्यापः शिरसा लोकपावनीः ॥ सभार्यः सानुजामात्यः सकुटुम्बोऽवहन्मुदा २७ वासोभिः पीतकौशेयैर्भूषणैश्च महाधनैः ॥ अर्हयित्वाऽश्रुपूर्णाक्षो नाशकत्समवेक्षितुम् २८ इत्थं सभाजितं वीक्ष्य सर्वे प्राञ्जलयो जनाः ॥ नमो जयेति नेमुस्तं निपेतुः पुष्पवृष्टयः २९ इत्थं निशम्य दमघोषसुतः स्वपीठादुत्थाय कृष्णगुणवर्णनजातमन्युः ॥ उत्क्षिप्य बाहुमिदमाह सदस्यमर्षी संश्रावयन्भगवते परुषाण्यभीतः ३० ईशो दुरत्ययः काल इति सत्यवती श्रुतिः ॥ वृद्धानामपि यद्बुद्धिर्बालवाक्यैर्विभिद्यते ३१ यूयं पात्रविदां श्रेष्ठा मा मन्यध्वं बालभाषितम् ॥ सदसस्पतयः सर्वे कृष्णो यत्सम्मतोऽर्हणे ३२ तपोविद्याव्रतधरान्ज्ञानविध्वस्तकल्मषान् ॥ परमर्षीन्ब्रह्मनिष्ठाँल्लोकपालैश्च पूजितान् ३३ सदस्पतीनतिक्रम्य गोपालः कुल

प्रकार राजा युधिष्ठिर ने पूजा जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिकै जोरी हैं अञ्जली जिनने ऐसे सम्पूर्ण जन नमोनमः और जयजय शब्द करिकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करिकै फूलन की वर्षा करत भये २९ या प्रकार दमघोष को पुत्र शिशुपाल है सो सुनिकै अपने पीठ सूं उठिकै श्रीकृष्णचन्द्र के गुणन को वर्णन भयो तासूं भयो है क्रोध जाके ऐसो भुजाकूं ऊँची उठायकै ईर्षा जाके भई ऐसो निर्भय होय सभामें श्रीकृष्णको कठोर वचन सुनाय कै यह बोलतभयो ३० नहींहै नाश जाको ऐसो सामर्थ्यवान् जो काल है सो प्रबल है यह वेदकी श्रुति सत्य है ऐसे कालकरिकै वृद्ध वृद्ध जे सभा में बैठे हैं तिनकी बुद्धि या बाल सहदेव के कहने तें चलायमान होय गई ३१ हे पात्रके जाननवारेन में श्रेष्ठो सभा के पतियो! यह कृष्ण पूजा के योग्य है या बालक सहदेव को वचन सब मति मानो ३२ तपकूं करैं विद्या पढ़ैं व्रतन कूं करैं ज्ञान करिकै ध्वस्त भये हैं पाप जिन के और ब्रह्म में निष्ठा है जिनकी लोकपाल पूजा करैं ऐसे श्रेष्ठ ऋषि हैं तिनें और सभाके पतिहैं तिन

सदकूं त्यागि कै गायन को चरावनवारो कुल कूं दोष लगावनवारो पूजा के योग्य कैसे होय है जैसे यज्ञ में देवतान के योग्य जो वलि है ताय कौवा कैसे ग्रहण करिवे योग्य है ३३ । ३४ न जाको कोई वर्ण है न आश्रम है और न कोई कुल है सम्पूर्ण धर्मन सूं वहिष्कृत जैसे मनमें आवै तैसेही करै गुणन करिकै हीन ऐसो कृष्ण कैसे पूजायोग्य होय है ३५ राजा ययातिने इनके कुल कू शाप दियो और सत्पुरुषन ने जातिसूं बाहर कियो और सर्वदा वृथा मदिरा पान करै ऐसो इनको कुल ता कुल में जो कृष्ण है सो कैसे पूजा योग्य होग है ३६ ब्रह्मर्षि जिनको सेवन करै ऐसे देशन कूं त्यागि कै ब्रह्मतेज जामें न रहे ऐसे समुद्र के किलाको आश्रय लैकै यादव चोरनकी तुल्य प्रजाकूं बाधा करै है ३७ नष्ट भयो है मंगल जाको ऐसो शिशुपाल ऐसे ऐसे अमंगल वचन कहतभयो जैसे सिंह स्यारकी वोलनि पै मन नहीं देइहै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कछु न वोलत भये ३८ सभा के वैठनवारे हैं ते ऐसी दुस्सह भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी निन्दा श्रवण करिकै काननकूं मूंदि कै क्रोध करिकै शिशुपाल कूं गारी देत जात भये ३९ भगवान् की निन्दा सुनिकै अथवा भगवत्परायण जो पुरुष है ताकी निन्दा सुनिकै जो पुरुष वा स्थान तें न उठिजाय वह पुरुष अपने

पांसनः ॥ यथा काकः पुरोडाशं सपर्य्यां कथमर्हति ३४ वर्णाश्रमकुलापेतः सर्व्वधर्मबहिष्कृतः ॥ स्वैरवर्त्ती गुणैर्हीनः सपर्य्यां कथमर्हति ३५ ययातिनैषां हि कुलं शप्तं सद्भिर्बहिष्कृतम् ॥ वृथापानरतं शश्वत्सपर्य्यां कथमर्हति ३६ ब्रह्मर्षिसेवितान्देशान्हित्वैतेऽब्रह्मवर्चसम् ॥ समुद्रं दुर्गमाश्रित्य बाधन्ते दस्यवः प्रजाः ३७ एवमादीन्यभद्राणि बभाषे नष्टमङ्गलः ॥ नोवाच किञ्चिद्भगवान् यथा सिंहः शिवारुतम् ३८ भगवन्निन्दनं श्रुत्वा दुस्सहं तत्सभासदः ॥ कर्णौ पिधाय निर्जग्मुः शपन्तश्चेदिपं रुषा ३९ निन्दां भगवतः शृण्वंस्तत्परस्य जनस्य वा ॥ ततो नापैति यः सोपि यात्यधः सुकृताच्च्युतः ४० ततः पाण्डुसुताः क्रुद्धा मत्स्यकेकयसृञ्जयाः ॥ उदायुधाः समुत्तस्थुः शिशुपालजिघांसवः ४१ ततश्चैद्यस्त्वसम्भ्रान्तो जगृहे खड्गचर्म्मणी ॥ भर्त्सयन्कृष्णपक्षीयान् राज्ञः सदसि भारत ४२ तावदुत्थाय भगवान् स्वान्निवार्य्य स्वयं रुषा ॥ शिरः क्षुरान्तचक्रेण जहारापततो रिपोः ४३ शब्दः कोलाहलोऽथासीच्छिशुपाले हते महान् ॥ तस्यानुयायिनो भूपा दुद्रुवुर्जीवितैषिणः ४४ चैद्यदेहोत्थितं ज्योतिर्वासुदेवमुपाविशत् ॥ पश्यतां सर्वभूतानामुल्केव भुवि खाच्च्युता ४५ जन्मत्रयानुगुणितवैरसंरब्धया

पुण्य तें भ्रष्ट होय कै नरक में गिरे है ४० ता पीछे क्रोध जिनके भयो ऐसे जे पाण्डु के पुत्र हैं ते और मत्स्य देश केकयदेश सृञ्जयदेश के राजा हैं ते शस्त्रन कू उठायकै शिशुपाल के मारिवे के लिये ठाडे होत भये ४१ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! ता पीछे नहीं भयो है हरवराहट जाके ऐसो जो शिशुपाल है सो कृष्णचन्द्र के पक्षी जे राजा हैं तिनके मारिवे कूं सभामें ढाल तलवार लेत भये ४२ यह मेरो पार्षद है मेरी बराबरि यामें बल है यह सबनकू मारेगो यातें मैंहीं याकूं मारूं यह विचारिकै ताही समय उठिकै भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी ओर के राजानकू मनेकरिकै सम्मुख आवै जो वैरी शिशुपाल है ताको शिर छुरा की तुल्य है पैनी धार जाकी ऐसे चक्रसूं क्रोधसों काटतभये ४३ ता समय शिशुपाल के मारेजाने में वडो कोलाहल शब्द होतभयो और शिशुपाल के पिछलागू जे राजा हैं ते जीवे की इच्छा करिकै भाजतभये ४४ ता समय शिशुपालके देह में तें निकसी जो ज्योति है सो सब प्राणीनके देखत श्रीकृष्णचन्द्र में मिलतिभई जैसे आकाश

तें गिरयो जो तारो है सो पृथ्वी में मिलिजाय या प्रकार ४५ पहिले जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु भये और दूसरे जन्म में रावण कुम्भकर्ण भये तीसरे जन्म में शिशुपाल दन्तवक्र
भये या प्रकार तीन जन्मतो चल्यो आयो जो वैर है तासूं तन्मयहोय गई ऐसी जो बुद्धि है ता करिकै रूपको ध्यान करत २ वाही रूपकूं पावत भयो अर्थात् पार्षद होत भयो क्योंकि जैसी जो भावना
करै तैसोई ताको जन्म होयहै ४६ चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञ के करावनवारे ब्राह्मणनकूं और बड़े बड़े सभामें बैठे हैं तिनकूं बड़ी दक्षिणा देतभये विधिपूर्वक सबको पूजन करिकै यज्ञान्त
स्नान करत भये ४७ योगेश्वरन के ईश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा युधिष्ठिर को यज्ञ सिद्धकरिकै सुहृदन ने विनती करी तब कितनेहू मासपर्यन्त वास करत भये ४८ ता पीछे जाय देवे
की इच्छा न करे ऐसो राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा मागि कै समर्थ देवकी के पुत्र अपनी स्त्रीन और मन्त्री कू सङ्ग लैके अपनी द्वारकापुरी में आवत भये ४९ वैकुण्ठ के वसनवारे जे जय विजय

धिया ॥ ध्यायंस्तन्मयतांयातोभावोहिभवकारणम् ४६ ऋत्विग्भ्यःससदस्येभ्योदक्षिणांविपुलामदात् ॥ सर्वान्सम्पूज्यविधिवच्चक्रेऽवभृथमेकराट् ४७
साधयित्वाक्रतुंराज्ञः कृष्णोयोगेश्वरेश्वरः ॥ उवासकतिचिन्मासान् सुहृद्भिरभियाचितः ४८ ततोऽनुज्ञाप्यराजानमनिच्छन्तमपीश्वरः ॥ ययौसभार्यःसा
मात्यः स्वपुरंदेवकीसुतः ४९ वर्णितंतदुपाख्यानं मयातेबहुविस्तरम् ॥ वैकुण्ठवासिनोर्जन्मविप्रशापात्पुनःपुनः ५० राजसूयावभृथ्येनस्नातोराजायुधि
ष्ठिरः ॥ ब्रह्मक्षत्रसभामध्ये शुशुभेसुरराडिव ५१ राज्ञासभाजिताःसर्वेसुरमानवखेचराः ॥ कृष्णंक्रतुंचशंसन्तः स्वधामानिययुर्मुदा ५२ दुर्योधनमृतेपापं
कलिंकुरुकुलामयम् ॥ योनसेहेश्रियंस्फीतां दृष्ट्वापाण्डुसुतस्यताम् ५३ यइदंकीर्तयेद्विष्णोः कर्मचैद्यवधादिकम् ॥ राजमोक्षंवितानंच सर्वपापैःप्रमु
च्यते ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशिशुपालवधोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
राजोवाच ॥ अजातशत्रोस्तंदृष्ट्वाराजसूयमहोदयम् ॥ सर्वेमुमुदिरेब्रह्मन्नृदेवायेसमागताः १ दुर्योधनंवर्जयित्वाराजानःसर्षयःसुराः ॥ इतिश्रुतंनोभ

पार्षद हैं तिनको और सनकादिकन को शाप लग्यो तातें वारंवार जन्म भयो यह कथा राजन् तुम्हारे आगे मैंने बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन करी ५० राजसूययज्ञ करिकै पश्चात् स्नान जिनने
कियो ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो ब्राह्मण और क्षत्रियन की सभा के मध्य में बैठे इन्द्र की तुल्य सुन्दर लगत भये ५१ राजा युधिष्ठिरने सत्कार जिनको करयो ऐसे सम्पूर्ण देवता मनुष्य आकाश
के विचरनवारे प्रमथगण हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और यज्ञकी प्रशंसा करत बड़े आनन्द सू अपने २ लोकन कूं जात भये ५२ कौरवन के कुलकूं कलियुगरूप कुलको पापी जो दुर्योधन है सो पाण्डु
पुत्र महाराज युधिष्ठिर की बड़ी लक्ष्मी कूं देखिकै कुढ़त भयो ५३ शिशुपाल के वधकूं आदिलैके जे श्रीकृष्ण के कर्म हैं और बीसहजार आठसौ राजा बन्ध तें छुड़ाये युधिष्ठिर को यज्ञ करायो
या प्रसङ्ग कू जो पुरुष कहै वह सब पापन तें छूटि जाय है ५४ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशिशुपालवधोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
(पञ्चयुक्सप्ततितमेयज्ञावभृथसम्भ्रमः ॥ सुयोधनस्यचाज्ञानान्यमानभङ्गोदशिभ्रमात् ? पचहत्तरवें अध्यायमें यज्ञान्तस्नानमें सम्भ्रम अज्ञानित सूं दृष्टिके भ्रमसूं दुर्योधनका मानभङ्ग वर्णित है १)

अव राजा परीक्षित् कहे हैं हे शुकदेवजी ! अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की वड़ी शोभा देखिके जे मनुष्यन के देव राजा आये ते सम्पूर्ण प्रसन्न होत भये १ और राजा ऋषि देवता आये हैं ते सम्पूर्ण दुर्योधन के विना आनन्द कूं पावत भये यह मैंने तुम्हारे मुख से सुनीसो दुर्योधन के आनन्द क्यों न भयो याको कारण मेरे आगे वर्णन करो २ ऋषीश्वर कहे हैं महात्मा तुम्हारे दादे जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञमें सब भय्या वन्धु प्रेमवश होय कै सवही की टहल में युक्त होत भये ३ जिसने कौन टहल लीनी सो कहे हैं भीमसेन कूं रसोई को अधिष्ठाता और दुर्योधन खर्च को मालिक क्योंकि यह हमकूं शत्रु जानिकै द्रव्य वहुत उठावैगो तो यामें हमारो यश होयगो और सहदेव कूं आये गयेन की पूजा करनो नकुल सब सामग्रीन कूं लेआवें ४ गुरुनकी टहल अर्ज्जुन करत भये श्रीकृष्णचन्द्र जो यज्ञमें आवें तिनके पांव धोइकै पोंछि देंई परोसा परोसी में द्रौपदी प्रवृत्त भई वडो है मन जाको ऐसो कर्ण दान देने की टहल में लगत भयो ५ युयुधान विकर्ण हार्दिक्य और जे विदुर कूं आदिलैके हैं ते और भूरिश्रवा कूं आदिलैके वाह्लीक के पुत्र हैं ते और जे सन्तर्दन कूं आदिलैके हैं ते बड़े यज्ञमें अनेकप्रकार के

गर्वस्तत्रकारणमुच्यताम् २ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ पितामहस्यतेयज्ञे राजसूयेमहात्मनः ॥ वान्धवाःपरिचर्य्यायांतस्याऽऽसन्प्रेमवन्धनाः ३ भीमोमहानसाध्यक्षो धनाध्यक्षःसुयोधनः ॥ सहदेवस्तुपूजायांनकुलोद्रव्यसाधने ४ गुरुशुश्रूषणेजिष्णुःकृष्णःपादावनेजने ॥ परिवेषणेद्रुपदजा कर्णोदानेमहामनाः ५ युयुधानोविकर्णश्चहार्दिक्योविदुरादयः ॥ वाह्लीकपुत्राभूर्याद्यायेचसन्तर्दनादयः ६ निरूपितामहायज्ञे नानाकर्म्मसुतेतदा ॥ प्रवर्त्तन्तेस्मराजेन्द्र राज्ञःप्रियचिकीर्षवः ७ ऋत्विक्सदस्यवहुवित्सुसुहृत्तमेषुस्विष्टेषुसूनृतसमर्हणदक्षिणाभिः ॥ चैद्येचसात्वतपतेश्चरणंप्रविष्टेचक्रुस्ततस्त्ववभृथस्नपनंद्युनद्याम् ८ मृदङ्गशङ्खपणवधुन्धुर्य्यानकगोमुखाः ॥ वादित्राणिविचित्राणि नेदुरावभृथोत्सवे ६ नर्तक्योननृतुर्हृष्टा गायकायूथशोजगुः ॥ वीणावेणुतलोन्नादस्तेपांसदिवमस्पृशत् १० चित्रध्वजपताकाग्रैरिभेन्द्रस्यन्दनार्वभिः ॥ स्वलंकृतैर्भटैर्भूपानिर्ययूरुक्ममालिनः ११ यदुसृञ्जयकाम्बोजकुरुकेकयकोसलाः ॥ कम्पयन्तोभुवंसैन्यैर्यजमानपुरःसराः १२ सदस्यर्त्विग्द्विजश्रेष्ठा ब्रह्मघोषेणभूयसा ॥ देवर्षिपितृगन्धर्वास्तुष्टुवुः पुष्पवर्षिणः १३ स्वलंकृतानराना र्योगन्ध

कर्म्मन में लगाय दिये ता समय हे राजान के इन्द्र राजा परीक्षित् ! महाराज युधिष्ठिर के प्रिय करिवे के निमित्त समस्त प्रवृत्त होतभये ६ । ७ ऋत्विज् और सभाके वैठनवारे तथा विवेकी सुहृद् हैं ते सुन्दर मनोहर वचन गहने दक्षिणा इनसूं पूजन करैं और शिशुपाल कूं श्रीकृष्णचन्द्र के चरण की प्राप्ति होयचुकी ता पीछे स्वर्ग की नदी जो गङ्गा है तामें यज्ञकी समाप्ति को स्नान करत भये ८ यज्ञकी समाप्तिको जो उत्सव है तामें मृदङ्ग शङ्ख ढोलक झंझरी नगारे नरसिंहा ये चित्रविचित्र वाजे वाजतभये ६ नाचनवारी हैं ते नाचत भई आनन्द जिनके भयो ऐसे गवैयान के झुंड के झुंड गावतभये तिनके वीणा वेणु हथेरी वजैं हैं तिनको शब्द स्वर्गपर्य्यन्त जातभयो १० चित्रविचित्र ध्वजा पताका जिनके ऊपर ढँकी ऐसे वड़े हाथी और घोड़ान पै वैठिकै सुवर्ण की मालान कूं पहिरिकै प्यादेन कूं सङ्ग लैके राजा हैं ते निकसत भये ११ राजा युधिष्ठिर हैं आगे जिनके ऐसे जे सृञ्जय काम्बोज कुरु केकय कोसल इन देशन के राजा हैं ते सेनान सूं पृथ्वी को

कँपावत जातभये १२ सभाके बैठनवारे और ऋत्विज तथा ब्राह्मण हैं ते बड़ी वेदकी ध्वनि करत जातभये और देवता ऋषि पितृ गन्धर्व्व ये पुष्पनकी वर्षा करिकैं स्तुति करतभये १३ चन्दन माला गहने वस्त्र इनसूं शृंगार जिनने करयो ऐसे जे स्त्री पुरुष हैं ते नानाप्रकार के रसन कूं लेपन और छिरकाव करतभये १४ तेल और माखन सुगन्ध के जल हरदी केसर इत्यादिकनकूं स्त्री पुरुष हैं ते लेपन करत और छिरकत परस्पर विहार करतभये १५ या उत्सवके देखिवे के निमित्त जैसे जैसे उत्तम विमाननमें बैठिकैं देवांगना निकसे हैं या प्रकार प्यादे जिनकी रक्षा करैं ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी रथन में पालकीन में बैठिकैं निकसत भई लाज भरी हँसनिसूं शोभायमान है मुख जिनके ममिया श्वशुरन के लरिका और सखा जिनकूं छिरकैं ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी सुन्दर लगत भई १६ भीजे हैं वस्त्र जिनके याही ते प्रकट हैं अंग कुच जघा जिनके और उत्कण्ठा सूं केश जिनके खुलि रहे तिनसूं फूल झरै ऐसी जे रानी हैं ते देवरनकूं और सखानकूं भिजोवति भई सुन्दर विहारन सूं मलिन हैं बुद्धि जिनकी ऐसे कामी पुरुषनके मनकूं चलायमान करतभई १७ सुवर्ण की माला पहिरे सुन्दर घोड़ा जुते ऐसो जो रथहै तामें बैठे राजा युधिष्ठिर

स्रग्भूषणाम्बरैः ॥ विलिम्पन्त्योऽभिषिञ्चन्त्यो विजहुर्विविधैरसैः १४ तैलगोरसगन्धोदहरिद्रासान्द्रकुङ्कुमैः ॥ पुम्भिर्लिप्ताःप्रलिम्पन्त्यो विजहुर्वारयोषितः १५ गुप्तानृभिर्निरगमन्नुपलब्धुमेतद्देव्योयथादिविविमानवरैर्नृदेव्यः ॥ तामातुलेयसखिभिःपरिषिच्यमानाः सव्रीडहासविकसद्वदनाविरेजुः १६ तादेवरानुत सखीन्सिषिचुर्दृतीभिः क्लिन्नाम्बरा विवृतगात्रकुचोरुमध्याः ॥ औत्सुक्यमुक्तकबराच्च्यवमानमाल्याः क्षोभंदधुर्मलधियांरुचिरैर्विहारैः १७ ससम्राड्रथमारूढः सदश्वंरुक्ममालिनम् ॥ व्यरोचतस्वपत्नीभिः क्रियाभिःक्रतुराडिव १८ पत्नीसंयाजावभृथ्यैश्चरित्वातेतमृत्विजः ॥ आचान्तंस्नापयाञ्चक्रुर्गङ्गायांसहकृष्णया १९ देवदुन्दुभयोनेदुर्नरदुन्दुभिभिःसमम् ॥ मुमुचुःपुष्पवर्षाणि देवर्षिपितृमानवाः २० सस्नुस्तत्रततःसर्व्वेवर्णाश्रमयुतानराः ॥ महापातक्यपि यतः सद्योमुच्येतकिल्विषात् २१ अथराजाऽहतेक्षौमे परिधायस्वलंकृतः ॥ ऋत्विक्सदस्यविप्रादीनानर्चाभरणाम्बरैः २२ बन्धुज्ञातिनृपान्मित्रसुहृदोऽन्यांश्च सर्व्वशः ॥ अभीक्ष्णंपूजयामास नारायणपरोनृपः २३ सर्व्वेजनाःसुररुचोमणिकुण्डलस्रगुष्णीषकञ्चुकदुकूलमहार्घ्यहाराः ॥ नार्यश्चकुण्डलयुगालक

हैं सो जैसे क्रियानसहित यज्ञ सुन्दर लगे है या प्रकार स्त्रीन सहित सुन्दर लगतभये १८ ऋत्विज् हैं ते पत्नीसंयाज् और अवभृथ्य नाम करिकैं जे दो यज्ञ हैं तिनकूं करिकै गंगामें द्रौपदी सहित आचमन जिनने कियो ऐसे राजा युधिष्ठिरकूं स्नान करावत भये १९ देवतानके नगारे तथा मनुष्यनके नगारे बजतभये देवता ऋषि पितृ मनुष्य हैं ते फूलनकी वर्षा करतभये २० वर्णयुक्त जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चारोवर्ण और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चार आश्रम ता गंगामें सब स्नान करतभये बड़ो पापी पुरुष जामें स्नान करिकै शीघ्र पाप तें छूटिजात है २१ स्नान करे पीछे राजा युधिष्ठिर नवीन रेशमी धोती उपरना पहिरिकै भलेप्रकार शोभायमान होयके ऋत्विज् और सभाके बैठनवारे हैं तिनें और ब्राह्मणादिक हैं तिनें गहने और वस्त्रन सूं पूजन करतभये २२ नारायणही है आश्रय जिनके ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो बन्धु जाति के राजा मित्र सुहृद् और सम्पूर्ण हे तिन सबको वारंवार पूजन करतभये २३ देवतान की तुल्य है

कान्ति जिनकी और मणिनके जडाऊ कुण्डल माला पगड़ी जामा पटुका बडे मोलके हार इनकूं पहिरे जे पुरुषहैं ते और दोनों कुण्डल अलकनके समूह तिन करिकै शोभायमान हैं मुख जिनके ऐसी स्त्री हैं ते सुवर्णकी करधनी पहिरिकै सब सुन्दर लगतभई २४ हे राजन् परीक्षित् ! स्नानकरे पीछे राजा युधिष्ठिरने पूजन जिनको कस्यो बड़े हैं शील स्वभाव जिनके ऐसे ऋत्विज् और सभा के बैठनवारे तथा वेदके पढनवारे हैं ते और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और राजा आये हैं ते २५ और देवता ऋषि पितृ हैं ते और समस्त प्राणी तथा टहलुआन सहित लोकपाल हैं ते राजा युधिष्ठिर तें पूजन करायकै आज्ञा मांगिकै अपने अपने घरनकूं जातभये २६ हरि भगवान्के भक्तन में राजर्षि जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञकी जो बडी शोभा है ताकी प्रशंसा करत करत नहीं तृप्त होतभये जैसे मनुष्य अमृत पीवत पीवत नहीं तृप्त होयहै २७ सुहृद् सम्बन्धी बन्धु और श्रीकृष्णचन्द्र इनके बिछुरिवे में कायरहै मन जाको ऐसो राजा युधिष्ठिर प्रेम करिकै राखत भयो २८ हे राजन् परीक्षित् ! तिन राजा युधिष्ठिरको प्रिय करिवे कूं साम्बहै आदिमें जिनके ऐसे पुत्र हैं तिनें और यादवनमें शूरवीर हैं तिनें द्वारकामें भिजवायकै आप इन्द्रप्रस्थ में रहतभये २९

वृन्दजुष्टवक्त्रश्रियः कनकमेखलया विरेजुः २४ अथर्त्विजो महाशीलाः सदस्या ब्रह्मवादिनः ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा राजानो ये समागताः २५ देवर्षिपितृभूतानि लोकपालाः सहानुगाः ॥ पूजितास्तमनुज्ञाप्य स्वधामानि ययुर्नृप २६ हरिदासस्य राजर्षे राजसूयमहोदयम् ॥ नैवातृप्यन्प्रशंसन्तः पिबन्मर्त्योऽमृतं यथा २७ ततो युधिष्ठिरो राजा सुहृत्सम्बन्धिबान्धवान् ॥ प्रेम्णा निवारयामास कृष्णं च त्यागकातरः २८ भगवानपि तत्राङ्ग न्यवात्सीत्तत्प्रियंकरः ॥ प्रस्थाप्य यदुवीरांश्च साम्बादींश्च कुशस्थलीम् २९ इत्थं राजा धर्मसुतो मनोरथमहार्णवम् ॥ सुदुस्तरं समुत्तीर्य्य कृष्णेनाऽऽसीद्गतज्वरः ३० एकदान्तःपुरे तस्य वीक्ष्य दुर्योधनः श्रियम् ॥ अतप्यद्राजसूयस्य महित्वं चाच्युतात्मनः ३१ यस्मिन्नरेन्द्रदितिजेन्द्रसुरेन्द्रलक्ष्मीर्नाना विभान्ति किल विश्वसृजोपक्लृप्ताः ॥ ताभिः पतीन्द्रुपदराजसुतोपतस्थे यस्यां विपक्तहृदयः कुरुराडतप्यत् ३२ यस्मिंस्तदा मधुपतेर्महिषीसहस्रं श्रोणीभरेण शनकैः क्वणदङ्घ्रिशोभम् ॥ मध्ये सुचारु कुचकुङ्कुमशोणहारं श्रीमन्मुखं प्रचलकुण्डलकुन्तलाढ्यम् ३३ सभायां मयक्लृप्तायां क्वापि धर्मसुतोऽधिराट् ॥ वृतोनुजैर्बन्धुभिश्च कृष्णेनापि स्वचक्षुषा ३४ आसीनः

धर्म के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं सो अतिशय करिकै तस्यो न जाय ऐसो जो मनोरथरूपी बड़ो समुद्रहै ताय श्रीकृष्णचन्द्र की सहायता तें तरिकै सब खेद दूरि होतभयो ३० एकसमय पुरके मध्यमें राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञकी शोभा देखिकै और श्रीकृष्णचन्द्रमें है मन जाको ऐसे राजा युधिष्ठिरकी महत्त्वता देखिकै और राजा युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें मय कारीगर ने बनाई जे अनेकप्रकार की राजानकी असुरनकी देवतानकी विभूति हैं तिन सहित द्रुपदराजाकी पुत्री द्रौपदी है सो अपने पतिको सेवन करत भई और जा द्रौपदी में है आसक्त मन जाको ऐसो कौरवनको राजा दुर्योधनहै सो तापकूं पावतभयो ३१ । ३२ राजा युधिष्ठिरके अन्तःपुरमें ता समय मधुपति श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके समूहको वर्णन करे हैं कटिके बोझतें चरणन में हौले हौले बजें जे नूपुर तिनसूं शोभायमान हैं और मध्यमें अत्यन्त सुन्दर कुचनमें जो केसर तासूं अरुण जिनके हार हैं और चलायमान कुण्डल और केशन करिकै युक्त शोभायमान जिन

के मुख ऐसी रानीन के समूह शोभा कूं प्राप्त होतभये ३३ मय दैत्यकी निर्म्माण करी जो सभा है तामें काहू समय अपने आज्ञाकारी भय्या बन्धुन सहित और हित अहितके जाननवारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन सहित धर्म पुत्र चक्रवर्त्ती राजा युधिष्ठिर हैं ते ३४ साक्षात् सिंहासन पै जैसे इन्द्र विराजमान होय ऐसे सुवर्ण के सिंहासन पै विराजमान होयकै राज्यकी शोभा जिनकूं सेवन करै और वन्दीजन जिनकी स्तुति करैं ऐसे शोभायमान होतभये ३५ हे राजन् परीक्षित् ! ता समय भय्यानकूं सङ्ग लैकै किरीट धारण करे माला पहिरे हाथ में तरवार लिये क्रोध करिकै द्वारपाल गणन कूं डाटतो अभिमानी दुर्य्योधन आवत भयो ३६ मयदैत्यकी बनाई सभा में शुष्कूं सूखे में जल दीखै और जल में सूखो दीखै ऐसी मायारचित जो सभा है तामें मयदैत्य की मायासू मोहित होय कै दुर्य्योधन भ्रम सूं सूखेमें जल मानिकै जामा उठावत भयो और सूखो जानि जल में गिरतभयो ३७ हे राजन् परीक्षित् ! दुर्य्योधन कू देखिकै भीमसेन हँसत भयो स्त्री जे हैं ते हँसत भई और राजा युधिष्ठिर ने मनेकरे तथापि श्रीकृष्णचन्द्र ने सनकारदिये तासूं और भी सब राजा हँसतभये ३८ हास्य देखिकै भई है लाज जाकूं नीचेकों है मुख जाकूं ऐसो दुर्य्योधन क्रोध करिकै सभामें तें

काञ्चनेसाक्षादासनेमघवानिव ॥ पारमेष्ठ्यश्रियाजुष्टः स्तूयमानश्चवन्दिभिः ३५ तत्रदुर्य्योधनोमानी परीतोभ्रातृभिर्नृप ॥ किरीटमालीन्यविशदसिहस्तःक्षिपन्रुषा ३६ स्थलेऽभ्यगृह्णाद्वस्त्रान्तं जलंमत्वास्थलेऽपतत् ॥ जलेचस्थलवद्भ्रान्त्या मयमायाविमोहितः ३७ जहासभीमस्तंदृष्ट्वा स्त्रियोनृपतयोऽपरे ॥ निवार्य्यमाणाऽप्यङ्ग राज्ञाकृष्णानुमोदिताः ३८ सव्रीडितोऽवाग्वदनोरुषाज्वलन् निष्क्रम्यतूष्णींप्रययौगजाह्वयम् ॥ हाहेतिशब्दःसुमहानभूत्सताम जातशत्रुर्विमनाइवाभवत् ॥ बभूवतूष्णींभगवान्भुवोभरं समुज्जिहीर्षुर्भ्रमतिस्मयद्दृशा ३९ एतत्तेऽभिहितंराजन् यत्पृष्टोऽहमिहत्वया ॥ सुयोधनस्यदौरात्म्यं राजसूयेमहाक्रतौ ४० ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेदुर्य्योधनमानभङ्गोनामपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथान्यदपिकृष्णस्यशृणुकर्म्माद्भुतंनृप ॥ क्रीडानरशरीरस्य यथासौभपतिर्हतः १ शिशुपालसखःशाल्वोरुक्मिण्युद्वाहआगतः ॥

निकसिकै चुपचाप्यो हस्तिनापुर कूं जातभयो साधुन के बड़ो हाहाकार शब्द होतभयो और अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर उदास होतभयो और जिन दृष्टि सू सूखे में जल और जल में सूखो यह भ्रमभयो पृथ्वी को बोझ उतारयो चाहै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भीमादिकन को हास्य और दुर्य्योधन को अपमान करिकै चुप होतभये यही भारत को बीज है ३९ हे राजन् परीक्षित् ! राजसूय जो बडो यज्ञ है तामें दुर्य्योधन कू कुज्ञन कैसे भयो यह तुमने प्रश्न कस्यो ताको उत्तर तुम्हारे सम्मुख वर्णन करो ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेदुर्य्योधनमानभङ्गोनामपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(तत षट्सप्ततिमेवृष्णिशाल्वमहामृधे ॥ द्युमद्गदामहारेण रणात्प्रद्युम्ननिर्गमः १ सम्पाद्य धर्मराजस्य राजसूयमहोदयम् ॥ निहत्यसौभराजादीनथोपारमदच्युतः २ छिहत्तरवें अध्यायमें यादव और शाल्व के भारी युद्धमें द्युमान् की गदा की चोट सों युद्ध सूं प्रद्युम्नजी को निकलनो भयो है १ कृष्णजी युधिष्ठिर की राजसूय के बड़े उदय को सम्पादन कर सौभराजादिकों को नाशकर

तिस पीछे शान्त होजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! याके पीछे क्रीड़ाकरिकै मनुष्यशरीर धारण कियो ऐसो श्रीकृष्णचन्द्र के औरहू जो अद्भुत कर्म है जैसे सौभ विमान को पति शाल्व मार्यो ताय श्रवण करो १ शिशुपाल को मित्र शाल्व रुक्मिणी के विवाह में आयो तब संग्राम में यादवन ने जीति लियो ताही प्रकार जरासन्धादिक राजा हैं ते जीति लिये २ सब राजान के श्रवण करत राजा शाल्व प्रतिज्ञा करतभयो कि समस्त पृथ्वीकूं यादवकुलरहित करूंगो अब तुम सब मेरे पराक्रम कूं देखौ ३ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार मूढ़ जो शाल्व है सो प्रतिज्ञा करिकै देवप्रभु पशुपति जो शिवजी हैं तिनको नित्य नित्य धूलिकी मुट्ठी फाकिकै आराधन करत भयो ४ शीघ्र तुष्ट होयँ ऐसे भी शिवजी हैं परन्तु श्रीकृष्णको द्वेषी जो शाल्व है ताकूं वरदेवो निष्फल मानिकै शीघ्र प्रकट न भये किन्तु शरण आयो जो शाल्व है तासूं एक वर्ष के पश्चात् यह कहत भये कि तू वर मांगु ५ ता समय देवता असुर मनुष्य गन्धर्व सर्प राक्षस इनसू भेदन न होय और जहां कूं इच्छा होय तहां पहुँचावै यादवन कूं भय को देनवारो ऐसो विमानदेउ यह वर मांगत भयो ६ तैसोही होयगो ऐसे प्रतिज्ञा करिकै शिवजी ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसो

यद्भिर्निर्जितःसङ्ख्ये जरासन्धादयस्तथा २ शाल्वःप्रतिज्ञामकरोच्छृण्वतांसर्व्वभूभुजाम् ॥ अयादवीं क्ष्मांकरिष्ये पौरुषंममपश्यत ३ इतिमूढःप्रतिज्ञाय देवंपशुपतिंप्रभुम् ॥ आराधयामासनृप पांसुमुष्टिंसकृद्ग्रसन् ४ संवत्सरान्तेभगवानाशुतोषउमापतिः ॥ वरेणच्छन्दयामास शाल्वंशरणमागतम् ५ देवासुरमनुष्याणां गन्धर्व्वोरगरक्षसाम् ॥ अभेद्यंकामगंवव्रे सयानंवृष्णिभीषणम् ६ तथेतिगिरिशादिष्टोमयःपरपुरञ्जयः ॥ पुरंनिर्म्माय शाल्वाय प्रादात्सौभमयस्मयम् ७ सलब्ध्वाकामगंयानं तमोधामदुरासदम् ॥ ययौद्वारवतींशाल्वोवैरंवृष्णिकृतंस्मरन् ८ निरुध्यसेनयाशाल्वो महत्याभरतर्षभ ॥ पुरींबभञ्जोपवनान्युद्यानानिचसर्व्वशः ९ सगोपुराणिद्वाराणि प्रासादाट्टालतोलिकाः ॥ विहारान्सविमानाग्र्यान्निपेतुःशस्त्रवृष्टयः १० शिलाद्रुमाश्चाशनयःसर्प्पा आसारशर्कराः ॥ प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूद्रजसाच्छादितादिशः ११ इत्यर्द्यमानासौभेन कृष्णस्यनगरीभृशम् ॥ नाभ्यपद्यतशंराजंस्त्रिपुरेणयथामही १२ प्रद्युम्नोभगवान्वीक्ष्य बाध्यमानानिजाःप्रजाः ॥ माभैष्टेत्यभ्यधाद्वीरोरथारूढोमहायशाः १३ सात्यकिश्चारुदेष्णश्च साम्बोऽक्रूरःसहानुजः ॥ हार्दिक्यो

जो मयदैत्य है सो वैरीन के पुरकूं जीतनवारो सौभ जाको नाम लोहेको बनायो जो विमान है ताय शाल्व कूं देत भयो ७ मन चाहैं तहां चल्यो जाय अन्धकार जामें छाय रह्यो कोई जाकूं पाइ न सकै ऐसो जो विमान है ताय पाइकै कृष्णने कर्यो जो वैर है ताको स्मरण करिकै द्वारकाको जात भयो ८ हे राजन् परीक्षित् ! शाल्व है सो बड़ी सेना करिकै द्वारकापुरी कू घेरिकै सम्पूर्ण जे फूलन के बाग उद्यान हैं तिनैं तोरत भयो ९ और पुर के दरवाजेन सहित जे दरवाजे हैं तिनैं और महल अट्टा अटारी गीतिस्थान हैं तिन सबकूं तोरत भयो और विमान में तें शस्त्रनकी वर्षा होतिभई १० और शिला वृक्ष बिजुली हैं ते तथा सर्प और जलकी धारा धूरि ये गिरतभये बड़ीपवन चली धूरिसू सम्पूर्णदिशा आच्छादित होय गई ११ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार सौभ विमानसूं पीड़ित जो श्रीकृष्णचन्द्र की पुरी द्वारका है सो जैसे त्रिपुरदैत्य करिकै पृथ्वी कूं सुख प्राप्त न भयो ऐसे सुखनकूं न पावति भई १२ बड़ो है यश जिनको ऐसे महारथी जो भगवान् प्रद्युम्न

हैं सो अपनी प्रजाकू दुःखित देखिकै मति भयकरो या प्रकार कहिकै सम्मुख आवतभये १३ और सात्यकि चारुदेष्ण साम्ब और छोटे भय्या समेत अक्रूर तथा हार्दिक्य भानुविन्द गद शुक सारण और बड़े हैं धनुष् जिनके ऐसे जे रथन के यूथपन के यूथन के पालन करनवारे हैं ते कवच पहिरिकै रक्षित होइकै रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कूं सङ्गलैकै निकसत भये १४ । १५ ताके पीछे असुरनको जैसे देवतान के संग युद्ध भयो हो तैसे रोमाञ्च जामें ठाढ होइ आवैं ऐसो भयानक युद्ध शाल्व की ओरकेन को यादवन के संग होत भयो १६ जैसे रात्रि के अन्धकार कूं सूर्य्य दूरि करि देइ हैं ऐसे रुक्मिणी के पुत्र जो प्रद्युम्नजी हैं सो सौभ विमान के पति शाल्व की मायानकूं दिव्य अस्त्रनसूं क्षणभर में नाश करत भये १७ सोने के पुंख लोहेकी भालि छोटी २ गाठि जिन में ऐसे पचीस बाणन करिकै शाल्व की सेनान को पालन करनवारो है ताय वेधतभये १८ प्रद्युम्नजी सौ बाण शाल्वके और एक एक बाण प्यादेन के तथा दश दश बाण सारथीन के और तीन तीन बाण घोडा हाथीन के मारत भये १९ महात्मा प्रद्युम्न को बड़ो अद्भुत पराक्रम देखिकै अपनी पराई सेना में जे सब योद्धा हैं ते प्रद्युम्नजी की प्रशंसा करत भये २० मयदैत्य को निर्माण

भानुविन्दश्च गदश्चशुकसारणौ १४ अपरेचमहेष्वासारथयूथपयूथपाः ॥ निर्य्युर्दंशिता गुप्तारथेभाश्वपदातिभिः १५ ततःप्रववृतेयुद्धं शाल्वानांयदुभिःस ह ॥ यथासुराणांविबुधैस्तुमुलंरोमहर्षणम् १६ ताश्चसौभपतेर्माया दिव्यास्त्रैरुक्मिणीसुतः ॥ क्षणेननाशयामास नैशंतमइवोष्णगुः १७ विव्याधपञ्च विंशत्या स्वर्णपुङ्खैरयोमुखैः ॥ शाल्वस्यध्वजिनीपालं शरैःसन्नतपर्व्वभिः १८ शतेनाताडयच्छाल्वमेकैकेनास्यसैनिकान् ॥ दशभिर्दशभिर्नेतॄन्वाहना नित्रिभिस्त्रिभिः १९ तदद्भुतंमहत्कर्म्म प्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ दृष्ट्वातंपूजयामासुःसर्व्वेस्वपरसैनिकाः २० बहुरूपैकरूपंतद्दृश्यतेनचदृश्यते ॥ मायामयंम यकृतन्दुर्विभाव्यंपरैरभूत् २१ क्वचिद्भूमौक्वचिद्व्योम्नि गिरिमूर्द्धिजलेक्वचित् ॥ अलातचक्रवद्भ्राम्यत्सौभंतद्दुरवस्थितम् २२ यत्रयत्रोपलक्ष्येत ससौ भःसहसैनिकः ॥ शाल्वस्ततस्ततोऽमुञ्चञ्छरान्सात्वतयूथपाः २३ शरैरग्न्यर्कसंस्पर्शैराशीविषदुरासदैः ॥ पीड्यमानपुरानीकः शाल्वोऽमुह्यत्परेरि तैः २४ शाल्वानीकपशस्त्रौघैर्वृष्णिवीराभृशार्दिताः ॥ नतत्यजूरणंस्वंस्वंलोकद्वयजिगीषवः २५ शाल्वामात्योद्युमान्नाम प्रद्युम्नंप्राक्प्रपीडितः ॥ आ

करयो मायामय जो विमानहै ताके कभऊं बहुत रूप होय जाय हैं कभऊं एक रूप होय जाय हैं कभऊं दीखै है और कभऊं नहीं दिखाई देइ है या प्रकार शत्रुन के विचार में न आवतभयो २१ कभऊं वह विमान पृथ्वी में आय जाय है कभऊं आकाश में जाय है कभऊं पर्व्वत के ऊपर जायहै कभऊं जल में जाय है ऐसे सुलगती लकड़ी की तुल्य दुरवस्थित जो विमान है सो या प्रकार चलायमान होत भयो २२ विमानसहित सेनासहित जहां जहां शाल्व दिखाई देय है तहां तहां यादवन में मुख्य हैं ते बाणनकूं छोड़त भये २३ अग्नि सूर्य्यकी तुल्य परम है स्पर्श जिनको विष की तुल्य सहारे न जायँ ऐसे वैरीन ने चलाये बाण हैं तिनसूं पीड़ित विमान और सेना जाकी ऐसो शाल्व मोहकूं पावत भयो २४ शाल्व की सेना के शस्त्रन के समूहन तें अत्यन्त पीड़ित और यह लोक परलोक के जीतिवे की इच्छा जिनकूं लगिरही ऐसे जे यादवन में शूरवीर हैं ते अपनी अपनी युद्धभूमिकूं नहीं त्यागनभये २५ प्रद्युम्न ने पहिले गदा जो मारी तासूं पीड़ित भयो ऐसो

जो शाल्व को मन्त्री वली नाम करिकै द्युमान् है सो लोहे की बड़ी गदा छाती में मारिकै पुकारतभयो २६ धर्म्म को जाननवारो जो श्रीकृष्णचन्द्र को दारुक रथवान् ताको पुत्र जो प्रद्युम्नजी को रथवान् है सो गदा करिकै टूटी है छाती जिनकी ऐसे वैरीन के दण्ड को देनवारे जो प्रद्युम्नहैं तिनैं रण में तें लेजात भयो २७ दो घड़ी में भयो है चेत जिनकूं ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र प्रद्युम्नहैं सो रथवान् तें बोलत भये अहो रथवान्! तूं रण में तें मोकूं भजायकै ले आयो यह बुरो कर्म्म कियो २८ व्याकुल है चित्त जाको ऐसो रथवान् जो तू है तानें कलङ्क लगायो ऐसो मैं हू ता विना यादवन के कुल में जाने जन्मलियो वह रण में तें भाज्यो नहीं सुन्यो गयो है अब मोहींकूं भजाय लायो २९ धर्म्मरूप जो रण है तामें तें भाजिकै आयो कुशल जातें पूंछी ऐसो जो मैं हूं सो पिता श्रीकृष्ण वलदेव के पास जायकै कहा अपनी कुशल कहूंगो ३० भय्यान की स्त्री जे भाभी हैं ते हे वीर! युद्धमें तें शत्रुन के सम्मुख तें नपुंसक होयकै कैसे भाजि आये इमसूं तो कहो ऐसे हँसिकै मोसूं कहैंगी ३१ ऐसे श्रवण करिकै रथवान् बोल्यो हे चिरञ्जीव! हे समर्थ! धर्म्मको ज्ञाता जो मैं हूं सो तुमकूं रण में तें निकासि लायो धर्म्म मैंही कर्यो है कि रथ के वैठनवारे कूं कष्ट

सायगदयामौर्व्या व्याहत्यव्यनदद्बली २६ प्रद्युम्नंगदयाशीर्णवक्षस्स्थलमरिन्दमम् ॥ अपोवाहरणात्सूतोधर्म्मविद्दारुकात्मजः २७ लब्धसंज्ञोमुहूर्त्तेनकार्ष्णिःसारथिमब्रवीत् ॥ अहोअसाध्विदंसूतयद्रणान्मेऽपसर्पणम् २८ नयदूनांकुलेजातःश्रूयतेरणविच्युतः ॥ विनामत्क्लीबचित्तेन सूतेनप्राप्तकिल्बिषात् २९ किन्नुवक्ष्येऽभिसङ्गम्यपितरौरामकेशवौ ॥ युद्धात्सम्यगपक्रान्तःपृष्टस्तत्राऽऽत्मनःक्षमम् ३० व्यक्तंमेकथयिष्यन्तिहसन्त्योभ्रातृजामयः ॥ क्लैब्यंकथंकथंवीर तवान्यैःकथ्यतांमृधे ३१ सारथिरुवाच ॥ धर्म्मंविजानताऽऽयुष्मन्कृतमेतन्मयाविभो ॥ सूतःकृच्छ्रगतंरक्षेद्रथिनंसारथिंरथी ३२ एतद्विदित्वातुभवान्मयाऽपोवाहितोरणात् ॥ उपसृष्टःपरेणेति मूर्च्छितोगदयाहतः ३३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशाल्वयुद्धेपट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सउपस्पृश्यसलिलं दंशितोधृतकार्म्मुकः ॥ नयमांद्युमतःपार्श्वं वीरस्येत्याहसारथिम् १ विधमन्तंस्वसैन्यानि द्युमन्तंरुक्मिणीसुतः ॥ प्रतिहत्यप्रत्यविध्यन्नाराचैरष्टभिःस्वयम् २ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्सूतमेकेनचाहनत् ॥ द्वाभ्यांधनुश्चकेतुञ्च शरेणान्येनवैशिरः ३ गदसात्यकिसाम्बाद्याजघ्नुः

आयकै उपस्थितहोय तौ सारथी अर्थात् रथवान् रक्षाकरै और सारथी के ऊपर आयके कष्टहोय तौ वैठनवारो रक्षाकरै ३२ शत्रुने गदा जो मारी तासूं तुमकूं पीड़ाभई और मूर्च्छा आइ गई यासूं धर्म्म जानिकै तुमकूं रण में तें निकासि लायौं ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशाल्वयुद्धेपट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(सप्तयुक्सप्ततितमेनानामायाविचक्षणः ॥ कृष्णेनागत्यशाल्वस्तु हतः सौभश्चचूर्णितम् १ सतहत्तरवें अध्याय में कृष्णजी ने आकर अनेकप्रकारकी मायाओं में निपुण शाल्वको मारा और विमान को चूर्ण करडाला १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! प्रद्युम्नजी हाथ पाव धोइकै कवचकूं पहिरिकै धनुषकूं हाथ में लैके वीर जो द्युमान् है ताकेपास मोकूं लेचल यह रथवान् तें कहत भये १ रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्नजी अपनी सेना के योद्धानकूं मारै ऐसे जो द्युमान्है ताय घेरिकै आठ वाणनसूं मारतभये २ अब आठ वाणनकूं पृथक् पृथक् करेहैं चार वाणनसूं चारों

योद्धानकूं और एक बाणसूं रथवानकू मारतभये दो बाण करिकै धनुष और ध्वजाकूं काटत भये और एक बाणसू द्युमान् को शिर काटत भये ३ गद सात्यकि साम्बसूं आदिलेंकै जे यादव हैं ते विमान को पालन करनवारो जो शाल्व है ताकी सेना कूं मारत भये कटी है नारि जिनकी ऐसे सम्पूर्ण विमानके बैठनवारे हैं ते समुद्र में गिरत भये ४ या प्रकार यादवन को और शाल्व की ओरकेन को जो परस्पर युद्ध भयो ताकूं सुनिकै व्याकुलता होय आवै ऐसो भयानक युद्ध सत्ताईस दिन होतभयो ५ अब श्रीशुकदेवजी कहें हैं हे राजन् परीक्षित्! धर्मके पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनने बुलाये ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो इन्द्रप्रस्थमें गये राजसूययज्ञ होय चुक्यो और शिशुपाल मारि चुक्यो ६ ता पीछे कौरवनमें जे वृद्ध हैं तिनसूं आज्ञा मांगिकै मुनिनसूं आज्ञा मांगिकै और पुत्रन समेत कुन्ती सूं आज्ञा मांगिकै मार्ग में कुत्सित शकुन देखत द्वारकापुरी में आवत भये ७ खोटे शकुननकूं देखिकै कहत भये कि बड़े भय्या बलदेवजी सहित मैं यहा यज्ञमें आयो हूं शिशुपाल की ओरके राजा निश्चय मेरी पुरी कूं मारेंगे ८ अपने यादवन को कष्ट देखिकै बलदेवजीकू द्वारकापुरी की रक्षा करिवे के निमित्त देखिकै विमान और शाल्व कूं देखिकै केशव भगवान्

सौभपतेर्बलम् ॥ पेतुःसमुद्रेसौभेयाः सर्वेसंछिन्नकन्धराः ४ एवंयदूनांशाल्वानां निघ्नतामितरेतरम् ॥ युद्धंत्रिणवरात्रंतदभूत्तुमुलमुल्बणम् ५ इन्द्रप्रस्थंगतःकृष्ण आहूतोधर्मसूनुना ॥ राजसूयेऽथनिर्वृत्तेशिशुपालेचसंस्थिते ६ कुरुवृद्धाननुज्ञाप्य मुनींश्चससुतांपृथाम् ॥ निमित्तान्यतिघोराणि पश्यन्द्वारवतींययौ ७ आहचाहमिहायातआर्यमिश्राभिसङ्गतः ॥ राजन्याश्चैद्यपक्षीयानूनंहन्युःपुरींमम ८ वीक्ष्यतत्कदनंस्वानां निरूप्यपुररक्षणम् ॥ सौभंचशाल्वराजंच दारुकंप्राहकेशवः ९ रथंप्रापयमेसूत शाल्वस्यान्तिकमाशुवै ॥ सम्भ्रमस्तेनकर्त्तव्यो मायावीसौभराडयम् १० इत्युक्तश्चोदयामास रथमास्थायदारुकः ॥ विशन्तंददृशुःसर्वे स्वेपरेचारुणानुजम् ११ शाल्वश्चकृष्णमालोक्य हतप्रायबलेश्वरः ॥ प्राहरत्कृष्णसूताय शक्तिंभीमरवांमृधे १२ तामापतन्तींनभसि महोल्कामिवरंहसा ॥ भासयन्तींदिशःशौरिः सायकैःशतधाच्छिनत् १३ तंचषोडशभिर्विद्ध्वा बाणैःसौभंचखेभ्रमत् ॥ अविध्यच्छरसन्दोहैः खंसूर्यइवरश्मिभिः १४ शाल्वःशौरेस्तुदोःसव्यं सशार्ङ्गंशार्ङ्गधन्वनः ॥ बिभेदन्यपतद्धस्ताच्छार्ङ्गमासीत्तदद्भुतम् १५ हाहाकारोमहानभूत्

श्रीकृष्णचन्द्र रथवान् तें बोलत भये ९ हे रथवान्! शीघ्र मेरे रथकूं शाल्वके समीप प्राप्तकर या विमान को राजा जो शाल्व है सो बड़ो मायावी है तू सम्भ्रम मतिकर १० या प्रकार जातें कही ऐसो जो रथवान् है सो रथपै बैठिकै हाकत भयो अपनी पराई सेना में हैं ते रथकी ध्वजा में अरुण को छोटो भय्या गरुड है ताय देखत भये ११ मृतक की तुल्य सेना को राजा जो शाल्व है सो युद्ध में श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिकै उनके रथवान् के ऊपर भयानक है शब्द जामें ऐसी बरछी कूं फेंकत भयो १२ दिशान कूं प्रकाश करत बड़े तारेकी तुल्य आकाश में चली आवै ऐसी जो बरछी है ताको कृष्णजी बाणन करिकै सौ खण्ड करत भये १३ शाल्वकूं सोलह बाणनसूं वेधिकै आकाशमार्ग में भ्रमण करै जो विमान है ताय जैसे सूर्य किरणन करिकै आकाश कूं वेधै ऐसे बाणन के समूह करिकै वेधत भये १४ शार्ङ्गधनुष् है विद्यमान जिनके ऐसे जे शौरि श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी धनुषसहित जो वामभुजा है ताय शाल्व वेधत भयो तब श्रीकृष्ण के हाथ तें धनुष् गिरत

भयो यह बड़ो आश्चर्य होतभयो १५ हाथमें तें धनुष कूं गिरयो देखिकै माणीन के बड़ो हाहाकार शब्द होत भयो औ विमान को ईर्जा जो शाल्व है सो ऊंचे स्वरसूं गार्जिकै श्रीकृष्णचन्द्र तें
यह कहत भयो १६ कि हे मूढ ! हमारो सखा भ्रथवा जो शिशुपाल है ताकी स्त्री कूं जो तू देखतही हरि लायो और सभाके बीच असावधान मेरो सखा शिशुपाल तैंने मारयो १७ तोकूं काहू ने
जीत्यो नहीं है ऐसे अपनपे कूं माने जो तू है सो मेरे सम्मुख ठाढो रहैगो तो यहां बगदैगो नहीं किन्तु तीक्ष्ण बाणनसूं मृत्युकू पहुँचाय देउँगो १८ अब श्रीकृष्ण कहे हैं हे मूर्ख ! तू वृथा कहे है
निकटही मृत्यु है ताय नहीं देखे है शूरवीर हैं ते अपनो पुरुषार्थ दिखावें हैं और जे बहुत बोले हैं ते कछु पराक्रम नहीं करे है १९ या प्रकार कहिकै श्रीकृष्ण भगवान्‌हे सो बड़े वेग की जो गदा
है ताय क्रोध करिकै कण्ठ के नीचे के हाड़ में मारत भये तब शाल्व रुधिर को वमन करत कांपतभयो २० गदा चले पीछे शाल्व छिपत भयो ताके दो घड़ी पीछे एक पुरुष आयके शिर झुकाय

सीद्भूनानान्तत्रपश्यताम् ॥ विनद्यसौभराडुच्चैरिदमाहजनार्दनम् १६ यत्त्वयामूढनःसख्युर्भ्रातुर्भार्याहृतेक्षताम् ॥ प्रमत्तःससभामध्ये त्वयाऽव्यापा
दितःसखा १७ तत्त्वाद्यनिशितैर्बाणैरपराजितमानिनम् ॥ नयाम्यपुनरावृत्तिं यदितिष्ठेर्ममाग्रतः १८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वृथात्वंकत्थसेमन्दनप
श्यस्यान्तिकेऽन्तकम् ॥ पौरुषंदर्शयन्तिस्म शूरानबहुभाषिणः १९ इत्युक्त्वाभगवाञ्छाल्वंगदयाभीमवेगया ॥ तताडजत्रौसंरब्धः सचकम्पेवमन्न
सृक् २० गदायासन्निवृत्तायां शाल्वस्त्वन्तरधीयत ॥ ततोमुहूर्त्तआगत्यपुरुषःशिरसाऽच्युतम् ॥ देवक्याप्रहितोऽस्मीति नत्वाप्राहवचोरुदन् २१
कृष्णकृष्णमहाबाहो पितातेपितृवत्सल ॥ बद्ध्वाऽपनीतःशाल्वेन सौनिकेनयथापशुः २२ निशम्यविप्रियंकृष्णो मानुषींप्रकृतिंगतः ॥ विमनस्को
घृणीस्नेहाद्बभाषेप्राकृतोयथा २३ कथंराममसम्भ्रान्तं जित्वाऽजेयंसुरासुरैः ॥ शाल्वेनाल्पीयसानीतः पितामेबलवान्विधिः २४ इतिब्रुवाणेगोविन्दे
सौभराट्प्रत्युपस्थितः ॥ वसुदेवमिवानीय कृष्णञ्चेदमुवाचसः २५ एषतेजनितातातोयदर्थमिहजीवसि ॥ वधिष्येवीक्षतस्तेऽमुमीशश्चेत्पाहिबालि
श २६ एवंनिर्भर्त्स्यमायावी खड्गेनानकदुन्दुभेः ॥ उत्कृत्यशिरआदायखस्थंसौभंसमाविशत् २७ ततोमुहूर्त्तंप्रकृतावुपप्लुतः स्वबोधआस्तेस्वजना

श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करिकै रोदन करिकै देवकी ने भेज्यो हूं यह वचन कहत भयो २१ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महाबाहो अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ! हे पिता के हितके करनवारे ! जैसे कसाई
पशुकूं बांधिकै लेजाय ऐसे शाल्व तुम्हारे पिताकूं बांधिकै लेगयो २२ ऐसो अप्रिय वचन श्रवण करिकै मनुष्य स्वभाव में प्राप्त भयो है मन जिनको ऐसे दयावान् श्रीकृष्णचन्द्र वेमन होयकै
जैसे प्राकृत मनुष्य कहे ऐसे कहतभये २३ हरबराहट जिनके नहीं और देवता असुर जिनकूं जीति न सकैं ऐसे बलदेवजी कूं जीतिकै तुच्छ शाल्व मेरे पिताकूं कैसे लेगयो विधाता बलवान्‌है कदा-
चित् लेगयो होयगो २४ या प्रकार श्रीकृष्ण कहे हैं इतने में विमानको राजा शाल्व आयो और मायारूपी वसुदेव निर्म्माण करिकै लायकै श्रीकृष्ण से बोलत भयो २५ यह तेरो उत्पन्न करन-
वारो पिता है जाके लिये तू यहां जीवे है तेरे देखत याकूं मारूंगो हे मूर्ख ! तेरी सामर्थ्य होय तो याकी रक्षाकर २६ मायावी जो शाल्व है सो या प्रकार डरपायकै माया के वसुदेव जो बनाय

कै लायो हो तिनको तरवार से शिर काटिकै हाथ में लैके आकाश में विमान हो तामें जातभयो २७ स्वतःसिद्ध ज्ञान जिनको ऐसे भी श्रीकृष्णहैं परन्तु अपने जनन के सङ्ग दो घडी पर्य्यन्त मनुष्यन को स्वभाव जो शोक करिवो तामें डूवत भये ताके पीछे वड़ो है प्रभाव जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मयदैत्य ने प्रकटकरी शाल्व ने चलाई ऐसी आसुरीमाया जानत भये २८ ज्ञान जिनकूं भयो ऐसे अच्युत जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वा सग्राम में दूत वनिकै जो आयो हो ताय देखत भये और ता वसुदेव के देहकूं भी नहीं देखत भये जैसे जागे पीछे स्वप्न की वस्तुकूं नहीं देखे हैं और विमान में वैठो आकाश में विचरै ऐसो जो वैरी शाल्व है ताय देखिकै मारिवे को उद्यम करत भये २९ अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजान में ऋषि राजा परीक्षित् ! पूर्व्वापर प्रसंग को विचार न करैं ऐसे कोई ऋषि हैं ते या प्रकार कहे हैं जो अपने कथन तें विरोध परै ताको स्मरण नहीं करै कहा विरोध परै ताको दृष्टान्त कहे हैं राजसूययज्ञमें वलदेवजी सहित श्री कृष्णचन्द्र नहीं गये हैं क्योंकि पहिले कहिआये हैं सङ्कर्षण सूं आज्ञा मांगिकै श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर के यज्ञमें गये और यहां कह्यो वलदेवसहित मैं यज्ञ में आयो यह पूर्व्वापर सङ्गति को वि-

नपङ्गतः ॥ महानुभावस्तदवुध्यदासुरीं मायांसशाल्वप्रसृतांमयोदिताम् २८ नतत्रदूतंनपितुःकलेवरं प्रवुद्धआजौसमपश्यदच्युतः ॥ स्वाप्नंयथाचाम्वर चारिणंरिपुं सौभस्थमालोक्यनिहन्तुमुद्यतः २९ एवंवदन्तिराजर्षे ऋषयःकेचनान्विताः ॥ यत्स्ववाचोविरुध्येत नूनंतेनस्मरन्त्युत ३० क्वशोकमोहौस्नेहो वा भयंवायेऽज्ञसम्भवाः ॥ क्वचाखण्डितविज्ञानज्ञानैश्वर्य्यस्त्वखण्डितः ३१ यत्पादसेवोर्जितयाऽऽत्मविद्यया हिन्वन्त्यनाद्यात्मविपर्य्ययग्रहम् ॥ लभन्तआत्मानमनन्तमैश्वरं कुतोनुमोहःपरमस्यसद्गतेः ३२ तंशस्त्रपूगैःप्रहरन्तमोजसा शाल्वंशरैःशौरिरमोघविक्रमः ॥ विद्ध्वाऽच्छिनद्वर्म्मधनुःशिरोमणिं सौभञ्चशत्रोर्गदयारुरोजह ३३ तत्कृष्णहस्तेरितयाविचूर्णितं पपाततोयेगदयासहस्रधा ॥ विसृज्यतद्भूतलमास्थितोगदामुद्यम्यशाल्वोऽच्युतमभ्यगाद्द्रुतम् ३४ आधावतःसगदन्तस्यवाहुं भल्लेनछित्त्वाऽथरथाङ्गमद्भुतम् ॥ वधायशाल्वस्यलयार्कसन्निभं विभ्रद्वभौसार्कइवोदयाचलः ३५ जहारते

रोध परैहै ताको स्मरण नहीं करैहैं शुकदेवजी कहे हैं राजा यह हमारो मत नहीं है और ऋषिन को मतहै ३० अव शुकदेवजी अपनो मत कहे हैं अज्ञानसूं होवें ऐसे जे शोक मोह स्नेह भय ये कहां और अखण्ड है विज्ञान ज्ञान ऐश्वर्य्य जिनको देवता जिनकी स्तुतिकरैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कहा ३१ जिनके चरण की सेवा करिकै पुष्ट भई ऐसी जो आत्मविद्या है ता करिकै मैं लड्यो हू दुःखीहूं यहहै स्वरूप जाको ऐसे देहमें अहङ्कार है ताय दूरि करे हैं अपनपे में अनन्त ईश्वर के स्वरूप कू पावे हैं यातें साधुन की गति जे परम श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं मोह कहा ते होय ३२ सफल है पराक्रम जिनको ऐसे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते वल करिकै शस्त्रनके समूहनतें मारो ऐसो जो शाल्व है ताय वेधिकै कवच और धनुष् है ताय और शाल्व के शिर में जे मणि हैं तिनें काटत भये और वैरी शाल्व को जो विमान है ताय गदा करिकै तोरत भये ३३ श्रीकृष्णचन्द्र के हाथकी चलाई भई जो गदाहै तासूं हजारन टूक होयकै वह विमान चूर्णीभूत होयके जल में गिरत भयो ता समय शाल्व विमानकूं त्यागिकै पृथ्वीपै ठाढो होयकै गदा हाथमें उठायके श्रीकृष्ण के ऊपर दौरत भयो ३४ गदासहित दौरो चलो आवै जो शाल्व है ताको गदा

सहित जो हाथहै ताय बाण करिकै काटत भये और शाल्वके मारिवेके लिये मलयकाल के सूर्यकी तुल्यहै तेज जाको ऐसे अद्भुत चक्रकूं धारण करिकै जैसे उदयाचल पर्वत सूर्यकूं धारण करिकै शोभाकूं प्राप्तहोय ऐसे श्रीकृष्ण शोभाकूं पावत भये ३५ जैसे इन्द्र वज्र करिकै वृत्रासुरको शिर काटै तैसे बड़ो मायावी जो शाल्व है ताको कुण्डलन और मुकुटन सहित शिर श्रीकृष्णचन्द्र वाही चक्रसूं काटतभये ता समय मनुष्यनको हाहाकार शब्द होतभयो ३६ हे राजन् परीक्षित्! ता समय गदा करिकै विमान टूट्यो और पापी शाल्व पृथ्वीमें गिरिपरयो तब स्वर्ग में देवतानके नगाड़े बजतभये ताके पीछे मित्र जो शिशुपाल और शाल्व तथा पौण्ड्रक इनको ऋण चुकायवेके निमित्त क्रोध करिकै दन्तवक्र आवत भयो ३७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशाल्ववधोनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ततोऽष्टसप्ततितमेदन्तवक्रविदूरथौ ॥ हत्वाहरिःपुरेरेमेरामःसूतंततोऽवधीत् १ अठहत्तरवें अध्याय में श्रीकृष्णजी दन्तवक्र और विदूरथको मारकर द्वारकामें रमण करते भये तिस पीछे बलदेवजी सूतको मारतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित्! परलोकमें प्राप्त भये जे शिशुपाल और शाल्व तथा पौण्ड्रक इनके परोक्षमें मित्रताकूं जनावै ऐसो जो दुष्टबुद्धि दन्तवक्र है सो क्रोध करिकै अकेलो पावप्यादो बड़ो बलवान् गदा हाथमें लैके पृथ्वीकूं कँपावत चल्योआवै ऐसो दिखाई देतभयो १ । २ या प्रकार आवते दन्तवक्र कूं देखिकै शीघ्रतायुक्त श्रीकृष्णचन्द्र गदा हाथमें लैके रथमें ते उतरिकै समुद्र कूं जैसे किनारा रोंके ऐसे रोंकत भये ३ दुष्टहै मद जाके ऐसो करूप देशको राजा दन्तवक्र है सो मुक्ति के देनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनतें बोलतभयो तू मेरी आखिन के आगे या समय आयो यह बड़ो मङ्गलभयो ४ हे कृष्ण! तू हमारे मामाको पुत्र भय्या है और हमारे मित्रन को मारनवारो है और मोहूं कूं मारयो चाहे है याते हे मूर्ख! वज्र की तुल्य यह गदाहै ताते तोकूं मारूंगो ५ हे अज्ञानी! मित्रन के हितको करनवारो जो मैं हूं सो बन्धुरूप जो वैरी तू है ताय मारिकै मित्रन को ऋण चुकाऊंगो जैसे देहोत्पन्न जो

नैवशिरःसकुण्डलं किरीटयुक्तंपुरमायिनोहरिः ॥ वज्रेणवृत्रस्ययथापुरन्दरोबभूवहाहेतिवचस्तदानृणाम् ३६ तस्मिन्निपतितेपापे सौभेचगदयाहते ॥ नेदुर्दुन्दुभयोराजन् दिविदेवगणेरिताः ॥ सखीनामपचितिंकुर्व्वन् दन्तवक्रोरुपाऽभ्ययात् ३७ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेसौभवधोनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ शिशुपालस्यशाल्वस्य पौण्ड्रकस्यापिदुर्म्मतिः ॥ परलोकगतानाञ्च कुर्व्वन्पारोक्ष्यसौहृदम् १ एकःपदातिःसंक्रुद्धो गदापाणिःप्रकम्पयन् ॥ पद्भ्यामिमांमहाराज महासत्त्वोऽभ्यदृश्यत २ तंतथायान्तमालोक्य गदामादायसत्वरः ॥ अवप्लुत्यरथात्कृष्णः सिन्धुंवेलेवप्रत्यधात् ३ गदामुद्यम्यकारूषोमुकुन्दंप्राहदुर्म्मदः ॥ दिष्ट्यादिष्ट्याभवानद्य ममदृष्टिपथंगतः ४ त्वंमातुलेयोनःकृष्ण मित्रध्रुङ्मांजिघांससि ॥ अतस्त्वांगदयामन्दहनिष्येवज्रकल्पया ५ तर्ह्यानृण्यमुपैम्यज्ञ मित्राणांमित्रवत्सलः ॥ बन्धुरूपमरिंहत्वाव्याधिन्देहचरंयथा ६ एवंरूक्षैस्तुदन्वाक्यैः कृष्णंतोत्रैरिवद्विपम् ॥ गदया

रोग है नाय दूरि करै तव सुखी होय ऐसे है या प्रकार कठोर वाक्य कहिकै श्रीकृष्णके माथे में गदा मारिकै सिंहकी तुल्य दन्तवक्र गर्जतभयो जैसे हाथी के अंकुश लगे ऐसे गदा लगति भई ७ संग्राम में गदा जिनके लगी तथापि श्रीकृष्णचन्द्र न डिगतभये पश्चात् श्रीकृष्णचन्द्र भी कौमोदकी जो वड़ी गदा है ताकूं दन्तवक्र की छाती में मारतभये ८ गदा करिकै विदीर्ण भयो है हृदय जाको ऐसो जो दन्तवक्र है सो मुखते रुधिर कूं वमन करत प्राणनकूं त्यागिकै केश हाथ पाव फैलायकै पृथ्वी में गिरतभयो ९ ता पीछे दन्तवक्र के शरीर ते अद्भुत सूक्ष्म ज्योति निकसिकै सव प्राणीन के देखत हे राजन् परीक्षित ! शिशुपाल के वधमें जैसे श्रीकृष्णचन्द्रमें प्रवेश करति भई तैसेही प्रवेश करतिभई १० भ्राता दन्तवक्र के शोक करिकै व्याकुल ऐसो जो विदूरथ है सो तलवार ढाल लैके श्रीकृष्ण के मारिवे के लिये बड़े बड़े श्वासन कूं लेत आवतभयो ११ हे राजान के इन्द्र परीक्षित ! चल्यो आवै जो विदूरथ है ताको मुकुट और कुण्डलसहित जो शिर है ताकूं छूरा की तुल्य है धार जाकी ऐसे चक्र सूं श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये १२ औरन पै सह्यो न जाय ऐसो जो सौभ विमान है ताय और शाल्व कूं तथा अनुयान सहित जो दन्तवक्र है ताय मारि

ऽताडयन्मूर्ध्नि सिंहवद्व्यनदच्च सः ७ गदयाऽभिहतोऽप्याजौ न चचाल यदूद्वहः ॥ कृष्णोऽपि तमहन्गुर्व्या कौमोदक्या स्तनान्तरे ८ गदानिर्भिन्नहृदय उद्वमन्रुधिरं मुखात् ॥ प्रसार्य केशबाह्वङ्घ्रीन् धरण्यां न्यपतद्व्यसुः ९ ततः सूक्ष्मतरं ज्योतिः कृष्णमाविशदद्भुतम् ॥ पश्यतां सर्वभूतानां यथा चैद्यवधे नृप १० विदूरथस्तु तद्भ्राता भ्रातृशोकपरिप्लुतः ॥ आगच्छदसिचर्मभ्यामुच्छ्वसंस्तज्जिघांसया ११ तस्य चापततः कृष्णश्चक्रेण क्षुरनेमिना ॥ शिरो जहार राजेन्द्र सकिरीटं सकुण्डलम् १२ एवं सौभं च शाल्वं च दन्तवक्रं सहानुजम् ॥ हत्वा दुर्विषहानन्यैरीडितः सुरमानवैः १३ मुनिभिः सिद्धगन्धर्वैर्विद्याधरमहोरगैः ॥ अप्सरोभिः पितृगणैर्यक्षैः किन्नरचारणैः १४ उपगीयमानविजयः कुसुमैरभिवर्षितः ॥ वृतश्च वृष्णिप्रवरैर्विवेशालंकृतां पुरीम् १५ एवं योगेश्वरः कृष्णो भगवाञ्जगदीश्वरः ॥ ईयते पशुदृष्टीनां निर्जितो जयतीति सः १६ श्रुत्वा युद्धोद्यमं रामः कुरूणां सह पाण्डवैः ॥ तीर्थाभिषेकव्याजेन मध्यस्थः प्रययौ किल १७ स्नात्वा प्रभासे संतर्प्य देवर्षिपितृमानवान् ॥ सरस्वतीं प्रतिस्रोतं ययौ ब्राह्मणसंवृतः १८ पृथूदकं बिन्दुसरस्त्रितकूपं सुदर्शनम् ॥ विशालं ब्रह्मतीर्थं च

चुके तव देवता और मनुष्य सर्व स्तुति करतभये १३ मुनीश्वर सिद्ध गन्धर्व्व विद्याधर और बड़े सर्प अप्सरा पितृनके गण यक्ष किन्नर चारण इन सबने गाई है जीत जिनकी और फूल वरसाये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र यादवन कूं सङ्गलैके शोभायमान जो द्वारकापुरी है तामें जातभये १४ । १५ या प्रकार योगके ईश्वर और जगत् के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जरासन्धादिकन ने जीते ऐसे पशुन की तुल्य है दृष्टि जिनकी अज्ञानी पुरुषन कूं हारे जीते प्रतीत होइ हैं १६ पाण्डव कौरवन कूं एक तुल्य मानें ऐसे जे बलदेवजी हैं सो उनके युद्धको उद्यम श्रवण करिकै तीर्थस्नान को मिष करिकै यात्रा करतभये क्योंकि यहां रहोंगो तो जाकी ओर न होउंगो सोई बुरो मानेगो १७ प्रभासतीर्थ में स्नान करिकै देवता ऋषि पितृ मनुष्यन को तर्पण करिकै ब्राह्मणन कूं सङ्गलैकै सरस्वती के प्रवाह के सम्मुख बलदेवजी जातभये १८ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित ! पृथूदक बिन्दुसर त्रितकूप सुदर्शनतीर्थ विशाल ब्रह्मतीर्थ चक्रतीर्थ और पूर्ववाहिनी

सरस्वती और यमुना के जे तीर्थ तथा गङ्गा के तीर्थ और जहां ऋषि यज्ञ करें या नैमिषारण्यमें बलदेवजी जातभये १९ । २० बड़े हैं यज्ञ जिनके ऐसे जे मुनि हैं ते बलदेवजी कूं आया जानि कै प्रशंसा करिकै उठिकै प्रणाम करिकै यथायोग्य पूजन करत भये २१ ब्राह्मणन सहित पूजा जिनकी करी और आसन कूं अङ्गीकार करिकै बलदेवजी हैं सो वेदव्यासको शिष्य जो रोमहर्षण हैं ताय बैठो देखतभये २२ बलदेवजी कूं देखिकै उठ्यो नहीं और नहीं करी है प्रणाम अञ्जली जाने ब्राह्मणन तें ऊंचो बैठ्यो जो सूत है ताय मधुवंशोत्पन्न बलदेवजी देखिकै क्रोध करतभये २३ प्रतिलोमज अर्थात् ब्राह्मणी माता और पिता क्षत्रिय ऐसो यह सूत है सो इन ब्राह्मणन तें कैसे ऊंचो बैठ्यो है तैसेही धर्म्म के पालन करनवारे जे हम हैं तिनते ऊंचो बैठ्यो है ता कारण दुष्ट है बुद्धि जाकी ऐसो सूत मारिवे योग्य है २४ कदाचित् कहो कि विना जाने ऊंचो बैठ्यो है सो नहीं भगवान् वेदव्यास को शिष्य है और महाभारत सहितजे पुराण तिनकूं पढ़िकै और

कंप्राचींसरस्वतीम् १९ यमुनामनुयान्येव गङ्गामनुचभारत ॥ जगामनैमिषंयत्र ऋषयःसत्रमासते २० तमागतमभिप्रेत्य मुनयोदीर्घसत्रिणः ॥ अभि वन्द्ययथान्यायं प्रणम्योत्थायचार्चयन् २१ सोऽर्चितःसपरीवारः कृतासनपरिग्रहः ॥ रोमहर्षणमासीनं महर्षेःशिष्यमैक्षत २२ अप्रत्युत्थायिनंसूतमकृत प्रह्वणाञ्जलिम् ॥ अध्यासीनञ्चतान्विप्रांश्चुकोपोद्वीक्ष्यमाधवः २३ कस्मादसाविमान्विप्रानध्यास्तेप्रतिलोमजः ॥ धर्म्मपालांस्तथैवास्मान् वधमर्हति दुर्म्मतिः २४ ऋषेर्भगवतोभूत्वा शिष्योऽधीत्यबहूनिच ॥ सेतिहासपुराणानिधर्म्मशास्त्राणिसर्व्वशः २५ अदान्तस्याविनीतस्य वृथापण्डितमानिनः ॥ नगुणायभवन्तिस्म नटस्येवाजितात्मनः २६ एतदर्थोहिलोकेस्मिन्नवतारोमयाकृतः ॥ वध्यामेधर्म्मध्वजिनस्तेहिपातकिनोऽधिकाः २७ एतावदुक्त्वाभग वान्निवृत्तोऽसद्वधादपि ॥ भावित्वात्तंकुशाग्रेण करस्थेनाहनत्प्रभुः २८ हाहेतिवादिनःसर्व्वे मुनयःखिन्नमानसाः ॥ ऊचुःसङ्कर्षणंदेवमधर्म्मस्तेकृतःप्रभो २९ अस्यब्रह्मासनन्दत्तमस्माभिर्यदुनन्दन ॥ आयुश्चात्माक्लमंतावद्यावत्सत्रंसमाप्यते ३० अजानतैवाचरितस्त्वयाब्रह्मवधोयथा ॥ योगेश्वरस्यभवतो नाम्नायोपिनियामकः ३१ यद्येतद्ब्रह्महत्यायाः पावनंलोकपावन ॥ चरिष्यतिभवाँल्लोकसंग्रहोऽनन्यचोदितः ३२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ करिष्येवध

समस्त धर्म्मशास्त्रन कूं पढ़िकै २५ इन्द्रिय जाने रोंकी नहीं नम्रता जामें है नहीं वृथा अपने कूं पण्डित माने ऐसे कूं शास्त्र गुण के लिये नहीं होय है जैसे नहीं जीत्यो है मन जाने ऐसे नटकी विद्या वाकू गुण के लिये नहीं होयहै २६ एतदर्थही या लोकमें अवतार मैंने लियो है धर्म्मध्वजी अर्थात् जाति में छोटे उत्तम स्वरूप कू धरे ऐसे जो अधिक पापी पुरुष हैं सो मारिवे के योग्य हैं २७ समर्थ जो भगवान् बलदेवजी हैं सो इतनो कहिकै असत् जो सूतको वधहै ताते निवृत्तभये हैं परन्तु होनहारही तासूं हाथमें जो कुशाही तासूं सूत कूं मारतभये २८ खेदयुक्त हैं मन जिन के ऐसे जे सम्पूर्ण मुनिहैं ते हाहाकार शब्द करिकै हे समर्थ ! यह कहा कर्यो ऐसे देव बलदेवजीतें कहतभये २९ हे यादवन कूं आनन्द के देनवारे ! हमने या सूत कूं ब्रह्मासन दियो है और या वत् पर्य्यन्त हमारो यज्ञ पूर्ण न होयगो तावत्पर्य्यन्त शरीर कू खेद न होय ऐसी अवस्था दीनी है ३० विना जाने जैसे ब्राह्मण को वधकरें ऐसे या सूतको वध तुमने करयो है योगके ईश्वर जो

तुमहो तिनकूं योग्य नहींहै वेद जे हैं ते भी नाहीं नाहीं करेंहैं हे लोकनके पवित्र करनवारे ! और नहींहै कहनवारो जिनकूं ऐसे जो तुमहो सो या ब्रह्महत्याको मायश्चित्तकरोगे तौ लोकनकूं शिक्षा हो- यगी और जो न करोगे तो आगे कोई ब्राह्मणकूं पारिकै हाथहू न धोवैगो ३१ । ३२ अब श्रीभगवान् बलदेवजी बोले लोकनके अनुग्रह करिवे के निमित्त मैं सूतके वधको मायश्चित्त करूंगो जो मायश्चित्तन में मुख्य प्रकार होय सो मोकूं बतावो ३३ हे मुनीश्वरो ! या सूतकूं तुमने बड़ी अवस्था दीनीही और इन्द्रिय भली वनीरहैं यह दीनो होइ अब तुम्हारे जो इच्छा होय सो सब कहो मैं अपनी योगमाया के बलतें सिद्ध करि देउंगो ३४ अब सब ऋषीश्वर बोले हे राम ! जैसे तुम्हारे अस्त्रको पराक्रम को मृत्युको और हमारो वचनये सब सत्यहोयँ सो विचारकरो ३५ तब श्रीभगवान् बलदेवजी बोले आपुही पुत्ररूप होयकै पिता उत्पन्न होयहै यह वेदकी आज्ञाहै यातें या रोमहर्षणको पुत्र जो उदश्रवाहै सो तुम्हारे पुराण को वक्ता होय या उदश्रवा की बड़ी आयु होय और इ- न्द्रिय अच्छी बनीरहैं बलवान् होय साक्षात् याकू न जिवायो यातें मृत्यु और शास्त्रकी सत्यताभई और पुत्ररूप करिकै आयु बल इन्द्रिय सिद्धभई यातें तुम्हारो वचन सिद्धभयो ३६ हे मुनिनमें श्रेष्ठो !

निर्वेशं लोकानुग्रहकाम्यया ॥ नियमः प्रथमेकल्पेयावान्सतुविधीयताम् ३३ दीर्घमायुर्बतैतस्य सत्त्वमिन्द्रियमेवच ॥ आशासितंयत्तद्ब्रूत साधयेयोगमा यया ३४ ॥ ऋषयऊचुः ॥ अस्त्रस्यतववीर्य्यस्य मृत्योरस्माकमेवच ॥ यथाभवेद्वचःसत्यं तथारामविधीयताम् ३५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आत्मावैपुत्रउ त्पन्नइतिवेदानुशासनम् ॥ तस्मादस्यभवेद्वक्ता आयुरिन्द्रियसत्त्ववान् ३६ किंवःकामोमुनिश्रेष्ठाब्रूताहंकरवाण्यथ ॥ अजानतस्त्वपचितिं यथामेचिन्त्य ताम्बुधाः ३७ ॥ ऋषयऊचुः ॥ इल्वलस्यसुतोघोरोबल्वलोनामदानवः ॥ सदूषयतिनःसत्रमेत्यपर्वणिपर्वणि ३८ तंपापंजहिदाशार्ह तन्नःशुश्रूषणंप रम् ॥ पूयशोणितविण्मूत्रसुरामांसाभिवर्षिणम् ३९ ततश्चभारतंवर्षं परीत्यसुसमाहितः ॥ चरित्वाद्वादशमासांस्तीर्थस्नायीविशुद्ध्यसे ४० ॥ इति श्री मद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवचरित्रेबल्वलवधोपक्रमोनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ ततःपर्वण्युपावृत्ते प्रचण्डःपांसुवर्षणः ॥ भीमोवायुरभूद्राजन् पूयगन्धस्तुसर्वशः १ ततोऽमेध्यमयंवर्षं बल्वलेनविनिर्म्मितम् ॥ अभ

तुम्हारे कौन वस्तुकी चाहनाहै सो मोतें कहो मैं करूंगो हे विवेकियो ! मायश्चित्त कूं नहीं जानूं जो मैंहूं ताकूं भलेमकार मायश्चित्त विचारो ३७ अब ऋषीश्वर बोले घोरहै रूप जाको ऐसो इल्वलको पुत्र बल्वल नाम दानवहै सो अमावस पूनो आयकै हमारे यज्ञकूं भ्रष्ट करेहै ३८ हे दशार्हवंशोत्पन्न बलदेवजी ! पीव रुधिर विष्ठा मूत्र मदिरा मांस इनकी वर्षा करै ऐसो जो पापी बल्वलहै ताय मारो यही हमारी बड़ी सेवाहै ३९ ता पीछे अत्यन्त सावधान होयकै कामक्रोधादिकन कूं त्यागिकै भारतखण्ड की परिक्रमा करिकै एकवर्ष पर्यन्त तीर्थन में स्नान करोगे तब शुद्ध होउगे ४० इति श्री- मन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवचरित्रेबल्वलवधोपक्रमोनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(ऊनाशीतितमेरामोबल्वलद्विजद्रुहे ॥ निहत्यतीर्थस्नानाद्यैर्ब्रह्महत्यामपानुदत् १ उनासीवें अध्यायमें बलदेवजी ब्राह्मणनकी प्रसन्नता के लिये बल्वलको मारकर तीर्थस्नानादिकन सूं सूत

की हत्याको दूर करतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! ता पीछे अमावास्या पूर्णमासी पर्व्व आयो तब धूरि जामें वर्षे ऐसी भयानक प्रचण्ड पवन चलतभई और चारचो ओर तें राधिकी दुर्गन्ध आवतिभई १ ता पीछे वल्वल दैत्यने करी ऐसी विष्ठा मूत्रकी वर्षा यज्ञशालामें होतिभई और त्रिशूल लिये वल्वल भी दृष्टि आवतभयो २ विदीर्ण कियो जो काजरको पहाड़ ताकी तुल्य बड़ो है देह जाको ताते तावेसे लाल हैं शिखा और डाढ़ी जाके दाढ़ करिकै भयानक भ्रुकुटीन सूं लग्यो है मुख जाको ऐसो जो वल्वल है ताय देखिकै ३ शत्रुकी सेना को विदीर्ण करनवारो जो मूसल है ताको स्मरण करिकै दैत्यनको मारनवारो जो हल है ताको स्मरण करतभये ता समय पार्षदरूप जे हल मूसल हैं ते जल्दी आवतभये ४ आकाशमें विचरै जो वल्वल है ताय हलके अग्रभाग सूं खैंचिकै क्रोधयुक्त जो वलदेवजी हैं सो ब्रह्मद्रोही जो वल्वल है ताके माथे में मूसल मारतभये ५ फूट्यो है माथो जाको ऐसो जो वल्वल है सो रुधिर को वमन करत दीनशब्द उचारण करत जैसे वज्रके मारे गेरूको पर्व्वत गिरे ऐसे पृथ्वीमें गिरतभयो ६ मुनीश्वर हैं ते वलदेवजी की स्तुति करिकै सफल आशीर्व्वादन कूं दैके जैसे वडभागी देवता वृत्रासुर के मारनवारे

वद्यज्ञशालायां सोऽन्वदृश्यतशूलधृक् २ तंविलोक्यबृहत्कायं भिन्नाञ्जनचयोपमम् ॥ तप्तताम्रशिखाश्मश्रुं दंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीमुखम् ३ सस्मारमुसलंरामः परसैन्यविदारणम् ॥ हलञ्चदैत्यदमनं तेतूर्णमुपतस्थतुः ४ तमाकृष्यहलाग्रेणबल्वलंगगनेचरम् ॥ मुसलेनाहनत्क्रुद्धोमूर्ध्निब्रह्मद्रुहंबलः ५ सोऽपतद्भुविनिर्भिन्नललाटोऽसृक्समुत्सृजन् ॥ मुञ्चन्नार्त्तस्वरंशैलोयथावज्रहतोऽरुणः ६ संस्तुत्यमुनयोरामं प्रयुज्यावितथाशिषः ॥ अभ्यषिञ्चन्महाभागावृत्रघ्नंविबुधायथा ७ वैजयन्तींददुर्मालां श्रीधामाम्लानपङ्कजाम् ॥ रामायवाससीदिव्ये दिव्यान्याभरणानिच ८ अथतैरभ्यनुज्ञातः कौशिकीमेत्यब्राह्मणैः ॥ स्नात्वासरोवरमगाद्यतःसरयुरास्रवत् ९ अनुस्रोतेनसरयूं प्रयागमुपगम्यसः ॥ स्नात्वासन्तर्प्यदेवादीञ्जगामपुलहाश्रमम् १० गोमतींगण्डकींस्नात्वा विपाशांशोण आप्लुतः ॥ गयांगत्वापितॄनिष्ट्वा गङ्गासागरसङ्गमे ११ उपस्पृश्यमहेन्द्राद्रौ रामंदृष्ट्वाभिवाद्यच ॥ सप्तगोदावरींवेणां पम्पांभीमरथींततः १२ स्कन्दंदृष्ट्वाययौरामः श्रीशैलंगिरिशालयम् ॥ द्रविडेषुमहापुण्यं दृष्ट्वाऽद्रिंवेङ्कटंप्रभुः १३ कामकोष्णींपुरींकाञ्चीं कावेरींचसरिद्वराम् ॥ श्रीरङ्गाख्यंमहापुण्यं

इन्द्रको अभिषेक करैं ऐसे अभिषेक करतभये ७ लक्ष्मीके बसिवे के स्थान ऐसे कोमल कमलनकी वैजयन्ती माला और दिव्य नीलाम्बरके धोती उपरना और अनेकप्रकार के आभूषण हैं ते वलदेवजी कूं देतभये ८ याके पीछे मुनिनने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे बलदेवजी ब्राह्मणनकूं संग लैके कौशिकीनदी में आयकै स्नान करिकै जा सरोवर में तें सरयू निकली तहां आवत भये ९ सरयूके प्रवाहके किनारे किनारे होयकै प्रयाग में आय स्नान करिकै देवादिकन को तर्पण करिकै पुलहऋषिको आश्रम जो हरिक्षेत्र है तामें जा भये १० वहां तें गोमती और गण्डकी तथा विपाशा में स्नान करिकै शोणनदीमें स्नान जिनने कस्यो ऐसे वलदेवजी गयातीर्थ में जायकै पितरनको पूजनकरिकै गंगा और समुद्र को जहां संगम भयो है तहां जात भये ११ ता पीछे महेन्द्र पर्वत में परशुरामजीको दर्शन करिकै प्रणामकरिकै सप्तगोदावरी और वेणा तथा पम्पा में जाय कै भीमरथी में जातभये १२ ता पीछे समर्थ वलदेवजी स्वामिकार्त्तिकेय को दर्शन करिकै महादेव जहां

विराजैं ऐसो जो श्रीशैल पर्व्वत है तहां जात भये और द्रविड़ देशन में बड़ो पुनीत जो वेङ्कट पर्वत है ताको दर्शन करिकै कामकोष्णी पुरी और काञ्चीपुरी में जातभये और नदीन में श्रेष्ठ जो कावेरी है तामें स्नान करिकै बड़ो पवित्र और जहां नित्य हरि विराजमान रहैं ऐसो जो श्रीरङ्गनाम विख्यात स्थान है तहां जात भये १३। १४ वहां ते ऋषभाद्रि पर्व्वत जो हरिको क्षेत्र है वहां जायकै दक्षिणदेश में जो मथुराहै तहां जात भये वहां ते बड़े पापन के नाश करनवारे जे सेतुबन्ध रामेश्वर हैं तहां जात भये १५ वहां जायकै हलायुध बलदेवजी दशहजार गौ ब्राह्मणन कूं देतभये पश्चात् कृतमाला नदी और ताम्रपर्णी नदीनमें होयकै मलयाचल कुलाचल पर्व्वतन में जातभये १६ तहां विराजमान जे अगस्त्यमुनि हैं तिनकी नमस्कारपूर्व्वक स्तुति करत भये तब अगस्त्यजीने आशीर्व्वाद दैके आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे बलदेवजी दक्षिणदेश में जो समुद्र है तहां जायकै कन्या नाम जो दुर्गादेवी है ताको दर्शन करत भये १७ ता पीछे फाल्गुन जो अनन्तपुरहै तामें नित्य विष्णु भगवान् विराजैं ऐसो जो उत्तम पञ्चाप्सरस नाम सर है तामें स्नान करिकै दश हजार गौवन को संकल्प करत भये १८ वहां ते चलिकै भगवान् बलदेवजी

यत्रसन्निहितोहरिः १४ ऋषभाद्रिंहरेःक्षेत्रं दक्षिणांमथुरांतथा ॥ सामुद्रंसेतुमगमन्महापातकनाशनम् १५ तत्रायुतमदाद्धेनूर्ब्राह्मणेभ्योहलायुधः ॥ कृतमालांताम्रपर्णीं मलयंचकुलाचलम् १६ तत्रागस्त्यंसमासीनं नमस्कृत्याभिवाद्यच ॥ योजितस्तेनचाशीर्भिरनुज्ञातोगतोऽर्णवम् ॥ दक्षिणंतत्रकन्याख्यां दुर्गांदेवींददर्शसः १७ ततःफाल्गुनमासाद्य पञ्चाप्सरसमुत्तमम् ॥ विष्णुःसन्निहितोयत्र स्नात्वाऽस्पर्शद्गवायुतम् १८ ततोऽभिव्रज्यभगवान् केरलांस्तुत्रिगर्त्तकान् ॥ गोकर्णाख्यंशिवक्षेत्रंसान्निध्यंयत्रधूर्जटेः १९ आर्य्यांद्वैपायनीदृष्ट्वाशूर्पारकमगाद्बलः ॥ तापींपयोष्णींनिर्विन्ध्यामुपस्पृश्याथदण्डकम् २० प्रविश्यरेवामगमद्यत्रमाहिष्मतीपुरी ॥ मनुतीर्थमुपस्पृश्य प्रभासंपुनरागमत् २१ श्रुत्वाद्विजैःकथ्यमानंकुरुपाण्डवसंयुगे ॥ सर्व्वराजन्यनिधनंभारंमेनेहृतंभुवः २२ सभीमदुर्य्योधनयोर्गदाभ्यांयुध्यतोर्मृधे ॥ वारयिष्यन्विनशनं जगामयदुनन्दनः २३ युधिष्ठिरस्तुतंदृष्ट्वा यमौकृष्णार्जुनावपि ॥ अभिवाद्याभवंस्तूष्णींकिंविवक्षुरिहागतः २४ गदापाणीउभौदृष्ट्वा संरब्धौविजयैषिणौ ॥ मण्डलानिविचित्राणि चरन्ताविदमब्रवीत् २५ युवांतुल्यबलौवीरौ हेराजन्

केरल और त्रिगर्त्त देशमें होय कै जहां धूर्जटि शिवजी विराजैं ऐसो जो गोकर्ण नाम करिकै शिवक्षेत्र है तहां जात भये १९ वहां तें बलदेवजी आर्य्या द्वीपवासिनी जो देवीहै ताको दर्शन करिकै शूर्पारक क्षेत्रमें आवत भये वहां तें तापी और पयोष्णी निर्विन्ध्या नदीमें आचमन करिकै दण्डकारण्य में आवत भये २० जहां माहिष्मती पुरीहै वा रेवानदी पै जात भये फेरि मनुतीर्थ में आचमन करिकै प्रभासक्षेत्र में आवत भये २१ तब कौरव और पाण्डवन के संग्राम में सब क्षत्रियन को नाश भयो यह ब्राह्मणन को वचन श्रवण करिकै पृथ्वी को बोझ उतरयो यह मानत भये २२ यादवन कूं आनन्दके देनवारे जो बलदेवजी हैं सो संग्राम में गदान सूं युद्ध करैं ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं तिनैं मने करिवे कूं कुरुक्षेत्र में जात भये २३ राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव कृष्ण और अर्जुन ये बलदेवजी कूं देखिकै प्रणाम करिकै कहा कहनेकी इच्छा करिकै यहां आये हैं या भयके मारे चुप होत भये २४ गदा हाथमें लिये क्रोधमें भरे एकको एक जीत्यो चाहैं चित्र

विचित्र मण्डलन में फिरें ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं तिनें देखिकै बोलत भये २५ हे राजन् दुर्योधन और भीमसेन ! तुम दोनों शूरवीर हौ तुल्य तुम्हारो बल है एक भीमसेन में कुछ बल अधिक है यह मैं जानूं हूं दूसरो दुर्योधन है तामें दाव पेंच अधिक हे यह मैं जानूंहूं २६ ता कारण बराबरिहै पराक्रम जिनमें ऐसे जे तुम दोनों हौ तिनके बीचमें एकेहूकी जीति हार न होयगी याते निष्फल युद्धकूं शान्तकरो २७ हे राजन् परीक्षित ! परस्पर कुत्सित वचन और दुष्कृतन कूं स्मरण करिकै बंध्यो है वैर जिनको ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं ते भयोजन भस्रो वाक्य नहीं मानत भये २८ भीमसेन दुर्योधन को ऐसोही पिछलो कर्म्म है यह मानिकै बलदेवजी द्वारकापुरी में आवतभये तहा उग्रसेन सूं आदिलैकै प्रसन्न जे ज्ञातिवाले यादव हैं तिनसूं मिलतभये २९ निवृत्तभये हैं समस्त विरुद्ध जिनते फेरि नैमिषारण्य में आये ऐसे यज्ञमूर्त्ति जे भगवान् बलदेवजी हैं तिनें आनन्दपूर्वक सब ऋषीश्वर सब यज्ञन करिकै यजन करावतभये ३० समर्थ भगवान् बलदेवजी तिन ब्राह्मणन कूं विशुद्धज्ञान देतभये जा ज्ञान करिकै आत्मा में विश्व और विश्वमें आत्माकूं जाने है ३१ यज्ञकरे पीछे स्नान जिनने कियो सुन्दर वस्त्र आभूषणन करिके अलंकृत

हेवृकोदर ॥ एकंप्राणाधिकंमन्यउतैकंशिक्षयाधिकम् २६ तस्मादेकतरस्येहयुवयोःसमवीर्ययोः ॥ नलक्ष्यतेजयोऽन्योवा विरमत्वफलोरणः २७ नतद्वाक्यं जगृहतुर्बद्धवैरौनृपार्थवत् ॥ अनुस्मरन्तावन्योन्यंदुरुक्तंदुष्कृतानिच २८ दिष्टंतदनुमन्वानोरामोद्वारवतींययौ ॥ उग्रसेनादिभिःप्रीतैर्ज्ञातिभिःसमुपागतः २९ तंपुनर्नैमिषंप्राप्तमृषयोऽयाजयन्मुदा ॥ क्रत्वङ्गंक्रतुभिःसर्वैर्निवृत्ताखिलविग्रहम् ३० तेभ्योविशुद्धविज्ञानं भगवान्व्यतरद्विभुः ॥ येनैवाऽऽत्मन्यदोविश्व मात्मानंविश्वगंविदुः ३१ स्वपत्न्याऽवभृथस्नातोज्ञातिबन्धुसुहृद्वृतः ॥ रेजेस्वज्योत्स्नयेवेन्दुःसुवासाःसुष्ठ्वलंकृतः ३२ ईदृग्विधान्यसंख्यानि बलस्यबल शालिनः ॥ अनन्तस्याप्रमेयस्य मायामर्त्यस्यसन्तिहि ३३ योऽनुस्मरेतरामस्य कर्म्माण्यद्भुतकर्म्मणः ॥ सायंप्रातरनन्तस्य विष्णोःसदयितोभवेत् ३४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवतीर्थयात्रानिरूपणंनामैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

राजोवाच ॥ भगवन्यानिचान्यानि मुकुन्दस्यमहात्मनः ॥ वीर्य्याण्यनन्तवीर्य्यस्य श्रोतुमिच्छामहेप्रभो १ कोनुश्रुत्वासकृद्ब्रह्मन्नुत्तमश्लोकसत्क

ज्ञाति बन्धु सुहृद् इनकूं सङ्गलैकै जैसे अपनी चादनी करिकै चन्द्रमा शोभाकूं प्राप्त होयहै ऐसे अपनी स्त्रीन सहित शोभाकूं प्राप्त होतभये ३२ बलवान् अनन्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाण करिबे में न आवें माया करिकै मनुष्यरूप जिनने धारण कर्यो ऐसे बलदेवजी के ऐसे ऐसे अनेक लीला चरित्रहैं ३३ अद्भुतहैं कर्म्म जिनके ऐसे अनन्त बलदेवजीहैं तिनके कर्म्मन कूं जो पुरुष सायकाल प्रातःकाल समय स्मरणकरै वह श्रीकृष्णचन्द्रको प्यारो होयहै ३४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवतीर्थयात्रानिरूपणंनामैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥ ॥

(अथाशीतितमेकृष्णःश्रीदामानंगृहागतम् ॥ सम्पूज्यापृच्छदर्घ्यैश्चगुरुवासकथामुदा १ अस्सीवें अध्यायमें कृष्णजी घरमें आये द्रव्यकी इच्छावाले सुदामाजी की अच्छे प्रकार पूजाकर आनन्दसूं गुरुके वासकी कथाको पूंछतभये १) अब राजापरीक्षित् प्रश्न करे हैं हे भगवन् समर्थ शुकदेवजी ! अनन्त हैं पराक्रम जिनके ऐसे मुक्तिके देनवारे जो महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्र-

मनकूं मेरी श्रवणकरिवे की इच्छाहै १ हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रके विषयन में वैराग्यकी उत्पन्न करनवारी जो मनोहर कथा हैं तिनैं निरन्तर सुनिकै काम के वाणनतें खेदको प्राप्तभयो ऐसो सारको जाननवारो कौन पुरुषहै जो श्रवण न करै २ जा वाणी में भगवान् के नाम गुण निकसें वही वाणी सफलहै और जिन हाथनतें भगवान् की सेवा पूजा कर्म्म वनैं वेही हाथ सफलहै स्थावर जङ्गम जीवनमें अन्तर्यामीरूप होयकै वसे जे भगवान् हैं तिनको जो स्मरण करै वही मन सफल है और जिन काननसूं भगवान् की पवित्रकथा सुनै वेही कान सफल हैं ३ स्थावर जगम सब भगवान् के रूप हैं यह मानिकै जो पुरुष शिरसूं प्रणामकरै वही शिर धन्यहै स्थावर जंगम भगवान् को रूप जानिकै जिन नेत्रनसूं देखै वेही नेत्र धन्य हैं और भगवान् अथवा भक्तजनन के चरणनको धोवन जल नित्य जिन अंगनमें लगै वेही अंग सफलहैं ४ अब श्रीसूतजी सनकादिकन सूं कहै हैं विष्णुरात राजा परीक्षित्नें पूछे वासुदेव भगवान्में डूब्यो है हृदय जिनको ऐसे जो वेदव्यास के पुत्र भगवान् शुकदेवजी हैं सो बोलतभये ५ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कोई एक ब्राह्मण ब्रह्मके जाननवारेन में उत्तम विषयन में वैराग्यवान्

थाः ॥ विरमेतविशेषज्ञोविषयःकाममार्गणैः २ सावाग्ययातस्यगुणान्गृणीते करौचतत्कर्म्मकरौमनश्च ॥ स्मरेद्वसन्तंस्थिरजङ्गमेषु शृणोतितत्पुण्यक
थाःसकर्णः ३ शिरस्तुतस्योभयलिङ्गमानमेत्तदेवयत्पश्यतितद्धिचक्षुः ॥ अङ्गानिविष्णोरथतज्जनानां पादोदकंयानिभजन्तिनित्यम् ४ ॥ सूतउवाच ॥
विष्णुरातेनसंपृष्टोभगवान्बादरायणिः ॥ वासुदेवेभगवति निमग्नहृदयोऽब्रवीत् ५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कृष्णस्यासीत्सखाकश्चिद्ब्राह्मणोब्रह्मवित्तमः ॥
विरक्तइन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्माजितेन्द्रियः ६ यदृच्छयोपपन्नेन वर्त्तमानोगृहाश्रमी ॥ तस्यभार्य्याकुचैलस्य क्षुत्क्षामाचतथाविधा ७ पतिव्रतापतिंप्राह म्ला
यतावदनेनसा ॥ दरिद्रासीदमानासा वेपमानाऽभिगम्यच ८ ननुब्रह्मन्भगवतः सखासाक्षाच्छ्रियःपतिः ॥ ब्रह्मण्यश्चशरण्यश्च भगवान्सात्वतर्षभः ९ त
मुपैहिमहाभाग साधूनांचपरायणम् ॥ दास्यतिद्रविणंभूरि सीदतेतेकुटुम्बिने १० आस्तेऽधुनाद्वारवत्यां भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ॥ स्मरतःपादकमलमात्मा
नमपियच्छति ॥ किंत्वर्थकामान्भजते नात्यभीष्टाञ्जगद्गुरुः ११ सएवंभार्य्ययाविप्रोबहुशःप्रार्थितोमुहुः ॥ अयंहिपरमोलाभउत्तमश्लोकदर्शनम् १२ इति

शान्त मन जितेन्द्रिय कृष्णको मित्रहो ६ गृहस्थाश्रम कूं वर्तै जो कछु अनायासपूर्व्वक प्राप्त होय ताहीमें अपनो देह निर्वाह करै जीर्ण वस्त्रनकूं धारणकरै ऐसो ब्राह्मणहो ताकी तैसीही स्त्री रही क्षुधा सूं पीड़ित होनेसे समस्त अङ्गनकरि कृशित और अन्न प्राप्तहोय ताय पतिकूं परोसिदेइ आप भूंखी रहिजाय ७ बहुत दुःखित और भयके मारे थर थर कांपै ऐसी जो पतिव्रता स्त्री है सो दरिद्री जो पतिहै ताके समीप आयकै वोलति भई ८ हे ब्राह्मण ! साक्षात् लक्ष्मीके पति ब्रह्मभक्त शरणागतके पालक यादवनमें श्रेष्ठ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तुम्हारे सखा सुने हैं ९ अहो बड़भागी ब्राह्मण ! साधुनकूं परमआश्रय जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पास तुम जावो दुःखित कुटुम्बी जो तुमहौ तिनैं बहुत सों द्रव्य देयँगे १० भोज वृष्णि अन्धक ये यादवन के गोत्रहैं तिनके ईश्वर जो श्री कृष्णचन्द्र हैं सो अब द्वारकापुरी में है वे चरणकमल के स्मरण करनवारे कूं आत्मापर्य्यन्त देय हैं ११ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भजन करनवारे अपने भक्तन कूं परिणाम में दुःखरूप

ऐसो जो धन और विषय इनको देनो कछु बहुत नहीं है या प्रकार कोमल वचनन सूं स्त्रीने बहुत प्रार्थनाकरी तब तो सुदामा ब्राह्मण उत्तमहै यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह बड़ो लाभहै १२ या प्रकार मनमें विचार करिकै जायवे की इच्छा करतभये कि हे मंगलरूपिणी ! तेरे घरमें कछु भेंटदेवेकू होय तो दे खाली हाथ कैसे जाऊं १३ तब सुदामाकी स्त्री काहू परोसी ब्राह्मण के घरते चारिमुट्ठी चावल मागिकै कपड़ाकी चीरमें बांधिकै सुदामाकूं श्रीकृष्ण के लिये भेंट देतिभई १४ ब्राह्मणन में श्रेष्ठ जो सुदामाहै सो चावलन कूं लैकै श्रीकृष्णको दर्शन मोकूं कैसे होयगो ऐसे विचार करत द्वारकापुरी में जातभये १५ द्वारकाके ब्राह्मणहैं सङ्ग जाके ऐसो जो सुदामा ब्राह्मणहै सो तीन चौकी उल्लङ्घन करिकै और तीन ड्योढ़ीनकूं उल्लंघनकरिकै जिनके पास काहूके जानेकी सामर्थ्य नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कोहीहै धर्म्म जिनके ऐसे जे अन्धक वृष्णि यादवनके घर हैं १६ तिन घरन के बीचमें सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्रकी रानीनके घरमें सूं एक जो सुन्दर घरहै तामें सुदामा प्रवेश करत भयो ता समय ब्रह्मकी प्राप्तिमें जो आनन्द प्राप्त होय तैसे आनन्द कूं पावत भयो १७ प्यारी रुक्मिणी की शय्या के ऊपर विराजमान जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो दूर ते

संचिन्त्यमनसा गमनायमतिन्दधे ॥ अप्यस्त्युपायनंकिञ्चिद्गृहेकल्याणिदीयताम् १३ याचित्वाचतुरोमुष्टीन् विप्रान्पृथुकतण्डुलान् ॥ चैलखण्डेनतान्बद्ध्वा भर्त्रेप्रादादुपायनम् १४ सतानादायविप्राग्र्यः प्रययौद्वारकांकिल ॥ कृष्णसंदर्शनंमह्यं कथंस्यादितिचिन्तयन् १५ त्रीणिगुल्मान्यतीयाय तिस्रःकक्षाश्चसद्विजः ॥ विप्रोऽम्यन्धकवृष्णीनां गृहेष्वच्युतधर्म्मिणाम् १६ गृहंद्व्यष्टसहस्राणां महिषीणांहरेर्द्विजः ॥ विवेशैकतमंश्रीमद्ब्रह्मानन्दंगतोयथा १७ तंविलोक्याच्युतोदूरात्प्रियापर्य्यङ्कमास्थितः ॥ सहसोत्थायचाभ्येत्य दोर्भ्यांपर्यग्रहीन्मुदा १८ सख्युःप्रियस्यविप्रर्षेरङ्गसङ्गातिनिर्वृतः ॥ प्रीतोऽमुञ्चदब्बिन्दून् नेत्राभ्यांपुष्करेक्षणः १९ अथोपवेश्यपर्यङ्के स्वयंसख्युःसमर्हणम् ॥उपहृत्यावनिज्यास्य पादौपादावनेजनीः २० अग्रहीच्छिरसाराजन् भगवाँल्लोकपावनः ॥ व्यलिम्पद्दिव्यगन्धेन चन्दनागुरुकुङ्कुमैः २१ धूपैःसुरभिभिर्मित्रं प्रदीपावलिभिर्मुदा ॥ अर्चित्वावेद्यताम्बूलं गांचस्वागतमब्रवीत् २२ कुचैलंमलिनंक्षामं द्विजन्धमनिसन्ततम् ॥ देवीपर्यचरत्साक्षाच्चामरव्यजनेनवै २३ अन्तःपुरजनोदृष्ट्वा कृष्णेनामलकीर्त्तिना ॥ विस्मितोऽभूदतिप्रीत्या

देखिकै शीघ्र उठिकै आयकै भुजा पसारिकै बड़े आनन्दपूर्वक सुदामाजी सूं मिलतभये १८ प्यारे सखा जो सुदामा ब्राह्मण हैं तिनके मिले ते अतिआनन्दपूर्वक प्रसन्न भये ऐसे जो कमलदल लोचन श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके नेत्रन सूं आसून की बूंदे टपकती भई १९ हे राजन् परीक्षित् ! लोकन के पवित्र करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुदामा सूं मिलिकै पलंग के ऊपर बैठाय कै सखा जो सुदामा हैं तिनकूं भेंट दैकै चरण धोइकै धोवन जो जल है ताय अपने शिरपै चढ़ावत भये और दिव्य गन्ध चन्दन अगर केसर इनकू सुदामाजी के लगावत भये २० । २१ श्रेष्ठगन्धयुक्त धूपदीनी और बराबरि दीपक बरायकै धरि दिये बड़े आनन्द तें मित्र जो सुदामा हैं तिनकी पूजा करिकै ताम्बूल की बीरी दैकै सम्मुख ठाढ़ो करिकै मित्र भलें आये ऐसे कहतभये २२ फटे मलिन वस्त्र पहिरे और कृशित अंग में नसें जाके निकसिरहीं ऐसो जो सुदामा ब्राह्मणहै ताय साक्षात् देवी रुक्मिणी हैं सो चमर ढोरिकै पखा करिकै सेवा करति भई २३ निर्मल

है कीर्त्ति जिनकी ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने प्रसन्नतापूर्व्वक सत्कार जाको कर्यो ऐसो जो अवधूत सुदामा है ताय देखिकै अन्तःपुर के वासी जन आश्चर्य्य मानत भये २४ भिक्षाको मांगनवारो अवधूत याही तें निन्दित अधम शोभाहीन ऐसे या सुदामा ने या संसारमें कौन पुण्य करे हैं २५ जैसे बड़े भय्या बलदेवजी तें मिलैं तैसे त्रिलोकी के गुरु लक्ष्मी जिनके अंगमें वास करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शय्या के ऊपर बैठी रुक्मिणी कूं त्यागिकै यासूं आयकै मिले २६ हे राजन् परीक्षित् ! सुदामा और श्रीकृष्णचन्द्र दोनों परस्पर हाथ पकरिकै पहलेही गुरुकुल में जब वास करयो हो तब की अपनी ललित बात कहत भये २७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे धर्म्म के जाननवारे ! हे ब्राह्मण ! दक्षिणा जिनने पाई ऐसे जे श्रीगुरु हैं तिनके पास तें जब तुम विद्या पढ़िके आये तब से तुमने अपनी बराबरि की स्त्री ब्याही कि नहीं ब्याही कछु विवाह करिबे के चिह्न दिखाई देइहैं और कछु विषयादिकन के भोग दिखाई नहीं देइहैं यातें न भयो होइगो यह सन्देह है २८ हे विवेकी मित्र सुदामा ! तुम्हारो चित्त विषयन करिकै बहुधा चलायमान नहीं है यह मैं जानूंहूं तैसेही घरन में वस्त्रादिकन में तुम अत्यन्त प्रसन्न नहीं हो विवेकी हौ तुमकूं ऐसो

अवधूतंसभाजितम् २४ किमनेनकृतंपुण्यमवधूतेनभिक्षुणा ॥ श्रियाहीनेनलोकेऽस्मिन् गर्हितेनाधमेनच २५ योऽसौत्रिलोकगुरुणा श्रीनिवासेनसम्भृतः ॥ पर्य्यङ्कस्थांश्रियंहित्वा परिष्वक्तोऽग्रजोयथा २६ कथयाञ्चक्रतुर्गाथाः पूर्व्वागुरुकुलेसतोः ॥ आत्मनोललिताराजन् करौगृह्यपरस्परम् २७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अपिब्रह्मन्गुरुकुलाद्भवतालब्धदक्षिणात् ॥ समावृत्तेनधर्म्मज्ञभार्य्योढासदृशीनवा २८ प्रायोगृहेषुतेचित्तमकामविहतंतथा ॥ नैवातिप्रीयसे विद्वन्धनेषुविदितंहिमे २९ केचित्कुर्व्वन्तिकर्म्माणि कामैरहतचेतसः ॥ त्यजन्तःप्रकृतीर्दैवीर्यथाऽहंलोकसंग्रहम् ३० कच्चिद्गुरुकुलेवासं ब्रह्मन्स्मरसि नौयतः ॥ द्विजोविज्ञायविज्ञेयं तमसःपारमश्नुते ३१ सवैसत्कर्म्मणांसाक्षाद्द्विजातेरिहसम्भवः ॥ आद्योऽङ्गयत्राऽऽश्रमिणां यथाऽहंज्ञानदोगुरुः ३२ नन्वर्थकोविदाब्रह्मन् वर्णाश्रमवतामिह ॥ येमयागुरुणावाचातरन्त्यञ्जोभवार्णवम् ३३ नाहमिज्याप्रजातिभ्यां तपसोपशमेनवा ॥ तुष्येयंसर्व्वभूतात्मा गुरुशु

ही योग्य है २९ जो कदाचित् कहो कि चाहना नहीं तो घरमें रहिवे तें कहा प्रयोजन है ताके उत्तर श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—जैसे मैं ईश्वर लोकन के सिखायवे के लिये कर्म्म करूहू तैसेही ईश्वर की मायाने रची जे विषयवासना हैं तिनैं त्यागिकै कामना करिकै नहीं हैं चलायमान मन जिन के ऐसे भी कोई पुरुष कर्म्मन कूं करे हैं ३० हे ब्राह्मण ! हम तुम जब गुरुके घरमें जायकै रहेहे तब को कभऊं स्मरण करो हौं कि नहीं जिन गुरुतें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जानिवे योग्य जो आत्माको स्वरूप है ताय जानिकै पुरुष संसार तें छूटिजात है ३१ या संसारमें जहां जन्म लेइ है वह पिता प्रथम गुरुहै और फेरि जो यज्ञोपवीत करिके वेद पढ़ावे सन्ध्या गायत्री सुन्दर कर्म्म सिखावे वह दूसरो गुरुहै जैसो मो ईश्वरकूं पूजे तें पिता गुरु तें या दूसरे गुरुकूं पूजै और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चारयो आश्रमी है इन सबकूं ज्ञान देनवारो जो गुरुहै सो साक्षात् मैं हूं ३२ जे पुरुष मनुष्य जन्म धारण करिकै गुरुरूप जो मैं हूं ताके उपदेश तें संसाररूपी समुद्र के पारलगे हैं हे ब्राह्मण सुदामा ! वे पुरुष ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारि वर्णन में और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इन चारयो आश्रमन में हैं तिनके मध्य में अर्थ में निपुण मैं हूं ३३ ज्ञानके ३४

देनवारे जो गुरु हैं तिनसूं अधिक और सेवा लायक कोई नहीं है याही तें तिन गुरुन के भजनतें और कोई अधिक धर्म्म नहीं है समस्त प्राणीन को आत्मा जो मैं हूं सो यज्ञ करिबो गृहस्थ को धर्म्म और ब्रह्मचारीको धर्म्म इन करिकै और तप करिबो वानप्रस्थको धर्म्म और शान्ति संन्यासी को धर्म्म इन सब करिकै सन्तुष्ट नहीं होऊंहूं जैसो गुरुकी सेवा करे तें तुष्ट होऊंहूं ३४ हे ब्राह्मण! जब गुरुनके समीप जायकै वसे हैं तब को स्मरण आवै है इन्धन लाइवे के निमित्त एकसमय गुरुकी स्त्रीने कहीरही तब हम तुम एक बड़े वनमें गयेरहे ३५ ता समय ऋतुके विना बड़ी भयङ्कर पवन चलीरही मेघ वर्षा कठोर गर्जनि भई ३६ तबताई सूर्य्य अस्त होय गयो चारोंओर दिशानमें अन्धकार छाय रह्यो जलही जल दृष्टिपरै ऊंचो नीचो कछु न दिखाई दियो ३७ बार बार पवन चली जल वर्षे तिनसूं हम अतिदुःखित भये दिशानकूं भूलि गये चारयो ओर जलहीजल जामें होय गयो ऐसे वनमें आपसमें हाथ पकरिकै आतुर होयकै लकड़ीके बोझनकूं शिर

श्रूपयायथा ३४ अपिनःस्मर्य्यतेब्रह्मन् वृत्तंनिवसतांगुरौ ॥ गुरुदारैश्चोदितानामिन्धनानयनेक्वचित् ३५ प्रविष्टानांमहारण्यमपर्त्तौसुमहद्द्विज ॥ वातवर्पमभूत्तीव्रं निष्ठुराःस्तनयित्नवः ३६ सूर्य्यश्चास्तंगतस्तावत्तमसाचावृतादिशः ॥ निम्नंकूलंजलमयं नप्राज्ञायतकिञ्चन ३७ वयंभृशंतत्रमहानिलाम्बुभिर्निहन्यमानामुहुरम्बुसंप्लवे ॥ दिशोऽविदन्तोऽथपरस्परंवनेगृहीतहस्ताःपरिबभ्रिमातुराः ३८ एतद्विदित्वाउदितेरवौसान्दीपनिर्गुरुः ॥ अन्वेषमाणोनःशिष्यानाचार्य्योऽपश्यदातुरान् ३९ अहोहेपुत्रकायूयमस्मदर्थेऽतिदुःखिताः ॥ आत्मावैप्राणिनांप्रेष्ठस्तमनादृत्यमत्पराः ४० एतदेवहिसच्छिष्यैःकर्त्तव्यंगुरुनिष्कृतम् ॥ यद्वैविशुद्धभावेन सर्व्वार्थात्मार्प्पणंगुरौ ४१ तुष्टोऽहंभोद्विजश्रेष्ठाःसत्याःसन्तुमनोरथाः ॥ छन्दांस्ययातयामानि भवन्त्विहपरत्रच ४२ इत्थंविधान्यनेकानि वसतांगुरुवेश्मसु ॥ गुरोरनुग्रहेणैव पुमान्पूर्णःप्रशान्तये ४३ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ किमस्माभिरनिर्वृत्तं देवदेवजगद्गुरो ॥ भवतासत्यकामेन येषांवासोगुरावभूत् ४४ यस्यच्छन्दोमयंब्रह्मदेहआवपनंविभो ॥ श्रेयसांतस्यगुरुषु वासोऽत्यन्तविडम्बनम् ४५ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रीदामचरितेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

पै धरे डोलतभये ३८ सान्दीपनि जो गुरु आचार्य्य हैं सो बालक शिष्य इन्धन लेवेकू गये हैं यह बात जानिकै प्रातःकाल जब सूर्य्य उदय भयो तब हम शिष्यनकूं ढूंढ़त ढूंढ़त वन में गये हे ता समय लकड़ीन के बोझ शिरपै धरे वस्त्र जिनके भीजि गये ऐसे दुःखित जो हम हैं तिनें देखत भये ३९ ता समय कृपा करिकै तीन श्लोक कहे तिनसूं हम कृतार्थ होयगये हे पुत्रो! तुम हमारेलिये बहुत दुःखित भये प्राणीनकूं देह बहुत प्यारो है ताको निरादर करिकै हमारी सेवा करयो ४० सत्पात्र शिष्यन कू याही प्रकार गुरुन की सेवा करनी योग्यहै शुद्ध भावना करिकै धर्म्म अर्थ काम मोक्ष ये चारयो पदार्थ जासूं प्राप्त होइँ ऐसे देह कूं गुरुके अर्प्पण करि देय ४१ हे द्विजनमें श्रेष्ठो! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न भयों हू तुम्हारे मनोरथ सत्य होयँ तुमने मोतें जो वेद पढ़ेहैं ते या लोक और परलोकमें नहीं गयो है सार जिनको ऐसे अर्थात् नवीन पढ़े याद बने रहैं ४२ गुरुनके घरमें बसे जे हम हैं तिनके ऐसे ऐसे अनेक चरित्रहैं गुरुनकी कृपा करिके पुरुषके पूर्ण मनोरथ होयकै

शान्त होयहैं ४३ अब ब्राह्मण सुदामा बोले–हे देवन के देव ! हे जगत् के गुरु ! सत्यहै सङ्कल्प जिनको ऐसे जो तुमहो तिनके सङ्ग हमारो गुरुन के पास वासभयो इनकूं कौन वस्तु की प्राप्ति न भई अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु पाय चुके ४४ हे समर्थ ! सम्पूर्ण कल्याण जाते होइँ ऐसो छन्दोमय वेद सो जिनकी मूर्त्ति है तिन तुम्हारो गुरुन के पास जो वासहै सो लीलामात्रहै ४५ इतिश्रीमन्महाभागवतार्थरुचिरयादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रीदामचरितेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(एकाशीतितमेसख्युर्जग्ध्वापृथुकतण्डुलान् ॥ श्रियंनिर्मितवानिन्द्रदुर्लभान्तुतदाश्रमे १ इक्यासीवें अध्याय में कृष्णजी मित्र सुदामा के चावलों को भोजनकर ताके स्थानमें इन्द्रकेभी दुर्लभ लक्ष्मीको रचते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! सब प्राणीन के मनकी जाननवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो द्विजनमें मुख्य जो सुदामाहै ताके संग बातें करत मुसिकायकै तासों बोलत भये १ ब्राह्मणन की भक्ति करैं साधुन की गति ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र प्रेमसहित चितवनि सूं देखत हँसत प्यारो जो ब्राह्मण सुदामाहै तासूं बोलत भये २ अब श्री-

श्रीशुकउवाच ॥ सइत्थंद्विजमुख्येन सहसंकथयन्हरिः ॥ सर्व्वभूतमनोऽभिज्ञः स्मयमानउवाचतम् १ ब्रह्मण्योब्राह्मणंकृष्णो भगवान्प्रहसन्प्रियम् ॥ प्रेम्णानिरीक्षणेनैव प्रेक्षन्खलुसतांगतिः २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ किमुपायनमानीतं ब्रह्मन्मेभवतागृहात् ॥ अण्वप्युपाहृतंभक्तैः प्रेम्णाभूर्य्येवमेभवेत् ॥ भूर्य्यप्यभक्तोपहृतं नमेतोषायकल्पते ३ पत्रंपुष्पंफलंतोयं योमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ४ इत्युक्तोऽपिद्विजस्तस्मैव्रीडितःपतये श्रियः ॥ पृथुकप्रसृतिंराजन्नप्रायच्छदवाङ्मुखः ५ सर्व्वभूतात्मदृक्साक्षात्तस्याऽऽगमनकारणम् ॥ विज्ञायाचिन्तयन्नायंश्रीकामोमाऽभजत्पुरा ६ पत्न्याःपतिव्रतायास्तु सखाप्रियचिकीर्षया ॥ प्राप्तोमामस्यदास्यामि सम्पदोऽमर्त्यदुर्लभाः ७ इत्थंविचिन्त्यवसनाच्चीरबद्धान्द्विजन्मनः ॥ स्वयंजहारकिमिदमिति पृथुकतण्डुलान् ८ नन्वेतदुपनीतंमे परमप्रीणनंसखे ॥ तर्पयन्त्यङ्गमांविश्वमेतेपृथुकतण्डुलाः ९ इतिमुष्टिंसकृज्जग्ध्वा द्वितीयांजग्धुमाददे ॥ तावच्छ्री

कृष्णचन्द्र कहेहैं हे ब्राह्मण ! तुम मेरे लिये कहा भेंट लायेहौ भक्ति प्रेमपूर्व्वक मोकूं थोड़ीसी भी भेंट देइ हैं सो बहुत होय जायहै और जो भक्ति बिना मोकूं बहुत भी देइ परन्तु वह मेरे सन्तोष के लिये नहीं होय है ३ जो पुरुष भक्ति करिकै पत्र पुष्प फल जल मोकूं देइ हैं सावधानहै मन जाको ऐसे पुरुषने भक्ति करिके जो मोकूं दियोहै ताय मैं भोजन करूंहूं ४ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार जाते कही नीचे कूं जाको मुख ऐसो जो सुदामा ब्राह्मणहै सो लाज के मारे लक्ष्मी के पति जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें चावल न देत भयो ५ साक्षात् सब प्राणीनके साक्षी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुदामा के आगमनको कारण जानिकै विचार करत भये कि धन की चाहना करिकै या सुदामा ने मेरो भजन नहीं कत्यो है ६ पतिव्रता या सुदामा की स्त्री है ताके प्रिय करिवे के लिये मित्र सुदामा मेरे पास आयो है यातें देवतानकूं दुर्लभ ऐसी सम्पत्ति याहि देऊँगो ७ या प्रकार विचारिकै चीरमें बँधे जे चावल हैं तिनें यह कहा है ऐसे कहिकै सुदामा के वस्त्र में तें आपही लेतभये ८ हे मित्र ! हे अङ्ग सुदामा ! ये तुम चावल लाये सो मोकूं बहुत प्यारे लगेहैं इनकूं थोड़े मति जानो ये चावल मेरे सर्व्व विश्वको पेट भरिदेइँगे ९ ऐसे कहिकै एक मुट्ठी चावलनको

भोजन करिकै और दूसरी मुट्ठी जब मारी तबहीं श्रीकृष्णपरायण जो रुक्मिणी है सो परमेष्ठी श्रीकृष्ण को हाथ पकरि कै कहति भई कि मित्र के घरकी वस्तु आपुही भोजन करिज लगे कछु हमकूं भी रहन देउगे एक तो यातें आय कैं हाथ पकरचो दूसरो कारण आगे कहे हैं १० हे विश्वके आत्मा! एक मुट्ठी चावल भोजन करिकै सम्पूर्ण विश्वकी सम्पत्ति याकूं देचुके और दूसरी मुट्ठी भोजन करिकै कहा मोकूं देचुकोगे यह लोक और परलोक में तुम्हारे संतुष्ट भये तेही पुरुषकूं सम्पत्ति प्राप्त होय हैं ११ ब्राह्मण सुदामा वा रात्रिकूं श्रीकृष्णचन्द्र के मन्दिर में रहिके भोजन करिकै जल पीकै मानों स्वर्ग में आयो हूं ऐसे अपने कूं मानिकै सुख मानत भये १२ हे राजन् परीक्षित्! प्रातःकाल जब भयो तब विश्व के पालन करनवारे आत्मा के आनन्द में मग्न ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुदामा कूं प्रणाम करिकै मार्ग में पहुँचावनकूं संग पीछे पीछे आवत भये और मित्र सुदामा तुमने भलो दर्शन दियो ऐसे अधीनता के वचनन सूं आनन्द जिनकूं दियो ऐसे सुदामा अपने घरकूं आवत भये १३ सुदामा कूं जब धन नहीं मिल्यो तब मोकू धन देव ऐसे श्रीकृष्ण तें न कहत भयो बड़े जो श्रीकृष्णहैं तिनके दर्शनतें आनन्द जिनके भयो ऐसे सुदामा लज्जित होय

र्जगृहेदस्त्रं तत्परापरमेष्ठिनः १० एतावताऽलंविश्वात्मन् सर्व्वसम्पत्समृद्धये ॥ अस्मिँल्लोकेऽथवाऽमुष्मिन्पुंसस्त्वत्तोपकारणम् ११ ब्राह्मणस्तांतुरजनीमुषित्वाऽच्युतमन्दिरे ॥ भुक्त्वापीत्वासुखंमेने आत्मानंस्वर्गतंयथा १२ श्वोभूतेविश्वभावेन स्वसुखेनाभिवन्दितः ॥ जगामस्वालयंतात पथ्यनुव्रज्यनन्दितः १३ सचालब्ध्वाधनंकृष्णान्नतुयाचितवान्स्वयम् ॥ स्वगृहान्व्रीडितोऽगच्छन् महद्दर्शननिर्वृतः १४ अहोब्रह्मण्यदेवस्य दृष्टाब्रह्मण्यतामया ॥ यद्दरिद्रतमोलक्ष्मीमाश्लिष्टोबिभ्रतोरसि १५ क्वाहंदरिद्रःपापीयान् क्वकृष्णःश्रीनिकेतनः ॥ ब्रह्मबन्धुरितिस्माहं बाहुभ्यांपरिरम्भितः १६ निवासितःप्रियाजुष्टे पर्य्यङ्केभ्रातरोयथा ॥ महिष्यावीजितःश्रान्तोबालव्यजनहस्तया १७ शुश्रूषयापरमया पादसंवाहनादिभिः ॥ पूजितोदेवदेवेनविप्रदेवेनदेववत् १८ स्वर्गापवर्गयोःपुंसां रसायांभुविसम्पदाम् ॥ सर्व्वासामपिसिद्धीनां मूलंतच्चरणार्चनम् १९ अधनोऽयंधनंप्राप्यमाद्यन्नुच्चैर्नमांस्मरेत् ॥ इतिकारुणिकोनूनं धनंमेभूरिनाददात् २० इतितच्चिन्तयन्नन्तः प्राप्तोनिजगृहान्तिकम् ॥ सूर्य्यानलेन्दुसङ्काशैर्विमानैःसर्व्वतोवृतम् २१ विचित्रोपवनोद्यानैःकूजद्द्विजकुलाकु

अपने घरकूं जात भये १४ अहो बड़ो आश्चर्य है ब्राह्मणन की भक्ति करनवारेन के देवता श्रीकृष्णचन्द्र की ब्रह्मभक्ति मैंने देखी लक्ष्मी कूं छाती में धारण करनवारे श्रीकृष्ण हैं सो दरिद्री जो मैं सुदामा हूं तासूं छाती लगायके मिले १५ दरिद्री पापी ऐसो ब्राह्मण मैं कहां और लक्ष्मी जिनके अंग में वास करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कहां मोमें उनमें बड़ा अन्तरहै सो भुजा पसारिकै मोसूं मिले १६ जैसे बलदेवजी कूं बैठावें ऐसे रुक्मिणी जापै बैठी वा पलँगके ऊपर मोकूं बैठाय लियो मार्ग को परिश्रम जाके भयो ऐसो जो मैं हूं ताकूं चमर है हाथ में जाके ऐसी रुक्मिणी पै पंखा ढुरवायो १७ बड़ी सेवा करिकै पांवन को दाबनो धोवनो पोछनो इत्यादिक जे सत्कार हैं तिन करिकै देवन के देव ब्रह्मदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने देवतान की पूजा करैं ऐसे मेरी पूजा करी १८ जे मुक्त हैं तिनकूं और पृथ्वी कूं तथा रसातल की सम्पत्तिन कूं और सम्पूर्ण सिद्धिन कू श्रीकृष्णके चरणारविन्द की पूजनहै सोई कारण है अर्थात् श्रीकृष्ण के चरणकमल की पूजा करै तव पदार्थ

मिलैं दरिद्री जो सुदामा है सो धनकूं पायकै बहुत मतवारो होयकै मोकूं भूलि जायगो या कारण करुणावान् श्रीकृष्ण मोकूं यत्किञ्चित् भी धन न देत भये १९ । २० या प्रकार सुदामाजी मनमें विचार करत अपने घरके पास आवत भये कैसो घर को समीपहै ताको वर्णन करें हैं सूर्य्य अग्नि चन्द्रमा की तुल्य जिनको प्रकाश ऐसे चारोओर विमान धरे हैं २१ चित्र विचित्र बगीचा लगिरहे हैं तिनमें पक्षीन के झुंड के झुंड बोलि रहे हैं फूले हैं कुमुद अम्भोज कह्लार उत्पल जिनमें ऐसे जलहैं २२ और शृङ्गार करे पुरुष और हिरन केसे हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री जहां तहां डोले हैं ऐसी शोभा देखिकै और विमानन को प्रकाश देखिकै आश्चर्य्य मानिकै यह कहा है कौनको स्थानहै फेरि विचारत भये कि यह तो हमारोही रहिबे को स्थानहै कैसो होय गयो या प्रकार ऐसे बड़भागी जे सुदामा हैं तिनकूं देवतान की तुल्य है शोभा जिनकी ऐसे स्त्री पुरुष गावत बजावत सम्मुख लिवायवे कूं आवत भये २३ । २४ पतिकूं आये सुनिकै भयो है आनन्द और हरबराहट जाके ऐसी जो सुदामा की स्त्री है सो जैसे साक्षात् रूप धरिकै कमल वनमें तें लक्ष्मी निकसे या प्रकार जल्दीहीते घर ते बाहर निकसति भई श्रीकृष्णचन्द्र स्वर्ग कूं सुदामाके महल में लाये याते सुदामा और

लैः ॥ प्रोत्फुल्लकुमुदाम्भोजकह्लारोत्पलवारिभिः २२ जुष्टंस्वलंकृतैःपुम्भिःस्त्रीभिश्चहरिणाक्षिभिः ॥ किमिदंकस्यवास्थानं कथंतदिदमित्यभूत् २३ एवंमीमांसमानंतं नरानार्य्योऽमरप्रभाः ॥ प्रत्यगृह्णन्महाभागं गीतवाद्येनभूयसा २४ पतिमागतमाकर्ण्य पत्न्युद्धर्षाऽतिसंभ्रमा ॥ निश्चक्रामगृहात्तूर्णं रूपिणीश्रीरिवालयात् २५ पतिव्रतापतिंदृष्ट्वा प्रेमोत्कण्ठाऽश्रुलोचना ॥ मीलिताक्ष्यनमद्बुद्ध्या मनसापरिषस्वजे २६ पत्नींवीक्ष्यविस्फुरन्तींदेवींवैमानिकीमिव ॥ दासीनांनिष्ककण्ठीनां मध्येभान्तींसविस्मितः २७ प्रीतःस्वयंतयायुक्तः प्रविष्टोनिजमन्दिरम् ॥ मणिस्तम्भशतोपेतं महेन्द्रभवनंयथा २८ पयःफेननिभाःशय्यादान्तारुक्मपरिच्छदाः ॥ पर्य्यङ्काहेमदण्डानि चामरव्यजनानिच २९आसनानिचहैमानि मृदूपस्तरणानिच ॥ मुक्तादामविलम्बीनि वितानानिद्युमन्तिच ३० स्वच्छस्फटिककुड्येषु महामारकतेषुच ॥ रत्नदीपान्भ्राजमानाँल्ललनारत्नसंयुतान् ३१ विलोक्यब्राह्मणस्तत्र समृद्धीःसर्व्वसम्पदाम् ॥ त

सुदामा की स्त्री दोनों देवस्वरूप होय गये २५ प्रेम करिकै चाहना जाके भई नेत्रन में आंसू आयगये ऐसी पतिव्रता जो सुदामा की स्त्री है सो पतिकूं आये देखिकै नेत्र मूंदिकै बुद्धि करिकै विचार करति भई कि नमस्कार करिबो योग्य है ऐसे निश्चय करिकै मन सूं आलिङ्गन करत नमस्कार करति भई २६ जैसे विमान में बैठी देवी प्रकाशे है ऐसे धुकधुकी है कण्ठ में जिनके ऐसी दासीन के मध्य में प्रकाशमान अपनी स्त्री कूं देखिकै सुदामाजी आश्चर्य्य मानत भये २७ प्रसन्न होयकै ता स्त्री कूं सङ्ग लैके अपने मन्दिर में धसत भये कैसो मन्दिर है सैकडन मणिन के स्तम्भ जामें लगे मानों इन्द्रको भवनहै २८ दूध के श्वेत झागन की तुल्य कोमल श्वेत बिछौना जिनपै बिछे ऐसे हाथीदाँत के सोने से जटित पलँग जा मन्दिर में बिछे हैं और स्वर्ण की डाड़ी जिनमें ऐसे चमर पखा धरे हैं २९ कोमल हैं बिछौना जिनमें ऐसी सुवर्ण की चौकी बिछी हैं मोतिन की माला जिनमें लटकैं ऐसे प्रकाशमान चँदोवा तनि रहे हैं ३० निर्म्मल स्फटिक मणिन की भीतें बनी हैं तिनमें और महामरकतमणिन की भीतें हैं तिन में स्त्रीरत्नसहित जा मन्दिर में रत्नके दीवा प्रकाशित हैं ३१ ता मन्दिर में सब सम्पत्तिन की वृद्धि देखिकै स्थिर होयकै अक-

स्मात् भई जो अपनी सम्पत्ति है सो कहां तें आई ऐसे विचार करत भये ३२ सदाको दरिद्री भाग्यहीन जो मैं हूं ताके बड़ो है वैभव जिनके ऐसे यादवन में उत्तम जो श्रीकृष्णचन्द्र है तिनकी चितवनि विना निश्चय और कोई या सम्पत्ति को कारण नहीं है ३३ जो कृष्ण ने चितवनि करिकै बडी जो सम्पत्ति दीनी है सो मैं तोकूं देऊं हूं यह क्यों न कहिदीनी तहां सुदामा कहे हैं पूर्णमनोरथ लक्ष्मी के पति यातें वहुत हैं भोग जिनके ऐसे दशार्हवंशोत्पन्न श्रेष्ठ जो मेरे सखा श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मागनवारे पुरुपन कूं कहे विनाही वहुत सों धन देइ हैं आप देवे लायक जो वस्तुहै ताय मेघकी तुल्य देखे हैं यामें तात्पर्य्य कहा निकस्यो जैसे सम्पूर्ण कूं भरिदेइ ऐसो जो उदार मेघ है सो कभऊं एक वहुत वर्षा कूं थोडी मानिकै लाज के मारे दिनमें नहीं वरसे किन्तु रातिमें वर्षा करिके वाके खेत कूं डुवाय देयहै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रहू भोग वैभव के आगे ताभक्तके देवे लायक जे इन्द्रादिक पदहैं तिनें तुच्छ मानिकै और ता भक्तके भजन कूं वहुत मानिकै वाके विना कहेही वहुतसी सम्पत्ति देइहैं ३४ आप वहुत देयें ताय थोड़ो माने हैं और सुहृदनके थोड़े दिये को भी वहुत मानेहैं मैं चावलनकी एकमुट्ठी लेगयो ताय महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न

कयामासनिर्व्यग्रः स्वसमृद्धिमहैतुकीम् ३२ नूनंवतैतन्ममदुर्भगस्य शश्वदरिद्रस्यसमृद्धिहेतुः ॥ महाविभूतेरवलोकतोऽन्योनैवोपपद्येतयदूत्तमस्य ३३ नन्वब्रुवाणोदिशतेसमक्षं याचिष्णवेभूर्य्यपिभूरिभोजः ॥ पर्जन्यवत्तत्स्वयमीक्षमाणोदाशार्हकाणामृषभःसखामे ३४ किञ्चित्करोत्युर्वपियत्स्वदत्तं सुहृत्कृतंफल्ग्वपिभूरिकारी ॥ मयोपनीतंपृथुकैकमुष्टिं प्रत्यग्रहीत्प्रीतियुतोमहात्मा ३५ तस्यैवमेसौहृदसख्यमैत्रीदास्यं पुनर्जन्मनिजन्मनिस्यात् ॥ महाऽनुभावेनगुणालयेन विषज्जतस्तत्पुरुषप्रसङ्गः ३६ भक्तायचित्राभगवान्हिसम्पदोराज्यंविभूतीर्नसमर्द्धयत्यजः॥अदीर्घबोधायविचक्षणःस्वयं पश्यन्निपातंधनिनांमदोद्भवम् ३७ इत्थंव्यवसितोबुद्ध्या भक्तोऽतीवजनार्दने ॥ विषयाञ्जाययात्यक्ष्यन् बुभुजेनातिलम्पटः ३८ तस्यवैदेवदेवस्य हरेर्यज्ञपतेःप्रभोः ॥ ब्राह्मणाःप्रभवोदैवं नतेभ्योविद्यतेपरम् ३९ एवंसविप्रोभगवत्सुहृत्तदा दृष्ट्वास्वभृत्यैरजितंपराजितम् ॥ तद्ध्यानवेगोद्ग्रथितात्मबन्धनस्तद्धामलेभेऽचिरतःसतां

होयकै लेतभये ३५ श्रीकृष्णको भक्तन पै हित देखिकै तिनकी भक्ति कूं मागै है श्रीकृष्णचन्द्र सूं मेरो प्रेम सख्यभाव मित्रता दास्यभाव जन्म जन्ममें होउ और मोकूं कछु धन दौलत नहीं अपेक्षित है वड़ो है भाव जिनको और सम्पूर्ण हैं गुण जिनमें ऐसे श्रीकृष्णको और तिनके भक्तन को सत्सङ्ग होय ३६ क्यों जीं भक्तिको फल सम्पत्ति पायकै फेरि क्यों मॉगो हो तहां सुदामा कहे है प्यारो है ज्ञान जाकूं ऐसे भक्तकूं भगवान् श्रीकृष्ण अनेकप्रकार की सम्पत्ति नहीं देइ हैं ऐश्वर्य्य स्त्री पुत्रादिक नहीं देइहैं क्यों भगवान् विवेकी हैं भक्त अज्ञानी है धनवान् पुरुषकूं नरक होयहै यह आप देखे हैं मेरे भक्ति नहीं रही यातें सम्पत्ति भईहै यातें उनकी भक्ति में मांगूं हूं ३७ या प्रकार बुद्धिसूं निश्चय जाने कियो और श्रीकृष्णको अत्यन्त भक्त ऐसो सुदामा है सो विषयनकूं सहजमें त्यागिवे को अभ्यास करत स्त्री के सङ्ग भोग करतभयो विषयन में अति आसक्त नहीं होतभयो ३८ श्रीकृष्णचन्द्र ब्रह्मभक्त है यामें कुछ आश्चर्य्य नहीं यह कहे हैं देवन के देव पाप के हरनवारे यज्ञ के पति समर्थ ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ब्राह्मणन को भारहै तहां सव देवताहैं तिन ब्राह्मणन तें परे और कोई देवता नहीं है ३९ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को मित्र जो सुदामा ब्राह्मण है सो औरनपै

जीते न जायँ और भक्तन ने जीति लिये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिकै तिनके ध्यान के वेगतें दूरिभयो है अहङ्कार जाको ऐसो जो श्रीकृष्णको धाम है ताय शीघ्रही पावत भयो ४० जो पुरुष या चरित्र कूं श्रवण करै और ब्रह्मण्यदेव जो श्रीकृष्ण हैं सो ऐसे ब्राह्मण की भक्ति करैं हैं ताय सुनिकै भगवान्में भक्ति कूं पायकै कर्म्मनको बन्धन जो संसारहै तासूं छूटिजाय है ४१ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपृथुकोपाख्यानंनामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(द्व्यशीतितमआगत्यकुरुक्षेत्रंरविग्रहे ॥ वृष्णीन्दृष्ट्वामुदाभूपाश्चकुःकृष्णकथामिथः १ श्रीदामसुहृदेकृष्णःप्रकल्प्यैन्द्रंपदंभुवि ॥ नन्दादिसुहृदानन्दीकुरुक्षेत्रंजगामसः २ बयासीवें अध्यायमें सूर्य्यग्रहणमें कुरुक्षेत्र को आकर राजा यादवनको देखकर आनन्दसूं परस्पर कृष्णजीकी कथान कूं करतेभये १ नन्दादिक सुहृदनके आनन्द देनेवाले कृष्णजी सुदामा मित्रके लिये पृथ्वीपर इन्द्रके पद को अच्छी प्रकार देकर कुरुक्षेत्र को जातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! याके पीछे द्वारकापुरी में वासकरैं ऐसे जे राम कृष्णहैं तिनकूं एकसमय जैसो प्रलयमें तैसो सर्वग्रास

गतिम् ४० एतद्ब्रह्मण्यदेवस्य श्रुत्वाब्रह्मण्यतांनरः ॥ लब्धभावोभगवतिकर्म्मबन्धाद्विमुच्यते ४१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे पृथुकोपाख्यानंनामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथैकदाद्वारवत्यां वसतोरामकृष्णयोः ॥ सूर्य्योपरागःसुमहानासीत्कल्पक्षयेयथा १ तंज्ञात्वामनुजाराजन् पुरस्तादेवसर्व्वतः ॥ स्यमन्तपञ्चकंक्षेत्रं ययुःश्रेयोविधित्सया २ निःक्षत्रियांमहींकुर्व्वन् रामःशस्त्रभृतांवरः ॥ नृपाणांरुधिरौघेण यत्रचक्रेमहाह्रदान् ३ ईजेचभगवान्रामोयत्रास्पृष्टोऽपिकर्म्मणा ॥ लोकस्यग्राहयन्नीशोयथाऽन्योघापनुत्तये ४ महत्यांतीर्थयात्रायां तत्रागन्भारतीःप्रजाः ॥ वृष्णयश्चतथाऽक्रूरवसुदेवाहुकादयः ५ ययुर्भारततत्क्षेत्रं स्वमघंक्षपयिष्णवः ॥ गदप्रद्युम्नसाम्बाद्याःसुचन्द्रशुकसारणैः ६ आस्तेऽनिरुद्धोरक्षायां कृतवर्म्माचयूथपः ॥ तेरथैर्देवधिष्ण्याभैर्हयैश्चतरलप्लवैः ७ गजैर्नदद्भिरभ्राभैर्नृभिर्विद्याधरद्युभिः ॥ व्यरोचन्तमहातेजाः पथिकाञ्चनमालिनः ८ दिव्यस्रग्वस्त्रसन्नाहाः कलत्रैःखेचराइव ॥ तत्रस्नात्वामहा

जो बड़ो सूर्य्य को ग्रहण है सो आवतभयो १ हे राजन् परीक्षित्! ज्योतिषीनतें वा ग्रहणकूं पहिलेही जानिकै मनुष्य सब ओरते दान पुण्य स्नान करिवे के निमित्त कुरुक्षेत्र कूं जातभये २ शस्त्रन के धारण करनवारेन में श्रेष्ठ जो परशुरामजी हैं सो नहीं रहे हैं क्षत्रिय जामें ऐसी पृथ्वी कूं करिकै राजान के रुधिर सूं जा कुरुक्षेत्र में बड़े सरोवर करतभये ३ नहीं लग्यो है पाप जिनकूं ऐसे समर्थ भगवान् परशुरामजी अपने पाप दूरि करिवे के लिये जैसे अज्ञानी पुरुष यज्ञ करे है तैसे लोकन के सिखाइवे के लिये जा कुरुक्षेत्र में यज्ञ करतभये ४ बड़ीजो तीर्थयात्रा है तामें भरतखण्ड की प्रजा आवति भई तैसेही वृष्णि अक्रूर वसुदेव और आहुक कूं आदि लैके जे यादव हैं ते ५ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! अपने अपने पाप दूरि करिवेके लिये ता कुरुक्षेत्र में आवत भये गद प्रद्युम्न साम्ब कूं आदि लकै जे श्रीकृष्ण के पुत्रहैं ते जातभये और सुचन्द्र शुक सारण सहित ६ अनिरुद्ध और कृतवर्म्मा यूथपाल ये दोनों द्वारकापुरी की रक्षा करिवे के लिये रहत

भये बड़ोहै तेज जिनको सुवर्ण की माला और दिव्य फूलनकी माला वस्त्र कवच धारण करे ऐसे जे यादव हैं ते देवतानके विमान की तुल्य है प्रकाश जिनमें ऐसे रथनमें और जलकी तरङ्ग जैसे उठें ऐसी है चाल जिनकी ऐसे घोड़ान पै और बादरन कीसीहै कान्ति जिनकी ऐसे शब्द करते हुये हाथीन के ऊपर विद्याधरन कीसी है कान्ति जिनकी ऐसे सिपाहीन सहित मार्ग में जैसे देवाङ्गनान सहित आकाश में देवता सुन्दर लगे हैं ऐसे सुन्दर लगतभये बड़ो है भाग्य जिनको बहुत सावधान ऐसे यादव कुरुक्षेत्र में व्रत स्नान करिके ७ । ८ । ९ वस्त्र और फूलन की माला सुवर्ण की मालान कूं पहिरे ऐसी गौ ब्राह्मणन कूं दान करिकै देतभये यादव हैं ते परशुरामजी ने करे जे सरोवर हैं तिनमें और दिन अथवा वाही दिन फिर स्नान करिकै १० श्रीकृष्णचन्द्र में हमारी भक्ति होय यह सङ्कल्प करिकै ब्राह्मणन कूं सुन्दर अन्न दान करत भये तिन ब्राह्मणन ने आज्ञा जिन कूं करी ऐसे कृष्णही हैं देवता जिनके ऐसे जे यादव हैं ११ ते आय यथेच्छा भोजन करिकै शीतलहै छाया जिनकी ऐसे वृक्षन के नीचे बैठत भये ता कुरुक्षेत्र में आये जो सुहृद् सम्बन्धी नाते गोते के राजा हैं तिनें देखत भये १२ कौन कौन

भागा उपोष्यसुसमाहिताः ९ ब्राह्मणेभ्योददुर्धेनूर्वासःस्रग्रुक्ममालिनीः ॥ रामह्रदेषुविधिवत्पुनराप्लुत्यवृष्णयः १० ददुःस्वन्नंद्विजाग्र्येभ्यःकृष्णेनोभक्तिरस्त्विति ॥ स्वयञ्चतदनुज्ञातावृष्णयःकृष्णदेवताः ११ भुक्त्वोपविविशुःकामंस्निग्धच्छायाङ्घ्रिपाङ्घ्रिषु ॥ तत्राऽऽगतांस्तेददृशुः सुहृत्सम्बन्धिनोनृपान् १२ मत्स्योशीनरकौसल्यविदर्भकुरुसृञ्जयान् ॥ काम्बोजकेकयान्मद्रान्कुन्तीनानर्त्तकेरलान् १३ अन्यांश्चैवाऽऽत्मपक्षीयान्परांश्चशतशोनृप ॥ नन्दादीन्सुहृदोगोपान् गोपीश्चोत्कण्ठिताश्चिरम् १४ अन्योऽन्यसंदर्शनहर्षरंहसा प्रोत्फुल्लहृद्वक्त्रसरोरुहश्रियः ॥ आश्लिष्यगाढंनयनैःस्रवज्जलाहृष्यत्त्वचोरुद्धगिरोययुर्मुदम् १५ स्त्रियश्चसंवीक्ष्यमिथोऽतिसौहृदस्मितामलापाङ्गदृशोऽभिरेभिरे ॥ स्तनैःस्तनान्कुङ्कुमपङ्करूषितान् निहत्यदोर्भिःप्रणयाश्रुलोचनाः १६ ततोऽभिवाद्यतेवृद्धान् यविष्ठैरभिवादिताः ॥ स्वागतंकुशलंपृष्ट्वाचक्रुःकृष्णकथांमिथः १७ पृथाभ्रातॄन्स्वसॄर्वीक्ष्य तत्पुत्रान्पितरावपि ॥ भ्रातृ

राजा हैं तिनको नाम लेय हैं मत्स्यदेश उशीनर कोसल विदर्भ कुरु सृञ्जय काम्बोज केकय मद्र कुन्ती आनर्त केरल इन देशन के राजान कूं १३ और अपनी ओर के राजा हैं तिन कूं और सैकरान राजा हैं तिन कूं हे राजन् परीक्षित्! सम्पूर्ण यादव देखत भये और नन्दजी सूं आदि लैकै जो हितकारी गोपहैं तिनें और बहुत दिनतें कृष्णदर्शन की चाहना जिनके लगि रही ऐसी जे गोपी हैं तिनें देखत भये १४ परस्पर दर्शन जो भयो तासू जो आनन्द उमड़्यो तासूं फूले हैं हृदय और मुखकमल जिनके ऐसे जो यादवन के भलेप्रकार मिलिकै नेत्रनमें तें आंसू बहे और देहमें रोमांच होयआये कण्ठ रुकि गये या प्रकार बहुत आनन्द कूं पावत भये १५ अत्यन्त स्नेह करिकै जो मुसिकानि तासूं निर्मल है कटाक्ष करिकै दृष्टि जिनकी और स्नेहके आंसू हैं नेत्रन में जिनके ऐसी स्त्री हैं ते स्त्रीन कूं देखिकै केसर जिन में लगी ऐसे स्तनन कू स्तननतें लगायकै भुजान तें आपुस में मिलति भईं १६ छोटेन ने दण्डवत् जिनकूं करी ऐसे जे यादव हैं ते वृद्धन कूं प्रणाम करिकै भले आये प्रसन्न हौ ऐसे कुशल पूछिकै आपुसमें कृष्णकी कथा कूं पूंछत भये १७ कुन्ती है सो भय्या बहिनि भतीजे माता पिता और भय्यान की स्त्री इन सबकूं

देखिकै और मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिकै आपुस में प्रेम की बात चीत करिकै नेत्रनतें आंसूनकूं छोड़ति भई १८ अब कुन्ती बोली है श्रेष्ठ भय्या ! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जाके ऐसी मैं आ-
त्मा कूं मानूंहूं जो कारण तें आपत्ति परे हैं तब श्रेष्ठ जो तुम हौ सो मेरी बातको स्मरण भी नहीं करो हौ १९ जाको दैव सूधो नहीं है वा स्वजन को सुहृद् हैं ते और जातिके हैं ते पुत्र भय्या
माता पिता ये स्मरण नहीं करे हैं २० अब वसुदेवजी कहेहैं हे बहिनि ! दैवके खिलौना हम मनुष्य हैं तिनैं दोष मति लगावो लोक ईश्वर के अधीन होयके कर्म्म करे है अथवा ईश्वरही कर्म्म क
रावे है २१ हे बहिनि ! कंस के सताये जे हम सब ते दशो दिशान में चलेगये अबहीं फेरि दैवने घर में बसाये हैं २२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! वसुदेव उग्रसेनादिक यादवन
ने पूजा जिन की करी ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र को भले प्रकार दर्शन करिकै परमानन्दकूं पावत भये २३ भीष्मपितामह द्रोणाचार्य्य अम्बिका को पुत्र धृतराष्ट्र तैसेही पुत्रन सहित

पत्नीर्मुकुन्दश्च जहौमङ्क्थयाशुचः १८ ॥ कुन्त्युवाच ॥ आर्य्यभ्रातरहंमन्ये आत्मानमकृताशिषम् ॥ यद्वाआपत्सुमद्वार्त्तां नानुस्मरथसत्तमाः १९ सुहृदो
ज्ञातयः पुत्राभ्रातरःपितरावपि ॥ नानुस्मरन्तिस्वजनं यस्यदैवमदक्षिणम् २० ॥ वसुदेवउवाच ॥ अम्बमास्मानसूयेथादैवक्रीडनकान्नरान् ॥ ईशस्यहिवशे
लोकः कुरुतेकार्य्यतेऽथवा २१ कंसप्रतापिताःसर्व्वेवयंयाता दिशोदश ॥ एतर्ह्येवपुनःस्थानं दैवेनाऽऽसादिताःस्वसः २२ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ वसुदेवोग्रसे
नाद्यैर्यदुभिस्तेऽर्चितानृपाः ॥ आसन्नच्युतसन्दर्शपरमानन्दनिर्वृताः २३ भीष्मोद्रोणोऽम्बिकापुत्रोगान्धारीससुतातथा ॥ सदाराःपाण्डवाःकुन्ती सृञ्ज
योविदुरःकृपः २४ कुन्तिभोजोविराटश्च भीष्मकोनग्नजिन्महान् ॥ पुरुजिद्द्रुपदःशल्योधृष्टकेतुःसकाशिराट् २५ दमघोषोविशालाक्षोमैथिलोमद्रकेकयौ ॥
युधामन्युःसुशर्म्माच ससुताबाह्लिकादयः २६ राजानोयेचराजेन्द्र युधिष्ठिरमनुव्रताः ॥ श्रीनिकेतंवपुःशौरेः सस्त्रीकंवीक्ष्यविस्मिताः २७ अथतेरामकृष्णा
भ्यां सम्यक्प्राप्तसमर्हणाः ॥ प्रशशंसुर्मुदायुक्ताबृष्णीन्कृष्णपरिग्रहान् २८ अहोभोजपतेयूयं जन्मभाजोनृणामिह ॥ यत्पश्यथासकृत्कृष्णं दुर्दर्शमपियो
गिनाम् २९ यद्विश्रुतिःश्रुतिनुतेदमलंपुनाति पादावनेजनपयश्चवचश्चशास्त्रम् ॥ भूःकालभर्जितभगाऽपियदङ्घ्रिपद्मस्पर्शोत्थशक्तिरभिवर्षतिनोऽखिलार्था

गान्धारी स्त्रीन सहित पाण्डव कुन्ती सृञ्जय विदुर कृपाचार्य्य २४ कुन्तिभोज राजा विराट भीष्मक और बड़ो नग्नजित् पुरुजित् द्रुपद शल्य काशी के राजा सहित धृष्टकेतु २५ बड़े हैं नेत्र
जाके ऐसो राजा दमघोष मिथिलापुरी को राजा मद्रदेश को राजा और केकयदेश को राजा युधामन्यु सुशर्मा और पुत्रन सहित बाह्लिकादिक हैं ते २६ हे राजानके इन्द्र राजा परीक्षित् !
महाराज युधिष्ठिरके आज्ञाकारी जे राजा हैं ते सम्पूर्ण रानीन सहित सुन्दर जो श्रीकृष्ण को रूपहै ताय देखिकै आश्चर्य्य मानत भये २७ दर्शन करे पीछे रामकृष्ण तें भलेप्रकार प्राप्त भयो है
सत्कार जिनकूं ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र हैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवन की सब प्रशंसा करतभये २८ योगीजननकूं दुर्लभ है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको सर्व्वदा तुम दर्शन करोहौ
याहीते भोजवंशीन के पालन करनवारे राजा उग्रसेन या संसारके मनुष्यन में सफलजन्माहौ २९ श्रुति जिनकी स्तुतिकरैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की कीर्त्ति और चरणारविन्द के धोवन को जल गंगा

मुखारविन्द की वचनरूप वेद ये या विश्व कूं अत्यन्त पवित्र करे हैं काल करिकै दग्धहै माहात्म्य जाको ऐसी भी पृथ्वी जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल के स्पर्श तें प्रकटभई है शक्ति जामें ऐसी होयकै हमकूं चारयो ओरतें सम्पूर्ण कामनानकू पूर्ण करे है ३० तिन श्रीकृष्णचन्द्र को तुम दर्शन करोहौ स्पर्श करोहौ पीछे चलोहौ वात चीत करो हौ संगसोवोहौ वैठोहौ भोजनकरोहौ और श्रीकृष्णचन्द्र के संग तुम्हारे विवाहादि सम्बन्ध होय हैं और देह सम्बन्ध होयहैं प्रवृत्तिमार्गमें रहो जो तुमहौ तिनके घरनमें स्वर्ग मोक्ष दोनोंनकी चाहनाकूं दूरिकरैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तुम्हारे घरनमें आप विराजमान हैं याही तें तुम सफलजन्माहौ ३१ अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजनपरीक्षित् ! नन्दरायजी ता कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्णचन्द्र कूं आदि लैके जे यादव है तिनकूं आये जानि कै गोपनसहित और गाडान में लदी जे वस्तु है तिन सहित देखिवे के लिये यादवन के पास आवत भये ३२ वहुत दिनान तें दर्शन जो न भयो तासूं कायर हैं चित्त जिनके ऐसे यादवहैं ते नन्दरायजीके दर्शन करिकै जो आनन्द भयो तासूं देहमें प्राण आये तें जैसे हाथ पाव उठे हैं ऐसे उठिकै भले प्रकार मिलत भये ३३ वसुदेवजी नन्दरायजी सूं मिलिकै प्रसन्न होयकै प्रेममें विह्वल

न् ३० तद्दर्शनस्पर्शनानुपथप्रजल्पशय्यासनाशनसयौनसपिण्डबन्धः ॥ येषांगृहेनिरयवर्त्मनिवर्त्ततांवः स्वर्गापवर्गविरमःस्वयमासविष्णुः ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ नन्दस्तत्रयदून्प्राप्तान्ज्ञात्वाकृष्णपुरोगमान् ॥ तत्राऽऽगमद्वृतोगोपैरनस्थार्थैर्दिदृक्षया ३२ तंदृष्ट्वावृष्णयोहृष्टास्तन्वःप्राणमिवोत्थिताः ॥ परिषस्वजिरेगाढं चिरदर्शनकातराः ३३ वसुदेवःपरिष्वज्य सम्प्रीतःप्रेमविह्वलः ॥ स्मरन् कंसकृतान्क्लेशान् पुत्रन्यासंचगोकुले ३४ कृष्णरामौपरिष्वज्य पितरावभिवाद्यच ॥ नकिञ्चनोचतुःप्रेम्णा साश्रुकण्ठौकुरूद्वह ३५ तावात्मासनमारोप्य बाहुभ्यांपरिरभ्यच ॥ यशोदाचमहाभागा सुतौविजहतुःशुचः ३६ रोहिणीदेवकीचाथ परिष्वज्यव्रजेश्वरीम् ॥ स्मरन्त्यौतत्कृतांमैत्रीं बाष्पकण्ठ्यौसमूचतुः ३७ काविस्मरेतवांमैत्रीमनिवृत्तांव्रजेश्वरि ॥ अवाप्याप्यैन्द्रमैश्वर्यं यस्यानेहप्रतिक्रिया ३८ एतावदृष्टपितरौयुवयोःस्मपित्रोः सम्प्रीणनाभ्युदयपोषणपालनानि ॥ प्राप्योषुर्भवतिपक्ष्महयद्वदक्ष्णोर्न्यस्तावकुत्रचभयौनसतांपरःस्वः ३९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ गोप्यश्चकृष्णमुपलभ्यचिरादभीष्टं यत्प्रेक्षणेदृशिषुपक्ष्मकृतंशपन्ति ॥ दृग्भिर्हृदिकृतमलंपरिरभ्यसर्वास्तद्भावमापुर

होतभये और कंसने जे कष्ट दिये तिनकूं और गोकुल में जायकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं पहुँचाय आये ताको स्मरण करतभये ३४ हे कौरवन कूं आनन्द के देनेवारे राजा परीक्षित ! कृष्ण वलदेव हैं ते माता पिता जो नन्द यशोदा हैं तिनसूं मिलिकै प्रणाम करिकै प्रेमविह्वलभये आमून तें कण्ठ जो रुकि गयो तातें कछु भी न वोलतभये ३५ वडोहै भाग्य जाको ऐसी यशोदा और नन्दजी पुत्र जे कृष्ण वलदेव हैं तिनकूं अपने आसन पै वैठाय कै भुजाननें आलिंगन करिकै नेनन तें आंसू वहावत भये ३६ पीछे रोहिणी और देवकी है ते व्रजकी रानी यशोदा सूं मिलिकै और यशोदा ने करी जो मित्रता है ताको स्मरण करिकै आंसू कण्ठमें भरिके यह कहति भई ३७ हे व्रजकी रानी ! जाको वदलो न होइसकै ऐसी तुम्हारी मित्रता कूं कौन भूलै इन्द्रको ऐश्वर्य पायकै या संसार में तुम्हारी मित्रताको वदलो नहीं होय सकैहै ३८ हे यशोदे ! नहीं देखेहै माता पिता जिनने ऐसे जे कृष्ण वलदेव है ते तुम जो माता पिताहौ तिनके पास राखे तव तुमसूं प्यार करिकै वढिनो पोपण पालन

है तिनें पायके निर्भय तुम्हारे पास वास करत भये जैसे पलक नेत्रन की रक्षा करैं ऐसे तुमने इनकी रक्षाकरी यह तुमकूं योग्यही है क्यों साधुनकूं यह अपनो यह विरानो एतादृश बुद्धि नहीं होय है ३९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र के देखत समय आखिनमें पलक लगायके जो अन्तराय करेहै ऐसे विधाता कू गोपी गारी देयहैं बहुत दिननतें आशा जिनकूं लगि रही ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं पायके गोपी नेत्रनकी रस्ता हृदयमें लेजायके अत्यन्त आलिङ्गन करिकै योगारूढ़ योगीजननकूं भी दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको भाव अर्थात् श्रीकृष्णरूप जो है ताकूं पावतिभई ४० या प्रकारहै प्रेम जिनको ऐसी गोपीन के पास एकान्तमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जायकै आलिङ्गन करिकै कुशल पूंछिकै मुसिकायकै यह बोलतभये ४१ हे सखियो ! अपने जननके कार्य करिवेकूं गये हैं परन्तु शत्रुनके मारिवे में है चित्त जिनको याही तें विलम्ब भयो ऐसे जो हम हैं तिनको कदाचित् स्मरण करोहो ४२ यह कृष्ण कृतघ्नी है यह शङ्का मानिकै कहा गोपियो तुम हमारी अवज्ञा करो हौ मैं कुछ भी नहीं करू हूं होनहारकूं करै ऐसो जो भगवान्है सो प्राणीनको संयोग और वियोग करेहै ४३ जैसे वायु बादरनके समूह कूं तृणकूं रुईकूं धूलिकूं उड़ायकै संयोग करे है और फेरि वियोग करे है तैसेही समस्त प्राणीन को उत्पत्तिकर्त्ता जो ईश्वर है सो सबकूं मिलावे है फेरि न्यारो न्यारो करिदेयहै यामें मोकूं कहा दोषहै ४४ प्राणीनकी जो मोमें भक्तिहै

पिनित्ययुजांदुरापम् ४० भगवांस्तास्तथाभूताविविक्तउपसङ्गतः ॥ आश्लिष्यानामयंपृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ४१ अपिस्मरथनःसख्यः स्वानामर्थचिकीर्षया ॥ गतॉश्चिरायिताञ्शत्रुपक्षक्षपणचेतसः ॥ ४२ अप्यवध्यायथास्मान्स्विदकृतज्ञाविशङ्कया ॥ नूनंभूतानिभगवान् युनक्तिवियुनक्तिच ४३ वायुर्यथाघनानीकं तृणंतूलंरजांसिच॥ संयोज्याऽऽक्षिपतेभूयस्तथाभूतानिभूतकृत् ४४ मयिभक्तिर्हिभूतानाममृतत्वायकल्पते॥ दिष्ट्यायदासीन्मत्स्नेहोभवतीनां मदापनः ४५ अहंहिसर्वभूतानामादिरन्तोऽन्तरंबहिः ॥ भौतिकानांयथाखंवार्भूर्वायुर्ज्योतिरङ्गनाः ४६ एवंह्येतानिभूतानि भूतेष्वात्माऽऽत्मनाततः ॥उभयंमय्यथपरे पश्यनाऽऽभातमक्षरे ४७॥ श्रीशुकउवाच॥ अध्यात्मशिक्षयागोप्यएवंकृष्णेनशिक्षिताः ॥तदनुस्मरणध्वस्तजीवकोशास्तमध्यगन् ४८ आ

सोई जन्म और मृत्युसे छुड़ावेहै तुम्हारो मोमें स्नेहभयो याते मोकूं प्राप्त होउगी यह बड़ो मङ्गलहै ४५ कैसे तुमहो जिनें स्नेह करिकै हम पावेंगी ऐसी इच्छा जब गोपीनके भई तो अपनो रूप कहे हैं हे गोपियो ! जैसे पञ्चभूतनके वने जे घटादिक हैं तिनके आकाश जल पृथ्वी वायु तेज ये आदिमेंभी हैं और अन्तमें भी हैं याही प्रकार जेरते हैं जन्म जिनको ऐसे मनुष्य और पशुतें आदिलैकै और अण्डान तें है जन्म जिनको ऐसे पक्षी इत्यादिक और पसीना तें है जन्म जिनको ऐसे खटमल जुआ इत्यादिक और उद्भिज्ज अर्थात् वृक्षादिक जे चार प्रकार के प्राणी हैं तिनके आदि में हूं और अन्तमें भी हूं भीतर बाहर हूं यातें व्यापक मैं हू ता मोकू प्राप्त भईहो ४६ यहां एक शङ्काहै चारि प्रकारके प्राणी हैं तिनको भोक्ता जो आत्माहै सोई आदि अन्तमें है और व्यापक जो आत्माहै तामें सम्पूर्ण प्राणी वास करे हैं तुम्हारी प्राप्ति हमें कैसे भई तहा कहे हैं जैसे घटादिकनके आदिमें भी हैं और अन्तमें भी हैं ऐसे चारिप्रकार के प्राणी अपने कारण ते भूत हैं तिनमें वर्ते हैं भोक्ता आत्मामें नहीं रहे हैं आत्माहै सो देहनमें भोक्तृरूप करिकै व्यापक है पञ्चभूतरूप देहरूप जो भोग करिवे योग्य पदार्थ है ताय और भोगको करनवारो जो आत्माहै ताय परिपूर्ण जो मैं हूं

तामें प्रकाशित देखो ४७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रने अपने अपने स्वरूपको उपदेश करिकै समझाई जे गोपी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के स्मरण तें दूरिभये हैं लिङ्ग देह जिनके ऐसी होयकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रार्थतिभई ४८ गोपी बोलति भई कमलहै नाभिमें जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं बड़ो है ज्ञान ऐसे योगीश्वर ध्यानकरैं संसाररूपी कूप में गिरे जे प्राणी तिनके निकसिवे को आश्रय ऐसो तुम्हारो चरणकमल घरनमें परे रहें और हमारे मनमें सदा बन्यो रहै यह मागे हैं ४९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्धेवृष्णिगोपसङ्गमोनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(त्र्यशीतितमएवञ्चस्त्रीणांकृष्णकथोत्सवे ॥ द्रौपद्यैकृष्णभार्याभिरुक्ताःस्वस्वकरग्रहाः१ तिरासीवें अध्याय में इसी प्रकार स्त्रियन को कृष्णजी की कथा के उत्सव में कृष्णजी की स्त्रियन करिकै द्रौपदी के अर्थ अपने अपने विवाह को वृत्तान्त कहोगयोहै१) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! गुरु और प्राप्त होयवे कूं योग्य जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो गोपीन पै अनुग्रह

हुआनेनलिननाभपदारविन्दं योगेश्वरैर्हृदिविचिन्त्यमगाधबोधैः ॥ संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बंगेहंजुषामपिमनस्युदियात्सदानः ४९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेवृष्णिगोपसङ्गमोनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ तथाऽनुगृह्यभगवान् गोपीनांसगुरुर्गतिः ॥ युधिष्ठिरमथापृच्छत्सर्वांश्चसुहृदोऽव्ययम् १ तएवंलोकनाथेन परिपृष्टाःसुसत्कृताः ॥ प्रत्यूचुर्हृष्टमनसस्तत्पादेक्षाहतांहसः २ कुतोऽशिवंत्वच्चरणाम्बुजासवं महन्मनस्तोमुखनिःसृतंक्वचित् ॥ पिबन्तियेकर्णपुटैरलंप्रभो देहंभृतांदेहकृदस्मृतिच्छिदम् ३ हित्वात्मधामविधुतात्मकृतत्र्यवस्थमानन्दसम्प्लवमखण्डमकुण्ठबोधम् ॥ कालोपसृष्टनिगमावनआत्तयोगमायाकृतिंपरमहंसगतिंनताःस्म ४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युत्तमश्लोकशिखामणिंजनेष्वभिष्टुवत्स्वन्धककौरवस्त्रियः ॥ समेत्यगोविन्दकथामिथोऽगृणंस्त्रिलोकगीताःशृणुवर्णयामिते ५ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ हेवैदर्भ्यच्युतेभद्रे हेजाम्बवतिकौशले ॥ हेसत्यभामेकालिन्दि शैब्येरोहिणिलक्ष्मणे ६ हेकृष्णपत्न्यएतन्नोब्रूतवोभगवान्स्वयम् ॥ उपयेमेयथालोकमनु

करिकै पीछे राजा युधिष्ठिर तें और सब सुहृदन तें खबरि पूंछत भये १ या प्रकार लोकन के नाथ श्रीकृष्णचन्द्र ने कुशल जिनतें पूंछी सत्कार जिनको कियो श्रीकृष्णके चरणारविन्द के दर्शन तें पाप जिनके दूरि भये ऐसे राजा युधिष्ठिर और सब मित्रजन प्रसन्न मन होयकै कहत भये २ हे प्रभो ! महत्पुरुषन के मनतें मुखद्वारा निकस्यो जो तुम्हारे चरणारविन्दको मकरन्दहै ताय कानरूपी दोनान में भरिकै जे देहधारी पुरुष अतिशय करिकै पीवे हैं तिनकूं देह की करनवारी जो अविद्या ताकूं काटे हैं ३ स्वरूप के प्रकाश करिकै दूरि भईहै बुद्धिकृत जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्था जिनमें याही तें सम्पूर्ण आनन्दके समूह अखण्डरूप ढँकिवेमें न आवेहै ज्ञान जिनको ऐसे और कालकरिकै नष्ट भये जे वेद तिनकी रक्षा करिवे के लिये योगमाया कूं अंगीकार करिकै मनुष्यदेह जिनने धारण कियो और परमहंसन की प्राप्ति के योग्य जो तुम हो तिनें प्रणाम करे हैं ४ ऋषीश्वर कहे हैं या प्रकार उत्तम है यश जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तिनके मुकुटमणि ऐसे श्रीकृष्ण-

चन्द्र की प्रशंसा करें हैं इतने में अन्धक और कौरवन की स्त्री हैं ते आपुस में गोविन्द की कथा हैं तिनें कहति भई हे राजन् परीक्षित्! त्रिलोकीमें गाई जे कथा हैं ते तुम्हारे आगे वर्णन करूं हूं तुम श्रवणकरो ५ अब द्रौपदी कहे है हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री रुक्मिणी! हे भद्रा! हे जाम्बवती! हे कोशलदेशके राजा की पुत्री! हे सत्यभामा! हे कालिन्दी! हे शैव्या अर्थात् मित्रविन्दा! हे रोहिणी! हे लक्ष्मणा!–हे सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्रकी रानियो! स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके अपनी माया सूं लोकनके तुल्य जैसे विवाह भये तैसे अपने अपने विवाह की वात हमारे आगे कहो ६ । ७ अब रुक्मिणी अपने विवाह की वात कहे है–जरासन्धादिक राजा हैं ते मोहिं शिशुपाल के विवाहवे के लिये धनुष् कूं उठायकै जब आये ता समय जीतिवे में न आवें ऐसे योद्धान के शिरपै चरण धरिकै श्रीकृष्णचन्द्र जैसे बकरीन के समूह में ते सिंह अपनी बलिकूं लेआवै ऐसे लावत भये तिन श्रीकृष्णको लक्ष्मी जामें वासकरै ऐसो जो चरण है ताकी मैं पूजा करूं हूं ८ सत्यभामा अपने विवाह की वात कहे है–भय्या प्रसेन कूं सिंह ने मारयो तासूं दुःखितहै हृदय जाको ऐसो जो मेरा पिता सत्राजित् है ताने मिथ्या कलङ्क लगायो तब कृष्णजी जाम्बवान् को

कुर्वन्स्वमायया ७ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ चैद्यायमार्पयितुमुद्यतकार्म्मुकेषु राजस्वजेयभटशेखरिताङ्घ्रिरेणुः ॥ निन्येमृगेन्द्रइवभागमजावियूथात्तच्छ्रीनिकेतचरणोऽस्तुममार्चनाय ८ ॥ सत्यभामोवाच ॥ योमेसनाभिवधतप्तहृदाततेनलिप्ताभिशापमपमार्ष्टुमुपाजहार॥ जित्वर्क्षराजमथरत्नमदात्सतेन भीतःपिताऽदिशतमांप्रभवेऽपिदत्ताम् ९ ॥ जाम्बवत्युवाच ॥ प्राज्ञायदेहकृदमुंनिजनाथदैवं सीतापतिंत्रिनवहान्यमुनाऽभ्ययुध्यत् ॥ ज्ञात्वापरीक्षितउपाहरदर्हणंमां पादौप्रगृह्यमणिनाऽहममुष्यदासी १० ॥ कालिन्द्युवाच ॥ तपश्चरन्तीमाज्ञाय स्वपादस्पर्शनाशया ॥ सख्योपेत्याऽग्रहीत्पाणिं योऽहन्तद्गृहमार्जनी ११ ॥ भद्रोवाच ॥ योमांस्वयंवरउपेत्यविजित्यभूपान् निन्येश्वयूथगमिवात्मबलिंद्विपारिः ॥ भ्रातॄंश्चमेऽपकुरुतःस्वपुरंश्रियौकस्तस्यास्तुमेऽनुभवमङ्घ्र्यवनेजनत्वम् १२ ॥ सत्योवाच ॥ सप्तोक्षणोऽतिबलवीर्य्यसुतीक्ष्णशृङ्गान् पित्राकृतान्क्षितिपवीर्य्यपरीक्षणाय ॥ तान्वीरदुर्म्मदहनस्तरसानिगृह्य क्रीडन्बबन्धहय

जीतकर मणि सत्राजित् को देते भये तासूं भयभीत जो मेरो पिता है ताने अक्रूरादिकन कूं देनकही जो मैंही ताय श्रीकृष्णचन्द्रही कूं देत भयो ९ अब जाम्बवती अपने विवाह की वात कहे है देह को उत्पन्न करनवारो जो मेरो पिता है सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनो स्वामी ईश्वर सीता को पति नहीं जानिकै सत्ताईसदिन पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्र के सङ्ग युद्ध करे पीछे भईहै परीक्षा जाकूं ऐसो मेरो पिता सीताके पति इष्टदेव जानिकै चरण पकरिकै स्यमन्तकमणिसहित मोकूं श्रीकृष्णचन्द्र की सेवा करिवे के लिये देत भयो यह श्रवण करिकै द्रौपदी ने कही तुम बड़ी श्रेष्ठहौ तहां जाम्बवती कहे है मैं तो इनकी दासी हू १० अब कालिन्दी अपने विवाह की वात कहे है–श्रीकृष्णचन्द्र के चरणस्पर्श की आशा करिकै तपकरूं जो मैं हूं ताको अर्ज्जुन सहित जायकै हाथ पकरत भये मैं तिन श्रीकृष्णचन्द्र के घरकी बुहारी देनवारी हूं ११ अब भद्रा अपने विवाह की वात कहे है–लक्ष्मी जिनके वक्षःस्थल में वास करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्वयंवर में जाय के राजान कूं जीतिकै और तिरस्कार करैं ऐसे जे मेरे भय्या हैं तिनें भी जीतिकै हाथीन को शत्रु सिंह जैसे कुत्तान के बीच में अपनी बलिकूं लेआवै ऐसे मोकूं अपने पुरमें लावतभये तिन

श्रीकृष्णचन्द्रके चरण धोइबे की सेवा मोकूं जन्म जन्ममें भयो करै यह मेरी प्रार्थनाहै १२ अब सत्या अपने विवाहकी वात कहै है–बड़ो है बल पराक्रम जिनमें बड़े पैने जिनके सींग और शूरवीरन के बड़े मदकूं दूरि करनवारे राजानके पराक्रमकी परीक्षा लेवेके कारण मेरे पिताने पाले ऐसे जे सात बैलहैं तिनें पकरिकै जैसे बालक काष्ठकी बकरीके बच्चानकूं बाधेहैं ऐसे सहजमें श्रीकृष्णचन्द्र बाधि लेतभये १३ पराक्रमही है मोल जाको ऐसी येहूं ताय हाथी घोडा रथ प्यादेन सहित दासीन सहित जो मैं ताय मार्गमें क्षत्रियनकूं जीतिकै श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार लावतभये तिनको मोकूं दास्यभाव होउ यह मेरी प्रार्थना है १४ अब मित्रविन्दा अपने विवाह की वात कहैहै–हे द्रौपदी ! मेरे मामाके पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें बुलायकै तिन श्रीकृष्णचन्द्रमें लग्योहै मन जाको ऐसी जो मैं हूं ताय मेरो पिता अक्षौहिणी सेना और सखियन सहित देतभयो १५ अनेक कर्म्मन करिकै भटकूं ऐसी जो मैं हूं ताकूं जन्म जन्ममें श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को स्पर्शहोय जा चरणारविन्द के स्पर्श ते मोक्ष है नाम जाको ऐसो कल्याण मोकूं प्राप्तहोय यह मेरी प्रार्थना है १६ अब लक्ष्मणा अपने विवाह की वात कहैहै हे रानी द्रौपदी ! वारंवार नारदने गाये जे श्रीकृष्णचन्द्रके जन्म

थाशिशवोऽजतोकान् १३ यइत्थंवीर्य्यशुल्कांमां दासीभिश्चतुरङ्गिणीम् ॥ पथिनिर्जित्यराजन्यान् निन्येतद्दास्यमस्तुमे १४ ॥ मित्रविन्दोवाच ॥ पिता मेमातुलेयाय स्वयमाहूयदत्तवान् ॥ कृष्णेकृष्णायतच्चित्तामक्षौहिण्यासखीजनैः १५ अस्यमेपादसंस्पर्शोभवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ कर्म्मभिर्भ्राम्यमाणा यायेनतच्छ्रेयआत्मनः १६ ॥ लक्ष्मणोवाच ॥ ममापिराज्ञ्यच्युतजन्मकर्म्मश्रुत्वामुहुर्नारदगीतमासह ॥ चित्तंमुकुन्देकिलपद्महस्तया वृतःसुसंमृश्यविहायलोकपान् १७ ज्ञात्वाममम॒तंसाध्वि पिताडुहितृवत्सलः ॥ बृहत्सेनइतिख्यातस्तत्रोपायमचीकरत् १८ यथास्वयंवरेराज्ञि मत्स्यःपार्थेप्सयाकृतः ॥ अयंतुबहिराच्छन्नोदृश्यतेसजलेपरम् १९ श्रुत्वैतत्सर्व्वतोभूपाआययुर्मत्पितुःपुरम् ॥ सर्व्वास्त्रशस्त्रतत्त्वज्ञाः सोपाध्यायाःसहस्रशः २० पित्रासम्पूजिताःसर्व्वे यथावीर्य्यंयथावयः ॥ आददुःसशरंचापं वेद्धुंपर्षदिमद्धियः २१ आदायव्यसृजन्केचित्सज्यंकर्त्तुमनीश्वराः ॥ आकोष्ठंज्यांसमुत्कृष्यपेतुरेकेऽमुनाहताः २२

कर्म्म हैं तिनें श्रवण करिकै जैसे मित्रविन्दा को चित्त लग्योहै ऐसे मेरो भी चित्त श्रीकृष्णचन्द्रमेंही लगतभयो कमलहै हाथमें जाके ऐसी जो लक्ष्मी है ताने लोकपालन कूं त्यागिकै वरेहैं याहीते मेरो चित्त श्रीकृष्णचन्द्र में लगतभयो १७ हे सुशीले द्रौपदी ! पुत्रीपै है हित जाको ऐसो जो बृहत्सेन नाम करिकै विख्यात मेरो पिताहै सो मेरे मनकी वात जानिकै श्रीकृष्णचन्द्रके आइबेके लिये उपाय करतभयो १८ हे रानी द्रौपदी ! जैसे तेरे स्वयंवर में अर्ज्जुन के आइबेके लिये मत्स्य रच्योहो ऐसे मेरोहू पिता मत्स्य रचावतभयो यह सुनिकै द्रौपदी कहैहै फेरि अर्ज्जुनही क्यों न वेधतभयो तहां लक्ष्मणा कहे है तेरे स्वयंवरकी मछरीरही सो बाहर ते ढकीरही भीतरते नहीं ढकीरही याते खम्भमें लगाय के ऊपर कूं दृष्टि करिकै देखे तें दिखाई देरही और मेरे स्वयंवर की मछरी ऐसी नहींरही किन्तु खम्भकी जड़में धरचो जो कलशहै ताके जलमें केवल परछाई दिखाई देरही देखिवो तौ नीचे जलमें और वेधिवो ऊपर ऐसी मछरीकूं श्रीकृष्णचन्द्रके विना कौन वेधिसकै १९ स्वयंवर रच्यो है यह वात श्रवण करिकै सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रनके तत्त्वके जाननवारे उपाध्याय अर्थात् सिखावनवारेन कूं सङ्गलैकै हजारन राजा मेरे पिताके पुरमें आवतभये २० ता समय जैसो जाको

पराक्रम और जैसी जाकी अवस्थारही तैसोही ताको पूजन मेरो पिता करतभयो मोहीं में है बुद्धि जिनकी ऐसे राजा मत्स्य के वेधिबे कूं सभामें बाणसहित जो धनुष् है ताय ग्रहण करतभये २१ कोई एक राजाहैं ते धनुष् कूं लेकर चढानेही माँ असमर्थ होकर पटकतभये और कोई एक प्रत्यञ्चाकूं कोष्ठ पर्य्यन्त खैंचिकै धनुष्की चपेटतेही गिरतभये २२ और जे शूरवीर जरासन्धअम्बष्ठ चन्देली को राजा भीमसेन दुर्योधन कर्ण ये अपने अपने धनुष् पै प्रत्यञ्चा चढाय कै कैसे मछरी लगीहै यहभी जानिबे कू न समर्थ होतभये २३ जलमें मछरी की परछाई देखिकै जा विधि मछरीलगीरही सो जानिकै उपाय को करनवारो जो अर्ज्जुन है सो बाण चलावतभयो बाण मछरी के स्पर्शभयो परन्तु मछरी कटी नहीं यामें आयो कहा अर्ज्जुनकूं ज्ञान तो बड़ो परन्तु बल नहीं २४ सम्पूर्ण क्षत्रिय हारिकै बैठिरहे और अभिमानीन के अभिमान दूरिभये ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धनुष् कूं लैकै लीलाही करिकै प्रत्यञ्चा चढायकै २५ धनुष् में बाण लगायकै एकहीबार मछरीकूं जलमें देखिकै मध्याह्नसमय अभिजित् नक्षत्र जब आयो अर्थात् सब कार्य्यन के सिद्ध करनवारे मुहूर्त्त में मछरी कूं बाण सू काटिकै पटकतभये २६ स्वर्ग में देवतान के नगारे बजतभये पृथ्वी

सज्यंकृत्वाऽपरेवीरा मागधाम्बष्ठचेदिपाः ॥ भीमोदुर्य्योधनःकर्णोनाविन्दंस्तदवस्थितिम् २३ मत्स्याभासंजलेवीक्ष्य ज्ञात्वाचतदवस्थितिम् ॥ पार्थोयत्तोऽसृजद्बाणं नाच्छिनत्पस्पृशेपरम् २४ राजन्येपुनिवृत्तेपु भग्नमानेपुमानिपु ॥ भगवान्धनुरादाय सज्यंकृत्वाऽथलीलया २५ तस्मिन्सन्धायविशिखं मत्स्यंवीक्ष्यसकृज्जले ॥ छित्त्वेपुणाऽपातयत्तं सूर्य्येचाभिजितिस्थिते २६ दिविदुन्दुभयोनेदुर्जयशब्दयुताभुवि ॥ देवाश्चकुसुमासारान् मुमुचुर्हर्षविह्वलाः २७ तद्रङ्गमाविशमहंकलनूपुराभ्यां पद्भ्यांप्रगृह्यकनकोज्ज्वलरत्नमालाम् ॥ नूत्नेनिवीयपरिधायचकौशिकाग्र्ये सव्रीडहासवदनाकवरीधृतस्रक् २८ उन्नीयवक्त्रमुरुकुन्तलकुण्डलत्विड्गण्डस्थलंशिशिरहासकटाक्षमोक्षैः ॥ राज्ञोनिरीक्ष्यपरितःशनकैर्मुरारेरंसेऽनुरक्तहृदयानिदधेस्वमालाम् २९ तावन्मृदङ्गपटहाः शङ्खभेर्य्यानकादयः ॥ निनेदुर्नटनर्त्तक्योननृतुर्गायकाजगुः ३० एवंवृतेभगवति मयेशेनृपयूथपाः ॥ नसेहिरेयाज्ञसेनि स्पर्द्धन्तोहृच्छयातुराः ३१ मांतावद्रथमारोप्य हयरत्नचतुष्टयम् ॥ शार्ङ्गमुद्यम्यसन्नद्धस्तस्थावाजौचतुर्भुजः ३२ दारुकश्चोदयामास काञ्चनोपस्करंरथम् ॥ मिपतांभूभुजांराज्ञि मृगा

में जयजय शब्द होतभयो देवता आनन्द में विह्वल होयकै बहुत पुष्पन की वर्षा करत भये २७ लाज भरीहै हँसनि जामें ऐसो जो मुख और चोटीमें माला गुहे ऐसी जो मैं हूं सो नवीन रेशमी सुन्दर धोती उपरना पहिरि ओढिकै सुवर्णमें जड़ी जो रत्नकी मालाहै ताय हाथमें लैकै और मनोहर हैं नूपुर जिन में ऐसे चरणन करिकै हे द्रौपदी ! मैं रङ्गभूमि में जात भई २८ श्रीकृष्णचन्द्र में है आसक्त हृदय जाको ऐसी जो मैं हूं सो बड़ेहैं केश जामें और कुण्डलन करिकै शोभायमानहैं कपोल जामें ऐसे मुखकू उठायकै सन्तापको दूरि करनवारो है हास जिनमें ऐसे कटाक्षपूर्व्वक जे चितवनिहैं तिन करिकै राजानकूं चारयो ओरतें देखिकै हौले हौले जायकै मुरारि जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके कन्धापै माला धरति भई २९ ता समय मृदंग ढोल शङ्ख भेरी नगारे आदि लैकै बाजे हैं ते बजतभये नट और नृत्यकारीहैं ते नाचतभये और गवैया गावतभये ३० हे यज्ञसेनकीपुत्री द्रौपदी ! याप्रकार मैंने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जब वश करे तब ईर्षा जिनके भई काम करिके

आतुर ऐसे जे राजानके यूथ हैं ते नहीं सहतभये ३१ सुन्दर चार घोडा जामें जुते ऐसो जो रथहै तामें वा समय वैठायकै शार्ङ्गधनुपकूं उठायकै कवच पहिरिकै चार हैं भुजा जिनके ऐसे श्रीकृष्ण-चन्द्र सग्राममें ठाढे होतभये ३२ हे रानी द्रौपदी ! रथवान् है सो सुनहरी साजको जो रथहै ताय हांकि देतभयो और जैसे मृगन के देखत सिंह चल्योजाय ऐसे राजान के वीचमें राजानके देखतेही जातभये ३३ कोई एक राजाहैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के मार्ग में रोकिवे कूं आगे जायकै धनुप् कूं ऊंचे उठायकै जैसे सिंहके रोकिवे कूं कुत्ता ठाढ़ो होय ऐसे मार्ग में सावधान होय कै ठाढे होतभये ३४ शार्ङ्गधनुप् में ते निकसे जे वाणनके समूह तिनसूं कटी हैं भुजा पाव नारि जिनकी ऐसे कोई चात्रिय युद्धमें गिरतभये और कोई एक हैं ते संग्रामकूं छोड़िके भाजत भये ३५ ता पीछे यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अत्यन्त शोभायमान जिनसूं सूर्य्य ढकिजाय ऐसे ध्वजानके वस्त्र जामें उड़े और चित्रविचित्र वन्दनवार वँधी स्वर्ग और पृथ्वीमें स्तुति जाकी होय ऐसी द्वारकापुरी में जैसे सूर्य्य अस्ताचल में प्रवेश करतभये ३६ मेरो पिता है सो मित्र नातेन गोतेन कूं और वन्धुन कू वड़े मोलके वस्त्र गहने शय्या आसन और जे साज है तिनसूं पूजन करत

णांमृगराडिव ३३ तेऽन्वसज्जन्तराजन्यानिपेद्धुंपथिकेचन ॥ संयत्ताउद्धृतेष्वासाग्रामसिंहायथाहरिम् ३४ तेशार्ङ्गच्युतबाणौघैः कृत्तबाह्वङ्घ्रिकन्धराः ॥ निपेतुःप्रधनेकेचिदेकेसन्त्यज्यदुद्रुवुः ३५ ततःपुरींयदुपतिरत्यलंकृतां रविच्छदध्वजपटचित्रतोरणाम् ॥ कुशस्थलींदिविभुविचाभिसंस्तुतां समाविशत्तरणिरिवस्वकेतनम् ३६ पितामेपूजयामास सुहृत्सम्बन्धिबान्धवान् ॥ महार्हवासोऽलङ्कारैः शय्यासनपरिच्छदैः ३७ दासीभिःसर्व्वसम्पद्भिर्भटेभरथवाजिभिः ॥आयुधानिमहार्हाणि ददौपूर्णस्यभक्तितः ३८ आत्मारामस्यतस्येमावयंवैगृहदासिकाः ॥ सर्व्वसङ्गनिवृत्त्याऽद्धा तपसाचबभूविम ३९ ॥ महिष्यऊचुः ॥ भौमन्निहत्यसगणंयुधितेनरुद्धाज्ज्ञात्वाऽथनःक्षितिजयेजितराजकन्याः ॥ निर्मुच्यसंसृतिविमोक्षमनुस्मरन्तीः पादाम्बुजंपरिणिनाययआप्तकामः ४० नवयंसाध्विसाम्राज्यं स्वाराज्यंभौज्यमप्युत ॥ वैराज्यंपारमेष्ठ्यंच आनन्त्यंवाहरेःपदम् ४१ कामयामहएतस्य श्रीमत्पादरजःश्रियः ॥ कुचकुङ्कुमगन्धाढ्यं मू

भयो ३७ सम्पूर्ण सम्पत्ति है विद्यमान जिनके ऐसी दासी और प्यादे हाथी रथ घोड़ान सहित और वहुत मोलके हथियारन सहित मोकूं मेरो पिता परिपूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देतभयो ३८ ये आठों हम हैं ते आत्मामें रमण करैं जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी सव संगनकूं त्यागिकै अपनो धर्म्म करिकै साक्षात् घरकी दासी भयो चाहै हैं ३९ सोलह हजार रानी एकसे व्याही हैं याते एक सङ्ग अपने व्याह की वात कहै हैं गणनसहित भौमासुर है ताय युद्ध में मारिकै पीछे पृथ्वीकूं जीतती विरियां जीते जे राजा हैं तिनकी कन्या हम हैं तिनकूं भौमासुर ने रोकी है यह जानिके संसार तें छुड़ावनवारो जो चरणारविन्द है ताय स्मरण करैं ऐसी हम हैं तिनें वन्दीखाने तें छुडाये वोही है कारण जिनके और काहू वात की इच्छा नहीं ऐसे भी श्रीकृष्णचन्द्र विवाहत भये ४० हे द्रौपदी ! हम चक्रवर्त्ती राज्य कूं नहीं चाहैं चक्रवर्त्ती राज्य और इन्द्रपद इनके भोगनको जो भोगिवे है ताय नहीं चाहैं अणिमादिक सिद्धिन कूं नहीं चाहैं और ब्रह्मलोक और मोक्ष तथा वैकुण्ठधाम इनकी चाहना नहीं करे हैं गदा के धारण करनवारे जो ये हैं तिनके लक्ष्मी के कुचनकी केसर जामें लगी ऐसी सुन्दर जो चरण की रज है ताय माथे के ऊपर चढायवे की चाहना

करे हैं ४१ । ४२ वयों जी वहतो वड़ी दुर्लभहै वाय क्यों चाहती हौ तहां कहे हैं जैसे व्रजकीस्त्री वा रजकी चाहना करेहैं भीलिनी चाहना करेहैं वृन्दावन के तृण लता चाहना करेहैं गौवन कूं चरावैं ऐसे महात्मा जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके चरणस्पर्श कूं गोप चाहना करे हैं ऐसे हमहूंचाहना करे हैं श्रीकृष्णको जिनने आश्रय लियो तिनकूं वह रजसहजहै ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिएयादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(चतुर्भिरधिकाशीतितमेमुनिसमागमे ॥ वसुदेवमखोत्साहवन्धुप्रस्थापनादिकम् १ चौरासीवें अध्यायमें मुनियों के समागममें वसुदेवजीकी यज्ञका उत्साह वन्धुओंका प्रस्थापनआदिक वर्णितहै १)

अव श्रीशुकदेवजी कहैहैं हे राजन्! परीक्षित् कुन्ती सुवलकी पुत्री गान्धारी ताके पीछे यज्ञसेनकीपुत्री द्रौपदी सुभद्रा याके पीछे राजानकी स्त्रीहैं ते और श्रीकृष्णचन्द्रकीभक्त सम्पूर्णगोपीहैं ते सवके

र्द्धावोढुंगदाभृतः ४२ व्रजस्त्रियोयद्वाञ्छन्ति पुलिन्द्यस्तृणवीरुधः ॥ गावश्चारयतोगोपाःपादस्पर्शमहात्मनः ४३ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ श्रुत्वापृथासुवलपुत्र्यथयाज्ञसेनीमाधव्यथक्षितिपपत्न्यउतस्वगोप्यः ॥ कृष्णेऽखिलात्मनिहरौप्रणयानुवन्धं सर्व्वाविसिस्म्युरलमश्रुकलाकुलाक्ष्यः १ इतिसम्भाष्यमाणासुस्त्रीभिःस्त्रीपुनृभिर्नृपु ॥ आययुर्मुनयस्तत्र कृष्णरामदिदृक्षया २ द्वैपायनोनारदश्च च्यवनोदेवलोऽसितः ॥ विश्वामित्रः शतानन्दोभरद्वाजोऽथगौतमः ३ रामःसशिष्योभगवान् वसिष्ठोगालवोभृगुः ॥ पुलस्त्यःकश्यपोऽत्रिश्च मार्कण्डेयोवृहस्पतिः ४ द्वितस्त्रितश्चैकतश्च ब्रह्मपुत्रास्तथाङ्गिराः ॥ अगस्त्योयाज्ञवल्क्यश्चवामदेवादयोऽपरे ५ तान्दृष्ट्वासहसोत्थायप्रागासीनानृपादयः ॥ पाण्डवाःकृष्णरामौचप्रणेमुर्विश्ववन्दितान् ६ तानानर्चुर्यथासर्व्वेसहरामोऽच्युतोऽर्चयत् ॥ स्वागतासनपाद्यार्घ्यमाल्यधूपानुलेपनैः ७ उवाचसुखमासीनान्भगवान्धर्म्मगुप्तनुः ॥ सदसस्तस्यमह

आत्मा जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें रानीनको प्रेम सुनिकें नेत्रनमें आशू भरिकै वड़ो आश्चर्य्य मानतिभई १ ता कुरुक्षेत्रमें या प्रकार स्त्रीनके सङ्ग स्त्रीवातें करैं और पुरुषनके सङ्ग पुरुष वातें करैं इतने में श्रीकृष्णचन्द्र और वलदेवजीके दर्शन करिवे के लिये मुनि आवतभये २ अव जो ऋषि आये तिनैं कहैहैं वेदव्यास नारद च्यवन देवल असित विश्वामित्र शतानन्द भरद्वाज गौतम ३ शिष्यनसहित भगवान् परशुराम वशिष्ठ गालव भृगु पुलस्त्य कश्यप अत्रि मार्कण्डेय वृहस्पति ४ द्वित त्रित एकत तैसेही ब्रह्माके पुत्र अंगिरा अगस्त्य याज्ञवल्क्य तथा वामदेव ते आदि लैके और मुनि हैं ते सम्पूर्ण आवतभये ५ विश्व जिनकूं प्रणामकरैं ऐसे मुनिनकूं आये देखिकै राजानते आदिलैके जे प्रथम वैठे हैं ते और पाण्डव अर्थात् महाराज युधिष्ठिरादिक हैं ते तथा श्रीकृष्णचन्द्र वलदेव जी ये सम्पूर्ण शीघ्रही उठकर प्रणाम करतभये ६ तिन मुनिनको यथायोग्य सम्पूर्ण पूजन करतभये और वलदेवसहित श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भले आये ऐसे मुनिनसूं कहिकै आसन दैकै पाद्य अर्घ्य पुष्प धूप दीप चन्दन इन करिकै पूजन करतभये ७ चुपहोयकै सम्पूर्ण जागें वैठे ऐसी सभामें धर्म्मकी रक्षा करनवारी है मूर्त्ति जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुखपूर्वक वैठे जे ब्राह्मणहैं

तिनसूं बोलत भये ८ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे है—अहो बडो आश्चर्य्य है हम सफलजन्मभये सब जन्मको साफल्य हमकूं प्राप्तभयो देवतान कूं भी दुर्लभ ऐसे योगेश्वरन को दर्शनभयो ९ तीर्थस्नान करनो याहीकू तपजाने केवल प्रतिमाही कूं देवतादेखें ऐसे मनुष्यनकूं योगेश्वरन कूं दर्शन स्पर्शन वार्त्ता को प्रश्न शिरसों नमस्कार चरणनको पूजन आदिक करिवो ये कहा मिले हैं १० जलमय तीर्थ नहीं हैं सो नहीं है मृत्तिका और शिलान के देवता नहीं है सो नहीं हैं बहुत दिन देवतानकी पूजाकरै तब पवित्र करें और साधु महात्मा दर्शनही तें पवित्र करें हैं ११ अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा तारागण पृथ्वी जल आकाश पवन वाणी मन ये सेवनकरेते भी इनें भेदबुद्धि करिकै देखे है ऐसे पुरुपके अज्ञान कूं दूरि नहीं करे हैं और विवेकी पुरुषहैं ते दो घड़ीकी सेवा करतेही अज्ञान कूं दूरि करि देइहैं १२ वात पित्त श्लेष्म इन तीनि धातुन को रच्यो जो देह है ताय आत्मा जानेहैं और स्त्री आदिकन में आत्मबुद्धि मानें तथा पृथ्वी को विकार जे प्रतिमा है तिनमें जा पुरुप की

तोयतवाचोऽनुशृण्वतः ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अहोवयंजन्मभृतोलब्धंकार्त्स्न्येनतत्फलम् ॥ देवानामपिदुष्प्रापंयद्योगेश्वरदर्शनम् ९ किंस्वल्पतपसांनॄणामर्चायांदेवचक्षुषाम् ॥ दर्शनस्पर्शनप्रश्नप्रह्वपादार्चनादिकम् १० नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ तेपुनन्त्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ११ नाग्निर्नसूर्य्योनचचन्द्रतारकानभूर्जलंखंश्वसनोऽथवाङ्मनः ॥ उपासिताभेदकृतोहरन्त्यघंविपश्चितोघ्नन्तिमुहूर्त्तसेवया १२ यस्यात्मबुद्धिःकुणपेत्रिधातुके स्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिःसलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगोखरः १३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ निशम्येत्थंभगवतः कृष्णस्याकुण्ठमेधसः ॥ वचोदुरन्वयंविप्रास्तूष्णीमासन्भ्रमद्धियः १४ चिरंविमृश्यमुनयईश्वरस्येशितव्यताम् ॥ जनसंग्रहइत्यूचुः स्मयन्तस्तंजगद्गुरुम् १५ ॥ मुनयऊचुः ॥ यन्माययातत्त्वविदुत्तमावयं विमोहिताविश्वसृजामधीश्वराः ॥ यदीशितव्यायतिगूढईहया अहोविचित्रंभगवद्विचेष्टितम् १६ अनीहएतद्बहुधैकआत्मना सृजत्यवत्यत्तिनबध्यतेयथा ॥ भौमैर्हिभूमिर्बहुनामरूपिणी अहोविभूम्नश्चरितंविडम्बनम् १७ अथापिकालेस्वजनाभिगुप्तये बिभर्षिसत्त्वंखल

यह पूजाकरिबे योग्य देवताहैं ऐसी बुद्धिहै और जलकूं तीर्थ मानें और विवेकी पुरुपनमें भाव नहीं राखें ऐसे पुरुप गौके चारो ढोवनवारे गधाहैं १३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! नहीं मन्द हैं बुद्धि जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को दुरन्वय वचन श्रवण करिकै भ्रमयुक्त हैं बुद्धि जिनकी ऐसे ब्राह्मण चुप होतभये १४ ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र को कर्म्मनमें जो अधिकार है ताय बहुत देर पर्य्यन्त विचारिकै जननकी शिक्षा के लिये हमारी स्तुति करे हैं या प्रकार मुनीश्वर मुसिकाय कै जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनसूं बोलतभये १५ तत्त्व के जाननवारेनमें उत्तम और विश्व के रचनवारे जो ब्रह्मादिक हैं तिनके ईश्वर ऐसे जे हमहैं ते जिनकी माया करिकै मोहितभये मनुष्यरूप धरिकै मनुष्यन कैसे कर्म्म करो हौ कदाचित् कहो कि मैं ईश्वर हू तो कर्म्म क्यों करूं हू तहा कहे है तुम्हारी चेष्टा विचारिबे में नहीं आवै है १६ चेष्टा न करो अर्थात् हाथ पांयन कूं न चलावो ऐसे जे एक तुमही सो अपने आत्मा करिकै या विश्वकूं बहुत प्रकार उत्पत्ति पालन और संहार करो हौ जैसे पृथ्वी है सो घटादि विकारन करिकै बहुत नाम जाके ऐसी होयहै कदाचित् कहो कि मैं कैसे उत्पत्ति पालन संहार करूं हू मैं तो वसुदेव को पुत्रहू तहा कहे हैं परिपूर्ण

जो तुमहौ तिनको वसुदेव के घर जन्म है यह विचित्र लीलामात्रहै सत्य नहीं है १७ समयमै अपने भक्तन की रक्षा करिवे के लिये और दुष्टन के दण्डदेवे कूं शुद्ध सतोगुणी रूप कूं धारण करो हौ और आप अपनी लीला करिकै सनातन जो वेदमार्ग है ताय प्रवृत्त करो हौ जो तुम काहू के पुत्र नहीं हो तो भी चारि वर्ण और चारि आश्रम इनके आत्मा परमपुरुषहौ याही तें ब्राह्मणन को बहुत सत्कार करो हो यह कहे हैं १८ शुद्ध जो वेदहै सो तुम्हारो भीतर को रूपहै तप करिवो वेदको पढिवो इन्द्रियनको रोंकिवो इन करिकै कार्य और कारण दोउनते परे जो ब्रह्महै ताकी प्राप्ति होयहै १९ हे ब्रह्मन्! वेदके कारण आत्मा जो तुमहौ तिनको बतावनवारो जो ब्रह्मकुल है ताय पूजो हौ ताही कारण ते ब्राह्मणन की भक्ति करनवारे जे पुरुष हैं तिनमें श्रेष्ठ हौ २० तातें ईश्वर जो तुमहौ तिनकूं हमारो जो सत्कार करनो है सो पुरुषन के शिक्षा करिवेके लिये है और हम हैं ते तुम्हारे संग तें कृतार्थ भये यह कहे हैं साधुन की गति जो तुमहौ तिनको सङ्ग भयो तासूं हमारो जन्म विद्या तप दृष्टि ये सम्पूर्ण सफलभये काहेसे तुम समस्त कल्याणनकी अवधि हौ २१ नहीं मन्दहै बुद्धि जिनकी और अपनी योगमाया करिकै ढकी है महिमा

निग्रहायच ॥ स्वलीलयावेदपथंसनातनंवर्णाश्रमात्मापुरुषःपरोभवान् १८ ब्रह्मतेहृदयंशुक्लं तपःस्वाध्यायसंयमैः ॥ यत्रोपलब्धंसद्व्यक्तमव्यक्तञ्चततःपर
म् १९ तस्माद्ब्रह्मकुलंब्रह्मञ्छास्त्रयोनेस्त्वमात्मनः ॥ सभाजयसिसद्धामतद्ब्रह्मण्याग्रणीर्भवान् २० अद्यनोजन्मसाफल्यं विद्यायास्तपसोदृशः ॥
त्वयासंगम्यसद्गत्या यदन्तःश्रेयसांपरः २१ नमस्तस्मैभगवतेकृष्णायाकुण्ठमेधसे ॥ स्वयोगमाययाच्छन्नमहिम्नेपरमात्मने २२ नयंविदन्त्यमीभूपाएका
रामाश्चवृष्णयः ॥ मायाजवनिकाच्छन्नमात्मानंकालमीश्वरम् २३ यथाशयानःपुरुषआत्मानंगुणतत्त्वदृक् ॥ नाममात्रेन्द्रियाभातंनवेदरहितंपरम् २४
एवंत्वानाममात्रेषु विषयेष्विन्द्रियेहया ॥ मायया विभ्रमच्चित्तोनवेदस्मृत्युपप्लवात् २५ तस्याद्यतेददृशिमाङ्घ्रिमघौघमर्षतीर्थास्पदंहृदिकृतंसुविपक्वयोगैः ॥
उत्सिक्तभक्त्युपहताशयजीवकोशाआपुर्भवद्गतिमथोऽनुगृहाणभक्तान् २६ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यनुज्ञाप्यदाशार्हं धृतराष्ट्रंयुधिष्ठिरम् ॥ राजर्षेस्वाश्रमान्

जिनकी ऐसे परमात्मा भगवान् जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं नमस्कार है २२ मायारूपी चिक सूं ढके सुष्ट्यादिकन के कारण ऐसे ईश्वर आत्मा जो तुमहौ तिनें ये राजा नहीं जाने हैं और एक स्थान में है सुख जिनकूं ऐसे यादव हैं तेभी नहीं जाने हैं २३ जैसे पुरुष सोवत में स्वप्नदृष्ट जे मिथ्या पदार्थ हैं तिनें सत्य माने है मनतें सिंह व्याघ्रादि रूप आप बनिजाय है अपने स्वरूप कूं नहीं जाने है २४ याही प्रकार स्वप्नादितुल्य जे विषय पदार्थ हैं तिनमें इन्द्रियन की प्रवृत्ति रूप माया ता करिकै चलायमान है चित्त जाको ऐसो पुरुष विवेक के नाश तें तुमें नहीं जाने है २५ पापन के समूहन कूं दूरि करे ऐसो गङ्गारूपी तीर्थ जामें तें प्रकटभयो और पक्व हैं योग जिनके ऐसे योगीजनन ने केवल हृदयमें ध्यान जाको करयो परन्तु उनकूं भी दिखाई नहीं दियो ऐसो जो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको हम दर्शन करतभये याते हम भक्तनकूं भक्ति करिवे कूं अनुग्रह करो कदाचित् कहो कि भक्ति करिकै कहा करोगे पहिले की तुल्य तप करे जावो तहां कहे है उदय भई जो भक्ति तासूं जरयो है लिंग देह जिनको ऐसे जे पुरुषहैं तेही तुम्हारे स्वरूपकूं पाइगये और नहीं २६ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजान में श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! या प्रकार मुनीश्वर

हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और राजा धृतराष्ट्र तथा युधिष्ठिर इन सूं आज्ञा मांगिकै अपने अपने आश्रमन में जायवे की इच्छा करतभये २७ बड़ो है यश जिनको ऐसे वसुदेवजी हैं सो तिन मुनिन कूं जाते देखिकै उनके समीप जायकै सावधान होइकै यह कहतभये २८ अब वसुदेवजी कहे हैं सम्पूर्ण देवतारूप तुमहौ तिनकूं प्रणामहै हे ऋषीश्वरो! मेरी एक वार्त्ता तुम श्रवण करो जैसे कर्म करिकै कर्म्म को नाश होय सो हमें बतावो २९ श्रीकृष्णचन्द्र कूं छोडिके हमसूं कल्याण पूंछे हैं या प्रकार आश्चर्य जिनके भयो ऐसे नारदजी ब्राह्मणनते कहे हैं हे ब्राह्मणो! वसुदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनो पुत्र मानिकै जानिवे के लिये अपनो कल्याण हम सूं पूछैहैं यह बड़ो आश्चर्य नहीं है ३० श्रीकृष्णचन्द्र कूं बालक माननो अविद्या करिकै है यह कहे हैं या संसार में मनुष्यन के पास रहे ते अनादर होय जायहै जैसे गंगातीर को रहनवारो जो पुरुषहै सो गंगाछोडिकै शुद्ध होयवे के लिये और जल में स्नान करिवे कू जायहै ३१ जा श्रीकृष्ण को ज्ञान काहू कारण तें

गन्तुंमुनयोदधिरेमनः २७ तद्वीक्ष्यतानुपव्रज्य वसुदेवोमहायशाः ॥ प्रणम्यचोपसंगृह्य बभाषेदंसुयन्त्रितः २८ ॥ वसुदेवउवाच ॥ नमोवःसर्व्वदेवेभ्यऋपयःश्रोतुमर्हथ ॥ कर्म्मणाकर्म्मनिर्हारोयथास्यान्नस्तदुच्यताम् २९ ॥ नारदउवाच ॥ नातिचित्रमिदंविप्रावसुदेवोबुभुत्सया ॥ कृष्णंमत्वाऽर्भकंयन्नःपृच्छतिश्रेयआत्मनः ३० सन्निकर्षोऽत्रमर्त्यानामनादरणकारणम् ॥ गाङ्गंहित्वायथान्याम्भस्तत्रत्योयातिशुद्धये ३१ यस्यानुभूतिःकालेनलयोत्पत्त्यादिनास्यवै ॥ स्वतोऽन्यस्माच्चगुणतोनकुतश्चनरिष्यति ३२ तंक्लेशकर्म्मपरिपाकगुणप्रवाहैरव्याहतानुभवमीश्वरमद्वितीयम् ॥ प्राणादिभिःस्वविभवैरुपगूढमन्योमन्येतसूर्य्यमिवमेघहिमोपरागैः ३३ अथोचुर्मुनयोराजन्नाभाष्यानकदुन्दुभिम् ॥ सर्व्वेषांशृण्वतांराज्ञां तथैवाच्युतरामयोः ३४ कर्म्मणाकर्म्मनिर्हारएपसाधुनिरूपितः ॥ यच्छ्रद्धयायजेद्विष्णुंसर्व्वयज्ञेश्वरंमखैः ३५ चित्तस्योपशमोऽयंवैकविभिःशास्त्रचक्षुषा ॥ दर्शितःसुगमोयोगोधर्म्मश्चात्ममुदावहः ३६ अयंस्वस्त्ययनःपन्थाद्विजातेर्गृहमेधिनः ॥ यच्छ्रद्धयाप्तवित्तेनशुक्लेनेज्येतपूरुषः ३७ वित्तैषणांयज्ञदानैर्गृहैर्दारसुतैषणाम् ॥ आत्मलोकैषणांदेवकालेनविसृ

भी नहीं नष्ट होय है सोई कहे हैं जैसे काल करिकै काकरी फटिजायहै और या विश्वको उत्पत्तिकरिवो पालन और नाश करिवो इनसूं भी नहीं जायहै और जैसे आपतें बिजुली चमकिके विलाय जायहै और जैसे गुण करिकै पूर्व्वरूप को नाश होय और रूपान्तरकी प्राप्ति होय ऐसेभी नहीं जायहै ऐसे जो अद्वितीय ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्रहै तिनके प्रभावकूं क्लेश कर्म्म अर्थात् रागद्वेषादिकन करिकै करे जे कर्म्म तिन कर्म्मन के फल जो सुख दु खहैं तिन करिकै और सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इनके वारंवार प्रवाहकी तुल्य जो आइबोहै ता करिकै प्राकृतपुरुष प्राण इन्द्रिय जो अपने कार्य्य हैं तिनसूं आच्छादित माने हैं जैसे बादर तुषार और राहु के ग्रसे ते सूर्य मालूमहोयहै ऐसे ३२। ३३ इतनो कहिके पीछे हे राजन् परीक्षित्! मुनिहू ते सब राजानके श्रवण करत और तैसे ही श्रीकृष्ण और बलदेवजी के श्रवण करत वसुदेवजी कूं बोधन करत बोलतभये ३४ कर्म्म करेतें कर्म्म कटै यह भलो पूछ्यो श्रद्धापूर्व्वक यज्ञन करिकै सब यज्ञन के ईश्वर जे भगवान् हैं तिन को पूजन करो ३५ कविन ने शास्त्ररूप नेत्रन करिकै चित्तके शान्ति करनवारे आत्मा कूं आनन्द की प्राप्ति करनवारो धर्म्मरूप यज्ञ करिकै पूजन करिवो है सो सुगम उपाय दिखायो है ३६ गृहस्थ

जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं तिनकूं यही कल्याण को मार्ग है निष्काम होयके प्राप्तभयो जो शुद्धद्रव्यहै ता करिकै ईश्वर को पूजनकरै ३७ हे वसुदेवजी यज्ञकरिकै दान करिकै विवेकी पुरुष धनकी चाहना कूं त्यागै और घरमें उचित भोजन भोगनकू भोगिकै स्त्रीपुत्रनकी चाहना कूं त्यागै और या देहके मरे पीछे स्वर्गलोकादिकनकी प्राप्ति कूं नाशवान् समझिकै तिनकी चाहना कू त्यागै ग्राम में त्यागी हैं चाहना जिनने ऐसे समस्त धीर पुरुष तपकरिवे के लिये वनमें जातभये ३८ हे समर्थ वसुदेवजी ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं ते देव ऋषि पितृ इन तीनोंन को ऋण या जन्म में है तासूं उद्धार होई यज्ञ करिकै देवतान को ऋण और विद्या पढिकै ऋषिन को ऋण तथा पुत्र उत्पन्न करिकै पितरन को ऋण चुकावै इन ऋणन के चुकायवे विना जो कर्म्मन को त्यागकरै तो वह पुरुष नरकमें गिरै ३९ बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसे वसुदेव अब तुम दो ऋणन तें तो छूटिगये विद्या पढे यातें ऋषिन के ऋण सूं उद्धारभये और पुत्रभयो यातें पितरन के ऋण सूं उद्धारभये अब यज्ञ करिकै देवतान के ऋण तें उद्धार होयकै गृह कूं त्यागि संन्यास ग्रहण करौ ४० हे वसुदेवजी ! तुम बड़ीभक्ति करिकै जगत् के ईश्वर जे हरि भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये वेई हरि भगवान् आयकै -

जेद्बुधः ॥ ग्रामेत्यक्तैषणाःसर्व्वे ययुर्धीरास्तपोवनम् ३८ ऋणैस्त्रिभिर्द्विजोजातोदेवर्षिपितृणांप्रभो ॥ यज्ञाध्ययनपुत्रैस्तान्यनिस्तीर्य्यत्यजन्पतेत् ३९ त्वंत्वद्यमुक्तोद्वाभ्यांवै ऋषिपित्रोर्महामते ॥ यज्ञैर्देवर्णमुन्मुच्य निरृणोऽशरणोभव ४० वसुदेवभवान्नूनं भक्त्यापरमयाहरिम् ॥ जगतामीश्वरंप्रार्चःसयद्वांपुत्रतांगतः ४१ ॥ श्रीशुकउवाच॥ इतितद्वचनंश्रुत्वा वसुदेवोमहामनाः॥ तानृषीनृत्विजोवव्रे मूर्ध्नाऽऽनम्यप्रसाद्यच ४२ तएनमृषयोराजन् वृताधर्मेणधार्मिकम् ॥ तस्मिन्नयाजयन्क्षेत्रे मखैरुत्तमकल्पकैः ४३ तद्दीक्षायांप्रवृत्तायांवृष्णयःपुष्करस्रजः ॥ स्नाताःसुवाससोराजन्राजानःसुष्ठ्वलंकृताः ४४ तन्महिष्यश्चमुदितानिष्ककण्ठ्यःसुवाससः ॥ दीक्षाशालामुपाजग्मुरालिप्तावस्तुपाणयः ४५ नेदुर्मृदङ्गपटहशङ्खभेर्यानकादयः ॥ ननृतुर्नटनर्तक्यस्तुष्टुवुःसूतमागधाः ॥ जगुःसुकण्ठ्योगन्धर्व्यः सङ्गीतंसहभर्तृकाः ४६ तमभ्यषिञ्चन्विधिवदक्तमभ्यक्तमृत्विजः ॥ पत्नीभिरष्टादशभिः सोमराजमिवोडुभिः ४७

तुम्हारे पुत्रहोतभये ४१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! बड़ोहै मन जिनको ऐसे वसुदेवजी या प्रकार ब्राह्मणन को वचन सुनिकै मस्तक नवायकै प्रसन्न करिकै तिन ऋषिन कूं यज्ञके करनवारे ऋत्विजन को वरण करतभये ४२ हे राजन् परीक्षित् ! धर्म्म करिकै वरण जिनको करयो ऐसे जे ऋषि हैं ते धर्म्मात्मा वसुदेवजी कूं ता कुरुक्षेत्रमें उत्तम सामग्रीन करिकै यजन करावत भये ४३ हे राजन् परीक्षित् ! जा समय वसुदेवजी कूं यज्ञकी दीक्षा भई ता समय कमलन की माला पहिरिकै यादव और स्नान करिकै सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरि शृंगार करिकै राजा आवतभये ४४ और धुकधुकीहै कण्ठ में जिनके सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे केसरि चन्दनलगे ऐसी राजानकी स्त्रीहैं ते पूजाकी सामग्री कूं हाथ में लैके जहां यज्ञशालाही तहां आवति भई ४५ मृदङ्ग ढोल शङ्ख भेरी नगारेन कूं आदिलैके जे बाजे हैं ते बाजतभये नट और नृत्यकी करनवारी जे हैं ते नाचति भई सूत और जागा स्तुति करतभये सुन्दर हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे गन्धर्व्वपत्नी हैं ते अपने पतिनसहित सुन्दर गीतन कूं गावति भई ४६ नेत्रन में अञ्जन जिनने लगायो और सब अङ्गोंमें माखन लगायो ऐसे वसुदेवजी को विधिपूर्व्वक अठारह स्त्रीन सहित ऋत्विज अभिषेक करतभये जैसे तारागण सहित

चन्द्रमा को करे हैं तैसे ४७ वस्त्र कङ्कण हार नूपुर कुण्डल इन आभूषणन करिकै शोभायमान जे स्त्रीहैं तिन सहित दीक्षा जिनने लीनी मृगछाला ओढे ऐसे वसुदेवजी सुन्दर लगतभये ४८ हे महा
राज परीक्षित् ! रत्नन के गहने और रेशमी वस्त्रन कूं पहिरे ऐसे वसुदेवजी यज्ञके करावनवारे और सभामें बैठे हैं तिन सहित जैसे वृत्रासुर के मारनवारे इन्द्रके यज्ञमें तैसे सुन्दर लगतभये ४९
सम्पूर्ण जीवनके ईश्वर जो रामकृष्ण हैं ते अपने अपने बन्धुन कूं सङ्गलिये और अपने पुत्र स्त्रीनसहित अपने ऐश्वर्यन करिके सुन्दर लगतभये ५० यज्ञमें विधिपूर्वक अग्निहोत्र कूं आदिलेके हैं स्व-
रूप जिनको ऐसो और समस्त यज्ञ जिनमें ऐसे ज्योतिष्टोम दर्श पौर्णमास सूं आदि लैके यज्ञ हैं ते और थोड़े सेंहैं अंग जिनमें ऐसे सौर्यसत्रादिकहैं ते द्रव्य अर्थात् साकल्य मन्त्र कर्म इन सबके ईश्वर
जे भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये ५१ यज्ञकरे पीछे वसुदेवजी समयपै आभूषण न करिकै शोभायमान जे यज्ञ करनवारे ऋषिहैं तिनकूं गौ पृथ्वी कन्या और बड़े धन इनकी दक्षिणा हैं ते वेद
विधिसूं देतभये ५२ पत्नीसंयाज् आवभृथ्य इत्यादिक जे यज्ञहैं तिनैं करायकै बडे ऋषि जे ब्राह्मणहैं ते यजमान वसुदेवजी कूं आगे करिकै रामहृद में स्नान करत भये ५३ स्नान जिनने कर्यो

ताभिर्दुकूलवलयैर्हारनूपुरकुण्डलैः ॥ स्वलंकृताभिर्विबभौ दीक्षितोऽजिनसंवृतः ४८ तस्यर्त्विजोमहाराज रत्नकौशेयवाससः॥ ससदस्याविरेजुस्ते यथा
वृत्रहणोध्वरे ४९ तदारामश्चकृष्णश्च स्वैःस्वैर्बन्धुभिरन्वितौ ॥ रेजतुःस्वसुतैर्दारैर्जीवेशौस्वविभूतिभिः ५० ईजेऽनुयज्ञंविधिना अग्निहोत्रादिलक्षणैः॥
प्राकृतैर्वैकृतैर्यज्ञैर्द्रव्यज्ञानक्रियेश्वरम् ५१ अथर्त्विग्भ्योऽददात्काले यथाम्नातंसदक्षिणाः॥ स्वलंकृतेभ्योविप्रेभ्योगोभूकन्यामहाधनाः ५२ पत्नीसंयाजाव
भृथ्यैश्चरित्वातेमहर्षयः ॥ सस्नूरामह्रदेविप्रायजमानपुरःसराः ५३ स्नातोऽलङ्कारवासांसिवन्दिभ्योऽदात्तथास्त्रियः ॥ ततःस्वलंकृतोवर्णानाश्वभ्योऽन्ने
नपूजयत् ५४ बन्धून्सदारान्ससुतान् पारिबर्हेणभूयसा ॥ विदर्भकोशलकुरून्काशिकेकयसृञ्जयान् ५५ सदस्यर्त्विक्सुरगणान् नृभूतपितृचारणान् ॥
श्रीनिकेतमनुज्ञाप्य शंसन्तःप्रययुःक्रतुम् ५६ धृतराष्ट्रोऽनुजःपार्थाभीष्मोद्रोणःपृथायमौ॥ नारदोभगवान्व्यासःसुहृत्सम्बन्धिबान्धवाः ५७ बन्धून्परिष्व
ज्ययदून् सौहृदाक्लिन्नचेतसः ॥ ययुर्विरहकृच्छ्रेणस्वदेशांश्चापरेजनाः ५८ नन्दस्तुसहगोपालैर्बृहत्यापूजयार्चितः ॥ कृष्णरामोग्रसेनाद्यैर्न्यवात्सीद्बन्धु

ऐसे वसुदेवजी और तैसेही उनकी स्त्रीहैं ते सब वन्दीजनन कूं अपने अंगके गहने और वस्त्र देतिभई ता पीछे वसुदेवजी और आभूषण पहिरि श्वान पर्यन्त चार्यो वर्णन कूं अन्न दान करि पूज-
तभये ५४ स्त्री पुत्रन सहित जे बन्धुहैं तिनैं प्रीतिपूर्वक बहुत से द्रव्य करिकै पूजन करतभये अब कौन कौन बन्धु हैं तिनको नाम लेतहैं विदर्भ कोशल कुरु काशि केकय सृञ्जय इन देशनके
राजाहैं तिनको और सभाके बैठनवारे तथा यज्ञके करावनवारे देवतानके गण हैं तिनको तथा मनुष्य भूत पितृ चारणगण हैं तिनको पूजन करतभये सब राजा श्रीकृष्णचन्द्र कूं बोधन करिकै
यज्ञकी प्रशंसा करत अपने अपने देशनकूं जातभये ५५। ५६ धृतराष्ट्र विदुर पृथाके पुत्र युधिष्ठिर भीमसेन अर्ज्जुन भीष्मजी द्रोणाचार्य्य कुन्ती नकुल सहदेव नारद भगवान् व्यासजी और
मित्र हैं तिनसूं तथा नाते गोतेवारे बन्धु जे यादव हैं तिन सबरूं मिलिकै स्नेह करिकै खेदित हैं चित्त जिनके ऐसे विरहके कष्ट करिकै अपने अपने देशनकूं जातभये और जे मनुष्यहैं तेभी अपने

अपने देशनकूं जातभये ५७। ५८ कृष्ण राम उग्रसेनादिक यादवनने बड़ी पूजा जिनकी करी ऐसे गोपालनसहित जो नन्दरायजी हैं ते वन्धु जे यादवहैं तिनसूं स्नेह करत वसतभये ५९ प्रसन्नहै मन जिनको ऐसे वसुदेवजी सहजमें यज्ञ करिवेको मनोरथरूपी बडे समुद्रकू पार उतरिकै अर्थात् यज्ञकूं पूर्णकरिकै सब सुहृदनकूं सङ्गलैकै नन्दरायजीको हाथ पकरिकै यह कहतभये ६० अब वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! मनुष्यनकूं स्नेहरूपी फासी जो ईश्वरने करीहै ताय शूरवीर बलसूं और ज्ञानी ज्ञानसूं नहीं काटि सकेहै उपमादेवे योग्य नहीं और जाकी उपमा भी नहीं ऐसी जो मित्रता करीहै सो कदाचित् न जायगी और तुम्हारे उपकारकू जाने नहीं ऐसे हम हैं तिनसूं श्रेष्ठ जो तुमही तिनने मित्रताकरी ६१ । ६२ वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! हम असमर्थ हैं याते कछु तुम्हारो उपकार नहीं करिसकें और अब धन करिकै आ रे हैं नेत्र जिनके ऐसे हमहैं ते सम्मुख तुम बैठेहो तिनैं नहीं देखेहैं ६३ हे मानके देनवारे भय्या नन्दजी ! जो अपनो भलोचाहै तापुरुष

वत्सलः ५९ वसुदेवोऽञ्जसोत्तीर्य्य मनोरथमहार्णवम् ॥ सुहृद्वृतःप्रीतमनानन्दमाहकरेस्पृशन् ६० ॥ वसुदेवउवाच ॥ भ्रातरीशकृतः पाशोनृणांयःस्नेह संज्ञितः ॥ तंदुस्त्यजमहंमन्ये शूराणामपियोगिनाम् ६१ अस्मास्वप्रतिकल्पेयं यत्कृताज्ञेषुसत्तमैः ॥ मैत्र्यर्पिताऽफलावापि ननिवर्त्तेतकर्हिचित् ६२ प्रागकल्पाच्चकुशलं भ्रातर्वोनाचरामहि ॥ अधुनाश्रीमदान्धाक्षानपश्यामःपुरःसतः ६३ माराज्यश्रीरभूत्पुंसःश्रेयस्कामस्यमानद ॥ स्वजनानुतबन्धून्वा नपश्यतिययाऽन्धदृक् ६४ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंसौहृदशैथिल्यचित्तआनकदुन्दुभिः ॥ रुरोदतत्कृतांमैत्रीं स्मरन्नश्रुविलोचनः ६५ नन्दस्तुसख्युःप्रिय कृत्प्रेम्णागोविन्दरामयोः॥ अद्यश्वइतिमासांस्त्रीन्यदुभिर्मानितोऽवसत् ६६ ततःकामैःपूर्य्यमाणःसव्रजःसहबान्धवः ॥ परार्ध्याभरणक्षौमनानाऽनर्घ्यपरि च्छदैः ६७ वसुदेवोग्रसेनाभ्यां कृष्णोद्धवबलादिभिः ॥ दत्तमादायपारिबर्हंयापितोयदुभिर्ययौ ६८ नन्दोगोपाश्चगोप्यश्चगोविन्दचरणाम्बुजे॥ मनःक्षि प्तंपुनर्हर्त्तुमनीशामथुरांययुः ६९ बन्धुषुप्रतियातेषुवृष्णयःकृष्णदेवताः ॥ वीक्ष्यप्रावृषमासन्नां ययुर्द्वारवतींपुनः ७० जनेभ्यःकथयांचक्रुर्यदुदेवमहोत्सवम् ॥

कूं राज्य सम्पत्ति कदाचित् मतिहोउ जा सम्पत्तिसूं आधरी दृष्टिहोयजाय है तब यह पुरुष अपने नाते गोतेवारेनकूं और भय्या बन्धुनकूं नहीं देखेहै ६४ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार स्नेह करिकै शिथिलहै चित्त जिनको आसू नेत्रन में आयगये ऐसे वसुदेवजी हैं सो नन्दजीनेकरी जो मित्रता है ताको स्मरणकरिकै रोदन करतभये ६५ सखा जो वसुदेव हैं तिनपै हितकेकरनवारे यादवनने सत्कारकर्‍यो ऐसे जो नन्दजीहैं सो कृष्ण बलदेवके प्रेमकरिकै प्रातःकाल जब चलैं तब आयके कहैं बाबा भोजन करिकै जाइयो और भोजन करिकै चलैं तब कहैं दिन थोड़ो रह्यो अब कहां रात्रिमें वसोगे ऐसे आज कालिह करत करत तीनमहीना वास करतभये ६६ ताके पीछे बड़े मोलके आभूषण और रेशमी वस्त्र अनेक भांतिके बडे मोलकी वस्तुनसूं कामनान करिकै व्रजवासीन सहित नन्दरायजी पूर्ण करिदिये और वसुदेव उग्रसेनतें तथा कृष्ण उद्धव बलदेवजी सूं आदिलैकै यादवन ने दीनी जे सामग्री तिनैं ग्रहण करिकै उनने जब विदाकरे तब आवत भये ६७। ६८ नन्दगोप गोपीन को गोविन्द श्रीकृष्ण के चरणकमल में लग्यो जो मनहै ताय फेरि निकासिवे कूं असमर्थ होयकै मथुरादेशनमें आवतभये ६९ कुरुक्षेत्र में ते सब बन्धु

चलेगये तब श्रीकृष्णचन्द्र हैं देवता जिनके ऐसे यादव वर्षाऋतुकूं समीप आई देखिकै फेरि द्वारकापुरी कू आवतभये ७० सब यादवहैं ते वसुदेवजी के यज्ञभयो है ताय और कुरुक्षेत्रकी यात्रा में सुहृदनको दर्शन आदिक भयो है ताय प्रजानतें कहतभये ७१ इति श्रीमन्महाभागवततात्पर्यरूपिणिदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेतीर्थयात्रानुवर्णननामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

(पञ्चाशीतितमेरामकृष्णौसम्प्रार्थितौसुतौ ॥ पित्रेज्ञानन्गोमात्रेमृतान्पुत्रानयच्छताम् १ नन्दयित्वाकुरुक्षेत्रयात्रायांसुहृदोबहून् ॥ तत्त्वज्ञानंततःपित्रोरादिशन्मृतसूनुभिः २ पचासीवें अध्यायमें भले प्रकार प्रार्थना कियेगये बलदेव और कृष्ण ये दोनों पुत्र वसुदेवजी को ज्ञान और देवकीजी कों उनके मरेहुये पुत्रनकूं देतेभये १ कुरुक्षेत्रकी यात्रा में बहुत मित्रनकों आनन्दितकर मृतक वसुदेव देवकी जी के पुत्रनको लाकर उनको तत्त्वज्ञान देतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कुरुक्षेत्रकी यात्राकरे पीछे एकसमय आयके करो है चरणनमें प्रणाम जिनने ऐसे पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेवजी हैं तिनकी प्रशंसा करिकै प्रीतिपूर्वक वसुदेवजी बोलतभये १ पुत्रन के प्रभाव को जनावननारो जो मुनिन को कह्यो वचन कि तुम्हारे पुत्र परमेश्वर हैं ऐसे सुनिके श्री-

यदाऽऽसीत्तीर्थयात्रायांसुहृत्संदर्शनादिकम् ७१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेतीर्थयात्राऽनुवर्णनंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥

श्रीबादरायणिरुवाच ॥ अथैकदाऽऽत्मजौप्राप्तौ कृतपादाभिवन्दनौ ॥ वसुदेवोऽभिनन्द्याह प्रीत्यासङ्कर्षणाच्युतौ १ मुनीनांसवचःश्रुत्वा पुत्रयोर्धाम सूचकम् ॥ तद्वीर्यैर्जातविश्रम्भः परिभाष्याभ्यभाषत २ कृष्णकृष्णमहायोगिन् सङ्कर्षणसनातन ॥ जानेवामस्ययत्साक्षात्प्रधानपुरुषौपरौ ३ यत्रयेनय तोयस्य यस्मैयद्यद्यथायदा ॥ स्यादिदंभगवान्साक्षात्प्रधानपुरुषेश्वर ४ एतन्नानाविधंविश्वमात्मसृष्टमधोऽक्षज ॥ आत्मनाऽनुप्रविश्यात्मन् प्राणोजी वोबिभर्ष्यजः ५ प्राणादीनांविश्वसृजां शक्तयोयाःपरस्यताः ॥ पारतन्त्र्याद्वैसादृश्याद्द्वयोश्चेष्टैवचेष्टताम् ६ कान्तिस्तेजःप्रभासत्ताचन्द्राग्न्यर्कर्क्षविद्यु

कृष्ण बलदेव के पराक्रम देखिकै भयो है विश्वास जिनके ऐसे वसुदेव जी सम्बोधन देकै बोलतभये २ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! हे संकर्षण ! हे सनातन ! या विश्वके कारण जे प्रकृति पुरुष हैं तिनके भी कारण ऐसे साक्षात् ईश्वर तुमहौ यह मैं जानूंहूं ३ जामें जा करिकै जाते जाको सम्बन्धी जाके अर्थ जो जो जैसे जा समय यह विश्व होय है सो समस्त प्रकृतिपुरुष के साक्षात् भगवान् ईश्वर तुमहौ ४ हे अधोक्षज ! नेत्रननें देखिवे में न आवो काननतें सुनिवे में न आवो वाणी तें कहिवेमें न आवो ऐसे कोई इन्द्रिय जामें पहुँचे नहीं हे सबके आत्मा ! आपने रच्यो जो यह नानाप्रकारको विश्वहै तामें अपनपे करिकै प्रवेश होयकै प्राणरूप होयकै अजन्मा जो तुमहौ सो ज्ञानशक्ति कूं धारण करोहौ ५ पृथक् पृथक् है शक्ति जिनकी ऐसे प्राणादिक या विश्व के कारण जानिवे में आवे है परमेश्वर कूं कारणरूप करिकै सर्वरूप कैसे कहोहौ यह शंका जब भई ताको समाधान यह है कि प्राणादिकन में जे शक्ति हैं ते ईश्वरकी है जैसे विश्व के करननारे प्राण ते आदिलैके जे तत्त्व हैं तिनमें जे शक्ति है ते परमकारण जो ईश्वर है ताहीकी है काहेतें प्राणादिक ईश्वरके अधीन हैं ता कारण और जैसे तीरमें वेधिवेकी स्वतन्त्र शक्ति नहीं है किन्तु पुरुष की शक्तिसूं वेधे है ऐसे प्राणादिकन में ईश्वर शक्तिहै प्राणादिक जड़हैं और ईश्वर चैतन्यहै जड़ पदार्थ कूं चैतन्यकी अधीनता योग्यहै तहा कहे हैं प्राणादिकन में शक्ति नहीं है तो क्रिया कैसे

करे हैं ताको उत्तर कहे हैं चेष्टाकरें जे प्राणादिक हैं तिनकी चेष्टा यहां कछु शक्ति नहीं है जैसे पवनकी शक्ति करिके तृण हले है ऐसे क्रिया करे हैं ६ अब पराधीनता कहे हैं चन्द्रमा में जो प्रकाश है और अग्नि में जो तेजहै और सूर्य्य में जो प्रकाश है तथा नक्षत्र में बिजुलीन में जो चमक है सो सब तुमहीं हौ और पर्व्वत में जो स्थिरता है सो तुम्हारोही गुण है तथा पृथ्वी में सबको भार धारण करिवो और सुगन्ध ये सब तुमहीं हौ तुम्हारी शक्ति है ७ हे देव! जल पिये ते तृप्ति होय जाय प्राण बचि जाय यह जलन में तुम्हारीही शक्ति है वे जल और जलनमें रसगुणहै सो तुमहींहौ और हे ईश्वर ! पवनमें ओज अर्थात् मनको बल और इन्द्रियनको बल देहको बल चेष्टा चलनो यह सब तुम्हारोही रूपहै ८ दिशान में जो खालीपन है सो और दिशाहै ते सब तुम्हारोही रूपहैं और आकाश तथा आकाशमें जो शब्द रूप गुणहै सो सब तुम्हारोही रूपहै वाणी आकार और नामरूप कहिवेमें आवै सो सब तुमहींहौ ९ नेत्रनमें दर्शन शक्ति और कानननमें श्रवण शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहणकरिवे की शक्ति तुमहीं हौ और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवताहैं ते तुमहींहौ देवता इन्द्रियनकू मेरे

तर्प्पणंप्राणनमपांदेवत्वंताश्चतद्रसः ॥ ओजःसहोबलंचेष्टागतिर्वायोस्तवेश्वर ८ दिशांत्वमवकाशोऽसि दिशःखंस्फोटआश्रयः ॥ नादोवर्णस्त्वमोङ्कारआकृतीनांपृथक्कृतिः ९ इन्द्रियंत्विन्द्रियाणांत्वंदेवाश्चतदनुग्रहः ॥ अवबोधोभवान्बुद्धेर्जीवस्यानुस्मृतिः सती १० भूतानामसिभूतादिरिन्द्रियाणांचतैजसः ॥ वैकारिकोविकल्पानांप्रधानमनुशायिनाम् ११ नश्वरेष्विहभावेषु तदसित्वमनश्वरम् ॥ यथाद्रव्यविकारेषु द्रव्यमात्रंनिरूपितम् १२ सत्त्वंरजस्तमइतिगुणास्तद्वृत्तयश्चयाः ॥ त्वय्यद्धाब्रह्मणिपरेकल्पितायोगमायया १३ तस्मान्नसन्त्यमीभावायर्हित्वयिविकल्पिताः ॥ त्वंचामीषुविकारेषुह्यन्यदाव्यावहारिकः १४ गुणप्रवाहएतस्मिन्नबुधास्त्वखिलात्मनः ॥ गतिंसूक्ष्मामबोधेन संसरन्तीहकर्म्मभिः १५ यदृच्छयानृतांप्राप्य सुकल्पामिहदुर्लभाम् ॥ स्वार्थेप्रमत्तस्यवयोगतंत्वन्माययेश्वर १६ असावहंममैवैते देहेचास्यान्वयादिषु ॥ स्नेहपाशैर्निबध्नाति

यत्स्थैर्यंभूभृतांभूमेर्वृत्तिर्गन्धोऽर्थतोभवान् ७

है यह तुम्हारी शक्तिहै बुद्धिमें निश्चय करिवेकी जो शक्तिहै सो तुमहींहौ और जीवन कू श्रेष्ठवार्त्ताको स्मरणहै यह तुम्हारी शक्तिहै १० पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इन पञ्चभूतनको कारण तामस अहङ्कार तुमहींहौ और इन्द्रिय जातें भई ऐसो राजस अहंकार तुमहींहौ देवता जाते भये ऐसो सात्त्विक अहङ्कार तुमहींहौ तथा जीवन कूं संसार जातेंहोइ ऐसी माया तुमहीं हौ ११ नाशवान् पदार्थन में जो शेषरहै अर्थात् जाको नाश नहीं होय ऐसे तुमहींहौ जैसे मृत्तिका सुवर्ण के बने जे घड़ा मुँदरी कड़ा इत्यादिक सब नाशवान्हैं मृत्तिका सुवर्ण को नाश नहीं होय है तैसे १२ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इनकी जे वृत्ति हैं ते साक्षात् परब्रह्म जो तुमहौ तिनमें योगमाया करिकै कल्पितहैं १३ जाते कल्पितहै ताही कारण ते तीनों गुणनसू आदि लेके जे पदार्थ हैं ते सब तुम्हारेही विषै कल्पितहैं तो कैसे प्रतीत होयहैं तहां कहे हैं कल्पना करिवे के समय प्रतीतमात्रही तुममें होयहैं और तुम उन पदार्थन में कारणरूप करिकै रहोहो और समय व्यवहार जिनमें नहीं भेद जिनमें नहीं ऐसे जब इन तत्त्वनको नाश होय जायहै तब तुमहीं शेष रहोहो १४ यह जो गुणनको प्रवाहरूप संसारहै तामें सब के आत्मा जो तुमहौ तिनकी संसार ते न्यारी जो गति है ताय नहीं

जाने ऐसे जे अज्ञानी पुरुषहैं तिनको देहमें जो अभिमानहै तासूं करे जे कर्म्म हैं तिन करिकै या संसार में जन्मे हैं १५ सुन्दर हाथ पाव नाक कान सब इन्द्रिय जामें बहुत दुर्लभ ऐसे देह कूं या संसारमें कोई एक पुण्य के फल सूं पाइके स्वार्थ में भूलि रह्यो ऐसो जो मैं हूं ताको जो अवस्था है सो ईश्वर तुम्हारी माया करिकै ह्वाईगई १६ मैं ब्राह्मणहूं क्षत्रियहूं या प्रकार देहमें अभिमान और या देहके सम्बन्धी स्त्री पुत्रादिक मेरे हैं यह अभिमान ऐसे स्नेहके रस्सान ते यह जगत् तुमने बांधि राख्यो है १७ हम तुम्हारे पुत्रहैं तुम कहा हमारी स्तुति करोहो तहां वसुदेवजी कहै हैं तुम हमारे पुत्र नहींहो माया और मायाकी ओट देखनवारो पुरुष इनके ईश्वर साक्षात् तुमही पृथ्वी पै क्षत्रियनको जो भारहै ताके उद्धार के लिये नाश करिवेकूं प्रकट भये हो १८ ता कारण हे दीनबन्धु ! शरण प्राप्त भयो जो पुरुषहै ताके संसारके भयके दूरिकरनवारे ऐसे जो तुम्हारे चरणारविन्द हैं तिनकी मैं शरण प्राप्त भयोहूं तुम तो बडे सुखी हौ वृथा क्यों खेद करोहौ ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहैं तहां वसुदेवजी कहै हैं इतनी जो विषयकी लालसाहै ता करिकै मरणधर्म्मा शरीर कूं आत्मा मान्यो और तुम परमेश्वर कूं पुत्र मान्यो १९ प्रथम जन्म में

भवान्सर्व्वमिदंजगत् १७ युवांननःसुतौसाक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरौ ॥ भूभारक्षत्रक्षपणअवतीर्णौतथात्थह १८ तत्तेगतोऽस्म्यरणमद्यपदारविन्दमापन्नसंसृतिभयापहमार्त्तबन्धो ॥ एतावताऽलमलमिन्द्रियलालसेन मर्त्यात्मदृक्त्वयिपरेयदपत्यबुद्धिः १९ सूतीगृहेननुजगादभवानजोनौसंजज्ञइत्यनुयुगंनिजधर्म्मगुप्त्यै ॥ नानातनूर्गगनवच्छिदधज्जहासिकोवेदभूम्नउरुगायविभूतिमायाम् २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आकर्ण्येत्थंपितुर्वाक्यं भगवान्सात्वतर्षभः ॥ प्रत्याहप्रश्रयानम्रः प्रहसञ्छ्लक्ष्णयागिरा २१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वचोवःसमवेतार्थं तातैतदुपमन्महे ॥ यन्नःपुत्रान्समुद्दिश्य तत्त्वग्रामउदाहृतः २२ अहंयूयमसावार्यइमेचद्वारकौकसः ॥ सर्व्वेऽप्येवंयदुश्रेष्ठविमृश्याःसचराचरम् २३ आत्माह्येकःस्वयंज्योतिर्नित्योऽन्योनिर्गुणोगुणैः ॥ आत्मसृष्टैस्तत्कृतेषुभूतेषुबहुधेयते २४ खंवायुर्ज्योतिरापोभूस्तत्कृतेषुयथाशयम् ॥ आविस्तिरोऽल्पभूर्य्येकोनानात्वंयात्यसावपि २५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगवताराजन्

सुतपा पृश्नि भये फेरि कश्यप अदिति भये अब वसुदेव देवकी भये यह तीन जो है तिनके तीनबार अपने धर्म्मकी रक्षा करिवे के लिये अजन्मा आयके जन्म्यो हूं यह आपने सूतिकागृहमें हम सूं कहीरही तुम्हारे आगे जाने जन्म लियो है यह चतुर्भुज देवहै ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहैं तहां वसुदेवजी कहे हैं आकाशकी तुल्य निर्म्मल जो तुमहौ सो अनेक रूप धारण करोहो हे उरुगाय बहुत प्रकार गायवेमें आवो ! व्यापकहो तिनकी वैभवरूप जो मायाहै ताय कौन जाने है २० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! यादवन में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार पिताको वचन सुनिके अधीनतापूर्व्वक नम्रहोयके हँसके मनोहर वाणीसूं बोलतभये २१ श्रीकृष्णभगवान् कहे हैं हे पिता ! हम पुत्रनके ऊपर धरिके सब तत्त्व कहि दीनो यह जो तुम्हारो वचनहै ताय योग्य मानूंहूं २२ हे यादवन में श्रेष्ठ पिता वसुदेवजी ! तुम और बड़े भय्या बलदेवजी तथा जे सब द्वारकावासी यादव हैं तिन और स्थावर जंगम जगत्है ताय ब्रह्मरूप जानो २३ यहां एक शङ्का है नाना विकारवान् हैं तिनकूं ब्रह्मरूपता कैसे बने ताको उत्तर दृष्टान्त सूं कहे हैं आत्मा एक स्वयंप्रकाश नित्य है सबते पृथक् है निर्गुणहै आपने रचे जे सत्त्वगुण रजोगुण तमो-

गुण तिन करिकै उत्पन्न जे देह हैं तिनमें बहुत प्रकार प्रतीत होइहै फेरि जैसी देह तामें तैसोही प्रतीत होइ है जैसे आकाश पवन ज्योति जल पृथ्वी ये पञ्चभूत घटपटादि पदार्थन में कहूं प्रकट कहूं अन्तर्द्धान कहूं थोड़े कहूं बहुत प्रतीत होइ हैं ऐसे एक आत्मा जो ब्रह्मस्वरूप है सो अनेकरूप करिकै प्रतीत होइ है २४ । २५ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को कह्यो वचन सुनिकै हरि गयो है भेद भाव जिनको प्रसन्न मन होयके वसुदेवजी चुप होइगये २६ वसुदेवजी स्तुति करचुके ताके पीछे हे कौरवन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! सर्व्वदेवता रूप जो देवकी है सो पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनने सान्दीपिनि गुरुके मरे पुत्र लाय दिये यह सुनिके आश्चर्य्य मानिके कंसने मारे जे पुत्र हैं तिनकी सुधि करिकै व्याकुल होयके नैनन में आंसू आय गये ऐसी कृपण की तुल्य होयकै बोलति भई २७ । २८ देवकी कहै हैं हे राम! हे राम! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिबे में आवे है स्वरूप जिनको ! हे कृष्ण! हे योगेश्वरनके ईश्वर ! विश्वके रचनवारे ब्रह्मादिक है तिनके ईश्वर आदिपुरुष तुम हो तिनें मैं जानूंहूं २९ कालने दूरि करे है धीरज जिनके शास्त्र मर्य्यादा जिनने त्यागि दीनी पृथ्वी पै भार जिनको भयो ऐसे जे

वसुदेवउदाहृतः ॥ श्रुत्वाविनष्टनानाधीस्तूष्णींप्रीतमनाअभूत् २६ अथतत्रकुरुश्रेष्ठ देवकीसर्व्वदेवता ॥ ॥ श्रुत्वानीतंगुरोःपुत्रमात्मजाभ्यांसुविस्मिता
२७ कृष्णरामौसमाश्राव्य पुत्रान्कंसविहिंसितान् ॥ स्मरन्तीकृपणंप्राह वैक्लव्यादश्रुलोचना २८ ॥ देवक्युवाच ॥ रामरामाप्रमेयात्मन् कृष्णयोगे
श्वरेश्वर ॥ वेदाहंवांविश्वसृजामीश्वरावादिपूरुषौ २९ कालविध्वस्तसत्त्वानां राज्ञामुच्छास्त्रवर्त्तिनाम् ॥ भूमेर्भारायमाणानामवतीर्णौकिलाद्यमे ३०
यस्यांशांशांशभागेन विश्वोत्पत्तिलयोदयाः ॥ भवन्तिकिलविश्वात्मंस्तंत्वाद्याहंगतिंगता ३१ चिरान्मृतसुतादाने गुरुणाकिलचोदितौ ॥ आनि
न्यथुःपितृस्थानाद्गुरवेगुरुदक्षिणाम् ३२ तथामेकुरुतंकामं युवांयोगेश्वरेश्वरौ ॥ भोजराजहतान्पुत्रान् कामयेद्रष्टुमाहृतान् ॥ ३३ ॥ ऋषिरुवाच ॥
एवंसंचोदितौमात्रा रामःकृष्णश्चभारत ॥ सुतलंसंविविशतुर्योगमायामुपाश्रितौ ३४ तस्मिन्प्रविष्टावुपलभ्यदैत्यराड् विश्वात्मदैवंसुतरांतथा
त्मनः ॥ तद्दर्शनाह्लादपरिप्लुताशयः सद्यःसमुत्थायननामसान्वयः ३५ तयोःसमानीयवरासनंमुदा निविष्टयोस्तत्रमहात्मनोस्तयोः ॥ दधारपादाववने

राजा हैं तिनके नाश करिबे के लिये मेरे आयकै प्रकट भये हौ ३० हे सब के कारण! हे विश्व के आत्मा! तुम्हारो अंश पुरुष है ताको अंश माया ता मायाके अंश सत्त्व रज तम इन तीनों गुणन के परमाणुमात्र लेश करिकै या विश्वके उत्पत्ति पालन प्रलय होत हैं ऐसे जे तुमहौ तिनकी मैं शरण प्राप्त भयो हूं ३१ बहुत दिनन के मरे पुत्रन के लायबे कू गुरु ने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे तुम यमलोक ते गुरुके मरे पुत्र लायके दक्षिणा में देत भये ताहीप्रकार हे योगेश्वरनके ईश्वर! कंसने मारे जे मेरे पुत्रहैं तिनें मैं देख्यो चाहूंहूं तुम लायके मेरे मनोरथ कूं पूरो करौ ३२ । ३३ अब ऋषीश्वर कहे हैं हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! माता देवकी ने या प्रकार जिनते कही ऐसे जे राम कृष्ण हैं ते योगमायाको आश्रय लेके सुतललोक में प्रवेश करत भये ३४ तहां दैत्य न को राजा जो बलि है सो विश्वके आत्मदेवता और अपने इष्टदेव ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं तिनें सुतललोकमें प्रविष्टहुये देखिकै उनके दर्शन सूं आनन्द होयके परिपूर्ण है अन्तःकरण जाको

ऐसो परिवारसहित शीघ्र उठिके नमस्कार करत भयो ३५ राजा बलि बड़े आनन्दपूर्वक सुन्दर आसन बिछावत भयो ता आसनपै बैठे जे महात्मा श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनके चरणारविन्द को धोवन जल है ताय कुटुम्बसहित अपने माथे पै चढावत भयो जिन चरणारविंद को धोवन जल गङ्गा ब्रह्मासूं आदिलेके समस्त जगत्कूं पवित्र करे है ३६ राजा बलि बहुत मोलके वस्त्र आभूषण चन्दन अतर अरगजा पान दीपक अमृतकी तुल्य स्वादिष्ठ भोजनादिक है तिन करिकै और पूजन की जे वस्तु हैं तिनकरिकै तथा अपनो गोत्र द्रव्य देहकू अर्पण करिकै बड़े वैभव सूं श्रीकृष्ण बलदेवको पूजन करत भयो ३७ हे राजन् परीक्षित्! बलिराजा भगवान् के चरणारविन्दकूं वारंवार मस्तक पै धरिकै प्रेम करिकै आर्द्रबुद्धि है ता करिकै आनन्द के आंसू हैं नेत्रन में जिनके देह में जिनके रोमाञ्च होय आये ऐसे गद्गद अक्षर बोलत भये ३८ अब राजा बलि कहै हैं समस्त विश्व जिनने फणके ऊपर धरि राख्यो ऐसे अनन्त शेषरूप तुम हो तिनकूं प्रणाम है और सब जगत् के

निज्यतज्जलं सवृन्द आब्रह्मपुनद्यदम्बुह ३६ समर्हयामास सतौविभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः ॥ ताम्बूलदीपाऽमृतभक्षणादिभिःस्वगोत्रवित्तात्मसमर्पणेनच ३७ सइन्द्रसेनोभगवत्पदाम्बुजं बिभ्रन्मुहुःप्रेमविभिन्नयाधिया ॥ उवाचहानन्दजलाकुलेक्षणःप्रहृष्टरोमानृपगद्गदाक्षरम् ३८ ॥ बलिरुवाच ॥ नमोऽनन्तायबृहते नमःकृष्णायवेधसे ॥ साङ्ख्ययोगवितानाय ब्रह्मणेपरमात्मने ३९ दर्शनंवांहिभूतानांदुष्प्रापञ्चाप्यदुर्लभम् ॥ रजस्तमःस्वभावानां यन्नःप्राप्तौयदृच्छया ४० दैत्यदानवगन्धर्वाःसिद्धविद्याध्रचारणाः ॥ यक्षरक्षःपिशाचाश्च भूतप्रमथनायकाः ४१ विशुद्धसत्त्वधाम्न्यद्धा त्वयिशास्त्रशरीरिणि ॥ नित्यंनिबद्धवैरास्तेवयञ्चान्येचतादृशाः ४२ केचनोद्बद्धवैरेण भक्त्याकेचनकामतः ॥ नतथासत्त्वसंरब्धाःसन्निकृष्टाःसुरादयः ४३ इदमित्थमितिप्रायस्तवयोगेश्वरेश्वर ॥ नविन्दन्त्यपियोगेशायोगमायांकुतोवयम् ४४ तन्नःप्रसीदनिरपेक्षविमृग्ययुष्मत्पादारविन्दधिषणान्यगृहान्धकूपात् ॥ निष्क्रम्यविश्वशरणाङ्घ्र्युपलब्धवृत्तिःशान्तोयथैकउतसर्वसखैश्चरामि ४५ शाध्यस्मानीशितव्येश निष्पापान्कुरुनःप्रभो ॥ पुमान्यच्छ्रद्धयातिष्ठंश्चोदना

रचनवारे कृष्ण तुमहौ तिनकूं नमस्कार है साङ्ख्यशास्त्र योगशास्त्र इनके विस्तार करनवारे ब्रह्म परमात्मा जो तुमहौ तिनकूं प्रणाम है ३९ योगीश्वरन कूं भी तुम्हारो दर्शन दुर्लभ है सो हमकूं भयो यह आश्चर्य नहीं है यद्यपि प्राणीनकूं तुम्हारो दर्शन दुर्लभ है तथापि तुम्हारी कृपा करिकै काहू काहू कूं सुलभ होय जाय है याते रजोगुणी तमोगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे हम असुरन कूं अनायासपूर्वक आपने दर्शन दियो ४० बड़ो आश्चर्य है शत्रु हमहैं ते सत्त्वगुणी भक्तन ते भी बडभागी हैं यह कहे हैं—दैत्य दानव गन्धर्व सिद्ध विद्याधर चारण यक्ष राक्षस पिशाच भूत प्रमथनमें मुख्य हैं ते ४१ शास्त्रके रक्षा करनवारे सत्त्वगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे जे तुमहौ तिनसूं नित्यशत्रुता हमने करी तथा औरनने भी वैर बांधि राख्यो है ४२ कोई एक शिशुपालादिक है ते वैर करिकै जो भक्ति है तासू तुमकूं जैसे पायगये और गोपीन ते आदिलेके कामभक्ति करिकै जैसे तुमकूं पायगये तैसे सत्त्वगुणी देवता तुमकूं न प्राप्तभये ४३ हे योगेश्वरन के ईश्वर ! या प्रकार ऐसी जो तुम्हारी योगमाया है ताय योगेश्वरहू नहीं जाने है तो हम असुर कहा जानें ४४ ताते हमपै आप प्रसन्न होउ जैसे कोई वातकी जिनके इच्छा नहीं ऐसे पुरुष जाकूं ढूंढै ऐसो जो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको

आश्रय लैके चरणारविन्दते न्यारो जो घररूप कूप है ताते निकसि कै विश्वको रक्षा करनवारे जे वृक्ष हैं तिनकी जरन में आपही ते गिरे जे फल फूल हैं तिनको भोजनकरूं ऐसो मैं शान्त होयकै अकेलो विचरूं अथवा सवके सहाय करनवारे जे महात्मा पुरुष हैं तिनके संग विचरूं ४५ थोड़ो जिनको पुण्य ऐसे पुरुषनकूं एतादृश भाव कैसे होय ऐसे जो कदाचित् भगवान् कहैं तहा राजा वलि कहे हैं जैसे एतादृशभाव होय तैसे हमकूं शिक्षा देवे कूं योग्यहौ हे सव जीवनके ईश ! हे प्रभो ! हमकूं शिक्षा देउ और हमारे पापनकूं दूरि करो जो पुरुष श्रद्धा करिकै तुम्हारी आज्ञा कूं करै वह विधि निषेधतें मुक्त होयजायहै ४६ अव भगवान् श्रीकृष्ण कहे हैं यह जो स्वायम्भुव मन्वन्तरहै तामें मरीचि प्रजापतिके ऊर्णा स्त्री में छः पुत्र होत भये एक समय देवतारूप छैओ पुत्रहैं ते अपनी कन्या सरस्वतीके साथ मैथुनसूं रमण करनेमें उद्यत जो ब्रह्माहै ताय देखिके हँसतभये ४७ ता पापकर्मसूं असुरयोनिकूं पावतभये ताही समय हिरण्यकशिपु के जन्म लेतभये तेई छैओ हिरण्यकशिपुके यहा ते योगमायाके प्रेरे—हे राजन्परीक्षित् ! देवकी के उदरमें जन्म लेत भये तेई कसने मारे सो अव तुम्हारे पासहैं इनें देवकी अपने पुत्र मानिके शोच

तेनासुरीमगन्योनिमधुना याविमुच्यते ४६ श्रीभगवानुवाच ॥ आसन्मरीचेःषट्पुत्राऊर्णायांप्रथमेऽन्तरे ॥ देवाःकंजहसुर्वीक्ष्यसुतांयभितुमुद्यतम् ४७ तेनासुरीमगन्योनिमधुना ... ऽवद्यकर्म्मणा ॥ हिरण्यकशिपोर्जाता नीतास्तेयोगमायया ४८ देवक्याउदरेजाताराजन्कंसविहिंसिताः ॥ सातान्शोचत्यात्मजान्स्वांस्तइमेऽध्यास तेऽन्तिके ४६ इतएतान्प्रणेष्यामोमातृशोकापनुत्तये ॥ ततःशापाद्विनिर्मुक्तालोकंयास्यन्तिविज्वराः ५० स्मरोद्गीथःपरिष्वङ्गःपतङ्गःक्षुद्रभृद्घृणी ॥ षडिमे मत्प्रसादेन पुनर्यास्यन्तिमद्गतिम् ५१ इत्युक्तातान्समादायइन्द्रसेनेनपूजितौ ॥ पुनर्द्वारवतीमेत्य मातुःपुत्रानयच्छताम् ५२ तान्दृष्ट्वावालकान्देवी पुत्रस्नेहस्नुतस्तनी ॥ परिष्वज्याङ्कमारोप्यमूर्ध्न्यजिघ्रदभीक्ष्णशः ५३ अपाययत्स्तनंप्रीता सुतस्पर्शपरिस्नुता ॥ मोहितामायया विष्णोर्ययासृष्टिःप्र वर्त्तते ५४ पीत्वाऽमृतंपयस्तस्याः पीतशेषंगदाभृतः ॥ नारायणाङ्गसंस्पर्शप्रतिलब्धात्मदर्शनाः ५५ तेनमस्कृत्यगोविन्दं देवकींपितरंवलम् ॥ मिषतांस

करे है ४८ । ४६ माता देवकी के शोक दूरि करिवे के निमित्त यहां ते इन छैओ पुत्रनकूं ले जायँगे ता पीछे शापते छूटिके खेदरहित होयके देवलोक में जायँगे ५० स्मर उद्गीथ परिष्वङ्ग पतंग क्षुद्रभृत् घृणी ये छः पुत्र हैं ते मेरे प्रसाद करिकै मुक्त होजायँगे ५१ ऐसे जब कही तब राजा वलिने पूजन जिनको कर्यो ऐसे श्रीकृष्ण वलदेव तिन पुत्रन कू संग लैके द्वारकापुरी में आयके माता देवकी कूं पुत्र देतभये ५२ पुनन में जो स्नेह ता करिकै स्तननमें दुग्ध चुवै ऐसी देवकी तिन वालकन कूं देखिकै गोद में वैठायके छातीते लगायकै वेर वेर माथो सूंघति भई ५३ सृष्टिकी उत्पन्न करनवारी जो विष्णु भगवान् की माया है तासूं मोहित और पुनन को जो छाती लगायवो तामें मग्न ऐसी जो देवकी है सो प्रसन्न होयके पुत्रन कूं स्तन प्यावति भई ५४ गदा के धारण करनवारे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पीवेतें वच्यो अर्थात् भगवान् को प्रसाद ऐसो जो वह अमृतरूप देवकी को दुग्ध है ताय पान करिकै और नारायण श्रीकृष्णचन्द्रके अंगके स्पर्श करेतें हम देवता हैं यह ज्ञान जिनकूं भयो ५५ ऐसे जे वालक हैं ते गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र कूं और देवकी तथा पिता वसुदेवजी कूं और वलदेवजी कूं नमस्कार करिकै सव प्राणीन के देखत देवतान को

धाम जो देवलोक है तामें जात भये ५६ हे राजन्परीक्षित् ! प्रकाशमान जो देवकी है सो मरे पुत्रन को आयवो फेरि जायवो है ताय देखिकै विस्मित होयके श्रीकृष्णकी रची माया मानति भई ५७ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! अनन्त है पराक्रम जिनको ऐसे जो परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्रम को अन्त नहीं जिनके या प्रकारके अद्भुत चरित्र हैं ५८ अब श्रीसूत जी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासपुत्र जे शुकदेवजी हैं तिननें वर्णन करे और समस्त जगत्के पापनके दूरि करनवारे भक्तन के कानन कूं आनन्ददायक ऐसी अमृतरूपी कीर्ति जिनकी ऐसे मुरारि श्रीकृष्णभगवान् के चरित्रनकूं भगवान् में चित्त लगायके जो पुरुष श्रवणकरे अथवा श्रवण करावै वह पुरुष कालको और मायाको जामें जोर नहीं ऐसो जो भगवान् को धामहै ताय पावे है ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमृताग्रजानयनंनामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(षडशीतितमेदम्भात्सुभद्रामर्ज्जुनोऽहरत् ॥ गत्वाचमिथिलांकृष्णो नृपविप्रावनन्दयत् १ पित्रोःस्वज्ञानमादिश्य सुभद्रांफाल्गुनायच ॥ जगाममिथिलांकृष्णःस्वभक्तप्रियंकृत्ततः २ छियासीवें

र्गभूतानांययुर्धामदिवौकसाम् ५६ तंदृष्ट्वादेवकीदेवीमृतागमननिर्गमम् ॥ मेनेसुविस्मितामायां कृष्णस्यरचितांनृप ५७ एवंविधान्यद्भुतानि कृष्णस्यप रमात्मनः ॥ वीर्य्याण्यनन्तवीर्य्यस्यसन्त्यनन्तानिभारत ५८ सूतउवाच ॥ यइदमनुशृणोतिश्रावयेद्वामुरारेश्चरितममृतकीर्त्तेर्वर्णितंव्यासपुत्रैः ॥ जगद घभिदलंतद्भक्तसत्कर्णपूरं भगवतिकृतचित्तोयातितत्क्षेमधाम ५९ ॥ इतिश्रीमद्भागवतेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमृताग्रजानयनन्नामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः८५

राजोवाच ॥ ब्रह्मन्वेदितुमिच्छामः स्वसारंरामकृष्णयोः ॥ यथोपयेमेविजयोयाममासीत्पितामही १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अर्ज्जुनस्तीर्थयात्रायां प र्य्यटन्नवनींप्रभुः ॥ गतःप्रभासमशृणोन्मातुलेयींसआत्मनः २ दुर्य्योधनायरामस्तां दास्यतीतिनचापरे ॥ तल्लिप्सुःसयतिर्भूत्वा त्रिदण्डीद्वारकामगात् ३ तत्रवैवार्षिकान्मासानवात्सीत्स्वार्थसाधकः ॥ पौरैःसभाजितोऽभीक्ष्णं रामेणाजानताचसः ४ एकदागृहमानीय आतिथ्येननिमन्त्र्यतम् ॥ श्रद्धयोपहृतं

अध्याय में अर्जुन दम्भ सूं सुभद्रा को हरतेभये और कृष्णजी मिथिलापुरीमों जाकर राजा और ब्राह्मण को आनन्दित करतेभये १ अपने भक्त के प्रिय करनेवाले कृष्णजी पिता और माताको अपना ज्ञान देकर और सुभद्राको अर्जुनको देकर फिर मिथिलापुरीको जातेभये २) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! रामकृष्ण की बहिनि जो सुभद्राहती ताय अर्जुन जैसे ब्याहतभये जो सुभद्रा हमारी दादी होतिभई यह हम जाननेकी इच्छाकरे हैं १ यह प्रश्न सुनिकै श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय समर्थ अर्ज्जुन है सो तीर्थयात्रा करिवे कूं पृथ्वी में फिरत प्रभास तीर्थ में जातभयो तहां जायके अपने मामा की पुत्री सुभद्रा है ताय वलदेवजी दुर्य्योधन कूं विवाह देंगे और वसुदेवादिक नहीं देंगे यह बात सुनिकै ता सुभद्रा के लेवे की है इच्छा जाके ऐसो अर्ज्जुन संन्यासी बनिकै तीनदण्ड धारण करिकै द्वारकापुरीमें आवतभयो २। ३ अपने कार्य्य कूं सिद्ध करयो चाहै ऐसो अर्ज्जुन चार महीना वर्षाके द्वारकापुरी में वितावतभयो द्वारकावासी मनुष्यन ने आयके वारवार अर्ज्जुन को सन्मान करयो है और संन्यासी बनिके अर्ज्जुन आयो है यह न जाने ऐसे वलदेवजी ने भी सत्कार करयो ४ एक दिन संन्यासी है या

भावसूं अर्ज्जुन को निमन्त्रण करिके घरमें बुलाय कै श्रद्धापूर्व्वक वलदेवजी ने जो भोजन परोस्यो ताय अर्ज्जुन भोजन करतभयो ५ द्वारका में शूरवीरन के मनकूं हरे ऐसी सुन्दर कन्याहै ताय अर्ज्जुन देखतभयो प्रसन्नता करिके प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसे अर्ज्जुन रति के अभिप्राय करिके चलायमान जो मन है ताय सुभद्रा में लगावतभये ६ स्त्रीन के हृदय में वसिजाय ऐसे अर्ज्जुन कूं देखिके हासी सहित लाजभरे कटाक्षन कूं करे औ र अर्ज्जुन मेंही लागे हैं हृदय और नेत्र जाके ऐसी सुभद्रा भी चाहना करति भई ७ वड़ो जो वलवान् कामदेवहै ता करिके चलायमानहै चित्त जाको ऐसो अर्ज्जुन केवल सुभद्रा को ध्यान करत हरण करिवे को जो अवसर है ताय देखत वलदेवजी ने जो सन्मान कियो है ताको सुख नहीं पावतभयो ८ वड़ी जो देवी की यात्राहै तामें रथमें वैठिकै निकसी ऐसी सुभद्राकू माता पिता जो देवकी व वसुदेव हैं तिनकी और कृष्णजी की सम्मातिसूं महारथी अर्ज्जुन हरतभयो ९ रथ में वैठिके धनुष् कूं लेके अर्ज्जुन है सो चारयो ओरते रोंके जो प्यादे हैं तिनें भजायके उनके पुकारतही जैसे सिंह अपनेभागकूं लेजायहै ऐसे लेजातभयो १० अर्ज्जुन सुभद्राकूं लेके गयो यह वात श्रवण करिके जैसे पूर्णमासीकूं समुद्र उमड़े तैसे क्रोध जिनके उमड़ि

भैक्ष्यं वलेनवुभुजे किल ५ सोऽपश्यत्तत्रमहतीं कन्यावीरमनोहराम् ॥ प्रीत्युत्फुल्लेक्षणस्तस्यां भावक्षुब्धंमनोदधे ६ साऽपितंचकमेवीक्ष्य नारीणांहृदयंगमम् ॥ हसन्तीव्रीडितापाङ्गीतन्न्यस्तहृदयेक्षणा ७ तांपरंसमनुध्यायन्नन्तरंप्रेप्सुरर्ज्जुनः ॥ नलेभेसंभ्रमच्चित्तः कामेनातिवलीयसा ८ महत्यांदेवयात्रायां रथस्थांदुर्गनिर्गताम् ॥ जहारानुमतःपित्रोः कृष्णस्यचमहारथः ९ रथस्थोधनुरादाय शूरांश्चारुन्धतोभटान् ॥ विद्राव्यक्रोशतांस्वानां स्वभागंमृगराडिव १० तच्छ्रुत्वाक्षुभितोरामः पर्व्वणीवमहार्णवः ॥ गृहीतपादःकृष्णेन सुहृद्भिश्चान्वशाम्यत ११ प्राहिणोत्पारिवर्हाणि वरवध्वोर्मुदाबलः ॥ महाधनोपस्करेभरथाश्वनरयोषितः १२ श्रीशुकउवाच ॥ कृष्णस्यासीद्द्विजश्रेष्ठःश्रुतदेवइतिश्रुतः ॥ कृष्णैकभक्त्यापूर्णार्थः शान्तःकविरलम्पटः १३ सउवासविदेहेषु मिथिलायांगृहाश्रमी ॥ अनीहयागताहार्य्यनिर्व्वर्त्तितनिजक्रियः १४ यात्रामात्रंत्वहरहर्दैवादुपनमत्युत ॥ नाधिकंतावतातुष्टः क्रियाश्चक्रेयथोचिताः १५ तथातद्राष्ट्रपालोऽङ्गबहुलाश्वइतिश्रुतः ॥ मैथिलोनिरहंमानउभावप्यच्युतप्रियौ १६ तयोःप्रसन्नोभगवान् दारुकेणाऽऽहृतंरथम् ॥ आरुह्यसाकंमुनिभि

आयो ऐसे वलदेवजीकूं सुहृदनसहित श्रीकृष्णचन्द्रने चरण पकरिके शान्तकरे ११ वलदेवजी वड़े आनन्दसूं वहिनि वहनोई है तिनको दहेज पीछेतें भिजवावत भये वहुत सो धन और वस्त्र वासन इत्यादिक सामग्री हाथी रथ घोड़ा पुरुष स्त्री इनसवकूं भिजवावतभये १२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं श्रीकृष्णकी जो एकभक्ति ताकरिकै सम्पूर्णहै मनोरथ जाको शान्तस्वभाव विवेकी विषयनमें आसक्त नहीं ऐसो श्रुतदेव या नाम करिकै प्रसिद्ध जो ब्राह्मणहै सो श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त होतभयो १३ विना उपाय करे मिलै जो भोजन ताही सों निर्वाह करिके अपने कर्म्मनकूं करै ऐसो गृहस्थी ब्राह्मणहै सो विदेह देशमें जो मिथिलापुरी है तामें वास करतभयो १४ जितनेमें शरीरको निर्वाह होइ उतनो भोजन प्रतिदिन अनायासपूर्व्वक आयोकरै और अधिक नहीं परन्त्र उतनेहीमें सन्तोष करिके यथायोग्य सन्ध्योपासनादिक कर्म्मनकू करोकरै १५ हे राजन् परीक्षित् ! जैसो श्रुतदेव ब्राह्मण भक्तहो तैसोही मिथिलादेशको पालन करनवारो जनकके वंशमें भयो निरभिमान ऐसो बहुलाश्व

नाम करिके विख्यात राजा है सो श्रीकृष्ण को भक्त होतभयो ब्राह्मण और राजा ये दोनों श्रीकृष्णके प्यारे हैं १६ तिन दोनों भक्तन के ऊपर प्रसन्न भये ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो रथवान्ने लायके ठाढो करयो जो रथहै तामें वैठिके मुनिनकूं संग लेके विदेह देशनकूं जातभये १७ कौन कौन मुनि संग लिये तिनको नाम लेइ है नारदजी वामदेव अत्रिऋषि वेदव्यासजी परशुरामजी शुकदेवजी कहे है मै भी संग गयों और बृहस्पति कण्व मैत्रेय च्यवनऋषिकूं आदि लेके और भी संग गये १८ हे राजन् परीक्षित्! मार्गमें ग्रहनके सो तेज जिनको ऐसे मुनिनकूं संग लेके तहा तहा आये जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके लिये पुरवासीजन हाथनमें अर्घलेके स्तुति करतभये जैसे उदय भये सूर्य्यकूं अर्घ देइहै तैसे १९ आनर्तदेश धन्व कुरु जागल कङ्क मत्स्य पाञ्चाल कुन्ति मधु केकय कोसल आर्ण इन देशनके तथा और देशनके वासी जो स्त्री पुरुषहैं ते उदार हँसनि युक्त स्नेहभरी चितवनि जामें ऐसो श्रीकृष्णचन्द्रको मुखारविन्दहै ताय दृष्टि भरिके देखतभये २० अपनी दृष्टि करिके दूरिभयो है अज्ञान जिनको ऐसे पुरुषनकी दृष्टि कूं कल्याण देत और तत्त्वज्ञान देत दिशान के अन्तपर्य्यन्त फैलिरहे पापनकूं नाशकरत देवता और मनुष्यन ने गायो जो

विदेहान्प्रययौप्रभुः १७ नारदोवामदेवोऽत्रिःकृष्णोरामोऽसितोऽरुणिः ॥ अहंबृहस्पतिःकण्वोमैत्रेयश्च्यवनादयः १८ तत्रतत्रतमायान्तं पौराजानपदानृप॥ उपतस्थुःसार्घहस्ताग्रहैःसूर्य्यमिवोदितम् १९ आनर्त्तधन्वंकुरुजाङ्गलकङ्कमत्स्यपाञ्चालकुन्तिमधुकेकयकोसलार्णाः ॥ अन्येचतन्मुखसरोजमुदारहासस्निग्धेक्षणंनृपपपुर्दृशिभिर्नृनार्य्यः २० तेभ्यःस्ववीक्षणविनष्टतमिस्रदृग्भ्यःक्षेमंत्रिलोकगुरुरर्थदृशंचयच्छन् ॥ शृण्वन्दिगन्तधवलंस्वयशोऽशुभघ्नंगीतंसुरैर्नृभिरगाच्छनकैर्विदेहान् २१ तेऽच्युतंप्राप्तमाकर्ण्यपौराजानपदानृप ॥ अभीयुर्मुदितास्तस्मैगृहीतार्हणपाणयः २२ दृष्ट्वातउत्तमश्लोकंप्रीत्युत्फुल्लाननाशयाः ॥ कैर्धृताञ्जलिभिर्नेमुःश्रुतपूर्व्वास्तथामुनीन् २३ स्वानुग्रहायसंप्राप्तंमन्वानौतंजगद्गुरुम् ॥ मैथिलःश्रुतदेवश्चपादयोःपेततुःप्रभोः २४ न्यमन्त्रयेतांदाशार्हमातिथ्येनसहद्विजैः ॥ मैथिलःश्रुतदेवश्च युगपत्संहताञ्जली २५ भगवांस्तदभिप्रेत्य द्वयोःप्रियचिकीर्षया ॥ उभयोराविशद्गेहमुभाभ्यांतदलक्षितः २६ श्रोतुमप्यसतांदूराज्जनकःस्वगृहागतान् ॥ आनीतेष्वासनाग्र्येषु सुखासीनान्महामनाः २७ प्रवृद्धभक्त्याउद्धर्षहृदयास्राविलेक्षणः ॥ न

अपनो यशहै ताय श्रवण करत त्रिलोकी के गुरु श्रीकृष्णचन्द्र हौले हौले विदेहादिक देशनको जानभये २१ हे राजन् परीक्षित्! ते सम्पूर्ण पुरवासी देशवासी जनहैं ते श्रीकृष्णचन्द्रकू आये सुनिके हर्षित होयके पूजाके योग्य सामग्रीनकूं हाथमें लेके सम्मुख आवतभये २२ उत्तमहै यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके प्रीति सूं प्रफुल्लित भये हैं मुख और अन्तःकरण, जिनके ऐसे पुरुष हाथनकूं जोरिके शिरसूं लगायके नमस्कार करतभये तैसेही पहिले सुनि राखे जे मुनि हैं तिनें प्रणाम करतभये २३ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं ते हमारे अनुग्रह करिवे के लिये आये हैं या प्रकार मानिके मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ब्राह्मण ये दोनों श्रीकृष्णके चरणनमें परनभये २४ मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ये दोनों एक संग हाथ जोरिके ब्राह्मणनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको आतिथ्यभाव करिके निमन्त्रण करतभये २५ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रदोनोंन को निमन्त्रण मानिके दोनोंन के प्रिय करिवेके लिये दो रूप धरिके

दोनोंन के घर जातभये तासमय राजा और ब्राह्मण यह नहीं जाने हैं कि ये दो रूप करे हैं २६ बडो है मन जाको बडी भक्ति करिके हृदयमें हर्ष जाके भयो नेत्रनमें आंसू जाके आयगये ऐसो जनकवंशी राजा बहुलाश्वहै सो असत्य पुरुषन के सुनिवे में भी न आवें ऐसे भगवान् अपने घरआये लायके विछाये जो श्रेष्ठ आसनहैं तिनपै सुख तें बैठे ऐसे जे मुनिहैं तिनैं नमस्कार करिके तिनके चरणन कूं धोइके लोकन के पवित्र करनवारो जो चरणन को जलहै २७। २८ ताय कुटुम्ब सहित राजा बहुलाश्व अपने माथे पै चढायके ईश्वर और ईश्वरकी बराबरि जो ब्राह्मणहैं तिनको गन्ध पुष्प माला वस्त्र आभूषण धूप दीप अर्घ गौ बैल इन सामग्रीन सूं पूजन करतभये २९ और मधुरवाणीन सूं प्रसन्न करत गोदमें धरे जो श्रीकृष्ण के चरण हैं तिनैं हौले हौले दावत आनन्द करिके प्रसन्नसूं तृप्तभये जे ब्राह्मणहैं तिनसूं यह कहतभये ३० अब राजा बहुलाश्व कहे हैं हे समर्थ! सब प्राणीनके आत्मा साक्षी स्वयंप्रकाश तुमहीं हौ याही कारण तें तुम्हारे चरणारविन्दको स्मरण करूं जो मैं हूं ताकूं तुमने दर्शन दियो है ३१ जो मोकूं एकान्ती भक्त प्यारो है ऐसो भय्याके सम्बन्धते बलदेवजी प्यारे नहीं हैं स्त्री के सम्बन्धते लक्ष्मी प्रिय नहीं हैं पुत्र के सम्बन्ध ते ब्रह्मा

त्वातदङ्घ्रीन्प्रक्षाल्य तदपोलोकपावनीः २८ सकुटुम्बोवहन्मूर्ध्ना पूजयाञ्चक्रईश्वरान् ॥ गन्धमाल्याम्बराकल्पधूपदीपार्घगोवृषैः २९ वाचामधुरयाप्रीण न्निदमाहान्नतर्पितान् ॥ पादावङ्कगतौविष्णोःसंस्पृशञ्छनकैर्मुदा ३० राजोवाच ॥ भवान्हिसर्वभूतानामात्मासाक्षीस्वदृग्विभो ॥ अथनस्त्वत्पदाम्भोजं स्मरतांदर्शनंगतः ३१ स्ववचस्तदृतंकर्तुमस्मद्दृग्गोचरोभवान् ॥ यदात्थैकान्तभक्तान्मेनानन्तःश्रीरजःप्रियः ३२ कोनुत्वच्चरणाम्भोजमेवंविद्विसृजेत्पुमान् ॥ निष्किञ्चनानांशान्तानांमुनीनांयस्त्वमात्मदः ३३ योऽवतीर्ययदोर्वंशेनृणांसंसरतामिह ॥ यशोवितेनेतच्छान्त्यै त्रैलोक्यवृजिनापहम् ३४ नमस्तुभ्यंभगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ॥ नारायणायऋषये सुशान्तंतपईयुषे ३५ दिनानिकतिचिद्भूमन् गृहान्नोनिवसद्विजैः ॥ समेतःपादरजसा पुनीहीदंनिमेःकुलम् ३६ इत्युपामन्त्रितोराज्ञा भगवाँल्लोकभावनः ॥ उवासकुर्वन्कल्याणं मिथिलानरयोषिताम् ३७ श्रुतदेवोऽच्युतंप्राप्तं स्वगृहाञ्जन

प्यारे नहीं हैं यह आपको कह्यो जो वचनहै ताय सत्य करिवेके लिये आपने हमकूं दर्शन दियोहै ३२ भक्त तुम्हें प्रिय हैं या प्रकार जाने है ऐसो कौन पुरुष तुम्हारे चरणारविन्दकूं त्यागेगो निष्किञ्चन अर्थात् कछु जिनके पास नहीं शान्त जिनको स्वभाव ऐसे, जे मननशील मुनिहैं तिनकूं तुम अपनो पद दे चुके हौ ३३ ऐसे तुम यदुवंश में अवतार लेके संसार में भ्रमे जे प्राणी हैं तिनके ससार छुड़ायवे के लिये त्रिलोकी को जो दुःख है ताय दूरिकरै ऐसे यशको विस्तार करत भये ३४ नहीं नाश होय ज्ञ न जिनको अत्यन्त शान्त तपकूं करो ऐसे नारायण ऋषि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जो तुम हौ तिनकूं नमस्कार है ३५ हे व्यापक! सर्वत्र जो तुम हो सो सब ब्राह्मणन सहित कछु दिन हमारे घरनमें बसिकै अपने चरणकमल की रज सूं यह निमि राजा को कुल है ताय पवित्र करो ३६ राजा बहुलाश्व ने या प्रकार जिनते कही ऐसे लोकन के पवित्र करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मिथिलापुरी के पुरुष स्त्रीनके कल्याण करतेहुये कितने दिन पर्य्यन्त वास करत भये ३७ जैसे जनकवंशोत्पन्न बहुलाश्व राजा कूं प्राप्त भये ऐसे श्रुतदेव ब्राह्मण भी प्राप्तहुये जो श्रीकृष्णचन्द्र और मुनि हैं तिने नमस्कार करिके अत्यन्त हर्षित होय

के चरणकूं धुवावत नाचतभयो ३८ ताय के विछावे जे तृण पट्टा कुश के आसन हैं तिनपे ब्राह्मणन सहित श्रीकृष्णचन्द्रकूं बैठाय के भले आवे ऐसे बड़ाई करिके स्त्रीसहित श्रुतदेव ब्राह्मण है सो आनन्द सूं उनके चरण धोवत भयो ३९ भयो है रूप जाके और प्राप्त करे हैं सम्पूर्ण मनोरथ जाने ऐसो बड़भागी जो श्रुतदेव ब्राह्मण है सो चरणारविन्द के धोवन जल सूं घरवारसहित समस्तकुल कूं पवित्र करत भयो ४० आंबे सूं आदि लेके फल हैं तिन करिके और चन्दनादि अगुरु की सुगन्ध मधुर जल हैं तिन करिके तथा सुगन्धयुक्त मृत्तिका तुलसी कुश कमल और जो कोई अनायास पूजा की सामग्री हैं तिन करिके और सत्त्वगुण कूं बढ़ावे ऐसे शुद्ध अन्न करिके श्रुतदेव ब्राह्मण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को पूजन करिके आराधन करत भयो ४१ सब तीर्थनकूं पवित्र करे है चरणरेणु जिनकी और श्रीकृष्ण के रहिवे को स्थान ऐसे जे ब्राह्मण हैं तिनको सङ्ग मोकूं या अन्धकूप में परयो जो मैं हूं ताकूं यह संगम कौन कारण ते भयो या प्रकार ब्राह्मण तर्क करत भयो ४२ सो भगवान् पूजा कर सबकूं संग लेके पास आयके बैठ्यो और श्रीकृष्णजी के चरण को दाबे जो श्रुतदेव है सो चन्देववार बैठे और आतिथ्य कियेहुये भगवान्

कोयथा ॥ नत्वामुनीन्सुसंहृष्टोधुन्वन्वासोननर्त्तह ३८ तृणपीठबृसीष्वेतानानीतेषूपवेश्यसः ॥ स्वागतेनाभिनन्द्याङ्घ्रीन् सभार्योऽवनिजेमुदा ३९ तदम्भसामहाभागआत्मानंसगृहान्वयम् ॥ स्नापयाञ्चक्रउद्धर्षोलब्धसर्वमनोरथः ४० फलार्हणोशीरशिवामृताम्बुभिर्मृदासुरभ्यातुलसीकुशाम्बुजैः ॥ आराधयामाससर्वोपपन्नया सपर्य्ययासत्त्वविवर्द्धनान्धसा ४१ सतर्कयामासकुतोममान्वभूद्गृहान्धकूपेपतितस्यसङ्गमः ॥ यः सर्वतीर्थास्पदपादरेणुभिः कृष्णेनचास्यात्मनिकेतभूसुरैः ४२ सूपविष्टान्कृतातिथ्याञ्छ्रुतदेवउपस्थितः ॥ सभार्यः स्वजनापत्यउवाचाङ्घ्र्यभिमर्शनः ४३ श्रुतदेवउवाच ॥ नाद्यनोदर्शनंप्राप्तःपरंपरमपूरुषः ॥ यर्हीदंशक्तिभिःसृष्ट्वाप्रविष्टोह्यात्मसत्तया ४४ यथाशयानःपुरुषोमनसैवाऽऽत्ममायया ॥ सृष्ट्वालोकंपरंस्वाप्नमनुविश्यावभासते ४५ शृण्वतांगदतांशश्वदर्चतांत्वाऽभिवन्दताम् ॥ नृणांसंवदतामन्तर्हृदिभास्यमलात्मनाम् ४६ हृदिस्थोऽप्यतिदूरस्थः कर्मविक्षिप्तचेतसाम् ॥ आत्मशक्तिभिरग्राह्योऽप्यन्त्युपेतगुणात्मनाम् ४७ नमोऽस्तुतेऽध्यात्मविदांपरात्मने अनात्मनेस्वात्मविभक्तमृत्यवे ॥ सकारणाकारणलिङ्गमीयुषे स्वमाययाऽसंवृ

सूं कहत भयो ४३ अब श्रुतदेव कहे है जा समय शक्तिन करिके या विश्व कूं रचिके अपनी सत्ता करिके यामें प्रविष्ट भये ताही समय परमपुरुष जो तुम हो सो हम कूं प्राप्तभये परन्तु या साक्षात् स्वरूप को दर्शन अबहीं प्राप्त भयो है ४४ जैसे सोवतो भयो पुरुष मन करिके तुम्हारी मायासूं स्वप्न में और देह कूं रचिके तामें प्रवेश करिके प्रकाश करे है ४५ तुम्हारी कथानकूं सुनें तुम्हारे नाम कूं कहें सर्वदा तुम्हारी पूजा करें तुम कूं प्रणाम करें तुम्हारी कथा कूं कहें तासूं निर्मल है आत्मा जिनके ऐसे पुरुषन के हृदय के भीतर प्रकाशो हो ४६ कर्मन करिके चलायमान हैं चित्त जिनके ऐसे पुरुषन के हृदय में भी हो परन्तु अति दूरि हो और तुम्हारी कथा की सामिग्री तुम्हारे नामको लेवो तासूं दूर हैं अन्तःकरण जिनके ऐसे पुरुषन के तुम सर्वदा पास रहो हो ४७ देह और गृह में दूरि भयो है अभिमान जिनको ऐसे पुरुषन कूं मोक्ष के देनवारे हो और देह गृहमें जाके अभिमान नहीं ऐसे पुरुषन कूं आप साक्षात् देत हो कार्य महदादिक कारण माया ये

दोनों उपाधि हैं तिनें सेवन करो हौ अपनी माया करिके आप ढके नहीं हौ और जीवनकी दृष्टि जिनने ढकि राखी है ऐसे जे तुम हौ तिनकूं प्रणाम है ४८ ऐसे तुम हम अपने भृत्यनकूं शिक्षा देउ हे देव अर्थात् प्रकाशमान! तुम्हारो कहा हम पूजनकरें यावत् आप नेत्रके आगे नहीं आवो हो तावत् मनुष्यनकूं क्लेश रहे हैं ४९ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित! या प्रकार श्रुतदेव ब्राह्मण को कह्यो वचन सुनिकै शरणागतन के दुःख के हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ सूं ब्राह्मण को हाथ पकरिके हँसिके यह बोलतभये ५० मेरो आदर बहुत और ब्राह्मणन को थोड़ो कियो देखि के लोकन के शिक्षक भगवान् हैं सो मोते भी ब्राह्मणन में श्रद्धा बहुतकरी चाहिये या प्रकार श्रुतदेव कूं सिखावे हैं हे ब्राह्मण! तुम्हारो भलो करिवे के लिये ये मुनि प्राप्त हुये हैं यह तुम जानो हो अपने चरणन की रेणु डारिके लोकन के पवित्र करिवे के लिये मोसहित विचरत हैं ५१ देवता क्षेत्र तीर्थ इनके दर्शन स्पर्शन अर्चन करे तें बहुत कालमें हौले हौले पवित्र होय हैं सो भी महात्मान की इच्छा होय तो और ब्राह्मण तो शीघ्रही पवित्र करे है ५२ या संसारमें समस्त प्राणीन की अपेक्षा करिके ब्राह्मण जन्मही ते श्रेष्ठ है और जो तप करिके विद्या पढ़ि

तरुद्धदृष्टये ४८ सत्वंशाधिस्वभृत्यान्नः किंदेवकरवामहे ॥ एतदन्तोनृणांक्लेशो यद्भवानक्षिगोचरः ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तदुक्तमित्युपाकर्ण्य भगवान् प्रणतार्तिहा ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रहसंस्तमुवाचह ५० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मंस्तेऽनुग्रहार्थायसम्प्राप्तान्विद्ध्यमून्मुनीन् ॥ सञ्चरन्तिमयालोकान् पुनन्तःपादरेणुभिः ५१ देवाःक्षेत्राणितीर्थानि दर्शनस्पर्शनार्चनैः ॥ शनैःपुनन्तिकालेन तदप्यर्हत्तमेक्षया ५२ ब्राह्मणोजन्मनाश्रेयान् सर्वेषांप्राणिनामिह ॥ तपसाविद्ययातुष्ट्या किमुमत्कलयायुतः ५३ नब्राह्मणान्मेदयितं रूपमेतच्चतुर्भुजम् ॥ सर्ववेदमयोविप्रःसर्वदेवमयोह्यहम् ५४ दुष्प्रज्ञाअविदित्वैवमवजानन्त्यसूयवः ॥ गुरुंमांविप्रमात्मानमर्चादाविज्यदृष्टयः ५५ चराचरमिदंविश्वं भावायेचास्यहेतवः ॥ मद्रूपाणीतिचेतस्याधत्तेविप्रोमदीक्षया ५६ तस्माद्ब्रह्मऋषीनेतान् ब्रह्मन्मच्छ्रद्धयाऽर्चय ॥ एवंचेदर्चितोऽस्म्यद्धानान्यथाभूरिभूतिभिः ५७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ सइत्थंप्रभुणाऽऽदिष्टःसहकृष्णान्द्विजो

के सन्तोष करिके हमारी कला सूं युक्त होयकै श्रेष्ठ होय तौ यामें कहा कहनो है ५३ जो ब्राह्मण मोकूं प्यारो है सो चतुर्भुजरूप प्यारो नहीं लगे है सम्पूर्ण वेदमय ब्राह्मण है और देवतारूप में हू ५४ खोटी है बुद्धि जिनकी गुणन में दोषन कू देखें पूजादिकमें पूज्यबुद्धि ऐसे पुरुष हैं ते भी ब्राह्मण वेदमयहैं ऐसे नहीं जानिके गुरुरूप ब्राह्मणरूप सबको आत्मा जो मैं हूं ताको अनादर करे है ५५ स्थावर जंगम जो यह विश्व है और जे या विश्व के कारण महदादिक पदार्थ हैं तिनकूं ब्राह्मणहै सो मेरो स्वरूप जानिके मेरोही सर्व्वत्र दर्शन है ता करिकैं चित्त में राखे है ५६ हे ब्राह्मण श्रुतदेव! श्रद्धा करिके ब्रह्मऋषिन को पूजन करो मो में इनमें एक सों भाव करोगे तो मेरी साक्षात् पूजा होयजायगी भेदभाव करिके मेरी बहुत सी सम्पत्ति करिके भी पूजा करोगे तो मैं प्रसन्न नहीं होउँगो ५७ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने जाकूं आज्ञा दीनी ऐसो जो श्रुतदेव ब्राह्मण है सो श्रीकृष्णचन्द्र सहित जे ब्राह्मण हैं तिनें एक

भाव सूं आराधन करिके सुन्दर गति कूं पाय गयो और मिथिलापुरी को राजा है सो भी सुन्दर गति कूं पाय गयो ५८ हे राजन्परीक्षित् ! या प्रकार भक्तन की भक्ति करें ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने भक्त बहुलाश्व और श्रुतदेव इन के यहाँ वास करिके सन्मार्ग अर्थात् उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड इन तीनों काण्डन को उपदेश करि फेरि द्वारकापुरी में आवत भये ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रुतदेवानुग्रहोनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥ ~ ॥ * ॥ * ॥ ~ ॥

(सप्ताशीतितमेनारायणनारदवादतः ॥ वेदैःस्तुतिर्गुणालम्बानिर्गुणावधिवर्ण्यते १ सत्तासीवें अध्यायमें नारायण और नारदजी के वादसूं वेदनने गुणनके आलम्बवाली स्तुति निर्गुणकी अवधिताई वर्णन की है १) पहिले अध्यायके अन्त में भगवान् वेद को मार्ग्ग ब्रह्मपर है ऐसे उपदेश करिके जातभये यह कह्यो तहाँ वेदन कूं ब्रह्म परत्व नहीं बने है यह मानिके राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन्! निर्देश करिवे में न आवै निर्गुण और साक्षात् कार्य्य कारण इनते परे ऐसो जो ब्रह्म तामें गुणवृत्ति श्रुति साक्षात् कैसे विचरे हैं १ तहां शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्!

समान् ॥ आराध्यैकात्मभावेन मैथिलश्चापसद्गतिम् ५८ एवंस्वभक्तयोराजन्भगवान्भक्तभक्तिमान् ॥ उषित्वाऽऽदिश्यसन्मार्गं पुनर्द्वारवतीमगात् ५९ ॥

इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रुतदेवानुग्रहोनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

परीक्षिदुवाच ॥ ब्रह्मन्ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणेगुणवृत्तयः ॥ कथंचरन्तिश्रुतयःसाक्षात्सदसतःपरे १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ बुद्धीन्द्रियमनःप्राणाञ्जनाना मसृजत्प्रभुः॥ मात्रार्थञ्चभवार्थञ्चआत्मनेऽकल्पनायच २ सैषाह्युपनिषद्ब्राह्मी पूर्व्वेषांपूर्व्वजैर्धृता ॥ श्रद्धयाधारयेद्यस्तां क्षेमंगच्छेदकिञ्चनः ३ अत्रतेवर्ण यिष्यामि गाथांनारायणान्विताम् ॥ नारदस्यचसंवादमृषेर्नारायणस्यच ४ एकदानारदोलोकान् पर्य्यटन्भगवत्प्रियः ॥ सनातनमृषिन्द्रष्टुं ययौनारायणा श्रमम् ५ योवैभारतवर्षेऽस्मिन् क्षेमायस्वस्तयेनृणाम् ॥ धर्म्मज्ञानशमोपेतमाकल्पादास्थितस्तपः ६ तत्रोपविष्टमृषिभिः कलापग्रामवासिभिः ॥ परीतंप्र णतोऽपृच्छदिदमेवकुरूद्वह ७ तस्मैह्यवोचद्भगवानृषीणांशृण्वतामिदम् ॥ योब्रह्मवादःपूर्व्वेषां जनलोकनिवासिनाम् ८॥ श्रीभगवानुवाच ॥ स्वा

प्रभु जो हैं सो जनन के लिये बुद्धि इन्द्रिय मन प्राण इनकूं सृजत भये काहे के अर्थ मात्रा जे विषय तिनके अर्थ और जन्मलक्षण जे कर्म्म तिनके करायवे के लिये और आत्मा कूं लोकनके भोग के अर्थ तथा मुक्तिके लिये सृजे हैं २ यह जो ब्रह्मपर उपनिषद् है सो पहिलेन के पहिले भये ऐसे जे सनकादिक हैं तिनने प्रथम धारण करी है जो पुरुष निष्किञ्चन होयके श्रद्धापूर्व्वक याहि धारण करै सो कल्याणकूं प्राप्त होइ है ३ यहां तेरे अर्थ नारायण करिके युक्त जो गाथा है ताय हम वर्णन करे हैं जा गाथा में नारद जी को और ऋषि नारायण जी को संवाद है ४ एकसमय भगवान् के प्यारे नारदजी सम्पूर्ण लोकन में फिरत फिरत सनातनऋषि कूं देखिवे के निमित्त नारायण के आश्रम में आवतभये ५ जो नारायण या भरतखण्ड में मनुष्यनके क्षेम के लिये और मङ्गल के लिये धर्म्म ज्ञान शम इन करिके युक्त जो तप है ताकूं कल्पपर्य्यन्त करे हैं ६ हे परीक्षित् ! तहां कलापग्राम के वासी ऋषिन सहित बैठे जे नारायण तिनसूं नम्र होयके यह पूछत

भये ७ तासमय जो ब्रह्मविचार जनलोकनिवासी सनकादिकन में भयो हो सोही भगवान् सब ऋषिनके श्रवण करत नारदके अर्थ कहत भये ८ भगवान् कहे हैं हे नारदजी! पहिले जनलोक में ब्रह्मा के मनते उत्पन्न भये ऐसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी सनकादिक मुनिनको ब्रह्मसत्र अर्थात् ब्रह्मविद्या को विचार होत भयो ९ अहो जा ब्रह्मसत्र को मोकूं ज्ञान नहीं तहा कहे हैं हे नारद! श्वेतद्वीप के ईश्वर अनिरुद्ध मूर्त्ति तिनैं देखिवे के लिये श्वेतद्वीप में तुम गये पीछे ब्रह्मवाद होत भयो या ब्रह्मवाद में श्रुति भगवान् को प्रतिपादन करे हैं तहा यही प्रश्न होत भयो जो तू मो सूं पूछे है १० तुल्य है श्रवण तप शील जिनको और तुल्यही हैं मित्र शत्रु मध्यम जिनके ऐसे भी सनकादिक हैं परन्तु एककूं वक्ता बनाय के सम्पूर्ण श्रोता होत भये ११ अब सनन्दनजी कहे हैं आपने निर्म्माण कियो जो यह संसार ताको नाश करिकै अपनी शक्तिन करिके सहित सोये जब प्रलयको अन्त आवे है ता समय ब्रह्मके प्रतिपादक जे वचन हैं तिनकरिके श्रुती परमेश्वरकूं जगावति भई १२ जैसे रात्रिके सोये चक्रवर्त्ती राजाकूं प्रातःकाल राजोपजीवी वन्दीजन उठिके अपने पराक्रमनकरिके सुन्दर यशकू वर्णनकरिके जगावे हैं १३ हे अजित अर्थात् जीतिवे में न आवो!

स्वम्भुवब्रह्मसत्रं जनलोकेऽभवत्पुरा ॥ तत्रस्थानांमानसानां मुनीनामूर्द्ध्वरेतसाम् ९ श्वेतद्वीपंगतवति त्वयिद्रष्टुंतदीश्वरम् ॥ ब्रह्मवादःसुसंवृत्तः श्रुतयोयत्र शेरते ॥ तत्रहायमभूत्प्रश्नस्त्वंमांयमनुपृच्छसि १० तुल्यश्रुततपःशीलास्तुल्यस्वीयारिमध्यमाः ॥ अपिचक्रुःप्रवचनमेकंशुश्रूषवोऽपरे ११ सनन्दनउवाच ॥ स्वसृष्टमिदमापीयशयानंसहशक्तिभिः ॥ तदन्तेबोधयाञ्चक्रुस्तल्लिङ्गैःश्रुतयःपरम् १२ यथाशयानंसम्राजंवन्दिनस्तत्पराक्रमैः ॥ प्रत्यूषेऽभ्येत्यसुश्लोकैर्बोधयन्त्यनुजीविनः १३ श्रुतयऊचुः ॥ जयजयजह्यजामजितदोषगृभीतगुणांत्वमसियदात्मनासमवरुद्धसमस्तभगः ॥ अगजगदोकसामखिलशक्त्यवबोधकतेक्वचिदजयाऽऽत्मनाचचरतोऽनुचरेन्निगमः १४ बृहदुपलब्धमेतदवयन्त्यवशेषतयायतउदयास्तमयौविकृतेर्मृदिवाऽविकृतात् ॥ अतऋषयोदधुस्त्वयिमनोवचनाचरितंकथमयथाभवन्तिभुविदत्तपदानिनृणाम् १५ इतितवसूरयस्त्र्यधिपतेऽखिललोकमलक्षपणकथाऽमृताब्धिमवगाह्यतपांसिजहुः ॥ किमुत

ऐसे जो तुमही सो अपनी उत्कृष्टताकूं प्रकटकरौ कदाचित् कहो कि कौन कारण प्रकट करूं ताको उत्तर देइ हैं दोषके निमित्त ग्रहण किये हैं गुण जाने ऐसी जो स्थावर जङ्गम शरीराश्रित जीवनकी अविद्या ताको नाशकरो या कारण तुम अपने रूप करिकेई संप्राप्त सम्पूर्ण ऐश्वर्यहो तिनकूं ऐसोही योग्यहै सम्पूर्ण शक्तिन के जगावनवारे जो तुमहो सो कबहूं सृष्ट्यादि समय में माया करिके क्रीड़ा करोहौ और आनन्द देकर सब अपने आत्मा करिके वर्त्तमान जो तुम तिनकूं वेद प्रतिपादनकरे हैं १४ यह जो समस्त इन्द्रादिक दीखे हैं ते सम्पूर्ण ब्रह्मही हैं कैसे ब्रह्महैं तहां कहे है तुमहीं शेष रहोहौ ताकरिकै नहीं है विस्तार जामें ऐसे ब्रह्म में सबको उदय अस्त अर्थात् उत्पत्ति नाश होइहै जैसे घटादिकनको उदय अस्त मृत्तिकामें होइहै या प्रकार ऋषिहैं ते मन और वचनको आचरण तुम्हारे विषे धारण करतभये जैसे मनुष्यन के चरण मृत्तिका पाषाण ईट इनके ऊपर परे हैं परन्तु भूमितें पृथक् नहीं हैं ऐसे जो कछु विकारहै सो सब तुमरूंही भयो है सर्वकारण परमार्थरूप तुमहौ या प्रकार वेद प्रतिपादन करे हैं १५ या प्रकार त्रिगुणमाया मृगीके नचावनवारे जिनकी पुरुषहैं ते तुम्हारो अखिल लोकन के मलको नाश करनवारो कथारूपी अमृतको समुद्र

ताकूं सेवन करिके पाप और दुःखन कूं त्यागे हैं जो तुम्हारी कथामात्र करिके पापनको त्याग होइ है तहां कहा कहनो है और जे स्वरूपके स्मरण करिके त्यागे हैं अन्तःकरण के रागादिक काल के गुण जरादिक ते जिनते पापकूं दूरि करे हैं यामें कहा कहनो है हे परमेश्वर ! तुम्हारो परम अखण्ड आनन्द अनुभव स्वरूप को भजन करिके दुःखन कू त्यागें यामें कहा कहनो है १६ अब जे पुरुष तुम्हारो भजन नहीं करे हैं तिनकी निन्दा और प्राणधारी तुम्हारो भजन करे हैं तिनको सफल जीवनहै या प्रकार स्तुति करे हैं जे प्राणधारी तुम्हारो भजन करिके श्वासन कूं पूरी करे हैं ते सफलजन्मा हैं और जो विना भजनकरे श्वास लेइहैं वे लोहार की धौंकनीकी तुल्य वृथा श्वास लेइ है तुम्हारे भजनके विना कृतघ्नीनकूं फल सिद्ध नहीं होइहै अब या प्रकार कहे हैं जाके अनुग्रह करिके महत्तत्त्व अहङ्कारादिक जे तत्त्व हैं ते या देहकूं सृजत भये ता देहने अन्नमयादिकोशन में प्रवेश करिके ताता आकार करिके चेतन करे हैं सो तुमहौ सो कहे हैं अन्नमयादिकन कैसो है आकार जाको ऐसो पुरुष अन्नमयादिकनमें मिलि रह्यो है ऐसेहो तो सत्य ब्रह्ममें कैसेहो तहां कहे हैं अन्नमयादिकन के अन्तमें हौ याते पुच्छ करिके वर्णन करैहैं स्थूल सूक्ष्म इनतें परेहौ

पुनःस्वधामविधुताशयकालगुणाः परमभजन्तियेपदमजस्रसुखानुभवम् १६ दृतयइवश्वसन्त्यसुभृतोयदितेनुविधामहृदहमादयोऽण्डमसृजन्यदनुग्रहतः॥ पुरुषविधोऽन्वयोऽत्रचरमोऽन्नमयादिषुयःसदसतःपरन्त्वमथयदेष्ववशेषमृतम् १७ उदरमुपासतेयऋषिवर्त्मसुकूर्पदृशःपरिसरपद्धतिंहृदयमारुणयोदहरम्॥ ततउदगादनन्ततवधामशिरःपरमं पुनरिहयत्समेत्यनपतन्तिकृतान्तमुखे १८स्वकृतविचित्रयोनिषुविशन्निवहेतुतयातरतमतश्चकास्स्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः॥ अथवितथास्वमूष्ववितथंतवधामसमं विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यवएकरसम् १९ स्वकृतपुरेष्वमीष्वबहिरन्तरसंवरणंतवपुरुषंवदन्त्यखिलशक्तिधृतोंशकृतम्॥ इतिनृगतिंविविच्यकवयोनिगमावपनं भवतउपासतेऽङ्घ्रिमभवंभुविविश्वसिताः २० दुरवगमात्मतत्त्वनिगमायतवात्ततनोश्चरितमहामृता

और इनमें अतिशेषरूपहौ याते सत्यहौ शाखा इन्द्रकी तुल्य शुद्धरूप दिखायवे के लिये अन्नमयादिकन में सम्बन्ध कह्यो हौ १७ ऋषिन के मार्ग में जे कूरदृष्टि हैं ते उदरब्रह्मकी उपासना करे हैं और जे अरुणवंशीय हैं ते नाड़ीन के चलिवे को स्थान सूक्ष्म हृदय में स्थित ऐसे ब्रह्मकी उपासना करे हैं हे अनन्त ! तुम्हारी प्राप्तिको जो स्थान सुषुम्णा जाको नाम सो शिरकूं प्राप्त होत भयो कैसो धामहै कि जाय प्राप्तहोय के फेरि मृत्युके मुख जो यह संसारहै तामें नहीं परेहैं १८ तुम्हारे करे ऐसे चित्र विचित्र ऊँच नीच मध्यम देहादिक तिनमें कारणरूप होइकै पहिलेही विद्यमानहो यातें प्रवेशसे करत तारतम्यता करिके प्रकाशो हौ जैसे काष्ठ में अग्नि ऐसे अपनी करी जे योनि तिनमें अनुकरण करोहौ याते मिथ्याभूत योनि में समान एकरस सत्य ऐसो तुम्हारा स्वरूप ताय निर्म्मल हैं बुद्धि जिनकी तथा गये हैं व्यवहार जिनके ते पुरुष जाने हैं १९ अपने कर्म्मन करिके प्राप्तभये जे नरादिक देह हैं तिनमें भोक्तृत्व करिके वर्त्तमान है और भीतर बाहर आवरण नहीं हैं जाके ऐसे जीवकूं समस्त शक्तिनके धारण करनवारे जो तुम तिनको अंश सो कह्यो है सो कहे हैं या प्रकार कवि हैं ते जीवकी गतिकूं विचारिके वेदनको उत्पत्तिस्थान और नहीं है संसार जाते ऐसे तुम्हारे चरणकी उपासना करे हैं या प्रकार कियो है विश्वास जिनने ऐसे कविन कूं मर्त्यलोक में यही उचित है २० हे ईश्वर ! दुर्बोध जो आत्मतत्त्व है ताके जनाइवे के निमित्त प्रकटकरी

है मूर्त्ति जिनने ऐसे जे तुमहो तिनको चरित्रही बड़ो अमृतरूप समुद्र है तामें अवगाहन करिके दूरि भयो है श्रम जिनको ऐसे कोई एक तुम्हारे भक्तहैं ते मोक्षकी भी इच्छा नहीं करे हैं और तुम्हारे चरणकमल में अवगाहन करत हंसकी तुल्य रमण करे हैं ऐसे भक्तन के कुलके संग करिके घर जिनने त्यागि दिये हैं २१ तुम्हारी सेवाको मार्ग जो देहहै सो आत्मा और मित्रके तुल्य आचरण करे है तथापि सम्मुख हितकारी प्यारे आत्मा जो तुमहो तिनमें साक्षात् भाव करिके नहीं भजनकरे हैं याते आत्मघाती है अहो बड़ोकष्टहै मिथ्याभूत देहादिकनके सेवनते असत् उपासना में हैं वासना जिनकी ऐसे नीच देहकूं धारण करनवारे बड़ो भयरूप जो संसारहै तामें भ्रमणकरे हैं याते आत्मघाती हैं २२ जीती हैं प्राण मन इन्द्रिय जिनने ऐसे दृढयोगके करनवारे मुनि हृदय में जाकी उपासना करे हैं ताही प्रकार शत्रु हैं ते भी तुम्हारे स्मरण ते तुमकूं प्राप्तभये है तथा शेष के शरीरकी तुल्य जे तुम्हारे भुजदण्डहैं तिनमें आसक्तहै बुद्धि जिनकी ऐसी जे स्त्रीहैं ते सम्पूर्ण समान दृष्टि करिके तुमकूं देखे हैं और तुमकूं प्राप्त भई हैं याही प्रकार हम जे श्रुतिहैं ते तुमकूं कृपा करिवेमें समान हैं कैसी हम है तुम्हारे चरण धारण करे हैं या प्रकार तुम्हारे स्मरणको प्रभाव

विधपरिवर्त्तपरिश्रमणाः ॥ नपरिलषन्तिकेचिदपवर्गमपीश्वरते चरणसरोजहंसकुलसङ्गविसृष्टगृहाः २१ त्वदनुपथंकुलायमिदमात्मसुहृत्प्रियवच्चरतितथो
न्मुखेत्वयिहितेप्रियआत्मनिच ॥ नवतरमन्त्यहोअसदुपासनयाऽऽत्महनोयदनुशयाभ्रमन्त्युरुभयेकुशरीरभृतः २२ निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजोहृदिय
न्मुनयउपासतेतदरयोऽपिययुःस्मरणात् ॥ स्त्रियउरगेन्द्रभोगभुजदण्डविषक्तधियोवयमपितेसमाःसमदृशोऽङ्घ्रिसरोजसुधाः २३ कइहनुवेदबतावरजन्मल
योऽग्रसरंयतउदगादृषिर्यमनुदेवगणाउभये ॥ तर्हिनसन्नचासदुभयंनचकालजवःकिमपिनतत्रशास्त्रमवकृष्यशयीतयदा २४ जनिमसतःसतोमृतिमुता
त्मनियेचभिदां विपणमृतंस्मरन्त्युपदिशन्तितआरुपितैः ॥ त्रिगुणमयःपुमानितिभिदायदबोधकृतात्वयिनततःपरत्रसभवेदवबोधरसे २५ सदिवमनस्त्रिवृ

है २३ हे भगवन् ! या संसार में पूर्व्वसिद्ध जो तुमहो तिनकूं आधुनिक उत्पत्ति विनाश इन करिके युक्त जो पुरुषहै सो कैसे जानेगो अर्थात् नहीं जानेगो जिन तुमते ब्रह्मा उत्पन्न भयोहै जा ब्रह्मा के पीछे आध्यात्मिक आधिदैविक देवतानके गण उत्पन्नभये जा समय तुम सबको संहार करिके सोवो हो ता समय जीवनकूं ज्ञानसाधन नहीं है याते प्रलयके समय स्थूल जो आकाशादिक सो नहीं है और सूक्ष्म महदादिक सोभी नहीं है तथा स्थूल सूक्ष्म करिके आरब्ध जो शरीर सो भी नहीं है और शरीरको कारणरूप कालको विषमभाव है सो भी नहीं है ऐसे भये सन्ते ता समय इन्द्रिय प्राणादिक कछु नहीं हैं और सबको जनावनवारो जो शास्त्र सो भी नहीं है २४ मिथ्याभूत यह जगत्है ताकी उत्पत्तिहै या प्रकार वैशेषिकादिक आचार्य्य कहे हैं और इकईस प्रकार के दुःखन को जो नाश है सो मोक्षहै ऐसे नैयायिक माने है और सांख्याचार्य्य हैं ते आत्मा में भेद भाव माने हैं तथा कर्म्म फलके व्यवहारकूं मीमांसक सत्य कहे हैं ते सम्पूर्ण आरोपित भ्रम करिके ही उपदेश करे हैं तत्त्वदृष्टि करिके उपदेश नहीं करे हैं वास्तव ते पुरुष त्रिगुणमयहोय तो सब जीव जिसके हैं सो सम्भव नहीं है यह कहे हैं त्रिगुणमय पुरुष है यह जो भेद है सो तुम्हारे विषे अज्ञान करिके कियो है तुम कैसेहो अज्ञानते परे हो सङ्गरहित हो ज्ञानघनहो याते तुम अबोध हो सो नहीं सब है २५ जो असत् नहीं उपजेहै और त्रिगुणमय पुरुष नहीं है तो यह प्रपञ्च भयोहो

कैसो है कारणभाव करिके जो विकार तिनें त्यागिके जो है सो सर्व्वव्यापक है फेरि कैसो है कि जो कहे हैं हम जाने हैं तिनने नहीं जान्यो है और जे कहे हैं हमने नहीं जान्यो है तिननेही जान्यो है ३० प्रकृति और पुरुष इनको जो जन्म है सो नहीं सम्भव है क्यों प्रकृति पुरुष अजन्मा हैं या कारण प्रकृति पुरुषके सम्बन्ध करिके जीव जन्म लेइ है जैसे जल में बबूला है ते केवल जल करिके नहीं उत्पन्न होइ हैं और केवल पवन करिकेभी नहीं उत्पन्न होइ हैं किन्तु दोनों से उत्पन्न होइ हैं तुम जो कारणरूप ईश्वरहौ तिनके विषे अनेक नाम रूप गुण इन करिके सहित जीव लीन होइ हैं ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे शहदमें सम्पूर्ण वनस्पतीनके रस लीनहोइ हैं और जैसे समुद्र में सम्पूर्ण नदी लीन होइ हैं ऐसे ३१ जीवनके विषे तुम्हारी माया करिके भ्रमहै ताय जानिके सुन्दर है बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष ससारके निवृत्त करनवारे जे तुमहौ तिनके विषे भावना करे हैं कैसे भ्रमे हैं वारंवार जन्म लेइ हैं और जे तुम्हारे शरण होइके भजन करे हैं तिनकूं संसारको भय नहीं होइहै काहे तें तीनि हैं शीत उष्ण वर्षा नेमि जाके ऐसो संवत्सररूपी काल सो तुम्हारो भ्रूभङ्गरूप है और जे तुम्हारे शरण नहीं हैं तिनके तुम रक्षक नहीं हौ किन्तु भयकारक हौ याते बुद्धिमान् हैं ते तुम्हारे विषे भाव करे हैं ३२

नियन्तृभवेत्समममनुजानतांयदमतंमतदुष्टतया ३० नघटनउद्भवःप्रकृतिपूरुषयोरजयोरुभययुजाभवन्त्यसुभृतोजलबुद्बुदवत् ॥ त्वयितइमेततोवि विधनामगुणैःपरमेसरितइवार्णवेमधुनिलिल्युरशेषरसाः ३१ नृपुतवमाययाभ्रममभीष्ववगत्यभृशंत्वयिसुधियोऽभवेदधतिभावमनुप्रभवम् ॥ कथमनुवर्त्त तांभवभयन्तवयद्भ्रुकुटिःसृजतिमुहुस्त्रिणेमिरभवच्छरणेषुभयम् ३२ विजितहृषीकवायुभिरदान्तमनस्तुरगंयइहयतन्तियन्तुमतिलोलमुपायखिदः ॥ व्यसनशतान्विताःसमवहायगुरोश्चरणंवणिजइवाजसन्त्यकृतकर्णधराजलधौ ३३ स्वजनसुतात्मदारधनधामधराऽसुरथैस्त्वयिसतिकिंनृणांश्रयतआत्म निसर्व्वरसे ॥ इतिसदजानतांमिथुनतोरतयेचरतांसुखयतिकोन्विहस्वविहतेस्वनिरस्तभगे ३४ भुविपुरुपुण्यतीर्थसदनान्यृषयोविमदास्तउतभवत्पदा म्बुजहृदोऽघभिदङ्घ्रिजलाः ॥ दधतिसकृन्मनस्त्वयियआत्मनिनित्यसुखेनपुनरुपासतेपुरुषसारहरावसथान् ३५ सतइदमुत्थितंसदितिचेन्ननुतर्कहतं

जीती हैं इन्द्रिय प्राण जिनने तिन करिकेहू अतिचञ्चल दमन करिवे कूं अशक्य ऐसो मनरूप घोड़ा ताय जीतिवेकूं जे यत्न करे हैं ते उपाय करिके खेदकूं प्राप्त होइहैं और बहुत व्यसनन करिके व्याकुल होइहैं काहे तें कि जासूं मन जीतिये है तिन गुरुनके चरणनकू त्यागिके यत्न करेहैं ते दुःखकूं पावेहैं जैसे नहीं कियोहै नावको खेवनवारो जिनने ऐसे बनिया समुद्रमें दुःख पावें ऐसे ३३ तुम्हारो जो पुरुष आश्रय लेइहै ताकू स्वजन पुत्र देह स्त्री धन घर पृथ्वी प्राण रथ इनसूं कहा प्रयोजन है कैसे तुमहौ आत्मा सब सुख आनन्दरूप जो तुमहौ तिनको जो पुरुष आत्मामें सेवन करै ताकूं इन तुच्छ पदार्थन सूं कहा प्रयोजन है सत्य परमार्थ सुखकू नहीं जानिके स्त्री पुरुष मिलिके रतिके लिये विचरे हे तिनकूं या संसारमें कौन सुखहै अर्थात् कोई नहीं कैसो संसारहै आपते मिथ्याभूत और साररहित है याते तुम्हारोही भजन करिवो उचित है ३४ अहङ्कार कूं त्यागिके तुम्हारे चरणारविंदकूं हृदय में धारण कियो है जिनने याही ते पापको दूरि करनवारो है चरणोदक जिनको ऐसे जे तुम्हारे भक्त ऋषि हैं ते पृथ्वीमें बहुत पुण्यतीर्थ क्षेत्रनकूं सेवन करे हैं अथवा बहुतहै भगवान् को भजनरूप पुण्य जिनके ऐसे गुरु महात्मानके आश्रमन को सेवनकरे हैं वे पुरुषके सारके हरनवारे जे घर हे तिनें नहीं

यति संन्यासी हैं ते हृदयमें स्थित ऐसी जे कामकी वासना हैं तिने नहीं उखारे हैं तिन असाधुन के हृदयमें तुम स्थित हौ परन्तु नहीं मिलो हौ कैसे नहीं मिलो हौ जैसे कण्ठ में स्थित मणि भूले पीछे नहीं मिले हैं तैसे तुम नहीं मिलो हौ उन संन्यासीनकूं केवल तुम्हारो स्मरण नहीं है तो कहा है जे इन्द्रियन के तृप्ति करनवारे हैं तिन कूं या लोक में दुःखही है काहे ते दुःख है जाते लोकन को आराधन करनो धन सञ्चय करनो भोग करनो परञ्च छिपाय कै करनो ताते या लोक में दुःख होइ है और तुम्हारी प्राप्ति के लिये संन्यास लियो है सो तुम्हारी प्राप्ति भई नहीं और अपने निजधर्म्म को अतिक्रमण कर्‌यो याते तुम्हारो दण्डरूप नरक ताकी प्राप्ति भई यासूं परलोक में भी सुख नहीं दोनों लोकन ते भ्रष्ट भये ३९ गुण और ऐश्वर्य्य करिके युक्त हे भगवन् ! तुम्हारे ज्ञान करिके युक्त ऐसो जो भक्त है सो कर्म्मफलके देनवारे जो तुम ईश्वर तिन ते उठे प्राचीन पुण्य पाप तिनके फल जे सुख दुःख तिनें स्मरण नहीं करे है और देहाभिमानीन की प्रवृत्ति निवृत्ति की करनवारी ऐसी जे विधि निषेधरूप वाणी तिनें नहीं जाने हैं तुम्हारे भक्त के देहाभिमान नहीं है या कारण ते कार्य्य अकार्य्यको बोध नहीं है यह योग्य है जा कारण ते मनुष्यन करिके दिन दिन में श्रवण करिके चित्त में धारण किये ऐसे तुम सो भक्तन कूं मोक्षगति होउ कैसे तुम भक्तन ने धारण कियो हो तहां कहे हैं युग युग में उपदेश को जो

पदाद्भवतः ३९ त्वदवगमीनवेत्तिभवदुत्थशुभाशुभयोर्गुणविगुणान्वयांस्तर्हिदेहभृतांचगिरः ॥ अनुयुगमन्वहंसगुणगीतपरंपरया श्रवणभृतोयतस्त्व मपवर्गगतिर्मनुजैः ४० द्युपतयएवतेनययुरन्तमनन्ततयात्वमपियदन्तराऽण्डनिचयाननुसावरणाः ॥ खइवरजांसिवान्तिवयसासहयच्छ्रुतयस्त्वयि हिफलन्त्यतन्निरसनेनभवन्निधनाः ४१ श्रीभगवानुवाच ॥ इत्येतद्ब्रह्मणःपुत्रा आश्रुत्यात्मानुशासनम् ॥ सनन्दनमथाऽऽनर्चुःसिद्धाज्ञात्वाऽऽत्मनोगतिम् ४२ इत्यशेषसमाम्नायपुराणोपनिषद्रसः ॥ समुद्धृतःपूर्व्वजातैर्व्योमयानैर्महात्मभिः ४३ त्वञ्चैतद्ब्रह्मदायादश्रद्धयाऽऽत्मानुशासनम् ॥ धारयंश्चरगां

विस्तार ता करिके सम्प्रदाय के अनुसार करिके धारण किये हौ यामें यह कहे हैं जे तत्त्वज्ञानी हैं तिनकूं तौ कर्म्म को अधिकार नहीं और जे नित्य तुम्हारी कथा श्रवण कीर्त्तन इत्यादिक करे हैं तिनकूं तुम्हारे चरणकी प्राप्ति होइहै याते उनकूं विधि निषेध नहीं है और जे हैं ते योग के कपट करिके इन्द्रियन कूं लड़ावे हैं तिन पुरुषन कूं या लोक परलोक में दुःखही है ४० हे भगवन् ! स्वर्गादिक लोकन के पति जे ब्रह्मादिक हैं ते भी तुम्हारे प्रताप कूं नहीं पावतभये तुमहीं अपने अन्त कूं नहीं प्राप्त होउ हौ ब्रह्मादिक न पावें यामें कहा आश्चर्य्य है तहां भगवान् कहे है जो मैं अपने अन्त कूं न जानों तौ सर्व्वशक्ति और सर्व्वज्ञ कैसेहूं तहाँ कहे हैं तुम्हारे वैभव को अन्त नहीं है जैसे शशे के शृङ्ग नहीं जानने ते सर्व्वज्ञता शक्ति जाति रहे है किन्तु नहीं जाय है जो शशे के शृङ्ग होई तौ मिलै जा तुम परमेश्वर के मध्यमें दश दश गुण अधिक सात आवरण तिन करिके युक्त ब्रह्माण्डन के समूह ते कालचक्र करिके भ्रमत डोलै हैं जैसे आकाश में एक सङ्ग रज भ्रमण करे हैं ऐसे याते श्रुति हैं ते पर्य्यवसान कूं तात्पर्य्य करिके प्राप्त होइ हैं साक्षात् कहे है सगुण रूप जो तुमहौ तिनके गुणन को अन्त नहीं है निर्गुण है ताकूं अगोचर नहीं जाते तात्पर्य्य सूं कहे हैं ४१ नारायण नारदसूं कहे हैं या ब्रह्मा के पुत्र सनकादिक वेदनकी स्तुति श्रवण करिके आत्मा की गति जानि के सनन्दनजी को पूजन करत भये ४२ या प्रकार आकाशमें है गमन जि-

है १) अब राजा परीक्षित् पूछनकरे हैं कि हे महाराज शुकदेव जी! देवता असुर मनुष्यन में जे अमंगलरूप शिव को भजन करे हैं ते बहुधा धनवान् होय हैं और लक्ष्मी के पति श्रीकृष्णचन्द्र को जे भजनकरे हैं ते धनवान् हू नहीं होइ हैं और विषय भी नहीं भोगे हैं यह हम जान्यो चाहे हैं यामें हमारे बड़ो सन्देह है विरुद्ध है स्वभाव जिनको ऐसे जे स्वामी हैं तिनके भजन करनवारेन की और गति होइ है कहो जो शिवजी विभूति लगावें श्मशान में वास करें आक धतूरो जिनकूं प्यारो लगे ऐसे अमङ्गलरूप शिवजी हैं जिनके कछु नहीं तिनको जे भजन करेहैं ते लक्ष्मीवान् होइ हैं और भोग भोगे हैं और लक्ष्मीके पति अच्छे भोग भोगें सुन्दर वस्त्र पहिरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं जे भजेहैं ते बहुधा दरिद्री होइहैं यह स्वामीन की गति औरहै सेवकन की गति औरहै उचित तो यह है जो स्वामी होय तैसोही सेवकहोय सो नहीं यह सन्देह है १। २ अब शुकदेवजीकहे हैं हे राजन् परीक्षित्! शिवजी में शक्ति रहे है गुणनको जो आपुसमें संवर्षण है ताधूं तमोगुण तीन प्रकार को है ताहीकूं कहेहैं सात्त्विक अहंकार और राजस अहंकार तामस अहंकार ऐसे तीन प्रकारके अहंकारके अधिष्ठाता शिवजी हैं सो तीनप्रकारके हैं ३ ता अहंकारते पृथ्वी जल तेज वायु आकाश ये

विरुद्धशीलयोःप्रभ्वोर्विरुद्धाभजतांगतिः२ श्रीशुकउवाच ॥ शिवःशक्तियुतःशश्वत्त्रिलिङ्गोगुणसंवृतः ॥ वैकारिकस्तैजसश्चतामसश्चेत्यहंत्रिधा ३ ततो विकाराअभवन्षोडशामीषुकिञ्चन ॥ उपधावन्विभूतीनांसर्व्वासामश्नुतेगतिम् ४ हरिर्हिनिर्गुणःसाक्षात् पुरुषःप्रकृतेःपरः॥ससर्व्वदृगुपद्रष्टा तंभजन्निर्गुणोभवेत् ५ निवृत्तेष्वश्वमेधेषु राजायुष्मत्पितामहः ॥ शृण्वन्भगवतोधर्म्मानपृच्छदिदमच्युतम् ६ सआहभगवांस्तस्मै प्रीतःशुश्रूषवेप्रभुः ॥ नृणांनिःश्रेयसार्थाय योऽवतीर्णोयदोःकुले ७ श्रीभगवानुवाच ॥ यस्याहमनुगृह्णामिहरिष्येतद्धनंशनैः ॥ ततोऽधनन्त्यजन्त्यस्यस्वजनादुःखदुःखितम् ८ सयदावितथोद्योगोनिर्विण्णःस्याद्धनेहया ॥ मत्परैःकृतमैत्रस्य करिष्येमदनुग्रहम् ९ तद्ब्रह्मपरमंसूक्ष्मं चिन्मात्रंसदनन्तकम् ॥ अतोमांसुदुराराध्यं हित्वाऽन्या

पञ्चभूत और दश इन्द्रिय तथा एक मन ये सोलह विकार भये हैं इन विकारनमें कोई एक विकारवान् उपाधिरूप विकार के भजन करेते सम्पत्ति मिले है उपाधि जाकूं लगि रही है वाके भजन करे ते उपाधि होइ है ४ निर्गुण साक्षात् माया ते परे सबके देखनवारे साक्षीभूत जो हरि भगवान् है तिनको जो पुरुष भजनकरे वह निर्गुण होइ है ५ अश्वमेध यज्ञ जब पूर्ण होय चुक्यो तब तुम्हारे दादे राजा युधिष्ठिर वैष्णव धर्म्मनकूं श्रवण करिके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ते यह पूंछत भये ६ मनुष्यनके कल्याण करिबे के लिये यदुकुलमें आप अवतरे ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो प्रसन्न होय के सुनने की इच्छावाले राजा युधिष्ठिर ते यह कहत भये ७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जा पुरुष के ऊपर मैं कृपा करूं हूं ता पुरुष को धन हौलें हौलें हरण करि लेउ हूं ता पीछे जब दरिद्री होइ जाय है तब दुःखी की तुल्य दिखाई देइ है वाकूं भय्या वन्धु सब त्यागि देइहैं ८ भय्या वन्धुन के हठते फेरि कमाई में लगे तब मेरे अनुग्रहते निष्फल उद्यम होइहै तब धनके कमाइबे ते भी वैराग्य आय जाय है ता समय मत्परायण जे साधु हैं तिनसूं मित्रता करे है वा पुरुष के ऊपर मैं असाधारण अनुग्रह करूंहूं ९ वह परब्रह्म सूक्ष्म है चैतन्य है सर्वव्यापी है नाशरहित

है याते मैं आराधन करिवे में नहीं आऊंहूं मोकूं त्यागिके यह पुरुष और देवतानकूं भजे है १० सेवनकरे पीछे शीघ्र प्रसन्न होय जे देवताहैं तिनसूं जो राज्य और धन प्राप्त भयो है तासूं उद्धत होय के मतवारो होयके उन्मत्त होयके वरके देनवारे जे देवताहैं तिनैं भूलि जायहैं और अवज्ञाकरे हैं ११ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिक जे देवता हैं ते शाप देहैं और प्रसन्न होइ हैं और शिव ब्रह्मा ये दोनों शीघ्रही प्रसन्न होई है और शीघ्रही शाप देहैं है और श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रही प्रसन्न नहीं होइ हैं और जापे प्रसन्न होई ताकूं शाप नहीं देइहैं १२ ब्रह्मा और शिवजी ये शीघ्र शाप देई है यामें एक प्राचीन इतिहास है सो वर्णन करे हैं शिवजी वृकासुरकूं वरदैके कष्ट पावतभये १३ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसो शकुनिको पुत्र वृकासुर मार्ग में नारदजी कूं देखिके ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवतान में जल्दी कौन प्रसन्न होइ है यह पूछतभयो १४ तब नारदजी कहतभये कि तू महादेव को सेवन करु शीघ्र तेरो मनोरथ सिद्ध हो-

न्भजतेजनः १० ततस्तआशुतोषेभ्यो लब्धराज्यश्रियोद्धताः ॥ मत्ताःप्रमत्तावरदान्विस्मरन्त्यवजानते ११ श्रीशुकउवाच ॥ शापप्रसादयोरीशाब्रह्मविष्णु शिवादयः ॥ सद्यःशापप्रसादोऽङ्गशिवोब्रह्मानचाच्युतः १२ अत्रचोदाहरन्तीममितिहासंपुरातनम् ॥ वृकासुरायगिरिशोवरंदत्त्वापसङ्कटम् १३ वृकोनामा सुरःपुत्रःशकुनेःपथिनारदम् ॥ दृष्ट्वाऽऽशुतोषंपप्रच्छ देवेषुत्रिषुदुर्मतिः १४ सआहदेवंगिरिशमुपाधावाऽऽशुसिद्ध्यसि ॥ योऽल्पाभ्यांगुणदोषाभ्यामाशुतु ष्यतिकुप्यति १५ दशास्यबाणयोस्तुष्टः स्तुवतोर्वन्दिनोरिव ॥ ऐश्वर्यमतुलंदत्त्वा ततआपसुसङ्कटम् १६ इत्यादिष्टस्तमसुरउपाधावत्स्वगात्रतः ॥ केदार आत्मक्रव्येण जुह्वानोऽग्निमुखंहरम् १७ देवोपलब्धिमप्राप्य निर्वेदात्सप्तमेऽहनि ॥ शिरोऽवृश्चत्स्वधितिना तत्तीर्थक्लिन्नमूर्द्धजम् १८ तदामहाकारुणिकः सधूर्जटिर्यथावयंचाग्निरिवोत्थितोऽनलात् ॥ निगृह्यदोर्भ्यांभुजयोर्न्यवारयत्तत्स्पर्शनाद्भूयउपस्कृताकृतिः १९ तमाहचाङ्गालमलंवृणीष्वमे यथाऽभिकामं

यगो जो शिवजी थोड़े गुणनसूं शीघ्र प्रसन्न और थोडे दोष करिके क्रोधित होइ हैं १५ बन्दीजन की तुल्य स्तुति करैं ऐसे जे रावण और बाणासुर तिनके ऊपर प्रसन्नभये ऐसे जे शिवजी हैं सो बड़ो ऐश्वर्य देके निन असुरनते आपही कष्ट पावतभये रावणने तो कैलास उखारि लियो और बाणासुरने कही कि मेरे पुरकी रक्षाकरो १६ या प्रकार नारदजीने कही ता समय वृकासुर अपने देहते शिवजी को सेवन करतभयो केदारतीर्थ में शिवजी के अर्थ अपने शरीरको मांस काटिके अग्नि में हवन करतभयो १७ महादेवकी प्राप्ति न भई तब निर्वेद आयगयो ताते सप्तमदिन तीर्थ में जो स्नान कियो तासूं भीजे हैं बार जामें ऐसो जो शिरहै ताय छुरीलैके काटनलग्यो १८ ता समय बडे करुणावान् शिवजी हैं सो मूर्तिमान् अग्नि की तुल्यहै प्रकाश जिनको ऐसे अग्नि-कुण्ड में ते निकसिके हाथनते असुरकी भुजा पकरिकै जैसे कोई दुःखके मारे मरिबेकूं आवै ताय मने करे हैं ऐसे मने करतभये शिवजी के हाथके स्पर्श ते वाको देह ज्यों को त्यों होइगयो १९ वृका-सुरसूं शिवजी कहतभये कि हे वृकासुर ! तू तप करिके पूर्ण भयो अब वरमाग जो तेरी इच्छाहोइ सोही वर देउँगो जे मेरी शरण मनुष्य आवै हैं तिनके ऊपर जलमात्र के चढायेतेही प्रसन्न होय

जाऊँ हौं वड़ो आश्चर्य है तैंने वृथाही अपने देहकूं दुःख दियो २० तव वह अत्यन्त पापी जा जा पुरुषके शिरपै मैं हाथधरूं वह पुरुष मरिजाय या प्रकार सम्पूर्ण प्राणीनके भयको देनवारो जो वर है ताय महादेवजी सूं मागतभयो २१ हे भरतवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित्! या प्रकार वृकासुरको वचन श्रवण करिके उदासीन से होयके अच्छी वातहै ऐसे मुसिकायके जैसे सर्पकूं दूध प्यावे हैं ऐसे वृकासुरकूं वर देतभये २२ या प्रकार जातेकही निश्चय पार्व्वती के हरिवेकी है चाहना जाके ऐसो असुर है सो वर मिथ्याहै या सत्यहै यह परीक्षा लेवेके लिये महादेवजी के माथेपै हाथ धरिवे को उपाय करतभयो तासमय अपने कर्तव्य ते भयभीत होयके शिवजी भाजतभये २३ असुर जिनके पीछे लग्यो ऐसे शिवजी डरपिके कँपतेहुये स्वर्गपर्यन्त भाजे और पृथ्वीको जहां पर्यन्त अन्तहो तहाताई भाजे फेरि उत्तरदिशामें भाजिके गये २४ ता समय उपायकूं नहीं जानिके सम्पूर्ण देवता चुप होत भये ता पीछे प्रकाशमान माया ते परे ऐसो जो वैकुण्ठधाम है तामें जात भये २५ जा दे-

वितरागितेवरम् ॥ प्रीयेयतोयेननृणांप्रपद्यनामहोत्वयाऽऽत्माभृशमर्द्यतेवृथा २० देवंसवव्रेपापीयान् वरंभूतभयावहम् ॥ यस्ययस्यकरंशीर्ष्णि धास्येसम्रिय तामिति २१ तच्छ्रुत्वाभगवान्रुद्रोदुर्म्मनाइवभारत ॥ ओमितिप्रहसंस्तस्मै ददेऽहेरमृतंयथा २२ इत्युक्तःसोऽसुरोनूनं गौरीहरणलालसः ॥ सतद्वरपरीक्षार्थंश म्भोर्मूर्ध्निकिलासुरः ॥ स्वहस्तंधातुमारेभे सोऽबिभ्यत्स्वकृताच्छिवः २३ तेनोपसृष्टःसंत्रस्तः पराधावत्सवेपथुः ॥ यावदन्तंदिवोभूमेःकाष्ठानामुदगादुदक् २४ अजानन्तःप्रतिविधिं तूष्णीमासन्सुरेश्वराः ॥ ततोवैकुण्ठमगमद्भास्वरंतमसःपरम् २५ यत्रनारायणःसाक्षान्न्यासिनांपरमागतिः ॥ शान्तानांन्यस्त दण्डानांयतोनावर्त्ततेगतः २६ तंतथाव्यसनंदृष्ट्वा भगवान्वृजिनार्द्दनः ॥ दूरात्प्रत्युदियाद्भूत्वा वटुकोयोगमायया २७ मेखलाऽजिनदण्डाक्षैस्तेजसाऽ ग्निरिवज्वलन् ॥ अभिवादयामासचतं कुशपाणिर्विनीतवत् २८ श्रीभगवानुवाच ॥ शाकुनेयभवान्व्यक्तं श्रान्तःकिंदूरमागतः ॥ क्षणंविश्रम्यतांपुंस आत्माऽयंसर्व्वकामधुक् २९ यदिनःश्रवणायाऽलं युष्मद्व्यवसितंविभो ॥ भण्यतांप्रायशःपुम्भिर्धृतैःस्वार्थान्समीहते ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगव

कुण्ठधाम में शान्त जिनको स्वभाव और दूरि भयो है कालको दण्ड जिनते ऐसे संन्यासीन कूं परमगति अर्थात् प्राप्त होयवे योग्य ऐसे नारायण हैं सो साक्षात् विराजमान हैं २६ दुःखन के दूर करनवारे जो भगवान् नारायण हैं सो दौरयो चल्यो आवै है ता प्रकार कष्ट जाकूं ऐसो जो वृकासुर है ताइ दूरतेही देखिके अपनी योगमाया करिके ब्रह्मचारी को वेष मूंजकी कौंधनी मृग-छाला दण्ड माला इनकूं पहिरिके तेजसूं अग्निकी तुल्य प्रकाशमान होयके आयके कुशा है हाथमें जिनके ऐसे भगवान् हैं सो जैसे कोई नम्र होइके प्रणाम करे ऐसे प्रणाम करावत भये २७।२८ अव श्रीभगवान् कहे हैं हे शकुनिके पुत्र! तो कूं निश्चय खेदहै दूरि काहेकूं आयो क्षणभर विश्राम ले पुरुष कूं समस्त कामनान को देनवारो यह देह है ताकूं पीड़ा मतिदेय २९ हे समर्थ! जो तुम्हारो अभिप्राय हमारे आगे सुनाइवे योग्यहै तो कहो जनहै सो वहुधा पुरुषनकी सहाय ते अपने कामकूं करे है या कारण तुम हमसूं कहो ३० अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्

परीक्षित्! या प्रकार अमृतरूप वचनन करिके भगवान् ने पूछ्यो तब गयो है खेद जाको ऐसो वृकासुर है सो जैसे प्रथम तप करयो हो ताय कहत भयो ३१ अब श्रीभगवान् कहे हैं जो शिवने तुमकूं वर दियो है तो ताके वचनकूं हम सत्य नहीं माने हैं यह शिव दक्षके शाप करिके पिशाचन की दशाकूं प्राप्त भयो है और प्रेत पिशाचन को राजा है ३२ हे दानवन के इन्द्र! जगत्को गुरु जो महादेव है ताके वचनमें तोकू विश्वास है तो हे वृकासुर! तू शीघ्र अपने शिरपै हाथ धरिके परीक्षा ले ३३ हे दानवनमें श्रेष्ठ! या महादेव को वचन कैसे सत्य होयगो यह तो मिथ्यावादी है ऐसे महादेव कूं मार जो फेरि कभऊं मिथ्या न बोलेगो ३४ या प्रकार मनोहर विचित्र विचित्र जे भगवान्के वचन हैं तिन करिके भ्रष्ट भई है बुद्धि जाकी ऐसो कुबुद्धि वृकासुर है सो भूलिके अपने शिरपै अपनो हाथ धरतभयो ३५ शिरपै हाथधरे पीछे वज्रको मारो जैसे गिरे है ऐसे क्षणभरमें भिन्न शिर करिके गिरतभयो ता समय स्वर्ग में जय जय और नमःशब्द तथा साधुशब्द होतभयो ३६

तापृष्टोवचसाऽमृतवर्षिणा ॥ गतक्लमोत्रवीत्तस्मै यथापूर्वमनुष्ठितम् ३१ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंचेत्तर्हितद्वाक्यंनवयंश्रद्दधीमहि ॥ योदक्षशापात्पैशाच्यं प्राप्तःप्रेतपिशाचराट् ३२ यदिवस्तत्रविश्रम्भोदानवेन्द्र जगद्गुरौ ॥ तर्ह्यङ्गाशुस्वशिरसि हस्तंन्यस्यप्रतीयताम् ३३ यद्यसत्यंवचःशम्भोः कथंचिद्दानवर्षभ ॥ तदैनं जह्यसद्वाचं नयद्वक्तानृतंपुनः ३४ इत्थंभगवतश्चित्रैर्वचोभिःससुपेशलैः ॥ भिन्नधीर्विस्मृतःशीर्ष्णि स्वहस्तंकुमतिर्न्यधात् ३५ अथापतद्भिन्नशिरावज्राहतइवक्षणात् ॥ जयशब्दोनमःशब्दःसाधुशब्दोऽभवद्दिवि ३६ मुमुचुःपुष्पवर्षाणि हतेपापेवृकासुरे ॥ देवर्षिपितृगन्धर्वा मोचितःसङ्कटाच्छिवः ३७ मुक्तंगिरिशमभ्याह भगवान्पुरुषोत्तमः ॥ अहोदेवमहादेव पापोऽयंस्वेनपाप्मना ३८ हतःकोनुमहत्स्वीशजन्तुर्वैकृतकिल्बिषः ॥ क्षेमीस्यात्किमुविश्वेशेकृतागस्कोजगद्गुरौ ३९ यएवमव्याकृतशक्त्युदन्वतःपरस्यसाक्षात्परमात्मनोहरेः ॥ गिरित्रमोक्षंकथयेच्छृणोतिवा विमुच्यतेसंसृतिभिस्तथाऽरिभिः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुद्रमोक्षणंनामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सरस्वत्यास्तटेराजन्नृषयःसत्रमासत ॥ वितर्कःसमभूत्तेषां त्रिष्वधीशेषुकोमहान् १ तस्यजिज्ञासयातेवैभृगुंब्रह्मसुतंनृप ॥ तज्ज्ञप्त्यै

पापात्मा वृकासुर मरयो ता समय देवता ऋषि पितृ गन्धर्व ये फूलनकी वर्षा करतभये और शिवजी कष्ट ते छूटत भये ३७ जब शिवजी कष्टते छूटे तब पुरुषोत्तम भगवान् कहतभये अहो देव महादेव! यह वृकासुर पापी अपने पाप करिके मरयो है ३८ हे ईश! बडेनको अपराध करे तें कौन प्राणी कल्याण कूं प्राप्त होइहै देखो विश्वके ईश्वर जगत् के गुरु तुमहौ तिनके अपराध करेतें भलो कदापि नहीं होय है ३९ वचन और मनते कहिबे में न आवें ऐसी अनेक शक्ति जिनमें रहें सब के कारण साक्षात् परमेश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने शिवजी कूं कष्टते छुड़ाय दियो यह जो चरित्र है ताय जो पुरुष कहै और सुने वह संसार ते और वैरिनते छूटि जाय है ४० इति श्रीमन्महाभागवततार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुद्रमोक्षणनामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ * ॥ * ॥

(नवाशीतितमेदेवःकोमहानितिसंशये ॥ परीक्ष्यविष्णोरुत्कर्षमुनिभ्योऽवर्णयद्भृगुः १ नवासीवें अध्याय में कौन देव बड़ो है या संशय में भृगुजी परीक्षाकर विष्णुजीकी श्रेष्ठता मुनिन सूं वर्णन

करते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय सरस्वती नदीके तटपै ऋषि यज्ञकरे हैं तहाँ ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में कौन बड़ो है ऐसो आपुस में झगरो होतभयो १ हे राजन् ! इनमें कौन बड़ोहै तावी परीक्षाके लिये ब्रह्माके पुत्र भृगुकूं पठावतभये सो भृगु परीक्षा करिबे के निमित्त ब्रह्माकी सभामें जातभये २ ब्रह्माके स्वभावकी परीक्षा के लिये ब्रह्माके प्रणाम स्तुति कछु भी न करतभये ब्रह्माजी अपने क्रोधसूं प्रज्वलित होयके भृगुके ऊपर क्रोध करतभये ३ श्रीहरिते है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा अपने पुत्रके अर्थ चित्तमें उठ्यो जो क्रोध है ताय आपुही शान्त करतभये जैसे अपने कारण जलसूं अग्नि शान्त होइहै ऐसे ४ वहा से भृगुजी कैलास पर्व्वतपै शिवजी के पास जातभये ता समय शिवजी भय्या जो भृगुहै ताय उठिके मिलिवे कूं प्रीति करिके आरम्भ करतभये ५ भृगुजी महादेवजी सूं मिलिवे की इच्छा न करतभये क्यों कि तू अमंगलहै तासूं न मिलूंगो यह सुनिके महादेवजी बड़ो क्रोध करिके लाल नेत्र करिके हाथ में त्रिशूल लेके मारिवे को प्रारम्भ करतभये ६ ता समय पार्व्वती महादेवजी के पावनमें परिके कहति भई कि हे महाराज ! आपको भ्राताहै याकू कैसे मारोहौ ऐसी वाणी करिके शान्त कराति

प्रेषयामासुः सोऽभ्यगाद्ब्रह्मणःसभाम् २ नतस्मैप्रह्वणंस्तोत्रं चक्रेसत्त्वपरीक्षया ॥ तस्मैचुक्रोधभगवान् प्रज्वलन्स्वेनतेजसा ३ सआत्मन्युत्थितंमन्युमा त्मजायात्मनाप्रभुः॥ अशीशमद्यथावह्निं स्वयोन्यावारिणाऽऽत्मभूः ४ ततःकैलासमगमत्सतंदेवोमहेश्वरः॥ परिरब्धुंसमारेभउत्थायभ्रातरंमुदा ५ नैच्छ त्त्वमस्युत्पथगइतिदेवश्चुकोपह॥शूलमुद्यम्यतंहन्तुमारेभेतिग्मलोचनः ६ पतित्वापादयोर्देवी सान्त्वयामासतंगिरा॥ अथोजगामवैकुण्ठं यत्रदेवोजनार्दनः ७ शयानंश्रियउत्सङ्गे पदावक्षस्यताडयत्॥ ततउत्थायभगवान् सहलक्ष्म्यासतांगतिः ८ स्वतल्पादवरुह्याथ ननामशिरसामुनिम् ॥ आहतेस्वागतंब्रह्मन् निषीदात्राऽऽसनेक्षणम् ॥ अजानतामागतान्वः क्षन्तुमर्हथनःप्रभो ९ अतीवकोमलौतात चरणौतेमहामुने ॥ इत्युक्त्वाविप्रचरणौ मर्दयन्स्वेनपाणिना १० पुनीहिसहलोकंमां लोकपालांश्चमद्गतान् ॥ पादोदकेनभवतस्तीर्थानांतीर्थकारिणा ११ अद्याहंभगवँल्लक्ष्म्याआसमेकान्तभाजनम् ॥ वत्स्यत्युर सिमेभूतिर्भवत्पादहतांहसः १२ श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रुवाणेवैकुण्ठेभृगुस्तन्मन्द्रयागिरा ॥ निर्वृतस्तर्पितस्तूष्णीं भक्त्युत्कण्ठोऽश्रुलोचनः १३ पुनश्चसत्र

भई ताके पीछे भृगु वैकुण्ठमें जातभये जहा जनार्दन भगवान् वास करेहैं ७ लक्ष्मीकी गोदमें सोवैं जो विष्णु हैं तिनके हृदयमें पांवकी लात मारतभयो तदनन्तर साधुनकी गति जे विष्णु हैं ते लक्ष्मीसहित पलँगपै ते उठिके पृथ्वीमें मस्तक धरिके भृगुजी कूं प्रणाम करतभये ८ और कहतभये कि हे ब्रह्मन् ! तुम भलेआये नेक आसनपै बैठिजावो हे समर्थ ! आपके आयवेकू नहीं जानें जे हम तिनके अपराधकूं क्षमाकरो ९ हे तात ! हे महामुनि ! तुम्हारे चरण कोमल हैं और मेरी छाती कठोर है तुम्हारे चरणमें चोट लगी होयगी या प्रकार कहिके अपने हाथ ते ब्राह्मण के चरणनकूं सहरावन लगे १० गंगादिक तीर्थनको पवित्र करनवारो जो तुम्हारो चरणोदक है ताकरिके लोकन समेत मोको और मेरे भीतरके लोकपालन को पवित्रकरौ ११ हे भगवन् ! अब मैं लक्ष्मीके वास करिवे को एकान्त पात्र भयो तुम्हारे चरणस्पर्श ते पाप दूरिभये मेरी छाती में लक्ष्मी वास करै १२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार नारायण के कहतेहुये

तिनकी मनोहर वाणी करिके तृप्त होयके भक्ति करिके चाह जिनके आंसू नेत्रनमें आयगये ऐसे भृगुजी सुखी होयके चुप होतभये १३ हे राजन् परीक्षित्! भृगुजी फेरि अपने यज्ञमें आयके वेदके पढ़नवारे मुनिन सूं तीनोंन की जो बात देखि आये ताय सम्पूर्ण कहतभये १४ भृगुकी बात सुनिके आश्चर्ययुक्त भये और सन्देह जिनके दूरिभये ऐसे मुनि हैं ते इतनो अपनो अपराध कियो परन्तु क्रोध न आयो विष्णु भगवान्में ही शान्ति है और काहू देवतामें नहीं है याते सबते बड़े विष्णुभगवान् हैं यही निश्चय करतभये १५ साक्षात् धर्म्म और धर्म्म के लिये ज्ञान तथा वैराग्य और आठप्रकारके ऐश्वर्य और आत्माके मलनकूं दूरि करनवारो यश ये सम्पूर्ण भगवान्के विषेही हैं १६ दूरि भयो है कालको दण्ड जिनते शान्तस्वभाव और समानचित्त जिनके निष्किञ्चन अर्थात् काहू वस्तुकी जिनके चाहना नहीं ऐसे जे साधु मुनि हैं तिनकूं भगवान् प्राप्त होयवे योग्य हैं यह कहे हैं १७ सत्त्वगुण है सो भगवान् को प्यारो रूपहै और ब्राह्मण हैं ते भगवान् के इष्ट देवता हैं जिनके ऐसे भगवान् हैं तिनको नहीं है कोई बातकी चाहना जिनके निपुणहै बुद्धि जिनकी ऐसे शान्तपुरुष भजन करे हैं १८ तिन भगवान् ने अपनी गुणिनी माया करिके सत्त्वगुणी

मात्रज्य मुनीनांब्रह्मवादिनाम् ॥ स्वानुभूतमशेषेण राजन्भृगुरवर्णयत् १४ तन्निशम्याथमुनयोविस्मितामुक्तसंशयाः ॥ भूयांसंश्रद्दधुर्विष्णुं यतःशान्तिर्यतोऽभयम् १५ धर्मःसाक्षाद्यतोज्ञानं वैराग्यंचतदन्वितम् ॥ ऐश्वर्यंचाष्टधायस्माद्यशश्चात्ममलापहम् १६ मुनीनांन्यस्तदण्डानांशान्तानांसमचेतसाम् ॥ अकिञ्चनानांसाधूनां यमाहुःपरमांगतिम् १७ सत्त्वंयस्यप्रियामूर्त्तिर्ब्राह्मणास्त्विष्टदेवताः ॥ भजन्त्यनाशिषःशान्तायंवानिपुणबुद्धयः १८ त्रिविधाकृतयस्तस्य राक्षसाअसुराःसुराः ॥ गुणिन्यामाययासृष्टाःसत्त्वंतत्तीर्थसाधनम् १९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंसारस्वताविप्रानृणांसंशयनुत्तये ॥ पुरुषस्यपदाम्भोजसेवयातद्गतिंगताः २० ॥ सूतउवाच ॥ इत्येतन्मुनितनयास्यपद्मगन्धपीयूषंभवभयभित्परस्यपुंसः ॥ सुश्लोकंश्रवणपुटैःपिबन्त्यभीक्ष्णं पान्थोध्वभ्रमणपरिश्रमंजहाति २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एकदाद्वारवत्यांतु विप्रपत्न्याःकुमारकः ॥ जातमात्रोभुवंस्पृष्ट्वा ममारकिलभारत २२ विप्रोगृहीत्वामृतकं राजद्वार्युपधायसः ॥ इदंप्रोवाचविलपन्नातुरोदीनमानसः २३ ब्रह्मद्विषःशठधियोलुब्धस्यविषयात्मनः ॥ क्षत्रबन्धोःकर्मदोषात्पञ्चत्वंमेगतोऽर्भ

रजोगुणी तमोगुणी तीनप्रकार के राक्षस असुर और देवता रचे हैं तिनमें सत्त्वगुणीरूप है सोही पुरुषार्थ को हेतुहै १९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार सरस्वती के तीरवासी ब्राह्मण हैं ते मनुष्यन के सन्देह दूरि करिवे के लिये श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की सेवा करिके श्रीकृष्णचन्द्रकीही गतिकूं पावतभये २० अब सूतजी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासदेवमुनि के पुत्र जे शुकदेवजी हैं तिनके मुखकमलकी सुगन्ध जामें मिली ऐसो जो अमृततुल्य संसार के भयको काटनवारो श्रेष्ठपुरुष श्रीकृष्णचन्द्र को सुन्दर यश है ताय कानरूपी दोनान में भरिके जो पुरुष पानकरेगो वह संसार के आवागमनके परिश्रमसूं छूटि जायगो २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या चरित्रमें श्रीकृष्णचन्द्र को उत्कर्ष कह्यो अब श्रीकृष्णचन्द्रको ही उत्कर्ष निकसे ऐसो और चरित्रहै ताय वर्णनकरे हैं एकसमय द्वारकामें हे राजन् परीक्षित् ! एक ब्राह्मणकी स्त्री को पुत्र जन्म होत पृथ्वीको स्पर्श करतेही मरतभयो २२ वह ब्राह्मण मरे पुत्रकूं लैके राजा

उग्रसेन की ड्योढ़ी पै धरिके विलाप करत आतुर होय दीनमन होयके यह कहतभयो २३ ब्राह्मणन को द्वेषी शठबुद्धि लोभी विषयनमें आसक्तहै मन जाको ऐसो जो क्षत्रियनमें अधम यह राजा है ताके कर्म्मदोष ते मेरो पुत्र मरयो है मेरो कुछ दोष नहीं है २४ हिंसामें है विहार जाको खोंटोस्वभाव जाको नहीं जीती हैं इन्द्रिय जाने ऐसो जो राजा है ताय जे प्रजा सेवन करे हैं ते दरिद्री नित्यही दुःखयुक्त रहकर क्लेशकूं पावे हैं २५ याही प्रकार ब्राह्मणन्हापि दूसरे पुत्रकूं फेरि तीसरेपुत्रकूं लैके राजा के द्वारपै धरिके यही कहत भयो कि मेरो कछु दोष नहीं है या राजा के दोष ते मेरे पुत्र मरे हैं २६ काहू एकसमय अर्ज्जुनहै सो श्रीकृष्णचन्द्र के निकट ब्राह्मणकी बात श्रवणकरिके नवम बालक जब मरिचुको तब ब्राह्मण ते बोलतभयो २७ हे ब्राह्मण ! तू काहे के निमित्त रोदन करे है तेरो स्थान जो द्वारकाहै तामें धनुष्को धारण करनवारो कोई क्षत्रियन में अधमहू नहीं है जो ब्राह्मणकी सेवाकरै जैसे यज्ञमें ब्राह्मण इकट्ठे होय बैठे हैं ऐसे ये यादव मिलि बैठे हैं २८ हे भगवन् ! जिन यादवन के जीवत धन स्त्री पुत्र जिनके गये ऐसे ब्राह्मण शोच करे हैं प्रजाके पोषण करनवारे क्षत्रियन के वेषसूं अपने प्राणनको पोषण विचारे नटके समान करे हैं २९ हे

कः २४ हिंसाविहारंनृपतिं दुःशीलमजितेन्द्रियम् ॥ प्रजाभजन्त्यःसीदन्तिदरिद्रानित्यदुःखिताः २५ एवंद्वितीयंविप्रर्षिस्तृतीयंत्वेवमेवच ॥ विसृज्यसनृप द्वारि तांगाथांसमगायत २६ तामर्ज्जुनउपश्रुत्य कर्हिचित्केशवान्तिके ॥ परेतेनवमेबाले ब्राह्मणंसमभाषत २७ किंस्विद्ब्रह्मंस्त्वन्निवासे इहनास्तिध नुर्धरः ॥ राजन्यबन्धुरेतेवै ब्राह्मणाःसत्रमासते २८ धनदारात्मजापृक्तायत्रशोचन्तिब्राह्मणाः ॥ तेवैराजन्यवेषेण नटाजीवन्त्यसुम्भराः २९ अहंप्र जांवांभगवन्रक्षिष्येदीनयोरिह ॥ अनिस्तीर्णप्रतिज्ञोऽग्निं प्रवेक्ष्येहतकल्मषः ३० ब्राह्मणउवाच ॥ संकर्षणोवासुदेवःप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ अनिरुद्धोऽप्रति रथोनत्रातुंशक्नुवन्तियत् ३१ तत्कथंनुभवान्कर्म्मदुष्करंजगदीश्वरैः ॥ चिकीर्षसित्वंबालिश्यात्तन्नश्रद्दध्महेवयम् ३२ ॥ अर्ज्जुनउवाच ॥ नाहंसंकर्षणोब्रह्म न् नकृष्णःकार्ष्णिरेवच ॥ अहंवाअर्ज्जुनोनामगाण्डीवंयस्यवैधनुः ३३ मावमंस्थाममब्रह्मन् वीर्यंत्र्यम्बकतोषणम् ॥ मृत्युंविजित्यप्रधने आनेष्येतेप्रजां प्रभो ३४ एवंविश्रम्भितोविप्रः फाल्गुनेनपरंतप ॥ जगामस्वगृहंप्रीतःपार्थवीर्य्यंनिशामयन् ३५ प्रसूतिकालआसन्ने भार्याया द्विजसत्तमः ॥ पाहिपाहि

ब्राह्मण ! दीन जो तुमहौ तिनके पुत्रनकी मैं रक्षा करूंगो और जो मोपै रक्षा न होयगी अर्थात् मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण न होयगी तो ब्राह्मण की प्रीति करे विना नहीं गये हैं पाप जाके ऐसो मैं अग्नि में जरूंगो ३० अब ब्राह्मण कहे है सङ्कर्षण वासुदेव और धनुर्द्धारीन में श्रेष्ठ प्रद्युम्नजी तथा जाकी बराबरिको योद्धा कोई नहीं ऐसो अनिरुद्ध ये सब मेरे बालककी रक्षा करिवे कूं जो समर्थ न होत भये ३१ तो जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जा कर्म्म कूं न करिसके वा कर्म्मकूं तू अर्ज्जुन कैसे करिसकेगो तू अज्ञानते करयो चाहे है यह हम निश्चय नहीं माने हैं ३२ अब अर्ज्जुन कहे है के हे ब्राह्मण ! तैंने पौन कायरन के नाम मेरे सम्मुख लिये मैं संकर्षण नहीं हूं कृष्ण नहीं हूं कृष्णको पुत्र प्रद्युम्न नहींहूं गाण्डीव है धनुष् जाको ऐसो अर्ज्जुन नामी क्षत्रिय हूं ३३ हे ब्राह्मण ! तू मेरो अपमान मतिकरे महादेवको प्रसन्न करनवारो मेरो पराक्रम है हे समर्थ ब्राह्मण ! संग्राम विषे मृत्युकूं जीतिके तेरे पुत्र लायके देऊंगो ३४ हे शत्रुन के तापके दूरि करनवारे राजा परीक्षित् ! या प-

कार धृष्टता के वचनन करिके विश्वास जाकूं दियो ऐसो जो ब्राह्मणहै सो अर्ज्जुनके पराक्रमकूं श्रवणकरिके प्रसन्नहोय अपने घरकूं आवत भयो ३५ जब स्त्रीकूं प्रसूतिकाल को समय आयो तब ब्राह्म-
णहै सो मृत्यु ते पुत्र की रक्षाकर रक्षाकर या प्रकार वारंवार आतुरहोय अर्ज्जुन ते कहत भयो ३६ ता समय अर्ज्जुन पवित्र जलको स्पर्श करिके शिवजीकूं नमस्कार करिके दिव्यशस्त्रन को स्मरण
करिके प्रत्यंचाचढाय गाण्डीवधनुषकूं हाथमें लेतभयो ३७ अनेक अस्त्रनमें मिलाये जे बाणहै तिनकरिके सोघरिके घरको आच्छादित करतभयो तिरछे बाण चलाये ऊपरकूं चलाये नीचेकूं चलाय
के घरके ऊपर बाणनको अर्ज्जुन पंजरा सों करतभयो ३८ तापीछे ब्राह्मणकी स्त्रीके जन्म्यो जो बालकहै सो वारवार रोदन करिके शीघ्रही शरीरसहित आकाशमार्ग होयके जातभयो और वेर
देह परचो रहे हो अबकी देह भी न रह्यो ३९ ता समय ब्राह्मण श्रीकृष्णचन्द्रके निकटही अर्ज्जुन की निन्दा करत यह कहत भयो मेरी मूढता देखो जा मैंने या नपुंसक अर्ज्जुनको कह्यो सत्य मान्यो
४० प्रद्युम्नजी और अनिरुद्ध तथा बलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्र ये सम्पूर्ण मिलिके जाकी रक्षा न करिसके ताकी रक्षा करिवेकू और कौन समर्थहै ४१ मिथ्यावादी जो अर्जुनहै ताय धिक्कारहै खोटीहै बुद्धि

प्रजां मृत्योरित्याहार्जुनमातुरः ३६ सउपस्पृश्य शुच्यम्भो नमस्कृत्य महेश्वरम् ॥ दिव्यान्यस्त्राणि संस्मृत्य सज्यं गाण्डीवमाददे ३७ न्यरुणत्सूतिकागारं शरै
र्नानाऽस्त्रयोजितैः ॥ तिर्यगूर्ध्वमधः पार्थश्चकार शरपञ्जरम् ३८ ततः कुमारः संजातो विप्रपत्न्या रुदन्मुहुः ॥ सद्योऽदर्शनमापेदे सशरीरो विहायसा ३९ तदाह
विप्रो विजयं विनिन्दन्कृष्णसन्निधौ ॥ मौढ्यं पश्यत मे योऽहं श्रद्दधे क्लीबकत्थनम् ४० न प्रद्युम्नो नानिरुद्धो न रामो न च केशवः ॥ यस्य शेकुः परित्रातुं कोऽन्य
स्तदवितेश्वरः ४१ धिगर्ज्जुनं मृषावादं धिगात्मश्लाघिनो धनुः ॥ दैवोपसृष्टं यो मौढ्यादानिनीषति दुर्मतिः ४२ एवं शपति विप्रर्षौ विद्यामास्थाय फाल्गुनः ॥
ययौ संयमनीमाशु यत्रास्ते भगवान्यमः ४३ विप्रापत्यमचक्षाणस्तत ऐन्द्रीमगात्पुरीम् ॥ आग्नेयीं नैर्ऋतीं सौम्यां वायव्यां वारुणीमथ ॥ रसातलं नाकपृ
ष्ठं धिष्ण्यान्यन्यान्युदायुधः ४४ ततोऽलब्धद्विजसुतो ह्यनिस्तीर्णप्रतिश्रुतः ॥ अग्निं विविक्षुः कृष्णेन प्रत्युक्तः प्रतिषेधता ४५ दर्शये द्विजसूनूंस्ते माऽवज्ञाऽऽत्मा
नमात्मना ॥ ये ते हि कीर्तिं विमलां मनुष्याः स्थापयिष्यन्ति ४६ इति संभाष्य भगवानर्ज्जुनेन सहेश्वरः ॥ दिव्यं स्वरथमास्थाय प्रतीचीं दिशमाविशत् ४७ सप्त

जाकी ऐसो यह अर्ज्जुन है सो दैवने हरचो जो बालक ताय मूढता सूं लायो चाहेहै ४२ या प्रकार जब ब्राह्मणने खोटो वचन कह्यो तब अर्ज्जुन विद्याकूं धारण करिके जहा कि भगवान् यम विराजे
हैं वा संयमनीपुरी को शीघ्र जात भयो ४३ तहा यमराजकी पुरी में पुत्र कूं न देख्यो तब वहां ते अर्ज्जुन इन्द्रकी पुरी में जात भयो फेरि अग्निकी पुरी में जातभयो निर्ऋतिकी पुरीमें जात भयो कु-
बेर की पुरीमें जात भयो वायुकी पुरीमें जातभयो वरुणकी पुरीमें जातभयो याके पीछे रसातलमें जातभयो और स्वर्गमें जातभयो धनुषकूं उठाये और जे स्थानहैं तिनमें जातभयो ४४ सर्व्वत्र ढूंढि आये
ता पीछे नहीं मिल्यो है ब्राह्मण को पुत्र जाकू याते भ्रष्ट भई प्रतिज्ञा जाकी अग्नि में धसिवे की इच्छाकरे ऐसे अर्ज्जुनकूं श्रीकृष्णचन्द्र नाहीं करतभये ४५ ब्राह्मणके पुत्रकूं मैं लायदेउंगो तू अग्नि में
जरे मति तुम लाइ देउगे तो मोकूं कहा तहा श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जे निन्दा करेंगे तेही मनुष्य हमारो यशभी कहेंगे अर्ज्जुनके रथवान् श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण के पुत्र लाय दिये महाराज अर्ज्जुन

लाय दे तो यामें कहा सन्देह है ४६ समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो या प्रकार कहिके अर्जुनकूं सङ्ग लैके अलौकिक जो अपनो रथहै तामें चढ़िकै पश्चिमदिशाकूं जात भये ४७ सात सातहैं पर्व्वत जिनमें ऐसे जे सात द्वीपहैं तिनें उल्लंघन करिके तथा सात समुद्रनकूं और लोकालोकपर्व्वतकूं उल्लंघनकरिके वडो जो अन्धकार है तामें धसतभये ४८ हे भरतवंशीन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! ता अन्धकार में शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक ये हैं नाम जिनके ऐसे रथके घोडानकी गति शिथिल होति भई,४९ महायोगेश्वरनके ईश्वर जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते घोड़ानकी शिथिल गतिकूं देखिके हजार सूर्य्यको है तेज जामें ऐसो अपनो सुदर्शन चक्रहै ताय रथके आगे चलिवेकी आज्ञा देतभये ५० अतिघोर सघन प्रकृतिको परिणामरूप जो वड़ो अन्धकार है ताय अपनी उत्कृष्ट कान्ति करिके विदीर्ण करत मनकी तुल्यहै वेग जाको ऐसो सुदर्शनचक्रहै सो जैसे मत्यश्चा ते छूटिके रामचन्द्रको वाण सेनामें प्रवेश करेहै ऐसे प्रवेश करत भयो ५१ चक्रके पीछे जो गमन है ता करिके वा अन्धकार ते परे वर्त्तमान ऐसो श्रेष्ठ व्याप्त जो भगवान् को प्रकाशरूपहै ताय देखिके चकचौंधी जाकी आंखिन कू लगी ऐसो अर्ज्जुन दोनों नेत्रनकू मूंदत भयो ५२ ता पीछे वड़ी पवन

द्वीपान्सप्तसिन्धून्सप्तसप्तगिरीनथ ॥ लोकालोकंतथाऽतीत्यविवेशसुमहत्तमः ४८ तत्राश्वाःशैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ॥ तमसिभ्रष्टगतयोबभूवुर्भरतर्षभ ४९ तान्दृष्ट्वाभगवान्कृष्णोमहायोगेश्वरेश्वरः॥ सहस्रादित्यसङ्काशंस्वचक्रंप्राहिणोत्पुरः ५० तमःसुघोरंगहनंकृतंमहद्विदारयद्भूरितरेणरोचिषा॥ मनोजवंनिर्विविशेसुदर्शनं गुणच्युतोरामशरोयथाचमूः ५१ द्वारेणचक्रानुपथेनतत्तमः परम्परंज्योतिरनन्तपारम्॥ समश्नुवानंप्रसमीक्ष्यफाल्गुनः प्रताडिताक्षोऽपिदधेऽक्षिणीउभे ५२ ततःप्रविष्टःसलिलंनभस्वताबलीयसैजद्बृहदूर्मिभूषणम्॥ तत्राद्भुतंवैभवनंद्युमत्तमं भ्राजन्मणिस्तम्भसहस्रशोभितम् ५३ तस्मिन्महाभीममनन्तमद्भुतं सहस्रमूर्द्धन्यफणामणिद्युभिः॥ विभ्राजमानंद्विगुणोल्बणेक्षणं सिताचलाभंशितिकण्ठजिह्वम् ५४ ददर्शतद्भोगसुखासनंविभुं महानुभावंपुरुषोत्तमोत्तमम्॥ सान्द्राम्बुदाभंसुपिशङ्गवाससंप्रसन्नवक्त्रंरुचिरायतेक्षणम् ५५ महामणिव्रातकिरीटकुण्डलप्रभापरिक्षिप्तसहस्रकुन्तलम्॥ प्रलम्बचार्वष्टभुजंसकौस्तुभंश्रीवत्सलक्ष्म्यावनमालयावृतम् ५६ सुनन्दनन्दप्रमुखैःस्वपार्षदैश्चक्रादिभिर्मूर्त्तिधरैर्निजायुधैः॥ पुष्ट्याश्रियाकीर्त्त्यजयाऽखिल

जो चली तासू उड़ी जे लहरें तिनसूं शोभायमान जो जलहै तामें वह रथ जात भयो ता जलमें प्रकाशमान वस्तु हैं तिनमें श्रेष्ठ और देदीप्यमान ऐसे हजारन मणिनके खम्भ लगे हैं तिनसूं शोभायमान जो अद्भुत भवन है ताय देखत भये ५३ ता भवन में वड़ो है देह जाको अद्भुत सहस्रमस्तकनमें जे मणि तिनकी कान्ति करिके प्रकाशमान दो हजार नेत्रन करिके शोभायमान स्फटिक मणिके पर्व्वतकी तुल्यहै कान्ति जाकी और नीली श्वेत हैं जिह्वा जाकी ऐसे शेषनाग कूं अर्ज्जुन देखत भयो ५४ ता शेषनाग को देहहै सुखदायक आसन जिनके वड़ो प्रभाव जिनके ऐसे पुरुषन में जो उत्तम तिनके उत्तम जो भूमा पुरुषहैं तिनें अर्ज्जुन देखत भये कैसे भूमा पुरुष हैं वर्षाऊ मेघकी तुल्यहै कान्ति जिनकी सुन्दर पीतवस्त्रन कूं धारण करे प्रसन्न है मुख जिनको मनोहर वड़े हैं नेत्र जिनके ५५ वड़ी मणि जिनमें जड़ी ऐसे जे किरीट और कुण्डल तिनकी कान्ति करिके शोभायमान हैं केश जिनके लम्बी सुन्दर है आठ भुजा जिनकी कौस्तुभमणि कूं धारण करे भृगुलताको

है ताके उत्सव करिके प्रकाशमान हैं मुख जिनके ऐसी शोभायमान होतिभई १० तिन स्त्रीनके स्तनन को लग्यो है केसर मालामें जिनके और खेलमें जो आसक्त हैं तासूं कम्पायमानहैं शिरको जूड़ो जिनको और स्त्रीनने वारंवार छिरके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप स्त्रीनकूं क्रीडा देते और स्त्रियन सूं सींचे जाकर जैसे हथिनीन के सङ्ग हाथी रमणकरे ऐसे स्त्रीनके सङ्ग रमण करतभये ११ नट हैं तिनकूं और नाचनवारीन कूं गीत गायके तथा बाजे बजाय के जीविका करें तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र और उनकी स्त्री हैं ते क्रीड़ा करिबेके अलङ्कार और वस्त्र ये देतभये १२ या प्रकार विहारकरें जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी चलनि बोलनि देखनि मुसिकानि और हास्यकी वार्त्ता क्रीड़ा आलिङ्गन इनकरिके निश्चय स्त्रीनकी बुद्धि हरिगई है १३ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र में है एक बुद्धि जिनकी ऐसी स्त्री हैं ते प्रथम चुपहोयके फेरि श्रीकृष्णचन्द्र को ध्यान करत उन्मत्त होयके जड़की तुल्य होयके जे वचन कहति भई तिन वचनन कूं मैं कहूं हूं सुनो १४ श्री कृष्णचन्द्र के प्रेम करिके स्त्रीनकी यह दशा होयगई मानों हमारे पास ते प्यारो दूरिगयोहै याते मतवारेकी तुल्य वार्त्ता कहनेलगीं हे टटा टीहरी ! तोकूं नींद नहीं आवेहै विलाप करे है सोवे नहीं है संसारमें छिप्यो है ज्ञान जिनको

नो रेमेकरेणुभिरिवेभपतिःपरीतः ११ नटानांनर्त्तकीनांचगीतवाद्योपजीविनाम्॥ क्रीडाऽलङ्कारवासांसि कृष्णोऽदात्तस्यचस्त्रियः १२ कृष्णस्यैवंविहरतोग त्यालापेक्षितस्मितैः ॥ नर्मक्ष्वेलिपरिष्वङ्गैःस्त्रीणांकिलहृताधियः १३ ऊचुर्मुकुन्देकधियोगिरउन्मत्तवज्जडम् ॥ चिन्तयन्त्योऽरविन्दाक्षं तानिमेगदतःशृ णु १४ ॥ महिष्यऊचुः ॥ कुररिविलपसित्वंवीतनिद्रानशेषे स्वपितिजगतिरात्र्यामीश्वरोगुप्तबोधः ॥ वयमिवसखिकच्चिद्गाढनिर्भिन्नचेतानलिननयनहासो दारलीलेक्षितेन १५ नेत्रेनिमीलयसिनक्तमदृष्टबन्धुस्त्वंरोरवीषिकरुणंबतचक्रवाकि ॥ दास्यंगतावयमिवाच्युतपादजुष्टां किंवास्रजंस्पृहयसेकबरेणवोढुम् १६ भोभोःसदानिष्टनसेउदन्वन्नलब्धनिद्रोऽधिगतप्रजागरः ॥ किंवामुकुन्दापहृतात्मलाञ्छनःप्राप्तांदशांत्वंचगतोदुरत्ययाम् १७ त्वंयक्ष्मणाबलवताऽसि गृहीतइन्दोक्षीणस्तमोननिजदीधितिभिःक्षिणोषि ॥ कच्चिन्मुकुन्दगदितानियथावयंत्वं विस्मृत्यभोःस्थगितगीरुपलक्ष्यसेनः १८ किंत्वाचरितमस्माभिर्मल

ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र रात्रिमें सोवे हैं तू बोलिके सोवन नहीं देइहै यह तोकूं उचित नहींहै यह कहे हैं हे सखी ! कहा हमारीसी नाई कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्रकी हास उदार लीलापूर्व्वक चितवनिसूं तेरो चित्त बँधिगयोहै याही ते पुकारेहै? १५ हेचकवी! तेरेनेन नहींलगेहैं रात्रिमें नहीं देख्योहै अपनो पतिजाने अर्थात् बिछुर गयोहै पति जाको ऐसी तू करुणा जामें उपजै ऐसे रोदन करेहै बड़ो खेदहै अथवा दास्यभावमें प्राप्त भई जे हम हैं तिनकी तुल्य श्रीकृष्णचन्द्रके चरणकी प्रसादी जो मालाहै ताय अपनी चोटी पै चढ़ायवेकी इच्छाकरे है याही ते रोवे है १६ हे समुद्र ! नहीं प्राप्तभई है निद्रा जाके नित्य जागरण करत सदा पुकारे जो तू है अथवा हमारी सी दुरत्यय दशा तेरी भी है जैसे भोग करिके मुकुन्दने हमारे कुचनकी केसर लीनीहै ऐसे तोकूं भी मथिकै लक्ष्मी कौस्तुभमणि ये निकासिलीनी है ऐसो हमकूं दिखाई देइहै १७ हे चन्द्रमा ! तोकूं बलिष्ठ जो क्षयीको रोगहै ताने ग्रहण करिलियो है याही ते तू क्षीणताकूं प्राप्तभयो है अपनी किरणन करिके अन्धकार कूं नहीं दूरि करेहै हमारीसी नाई मुकुन्दकी रहस्यवार्त्तानकूं भूलिके ताही चिन्ताके मारे क्षीण होयगयोहै अर्थात् थकीहै वाणी जाकी ऐसो हमकूं दिखाईदेयहै १८ हेमलयाचलकी पवन! हमने तेरो कहा अप्रियकरोहै जो तू गोविन्द

के अङ्ग कटाक्षसूं भिदेभये हमारे हृदय में कामदेवकूं मेरणकरेहै १९ हे मेघ! हे श्रीमन्! यादवनके इन्द्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको तू निश्चय प्यारो मित्रहै याहीते प्रेमकरिके बंध्यो जो तूहै सो श्रृगुलता को है चिह्न जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको हमारी नाईं ध्यानकरेहै बड़ीहै चाहना जाके ऐसो आर्द्रहृदय जो तूहै सो अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्रको स्मरण करिके वारंवार हमारी तुल्य मानों आसुनकी धारा वहावेहै परन्तु ताको प्रसंग दुःखदायी है २० शोभायमानहै कण्ठ जाको ऐसी हे कोकिल! अमृतकूं जिवावे ऐसी कोमलवाणी करिके प्यारीवात कूं कहै ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके तू वचननकूं कहैहै अब तेरो मैं कहा प्रिय करूं तू मोते कह २१ हे उदारबुद्धे! हे पर्व्वत! तू चलेभी नहीं है और बोलेभी नहींहै बड़े अर्थकी चिन्ताकरेहै जैसे वसुदेवनन्दनके चरणनकूं हम अपने स्तननसूं धरिवेकी चाहना करेहै ऐसे तूभी अपने शिखरनसूं धरिवेकी इच्छाकरे है जो धरैगो तो हमारीसी दशा तेरीभी होयगी २२ हे समुद्रकी पत्नी नदियो! अब ग्रीष्मऋतुमें समुद्र मेघनके द्वारा अमृतकी धारा वर्षायके तुम्हें नहीं आनन्ददेइहै बड़ोकष्टहै याहीते तुम्हारे ह्रद सूखिके लुटिगईहौ कमलनकी शोभाऊ जाति रहीहै जैसे वाञ्छित पति यदुपति श्रीकृष्णचन्द्रकी स्नेह भरी चितवनिके परे बिना हमारे हृदय चुरायगये

यानिलतेऽप्रियम् ॥ गोविन्दापाङ्गनिर्भिन्ने हृदीरयसिनःस्मरम् १९ मेघश्रीमंस्त्वमसिदयितोयादवेन्द्रस्यनूनं श्रीवत्साङ्कंवयमिवभवान्ध्यायतिप्रेमबद्धः॥ अत्युत्कण्ठःशवलहृदयोस्मद्विधोबाष्पधाराः स्मृत्वास्मृत्वाविसृजसिमुहुर्दुःखदस्तत्प्रसङ्गः २० प्रियरावपदानिभाषसेऽमृतसञ्जीविकयाऽनयागिरा ॥ करवाणिकिमद्यतेप्रियंवदमेवल्गितकण्ठकोकिल २१ नचलसिनवदस्युदारबुद्धे क्षितिधरचिन्तयसेमहान्तमर्थम् ॥ अपिवतवसुदेवनन्दनाङ्घ्रिंवयमिवकामयसेस्तनैर्विधर्त्तुम् २२ शुष्यद्ध्रदाःकरशितावतसिन्धुपत्न्यःसम्प्रत्यपास्तकमलश्रियइष्टभर्त्तुः॥ यद्वद्वयंयदुपतेःप्रणयावलोकमप्राप्यमुष्टहृदयाःपुरुकर्शिताःस्म २३ हंसस्वागतमास्यतांपिवपयोब्रूह्यङ्गशौरेःकथां दूतंत्वांनुविदामकच्चिदजितःस्वस्त्यास्तउक्तंपुरा॥ किंवानश्चलसौहृदःस्मरतितंकस्माद्भजामोवयंक्षौद्रालापयकामदंश्रियमृतेसैवैकनिष्ठास्त्रियाम् २४ इतीदृशेनभावेन कृष्णेयोगेश्वरेश्वरे॥ क्रियमाणेनमाधव्योलेभिरेपरमाङ्गतिम् २५ श्रुतमात्रोऽपियःस्त्री

हम लटी हैं ऐसे २३ तासमय दैवयोग सूं आयो जो हंस ताकूं दूत मानिकै कहे हैं हे हंस! तू भल्यो आयो बैठ दूध पीले हे मित्र! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा कह हम तोकूं वाको दूत जानैं हैं कहा श्रीकृष्णचन्द्र कुशलसूं हैं चलायमानहै स्नेह जाको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने एकान्तमें जो हमसूं कह्यो ताको कभऊँ स्मरणकरे हैं जो कहो कि स्मरण करिकेही हमकूं पठायो है तापर कहे हैं हे कपटीके दूत हंस! हम किस हेतु वाको भजें जो कहो कि कामके अर्थ बुलावें हैं तो उनहीं को लक्ष्मी के विना क्यों न बुलायल्लावो जो कहो कि लक्ष्मी तो केवल कृष्णकेही आश्रितहै ताको छोड़िके कैसे आवेंगे तापर कहे हैं कि स्त्रीन में कहा लक्ष्मीही एक कृष्णके आश्रित है हम सबभी तो वाही के आश्रित है २४ योगेश्वरन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें ऐसे भाव करिके श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री हैं ते वैष्णव की गतिकूं पावति भई २५ बहुत से गीतन करिके बहुत प्रकार गाये ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो श्रवण करते स्त्रीन के मन कूं जोरावरी हरि लेइ हैं और देखनवारी स्त्रीनके मनकूं

हरें यामें फेरि कहा कहनो है २६ जगत् के गुरु जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं जे स्त्री हमारो पति है ऐसी बुद्धिकरि प्रेमपूर्व्वक चरण सेवा ते आदि लेके यथोचित सेवा करति भई तिन स्त्रीनको तप राजा तेरे आगे कहा वर्णन करूं २७ याप्रकार साधुनकी गति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वेदविहित धर्म्म को अनुष्ठान करिके घरमें रहिके धर्म्म अर्थ विषय याप्रकार सेवन होत हैं ऐसे संसारी पुरुषन कूं वारंवार दिखावत भये २८ गृहस्थन को उत्कृष्ट जो धर्म्म है ताय करें ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सोलह हजार एकसौ आठ रानी होति भई २९ तिन स्त्रीनमें रत्न की तुल्य जे सोलह हजार एकसौ आठ रानी हैं तिनमें रुक्मिणी ते आदि लैके जे आठ रानी पहले कहीं और हे राजन्! तिनके पुत्र भी अनुक्रमपूर्व्वक कहे ३० नहीं प्रमाण करिवे में आवै है गति जिनकी ऐसे ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जितनी अपनी भार्य्या रहीं तिनमें एक एक भार्य्या में दश दश पुत्रनकूं उत्पन्न करतभये ३१ वड़ो है पराक्रम जिनको और उदार है यश जिनको ऐसे अठारह महारथी होतभये

णां प्रसह्याऽऽकर्षतेमनः ॥ उरुगायोरुगीतोवा पश्यन्तीनांकुतःपुनः २६ याःसंपर्य्यचरन्प्रेम्णा पादसंवाहनादिभिः ॥ जगद्गुरुंभर्तृबुद्ध्यातासांकिंवर्ण्यते तपः २७ एवंवेदोदितंधर्म्ममनुतिष्ठन्सतांगतिः ॥ गृहंधर्म्मार्थकामानां मुहुश्चादर्शयत्पदम् २८ आस्थितस्यपरंधर्म्मं कृष्णस्यगृहमेधिनाम् ॥ आसन्षोडशसाहस्रं महिष्यश्चशताधिकम् २९ तासांस्त्रीरत्नभूतानामष्टौयाःप्रागुदाहृताः ॥ रुक्मिणीप्रमुखाराजंस्तत्पुत्राश्चानुपूर्व्वशः ३० एकैकस्यांदशदशकृष्णोऽजीजनदात्मजान् ॥ यावत्यआत्मनोभार्य्याअमोघगतिरीश्वरः ३१ तेषामुद्दामवीर्य्याणामष्टादशमहारथाः ॥ आसन्नुदारयशसस्तेषांनामानिमेशृणु ३२ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च दीप्तिमान्भानुरेवच ॥ साम्बोमधुर्बृहद्भानुश्चित्रभानुर्वृकोऽरुणः ३३ पुष्करोवेदबाहुश्चश्रुतदेवःसुनन्दनः ॥ चित्रबाहुर्विरूपश्च कविर्न्यग्रोधएवच ३४ एतेषामपिराजेन्द्र तनुजानांमधुद्विषः ॥ प्रद्युम्नआसीत्प्रथमःपितृवद्रुक्मिणीसुतः ३५ सरुक्मिणोदुहितरमुपयेमेमहारथः ॥ तस्मात्सुतोऽनिरुद्धोऽभून्नागायुतबलान्वितः ३६ सचापिरुक्मिणःपौत्रीं दौहित्रोजगृहेततः ॥ वज्रस्तस्याभवद्यस्तु मौसलादवशेषितः ३७ प्रतिबाहुरभूत्तस्मात्सुबाहुस्तस्यचाऽऽत्मजः ॥ सुबाहोःशान्तसेनोऽभूच्छतसेनस्तुतत्सुतः ३८ नह्येतस्मिन्कुलेजाताअधनाअबहुप्रजाः ॥ अल्पायुषोऽल्पवीर्य्याश्च अब्रह्मण्याश्च

तिनके नामनकूं हे राजन्! मोते श्रवण करौ ३२ प्रद्युम्न अनिरुद्ध दीप्तिमान् भानु साम्ब मधु बृहद्भानु चित्रभानु वृक अरुण ३३ पुष्कर वेदबाहु श्रुतदेव सुनन्दन चित्रबाहु विरूप कवि न्यग्रोध ३४ हे राजानके इन्द्र राजन् परीक्षित्! मधुदैत्य के मारनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सब पुत्रनमें रुक्मिणीके पुत्र जे प्रथम प्रद्युम्नजी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र की तुल्य गुणनमें होतभये ३५ महारथी प्रद्युम्न रुक्मीकी पुत्री कूं विवाहतभये तिन प्रद्युम्नजी ते रुक्मीकी पुत्रीमें दश हजार हाथीको है बल जामें ऐसो अनिरुद्ध पुत्र होत भयो ३६ अनिरुद्ध है सो रुक्मीकी पोती रोचना कूं विवाहत भये ता रोचनामें अनिरुद्धके वज्र पुत्र होतभयो जो वज्र प्रभासक्षेत्र के मुसल तें बाकी रह्यो ३७ ता वज्रके प्रतिबाहु पुत्र भयो प्रतिबाहु के सुबाहु पुत्र भयो सुबाहुके शान्तसेन भयो शान्तसेनके शतसेन

भयो ३८ या यदुकुल में धनहीन प्रजाहीन कोई नहीं जन्मतभयो और थोड़ी है आयु जिनके पराक्रम रहित ब्राह्मणन की भक्तिहीन ऐसो कोई नहीं उत्पन्न होत भयो ३९ हे राजन् परीक्षित् ! यदुवंश में जन्मे विख्यात हैं कर्म्म जिनके ऐसे पुरुषनकी संख्या दश हजार वर्ष में भी नहीं करने कूं समर्थ होयसके है ४० तीन करोड़ अट्ठासी सौ यदुकुलके असंख्य बालकन के पढ़ावनवारे आचार्य्य होतभये यह मैंने श्रवण कर्‍यो है ४१ महात्मा यादवनकी संख्या कौन करिसके है जा कुलमें हजारन के दश हजार तिनके लाख इतने यादवन कूं लैके द्वारकापुरी में उग्रसेन वास करतभये ४२ देवता असुरन के युद्धमें मरे जे दारुण दैत्य हैं तेही मनुष्यन में उत्पन्न होयके गर्व्ववन्त होयके प्रजान कूं बाधा देतभये ४३ हे राजन् परीक्षित् ! तिन असुरनके दण्डदेवे के लिये हरि जे भगवान् हैं तिनने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे देवता यदुकुलमें अवतार लेतभये ४४ तिन यादवन की प्रभुतामें भगवानही प्रमाण होतभये तिन श्रीकृष्णचन्द्रके आज्ञानुवर्त्ती सब यादव होयके वृद्धि कूं प्राप्त होतभये तिनके कुलकी एकसौ एक संख्याहुई ४५ सोइबो और बैठिबो चलिबो तथा बोलिबो क्रीड़ा स्नानादि कर्म्म करनेमें श्रीकृष्णचन्द्र में हैं चित्त जिनके ऐसे यादवहैं

जज्ञिरे ३९ यदुवंशप्रसूतानां पुंसांविख्यातकर्म्मणाम् ॥ संख्यानशक्यतेकर्त्तुमपिवर्षायुतैर्नृप ४० तिस्रःकोट्यःसहस्राणामष्टाशीतिशतानिच ॥ आसन्यदुकुलाचार्य्याः कुमाराणामितिश्रुतम् ४१ संख्यानंयादवानांकः करिष्यतिमहात्मनाम् ॥ यत्रायुतानामयुतलक्षेणास्तेसआहुकः ४२ देवासुराहवहतादैतेयायेसुदारुणाः ॥ तेचोत्पन्नामनुष्येषु प्रजादृप्ताबबाधिरे ४३ तन्निग्रहायहरिणा प्रोक्तादेवायदोःकुले ॥ अवतीर्णाःकुलशतन्तेषामेकाधिकंनृप ४४ तेषांप्रमाणंभगवान्प्रभुत्वेनाभवद्धरिः ॥ येचानुवर्त्तिनस्तस्यववृधुःसर्व्वयादवाः ४५ शय्यासनाटनालापक्रीडास्नानादिकर्म्मसु ॥ नविदुःसन्तमात्मानंवृष्णयःकृष्णचेतसः ४६ तीर्थंचक्रेनृपोनंयदजनियदुषुस्वःसरित्पादशौचं विद्विट्स्निग्धाःस्वरूपंययुरजितपराश्रीर्य्यदर्थेऽन्ययत्नः ॥ यन्नामामङ्गलघ्नंश्रुतमथगदितंयत्कृतोगोत्रधर्म्मः कृष्णस्यैतन्नचित्रंक्षितिभरहरणंकालचक्रायुधस्य ४७ जयतिजननिवासोदेवकीजन्मवादो यदुवरपरिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्म्मम् ॥

ते अपने आत्माकूं नहीं जानतभये ४६ यासूं प्रथम श्रीगङ्गाजी है सोही अधिक तीर्थहो जब यादवनमें श्रीकृष्णचन्द्र को यशरूपी तीर्थ प्रकटभयो तब सूं अपनो चरणोदकरूप जो गङ्गातीर्थहै ताकूं भी न्यून करत भयो आपुही समस्त तीर्थन के ऊपर विराजें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रसूं जिन पुरुषनने वैर कर्‍यो और जिनने स्नेह कर्‍यो वेभी तद्रूपकू प्राप्तभये देखो जा लक्ष्मी के निमित्त ब्रह्मादिक उपाय करे है काहूकूं प्राप्त भई जो लक्ष्मी है सो भी श्रीकृष्णचन्द्रकी है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को नाम श्रवण करेते कथनकरेतें समस्त पापन को नाशकरे है और जितने ऋषिन के वंशहैं तिनमें धर्म्म चलायो कालचक्र है हथियार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं दुष्टनको मारिबो पृथ्वीको बोझ उतारिबो यह कछु आश्चर्य्य नहीं है ४७ सब जीवनके अन्तर्य्यामीरूप होयके बसें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सर्व्वदा उत्कर्षतापूर्व्वक विराजमानहैं देवकी में जन्मभयो यह कथनमात्र है यादवन में जे उत्तमहैं ते जिनकी सभाके पार्षद हैं इच्छामात्र करिके अधर्म्म के नाश करिबे में समर्थ हैं तथापि क्रीड़ा के निमित्त अपनी भुजान ते अधर्म्म कूं दूरि करिके स्थावर जंगम सब जीवन को दुःख जिनने दूरि कर्‍यो सुन्दर मुसिकानि युक्त जो अपनो श्रीमुखहै तासूं व्रजकी स्त्री गोपिका और पुर मथुरा

सेवनकरे ऐसी तुम्हारे चरणनकी रेणु कूं तुलसी सौत सहत चाहना करतभई जा लक्ष्मीकी चितवनि के लिये और देवता तपस्या करिके परिश्रम करें हैं ता लक्ष्मीकी तुल्य हम भी तुम्हारे चरण की रज कूं प्राप्तभई हैं अर्थात् शरणलीनी हैं ३७ हे दुःख के काटनवारे! तेरे भजिवे में आशा जिनकी लगिरही है ऐसे हम घर छोड़िके तेरे चरणन के पास आई हैं तुम हमारे ऊपर प्रसन्नहो तेरी सुन्दर मुसिक्यानि चितवन सूं बढ़ो जो कामदेव तासूं देह जिनकी पजरिरही ऐसी जो हम हैं तिनकूं हे पुरुषन के शोभा करनवारे! अपनी दासी करिके राखो ३८ अलकावली जापै छूटिरहीं और कुण्डलनकी कान्ति जिनमें परे ऐसे जाके कपोल ओष्ठ में जाके अमृत है हाससहित जाकी चितवनि ऐसे तेरे मुख को देखिके अभयदान जाने भक्तन कूं दियो तुम्हारो भुजदण्डन को युगल है ताकूं देखिके लक्ष्मी कूं एकही प्रीति को उपजावनवारो तुम्हारो वक्षःस्थल है ताकूं देखिके हम तुम्हारी दासी होइहैं ३९ हे कृष्ण! मनोहर जामें पद ऐसो बड़ो बाँसुरी को गीत है तासों मोहित होयके

स्तद्वद्वयंचतवपादरजःप्रपन्नाः ३७ तन्नःप्रसीदवृजिनार्दनतेऽङ्घ्रिमूलं प्राप्ताविसृज्यवसतीस्त्वदुपासनाशाः ॥ त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषणदेहिदास्यम् ३८ वीक्ष्यालकावृतमुखंतवकुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरसुधंहसितावलोकम् ॥ दत्ताभयंचभुजदण्डयुगंविलोक्य वक्षःश्रियैकरमणञ्चभवामदास्यः ३९ कास्त्र्यङ्गतेकलपदायतवेणुगीतसंमोहितार्यचरितान्नचलेत्त्रिलोक्याम् ॥ त्रैलोक्यसौभगमिदञ्चनिरीक्ष्यरूपंयद्गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ४० व्यक्तंभवान्व्रजभयार्त्तिहरोऽभिजातोदेवोयथाऽऽदिपुरुषःसुरलोकगोप्ता ॥ तन्नोनिधेहिकरपङ्कजमार्त्तबन्धो तप्तस्तनेषुचशिरस्सुच किङ्करीणाम् ४१ श्रीशुकउवाच ॥ इतिविक्लवितंतासां श्रुत्वायोगेश्वरेश्वरः ॥ प्रहस्यसदयंगोपीरात्मारामोप्यरीरमत् ४२ ताभिःसमेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोत्फुल्लमुखीभिरच्युतः ॥ उदारहासद्विजकुन्ददीधितिर्व्यरोचतैणाङ्कइवोडुभिर्वृतः ४३ उपगीयमानउद्गायन् वनिताशतयूथपः ॥ मालांबिभ्रद्वैजयन्तींव्यचरन्मण्डयन्वनम् ४४ नद्याःपुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमवालुकम् ॥ रेमेतत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ४५ बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरुनीवी

त्रिलोकी में ऐसी कौनसी स्त्री है जो अपने धर्म्म ते चलायमान न होय त्रिलोकी में सुन्दर यह तेरो रूप है ताकूं देखिके गौ पक्षी वृक्ष मृग ये रोमांचित होतभये देखो तेरे रूपते पशु पक्षी सारिखे मोहित होयगये हम मोहित होयँ यामें कहा आश्चर्य्य है ४० तुम निश्चय व्रजकेभय पीड़ा दूरि करिवे के लिये जन्मे हो जैसे आदिपुरुष नारायण स्वर्गलोककी रक्षा करें हैं ता कारण ते हे दीनन के बन्धु! हम तेरी दासी हैं तिनके कामदेव ते तपे जे स्तन है और शिर हैं तिनपै अपने हस्तकमल कूं धरो ४१ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन को विलाप सुनि के हँसि के दया जिन को आइ गई आत्माराम हू हैं तथापि गोपीन के संग रमण करतभये ४२ प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रकी चितवन सूं प्रफुल्लित जिनके मुख ऐसी इकट्ठी भई जे गोपी हैं तिन सहित उदार जिनकी चेष्टा और उदार जिनकी हँसनि दन्तनमें कुन्दकलीकी तुल्य कान्ति ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये जैसे तारागणसहित चन्द्रमा सुन्दर लगे हैं ४३ गोपी जिनकूं गावें और स्त्रीन के सैकरान यूथन कूं पालनकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप गावत वैजयन्ती माला पहिरिके वनकूं शोभायमान करत विहार करतभये शीतल जामें वारूके बिछौना विछ-

रहे ऐसी यमुनाजीकी पुलिन में गोपीन सहित आयके रमण करतभये तहा यमुनाजीकी लहर जो आवे हैं तिनसूं आनन्द जिनमें कमल जहां फूले हैं तिनकी सुगन्धि कों लेके पवन जहा चले हैं, ४४। ४५ भुजान को पसारिवो आलिंगन को करिवो कर अलक ऊरु नीवी स्तन इनको स्पर्श करिवो परिहास के वचन कहिवो नखन के चिह्न क्रीड़ा चितवनि हाँसीन सूं व्रजसुन्दरीनिकूं भगवान् कामउद्दीपन करत रमण करतभये ४६ या प्रकार महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र तें मान जिनने पायो ऐसी गोपी मानवती होयके पृथ्वी की स्त्रीन में अपनेकूं अधिक मानतभई ब्रह्मा और महादेव के वश के करनहारे श्रीकृष्णचन्द्र तिन गोपीन कूं सौभाग्य के मद सूं अपने अधीन देखिके उनके गर्व दूरिकरिवे के लिये और कृपा करिवे के लिये ता रासमण्डलमेंही अन्तर्द्धान होतभये ४७।४८
इति श्रीमद्भागवतार्थप्रकाशिकायां दशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडावर्णनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

स्तनालभननर्मनखाग्रपातैः ॥ क्ष्वेल्याऽवलोकहसितैर्व्रजसुन्दरीणामुत्तम्भयन्रतिपतिंरमयांचकार ४६ एवंभगवतःकृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः ॥ आत्मानंमेनिरेस्त्रीणां मानिन्योऽभ्यधिकंभुवि ४७ तासांतत्सौभगमदंवीक्ष्यमानंचकेशवः ॥ प्रशमायप्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ४८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेभगवतोरासक्रीडावर्णनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अन्तर्हितेभगवतिसहसैवव्रजाङ्गनाः ॥ अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्यइवयूथपम् १ गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ॥ आक्षिप्तचित्ताःप्रमदारमापतेस्तास्ताविचेष्टाजगृहुस्तदात्मिकाः २ गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाःप्रियस्यप्रतिरूढमूर्त्तयः ॥ असावहंत्वित्यबलास्तदात्मिकान्यवेदिषुःकृष्णविहारविभ्रमाः ३ गायन्त्यउच्चैरमुमेवसंहताविचिक्युरुन्मत्तकवद्वनाद्वनम् ॥ पप्रच्छुराकाशवदन्तरंबहिर्भूतेषुसन्तंपुरुषंवनस्पतीन् ४ दृष्टोवःकच्चिदश्वत्थप्लक्षन्यग्रोधनोमनः ॥ नन्दसूनुर्गतोहृत्वाप्रेमहासावलोकनैः ५ कच्चित्कुरबकाशोकनागपुन्नागचम्पकाः ॥ रामा

(त्रिंशेविरहसंतप्तगोपीभिःकृष्णमार्गणम् ॥ उन्मत्तवन्नियतं भ्रमन्तीभिर्वनेवने १ तीसवें अध्याय में विरह से अत्यन्त तप्त वन वन में घूमतीहुई गोपियों ने उन्मत्तकी नाई कृष्णजी को ढूंढो है १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! जा समय श्रीकृष्णचन्द्र रासमण्डल में ते अन्तर्द्धान भये ता समय तत्कालही व्रजकी स्त्री गोपी उनके देखे विना व्याकुल होतभई जैसे हाथी के देखे विना हथिनी व्याकुल होयहैं श्रीकृष्णचन्द्र की चलनि स्नेहभरी मुसिकानि विलासपूर्वक चितवनि मधुरबोलीनकी क्रीड़ान सूं मन जिनके पकरे गये ऐसी गोपी तन्मय होतिभई १ । २ कृष्णचन्द्र को गमन हासभरी चितवनि मधुरवाणीन के विहार करि प्यारे में आरूढ होय के कृष्ण रूप बनिके कहत भई कि मैं कृष्णहूं मैं कृष्णहूं या प्रकार चेष्टा करती भई ३ सब गोपी मिलिके श्रीकृष्णचन्द्र सूं ऊंचो स्वर करिके गावत मतवारे की तुल्य वन वन ढूंढ़ति भई सब प्राणीन में आकाश की तुल्य व्यापक जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन कूं वृक्षन ते पूंछत भई ४ हे पीपर के वृक्ष ! हे प्लक्ष अर्थात् पाकरके वृक्ष ! हे वट के वृक्ष ! नन्दको पुत्र श्रीकृष्ण प्रेम भरी चितवनि हाँसी करिके हमारो चित्त चुरायके लेगयो तुमने देखो होय तो बताय देउ ५ कहूं वनमें कुरा

के वृक्ष हैं तिनसूं पूंछें हैं कहूं नागकेशरि के वृक्ष कहूं चम्पा के वृक्ष तिन सूं कहती हैं मानिनी जो हम हैं तिनके गर्व्व हरनवारी जाकी मुसिकानि ऐसो रामको छोटो भय्या कहूं तुमने जात देखो है ६ कहूं वन में कहे हैं हे तुलसी कल्याणरूपिणी गोविन्द के चरणन की प्यारी ! भौंरा जामें गुंजारकरैं तेरी मालाकूं पहिरे तेरो अतिप्यारो श्रीकृष्णचन्द्र कहू देख्यो होय तो बतायदेउ ७ हे मालती ! हे चमेली ! हे जाया ! हे जुही ! मधुवंश में भये श्रीकृष्णचन्द्र हस्तस्पर्श करिके तुमसू प्रीति करिके कहा गये तुमने देखे होंय तो बताय देउ ८ अब गोपी आपुस में कहे हैं हे सखियो ! ये फलयुक्त वृक्ष हैं सब प्राणीनको तृप्त करे हैं इन से पूंछो हे आम के वृक्ष ! हे चिरोंजी के वृक्ष ! हे कटहर के वृक्ष ! हे विजयसालके वृक्ष ! हे कचनारके वृक्ष ! हे जामनके वृक्ष ! हे मदार के वृक्ष ! हे वेलके वृक्ष ! हे मोरशिरी के वृक्ष ! हे आम्रके वृक्ष ! हे लोटन कदम्ब ! तुम हे परोपकारी यमुनातीरवासियो ! याते हमें बताय देउ तुमने कहूं श्रीकृष्णचन्द्र जात देखे ९ कोई सखी कहे है कि या पृथ्वीसूं

नुजोमानिनीनामितोदर्पहरस्मितः ६ कच्चित्तुलसिकल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ॥ सहत्वाऽलिकुलैर्बिभ्रद्दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ७ मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जातियूथिके ॥ प्रीतिं वो जनयन्यातः करस्पर्शेन माधवः ८ चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ॥ येऽन्ये परार्थभवका यमुनोपकूलाः शंसन्तु कृष्णपदवीं रहितात्मनां नः ९ किन्ते कृतं क्षिति तपो बत केशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ॥ अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुक्रमविक्रमाद्वा आहो वराहवपुषः परिरम्भणेन १० अप्येणपत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रैस्तन्वन्दृशां सखि सुनिर्वृतिमच्युतो वः ॥ कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेरिह वाति गन्धः ११ बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ॥ अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं किं वाऽभिनन्दति चरन्प्रणयावलोकैः १२ पृच्छतेमा लता बाहूनप्याश्लिष्टा वनस्पतेः ॥ नूनन्तत्करजस्पृष्टा बिभ्रत्युत्पुलकान्यहो १३ इत्युन्मत्तवचो गोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ॥ लीला भगवतस्तास्ता ह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः १४ कस्याश्चित्पूतनायन्त्याः कृष्णायन्त्यपिबत्स्तनम् ॥ तोकायित्वा रुदत्यन्या पदा

बूझो हे पृथ्वी ! तैने कहा तप कियो है जो केशव भगवान् को चरणस्पर्श भयो तासूं तोकों आनन्दसहित रोमाञ्च भये हैं तासूं सुन्दर लगे है यह आनन्द प्यारे को चरण लग्यो है तासूं भयो है अथवा वामनजी ने पहिले तो कूं तीन पैड़ नापी है अथवा वाते पहिले वराहजी तो कू दाढ पै धरि के ले आये हैं तब को आनन्द है परन्तु वे आनन्द तो पुराने परि गये अबहीं प्यारे को चरण तैंने स्पर्श कीनो है तैंने निश्चय देखो है हमें बताय दे १० हे सखी ! हिरण की स्त्री हिरणी अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी कूं संग लैके अपने अंगनसूं तुम्हारी दृष्टि कू आनन्द देत यहाँ आयो है प्यारी कूं संग लैके गयो ताको जतावनवारो यह लक्षण है कृष्णचन्द्र को प्यारी ते जो अंगसंग है तासूं कुचन की केशरि सूं रँगी, गई जो कुन्द की माला ताकी यह सुगन्धि आवै है ११ राम को छोटो भय्या प्यारी के कन्धे पै भुजाको धरि के कमल फिरावत तुलसी की माला की सुगन्धि सूं मतवारे भौंरा जाके पीछे चले जायँ हे वृक्षो ! स्नेह भरी चितवन सूं तुम्हारी दण्डवत् यहाँ आयके लीनी है १२ वृक्षन ते लिपटी जे लता हैं तिन ते पूंछो निश्चय प्यारे के नख इनके लगे हैं तासूं रोमाञ्च होय आये हैं १३ या प्रकार मतवारे कीसी जिनकी बोलनि श्रीकृष्णमें जि-

नको मन श्रीकृष्णके ढूंढिवे में विकल होय के गोपी श्रीकृष्ण की तिन तिन लीलान को अनुकरण करतभई १४ कोई गोपी पूतना वनी ताको कोई गोपी कृष्ण वनिके स्तन पीवत भई और गोपी वालक वनिके रुदन करत शकटासुर वनी जो कोई गोपी है ताके पावकी ठोकर मारतभई १५ एक गोपी तृणावर्त दैत्य वनिके कृष्णके वालकरूपको धरे जो और गोपीहै ताको हरतभई कोई गोपी घुंघुरु बांधिके पावन कों घसीटत घोटुवन चलतभई १६ दो गोपी कृष्ण वलदेव वनी और कोई गोप वनी और कोई वत्सासुर वनी ताकूं मारतभई एक गोपी वकासुर वनी ताय और गोपी मारतभई १७ जैसे श्रीकृष्णचन्द्र वुलावें हैं तैसे दूरगई जो गऊहै तिनकूं वुलायके श्रीकृष्णको अनुकरण करें वासुरी को वजावें क्रीडा करें जो गोपी हैं ताय और गोपी स्यावासि २ ऐसे नड़ाई करत भई १८ एक गोपीके कन्धा पै हाथधरि चलिके और गोपीते कहतभई मेरी मनोहर जो नृत्यलीलाहै ताकूं तुम देखो या प्रकार ता श्रीकृष्ण में तिनको मन जाय लगो १९ पवन वर्षा ते भय

ऽहन्श्र कटायतीम् १५ दैत्यायित्वाजहारान्यामेकाकृष्णार्भभावनाम् ॥ रिङ्गयामासकाऽप्यङ्घ्रीकर्षन्तीघोषनिःस्वनैः १६ कृष्णरामायितेद्वेतु गोपायन्त्य श्चकाश्चन ॥ वत्सायतींहन्तिचान्या तत्रैकातुबकायतीम् १७ आहूयदूरगायद्वत्कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ॥ वेणुंक्वणन्तींक्रीडन्तीमन्याःशंसन्तिसाध्विति १८ कस्याश्चित्स्वभुजंन्यस्य चलन्त्याहापराननु ॥ कृष्णोऽहंपश्यतगतिं ललितामितितन्मनः १९ माभैष्टवातवर्षाभ्यां तत्त्राणंविहितंमया ॥ इत्युक्त्वैकेनहस्तेन यतन्त्युन्निदधेऽम्बरम् २० आरुह्यैकापदाक्रम्य शिरस्याहापरांनृप ॥ दुष्टाहेगच्छजातोऽहं खलानांननुदण्डधृक् २१ तत्रैकोवाचहेगोपा दावाग्निंपश्य तोल्बणम् ॥ चक्षूंष्याश्वपिदध्वंवोविधास्येक्षेममञ्जसा २२ बद्धाऽन्ययास्रजाकाचित्तन्वीतत्रउलूखले ॥ भीतासुदृक्पिधायास्यं भेजेभीतिविडम्बनम् २३ एवंकृष्णंपृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् ॥ व्यचक्षतवनोद्देशे पदानिपरमात्मनः २४ पदानिव्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ॥ लक्ष्यन्तेहिध्वजाम्भो जवज्राङ्कुशयवादिभिः २५ तैस्तैःपदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ॥ वध्वाःपदैःसुपृक्तानि विलोक्यार्त्ताःसमब्रुवन् २६ कस्याःपदानिचैतानि या

मतिकरो मैं तुम्हारी रक्षा करूंगो यह कहिके एक हाथ ते यत्न करिके जैसो गोवर्द्धन पर्वत श्रीकृष्णचन्द्रने उठायो तैसे अपनी ओढनी कूं ऊंची उठावति भई २० हे राजन् परीक्षित् ! एक गोपी और गोपी के ऊपर चढ़िके पांव शिर ऊपर धरिके एक गोपी ते कहतभई ऐ दुष्ट सर्प ! तू यहां ते निकसि जा मैं दुष्टनके दण्डको देनवारो जन्मो हों २१ ता समय एक गोपी वोलतभई हे गोपियो ! यह वनमें भयानक दवलगी है ताकूं देखो जल्दी देसी नेत्र मूंदिलेउ मैं या आगि कूं बुझाऊंगो अनायास देखे विना कल्याण करूंगो २२ कोई एक दुर्वल अंगकी गोपी मालासूं उलूखलमें बांधि दीनी तव डरपिके सुन्दर जामें नेत्र ऐसे मुखकू ढकिके डरपेको अनुकरण करतिभई २३ याप्रकार वृन्दावनकी लता वृक्षन ते पूंछतपूंछत आगे वनमें जायके परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्रके चरणके खोज देखत भई २४ ध्वजा कमल वज्र अंकुश यव इनते आदिलेके जो चिह्न हैं तिनसूं महात्मा जो नन्दको वेटा ताको निश्चय चरणहै या प्रकार खोज लखे हे २५ अवला जे गोपी हैं ते चरणन के जो खोज हैं तिनसूं श्रीकृष्णचन्द्र के जायवे को जो मार्ग है ताय ढूंढ़तभई आगे जायके श्रीकृष्ण के चरणन के खोजमें प्यारी के चरणन के खोज देखिके यह वोलत भई २६ ये कौनके खोजहैं

नन्दको पुत्र काहूको अपने संग लैगयो है और वाके कन्धेपै हाथ धरि लियो है जैसे हाथी हथिनी के ऊपर सूंड़ि धरिलेयहै २७ निश्चय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको याने आराधन कीनोहै जा कारण हम सबकों त्यागिके प्रसन्न होयके प्यारो गोविन्द याकूं एकान्त में लैगयो २८ हे सखियो ! यह गोविन्द के चरण की रेणुकूं ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी सम्पूर्ण अपने पाप दूरि करिवे के लिये माथे पै चढ़ावे हैं २९ ता प्यारी के पावन के खोज हमको व्याकुल बहुत करे हैं देखो हम सबको त्यागिके अकेली एकान्तमें श्रीकृष्णचन्द्र को अधरामृत भोग करे है ३० आगे चलिके कहे हैं यहां वाके पावनके खोज नहीं दीखे हैं सखी तिनुका अंकुरा लगिके कोमल चरणनमें खेदभयो है तब प्यारेने प्यारीकूं उठायलियो है ३१ या प्रकार गोपी खोजनकूं देखत अचेत होय के विचरतिभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकूं छोड़िके वनमें जा गोपीकूं अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीन में अपने कूं श्रेष्ठ मानतभई क्योंकि चाहनाकरे जे गोपी हैं तिनें छोड़िके यह प्यारो मेरो सेवन करेहै ३२ कामी श्री

तायानन्दसूनुना ॥ अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोःकरिणायथा २७ अनयाऽऽराधितोनूनं भगवान्हरिरीश्वरः ॥ यन्नोविहायगोविन्दः प्रीतोयामनयद्रहः २८ धन्याअहोअमीआल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ॥ यान्ब्रह्मेशोरमादेवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये २९ तस्याअमूनिनःक्षोभं कुर्वन्त्युच्चैःपदानियत् ॥ यैकाऽपहृत्यगोपीनां रहोभुङ्क्तेऽच्युताधरम् ३० नलक्ष्यन्तेपदान्यत्र तस्यानूनंतृणाङ्कुरैः ॥ खिद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्निन्येप्रेयसींप्रियः ३१ अत्रप्रसूनावचयः प्रियार्थेप्रेयसाकृतः ॥ प्रपदाक्रमणेएते पश्यतासकलेपदे ३२ केशप्रसाधनंत्वत्र कामिन्याःकामिनाकृतम् ॥ तानिचूडयताकान्तामुपविष्टमिहध्रुवम् ३३ रेमेतयाचात्मरतआत्मारामोऽप्यखण्डितः ॥ कामिनांदर्शयन्दैन्यं स्त्रीणांचैवदुरात्मताम् ३४ इत्येवंदर्शयन्त्यस्ताश्चेरुर्गोप्योविचेतसः ॥ यांगोपीमनयत्कृष्णो विहायान्याःस्त्रियोवने ३५ साचमेनेतदात्मानं वरिष्ठंसर्वयोषिताम् ॥ हित्वागोपीःकामयानामामसौभजतेप्रियः ३६ ततोगत्वावनोद्देशं दृप्ताकेशवमब्रवीत् ॥ नपारयेऽहंचलितुं नयमांयत्रतेमनः ३७ एवमुक्तःप्रियामाह स्कन्धमारुह्यतामिति ॥ ततश्चान्तर्दधेकृष्णः साबधूरन्वतप्यत ३८ हाना

कृष्णचन्द्र ने कामिनी के या स्थानमें केश बाहि के सुधारे हैं प्यारी कूं बैठाय के केश गुहे जो प्यारोहै सो या स्थानमें निश्चय बैठतभयो ३३ श्रीशुकदेवजी कहे हैं आत्माराम अर्थात् अपने स्वरूप में रमण करे अखण्डित अर्थात् स्त्रीन के कटाक्षके वश नहीं ऐसेहू श्रीकृष्णचन्द्र ता प्यारी के संग रमण करतभये काहे के लिये कामीपुरुषन कूं दीनसों दिखायवे के लिये कामीपुरुष ऐसे स्त्रीनके वशीभूत अधीन होय जाय हैं जैसे कहैं तैसेही करे है स्त्री ऐसी दुष्टा होयहैं जो इच्छा में आवै सोई करावैहैं ३४ या प्रकार गोपी अचेतहोय होयके खोजन कों देखतभई श्रीकृष्ण और स्त्रीनकूं छांडि के वनमें जा गोपी कूं अपने संग लेजातभये वह गोपी सब स्त्रीनमें अपनेकूं श्रेष्ठ मानतभई चाहना करे जो गोपी हैं तिनें त्यागि के यह प्यारो मेरे संग सेवन करे है ३५ । ३६ ता पीछे वह गोपी गर्वित होय के केशव श्रीकृष्णचन्द्र ते बोलत भई मोपै चलो नहीं जायहै जहाँ तुम्हारो मन होय तहाँ ले चलो ३७ या प्रकार जबै प्यारी ने कही तब श्रीकृष्णचन्द्र प्यारी ते कहे हैं मेरे कन्धापै

चढिलेच तव चढ़नेलगी तबहीं श्रीकृष्णचन्द्र अन्तर्द्धान होय गये वह गोपी विलाप करतभई ३८ हा नाथ! हे रमावनवारे! हे महाभुज! तुम कहाँ हो कहाँ हो हे सखे! तुम्हारी दासी कृपण मैं हूं
ताको अपनो समीप होय के दर्शन देउ ३९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! वे सब इकट्ठी गोपी श्रीकृष्णचन्द्र को दूर ते मार्ग ढूंढत ढूंढत प्यारे के वियोग में मोहित और अतिदुःखित
वा सखी कूं देखत भई ४० ता प्यारीने कही जो बात है ताकूं सुनि के और माधव भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सूं ता प्यारी ने सत्कार पायो ताको सुनि के और गर्व भये ते अपमान भयो ता
कूं सुनिके गोपी बड़े आश्चर्य कूं प्राप्त होति भई ४१ चन्द्रमा की चाँदनी को प्रकाश जहाँतक हो तहाँताई तो गोपी वनमें ढूंढत भई आगे वृक्षनकी छाया को अंधेरो देखिके बगदि आई ४२
ता श्रीकृष्णमें मन जिनके लगि रहे ताही की बातनकूं कहैं ताही की चेष्टान कूं ग्रहण करें ताको रूप होय के तिन के गुणन कूं गावत देहन की घरनकी सुधि भूलि गईं ४३ फेरि बगदि

थरमणश्रेष्ठ क्वासिक्वासिमहाभुज ॥ दास्यास्तेकृपणायामे सखेदर्शयसन्निधिम् ३९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अन्विच्छन्त्योभगवतोमार्गंगोप्योविदूरतः ॥ दद्दृ
शुःप्रियविश्लेषमोहितांदुःखितांसखीम् ४० तयाकथितमाकर्ण्य मानप्राप्तिंचमाधवात् ॥ अवमानंचदौरात्म्याद्विस्मयंपरमंययुः ४१ ततोविशन्वनंचन्द्र
ज्योत्स्नायावद्विभाव्यते ॥ तमःप्रविष्टमालक्ष्य ततोनिववृतुःस्त्रियः ४२ तन्मनस्कास्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मिकाः ॥ तद्गुणानेवगायन्त्योनात्मा
गाराणिसस्मरुः ४३ पुनःपुलिनमागत्य कालिन्द्याःकृष्णभावनाः ॥ समवेताजगुःकृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ४४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशम
स्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांकृष्णान्वेषणंनामत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥
गोप्यऊचुः ॥ जयतितेऽधिकंजन्मनाव्रजः श्रयतइन्दिराशश्वदत्रहि ॥ दयितदृश्यतांदिक्षुतावकास्त्वयिधृतासवस्त्वांविचिन्वते १ शरदुदाशयेसाधु
जातसत्सरसिजोदरश्रीमुषादृशा ॥ सुरतनाथतेऽशुल्कदासिकावरदनिघ्नतोनेहकिंवधः २ विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात् ॥ वृष

के यमुना जी के पुलिन में आय के श्रीकृष्णकी जिनके भावना लगि रही तिनके आयवेको पैड़ो देखें सम्पूर्ण जुरिमिलि के श्रीकृष्णचन्द्र कूं गावत भईं ४४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपि
यायादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायां कृष्णान्वेषणंनामत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
(एकत्रिंशेनिराशास्ताःपुनःपुलिनमागताः ॥ कृष्णमेवानुगायन्त्यःप्रार्थयन्तेतदागमम् १ इकतीसवें अध्याय में गोपियां निराश होकर फिर यमुना जी के किनारे आकर कृष्णजी को गान करती
हुई तिनके आगमनकी प्रार्थना करती भई १) अब सम्पूर्ण गोपी कहे हैं तुम्हारे जन्म लिये ते यह व्रज अधिक सुन्दर लगे है और याही ते लक्ष्मी जो है सो निरन्तर शोभायमान करेहै या प्रकार
सब व्रज में आनन्द होय रह्यो है हे प्यारे! तो में प्राणन कूं धारिके तेरी गोपी तो कूं दिशानमें ढूंढत डोले हैं १ हे सम्भोग के पति! हे मनोवाञ्छित फलके देनवारे! शरद्ऋतु के सरोवरनमें भली
प्रकार उपजे जो श्रेष्ठ कमल ताके भीतरकी शोभाकूं चुरावै ऐसी तेरी दृष्टि तासूं बिना मोलकी दासी हमहैं तिनकूं तुम मारोहो या संसारमें मारिबो नहीं कहावै है कहा शास्त्रही ते मरे है दृष्टिसूं नहीं मरे है

कहा याते तैंने दृष्टिसूं हमारे प्राण हरिलीने हैं तिनके देवेके लिये दिखाई दे २ बहुत मृत्युन ते कृपाकरिके रक्षाकरी अब क्यों कामदेवकों भेजिके दृष्टिसूं मारोहो विषके जल ते जो मृत्युही ताते रक्षा करी अघासुर आयो ताते इन्द्रने वर्षाकरी पवन चलाईही ताते बिजलीकी आगि ते वृषासुर ते यमकेपुत्र व्योमासुर और सम्पूर्ण भयते हे श्रेष्ठ! तैंने वेरवेरमें रक्षाकरी है अब क्यों हमें छोडेहै ३ तुम यशोदा के पुत्र नहीं हो सब देहधारीन के बुद्धिके साक्षी हो ब्रह्मा ने विश्व की रक्षा करिबे के लिये प्रार्थना करी तब हे सखे! यादवन के कुलमें प्रकट भये ४ हे यादवन में श्रेष्ठ ! हे कान्त ! संसार के भयते तुम्हारे चरण सेवन करें जे पुरुष हैं तिनकूं अभयरूपी कामनान के देनवारे लक्ष्मी के हाथ को पकरनवारो जो तुम्हारो हस्तकमल है ताकूं हमारे माथे पै धरो ५ हे सखे ! हे वीर! हे व्रजवासीनके दुःख के हरनवारे! अपने भक्तनके गर्व कों दूरि करनवारी जाकी मुसिकानि सो हम तुम्हारी दासी हैं तिनकूं सेवन करो पहिले स्त्री हम हैं तिनको अपनो मुखकमल दिखावो ६ प्रणत

मयात्मजाद्विश्वतोभयादृषभतेवयंरक्षितामुहुः ३ नखलुगोपिकानन्दनोभवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ॥ विखनसाऽर्थितोविश्वगुप्तये सखउदेयिवान्सात्वतांकुले ४ विरचिताभयंवृष्णिधुर्यते चरणमीयुषांसंसृतेर्भयात् ॥ करसरोरुहंकान्तकामदंशिरसिधेहिनःश्रीकरग्रहम् ५ व्रजजनार्तिहन्वीरयोषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ॥ भजसखेभवत्किङ्करीःस्मनोजलरुहाननंचारुदर्शय ६ प्रणतदेहिनांपापकर्शनं तृणचरानुगंश्रीनिकेतनम् ॥ फणिफणार्पितन्तेपदाम्बुजं कृणुकुचेषुनःकृन्धिहृच्छयम् ७ मधुरयागिरावल्गुवाक्ययाबुधमनोज्ञयापुष्करेक्षण ॥ विधिकरीरिमावीरमुह्यतीरधरशीधुनाऽऽप्याययस्व नः ८ तवकथाऽमृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंकल्मषापहम् ॥ श्रवणमङ्गलंश्रीमदाततं भुविगृणन्तितेभूरिदाजनाः ९ प्रहसितंप्रियप्रेमवीक्षणं विहरणंचतेध्यानमङ्गलम् ॥ रहसिसंविदोयाहृदिस्पृशः कुहकनोमनःक्षोभयन्तिहि १० चलसियद्व्रजाच्चारयन्पशून्नलिनसुन्दरंनाथतेपदम् ॥ शिलतृणाङ्कुरैःसीदतीतिनः कलिलतांमनःकान्तगच्छति ११ दिनपरिक्षयेनीलकुन्तलैर्वनरुहाननंबिभ्रदावृतम् ॥ घनरजस्वलंदर्शयन्मुहुर्मनसिनःस्मरंवीरयच्छसि १२

अर्थात् नम्र जे देहधारी हैं तिनके पापको दूरि करनवारो गौवनके पाछे पाछे चले काली के फण पै नाचे ऐसो तेरो चरणकमल है ताकूं हमारे कुचन पै धरिके कामदेव की व्यथाकूं दूरि कर ७ हे कमलदललोचन! सुन्दर है वाक्य जामें ऐसी तेरी मधुरवाणी सों हे वीर! तेरी दासी मोहित भई जे हम हैं तिनकूं जीवन दे ८ संतप्त-पुरुषन कों जिवावनवारो कविनने बड़ाई जाकी करी पापन को दूरि करनवारो काननकों मंगलरूप शान्त ऐसो तुम्हारो कथारूप अमृत कूं जे पुरुष पृथ्वी में कहे हैं वे बड़े दाताहैं ९ तेरो हँसीसहित मुख प्रेम भरी चितवनि ध्यान में मङ्गलरूप तेरो विहार हृदयकू स्पर्श करनवारी एकान्त की बातें हमारे मनकूं क्षोभ करे है १० हे नाथ! जासमय गौ चरायवे कूं व्रज ते चलोहो तब तुम्हारो कमलकी तुल्य सुन्दर चरण सो काकरी तृण अंकुर लगिके कष्ट कू पावे है तासूं हे कान्त! हमारो मन चञ्चल होयहै ११ सन्ध्या समय नील जे केशहैं तिनसूं ढक्यो ऐसे कमलतुल्य मुखकूं धारण करिके गौवनकी रज जो उड़ी है

तासूं धूसरो जो मुखहै ताकूं वेर वेर दिखाइके हे वीर ! हमारे मन में कामदेव को भेजो हो संग नहीं गयो है यह तुम्हारो निश्चय कपट है १२ नम्र जे देहधारी हैं तिनकूं कामना देनवारो ब्रह्मा ने पूजनकरो पृथ्वी की शोभा को करनवारो आपत्ति में ध्यानयोग्य सुखरूप ऐसो तुम्हारो चरणकमल है ताकूं हे रमावनवारे ! हे कामदेव की पीड़ा के दूर करनवारे ! हमारे कुचनपै धरो १३ हे वीर ! कामदेवकूं बढ़ावो शोक कू दूरकरो बजै जो बाँसुरी है ताने भलेप्रकार अधरामृत चुम्बनकरो चक्रवर्ती आदि लैके जे सुख हैं तिनको दूरकरो १४ जब तुम दिन में वन में जाओ हौ तब तुम्हारे देखे बिना आधोक्षण युगकी तुल्य बीते है यह बिना देखेको दुःख कहो और घूमघुमारे केश जापै छुटिरहे ऐसो तेरो मुख देखे हैं तिनकी आँखिनपै पलक लगावनवारो ब्रह्मा मूढ़ है या प्रकार पलकलगिवे को अन्तराय नहीं सहारो जाय यह दर्शन में सुख कह्यो १५ पति पुत्र वंश के भय्या बन्धुन कूं त्यागिके बेरे गीतसूं मोहित होयके हम तुम्हारे पास आई गायवेकी गतीन कूं जाने जो

प्रणतकामदंपद्मजार्चितं धरणिमण्डनंध्येयमापदि ॥ चरणपङ्कजंशन्तमञ्चतेरमणनःस्तनेष्वर्पयाधिहन् १३ सुरतवर्धनंशोकनाशनं स्वरितवेणुनासुष्ठुचुम्बितम् ॥ इतररागविस्मारणंनृणां वितरवीरनस्तेऽधरामृतम् १४ अटतियद्भवानह्निकाननं त्रुटिर्युगायतेत्वामपश्यताम् ॥ कुटिलकुन्तलंश्रीमुखंचतेजडउदीक्षतांपक्ष्मकृद्दृशाम् १५ पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्यतेऽन्त्यच्युतागताः ॥ गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितवयोषितःकस्त्यजेन्निशि १६ रहसिसंविदंहृच्छयोदयं प्रहसिताननंप्रेमवीक्षणम् ॥ बृहदुरःश्रियोवीक्ष्यधामते मुहुरतिस्पृहामुह्यतेमनः १७ व्रजवनौकसांव्यक्तिरङ्गते वृजिनहन्त्र्यलंविश्वमङ्गलम् ॥ त्यजमनाक्चनस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजांयन्निषूदनम् १८ यत्तेसुजातचरणाम्बुरुहंस्तनेषु भीताःशनैःप्रियदधीमहिकर्कशेषु ॥ तेनाटवीमटसितद्व्यथतेनकिंस्वित्कूर्पादिभिर्भ्रमतिधीर्भवदायुषांनः १९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीगीतंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

तू है ताते तेरे पास हे अच्युत ! हम आई हे कपटी ! रात्रि में आई जे स्त्री हैं तिनकूं तेरे बिना ऐसो कौन है जो त्यागेगो १६ कामदेवको उदय जासों होय ऐसे एकान्त को संकेत देखिके हँसी सहित मुखको देखिके प्रेमकी चितवनि देखिके लक्ष्मीके रहिबेको ठिकानो तेरो वक्षःस्थल देखिके हमारे बड़ी चाहनाभई है और हमारो मन मोहित होयहै १७ अंग गर्यात् हे श्रीकृष्णचन्द्र ! तुम्हारो प्रकट होनो व्रजवासीनके वनवासीन के दुःख को दूर करनवारो है अतिशय करिके विश्वको मंगलरूपहै याते तेरी चाहना जिनको लगिरहीहै ऐसी जो हमहैं तिनकूं थोड़ीसी कछु वस्तुहै ताकूंदे कृपणता मतिकरै कहा अपने जनहैं तिनके हृदयके रागके दूर करावनवारो अतिगोप्य औषधहै ताय तुही जाने है यह गोपीन को गूढ़ अभिप्रायहै १८ कठोर स्तनपै जो तेरो चरणकमलहै ताय भय ते हौले हौले धरतभई ज्यों कहूं कोमलचरणमें गड़ि न जाय ता चरणको वनमें उठाय उठाय डोले करे है कहा चरणमें काँटे काँकर लागिके खेद नहीं होयहै यह जब विचारकरै तब तुमहीं जिनके जीवन ऐसी जो हमहैं तिनकी बुद्धि मोहितहोइहै १९ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीगीतंनामैकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(द्वात्रिंशेविरहालापविक्लिन्नहृदयोहरिः ॥ तत्राविर्भूयगोपीस्ताःसान्त्वयामासमानयन् १ स्वप्रेमामृतकल्लोलविह्वलीकृतचेतसः ॥ सदयंनन्दयन्गोपीरुद्रतोनन्दनन्दनः २ बत्तीसवें अध्याय में विरह के वार्तालाप सों खेदयुक्त हृदयहोकर कृष्णजी तहाही प्रकटहोकर तिन गोपियों को मान करतेहुये शान्त करतेभये १ अपने प्रेमरूपी अमृतके कल्लोल से विह्वलकिये हुये चित्तवाली गोपियोंको दयासमेत कृष्णजी आनन्दयुक्त करतेहुये प्राप्तहोजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेंहैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गोपी हैं ते गावत चित्रविचित्र विलाप करत श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनकी जिनके लालसा वे गोपी बडे स्वर ते रुदन करतभई १ मुसिकाय है मुखकमल जाको शूरवंश में जन्म जाको पीताम्बर कूं पहिरे बनमाला को धारण करे साक्षात् मन्मथ कामदेव ताके मन कूं मोहितकरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र गोपीन के बीचमें प्रकट होतभये २ प्रीतिपूर्वक प्रसन्न होयके प्रफुल्लित है नेत्र जिनके ऐसी सम्पूर्ण अबला श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिके एक संग उठतभई जैसे देहमें प्राण आये ते हाथ पाव उठे हैं ३ कोई गोपी श्रीकृष्णचन्द्र कों हस्तकमल बड़े आनन्दपूर्वक अपने हाथसूं पकरत भई कोई गोपी चन्दन जामें लग्यो ऐसी भुजाकूं कन्धापै आप उनके हाथकों धरतभई ४ कृश

श्रीशुकउवाच ॥ इतिगोप्यःप्रगायन्त्यःप्रलपन्त्यश्चचित्रधा ॥ रुरुदुःसुस्वरंराजन् कृष्णदर्शनलालसाः १ तासामाविरभूच्छौरिःस्मयमानमुखाम्बुजः ॥ पीताम्बरधरःस्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः २ तंविलोक्यागतंप्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोबलाः ॥ उत्तस्थुर्युगपत्सर्वास्तन्वःप्राणमिवागतम् ३ काचित्कराम्बुजं शौरेर्जगृहेऽञ्जलिनामुदा ॥ काचिद्दधारतद्बाहुमंसेचन्दनभूषितम् ४ काचिदञ्जलिनाऽगृह्णात्तन्वीताम्बूलचर्वितम् ॥ एकातदङ्घ्रिकमलं सन्तप्तास्तनयोरधात् ५ एकाभ्रुकुटिमाबध्य प्रेमसंरम्भविह्वला ॥ घ्नन्तीवैक्षत्कटाक्षेपैः सन्दष्टदशनच्छदा ६ अपराऽनिमिषद्दृग्भ्यांजुषाणातन्मुखाम्बुजम् ॥ आपीतमपिनातृप्यत्सन्तस्तच्चरणंयथा ७ तंकाचिन्नेत्ररन्ध्रेण हृदिकृत्यनिमील्यच ॥ पुलकाङ्ग्युपगुह्यास्ते योगीवानन्दसंप्लुता ८ सर्वास्ताःकेशवालोकपरमोत्सवनिर्वृताः ॥ जहुर्विरहजन्तापं प्राज्ञंप्राप्ययथाजनाः ९ ताभिर्विधूतशोकाभिर्भगवानच्युतोवृतः ॥ व्यरोचताधिकंतात पुरुषःशक्तिभिर्यथा १० ताःसमा

है अंग जाको ऐसी कोई गोपी श्रीकृष्णके मुखमें ते ताम्बूल को उगारहै ताय अपने हाथ में लेत भई और काम ते तपायमान जो एक गोपी है सो श्रीकृष्णचन्द्र को चरणकमल है ताय अपने स्तनन पै धरतभई ५ एक गोपी अपनी भौंह चढ़ायके कोपके आवेश सूं विकल होयके अपने ओठकूं दातनते दाबिके कटाक्षरूपी बाणन ते मारती सी देखत भई ६ और गोपी नहीं लगेहै पलक जिनमें ऐसी दृष्टिसे श्रीकृष्णचन्द्र को मुखकमल भले प्रकार देख्यो भी है परन्तु फेर फेर देखत नहीं तृप्त होतभई जैसे साधु जिनके चरणारविन्द देखत नहीं तृप्तहोइ हैं ७ रोमाञ्च जाके होयआवें देहमें ऐसी कोई गोपी नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके नेत्रन कूं मूंदिके श्रीकृष्णचन्द्र कूं आलिंगन करतभई जैसे योगीजन आनन्दमें व्याप्त होय हैं केशव श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिके परमआनन्दहै तासूं सुखी होयके सम्पूर्ण गोपी विरहके तापकों त्यागत भई जैसे ईश्वरकों पायके मुमुक्षुजन तापकूं छोड़ें हैं अथवा सुषुप्ति अवस्थाको साक्षी है ताय पायके जाग्रत्रूप अवस्थावान् जीव जैसे तापकूं छोड़े है ८। ९ दूरभये हैं शोक जिनके ऐसी गोपीनके बीचमें अच्युत भगवान् हे परीक्षित् ! अधिकसुन्दर लगतभये जैसे परमात्मा सत्त्वगुण सूं आदिलेके जे शक्ति हैं तिनसूं सुन्दर

लगे है अथवा उपासकपुरुष ज्ञान बल वीर्य्य सूं आदिलेके जे शक्ति हैं तिनसूं सुन्दर लगे है १० तिन गोपीन कों संग लेके फूले जे कुन्द मंदार तिनकी सुगन्धिकी पवन सूं भौंरा जामें गुञ्जारकरें ऐसे यमुनाजी के पुलिन में आयके सुन्दर लगतभये ११ फेर कैसे पुलिन हैं शरद्ऋतु के चन्द्रमा की किरणन के समूह ते रात्रिको अन्धकार जामें ते दूर होयगयो है फेर कैसो है यमुना की तरंगन सूं कोमल वारू के बिछौना जामें बिछरहे हैं १२ ता श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शनमें जो आनन्दहै तासूं दूरभये है हृदय के रोग जिनके वे गोपी मनोरथको जो अन्तहै ताकूं पावतभई अर्थात् मनोरथ उनके पूरे होतभये जैसे ज्ञानकाण्डमें श्रुति परमेश्वर कूं देखिके आनन्दसूं पूर्ण होयँ काम के सम्पूर्ण बन्धनन कूं त्यागे हैं कुचनकी केशर जिनमें लगी ऐसी अपनी ओढनीन कूं उतार उतार के श्रीकृष्णचन्द्र के बैठिने को तकिया गादी बनावतभई १३ योगेश्वरन के हृदय के भीतर जिनकों कल्पित आसन है वे ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तीनलोक की शोभा कों एक एकही स्थान कहा तीन

दायकालिन्यानिर्विश्यपुलिनंविभुः ॥ विकसत्कुन्दमन्दारसुरभ्यनिलषट्पदम् ११ शरच्चन्द्रांशुसन्दोहध्वस्तदोषातमःशिवम् ॥ कृष्णायाहस्ततरलाचितकोमलवालुकम् १२ तद्दर्शनाह्लादविधूतहृद्रुजोमनोरथान्तंश्रुतयोयथाययुः ॥ स्वैरुत्तरीयैःकुचकुङ्कुमाङ्कितैरचीक्लृपन्नासनमात्मबन्धवे १३ तत्रोपविष्टो भगवान्सईश्वरोयोगेश्वरान्तर्हृदिकल्पितासनः ॥ चकासगोपीपरिषद्गतोऽर्चितस्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदंवपुर्दधत् १४ सभाजयित्वातमनङ्गदीपनं सहासलीलेक्षणविभ्रमभ्रुवा ॥ संस्पर्शनेनाङ्ककृताङ्घ्रिहस्तयोः संस्तुत्यईषत्कुपिताबभाषिरे १५ गोप्यऊचुः ॥ भजतोऽनुभजन्त्येकएकएतद्विपर्ययम् ॥ नोभयांश्चभजन्त्येकएतन्नोब्रूहिसाधुभोः १६ श्रीभगवानुवाच ॥ मिथोभजन्तियेसख्यः स्वार्थैकान्तोद्यमाहिते ॥ नतत्रसौहृदंधर्मः स्वार्थार्थन्तद्धिनान्यथा १७ भजन्त्यभजतोयेवै करुणाःपितरोयथा ॥ धर्मोनिरपवादोऽत्र सौहृदञ्चसुमध्यमाः १८ भजतोऽपिनवैकेचिद् भजन्त्यभजतःकुतः ॥ आत्मारामाह्यासकामाअकृतज्ञागुरुद्रुहः १९ नाहंतुसख्योभजतोऽपिजन्तून्भजाम्यमीषामनुवृत्तिवृत्तये ॥ यथाऽधनोलब्धधनेविनष्टेतच्चिन्तयाऽन्यन्निभृतोनवेद २०

लोक की शोभा जामें आयरही ऐसे रूप कों धरिके ता आसन पै बैठारि के गोपीन ने जिनको पूजन करो ऐसे गोपीन की सभा में सुन्दर लगतभये १४ कामदेव के बढावनवारे जे श्रीकृष्ण हैं तिनकी हास लीलापूर्वक चितवनि सों चलायमान जो भृकुटी हैं तिनसूं सत्कार करिके गोदमें धरे जो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण तिनकूं हाथन ते दाबत स्तुति करिके कछु एक क्रोध ते गोपी बोलत भई १५ सम्पूर्ण गोपी कहे हैं कि हे महाराज! एक पुरुष तो भजतेन को भजे हैं वे कौनसे हैं और एक ऐसे हैं कि नहीं भजतेन को भजे हैं वे कौन हैं और एक भजतेन कों न भजनेन कों दोनोंनकों नहीं भजे हैं वे कौनसे हैं सो हे कृष्ण! यह हमारे आगे भलेप्रकार समझा के कहो १६ श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे सखियो! जे पुरुष परस्पर भजे हैं अर्थात् जितनो वे उनको चाहैं तितनो वे उनको चाहैं वे पुरुष तो आप स्वार्थी हैं वे भजनमें स्नेह सुख धर्म्म कछुओ नहीं है वह तो केवल अपनोही भजन है १७ और जे नहीं भजतेन कों भजे हैं वे पुरुष दो प्रकार के हैं एक तो करुणावान् दूसरे स्नेही जैसे माता पिताकों पुत्र नहीं चाहे है परन्तु वे वाके ऊपर कृपा करे हैं और या भजन में निर्दोष धर्म्म है हे सुमध्यमाः सुन्दर है कटि जिनकी! हे

गोपियो! या भजन में स्नेह भी है १८ कोई पुरुष भजतेनकू भी नहीं भजे है अभजतेन कूं कहाँ ते भजेंगे वे चारप्रकार के हैं एकतो आत्माराम में रमण करे हैं और एक पूर्णमनोरथ हैं जिनके कोई बातकी चाहना नहीं है और एक अकृतज्ञ हैं उपकार कूं नहीं समझे हैं और एक गुरुद्रोही है जो उपकारकरे ताहीते द्रोह करे है १९ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे सखियो! जो कोई प्राणी मेरो भजन करे हैं तिनको आपनों और ध्यान लगायबेके लिये मैं उनकूं नहीं भजूंहूं जैसे दरिद्री पुरुष कों धन मिले है और वह धन जानरहे है तब वह वाकी चिन्ता के मारे भूख प्यास नहीं जाने है २० हे अबलाओ! मेरे लिये छोडी है लोकमर्यादा वेदमर्यादा पति पुत्र जिनने ऐसी तुमहो तिनकी वृत्ति लगायबे के लिये तुमकूं देखिवेकों नहीं आयो तुम्हारे पासही छिपिके रहतभयो कहू दूरि नहीं गयोहो याते हे प्रियाओ! यह कृष्ण बुरो है ऐसे मो प्यारे में दोष मति लगावो २१ निर्दूषित है सग जिनको ऐसी तुमहो तिनके उपकार को बदलो मोपै देवतानकी बराबर अवस्था होती तौभी नहीं होसके है क्यों जो छोड़ी न जायँ ऐसो घरकी बेड़ीन कू काटिके मेरो सेवन करतभई यातें तुमहीं कहिदेउ कि कृष्ण हमारो ऋणिया नहीं है तो मेरो छुटकारो है

एवंमदर्थोज्झितलोकवेदस्वानांहिवोमय्यनुवृत्तयेऽबलाः ॥ मयापरोक्षंभजतातिरोहितं मासूयितुंमाऽर्हथतत्प्रियंप्रियाः २१ नपारयेऽहंनिरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यंविबुधायुषापिवः ॥ यामाऽभजन्दुर्जरगेहशृङ्खलाः संवृश्च्यतद्वःप्रतियातुसाधुना २२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीसान्त्वनंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंभगवतोगोप्यः श्रुत्वावाचःसुपेशलाः ॥ जहुर्विरहजंतापं तदङ्गोपचिताशिषः १ तत्रारभतगोविन्दोरासक्रीडामनुव्रतैः ॥ स्त्रीरत्नैरन्वितःप्रीतैरन्योऽन्याबद्धबाहुभिः २ रासोत्सवःसंप्रवृत्तो गोपीमण्डलमण्डितः ॥ योगेश्वरेणकृष्णेन तासांमध्येद्वयोर्द्वयोः ॥ प्रविष्टेनगृहीतानां कण्ठेस्वनिकटंस्त्रियः ३ यंमन्येरन्नभस्तावद्विमानशतसंकुलम् ॥ दिवौकसांसदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ४ ततोदुन्दुभयोनेदुर्निपेतुःपुष्पवृष्टयः ॥ ज

मोपै तुम्हारे उपकार को बदलो नहीं होयसके है २२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेरासक्रीडायांगोपीसान्त्वनंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(त्रयस्त्रिंशेततोगोपीमण्डलीमध्यगोहरिः ॥ प्रियास्तारमयामास ह्लादिनीजनकेलिभिः १ तेंतीसवें अध्याय में गोपियोंकी मण्डली के मध्य में प्राप्त कृष्णजी तिन प्यारी गोपियों को ह्लादिनीजन केलियों से रमण करातेभये १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं या प्रकार जा श्रीकृष्ण के हस्त चरण कूं आदिलेके अंगनसूं बढे हैं मनोरथ जिनके ऐसी गोपी भगवान् श्रीकृष्ण के वचन श्रवण करिके विरह के तापकूं त्यागतभई १ तहां गोविन्द श्रीकृष्ण हैं सो अपनी आज्ञाकी करनवारी प्रसन्न होय आपुस में हाथ जिनने पकरि लिये ऐसी स्त्रीन में रत्न जो गोपी हैं तिनकूं सङ्ग लैके रासक्रीड़ा को आरम्भ करतभये २ गोपीन के समूह हैं तिनसों शोभायमान ऐसो रासको उत्सव है सो योगके ईश्वर श्रीकृष्ण रचत भये मण्डलरूप करिके ठाढ़ीभई जे गोपी हैं तिनके दो दो के बीच में कण्ठ में गलबाहीं डारि गान करत आपहू ठाढ़े भये ३ जिन श्रीकृष्णचन्द्र कूं सब गोपी प्यारो मेरे पास है वह कहे प्यारो मेरे पासहै या प्रकार अपने अपने पास मानत भई रास देखिवेकी

इच्छा जिनके भई ऐसे देवता अपनी स्त्रीनकूं लेके आये तिनके विमाननसूं आकाश छाय रह्यो है ४ देवतान के आये पीछे नगारे बजतभये फूलनकी वर्षा होतभई मुख्य मुख्य गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रीन को संगलेके श्रीकृष्ण के निर्म्मल यशको गावतभये ५ प्यारे श्रीकृष्णसहित जे स्त्री हैं तिन के कंकण नूपुर किंकिणीन को रासमण्डल में बड़ो झनकार शब्द होतभयो ६ जैसे दो दो सोने के मणियान के बीचमें एक एक नीलमणि सुन्दर लगे हैं तैसे वा रासमण्डल में दो दो गोपीन के बीच में एक एक भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अतिसुन्दर लगत भये ७ पायन की धरनि भुजान की हलनि मुसिकानि सहित भृकुटीन की चढ़नि कमरन की लचकनि कुचनकी और वस्त्रनकी हलनि कपोलन पै कुण्डलन की हलनि तिनसूं पसीना मुँहपै जिनके आय गये चोटिनकी नारेन की गाठिं जिनकी खुलगई ऐसी श्रीकृष्णचन्द्र की वधू गोपी श्रीकृष्ण कूं गावत जैसे मेघमण्डल में बिजुली सुन्दर लगे हैं तैसे सुन्दर लगतभई ८ नाना रंगनसूं कण्ठ जिनके रंगिरहे रतिही जिनको

गुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकास्तद्यशोमलम् ५ वलयानांनूपुराणां किङ्किणीनाञ्चयोषिताम् ॥ सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले ६ तत्रातिशुशुभेताभिर्भगवान्देवकीसुतः ॥ मध्येमणीनांहैमानां महामरकतोयथा ७ पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासैर्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुण्डलैर्गण्डलोलैः ॥ स्विद्यन्मुख्यःकबररशनाग्रन्थयःकृष्णवध्वोगायन्त्यस्तंतडितइवतामेघचक्रेविरेजुः ८ उच्चैर्जगुर्नृत्यमानारक्तकण्ठ्योरतिप्रियाः ॥ कृष्णाभिमर्शमुदितायद्गीतेनेदमावृतम् ६ काचित्समंमुकुन्देनस्वरजातीरमिश्रिताः ॥ उन्निन्येपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति ॥ तदेवध्रुवमुन्निन्येतस्यैमानञ्चबहुदात् १० काचिद्रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्यगदाभृतः ॥ जग्राहबाहुनास्कन्धंश्लथद्वलयमल्लिका ११ तत्रैकांसगतंबाहुंकृष्णस्योत्पलसौरभम् ॥ चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमाचुचुम्बह १२ कस्याश्चिन्नाट्यविक्षिप्तकुण्डलत्विषमण्डितम् ॥ गण्डंगण्डेसन्दधत्याअदात्ताम्बूलचर्वितम् १३ नृत्यन्तीगायतीकाचित्कूजन्नूपुरमेखला ॥ पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधात्स्तनयोःशिवम् १४ गोप्योलब्ध्वाऽच्युतंकान्तं श्रियएकान्तवल्लभम् ॥ गृहीतकण्ठ्यस्तद्दोर्भ्यां

प्यारी श्रीकृष्णको स्पर्श जिनको होय तासूं बड़ो जिनके आनन्द वे गोपी नृत्य करत ऊँचे स्वर से गावतभई जिनको गीत या विश्व में छायरह्यो ६ कोई गोपी मुकुन्द जे श्रीकृष्ण हैं तिनके संग उच्चस्वरन के आलापन की गतिन कूं उठावत भई कैसे स्वरन की जातिलीनी श्रीकृष्णने जो स्वर उठायो है तिनमें मिली हैं तब श्रीकृष्ण प्रसन्न होयके स्यावास स्यावास ऐसे बड़ाई करत भये ताते स्वरनकी जाति लीनीही तिनकूं ध्रुवताल में वाहिके गावतभई जो गोपी हैं सो गोपी को श्रीकृष्णचन्द्र बहुत मान देत भये १० कोई गोपी रासमें श्रमित होयके पासमें गदाके धारण करनवारे श्रीकृष्ण ठाढ़े हैं तिनके कन्धाकों हाथते पकरतभई कङ्कण फूलनके हार जाके शिथिल होयगये ११ तामसय रोमाञ्च जाके होय आये ऐसी एक गोपी कमलकी तुल्य जामें सुगन्धि आवै चन्दन जामें लग्यो ऐसी श्रीकृष्णकी भुजाको अपने कन्धापै धरिके चुम्बन करतभई १२ नृत्यसूं चलायमान जो कपोल ताकूं श्रीकृष्ण के कपोलन ते लगावै ऐसी जो गोपी है ताकूं श्रीकृष्ण बीरी को उगार देतभये १३ नूपुर कंधनी जाके बजें ऐसी कोई एक गोपी नृत्य करत गावत श्रम जाको भयो तब पास श्रीकृष्ण ठाढ़े हैं तिनको मंगलरूप हस्तकमल अपने स्तनन पै धरति भई १४

लक्ष्मी कूं अत्यन्त प्यारे ऐसे अच्युत श्रीकृष्णचन्द्र कूं सुन्दर पति पाइ के तिनकी भुजान सूं कण्ठ में गलबाहीं डारि के श्रीकृष्ण कों गावती विहार करत भईं १५ कानन में नीलकमल और अलकावली तिनसूं शोभायमान जो कपोल और पसीनान के विन्दु तिनसूं शोभायमान जिनके मुख केशन ते झरझर के फूल गिरैं जिनके वे गोपी भौंरा जहॉं गवैया रासकी सभा में ककण नूपुर के झनकारे जे वाजे हैं तिनसूं श्रीकृष्ण के संग नृत्य करत भई गवैया बजवैया गन्धर्व्व किन्नरादिक रास देखिके मोहित होय गये तब नूपुर कंकणन के वाजे वजे भौंरा गवैया भये सब रिझवैया होयके पावन के ऊपर फूल वर्षावत भये १६ या प्रकार लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण आलिङ्गन हाथन को स्पर्श स्नेह भरी चितवनि बड़े विलास हास हैं तिनसूं बालक अपनी परछाई सूं खेलै है तैसे व्रजसुन्दरीन के संग रमण करत भये १७ हे कुरूद्वह अर्थात् कौरन के वंश को आनन्द देनवारे राजा परीक्षित्! तिन श्रीकृष्णके अंग में जो आनन्द तासूं विवशहै इन्द्रिय जि-

गायन्त्यस्तंविजह्रिरे १५ कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रियोवलयनूपुरघोषवाद्यैः ॥ गोप्यःसमंभगवताननृतुःस्वकेशस्रस्तस्रजोभ्रमरगायकरा सगोष्ठ्याम् १६ एवंपरिष्वङ्गकराभिमर्शस्निग्धेक्षणोद्दामविलासहासैः ॥ रेमेरमेशोव्रजसुन्दरीभिर्यथाऽर्भकःस्वप्रतिबिम्बविभ्रमः १७ तदङ्गसङ्गप्रमदाकुलेन्द्रियाः केशान्दुकूलंकुचपट्टिकांवा ॥ नाञ्जःप्रतिव्योढुमलंव्रजस्त्रियोविस्रस्तमालाभरणाःकुरूद्वह १८ कृष्णविक्रीडितंवीक्ष्य मुमुहुःखेचरस्त्रियः ॥ कामार्दिताःशशाङ्कश्च सगणोविस्मितोऽभवत् १९ कृत्वातावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः ॥ रेमेसभगवांस्ताभिरात्मारामोऽपिलीलया २० तासामतिविहारेण श्रान्तानांवदनानिसः ॥ प्रामृजत्करुणःप्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना २१ गोप्यःस्फुरत्पुरटकुण्डलकुन्तलत्विड्गण्डश्रियासुधितहासनिरीक्षणेन ॥ मानंदधत्यऋषभस्यजगुःकृतानि पुण्यानितत्कररुहस्पर्शप्रमोदाः २२ ताभिर्युतःश्रममपोहितुमङ्गसङ्गघृष्टस्रजःसकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ॥ गन्धर्व्वपालिभिरनुद्रुतआविशद्वाः श्रान्तोगजीभिरिभराडिवभिन्नसेतुः २३ सोऽम्भस्यलंयुवतिभिःपरिषिच्यमानः प्रेम्णेक्षितःप्रहसतीभिरितस्ततोऽङ्ग ॥ वैमानिकैः

तकी और खिसिले हैं माला गहने जिनके ऐसी व्रज की स्त्री गोपी हैं ते केशन कूं रेशमी वस्त्रन कूं कुचन के वस्त्रन कूं सम्हारवे कूं न समर्थ होतभई १८ श्रीकृष्ण की रासक्रीडा देखिके आकाश में देवांगना काम सूं पीड़ित होय के मोहित होत भई तारागण सहित चन्द्रमा आश्चर्य्य मानके चलिवो भूलि गयो तब और ग्रह भी जहॉं के तहॉं रहत भये तासूं राति जो वढ़ि गई तिनमें सुख पूर्व्वक विहार करतभये १९ जितनी गोपन की स्त्रीरहीं तितनेही अपने रूप करिके आत्माराम भगवान् श्रीकृष्ण गोपीन के संग लीला करत रमत भये २० अत्यन्त विहार सूं श्रम जिनको भयो ऐसी गोपीन के मुख के पसीना को देखिके करुणा जिनके आय गई ऐसे श्रीकृष्ण हैं सो प्रेमसों सुख को देनवारो अपनो हाथ तासूं पोंछत भये २१ श्रीकृष्ण के हस्तकमल के लगिवे ते है आनन्द जिनके ऐसी जे गोपी हैं ते प्रकाशमान सुवर्ण के कुण्डल और केशन की कान्ति सों शोभायमान अमृतसमान हाससमेत चितवनि सों कृष्णजी को पूजन करतीभईं और तिनके पुण्यकारी कर्मो को गावत भईं २२ रासक्रीड़ा को श्रम जिनको भयो ऐसे श्रीकृष्ण तिन गोपिनकों संग लेके श्रम दूरि करिवे के लिये जलमें धसत भये कुचनकी केशर जामें लगी अंगसंग सू रगड़ी ऐसी

जो माला है ताकी सुगन्धि सूं गन्धर्व्वन की तुल्य भौंरा गावत गावत पीछे चले जाय हैं जैसे हथिनीन कूं संगलैके हाथी जलविहार करिबे कूं जाय है २३ अङ्ग अर्थात् हे राजन् परीक्षित् ! इत उत ते जल में स्त्रीन कू छींटा देय हैं श्रीकृष्ण कूं देखिके प्रेम ते हेरी हैं विमानन में वैठे देवता जिनकी स्तुति करें पुष्पन की वर्षा करें हाथी की तुल्य जिनकी लीला ऐसे आत्माराम श्रीकृष्ण तहूं जल में अथवा गोपीन के मण्डल में विहार करत भये २४ जलविहार करे पीछे जल के स्थल के पुष्प हैं तिनकी सुगन्धि जिन में आवै ऐसी पवन सों सेवित हैं दिशान के अन्त जामें ऐसो जो यमुनाजी को बाग है तामें भौंरा गोपी जिनके संग ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र विहार करत भये मद जाके चुवे ऐसो हाथी जैसे हथिनीन के संग विहार करे है २५ या प्रकार प्रकाशमान जे रात्री हैं तिनकूं चन्द्रमा की किरणन सूं सत्य जिनको सङ्कल्प अनुरागवती जो गोपी हैं तिनके समूह में विराजमान अपने विषे वीर्य जिनने रोको ऐसे श्रीकृष्ण शरदृतुमें रमण करत काविन ने कहे जे रस हैं तिनके आश्रय ऐसी शरदृतु के चन्द्रमा की किरणन सूं प्रकाशमान जे रात्रि है तिनें सेवन करतभये २६ राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे महाराज शुकदेवजी ! धर्म्म के स्थापन करिबे के लिये और

कुसुमवर्षिभिरीड्यमानोरेमेस्वयंस्वरतिरत्रगजेन्द्रलीलः २४ ततश्चकृष्णोपवने जलस्थलप्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ॥ चचारभृङ्गप्रमदागणावृतोयथामदच्युद्द्विरदःकरेणुभिः २५ एवंशशाङ्कांशुविराजितानिशाः ससत्यकामोऽनुरताबलागणः ॥ सिषेवआत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्व्वाःशरत्काव्यकथारसाश्रयाः २६ ॥ राजोवाच ॥ संस्थापनायधर्मस्य प्रशमायेतरस्यच ॥ अवतीर्णोहिभगवानंशेनजगदीश्वरः २७ सकथंधर्मसेतूनां वक्ताकर्त्ताऽभिरक्षिता ॥ प्रतीपमाचरद्ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् २८ आप्तकामोयदुपतिः कृतवान्वैजुगुप्सितम् ॥ किमभिप्रायएतन्नःसंशयंछिन्धिसुव्रत २९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्टईश्वराणाञ्चसाहसम् ॥ तेजीयसांनदोषाय वह्नेःसर्वभुजोयथा ३० नैतत्समाचरेज्जातु मनसाऽपिह्यनीश्वरः ॥ विनश्यत्याचरन्मौढ्याद्यथारुद्रोऽब्धिजंविषम् ३१ ईश्वराणांवचःसत्यं तथैवाचरितंक्वचित् ॥ तेषांयत्स्ववचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत्समाचरेत् ३२ कुशलाचरितेनैषामिहस्वार्थो

अधर्म्म के नाश करिबे के लिये जगत् के ईश्वर श्रीकृष्ण भगवान् परिपूर्ण रूप करिके अवतरे हैं और धर्म्म की मर्य्यादान के कहनवारे करनवारे रक्षा करनवारे श्रीकृष्ण विरानी स्त्रीनको स्पर्श करनो यह अधर्म्म कैसे करतभये पूर्णकाम यादवनके पति श्रीकृष्ण निंदित कर्म्म कैसे करतभये याको कहा अभिप्रायहै सुन्दरहै व्रत जिनको ऐसे हे शुकदेवजी ! यह जो हमारो सन्देहहै ताय दूरि करो २७।२८।२९ यह वचन श्रवण करिके श्रीशुकदेवजी बोले हे राजन् परीक्षित् ! सामर्थ्यवान् कूं धर्म्म को उल्लंघिबो देख्यो है और सामर्थ्यवान् कूं साहसहू देख्यो है ब्रह्मा अपनी पुत्री के पीछे भाज्यो चन्द्रमा बृहस्पति की स्त्रीके पास गयो जैसे अग्निमें बुरी भली वस्तु डारो ताकूं जराय देइ वाकू दोष नहीं लगेहै ऐसे तेजस्वी पुरुषनकूं दोष नहीं लगेहै ३० असामर्थ्यवान् पुरुष इन कू मन से हू न करे और जो अज्ञान ते करे तो मारो जाय जैसे रुद्र विना और कोई समुद्र के विष कूं पीवे तो मारो जाय ३१ ईश्वरों के वचनही कों सत्यमाने और उनके आचरण कूं कहूं सत्य माने जैसो उनने कह्यो है ताही के अनुसार बुद्धिमान् पुरुष करे राम कृष्ण दोउ अवतारभये हैं रामचंद्रने जैसो कह्यो तैसोहीकरोहै याते उनको कहनो करनो दोनों करै श्रीकृष्णने गीतामें जो कह्यो

है ताय करै और उनने जे लीला करी है तिनको न करे किन्तु ध्यान करे ३२ हे प्रभो अर्थात् राजन् परीक्षित् ! या संसार में अहङ्कार जिनके नहीं ऐसे सामर्थ्यवान् पुरुष जो अच्छोकर्म करें तासूं उनकों पुण्य नहीं होयहै और निकृष्टकर्म करने सूं पाप नहीं होयहै पुण्य पाप तो देह में अहंकार के वश सूं लगे है अहंकाररहित पुरुष कूं कछु दोष नहीं है ३३ समस्त प्राणी पशु पक्षी मनुष्य देवता जीव इनके ईश्वर जो श्रीकृष्ण हैं तिनकूं पुण्य पाप नहीं लगे है यामें कहा कहनो है ३४ जिनके चरणारविन्द को पराग अर्थात् मकरन्दके सेवन करे ते तृप्तभये जे भक्तहैं ते और योगके प्रभाव सों दूरभये हैं सम्पूर्ण कर्मबन्धन जिनके ऐसे जे मुनीश्वर ज्ञानी ते बन्धनसूं रहित होयके अपनी इच्छापूर्व्वक विचरैहै और इच्छाकारिके धारण कियोहै रूप जिनने ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं बन्धन कहा ते होय ३५ गोपी और तिनके पतिन के सम्पूर्ण देहधारीन के साक्षीरूप होयके जो देहके भीतर रहे है तिन श्रीकृष्णने क्रीडा करिवे के लिये देह धारण करोहै ३६

नविद्यते ॥ विपर्ययेणवानर्थो निरहङ्कारिणांप्रभो ३२ किमुताखिलसत्त्वानांतिर्यङ्मर्त्यदिवौकसाम् ॥ ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलान्वयः ३४ यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता योगप्रभावविधुताखिलकर्मबन्धाः ॥ स्वैरञ्चरन्तिमुनयोऽपिननह्यमानास्तस्येच्छयात्तवपुषःकुतएवबन्धः ३५ गोपीनां तत्पतीनाञ्चसर्वेषामेवदेहिनाम् ॥ योऽन्तश्चरतिसोऽध्यक्षःक्रीडनेनेहदेहभाक् ३६ अनुग्रहायभूतानांमानुषंदेहमास्थितः ॥ भजतेतादृशीःक्रीडायाःश्रुत्वात त्परोभवेत् ३७ नासूयन्खलुकृष्णाय मोहितास्तस्यमायया ॥ मन्यमानाःस्वपार्श्वस्थान् स्वान्स्वान्दारान्व्रजौकसः ३८ ब्रह्मरात्रउपावृत्तेवासुदेवानुमो दिताः ॥ अनिच्छन्त्योययुर्गोप्यःस्वगृहान्भगवत्प्रियाः ३९ विक्रीडितंव्रजवधूभिरिदञ्चविष्णोःश्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथवर्णयेद्यः ॥ भक्तिंपरांभगवतिप्र तिलभ्यकामं हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेणधीरः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धे रासक्रीडावर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकदादेवयात्रायां गोपालाजातकौतुकाः ॥ अनोभिरनडुद्युक्तैः प्रययुस्तेऽम्बिकावनम् १ तत्रस्नात्वासरस्वत्यां देवंपशुपतिंविभुम् ॥

प्राणीनके ऊपर अनुग्रह करिवे के लिये मनुष्य देहधारणकरिके मनुष्य लीला करी हैं जिन लीलानके श्रवण करे ते मनुष्य कृष्णपरायण होयजाय ३७ ता श्रीकृष्णकी मायामें मोहित जे व्रजवासी ते श्रीकृष्णको दोष नहीं लगावत भये अपनी अपनी स्त्रीनको अपने अपने पास मानतभये ३८ ब्रह्ममुहूर्त्त अर्थात् चारघड़ी रात्रि रहे श्रीकृष्णके कहेते घर आइवेकी इच्छा जिनके नहीं ऐसी प्यारी गोपी अपने अपने घरकूं आवतभई ३९ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् ने परमकौतुक जो व्रजवधू गोपीन के संग रासलीला है ताय जो पुरुष श्रद्धापूर्व्वक श्रवणकरे और कथन करे वह पुरुष भगवान्में परमभक्ति पायके थोड़े दिनमें धीर होयके जल्दी देसी हृदयके कामरूप रोग कों त्यागे है ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेरासक्रीडावर्णनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

(चतुस्त्रिंशेऽहिनाग्रस्तं नन्दंहरिरमूमुचत् ॥ विद्याध्रंचाङ्गिरःशापाच्छङ्खचूडंतथाऽवधीत् १ रासापदेशतःकाम किङ्करीकृत्यकामतः ॥ अनुगृह्णन्वशंनिन्ये तथाविद्याधराधिपम् २ चौतीसवें अध्याय में अङ्गिराजी के शाप सों सुदर्शन विद्याधर सर्परूप होकर नन्दजी को ग्रसताभया तिससे कृष्णजी नन्दजी को छुड़ातेभये और शङ्खचूड़ को मारते भये १ रास के अपदेश सूं कामते का-

मदेव को दूतकर ग्रहणकर वश में प्राप्त करतेभये और विद्याधरों के स्वामी सुदर्शन को भी वश करतेभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! एकसमय भयो है कौतुक जिनके ऐसे व्रजवासी देवीकी यात्रा करिने के लिये बैल जिनमें जुते ऐसे गाडान में बैठि के देवी के वन में जातभये १ ता वनमें सरस्वती नदी में स्नान करिके पशुपति जो महादेव हैं तिनकी हे राजन् परीक्षित्! भक्तिपूर्वक पूजा करिके अम्बिकादेवीकीभी पूजा करत भये २ सम्पूर्ण व्रजवासी महादेव हमारे ऊपर प्रसन्न होयँ या कारण गऊ, सोना, वस्त्र और मधुयुक्त मधुर अन्न ब्राह्मणन कूं दान करत भये ३ वडो है भाग्य जिनको ऐसे नन्द सू आदिलैके समस्तव्रजवासी वा दिनरात्रि कूं जल को आचमन करिके तीर्थ व्रत करते सरस्वती के किनारे बसतभये ४ वा वन में कोई एक अत्यन्त भूखो सर्प्प अकस्मात् आयके सोतेहुये नन्दरायजी को ग्रसत भयो ५ सर्प्प ने जब ग्रस्यो तब नन्दरायजी पुकारत भये हे कृष्ण! हे कृष्ण! यह वडो सर्प्प है मोकों निगले जायहै हे पुत्र! मैं तेरी

आनर्चुरर्हणैर्भक्त्या देवीञ्चनृपतेऽम्बिकाम् २ गावोहिरण्यंवासांसि मधुमध्वन्नमादृताः ॥ ब्राह्मणेभ्योददुःसर्वे देवोनःप्रीयतामिति ३ ऊषुःसरस्वतीतीरे जलंप्राश्यधृतव्रताः ॥ रजनींतांमहाभागानन्दसुनन्दकादयः ४ कश्चिन्महानहिस्तस्मिन् विपिनेऽतिबुभुक्षितः ॥ यदृच्छयागतोनन्दं शयानमुरगोऽग्रसीत् ५ सचुक्रोशाहिनाग्रस्तः कृष्णकृष्णमहानयम् ॥ सर्पोमांग्रसतेतात प्रपन्नंपरिमोचय ६ तस्यचाक्रन्दितंश्रुत्वा गोपालाःसहसोत्थिताः ॥ ग्रस्तञ्चदृष्ट्वाविभ्रान्ताः सर्पंविव्यधुरुल्मुकैः ७ अलातैर्दह्यमानोऽपि नामुञ्चत्तमुरङ्गमः ॥ तमस्पृशत्पदाभ्येत्य भगवान्सात्वतांपतिः ८ सवैभगवतःश्रीमत्पादस्पर्शहताशुभः ॥ भेजेसर्प्पवपुर्हित्वा रूपंविद्याधरार्चितम् ९ तमपृच्छद्धृषीकेशःप्रणतंसमुपस्थितम् ॥ दीप्यमानेनवपुषा पुरुषंहेममालिनम् १० कोभवान्परयालक्ष्म्या रोचतेऽद्भुतदर्शनः ॥ कथंजुगुप्सितामेतां गतिंवाप्रापितोवशः ११ ॥ सर्पउवाच ॥ अहंविद्याधरःकश्चित्सुदर्शनइतिश्रुतः ॥ श्रियास्वरूपसम्पत्त्या विमानेनाचरन्दिशः १२ ऋषीन्विरूपानाङ्गिरसः प्राहसंरूपदर्पितः ॥ तैरिमांप्रापितोयोनिं प्रलब्धैःस्वेनपाप्मना १३ शापोमेऽनुग्रहायैव

शरण आयो हू तू मोको छोड़ाउ ६ या प्रकार नन्दजी की पुकार सुनिके हरबराहट जिनके भयो ऐसे व्रजवासी शीघ्रही उठिके नन्दजी कूं सर्प्प निगलेहै ऐसे देखिके सुलगती लकरियान सूं सर्प्पको मारत भये ७ सुलगती लकरियान सूं मारोगयो तथापि नन्दरायजी को न छोड़त भयो तब भक्तनकी रक्षा करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वा सर्प्प के चरणनकी ठोकर मारत भये भगवान् श्रीकृष्ण को सुन्दर जो चरणहै ताके लगे से पाप जाके दूरभये वह सर्प्प देहकों त्यागिके विद्याधर जाको पूजन करें ऐसे स्वरूप कों धारण करतभयो ८ । ९ प्रकाशमान रूपकों धरिके सुवर्णकी माला पहिरे हाथजोरि ठाढ़ो जो पुरुष है ताय श्रीकृष्ण पूंछतभये १० परमशोभायमान अद्भुत है दर्शन जिनको ऐसे तुम कौनहो विवश होयके यह निन्दित सर्प्पकी योनि तुमको कैसे मिली है? ११यह सुनिके वह सर्प्प बोल्यो हे महाराज! सुदर्शन नाम करिके विख्यात मैं कोई विद्याधरहों सम्पत्ति और शरीरकी जो सुन्दरता है तासू गर्व्वित होयके विमान में बैठिके दिशान में विचरत भयो १२ स्वरूपको है मद जाके ऐसो मैं अंगिरावंशमें भये ऐसे विरूप जो अष्टावक्रादिक ऋषि हैं तिनकी हांसी करत भयो तब उनने शाप दीनों तासूं मेरी सर्प्पयोनि होयगई १३ करुणावान् ऋषीश्व-

रनने मेरे ऊपर कृपा करिवे के लिये मो कों शाप दियो जा कारण ते त्रिलोकी के गुरु तुमहौ तिनके चरणारविन्द को स्पर्श करेते पाप दूर भये और जो वे शाप न देते तो तुम्हारे चरण मेरे कहा ते लगते १४ संसार ते डरपि के शरण आये पुरुष के भयके दूरि करनवारे तुमहौ तिनसों पूंछों हों हे सब पापन के दूरि करनवारे तुम्हारे चरणस्पर्शसूं मेरे सब पाप दूरि होयगये १५ हे महायोगिन्! हे महापुरुष! हे महासाधुन के पति! हे प्रकाशयुक्त! हे समस्त लोकन के ईश्वरनके ईश्वर! तुम्हारी शरण आयो जो मैं हों सो मो कों आज्ञा देउ १६ हे अच्युत अर्थात् अखण्डरूप! तुम्हारो दर्शन करे ते शीघ्रही ब्राह्मण के शाप ते छूटिगयो जिनको नामोच्चारण सब श्रोतानकूं अपनेनकूं पवित्र करे है तुम्हारे चरणस्पर्श ते मैं पवित्र भयो यामें कहा कहनो है या प्रकार दाशार्हवंश में भये जे श्रीकृष्ण तिनकी आज्ञालेके परिक्रमा देके प्रणाम करिके वह सुदर्शन स्वर्गकूं जात भयो और नन्दरायजी कष्ट ते छूटत भये १७। १८ श्रीकृष्णचन्द्र को वैभव देखिके आ-

कृतस्तैःकरुणात्मभिः ॥ यदहंलोकगुरुणापदास्पृष्टोहताशुभः १४ तंत्वाऽहंभवभीतानां प्रपन्नानांभयापहम् ॥ आपृच्छेशापनिर्मुक्तः पादस्पर्शादमीवहन् १५ प्रपन्नोऽस्मिमहायोगिन् महापुरुषसत्पते ॥ अनुजानीहिमांदेव सर्वलोकेश्वरेश्वर १६ ब्रह्मदण्डाद्विमुक्तोऽहं सद्यस्तेऽच्युतदर्शनात् ॥ यन्नामगृह्णन्नखिलाञ्छ्रोतॄनात्मानमेवच ॥ सद्यःपुनातिकिंभूयस्तस्यस्पृष्टःपदाहिते १७ इत्यनुज्ञाप्यदाशार्हंपरिक्रम्याभिवन्द्यच ॥ सुदर्शनोदिवंयातःकृच्छ्रान्नन्दश्चमोचितः १८ निशाम्यकृष्णस्यतदात्मवैभवं व्रजौकसोविस्मितचेतसस्ततः ॥ समाप्यतस्मिन्नियमंपुनर्व्रजं नृपाययुस्तत्कथयन्तआदृताः १९ कदाचिदथगोविन्दोरामश्चाद्भुतविक्रमः ॥ विजह्रतुर्वनेरात्र्यां मध्यगौव्रजयोषिताम् २० उपगीयमानौललितं स्त्रीजनैर्बद्धसौहृदैः ॥ स्वलंकृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौविरजोऽम्बरौ २१ निशामुखंमानयन्तावुदितोडुपतारकम् ॥ मल्लिकागन्धमत्तालिजुष्टंकुमुदवायुना २२ जगतुःसर्वभूतानां मनःश्रवणमङ्गलम् ॥ तौकल्पयन्तौयुगपत्स्वरमण्डलमूर्च्छितम् २३ गोप्यस्तद्गीतमाकर्ण्य मूर्च्छितानाविदन्नृप ॥ स्रंसद्दुकूलमात्मानंस्रस्तकेशस्रजन्ततः २४ एवंविक्रीडतोः

श्चर्य कूं प्राप्तभये है चित्त जिनके ऐसे व्रजवासी ता पीछे तीर्थ में नियमकूं पूर्ण करिके बडेआनंद तें श्रीकृष्णचन्द्र के चरित्र को कहत व्रजमें आवत भये १९ काहू समय एक यात्राके पीछे गोविन्द और अद्भुत है पराक्रम जिनको ऐसे बलराम दोनों भय्या वन के विषे रात्रि में व्रजकी स्त्रीनके बीच में विहार करतभये २० बाधो है स्नेह जिनने ऐसी स्त्री ललित तिनसूं दोनों भय्या सुन्दर आभूषण पहिरे केशर चन्दन लगाये वनमालाकूं पहिरे निर्मल वस्त्र पहिरके गावे हैं २१ उदय भये हैं तारागण चन्द्रमा जामें ऐसो सन्ध्यासमय ताको सत्कार करे हैं चमेली की सुगन्ध सों मत्त होयके भौंरा गुञ्जार करे हैं कुमोदनी जो फूली हैं तिनसों लगिके पवन चले हैं २२ सब प्राणीन के मनकूं कानकूं आनन्द को देनवारो जो गीत है ताकूं गावत भये स्वरनके मण्डलकी मूर्च्छना कहा आलापचारी ताकूं एक संग लेइ हैं २३ हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण बलदेवको गायनो सुनिके मूर्च्छा जिनको आयगई ऐसी गोपीनके वस्त्र ढीलेहोयगये चोटीनकी गांठ खुलिगई ऐसे

अपनने कूं न जानतभई २४ या प्रकार कृष्ण बलदेव दोनों भय्या मतवारेकी तुल्य क्रीड़ा करत गान करत रहे इतने में शंखचूड़ जाकों नाम ऐसो कुवेर को टहलुआ आवत भयो २५ हे राजन्परीक्षित्! कृष्ण बलदेव के देखत भय जाके नहीं ऐसो जो शंखचूड़ कृष्ण बलदेव हैं रक्षक जिनके ऐसे पुकारत जे गोपीन के समूह तिनें खदेर के उत्तरदिशा लेजात भयो २६ जैसे सिंहकी पकरी गौ पुकारे हैं तैसे हे कृष्ण बलदेव! या प्रकार पुकारें ऐसी जो अपनी पुकार ताय देखिके कृष्ण बलदेव दोनों भय्या शंखचूड़के पीछे दौरत भये २७ मत डरपो २ ऐसो भय के दूरि करनवारो वचन जिनको शाल के वृक्ष हाथ में लिये शीघ्रता सूं कृष्ण बलदेव दौरिकें गुह्यकन में अधम जो शंखचूड़ है ताके पीछे जात भये २८ कालमृत्यु की तुल्य पीछे दौरे चले आवें जो श्रीकृष्ण बलदेव तिन्हें देखिके स्त्रीनकूं छोड़िके मूढ़ जो शंखचूड़ है सो अपने प्राण बचायवे के लिये भाजतभयो २९ जहां जहां शंखचूड़ दौरके गयो तहां तहां गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र

स्वैरं गायतोःसंप्रमत्तवत् ॥ शङ्खचूडइतिख्यातो धनदानुचरोऽभ्यगात् २५ तयोर्निरीक्षतोराजंस्तन्नाथंप्रमदाजनम् ॥ क्रोशन्तंकालयामासदिश्युदीच्या मशङ्कितः २६ क्रोशन्तंकृष्णरामेति विलोक्यस्वपरिग्रहम् ॥ यथागादस्युनाग्रस्ताभ्रातरावन्वधावताम् २७ माभैष्टेत्यभयारावौ शालहस्तौतरस्विनौ ॥ आसेदतुस्तंतरसात्वरितंगुह्यकाधमम् २८ सवीक्ष्यतावनुप्राप्तौ कालमृत्यूइवोद्विजन् ॥ विसृज्यस्त्रीजनंमूढः प्राद्रवज्जीवितेच्छया २९ तमन्वधावद्गोविन्दो यत्रयत्रसधावति ॥ जिहीर्षुस्तच्छिरोरत्नं तस्थौरक्षन्स्त्रियोबलः ३० अविदूरइवाभ्येत्य शिरस्तस्यदुरात्मनः ॥ जहारमुष्टिनैवाङ्ग सहचूडामणिंविभुः ३१ शङ्खचूडंनिहत्यैवं मणिमादायभास्वरम् ॥ अग्रजायाददत्प्रीत्या पश्यन्तीनाञ्चयोषिताम् ३२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेशङ्खचूडवधोनामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ गोप्यःकृष्णेवनंयातेतमनुद्रुतचेतसः॥ कृष्णलीलाःप्रगायन्त्योनिन्युर्दुःखेनवासरान् १ गोप्यऊचुः ॥ वामबाहुकृतवामकपोलोवल्गि

वाके शिरकी मणि लेवे के लिये पीछे भाजत भये और बलदेवजी स्त्रीनकी रक्षाके लिये ठाड़े होतभये ३० हे राजन् परीक्षित्! थोड़ीसी दूर जायके श्रीकृष्णचन्द्र दुष्टहै मन जाको ऐसो शंखचूड़ है ताके मुष्टिक मारिके शिरसहित माथे की मणिकूं लेतभये ३१ श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार शंखचूड़ दैत्य कों मारिके प्रकाशयुक्त जो मणिहै ताय लैके समस्त स्त्रीनके देखत बड़े भय्या बलदेवजीको प्रसन्नता ते देत भये ३२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेशंखचूडवधोनामचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(पञ्चत्रिंशेवनंयातेकृष्णेगोकुलयोषितः ॥ युग्मश्लोकाभ्यांगीतेननिन्युर्दुःखेनवासरान् १ पैंतीसवें अध्याय में कृष्णजी के वन चले जानेमें गोकुलकी स्त्रिया दो श्लोक के गीतसूं दुःखसूं दिनों को वितातीभई १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्णचन्द्र जब वनमेंगये तब श्रीकृष्णमें लगे हैं मन जिनके ऐसी गोपी विरहमें उनकी लीलानको गाय गायके बड़ेकष्टते दिननकूं व्यतीत

करतभई १ अब गोपी आपुसमें कहे हैं हे गोपियो! वाई भुजापै वांयें कपोलकों धरिके भृकुटीनकों चढ़ायके मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र अधर के ऊपर वांसुरी कों धरिके कोमल अंगुलीनसूं वाके छिद्रन कूं दाविके जा समय आकाश में हैं गमन जिनको ऐसे देवतान की स्त्री अपने पतिन सहित वासुरी को सुनिके प्रथम आश्चर्य्य मानिके लाजसहित कामदेव के वाणनसूं चित्त जिनने सौंप दिये हैं नारेनकी सुधि जिनकों न रही या प्रकार मोहकों प्राप्त होतभई २।३ हे अवलाओ! यह आश्चर्य्य सुनो हारकी तुल्य निर्म्मल जाकी हँसनि वांसुरी के बजावत समय नीचो मुख करिके जो हँसे है ताकी हारन में प्रकाशित हँसनि होय है अथवा हार की तुल्य छाती में शोभायमान जाकी हँसनि है और छाती में विजलीकी तुल्य प्रकाशमान स्थिर लक्ष्मी जाके रहै पीड़ित जननको सुख देन वारो यह नन्दको पुत्र जा समय वासुरी कूं बजावे है तब दूरिते वांसुरी को शब्द श्रवण करिके हरिगये हैं चित्त जिनके ऐसे गौ बैल हरिणन के समूह के समूह दन्तन ते कौर काढ़िके वाह पकरे भये कानन को ऊँचे करिके सोवत से चित्र लिखेकी तुल्य ठाढे होतभये अज्ञानी पशुपक्षीन की यह दशाहै यह आश्चर्य्य है ४।५ अब अचेतन नदीन में आश्चर्य्य है यह कहे हैं हे सखी! मोर॰

तभ्रुरधरार्पितवेणुम्॥ कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं गोप्यईरयतियत्रमुकुन्दः २ व्योमयानवनिताःसहसिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य्यसलज्जाः॥ काममार्गणस मर्पितचित्ताःकश्मलंययुरपस्मृतनीव्यः ३ हन्तचित्रमबलाःशृणुतेदं हारहासउरसिस्थिरविद्युत्॥ नन्दसूनुरयमार्त्तजनानांनर्मदोयर्हिकूजितवेणुः ४ वृन्दशो व्रजवृषामृगगावोवेणुवाद्यहृतचेतसआरात्॥ दन्तदष्टकवलाधृतकर्णानिद्रितालिखितचित्रमिवासन् ५ बर्हिणस्तवकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः॥ कर्हिचित्सबलआलिसगोपैर्गाःसमाह्वयतियत्रमुकुन्दः ६ तर्हिभग्नगतयःसरितोवै तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम्॥ स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपित भुजास्स्तिमितापः ७ अनुचरैःसमनुवर्णितवीर्य्यआदिपूरुषइवाचलभूतिः॥ वनचरोगिरितटेपुचरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयतिगाःसयदाहि ८ वनलतास्तरवआत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्यइवपुष्पफलाढ्याः॥ प्रणतभारविटपामधुधाराःप्रेमहृष्टतनवःससृजुःस्म ९ दर्शनीयतिलकोवनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः॥ अलिकु

पुच्छ खरिया गेरु मनशिल पात इनसूं मल्लकी तुल्य स्वरूपकरिके कभऊं एक बलदेव भय्या सहित गोपनसहित जो मुकुन्द हैं सो जा समय वांसुरी बजायके गौवनको बुलावे हैं ता समय वांसुरी को शब्द श्रवण करिके नदीन के प्रवाह बहते सूं बन्द होयजाय हैं और पवन सूं उड़िके गई जो ताके चरणन की रज है ताकूं हमारी तुल्य आकांक्षा करे हैं और हमारीही तुल्य नहीं है उत्कृष्ट पुण्य जिनके ऐसी नदीन कूं मिले नहीं है प्रेम ते जिनकी लहर कँपे जल जिनके निश्चल होय जाइ हैं ६।७ गोप ग्वालबाल देवता जिनके यशकूं गावें नारायणकी तुल्य सदा स्थिरहै लक्ष्मी जाके वनको विचरनवारो कृष्ण जा समय गोवर्द्धन पर्व्वतकी शिखर पै चरें जे गौ हैं तिनें वासुरी बजायके बुलावे है ता समय फूल फल जिनमें लगे उनके बोझते शाखा जिनकी झुकि रहीं प्रेमकरिके हर्षित हैं चित्त जिनके ऐसे वनके लता वृक्ष अपनपे में विष्णुकों प्रगटकरतसे मकरन्दकी धारा बहावतभये ८।९ सुन्दरनमें अतिसुन्दर अथवा सुन्दर देखिवे लायक है सामरे ललाट में केशर को तिलक जिनके वनमालानमें दिव्यहै सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसी की सुगन्धि सों मतवारे भौंरान के समूह तिनको मिलो भयो गीत बड़ो उच्च शब्द ताय आदर से ग्रहण करिके अधर के ऊपर वाहुरी कू

धरिके वजावैं हैं ता समय सरोवरन में सारस हंस और पक्षीनके चित्त हरेगये आयके श्रीकृष्णचन्द्र के पास बैठतभये कैसे पक्षी हैं चित्तकों रोकें नेत्रनकों मूंदे मौनकों धारणकरे हैं १० । ११ हे गोपियो ! मालान के जे कानन में कुण्डल हैं तिनसूं शोभायमान भयो है आनन्द जाके ऐसो बलदेव भय्या सहित कृष्ण सब विश्वकों आनन्द देकै वासुरी के शब्द सों पूर्ण करे ता समय या महान् कृष्णको अपराध न होय ऐसे मेघ मनमें शङ्का मानिके मन्द मन्द गरजे हैं और अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षावें हैं छत्र करिके छाया करे हैं सो वह मेघ याको सांचो मित्र है यह साभरो है यह साभरो है १२ । १३ हे यशोदा ! अनेक प्रकार के गोपनके खेलनमें निपुण ऐसो तुम्हारो पुत्र अधर के ऊपर वासुरी कों धरिके आपसे आपही सीखे ऐसे षड्ज निषाद ऋ-षभ गान्धार कूं आदिलेके स्वर हैं तिनके आलापवे के भेद उठावत भयो ता समय इन्द्र महादेव ब्रह्मा ये हैं मुख्य जिनमें ऐसे बुद्धिमान् देवता हैं ते मन्द मध्यतार सूं वासुरी कों सुनिके मोहित

लैरलघुगीतमभीष्टमादियन्यर्हिसन्धितवेणुः १० सरसिसारसहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतसएत्य ॥ हरिमुपासततेयतचित्ताहन्तमीलितदृशोधृतमौनाः ११ सहबलःस्रगवतंसविलासःसानुषुक्षितिभृतोव्रजदेव्यः ॥ हर्षयन्यर्हिवेणुरवेणजातहर्षउपरम्भतिविश्वम् १२ महदतिक्रमणशङ्कितचेतामन्दमन्दमनुगर्ज्जतिमेघः ॥ सुहृदमभ्यवर्षत्सुमनोभिश्छायया चविदधत्प्रतपत्रम् १३ विविधगोपरसेषुविदग्धोवेणुवाद्यउरुधानिजशिक्षाः ॥ तवसुतःसतियदाधरबिम्बेदत्तवेणुरनयत्स्वरजातीः १४ सवनशस्तदुपधार्य्यसुरेशाःशक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ॥ कवयआनतकन्धरचित्ताःकश्मलंययुरनिश्चिततत्त्वाः १५ निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ॥ व्रजभुवःशमयन्खुरतोदं वर्ष्मधुर्य्यगतिरीडितवेणुः १६ व्रजतितेनवयंसविलासवीक्षणार्पितमनोभववेगाः ॥ कुजगतिंगमितानविदामःकश्मलेनकबरंवसनंवा १७ मणिधरःक्वचिदागणयन्गामालयादयितगन्धतुलस्याः ॥ प्रणयिनोऽनुचरस्यकदांऽसे प्रक्षिपन्भुजमगायतयत्र १८ क्वणितवेणुरववञ्चितचित्ताः कृष्णमन्वसतकृष्णगृहिण्यः ॥ गुणगणार्णमनुगत्यहरिण्योगोपिकाइवविमुक्तगृहाशाः १९ कुन्ददामकृतकौतु

होतभये नीचेकों नारिलचायके कौन स्वरकूं गावें है ऐसे निश्चय नहीं करिसके हैं १४।१५ ध्वजा वज्र कमल अंकुश इनके चित्रविचित्र चिह्न जिनमें ऐसे अपने चरणकमल करिके व्रजभूमिको गौवनके खुर परे ते जो खेद है ताकूं शान्त करतभये मतवारे हाथीकी तुल्य जाकी चलनि ऐसो कृष्ण वासुरीको वजायके जा समय चले हैं ता समय विलासपूर्वक चितवनि सूं राखोहै कामदेवको वेग जिनमें ऐसी हम वृक्षनकी तुल्य जड़ होयके हमकू चोटीकी सुधि न रही और वस्त्रनकी सुधि न रही १६ ।१७ प्यारी है सुगन्धि जाकी ऐसी तुलसीकी मालाकूं पहिरे मणिनकी सुमिरनी हाथमें लैके गौवन को गिनत प्यारे मित्र के कन्धापै हाथ धरिके जा समय गावें हैं और वजी जो वांसुरी ताकी टेर सुनि के चित्त जिनके हरिगये ऐसी हरिणनकी स्त्री हरिणी ते गुणनको समुद्र जो कृष्णचन्द्र ताके पास आयके गोपीन की तुल्य घरकी आशान कूं त्यागि के सेवन करतभई १८ । १९ हे यशोदे ! गोपीन के आनन्द देवे के लिये कुन्दकी मालानसूं आनन्दपूर्वक शृङ्गार जाने किये स्नेहीन के

आनन्दकूं देनवारो यह तेरो पुत्र नन्दकुमार गोप गौवन कूं संगलेके जा समय यमुना में विहार करे है ता समय चन्दन की सी सुगन्धि जामें आवै शीतल जामें स्पर्श है तासों श्रीकृष्णचन्द्र को सन्मान करत अनुकूल मन्द पवन चले है गन्धर्व्वादिक वन्दीजननकीसी नाई बाजे बजावत गायके फूलनकी वर्षा करिके सेवन करतभये २०।२१ व्रजकों गौवनकों हितको करनवारो इन्द्रने जब वर्षाकरी तब गोवर्द्धन उठायके रत्ताकरी वडे वडे ब्रह्मादिक आयके चरणन में प्रणाम करें ऐसो कृष्ण सन्ध्यासमय सब गौवन कों एकत्र करिके मित्र जाके यशकों गावें ऐसो कृष्ण बांसुरी कूं बजावत श्रमभरी शोभा सों आनन्द देत गौवनकी रज जाकी माला में छायरही चन्द्रमाकी तुल्य प्रकाशमान ऐसो यह देवकी के उदरमें प्रकटभयो जो कृष्ण सो हमारे मनोरथ देवे के लिये आवे है २२। २३ कछु एक मन्द मन्द नेत्र जिनके घूमें अपने स्नेहीन कों मानको देनवारो वनमाला कूं पहिरे पके बेरकीसी नाई पांडु जाको मुख कुण्डलनकी कान्ति सूं कोमल कपोलन कूं शोभाय-

कवेपोगोपगोधनवृतोयमुनायाम् ॥ नन्दसूनुरनघेतववत्सोनर्मदःप्रणयिनांविजहार २० मन्दवायुरनुवात्यनुकूलं मानयन्मलयजस्पर्शेन ॥ वन्दिनस्त मुपदेवगणाये वाद्यगीतबलिभिःपरिवव्रुः २१ वत्सलोव्रजगवांयदगध्रोवन्द्यमानचरणःपथिवृद्धैः ॥ कृत्स्नगोधनमुपोह्यदिनान्ते गीतवेणुरनुगेडितकीर्त्तिः २२ उत्सवंश्रमरुचाऽपिदृशीनामुन्नयन्खुररजश्छुरितस्रक् ॥ दित्सयैतिसुहृदाशिषएष देवकीजठरभूरुडुराजः २३ मदविघूर्णितलोचनईषन्मानदःस्वसुहृदांवनमाली ॥ बदरपाण्डुवदनोमृदुगण्डं मण्डयन्कनककुण्डललक्ष्म्या २४ यदुपतिर्द्विरदराजविहारोयामिनीपतिरिवैषदिनान्ते ॥ मुदितवक्त्रउपयाति दुरन्तं मोचयन्व्रजगवांदिनतापम् २५ श्रीशुकउवाच ॥ एवंव्रजस्त्रियोराजन् कृष्णलीलानुगायतीः ॥ रेमिरेऽहस्सुतच्चित्तास्तन्मनस्कामहोदयाः २६ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवृन्दावनक्रीडायांगोपिकायुगलगीतंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथतर्ह्यागतोगोष्ठमरिष्टोवृषभासुरः ॥ महीमहाककुत्कायः कम्पयन्खुरविक्षताम् १ रम्भमाणःखरतरं पदाचविलिखन्महीम् ॥ उद्य

मान करत मतवारे हाथी के सो जाको विहार प्रसन्न जाको मुख ऐसो यह यादवन को पति श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्यासमय जैसे चन्द्रमा उदय होयहै तैसे व्रजकी गौ हम हैं बड़ो जो दिन को ताप है ताय दूर करत आवे हैं २४। २५ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र में है जीवन जिनकों और बढ़े हैं उत्सव जिनके ऐसे व्रजकी स्त्री श्रीकृष्णकी लीलान कों गाय गाय के दिनन को वितावत भई २६ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेवृन्दावनक्रीडायांगोपिकायुगलगीतंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥ * ॥ * ॥

(षट्त्रिंशेतुहतेऽरिष्टे नारदोक्त्यावलाच्युतौ ॥ वसुदेवसुतौज्ञात्वा कंसोऽक्रूरंसमादिशत् १ गोपीरासान्तरायान्तं शङ्खचूडंनिहत्यस. ॥ अहन्गोपीमहानन्दासहदुष्टमरिष्टकम् २ छत्तीसवें अध्याय में अरिष्टासुर के मारेजाने में कंस नारदजी के कहने सूं बलदेव और कृष्णजी को वसुदेवजी के पुत्र जानकर अक्रूरजीको आज्ञा देताभया १ कृष्णजी गोपियों के रासके भीतर आयेहुये शङ्खचूड को मारकर गोपियों के बड़े आनन्दके न सहनेवाले अरिष्टासुरको भी मार डालतभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार देवता गन्धर्व्वादिक गावें नृत्य करें बाजेनकों बजावें

फूलनकी वर्षा जिनके ऊपर करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कों आये देखिके परमउत्सव भयो याके पीछे ताही समय व्रजमें बैल को रूप धरिके अरिष्टासुर आवतभयो बड़ो है ठाट और देह जाको खुरनसूं खोदी जो पृथ्वी ताकूं कँपावे है १ बहुत रम्हायहै पावन सूं धरती कूं खोदतआवे है पूंछ उठाय के खेतनकी मेडन को सींग के अग्र सूं खोदेहै २ बीच बीच में गोवर करत जाय मूत्र करत जायहै भयानक जाकी आँखिहैं हे राजन् परीक्षित्! अरिष्टासुर के रम्हायवे को कठोर शब्द सुनिके गौवन के स्त्रीन के विना समय गर्भ गिरिपरे डरकेमारे पतन होयगये जाके ठाट के ऊपर पर्व्वत मानि के मेघ आय बैठे हैं तीक्ष्ण पैने जाके सींग ऐसे अरिष्टासुरको देखिके सम्पूर्ण गोप और गोपी भयके मारे डरपतभये हे राजन् परीक्षित्! पशु खिरकन कूं छोडिके डरकेमारे भाजत भये ३।४।५ हे कृष्ण! हे कृष्ण! ऐसे पुकारतभये समस्तव्रजवासी गोविन्दकी शरण आवतभये याके पीछे गोकुलवासीनकों भयके मारे भजते देखिके ६ मति भयकरो याप्रकार सावधान करत अरिष्टासुरको अपने पास बुला-

म्यपुच्छंवप्राणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् २ किञ्चित्किञ्चिच्छकृन्मुञ्चन्मूत्रयन्स्तब्धलोचनः ॥ यस्यनिर्ह्रादितेनाङ्गनिष्ठुरेणगवांनृणाम् ३ पतन्त्यकालतो गर्भाः स्रवन्तिस्मभयेनवै ॥ निर्विशन्तिघनायस्यककुद्यचलशङ्कया ४ तन्तीक्ष्णशृङ्गमुद्वीक्ष्य गोप्योगोपाश्चतत्रसुः ॥ पशवोदुद्रुवुर्भीता राजन्सन्त्य ज्यगोकुलम् ५ कृष्णकृष्णेतितेसर्वेगोविन्दंशरणंययुः ॥ भगवानपितद्वीक्ष्यगोकुलंभयविद्रुतम् ६ माभैष्टेतिगिराश्वास्य वृषासुरमुपाह्वयत् ॥ गोपालैः पशुभिर्मन्दत्रासितैःकिमसत्तम ७ बलदर्पहाऽहंदुष्टानां त्वद्विधानांदुरात्मनाम्॥ इत्यास्फोट्याच्युतोऽरिष्टं तलशब्देनकोपयन् ८ सख्युरंसेभुजाभोगंप्र सार्यावस्थितोहरिः ॥ सोऽप्येवंकोपितोऽरिष्टः खुरेणावनिमुल्लिखन् ॥ उद्यत्पुच्छभ्रमन्मेघः क्रुद्धःकृष्णमुपाद्रवत् ९ अग्रन्यस्तविषाणाग्रः स्तब्धासृग्लो चनोऽच्युतम् ॥ कटाक्षिप्याद्रवत्तूर्णमिन्द्रमुक्तोऽशनिर्यथा १० गृहीत्वाशृङ्गयोस्तञ्चअष्टादशपदानिसः ॥ प्रत्यपोवाहभगवान् गजःप्रतिगजंयथा ११ सो पविद्धोभगवता पुनरुत्थायसत्वरः ॥ अपतत्स्विन्नसर्वाङ्गोनिःश्वसन्क्रोधमूर्च्छितः १२ तमापतन्तंसनिगृह्यशृङ्गयोः पदासमाक्रम्यनिपात्यभूतले ॥ नि

वन भये हे मूर्ख! हे असाधु! ग्वाल गौवन के डरपावन ते तोकों कहा होयगो ७ दुष्ट हैं मन जिनके ऐसे तो सारिखे दुष्टनको बल और मद दूरिकरोहों या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र खम्भ ठोंकिकें अरिष्टासुर कूं क्रोध करायके मित्र के कन्धा पै सर्प के आकार भुजाहै ताकू पसारिके ठाढे होतभये या प्रकार क्रोध जाको करायो ऐसो अरिष्टासुर खुरन ते धरती कूं खोदत पूंछ उठायके बादरन कू इत उत करिके क्रोधकरिके श्रीकृष्णचन्द्र के पास आवतभयो ८।९ आगे कूं सींग जाने करिलिये पलक जिनमें न लगे ऐसी लाल लाल जाकी आँखें ऐसो जो अरिष्टासुरहै सो श्रीकृष्णकी ओर कटाक्ष सूं तिरछो देखिके इन्द्रको छोड़ो वज्र जैसे तैसे जल्दी आवतभयो १० भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अरिष्टासुरके सींग पकरिके जैसे हाथीकों हाथी धक्का देडहै ऐसे अठारहपैर उलटे पावन धकावत भये ११ भगवान् श्रीकृष्णने अरिष्टासुरकों ढकेलि दियो तब फेर उठिके पसीना जाके अंगमें आय गयो क्रोधमें मूर्च्छित होयके बड़े २ श्वास कूं लेत दौरिके आवतभयो १२ श्रीकृष्ण आयो जो अ- रिष्टासुर है ताके सींग पकरिके पृथ्वी पै पछारतभये पाँवते छाती दाबिके जैसे गीले कपड़ा कों निचोरहै तैसे उमेठिके सींग उखारि के मारत भये अरिष्टासुर गिरत भयो चलायमान हैं नेत्र जाके

ऐसो अरिष्टासुर रुधिर कों वमन करत मूत्र गोवर करत पाँवन कूं पटकत कष्टते मरतभयो देवता श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर फूल वर्षाय के स्तुति करतभये १३।१४ या प्रकार अरिष्टासुर कूं मारिके जाति के मित्रन ने स्तुतिकरी तव गोपीन के नेत्रन कूं आनन्द देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र व्रजमें आवतभये १५ अद्भुत जिनके कर्म्म ऐसे श्रीकृष्णने अरिष्टासुर मारो तव देवता केसो जिनके ज्ञान ऐसे भगवान् नारदजी कंसते जाय के कहतभये १६ यशोदा के कन्याभई है और देवकीके कृष्ण भयोहै वलदेव रोहिणी के पुत्रहैं तेरे भयके मारे वसुदेवजी अपने मित्र नन्दजीके घर रातों रात पहुँचाय आये हैं और तैंने भेजे ने सव दैत्य कृष्ण वलदेव ने मारे यह वचन नारदजी को श्रवण करिके कंस कोपसूं विकल इन्द्रिय होतभयो १७। १८ ऐसो कंस वसुदेव के मारिवे के लिये पैनी तरवार लेत भयो तव नारदजी मने करतभये और तिन वसुदेवजी के पुत्र कृष्ण वलदेव ते अपनी मृत्यु जानिके देवकी सहित वसुदेव के पाँवनमें वेड़ी डारतभयो इतनी वात कहिके नारदजी जव गये तव कंस

ष्पीडयामासयथार्द्रमम्बरंकृत्वाविपाणेनजघानसोऽपतत् १३ असृग्वमन्मूत्रशकृत्समुत्सृजन् क्षिपंश्चपादाननवस्थितेक्षणः ॥ जगामकृच्छ्रंनिर्ऋतेरथक्षयं पुष्पैःकिरन्तोहरिमीडिरेसुराः १४ एवंककुद्मिनंहत्वा स्तूयमानःस्वजातिभिः ॥ विवेशगोष्ठंसबलोगोपीनांनयनोत्सवः १५ अरिष्टेनिहतेदैत्येकृष्णेनाद्भुतकर्मणा ॥ कंसायाथाहभगवान्नारदोदेवदर्शनः १६ यशोदायाःसुतांकन्यां देवक्याःकृष्णमेवच ॥ रामञ्चरोहिणीपुत्रं वसुदेवेनबिभ्यता १७ न्यस्तौस्वमित्रेनन्देवै याभ्यान्तेपुरुषाहताः ॥ निशम्यतद्भोजपतिः कोपात्प्रचलितेन्द्रियः १८ निशातमसिमादत्तवसुदेवजिघांसया ॥ निवारितोनारदेनतत्सुतौमृत्युमात्मनः १९ ज्ञात्वालोहमयैःपाशैर्बबन्धसहभार्यया ॥ प्रतियातेतुदेवर्षौकंसआभाष्यकेशिनम् २० प्रेषयामासहन्येतां भवतारामकेशवौ ॥ ततोमुष्टिकचाणूरशलतोशलकादिकान् २१ अमात्यान्हस्तिपांश्चैव समाहूयाहभोजराट् ॥ भोभोनिशम्यतामेतद्वीरचाणूरमुष्टिकौ २२ नन्दव्रजेकिलासाते सुतावानकदुन्दुभेः ॥ रामकृष्णौततोमह्यं मृत्युःकिलनिदर्शितः २३ भवद्भ्यामिहसंप्राप्तौ हन्येतांमल्ललीलया ॥ मञ्चाःक्रियन्तांविविधामल्लरङ्गपरिश्रिताः ॥ पौराजानपदाःसर्व्वे पश्यन्तुस्वैरसंयुगम् २४ महामात्रत्वयाभद्ररङ्गद्वार्युपनीयताम् ॥ द्विपःकुवलयापीडोजहितेनममाहितौ २५ आरभ्यतांधनु

केशीकूं वुलाय के भेजतभयो और राम कृष्णकों तू मारि आउ यह कहत भयो ता पीछे मुष्टिक चाणूर शल तोशल आदि लैके जे मल्लहैं तिनें वुलाय के और मंत्रीन कूं वुलाय के और हाथीन के महावतनकूं वुलायके भोजवंशीनको राजा कंस वोलतभयो हे वीर! हे चाणूर! हे मुष्टिक! यह मेरी वात श्रवण करो १९।२०।२१।२२ नन्दके गोकुल में वसुदेव के पुत्र कृष्ण वलदेव रहे हैं उनते विधाता नारदजीने मेरी निश्चय मृत्यु वताई है २३ ये जव आवें ता समय पावनसूं दाविके मल्ललीला करिके मारि डारियो और मल्लन की जो रंगभूमि है तामें अनेकप्रकार के मंचानन कूं वनावो पुरवासी और देशवासी सम्पूर्ण तिनपै वैठिके मल्लनकी कुश्ती देखेंगे २४ हे महावत! मद्गलरूप कुवलयापीड़ हाथी कूं रंगभूमि के दरवाजे पै ठाढ़ो करदेउ मेरे वैरी कृष्ण वलदेव आवें तव उनें कुवलयापीड़ हाथी पै मरवाय डारियो और चतुर्दशी के दिन विधिपूर्व्वक धनुर्यज्ञकी त्यारी करो और सम्पूर्ण कामनान के पूर्ण करनवारे महादेवजी के पूजन के लिये पवित्र पवित्र

पशु मारिकेलावो २५ । २६ अपने अर्थके तत्त्वको जाननवारो कंस अपने टहलुआनकूं या प्रकार आज्ञादेके और यादवनमें श्रेष्ठ जो अक्रूर हैं तिनें बुलायके हाथ सूं हाथ पकरिके यह कहतभयो २७ हे दानपति अक्रूर ! तुम एक मेरो मित्रताको कार्य्यकरो या समय भोजवंशी यादवनमें और कोई तुम ते सिवाय आदरसहित अतिशय करिके हितको करनवारो नहीं है २८ बडे कार्य्य के करनवारे साधु अक्रूर तुमहो तिनको मैंने आश्रय लीनो है जैसे इन्द्र विष्णुको आश्रय लैके अपने मनोरथकू पायगयो २९ अब तुम नन्द के व्रजकों जावो ता नन्दके व्रजमें वसुदेव के पुत्र रहे हैं तिनें या रथ में बैठारिके शीघ्रही लैआवो ३० विष्णुको आश्रय लैके देवतानने मेरे मारिवे के लिये कृष्ण बलदेव प्रकट करे हैं नन्दते आदिलैके सम्पूर्ण व्रजवासीनसहित कृष्ण बलदेवकों यहां लेआवो और कहियो कि राजा कंसको चलिके भेंट देआवो ३१ यहां लिवायके लावोगे तब कालकी तुल्य कुवलयापीड़ हाथी पै घात कराऊँगो हाथीतें कदाचित् छूटि जायँगे तो बिजली

र्यागश्चतुर्दश्यांयथाविधि ॥ विशसन्तुपशून्मेध्यान् भूतराजायमीढुषे २६ इत्याज्ञाप्यार्थतन्त्रज्ञ आहूययदुपुङ्गवम् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिंततोऽक्रूरमुवाचह २७ भोभोदानपतेमह्यं क्रियतांमैत्रमादृतः ॥ नान्यस्त्वत्तोहिततमोविद्यतेभोजवृष्णिषु २८ अतस्त्वामाश्रितःसौम्य कार्य्यगौरवसाधनम् ॥ यथेन्द्रोविष्णुमाश्रित्य स्वार्थमध्यगमद्विभुः २९ गच्छनन्दव्रजंतत्र सुतावानकदुन्दुभेः ॥ आसातेताविहानेन रथेनानयमाचिरम् ३० निसृष्टःकिलमेमृत्युर्देवैर्वैकुण्ठसंश्रयैः ॥ तावानयसमंगोपैर्नन्दाद्यैःसाभ्युपायनैः ३१ घातयिष्यइहानीतौकालकल्पेनहस्तिना ॥ यदिमुक्तौततोमल्लैर्घातयेवैद्युतोपमैः ३२ तयोर्निहतयोस्तप्तान् वसुदेवपुरोगमान् ॥ तद्वन्धून्निहनिष्यामि वृष्णिभोजदशार्हकान् ३३ उग्रसेनञ्चपितरं स्थविरंराज्यकामुकम् ॥ तद्भ्रातरंदेवकञ्चयेचान्येविद्विषोमम ३४ ततश्चैषामहीमित्र भवित्रीनष्टकण्टका ॥ जरासन्धोममगुरुर्द्विविदोदयितःसखा ३५ शम्बरोनरकोबाणोमय्येवकृतसौहृदाः ॥ तैरहंसुरपक्षीयान् हत्वाभोक्ष्येमहींनृपान् ३६ एतज्ज्ञात्वानयक्षिप्रं रामकृष्णाविहार्भकौ ॥ धनुर्मखनिरीक्षार्थंद्रष्टुंयदुपुरश्रियम् ३७ अक्रूरउवाच ॥ राजन्मनीषितंसम्यक्तव

तुल्य जे मल्ल तिनपै घात कराऊँगो ३२ कृष्ण बलदेव जासमय हत होय जायँगे तब उनके दुःखके मारे व्याकुल ऐसे वसुदेव तें लेके तिनके भय्या बन्धून कूं मरवाऊंगो और वृष्णि भोज दशार्ह वंश में भये जे यादव तिन सबको मरवाऊँगो ३३ और उग्रसेन मेरो वृद्धपिता है तो भी जाके राज्य की चाहनाहै याहू कूं मरवाऊँगो और ताके भय्या देवककों और मेरे वैरी जितने हैं तिनकों सबकों मरवाऊँगो ३४ ताके पीछे हे मित्र अक्रूर ! यह पृथ्वी कण्टकरहित होयगी जरासन्धहै सो मेरो श्वशुर है द्विविद मेरो प्यारो मित्र है ३५ शम्बरासुर नरकासुर बाणासुर इनने मोमें स्नेह कियोहै इनकों संग लेके देवतानकी ओर के राजाहैं तिनकूं मारिके पृथ्वी को भोग करूंगो यह बात अपने मनमें जानिके राम कृष्ण बालकन कों यहां शीघ्र लिवाय आवो वहां जायके यह कहियो मामा धनुर्यज्ञ करे हैं ताकूं चलिके देखिआवो यादवनको पुर मथुराहै ताकी शोभा देखि आवो ३६।३७ यह वचन राजा कंसको श्रवण करिके अक्रूरजी बोले हे राजन् कंस ! तुमने भलो

विचारो है तुम्हारी मृत्युको दूर करनवारो यह उपाय है परन्तु होने और न होने में मनुष्य समता करे दैव जो प्रारब्ध है सोही फल को दाताहै ३८ यह पुरुष दैव करिके हत जो मनोरथ हैं तिनकूं ऐसे कहिके करे है जो मनोरथ पूर्ण होयजाय तब तो मन में हर्ष माने है न होय तब शोक करे है यामें कहा ध्वनि निकसी कि तुम कहोहौ कृष्ण बलदेव कों मरवाऊँगो न जाने वेई तुमकों मारें तथापि तुम्हारी आज्ञा करूंगो ३९ या प्रकार राजा कंस अक्रूर कों आज्ञादेके मंत्रिनको छोड़िके महलमें जातभयो तैसे अक्रूर अपने घर जातभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरसम्प्रेषणंनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(सप्तत्रिंशेहतेकेशिन्यच्युतोभाविकर्मभिः ॥ नारदेनस्तुतःक्रीडन् व्योमासुरमथावधीत् १ वृषवेषासुरंयद्वत्केशिनंहयवेषिणम् ॥ कंसप्राणसखंहत्वा कंसंव्यसुमिवाकरोत् २ सैंतीसवें अध्याय में

वस्त्वावद्यमार्जनम् ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योःसमंकुर्याद्दैवंहिफलसाधनम् ३८ मनोरथान्करोत्युच्चैर्जनोदैवहतानपि ॥ युज्यतेहर्षशोकाभ्यां तथाऽप्याज्ञांकरोमिते ३९ श्रीशुकउवाच ॥ एवमादिश्यचाक्रूरं मन्त्रिणश्चविसृज्यसः ॥ प्रविवेशगृहंकंसस्तथाऽक्रूरःस्वमालयम् ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धेऽक्रूरसम्प्रेषणंनामषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ केशीतुकंसप्रहितःखुरैर्महीं महाहयोनिर्जरयन्मनोजवः ॥ सटावधूताभ्रविमानसंकुलं कुर्वन्नभोहेषितभीषिताखिलः १ तंत्रासयन्तंभगवान्स्वगोकुलं तद्धेषितैर्वालविघूर्णिताम्बुदम् ॥ आत्मानमाजौमृगयन्तमग्रणीरुपाह्वयत्सव्यनदन्मृगेन्द्रवत् २ सतंनिशाम्याभिमुखोमुखेनखं पिबन्निवाभ्यद्रवदत्यमर्षणः ॥ जघानपद्भ्यामरविन्दलोचनंदुरासदश्चण्डजवोदुरत्ययः ३ तद्वञ्चयित्वातमधोक्षजोरुषाप्रगृह्यदोर्भ्यांपरिविध्यपादयोः ॥ सावज्ञमुत्सृज्यधनुःशतान्तरे यथोरगंतार्क्ष्यसुतोव्यवस्थितः ४ सलब्धसंज्ञःपुनरुत्थितोरुषाव्यादायकेशीतरसाऽपतद्धरिम् ॥ सोऽप्यस्यवक्त्रेभुजमुत्तरंस्मयन् प्रवेशयामा

कृष्णजी केशीराक्षस के मारेजाने में नारदजी से स्तुति को प्राप्त होकर व्योमासुर को मारते भये १ बैलके वेषवाले अरिष्टासुर और घोड़ेके वेषवाले केशीराक्षस कंस के प्राणके तुल्य मित्रको कृष्णजी मारकर कंसको प्राणरहितकी नाई करदेतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहैहै हे राजन् परीक्षित् ! मनहू ते है अधिक वेग जाको ऐसो कंसको पठायो केशी दैत्य बडे घोड़ाको रूपधरिके टापन तें पृथ्वी कूं खोदत फुरहरी लैके कन्धाके ऊपर बारन सूं आकाश में इत उत विमानन कों चलायमान करत आवतभयो हींसने मेंही समस्त विश्व जाने डरपायो है कठोर हींसनसूं गौवन के समूहन कों भय जाने करयो पुच्छ हलाय बादर जाने चलायमान किये युद्ध करिबे कूं श्रीकृष्णचन्द्र कूं ढूंढे ऐसे केशी दैत्यकों भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र आगे निकसिके अपने पास बुलावतभये तब श्रीकृष्ण कूं देखिके सिंहकी तुल्य शब्द करनभयो १ । २ केशी श्रीकृष्णकों देखिके मुख सूं मानों आकाशकूं पीजायगो ऐसे मुखकों फारिके सम्मुख दौरिके धावत भयो कोई जाकों जीति न सके बड़ो जाके वेग महादुःख करिके जीत्यो जाय ऐसो केशीदैत्य कमलदललोचन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके पिछिले पावनकी दुलत्ती मारतभयो ३ इन्द्रियनकी जिनमें पहुँच नहीं ऐसे भगवान् श्री

कृष्णचन्द्र ता दैत्यकी दुलत्ती बचायके क्रोधकरि हाथनसों वाके दोनों पाँव पकरिके घम घम फिरायके जैसे गरुड़ सर्पकूं फेंकि देयहै ऐसे अवज्ञा करिके सौ धनुपऊपर फेंकिके ठाढ़े होतभये ४ जब चेत जाको भयो ऐसो केशी दैत्य फेरि उठिके मुख फारिके क्रोधयुक्त दौरिके श्रीकृष्णके पास आवत भयो तब कृष्णजी उसके मुँहमें हँसकर बायें भुजाकों इसप्रकार प्रवेश करदेतेभये जैसे बिल में साप प्रवेश करजाता है ५ जैसे तप्त लोहलगे तें जरे है ऐसे भगवान्की भुजालगे ते केशीके दात उखरिके गिरतभये औषध न करनेसे जैसे जलन्धररोग उदर में बढ़े है ऐसे केशीके उदरमें श्रीकृष्णचन्द्रकी भुजा फूलतभई ६ केशी के उदर में फूली जो श्रीकृष्णकी भुजाहै तासों श्वास जाको रुकिगयो अङ्ग में पसीना जाके आयगयो नेत्रन के तारे निकसिआये ऐसो केशी पाँवन को पटकत लीदकरत प्राणरहित होयके पृथ्वीमें गिरतभयो ७ पकी ककरीकी तुल्य विदीर्ण और प्राण जाके निकसिगये ऐसो जो केशी को देह ताते बड़ी है भुजा जाकी ऐसे श्रीकृष्ण अपनी भुजा कूं निकासिके गर्व्व जिनके नहीं बिना परिश्रमही शत्रु जिनने मारयो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर पुष्पनकी वर्षा करिके आश्चर्य्य मानिके देवता स्तुति करत भये ८ श्रीशुकदेवजी कहे

सयथोरगंबिले ५ दन्तानिपेतुर्भगवद्भुजस्पृशस्तेकेशिनस्तप्तमयःस्पृशोयथा ॥ बाहुश्चतद्देहगतोमहात्मनोयथाऽऽमयःसंववृधेउपेक्षितः ६ समेधमानेनसकृ
ष्णबाहुना निरुद्धवायुश्चरणांश्चविक्षिपन् ॥ प्रस्विन्नगात्रःपरिवृत्तलोचनःपपातलेण्डंव्यसृजन्क्षितौव्यसुः ७ तद्देहतःकर्कटिकाफलोपमाद्व्यसोरपाकृष्यभु
जंमहाभुजः ॥ अविस्मितोऽयत्नहतारिरुत्स्मयैःप्रसूनवर्षैर्दिविपद्भिरीडितः ८ देवर्षिरुपसंगम्य भागवतप्रवरोनृप ॥ कृष्णमक्लिष्टकर्माणं रहस्येतदभाषत ९
कृष्णकृष्णाप्रमेयात्मन् योगेशजगदीश्वर ॥ वासुदेवाखिलावास सात्वतांप्रवरप्रभो १० त्वमात्मासर्वभूतानामेकोज्योतिरिवैधसाम् ॥ गूढोगुहाशयःसा
क्षी महापुरुषईश्वरः ११ आत्मनात्माश्रयःपूर्वं माययाससृजेगुणान् ॥ तैरिदंसत्यसङ्कल्पः सृजस्यत्स्यवसीश्वरः १२ सत्वंभूधरभूतानां दैत्यप्रमथरक्षसा
म् ॥ अवतीर्णोविनाशाय सेतूनांरक्षणायच १३ दिष्ट्यातेनिहतोदैत्योलीलयाऽयंहयाकृतिः ॥ यस्यह्रेषितसंत्रस्तास्त्यजन्त्यनिमिषादिवम् १४ चाणूरं

हैं हे राजन् परीक्षित् ! भक्तनमें श्रेष्ठ श्रीनारदजी क्लेशरहित हैं कर्म्म जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके एकान्त में यह कहत भये ९ हे कृष्ण ! हे कृष्ण! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिबे में आवै है स्वरूप जिनको ऐसे योगके ईश ! हे जगत्के ईश्वर ! हे वासुदेव! हे अखिलावास अर्थात सबके आश्रय ! हे सात्वतप्रवर अर्थात् सब यादवन में श्रेष्ठ! हे प्रभो! १० जैसे काष्ठनमें ज्योति तैसे सब प्राणीन में व्यापक गूढ़ अर्थात् सब में रहो हौ परन्तु उनको दिखाई नहीं देउहो क्यों बुद्धिके परेहो साक्षीहौ स्वरूप देखिबे में नहीं आवै है महापुरुष ईश्वरहौ ११ मैं ईश्वर हू और सब मेरे वशहैं यह काहे ते तहां नारदजी कहे हैं अपने अधीन जो तुमहौ सो प्रथम माया करिके सत्त्व रज तम इन गुणन कूं उत्पन्न करिके सम्पूर्ण विश्व कों उत्पन्न करो हौ पालन और संहार करो हौ और फेर वैसे हौ सत्यसङ्कल्प अर्थात् काहू साधन की अपेक्षा नहीं है या कारण तुमहीं ईश्वरहौ १२ सो तुम राजारूप जो दैत्य राक्षस हैं तिनके नाश करिबे के लिये और धर्म मर्यादानकी रक्षा करिबे के लिये अवतार लियो है १३ घोड़ा के रूपकों धरिके यह दैत्य आयो सो लीला करिके तुमने मारयो यह बड़ो मङ्गल भयो जाके हींसन को शब्द सुनिके भयके मारे

देवता स्वर्ग कूं त्यागिदेइ हैं १४ हे विभो अर्थात् समर्थ ! परसों के दिन तुम्हारे हाथन ते चाणूर मुष्टिक और मल्लन कूं तथा कुवलयापीड़ हाथी कों कंसकों मारो ऐसो देखोंगो १५ ता कंसके मरे पीछे शंखासुर कालयवन मुरदैत्य नरकासुर इनको वध देखोंगो स्वर्ग में ते इन्द्रकूं जीतिके कल्पवृक्ष कों लावोगे ताय देखोंगो १६ अपनो पराक्रम मोलदेके राजानकी कन्यानकों व्याहोगे सो देखोंगो हे जगत् के पति ! द्वारका में जायके नृगराजा कों पापसूं छुडावोगे सो देखोंगो १७ जाम्बवती स्त्री व्याहिके स्यमन्तकमणिकूं दायजेमें लावोगे सो देखोंगो सादीपनि गुरुके अपने धामते मरे पुत्र सजीव लायके देउगे सो देखोंगो १८ मिथ्यावासुदेव को मारिके काशीपुरी को जरावोगे दन्तवक्र कों मारोगे राजा युधिष्ठिर के यज्ञ में शिशुपाल को मारोगे ताय मैं देखोंगो १९ द्वारकावास करिके जे जे लीला करोगे तिन लीलानकों कवीश्वर पृथ्वी में गावेंगे सो सब हम देखेंगे २० याके पीछे कालरूप तुम या पृथ्वी को बोझ उतारिवे के लिये अर्जुन के रथवान् होयके सैन्यानकूं मारोगे

मुष्टिकंचैव मल्लानन्यांश्चहस्तिनम् ॥ कंसंचनिहतंद्रक्ष्ये परश्वोऽहनितेविभो १५ तस्यानुशङ्खयवनमुराणांनरकस्यच ॥ पारिजातापहरणमिन्द्रस्यचपराजयम् १६ उद्वाहंवीरकन्यानां वीर्यशुल्कादिलक्षणम् ॥ नृगस्यमोक्षणंपापाद्द्वारकायांजगत्पते १७ स्यमन्तकस्यचमणेरादानंसहभार्यया ॥ मृतपुत्रप्रदानंच ब्राह्मणस्यस्वधामतः १८ पौण्ड्रकस्यवधंपश्चात्काशिपुर्याश्चदीपनम् ॥ दन्तवक्रस्यनिधनंचैद्यस्यचमहाक्रतौ १९ यानिचान्यानिवीर्याणि द्वारकामावसन्भवान् ॥ कर्त्ताद्रक्ष्याम्यहंतानि गेयानि कविभिर्भुवि २० अथतेकालरूपस्य क्षपयिष्णोरमुष्यवै ॥ अक्षौहिणीनांनिधनं द्रक्ष्याम्यर्जुनसारथेः २१ विशुद्धविज्ञानघनंस्वसंस्थया समाप्तसर्वार्थममोघवाञ्छितम् ॥ स्वतेजसानित्यनिवृत्तमायागुणप्रवाहंभगवन्तमीमहि २२ त्वामीश्वरंस्वाश्रयमात्ममायया विनिर्मिताशेषविशेषकल्पनम् ॥ क्रीडार्थमद्यात्तमनुष्यविग्रहं नतोऽस्मिधुर्यंयदुवृष्णिसात्वताम् २३ श्रीशुकउवाच ॥ एवंयदुपतिंकृष्णंभागवतप्रवरोमुनिः ॥ प्रणिपत्याभ्यनुज्ञातोययौतद्दर्शनोत्सवः २४ भगवानपिगोविन्दो हत्वाकेशिनमाहवे ॥ पशूनपालयत्पालैः प्रीतैर्व्रजसुखावहः २५ एकदातेप

ताय देखेंगे २१ केवल ज्ञानही है एक मूर्त्ति जिनकी याही ते स्वरूपानन्द सम्यक्प्रकार सूं प्राप्त भये हैं मनोरथ जिनके फलसहित है इच्छा जिनकी अपने तेज से नित्य माया सूं निवृत्त और छः प्रकार के ऐश्वर्ययुक्त जो तुम हो तिन की शरण प्राप्त भयो हों २२ तुम ईश्वर हो अर्थात् औरन के वश कब्नवारेहौ अपने आश्रय और के वश नहींहौ अपने अधीन जो माया तासूं महत्तत्त्व अहंकारते आदि लैके समस्त तत्त्व क्रीड़ा करिबे के लिये जिनने रचेहैं और ग्रहण कियो है मनुष्यरूप जिनने यदु वृष्णि सात्वतन में श्रेष्ठ जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है २३ अब श्रीशुकदेव जी कहे है हे राजन् परीक्षित् ! भक्तन में श्रेष्ठ मननशील श्रीकृष्णचन्द्रके दर्शनमें बड़ोहै उत्सव जिनके ऐसे नारदजी या प्रकार यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं प्रणामकरि आज्ञालेके जातभये २४ व्रजवासीनके सुखके करनवारे भगवान् गोविन्द श्री कृष्ण युद्धमें केशीकों मारिके पशूनके पालन करनवारे जे ग्वालहैं तिनसहित पशून कूं पालन करतभये २५ एकसमय गौनन के पालनकर्त्ता

ग्वालबाल हैं ते गोवर्द्धन पर्व्वत के शिखर पै गौवन कों चरावत चोर पालन कों मिष करिके छिपा छिपी को खेल करतभये २६ हे राजन् परीक्षित् ! ता खेल में कितेकहू बालक चोर बने और कितेकहू रखवारे बने कितेकहू भेड बने ऐसे निर्भय होयके खेलत भये २७ इतनेमें बडो मायावी मयदैत्य को पुत्र व्योमासुर गोपाल को रूप धरिके चोर बनिके जे बालक भेड़ बने हैं तिनमें ते चुरायके लेजातभयो २८ व्योमासुर जे बालक भेड बने हैं तिनमें ते चुराय के पर्व्वत की गुफामें धरिके शिलासे गुफाको द्वार मूंदतभयो तिनमें से कोई चार पांच बाकी रहिगये २९ साधुनकों शरण के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र मनमें विचार करो कि हम तो खेलकरो हैं यह साचोहीं चोर आय पहुँच्यो ऐसे ता व्योमासुरकी चोरी जानिके गोपनकों संग लैके जाय जो व्योमासुरहै ताकूं जैसे सिंह बल करिके भेड़ियाकूं पकरे है ऐसे पकरतभये ३० वली व्योमासुर पर्व्वतकी बराबर अपनो रूप धरिके अपनेकों छुड़ायो चाहै परन्तु नहीं छूटतभयो श्रीकृष्ण ने पकरो है तासों आतुरहै ३१ अच्युत जो

शून्पालांश्चारयन्तोऽद्रिसानुषु ॥ चक्रुर्निलायनक्रीडाश्चोरपालापदेशतः २६ तत्रासन्कतिचिच्चोराः पालाश्चकतिचिन्नृप ॥ मेषायिताश्चतत्रैके विजहुरकुतोभयाः २७ मयपुत्रोमहामायोव्योमोगोपालवेषधृक् ॥ मेषायितानपोवाह प्रायश्चोरायितोबहून् २८ गिरिदर्य्यांविनिक्षिप्यनीतंनीतंमहाऽसुरः ॥ शिलयापिदधेद्वारश्चतुःपञ्चावशेषिताः २९ तस्यतत्कर्मविज्ञाय कृष्णःशरणदःसताम् ॥ गोपान्नयन्तञ्जग्राह वृकंहरिरिवौजसा ३० सनिजंरूपमास्थाय गिरीन्द्रसदृशंबली ॥ इच्छन्विमोक्तुमात्मानं नाशक्नोद्ग्रहणातुरः ३१ तन्निगृह्याच्युतोदोर्भ्यां पातयित्वामहीतले ॥ पश्यतांदिविदेवानां पशुमारममारयत् ३२ गुहापिधानंनिर्भिद्य गोपान्निःसार्यकृच्छ्रतः ॥ स्तूयमानःसुरैर्गोपैः प्रविवेशस्वगोकुलम् ३३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धे व्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अक्रूरोऽपितांरात्रिं मधुपुर्यांमहामतिः ॥ उषित्वारथमास्थाय प्रययौनन्दगोकुलम् १ गच्छन्पथिमहाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे ॥

श्रीकृष्ण हैं सो व्योमासुरकी दोनों भुजा पकरिके पृथ्वी में पटकिके स्वर्गके देवतानके देखत देखत श्वास घोटिके मारतभये ३२ गुफाके ढकनाकों फोरिके गोपन कों कष्ट ते बाहर निकासि के ऊपर देवता विमाननमें स्तुतिकरैं पृथ्वीमें गोप जिनकी स्तुतिकरैं ऐसे श्रीकृष्ण अपने गोकुलमें आवतभये ३३ इति श्रीमन्महाभागवततात्पर्यविषयेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धे व्योमासुरवधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

(अष्टत्रिंशेऽथवाध्यायेऽक्रूरोगोकुलंगतः ॥ तथैवरामकृष्णाभ्यांगृहंनीत्वासुसत्कृतः १ प्रातःकेशिवधेवृत्तेद्वादशेनिर्गतेमुनौ ॥ ततोव्योमेहतेऽक्रूरःसायंगोकुलमागमत् २ अड़तीसवें अध्याय में जैसे ध्यान करतेहुये अक्रूरजी गोकुलको गये तैसेही बलदेवजी और कृष्णजीने घरमें लेजाकर अच्छी तरहसे सत्कार किया १ प्रातःकाल बारहवें केशी राक्षसके नाशहोजानेमें नारदमुनिके चलेजाने में फिर व्योमासुर के नाश होजानेमें सांझ को अक्रूरजी गोकुल में प्राप्त होजातभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! बड़ी है बुद्धि जिनकी ऐसे अक्रूरजी वा दिन रात्रि कू मधु

पुरी में वसि के प्रातःकाल रथमें बैठि के नन्दजी के गोकुल में जातभये १ बडो है भाग्य जिनको ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जात कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र में परमभक्ति कूं पावतभये और यह विचार करतभये २ मैंने कौन मंगलकर्म्म करो है अथवा तपकरो है या सत्पात्रन कूं दानकरो है जाके प्रभावते ब्रह्मा महादेव के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् तिनको दर्शन करूंगो ३ मोको श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह मैं दुर्लभमानूं हूं विषयन में है मन जाको शूद्रकुलमें जन्म ऐसे पुरुष कों वेद को उच्चारण जैसे दुर्लभहै ४ ऐसे मतकहो श्रीकृष्णको दर्शन होय किन्तु अधम जो मैं हूं ताकूं श्री-कृष्णको दर्शन निश्चय होइगो जैसे नदीन के प्रवाह में वहे जे तृणहैं तिनमें कोई किनारे पै लगेहैं तैसे कामन के वश होय के जो जीवहैं तिनमें कोई तरे हैं ५ मैं श्रीकृष्ण के लिवायवे कूं चल्यो हूं याते मेरो अब मंगलरूप भयो मेरो जन्म सफलभयो योगी जिनको ध्यानकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के चरणकमलको नमस्कार करूंगो ६ बड़ो आश्चर्य्य है अत्यन्त दुष्ट कंसने मेरे ऊपर

भक्तिपरामुपगतएवमेतदचिन्तयत् २ किंमयाचरितंभद्रं किंतप्तंपरमन्तपः ॥ किंवाऽथाप्यर्हतेदत्तं यद्द्रक्ष्याम्यद्यकेशवम् ३ ममैतद्दुर्लभंमन्यउत्तमश्लोकदर्शनम् ॥ विषयात्मनोयथाब्रह्मकीर्त्तनंशूद्रजन्मनः ४ मैवंममाधमस्यापिस्यादेवाच्युतदर्शनम् ॥ ह्रियमाणःकालनद्या कचित्तरतिकश्चन ५ ममाद्यामङ्गलंनष्टं फलवांश्चैवमेभवः ॥ यन्नमस्येभगवतो योगिध्येयाङ्घ्रिपङ्कजम् ६ कंसोबताद्याकृतमेत्यनुग्रहं द्रक्ष्येऽङ्घ्रिपद्मंप्रहितोमुनाहरेः ॥ कृतावतारस्य दुरत्ययंतमः पूर्व्वेऽतरन्यन्नखमण्डलत्विषा ७ यदर्चितंब्रह्मभवादिभिःसुरैःश्रियाचदेव्यामुनिभिःससात्वतैः ॥ गोचारणायानुचरैश्चरद्वने यद्गोपिकानांकुचकुङ्कुमाङ्कितम् ८ द्रक्ष्यामिनूनंसुकपोलनासिकं स्मितावलोकारुणकञ्जलोचनम् ॥ मुखंमुकुन्दस्यगुडालकावृतं प्रदक्षिणंमेप्रचरन्तिवैमृगाः ९ अप्यद्यविष्णोर्मनुजत्वमीयुषो भारावतारायभुवोनिजेच्छया ॥ लावण्यधाम्नोभवितोपलम्भनं मह्यंननस्यात्फलमञ्जसादृशः १० यईक्षिताऽहंरहितोऽप्यसत्सतोः स्वतेजसाऽपास्ततमोभिदाभ्रमः ॥ स्वमाययात्मन्रचितैस्तदीक्षयाप्राणाक्षधीभिः सदनेष्वभीयते ११ यस्याखिलामीवहभिःसुमङ्गलैर्वाचोविमि

बड़ो अनुग्रह करो है जो कंस को भेजो मैं आयो अवतार जिनने लियो ऐसे भक्तन के मनके हरनवारे श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्द को मैं दर्शन करूंगो प्रथम अम्बरीषसूं आदिलेके जे राजाभये हैं ते जा श्रीकृष्ण के नखमण्डल की कान्ति सूं तरिवे में न आवे ऐसो संसाररूपी अन्धकार कूं तरिजातभये ७ जो चरणारविन्द ब्रह्मा महादेव सू आदिलेके देवतान ने और प्रकाशमान जो लक्ष्मी ताने मुनीश्वरन ने भक्तन ने पूज्यो है और गौवन के चरायवे के लिये जो चरणारविन्द ग्वालवालन के संग वनमें फिरयो है और जा चरणारविन्द में गोपीन के कुचन की केशर लगी है वा चरणारविन्द को दर्शन करूंगो ८ सुन्दर जामें कपोल नासिका और मुसिकानि भरी चितवनि अरुण डोरा जिनमें आय रहे ऐसे कमल से जामें नेत्र घूमघुमारी अलकें छूटि रही ऐसो श्री-कृष्णचन्द्र के मुख को निश्चय दर्शन करूंगो हरिण मेरे दाहिने आये हैं ९ पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपनी इच्छा सूं अब जाने मनुष्य रूप धारण करो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सुन्दर रूप को दर्शन करूंगो तब मेरे नेत्र सफल होयेंगे १० तहां कोई शंका करे है कि हमारी तुल्य कर्म्मन को करनवारो दिखाई देय है तुम कैसे भगवान् कहो हो ताको उत्तर तीन श्लोक करिके देय हैं

कार्यरूप जगत् और कारणरूप महदादिक तत्त्व तिनकूं जो श्रीकृष्णचन्द्र चितवनि सूं करेहैं तथापि उनके अहङ्कार नहीं है अपने तेज सूं अज्ञान भेद भ्रम को जिनने दूरि करेहै अपने आधीन जो मायाहै ता माया की ओर चितवनि करिके अपने में रचे जे जीव हैं तिन सूं वृन्दावन के वृक्षन के नीचे और गोपीन के घरन में लीला करिके वह्नमे दिखाई देयहैं ११ जिन श्रीकृष्ण के अहंकार नहींहै तो आत्माराम हैं तिनकूं लीलाकरिवो कैसे बनेहै या शङ्काको उत्तर कहे हैं कि भक्तन के ऊपर कृपा करिवे के लिये लीला करे हैं सबके पापन के दूर करनवारे जे सुन्दर मंगल रूप श्रीकृष्णचन्द्रके गुण जन्म कर्म सूं मिली जे वाणी ते जगत् कूं जिवावें हैं और शोभायमान करेहैं पवित्र करेहै और जिन वाणीन में श्रीकृष्णचन्द्र के लीला गुण जन्म कर्म नहीं गायेहैं उनकों जे कहेहै और श्रवण करेहैं ते अपवित्र हैं जैसे मृत्यु भयो शरीर अपवित्र हैं यादवन के कुलमें जिन श्रीकृष्णचन्द्र ने अवतार लियोहै अपनी मर्यादान कों पालनकरें जे देवतान में श्रेष्ठहैं तिनको सुखके करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ईश्वर लीला करिके यशको फैलावत व्रजमें रहेहैं सबकों मंगलरूप जो यशहै ताकों देवता गावे हैं १२। १३ महत्पुरुषन कों सुन्दर गति के देन-

श्चागुणकर्मजन्मभिः ॥ प्राणन्तिशुम्भन्तिपुनन्तिवैजगद्यास्तद्विरक्ताःशवशोभनामताः १२ सचावतीर्णःकिलसात्वतान्वयेस्वसेतुपालामरवर्यशर्मकृत् ॥ यशोवितन्वन्व्रजआस्तईश्वरो गायन्तिदेवायदशेषमङ्गलम् १३ तन्त्वद्यनूनंमहतांगतिंगुरुं त्रैलोक्यकान्तंदृशिमन्महोत्सवम् ॥ रूपंदधानंश्रियईप्सितास्पदं द्रक्ष्येममासन्नुषसःसुदर्शनाः १४ अथावरूढःसपदीशयोरथात्प्रधानपुंसोश्चरणंस्वलब्धये ॥ धियाधृतंयोगिभिरप्यहंध्रुवं नमस्यआभ्यांचसखीन्वनौकसः १५ अप्यङ्घ्रिमूलेपतितस्यमेविभुः शिरस्यधास्यन्निजहस्तपङ्कजम् ॥ दत्ताभयंकालभुजङ्गरंहसा प्रोद्वेजितानांशरणैषिणांनृणाम् १६ समर्हणंयत्रनिधायकौशिकस्तथाबलिश्चापजगत्त्रयेन्द्रताम् ॥ यद्वाविहारेव्रजयोषितांश्रमं स्पर्शेनसौगन्धिकगन्ध्यपानुदत् १७ नमय्युपैष्यत्यरिबुद्धिमच्युतः कंसस्यदूतःप्रहितोऽपिविश्वदृक् ॥ योऽन्तर्बहिश्चेतसएतदीहितं क्षेत्रज्ञईक्षत्यमलेनचक्षुपा १८ अप्यङ्घ्रिमूलेऽवहितंकृताञ्जलिं मामीक्षितासस्मित

वारे गुरु त्रिलोकी में सुन्दर नेत्रनवारे पुरुषन कूं आनन्द के देनवारे लक्ष्मीकों वाञ्छित रहिवे को ठिकानो अतिसुन्दर रूपको धारण करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को आज मैं निश्चय दर्शन करोंगो प्रातःकाल के समय मेरे श्रेष्ठ सगुन भये हैं १४ दर्शन करे पीछे शीघ्र रथमें ते उतरि के ईश्वर राम कृष्णकों निश्चय प्रणाम करोंगो और इन सहित वनवासी सखान को प्रणाम करोंगो जिन राम कृष्ण को चरणारविन्द योगीन ने आत्मलाभके लिये केवल मनमें ध्यान कियोहै ताकों मैं साक्षात् प्रणाम करोंगो १५ चरण में परो जो मैं हूं ताके शिर पै समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ कों धरेंगे कालरूप सर्पकी फुंकार सों डरपि के शरण कूं चाहैं ऐसे मनुष्यन कूं अभयदान जा हाथ ने दियो है १६ जिन श्रीकृष्ण के हाथमें इन्द्र पूजा राखिके इन्द्रता पावतभयो तैसेही राजा बलि संकल्प राखिके त्रिलोकीकी इन्द्रता पावतभयो रासक्रीड़ा में व्रजकी स्त्री गोपीन के श्रम को जो पसीना है ताकूं जा हाथ ते पोंछत भयो और कमलकीसी जा हाथ में सुगन्धि आवै वा हाथ को मेरे शिरपर धरे १७ कंस को सन्देशो लैके कंस को भेज्यो जाऊंहों तथापि समस्त विश्व के जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र वैरी कंस के पास ते यह आयो है याते मोकों न मानेंगे और जो अन्त-

र्थभी श्रीकृष्ण मेरे चित्त के बाहर भीतर जो चेष्टा है ताकूं नित्य ज्ञान करिके देखे हैं ऊपर ते कंस को भेज्यो जाऊंहों भीतर तें श्रीकृष्णको ध्यान लगिरह्यो है जा वातकों नित्य ज्ञान करिके अन्तर्यामी जाने हैं १८ चरणारविन्द में गिर्यो हाथ जाने जोरि लिये ऐसो जो मैं हूं ताकूं मुसिकायके श्रीकृष्णचन्द्र करुणाभरी दृष्टि सों जासमय देखेंगे तासमय शीघ्रही दूरि भयेहैं सबपाप जाके गयो है भय जाको ऐसो मैं बड़े आनन्द कों पाऊंगो १९ अतिशय करिके हितकारी जाति कों श्रीकृष्ण के विना और कोई देवता नहीं ता मोकों श्रीकृष्णचन्द्र अपनी लम्बी भुजा पसारिके छाती ते लगावेंगे ता समय यह देह पवित्र होय जायगो और कर्मरूप बन्धनहै सोभी या देहको छूटि जायगो २० श्रीकृष्ण ते मिलिके नारि झुकायके हाथ जोरिके जब ठाढ़ो होऊँगो तब हे अक्रूर ! हे काका ! या प्रकार वड़ो जिनको यश वे श्रीकृष्ण मोतें कहेंगे ता समय हम सफलजन्म होयँगे वहोंने जाको आदर नहीं कियोहै वा पुरुष कों धिक्कार है २१ तिन श्रीकृष्ण के कोई प्यारो और अ-

गार्द्रयादृशा ॥ सपद्यपध्वस्तसमस्तकिल्बिषो वोढामुदंवीतविशङ्कऊर्जिताम् १८ सुहृत्तमंज्ञातिमनन्यदैवतं दोर्भ्यांबृहद्भ्यांपरिरप्स्यतेऽथमाम् ॥ आत्माहितीर्थीक्रियतेनदैवमे बन्धश्च कर्मात्मकउच्छ्वसित्यतः २० लब्धाङ्गसङ्गंप्रणतंकृताञ्जलिं मांवक्ष्यतेऽक्रूरततेत्युरुश्रवाः ॥ तदावयंजन्मभृतोमहीयसा नैवादृतोयोधिगमुष्यजन्मतत् २१ नतस्यकश्चिद्दयितःसुहृत्तमोनचाप्रियोद्वेष्यउपेक्ष्यएववा ॥ तथाऽपिभक्तान्भजतेयथातथा सुरद्रुमोयद्वदुपाश्रितोऽर्थदः २२ किंचाऽग्रजोमाऽवनतंयदूत्तमः स्मयन्परिष्वज्यगृहीतमञ्जलौ ॥ गृहंप्रवेश्याप्तसमस्तसत्कृतं संप्रक्ष्यतेकंसकृतंस्वबन्धुषु २३ श्रीशुकउवाच ॥ इतिसंचिन्तयन्कृष्णं श्वफल्कतनयोऽध्वनि ॥ रथेनगोकुलंप्राप्तःसूर्यश्चास्तगिरिंनृप २४ पदानितस्याखिललोकपालकिरीटजुष्टामलपादरेणोः ॥ ददर्श गोष्ठेक्षितिकौतुकानि विलक्षितान्यब्जयवाङ्कुशाद्यैः २५ तद्दर्शनाह्लादविवृद्धसंभ्रमः प्रेम्णोर्ध्वरोमाऽश्रुकलाकुलेक्षणः ॥ रथादवस्कन्द्यसतेष्वचेष्टतप्रभोरमून्यङ्घ्रिरजांस्यहोइति २६ देहंभृतामियानर्थो हित्वादम्भंभियंशुचम् ॥ सन्देशाद्योहरेर्लिङ्गदर्शनश्रवणादिभिः २७ ददर्शकृष्णंरामञ्च व्रजेगोदोहनंग

तिशय करिके हितकारी भी नहींहै कोई कुप्यारो नहीं और न कोई वैरीहै न कोई छोडिवे योग्यहै तथापि जो भक्त जैसे भजेहैं तिनकों तैसेही भजेहैं जैसे कल्पवृक्ष जो सेवन करैहै ताहीकों वह फल देयहै २२ यादवन में श्रेष्ठ बडे भय्या बलदेवजी नीची नारि करिके ठाढ़ो जो मैं हूं ताय मुसिकाय के आलिंगन करिके हाथ पकरिके घर में लेजायके पाये हैं समस्त सत्कार जाने ऐसो जो मैं हूं तासों अपने बन्धु यादवन में कंसके कर्त्तव्यकों पूछेंगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार श्वफल्क के पुत्र अक्रूर मार्ग में श्रीकृष्णचन्द्र को चिन्तन करत रथ में बैठकर गोकुल पहुँचे इतने में सूर्य्य अस्ताचल को प्राप्त होयगयो २४ सम्पूर्ण लोकन के पालन करनवारे ब्रह्मादिक देवता अपने मुकुटनके ऊपर जिनके चरणनकी रेणु कों धारण करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के चरणन के खोज अक्रूरजी व्रजमें देखत भये कैसे खोजहैं पृथ्वी के गहनेरूप हैं कमल यव अंकुश के जिनमें चिह्नहैं २५ श्रीकृष्णचन्द्र के चरणचिह्न के दर्शन के आनन्द ते भयोहै सम्भ्रम जिनके प्रेम से रोमाञ्च जिनके होय आये नेत्रन में आंसू आयगये ऐसे अक्रूरजी रथते उतरिके अहो मेरे प्रभु के चरणनकी रज ऐसे कहत कहत चरणन के खोजन में लोटत भये २६

देहधारीन को इतनोही पुरुषार्थ है कंसके सन्देश ते आदिलेके दम्भ भय शोच छोड के श्रीकृष्णके चरणन के दर्शन श्रवणादिकसूं जो अक्रूरको प्रेमभयो २७ व्रजमें गोशाला में गौ दुहिवेको गये जे श्रीकृष्ण और बलदेवजी कों अक्रूरजी देखतभये पीताम्बर और नीलाम्बर कूं पहिरे हैं शरदृतु के कमल से जिनके नेत्र २८ किशोर जिनकी अवस्था श्याम और गौर जिनको स्वरूप लक्ष्मी की शोभाके स्थान लम्बी जिनकी भुजा सुन्दर जिनको मुख सुन्दरन में अतिसुन्दर हाथीके छोनो के तुल्य जिनको पराक्रम है २९ ध्वजा वज्र अंकुश कमल को जिनमें चिह्न ऐसे चरणन सूं व्रजको शोभायमान करेहैं महात्मा हैं कृपा भरी मुसिकानि लिये जिनकी चितवनि है उदार रुचिर जिनकी क्रीड़ा है मोतीन के हार और वनमाला पहिरे पवित्र चन्दन केशर जिनके लगी है स्नान किये निर्म्मल जिनके वस्त्रहैं प्रकृति पुरुषरूपहैं काहे ते आदिकारणहैं जगत्के पालन करनवारे हैं पृथ्वीको भार उतारिवे के लिये बलराम केशव दो रूप धरिके अवतार लिये हैं ३०।३१।३२

तौ ॥ पीतनीलाम्बरधरौ शरदम्बुरुहेक्षणौ २८ किशोरौश्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौबृहद्भुजौ ॥ सुमुखौसुन्दरवरौ बालद्विरदविक्रमौ २९ ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैश्चिह्नितैरङ्घ्रिभिर्व्रजम् ॥ शोभयन्तौमहात्मानौ सानुक्रोशस्मितेक्षणौ ३० उदाररुचिरक्रीडौ स्रग्विणौवनमालिनौ ॥ पुण्यगन्धानुलिप्ताङ्गौ स्नातौविरजवाससौ ३१ प्रधानपुरुषावाद्यौ जगद्धेतूजगत्पती ॥ अवतीर्णौजगत्यर्थे स्वांशेनबलकेशवौ ३२ दिशोवितिमिराराजन् कुर्वाणौप्रभयास्वया ॥ यथामारकतःशैलो रौप्यश्चकनकाचितौ ३३ रथात्तूर्णमवप्लुत्य सोऽक्रूरःस्नेहविह्वलः ॥ पपातचरणोपान्ते दण्डवद्रामकृष्णयोः ३४ भगवद्दर्शनाह्लादबाष्पपर्याकुलेक्षणः ॥ पुलकाचिताङ्गऔत्कण्ठ्यात् स्वाख्यानेनाशकन्नृप ३५ भगवांस्तमभिप्रेत्य रथाङ्गाङ्कितपाणिना ॥ परिरेभेभ्युपाकृष्य प्रीतःप्रणतवत्सलः ३६ सङ्कर्षणश्चप्रणतमुपगुह्यमहामनाः ॥ गृहीत्वापाणिनापाणी अनयत्सानुजोगृहम् ३७ पृष्ट्वाऽथस्वागतंतस्मै निवेद्यचवरासनम् ॥ प्रक्षाल्यविधिवत्पादौ मधुपर्कार्हणमाहरत् ३८ निवेद्यगांचातिथये संवाह्यश्रान्तमादृतः ॥ अन्नंबहुगुणंमेध्यं श्रद्धयोपाहरद्विभुः ३९ तस्मैभुक्तवतेप्रीत्या

हे राजन् परीक्षित्! अपने तेजते दिशान के अन्धकार को दूर करे हैं सुवर्ण करिके जैसे नीलमणि को पर्व्वत अथवा रूपे को पर्व्वत जगमगायहै ३३ स्नेह में विह्वल होयके अक्रूरजी शीघ्र रथमें ते उतरि के रामकृष्ण के चरणन में दण्डवत् करतभये ३४ हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण के दर्शन सूं जो आनन्द भयो तासूं नेत्रन में आसू भरिआये उत्कण्ठाते अंगमें रोमाञ्च होय आये मैं अक्रूर दण्डवत् करूं हूं ऐसें कहिवे को न समर्थ होतभये ३५ हितके करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अक्रूर एतदर्थ आये हैं यह जानिके चक्रकी जामें रेखा ऐसे अपने हाथते पकरिके प्रसन्न होय के छाती सों लगाय के मिलतभये मिलिवे को कारण यह है कि कंस के मारिवे की सामर्थ्य श्रीकृष्ण ने जताई ३६ बड़ोहै मन जिनको ऐसे संकर्षण बलदेवजी दण्डवत् जिनने करी ऐसे अक्रूरजीकों छाती सूं लगाय के अपने हाथ ते दोनों हाथ पकरि के घरमें श्रीकृष्ण सहित लिवाय जात भये ३७ भलेआये ऐसे कुशल पूंछि के अक्रूरजी कों आसन बिछाय के विधिपूर्व्वक पांवन कों धोयके मधुपर्क देके पूजन करतभये ३८ विधिपूर्व्वक पूजा करिके बैल अक्रूरजी के निवेदन करो मार्गमें परिश्रम जिनको भयो ऐसे अक्रूरजी के चरणारविन्द आदरसों दाबिके बहुत जामें गुण

ऐसी पवित्र अन्नकी सामग्री भोजनार्थ अतिश्रद्धा सों अक्रूरजी के आगे निवेदन करतभये ३९ अक्रूरजी भोजन जब करिचुके तब परमधर्म्म के जाननवारे बलदेवजी बीरी चन्दन केशर अतर फूलन के हार इत्यादिकन सूं प्रसन्न करतभये ४० सन्मान जिनको करो ऐसे अक्रूरजी ते नन्दजी पूंछतभये निर्दयी कंसके जीवत तुम्हारो कैसे जीवनहोयहै कसाई जिनको पालक वे मेंढ़ कैसे जियें ४१ प्राणन को पोषणवारो दुष्ट कंस विलाप करै जो अपनी बहिनि ताके पुत्रन कों मारत भयो ता कंसकी प्रजा तुमहो तुम्हारी कहा कुशल विचारें ४२ या प्रकार मधुरवचन तें पूंछि के नन्दजी ने सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्गके परिश्रम कों त्यागतभये ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरागमनंनामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ * ॥

(नवत्रिंशेपुरींगच्छत्यच्युतेगोपिकोक्तयः ॥ अक्रूरेणाथकालिन्द्यां विष्णुलोकस्यदर्शनम् १ उनतालीसयें अध्याय में मथुरापुरी को जातेहुये श्रीकृष्णजी में गोपियों की उक्ति और अक्रूरजी

रामःपरमधर्मवित् ॥ सुखवासैर्गन्धमाल्यैः परांप्रीतिंव्यधात्पुनः ४० पप्रच्छसत्कृतंनन्दः कथंस्थनिरनुग्रहे ॥ कंसेजीवतिदाशार्ह सौनपालाइवावयः ४१
योऽवधीत्स्वस्वसुस्तोकान् क्रोशन्त्याअसुतृप्खलः ॥ किंनुस्वित्तत्प्रजानांवःकुशलंविमृशामहे ४२ इत्थंसूनृतयावाचा नन्देनसुसभाजितः ॥ अक्रूरःप
रिपृष्टेन जहावध्वपरिश्रमम् ४३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे पूर्वार्द्धेऽक्रूरागमनंनामाऽष्टत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ सुखोपविष्टःपर्य्यङ्के रामकृष्णोरुमानितः ॥ लेभेमनोरथान्सर्व्वान् पथियान्सचकारह १ किमलभ्यंभगवति प्रसन्नेश्रीनिकेतने ॥ त
थाऽपितत्पराराजन्नहिवाञ्छन्तिकिञ्चन २ सायन्तनाशनंकृत्वाभगवान्देवकीसुतः ॥ सुहृत्सुवृत्तंकंसस्यपप्रच्छान्यच्चिकीर्षितम् ३ श्रीभगवानुवाच ॥ ता
तसौम्यागतःकच्चित्स्वागतंभद्रमस्तुवः ॥ अपिस्वज्ञातिबन्धूनामनमीवमनामयम् ४ किंनुनःकुशलंपृच्छे एधमानेकुलामये ॥ कंसेमातुलनाम्न्यङ्ग स्वानां
नस्तत्प्रजासुच ५ अहोअस्मदभूद्भूरि पित्रोर्वृजिनमार्ययोः ॥ यद्धेतोःपुत्रमरणं यद्धेतोर्बन्धनंतयोः ६ दिष्ट्याऽद्यदर्शनंस्वानां मह्यंवःसौम्यकाङ्क्षितम् ॥ स

करके यमुनाजी में विष्णुलोक का दर्शन भयो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! शय्याके ऊपर सुखपूर्व्वक बैठे कृष्ण बलदेवने बड़ो सत्कार जिनको करो ऐसे अक्रूरजी मार्ग में जे जे मनोरथ करतेगये हैं ते ते समस्त पूर्णभये १ छः प्रकारके ऐश्वर्य्य करि परिपूर्ण शोभा के स्थान ऐसे श्रीकृष्ण जब प्रसन्नभये तब कौनसी वस्तुकी प्राप्ति न भई हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण-परायण जे भक्तहैं तिनें कछु वस्तुकी चाहना नहीं है २ देवकीके पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सन्ध्या समय व्यारू करिके अपने यादवन में जो कंस को वर्तावहै ताय अक्रूरजी सूं पूंछतभये और जो कछु करिवेको विचारहै ताय पूंछतभये ३ श्रीभगवान् श्रीकृष्ण बूझे है हे काका! हे साधु! तुम भलेआये तुम्हारो कल्याण होउ जातिके भैया बन्धूनकों सुखहै आरोग्यहै ४ अंग अर्थात् हे अक्रूर! मामाहै नाम जाको ऐसो कंस हमारे कुलकों रोग बढ़ो तब अपने भय्या बन्धूनकी ता कंसके प्रजाकी कहा कुशल पूंछें ५ हमारे निरपराध माता पिताकूं हमारे लिये बड़ो दुःख भयो हमारे लिये उनके

पुत्र मेरे हमारे लिये उनकों बन्धन भयो ६ हे साधु! बहुतदिन ते तुम्हारे दर्शनकी अभिलाषा रही अब आपनेनको दर्शनभयो बड़ो मङ्गलभयो हे काका! तुम्हारो आयबो कैसे भयो यह हमते वर्णन करो ७ श्रीशुकदेवजी बोले मधुवंशोद्भव अक्रूरजी श्रीकृष्णने पूंछे तब सम्पूर्ण वृत्तान्त कहतभये कंस यादवनसूं वैर करे है और वसुदेवके मारिबेको उद्यमकरे है धनुर्यज्ञके देखिवेको तो मिषहै चाणूरादिकनपै घात करायबेके लिये मोहिं भेजोहै वसुदेवके श्रीकृष्णको जन्मभयो है यह बात नारदजी कंसते कहि आये हैं सो सम्पूर्ण अक्रूरजी श्रीकृष्ण ते कहतभये ८।९ श्रीकृष्णचन्द्र और बड़े बड़े शत्रूनके पराजय करनवारे श्रीबलदेवजी अक्रूरको वचन श्रवण करिके पिता नन्दजी सूं हँसिके राजाकंसको संदेशो जतावतभये १० नन्दजी गोपनकों आज्ञा देतभये सम्पूर्ण दूध दही लै लेउ गाड़ान को जोतो ११ कल्हिके दिन मथुरा जायँगे राजाकंसकों रस देयँगे यामें यह बोधन करो कि जब देहमें रोग वृद्धिकूं प्राप्त होयहै तब रस देयहैं ऐसे कंसरूपी रोग बढ़ो है याकों रस देयँगे सुन्दर

आतंबरार्थतांतात तवागमनकारणम् ७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ पृष्टो भगवतासर्वंवर्णयामाससमाधनः ॥ वैरानुबन्धंयदुषुवसुदेववधोद्यमम् ८ यत्संदेशोयदर्थंवा दूतःसंप्रेषितःस्वयम् ॥ यदुक्तंनारदेनास्य स्वजन्मानकदुन्दुभेः ९ श्रुत्वाऽक्रूरवचःकृष्णोबलश्चपरवीरहा ॥ प्रहस्यनन्दंपितरं राज्ञादिष्टंविजज्ञतुः १० गोपान्समादिशत्सोऽपि गृह्यतांसर्वगोरसः ॥ उपायनानिगृह्णीध्वं युज्यन्तांशकटानिच ११ यास्यामःश्वोमधुपुरीं दास्यामोनृपतेरसान् ॥ द्रक्ष्यामःसुमहत्पर्व यान्तिजानपदाःकिल ॥ एवमाघोषयत्क्षत्ता नन्दगोपःस्वगोकुले १२ गोप्यस्तास्तदुपश्रुत्य बभूवुर्व्यथिताभृशम् ॥ रामकृष्णौपुरींनेतुमक्रूरंव्रजमागतम् १३ काश्चित्तत्कृतहृत्तापश्वासम्लानमुखश्रियः ॥ संसद्दुकूलवलयकेशग्रन्थ्यश्चकाश्चन १४ अन्याश्चतदनुध्याननिवृत्ताशेषवृत्तयः ॥ नाभ्यजानन्निमंलोकमात्मलोकंगताइव १५ स्मरन्त्यश्चापराःशौरेरनुरागस्मितेरिताः ॥ हृदिस्पृशश्चित्रपदागिरःसंमुमुहुःस्त्रियः १६ गतिंसुललितांचेष्टांस्निग्धहासावलोकनम् ॥ शोकापहानिनर्माणिप्रोद्दामचरितानिच १७ चिन्तयन्त्योमुकुन्दस्य लीलाविरहकातराः ॥ समेताःसङ्घशःप्रोचुरश्रुमुख्योऽच्युताशयाः १८

भारी पर्व देखेंगे और देशवासीहू जायँगे ऐसे नन्दरायजी अपने गोकुलके कोतवालकों बुलायके डौंड़ी पिटावत भये १२ श्रीकृष्णही हैं एक जीवन जिनके वे गोपी जा समय श्रीकृष्ण बलरामकों मथुरापुरी में लेजायबेकूं व्रजमें अक्रूरजी आये हैं यह बात सुनिके अत्यन्त दुःखित होतभई १३ अब गोपीन के दुःखके लक्षण कहै हैं श्रीकृष्ण मथुरा जायँगे यह बात सुनिके भयो जो हृदयमें ताप ता सों कितेक गोपीनके मुख कुम्हिलायगये शिथिलभये हैं वस्त्र कंकण केशनकी ग्रन्थि जिनकी ऐसी कोई गोपी होतभई १४ ता श्रीकृष्णके ध्यानकरे ते निवृत्तभई है इन्द्रियनकी वृत्ति जिनकी अर्थात् नेत्रन ते देखिबो कानन ते सुनिबो वाणी ते बोलिबो नासिका तें सूंघिबो सब जिनको छूटिगयो ऐसी और गोपी हैं ते मुक्तिभये तिनकी तुल्य या देहको न जानतभई १५ कोई गोपी स्नेहते मुसिकाय के हृदयको आनन्ददायक चित्रविचित्र जिनकी बोलनि ऐसे वचननकी सुधिकरिके मोहित होतभई १६ मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्णचन्द्रकी मनोहर चलनि स्नेह भरी चितवनि शोककी दूरि करनवारी बोलनि इत्यादिक चेष्टानकूं बड़े चरित्रनकूं स्मरण करतभई १७ यह सत्य जायगो यह भय जिनकों भयो विरह में कातर अश्रु जिनके मुँह पै बहिआये श्रीकृष्ण भगवान् में जिनको मनहै ऐसी

हजारन गोपीन के झुण्ड जुरि मिलिके समस्त आपुसमें यह कहतभई १८ गोपी कहती हैं अहो विधाता! तेरे कहूं दया नहीं है देहधारीन कों मिलाय के मित्रता करावै स्नेह लगावै फेरि उनके मनोरथ पूर्ण न होन पावैं तब तक उनकों ऐसो न्यारो न्यारो करिदेय है जैसे बालक खिलौनाकों इकठौरो करिके फेरि न्यारो न्यारो करदेयहै यह तेरो कर्तव व्यर्थ है १९ तेरो यह कर्म निन्दितहै अब यह कहैहैं घूमघुमारी छल्लादार अलकैं जापै छुटिरहीं सुन्दर जामें कपोल ऊंची जामें नासिका शोककी हरनवारी मन्दमन्द जामें मुसिकानि तासों सुन्दर ऐसे प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रको मुख दिखायके हमारे नेत्रनतें न्यारो करै है यह तेरो कर्म बुरो है दान करिके लेइहै याते तू बड़ो कठोरहै २० अक्रूर लेजायहै मैंतो नहीं लेजाऊंहौं कदाचित् ऐसे विधाता कहै तहां गोपी कहै है अरे विधाता निर्दयी! अक्रूर या नाम धरिके आयो जो तू है सो तैंने हमको कृष्णरूप नेत्र दिये हैं तिनकूं अज्ञानी की तुल्य हरिके लेजायहै कदाचित् कहो कि कृष्णको हरिकेलिये जाऊं हूं तुम्हारे नेत्रनकों तौ नहीं हरोंहौं तहा कहैहैं हमारे नेत्रनको तो हरैहै जो तैंने नेत्र दियो है तासूं श्रीकृष्णके एक अंगमें सम्पूर्ण विश्वकी चतुराई देख लेतभई कृष्णरूप बिना आंधरीगोपी कौनकों देखैंगी २१ क्षणमें भङ्गहै

गोप्यऊचुः ॥ अहोविधातस्तवनक्कचिद्दया संयोज्यमैत्र्याप्रणयेनदेहिनः ॥ तांश्चाकृतार्थान्वियुनङ्क्ष्यपार्थकंविक्रीडितंतेऽर्भकचेष्टितंयथा १९ यस्त्वंप्रदर्श्यासितकुन्तलावृतं मुकुन्दवक्त्रंसुकपोलमुन्नसम् ॥ शोकापनोदस्मितलेशसुन्दरं करोषिपारोक्ष्यमसाधुतेकृतम् २० क्रूरस्त्वमक्रूरसमाख्ययास्मनश्चक्षुर्हि दत्तंहरसेबताज्ञवत् ॥ येनैकदेशेऽखिलसर्गसौष्ठवं त्वदीयमद्राक्ष्मवयंमधुद्विषः २१ ननन्दसूनुःक्षणभङ्गसौहृदःसमीक्षतेनःस्वकृतातुरावत ॥ विहायगेहान्स्वजनान्सुतान्पतींस्तद्दास्यमद्धोपगतानवप्रियः २२ सुखंप्रभातारजनीयमाशिषः सत्याबभूवुःपुरयोषितांध्रुवम् ॥ याःसम्प्रविष्टस्यमुखंव्रजस्पतेःपास्यन्त्यपाङ्गोत्कलितस्मितासवम् २३ तासांमुकुन्दोमधुमञ्जुभाषिभिर्गृहीतचित्तःपरवान्मनस्व्यपि ॥ कथंपुनर्नःप्रतियास्यतेबलाग्राम्याःसलज्जस्मितविभ्रमैर्भ्रमन् २४ अद्यध्रुवंतत्रदृशोभविष्यतेदाशार्हभोजान्धकवृष्णिसात्वताम् ॥ महोत्सवःश्रीरमणंगुणास्पदंद्रक्ष्यन्तिमेचाध्वनिदेवकीसुतम् २५ मैतद्विधस्याकरु

स्नेह जाको ऐसो यह नन्द को पुत्र याकी मुसिकानि सों मोहित भई घर भय्या बन्धून कों त्यागि के औ पुत्र पतिन कों छोड़िके साक्षात् जाकी दासी भई हैं हाय हाय हमें देखेहू नायहै याकूं नये नये प्यारे लगे हैं २२ मथुराकी स्त्रीन कूं या रात्रि को सवेरो अच्छो होयगो क्योंकि उनके मनोरथ निश्चय साचे होयँगे जब मथुरामें जायगो तब कटाक्षन कों लिये मुसिकानि रूप जामें रस ऐसे मुख कों आदर ते देखैंगी कदाचित् दो तीन दिन को जाय हैं तुम ते जाको प्यारहै बाबा संग जाय है लिवाय के चल्यो आवैगो ऐसी व्याकुल क्यों होउ हौ तहां गोपी कहे हैं मथुरा की स्त्रीन की मीठी मनोहर बातन सूं प्यारे को चित्त पकरो जायगो उनकी लाज भरी मुसिकानि कटाक्षन सों मन जाको चलायमान होय जायगो दोहा कवित्तन के अर्थ करैं ऐसी चतुर स्त्रीन की अँखि जब प्यारो देखैगो तब हे सखियो! धैर्यवान् बाबा के अधीन है तथापि गाँव की रहनवारी हम है तिनके पास फेरि काहेको आवैगो २३ । २४ आज तौ मथुरा में दाशार्हवंशी भोजवंशी अन्धकवंशी यादव हैं तिनकी आंखिनकों निश्चय आनन्द होयगो लक्ष्मी के रमावनवारे समस्त जिनमें गुण ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण तिनकूं जे पुरुष मार्ग में देखैंगे तिनकी आंखिन

कों निश्चय वडो आनन्द होयगो २५ या सारिसे निर्दयी को अक्रूर यह सुन्दर नाम मति होउ जो यह निर्दयी बहुत दुःखित जो हम हैं तिनके विना पूंछे मायन ते प्यारो कृष्ण है ताकूं हमारी आखिन ते दूर लिये जायहै २६ कठोरहै बुद्धि जाकी ऐसो यह कृष्ण रथमें जाय बैठ्यो है अभागे गोप जल्दी गाड़ा हाँकैं ऐसे श्रीकृष्ण के पीछे उतावल करैहैं और वृद्धभी या कूं नाहीं नहीं करे हैं अरी सखियो ! कौन कों दोष देईं आज हमारो दैवही उलटो होय गयो दैव सूधो हो तो तौ कोई विघ्न होय जातो बुरो शकुन विचारि के प्यारो यहांही रहतो न जातो २७ गोपी कहे हैं चलिके या श्रीकृष्ण कों मने करैं याके रथ के आगे आड़ी परिके कहैंगी जो जाय है तो हमारी छाती पै रथ को पहिया धरिके जा हमारे यह कुल के वडेवूढ़े कहा करेंगे आधोक्षण छुटे नहीं ऐसो मुकुन्दको संग तासू दैवने बिछुराई हैं याही ते दीन हमारो चित्त भयो है २८ जा श्रीकृष्णकी स्नेहभरी मनोहर मुसिकानि मनोहर वार्में लीलापूर्वक चितवनि आलिं-

एस्यनामभूदक्रूरइत्येतदतीवदारुणः ॥ योऽसावनाश्वास्यसुदुःखितंजनंप्रियात्प्रियन्नेष्यतिपारमध्वनः २६ अनार्द्रधीरेपसमास्थितोरथं तमन्वमीचत्वरय न्तिदुर्मदाः ॥ गोपाअनोभिःस्थविरैरुपेक्षितं दैवञ्चनोऽद्यप्रतिकूलमीहते २७ निवारयामःसमुपेत्यमाधवं किन्नोऽकरिष्यन्कुलवृद्धबान्धवाः ॥ मुकुन्दसङ्गा न्निमिषार्द्धदुस्त्यजाद्दैवेनविध्वंसितदीनचेतसाम् २८ यस्यानुरागललितस्मितवल्गुमन्त्रलीलावलोकपरिरम्भणरासगोष्ठ्याम् ॥ नीताःस्मनःक्षणमिवक्ष णदाविनातं गोप्यःकथंन्वतितरेमतमोदुरन्तम् २९ योऽह्नःक्षयेव्रजमनन्तसखःपरीतोगोपैर्विशन्खुररजश्छुरितालकस्रक् ॥ वेणुंक्वणन्स्मितकटाक्षनिरीक्षणे न चित्तंक्षिणोत्यमुमृतेनुकथंभवेम ३० श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रुवाणाविरहातुराभृशं व्रजस्त्रियःकृष्णविषक्तमानसाः ॥ विसृज्यलज्जांरुरुदुःस्मसुस्वरं गोवि न्ददामोदरमाधवेति ३१ स्त्रीणामेवंरुदन्तीनामुदितेसवितर्यथ ॥ अक्रूरश्चोदयामासकृतमैत्रादिकोरथम् ३२ गोपास्तमन्वसज्जन्तनन्दाद्याःशकटैस्ततः ॥ आदायोपायनंभूरिकुम्भान्गोरससम्भृतान् ३३ गोप्यश्चदयितंकृष्णमनुव्रज्यानुरञ्जिताः ॥ प्रत्यादेशंभगवतः काङ्क्षन्त्यश्चावतस्थिरे३४तास्तथातप्यतीर्वीक्ष्य

गन इनकरिके रासकी सभामें बड़ी बडी रात्री एक क्षणकी तुल्य विताई हे गोपियो ! या कृष्ण विना विरहरूपी दुःखके समुद्रकों कैसे तरेंगी २९ वलदेवहै सखा जाको गौवन के खुरनकी रज सूं धूसरी हैं अलक और माला जाकी ऐसो कृष्ण सन्ध्यासमय ग्वालवालन को संग लैके वांसुरी को बजावत आवैहै मुसिकानि कटाक्षभरी चितवनि सों चित्तको चुरावै है अव या विना कैसे जीवेंगी ३० अव श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार अत्यन्त विरह में व्याकुल श्रीकृष्णमें लगे हैं मन जिनके ऐसी व्रजकी स्त्री गोपी लाज छोड़िके हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! ऐसे पुकारपुकार के रोवतभई ३१ या प्रकार स्त्री रुदन करैही इतने में सूर्य्य उदय होइ आयो ता पीछे सन्ध्योपासन जिनने करो ऐसे अक्रूरजी रथकों हाकतभये ३२ नन्दादिक सम्पूर्ण गोप बड़ी बड़ी भेंट लैके दूध दही माखनतें भरे जे कलशहैं तिनकूं लैके गाडानमें बैठिके पीछेतें जातभये ३३ श्रीकृष्णमें आसक्तहै मन जिनको ऐसी गोपी श्रीकृष्णके पीछे जायके अभऊं प्यारो

वगदि के आवे ऐसे श्रीकृष्णको वगदिवे को पैंड़ो ठाढी देखतभई ३४ यादवनमें उत्तम श्रीकृष्ण अपने चलिवे के समय गोपीन को व्याकुल देखिके जल्दी आऊंगो ऐसे प्रेम सहित दूतनसें वचन कहवाय के शान्त करतभये ३५ जहा ताई रथकी ध्वजा दीख्यो करी तहाताई और जहा ताई रथकी धूरि उड़ती दीखी तवताई श्रीकृष्ण में लगेहैं चित्त जिनके ऐसी गोपी अवहूं वगदि आवें ऐसे विचार करत चित्रकी तुल्य लिखीसी ठाढी होतभई ३६ श्रीकृष्ण के वगदिवे की गई है आश जिनके वे गोपी वगदिं के आवति भई श्रीकृष्णकी लीलान कों गाय गायके गयेहैं शोक जिनके ऐसे दिनन कों वितावत भई ३७ हे राजन् परीक्षित्! पवनकी तुल्यहै वेग जाको ऐसो रथ तामें वैठिके वलदेव अक्रूरसहित श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् पाप दूर करनवारी जो यमुना है तहां प्राप्त होतभये ३८ ता यमुना तीरमें हाथ पांव धोइ आचमन करि मीठो निर्म्मल जल पीके वगीचा में आयके वलदेव सहित रथमें वैठतभये ३९ अक्रूरजी श्रीकृष्ण वलदेव कूं रथमें वैठारि के उनते

स्वप्रस्थानेयदूत्तमः ॥ सान्त्वयामाससप्रेमैरायास्यइतिदौत्यकैः ३५ यावदालक्ष्यतेकेतुर्यावद्रेणूरथस्यच ॥ अनुप्रस्थापितात्मानोलेख्यानीवोपलक्षिताः ३६ तानिराशानिववृतुर्गोविन्दविनिवर्तने ॥ विशोकाअहनीनिन्युर्गायन्त्यःप्रियचेष्टितम् ३७ भगवानपिसम्प्राप्तोरामाक्रूरयुतोनृप ॥ रथेनवायुवेगेन कालिन्दीमघनाशिनीम् ३८ तत्रोपस्पृश्यपानीयं पीत्वामृष्टंमणिप्रभम् ॥ वृक्षषण्डमुपव्रज्यसरामोरथमाविशत् ३९ अक्रूरस्तावुपामन्त्र्य निवेश्यचरथोपरि ॥ कालिन्द्याह्रदमागत्यस्नानंविधिवदाचरत् ४० निमज्ज्यतस्मिन्सलिले जपन्ब्रह्मसनातनम् ॥ तावेवददृशेऽक्रूरोरामकृष्णौसमन्वितौ ४१ तौरथस्थौकथमिहसुतावानकदुन्दुभेः ॥ तर्हिस्वित्स्यन्दनेनस्तइत्युन्मज्ज्यव्यचष्टसः ४२ तत्रापिचयथापूर्वमासीनौपुनरेवसः ॥ न्यमज्जद्दर्शनंयन्मे मृषाकिंसलिलेतयोः ४३ भूयस्तत्रापिसोऽद्राक्षीत् स्तूयमानमहीश्वरम् ॥ सिद्धचारणगन्धर्वैरसुरैर्नतकन्धरैः ४४ सहस्रशिरसंदेवं सहस्रफणमौलिनम् ॥ नीलाम्बरंविसश्वेतंशृङ्गैःश्वेतमिवस्थितम् ४५ तस्योत्सङ्गेघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ पुरुषंचतुर्भुजंशान्तं पद्मपत्रारुणेक्षणम् ४६ चारुप्रसन्नवदनं चारुहासनिरीक्ष

आज्ञा मागिके यमुना के तीर पै आयके विधिपूर्व्वक स्नान करतभये ४० ता जल में गोता मारिके गायत्री को जपकरत अक्रूरजी राम कृष्ण को देखत भये ४१ वसुदेव के पुत्र रामकृष्ण रथ में वैठे हैं यहां कैसे आयगये कदाचित् रथ में से उतर तों न आये मैं निकसि के देखों तो या प्रकार अक्रूरजी कहतभये ४२ फेरि अक्रूरजी निकसि के देखें तो पहिलेकीसी नाई रथ में वैठे हैं ता समय अक्रूरजी विस्मित होतभये कि जो जलके भीतर मोकों दोनोंको दर्शन भयो सो कहा मिथ्या है ऐसे विचारि के फेरि गोता मारत भये तव सिद्ध चारण गन्धर्व्व असुर नतक सम्पूर्ण स्तुतिकरे हैं शेषजी विराजमान हैं ऐसे देखत भये ४३ । ४४ हजार हैं शिर जिनके मुकुटसहित हजार फण हैं नील वस्त्र कूं धारण करे कमल के नालकी तुल्य श्वेत हैं वर्ण जिनको ऐसे कैलास की तुल्य प्रकाशमान देखत भये ४५ कुण्डली करिके विराजमान तिनके ऊपर मेघों के समान श्याम पीतवस्त्रन कों धारण करे चार हैं भुजा जिनके शान्तस्वरूप पुरुष कमल के पत्ताकी तुल्य हैं अरुण नेत्र जिनके ४६ सुन्दर प्रसन्नहै मुख जिनको सुन्दर हासभरी चितवनि सुन्दर भृकुटी और नासिका सुन्दर कर्ण सुन्दर कपोल और अरुण ओष्ठ लम्बी मोटी है भुजा जिनकी विशाल हृदयमें लक्ष्मी

जिनके विराजमान गोल ग्रीवा त्रिवली जावै परिरहीं ऐसी सुन्दर जिनकी नाभि पीपर के पत्ता की तुल्य चिकनो उदर ४७ । ४८ बृहत् जिनकी कमर और श्रोणी ता करिके शोभायमान हैं दोनों गाठें जंघा जिनकी लम्बी हैं दोनों गुल्फ जिनकी लाल हैं नख जिनके प्रकाश करिके सुन्दर हैं कोमल अंगुली और अंगूठे तिनसूं सुन्दर है चरणकमल जिनको ४९ । ५० बहुत मोलन के जे मणि हैं तिनसों जटित जो किरीट कड़े बाजूबन्द और कमर में करधनी यज्ञोपवीत मोतिन के हार चरणन में नूपुर कानन में कुण्डल तिनसूं प्रकाशमान हैं ५१ कमल और शङ्ख चक्र गदाकूं धारण किये भृगुलता को चिह्न जाकी छाती में प्रकाशमान कौस्तुभमणिकी जिनके धुकधुकी वनमाला धारे ५२ सुनन्द नन्द जिनमें मुखिया ऐसे पार्षद सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार ब्रह्मा महादेव ते आदिलेके देवताओं के स्वामी मरीचि को आदिलेके जो नव ब्राह्मण प्रह्लाद नारद वसु जिनमें मुख्य ऐसे उत्तमभक्त हैं ते न्यारे न्यारे भावते निर्म्मल वचननते जिनकी स्तुति

णम् ॥ सुभ्रून्नसंचारुकर्णसुकपोलारुणाधरम् ४७ प्रलम्बपीवरभुजं तुङ्गांसोरःस्थलाश्रियम् ॥ कम्बुकण्ठंनिम्ननाभिं वलिमत्पल्लवोदरम् ४८ बृहत्कटितट श्रोणिकरभोरुद्वयान्वितम् ॥ चारुजानुयुगंचारु जङ्घायुगलसंयुतम् ४९ तुङ्गगुल्फारुणनखव्रातदीधितिभिर्वृतम् ॥ नवाङ्गुल्यङ्गुष्ठदलैर्विलसत्पादपङ्कजम् ५० सुमहार्हमणिव्रातकिरीटकटकाङ्गदैः ॥ कटिसूत्रब्रह्मसूत्रहारनूपुरकुण्डलैः ५१ भ्राजमानंपद्मकरं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥ श्रीवत्सवक्षसम्भ्राजत्कौस्तुभंवनमालिनम् ५२ सुनन्दनन्दप्रमुखैः पार्षदैःसनकादिभिः ॥ सुरेशैर्ब्रह्मरुद्राद्यैर्नवभिश्चद्विजोत्तमैः ५३ प्रह्लादनारदवसुप्रमुखैर्भागवतोत्तमैः ॥ स्तूयमानंपृथग्भावैर्वचोभिरमलात्मभिः ५४ श्रियापुष्ट्यागिराकान्त्या कीर्त्यातुष्ट्येलयोर्ज्जया ॥ विद्ययाऽविद्ययाशक्त्या माययाचनिषेवितम् ५५ विलोक्यसुभृशंप्रीतोभक्त्यापरमयायुतः ॥ हृष्यत्तनूरुहोभावपरिक्लिन्नात्मलोचनः ५६ गिरागद्गदयाऽस्तौषीत्सत्त्वमालम्ब्यसात्वतः ॥ प्रणम्यमूर्ध्नाऽवहितःकृताञ्जलिपुटःशनैः ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥ ❀ ॥

अक्रूरउवाच ॥ नतोऽस्म्यहन्त्वाऽखिलहेतुहेतुं नारायणंपूरुषमाद्यमव्ययम् ॥ यन्नाभिजातादरविन्दकोशाद्ब्रह्माविरासीद्यतएषलोकः १ भूस्तोयम

करे हैं ५३ । ५४ श्री पुष्टि वाणी कान्ति कीर्ति तुष्टि इला ऊर्ज्जा विद्या अविद्या शक्ति माया ये जिनकों निरन्तर सेवन करेंहैं ५५ ऐसे परिपूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके अत्यन्त प्रसन्न होयके परमभक्ति जिनकों भई आनन्द ते देह में रोमाञ्च जिनके भये भक्ति सूं नेत्रन में आंसू भरि आये ऐसे अक्रूरजी माथेसूं प्रणाम करिके सावधान होयके हाथजोरिके हौलेसे सत्त्वगुण को आश्रय लैके गद्गदवाणी सू स्तुति करतभये ५६ । ५७ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरप्रतियानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(चत्वारिंशेततोऽक्रूरः कृष्णंमत्वेश्वरेश्वरम् ॥ प्रणम्यभक्त्यातुष्टाव सगुणागुणभेदतः १ चालीसवें अध्याय में अक्रूरजी कृष्णजी को ईश्वरों के ईश्वर मानकर सगुण और निर्गुणभेद ते भक्ति सूं प्रणामकर स्तुति करतेभये १) अब अक्रूरजी कहेहैं समस्त कारणनके कारण नारायण आदिपुरुष अविनाशी जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार करूंहूं जिनकी नाभि में भयो जो कमल तातें

ब्रह्मा होत भयो ता ब्रह्माते यह लोक उत्पन्न भयो १ पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश अहङ्कार महत्तत्त्व पुरुष मन इन्द्रिय समस्त इन्द्रियन के अर्थ विषय सम्पूर्ण देवता ये जगत् के कारण हैं ते तुम्हारे अंग ते भये हैं २ ब्रह्मा ते आदिलैके जड़ जो सम्पूर्ण तत्त्व हैं ते अपने स्वरूप कों नहीं जाने हैं जीव है सो तत्त्वन को जाने है अपने स्वरूप कों जाने है माया के गुणन ते बँधो जीव गुणन ते न्यारो ऐसो जो तुम्हारो स्वरूपहै ताहि नहीं जाने है ३ ब्रह्मा के उपासकहैं ते महापुरुष ईश्वर तुम हो तुम्हारी पूजा करेहै इन्द्रिय पञ्चभूत देवता इनके साक्षी अन्तर्यामी जो तुमहो तिन की साधु पूजा करे हैं ४ कोई एक कर्म्मन में निष्ठा जिनकी ऐसे जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य है ते ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद हैं तिनसों यज्ञन को विस्तार करिके अनेक हैं रूप जिनके ऐसे देवतान को नाम लैलै के पूजनकरे हैं ५ कोई एक ज्ञानी पुरुष समस्तकर्म्मनको त्यागिके समाधि में आय के ज्ञानरूप जो तुमहो तिनको पूजन करे है ६ और जे पुरुष है ते विष्णुकी दीक्षा लैके तुमहीं हो

ग्निःपवनःखमादिर्महानजादिर्मनइन्द्रियाणि ॥ सर्वेन्द्रियार्थाविबुधाश्चसर्व्वेयेहेतवस्तेजगतोऽङ्गभूताः २ नैतेस्वरूपंविदुरात्मनस्ते ह्यजादयोऽनात्मतया गृहीताः ॥ अजोऽनुबद्धःसगुणैरजायागुणात्परंवेदनतेस्वरूपम् ३ त्वांयोगिनोयजन्त्यद्धा महापुरुषमीश्वरम् ॥ साध्यात्मंसाधिभूतञ्चसाधिदैवञ्चमाधवः ४ त्रय्याचविद्ययाकेचित्त्वांवैवैतानिकाद्विजाः ॥ यजन्तेविततैर्यज्ञैर्नानारूपामराख्यया ५ एकेत्वाऽखिलकर्म्माणिसंन्यस्योपशमंगताः ॥ ज्ञानिनोज्ञानयज्ञेनयजन्तिज्ञानविग्रहम् ६ अन्येचसंस्कृतात्मानोविधिनाऽभिहितेनते ॥ यजन्तित्वन्मयास्त्वांवै बहुमूर्त्त्यैकमूर्त्तिकम् ७ त्वामेवान्येशिवोक्तेन मार्गेणशिवरूपिणम् ॥ बह्वाचार्यविभेदेनभगवन्समुपासते ८ सर्व्वएवयजन्तित्वां सर्वदेवमयेश्वरम् ॥ येऽप्यन्यदेवताभक्तायद्यप्यन्यधियःप्रभो ९ यथाद्रिप्रभवानद्यः पर्जन्यापूरिताःप्रभो ॥ विशन्तिसर्व्वतःसिन्धुं तद्वत्त्वांगतयोऽन्ततः १० सत्त्वंरजस्तमइति भवतःप्रकृतेर्गुणाः ॥ तेषुहिप्राकृताःप्रोता आब्रह्मस्थावरादयः ११ तुभ्यंनमस्तेऽस्त्वविषक्तदृष्टये सर्व्वात्मनेसर्व्वधियाञ्चसाक्षिणे ॥ गुणप्रवाहोऽयमविद्ययाकृतः प्रवर्त्ततेदेवनृतिर्यगात्मसु १२ अ

एक मुख्य ऐसे वैष्णव हैं ते तुमने कही जो नारदपञ्चरात्र में पूजाकी विधि है तासूं वासुदेव सङ्कर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध इन भेदनकरिके बहुत जिनके रूप नारायण रूप करिके एक जिनको रूप ऐसे तुमहो तिनकी पूजा करैहैं ७ और जे पुरुष हैं शिवने कह्यो जो मार्गहै तासूं शिवरूप जो तुमहो तिनकी हे भगवन्! अनेक प्रकारके हैं भेद जाके ऐसो शैवमार्ग पाशुपतमार्ग है ता करिके उपासना करे हैं ८ हे सर्वदेवतारूप! हे समर्थ! जे पुरुष और देवतान के भक्त हैं और देवनान में उनके मन लगि रहे हैं वे सबही ईश्वर तुमहो तिनकी पूजाकरे हैं ९ हे प्रभो! जैसे पर्व्वतन ते निकसी मेघ ने जलसूं पूर्णकरी ऐसी नदी चारों ओर ते बहि बहिके समुद्र में जा मिली हैं तैसे सब देवतान के मार्ग अन्तमें तुमही में आय मिले हैं १० तुम्हारी जो प्रकृति माया ताके सत्त्व रज तम ये तीनों गुणहैं तिन तीनों गुणनमें ब्रह्म ते आदिलैके ब्रह्मापर्यन्त सब जीव प्रविष्ट भये हैं अर्थात् तीनों गुणन में रहे हैं वे गुण मायामें रहे हैं या क्रमते जो उपाधि को नाशहै ताते सब जीव तुमही में प्रवेश करे हैं ११ संसार में नहीं लिप्त है बुद्धि जिनकी सब के आत्मा सब प्राणीन के बुद्धि के साक्षी तुमहो तिनको नमस्कार है अविद्याको भयो गुण को प्रभाव संसार देवता मनुष्य पशु पक्षी

ये देह जिनकी ऐसे प्राणी हैं तिनमें संसार वर्ते है १२ अग्नि तुम्हारो मुखहै पृथ्वी तुम्हारो चरणहै सूर्य्य नेत्र आकाश नाभि दिशा कानहैं स्वर्ग मस्तकहै देवता तुम्हारी भुजाहैं और समुद्र कोंखि हैं पवन प्राणरूप बलरूप कल्पना करो १३ वृक्ष ओषधि देह के रोम हैं मेघ तुम्हारे केशहैं पर्वत तुम्हारे हाड़ और नखहैं रात्रि दिन पलकनको खोलिबो मूंदिबो है प्रजापति तुम्हारो मेढ़्रहै वर्षा तुम्हारो वीर्य्य कहे हैं १४ तुम जो अविनाशी पुरुषहो तिनमें पालन सहित लोकहैं ते रचे हैं बहुत जीवन करिके व्याप्त हैं जैसे जलमें छोटे छोटे कीड़ा चले हैं गूलर में भुनगा उड़े हैं ऐसे मनकी वृत्ति ते जानिबे में आवो जो तुमहो तिनमें अनन्त ब्रह्माण्ड फिरे हैं १५ या संसार में खेलिबे के लिये जो जो रूप धरे हैं तिनसों दूरभये हैं शोक जिनके ऐसे लोकहैं ते आनन्दसूं तुम्हारे यशको गावे हैं १६ सत्यव्रत को माया दिखायबे के लिये मत्स्यरूप धरिके मलय के समुद्र में विचरे जो तुमहो तिनको नमस्कार है मधुकैटभ दैत्यनको मारिबे के लिये हयग्रीव रूप जिनने धर्यो ऐसे

ग्निर्मुखन्तेऽवनिरङ्घ्रिरीक्षणं सूर्य्योनभोनाभिरथोदिशःश्रुतिः ॥ द्यौःकंसुरेन्द्रास्तवबाहवोऽर्णवाः कुक्षिर्मरुत्प्राणबलंप्रकल्पितम् १३ रोमाणिवृक्षौषधयःशिरोरुहामेघाःपरस्यास्थिनखानितेऽद्रयः ॥ निमेषणंरात्र्यहनीप्रजापतिर्मेढ्रस्तुवृष्टिस्तववीर्य्यमिष्यते १४ त्वय्यव्ययात्मन्पुरुषेप्रकल्पितालोकाःसपालाबहुजीवसंकुलाः ॥ यथाजलेसंजिहतेजलौकसोऽप्युदुम्बरेवामशकामनोमये १५यानियानीहरूपाणिक्रीडनार्थंबिभर्षिहि ॥ तैरामृष्टशुचोलोकामुदागायन्तितेयशः १६ नमःकारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचरायच ॥ हयशीर्ष्णेनमस्तुभ्यंमधुकैटभमृत्यवे १७ अकूपारायबृहते नमोमन्दरधारिणे ॥ क्षित्युद्धारविहाराय नमःशूकरमूर्त्तये १८ नमस्तेऽद्भुतसिंहायसाधुलोकभयापह ॥ वामनायनमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनायच १९ नमोभृगूणांपतये दृप्तक्षत्रवनच्छिदे ॥ नमस्तेरघुवर्य्याय रावणान्तकरायच २० नमस्तेवासुदेवायनमःसङ्कर्षणायच ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतांपतयेनमः २१ नमोबुद्धायशुद्धायदैत्यदानवमोहिने ॥ म्लेच्छप्रायक्षत्रहन्त्रेनमस्तेकल्किरूपिणे २२ भगवञ्जीवलोकोऽयंमोहितस्तवमायया ॥ अहंममेत्यसद्ग्राहो भ्राम्यतेकर्म्मवर्त्मसु २३ अहं

जो तुमहो तिनको नमस्कार है १७ मन्दराचल पर्वत के धारण करनवारे वड़े कच्छपरूप तुमहो तिनकूं नमस्कार है पृथ्वी के लायवे के लिये वराहरूप जिनने धर्यो ऐसे जो तुमहो तिनकूं नमस्कार है १८ साधुन के भयके दूर करनवारे अद्भुत नृसिंहरूप जिनने धरयो ऐसे जो तुमहो तिन कूं नमस्कार है वामन होयकै तीनों लोक जिनने नापे ऐसे जो तुमहो तिनें नमस्कार है १९ गर्वीलो जो क्षत्रियरूप वन है ताके काटनवारे भृगुवंशीन के पति परशुरामरूप तुम हो तिनको नमस्कार है रावण के मारनवारे रघुवंशीन में श्रेष्ठ रामचन्द्ररूप तुम हो तिनको नमस्कार है २० यादवों के पति वासुदेवरूप तुम हो तिनें नमस्कार है सङ्कर्षणरूप तुम हो तिनें नमस्कार है प्रद्युम्नरूप तुमहो तिनें नमस्कार है अनिरुद्धरूप तुमहो तिनें नमस्कार है २१ दैत्य दानवन के मोहन करनवारे शुद्ध बुद्धरूप जो तुम हो तिनें नमस्कार है म्लेच्छ क्षत्रिय होय जाय हैं तिनें मारोगे ऐसे कल्कीरूप तुमहो तिनें नमस्कार है २२ हे भगवन्! यह जीव तुम्हारी मायामें भूलि रह्योहै मैं मेरो

ऐसे देह गेहादिक में और कर्ममार्गन में भ्रमणकरे है २३ हे विभो ! आत्मा कहिये देह पुत्र घर स्त्री धन भय्या बन्धु इत्यादिक जो स्वप्नकी तुल्य तिनकों सत्य मानिके भ्रमोहूं २४ अनित्य आत्मा दुःखरूपहैं तिनकूं नित्य आत्मा सुखरूप जानूं हूं सुख दुःख में है क्रीडा जाके अज्ञान जामें भरो ऐसो जो मैं हूं सो अपने प्यारे जो तुमहो तिनको नहीं जानूं हूं २५ जैसे अज्ञानी पुरुष काहूसों ढंक्यो जलहै ताकों छोडि के सूर्य्य की किरणन सों वारू चमके तामें जलके लिये जायहै तैसे माया सूं ढंके तुम हो तिनको त्यागिके देहादिकन में लगि रह्यो है २६ कृपणहै बुद्धि जाकी अर्थात् विषयन में लगिरही है बुद्धि जाकी ऐसो मैं कामकर्म्मन सूं चलायमान मन है ताके रोकिने में नहीं समर्थ हौं जोरावर इन्द्रिय मन कूं इत उत चलायमान करे हैं २७ जो मैं पराधीन हौं सो तुम्हारे चरणन की शरण आयो हौं तुम्हारे चरणन की शरणागत असाधुन को दुर्लभ है हे अन्तर्य्यामी ! तुम्हारे चरणन की शरण तुम्हारी कृपाते भयो है यह मैं मानूं हूं पुरुषको जब संसार छूटनहार होय है तब हे कमलनाभ ! साधुन की सेवा करे है साधुन की सेवा ते तुम में आयके मति लगे है तुम्हारी कृपा बिना साधुनकी सेवा भी नहीं बने है तुम में मतिहू नहीं लगिसकेहै २८ विज्ञानहै

चात्मात्मजागारदारार्थस्वजनादिषु ॥ भ्रमामिस्वप्नकल्पेषु मूढःसत्यधियाविभो २४ अनित्यानात्मदुःखेषु विपर्य्ययमतिर्ह्यहम् ॥ द्वन्द्वारामस्तमोविष्टोन जानेत्वात्मनःप्रियम् २५ यथाऽबुधोजलंहित्वा प्रतिच्छन्नंतदुद्भवैः ॥ अभ्येतिमृगतृष्णां वै तद्वत्त्वाऽहंपराङ्मुखः २६ नोत्सहेऽहंकृपणधीः कामकर्म्महतंमनः ॥ रोद्धुंप्रमाथिभिश्चाक्षैर्ह्रियमाणमितस्ततः २७ सोऽहंतवाङ्घ्र्युपगतोऽस्म्यसतांदुरापं तच्चाप्यहंभवदनुग्रहईशमन्ये ॥ पुंसोभवेद्यर्हिसंसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभसदुपासनयामतिःस्यात् २८ नमोविज्ञानमात्राय सर्व्वप्रत्ययहेतवे ॥ पुरुषेशप्रधानायब्रह्मणेऽनन्तशक्तये २९ नमस्तेवासुदेवाय सर्व्वभूतक्षयायच ॥ हृषीकेशनमस्तुभ्यं प्रपन्नंपाहिमांप्रभो ३० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरस्तुतिर्नामचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ स्तुवतस्तस्यभगवान् दर्शयित्वाजलेवपुः ॥ भूयःसमाहरत्कृष्णोनटोनाट्यमिवात्मनः १ सोऽपिचान्तर्हितंवीक्ष्य जलादुन्मज्ज्य

मूर्त्ति जिनकी समस्त ज्ञानके कारण पुरुष काल माया इनरूप ब्रह्म जो तुमहो और अनन्त जिनकी शक्ति तिनकों मैं नमस्कारकरूंहूं २९ हे समर्थ ! हे इन्द्रियनके प्रेरण वारे चित्तके अधिष्ठाता ! सब प्राणीन के आश्रय जो तुमहो तिनकूं मैं नमस्कार करों हूं और शरण आयो जो मैंहूं ताकी रक्षाकरो ३० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेऽक्रूरस्तुतिर्नामचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥

(एकचत्वारिंशकेऽहन्रजकंप्रविशन्पुरीम् ॥ ततोवरानदात्तुष्टःसुदाम्नोवायकस्यच १ सशङ्कमक्रूरमनःप्रबोध्यस्वधामसन्दर्शनसत्कृपातः ॥ स्वराजधानींमथुरामपश्यदलंकृतानन्तमहोत्सवाढ्याम् २)

इकतालीसवें अध्याय में कृष्णजी मथुरापुरी में प्रवेशकर धोबी को मारकर सुदामा माली को प्रसन्नहोकर वर देतेभये १ और शङ्कासमेत अक्रूरजी के मन को समझाकर अपने धामके दर्शन की अच्छी दयासूं अलंकृत अपार भारी उत्सवों सों युक्त अपनी राजधानी मथुराजीको देखतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! स्तुतिकरें जो अक्रूरहै तिनको भगवान् जलके भीतर रूप दिखायके फेर समेटतभये जैसे नट अपने स्वागको दिखायके समेटे है १ अक्रूरजी श्रीकृष्णचन्द्रको जलमें ते अन्तर्द्धान भये देखिके उछरि के जल्दी देसी सम्पूर्ण सन्ध्योपासन करिके आ-

श्चर्य मानि के रथ में आवत भये २ श्रीकृष्ण अक्रूरजी सूं पूछत भये पृथ्वी में आकाशमें जलमें तुमने आश्चर्य सों कहा देख्यो है कछु आश्चर्य देखो होय ऐसे मोहिं देखौ हौ ३ या संसार में पृथ्वी में आकाश में जलमें आश्चर्य हैं ते सब आश्चर्य विश्वरूप तुम हौ तिन में भरे हैं तुम्हारो दर्शन करो मैंने कहा आश्चर्य नहीं देख्यो या प्रकार अक्रूरजी कहतभये ४ तो तुम में सब आश्चर्य भरे है तिन तुम्हारो दर्शन मैंने कियो हे ब्रह्मन्! पृथ्वीमें आकाश में या जलमें कहा आश्चर्य देखिबो बाकी रह्योहै ५ ऐसे कहि के गान्दिनी के पुत्र अक्रूरजी रथको हाँकत भये तीसरे पहर के समय रामकृष्ण कूं मथुरापुरी में लावत भये ६ हे राजन् परीक्षित्! मार्ग में ग्राम के रहनवारे पुरुष तहाँ तहाँ आय के वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण बलदेव कों देखि के प्रसन्न होय के वा रूप में दृष्टि लगाय के नहीं निकासत भये अर्थात् देखतही ठाढे रहि गये ७ तब ताई नन्द गोप सू आदि लेके सब व्रजवासी आगे आयके मथुराके बागमें कृष्ण बलदेवके आयवे को पैंडो देखत ठाढे होत

सत्वरः ॥ कृत्वाचावश्यकंसर्वं विस्मितोरथमागमत् २ तमपृच्छद्धृषीकेशः किन्तेदृष्टमिवाद्भुतम् ॥ भूमौवियतितोयेवा तथात्वांलक्षयामहे ३ अक्रूरउवाच ॥ अद्भुतानीहयावन्ति भूमौवियतिवाजले ॥ त्वयिविश्वात्मकेतानि किम्मेऽदृष्टंविपश्यतः ४ यत्राद्भुतानिसर्वाणि भूमौवियतिवाजले ॥ तंत्वाऽनुपश्यतोब्रह्मन् किम्मेदृष्टमिहाद्भुतम् ५ इत्युक्त्वाचोदयामास स्यन्दनंगान्दिनीसुतः ॥ मथुरामनयद्रामं कृष्णञ्चैवदिनात्यये ६ मार्गेग्रामजनाराजंस्तत्रतत्रोपसङ्गताः ॥ वसुदेवसुतौवीक्ष्य प्रीतादृष्टिंनचाददुः ७ तावद्व्रजौकसस्तत्रनन्दगोपादयोऽग्रतः ॥ पुरोपवनमासाद्य प्रतीक्षन्तोऽवतस्थिरे ८ तान्समेत्याहभगवानक्रूरंजगदीश्वरः ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रश्रितंप्रहसन्निव ९ भवान्प्रविशतामग्रे सहयानःपुरींगृहम् ॥ वयंत्विहावमुच्याथ ततोद्रक्ष्यामहे पुरीम् १० अक्रूरउवाच ॥ नाहंभवद्भ्यांरहितः प्रवेक्ष्येमथुरांप्रभो ॥ त्यक्तुन्नार्हसिमांनाथ भक्तंनेभक्तवत्सल ११ आगच्छयामगेहान्नः सनाथान्कुर्वधोक्षज ॥ सहाग्रजःसगोपालैः सुहृद्भिश्चसुहृत्तमः १२ पुनीहिपादरजसा गृहान्नोगृहमेधिनाम् ॥ यच्छौचेनानुतृप्यन्ति पितरःसाग्नयःसुराः १३ अवनिज्याङ्घ्रियुगलमासीच्छ्लोक्योबलिर्महान् ॥ ऐश्वर्यमतुलंलेभे गतिंचैकान्तिनांतुया १४ आपस्तेऽङ्घ्र्यवनेजन्यस्त्रींल्लोकाञ्छुचयोऽपुनन् ॥ शिरसाधत्तयाःशर्वः

भये ८ जगत्के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण तिन व्रजवासीनके पास आयके नम्र जे अक्रूर हैं तिनको हाथ ते हाथ पकरि मुसिकात से बोलत भये ९ हे काका! तुम आगे रथ कूं लिवाय पुरी में जावो अपने घर जावो हम यहाँ तनिक विश्राम लैके पीछे मथुरापुरी कूं देखेंगे या प्रकार श्रीकृष्ण भगवान् कहतभये १० अब अक्रूरजी कहे हैं हे प्रभो! तुम विना अकेलो मथुरापुरीमें न जाऊंगो हे नाथ! हे भक्तन के ऊपर हित के करनवारे! तुम्हारो भक्त हूं ताय त्यागो मति ११ तुम आवो हम तुम घरचलें हे अधोक्षज! हे सुहृदन में उत्तम! अपने बलदेव भय्यासहित और ग्वालबालन सहित हमारे घर चलिके हमें सनाथकरो १२ तुम चरणनकी रज सूं हम गृहस्थन के घरकूं पवित्रकरो तुम्हारो चरणन को धोवन तासूं पितृ अग्नि देवता तृप्त होयहैं १३ तुम्हारो चरणयुगल धोइके राजा बलि को बड़ो पवित्र यश होतभयो बड़े ऐश्वर्य कों प्राप्तभयो अनन्यभक्तनको जो गति मिलै है ताय पावतभयो १४ तुम्हारे चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गारूप होयके

त्रिलोकी कूं पवित्र करे है जिन जलन कूं शिवजी अपने शिरपै धारण करे हैं जिन जलन के स्पर्शते साठि हजार राजा सगरके पुत्र स्वर्ग कूं गये १५। १६ अब श्रीकृष्ण भगवान् बोले बड़े भय्या बलदेवजी कों संग लैके मैं तुम्हारे घर आऊंगो यादवन सों द्रोह करे जो कंसहै ताय मारिके सुहृदनको प्रिय विस्तार करूंगो १७ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण को वचन कह्यो सुनिके अक्रूरजी विमन होयके पुरी में जायके रामकृष्ण कूं लेआयो ऐसे कंस ते कहिके अपने घर कूं जातभये १८ या पीछे तीसरे पहर के समय बलदेव भय्या सहित भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र गोपन कूं सङ्गलैके देखिबे के लिये मथुरापुरी में जातभये १९ अब मथुरापुरी को कृष्ण ने देख्यो ताकों वर्णन करे हैं स्फटिकमणिन के ऊंचे शहरपनाह के और घरन के द्वार बनेहैं तिनमें बड़े बड़े सोने के किवार चढ़े हैं और बन्दनवार बंधे हैं ताबेके पीतरके अन्न भरिबे के कोठे बने हैं चारोंओर चौड़ी खाई बनी है उद्यान दूरिके बाग रमणीय निकट के बाग तिनसों अतिशोभायमान पुरीहै २० सुवर्णके चौर-

स्वर्यातःसगरात्मजाः १५ देवदेवजगन्नाथ पुण्यश्रवणकीर्तन ॥ यदूत्तमोत्तमश्लोक नारायणनमोऽस्तुते १६ श्रीभगवानुवाच ॥ आयास्येभवतोगेहम हमार्य्यसमन्वितः ॥ यदुचक्रद्रुहंहत्वा वितरिष्येसुहृत्प्रियम् १७ श्रीशुकउवाच ॥ एवमुक्तो भगवता सोऽक्रूरोविमनाइव ॥ पुरींप्रविष्टःकंसायकर्मावेद्यगृहंय यौ १८ अथापराह्णेभगवान् कृष्णःसङ्कर्षणान्वितः ॥ मथुरांप्राविशद्गोपैर्दिदृक्षुःपरिवारितः १९ ददर्शतांस्फाटिकतुङ्गगोपुरद्वारांबृहद्धेमकपाटतोरणाम् ॥ ताम्रारकोष्ठांपरिखादुरासदामुद्यानरम्योपवनोपशोभिताम् २० सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कुटैः श्रेणीसभाभिर्भवनैरुपस्कृताम् ॥ वैदूर्य्यवज्रामलनीलविद्रु मैर्मुक्ताहरिद्भिर्वलभीषुवेदिषु २१ जुष्टेषुजालामुखरन्ध्रकुट्टिमेष्वाविष्टपारावतबर्हिनादिताम् ॥ संसिक्तरथ्यापणमार्गचत्वरां प्रकीर्णमाल्याङ्कुरलाजतण्डुला म् २२ आपूर्णकुम्भैर्दधिचन्दनोक्षितैः प्रसूनदीपावलिभिःसपल्लवैः ॥ सवृन्दरम्भाक्रमुकैःसकेतुभिःस्वलंकृतद्वारगृहांसपट्टिकैः २३ तांसंप्रविष्टौवसुदेवन न्दनौ वृतौवयस्यैर्नरदेववर्त्मना ॥ द्रष्टुंसमीयुस्त्वरिताःपुरस्त्रियोहर्म्याणिचैवारुरुहुर्नृपोत्सुकाः २४ काश्चिद्विपर्य्यग्धृतवस्त्रभूषणाविस्मृत्यचैकंयुगलेष्व

र्ण के और माहूकारानके महल और बडेबड़े कारीगर मनुष्यन के मकान तिन करिके शोभायमान पुरी है वैडूर्यमणि हीरा निर्म्मल नीलमणि मूंगा मोती पन्ना इनके काम जिन में भये महलन के छज्जे हैं २१ जाली झरोखान में बैठे परेवा मोर जहां बोले हैं तिनको शोर होयरह्यो है छिरकाउ जिनमें भये ऐसे राजमार्ग चौराहे गली जामें बने हैं तिनमें पुष्पनकी माला अंकुर धानकी खीलें चावल ये मंगलद्रव्य फैलि रहे हैं २२ दही चन्दनसूं छिरके फूल जिनपै धरे ऊपर दीवानकी पंक्ति धरी आमकी डार जिनपै धरी ध्वजा जिनमें फहराय दरियाई के कपड़ा जिनकी नारि सों बंधे गुच्छों सहित केरा के वृक्ष सुपारी के वृक्ष जिनके पास लगे ऐसे जल के भरे कलश द्वारेनके ऊपर धरे ऐसी शोभायमान पुरीहै २३ बराबर के मित्रन कू संगलैके मथुरापुरी के बीच बाजार में होयके निकसे जे वसुदेवके पुत्र श्रीकृष्ण बलदेवहैं तिनके देखिबे कों पुर की स्त्री दौरि दौरिके आवति भई हे राजन् परीक्षित्! देखिबे की इच्छा भई जिनकों वे स्त्री महलन पै चढ़तिभई २४ कोई

स्त्री उतावल के मारे ओढ़नीन कों पहिर के लहँगान कों ओढ़िके हाथन के गहने पांवन में पहिरके आवत भई कोई एक स्त्री एक हाथ में एक पांव में गहनो पहिर के आवतभई कोई एक स्त्री एक कानमें करनफूल पहिरके एक पाव में पाइजेव पहिरके आवत भई और स्त्री एकही आखिमें काजल लगायके आवतभई २५ कोई एक स्त्री भोजन करैहीं ताकूं छोड़िके आवतभई कहूँ व्याहहोयरहो होजब कृष्ण बलदेव आये सुने तब देखिवेकों दूल्हो आपको भाज्यो दुलहिन आपकों भाजी वराती आपकों भाजे और कोई स्त्री आगनमें तेल लगावेहीं वे बिना स्नान करेही आवतिभई कोई सोवत सूं उठिके आवति भई कोई स्त्री अपने वालकन कों दूध प्यावेहीं कृष्ण बलदेव आये सुने तब उनको रोवते छोड़िके आवत भई मानों बालक या लिये रोवें हैं तुम तो दर्शनकरिवे कों चली हमें क्यों छोड़े जाउहो हमकों हूं लेचलो २६ मतवारे हाथीकीतुल्य पराक्रम जिनको ऐसे कमलदललोचन श्रीकृष्णचन्द्र ढिठाई लीलापूर्व्वक हँसनि चितवनि सूं तिन स्त्रीनके मन चुरावतभये लक्ष्मीको रमावें

थापराः ॥ कृतैकपत्रश्रवणैकनूपुरानाङ्क्त्वाद्वितीयंत्वपराश्चलोचनम् २५ अश्नन्त्यएकास्तदपास्यसोत्सवा अभ्यज्यमानाअकृतोपमज्जनाः ॥ स्वपन्त्यउत्थायनिशम्यनिःस्वनं प्रपाययन्त्योऽर्भमपोह्यमातरः २६ मनांसितासामरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितावलोकनैः ॥ जहारमत्तद्विरदेन्द्रविक्रमोदृशांददच्छ्रीरमणात्मनोत्सवम् २७ दृष्ट्वामुहुःश्रुतमनुद्रुतचेतसस्तं तत्प्रेक्षणोत्स्मितसुधोक्षणलब्धमानाः ॥ आनन्दमूर्त्तिमुपगुह्यदृशात्मलब्धं हृष्यत्त्वचोजहुरनन्तमरिन्दमाधिम् २८ प्रासादशिखरारूढाः प्रीत्युत्फुल्लमुखाम्बुजाः ॥ अभ्यवर्षन्सौमनस्यैःप्रमदाबलकेशवौ २९ दध्यक्षतैःसोदपात्रैः स्रग्गन्धैरभ्युपायनैः ॥ तावानर्चुःप्रमुदितास्तत्रतत्रद्विजातयः ३० ऊचुःपौराअहोगोप्यस्तपःकिमचरन्महत् ॥ याह्येतावनुपश्यन्ति नरलोकमहोत्सवौ ३१ रजकंकञ्चिदायातं रङ्गकारंगदाग्रजः ॥ दृष्ट्वाऽयाचतवासांसि धौतान्यत्युत्तमानिच ३२ देह्यावयोःसमुचितान्यङ्गवासांसिचार्हतोः ॥ भविष्यतिपरंश्रेयोदातुस्तेनात्रसंशयः ३३ सयाचितोभगवता परिपूर्णेनसर्वतः ॥ साक्षेपंरुषितःप्राहभृत्योराज्ञःसुदुर्मदः ३४ ईदृशान्येववासांसि नित्यंगिरिवनेचराः ॥ परिधत्त

ऐसो अपनो रूपहै तासूं तिन स्त्रीनकी आखिनकों आनन्द देत भये २७ वेर वेर वातें सुनिके ता श्रीकृष्णमें लगे हैं चित्त जिनके और तिनकी चितवनि मुसिकानिरूपी अमृतको जो सींचिवो है ता सों पायो है सत्कार जिनने रोमाञ्च जिनके होय आये ऐसी स्त्री श्रीकृष्णकों देखिके नेत्रद्वारा हृदय में ले जायके आनन्दरूप श्रीकृष्ण को आलिङ्गन करिके हे काम लोभादिकन को दण्ड देनवारे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण के विना मिले तें भई जो कामदेवकी पीड़ा है ताकों त्यागत भई २८ महलन की शिखर पै चढ़ी प्रसन्नता सों प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री बलदेव श्रीकृष्ण के ऊपर फूल वर्षावत भई २९ दही अक्षत जलके भरे पात्र माला चन्दन भेंट लैके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य प्रसन्न होय के कृष्ण बलदेव कूं पूजन करत भये ३० समस्त मथुरावासी आश्चर्य मानि के यह कहत भये गोपीन ने कहा उत्कृष्ट तप कियो है जे गोपी मनुष्यलोक कों बड़े उत्सवरूप श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकूं देखे हैं ३१ वस्त्रन को धोवनवारो और रगनवारो ऐसो एक धोबी मार्ग में सम्मुख आवतो देखिके ताके धुये अतिउत्तम जे वस्त्र हैं तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र माँगत भये ३२ हे धोबी! पात्र हम हैं तिनके योग्य जे वस्त्र हैं तिनें तू दे तो दाता को अभी कल्याण होयगो यामें

सन्देह नहीं है ३३ सब ओरते परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धोबी ते वस्त्र माँगे तब कंस को टहलुआ बड़ो जाके गर्व्व वह धोबी क्रोध करिके डाटि के बोलत भयो ३४ नित्य पर्व्वतन के वन के फिरनवारे ऐसेही कपड़ा पहिरनवारे हौ हे उद्दण्डो ! राजा के वस्त्रन पै क्यों मन चलावो हौ ३५ हे मूर्खो ! तुम यहाँ ते शीघ्रही निकसि जावो जो अपनो जीवन चाहौ तो ऐसे फेरि मति माँगियो राजा कंस के प्यादे बहुत फिरे हैं जो धूम करे है ताहि बाँधे हैं मारे हैं लूटे हैं तुम तो ये वस्त्र माँगोहौ मोहिं यह दीखे है कि तुम्हारेऊ कोई उतारि लेइगो ३६ या प्रकार बकै जो धोबी है ताके शिर कों देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र कोप करिके अपने हाथ के थाप सूं काटत भये ३७ जब मुख्य धोबी मारो गयो तब वाके टहलुवा धोबी हैं ते वस्त्रनकी पोट पटकि पटकि के चारोंओरको भाजतभये ता समय श्रीकृष्ण तथा बलदेव जी अपने प्यारे वस्त्र है तिनकों पहिर के बाकी जे रहे ते गोपनकों देत भये और जे रहे ते वहा ही छोड़त भये ३८।३९ वस्त्र पहिर के चले ताके पीछे प्रसन्न

किमुद्धृत्ताराजद्रव्याण्यभीप्सथ ३५ याताशुबालिशामैवं प्रार्थ्यंयदिजिजीविषा ॥ बध्नन्तिघ्नन्तिलुम्पन्ति दृप्तंराजकुलानिवै ३६ एवंविकत्थमानस्य कुपितोदेवकीसुतः ॥ रजकस्यकराग्रेण शिरःकायादपातयत् ३७ तस्यानुजीविनःसर्वे वासःकोशान्विसृज्यवै ॥ दुद्रुवुःसर्वतोमार्गं वासांसिजगृहेऽच्युतः ३८ वसित्वात्मप्रियेवस्त्रे कृष्णःसङ्कर्षणस्तथा ॥ शेषाण्यादत्तगोपेभ्योविसृज्यभुविकानिचित् ३९ ततस्तुवायकःप्रीतस्तयोर्वेषमकल्पयत् ॥ विचित्रव र्णैश्चैलेयैराकल्पैरनुरूपतः ४० नानालक्षणवेषाभ्यां कृष्णरामौविरेजतुः ॥ स्वलंकृतौबालगजौपर्वणीवसितेतरौ ४१ तस्यप्रसन्नोभगवान् प्रादात्सारूप्य मात्मनः ॥ श्रियंचपरमांलोकेबलैश्वर्यस्मृतीन्द्रियम् ४२ ततःसुदाम्नोभवनंमालाकारस्यजग्मतुः ॥ तौदृष्ट्वाससमुत्थाय ननामशिरसाभुवि ४३ तयोरा सनमानीय पाद्यञ्चार्थ्यार्हणादिभिः ॥ पूजांसानुगयोश्चक्रे स्रक्ताम्बूलानुलेपनैः ४४ प्राहनःसार्थकंजन्म पावितंचकुलंप्रभो ॥ पितृदेवर्षयोमह्यं तुष्टा ह्यागमनेनवाम् ४५ भवन्तौकिलविश्वस्य जगतःकारणंपरम् ॥ अवतीर्णाविहांशेनक्षेमायचभवायच ४६ नहिवांविषमादृष्टिः सुहृदोर्जगदात्मनोः ॥

जो दर्जी है सो तिन राम कृष्ण को लाल हरे पीरे रंग के जे वस्त्र है तिनके माला चम्पकली बाजूबन्द अनेक प्रकार के आभूषण बनाय,के शोभा करत भयो ४० कृष्ण बलदेव दोनों भय्या अनेक प्रकार के दर्जी ने बनाये जे वस्त्रन के आभूषण तिन सों शोभायमान लगे है जैसे पर्व्व में सांवरे गोरे शृङ्गारकिये हाथी के छौना सुन्दर लगे हैं ४१ ता दर्जी के ऊपर प्रसन्न भये जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र है सो अपनी बराबर को रूपताय देत भये या लोक में सम्पत्ति देत भये बल ऐश्वर्य्य स्मरण और हाथ पाँव नाक कान आँखि जे अच्छे बने रहैं इनकी चतुराई देतभये ४२ ताके पाछे सुदामा माली के घर कृष्ण बलदेव जातभये तिन कों देखिके धरती में शिर लगाय प्रणाम करत भयो ४३ तिन कृष्ण बलदेव कों आसन बिछाय के बैठावत भयो और पाद्य अर्घ इत्यादिक पूजा की सामग्रीन सूं पूजा करत भयो माला पान की बीरी चन्दन इत्यादिक अर्प्पण करत भयो ४४ माली कहत भयो हे प्रभो ! तुम्हारे आइवे सूं हमारो जन्म सार्थक भयो कुल पवित्रभयो और हमारे पितर देवता ऋषि सन्तुष्ट भये ४५ तुम निश्चय या संसार के परमकारण हो जगत् के कल्याण के निमित्त और वृद्धि के लिये अंश करिके अवतार लिये हौ ४६ जगत् के हितकारी आत्मा तु-

महीं हो तुम्हारे विषमदृष्टि नहीं है सब प्राणीन में सम वर्तोहो भजन करनवारेनकों भजो हो ४७ तुमभो भृत्यको आज्ञा करो मैं तुम्हारी कहा पूजा करों पुरुषकों जो तुम्हारो दर्शन होइ यह बड़ो अनुग्रहहै ४८ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार जानि के प्रसन्नहै मन जाको ऐसो सुदामा माली सुन्दर सुगन्धिन के फूलन की बनी जो माला हैं तिनैं निवेदन करत भयो ४९ ते माला पहिरके मित्रन सहित सुन्दर लगें प्रसन्न भये जे वर के देनवारे राम कृष्ण हैं ते शरण आयो जो सुदामा है ताकूं वर देत भये ५० सुदामा मालीभी सब के आतमा श्रीकृष्ण है तिनमें टारी न टरे ऐसी भक्ति माँगत भयो भगवान् के भक्तन में स्नेह रहै और जीवमात्र में दया रहै यह वर माँगत भयो ५१ ता माली को यही वर दैके और ताके वंश में सर्व्वदा रही आवै ऐसी सम्पत्ति दैके बल आयु यश शोभा दैके बलदेवजी कों संग लैके ताके घरते निकसत भये ५२ इति श्रीमन्महाभागवतार्थेरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेपुरप्रवेशोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ * ॥

समयोःसर्वभूतेषु भजन्तंभजतोऽपि ४७ तावाज्ञापयतंभृत्यं किमहंकरवाणिवाम् ॥ पुंसोऽत्यनुग्रहोह्येष भवद्भिर्यन्नियुज्यते ४८ इत्यभिप्रेत्यराजेन्द्र सुदामाप्रीतमानसः ॥ शस्तैःसुगन्धैःकुसुमैर्मालांविरचितांददौ ४९ ताभिःस्वलंकृतौप्रीतौ कृष्णरामौसहानुगौ ॥ प्रणतायप्रपन्नाय ददतुर्वरदौवरान् ५० सोऽपिवव्रेऽचलांभक्तिं तस्मिन्नेवाखिलात्मनि ॥ तद्भक्तेषुचसौहार्दं भूतेषुचदयांपराम् ५१ इतितस्मैवरंदत्त्वा श्रियंचान्वयवर्द्धिनीम् ॥ बलमायुर्यशःकान्तिं निर्जगामसहाग्रजः ५२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेपुरप्रवेशोनामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथव्रजन्राजपथेनमाधवः स्त्रियंगृहीताङ्गविलेपभाजनाम् ॥ विलोक्यकुब्जांयुवतींवराननांपप्रच्छयान्तींप्रहसन्रसप्रदः १ कात्वंवरोर्वेतद्धहानुलेपनं कस्याङ्गनेवाकथयस्वसाधुनः ॥ देह्यावयोरङ्गविलेपमुत्तमंश्रेयस्ततस्तेनचिराद्भविष्यति २ ॥ सैरन्ध्र्युवाच ॥ दास्यस्म्यहंसुन्दरकंससम्मता त्रिवक्रनामाह्यनुलेपकर्म्मणि ॥ मद्भावितंभोजपतेरतिप्रियं विनायुवांकोऽन्यतमस्तदर्हति ३ रूपपेशलमाधुर्य्यहसितालापवीक्षितैः ॥ धर्षिता

(द्विचत्वारिंशकेकुब्जोन्नमनंधनुषोभिदा ॥ वधस्तद्रक्षिणांकंसारिष्टंरङ्गोत्सवादिच १ बयालीसवें अध्याय में कुबरी को कृष्णजी सीधीकर धनुष् को तोड़कर धनुष् के रक्षकों को मारतेभये और कंस को अरिष्ट और रङ्गभूमि के उत्सवादिका वर्णन है १) श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! माली के घरते निकसे पीछे मधुवश में भये सुख के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र सो राजमार्ग जो बाजार है तामें आयके ग्रहण किये हैं चन्दन के पात्र जाने सुन्दरहै मुख जाको ऐसी चली आवै जो तरुण कुबरी स्त्री है ताकों देखिके हँसिके पूंछतभये १ सुन्दरहैं जंघा जाकी ऐसी स्त्री तू कौनकी है चन्दन कौन को है हमारे आगे भलेप्रकार कहो यह उत्तम चन्दन हमकों देइ तौ अभी तेरो कल्याण होयगो २ यह सुनिके कुबरी बोली हे सुन्दर! मैं कंसकी दासीहों कुबरी मेरो नामहै चन्दन घिसिबो यह मेरो काम है मेरो घिसो चन्दन कंस को अच्छो लगै है अब तुम बिना और चन्दन लगायवे कों कौन पात्र है ३ सुन्दररूप सुकुमारि और रसिकता हँसनि बोलनि चितवनि सूं

मोहित है मन जाको ऐसी कुवरी कृष्ण वलदेव कों गहरो चन्दन देतभई ४ केशर जामें परी ऐसो चन्दन सामरे अङ्ग में श्रीकृष्ण ने लगायो कस्तूरी जामें मिली ऐसो चन्दन गोरे अङ्ग में वलदेवजी ने लगायो नाभिते ऊपर के अङ्गन में चन्दन लगायके दोनों भय्या वहुत सुन्दर लगत भये ५ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् अपने दर्शन को फल दिखायवे के लिये सुन्दर जाको मुख तीन स्थान ते टेढ़ी जो कुब्जा है ताकूं सीधी करिवे को मन करतभये ६ कुब्जा के पांवन को अपने चरणते दाविके दो अंगुली जामें ऊँचीकरी ऐसे हाथ कों ठोढ़ी के नीचे लगायके श्रीकृष्ण कुब्जा के देह को सूधो करत भये ७ ता समय सूधे वरावर हैं अङ्ग जाके वड़े हैं कमर और स्तन जाके ऐसी कुब्जा श्रीकृष्ण के स्पर्श करते शीघ्र उत्तम स्त्री होतभई ८ सूधी भई पीछे रूप गुण उदारता ये सव कुब्जामें आयगये तव कामदेव जाके होयआयो वह कुब्जा दुपट्टा को पकरिके श्रीकृष्ण ते वोलत भई ९ हे वीर! तुम आवो घर कों चलो तुम मोपै छोड़े नहीं जावोहौ हे पुरुषनमें श्रेष्ठ! तुमने मेरो

त्मादद्दौसान्द्रमुभयोरनुलेपनम् ४ ततस्तावङ्गरागेण स्ववर्णेतरशोभिना ॥ सम्प्राप्तपरभागेन शुशुभातेऽनुरञ्जितौ ५ प्रसन्नोभगवान्कुब्जां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ॥ ऋज्वींकर्त्तुमनश्चक्रे दर्शयन्दर्शनेफलम् ६ पद्भ्यामाक्रम्यप्रपदेद्व्यङ्गुल्युत्तानपाणिना ॥ प्रगृह्यचिवुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ७ सातदर्जुसमानाङ्गी बृहच्छ्रोणिपयोधरा ॥ मुकुन्दस्पर्शनात्सद्योबभूवप्रमदोत्तमा ८ ततोरूपगुणौदार्य्यसम्पन्नाप्राहकेशवम् ॥ उत्तरीयान्तमाकृष्य स्मयन्तीजातहृच्छया ९ एहिवीरगृहंयामो नत्वांत्यक्तुमिहोत्सहे ॥ त्वयोन्मथितचित्तायाःप्रसीदपुरुषर्षभ १० एवंस्त्रियायाच्यमानःकृष्णोरामस्यपश्यतः॥ मुखंवीक्ष्यानुगानांच प्रहसंस्तामुवाचह ११ एष्यामितेगृहंसुभ्रूः पुंसामाधिविकर्शनम् ॥ साधितार्थोगृहाणांनः पान्थानांत्वंपरायणम् १२ विसृज्यमाध्व्यावाण्यातां व्रजन्मार्गेवणिक्पथैः ॥ नानोपायनताम्बूलस्रग्गन्धैःसाग्रजोऽर्चितः १३ तद्दर्शनस्मरक्षोभादात्मानंनाविदन्स्त्रियः ॥ विस्रस्तवासःकबरवलयालेख्यमूर्त्तयः १४ ततःपौरान्पृच्छमानो धनुषःस्थानमच्युतः ॥ तस्मिन्प्रविष्टोददृशे धनुरैन्द्रमिवाद्भुतम् १५ पुरुषैर्बहुभिर्गुप्तमर्चितंपरमर्द्धिम

मन चलायमान कीनो है मेरे ऊपर प्रसन्नहोउ १० या प्रकार स्त्री ने कही ता समय श्रीकृष्णचन्द्र वलदेवजी मुख देखिके मित्रन को मुख देखिके मुसिकाय के कुब्जा ते वोलतभये ११ सुन्दर है भृकुटी जिनकी यामें कहा कह्यो तुम्हारी भृकुटी हमारे मन कों खैंचे है हमारो उपरना काहे को खैंचेहौ कंस कों मारिके अपने सुहृदन को कार्य्य सिद्धकरिके पुरुषनके मन के दुःख कों दूर करन वारो तुम्हारो घर है तामें आऊँगो वालब्रह्मचारी काहू सों जान नहीं पहिचान नहीं हमारे घर नहीं परदेशी हैं तिनकूं तुमहीं आश्रयहौ तुम्हारे न आवेंगे तो जाइंगे कहाँ मीठे मीठे वचन कहिके कुब्जा कों छोड़िकै चले तव वनियान ने अनेक भेंट पान माला चन्दन लैके वलदेव सहित कृष्णको पूजन कर्‌यो १२।१३ श्रीकृष्ण के दर्शन करे तें व्याप्यो जो कामदेव ताके क्षोभते स्त्री आपे कूं नहीं जानत भई वस्त्र जिनके ढीले होयगये चोटी खुलिगई कङ्कण खिसलआये चित्रसी लिखी ठाढ़ी रहिगई १४ ता पीछे अच्युत श्रीकृष्ण मथुरावासीन ते धनुष् को ठिकानो पूंछत पूंछत गये धनुष्की शाला में इन्द्र के धनुष्की तुल्य अद्भुत धनुष्परो देखतभये १५ हजारन पुरुष जाकी रक्षाकरे हैं पूजा होइरही है वड़ी जाकी शोभा है पुरुषन ने मनेकरो तौ भी श्रीकृष्ण जोरावरी धनुष्को

उठावत भये १६ खेलकरत वायें हाथ ते उठायके चिल्ला चढ़ाइके पलभर में मनुष्यन के देखत देखत वीचते खैंचिके जैसे मतवारो हाथी गाड़े कूं तोरडारे है तैसे तोरिके डारतभये १७ जा समय धनुष टूटो तव वाको शब्द आकाश में और स्वर्ग में पृथ्वी में दिशान में व्याप्त होतभयो ऐसे शब्दकों सुनिके कंस कों भय होतभयो १८ धनुष के रक्षक जे हैं ते अपने अनुचरनसहित क्रोध करिके हाथन में हाथ लेके श्रीकृष्ण के पकरिवेके लिये लेउ लेउ ऐसे कहत चारोंओर ते घेरतभये १९ घेर लेने के पीछे श्रीकृष्ण वलदेव दोनों भय्या मारिवे कों पकरिवे कों आये जे पुरुष हैं तिनें देखि के क्रोध करिके धनुषको एक टूक लैके तिन पुरुषन कों मारतभये २० कंसने भेजी जो सेनाहै ताकूं मारिके धनुषशालाके वाहर निकसिके मथुरापुरी कम्पित देखिके हर्षित होयके चितवतभये २१ मथुरापुरी के वासी स्त्री पुरुष राम कृष्णको अद्भुत कर्म्म देखिके धृष्टता देखिके पराक्रम देखिके देवतान में उत्तम मानतभये २२ ते कृष्ण वलदेव अपनी इच्छापूर्वक विचरे हैं इतने में सूर्य्य

त ॥ वार्यमाणोनृभिःकृष्णः प्रसह्यधनुराददे १६ करेणवामेनसलीलमुद्धृतंसज्यञ्चकृत्वानिमिषेणपश्यताम् ॥ नृणांविकृष्यप्रवभञ्जमध्यतोयथेक्षुदण्डंमदकर्य्युरुक्रमः १७ धनुषोभज्यमानस्य शब्दःखंरोदसीदिशः ॥ पूरयामासयंश्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् १८ तद्रक्षिणःसानुचराः कुपिताआततायिनः॥ गृहीतुकामाआवव्रुर्गृह्यतांवध्यतामिति १९ अथतान्दुरभिप्रायान् विलोक्यवलकेशवौ ॥ क्रुद्धौधन्वनआदाय शकलेतांश्चजघ्नतुः २० वलञ्चकंसप्रहितं हत्वाशालामुखात्ततः ॥ निष्क्रम्यचेरतुर्हृष्टौ निरीक्ष्यपुरसम्पदः २१ तयोस्तदद्भुतंवीर्य्यं निशाम्यपुरवासिनः ॥ तेजःप्रागल्भ्यरूपञ्च मेनिरेविवुधोत्तमौ २२ तयोर्विचरतोःस्वैरमादित्योऽस्तमुपेयिवान् ॥ कृष्णरामौवृतौगोपैः पुराच्छकटमीयतुः २३ गोप्योमुकुन्दविगमेविरहातुराया आशासताशिषऋतामधुपुर्य्यभूवन् ॥ संपश्यतांपुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतरान्नुभजतश्चकमेऽयनंश्रीः २४ अवनिक्ताङ्घ्रियुगलौभुक्त्वाक्षीरोपसेचनम् ॥ ऊषतुस्तांसुखंरात्रिं ज्ञात्वाकंसचिकीर्षितम् २५ कंसस्तुधनुषोभङ्गं रक्षिणांस्ववलस्यच ॥ वधंनिशम्यगोविन्दरामविक्रीडितंपरम् २६ दीर्घप्रजागरोभीतो दुर्निमित्तानिदुर्म्मतिः ॥ वहून्यचष्टोभयथामृत्योर्दौत्यकराणिच २७ अदर्शनंस्वशिरसःप्रतिरूपेचसत्यपि ॥ असत्यपिद्वितीयेच द्वैरूप्यंज्योतिषांतथा २८ छिद्रप्रतीति

अस्त होतभयो सन्ध्या समय भयो तव कृष्ण वलदेव दोनों भय्या गोपन को सङ्ग लैके मथुरापुरी ते निकसे जहां गाड़ा छूटे हैं तहां आवत भये २३ श्रीकृष्णकूं व्रज में ते निकसती वेर गोपीन ने विरह में व्याकुल होयके जे जे वातें कहीहीं ते सवही श्रीकृष्ण के अंगकी शोभा देखिके मथुरावासीनकूं साची होत भई लक्ष्मीजी भजें जे ब्रह्मादिक हैं तिनें छोड़िके जाही रूप की चाहना करे हैं २४ धोये हैं चरण जिनने ऐसे श्रीकृष्ण वलदेवजी दूधभात को भोजन करिके कंसको विचार जानिके वा रात्रिकों सुखते वसत भये २५ कंस धनुष कों टूटो सुनिके वाके रखवारेन को मरयो सुनिके अपनी सेना को वध सुनो यह कृष्ण वलदेव को केवल खेलहै पराक्रम नहीं हो यह सुनिके चिन्ताके मारे रात्रिको निद्रा नहीं आई डरप्यो दुष्टहै वुद्धि जाकी ऐसो कंस मृत्युके जतावन वारे जागत में सोवत में वहुतसे खोंटे स्वप्न हैं तिनें देखत भयो २६।२७ दर्पण में जल में मुख देखे तो अपनो शिर नहीं दिखाई देइहै चन्द्रमा सूर्य्य दो दो रूप नहीं हैं परन्तु वाकों दो दो दि-

खाई दिये २८ अपनी परछाई में छिद्रदीखे अंगुरी देके कान में देखे तो घूं घूं शब्द नहीं सुनोजाय वृक्ष सोने के दिखाई दिये कीचमें रेत में अपने पांवन के खोज न दीखे २९ स्वप्नमें भूत प्रेत छाती सूं लगाय लगाय के मिले हैं गधा पै चढो विषको खात गुड़हर के फूलन की माला पहिरे अकेलो तेलमें भीज्यो नग्न दक्षिणदिशाकों चल्यो जायहै यह स्वप्न देखत भयो ३० और ऐसे ऐसे स्वप्न में जागत में खोटे खोटे सगुन देखिके मृत्युतें डरप्यो जो कंस है सो चिन्ता के मारे सोवत न भयो ३१ हे कुरुवंशमें भये राजन् परीक्षित्! जैसे तैसे करिके वह रात्रि बीती सबेरो भयो जलमें तें सूर्य्य निकसो ता समय कंस मल्लनकी कुश्ती लड़वायवेको जो बड़ो उत्सवहै ताकों करावत भयो ३२ पुरुष रङ्गभूमि की पूजा करत भये तुरही भेरि बजतभई माला पताका वस्त्रनकी बन्दनवार इनते मचान शोभायमान करे ३३ तिन मंचानन के ऊपर ब्राह्मण क्षत्रिय जिनमें मुख्य ऐसे पुरवासी देशवासी आय के सुखपूर्वक बैठत भये ३४ कंस अपने प्रधान दीवान कूं संगलैके

स्वछायायांप्राणघोषानुपश्रुतिः ॥ स्वर्णप्रतीतिर्वृक्षेषु स्वपदानामदर्शनम् २९स्वप्नेप्रेतपरिष्वङ्गः खरयानंविषादनम् ॥ यायान्नलदमाल्येकस्तैलाभ्यक्तोदिगम्बरः ३० अन्यानिचेत्थंभूतानि स्वप्नजागरितानिच ॥ पश्यन्मरणसंत्रस्तो निद्रांलेभेनचिन्तया ३१ व्युष्टायांनिशिकौरव्य सूर्येचाद्भ्यःसमुत्थिते ॥ कारयामासवैकंसोमल्लक्रीडामहोत्सवम् ३२ आनर्चुःपुरुषारङ्गं तूर्यभेर्यश्चजघ्निरे ॥ मञ्चाश्चालंकृताःस्रग्भिः पताकाचैलतोरणैः ३३ तेषुपौराजानपदाब्रह्मक्षत्रपुरोगमाः ॥ यथोपजोषंविविशूराजानश्चकृतासनाः ३४ कंसःपरिवृतोऽमात्यैराजमञ्चउपाविशत् ॥ मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेनविदूयता ३५ वाद्यमानेषुतूर्येषु मल्लतालोत्तरेषुच ॥ मल्लाःस्वलंकृताःदृप्ताः सोपाध्यायाःसमागताः ३६ चाणूरोमुष्टिकःकूटः शलस्तोशलएवच ॥ तआसेदुरुपस्थानं वल्गुवाद्यप्रहर्षिताः ३७ नन्दगोपादयोगोपाभोजराजसमाहुताः ॥ निवेदितोपायनास्तएकस्मिन्मञ्चआविशन् ३८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेमल्लरङ्गोपवर्णनंनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथकृष्णश्चरामश्च कृतशौचौपरन्तप ॥ मल्लदुन्दुभिनिर्घोषं श्रुत्वाद्रष्टुमुपेयतुः १ रङ्गद्वारंसमासाद्य तस्मिन्नागमवस्थितम् ॥ अपश्य

खण्डमण्डलन के जे राजा हैं तिन के बीच में एक राजमचान है ताके ऊपर बैठत भयो भय के मारे हृदय जाको कम्पित है ३५ नगाड़े बजे हैं मल्ल चट चट खम्भ ठोके हैं जाँघियान कूं पहिर के सिन्दूर को बिन्दा लगाय के धूरि मलि के छोटी २ जिनके चुटिया बड़ो जिन के गर्व ऐसे उस्तादन को संग लैके आवत भये ३६ अब मल्लन के नाम लेइ हैं चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये अखाड़े में आवत भये मनोहर बाजेन कू सुनि के हर्ष जिनके भयो है ३७ कंसके बुलाये नन्दगोप सों आदिलैके और गोप हैं ते कंस को भेट देके एक मंचान पै बैठत भये ३८ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थेरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेमल्लरङ्गोपवर्णनन्नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(त्रिचत्वारिंशकेहत्वागजेन्द्रंरामकृष्णयोः ॥ रङ्गप्रवेशःसौभाग्यंचाणूरेणचभाषणम् १ तेंतालीसवें अध्यायमें बलदेव और कृष्णजी कुवलयापीड़ हाथी को मारकर रङ्गभूमि में प्रवेश करते भये

और वहां पर चाणूर सूं वार्त्तालाप भयो है १) अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे शत्रुन के तपावनवारे राजा परीक्षित् ! धोबी कों मारिके धनुष् कों तोरिके हमने अपनो ऐश्वर्य्य जतायो तथापि हमारे माता पिता को नहीं छोड़े है और हम कूं मार्यो चाहे है याते या मामा के मारिवेमें हमें कुछ दोष नहीं है या प्रकार दोष के दूरि करिवे को विचार जिनने विचारो ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या जहाँ मल्ल खम्भ ठोके हैं नगाड़े बजे हैं तिनको शब्द सुनि के देखिवे कों जात भये १ श्रीकृष्णचन्द्र रङ्गभूमिके दरवाजे पै जाय के देखें तो कुवलयापीड़ हाथी ठाढ़ो है कैसो हाथीहै महावतने अपने ऊपर हिलायो है २ शूरके वंश में भये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र फेंट बाँधि के मुख पै छुटिरहीं जे कुटिल अलकें हैं तिनकों सम्हारि के गलेकी लम्बी माला कों जनेऊ की तुल्य कंधान पै पहिर के मेघ की तुल्य गर्ज के बोलतभये ३ अरे महावत ! हमकों मार्ग दे शीघ्र हाथी कू हटाय ले नहीं हटावेगो तो हाथीसहित तोकों यमलोककों पठाऊँगो ४ या प्रकार डाटि कै जब कही ता

रंकुवलयापीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् २ बद्ध्वापरिकरंशौरिः समुह्यकुटिलालकान् ॥ उवाचहस्तिपंवाचा मेघनादगभीरया ३ अम्बष्ठाम्बष्ठमार्गंनोदेह्यप क्रममाचिरम् ॥ नोचेत्सकुञ्जरंत्वाद्यनयामियमसादनम् ४ एवंनिर्भर्त्सितोऽम्बष्ठःकुपितःकोपितंगजम् ॥ चोदयामासकृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ५ करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेणतरसाऽग्रहीत् ॥ कराद्विगलितःसोऽमुं निहत्याङ्घ्रिष्वलीयत ६ संक्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिःसकेशवम् ॥ परामृशत्पुष्करेणस प्रसह्यविनिर्गतः ७ पुच्छेप्रगृह्यातिबलं धनुषःपञ्चविंशतिम् ॥ विचकर्षयथानागं सुपर्णइवलीलया ८ सपर्यावर्त्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽच्युतः ॥ बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेनेवबालकः ९ ततोऽभिमुखमभ्येत्यपाणिनाहत्यवारणम् ॥ प्राद्रवन्पातयामासस्पृश्यमानःपदेपदे १० सधावन्क्रीडयाभूमौपतित्वा सहसोत्थितः ॥ तंमत्वापतितंक्रुद्धोदन्ताभ्यांसोहनत्क्षितिम् ११ स्वविक्रमेप्रतिहते कुञ्जरेन्द्रोऽत्यमर्षितः ॥ चोद्यमानोमहामात्रैःकृष्णमभ्यद्रवद्रुषा १२ त मापतन्तमासाद्यभगवान्मधुसूदनः ॥ निगृह्यपाणिनाहस्तं पातयामासभूतले १३ पतितस्यपदाक्रम्य मृगेन्द्रइवलीलया ॥ दन्तमुत्पाट्यतेनेभं हस्तिपां

समय महावत कुपित होय कै कालमृत्यु यम इनकी तुल्य है क्रोध जाके ऐसे हाथी को श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर हूलत भयो ५ हाथी श्रीकृष्ण के पास जाय के जल्दी देसी अपनी सूंड में पकरत भयो श्रीकृष्ण हाथी की सूंड़ में ते खिसिल के वाके मूड़ में मुक्का मारिके पांवन में छिप जात भये ६ श्रीकृष्ण को देखिके क्रोध जाके होय आयो सूंघासाँघी की है दृष्टि जाके ऐसे हाथी ने जब सूंड़ पकरिवे को चलाई ता समय पूँछ पकरि पिछिले पाँवन में निकसि गये ७ बड़े बली हाथी की पूँछ पकरि के जैसे गरुड सर्प को घसीटै है या प्रकार पचीस धनुषपर्य्यन्त लीला करिके घसीटत भये ८ पूँछ को पकरे जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनकूं पकरिवे कों दाहिनी ओर हाथी आवै है तब बाई ओर भ्रमावे हैं और बाई ओर आवै है तब दाहिनी ओर भ्रमावे हैं जैसे गौ के बछरा के सङ्ग बालक फिरे हैं ऐसे फिरे है ९ ता पीछे हाथी के सामहें आय के थाप मारिके दौरि के पटकत भये पैरमें हाथी स्पर्श करे है १० श्रीकृष्ण तनिक दौरि के खेलिवे के लिये धरती में गिरि के शीघ्रता सूं ठाढे होय गये तब श्रीकृष्ण कूं गिर्यो मानि के वह हाथी दाँतन सूं पृथ्वी को खोदत भयो ११ अपनो बल जब घटि गयो तब हाथी के बड़ो क्रोध भयो महावत ने जब अंकुश मारिके हूल्यो तब क्रोध करिके

श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर दौरत भयो १२ मधु दैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण के सम्मुख चलो जो हाथी ताकी हाथ सूं सूंड़ पकरिके पृथ्वी में पटकत भये १३ सिंह की तुल्य गर्जो जो हाथी है ताप पॉव के नीचे दावि के लीला करिके वाके दॉत उखारि के दॉत सों महावत कूं श्रीकृष्णचन्द्र मारतभये १४ जब हाथी मरि गयो तब वाकों छोड़ि के हाथ में हाथी के दॉत लैके काँधे पै धरि के जात भये रुधिर और मधु की बूंद जिनके लगि रही हैं और पसीनानकी बूंद जिनके मुखकमल पै आइ रही हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र सुन्दर लगतभये कितनेक गोप जिनके सङ्ग हाथीके दाँतही सुन्दर शस्त्र जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव दोनों भय्या हे राजन् परीक्षित्! रङ्गभूमि में जात भये १५। १६ ता समय मल्लनको वज्रतुल्य दृष्टिआये मनुष्यनको अतिसुन्दर जानिपरे और स्त्रीनको साक्षात् कामदेव स्वरूप धरिके चले आवे हैं ऐसे जानिपरे गोपों को भाईबन्धु जानिपरे दुष्ट राजानको मृत्यु देनवारे हैं ऐसे जानिपरे अपने पिता माता वसुदेव देवकी हैं तिनकूं हमारे पुत्र चले आवे है या विधि जानिपरे भोजपति जो कंसहै ताकों यह जानिपरे कि मेरी मृत्यु चलीआवे है अज्ञानीनकों भयङ्कर रूप दृष्टिपरे और ज्ञानीन कों परमतत्त्वरूप दृष्टिपरे यादवन कों परमदेवतारूप जानि

मत्त्वाहनद्धरिः १४ मृतकं द्विपमुत्सृज्य दन्तपाणिःसमाविशत्॥ अंसन्यस्तविषाणोऽसृङ्मदविन्दुभिरङ्कितः॥ विरूढस्वेदकणिकावदनाम्बुरुहोबभौ १५ वृतौ गोपैःकतिपयैर्बलदेवजनार्दनौ॥ रङ्गंविविशतूराजन्गजदन्तवरायुधौ १६ मल्लानामशनिर्नृणांनरवरःस्त्रीणांस्मरोमूर्त्तिमान् गोपानांस्वजनोऽसतांक्षितिभुजांशास्तास्वपित्रोःशिशुः॥मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषांतत्त्वंपरंयोगिनांवृष्णीनांपरदेवतेतिविदितोरङ्गंगतःसाग्रजः १७हतंकुवलयापीडंदृष्ट्वातावपिदुर्जयौ॥ कंसोमनस्व्यपितदाभृशमुद्विविजेनृप १८ तौरेजतूरङ्गगतौमहाभुजौविचित्रवेषाभरणस्रगम्बरौ॥ यथानटावुत्तमवेषधारिणौ मनःक्षिपन्तौप्रभयानिरीक्षताम् १९ निरीक्षतावुत्तमपूरुषौजनामञ्चस्थितानागरराष्ट्रकानृप॥ प्रहर्षवेगोत्कलितेक्षणाननाः पपुर्नतृप्तानयनैस्तदाननम् २० पिबन्तइवचक्षुर्भ्यांलिहन्तइव जिह्वया॥ जिघ्रन्तइवनासाभ्यांश्लिष्यन्तइवबाहुभिः २१ ऊचुःपरस्परंतेवैयथादृष्टंयथाश्रुतम्॥ तद्रूपगुणमाधुर्यप्रागल्भ्यस्मारिताइव २२ एतौभगवतः

परे जैसी जाकी भावना ताको तैसेही जानिपरे या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कों सङ्गलैके रङ्गभूमि में जातभये १७ हे राजन् परीक्षित्! कुवलयापीड़ हाथी कूं मरयो देखिके जीतने में न आवें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजी कूं देखिके धैर्ययुक्तहू कंस है परन्तु डरपत भयो १८ बड़ी जिनकी भुजा विचित्र जिनके वेष आभूषण माला वस्त्रनकूं धारणकरे ऐसे कृष्ण बलदेव रङ्गभूमि में जायके सुन्दर लगत भये उत्तम रूपको धारण करनवारे नट जैसे सुन्दर लगे हैं या प्रकार अपनी कान्ति कर देखनवारे पुरुषन के मन कूं चुरावे हैं १९ हे राजन् परीक्षित्! मंचानन के ऊपर बैठे जे पुरवासी देशवासी जन हैं ते पुरुषन में श्रेष्ठ जो श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकों देखिके आनन्द के वेग ते डहडहे नेत्र मुख जिनके होयगये ऐसे नेत्रन करिके मुखकी शोभा देखिके तृप्त न होत भये २० नेत्र ऐसे चलावे हैं मानों रूपकों पीजायँगे जिह्वा ऐसी चलावें मानो चाटि जायँगे नासिका ऐसी चलावें मानों सूंघि लेईंगे भुजा ऐसी चलावे हैं मानो लिपिटजायँगे जैसो श्रीकृष्ण को रूप कानन ते सुनो हो तैसोही आंखिन ते देखिके उनके रूप गुण माधुर्य्य ढिठाई सूं बुद्धि जिनकूं होयआई ऐसे पुरुष आपुस में कहत भये २१। २२ ये जो श्रीकृष्ण बलदेव है ते

साक्षात् भगवान् हरि नारायण हैं अंशकरिके या संसार में वसुदेवके घर अवतरे हैं २३ यह जो सांवरो बालक है ताने देवकी के जन्म लियो है अवताई छिप्यो रह्यो पिताने गोकुल में पहुँचाय दियो हौ नन्दराय के घर में वृद्धिकूं प्राप्तभयो २४ या कृष्ण ने पूतना मारी ववूरे के स्वरूपकों धरिके आयो जो तृणावर्त्त दैत्य ताकूं मारतभये और यमलार्ज्जुन वृक्ष उखारि के डारि दिये शंखचूड़ मार्‍यो केशीदानव मार्‍यो धेनुकासुर मारो अघासुर आदिलैके और सब दानव मारे २५ या कृष्णने गौ और ग्वाल वनमें दव लगी ताते छुटाये काली सर्प्पकों दण्ड दियो इन्द्रको मद दूर कियो २६ सात दिन पर्य्यन्त यह कृष्ण गोवर्द्धन पर्व्वतकूं हाथ में लिये रह्यो वर्षा पवन वज्रपात ते गोकुलकी रक्षाकरी २७ गोपी हैं ते या कृष्ण कों नित्य प्रसन्न हँसनि चितवनि जामें श्रम जामें नहीं ऐसे मुखकों देखिकै अनेक तापनकूं दूरि करतभई २८ या कृष्णते यह यदु को वंश बहुत विख्यात होयके सम्पत्ति यश बड़ाई कूं पावेगो और या कृष्ण ते रक्षा होयगी या प्रकार

एषवैकिलदेवक्यां जातोनीतश्चगोकुलम् ॥ कालमेतंवसन्गूढोववृधेनन्दवेश्म साक्षाद्धरेर्नारायणस्यहि ॥ अवतीर्णोविहांशेनवसुदेवस्यवेश्मनि २३ एषवैकिलदेवक्यां जातोनीतश्चगोकुलम् ॥ कालमेतंवसन्गूढोववृधेनन्दवेश्म नि २४ पूतनाऽनेननीताऽन्तंचक्रवातश्चदानवः ॥ अर्ज्जुनौगुह्यकःकेशीधेनुकोऽन्येचतद्विधाः २५ गावःसपालाएतेनदावाग्नेःपरिमोचिताः ॥ कालियोदमितःसर्प्पइन्द्रश्चविमदःकृतः २६ सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽद्रिप्रवरोमुना ॥ वर्षवाताशनिभ्यश्च परित्रातश्चगोकुलम् २७ गोप्योऽस्यनित्यमुदितहसितप्रेक्षणंमुखम् ॥ पश्यन्त्योविविधांस्तापांस्तरन्तिस्माश्रमंमुदा २८ वदन्त्यनेनवंशोऽयंयदोःसुबहुविश्रुतः ॥ श्रियंयशोमहत्त्वञ्च लप्स्यतेपरिरक्षितः २९ अयंचास्याग्रजःश्रीमान्रामःकमललोचनः ॥ प्रलम्बोनिहतोयेनवत्सकोयेबकादयः ३० जनेष्वेवंब्रुवाणेषु तूर्य्येषुनिनदत्सुच ॥ कृष्णरामौसमाभाष्य चाणूरोवाक्यमब्रवीत् ३१ हेनन्दसूनोहेराम भवन्तौवीरसम्मतौ ॥ नियुद्धकुशलौश्रुत्वा राज्ञाहूतौदिदृक्षुणा ३२ प्रियंराज्ञःप्रकुर्वन्त्यःश्रेयोविन्दन्तिवैप्रजाः ॥ मनसाकर्मणावाचा विपरीतमतोऽन्यथा ३३ नित्यंप्रमुदितागोपावत्सपालायथास्फुटम् ॥ वनेषुमल्लयुद्धेनक्रीडन्तश्चारयन्तिगाः ३४ तस्माद्राज्ञःप्रियंयूयं वयञ्चकरवामहे ॥ भूतानिनःप्रसीदन्ति सर्वभूतमयोनृपः ३५ तन्निशम्याब्रवीत्कृष्णोदेशकालोचितंवचः ॥ नियुद्धमात्मनोऽभीष्टंमन्यमानोऽभिनन्द्यच ३६

जो मारे क्यों जी मारे तौ कृष्णने बलदेव को नाम क्यों लेय हैं कहत भये २९ कमल से जाके नेत्र ऐसो सुन्दर या कृष्ण को बड़ो भय्या यह राम ताने प्रलम्बासुर वत्सासुर बकासुर आदिक मारे क्यों जी मारे तौ कृष्णने बलदेव को नाम क्यों लेय हैं तहां कहे हैं देखो सुनी बातन में भेद होइ जाय है ३० सब मनुष्य या प्रकार कहत हैं तौलौं नगाड़े बाजे इतने में चाणूर कृष्ण बलदेव कों सम्बोधन दैके बोलत भयो ३१ हे नन्द के पुत्र! हे राम! बल तुम में अधिक है कुश्ती अच्छी कर जानो हो यह श्रवण करिके कंसराय सूं देखिवे के लिये बुलाये गये हौ ३२ प्रजा मन करिके कर्म्म करिके वचन करिके राजाको प्रिय करैं तौ कल्याण पावे हैं और जे विपरीत करे हैं वे नहीं पावे हैं ३३ प्रतिदिन बछरानके चरावनवारे गोप प्रसन्न होयके वनमें कुश्ती को खेल करिके गौ चरावे हैं यह बात प्रकट है ३४ ता कारण हम तुम राजा कंसको प्रियकरैं राजा प्रसन्न होयगो तौ सब प्राणी हमारे ऊपर प्रसन्न होयँगे ३५ चाणूर को वचन सुनिके श्रीकृष्णचन्द्र कुश्ती करिबो आपको योग्य मानिके बड़ाई करिके देश

समयके उचित वाक्य बोलतभये ३६ या कंसकी तुम प्रजाहो हम वनकी रहनवारी प्रजाहैं राजा कंसको प्रिय नित्य करैं याहीमें हमारो भलो है ३७ देखो हम बालकहैं अपनी बराबरके बालकन के सङ्ग कुश्ती लड़ेंगे जैसे उचितहोइ तैसी कुश्ती करो मल्लनकी सभामें अधर्म्म न होय ३८ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिके चाणूर बोलो तुम बालक नहीं हौ और बलीन सें बलवान् बलदेव बालक नहीं है किशोर नहीं हौ हजार हाथीको जामें बल ऐसो कुवलयापीड़ हाथी खेलमें ही मारिलियो ३९ तातें हमारे संग कुश्ती तुम करौ यह अनीति नहीं है हे वृष्णिवंश में भये कृष्ण! मेरी तुम्हारी कुश्ती होय बलदेव के संग मुष्टिककी होय ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकुवलयापीडवधोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥ * ॥

(चतुश्चत्वारिंशकेतुमल्लकंसादिमर्द्दनम् ॥ कंसयोषित्समाश्वासस्ताभ्यापित्रोश्चदर्शनम् ? चवालीसवें अध्याय में मल्ल और कंसादिकों को कृष्ण बलदेवजी ने नाशकर कंसकी स्त्रियों को

प्रजा भोजपतेरस्य वयञ्चापिवनेचराः ॥ करवामप्रियंनित्यंतन्नःपरमनुग्रहः ३७ बालावयंतुल्यबलैः क्रीडिष्यामोयथोचितम् ॥ भवेन्नियुद्धंमाऽधर्मःस्पृशेन्मल्लसभासदः ३८ ॥ चाणूरउवाच ॥ नबालोनकिशोरस्त्वंबलश्चबलिनांवरः ॥ लीलयेभोहतोयेन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ३९ तस्माद्भवद्भ्यांबलिभिर्योद्धव्यंनानयोऽत्रवै॥मयिविक्रमवार्ष्णेयबलेनसहमुष्टिकः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकुवलयापीडवधोनामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः४३ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एवंचर्चितसङ्कल्पो भगवान्मधुसूदनः ॥ आससादाथचाणूरं मुष्टिकंरोहिणीसुतः १ हस्ताभ्यांहस्तयोर्बद्ध्वा पद्भ्यामेवचपादयोः ॥ विचकर्षतुरन्योन्यं प्रसह्यविजिगीषया २ अरत्नीद्वेअरत्निभ्यां जानुभ्यांचैवजानुनी ॥ शिरःशीर्ष्णोरसोरस्तावन्योऽन्यमभिजघ्नतुः ३ परिभ्रामणविक्षेपपरिरम्भावपातनैः ॥ उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योऽन्यंप्रत्यरुन्धताम् ४ उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैःस्थापनैरपि ॥ परस्परंजिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ५ तद्बलाबलवद्युद्धंसमेताःसर्वयोषितः॥ ऊचुःपरस्परंराजन्सानुकम्पावरूथशः ६ महानयंबताधर्मएषांराजसभासदाम्॥येबलाबलवद्युद्धंराज्ञोऽन्विच्छन्तिपश्यतः ७

समझायो और वसुदेव देवकी के दर्शन कियो है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार निश्चय कियो है सङ्कल्प जिनने नीलाम्बर पीताम्बर की कच्छैं बाँधि खम्भ ठोंकि के ठाढ़े होय गये ऐसे मधुदैत्य के मारनवारे भगवान् श्रीकृष्ण चाणूर से जुटतभये रोहिणीनन्दन बलदेवजी मुष्टिक से जुटतभये ? हाथन सूं हाथ पांवन सूं पांव मिलायके आपुस में जीतिवे की इच्छा करिके परस्पर बलात्कारते खैंचतभये २ अरत्नीन सों अरत्नी मिलाय कै घोंटूनसों घोंटू मिलाय के शिरसों शिर मिलाय कै छाती सों छाती मिलाय कै कृष्ण चाणूर दोनों आपुस में कुश्ती करतभये ३ अब जैसे जैसे परस्पर दाव पेंच करे हैं परिभ्रमण अर्थात् फिरावनो विक्षेप अर्थात् धक्का देनो परिरम्भ अर्थात् हाथते बिडारनो अवपातन अर्थात् नीचो पटकि देनो उत्सर्पण अर्थात् छोड़िके पीछे से आगे आइ जानो अपसर्पण अर्थात् पीछे जायके ठाढ़े होनो इन दावन करिके लड़तभये ४ उत्थापन अर्थात् पाव और घोंटू मिलिके गिरे हे तिनकों उखार देनो चालन अर्थात् बँधे दांवकों दूर करदेनो स्थापन अर्थात् हाथ पाव पकरिके मिलाय देनो या प्रकार परस्पर देहको पीड़ा देतभये ५ स्त्रीनके समूहके समूह इकठौरी होयके बैठी हैं ते कहे है देखो यह कृष्ण

तो निर्वलहै और चाणूर सवलहै यह विचार के दया जिनकों आइ गई ऐसी स्त्री आपुस में बोलतभई ६ ये राजसभा के बैठनवारेन कूं बड़ो अधर्म्म होयगो राजा के देखते निर्वल सवलकी कुश्ती करावे हैं ७ देखो वज्रसे कठोर जिनके सवअङ्ग पर्व्वतसे ऊँचे ऊँचे मल्ल कहा और श्रीकृष्णको स्वरूप अतिसुकुमार जिनके अङ्ग और यौवन अवस्था जिनकी भई नहीं किशोर अवस्था जिनकी ऐसे वालक कहा ८ या सभामें निश्चय धर्म्म नाश होइहै जहा अधर्म्म होय ता सभामें कवहूं न वैठे ९ और स्त्री कहे हैं विवेकी पुरुष कों ऐसी सभामें जानो योग्य नहीं है सभाके बैठनवारेन के दोषनकूं स्मरण करिके वात कों जानिके चुप बैठयो रहै तो दोषभागी होय काहूकी झूठी सांची कहै तो दोषलगे अथवा हम काहूकी बुरी जानें न भली जानें ऐसे कानन पै हाथ धरे तो दोष भागी होय या कारण सभामें जाय नहीं १० शत्रुके चारों ओर दौराधूपी करे जो कृष्ण है ताके मुखकी शोभा देखो तो कुश्ती में जोर करे है याते मुखके ऊपर पसीनान की बूंद आय रही हैं जैसे कमलकोश के ऊपर ओसकी बूंद परे तैसे ११ और स्त्री कहे हैं अरुण जामें नेत्र ऐसे वलदेवजी के मुखकी शोभा कूंदेखो मुष्टिकके ऊपर क्रोध जिनको आइरह्यो हासी सहित जो क्रोध आवै

क्वज्रसारसर्वाङ्गौमल्लौशैलेन्द्रसन्निभौ ॥ क्वचातिसुकुमाराङ्गौकिशोरौनाप्तयौवनौ ८ धर्म्मव्यतिक्रमोह्यस्य समाजस्यध्रुवंभवेत् ॥ यत्राधर्म्मःसमुत्तिष्ठेन्नस्थेयंतत्रकर्हिचित् ९ नसभांप्रविशेत्प्राज्ञस्सभ्यदोषाननुस्मरन् ॥ अब्रुवन्विब्रुवन्नज्ञोनरःकिल्बिषमश्नुते १० वल्गतःशत्रुमभितःकृष्णस्यवदनाम्बुजम् ॥ वीक्ष्यतांश्रमवार्युप्तं पद्मकोशमिवाम्बुभिः ११ किंनपश्यतरामस्य मुखमाताम्रलोचनम् ॥ मुष्टिकंप्रतिसामर्षं हाससंरम्भशोभितम् १२ पुण्याबतव्रजभुवोयदयंनृलिङ्गगूढःपुराणपुरुषोवनचित्रमाल्यः ॥ गाःपालयन्सहबलःक्वणयंश्चवेणुं विक्रीडयाञ्चतिगिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः १३ गोप्यस्तपःकिमचरन्यदमुष्यरूपं लावण्यसारमसमोर्द्ध्वमनन्यसिद्धम् ॥ दृग्भिःपिबन्त्यनुसवाभिनवंदुरापमेकान्तधामयशसःश्रियऐश्वरस्य १४ यादोहनेऽवहननेमथनोपलेपप्रेङ्खेङ्खनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ॥ गायन्तिचैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्योधन्याव्रजस्त्रियउरुक्रमचित्तयानाः १५ प्रातर्व्रजाद्व्रजतआविशतश्चसायं गोभिःसमं

तासूं सुन्दर लगे हैं १२ और गोपी कहे हैं वे व्रजभूमि वड़ीपवित्र हैं जिनके वनके चित्रविचित्र फूलन कूं उरसे पुराणपुरुष श्रीकृष्ण वलदेव सहित मनुष्य रूपमें छिपि के गौवन कूं चरावत समय वासुरी कूं वजावत और ब्रह्मा लक्ष्मी जाके चरणकी पूजाकरैं वह प्यारो खेलत डोले है १३ और स्त्री कहे हैं देखो गोपी कहा तप करत भई जा कारण जिनतें श्रेष्ठ और कोई सुन्दर नहीं और जिनकी वरावर कोई नहीं जाते अधिक नहीं देखो आभूषण वस्त्र विनाही सुन्दर लगे है यश लक्ष्मी ऐश्वर्य्य इनको एकान्तस्थान अर्थात् सर्व्वदा वासकरैं ऐसो जो प्यारेको स्वरूप ताकूं दृष्टि करिके देखे हैं जे गोपी गाय दुहावती वेर धान्य छरती वेर दधि फिरावती वेर उपलेपकी वेर वालकनकूं झुलावतसमय वालक जव रोवें तव उनकों राखती वेर घरनमें वुहारी देनो यासूं आदिलैके जो काम हैं तिनकूं करती वेर श्रीकृष्णमें आसक्तहोय कृष्ण गुण गावे हैं तासमय प्रेमानन्द सूं आसू जिनके नेत्रनमें आयजायँ हैं कृष्णमें जो चित्तलगे हैं तासूं सव विषय जिनकूं आयके प्राप्त होयहैं सखियो व्रजकी स्त्री धन्य हैं १४।१५ प्रातःकाल जव व्रज ते गौ चरायवे कों जाइ हैं सन्ध्या समय गौवन कूं लैके वाँसुरी वजावत जव आवे हैं ता समय गोपी या कृष्ण की वाँसुरी सुनिके शीघ्र अपने घर सूं

निकसि कै मार्ग में आइकै बहुत हैं पुण्य जिनके ऐसी सुन्दर मुसिकानि दयापूर्व्वक जामें चितवनि ऐसे मुखको दर्शन करे हैं वे गोपी बड़भागिनी हैं १६ हे भरतवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! या प्रकार स्त्री आपुसमें कहे हैं ता समय योग के ईश्वर सबके दुःख के दूर करनवारे भगवान् शत्रु कूं मारिवे कूं मन करतभये १७ भयसमेत स्त्रीनकी बात सुनिके पुत्रन में स्नेह सूं जो शोक है तासूं व्याकुल पुत्रनके बलकूं जाने नहीं ऐसे माता पिता देवकी वसुदेव दुःखित होतभये और नन्द वसुदेव दोनों पछितातभये हाय! हाय! क्यों मैं अक्रूर के कहे तें इन दोनोंकों मथुरापुरी में लायो घरमें पकरिके कोठरी में मूंदि क्यों न राखे ऐसे नन्दजी पछितात भये १८ अनेक प्रकार के जे कुश्ती के दाँव पेंच हैं तिन सूं श्रीकृष्ण चाणूर जैसे आपुसमें लड़त भये तैसेही बलदेव और मुष्टिक लड़त भये १९ वज्रपातकी तुल्य कठोर भगवान् के अङ्ग परे तिन सूं चाणूरके अङ्ग चुरकुट होयगये तासूं अत्यन्त दुःखित होतभये २० शिकरा कैसो है वेग जाके ऐसो चाणूर दोनों हाथकी मुष्टि बाँधिके क्रोधमें भरि

कृष्णयतोऽस्यनिशम्यवेणुम् ॥ निर्गम्यतूर्णमबलाःपथिभूरिपुण्याः पश्यन्तिसस्मितमुखंसदयावलोकम् १६ एवंप्रभाषमाणासुस्त्रीषुयोगेश्वरोहरिः ॥ शत्रुंहन्तुंमनश्चक्रे भगवान्भरतर्षभ १७ सभयाःस्त्रीगिरःश्रुत्वा पुत्रस्नेहशुचातुरौ ॥ पितरावन्वतप्येतां पुत्रयोरबुधौबलम् १८ तैस्तैर्नियुद्धविधिभिर्विविधैरच्युतेतरौ ॥ युयुधातेयथाऽन्योन्यं तथैवबलमुष्टिकौ १९ भगवद्गात्रनिष्पातैर्वज्रनिष्पेषनिष्ठुरैः ॥ चाणूरोभज्यमानाङ्गोमुहुर्ग्लानिमवापह २० सश्येनवेगउत्पत्यमुष्टीकृत्यकरावुभौ ॥ भगवन्तंवासुदेवंक्रुद्धोवक्षस्यबाधत २१ नाचलत्तत्प्रहारेण मालाहतइवद्विपः ॥ बाह्वोर्निगृह्यचाणूरं बहुशोभ्रामयन्हरिः २२ भूपृष्ठेपोथयामास तरसाक्षीणजीवितम् ॥ विस्रस्ताकल्पकेशस्रगिन्द्रध्वजइवापतत् २३ तथैवमुष्टिकःपूर्वं स्वमुष्ट्याभिहतेनवै ॥ बलभद्रेणबलिना तलेनाभिहतोभृशम् २४ प्रवेपितःसरुधिरमुद्वमन्मुखतोऽर्दितः ॥ व्यसुःपपातोर्व्युपस्थे वाताहतइवाङ्घ्रिपः २५ ततःकूटमनुप्राप्तं रामःप्रहरतांवरः ॥ अवधील्लीलयाराजन् सावज्ञंवाममुष्टिना २६ तर्ह्येवहिशलःकृष्णपदापहतशीर्षकः ॥ द्विधाविदीर्णस्तोशलकउभावपिनिपेततुः २७ चाणूरेमुष्टिकेकूटे शले

के ऊपरकूं उछरिके भगवान् वासुदेव की छाती में मारतभयो २१ जैसे हाथी फूलनकी मालाकी चोट से नहीं डिगे है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र चाणूर की मुष्टि के मारे न डिगत भये हरि श्रीकृष्ण चाणूर के दोनों हाथ पकरि के बहुत घुमाइ कै वेग करिके पृथ्वी में पटकतभये क्षीण भयो है जीवन जाको शिथिलभये हैं आभूषण बार और माला जाके ऐसो चाणूर जैसे गौड़देशमें प्रसिद्ध इन्द्रध्वजा गिरे है तैसे गिरत भयो २२। २३ ताही प्रकार पहिले मुष्टि जिनके लगी ऐसे बलदेवजी ने थाप जाके मारी ऐसो मुष्टिक कम्पित होय मुखते रुधिर कूं वमन करत पीड़ित हो के प्राण जाके निकसि गये जैसे पवनको मारो वृक्ष उखरि परे है ता प्रकार गिरतभयो २४।२५ हे राजन् परीक्षित्! ता पीछे आयो जो कूट मल्ल है ताकूं मारनवारेन में श्रेष्ठ बलदेवजी लीला करिके बाई मुष्टिसूं अवज्ञाकरिके मारतभये २६ शल तोशलने विचारी दण्डवत् के मिपसूं पाव पकरिके पटकि देंगे परन्तु सबके बाहर भीतरकी जाननवारे हैं जा समय दण्डवत् करिवेकों आये तासमय मारी जो लात तासूं शिर फटिगयो ऐसो शल और तोशल दो टूक विदीर्ण होइकै दोनों पृथ्वी में गिरतभये २७ चाणूर मुष्टिक कूट शल तोशल ये मुख्य मल्ल जब मरिचुके ता पीछे और सब मल्ल अपने प्राण बचायबेके

लिये भाजत भये २८ बराबर के गोपन कों अखाड़े में खैंचिकै नगाड़े वजें नृत्यादिक को करें पांवनमें नूपुर जिनके बजे ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव गोपनके सङ्ग मिलिकै विहार करतभये २९ श्रीकृष्णचन्द्र और बलदेवजी के चरित्र देखिकै कंस के विना सम्पूर्ण जन प्रसन्न होतभये ब्राह्मण जिनमें मुख्य ऐसे सज्जन पुरुष भले भले ऐसे कहिकै स्तुति करतभये ३० बड़े बड़े मल्ल मरिगये कितनेऊ भाजिगये तब भोजवंशीनको राजा कंस नगाड़े थमाय देतभयो और यह वचन बोलो ३१ खोटे जिनके कर्म्म ऐसे वसुदेव के बेटानकूं पुरते बाहर निकासि देउ और इनको धन छिनाइ लेउ खोंटी है बुद्धि जाकी ऐसे नन्दको बाधिलेउ ३२ खोंटीहै बुद्धि जाकी ऐसे असाधु वसुदेवकूं जल्दी मारो शत्रुन में मिलिरह्यो ऐसे पिता उग्रसेन कूं टहलुआन सहित बाधिलेउ ३३ या प्रकार कंस जब बकन लग्यो तब बडो क्रोध जिनके भयो ऐसे अव्यय भगवान् धीरेसूं उछरिके ऊंचे मंचानपै चढ़तभये ३४ धैर्यवान् कंस है सो चली आवै ऐसी जो अपनी मृत्युहै ताकूं देखिके आसन

तोशलकेहते ॥ शेषाःप्रदुद्रुवुर्मल्लाः सर्वेप्राणपरीप्सवः २८ गोपान्वयस्यानाकृष्य तैःसंसृज्यविजह्रतुः ॥ वाद्यमानेषुतूर्येषुवल्गन्तौरुतनूपुरौ २९ जनाः प्रजहृषुःसर्वे कर्मणारामकृष्णयोः ॥ ऋतेकंसंविप्रमुख्याः साधवःसाधुसाध्विति ३० हतेषुमल्लवर्य्येषु विद्रुतेषुचभोजराट् ॥ न्यवारयत्स्वतूर्य्याणि वाक्यंचेदमुवाचह ३१ निःसारयतदुर्वृत्तौ वसुदेवात्मजौपुरात् ॥ धनंहरतगोपानां नन्दंवध्नीतदुर्म्मतिम् ३२ वसुदेवस्तुदुर्मेधा हन्यतामाश्वऽसत्तमः ॥ उग्रसेनः पिताचापि सानुगःपरपक्षगः ३३ एवंविकत्थमानेवै कंसेप्रकुपितोऽव्ययः ॥ लघिम्नोत्पत्यतरसा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् ३४ तमाविशन्तमालोक्य मृत्युमात्मनआसनात् ॥ मनस्वीसहसोत्थाय जगृहेसोऽसिचर्म्मणी ३५ तंखड्गपाणिंविचरन्तमाशु श्येनंयथादक्षिणसव्यमम्बरे ॥ समगृहीतदुर्विषहोग्रतेजायथोरगंतार्क्ष्यसुतःप्रसह्य ३६ प्रगृह्यकेशेषुचलत्किरीटं निपात्यरङ्गोपरितुङ्गमञ्चात् ॥ तस्योपरिष्टात्स्वयमब्जनाभः पपातविश्वाश्रयआत्मतन्त्रः ३७ तंसंपरेतंविचकर्षभूमौ हरिर्यथेभंजगतोविपश्यतः ॥ हाहेतिशब्दःसुमहांस्तदाऽभूदुदीरितःसर्वजनैर्नरेन्द्र ३८ सनित्यदोद्विग्नधियातमीश्वरं पिबन्वदन्वाविचरन्स्वपञ्छ्वसन् ॥ ददर्शचक्रायुधमग्रतोयतस्तदेवरूपंदुरवापमाप ३९ तस्यानुजाभ्रातरोऽष्टौ कङ्कन्यग्रोधकादयः ॥ अभ्यधावन्नभिक्रुद्धाभ्रातुर्निर्वेशका

से उठिकै ढाल तलवार लेत भयो ३५ तलवार हाथमें लैके आकाश में जैसे शिकरा पक्षी डोलै है तैसे दाई बाईं ओर जल्दी जल्दी फिरै जो कंस है ताय सहारिवे में न आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तार्क्ष्य को पुत्र गरुड़ जैसे सर्पकूं पकरिलेइ है तैसे पकरतभये ३६ हलो है किरीटमुकुट जाको ऐसो जो कंस है ताके केशनकों पकरिके ऊंचे मंचानपै तें रंगभूमि में पटकि के कमल है नाभिमें जिनके सम्पूर्ण विश्व जिनके उदर में अपने अधीन ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कंस के ऊपर कूदत भये ३७ सिंह जैसे हाथीकूं खींचे है तैसे सब जगत् के देखत मृत्युभयो जो कंसहै ताकूं पृथ्वी में घसीटत भये हे नरन के राजा परीक्षित्! ता समय समस्त प्रजान के बड़ो हाहाकार शब्द होतभयो ३८ कंस प्रतिदिन चलायमान चित्तसूं जल पीवत बात कहत मार्ग चलत सोवत श्वास लेत चक्रहै आयुध जिनके ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण के दुःख से प्राप्त होनेवाले स्वरूपकूं पावत भयो ३९ ता कंस के कङ्क न्यग्रोध सूं आदि लैके छोटे भय्या अत्यन्त क्रोध करिके भय्या कंसको बदलो लेने के

लिये दौरि के आवत भये ४० रोहिणी के सुत बलदेव जी ताही समय क्रोध करिके हाथनमें शस्त्र लैके आये जे कंस के भय्या हैं तिनकूं सिंह जैसे पशून कूं मारे तैसे बेडान कों उठायके मारत भये ता समय आकाश में नगाड़े बाजतभये भगवान् की विभूति ब्रह्मा महादेवकों आदि लैके जे देवता हैं ते प्रसन्न होयकै श्रीकृष्ण के ऊपर पुष्पनकी वर्षा करिके स्तुति करतभये स्त्री नृत्य करत भई ४१।४२ हे महाराज ! पति के मरणसूं अतिदुःखित आँसू आँखिन में जिनके आइ गये ऐसी जे कंसकी स्त्री हैं ते शिरनकूं कूटत जहाँ उनकी लोथि परीही तहाँ आवति भई ४३ वीरशय्या में परे जे पति है तिनकूं आलिंगन करिकै शोकातुर जे स्त्री हैं ते वारंवार आँखिन में ते आँसू बहायकै पुकारि पुकारि के विलाप करति भई ४४ हा नाथ! हे प्यारे! हे धर्म्म के जाननवारे! हे करुणानाथ! हे वत्सल! तुम आप मरि के घरवार सहित बालकवारेन सहित हमकों क्यों मारि गये या प्रकार विलाप करत भई ४५ हे पुरुषनमें श्रेष्ठ! तुम विना हम रण्डा होइ कै सुन्दर नहीं लगे है ऐसे तुम पति विना

रिणः ४० तथाऽतिरभसांस्तांस्तु संयत्तान्रोहिणीसुतः ॥ अहन्परिघमुद्यम्यपशूनिवमृगाधिपः ४१ नेदुर्दुन्दुभयोव्योम्नि ब्रह्मेशाद्याविभूतयः ॥ पुष्पैःकिरन्तस्तंप्रीत्या शशंसुर्ननृतुःस्त्रियः ४२ तेषांस्त्रियोमहाराज सुहृन्मरणदुःखिताः ॥ तत्राभीयुर्विनिघ्नन्त्यः शीर्षाण्यश्रुविलोचनाः ४३ शयानान्वीरशय्यायां पतीनालिङ्ग्यशोचतीः ॥ विलेपुःसुस्वरंनार्योविसृजन्त्योमुहुःशुचः ४४ हानाथप्रियधर्मज्ञ करुणानाथवत्सल ॥ त्वयाहतेननिहतावयन्तेसगृहप्रजाः ४५ त्वयाविरहितापत्या पुरीयंपुरुषर्षभ ॥ नशोभतेवयमिव निवृत्तोत्सवमङ्गला ४६ अनागसांत्वंभूतानां कृतवान्द्रोहमुल्बणम् ॥ तेनेमांभोदशांनीतोभूतध्रुक्कोलभेतशम् ४७ सर्वेषामिहभूतानामेषहिप्रभवाप्ययः ॥ गोप्ताचतदवध्यायी नक्वचित्सुखमेधते ४८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ राजयोषितआश्वास्य भगवाल्लोँकभावनः ॥ यामाहुर्लौकिकींसंस्थां हतानांसमकारयत् ४९ मातरंपितरंचैव मोचयित्वाऽथबन्धनात् ॥ कृष्णरामौववन्दाते शिरसास्पृश्यपादयोः ५० देवकीवसुदेवश्च विज्ञायजगदीश्वरौ ॥ कृतसंवन्दनौपुत्रौ सस्वजातेनशङ्कितौ ५१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकंसवधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

मथुरापुरी भी सुन्दर नहीं लगे है सम्पूर्ण मंगल उत्सव जामें तें दूर होइ रहे हैं तथापि उनकों ऐसी ही दिखाई देत है ४६ निरपराध प्राणीन तें तुम बड़ो द्रोह करत भये ताते तुम्हारी यह दशा भई है जो गेरे परे हौ प्राणीन ते वैर करिके कौन पुरुष सुख पावै है ४७ या संसार में समस्त प्राणीन को उत्पत्तिकर्त्ता नाशकर्त्ता पालनकर्त्ता यह कृष्णही है याकी जो पुरुष अवज्ञा करै वह सुख नहीं भोगे है ४८ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! लोकनके पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र राजा कंस की स्त्रीन को समझाय मरे हैं तिनकी दाहादिक क्रिया करावत भये ४९ माता पिता देवकी वसुदेव कूं कंसके वन्दीखाने तें छुटावत भये राम कृष्ण दोनों भय्या माता पिता के चरणनमें शिर लगाय कै प्रणाम करत भये ५० देवकी वसुदेव प्रणाम जिनने करी ऐसे पुत्रन कूं जगत् के ईश्वर मानिके भयभीत होयकै नहीं मिलत भये ५१ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेकंसवधोनामचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥ ❀ ॥

(पञ्चचत्वारिंशकेऽथपितृनन्दादिसान्त्वनम् ॥ उग्रसेनाभिषेकश्च गुरोर्वासात्पुरागमः १ पैंतालीसवें अध्यायमें वसुदेव देवकी और नन्दादिकों को कृष्णजी समझाकर उग्रसेनजीका अभिषेक कर सान्दीपनि गुरुजीके यहा रहकर वहा सों मथुरापुरी में आगमन वर्णन है १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! पुरुषनमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णचन्द्र माता पितान कूं अपनो न भयो मानि के मोकूं परमेश्वर मति जानो जननकी मोहन करनवारी अपनी मायाकूं फैलावतभये हमकों पुत्र मानिकै अभी संसारके सुख भोगे नहीं हैं पहिलेही ये परमेश्वरहैं यह ज्ञान इनकूं होइ आयोहै मैं प्रसन्नभयो तब इनको ज्ञान कहा दुर्लभहै मो में पुत्रभाव करिकै जो प्रेम करनो है सो दुर्लभहै याते अभी ये परमेश्वरहैं ये इनकों ज्ञान मो में न होय या लिये अपनी माया फैलावतभये १ यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण बलदेवजीकूं संग लैके माता पिताकेपास आवतभये विनयपूर्व्वक नमिकै हे माता! हे पिता ! ऐसे आदरपूर्व्वक प्रसन्न होयके बोलतभये २ हे पिता ! सर्व्वदा तुम्हारे चाहनाही बनीरही

श्रीशुकउवाच ॥ पितरावुपलब्धार्थौ विदित्वापुरुषोत्तमः ॥ माभूदितिनिजांमायां ततानजनमोहिनीम् १ उवाचपितरावेत्यसाग्रजःसात्वतर्षभः ॥ प्रश्रयावनतःप्रीणन्नम्बतातेतिसादरम् २ नास्मत्तोयुवयोस्तात नित्योत्कण्ठितयोरपि ॥ बाल्यपौगण्डकैशोराः पुत्राभ्यामभवन्क्वचित् ३ नलब्धोदैवहतयोर्वासोनौभवदन्तिके ॥ यांबालाःपितृगेहस्थाविन्दन्तेलालितामुदम् ४ सर्वार्थसम्भवोदेहोजनितःपोषितोयतः ॥ नतयोर्यातिनिर्वेशं पित्रोर्मर्त्यःशतायुषा ५ यस्तयोरात्मजःकल्पआत्मनाचधनेनच ॥ वृत्तिंनदद्यात्तंप्रेत्य स्वमांसंखादयन्तिहि ६ मातरंपितरंवृद्धं भार्य्यांसाध्वींसुतंशिशुम् ॥ गुरुंविप्रंप्रपन्नञ्च कल्पोबिभ्रच्छ्वसन्मृतः ७ तन्नावकल्पयोःकंसान्नित्यमुद्विग्नचेतसोः ॥ मोघमेतेव्यतिक्रान्तादिवसावामनर्चतोः ८ तत्क्षन्तुमर्हथस्तात मातर्नौपरतन्त्रयोः ॥ अकुर्वतोर्वांशुश्रूषां क्लिष्टयोर्दुर्हृदाभृशम् ९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिमायामनुष्यस्य हरेर्विश्वात्मनोगिरा ॥ मोहितावङ्कमारोप्य परिष्वज्यापतुर्मुदम् १० सिञ्चन्तावश्रुधाराभिः स्नेहपाशेनचावृतौ ॥ नकिञ्चिदूचतूराजन्बाष्पकण्ठौविमोहितौ ११ एवमाश्वास्यपितरौ भगवान्देवकीसुतः ॥ मा

हम पुत्रनतें बाल्यअवस्था पौगण्डअवस्था किशोरअवस्थाके सुख कभऊ तुमकों न होतभये ३ दैवके मारे हमहैं तुम्हारे निकट वासहू न करिसके पिताके घरमें बालकरहे हैं लालन पालनहोइहै आनन्द को पावे हैं हमको कछुओ प्राप्त न भयो ४ धर्म्म अर्थ काम मोक्ष सब पदार्थ जाते होइं ऐसो यह देह जिन माताने उत्पन्न कियो उनकी यह मरणधर्म्मा मनुष्य सौवर्ष सेवाकरे तथापि उऋण नहीं होइहै ५ जो पुत्र समर्थ होइ के देहसूं अथवा धनते माता पिताकूं जीविका नहीं देवै वाको परलोकमें यमके दूत वाको मांस वाही कूं काटि काटि के खवावे हैं ६ माता पिता वृद्ध सुशीला स्त्री पुत्र बालक गुरु ब्राह्मण और जो कोई शरण आयो है इनको जो समर्थ मनुष्य भरण पोषण न करै तो वह मरे तुल्य है ७ असमर्थ कंस के भय के मारे नित्य है चञ्चल मन जिनको ऐसे हम हैं ता कारण तुम्हारी सेवा विनाकरे हमारे इतने दिन व्यर्थ बीतगये ८ हे पिता ! हे माता ! परारे अधीन याते तुम्हारी सेवा न करी दुष्ट जाको हृदय ऐसे कंससूं अत्यन्त दुःखित हमहैं तिनपर तुम क्षमा करिवेकूं योग्यहौ ९ या प्रकार माया करिकै मनुष्यरूप जिनने धर्‌यो ऐसे विश्वके आत्मा हरि हैं तिनके वचननसूं मोहित होयकै देवकी वसुदेव पुत्रकों गोदमें बैठायके आलिंगन करिके आनन्द कूं

पावतभये १० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! स्नेह के रस्सानते बँधे मोहित होयगये ऐसे देवकी वसुदेव हैं ते नेत्रन ते आंसुन की धारन ते कृष्ण वलदेव कूं भिजोवत कछु भी न बोलतभये ११ देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण या प्रकार माता पिता को समाधान करिके नाना जो उग्रसेन हैं तिनकों यदून को राजा करत भये १२ श्रीकृष्ण बोलत भये हे महाराज ! हम तुम्हारी प्रजा हैं तिन कूं तुम आज्ञा करिबे कों योग्यहौ ययाति को शापहै यातें यादवन कों सिंहासन पै बैठिवो योग्य नहीं है राज्य करिबो योग्य नहीं है तुमहू यादवहौ मेरी आज्ञातें तुमकूं दोष नहीं है या प्रकार भगवान् कहत भये १३ मैं वृद्ध कहा अब राज्य करोंगो तहा श्रीकृष्ण कहे हैं मैं टहलुआ होयकै तुम्हारे पास रहूंगो वड़े वड़े देवादिक तुमकों भेंट देयँगे और राजा देयँगे यामें कहा कहनो है १४ कंस के डरके मारे भाजि गये ऐसे जो अपनी जाति के नाते गोते के सम्पूर्ण यदु वृष्णि अन्धक मधु दाशार्ह कुकुरादिक हैं तिनकों दिशान ते बुलायकै विदेश में जे वसे हैं तासूं

तामहंतूग्रसेनं यदूनामकरोन्नृपम् १२ आहचास्मान्महाराज प्रजाश्चाज्ञप्तुमर्हसि ॥ ययातिशापाद्यदुभिर्नासितव्यंनृपासने १३ मयिभृत्यउपासीने भवतो विबुधादयः ॥ बलिंहरन्त्यवनताःकिमुतान्येनराधिपाः १४ सर्वान्स्वान्ज्ञातिसम्बन्धान्दिग्भ्यःकंसभयाकुलान् ॥ यदुवृष्ण्यन्धकमधुदाशार्हकुकुरादिकान् १५ सभाजितान्समाश्वास्य विदेशावासकर्शितान् ॥ न्यवासयत्स्वगेहेषुवित्तैःसन्तर्प्यविश्वकृत् १६ कृष्णसङ्कर्षणभुजैर्गुप्तालब्धमनोरथाः ॥ गृहेषुरेमिरेसिद्धाःकृष्णरामगतज्वराः १७ वीक्षन्तोऽहरहःप्रीता मुकुन्दवदनाम्बुजम् ॥ नित्यंप्रमुदितंश्रीमत्सदयस्मितवीक्षणम् १८ तत्रप्रवयसोप्यासन् युवानोऽतिबलौजसः ॥ पिबन्तोऽक्षैर्मुकुन्दस्य मुखाम्बुजसुधांमुहुः १९ अथनन्दंसमासाद्य भगवान्देवकीसुतः॥ सङ्कर्षणश्चराजेन्द्र परिष्वज्येदमूचतुः २० पितर्युवाभ्यांस्निग्धाभ्यां पोषितौलालितौभृशम् ॥ पित्रोरभ्यधिकाप्रीतिरात्मजेष्वात्मनोऽपिहि २१ सपितासाचजननी यौपुष्णीतांस्वपुत्रवत् ॥ शिशून्बन्धुभिरुत्सृष्टानकल्पैःपोषरक्षणे २२ यातयूयंव्रजंतात वयंचस्नेहदुःखितान् ॥ ज्ञातीन्वोद्रष्टुमेष्यामोविधायसुहृदांसुखम् २३ एवंसान्त्वय्यभगवान् नन्दंसव्र

कृश होयरहे हैं ऐसे जे यादव हैं तिनको सत्कार करिके बहुत से धन दैके तृप्त करिके सब विश्वके करनवारे श्रीकृष्ण अपने अपने घरन में बसावत भये १५ । १६ कृष्ण वलदेव की भुजान सों रक्षा जिनकी भई प्राप्तभये हैं मनोरथ जिनके ऐसे यादवन के श्रीकृष्ण वलदेव के दर्शनते गये हैं ताप जिनके ऐसे पूर्ण होयकै घरमें रमण करत भये प्रसन्न होयके यादव नित्य जामें आनन्द दया सहित जामें मुसिकानि चितवनि ऐसे मुकुन्द के मुखकों नित्य देखे हैं १७।१८ मुकुन्द के मुखकमल में अमृत है जो ताकूं नेत्रों सूं पीके ता समय कोई वृद्ध हैं तौ भी वड़ो जिनके वल ऐसे तरुण होतभये १९ याके पीछे हे राजन् परीक्षित् ! भगवान् देवकी के पुत्र और वलदेवजी नन्दराय के पास आयकै मिलिकै यह बोलतभये २० हे पिता ! तुम स्नेहीनने हमारो पोषण करयो बहुत लाड़ करयो माता पिताकों अपने पुत्रन में अधिक प्यार होयहै वही पिता है वही माताहै जो अपने पुत्रकी तुल्य पोषण करैं पोषण करिबे में जिनकी सामर्थ्य न भई ऐसे हमारे माता पिता ने हमकों बालकपने तेही छोड़ि दियोहै २१।२२ हे पिता ! तुम व्रजकों जावो अपने सुहृदनकों सुख करिके स्नेहते दुःखित जो तुम ज्ञातिकेहौ तिने देखिवेकों हम पीछे आवेंगे २३ याप्रकार अच्युत

भगवान् श्रीकृष्ण व्रजवासीन सहित नन्दरायजी कूं समझायकै वस्त्र आभूषण सोने चादी के वासन दैकै बड़े आदरते पूजन करतभये २४ या प्रकार श्रीकृष्णको वचन सुनिकै नन्दरायजी श्रीकृष्ण बलदेव कों छाती तें लगायकै प्रेममें व्याकुल होयकै नेत्रनमें आसू भरि आये व्रजवासीनकों सङ्गलैके व्रजकों जात भये २५ याके पीछे हे राजन् परीक्षित् ! शूरके पुत्र वसुदेवजी ब्राह्मण पुरोहित बुलाय कै पुत्रनको यथायोग्य द्विजन्मासंस्कार करावत भये २६ तिन अलंकृत ब्राह्मणन कों पूजनकर गौनें शृङ्गार करिके दक्षिणा देत भये रेशमी झूल जिन पै परी सोनेकी माला पहिरे ऐसी बछरान सहित दान करतभये २७ बड़े बुद्धिमान् वसुदेवजी कृष्ण रामके जन्मनक्षत्रके समय जिन गौवनको मनते दान करतभये कंसने अधर्म्म करिके हरिलीनी जे गौवें हैं तिनकी सुधि करिके दान करतभये २८ ता पीछे प्राप्तभये हैं संस्कार जिनके सुन्दर हैं व्रत जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव द्विजन्मान को संस्कार पायकै यदुकुल के पुरोहित जो गर्गाचार्य्य हैं तिनसूं गायत्री को उपदेश

जमच्युतः ॥ वासोऽलङ्कारकुप्याद्यैरर्हयामाससादरम् २४ इत्युक्तस्तौपरिष्वज्यनन्दःप्रणयविह्वलः ॥ पूरयन्नश्रुभिर्नेत्रे सहगोपैर्व्रजंययौ २५ अथशूरसुतो राजन्पुत्रयोःसमकारयत् ॥ पुरोधसाब्राह्मणैश्च यथावद्द्विजसंस्कृतिम् २६ तेभ्योऽदाद्दक्षिणागावोरुक्ममाल्यःस्वलंकृताः ॥ स्वलंकृतेभ्यःसंपूज्य सवत्साःक्षौममालिनीः २७ याःकृष्णरामजन्मर्क्षेमनोदत्तामहामतिः॥ ताश्चाददादनुस्मृत्यकंसेनाधर्मतोहृताः २८ ततश्चलब्धसंस्कारौद्विजत्वंप्राप्यसुव्रतौ ॥ गर्गाद्यदुकुलाचार्य्याद्गायत्रंव्रतमास्थितौ २९ प्रभवौसर्वविद्यानांसर्व्वज्ञौजगदीश्वरौ ॥ नान्यसिद्धामलज्ञानंगूहमानौनरेहितैः ३० अथोगुरुकुलेवासमिच्छन्तावुपजग्मतुः ॥ काश्यंसान्दीपनिंनामह्यवन्तिपुरवासिनम् ३१ यथोपसाद्यतौदान्तौगुरौवृत्तिमनिन्दिताम् ॥ ग्राहयन्तावुपेतौस्मभक्त्यादेवमिवादृतौ ३२ तयोर्द्विजवरस्तुष्टः शुद्धभावानुवृत्तिभिः ॥ प्रोवाचवेदानखिलान्साङ्गोपनिषदोगुरुः ३३ सरहस्यंधनुर्वेदं धर्म्मान्न्यायपथांस्तथा ॥ तथाचान्वीक्षिकींविद्यांराजनीतिञ्चषड्विधाम् ३४ सर्वनरवरश्रेष्ठौ सर्वविद्याप्रवर्त्तकौ ॥ सकृन्निगदमात्रेण तौसञ्जगृहतुर्नृप ३५ अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या संयतौतावतीः

लैके ब्रह्मचर्य्य व्रतमें रहतभये २९ समस्तविद्या जिनते होई याहीते सर्व्वज्ञ अर्थात् सब बातके जाननवारे सब जगत् के ईश्वर ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं ते स्वतःसिद्ध जो निर्म्मल ज्ञानहै ताय मनुष्यन की तुल्य चेष्टा करे हैं छिपावें है यज्ञोपवीत भये पीछे गुरुकुलमें वसिवे की इच्छा जिनके भई ऐसे कृष्ण बलदेव कश्यप जिनको गोत्र उज्जैनपुरी में वसें सान्दीपनि गुरु हैं तिनके पास जातभये ३० । ३१ इन्द्रिय जिनने जीती ऐसे कृष्ण बलदेव भले प्रकार गुरुनके पास जायके बड़ेआदर तें भक्तिपूर्व्वक जैसे नारायण को सेवन करे हैं ऐसे गुरु को सेवन करतभये ३२ शुद्धभाव सूं जो सेवे हैं तासूं सन्तुष्टभये ऐसे जो द्विजन्मान में श्रेष्ठ गुरुहैं ते श्रीकृष्ण बलदेवकूं शिक्षादिक अंगन सहित उपनिषद् सहित जो वेद हैं तिनकों पढ़ावत भये ३३ मन्त्र देवता को जो ज्ञानहै ता सहित शस्त्र चलायवे को जो धनुर्वेद है ताय और धर्म्मशास्त्र न्याय मीमांसादिकहैं तिनें और तर्कविद्याहै ताय और शत्रुते मिलाप करनो युद्ध करनो वाके ऊपर चढ़जानो समीप जायकै रहनो अपनी ओर फोरिलेनो मिलाप करनो यह छः प्रकारकी राजनीति है ताय पढ़तभये ३४ सम्पूर्ण मनुष्यन में उत्तमन में उत्तम सब विद्यानके चलावनवारे सावधान जो कृष्ण बलदेव सो हे राजन्

परीक्षित् ! गुरुके विना बतायेही सब विद्यानकों पढ़तभये ३५ चौंसठ रात्रिन में गायवो बजायवो नृत्य करिवे सूं आदि लैके जो चौंसठ कला हैं तिनें सीखतभये जब विद्या पढ़ि चुके तब हे
राजन् परीक्षित् ! कृष्ण बलदेव दोनों भय्या गुरुते गुरुदक्षिणाकी आज्ञाकरो ऐसे कहतभये ३६ सान्दीपनि ब्राह्मण कृष्ण बलदेव की अद्भुत महिमा देखिके मनुष्यन में ऐसी चमत्कारी बुद्धि
देखिकै स्त्री ने कही प्रभासक्षेत्रमें समुद्रमें डूबिके मरो जो मेरो पुत्रहै ताहि देउ यह वर मागो स्त्री के कहेते वही वर मांगतभये ३७ तथास्तु ऐसे अङ्गीकार करिकै बड़े हैं पराक्रम जिनके बड़ो रथ जिनको
ऐसे कृष्ण बलदेव रथमें बैठिके प्रभासक्षेत्रमें समुद्रके किनारे पै जायके एक क्षणभर बैठतभये तब समुद्र कृष्ण बलदेव आये हैं यह जानिकै तिनकी पूजा लावतभयो ३८ तब भगवान् श्रीकृष्ण ता
समुद्र ते कहतभये जो हमारे गुरुको बालक तैंने यहां बड़ी लहरन करि डुबायो है वो गुरुको पुत्र लायकै दे ३९ तब समुद्र बोल्यो हे देव अर्थात् प्रकाशमान कृष्ण ! मैंने तो तुम्हारे गुरुको

कलाः ॥ गुरुदक्षिणयाऽऽचार्यंछन्दयामासतुर्नृप ३६ द्विजस्तयोस्तम्महिमानमद्भुतं संलक्ष्यराजन्नतिमानुषींमतिम् ॥ संमन्त्र्यपत्न्यासमहार्णवेमृतं
बालंप्रभासेवरयाम्बभूवह ३७ तथेत्यथारुह्यमहारथौरथं प्रभासमासाद्यदुरन्तविक्रमौ ॥ वेलामुपव्रज्यनिषीदतुःक्षणंसिन्धुर्विदित्वाऽर्हणमाहरत्तयोः ३८
तमाहभगवानाशुगुरुपुत्रःप्रदीयताम् ॥ योऽसाविहत्वयाग्रस्तोबालकोमहतोर्मिणा ३९ ॥ समुद्रउवाच ॥ नैवाहार्षमहंदेवदैत्यःपञ्चजनोमहान् ॥ अन्त
र्जलचरःकृष्ण शङ्खरूपधरोऽसुरः ४० आस्तेतेनाहृतोनूनं तच्छ्रुत्वासत्वरंप्रभुः ॥ जलमाविश्यतंहत्वा नापश्यदुदरेऽर्भकम् ४१ तदङ्गप्रभवंशङ्खमादायरथमा
गमत् ॥ ततःसंयमनींनाम यमस्यदयितांपुरीम् ४२ गत्वाजनार्दनःशङ्खं प्रदध्मौसहलायुधः ॥ शङ्खनिर्ह्रादमाकर्ण्य प्रजासंयमनोयमः ४३ तयोःसपर्य्याम
हतीं चक्रेभक्त्युपबृंहिताम् ॥ उवाचावनतःकृष्णं सर्वभूताशयालयम् ॥ लीलामनुष्यहेविष्णोयुवयोःकरवामकिम् ४४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ गुरुपुत्रमिहा
नीतंनिजकर्म्मनिबन्धनम् ॥ आनयस्वमहाराज मच्छासनपुरस्कृतः ४५ तथेतितेनोपानीतं गुरुपुत्रंयदूत्तमौ ॥ दत्त्वास्वगुरवेभूयोवृणीष्वेतितमूचतुः ४६

पुत्र नहीं डुबायो है मेरे भीतर रहनवारो शङ्खरूप कों धरे ऐसो बड़ो दैत्य है वह हरि लैगयो है निश्चय वाके पास है यह सुनिके समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रतासूं जल में धसिके पञ्चजन दैत्य कूं
मारिकै वाके पेटमें बालक कूं नहीं देखतभये ४० । ४१ ता दैत्य के अंगमें ते निकसो जो शङ्ख है ताकूं लैके श्रीकृष्ण रथ पै आवत भये यमराजकी अतिप्यारी संयमनी पुरी है तामें आवत
भये ४२ तहां जायकै बलदेव सहित श्रीकृष्णचन्द्र शङ्ख बजावत भये प्रजाकों दण्ड देनवारो धर्मराज शङ्ख को शब्द सुनिकै कृष्ण बलदेव की भक्तिपूर्वक पूजा करत भयो सब प्राणीन
के हृदय में विराजमान जो कृष्ण तिनसों हाथ जोरिकै यह बोलतभयो हे विष्णु भगवान् ! लीला करिकै तुम मनुष्यरूप हौ तुम्हारी कहा सेवा करौं ४३ । ४४ अब श्रीभगवान् श्री-
कृष्णचन्द्र बोले हे महाराज ! यहां गुरुको पुत्र तू लैआयो है ताको देउ तब यमराज ने कही अपने कर्म्मन तें बँधो परो है कैसे लाऊं तब श्रीकृष्ण कहे हैं मेरी आज्ञा भई मेरी आज्ञातें कर्म्म
जोरावर नहीं है ४५ जो आज्ञा ऐसे कहिकै यमराज ने लाय दियो जो गुरुको पुत्रहै ताको यादवन में उत्तम जो कृष्ण बलदेवहैं ते अपने गुरुकों दैके और वरमागो ऐसे कहत भये ४६

तब गुरु कहतभये हे पुत्र ! तुमने गुरुसेवा भलेप्रकार करी तुम सारिखेन को गुरु में भयो मेरे कौन बातकी चाहना बाकी रही ४७ हे वीरो ! तुम अपने घर कों जावो या लोक में और परलोक में तुम्हारी पवित्र कीर्त्ति होउ तुम्हारे वेद हैं ते नवीन पढ़ेभये स्फुरण बने रहैं ४८ या प्रकार गुरुने आज्ञा जिनकों दीनी ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव दोनों अथवा पवनकी तुल्य शीघ्र चलै मेघकी तुल्य जाकी गर्जन ऐसे रथमें बैठिके हे राजन् परीक्षित् ! अपने पुर कू आवतभये ४९ राम कृष्ण भगवान् बहुत दिन तें नहीं देखे ऐसी प्रजा अब दर्शन करिकै बड़े आनन्द कों प्राप्त होतभये जैसे गयो धन मिलिवे सू आनन्द होय तैसे आनन्द होत भयो ५० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगुरुपुत्रानयनंनामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥ * ॥ * ॥

(षट्चत्वारिंशकेवोपगुद्धवंप्रेष्यतद्गिरा ॥ यशोदानन्दयोश्चक्रेकृष्णःशोकापनोदनम् १ कामचारंद्विजातिःसन्परित्यज्यातिसंयतः ॥ गुरोर्ज्ञानमनुप्राप्यसखागोपीरुपाविशत् २ छियालीसवें

गुरुरुवाच ॥ सम्यक्सम्पादितोवत्सभवद्भ्यांगुरुनिष्क्रयः ॥ कोनुयुष्मद्विधगुरोः कामानामवशिष्यते ४७ गच्छतंस्वगृहंवीरौ कीर्त्तिर्वामस्तुपावनी ॥ छन्दांस्ययातयामानिभवन्त्विहपरत्रच ४८ गुरुणैवमनुज्ञातौ रथेनानिलरंहसा ॥ आयातौस्वपुरंतात पर्जन्यनिनदेनवै ४९ समनन्दन्प्रजाःसर्वाहृष्ट्वाराम जनार्दनौ ॥ अपश्यन्त्योबह्वहानिनष्टलब्धधनाइव ५० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेगुरुपुत्रानयनंनामपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ वृष्णीनांप्रवरोमन्त्री कृष्णस्यदयितःसखा ॥ शिष्योबृहस्पतेःसाक्षादुद्धवोबुद्धिसत्तमः १ तमाहभगवान्प्रेष्ठं भक्तमेकान्तिनंक्वचित् ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रपन्नार्त्तिहरोहरिः २ गच्छोद्धवव्रजंसौम्य पित्रोर्नौप्रीतिमावह ॥ गोपीनांमद्वियोगाधिं मत्सन्देशैर्विमोचय ३ तामन्मनस्कामत्प्रा णामदर्थेत्यक्तदैहिकाः ॥ येत्यक्तलोकधर्माश्च मदर्थेतान्बिभर्म्यहम् ४ मयिताःप्रेयसांप्रेष्ठे दूरस्थेगोकुलस्त्रियः ॥ स्मरन्त्योऽङ्गविमुह्यन्तिविरहौत्कण्ठ्य विह्वलाः ५ धारयन्त्यतिकृच्छ्रेण प्रायःप्राणान्कथञ्चन ॥ प्रत्यागमनसन्देशैर्बल्लव्योमेमदात्मिकाः ६ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्तउद्धवोराजन् सन्देशंभर्त्तुराहृ

अध्याय में कृष्णजी उद्धवजी को गोकुल में पठाकर यशोदा और नन्दजी के शोक को दूर करदेतेभये १ और अत्यन्तसंयत होकर जनेऊ होजाने पर कामचार को छोड़कर गुरुते ज्ञानको प्राप्त होकर मित्र उद्धव को गोपियों के यहां प्रवेश करातेभये २) श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! यादवन में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के प्यारे मन्त्री सखा साक्षात् बृहस्पति के शिष्य बुद्धिमानन में श्रेष्ठ जो उद्धव जी हैं १ शरणागतन के दुःख दूर करनवारे मनोहर भगवान् श्रीकृष्ण प्यारे एकान्ती भक्त उद्धवजी सूं एकान्त में हाथ पकरि के बोलतभये २ हे उद्धव ! हे साधु ! तुम व्रजकों जावो हमारे पिता माता कों प्रसन्न करो और गोपीनकों मेरे बिछुरिवे में कष्ट भयो है ताय मेरो सन्देश ले जायके दूरकरो ३ मेरे विषे जिनके मन और प्राण लगि रहे हैं मेरे अर्थ पति पुत्रादिक त्यागि दिये हैं मैं ही प्यारो जिनको आत्मा हूं मोमें मन करिके रहे हैं मेरे लिये या लोक परलोक के सुखन के उपाय जिनने त्यागि दिये हैं तिनकूं मैं सुख देऊं हूं ४ प्यारेन को प्यारो मैं जब ते दूरआयो हौं तब से वे गोकुलकी स्त्री हे उद्धव ! मेरी सुधि करिके विरहमें जो मेरी चाह होइहै तासूं बेवश होयकै मोहित होय जायँहैं ५ मेरी प्यारी मोहीं में जिनके मन वे गोपी गोकुलमें

तें निकसती वेर में शीघ्र आऊँगो ऐसे मेरे सन्देशे गये हैं तिनसूं जैसे तैसे विचरे है ६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार जिनसूं कही ऐसे उद्धवजी बडेआदरतें स्वामी श्री-कृष्णचन्द्रके सन्देशेकूं लैके रथ में बैठिके नन्दरायजी के गोकुलकू जातभये ७ सूर्य्यास्तसमय सुन्दर जो नन्दरायजीको व्रजहै तामें प्राप्त होतभये सन्ध्यासमय गौ जो आवें तिनके खुरनसों रेणु जो उड़ी है तासूं उद्धवजी को रथ ढकिगयो ८ पुष्पवती गौवनके लिये चारोंओर युद्धकरे ऐसे मतवारे बैल वहां वहुतहैं तिनको शब्द जहां होयरह्यो है ऐनके बोझन तें व्याई गौ दौरिदौरि के अपने बछरानके पास जो आवेहैं तिनसों शोभायमान व्रज है ९ जहां तहा सफेद गौवन के बछरा फुदकत डोले हैं गौवनके दुहिवे को शब्द जहा होयरह्यो है अर्थात् जा समय दोहा दोहनी कों घोटन पै धरिकै दुहैं ता समय छुरछुर होयहै जब आधीसी दोहनी होय आवै तब घर्रघर्र होयहै मुँहताई भरिआवै तब घम्म घम्म होयहै और कोई कहे है बछरा छोडो कोई कहे है दोहनी लावो कोई कहे है लेउ कोई कहे है

वासितार्थेऽभियुतः ॥ आदायरथमारुह्य प्रययौनन्दगोकुलम् ७ प्राप्तोनन्दव्रजंश्रीमान्निम्लोचतिविभावसौ ॥ छन्नयानःप्रविशतां पशूनांखुररेणुभिः ८ वासितार्थेऽभियुध्यद्भिर्नादितंशुष्मिभिर्वृषैः ॥ धावन्तीभिश्चवास्राभिरूधोभारैःस्ववत्सकान् ९ इतस्ततोविलङ्घद्भिर्गोवत्सैर्मण्डितंसितैः ॥ गोदोहशब्दाभिरवंवेणूनांनिःस्वनेनच १० गायन्तीभिश्चकर्म्माणि शुभानिबलकृष्णयोः ॥ स्वलंकृताभिर्गोपीभिर्गोपैश्चसुविराजितम् ११ अग्न्यर्क्कातिथिगोविप्रपितृदेवार्चनान्वितैः ॥ धूपदीपैश्चमाल्यैश्च गोपावासैर्मनोरमम् १२ सर्व्वतःपुष्पितवनं द्विजालिकुलनादितम् ॥ हंसकारण्डवाकीर्णैःपद्मषण्डैश्चमण्डितम् १३ तमागतंसमागम्य कृष्णस्यानुचरंप्रियम् ॥ नन्दःप्रीतःपरिष्वज्य वासुदेवधियार्चयत् १४ भोजितंपरमान्नेन संविष्टंकशिपौसुखम् ॥ गतश्रमंपर्यपृच्छत्पादसंवाहनादिभिः १५ कच्चिदङ्गमहाभाग सखानःशूरनन्दनः ॥ आस्तेकुशल्यपत्याद्यैर्युक्तोमुक्तःसुहृद्वृतः १६ दिष्ट्याकंसोहतःपापः सानुगःस्वेनपाप्मना ॥ साधूनांधर्मशीलानां यदूनांद्वेष्टियःसदा १७ अपिस्मरतिनःकृष्णोमातरंसुहृदःसखीन् ॥ गोपान्व्रजंचात्मनाथं गावोवृन्दावनंगिरिम् १८ अप्यायास्यतिगोविन्दःस्व

देउ ऐसो शोर जहा होयरह्यो है बांसुरी वजैं तिनको शब्द जहा होयरह्योहै तासूं वह व्रज शोभायमानहै १० बलदेव श्रीकृष्णके मङ्गलरूप कर्मनकूं गावें ऐसी बनीठनी गोपी और गोपहैं तिनसों व्रज शोभायमान है ११ अग्नि सूर्य्य अभ्यागत गौ ब्राह्मण पितृ देवता इनके पूजनकी सामग्री जहां धरी हैं धूप होय रही दीवा जिनमें वरें फूल जिनमें धरे ऐसे जे गोपन के घरहैं तिनसों वह व्रज मनोरमहै १२ सब ओर ते फुलवारी जामें फूलिरही पक्षी बोलैं भौंरा गुञ्जैं राजहंस कारण्डव पक्षी जिनमें बैठे ऐसे कमलनके समूह तिनसों वह व्रज शोभायमानहै १३ श्रीकृष्णके प्यारे अनुचर उद्धवजी हैं तिनकों आये जानि कै नन्दरायजी प्रसन्न होयकै मिलतभये कृष्ण के पास ते आये हैं यह जानिके पूजन करत भये १४ परमश्रेष्ठ सामग्रीन को भोजन करायकै शय्यापै सुखपूर्व्वक पौढायकै चरण दाविकै मार्गको खेद मिटायकै उद्धवजी तें नन्दरायजी पूंछतभये १५ कृष्णकी कुशल पूंछिवे में आंसूनसों कण्ठ रुकिजायगो यह शङ्का विचारिकै प्रथम वसुदेवजी की कुशल पूंछैहैं हे वड़भागी उद्धव! शूरके पुत्र हमारे सखा वसुदेव लरिकाबारेन सहित कहा कुशलपूर्व्वक हैं कंसके बन्दीखाने तें छूटे हैं भय्या बन्धु हितकारी जाके पास हैं १६ पापी कंस सम्पूर्ण

टहलुआन सहित अपने पापन तें मर्यो यह बडो मङ्गल भयो धर्म्ममें जिनको स्वभाव ऐसे जे साधु यादव है तिनसूं कंस सर्व्वदा वैर करे हो १७ हे उद्धवजी ! वह कृष्ण कभऊं हमारी और अपनी माता की सुधि करे है सुहृद् सखा गोप हैं तिनकी सुधि करे है आपुही जाकी रक्षा करनवारो या व्रजकी सुधि करे है गौ वृन्दावन गोवर्द्धन पर्व्वतकी कभऊं सुधि करे है १८ गौवनके हित को करनवारो कृष्ण जब कभऊं अपने भय्या बन्धूनके देखिवेकों आवेंगो ता समय सुन्दर जामें नासिका सुन्दर मुसिकानि चितवनि ऐसे वाके मुखकूं देखेंगे १९ दावाग्नि तें पवन तें इन्द्र की वर्षा तें विष सर्प्प तें अघासुर तें और वडी २ मृत्युन तें महात्मा कृष्ण ने हमारी रक्षाकरी २० हे उद्धवजी ! श्रीकृष्ण के पराक्रमन की लीलापूर्व्वक कटाक्षभरी चितवनि की हँसनि की बोलनि की जब सुधि करे हैं तब हमारी सम्पूर्ण क्रिया शिथिल होय जाय हैं २१ मुकुन्द के चरणन के खोज जिनमें परे ऐसी नदी पर्व्वत वन में स्थान हैं तिनें और वाके खेलिवे के स्थान हैं तिनें जब देखे हैं तब हमारो मन कृष्णमय होय जाय है २२ देवतान के कार्य्य करिवे के निमित्त या संसार में आये जे कृष्ण हैं तिनें देवतान में उत्तम मानूं हूं बड़ो गम्भीर गर्गाचार्य्य को वचनहू ऐसे

जनान्सकृदीक्षितुम् ॥ तर्हिद्रक्ष्यामतद्वक्त्रं सुनसंसुस्मितेक्षणम् १९ दावाग्नेर्वातवर्षाच्चविषसर्प्पाच्चरक्षिताः ॥ दुरत्ययेभ्योमृत्युभ्यःकृष्णेनसुमहात्मना २० स्मरतांकृष्णवीर्य्याणिलीलाऽपाङ्गनिरीक्षितम् ॥ हसितंभाषितंचाङ्गसर्व्वानःशिथिलाःक्रियाः २१ सरिच्छैलवनोद्देशान्मुकुन्दपदभूषितान् ॥ आक्रीडानीक्षमाणानां मनोयातितदात्मताम् २२ मन्येकृष्णञ्चरामञ्च प्राप्ताविहसुरोत्तमौ ॥ सुराणांमहदर्थाय गर्गस्यवचनंयथा २३ कंसंनागायुतप्राणं मल्लौगजपतिंतथा ॥ अवधिष्टांलीलयैव पशूनिवमृगाधिपः २४ तालत्रयंमहासारंधनुर्यष्टिमिवेभराट् ॥ बभञ्जैकेनहस्तेन सप्ताहमदधाद्गिरिम् २५ प्रलम्बोधेनुकोऽरिष्टस्तृणावर्त्तोबकादयः ॥ दैत्याःसुरासुरजितोहतायेनेहलीलया २६ श्रीशुकउवाच ॥ इतिसंस्मृत्यसंस्मृत्य नन्दःकृष्णानुरक्तधीः ॥ अत्युत्कण्ठोभवत्तूष्णींप्रेमप्रसरविह्वलः २७ यशोदावर्ण्यमानानि पुत्रस्यचरितानिच ॥ शृण्वन्त्यश्रूण्यवास्राक्षीत्स्नेहस्नुतपयोधरा २८ तयोरित्थंभगवति कृष्णेनन्दयशोदयोः ॥ वीक्ष्यानुरागंपरमंनन्दमाहोद्धवोमुदा २९ उद्धवउवाच ॥ युवांश्लाघ्यतमौनूनन्देहिनामिहमानद ॥ नारायणेऽखिलगुरौ यत्कृतामतिरीदृ

सुनो है २३ दशहजार हाथी को जामें बल ऐसे कस कों और मल्लन कों तैसेही कुवलयापीड हाथी कों सिंह जैसे पशूनकूं मारे है ऐसे कृष्ण लीला करिके मारत भये २४ बड़ो भारी तीन ताल की बराबर धनुष् हूं ताय एक हाथ ते उठाय कै जैसे हाथी लठियाकूं तोरे ऐसे तोरत भये और सात दिन पर्य्यन्त गोवर्द्धन पर्व्वत कों धारण करत भये २५ प्रलम्बासुर धेनुकासुर अरिष्टासुर तृणावर्त्त बकासुर कों आदिलैके और जे सुर असुरन के जीतनवारे दैत्य हैं ते कृष्ण ने लीलाही करिके मारे २६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कृष्णमें लगी है बुद्धि जिन की ऐसे नन्दरायजी या प्रकार सुधि करिकै आसू कण्ठ में भरि आये प्रेम के भाव में व्याकुल होय कै चुप होत भये २७ वर्णन करे जे पुत्र के चरित्र तिनें यशोदाजी सुनिकै स्नेह जो बढ़ो तासूं स्तनन में दूध उमँगि आयो नेत्रन में तें आसू बहावति भई २८ या प्रकार नन्दराय यशोदा को भगवान् श्रीकृष्ण में परम अनुराग देखिके उद्धवजी नन्दजीते बोलत भये २९ उद्धवजी कहे हैं

हे मानके देनवारे नन्दराय ! या संसार में देहधारीन के मध्यमें निश्चय तुम प्रशंसाके योग्य हौ या कारण सबके गुरु नारायण तिनमें ऐसी मति लगाई है ३० ये जो कृष्ण बलदेव हैं ते विश्व के निमित्त उपादान कारण हैं याही ते पुरुष प्रकृतिरूप हैं सब प्राणीन में प्रवेश करिकै अनेकप्रकार के प्राणीन कों अनेकप्रकार को जो ज्ञान है ताके साक्षी है और अनादि हैं ३१ प्राणन की छुटती विरिया यह पुरुष क्षणभर शुद्ध मन को जा श्रीकृष्ण में लगाय कै जल्दी ऐसी कर्म्मन की वासनान कूं छोड़िकै सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान ब्रह्मरूप होयकै परमगतिकूं पावै है ३२ सब के आत्मा कारण और कारण करिके मनुष्य रूप जिनने धरो ऐसे परिपूर्ण नारायण में अतिशय करिकै भक्तिकरो तुमकों कहा करनो बाकी रह्यो ३३ अच्युत श्रीकृष्ण थोड़ेही दिन में ब्रज में आवैंगे भक्तनके पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्ण जो माता पिता तुमहौ तिनकूं आनन्द देवेंगे ३४ सब यादवन के वैरी कंस कूं रंगभूमि में मारिकै तुम्हारे पास आयकै श्रीकृष्ण जो क-

शी ३० एतौहिविश्वस्यचबीजयोनीरामोमुकुन्दःपुरुषःप्रधानम् ॥ अन्वीयभूतेषुविलक्षणस्यज्ञानस्यचेशातइमौपुराणौ ३१ यस्मिञ्जनःप्राणवियोगकाले क्षणंसमावेश्यमनोविशुद्धम् ॥ निर्हृत्यकर्म्माशयमाशुयाति परांगतिंब्रह्ममयोऽर्कवर्णः ३२ तस्मिन्भवन्तावखिलात्महेतौ नारायणेकारणमर्त्यमूर्त्तौ ॥ भावं विधत्तांनितरांमहात्मन्किंवाऽवशिष्टंयुवयोस्सुकृत्यम् ३३ आगमिष्यत्यदीर्घेण कालेनव्रजमच्युतः ॥ प्रियंविधास्यतेपित्रोर्भगवान्सात्वतांपतिः ३४ हत्वाकंसंरङ्गमध्ये प्रतीपंसर्व्वसात्वताम् ॥ यदाहवःसमागत्य कृष्णःसत्यंकरोतितत् ३५ माखिद्यतंमहाभागौद्रक्ष्यथःकृष्णमन्तिके ॥ अन्तर्हृदिसभूताना मास्तेज्योतिरिवैधसि ३६ नह्यस्यास्तिप्रियःकश्चिन्नाप्रियोवाऽस्त्यमानिनः ॥ नोत्तमोनाधमोवापिसमानस्यासमोऽपिवा ३७ नमातानपितातस्यनभार्य्या नसुतादयः ॥ नात्मीयोनपरश्चापि नदेहोजन्मएवच ३८ नचास्यकर्मवालोके सदसन्मिश्रयोनिषु ॥ क्रीडार्थंसोऽपिसाधूनांपरित्राणायकल्पते ३९ सत्त्वं रजस्तमइतिभजतेनिर्गुणोगुणान् ॥ क्रीडन्नतीतोऽत्रगुणैःसृजत्यवतिहन्त्यजः ४० यथाभ्रमरिकादृष्ट्याभ्राम्यतीवमहीयते ॥ चित्तेकर्त्तरितत्रात्मा कर्त्तेवा धियास्मृतः ४१ युवयोरेवनैवायमात्मजोभगवान्हरिः ॥ सर्वेषामात्मजोह्यात्मा पितामातासईश्वरः ४२ दृष्टंश्रुतंभूतभवद्भविष्यत् स्थास्नुश्चरिष्णुर्मह

हत भये ताय सत्य करेंगे ३५ हे बड़भागियो ! तुम खेद मतिकरो कृष्णकूं अपने पासही देखोगे जैसे लकड़ी में ज्योति रहे है ऐसे सब प्राणीन के हृदयमें रहे हैं ३६ या कृष्णके कोई प्यारो नहीं है और कुप्यारो कोई नहीं है कोई उत्तम नहीं अधम नहीं है और कोई समान नहीं है और वह सब नहीं है और वाके मान नहीं है ३७ न वाके माता है न पिता है न स्त्री है न पुत्रादिक है वाके देह भी नहीं है और वाको जन्म भी नहीं है ३८ या कृष्ण के कर्म्महू नहीं हैं संसार में देवादिकनकी मनुष्यादिकनकी नृसिंहादिकनकी जे योनि हैं तिनमें खेलिबे के लिये और साधुनकी रक्षा करिवे के लिये प्रकट होइहै ३९ निर्गुण भगवान् सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन तीनमायाके गुणनकूं अंगीकार करे है गुणनसूं न्यारे अजन्मा भगवान् क्रीड़ा करिके विश्वकों उपजावै है पालन करे है संहारकरेहै ४० जैसे बालक भ्राई माई फिरेहै तब वाकी दृष्टिफिरेहै तासों पृथ्वी फिरतीसीदिखाई देइहै या प्रकार चित्त जो कर्त्ता है तामें अहंकारकरिके आत्मा सोभी कर्त्तासों दिखाई देइहै ४१

ये भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारेही पुत्र नहीं हैं सबके पुत्रहैं आत्मा हैं पिता है माताहै और ईश्वर हैं ४२ जो कछु देखिवे में आवे और जो सुनिवे में आवै जो कछु होय चुको और जो होयहै और जो होइगो और जो कछु स्थावर है जङ्गम है जो कछु बड़ो छोटो है सो सब श्रीकृष्ण विना अतिशय करिकै कहिवे कूं योग्य नहीं है परमार्थरूप श्रीकृष्ण हैं सोई सर्व्वरूप हैं ४३ हे राजन् परीक्षित् ! नन्दजी और श्रीकृष्ण के अनुचर उद्धवजीकों याही प्रकार वार्त्ता करत करत सब रात्रि वीतिगई गोपी प्रातःकाल उठिकै दियान को वारिकै देहरीन को पूजन करिकै दही मथति भई ४४ दियान करिकै प्रकाशमान जे मणिन के जड़ाऊ गहने हैं तिनसों सुन्दर लगत भई नेतीन कों खैंचे हैं तासूं भुजान में कङ्कण हलैं हैं नितम्ब जिनके हलत जाय हैं स्तनन पै हार हैं ते भी हलत जाय हैं कुण्डलन करिकै प्रकाशमान कपोलहैं अरुण केशरकी खोरि जिनके मुखपै लगी है ४५ कमलदललोचन श्रीकृष्ण कूं गावैं जो गोपी हैं तिनको गीत स्वर्गपर्य्यन्त जातभयो दही के मथिवे

दलपकञ्च ॥ विनाऽच्युताद्वस्तुतरांनवाच्यं सएनसर्व्वंपरमार्थभूतः ४३ एवंनिशामाब्रुवतोर्व्यतीता नन्दस्यकृष्णानुचरस्यराजन् ॥ गोप्यःसमुत्थाय निरूप्यदीपान् वास्तून्समभ्यर्च्यदधीन्यमन्थन् ४४ तादीपदीप्तैर्मणिभिर्विरेजूरज्जूर्विकर्षद्भुजकङ्कणस्रजः ॥ चलन्नितम्बस्तनहारकुण्डलत्विष्यत्कपोलारुणकुङ्कुमाननाः ४५ उद्गायतीनामरविन्दलोचनं व्रजाङ्गनानान्दिवमस्पृशद्ध्वनिः ॥ दध्नश्चनिर्मन्थनशब्दमिश्रितोनिरस्यतेयेनदिशाममङ्गलम् ४६ भगवत्युदितेसूर्य्ये नन्दद्वारिव्रजौकसः ॥ दृष्ट्वारथंशातकौम्भं कस्यायमितिचाब्रुवन् ४७ अक्रूरआगतःकिंवा यःकंसस्यार्थसाधकः ॥ येननीतो मधुपुरींकृष्णःकमललोचनः ४८ किंसाधयिष्यत्यस्माभिर्भर्तुःप्रीतस्यनिष्कृतिम् ॥ इतिस्त्रीणांवदन्तीनामुद्धवोऽगात्कृताह्निकः ४९ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेनन्दशोकापनयनंनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ तंवीक्ष्यकृष्णानुचरंव्रजस्त्रियः प्रलम्बबाहुंनवकञ्जलोचनम् ॥ पीताम्बरंपुष्करमालिनंलसन्मुखारविन्दंपरिमृष्टकुण्डलम् १ शुचिस्मितः

को जो शब्द है सो भी गीतमें मिलिरह्यो है जिन गोपीन के गीततें दिशान में सम्पूर्ण अमङ्गल दूर होय जाय हैं ४६ भगवान् सूर्य्य उदयभयो तब नन्दरायजी के दरवाजे पै सुनहरी साजको रथ ठाढ़ो देखिकै यह कौन को रथ है या प्रकार कहत भई ४७ कहा कंस के कार्य्य को साधक अक्रूर आयो है जो अक्रूर कमलदललोचन कृष्ण कूं मथुरा लैगयो हो अपने स्वामी कंसको मरवाय कै अब क्यों आयो है कहा हमें लेजाय कै हमारे मासके पिण्ड बनायके देयगो या प्रकार गोपी आपुसमें बात करेंहीं इतने में उद्धवजी सन्ध्योपासन करिकै आवतभये ४८ । ४९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(सप्तचत्वारिंशकेऽथकृष्णादेशेनगोपिका ॥ वोधयित्वोद्धवस्तत्त्वमनुज्ञाप्यागमत्पुरीम् १ सैंतालीसवें अध्याय में उद्धवजी कृष्णजी की आज्ञासे गोपियों को तत्त्व समझाकर आज्ञा लेकर मथुरापुरी को प्राप्त होजाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! लम्बी जिनकी भुजा नवीन कमल से जिनके नेत्र पीताम्बर कों पहिरे कमल की जिनके माला प्रकाशमान

मुखारविन्द स्वच्छ कानन में कुण्डल पहिरे ऐसे कृष्ण के अनुचर उद्धवजी हैं तिनैं देखिकै व्रज की स्त्री बड़ो आश्चर्य्य मानत भई १ सुन्दर है रूप जाको ऐसो यह कौन है कहा ते आयो है श्रीकृष्णचन्द्र के सो जाको वेषहै वैसेही गहनेन को पहिरे है ऐसी सब गोपी श्रीकृष्ण के चरणारविन्द को जिनके आश्रय ऐसे उद्धवजी को चारों ओर ते घेरत भई अधीनता करिके नइ रहीं ऐसी गोपी लाज भरी हँसनि चितवनि मीठी बोलनि सूं सत्कार जिनको कियो एकान्त आसन पै बैठे ऐसे उद्धवजी कों श्रीकृष्ण के पास ते सन्देश लैके आये हैं यह जानि कै पूँछति भई २। ३ यादवन के पति श्रीकृष्ण के तुम सेवकहो यह हम जाने हैं माता पिता के प्रसन्न करिवे के निमित्त तुम कृष्णसूं भेजे हो ४ यादवन में और ऐसो कोई नहीं है जो वाकों स्मरण आवै माता पिता को स्नेह बड़े वैराग्यवान् पुरुष पै भी नहीं छूटे है ५ औरन सों अपने कार्य्य के निमित्त मित्रता यहां जताई यावत्पर्य्यन्त काम परो तावत् मित्रता राखी जैसे पुरुष स्त्रीन ते प्यार करै और

कोऽयमपीच्यदर्शनःकुतश्चकस्याच्युतवेषभूषणः॥ इतिस्मसर्व्वाःपरिवव्रुरुत्सुकास्तमुत्तमश्लोकपदाम्बुजाश्रयम् २ तंप्रश्रयेणावनताःसुसत्कृतंसव्रीडहासेक्षणसूनृतादिभिः॥ रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञायसन्देशहरंरमापतेः ३ जानीमस्त्वांयदुपतेःपार्षदंसमुपागतम्॥ भर्त्रेहप्रेषितःपित्रोर्भवान्प्रियचिकीर्षया ४ अन्यथागोव्रजेतस्य स्मरणीयंनचक्ष्महे॥ स्नेहानुबन्धोबन्धूनां मुनेरपिसुदुस्त्यजः ५ अन्येष्वर्थकृतामैत्री यावदर्थविडम्बनम्॥ पुम्भिःस्त्रीषुकृतायद्वत्सुमनस्स्विवषट्पदैः ६ निःस्वन्त्यजन्तिगणिकाअकल्पंनृपतिंप्रजाः॥ अधीतविद्याआचार्य्यमृत्विजोदत्तदक्षिणम् ७ खगावीतफलंवृक्षंभुक्त्वाचातिथयोगृहम्॥ दग्धंमृगास्तथाऽरण्यं जारोभुक्त्वारतांस्त्रियम् ८ इतिगोप्योहिगोविन्दे गतवाक्कायमानसाः॥ कृष्णदूतेव्रजंयाते उद्धवेत्यक्तलौकिकाः ९ गायन्त्यःप्रियकर्म्माणि रुदन्त्यश्चगतह्रियः॥ तस्यसंस्मृत्यसंस्मृत्य यानिकैशोरबाल्ययोः १० काचिन्मधुकरंदृष्ट्वा ध्यायन्तीकृष्णसङ्गमम्॥ प्रियप्रस्थापितंदूतं कल्पयित्वेदमब्रवीत् ११ गोप्युवाच॥ मधुपकितवबन्धोमास्पृशाङ्घ्रिंसपत्न्याःकुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः॥ वहतुमधुपतिस्तन्मानिनी

भौंरा फूलनसूं प्यार करे है या विधि या कृष्णने हम से प्रीति करीरही परन्तु दरिद्री पुरुषकूं जैसे वेश्या त्यागे हैं असमर्थ राजाकूं जैसे प्रजा त्यागे है और विद्यार्थी जैसे विद्या पढ़िके गुरुको त्यागे हैं और दक्षिणा पायकै पुरोहित जैसे यजमान कों त्यागे हैं ६।७ पक्षी जैसे फलनिवृत्त वृक्षकों छोड़े हैं अभ्यागत भोजन करिकै जैसे गृहकों त्यागे हैं हरिण जलेहुये वनकों जैसे त्यागे हैं जार पुरुष भोग करिकै जैसे स्त्री कों त्यागे है या प्रकार कृष्ण हम कों त्यागि गयो ८ श्रीकृष्ण के दूत उद्धवजी व्रज में आये ता समय गोपीनकी वाणी देह मन कृष्ण गोविन्द में जाय लगे लौकिक व्यवहार खानपानादिक सब छूटि गये ९ प्यारे के कर्म्मन कूं गावे हैं श्रीकृष्ण के किशोर और बालअवस्था के जे चरित्र है तिनकों स्मरण करिकै लाज त्यागि के रुदन करत उद्धव जी ते पूँछत भई कोई एक गोपी उद्धव जी को स्वरूप देखिकै श्रीकृष्ण के सङ्ग को ध्यान करिकै प्यारेने प्रसन्न करिवे के निमित्त दूत भेजो है ताय भ्रमर मानि कै यह बोलत भई १०। ११ हे मधुप अर्थात् पुष्पनके रसके पीवनवारे ! हे कपटी कृष्ण के मित्र ! हमारे चरणनकूं स्पर्श मति करै भौंरा को देह तो कारो और मुख पीरो होयहै ताकों देखिके कहे है सौंति के कुचन सों मीड़ी

ऐसी जो पुष्पन की माला ताकी केशर तेरी दाढ़ी मूछन सों लगी है जो तू स्पर्श करैगो तो स्नान करिवो होयगो कदाचित् कहो कि मैं तुम्हारे प्रसन्न करिवे कों कृष्णसूं भेजो हूं तहां गोपी कहे है वे जो मथुराकी स्त्री हैं तिनहीं कूं प्रसन्न करौ जैसे तू हमारे पास आयो है ऐसेंही यादवन की स्त्रीनके पास जात होयगो कृष्ण को दूत ऐसो निर्लज्जहै १२ गोपियो ऐसे तुम वा कृष्णको क्यों अनादर करो हौ वाने तुम्हारो कहा अनादर करयो है तहा कहे है मोहन करनवारो अपनो अधरामृतहै ताय एक वेर प्यायकै तू जैसे फूलन कों छोड़ि देइ है ऐसे वह कृष्ण तुरत हमें छोड़ि देत भयो लक्ष्मी वा कृष्ण के चरणकमलकूं कैसे सेवन करे है तहा कहे है मैंने जानिलीनी कृष्ण के मीठे मीठे वचननसूं वाको चित्त हरयो गयो है तासूं वह परी रहे है १३ वहुत भुंमुं शब्दकरै जो भौंरा है ताय हमारे प्रसन्न करिवे के लिये कृष्णकूं गावे है यह मानिकै कहे है हे छः पांव के भौंरा! देख पशु जितने हैं ते चार पांव के हैं तू छःपांवको है याते तू डेढ पशुहै कैसे कहा गावे है सो तू नहीं जाने है यादवन को पति कृष्ण ताकों तू हमारे आगे वहुत गावे है वहुत पुरानो है हमारो देखो भारो है और सखी गायवो अपने घरमें बैठो होय ताकूं अच्छो लगै है जा दिन ते

नांप्रसादं यदुसदसिविडम्ब्यंयस्यदूतस्त्वमीदृक् १२ सकृदधरसुधांस्वांमोहिनींपाययित्वा सुमनसइवसद्यस्तत्यजेऽस्मान्भवादृक् ॥ परिचरतिकथंतत्पा दपद्मंतुपद्मा ह्यपिवतहृतचेताउत्तमश्लोकजल्पैः १३ किमिहवहुषडङ्घ्रेगायसित्वंयदूनामधिपतिमगृहाणामग्रतोनःपुराणम् ॥ विजयसखसखीनांगीयतांत त्प्रसङ्गःक्षपितकुचरुजस्तेकल्पयन्तीष्टमिष्टाः १४ दिविभुविचरसायांकाःस्त्रियस्तद्दुरापाः कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्ययाःस्युः ॥ चरणरजउपास्तेयस्यभू तिर्वयंकाअपिचकृपणपक्षेह्युत्तमश्लोकशब्दः १५ विसृजशिरसिपादंवेद्म्यहंचाटुकारैरनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्यदौत्यैर्मुकुन्दात् ॥ स्वकृतइहविसृष्टापत्यप त्यन्यलोकाव्यसृजदकृतचेताःकिन्नुसन्धेयमस्मिन् १६ मृगयुरिवकपीन्द्रंविव्यधेलुब्धधर्म्मा स्त्रियमकृतविरूपांस्त्रीजितःकामयानाम् ॥ बलिमपिबलिम

कृष्ण मथुरा गये हैं ता दिन ते हमारे घरहै न वार है हमपै ते तू कहा लियो चाहे है जो तेरो गायवो सुनें तोकूं रीझदेयँ एक ठौर तोकों वतावे हैं वहां जा अर्ज्जुन को सखा कृष्ण ताकी सखी मथुराकी स्त्री हैं उनके आगे वाको प्रसङ्ग तू गाउ मथुरा की स्त्रीनके कुचन के रोग अव गये हैं कृष्णकी प्यारी स्त्री तोकों रीझदेइँगी १४ माता ऐसे मति कहो तेरी सुधि करिकै कामदेव ते व्याकुल होयकै तोइ प्रसन्न करिवे के लिये मैं भेजो गयोहौं तहां गोपी कहे हैं कपट करिकै रुचिर जाकी हासी भृकुटीन की चढ़नि ऐसो जो कृष्ण है ताकों स्वर्ग में पृथ्वी में रसातल में जे स्त्री हैं ते कौनसी नापैद हैं लक्ष्मी जाके चरणनकी रजको सेवन करे हैं तहा हमारी कहा चलै है भौंरा वा कृष्णको उत्तमश्लोक यह नाम सुनो है जब हम गरीबिनीनकी सुधिलेयगो तब यह नाम रहैगो नहीं तो जात रहैगो १५ अपने पावन सों लगो ऐसो जो भौंराहै ताय हमपै क्षमा करायवे कूं आयो है ऐसे मानिकै गोपी कहे हैं अपने शिरकों मेरे पावन में ते उठायले पांवन में तें नहीं उठै ऐसो जो भौंरा है तासूं कहे है मुकुन्द तें सीखकै दूत कर्म्मन करिकै प्यारे वचन की जो रचना है तिनकरिकै मनाइवे में चतुर जो तू है ताते तेरी सम्पूर्ण वातमें जानूं हू जब कभऊ रास में मान करती तब अपनो मुकुट उतारिकै हमारे चरणनमें धरतो बहुत खुशामद करतो जैसे वाकी वातनको विश्वास नहीं आवै है ऐसी तेरी वातन को विश्वास नहीं आवै है क्योंजी ऐसो वाने कहा

अपराध कियो है तहां गोपी कहे हैं या संसार में कृष्ण के लिये पति पुत्र यह लोक परलोक सब हमने त्यागि दियो जाकों मनको ठिकानो नहीं ऐसो कृष्ण हमको त्यागि कै चलो गयो अब वातें हम कहा मिलाप करैं या प्रकार गोपी कहत भई १६ कृष्ण के पहिले कर्मन की सुधि करिकै हम या कृष्णते भय करे हैं यह वर्णन करे हैं हे भौरा! कारे रङ्ग के जे हैं तिनकी कथा हमने सुनि राखी है पहिले अयोध्या में दशरथ को पुत्र राम भयो ताने सुग्रीव की ओर होयकै वधिककी तुल्य वालि कों मारयो व्याध तो मास खायवे के कारण मारै है याने तो व्यर्थही मारयो बन्दर को कोई मांसहू नहीं खायहै दूर्वादल श्याम राम के सुन्दर रूप पै रीझकै रावण की वहिन शूर्पणखा आई सीताके वश होयकै लक्ष्मणकूं सिखायकै वाके नाक कान काटि लिये दूसरे कारे रङ्ग को वामन रूप भयो वह राजा वलि पै तें तीन पांव पृथ्वी के मिष सब पृथ्वी लैके कांउ कांउ करिकै जैसे कौआ घर घेरलेई हैं तैसे वाकों वांधत भयो तातें हम कारेन की मित्रता सूं पूर्ण भई अब कदाचित् भूलिकै कारेन तें मित्रता न करैंगी उद्धवजी कहे हैं जब तें मैं आयो हों तबतें वाहीकी वातकों कहो हौ तहां गोपी कहे हैं जैसे वामें और गुण हैं तैसे यह अवगुण है वाकूं दु:खदायी जाने हैं तथापि वाकी वात हम पै छूटै नहीं है १७ कछु गोपी और कहे है यह वात हम जाने हैं कृष्णकी कथा धर्म्म अर्थ कामकी जड है ताकी उखारनवारी है तथापि हमपै त्यागी नहीं जाय है

स्त्याऽवेष्टयद्धाङ्क्षवद्यस्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः १७ यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्म्माविनष्टाः ॥ सपदिगृहकुटुम्बंदीनमुत्सृज्यदीनावहवइहविहङ्गाभिक्षुचर्यांचरन्ति १८ वयमृतमिवजिह्मव्याहृतंश्रद्दधानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाःकृष्णवध्वोहरिण्यः ॥ ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्रस्मररुजउपमन्त्रिन्भण्यतामन्यवार्ता १९ प्रियसखपुनरागाःप्रेयसाप्रेषितः किंवरयकिमनुरुन्धेमाननीयोऽसिमेऽङ्ग ॥ नयसिकथमिहास्मान्दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं सततमुरसिसौम्यश्रीर्वधूःसाकमास्ते २० अपिवतमधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनास्ते स्मरतिसपितृगेहान्सौम्यबन्धूंश्चगोपान् ॥ क्वचिदपि

देखो जा श्रीकृष्णको लीलाचरित्ररूपी अमृत सो कानन कूं अतिप्रिय अमृत ताकी जो कणिका ताकूं एक वार सेवन करनेसों दूरभये हैं रागादिक जिनके याही ते असत्की तुल्य ऐसे जे पुरुष हैं ते दुःखरूप जे पुत्र पौत्रादिक हैं तिनकों त्यागि कै भोगनकों छोड़ि कै पक्षी की तुल्य घर घर भीख मांगत डोले हैं १८ भौंरा कहे है ऐसे अब क्यों कहो हौ पहिलेही ता कृष्ण के सङ्ग एकांत में क्यों न कहत भई तापर गोपी कहे हैं जैसे अज्ञानिनी कृष्णसार हरिण की स्त्री हरिणी वधिकके गीतसूं मोहितहोय घायल होय हैं ऐसे हम वा कपटी कृष्णको वचन सत्य मानिकै यह देखत भई कहा जाके नखनके स्पर्श तें वडी कामदेव की पीड़ा भई है उपमन्त्रिन् अर्थात् दूत! वा कपटी की वात जान दे और वात कहे १९ इत उत फिर फिराय कै फेरि आयो जो भौंरा है तासूं कहे हैं हे प्यारे के सखा! तू फेरि आयो तो कूं प्यारे कृष्ण ने भेजो है कहा हे दूत! मोकूं पूजा करिवे योग्य है जो तेरे इच्छाहोय सो वर मागिले लक्ष्मी सों संग जाको छूटै नहीं ऐसे कृष्ण के पास हमें ले जायो चाहे है हे भौंरा! वह लक्ष्मी सर्वदा संग रहे है तथापि छाती पै चढ़े है ताकूं दूरि करियो तब हम चलैंगी २० मथुरापुरी में सूधो नन्दको पुत्र कहा अब रहे है हे भौंरा! कभऊं वाकों अपने माता पिता नन्दको स्मरणआवे है और अपने भय्या बन्धून की सुधि करे है और कभऊ गोपीनको स्मरण करेहै कभऊं वह कृष्ण हम दासीनकी वात चलावै है अगरकी तुल्य जामें सुगन्धि ऐसी

अपनी भुजाकूं हमारे शिरपै कभऊं आयकै धरैगो २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार उद्धवजी श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन की चाहना गोपीन की सुनि कै प्यारे श्रीकृष्ण के सन्देशनसूं समझत भये २२ उद्धवजी गोपीनसूं कहे हैं तुम ने वासुदेव भगवान् श्रीकृष्ण में मन लगायो है अहो गोपियो! तुम निश्चय करिके कृतार्थ भई और लोकनमें तुम्हारो यशहोयगो २३ दान व्रत तप होम जप वेदपाठ इन्द्रियन को रोकिबो और अनेक प्रकार के कल्याणके उपाय सब करिबे को फल यही है जो कृष्ण में भक्ति होय २४ बड़े मुनीश्वरन को दुर्लभ ऐसी भक्ति तुम ने उत्तमश्लोक भगवान् श्रीकृष्ण में करी यह बड़ो मंगल है २५ पुत्र पति देह भय्या बन्धु घरन कूं त्यागिकै परमपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण तुम ने पतिकरे यह बड़ो मङ्गलभयो २६ हे बड़भागिनियो! इन्द्रियन को जिनमें गमन नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र में विरह सूं एकान्त भक्ति तुम्हारे भई यह तुमने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह कियो २७ तुमकों सुख देनवारो ऐसो प्यारे को सन्देश

सकृथानःकिङ्करीणांगृणीते भुजमगुरुसुगन्धंमूर्ध्न्यधास्यत्कदानु २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अथोद्धवोनिशम्यैवं कृष्णदर्शनलालसाः ॥ सान्त्वयन्प्रियसन्देशैर्गोपीरिदमभाषत २२ ॥ उद्धवउवाच ॥ अहोयूयंस्मपूर्णार्थाभवत्योलोकपूजिताः ॥ वासुदेवेभगवतियासामित्यर्पितंमनः २३ दानव्रततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः ॥ श्रेयोभिर्विविधैश्चान्यैः कृष्णेभक्तिर्हिसाध्यते २४ भगवत्युत्तमश्लोके भवतीभिरनुत्तमा ॥ भक्तिःप्रवर्त्तितादिष्ट्या मुनीनामपिदुर्लभा २५ दिष्ट्यापुत्रान्पतीन्देहान् स्वजनान्भवनानिच ॥ हित्वावृणीतयूयंयत् कृष्णाख्यंपुरुषंपरम् २६ सर्वात्मभावोऽधिकृतोभवतीनामधोक्षजे ॥ विरहेणमहाभागा महान्मेऽनुग्रहःकृतः २७ श्रूयतांप्रियसन्देशोभवतीनांसुखावहः ॥ यमादायागतोभद्राअहंभर्त्तूरहस्करः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भवतीनांवियोगोमे नहिसर्वात्मनाक्वचित् ॥ यथाभूतानिभूतेषु खंवाय्वग्निर्जलंमही ॥ तथाऽहंचमनःप्राणभूतेन्द्रियगुणाश्रयः २९ आत्मन्येवात्मनात्मानं सृजेहन्म्यनुपालये ॥ आत्ममायाऽनुभावेन भूतेन्द्रियगुणात्मना ३० आत्माज्ञानमयःशुद्धो व्यतिरिक्तोऽगुणान्वयः ॥ सुषुप्तिस्वप्नजाग्रद्भिर्मायावृत्तिभिरीयते ३१ येनेन्द्रियार्थान्ध्यायेत मृषास्वप्नवदुत्थितः ॥ तन्निरुन्ध्यादिन्द्रियाणि विनिद्रःप्रत्यपद्यत ३२ एतदन्तःसमाम्नायोयोगः

सुनो श्रीकृष्ण के रहस्य कार्य्य के करनवारे ऐसे सन्देश कूं लैके हे मङ्गलरूपिणियो! मैं आयो हों २८ अब भगवान् गोपीन कूं उपदेश करे हैं सब को उपादानकारण मैं हूं ऐसे मोसों तुम कभऊं दूरि नहीं हो जैसे आकाश पवन तेज जल पृथ्वी ये पञ्चतत्त्व समस्त प्राणीन के देहमें रहे हैं तैसे मन प्राण पञ्चभूत इन्द्रिय और गुण इनको आश्रय हूं २९ अपनपे में अपने करिकै अपने कूं उत्पन्न करूं हूं संहार और पालन करूं हूं अपनी माया के प्रभाव करिकै पञ्चभूत इन्द्रिय तीनों गुण इन रूप जो अपनपो है ता करिकै सृष्टिकू उत्पन्न पालन प्रलय करूंहू ३० यहा एक शङ्का है आत्मा पञ्चभूत रूप होय तौ वाकूं पञ्चभूतन के सङ्ग दोष लगे है तहां उत्तर करे हैं आत्मा तो शुद्ध है काहे ते माया के गुणन में जाय है सब ते न्यारो है ज्ञानरूप है अहंकार ते जानिबे में आवे ऐसे आत्मा की न्यारी अवस्था है शुद्धता कैसे तहां कहे हैं सुषुप्ति स्वप्न जाग्रत् ये जो मनकी वृत्ति हैं तिनसूं प्रतीत होय है आपसूं नहीं है ३१ अनेक अवस्था यानूं प्रतीत होय है मन

के रुकिवे में जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्था जातिरहे हैं यह दिखायवे कूं मन को निरोध विधान करे हैं जागिकै जैसे मिथ्या स्वप्ने को ध्यान करे है ऐसे मिथ्या विषयन कूं जा मनसूं विचार करिकै इन्द्रियन कूं पावै है ता मनकूं आलस्य छोड़िकै रोको मन जब जाको रुकै है तब कृतार्थ होय है यह कहे है वेद पढ़े को अष्टांगयोग करे को आत्मा अनात्मा के विचारकरे को त्याग तप इन्द्रियन को जीतिवो सांच वोलिवो इत्यादि कर्म्मन सू विवेकीन को मन रुकै यही फल है जैसे नदीनको अन्त समुद्र में होय है ३२। ३३ प्यारे मैं तुम्हारी दृष्टि सूं दूर करूं हूं सो तुम्हारो मन मेरे विषे लग्यो रहै और मेरो ध्यान करौ तौ करती वेर दूर रहूं हूं जैसे दूर रहे जो प्यारो तामें स्त्री को मन लग्यो रहे है ऐसो जो नेत्रन के आगे रहै तामें चित्त नहीं रहे है ३४। ३५ छूटी हैं सम्पूर्ण वृत्ति जाकी ऐसे मनकों मो कृष्ण में लगायकै नित्य मेरो ध्यान करती रहोगी तौ शीघ्र मोकूं प्राप्त होउगी ३६ रात्रि में वनमें विहार करने में हूं ता मेरे सङ्ग नहीं प्राप्तभयो है रास जिनकों ऐसी

साङ्ख्यंमनीषिणाम् ॥ त्यागस्तपोदमःसत्यं समुद्रान्ताइवापगाः ३३ यत्त्वहंभवतीनांवै दूरेवर्त्तेप्रियोदृशाम् ॥ मनसःसन्निकर्षार्थमदनुध्यानकाम्यया ३४ यथादूरचरेप्रेष्ठे मनआविश्यवर्त्तते ॥ स्त्रीणाञ्चनतथाचेतः सन्निकृष्टेऽक्षगोचरे ३५ मय्यावेश्यमनःकृत्स्नं विमुक्ताशेषवृत्तियत् ॥ अनुस्मरन्त्योमां नित्यमचिरान्मामुपैष्यथ ३६ यामयाक्रीडितारात्र्यां वनेऽस्मिन्व्रजआस्थिताः ॥ अलब्धरासाः कल्याण्योमापुर्मद्वीर्यचिन्तया ३७॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रियतमादिष्टमाकर्ण्यव्रजयोषितः ॥ ताऊचुरुद्धवंप्रीतास्तत्सन्देशागतस्मृतीः ३८॥ गोप्यऊचुः ॥ दिष्ट्याऽहितोहतःकंसोयदूनांसानुगोऽघकृत् ॥ दिष्ट्याप्तैर्लब्धसर्व्वार्थैः कुशल्यास्तेऽच्युतोऽधुना ३९ कच्चिद्गदाग्रजःसौम्यकरोतिपुरयोषिताम् ॥ प्रीतिंनःस्निग्धसव्रीडहासोदारेक्षणार्चितः ४० कथंरतिविशेषज्ञः प्रियश्चवरयोषिताम् ॥ नानुबध्येततद्वाक्यैर्विभ्रमैश्चानुपूजितः ४१ अपिस्मरतिनःसाधो गोविन्दःप्रस्तुतेक्वचित् ॥ गोष्ठीमध्येपुरस्त्रीणां ग्राम्याःस्वैरकथान्तरे ४२ ताःकिंनिशाःस्मरतियासुतदाप्रियाभिर्वृन्दावनेकुमुदकुन्दशशाङ्करम्ये, ॥ रेमेक्वणच्चरणनूपुररासगोष्ठ्यामस्माभिरीडितमनोज्ञक

गोपी पतिन की रोकी वृज में रहीं ते हे मंगलरूपिणियो ! मेरी लीलान को ध्यानकरि करिकै मोहीं कूं पावतभई ३७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित् ! या प्रकार प्यारे श्रीकृष्णने उपदेश करो ताय श्रवण करिकै व्रजकी स्त्री गोपी प्रसन्न होय कै उद्धवजीसों वोलतभई ३८ अब सम्पूर्ण गोपी कहे हैं कृष्णके सन्देशनसूं स्मरण जिनकों होय आयो यादवन कों दुःख को देनवारो अपने भृत्यन सहित वैरी कंस मरचो यह वड़ो मंगल भयो पाये हैं सम्पूर्ण मनोरथ जिनने ऐसे हितून सहित श्रीकृष्ण प्रसन्न हैं यह वड़ो मंगल भयो ३९ हे साधु उद्धव ! गदको वड़ो भय्या कृष्ण हमसूं जो प्रीति करै हो सो प्रीति कहा मथुरा की स्त्रीनसूं करे है वे सुन्दर लाजभरी हँसनि उदरभरी चितवनिसूं वाको सत्कार करे हैं ४० रतिविशेष को जाननवारो प्यारो कृष्ण मथुराकी स्त्रीनके वचननसूं विलासनसूं जब सत्कार करेंगी तब कैसे न वँधेगो ४१ हे साधु उद्धव ! गोविंद कभऊं प्रसंग पायकै मथुराकी स्त्रीनकी सभामें वैठिकै जब वातैं करै हैं तब गांवकी स्त्री जो हम तिनकी कभऊं वात स्मरण करे हैं ४२ उद्धवजी श्रीकृष्णकों कभऊं उन रात्रिनको स्मरण आवै है जिनमें कुमोदनी कुन्द फूल रहे चन्द्रमाकी चांदनी सों रमणीय वृन्दावन है तामें पांवन में झन्न २ नूपुर वजत

जायँ रास में हम जो प्यारी हैं तिनके सङ्ग रमण करतभयो सो कदाचित् स्मरण करे है या नहीं ४३ हम जाकी सब मनोहर कथान कूं गावे हैं जैसे ग्रीष्मऋतु करि दग्ध जो वन है ताके सिञ्चन करिवे कों जैसे इन्द्र आवे है तैसे वा कृष्ण के लिये जो शोकहै तासूं पजरी भई जो हमहैं तिनकूं हाथके स्पर्श करिकै जीवन करत दाशार्हवंशोत्पन्न श्रीकृष्ण कभऊं यहां आवैगो या नहीं यह गोपी कहे हैं ४४ और गोपी कहे हैं आवैगो २ यह कहा लगाई है कृष्ण यहां काहे कों आवैगो अब वाकों राज्य मिल गयो है शत्रु मारि लियो है राजानकी कन्या व्याहि लीनी हैं प्रसन्न हैं सब मित्र वाके पास हैं अब यहाँ कहा करेगो ४५ और गोपी कहे हैं वीर लक्ष्मी को पति सब बल जाकों प्राप्त याहीते परिपूर्ण ऐसो जो कृष्ण ताकूं वनकी रहनवारी हम हैं तिनसूं और राजानकी कन्या हैं तिन सूं कहा प्रयोजन है ४६ आशा को त्याग है सोई बड़ो सुखहै यह पिंगला वेश्याने एकादश में कह्यो है निराशा बराबर सुख नहीं है यह जाने हैं तथापि कृष्ण ते हमारी आशा छुटे नहीं है ४७ कृष्णकी एकान्त की, जो बात है ताय त्यागिवे कों कौन समर्थ होयगो वाके राखिवे की इच्छा नहीं तथापि लक्ष्मी अंग में तें न्यारी नहीं होय है ४८ उद्धव ता कृष्ण कूं हम भूलि जायँ तो दुः-

थःकदाचित् ४३ अप्येष्यतीहदाशार्हस्तप्ताःस्वकृतयाशुचा ॥ सञ्जीवयन्नुनोगात्रैर्यथेन्द्रोवनमम्बुदैः ४४ कस्मात्कृष्णइहायाति प्राप्तराज्योहताहितः ॥ नरेन्द्रकन्याउद्वाह्य प्रीतःसर्व्वसुहृद्वृतः ४५ किमस्माभिर्वनौकोभिरन्याभिर्वामहात्मनः ॥ श्रीपतेराप्तकामस्य क्रियेतार्थःकृतात्मनः ४६ परंसौख्यंहिनैराश्यं स्वैरिण्यप्याहपिङ्गला ॥ तज्जानतीनांनःकृष्णे तथाप्याशादुरत्यया ४७ कउत्सहेतसंत्यक्तुमुत्तमश्लोकसंविदम् ॥ अनिच्छतोऽपियस्यश्रीरङ्गान्नच्यवतेक्वचित् ४८ सरिच्छैलवनोद्देशागावोवेणुरवाइमे ॥ सङ्कर्षणसहायेन कृष्णेनाचरिताःप्रभो ४९ पुनःपुनःस्मारयन्ति नन्दगोपसुतंबत ॥ श्रीनिकेतैस्तत्पदकैर्विस्मर्त्तुंनैवशक्नुमः ५० गत्याललितयोदारहासलीलावलोकनैः ॥ माध्व्यागिराहृतधियः कथंतंविस्मरामहे ५१ हेनाथहेरमानाथ व्रजनाथार्त्तिनाशन ॥ मग्नमुद्धरगोविन्द गोकुलंवृजिनार्णवात् ५२ श्रीशुकउवाच ॥ ततस्ताःकृष्णसन्देशैर्व्यपेतविरहज्वराः ॥ उद्धवंपूजयाञ्चक्रुर्ज्ञात्वात्मानमधो

ख न होय सो भूलनो हमकूं नहीं होय है यह गोपी कहे हैं हे प्रभु उद्धव ! हम बिचारी कहूं दो घरी कूं जायँ परन्तु वाकूं भूले नहीं हैं कदाचित् यमुना पै जायँ तो वाकी कारी लहर हमें खायवे कों दौरे है जब गोवर्द्धन पर्वत कूं देखे हैं तब सुधि आय जायहै वही गोवर्द्धन है जाहि सात दिन हाथ पै राख्यो फेर वन और गौवन में जायँ हैं तब सुधि आय जायहै जिनें धौरी धूमरि कहिकै बुलावै हो फेरि वाँसुरी श्रवण करे वाकी सुधि आय जाय है वाकों कैसे भूलैं जाने बलदेव जी कूं संग लैके ऐसे आचरण करे हैं ४९ हे उद्धवजी ! नन्द गोप को पुत्र जो कृष्ण है ताके सुन्दर शोभायमान जो चरणन के खोज हैं तिनकूं देखि कै भूलिवे कूं समर्थ नहीं होय हैं विरह में वारंवार स्मरण करावे हैं ५० मनोहर जिनकी चलनि उदार हँसनि लीलापूर्व्वक चितवनि मनोहर वचन इन सूं हमारी बुद्धि हरि लीनी वा कृष्ण कूं कैसे भूलैं ५१ अब तो मथुरा की ओर हाथ उठाय के पुकारत भई हे नाथ ! हे रमानाथ ! हे व्रजनाथ ! हे दुःखन के दूरकरनवारे ! हे गोविन्द ! यह नाम तौ गौवन को पालन करोगे तवहीं रहेगो नहीं तो या नामकों हाथ झारि वैठो और जा समय इन्द्र वर्षो तब यह सङ्कल्प कर्यो हो कि अपने व्रजकी मैं रक्षा करूंगो सो अब तो तुम्हारेही विरह

रूप समुद्र में गोकुल डूब्यो जाय है शीघ्र आय कै याको उद्धार करो ५२ अब श्रीशुकदेव जी कहै हैं हे राजन्परीक्षित्! श्रीकृष्ण के संदेशनसूं दूर भये हैं विरह के ताप जिनके ऐसी गोपी श्रीकृष्ण कों परमेश्वर जानि कै और परमेश्वर को अपनो आत्मा निश्चय करिके उद्धव जी की पूजा करतभई ५३ गोपीन के शोक दूर करिवे के निमित्त कितनेहू मास उद्धव जी व्रजमें वास करत भये कृष्णचन्द्र की लीला कथा गाय गाय के व्रजवासीन कूं आनन्द देत भये ५४ जितने दिन पर्य्यन्त उद्धव जी नन्द के व्रज में बसे उतने दिन व्रजवासीन कों कृष्ण की वातनसूं क्षण समान वीतत भये ५५ नदी वन पर्व्वत गुफा पुष्पितवृक्ष इत्यादिकन कूं देखिकै हरिदास उद्धव जी व्रजवासीन कों श्रीकृष्ण कों स्मरण करावत भये ५६ गोपीन के चित्तकूं या प्रकार श्रीकृष्ण में लगिवो है तासूं मन की व्याकुलता देखिकै परमप्रसन्न होय के उद्धव जी गोपीन कूं दण्डवत् करत बोलतभये ५७ इन गोपन की स्त्रीन को पृथ्वी पै जन्म सफल है काहे से सबके आत्मा जो गोविन्द

क्षजम् ५३ उवासकतिचिन्मासान् गोपीनांविनुदञ्शुचः ॥ कृष्णलीलाकथाङ्गायन् रमयामासगोकुलम् ५४ यावन्त्यहानिनन्दस्यव्रजेऽवात्सीत्सउद्धवः ॥ व्रजौकसांक्षणप्रायाण्यासन्कृष्णस्यवार्त्तया ५५ सरिद्वनगिरिद्रोणीर्वीक्षन्कुसुमितान्द्रुमान् ॥ कृष्णंसंस्मारयन्रेमे हरिदासोव्रजौकसाम् ५६ दृष्ट्वैवमादि गोपीनां कृष्णावेशात्मविक्लवम् ॥ उद्धवःपरमप्रीतस्तानमस्यन्निदंजगौ ५७ एताःपरंतनुभृतोभुविगोपवध्वो गोविन्दएवनिखिलात्मनिरूढभावाः ॥ वाञ्छन्तियद्भवभियोमुनयोवयञ्च किंब्रह्मजन्मभिरनन्तकथारसस्य ५८ क्वेमाःस्त्रियोवनचरीर्व्यभिचारदुष्टाः कृष्णेक्वचैषपरमात्मनिरूढभावाः ॥ नन्वीश्वरोऽनुभजतोऽविदुषोऽपिसाक्षाच्छ्रेयस्तनोत्यगदराजइवोपयुक्तः ५९ नायंश्रियोऽङ्गउनितान्तरतेःप्रसादः स्वर्योषितांनलिनगन्धरुचांकुतोऽन्याः ॥ रासोत्सवेऽस्यभुजदण्डगृहीतकण्ठलब्धाशिषांयउदगाद्व्रजवल्लवीनाम् ६० आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यां वृन्दावनेकिमपिगुल्मलतौषधीनाम् ॥ याद‍ुस्त्यजंस्वजनमार्य्यपथंचहित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवींश्रुतिभिर्विमृग्याम् ६१ यावैश्रियाऽर्चितमजादिभिराप्तकामैर्योगेश्वरैरपियदात्मनिरासगोष्ठ्याम् ॥ कृष्णस्यतद्

हैं तिन में इन को परमप्रेम भयो है जा प्रेम कूं संसार तें भयभीत जे मुमुक्षु पुरुष हैं और मुक्त हैं और हम भक्त हैं ते इच्छा करे हैं अनन्त श्रीकृष्ण की कथा में जा पुरुष को अनुराग है वाकूं ब्रह्म जन्म सूं कहा प्रयोजन है अथवा एक तो शुद्ध माता पितासूं द्वितीय गायत्री उपदेश सूं तृतीय यज्ञदीक्षा सूं जे ब्राह्मण के तीन जन्म हैं तिनसूं कहा प्रयोजन है ५८ वृन्दावन की विचरनवारी व्यभिचारदृष्टि करिकै दूषित गोपी स्त्री कहाँ और परमात्मा श्रीकृष्ण में है आरूढ भाव जिनके निरन्तर भगवान् को स्मरण करे हैं ऐसे अज्ञानी पुरुष को भी कल्याण करे हैं जैसे कोई मनुष्य अमृत को सेवन करे वह अमर होय है ५९ सर्व्वकाल अंग में रही आवै ऐसी लक्ष्मी पै भी यह प्रसन्नता न भई और कमल के गन्ध कीसी है कान्ति जिनकी ऐसी देवांगनान कूं जो प्रसाद नहीं मिल्यो सो रासके उत्सव में श्रीकृष्ण के भुजदण्डनसूं गलबाहीं लगाय कै पाये हैं मनोरथ जिनने ऐसी व्रजसुन्दरीन कूं मिलत भयो ६० इन गोपीन के चरणरज को सेवन करनवारो वृन्दावन में गुल्म लता ओषधिन में कछु मेरो जन्म होय जे गोपी छोड़ी न जायँ ऐसे अपने भय्या बन्धु बड़ेन को जो मार्ग है ताकों त्यागि के वेद जाकों ढूंढें ऐसे मुकुन्द श्रीकृष्ण

के मार्ग कू सेवन करत भई ६१ लक्ष्मी ने जाको पूजन करो और पूर्ण हैं काम जिनके ऐसे ब्रह्मादिकन ने जा चरणारविन्द को पूजन करो योगेश्वरनने अपने विषे जाको पूजन करो ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के चरणारविन्द कूं राससभा में स्तनन के ऊपर धरि के आलिङ्गन करिकैं ताप कों दूर करत भई ६२ नन्द के व्रजकी स्त्रीन के चरण की रज कों वारंवार नमस्कार करूं हूं जिन गोपीन ने हरिकथा जो गाई है सो तीनों लोकन कों पवित्र करे है ६३ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! याके पीछे गोपीन सूं यशोदा जी सूं नन्दराय जी गोपन सूं आज्ञा माँगि के दाशार्हवंशोत्पन्न उद्धव जी गमन समय रथ में वैठत भये ६४ उद्धव जी के विदा होने समय नन्दराय जी सूं आदि लैके समस्तव्रजवासी अनेकप्रकार की भेटन कों हाथ में लैके उद्धव जी के पास आय कै स्नेह ते आँसू जिनके नेत्रन में ते भरिआये ऐसे होकर वोलत भये ६५ हमारे मनकी वृत्ति श्रीकृष्णके चरणारविन्द में लगीरहै और हमारी वाणी वा कृष्ण को नाम

भगवतश्चरणारविन्दं न्यस्तंस्तनेषुविजहुःपरिरभ्यतापम् ६२ वन्देनन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ॥ यासांहरिकथोद्गीतं पुनातिभुवनत्रयम् ६३ श्रीशुकउवाच ॥ अथगोपीरनुज्ञाप्य यशोदानन्दमेवच ॥ गोपानामन्त्र्यदाशार्होयास्यन्नारुरुहेरथम् ६४ तन्निर्गतंसमासाद्य नानोपायनपाणयः ॥ नन्दादयोऽनुरागेण प्रावोचन्नश्रुलोचनाः ६५ मनसोवृत्तयोनस्युःकृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ॥ वाचोऽभिधायिनीर्नाम्नांकायस्तत्प्रह्वणादिषु ६६ कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्रक्वापीश्वरेच्छया ॥ मङ्गलाचरितैर्दानैर्मतिर्नःकृष्णईश्वरे ६७ एवंसभाजितोगोपैः कृष्णभक्त्यानराधिप ॥ उद्धवःपुनरागच्छन्मथुरांकृष्णपालिताम् ६८ कृष्णायप्रणिपत्याह भक्त्युद्रेकंव्रजौकसाम् ॥ वासुदेवायरामायराज्ञेचोपायनान्यदात् ६९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेउद्धवप्रतियानेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथविज्ञायभगवान् सर्वात्मासर्वदर्शनः ॥ सैरन्ध्र्याःकामतप्तायाः प्रियमिच्छन्गृहंययौ १ महार्होपस्करैराढ्यं कामोपायोपबृंहि

लियो करे हमारो शरीर वा कृष्ण कूं प्रणाम करो करे ६६ अपने कर्म्मानुसार ईश्वर की इच्छा तें जो काहू योनि में हम जायँ तो जो कछु हमने मङ्गलरूप कर्म्म करे हैं अथवा दान करे हैं तिनको यही फल माँगे हैं कि कृष्ण में हमारी प्रीति रहै ६७ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार गोपीन ने कृष्ण में जैसी भक्ति तैसी भक्ति करिकै सत्कार जिनको करो ऐसे उद्धव जी सों श्रीकृष्ण जाको पालन करैं ऐसी मथुरा पुरी में फेर आवत भये ६८ श्रीकृष्ण कों प्रणाम करिकै उद्धव जी व्रजवासीन की भक्ति की अधिकता कहत भये और वसुदेव कों प्रणाम करिकै बलदेव जी कों प्रणाम करिकै राजा उग्रसेन कों भेट देत भये ६९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्वार्द्धेउद्धवप्रतियानेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(अष्टचत्वारिंशकेऽथकृष्णः कुब्जामरीरमत् ॥ अक्रूरस्यगृहंगत्वातंगजाह्वयमादिशत् १ सैरन्ध्रीकाममापूर्य्यपूरयित्वामनोरथान् ॥ अक्रूरस्यततःकृष्णस्तेनपार्थानसान्त्वयत् २ अड़तालीसवें अध्याय में कृष्णजी कुब्जा के साथ रमण करतभये और अक्रूरजी के घर जाकर तिनको हस्तिनापुर भेजते भये १ कुब्जा की कामना पूरीकर और अक्रूरजी के मनोरथों को भी पूर्णकर अक्रूरजी

कूं कुन्ती के पुत्रों को समझावते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! उद्धवजी जब व्रज ते आये ताके पीछे सब के आत्मा और सब के देखननारे छःप्रकार के ऐश्वर्य करिकै युक्त ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कामसूं तपायमान जो कुब्जा है ताके प्रिय करिवे के लिये वाके घर जात भये १ कैसो घर है ताको वर्णन करे हैं बड़ेमोलकी अनेक तरहकी जामें वस्तु धरी हैं काम के उद्दीपन करननारे चित्र जामें लिखे हैं मोतीन की झालरि जिनमें लटकें ऐसी पताका फहराय हैं चँदोवा तनि रहे हैं शय्या बिछ रही है सुन्दर आसन बिछे हैं सुगन्धि की धूप लगि रही है दीवा प्रज्व लित होय रहे हैं माला अतर अरगजा धरे हैं तिनसों शोभायमान घर है २ श्रीकृष्ण कों अपने घरमें आये देखिकै कुब्जा जल्दीदेसी आसनपै ते उठिकै हरबराहट जाके भयो या प्रकार सखीन कों सङ्ग लिये श्रीकृष्ण के पास आवत भई सुन्दर आसन बिछायकै चरण धोइकै सत्कार करत भई ३ तैसेही भलेप्रकार पूजन जिनको कियो ऐसे उद्धवभी आसनकूं हाथ लगाय कै पृथ्वी में

तम् ॥ मुक्तादामपताकाभिर्वितानशयनासनैः ॥ धूपैःसुरभिभिर्दीपैःस्रग्गन्धैरपिमण्डितम् २ गृहंतमायान्तमवेक्ष्यसासनात्सद्यःसमुत्थायहिजातसम्भ्रमा ॥ यथोपसङ्गम्यसखीभिरच्युतंसभाजयामाससदासनादिभिः ३ तथोद्धवःसाधुतयाऽभिपूजितोन्यपीदद्दुर्व्यामभिमृश्यचासनम् ॥ कृष्णोऽपितूर्णंशयनंमहाधनं विवेशलोकाचरितान्यनुव्रतः ४ सामज्जनालेपदुकूलभूषणस्रग्गन्धताम्बूलसुधासवादिभिः ॥ प्रसाधितात्मोपससारमाधवं सव्रीडलीलोत्स्मितविभ्रमेक्षितैः ५ आहूयकान्तांनवसङ्गमह्रिया विशङ्कितांकङ्कणभूषितेकरे ॥ प्रगृह्यशय्यामधिवेश्यरामया रेमेऽनुलेपार्पणपुण्यलेशया ६ साऽनङ्गतप्तकुचयोरुरसस्तथाऽक्ष्णोर्जिघ्रन्त्यनन्तचरणेनरुजोमृजन्ती ॥ दोर्भ्यांस्तनान्तरगतंपरिरभ्यकान्तमानन्दमूर्तिमजहादतिदीर्घतापम् ७ सैवंकैवल्यनाथंतंप्राप्यदुष्प्रापमीश्वरम् ॥ अङ्गरागार्पणेनाहोदुर्भगेदमयाचत ८ आहोष्यतामिहप्रेष्ठदिनानिकतिचिन्मया ॥ रमस्वनोत्सहेत्यक्तुंसङ्गन्तेम्बुरुहेक्षण ९ तस्यैकामवरंदत्त्वा मानयित्वाचमानदः ॥ सहोद्धवेनसर्वेशः स्वधामागमदर्चितम् १० दुराराध्यंसमाराध्य विष्णुंसर्वेश्वरेश्वरम् ॥ योवृणीतेमनोग्राह्यमसत्त्वात्कुमनी

बैठतभये लौकिक लीलान कूं करैं ऐसे श्रीकृष्ण हू जल्दीदेसी सुन्दर बिछी जो शय्या है तापै जातभये ४ स्नान करिकै चन्दन लगाय सुन्दर वस्त्र पहिन गहने माला अतर अरगजा ताम्बूल और अमृत की सी नाई मादक जे वस्तु हैं तिनसूं अपनपे कूं बनाय ठनायकै लाजभरी लीलापूर्व्वक मुसिकानि कटाक्ष भरी चितवनि सूं मोहति भई ५ नवीन समागम की लज्जा सू शङ्कारहित जो कुब्जा है ताकूं बुलायकै कङ्कण करिकै शोभायमान जो हाथ है ताकों पकरिकै शय्या पै बैठायकै चन्दन को देनो जाके पुण्य को लेश ऐसी जो कुब्जा स्त्री है ताके संग श्रीकृष्ण रमण करतभये ६ कामदेव सू तप्त जे कुच हैं तिनकों ताही प्रकार छाती और नेत्रन कों जो ताप है ताय अनन्त श्रीकृष्ण के चरणारविन्द कूं लगाय कै और वा चरणारविन्द कूं सूंघिकै स्तनन के मध्य में प्राप्तभये जो सुन्दर आनन्दमूर्ति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकों भुजानसूं आलिंगन करिकै बहुत दिनन सूं बढ़ो जो तापहै ताकूं त्यागति भई ७ चन्दन के अर्पण करे ते मोक्षके देनवारे दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्ण ईश्वर हैं तिनें पायके अभागिनी कुब्जा यह मागति भई ८ अहो प्यारे कुछ दिन बसिके मेरे संग रमण करो हे कमलनेत्र ! तुम मोपै त्यागे नहीं जावो हौ ९ एक बेर तेरे नित्यहोय जावो करुंगो

ऐसे ता कुब्जा कों कामवर दैके वाको सन्मान करिकै मानके देनवारे ब्रह्मादिकन के ईश्वर श्रीकृष्ण उद्धवजी कों सङ्गलैके सुन्दर जो अपनो घर है तामें आवतभये १० सम्पूर्ण ईश्वरन के ईश्वर दुःख करिकै आराधन करिवे में आवैं ऐसे जो विष्णु तिनैं प्रसन्न करिकै जो पुरुष विषयनको वरमागै वह वडो कुबुद्धि है क्योंकि विषय तुच्छहैं ११ बलदेव उद्धवजी कों सङ्गलैके समर्थ श्रीकृष्ण कछु कार्य्य करायवे के लिये अक्रूर को भलो मनाइवेके निमित्त अक्रूर के घर जातभये १२ अक्रूरजी मनुष्यन में श्रेष्ठ अपने बन्धु जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनकों दूर ते देखिके प्रसन्न होयकै मिलिकै आनन्द पावतभये १३ कृष्ण बलदेव उद्धवजी ने नमस्कार जिनकों करो ऐसे अक्रूरजी पश्चात् कृष्ण बलदेव कों प्रणाम करतभये और आसन पै बैठे जे कृष्ण बलदेव तिनकी पूजा करतभये १४ हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण बलदेवके चरण कों धोवन जो जलहै ताय शिरपै चढावत भये पूजा सू दिव्य वस्त्र चन्दन माला उत्तम गहनेन सूं पूजा करिकै चरण धोइकै प्रणाम करतभये और गोदमें

ष्यसौ ११ अक्रूरभवनंकृष्णः सहरामोद्धवःप्रभुः ॥ किञ्चिच्चिकीर्षयन्प्रागादक्रूरप्रियकाम्यया १२ सतान्नरवरश्रेष्ठानाराद्वीक्ष्यस्वबान्धवान् ॥ प्रत्युत्थायप्रमुदितःपरिष्वज्याभिनन्द्यच १३ ननामकृष्णंरामञ्चसतैरप्यभिवादितः ॥ पूजयामासविधिवत्कृतासनपरिग्रहान् १४ पादावनेजनीरापोधारयञ्छिरसानृप ॥ अर्हणेनाम्बरैर्दिव्यैर्गन्धस्रग्भूषणोत्तमैः १५ अर्चित्वाशिरसानम्य पादावङ्कगतौमृजन् ॥ प्रश्रयावनतोऽक्रूरः कृष्णरामावभाषत १६ दिष्ट्यापापोहतःकंसः सानुगोवामिदंकुलम् ॥ भवद्भ्यामुद्धृतंकृच्छ्राद्दुरन्ताच्चसमेधितम् १७ युवांप्रधानपुरुषौ जगद्धेतूजगन्मयौ ॥ भवद्भ्यांनविनाकिञ्चित्परमस्तिनचापरम् १८ आत्मसृष्टमिदंविश्वमन्वाविश्यस्वशक्तिभिः ॥ ईयतेबहुधाब्रह्मञ्छ्रुतिप्रत्यक्षगोचरम् १९ यथाहिभूतेषुचराचरेषु मह्यादयोयोनिषुभान्तिनाना ॥ एवंभवान्केवलआत्मयोनिष्वात्मात्मतन्त्रोबहुधाविभाति २० सृजस्यथोलुम्पसिपासिविश्वं रजस्तमःसत्त्वगुणैःस्वशक्तिभिः ॥ नबध्यसेतद्गुणकर्मभिर्वाज्ञानात्मनस्तेक्वचबन्धहेतुः २१ देहाद्युपाधेरनिरूपितत्वाद्भवोनसाक्षान्नभिदात्मनःस्यात् ॥ अतोनबन्धस्तवनैवमोक्षः स्यातांनिकामस्त्वयिनोऽविवेकः २२

चरणन कूं धरिकै दावतभये अधीनतापूर्वक नइकै अक्रूरजी कृष्ण बलदेवजी सूं बोलतभये १५। १६ मन्त्रीनसहित पापी कंस मारो बड़ेकष्टतें तुमने या गोकुल कों उद्धार कियो और कुलकों नदायो यह बड़ो मङ्गलभयो तुम प्रकृतिरूप हौ जगत् के कारण हौ जगन्मय हौ तुम ते पृथक् कछु कार्य्य कारण नहींहै १७। १८ आपने रचो जो विश्वहै तामें अपनी शक्तिनसहित प्रवेश करिकै हे ब्रह्मन् अर्थात् परमेश्वर! श्रवण करिवे में देखिवे में बहुत प्रकारके प्रतीत होउ हौ १९ स्थावर जङ्गम जे देह हैं तिनमें पृथ्वी कों आदि लैके जे पञ्चभूत हैं तिनकूं अनेकप्रकार करिकै प्रकाशो हौ ऐसे आपने आपही अकेले जो तुमहो सो आपुही जिनके कारण ऐसे पञ्चभूत और पञ्चभूतन के बने देह तिनमें बहुत रूप करिकै प्रकाशो हौ २० रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण अपनी शक्ति हैं तिन सों विश्वकों उत्पन्न प्रलय पालन करो हौ ते गुण और उत्पत्त्यादिक कर्म्म तिन सों बँधे नहीं हो ज्ञानरूप तुमहौ तिनकूं बन्धन करनवारी अविद्या नहीं है २१ देहादि उपाधि झूंठी साची कहिवे में नहीं आवै ताते आत्माको साक्षात् जन्म नहीं है जन्म जाको कारण ऐसो भेद नहीं है तुम में अविद्या नहींहै याते बँधे नहींहौ छूटे भी नहींहौ ऐसे बन्ध मोक्ष दोनों तुम

को नहीं हैं उलूखलमें मोकों बँधो सुनो है यमुना के भीतर खुल्यो देखो है बन्ध मोक्ष कैसे नहींहैं हमारे अज्ञानकरिकै बन्ध मोक्ष दिखाई देउहौ तुम बँधेहौ न छूटेहौ २२ जगत् के कल्याण करिवे के निमित्त तुमने कह्यो जो सनातन वेदमार्गहै सो जासमय असाधुन के पाखण्ड मार्गसे बाधित होयहै तासमय सत्त्वगुण रूपकों धारण करोहौ २३ हे प्रभो ! या संसारमें पृथ्वी को भार उतारिवे के लिये अपने अंश बलदेवसहित वसुदेवजी के घरमें जन्मे हौ देवतानतें इतर जे असुर तिनके अंशनते उत्पन्नभये जे राजाहैं तिनकी सैकरान अक्षौहिणीन के वध करोगे और यदुकुल के यशकूं बढ़ा-वोगे २४ हे ईश ! आज हमारो घर निश्चय बड़भागी है सब देवता पितृ प्राणी मनुष्य देवरूप जो तुमहौ तिनके चरणारविन्द को धोवन जल गङ्गारूप तीनों लोकनकूं पवित्र करे है सो तुम जगत्के गुरु अधोक्षज भगवान् हमारे घरमें आयेहो याते हमारो घर बड़भागी है २५ भक्त हैं प्यारे जिनकों सत्य है वाणी जिनकी सबके हितकारी कृतके जाननवारे ऐसे जो तुमहौ तिनकूं त्यागि

त्वयोदितोऽयंजगतोहिताय यदायदावेदपथःपुराणः ॥ बाध्येत पाखण्डपथैरसद्भिस्तदा भवान्सत्त्वगुणंविभर्त्ति २३ सत्वंप्रभोऽद्यवसुदेवगृहेऽवतीर्णःस्वांशेनभारमपनेतुमिहासिभूमेः ॥ अक्षौहिणीशतवधेनसुरेतरांशराज्ञाममुष्यचकुलस्ययशोवितन्वन् २४ अद्येशनोवसतयःखलुभूरिभागायःसर्व्वदेवपितृभूतनृदेवमूर्त्तिः ॥ यत्पादशौचसलिलंत्रिजगत्पुनाति सत्वंजगद्गुरुरधोक्षजयाःप्रविष्टः २५ कःपण्डितस्त्वदपरंशरणंसमीयाद्भक्तप्रियादृतगिरःसुहृदःकृतज्ञात् ॥ सर्व्वान्ददातिसुहृदोभजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौनयस्य २६ दिष्ट्याजनार्दनभवानिहनःप्रतीतोयोगेश्वरैरपिदुरापगतिःसुरेशैः ॥ छिन्ध्याशुनःसुतकलत्रधनाप्तगेहदेहादिमोहरशनांभवदीयमायाम् २७ इत्यर्चितःसंस्तुतश्च भक्तेनभगवान्हरिः ॥ अक्रूरंसस्मितंप्राह गीर्भिःसंमोहयन्निव २८ श्रीभगवानुवाच ॥ त्वंनोगुरुःपितृव्यश्च श्लाघ्योबन्धुश्चनित्यदा ॥ वयंतुरक्ष्याःपोष्याश्च अनुकम्प्याःप्रजाहिवः २९ भवद्विधामहाभागानिषेव्याअर्हसत्तमाः ॥ श्रेयस्कामैर्नृभिर्नित्यं देवाःस्वार्थानसाधवः ३० नह्यम्मयानितीर्थानि नदेवामृच्छिलामयाः ॥ तेपुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेवसाधवः ३१ सभवान्सु

कै ऐसो बुद्धिमान् कौनहै जो अन्यकी शरण लेइ भजन करनवारेन कूं सम्पूर्ण कामनान कों देउहौ और अपने आत्माकूं भी देउहौ और तुम्हारे यह उत्तम है यह नीचहै यह भेद नहींहै २६ हे जनार्दन ! अपने घरमें आयके दर्शनदीनो यह बड़ो मङ्गलभयो योगेश्वर और देवता ये तुम्हारे स्वरूपकूं नहीं जाने हैं पुत्र स्त्री धन हितकारी घर देहादिकनमें मोहकी रस्सीरूप जो तुम्हारी मायाहै सो हमकों लगिरही है ताय जल्दी काटौ २७ भक्त जो अक्रूर है ताने पूजन और स्तुतिकरी ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण वाणीनसूं मोहित करत मुसिकायकै अक्रूर जीतें बोलतभये २८ श्रीकृष्ण भगवान् कहे है तुम हमारे गुरुहौ चचाहौ नित्य स्तुति करिवे योग्यहौ बन्धुहौ हम तुम्हारे लरिकाबारेहैं हमारी रक्षाकरो पोषणकरो हमपै कृपाकरो २९ हे पूज्यनमें श्रेष्ठ ! तुम सदृश बड़भागी कल्याण की जिनके चाहना ऐसे मनुष्यन सों नित्य सेवा करिवे लायकहौ देवता आप स्वार्थी हैं साधु महात्मा आप स्वार्थी नहीं होयहैं ३० कहा जलमय तीर्थ नहीं हैं और मृत्तिका शिलान के बने देवता नहीं हैं किन्तु हैं परन्तु वे सब बहुत दिन पर्य्यन्त सेवा करनेते पवित्र करे हैं और साधु जे हैं ते दर्शनही ते पवित्र करे है ३१ हे अक्रूरजी ! हमारे सुहृदनमें उत्तमहौ याते

पाण्डवन के कल्याण करिवे के लिये हस्तिनापुर कूं जावो ३२ पिता पाण्डुके मरणभये पीछे माता जो कुन्ती है तासहित दुःखित जे पाण्डव बालक हैं तिनकों धृतराष्ट्र अपने पुरमें ले आवो है वाके पास रहे हैं यह हमने सुनी है ३३ लुब्धहै बुद्धि जाकी ऐसो अम्बिकाको पुत्र राजा धृतराष्ट्र भय्या के पुत्र पाण्डवनमें समता नहीं राखे हैं दुष्ट जे दुर्योधनकूं आदिलैके पुत्र हैं तिनके अधीन होयरह्यो है आधरी जाकी दृष्टिहै ३४ तुम अब हस्तिनापुरको जावो बुरीभली उनकी सब खबरि लावो हम जानिकै पाण्डवन कों जामें सुखहोय वह उपाय करेंगे ३५ या प्रकार अक्रूरजी सों कहिकैं छ प्रकार के ऐश्वर्य्ययुक्त हरि श्रीकृष्णचन्द्र बलदेव और उद्धव जी कों संगलैके अपने घर आवतभये ३६ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेऽक्रूरप्रेषणोनामाष्टचत्वारिंशोऽध्याय. ४८ ॥

(ऊनपञ्चाशत्तमेतुगत्वाऽक्रूरोगजाह्वयम् ॥ राज्ञःस्वभ्रातृपुत्रेषुवुद्ध्वावैषम्यमागमत् १ उनचासवें अध्याय में अक्रूरजी हस्तिनापुर जाकर धृतराष्ट्र राजाको अपने भाई के पुत्रोंमें विषमता जानकर

हृदांवैनः श्रेयाञ्छ्रेयश्चिकीर्षया ॥ जिज्ञासार्थंपाण्डवानां गच्छस्वत्वंगजाह्वयम् ३२ पितर्य्युपरतेबालाः सहमात्रासुदुःखिताः ॥ आनीताःस्वपुरंराज्ञाव सन्तइतिशुश्रुम ३३ तेषुराजाऽम्बिकापुत्रो भ्रातृपुत्रेषुदीनधीः ॥ समोनवर्त्ततेनूनंदुष्पुत्रवशगोऽन्धदृक् ३४ गच्छजानीहितद्वृत्तमधुनासाध्वसाधुवा ॥ विज्ञायतद्विधास्यामोयथाशंसुहृदांभवेत् ३५ इत्यक्रूरंसमादिश्य भगवान्हरिरीश्वरः ॥ सङ्कर्षणोद्धवाभ्यां वैततःस्वभवनंययौ ३६ इति श्रीमद्भागवतेम हापुराणेदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेऽक्रूरप्रेषणोनामाऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सगत्वाहास्तिनपुरं पौरवेन्द्रयशोऽङ्कितम् ॥ ददर्शतत्राम्बिकेयंसभीष्मंविदुरंपृथाम् १ सहपुत्रञ्चबाह्लीकं भारद्वाजंसगौतमम् ॥ कर्णंसु योधनंद्रौणिं पाण्डवान्सुहृदोऽपरान् २ यथावदुपसङ्गम्य बन्धुभिर्गान्दिनीसुतः ॥ सम्पृष्टस्तैःसुहृद्वार्त्तां स्वयंचापृच्छदव्ययम् ३ उवासकतिचिन्मासान्राज्ञोवृत्तविवित्सया ॥ दुष्प्रजस्याल्पसारस्यखलच्छन्दानुवर्त्तिनः ४ तेजओजोबलंवीर्य्यंप्रश्रयादींश्चसद्गुणान् ॥ प्रजानुरागंपार्थेषुनसहद्भिश्चिकीर्षितम् ५

मथुरापुरी में प्राप्त होजाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन्परीक्षित्! पुरुवंशी राजान के यशते शोभायमान जो हस्तिनापुर है तामें जायके अम्बिकाको पुत्र धृतराष्ट्र तिनें अक्रूर जी देखत भये और भीष्मपितामह विदुर कुन्ती और सोमदत्त पुत्रसहित बाह्लीक भारद्वाज अर्थात् द्रोणाचार्य्य गौतम अर्थात् कृपाचार्य्य कर्ण दुर्योधन अश्वत्थामा पाचों पाण्डव और जे सुहृद् हैं तिन सबकूं देखत भये १ । २ गान्दिनीकेपुत्र अक्रूरजी बन्धुनकेसङ्ग यथायोग्य मिलिकै ते बन्धु सुहृदनकी वार्त्ता अक्रूरजी तें पूंछतभये और अक्रूरजी आप उनते कुशल क्षेम पूंछत भये ३ दुष्ट हैं पुत्र जाके और अल्प है बुद्धि जाकी दुष्ट कर्णादिकन के कहे में चलै ऐसो राजा धृतराष्ट्र ताके वृत्तान्त जानिवे के कारण कितनेऊं मासपर्य्यन्त अक्रूरजी वहाँ वास करतभये ४ तेज अर्थात् प्रभाव ओजोबल अर्थात् शस्त्र चलायवे की निपुणता वीर्य्य अर्थात् शूरता पाण्डवन में प्रजा को स्नेह वीरता सों आदि लैके जे अच्छे गुण हैं तिनें नहीं सहारें ऐसे जे धृतराष्ट्र के पुत्र हैं तिनकी और जो कछु आगे करिवे

की इच्छा है ताय और धृतराष्ट्र के पुत्रन ने विषके देवे सूं आदि लेके जो कछु अन्याय करयो है सो सम्पूर्ण वार्त्ता कुन्ती और विदुर अक्रूरजी के आगे कहत भये ५।६ कुन्ती आयो जो भय्या अक्रूर है तासूं मिलि कै और अपने जन्मस्थानको स्मरण करिके नेत्रन में आँसू बहावति अक्रूर जी तें बोलत भई ७ हे सौम्य अर्थात् साधु ! मेरे माता पिता कभऊं मेरो स्मरण करे है मेरे भय्या बहिन भय्या के पुत्र कुलकी स्त्री सखी ये सब कभऊं मेरी सुधि करे है शरणागतन को पालक भक्तन के ऊपर हित को करनवारो भय्या को पुत्र भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कभऊं अपनी फूफी के पुत्रन की सुधि करे है कमल की तुल्य हैं नेत्र जाके ऐसो राम कभऊं सुधि करे हैं ८ । ९ भेड़ियान के बीच में हरिणी जैसे घिर जाय ऐसे वैरीन के बीच में घिरी भई शोच करूं जो मैं हूं ताय वचन करिकै श्रीकृष्ण कहा समझावैगो पिता जिनके मरि गये ऐसे बालकन कों कहा समझावैगो १० हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! हे विश्व के आत्मन् ! हे विश्व के पालनकर्त्ता ! हे गोविन्द !

कृतश्च धार्तराष्ट्रैर्यद्दाहदानाद्यपेशलम् ॥ आचख्यौ सर्वमेवास्मै पृथा विदुर एव च ६ पृथा तु भ्रातरं प्राप्तमक्रूरमुपसृत्य तम् ॥ उवाच जन्मनिलयं स्मरन्त्यश्रुकलेक्ष
णा ७ अपि स्मरन्ति नः सौम्य पितरौ भ्रातरश्च मे ॥ भगिन्यो भ्रातृपुत्राश्च जामयः सख्य एव च ८ भ्रात्रेयो भगवान्कृष्णः शरण्यो भक्तवत्सलः ॥ पैतृष्वस्रे
यान्स्मरति रामश्चाम्बुरुहेक्षणः ९ सपत्नमध्ये शोचन्तीं वृकाणां हरिणीमिव ॥ सान्त्वयिष्यति मां वाक्यैः पितृहीनांश्च बालकान् १० कृष्ण कृष्ण महायोगिन्
विश्वात्मन्विश्वभावन ॥ प्रपन्नां पाहि गोविन्द शिशुभिश्चावसीदतीम् ११ नान्यत्तव पदाम्भोजात्पश्यामि शरणं नृणाम् ॥ बिभ्यतां मृत्युसंसारादीश्वरस्या
पवर्गिकात् १२ नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ॥ योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणं गता १३ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यनुस्मृत्य स्वजनं कृष्णं च जगदी
श्वरम् ॥ प्रारुदद्दुःखिता राजन् भवतां प्रपितामही १४ समदुःखसुखोऽक्रूरो विदुरश्च महायशाः ॥ सान्त्वयामासतुः कुन्तीं तत्पुत्रोत्पत्तिहेतुभिः १५ यास्यन्
राजानमभ्येत्य विषमं पुत्रलालसम् ॥ अवदत्सुहृदां मध्ये बन्धुभिः सौहृदोदितम् १६ अक्रूर उवाच ॥ भो भो वैचित्रवीर्य त्वं कुरूणां कीर्तिवर्द्धन ॥ भ्रातर्यु

बालकन सहित दुःखित होय के तेरी शरण आई जो मैं हूं ताकी रक्षा करो ११ मृत्युरूपी संसार ते भयभीत जे मनुष्य हैं तिनके ईश्वर तुम हौ और मोक्ष के देनवारो जो चरणकमल है तासों अन्य कों शरण नहीं देखौं हूं १२ शुद्ध अर्थात् धर्मात्मा ब्रह्म अपरिच्छिन्न अर्थात् ढकिवे में नहीं आवै परमात्मा अर्थात् जीव के सखा योगेश्वर अर्थात् अणिमादिक शक्तियुक्त योग अर्थात् ज्ञानरूप ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र तुम हौ तिनकों नमस्कार है तुम्हारो मैंने शरण लियो है १३ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार जगत् के ईश्वर अपने भतीजे श्रीकृष्ण तिनकी सुधि करिकै तुम्हारी परदादी कुन्ती दुःखित होयकै रुदन करत भई १४ बराबर है दुःख और सुख जिनके ऐसे अक्रूर और बड़ो है यश जिनको ऐसे विदुर जी कुन्ती कूं समझावैं हैं तुम्हारे पुत्र धर्म पवन इन्द्र इत्यादिकन के अंशतें उत्पन्न भये तुम इतनो शोच क्यों करो हौ या प्रकार कहत भये १५ चलते समय अपने पुत्रन में है स्नेह जाके और भतीजेन में विषमता जाके ऐसे राजा धृतराष्ट्र के पास जायकै सुहृदन के मध्य में जे रामकृष्णादिक बन्धु हैं तिन ने स्नेह ते कहे जे वचन हैं तिनें अक्रूर जी कहतभये १६ अब अक्रूरजी कहे हैं हे वैचित्रवीर्य कुरु-

राष्ट्र कौरवन की कीर्त्ति के बढ़ावनवारे भय्या पाण्डु मरे तिनके पीछे अब तुम राजसिंहासन पै बैठे हौ अर्थात् राजा पाण्डु के पुत्र युधिष्ठिरादिक बैठे हैं तुम राज्य बैठे सो उचित नहीं है यह कटाक्ष करे है १७ अब अक्रूरजी कहे हैं बहुत उत्तम राज्य करो परन्तु या प्रकार वर्तोगे तो कल्याण होयगो सो अक्रूर जी कहे हैं धर्म्म करिकै पृथ्वी को पालन करोगे और शील करिकै प्रजा को आनन्द देउगे और भतीजेनमें और पुत्रन में समता राखौगे तब संसार में कल्याण और यशको पावोगे १८ और जो विषमता राखोगे तौ संसार में निन्दा होयगी और मरिकै नरक में जावोगे ता कारण पाण्डवन में और अपने पुत्रन में समता राखो १९ हे राजन् धृतराष्ट्र! या संसार में काहू को सत्सग सर्वकाल नहीं रहे है और अपनो देह भी सदा नहीं रहेहै देखो विचार करिकै स्त्री पुत्र ये सर्वदा कहाँ ते रहेंगे २० जीव अकेलोही जन्म लेइहै और अकेलोही मृत्यु पावै है अकेलोही पुण्यको फल सुख है ताकूं भोगे है और अकेलोही पाप को फल

परेतेपाण्डावधुनासनमास्थितः १७ धर्मेणपालयन्नुर्वींप्रजाःशीलेनरञ्जयन् ॥ वर्त्तमानःसमःस्वेषु श्रेयःकीर्त्तिमवाप्स्यसि १८ अन्यथात्वाचरल्लोके गर्हितो यास्यसेतमः ॥ तस्मात्समत्वेवर्त्तस्वपाण्डवेष्वात्मजेषु च १९ नेहचात्यन्तसंवासःकर्हिचित्केनचित्सह ॥ राजन्स्वेनापिदेहेन किमुजायात्मजादिभिः २० एकःप्रसूयतेजन्तुरेकएवप्रलीयते ॥ एकोऽनुभुङ्क्तेसुकृतमेकएवचदुष्कृतम् २१ अधर्म्मोपचितंवित्तं हरन्त्यन्येऽल्पमेधसः ॥ सम्भोजनीयापदेशैर्जलानीव जलौकसः २२ पुष्णातियानधर्म्मेण स्वबुद्धयातमपण्डितम् ॥ तेऽकृतार्थंप्रहिण्वन्तिप्राणारायःसुतादयः २३ स्वयंकिल्बिषमादाय तैस्त्यक्तोनार्थकोविदः ॥ असिद्धार्थोविशत्यन्धंस्वधर्मविमुखस्तमः २४ तस्माल्लोकमिमंराजन्स्वप्नमायामनोरथम् ॥ वीक्ष्यायम्यात्मनाऽऽत्मानंसमःशान्तोभवप्रभो २५ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ यथावदतिकल्याणीं वाचंदानपतेभवान् ॥ तथाऽनयानतृप्यामि मर्त्यःप्राप्ययथाऽमृतम् २६ तथाऽपिसूनृतासौम्य हृदिनस्थीयतेचले ॥ पुत्रानुरागविषमे विद्युत्सौदामिनीयथा २७ ईश्वरस्यविधिंकोनुविधुनोत्यन्यथापुमान् ॥ भूमेर्भारावताराय योऽवतीर्णोयदोःकुले २८ योदुर्विमर्शपथ

दुःख है ताकूं भोग करे है २१ अज्ञानी पुरुष ने जो पाप करिकै धनसञ्चय करयो है ताकूं स्त्री पुत्र भय्या बन्धु होयके लेइ हैं जैसे जल की रहनवारी मछरीन को जिवावनवारो जल है ताकूं वाके पुत्र पीलेइ है तब वाकों कष्ट होय है २२ पापही है एक मार्ग को खर्च जाके ऐसो पुरुष नरक में परे है यह कहे हैं अधर्म्म तें अपने मानिके प्राण धन पुत्रादिकन को भरण पोषण करे हैं और जब भोग जिनकूं नहीं मिले है तब वा अज्ञानी पुरुष कूं त्यागि देइ हैं २३ जब पुत्रादिक जाकों त्यागि देइ हैं तब सब के पाप कों अपने शिर पै धरिकै वही पूर्ण नरक में परे है २४ ता कारण हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र! स्वप्न और बाजीगर की माया तथा मनको विचार ये सब तुमकूं मिथ्याभूत दिखाई देय हैं तैसेही या संसार कूं मिथ्याभूत समझिकै आपही अपने मनको रोकिके समता राखौ शान्तहोउ २५ राजा धृतराष्ट्र कहे हैं हे दाननके पति अक्रूर! जे तुम कल्याणकारक श्रेष्ठ वचन कहो हौ तिनकूं श्रवण करत करत मेरो मन तृप्त नहीं होयहै जैसे मनुष्य अमृतकूं पान करत करत तृप्त नहीं होय है या प्रकार २६ तथापि हे अक्रूर! मेरो चञ्चल पुत्रन में स्नेह है तासूं विषम जो हृदय है तामें तुम्हारी प्यारी बात ठहरे नहीं है जैसे स्फटिकमणि के सुदामा पर्वत पै

विजुरी चमकि कै स्थिर नहीं रहे है या प्रकार २७ ऐसो तुम जानो हौ फेरि मोह क्यों करो हौ जो या प्रकार कदाचित् अक्रूरजी कहो ताको उत्तर धृतराष्ट्र देइ हैं ईश्वरकी माया कूं कौन पुरुष अन्यथा करिसकै हैं जो ईश्वर ने पृथ्वी को भार उतारिवे के कारण यादवन के कुलमें आयकै अवतार लियो है २८ जो ईश्वर विचारमें न आवै ऐसी जो अपनी माया है तासूं या विश्व कूं उत्पन्न करिकै और तामें प्रवेश करिकै कर्म और कर्म्मन के फलन कू न्यारे न्यारे करिके जीवन कों देइ है जानिवे न आवै ऐसो जो विहार अर्थात् खेल है सोई है मुख्य कारण जा संसारचक्र को ऐसे जो परमेश्वर तुमहौ तिनकूं नमस्कार है २९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजनपरीक्षित्! या प्रकार यदुवंशोत्पन्न अक्रूरजी धृतराष्ट्र को अभिप्राय जानिकै सुहृदन सूं आज्ञा मांगिकै फेरि

यानिजमाययेदं सृष्ट्वागुणान्विभजतेतदनुप्रविष्टः ॥ तस्मैनमोदुरवबोधविहारतन्त्रसंसारचक्रगतयेपरमेश्वराय २९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्यभिप्रेत्यनृपतेरभिप्रायंसयादवः ॥ सुहृद्भिःसमनुज्ञातः पुनर्यदुपुरीमगात् ३० शशंसरामकृष्णाभ्यांधृतराष्ट्रविचेष्टितम् ॥ पाण्डवान्प्रतिकौरव्य यदर्थंप्रेषितःस्वयम् ३१ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांदशमस्कन्धेपूर्व्वार्द्धेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥ पूर्व्वार्द्धः समाप्तिमगमत् ॥

इति श्रीमद्भागवतेदशमस्कन्धपूर्व्वार्द्धःसमाप्तः ॥

मथुरापुरी में आवतभये ३० हे कुरुवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित्! बलदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने आय जिस कारण अक्रूरजी कों पाण्डवन के पास भेजो हो सो सब धृतराष्ट्र की कथित वार्त्ता अभिप्राय आयकै श्रीबलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्रजी सूं कहतभयो ३१ इति श्रीमच्छुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीशाखाध्येतृवैयाघ्रपदगोत्रजातविश्वामित्रपुराधिपश्रीमन्नृपतिजयविशोरदेवात्मजश्रीगिरिप्रसादवर्म्माज्ञयापण्डितान्नदशर्म्मशास्त्रिरचितायांश्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

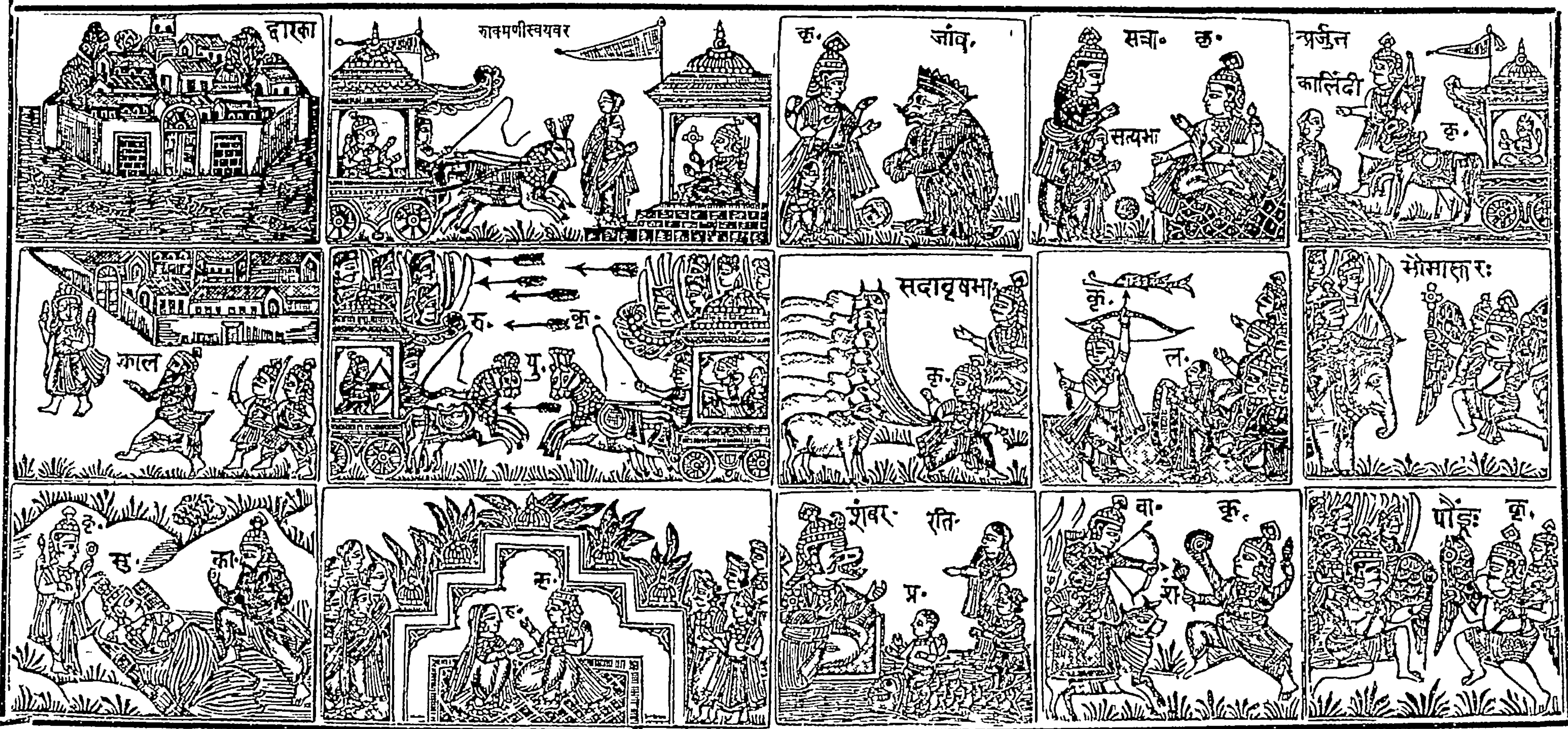
समाप्तश्चायम्पूर्व्वार्द्धः ॐ तत्सत् श्रीगोपीजनवल्लभाप्पणमस्तु ॐ शान्तिः ३ ॥



॥ इति श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धपूर्वार्द्धम् ॥

॥ अथ श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धउत्तरार्द्धम् ॥

दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध




द्विविद
रा


कृ.
सुदामा.


रा.
सुभद्रा
रेवती
अर्जुन
पति


शिशु
कृष्ण
राजसूयज्ञ


शाल्व
प्रद्यु.


कुरुक्षेत्र


यात्रासमूह


राम
राम
भस्मा
कृष्ण.
शिव


परब्रह्म
वेदा

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः (ततः श्चाशत्तमेतु जरासन्धभयादिव ॥ कारयित्वाम्बुधौ दुर्गं निनाय निजंजनम् १ कपटान्कपटैरेव हत्वा दैत्यानयत्नतः ॥ अजयद्य जरासन्धं धर्मेणैव तु धार्मिकम् २ अब पूर्वार्द्ध कहे पीछे पचासके अध्यायमें जो कथाहै ताको वर्णन करे हैं जरासन्ध के भयतेही मानों समुद्र में किला बनाय कै श्रीकृष्ण अपने यादवन कों ले जातभये १ कपटी दैत्यन कों कृष्णजी कपटों सों विना यत्नही सू मारिकै धर्मात्मा जरासन्धको धर्मही सूं जीतते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे भरतवंशीन में भये राजन् परीक्षित् ! अस्ति और प्राप्ति ये दोनों कंसकी रानीहैं ते अपने पति कंसके मरण सूं दुःखित होयके पिताके घर जातिभई १ दुःखित जे अस्ति प्राप्ति हैं ते अपनो पिता जो मगधदेशको राजा जरासन्धहै ताकों सम्पूर्ण अपने विधवापनेको कारण जताघति भई २ हे राजन् परीक्षित् ! ताही काल दुःखके भरे अप्रिय वचन सुनिकै जरासन्ध जामाताको शोक न सहिकै यादवनसूं रहित पृथ्वीकूं करिवेको उपाय करतभयो ३ तेईस अक्षौहिणी सेना कूं सङ्गलैके जरासन्ध यादवन की राजधानी जो मथुरा है ताय सम्पूर्ण दिशान ते घेरत भयो ४ मर्यादा त्यागिकै मानों समुद्र उमड्यो चल्यो आवे है या प्रकार जरासन्धकी सेना कूं आवति

श्रीशुकउवाच ॥ अस्तिःप्राप्तिश्चकंसस्य महिष्यौभरतर्षभ ॥ मृतेभर्त्तरिदुःखार्ते ईयतुःस्मपितुर्गृहान् १ पित्रेमगधराजाय जरासन्धायदुःखिते ॥ वेदयाञ्चक्रतुःसर्वमात्मवैधव्यकारणम् २ सतदप्रियमाकर्ण्य शोकामर्षयुतोनृप ॥ अयादवीमहींकर्तुं चक्रेपरममुद्यमम् ३ अक्षौहिणीभिर्विंशत्या तिसृभिश्चापिसंवृतः ॥ यदुराजधानीमथुरां न्यरुणत्सर्वतोदिशम् ४ निरीक्ष्यतद्बलंकृष्णउद्वेलमिवसागरम् ॥ स्वपुरंतेनसंरुद्धं स्वजनञ्चभयाकुलम् ५ चिन्तयामासभगवान् हरिःकारणमानुषः ॥ तद्देशकालानुगुणं स्वावतारप्रयोजनम् ६ हनिष्यामिबलंह्येतद्भुविभारंसमाहितम् ॥ मागधेनसमानीतंवश्यानांसर्वभूभुजाम् ७ अक्षौहिणीभिःसङ्ख्यातं भटाश्वरथकुञ्जरैः ॥ मागधस्तुनहन्तव्योभूयःकर्त्ताबलोद्यमम् ८ एतदर्थोऽवतारोऽयं भूभारहरणायमे ॥ संरक्षणायसाधूनांकृतोऽन्येषांवधायच ९ अन्योऽपिधर्मरक्षायै देहःसंभ्रियतेमया ॥ विरामायाप्यधर्मस्य कालेप्रभवतःक्वचित् १० एवंध्यायतिगोविन्दआकाशात्सूर्य

देखिकै और ता सेना सों आवृत मथुरापुरी कों देखिकै और स्वजन जे अपने यादव हैं तिनकूं व्याकुल देखिकै ५ पृथ्वी कों भार उतारिवे के कारण मनुष्यरूप जिनने धर्यो ऐसे सब के दुःखके हरनवारे श्रीकृष्ण ता समय देश कालके योग्य अपने अवतारको प्रयोजन है ताहि देखिकै विचार करतभये ६ जरासन्धकूं छोड़िकै या सेना को वधकरूं अथवा जरासन्ध कों मारिकै सेना कूं ग्रहण करूं अथवा सेनासहित जरासन्धकूं मारूं ऐसे तीनप्रकार के मनमें सङ्कल्प विकल्प करिकै प्रथम विचार जो सेनावध है ताही कूं निश्चय करतभये क्योंकि पृथ्वी को भाररूप यह सेनाहै याही कूं मारूंगो सम्पूर्ण देशन के राजान की सेनाकों जरासन्ध लेआयो है ऐसो समय वारवार न मिलैगो ७ प्यादे अश्व रथ हस्ती इन चतुरङ्गिणी अनेक अक्षौहिणी सेना कोही मारिवो योग्य है जरासन्ध को मारिवो योग्य नहीं है काहे ते यह काम को है सम्पूर्ण कूं समेटि के यहां ले आवैगो मैं कहां कहां फिरूंगो ८ भूमि को बोझ उतारिवे कों और साधुन की रक्षा करिवे कों और दुष्टन के वध करिवे के निमित्त मैंने अवतार लियो है ९ कोई समय पाइकै पृथ्वी पै बढ़े जे अधर्म्म हैं तिनके नष्ट करिवे के कारण और धर्म्म की रक्षा करिवे के कारण औरहू देह कों

में धारण करूं हूं १० या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र विचार करें हैं इतने में सूर्य्य की तुल्य जिनको तेज ध्वजा कवच जिनमें धरे और रथवान् सहित दो रथ शीघ्रही आकाश तें उतरत भये ११ वाही समय अनायासपूर्वक आये जे दिव्यशस्त्र हैं तिनें देखिकै हृषीकेश श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजीसों बोलतभये १२ हे आर्य्य अर्थात् श्रेष्ठ ! हे प्रभो ! तुमहीं जिनकी रक्षा करनवारे ऐसे यादवन कूं दुःख आयकै प्राप्त भयो है तुम देखो यह रथ आयो है प्यारे शस्त्र आये हैं १३ रथमें वैठिकै सेना कूं मारो अपने यादवन कों कष्ट दूरिकरो हे ईश ! साधून के कल्याण के निमित्त या संसार में हमारो तुम्हारो जन्म है १४ तेईस अक्षौहिणी सेना आयकै प्राप्त भई है ताको पृथ्वी पै बोझ है ताकूं दूरि करो या प्रकार दाशार्हवंशोत्पन्न जे कृष्ण बलदेव हैं ते विचार करिकै कवचन कूं पहिरिकै सुन्दर शस्त्रनकूं लैकै रथमें वैठिकै कछु थोड़ी सी सेना सङ्गलैकै पुरके वाहिर निकसिकै दारुकहै सारथी जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शङ्ख कूं बजावत भये १५ । १६ ताके पीछे जरासन्ध

वर्चसौ ॥ रथावुपस्थितौसद्यः ससूतौसपरिच्छदौ ११ आयुधानिचदिव्यानिपुराणानियदृच्छया ॥ दृष्ट्वातानिहृषीकेशः सङ्कर्षणमथाब्रवीत् १२ पश्यार्य्यव्य सनंप्राप्तं यदूनांत्वावतांप्रभो ॥ एषतेरथआयातो दयितान्यायुधानिच १३ यानमास्थायजह्येतद्व्यसनात्स्वान्समुद्धर ॥ एतदर्थंहिनौजन्म साधूनामीशशर्म्मकृत् १४ त्रयोविंशत्यनीकाख्यं भूमेर्भारमपाकुरु ॥ एवंसंमन्त्र्यदाशार्हौ दंशितौरथिनौपुरात् १५ निर्जग्मतुःस्वायुधाढ्यौ बलेनाल्पीयसावृतौ ॥ शङ्खन्दध्मौविनिर्गत्य हरिर्दारुकसारथिः १६ ततोभूत्परसैन्यानां हृदिवित्रासवेपथुः ॥ तावाहमागधोवीक्ष्य हेकृष्णपुरुषाधम १७ नत्वयायोद्धुमिच्छामि बालेनैकेनलज्जया ॥ गुप्तेनहित्वयामन्द नयोत्स्येयाहिबन्धुहन् १८ तवरामयदिश्रद्धा युध्यस्वधैर्य्यमुद्वह ॥ हित्वावामच्छरैश्छिन्नन्देहंस्वर्याहिमांजहि १९ श्रीभगवानुवाच ॥ नवैशूराविकत्थन्ते दर्शयन्त्येवपौरुषम् ॥ नगृह्णीमोवचोराजन्नातुरस्यमुमूर्षतः २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ जरासुतस्तावभिसृत्यमाधवौ महाबलौघेनबलीयसाऽवृणोत् ॥ ससैन्ययानध्वजवाजिसारथीसूर्य्यानलौवायुरिवाभ्ररेणुभिः २१ सुपर्णतालध्वजचिह्नितौरथावलक्षयन्त्योहरिरामयोर्मृधे ॥ स्त्रियःपुराट्टालकहर्म्यगोपुरं समाश्रिताःसंमुमुहुःशुचार्दिताः २२ हरिःपरानीकपयोमुचांमुहुःशिलीमुखात्युल्बणवर्षपीडितम् ॥ स्वसैन्यमालोक्यसुरासुर

की सेना के हृदय भयभीत होयकै कम्पित होत भये कृष्ण बल देवकूं देखिकै जरासन्ध बोलतभयो हे कृष्ण अधम ! तूं अकेलो बालक है तेरे सङ्ग युद्ध न करूंगो मोकूं लज्जा आवै है हे बन्धून के मारनवारे ! हे मूर्ख ! भाजनवारो तूं है तातें तेरे सङ्ग युद्ध न करूंगो १७ । १८ हे राम ! जो तेरे श्रद्धा होय तो धीरज धरिकै युद्ध कर मेरे बाणन करिकै कट्यो जो देह है ताकूं त्यागि कै स्वर्ग कूं जा अथवा संग्रामके बीचमें मोहिं मारिले १९ अब श्रीभगवान् कहें हैं शूरवीर हैं ते बकै नहीं हैं अपने पुरुषार्थकूं दिखावें हैं हे राजन् ! जरासन्ध आसन्नमृत्यु जो तू है ताते तेरो वचन मैं नहीं मानूं हूं २० जैसे पवन बादर धूरि ये सूर्य्य अग्नि कूं घेरि लेइ है तैसे माधव जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनके पासजायकै जरासन्ध बड़ीबलवती जो सेना है तासूं प्यादे रथ ध्वजा घोड़ा रथवान् इनसू घेरतभयो २१ गरुड़ की ताल की ध्वजाके हैं चिह्न जिनमें ऐसे जे राम कृष्णके रथ हैं ते युद्ध में नहीं दीखे तब पुर अटारी महल दरवाजेन पै ठाढ़ी जे स्त्री हैं ते शोकसूं व्याकुल होयकै मोहकरतिभई २२ शत्रुकी

सेना रूप नादरन मेंसूं वारंवार वाणन की भयङ्कर जो वर्षा भई तासूं पीड़ित अपनी सेना कू श्रीकृष्णचन्द्र देखिके देवता असुर जाकी पूजा करैं ऐसो जो धनुषनमें उत्तम शार्ङ्ग धनुष है ताहि टंकारत भये २३ तरकस ते तीर निकासि कै शीघ्र प्रत्यञ्चामें लगाय कै प्रत्यञ्चाकूं खैचिकै तीक्ष्ण वाणन के समूहनसूं रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कू मारिकै जैसे सिलगति लकड़ीको घुमावने सूं चक्र बँधे है तैसे वाणन के पीछे वाण लगावतभये २४ मस्तक जिनके कटिगये ऐसे हजारन हाथी गिरतभये वाणन सू कटी है नारि जिनकी ऐसे घोडा गिरतभये रथनके कटि के घोड़े और ध्वजा गिरत भई और रथवान् और नायक गिरतभये कटी है भुजा जंघा नारि जिनकी ऐसे प्यादे गिरतभये २५ युद्धमें कटे जो प्यादे हाथी घोडा तिनके अंगनमें ते निकसिके असंख्यात रुधिरनकी नदी बहति भई रुधिर की नदीनकों प्रसिद्ध नदीन सों रूपक बांधिकै वर्णन करै है नदीनमें सर्प रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन की भुजा मानों सर्प है नदीन में कछुवा रहे हैं रुधिरकी नदीन में मनुष्यन के शिर कटिकै कछुवाके मानिन्द बहे हैं नदीन में टापू होइ हैं रुधिरकी नदीन में मरे हाथी टापून के मानिन्द परे हैं नदीन में ग्राह होइ हैं रुधिर की नदीन में घोड़ा ग्राह के मानिन्द मरे परे हैं

र्दितं व्यस्फूर्जयच्छार्ङ्गंशगसनोत्तमम् २३ गृह्णन्निषङ्गादथसन्दधच्छरान् विकृष्यमुञ्चञ्छितबाणपूगान् ॥ निघ्नन्रथान्कुञ्जरवाजिपत्तीन् निरन्तरंयद्व दलातचक्रम् २४ निर्भिन्नकुम्भाःकरिणोनिपेतुरनेकशोऽश्वाःशरवृक्णकन्धराः॥ रथाहताश्वध्वजसूतनायकाःपदातयश्छिन्नभुजोरुकन्धराः २५ सञ्छि द्यमानद्विपदेभवाजिनामङ्गप्रसूताःशतशोऽसृगापगाः॥ भुजाऽहयःपूरुषशीर्षकच्छपाहतद्विपद्वीपहयग्रहाकुलाः २६ करोरुमीनानरकेशशैवलाधनुस्त रङ्गायुधगुल्मसङ्कुलाः ॥ अच्छूरिकावर्त्तभयानकामहामणिप्रवेकाभरणाश्मशर्कराः २७ प्रवर्त्तिताभीरुभयावहामृधे मनस्विनांहर्षकरीःपरस्परम्॥ विनि घ्नताऽरीन्मुसलेनदुर्मदान् सङ्कर्षणेनापरिमेयतेजसा २८ बलंतदङ्गार्णवदुर्गभैरवं दुरन्तपारंमगधेन्द्रपालितम्॥ क्षयंप्रणीतंवसुदेवपुत्रयोर्विक्रीडितंतज्जग दीशयोःपरम् २९ स्थित्युद्भवान्तंभुवनत्रयस्ययःसमीहतेऽनन्तगुणःस्वलीलया॥ नतस्यचित्रंपरपक्षनिग्रहस्तथाऽपिमर्त्यानुविधस्यवर्ण्यते ३० जग्राहानि

तिनसूं व्याप्त होय रही हैं २६ नदीन में मत्स्य होइ हैं रुधिर की नदीन में हथेरी पिंडरी मत्स्य के मानिन्द है नदीन में सिवार होइ है रुधिर की नदीन में मनुष्यन के केश सिवार के मानिन्द बहे डोले हैं नदीन में तरंग उठे हैं रुधिरकी नदीन में धनुष् तरंग के मानिन्द हैं नदीन में झारझङ्काड होइ हैं रुधिर की नदीन में शस्त्र है ते झाड़ झङ्काड़ के मानिन्द हैं नदीन में भ्रमर परै है तिन सूं अति भयङ्कर होइ हैं रुधिर की नदीन में ढालैं मानों भयङ्कर भ्रमर फिरे हैं नदीनमें काकर पत्थर होइ हैं रुधिर की नदीन में मणि गहने काकर पत्थरके तुल्य हैं २७ बडोहै तेज जिनकों ऐसे बल- देवजीने संग्राम विषे दुर्मद हैं मद जिनके ऐसे शत्रुनकूं मूसल तें मारि मारिकै रुधिरनकी नदी बहाई कैसी नदी हैं भयभीत मनुष्यनकों भयकी देनवारी और शूरवीरनकों आनन्दकी देनवारी है २८ जरासन्ध पालन करे समुद्रकी तुल्य दुर्गम भयङ्कर न जाकी थाह है और न पारहै ऐसी जो वह सेनाहै ताकूं हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण बलदेव ने मारिमारिकै नाश करि दीनो वसुदेव के पुत्र ज- गत् के ईश्वर जे कृष्ण बलदेव हैं तिनकूं सेनाको नाश करिनो क्रीडामात्रही है कछु पराक्रम नहीं है २९ अनन्त हैं गुण जिनके ऐसे भगवान् श्री कृष्णचन्द्र अपनी लीला करिके तीनों लोकनकूं

उत्पन्न पालन संहार करे हैं तिन श्रीकृष्णकूं शत्रु जरासन्ध की सेनाको मारिवो कछु आश्चर्य नहीं है तथापि मनुष्यन के अनुकरण करें जो श्रीकृष्ण तिनके कर्म आश्चर्य से कहिवे में आवे हैं ३०रथ जाको टूटिगयो सेना जाकी नष्टभई केवल प्राण शेष रहे ऐसे बड़े बलवान् जरासन्धकूं जैसे सिंह सिंहकूं पकरे हैं ता प्रकार बल करिकै बलदेवजी पकरतभये ३१ वरुणके मनुष्यन की रस्सान में बांधिलियो शत्रु जाने मारे ऐसे जरासन्धकूं श्रीकृष्ण छुड़ावतभये क्योंकि जरासन्ध सों और कछु काम करावनो है ३२ शूरवीर जाको सत्कार करे ऐसे जरासन्धकूं त्रिलोकी के नाथ श्रीकृष्ण बलदेव ने जा समय छोडि दियो तब लज्जित होयकै मनमें विचारत भयो कि घरजायकै कहा करूंगो वनमें जायकै तप करूंगो तासमय मार्गमें राजानने मने कर्यो ३३ धर्म के उपदेश करनवारे हैं पद जिनमें ऐसे नीतिके दृष्टिकारक वचनन कूं कहिकै जरासन्धकूं समझायो तुम्हारो कोई दुष्कर्म आयगयो याते तुच्छ यादवन ने तुमकूं जीत लियो अब तुम लाज मतिकरो ३४

रथं रामो जरासन्धं महाबलम् ॥ हतानीकावशिष्टासुं सिंहः सिंहमिवौजसा ३१ बध्यमानं हतारातिं पाशैर्वारुणमानुषैः ॥ वारयामास गोविन्दस्तेन कार्यचिकीर्षया ३२ समुक्तो लोकनाथाभ्यां व्रीडितो वीरसम्मतः ॥ तपसे कृतसङ्कल्पो वारितः पथि राजभिः ३३ वाक्यैः पवित्रार्थपदैर्नयनैः प्राकृतैरपि ॥ स्वकर्मबन्धप्राप्तोयं यदुभिस्ते पराभवः ३४ हतेषु सर्वानीकेषु नृपो बार्हद्रथस्तदा ॥ उपेक्षितो भगवता मगधान्दुर्मना ययौ ३५ मुकुन्दोऽप्यक्षतबलो निस्तीर्णारिबलार्णवः ॥ विकीर्यमाणः कुसुमैस्त्रिदशैरनुमोदितः ३६ माथुरैरुपसङ्गम्य विज्वरैर्मुदितात्मभिः ॥ उपगीयमानविजयः सूतमागधवन्दिभिः ३७ शङ्खदुन्दुभयो नेदुर्भेरीतूर्याण्यनेकशः ॥ वीणावेणुमृदङ्गानि पुरं प्रविशति प्रभौ ३८ सिक्तमार्गां हृष्टजनां पताकाभिरलङ्कृताम् ॥ निर्घुष्टां ब्रह्मघोषेण कौतुकाबद्धतोरणाम् ३९ निचीयमानो नारीभिर्माल्यदध्यक्षताङ्कुरैः ॥ निरीक्ष्यमाणः सस्नेहं प्रीत्युत्कलितलोचनैः ४० आयोधनगतं वित्तमनन्तं वीरभूषणम् ॥ यदुराजाय तत्सर्वमाहृतं प्रादिशत्प्रभुः ४१ एवं सप्तदशकृत्वस्तावत्यक्षौहिणीबलः ॥ युयुधे मागधो राजा यदुभिः कृष्णपालितैः ४२ अक्षिण्वंस्तद्बलं सर्वं वृष्णयः कृष्णतेजसा ॥

जासमय सम्पूर्णसेना नष्टहोयगई श्रीकृष्ण ने छोडिदियो तासमय बृहद्रथ के वंशोत्पन्न जरासन्ध उदासीन होयकै मगधदेशनकूं जातभयो ३५ नहीं नष्टभई है सेना जिनकी तर्यो है शत्रुकी सेनारूप सागर जिनने देवतानने पुष्पनकी वर्षाकरी और प्रशंसापूर्वक स्तुतिकरी तब श्रीकृष्णचन्द्र अपनीमथुरापुरीमें आवतभये गये हैं खेद जिनके प्रसन्नभये हैं मन जिनके ऐसे मथुरावासीन सूं मिलकै सूत मागध वन्दीजन जिनके विजय के वचन गावतभये ३६ । ३७ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जा समय मथुरापुरी में आये तब शङ्ख नगारे अनेकन भेरी तुरही वीणा बांसुरी मृदङ्ग ये सब बाजे बजावत भये ३८ मार्ग में छिरकाउ होय रहे प्रसन्न हैं मनुष्य जामें पताकानसूं शोभायमान वेदध्वनि जामें होयरही श्रीकृष्णचन्द्र के आगमन के आनन्दसूं घर घर वन्दनवार जामें बँधी है ऐसी मथुरापुरीकी शोभा होतिभई ३९ श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर स्त्री पुष्प दधि अक्षत अंकुरनकी वर्षा करतिभई स्नेह ते प्रफुल्लित जो नेत्र हैं तिनसूं श्रीकृष्णकूं देखे हैं ४० शूरवीर राजानकी शोभाको करनवारो रणभूमि में पर्यो जो बहुत धनहै ताकूं लायकै श्रीकृष्णचन्द्र राजा उग्रसेन कूं देतभये ४१ श्रीकृष्णचन्द्र जिनके पालन करनवारे ऐसे यादवनसूं मगधदेश को राजा जरासन्ध सत्रह वार तेईस २

अक्षौहिणी सेनालैंके युद्ध करतभयो ४२ यादव श्रीकृष्णके तेजतें जरासन्धकी सम्पूर्ण सेनाको नाश करतभये हे राजन् परीक्षित्! सम्पूर्ण सेना जब कटिगई शत्रुने छोड़ि दियो तब जरासन्ध अपने देशकूं जातभयो ४३ अठारहीं बार फेर युद्ध होनहारहो ताके बीच में ही नारदजी को भेज्योवीर जो कालयवनहै सो आयके दिखाई देतभयो ४४ संसारमें जाके तुल्य कोई योद्धा नहीं ऐसो कालयवन यादवन कूं अपनी बराबरके मानि कै तीन किरोड़ म्लेच्छन कूं सङ्ग लैंके मथुरापुरीकूं घेरत भयो ४५ बलदेवजीहैं सहाय जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कालयवनकूं आयो देखिके चिन्ता करतभये बड़ो आश्चर्य है यादवन कू दोनों ओरतें बड़ो कष्टआयोहै अब तो यह बड़ो बली कालयवन हमकू घेरे है फेर जरासन्धहू आज अथवा कालिह अथवा परसों पर्यन्त आवैगोही ४६।४७ जो या समय हम याते युद्ध करेंगे और बीच में जरासन्ध आय गयो तो हमारे बन्धून कूं मारेगो और जो न मारेगो तो बलवान् है बांधिके अपने पुर में लेजायगो ४८ यातें मनुष्य जहाँ न जाय

हतेषु स्वेष्वनीकेषु त्यक्तोऽयादरिभिर्नृपः ४३ अष्टादशमसंग्राम आगामिनितदन्तरा ॥ नारदप्रेषितोवीरोयवनःप्रत्यदृश्यत ४४ रुरोधमथुरामेत्यतिसृभिर्म्लेच्छकोटिभिः ॥ नृलोकेचाप्रतिद्वन्द्वोवृष्णीञ्छ्रुत्वात्मसंमितान् ४५ तंदृष्ट्वाचिन्तयत्कृष्णः सङ्कर्षणसहायवान् ॥ अहोयदूनांवृजिनं प्राप्तंह्युभयतोमहत् ४६ यवनोऽयंनिरुन्धेऽस्मानद्यतावन्महाबलः ॥ मागधोप्यद्यवाश्वोवा परश्वोवागमिष्यति ४७आवयोर्युध्यतोरस्ययद्यागन्ताजरासुतः ॥ बन्धून्वधिष्यत्यथवा नेष्यतेस्वपुरंबली ४८ तस्मादद्यविधास्यामोदुर्गंद्विपददुर्गमम् ॥ तत्रज्ञातीन्समाधाय यवनंघातयामहे ४९ इतिसम्मन्त्र्यभगवान्दुर्गंद्वादशयोजनम् ॥ अन्तःसमुद्रेनगरंकृत्स्नाद्भुतमचीकरत् ५० दृश्यतेयत्रहित्वाष्ट्रं विज्ञानंशिल्पनैपुणम् ॥ रथ्याचत्वरवीथीभिर्यथावास्तुविनिर्मितम् ५१ सुरद्रुमलतोद्यानविचित्रोपवनान्वितम् ॥ हेमशृङ्गैर्दिविस्पृग्भिःस्फाटिकाट्टालगोपुरैः ५२ राजतारकुटैःकोष्ठैर्हेमकुम्भैरलङ्कृतैः ॥ रत्नकूटैर्गृहैर्हैमैर्महामरकतस्थलैः ५३ वास्तोष्पतीनाञ्चगृहैर्वल्लभीभिश्चनिर्मितम् ॥ चातुर्वर्ण्यजनाकीर्णं यदुदेवगृहोल्लसत् ५४ सुधर्मांपारिजातञ्च महेन्द्रःप्राहिणोद्धरेः ॥ यत्रचावस्थितोमर्त्यो मर्त्यधर्मैर्न

सकै ऐसो एक किला बनावेंगे तामें अपने ज्ञाति के यादवन कूं राखिकै कालयवन कूं मारेंगे ४९ या विधि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मन में विचार करिकै अड़तालीस कोस को समुद्र के बीच में किला और ता किले के बीच में आश्चर्य्य अद्भुत नगर रचत भये ५० कैसो नगर है कि जा नगर में सम्पूर्ण विश्वकर्मा की कारीगरी दिखाई देय है राजा के निकसिबे के बड़े बड़े बाजार और गली और चौक जामें बने हैं ५१ बीच बीच में हवेली बनिबे की जगह छिकि गई है कल्पवृक्ष और लता हैं जिनमें ऐसे फलन के बाग और चित्र विचित्र फुलवारी के बगीचा लगि रहे हैं स्वर्ण के जिनके शिखर आकाश कूं स्पर्श करें ऐसे ऊंचे स्फटिक मणिन के अटा बनि रहे हैं और ऊँचे ऊँचे किला के द्वार बने हैं घोड़ान के बँधिबे के और अन्न भरिबे के लोहे पीतल के स्थान बने हैं तिनके ऊपर सोने के कलश धरे हैं तिनसूं सुन्दर लगे हैं पद्मराग मणि के जिनके शिखर और महामरकतमणिन की जिनमें भरती ऐसे सुवर्ण के घर जहाँ बने हैं ५२।५३ देवतान के मन्दिर बने हैं और चित्रसारी बनी हैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चार वर्ण जामें बसे हैं यादवन के और देव राजा उग्रसेन के महल जो बने हैं तिनसूं शोभायमान है ५४ जा न-

भोग छूटे १७ और तुम्हारे पुत्र रानी ज्ञातिके भय्या वन्धु दीवान प्रधान मन्त्री राज्यकी प्रजा ये सम्पूर्ण अव कोई नहीं वचे हैं सबको कालने नाश करि दियो १८ काल वलवाननमें वलवान् है भगवान्की शक्तिहै समर्थ अविनाशी है जैसे पशूनको पालन करनवारो ग्वालिया पशून कूं चलावै है ऐसे काल आप क्रीडा करिकै समस्त प्रजाकूं इत उत चलावै है १९ सम्पूर्ण देवता कहे हैं हे राजन् मुचुकुन्द ! तुम्हारो कल्याणहोय मोक्षके विना जो कोई वरचाहो सो मागिलेउ मोक्षको दाता तौ केवल एक अविनाशी विष्णु भगवान् ईश्वरहै २० या प्रकार जव देवताननें कह्यो तब वड़ो है यश जाको ऐसो राजा मुचुकुन्द वहुत दिन देवतानकी जो रक्षा करी तासूं अतिश्रमितहै या कारण शयनके अर्थ निद्रा वर मांगतभयो हे देवताओ ! जो कोई सोवत में मेरी निद्राको भङ्गकरै वह उसी समय भस्म होय जाय या विधिको वर मागो सोई देवताननें दियो तब राजा मुचुकुन्द देवतान ने दीनी जो निद्रा तासूं पर्व्वतकी गुफामें जायकै सोवतभयो २१ । २२ देवतान ने वरदियो कि

र्व्वउज्झिताः १७ सुतामहिष्योभवतोज्ञातयोऽमात्यमन्त्रिणः ॥ प्रजाश्चतुल्यकालीयानाधुनासन्तिकालिताः १८ कालोवलीयान्वलिनांभगवानीश्वरो ऽव्ययः ॥ प्रजाःकालयतेक्रीडन्पशुपालोयथापशून् १९ वरंवृणीष्वभद्रन्तेऋतेकैवल्यमद्यनः ॥ एकएवेश्वरस्तस्य भगवान्विष्णुरव्ययः २० एवमुक्तःस वैदेवानभिवन्द्यमहायशाः ॥ निद्रामेवततोवव्रेराजाश्रमविकर्पितः ॥ यःकश्चिन्ममनिद्राया भङ्गंकुर्यात्सुरोत्तमाः २१ सहिभस्मीभवेदाशुतथोक्तैश्चसुरैस्तदा ॥ अशयिष्टगुहाविष्टोनिद्रयादेवदत्तया २२स्वापंयातंयस्तुमध्ये वोधयेत्त्वामचेतनः ॥ सत्वयादृष्टमात्रस्तु भस्मीभवतुतत्क्षणात् २३यवनेभस्मसान्नीते भगवा न्सात्वतर्षभः ॥ आत्मानन्दर्शयामास मुचुकुन्दायधीमते २४ तमालोक्यघनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ श्रीवत्सवक्षसम्भ्राजत्कौस्तुभेनविराजितम् ॥ २५ चतुर्भुजंरोचमानं वैजयन्त्याचमालया ॥ चारुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् २६ प्रेक्षणीयंनृलोकस्य सानुरागस्मितेक्षणम् ॥ अपीच्यवयसंमत्तमृगे न्द्रोदारविक्रमम् २७ पर्यपृच्छन्महाबुद्धिस्तेजसातस्यधर्षितः ॥ शङ्कितःशनकैराजा दुर्धर्षमिवतेजसा २८ ॥ मुचुकुन्दउवाच ॥ कोभवानिहसम्प्राप्तोवि पिनेगिरिगह्वरे ॥ पद्भ्यांपद्मपलाशाभ्यां विचरस्युरुकण्टके २९ किंस्वित्तेजस्विनांतेजोभगवान्वाविभावसुः ॥ सूर्य्यःसोमोमहेन्द्रोवा लोकपालोपरोऽपि

जावो तुम अचेतनसोवो जो तुम्हें वीचमें जगावैगो वह तुम्हारी दृष्टि परे तें तत्काल जरिकै भस्महोय जायगो २३ जा समय कालयवन जरिकै भस्म होयगयो ता समय यादवनमें श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वुद्धिमान् मुचुकुन्दकूं अपनो दर्शन करावतभये २४ मेघकी तुल्य श्यामवर्ण पीतवस्त्र धारणकरे हृदयमें भृगुलताको जिनके चिह्नहै प्रकाशमान कौस्तुभमणि धारण करे हैं तासों शोभायमान हैं २५ चतुर्भुज वैजयन्ती माला सूं प्रकाशमान हैं सुन्दर प्रसन्न जिनको मुख सो मकराकृति कुण्डलन सूं प्रकाशमान है २६ मनुष्यनकों देखिवे योग्य स्नेह भरी मुसिकानि सहित जिनकी चितवनि नवीन जिनकी अवस्था मतवारे सिंहकी तुल्य जिनको पराक्रमहै २७ ऐसे श्रीकृष्णकूं देखिकै वड़े वुद्धिमान् श्रीकृष्णचन्द्र के तेजसूं पराभव कूं प्राप्तभये ऐसे राजा मुचुकुन्द भय मानिकै हौले हौले पूंछतभये २८ अव राजा मुचुकुन्द पूछेहैं या वनमें पर्व्वत की गुफामें कौन कहासे आयेहौ कमलसे कोमल तुम्हारे चरण यहां वहुत काटेनमें फिरो हौ २९ तेजस्वीन के तुम तेज

स्वरूप हौ अथवा भगवान् अग्निरूप हौ अथवा सूर्य्य हौ किंवा चन्द्रमा हौ अथवा इन्द्रहौ किंवा समस्त लोकनके पालनकर्त्ता हौ अथवा कोई देवता हौ ३० ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में से विष्णु भगवान् हौ यह में जानूंहूं दिया जैसे अपने प्रकाश ते अँधेरे कूं दूरि करे है ऐसे अपने तेज सूं या गुफाको अन्धकार तुमने दूरि करो है ३१ हे मनुष्यन में श्रेष्ठ ! हमारी सुनिवे की इच्छा है हमारे आगे निष्कपट होयकै जो तुम्हें अच्छी लगै तो अपनो जन्म कर्म्म नाम गोत्र बताओ ३२ हे पुरुषन में श्रेष्ठ समर्थ ! हम तो इक्ष्वाकु के वंशमें उत्पन्नभये क्षत्रियन में अधम मान्धाता के पुत्र मुचुकुन्द हैं ३३ बहुत दिनन जो जाग्यो हूं तासूं मोकूं खेदभयो और नींद सूं मेरी इन्द्रिय चलायमान भई हैं या उद्यान वनमें में अपनी इच्छापूर्व्वक सोवे हो अवहीं काहूने आयकै मोकूं उठायो हो ३४ जाने हमें जगायो वह पुरुष अपने पाप ते जरिकै भस्म होयगयो वाके भरे पीछे हे शत्रुनके नाशक ! शोभायमान तुम देखे ३५ नहीं सहिवे में आवै ऐसो जो तुम्हारो तेज है तासूं मेरो तेज

वा ३० मन्येत्वांदेवदेवानां त्रयाणांपुरुषर्षभम् ॥ यद्बाधसेगुहाध्वान्तं प्रदीपःप्रभयायथा ३१ शुश्रूषतामव्यलीकमस्माकंनरपुङ्गव ॥ स्वजन्मकर्मगोत्रंवा कथ्यतांयदिरोचते ३२ वयन्तुपुरुषव्याघ्र ऐक्ष्वाकाःक्षत्रबन्धवः ॥ मुचुकुन्दइतिप्रोक्तोयौवनाश्वात्मजःप्रभो ३३ चिरप्रजागरश्रान्तो निद्रयापहतेन्द्रियः ॥ शयेऽस्मिन्विजनेकामं केनाप्युत्थापितोऽधुना ३४ सोऽपिभस्मीकृतोनूनमात्मीयेनैवपाप्मना ॥ अनन्तरंभवाञ्छ्रीमाँल्लक्षितोऽमित्रशातनः ३५ तेजसा तेविषह्येण भूरिद्रष्टुंनशक्नुमः ॥ हतौजसोमहाभाग माननीयोऽसिदेहिनाम् ३६ एवंसम्भाषितोराज्ञा भगवान्भूतभावनः ॥ प्रत्याहप्रहसन्वाण्यामेघनाद गभीरया ३७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ जन्मकर्म्माभिधानानि सन्तिमेऽङ्गसहस्रशः ॥ नशक्यन्तेऽनुसङ्ख्यातुमनन्तत्वान्मयाऽपिहि ३८ क्वचिद्रजांसिविममे पार्थिवान्युरुजन्मभिः ॥ गुणकर्म्माभिधानानि नमेजन्मानिकर्हिचित् ३९ कालत्रयोपपन्नानि जन्मकर्म्माणिमेनृप ॥ अनुक्रमन्तोनैवान्तं गच्छन्तिपरमर्षयः ४० तथाप्यद्यतनान्यङ्ग शृणुष्वगदतोमम ॥ विज्ञापितोविरिञ्चेनपुराहंधर्म्मगुप्तये ॥ भूमेर्भारायमाणानामसुराणांक्षयायच ४१ अवतीर्णोयदुकुले गृह

दूरि होयगयो बहुत देखिवे की सामर्थ्य नहीं है हे महाभाग ! देहधारीन कूं तुम मानिवे योग्यहो ३६ या प्रकार राजा मुचुकुन्द ने कही तब प्राणीन के पालन करनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हँसिकै मेघ जैसे गरजे है ता प्रकार गर्जिके बोलतभये ३७ अब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं मुचुकुन्द मेरे जन्म कर्म्म नामन को अन्त नहीं है असंख्यात हैं याते में नहीं गिन सकूं हूं ३८ कदाचित् कोई पुरुष बहुत जन्मन में पृथ्वी की धूरिकूं तो गिनि भी लेइ परन्तु मेरे गुण कर्म्म नाम जन्म गिनती में नहीं आवे हैं ३९ हे राजन् मुचुकुन्द ! भूत भविष्यद् वर्त्तमान तीनों काल में विद्यमान ऐसे जे मेरे जन्म कर्म्म हैं तिनकी बड़े बड़े ऋषीश्वर संख्या करे हैं तथापि अन्त नहीं पावे हैं ४० तथापि हे मुचुकुन्द ! अबके जन्म कर्म्म नाम कहूं हूं मोते श्रवण करो धर्म्म की रक्षाकरिवे के कारण और पृथ्वी पै बोझ जिनको भयो ऐसे जे असुरहैं तिनको नाश करिवेके लिये पहिले ब्रह्माने मेरी विनती करीरही ४१ तासूं यादवन के कुल में वसुदेव के घर प्रकट भयो हूं वसुदेवको पुत्र

हूं याते मोहिं वासुदेव कहे हैं ४२ कालनेमि कंस मैंने मारचो साधुन के द्वेषी प्रलम्बसे आदि लैके असुर मैंने मारे हे राजन् मुचुकुन्द! यह जो कालयवन है सो तेरी तीक्ष्णदृष्टि द्वारा दग्ध होयगयो ४३ हे राजन् मुचुकुन्द! पहिले तुमने मेरी बहुत प्रार्थना करीरही और मैं भक्तवत्सल हौं याकारण तोपै अनुग्रह करिवे कूं या गुफा में आयो हूं ४४ हे राजान में ऋषि मुचुकुन्द! मै प्रसन्न हौं तुम मोपै वर मागो मेरी शरणआये पीछे फेर प्राणी कूं शोच नहीं रहे है ४५ अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! यह श्रीकृष्णचन्द्र ने जब कही तब राजा मुचुकुन्द प्रसन्नहोय के वृद्ध गर्गाचार्य्य जो कहिगयेहैं तिनको (अष्टाविंशतिमेयुगे भगवान् वरिष्यतीति) वचन स्मरणकरिकै साक्षात् परिपूर्ण नारायण देव है यह जानिकै प्रणाम करिकै बोलत भयो ४६ अब राजा मुचुकुन्द आठ श्लोकन करिकै स्तुति करैहै हे ईश्वर! तुम्हारी माया करिकै यह मनुष्य मोहित होयगयो है याते मिथ्याभूत जो माया की दृष्टि है तासूं नहीं देखे है याही ते तुम्हें नहीं भजेहै

आनकदुन्दुभेः॥ वदन्तिवासुदेवेतिवसुदेवसुतंहिमाम् ४२ कालनेमिर्हतःकंसः प्रलम्बाद्याश्चसद्द्विषः॥ अयंचयवनोदग्धोराजंस्तेतिग्मचक्षुषा ४३ सोऽहं तवानुग्रहार्थं गुहामेतामुपागतः॥ प्रार्थितःप्रचुरंपूर्वं त्वयाहंभक्तवत्सलः ४४ वरान्वृणीष्वराजर्षे सर्वान्कामान्ददामिते॥ मांप्रपन्नोजनःकश्चिन्नभूयोऽर्हतिशोचितुम् ४५॥ श्रीशुकउवाच॥ इत्युक्तस्तंप्रणम्याह मुचुकुन्दोमुदान्वितः॥ ज्ञात्वानारायणंदेवं गर्गवाक्यमनुस्मरन् ४६॥ मुचुकुन्दउवाच॥ विमोहितोऽयंजनईशमायया त्वदीययात्वांनभजत्यनर्थदृक्॥ सुखायदुःखप्रभवेषुसज्जते गृहेषुयोषित्पुरुषश्चवञ्चितः ४७ लब्ध्वाजनोदुर्लभमत्रमानुषं कथञ्चिदव्यङ्गमयत्नतोऽनघ॥ पादारविन्दंनभजत्यसन्मतिर्गृहान्धकूपेपतितोयथापशुः ४८ ममैषकालोऽजितनिष्फलोगतोराज्यश्रियोन्नद्धमदस्यभूपतेः॥ मर्त्यात्मबुद्धेःसुतदारकोशभूष्वासज्जमानस्यदुरन्तचिन्तया ४९ कलेवरेऽस्मिन्घटकुड्यसन्निभेनिरूढमानोनरदेवइत्यहम्॥ वृतोरथेभाश्वपदात्यनीकपैर्गांपर्यटंस्त्वाऽगणयन्सुदुर्मदः ५० प्रमत्तमुच्चैरितिकृत्यचिन्तया प्रवृद्धलोभंविषयेषुलालसम्॥ त्वमप्रमत्तःसहसाभिपद्यसे क्षुल्लेलिहानोऽहिरिवाखुमन्तकः ५१

कहा स्त्री और कहा पुरुष दोनों ठगि गये हैं सुख के कारण दुःख जिनमें होय ऐसे घरन में अटकि जाय है ४७ कर्म्म भूमि जो यह पृथ्वी है तामें आयकै यह मनुष्य सुन्दर हाथ पाँव आँखि नाक कान ऐसे मनुष्य देह कों पायकै हे अनघ! तुम्हारे चरणारविन्द को भजन नहीं करेहै जैसे हरी घास के निमित्त पशु अन्धकूप में गिरे है ऐसे खोटी जाकी मति ऐसो पुरुष विषयन के निमित्त अन्धकूप रूप जे घर हैं तिनमें परचो रहे है ४८ हे अजित अर्थात् जीतवेमें न आवो! केवल यह प्राणीही भूलि रहे हैं सो बात नहीं मेरी भी यही गति है मोकों इतने दिन निष्फलही बीतगये राज्यकी सम्पत्ति पायके मोकूं बडो गर्व होयगयो है पृथ्वी को पालन करनवारो राजा हौं मनुष्यदेह में मेरी आत्मबुद्धि है अर्थात् देहकों आत्मा माने हौं पुत्र स्त्री खजाने पृथ्वी इनकी बडी चिन्ता में आसक्त होय रह्यो हौं ४९ जैसे कच्चो घड़ा क्षण में फूटिजाय वारू की भीति जैसे क्षण में गिरि परै या प्रकार देह को भी भरोसो नहीं है ता देह में राजा मैं हूं या प्रकार बढ्यो है अभिमान जाके रथ हाथी घोड़ा प्यादे इनकी जो सेना है ताको पालन करैं ऐसे जे मुख्य सेनाध्यक्ष तिनकूं सङ्ग लैकै पृथ्वीपै डोलेहौं कालरूप जो तुमहो तिनको स्मरणही

नहीं बख्यो ऐसो मतवारो रह्यो याते मेरो समय निष्फल गयो ५० आज यह काम करनो कालिह वह काम करनो है या प्रकार की चिन्ता में मतवारो होय रह्यो दश होयँ अब बीस होयँ पचास होयँ हजार होयँ लाख होयँ या प्रकार लोभ बढ़त जाय है विषयन में चाहना जाके ऐसे पुरुषकूं कालरूप तुम शीघ्र मारि लेउ हौ क्षुधा के मारे ओंठन कूं चाटै ऐसो सर्प जैसे मूसे कूं मारि लेय है ५१ मनुष्यन को देव अर्थात् राजा यह नाम जाको ऐसो यह देह सुवर्ण के साज के रथन पै वा हाथीनपै बैठि कै डोले है ऐसो देह दुरत्ययकाल करिकै मरे पीछे कुत्ता स्यार भक्षण करि जायँ तो विष्ठा होय जाय पस्त्रो रहै तो कीरा परि जायँ अग्नि से जराय देउ तो भस्म होय जाय है यह तीन नामन कूं धारण करे है ५२ सम्पूर्ण दिशान कूं जीत कै युद्ध करिवे लायक कोई शत्रु जाकौ न रह्यो चक्रवर्ती राजा सिंहासन पै बैठ्यो बराबर के राजा आय के प्रणाम जाकूं करैं ऐसो भी चक्रवर्ती राजा है तथापि मैथुन को है सुख जिन में ऐसी स्त्रीन के घर में जैसे लकड़ी के बल बन्दर नाचे ऐसे नाच्यो करे है ५३ सब विषयन के भोगकूं त्यागि के तप में है बड़ी श्रद्धा जाके अर्थात् पृथ्वी में सोवै ब्रह्मचर्य्य सूं रहै व्रतन कूं करै विषयनके भोगवेकूं दान पुण्य करै है और विचारे है कि या

पुरारथैर्हेमपरिष्कृतैश्चरन् मतङ्गजैर्वानरदेवसंज्ञितः ॥ सएवकालेनदुरत्ययेनतेकलेवरोविट्कृमिभस्मसंज्ञितः ५२ निर्जित्यदिक्चक्रमभूतविग्रहोवरासनस्थःसमराजवन्दितः ॥ गृहेषुमैथुन्यसुखेषुयोषितांक्रीडामृगःपूरुषईशनीयते ५३ करोतिकर्म्माणितपःसुनिष्ठितोनिवृत्तभोगस्तदपेक्षयाददत् ॥ पुनश्चभूयेयमहंस्वराडिति प्रवृद्धतर्षोनसुखायकल्पते ५४ भवापवर्गोभ्रमतोयदाभवेज्जनस्यतर्ह्यच्युतसत्समागमः ॥ सत्सङ्गमोयर्हितदैवसद्गतौपरावरेशेत्वयिजायतेमतिः ५५ मन्येममानुग्रहईशतेकृतोराज्यानुबन्धापगमोयदृच्छया ॥ यःप्रार्थ्यतेसाधुभिरेकचर्य्ययावनंविविक्षद्भिरखण्डभूमिपैः ५६ नकामयेऽन्यंतवपादसेवनादकिञ्चनप्रार्थ्यतमाद्वरंविभो ॥ आराध्यकस्त्वांह्यपवर्गदंहरेवृणीतआर्य्योवरमात्मबन्धनम् ५७ तस्माद्विसृज्याशिषईशसर्व्वतोरजस्तमःसत्त्वगुणानुबन्धनाः ॥ निरञ्जनंनिर्गुणमद्वयंपरंत्वांज्ञप्तिमात्रंपुरुषंव्रजाम्यहम् ५८ चिरमिहवृजिनार्त्तस्तप्यमानोऽनुतापैरवितृषषडमित्रोऽलब्धशान्तिःकथञ्चित् ॥ श

जन्म में तप करूंगो तब दूसरे जन्म में जाय कै इन्द्र होऊँगो या प्रकार तृष्णा जाके बढ़ी है वा पुरुषकूं कभूं सुख नहीं होय है ५४ ऐसे आठ श्लोकन करिकै ईश्वर तें बहिर्मुखन कूं संसार कहिकै अब संसार की निवृत्ति कहे हैं हे अच्युत ! या संसार में जन्म मरण कूं प्राप्त भयो जो जीव है ताकूं जा समय तुम्हारे अनुग्रह करिकै संसार को अन्त होइ तासमय तुम्हारे भक्तन को सङ्ग होइ तासमय सब सङ्ग कूं दूरि करि कार्य्य कारण के नियन्ता जो तुम ईश्वर हौ तिनमें भक्ति होय है ता भक्तितें संसार छूटै है ५५ हे ईश्वर ! मेरो अनायासपूर्वक राज्यबन्धन छूटिगयो यह तुमने मेरे ऊपर बड़ो अनुग्रह कस्यो यह मैं मानूं हूं राज्य के छूटिवे के लिये अकेलो होयकै वनमें जाइवेकी इच्छा करैं ऐसे जे चक्रवर्त्ती राजा हैं तेभी प्रार्थना करे हैं कि हमारो कोई तरह राज्य छूटि जाइ तौ अकेले होयके वनमें जाय बैठें ५६ हे समर्थ ! निष्किञ्चन साधु जाकी प्रार्थना करैं ऐसो तुम्हारे चरणारविन्दको सेवन है ताते और काहू वरकी चाहना नहीं करें हैं हे हरे ! मोक्षके देनवारे जो तुम हौ तिनको आराधन करिकै ऐसो कौन विवेकी पुरुष है जो आत्माको बन्धनरूप वर है ताकूं मांगेगो ५७ हे ईश अर्थात् सबके प्रेरणा करनवारे ! ता कारण रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण इनको बन्धन और ऐश्वर्य्य तथा शत्रुको मरण

और-धर्मादिक को करिबो ये हैं स्वरूप जिनके ऐसे जे मनोरथ हैं तिन सबकूं त्यागिकै ज्ञानघन अज्ञान जो उपाधि तासू न्यारे ऐसे निर्गुण अद्वैत पुरुष तुमहौ तिनकी मैं शरण आयो हूं ५८ हे ईश ! या संसार में बहुत दिनन ते दुःखन करिके पीड़ित हू नहीं गई है तृष्णा जिनकी ऐसी जे छःइन्द्रिय शत्रु जाके नहीं पाई है शान्ति जाने हे शरण के देनवारे! हे परमात्मन्! हे ईश्वर! ज्यों त्यों करिकै शोक जामें नहीं भयकों दूर करनवारो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको शरण लियो है मेरी रक्षाकरो ५९ अब श्रीभगवान् कहे हैं हे चक्रवर्त्ती राजन्! वरदेने कहिकै तुमकूं लोभ उत्पन्न कियो तथापि कामना करिकै तुम्हारी मति चलायमान न भई ६० मैने वरदेने कहिकै लोभ उत्पन्न कियो सो तोकूं सावधान कर्यो यह तू जानि मेरे जे एकान्ती भक्त है तिनकूं कदाचित् वर आयके प्राप्तहोय तथापि उनकी बुद्धि चलायमान नहीं होय है ६१ प्राणायामादिकन करिके मनकों अवरोध करै वे मेरे भक्त नहीं ऐसे जे पुरुषहैं तिनकी नहीं गई है वासना जामें ऐसो मन है सो हे राजन् मुचुकुन्द !

रणदसमुपेतस्त्वत्पदाब्जंपरात्मन्नभयमृतमशोकंपाहिमापन्नमीश ५९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सार्वभौममहाराजमतिस्तेविमलोर्जिता ॥ वरैःप्रलोभितस्यापि नकामैर्विहतायतः ६० प्रलोभितोवरैर्यत्त्वमप्रमादायविद्धितत् ॥ नधीर्मय्येकभक्तानामाशीर्भिर्भिद्यतेक्वचित् ६१ युञ्जानानामभक्तानां प्राणायामादिभिर्मनः ॥ अक्षीणवासनंराजन्दृश्यतेपुनरुत्थितम् ६२ विचरस्वमहींकामं मय्यावेशितमानसः ॥ अस्त्वेवंनित्यदातुभ्यं भक्तिर्मय्यनपायिनी ६३ क्षात्रधर्मस्थितोजन्तून्न्यवधीर्मृगयादिभिः ॥ समाहितस्तत्तपसा जह्यघंमदुपाश्रितः ६४ जन्मन्यनन्तरेराजन् सर्वभूतसुहृत्तमः ॥ भूत्वाद्विजवरस्त्वंवै मामुपैष्यसिकेवलम् ६५ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इत्थंसोऽनुगृहीतोङ्गकृष्णेनेक्ष्वाकुनन्दनः ॥ तंपरिक्रम्यसंनम्यनिश्चक्रामगुहामुखात् १ सवीक्ष्यक्षुल्लकान्मर्त्यान् पशून्वीरुद्वनस्पतीन् ॥ मत्वाकलियुगंप्राप्तंजगामदिशमुत्तराम् २ तपःश्रद्धायुतोधीरोनिःसङ्गोमुक्तसंशयः ॥ समाधायमनःकृष्णे प्राविशद्गन्धमादनम् ३ बदर्य्याश्रममासा

फेरि विषयन में जातो दीसे है ६२ हे राजन् मुचुकुन्द ! मेरे विषे मनकूं लगाइकै जहां इच्छा आवै तहां विचरो तुम्हारी नित्य दृढभक्ति मो में होउ ६३ क्षात्रधर्म में रहिके शिकार खेलिके जो तैंने जीवनकी हिंसाकरी सो अब सावधान होयकै मेरो आश्रय लैके तप करिके वा पापकूं दूरकर ६४ हे राजन् मुचुकुन्द ! दूसरे जन्म में सब प्राणीन के हितके करनवारे ब्राह्मण होयके शुद्धरूप जो मैं हूं ताकूं पावोगे ६५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमुचुकुन्दस्तुतिर्नामैकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(द्विपञ्चाशत्तमेयवनभयादिवगतःपुरीम् ॥ अन्वमोदतसन्देशंरुक्मिण्याद्विजवर्णितम् १ बावनवें अध्याय में भयकी नाई शीघ्र चलकर कृष्णजी पुरीको प्राप्त होगये और ब्राह्मणके वर्णित रुक्मिणीजीके सन्देशको सुनकर प्रसन्न होतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! याप्रकार श्रीकृष्ण ने अनुग्रह जापै कर्यो ऐसो इक्ष्वाकुनन्दन मुचुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र की परिक्रमा दैकै नमस्कार करिके गुफामें तें बाहर निकसतभयो १ राजा मुचुकुन्द मनुष्यन कूं पशूनकू लतान कूं और छोटे २ वृक्षनकूं देखिकै, कलियुग आयगयो यह जानिके उत्तरदिशा कूं जातभये २ तप

रेवती है ताय बलदेवजीकूं देतभयो यह प्रथम कहिआये हैं १५ हे कौरवनके कुलकूं आनन्दके देनवारे राजन् परीक्षित् ! भगवान् गोविन्द हैं सो भी स्वयंवर में लक्ष्मी को अंश विदर्भदेश में जन्मी ऐसी जो भीष्मक की कन्या है ताय व्याहतभये १६ शाल्व तें आदिलैके शिशुपाल की ओर के राजानकूं जल्दी जीतिके सब लोकनके देखते जैसे देवतानकूं जीतिके गरुड अमृत कूं लायो है या प्रकार लावतभये १७ अब राजा परीक्षित् कहे हैं सुन्दर जाको मुख ऐसी भीष्मक राजाकी पुत्री रुक्मिणी कूं युद्धमें तें हरिकै श्रीकृष्णचन्द्र व्याहतभये यह हमने तुम्हारेही मुखतें सुनी है हे शुकदेवजी ! जरासन्ध शाल्व इत्यादिक राजानकूं जीतिकै जैसे रुक्मिणी कूं लावतभये बड़ो है तेज जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को चरित्र श्रवणकरचो चाहों हूं हे ब्रह्मन् ! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा पवित्र हैं मनोहर हैं लोकनके पापनकूं दूर करे हैं नित्य नवीन हैं सुनिवे के सार कूं जाने ऐसो कौन पुरुष है जो ऐसी कथानकूं सुनिकै तृप्त होय १८ । १९ । २० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे

श्रियोमात्रांस्वयंवरे१६ प्रमथ्यतरसाराज्ञःशाल्वादींश्चैद्यपक्षगान्॥ पश्यतांसर्वलोकानां तार्क्ष्यपुत्रःसुधामिव १७ ॥ राजोवाच ॥ भगवान्भीष्मकसुतां रुक्मिणींरुचिराननाम्॥ राक्षसेनविधानेनउपयेमइतिश्रुतम् १८ भगवञ्छ्रोतुमिच्छामिकृष्णस्यामिततेजसः॥ यथामागधशाल्वादीञ्जित्वाकन्यामुपाहरत् १६ ब्रह्मन्कृष्णकथाःपुण्यामाध्वीर्लोकमलापहाः ॥ कोनुतृप्येतशृण्वानःश्रुतज्ञोनित्यनूतनाः २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ राजासीद्भीष्मकोनाम विदर्भाधिपतिर्महान् ॥ तस्यपञ्चाभवन्पुत्राः कन्यैकाचवरानना २१ रुक्म्यग्रजोरुक्मरथोरुक्मबाहुरनन्तरः॥ रुक्मकेशोरुक्ममाली रुक्मिण्येषांस्वसासती २२ सोपश्रुत्यमुकुन्दस्य रूपवीर्यगुणश्रियः ॥ गृहागतैर्गीयमानास्तंमेनेसदृशंपतिम् २३ तांबुद्धिलक्षणौदार्यरूपशीलगुणाश्रयाम् ॥ कृष्णश्चसदृशीं भार्यां समुद्वोढुंमनोदधे २४ बन्धूनामिच्छतांदातुं कृष्णायभगिनींनृप ॥ ततोनिवार्यकृष्णद्विड्रुक्मीचैद्यममन्यत २५ तदवेत्यासितापाङ्गीवैदर्भीदुर्मनाभृशम् ॥ विचिन्त्याप्तंद्विजंकञ्चित् कृष्णायप्राहिणोद्द्रुतम् २६ द्वारकांससमभ्येत्य प्रतीहारैःप्रवेशितः ॥ अपश्यदाद्यंपुरुषमासीनंकाञ्चनासने २७

राजन् परीक्षित्! विदर्भदेशको पालन करनवारो भीष्मक जाकों नाम ऐसो बड़ो राजा होतभयो ताभीष्मक राजा के पांच पुत्र होतभये और सुन्दर है मुख जाको ऐसी एक कन्या होतिभई २१ तिन में बड़ो रुक्मी तासूं छोटो रुक्मरथ तासूं छोटो रुक्मबाहु तासूं छोटो रुक्मकेश तासूं छोटो रुक्ममाली ये पांच पुत्र होतभये इन पांचोंनकी बहिनि पतिव्रता रुक्मिणी होति भई २२ घरमें आये जे नारदादिक मुनि हैं तिनने गाये ऐसे जे मुक्तिके देनवारे श्रीकृष्ण तिनको सुन्दर रूप पराक्रम गुणशोभा इनकूं श्रवण करिके रुक्मिणी अपनी बराबरिको मानति भई २३ यहां सुन्दर बुद्धि लक्षण उदारता रूप शील और गुणयुक्त रुक्मिणीकूं श्रवण करिके श्रीकृष्णचन्द्र अपनी बराबरीकी स्त्री व्याहिवेकूं मनमें करतभये २४ माता पिता और भय्या बन्धुनकी सबकी यह इच्छाही कि रुक्मिणी श्रीकृष्णचन्द्रकूं देयँगे परन्तु श्रीकृष्णको शत्रु जो रुक्मी है सो हम अपनी बहिनि कृष्णकूं न व्याहैंगे ऐसे निषेध करिके या लायकवर शिशुपाल है या प्रकार मानतभयो २५ सुन्दर हैं नील कटाक्ष जाके ऐसी विदर्भदेशके राजाकी पुत्री रुक्मिणी श्रीकृष्णके व्याहिवेकूं मेरो भय्या मनेकरे है यह जानिकै बहुत उदास मन जाको ऐसी रुक्मिणी कोई एक अपनो स्नेही ब्राह्मण है ताय वि-

करिवेमें श्रद्धा जिनकी भई सङ्ग छोड़ि दियोहै सन्देह जिनके मिटिगये हैं ऐसे राजा मुचुकुन्द श्रीकृष्णमें मन लगायके गन्धमादन पर्वतपै जातभये ३ नरनारायण को स्थान जो बदरिकाश्रम है तामें जायके सम्पूर्ण द्वंद्व अर्थात् सुख दुःख भूख प्यास शीत उष्ण इनकूं सहिकै शान्त जिनको स्वरूप ऐसो जो मुचुकुन्द है सो तप करिके हरिको आराधन करतभयो ४ म्लेच्छ जाकूं घेरिरहे ऐसी जो मथुरापुरी है तामें भगवान् श्रीकृष्ण फेरि आयके म्लेच्छनकी सेना मारिके और उनको धनहै ताय लैके द्वारकामें पहुँचावतभये ५ श्रीकृष्णचन्द्रके कहेतें मनुष्य बैलनके ऊपर धनकूं लादिकै लैचले तब जरासन्ध तेईस अक्षौहिणी सेनाकूं सङ्गलैके आवतभयो ६ हे राजन् परीक्षित्! माधव जे श्रीकृष्ण बलदेवहैं ते शत्रुकी सेनाकूं देखिकै मनुष्यलीलामें आयकै शीघ्र भाजतभये ७ नहींहै भय जिनके ऐसे कृष्ण बलदेव बहुत जो धनहै ताकूं मार्गमेंही त्यागिके बहुत भयभीतकी तुल्य कमलसे कोमल चरण हैं तिनहीसूं बहुत दूरि भाजत भये ८ ईश्वर जो श्रीकृष्ण बलदेवहैं तिन

द्यनरनारायणालयम् ॥ सर्व्वद्वन्द्वसहःशान्तस्तपसाराधयद्धरिम् ४ भगवान्पुनराव्रज्य पुरींयवनवेष्टिताम् ॥ हत्वाम्लेच्छबलंनिन्ये तदीयंद्वारकांधनम् ५ नीयमानेधनेगोभिर्नृभिश्चाच्युतचोदितैः ॥ आजगामजरासन्धस्त्रयोविंशत्यनीकपः ६ विलोक्यवेगरभसं रिपुसैन्यस्यमाधवौ ॥ मनुष्यचेष्टामापन्नौ राजन्दुद्रुवतुर्द्रुतम् ७ विहायवित्तंप्रचुरमभीतौभीरुभीतवत् ॥ पद्भ्यांपद्मपलाशाभ्यां चेलतुर्बहुयोजनम् ८ पलायमानौतौदृष्ट्वा मागधःप्रहसन्बली ॥ अन्वधावद्रथानीकैरीशयोरप्रमाणवित् ९ प्रद्रुत्यदूरंसंश्रान्तौतुङ्गमारुहतांगिरिम् ॥ प्रवर्षणाख्यंभगवान्नित्यदायत्रवर्षति १० गिरौनिलीनावाज्ञाय नाधिगम्यपदंनृप ॥ ददाहगिरिमेधोभिः समन्तादग्निमुत्सृजन् ११ ततउत्पत्यतरसादह्यमानतटादुभौ ॥ दशैकयोजनोत्तुङ्गान्निपेततुरधोभुवि १२ अलक्ष्यमाणौरिपुणा सानुगेनयदूत्तमौ ॥ स्वपुरंपुनरायातौ समुद्रपरिखांनृप १३ सोऽपिदग्धावितिमृषा मन्वानोबलकेशवौ ॥ बलमाकृष्यसुमहन्मगधान्मागधोययौ १४ आनर्त्ताधिपतिःश्रीमान् रैवतो रेवतींसुताम् ॥ ब्रह्मणाचोदितःप्रादाद्बलायेतिपुरोदितम् १५ भगवानपिगोविन्दउपयेमेकुरूद्वह ॥ वैदर्भीभीष्मकसुतां

के बलकूं नहीं जानिकै बली जो मगध देशको राजा जरासन्धहै सो कृष्ण बलदेवकूं भाजे देखिकै हँसिकै बहुतसे रथनकूं सङ्गलैके पीछे दौरत भयो ९ बहुत दूर जो भागे तातें श्रम जिनकूं भयो ऐसे कृष्ण बलदेव हैं ते प्रवर्षण नामक जो ऊंचो पर्वतहै तापै चढ़तभये कैसो पर्वतहै इन्द्र जापै नित्य वर्षा करे है १० हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण बलदेव कूं पर्वतमें छिपे जानिके ता पर्वत में ढूंढ़िकै तिनके छिपिवेको स्थान न मिल्यो तब चारयो ओरतें आगि लगायकै जरावतभयो ११ जरो है शिखर जाको ऐसो जो चवालीस कोस ऊंचो पर्वतहै तापै तें कृष्ण बलदेव दोनों भय्या उछरिकै जरासन्धकी फौजकूं उलांघिकै नीचे पृथ्वीमें कूदतभये १२ हे राजन् परीक्षित्! टहलुआन सहित वैरी जो जरासन्ध है ताने न देखे ऐसे यादवन में उत्तम जे कृष्ण बलदेव हैं ते समुद्र जाकी खाई ऐसी द्वारकापुरी में आवतभये १३ मगधदेश को राजा जरासन्ध है सो भी कृष्ण बलदेव कूं मिथ्या जरिगये मानिकै बड़ी फौजकूं सङ्गलैके मगधदेशन कूं जातभयो १४ अब श्रीकृष्णके विवाह कहिबे के लिये प्रथम बलदेवजीके विवाह नवमस्कन्धमें कहिआये हैं तथापि फेरएक श्लोकमें कहे हैं शोभायमान आनर्त्तदेशको राजा रैवतहै सो ब्रह्मा के कहेते अपनी पुत्री

श्रवण करे जे तुम्हारे गुण ते कानम की रस्ता हृदय में जाय कै अंग के ताप कूं हरें ऐसे तुम्हारे गुणन कूं सुनिकै नेत्रवारे पुरुषन के नेत्रन कूं सुनिके लाज त्यागि कै मेरो चित्त तुम में लग्यो
है ३७ हे मुकुन्द अर्थात् मुक्ति के देनवारे ! मनुष्य न में श्रेष्ठ गुणवान् जो तुमहौ तिनमें वड़ी है वुद्धि जाकी ऐसी कौन कुल की कन्या कुल स्वभाव रूप विद्या अवस्था द्रव्य प्रभाव इन करिकै
कोई उपमा जिनकी देवे में न आवै मनुष्यलोक के मनकू आनन्द के देनवारे जो तुमहौ तिमकौं विवाह समय पति न करै ३८ हे समर्थ ! ता कारण मैंने तुम पति करे हो तुम कूं अपनो देह
अर्प्पण कर्‍यो है मोकूं अपनी स्त्री करो हे कमललोचन ! शूरवीर जो तुम तिनको भाग जो मैं हूं ताय शिशुपाल शीघ्र आयके न छीवे जैसे सिंह के भाग कूं स्यार नहीं छी सके ३९ वावली कुआं
तलाउ वाग यज्ञ दान नियम व्रत देवता ब्राह्मण गुरु इनकी पूजा करिकै ईश्वर भगवान् प्रसन्न करे हैं तौ श्रीकृष्णचन्द्र हाथ पकरि कै ले जांवो दमघोष को पुत्र शिशुपाल तें आदि लैके राजा न
आवैं ४० हे अजित अर्थात् जीतिवे में न आवो ! काल्हि विवाह होयगो तामें तुम छिपिकै विदर्भ देश में आवो और अकेले मति आवो पीछे तें सेना कू लगाये आवोगे शिशुपाल और मगधदेश

सिंहनरलोकमनोऽभिरामम् ३८ तन्मेभवान्खलुवृतःपतिरङ्गजायामात्मार्पितश्चभवतोत्रविभोविधेहि ॥ मावीरभागमभिमर्शतुचैद्यआराद्गोमायुवन्मृगपतेर्ब
लिमम्बुजाक्ष ३९ पूर्त्तेष्टदत्तनियमव्रतदेवविप्रगुर्वर्चनादिभिरलंभगवान्परेशः ॥ आराधितोयदिगदाग्रजएत्यपाणिंगृह्णातुमेनदमघोषसुतादयोऽन्ये ४०
श्वोभाविनित्वमजितोद्वहनेविदर्भान्गुप्तःसमेत्यपृतनापतिभिःपरीतः ॥ निर्मथ्यचैद्यमगधेन्द्रबलंप्रसह्य मांराक्षसेनविधिनोद्वहवीर्यशुल्काम् ४१ अन्तः
पुरान्तरचरीमनिहत्यबन्धूंस्त्वामुद्वहेकथमितिप्रवदाम्युपायम् ॥ पूर्वेद्युरस्तिमहतीकुलदेवयात्रा यस्यांबहिर्नववधूर्गिरिजामुपेयात् ४२ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजः
स्नपनंमहान्तोवाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोपहत्यै ॥ यर्ह्यम्बुजाक्षनलभेयभवत्प्रसादं जह्यामसून्व्रतकृशाञ्छतजन्मभिःस्यात् ४३ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ इत्येते
गुह्यसन्देशायदुदेवमयाहृताः ॥ विमृश्यकर्त्तुंयच्चात्र क्रियतांतदनन्तरम् ४४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेरुक्मिण्युद्वाहेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

को राजा जरासन्ध इनकी जो फौजहै तायजीतिकै पराक्रमही है मोल जाको ऐसी जो तुम्हारे अधीन मैं हूं ताय यहाँ तें हरि के अन्त विवाह करोगे ४१ कदाचित् कहो कि तुम तो रुक्मिणी
पुर के भीतर हो तुम्हारे भय्या वन्धुन के मारे विना कैसे व्याहूं ऐसी जो तुम मनमें शङ्का करौ तो उपाय वताऊं हूं विवाह सें पूर्व्व दिन वडी कुलदेवी अम्बिका की यात्रा होयहै ता यात्रा क-
रिबे के लिये और देवी की पूजा करिवे कों नववधू कन्या वाहिर जाय हैं तहाँ ते मेरो लेजायवो सुगम है जैसे पार्व्वती कूं शिवजी लेगये ४२ जिनके चरणारविन्द की रज सूं स्नान करिवे कूं
वड़े २ साधु महान् अपने अज्ञान दूरि करिवे के लिये इच्छा करे हैं हे कमलदललोचन ! जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्न न होउ तो व्रत करिवे तें दुर्व्वल जो मेरे प्राण हैं तिनें त्यागि देऊंगी कदाचित्
कहो कि प्राण त्यागिवे ते कहा होयगो तहाँ रुक्मिणी कहे है वारंवार प्राण त्याग करूंगी तो सौ जन्म में तौ प्रसन्न होउगे ४३ अव ब्राह्मण कहे है हे यादवन के देव ! गुप्त संदेशो लैके मैं
आयो हू जो यहाँ करिबे योग्य कार्य्य होय ताय विचारि कै शीघ्र करो विलम्ब मति करो ४४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिण्युद्वाहेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

चारिकै श्री.कृष्णके लिवायवे कूं भेजतिभई २६ वह ब्राह्मण जा समय द्वारकापुरीमें प्राप्तभयो तब द्वारपालनने भीतर पहुँचायो तहां सुवर्ण के सिंहासनपै बैठे जो आदिपुरुष नारायण हैं तिनको दर्शन करतभयो २७ ब्राह्मणहै देवता जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ताब्राह्मणकूं देखिके आप सिंहासनपैते उतरिके ब्राह्मणको सिंहासनपर बैठायके जैसे अपनी देवता पूजा करें हैं ऐसे वाको पूजनकरत भये २८ भोजनकरयो श्रम जिनको गयो ऐसे ब्राह्मणके पास साधुनकी गतिरूप जो श्रीकृष्णहैं सो आयकै अपने हाथते उनके चरणारविन्दकूं सहरावत निर्विग्रह होयकै पूंछतभये २९ हे द्विजनमें श्रेष्ठ! ब्राह्मण वृद्धसम्मत जो तुम्हारो धर्म्म है सो वहुत कष्टतें तौ नहीं चले है सर्व्वदा तुम्हारे मनमें सन्तोष रहे है ३० जा काहू प्रकारकरिके ब्राह्मण सन्तुष्ट होयके वर्ते अर्थात् जो कछु वस्तु आयके प्राप्तहोइ वाहीमें सन्तोष करिकै रहै, अपने धर्म्म सूं च्युत न होय तो वही उसके सम्पूर्ण फलको देनवारोहै ३१ और जाके मनमें सन्तोप नहीं है वह ब्राह्मण इन्द्रहोयजाउ तथापि लोकन ते लोकनमें डोल्यो करे

दृष्ट्वाब्रह्मण्यदेवस्तमवरुह्यनिजासनात् ॥ उपवेश्यार्हयाञ्चक्रे यथात्मानंदिवौकसः २८ तंभुक्तवन्तंविश्रान्तमुपगम्यसताङ्गतिः ॥ पाणिनाऽभिमृशन्पादावव्यग्रस्तमपृच्छत २९ कच्चिद्द्विजवरश्रेष्ठ धर्मस्तेवृद्धसंमतः ॥ वर्त्ततेनातिकृच्छ्रेणसन्तुष्टमनसःसदा ३० सन्तुष्टोयर्हिवर्त्तेत ब्राह्मणोयेनकेनचित् ॥ अहीयमानःस्वाद्धर्मात्सह्यस्याखिलकामधुक् ३१ असन्तुष्टोऽसकृल्लोकानाप्नोत्यपिसुरेश्वरः ॥ अकिञ्चनोऽपिसन्तुष्टः शेतेसर्व्वाङ्गविज्वरः ३२ विप्रान्स्वलाभसन्तुष्टान् साधून्भूतसुहृत्तमान् ॥ निरहङ्कारिणःशान्तान्नमस्येशिरसाऽसकृत् ३३ कच्चिद्वःकुशलंब्रह्मन्राजतोयस्यहिप्रजाः ॥ सुखंवसन्तिविषयेपाल्यमानाःसमेप्रियः ३४ यतस्त्वमागतोदुर्गंनिस्तीर्य्येहयदिच्छया ॥ सर्व्वंनोब्रूह्यगुह्यञ्चेत्किंकार्य्यंकरवामते ३५ एवंसंपृष्टसंप्रश्नोब्राह्मणःपरमेष्ठिना ॥ लीलागृहीतदेहेनतस्मैसर्व्वमवर्णयत् ३६ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ श्रुत्वागुणान्भुवनसुन्दरशृण्वतांतेनिर्विश्यकर्णविवरैर्हरतोऽङ्गतापम्॥रूपंदृशांदृशिमतामखिलार्थलाभंत्वय्यच्युताविशतिचित्तमपत्रपंमे ३७ कात्वामुकुन्दमहतीकुलशीलरूपविद्यावयोद्रविणधामभिरात्मतुल्यम् ॥ धीरापतिंकुलवतीनवृणीतकन्याकालेनृ

है तृष्णा के मारे एक स्थानमें स्थिर होयके नहीं रहे है और जाके पास कुछभी नहीं है और मनमें सन्तोषहै वह ब्राह्मण सब अङ्गन के खेदनकूं दूरि करिके आनन्दपूर्व्वक सोवेहै ३२ आपही तें विना मागे प्राप्तभई जो वस्तु है ताहीमें सन्तोषहै जिनके और सब प्राणीन ते हितकूं करें विद्यावान् कुलीन अहङ्काररहित शान्त जिनके स्वभाव ऐसे जे साधु ब्राह्मणहैं तिनें शिरनवायकै मैं प्रणाम करूंहूं ३३ हे ब्राह्मण! जाकी तुम प्रजा हो ता राजा तें तुमकूं कुशल है जा राजा के देश में ब्राह्मणन को पालन होइ वह राजा मोकूं प्यारो लगे है ३४ समुद्र को उल्लंघन करिकै जिस कार्य्य के करिवे की इच्छा करिकै जा स्थान तें तुम या किला में प्राप्त भये हौ जो कथनयोग्य बात होय तो हमारे आगे सम्पूर्ण कहौ हम तुम्हारो कहा कार्य्य करें ३५ श्रेष्ठ आसन पै विराजमान होय लीला करिके धारण करो है मनुष्य देह जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने पूंछी है पूछिवे लायक बात जासूं ऐसो ब्राह्मण श्रीकृष्ण तें सब वर्णन करत भयो ३६ रुक्मिणी ने आप एकान्त में लिखिकै दीनी जो पत्री है ताय खोलिकै प्रेमके हैं चिह्न जामें ऐसी पत्री ब्राह्मण श्रीकृष्ण कूं दिखायकै उनकी आज्ञा ते पत्री कूं बांचे हैं रुक्मिणी कहे हे हे त्रिलोकी में सुन्दर! हे अच्युत अर्थात् अखण्डरूप!

(त्रिपञ्चाशत्तमेभगवान्विदर्भानगतोहितः ॥ रुक्मिणीमहरत्कृष्णोमिपताद्विपतावलात् १ तिरपनवें अध्यायमें अद्भुत चेष्टायुक्त कृष्णजी विदर्भदेशमें जाकर शत्रुओंके देखतेही ज़बर्दस्ती सों रुक्मिणीजीको हर लेतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! यदुकुल कूं आनन्द के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी को संदेशो सुनिकै ब्राह्मण को अपने हाथ में हाथ पकरिकै हँसकर बोलत भये १ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं जैसे रुक्मिणी को मेरे विषे चित्त लग्यो है ऐसेही रुक्मिणी में मेरोहू चित्त लग्यो है चिन्ता के मारे रात्रि में नींद नहीं आवे है मैं जानूं हौं रुक्मी ने द्वेष करिकै मेरे व्याह कूं मने करदियो है २ दुष्टराजान कूं लड़ाई मों जीति कै मो विना और कू जाने नहीं दोषरहित हैं अङ्ग जाके ऐसी रुक्मिणी कूं जैसे काष्ठ मन्थन करिकै अग्नि निकासि लेहैं हैं तैसे ले आऊंगो श्रीशुकदेवजी बोले मुरदैत्य के मारनवारे जो भगवान् हैं सो रुक्मिणी के विवाह को नक्षत्र जानि कै हे रथवान् ! रथ कूं शीघ्र

श्रीशुकउवाच ॥ वैदर्भ्याःसतुसन्देशं निशम्ययदुनन्दनः ॥ प्रगृह्यपाणिनापाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ तथाहमपितच्चित्तोनिद्राञ्चनलभेनिशि ॥ वेदाहंरुक्मिणोद्वेषान्ममोद्वाहोनिवारितः २ तामानयिष्यउन्मथ्य राजन्यापसदान्मृधे ॥ मत्परामनवद्याङ्गीमेधसोऽग्निशिखामिव ३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ उद्वाहर्क्षञ्चविज्ञाय रुक्मिण्यामधुसूदनः ॥ रथःसंयुज्यतामाशु दारुकेत्याहसारथिम् ४ सचाश्वैःशैव्यसुग्रीवमेघपुष्पवलाहकैः ॥ युक्तंरथमुपानीय तस्थौप्राञ्जलिरग्रतः ५ आरुह्यस्यन्दनंशौरिर्द्विजमारोप्यतूर्णगैः ॥ आनर्त्तादेकरात्रेण विदर्भानगमद्धयैः ६ राजासकुण्डिनपतिः पुत्रस्नेहवशंगतः ॥ शिशुपालायस्वांकन्यां दास्यन्कर्म्माण्यकारयत् ७ पुरंसंमृष्टसंसिक्तमार्गरथ्याचतुष्पथम् ॥ चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैःसमलङ्कृतम् ८ स्रग्गन्धमाल्याभरणैर्विरजोम्बरभूषितैः ॥ जुष्टंस्त्रीपुरुषैःश्रीमद्गृहैरगुरुधूपितैः ९ पितॄन्देवान्समभ्यर्च्य विप्रांश्चविधिवन्नृप ॥ भोजयित्वायथान्यायं वाचयामासमङ्गलम् १० सुस्नातांसुदतींकन्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ॥ अहतांशुकयुग्मेन भूषितांभूषणोत्तमैः ११ चक्रुःसामर्ग्यजुर्मन्त्रैर्वध्वारक्षांद्विजोत्तमाः ॥ पुगे

जोतो या प्रकार रथवान् सूं कहत भये ३ । ४ शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प वलाहक ये हैं नाम जिनके ऐसे जे घोड़ा हैं तिन कूं रथ में जोति कै सम्मुख लाय कै रथवान् हाथ जोरि कै बोलत भयो ५ शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रथमें बैठिकै और ब्राह्मण कूं बैठारिकै,शीघ्रगामी जे घोड़ा हैं तिनसूं आनर्त्तदेश तें चलिकै एक रातिमें ही विदर्भदेश में आवत भये ६ पुत्र जो रुक्मी ताके वश होय के वाके कहेमें चलै ऐसो जो कुण्डिनपुरको राजा प्रजाको पालन करनवारो भीष्मकहै सो शिशुपाल कूं अपनी कन्या देवेके लिये पुरकी शोभा और पितृ देवतानके पूजन कूं आदिलैकेकर्म्म करावत भयो ७ राजा भीष्मक अपने पुरकूं शोभायमान करावत भयो कैसो पुरहै बुहारी जिनमें भई छिरकाव होयरह्यो ऐसे राजमार्ग हैं चित्र विचित्र ध्वजा पताका वन्दनवार करिकै वह पुर शोभायमानहै ८ माला चन्दन फूलन के गहने स्वच्छ वस्त्र इनसों शोभायमान ऐसे स्त्री पुरुष जा पुर में डोलेहैं अगरकी धूप जिनमें लगिरही ऐसेशोभायमान घरहैं ९ हे राजन् परीक्षित् ! पितृ देवतानको पूजन करिकै ब्राह्मणन कों विधिपूर्वक भोजन करायकै राजा भीष्मक रुक्मिणीको यथावत् स्वस्तिवाचन करावत भये १० अब कन्याकी शोभा वर्णन करे हैं स्नानजाने करयो सुन्दर जाके दांत

ऐसी कन्याहै विवाह को वङ्कण जाके बँध्यो नवीन वस्त्रनकूं पहिरे उत्तम आभूषणन करि शोभायमान है ११ द्विजोत्तम ब्राह्मण हैं ते सामवेद ऋग्वेद यजुर्वेद के मन्त्रन कूं पढ़िके वधू जो रुक्मिणीहै ताकी रक्षा करतभये अथर्ववेद के मन्त्रन को जाननवारो जो पुरोहित है सो सूर्य्यादिक ग्रहनकी शान्तिकरिवे के लिये होम करतभयो १२ विधिके जाननवारेन में श्रेष्ठ जो राजा भीष्मक है सो ब्राह्मणन कूं सुवर्ण रूपो वस्त्र और गुड़ मिलाय के तिल और दुग्धकी गौ इनको दान करतभयो १३ यह तो रुक्मिणी के पिता की बात कही अब लड़िका के पिताकी बात कहे हैं—जैसे राजा भीष्मकने कन्या को मङ्गल करायो ऐसेही चँदेलीको पालन करनवारो राजा दमघोष है सो अपने पुत्र शिशुपालको मन्त्र के जाननवारे ब्राह्मणनसूं सम्पूर्ण विवाहके उचित मङ्गलकर्म्म करावतभयो १४ मद जिनके चुवे सुवर्णकी है माला जिनके ऐसे हाथीन के समूह और रथ प्यादे घोड़ा इनकी चतुरंगिणी सेनाकूं सगलैकै राजा दमघोष कुण्डिनपुरमें आवतभयो १५ विदर्भ देशको जो राजा भीष्मक

हितोऽथर्व्वविद्वै जुहावग्रहशान्तये १२ हिरण्यरूप्यवासांसि तिलांश्चगुडमिश्रितान् ॥ प्रादाद्धेनूश्च विप्रेभ्योराजाविधिविदांवरः १३ एवंचेदिपतीराजा दमघोषःसुतायवै ॥ कारयामासमन्त्रज्ञैः सर्व्वमभ्युदयोचितम् १४ मदच्युद्भिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हेममालिभिः ॥ पत्त्यश्वसङ्कुलैःसैन्यैःपरीतःकुण्डिनंययौ१५ तंवैविदर्भाधिपतिः समभ्येत्याभिपूज्यच ॥ निवेशयामासमुदा कल्पितान्यनिवेशने १६ तत्रशाल्वोजरासन्धो दन्तवक्रोविदूरथः ॥ आजग्मुश्चैद्यपक्षीयाः पौण्ड्रकाद्याःसहस्रशः १७ कृष्णरामद्विषोयत्ताः कन्यांचैद्यायसाधितुम् ॥ यद्यागत्यहरेत्कृष्णोरामाद्यैर्यदुभिर्वृतः १८ योत्स्यामःसंहतास्तेन इतिनिश्चितमानसाः ॥ आजग्मुर्भूभुजःसर्व्वे समग्रबलवाहनाः १९ श्रुत्वैतद्भगवान्रामोविपक्षीयनृपोद्यमम् ॥ कृष्णञ्चैकंगतंहर्तुं कन्यांकलहशङ्कितः २० बलेनमहतासार्द्धं भ्रातृस्नेहपरिप्लुतः ॥ त्वरितःकुण्डिनंप्रागाद्गजाश्वरथपत्तिभिः २१ भीष्मकन्यावरारोहा काङ्क्षन्त्यागमनंहरेः ॥ प्रत्यापत्तिमपश्यन्तीद्विजस्याचिन्तयत्तदा २२ अहोत्रियामान्तरितउद्वाहोमेऽल्पराधसः ॥ नागच्छत्यरविन्दाक्षोनाहंवेद्म्यत्रकारणम् ॥ सोऽपिनावर्त्ततेऽद्यापि मत्सन्देशहरोद्विजः२३

है सो शिशुपालके पास आयकै पूजन करिकै बनायो जो और एक स्थान है तामें मसन्नहोयके बसावतभयो १६ तहां शाल्व जरासन्ध दन्तवक्र विदूरथ शिशुपाल और पौण्ड्रक आदिलैकै हजारन राजा आवतभये १७ कृष्ण राम तें वैर करिवे को है यत्न जिनको और कन्याकूं शिशुपाल के विवाह करिवे के लिये उद्यम जिनने कर्योहै कदाचित् रामसों आदिलैके यादवन कूं संगलैके कृष्ण आयकै कन्याकूं चुरायकै लै जायगो तो वाके संग युद्ध करेंगे ऐसे मनमें निश्चय करिके अच्छे २ सिपाही घोड़ा हाथीनकूं सगलैके सम्पूर्ण राजा आवतभये १८।१९ भगवान् बलदेवजी शत्रु शिशुपाल के पक्ष के राजानको उद्यम सुनिकै और कन्या लेवे कूं श्रीकृष्ण अकेले गयो है वहां कलह होयगी यह शङ्का मानिकै भय्या श्रीकृष्णको स्नेह जिनकूं आयगयो ऐसे बलदेवजी हाथी घोड़ा रथ प्यादेनकी चतुरंगिणी सेनाकूं लैकै शीघ्र कुण्डिनपुरमें आवतभये २०।२१ श्रेष्ठहैं जंघा जाकी ऐसी भीष्मककी कन्या रुक्मिणी हरि जो श्रीकृष्ण हैं तिनके आयवे को पैंडो देखा ब्राह्मण पत्री लैके गयोहो वह जो लौटिके न आयो तब चिन्ता करति भई २२ मन्दभागिनी जो मैं हूं ता मेरे विवाह में एक रात्री अब बाकी रहीहै परन्तु कमल से हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र नहीं आयपहुँचे

याको कारण मैं नहीं जानूं हूं मेरो संदेशो ब्राह्मण लैकेगयो सो भी नहीं आयो है २३ नहीं है दोष जिनमें ऐसे श्रीकृष्णने मेरे पाणिग्रहण को निश्चय उपाय कियो होइगो परन्तु कन्या अभीतें पाती लिखि लिखि भेजेहै यह दोष देखिकै नहीं आये २४ मो अभागिनीकूं विधाता ईश्वर अनुकूल नहींहै और देवी गौरी रुद्राणी पार्वती सती ये अनुकूल नहींहैं–या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णने हर्योहै मन जाको ऐसी बाला जो रुक्मिणी है सो चिन्ता करिकै आसू जिनमें भरिआये ऐसे नेत्रनकूं मूंदति भई अवताईं श्रीकृष्णके आयवे को समय वीत्यो नहीं जाने है २५ । २६ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गोविन्द श्रीकृष्णके आइवे को पैडो देखै ऐसी जो रुक्मिणी ताकी बाईं ऊरु भुजा नेत्र ये अङ्ग फरकत भये स्त्रीन के बायें अङ्ग फरकने शुभ होइ है प्यारी बात के जनावनवारे हैं २७ याके पीछे ब्राह्मण तुम आगे जाय के खबरि करो या प्रकार श्रीकृष्ण ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसो ब्राह्मण अन्तःपुर में डोलै फिरै जो राजा की पुत्री रुक्मिणी है ताय देखत भयो २८ पतिव्रता

अपिमय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वाकिञ्चिज्जुगुप्सितम् ॥ मत्पाणिग्रहणेनूनं नायातिहिकृतोद्यमः २४ दुर्भगायानमेधाता नानुकूलोमहेश्वरः ॥ देवीवाविमुखा गौरी रुद्राणीगिरिजासती २५ एवंचिन्तयतीबालागोविन्दहृतमानसा ॥ न्यमीलयतकालज्ञा नेत्रेचाश्रुकलाकुले २६ एवंवध्वाःप्रतीक्षन्त्या गोविन्दागमनंनृप ॥ वामऊरुर्भुजोनेत्रमस्फुरन्प्रियभाषिणः २७ अथकृष्णविनिर्दिष्टः सएवद्विजसत्तमः ॥ अन्तःपुरचरींदेवींराजपुत्रींददर्शह २८ सातंप्रहृष्टवदनमव्यग्रात्मगतिंसती ॥ आलक्ष्यलक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता २९ तस्याआवेदयत्प्राप्तंशशंसयदुनन्दनम् ॥ उक्तञ्चसत्यवचनमात्मोपनयनंप्रति ३० तमागतंसमाज्ञाय वैदर्भीहृष्टमानसा ॥ नपश्यन्तीब्राह्मणायप्रियमन्यन्ननामसा ३१ प्राप्तौश्रुत्वास्वदुहितुरुद्वाहप्रेक्षणोत्सुकौ ॥ अभ्ययात्तूर्यघोषेण रामकृष्णौसमर्हणैः ३२ मधुपर्कमुपानीयवासांसिविरजांसिच ॥ उपायनान्यभीष्टानि विधिवत्समपूजयत् ३३ तयोर्निवेशनंश्रीमदुपकल्प्यमहामतिः ॥ ससैन्य

जो रुक्मिणी है सो प्रसन्न है मुख जाको और नहीं चञ्चलहै देह की गति जाकी ऐसे ब्राह्मण कूं देखि कै कार्य्य करिके आयो है या लक्षण कूं जानि के पवित्र जाकी मुसिकानि ऐसी रुक्मिणी पूंछति भई २९ तब रुक्मिणी तें श्रीकृष्णचन्द्र आये हैं यह ब्राह्मण कहत भयो और राजानकूं जीति कै रुक्मिणी कूं ले आऊंगो यह सत्य वचन जो श्रीकृष्णचन्द्र ने कह्यो हो ताकूं भी कहत भयो ३० श्रीकृष्ण कू आये जानिकै हर्षित है मन जाको ऐसे विदर्भदेश के राजा की पुत्री रुक्मिणी विचार करे है कि या समय ब्राह्मण कूं सर्व्वस्व देऊं सो भी थोड़ो है ऐसे ब्राह्मण के देवे योग्य कोई वस्तु नहीं देखिकै प्रणामही करत भई पश्चात् धन भी देत भई ३१ अपनी कन्या को विवाह देखिवे की इच्छा करिके आये जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनें सुनि के राजा भीष्मक नगाड़े बजावत पूजन की सामग्री लैके सम्मुख जात भयो ३२ मधुपर्क लायकै आगे धरत भयो सुन्दर वस्त्र और अनेक प्रकार की भेंट निवेदन करिकै विधिपूर्व्वक राजा भीष्मक जैसे कन्या के वरकी पूजा करे है या प्रकार श्रीकृष्ण बलदेव को पूजन करत भयो ३३ बड़ो बुद्धिमान् राजा भीष्मक कृष्ण बलदेव के लिये सुन्दर स्थान बनाइ कै सेना टहलुआन सहित यथायोग्य आ-

तिथ्य करत भयो ३४ या मकार एक ठौर भये जे राजा हैं तिनमें जैसो जाको पराक्रम है जैसी अवस्था है और जैसो जाके वल है जितनो जाके धन है ताको ताही मकार सम्पूर्ण वस्तुन करिकै राजा भीष्मक पूजन करत भयो ३५ विदर्भपुर के जे वासी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र कूं आयो सुनिकै नेत्ररूप अञ्जलीन सूं श्रीकृष्ण के मुखकमल कूं पीवत भये ३६ दोपरहित जो रुक्मिणी है सो श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री होइवे योग्य है ऐसेही श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी के पति होनेके योग्य हैं ३७ जो कुछ हमने पुण्य करे हैं ताके प्रभाव करिके त्रिलोकी को करनवारो ईश्वर प्रसन्न होय कै अनुग्रह करो और हम यही अनुग्रह चाहे हैं कि श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मिणी को पाणिग्रहण करैं ३८ या मकार प्रेमवद्ध होय कै सम्पूर्ण पुरवासी कहत भये कन्या जो रुक्मिणी है सो पुर तें वाहिर निकसि कै प्यादे जाकी रक्षा करैं ऐसी देवी अम्बिका के मन्दिर में जाति भई ३९ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को भले मकार ध्यान करत अम्बिका भवानी के चरणारविन्द के

योःसानुगयोरातिथ्यंविदधेयथा ३४ एवंराज्ञांसमेतानां यथावीर्यंयथावयः ॥ यथाबलंयथावित्तं सर्व्वैःकामैःसमर्हयत् ३५ कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुरवासिनः ॥ आगत्यनेत्राञ्जलिभिःपपुस्तन्मुखपङ्कजम् ३६ अस्यैवभार्याभवितुं रुक्मिण्यर्हतिनापरा ॥ असावप्यनवद्यात्मा भैष्म्याःसमुचितःपतिः ३७ किञ्चित्सुचरितंयन्नस्तेनतुष्टस्त्रिलोककृत् ॥ अनुगृह्णातुगृह्णातु वैदर्भ्याःपाणिमच्युतः ३८ एवंप्रेमकलाबद्धावदन्तिस्मपुरौकसः ॥ कन्याचान्तःपुरात्प्रागाद्भटैर्गुप्ताऽम्बिकालयम् ३९ पद्भ्यांविनिर्ययौद्रष्टुं भवान्याःपादपल्लवम् ॥ साचानुध्यायतीसम्यग्मुकुन्दचरणाम्बुजम् ४० यतवाङ्मातृभिःसार्द्धं सखीभिःपरिवारिता ॥ गुप्ताराजभटैःशूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ॥ मृदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्चजघ्निरे ४१ नानोपहारबलिभिर्वारमुख्याःसहस्रशः ॥ स्रग्गन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यःस्वलङ्कृताः ४२ गायन्तश्चस्तुवन्तश्चगायकावाद्यवादकाः ॥ परिवार्यवधूंजग्मुः सूतमागधवन्दिनः ४३ आसाद्यदेवीसदनं धौतपादकराम्बुजा ॥ उपस्पृश्यशुचिःशान्ताप्रविवेशाऽम्बिकान्तिकम् ४४ तांवैप्रवयसोबालां विधिज्ञाविप्रयोषितः ॥ भवानींवन्दयाञ्चक्रुर्भवपत्नींभवान्विताम् ४५ नमस्येत्वाऽम्बिकेऽभीक्ष्णंस्वसन्तानयुतांशिवाम् ॥ भूयात्पतिर्मेभगवान्कृष्णस्तदनुमोदताम् ४६ अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासःस्रङ्माल्यभूषणैः ॥ नानो

दर्शन के निमित्त पाँवनहीं जात भई ४० मौन धारण कियो है पुरोहितानी सङ्ग और सखी सहेली जाके सङ्ग हैं कवच पहिरि पहिरि कै शस्त्र हाथन में लैके पहरदार राजा के सिपाही रक्षा निमित्त जाके सङ्ग हैं मृदङ्ग शङ्ख ढोल तुरही भेरि ये वाजे सङ्ग वजत भये ४१ उत्तम उत्तम हजारन वेश्या सङ्ग में नाचत जाति भई माला चन्दन वस्त्र गहनेन सूं शृङ्गार करिके और अनेकप्रकार की सामग्री भेंट लैके द्विजन की स्त्री सग जाति भई ४२ गवैया हैं ते और वाजेन के वजवैया हैं ते और सूत जागा वन्दीजन हैं ते रुक्मिणी कू वीच में करिके गावत और स्तुति करत जात भये ४३ देवी के मन्दिर में जाय कमलरूपी पाव हाथ धोइ आचमन करि पवित्र होयकै शान्त है स्वरूप जाको ऐसी रुक्मिणी अम्बिका देवीके पास जातिभई ४४ विधिकी जाननवारी जे वृद्ध ब्राह्मणन की स्त्री हैं ते वाला जो रुक्मिणी है तापै महादेव की पत्नी महादेवसहित जो भवानी है ताकी पूजा करावति भई ४५ हे अम्बिके पार्वती ! अपने सन्तानसहित जो मङ्गलरूपिणी तुम हो तिनें वारवार

प्रणाम करूं हूं भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो मेरे पति होउ या प्रकार शिर नवाइ कैं रुक्मिणी प्रार्थना करत भई ४६ जल चन्दन अक्षत धूप वस्त्र माला फूल गहने और नानाप्रकारकी सामग्रीन की भेटन सूं और न्यारी न्यारी जे दीवान की पंक्ति हैं तिन सूं देवीकी पूजा करति भई ४७ताही प्रकार तिन सामग्रीन सूं और नोन के पुआ पान कलाये सुपारी गाड़े इन सूं सौभाग्यवती जे ब्राह्मणन की स्त्री हैं तिनकी पूजा करत भई ४८ रुक्मिणी देवी कूं और ब्राह्मणन की स्त्रीन कूं नमस्कार करत भई और प्रसाद है ताइ लेत भई ब्राह्मणन की स्त्री आशीर्वाद देत भई ४९ ताके पीछे मौन कूं त्यागि के जड़ाऊ जो मुँदरी है तासूं शोभायमान जो हाथ है तासूं दासी को हाथपकरिकै देवी के मन्दिर सूं बाहिर निकसतिभई ५० ईश्वर की मायाकी तुल्य बड़ेबड़े जे शूरवीर राजान की मोहनवारी सुन्दर जाकी कटि कुण्डलनकरि शोभायमान हैं मुख जाको रजोदर्शन जाके भयो नहीं रत्नकी जड़ाऊ कौंधनी पहिरे प्रकटभये हैं स्तन जाके और मुखपै छूटे जे केश हैं तिन सूं नेत्र जाके चलायमान हैं ५१ सुन्दर जाकी मुसिक्यानि कुँदुरू के फल की तुल्य अरुण जे ओष्ठ हैं तिनकी कान्तिसूं अरुणता जिनमें झलकै ऐसे जे दांत हैं तेई हैं मानों कुन्दकली जाके

पहारबलिभिःप्रदीपावलिभिःपृथक् ४७ विप्रस्त्रियःपतिमतीस्तथातैःसमपूजयत् ॥ लवणापूपताम्बूलकण्ठसूत्रफलेक्षुभिः ४८ तस्यैस्त्रियस्ताःप्रददुःशेषां युयुजुराशिषः ॥ ताभ्योदेव्यैनमश्चक्रे शेषाञ्चजगृहेवधूः ४९ मुनिव्रतमथत्यक्त्वा निश्चक्रामाम्बिकागृहात् ॥ प्रगृह्यपाणिनाभृत्यांरत्नमुद्रोपशोभिना ५० तांदेवमायामिववीरमोहिनीं सुमध्यमांकुण्डलमण्डिताननाम् ॥ श्यामांनितम्बार्पितरत्नमेखलां व्यञ्जत्स्तनीकुन्तलशङ्कितेक्षणाम् ५१ शुचिस्मितांबिम्बफलाधरद्युतिशोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ॥ पदाचलन्तींकलहंसगामिनीं सिञ्जत्कलानूपुरधामशोभिना ५२ विलोक्यवीरामुमुहुःसमागता यशस्विनस्तत्कृतहृच्छयार्दिताः ॥ यांवीक्ष्यतेनृपतयस्तदुदारहासव्रीडावलोकहृतचेतसउज्झितास्त्राः ५३ पेतुःक्षितौगजरथाश्वगताविमूढायात्राच्छलेनहरयेऽर्पयतींस्वशोभाम् ॥ सैवंशनैश्चलयतीचलपद्मकोशौ प्राप्तिंतदाभगवतःप्रसमीक्षमाणा ५४ उत्सार्यवामकरजैरलकानपाङ्गैः प्राप्तान्ह्रियैक्षतनृपान् दद्दशेऽच्युतंसा ॥ तांराजकन्यांरथमारुरुक्षतीं जहारकृष्णोद्विषतांसमीक्षताम् ५५ रथंसमारोप्यसुपर्णलक्षणं राजन्यचक्रंपरिभूयमाधवः ॥ ततोययौरामपुरो

राजहंस हंसिनी की तुल्य है गमन जाको झनतकार शब्दकूं करै ऐसो जो सुन्दरनूपुर ताकी जो शोभा ता करिकै है शोभा जाकी ऐसे चरणनसूं चलै है ऐसी रुक्मिणीकूं देखिकै जे बड़ेबड़े यशस्वी राजा तिनकूं व्यापो जो कामदेव तासूं पीड़ित होयके मोहित होत भये ता रुक्मिणी की उदार हँसनि लज्जापूर्वक चितवनि इनसूं हरि गये हैं चित्त जिनके ऐसे जे राजा हैं ते हथियारनकूं छोड़ि के ५२।५३ हाथी रथ घोड़ा पै तें मूढ़ होयकै पृथ्वी में गिरत भये कैसी रुक्मिणी है यात्राके मिष करिकै श्रीकृष्णचन्द्रकूं अपनी शोभा दिखावै है या प्रकार चलायमान कमलकोश की तुल्य कोमल जे चरण हैं तिनें हौले हौले चलाय के ता समय श्रीकृष्ण के आयवेको पैंड़ो देखे ऐसी जो रुक्मिणी है ५४ सो बायें हाथ के जे नख हैं तिन सूं अलकन कूं उठाय कै आये जे राजा हैं तिनें कटाक्ष करिके लाजसूं देखतभई और आगे ठाढ़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनें देखतभई रथमें बैठ्यो चाहै ऐसी जो भीष्मक राजाकी कन्या रुक्मिणी है ताय श्रीकृष्णचन्द्र शत्रुनके देखत हरतभये ५५ गरुड़की

है ध्वजा जामें ऐसे रथमें बैठारिकै क्षत्रियनकी सेनाकूं जीतिके श्रीकृष्ण जातभये जैसे स्यारनके बीचमेंते अपने भागकूं लैके सिंह चल्योजायहै ऐसे रामहैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवनसहित रुक्मिणी कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र हौले हौले जात भये ५६ जरासन्ध है मुख्य जिन में ऐसे अभिमानी राजा हैं ते यशको जामें नाश ऐसो अपनो अपमान है ताय नहीं सहारतभये अहो हम कूं धिक्कारहै जैसे सिंहन के यशकूं स्यार हरै ऐसे धनुर्धारी जे हम हैं तिनको यश ग्वारियानने हरिलियो ५७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्याटशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीहरणंनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥
(चतुःपञ्चाशत्तमेतुजित्वाराज्ञोऽरिपक्षगान् ॥ रुक्मिणंचविरूप्याथभैष्म्याःपाणिपुरेऽग्रहीत् १चौवनवें अध्याय में शत्रुके पक्षके राजाओं को कृष्णजी जीतकर रुक्मीको विरूपकर द्वारकापुरीमें रुक्मिणीजी के साथ विवाह करतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार अत्यन्तहै क्रोध जिनके कवचनकूं पहिरे ऐसे जे सम्पूर्ण राजा हैं ते अपनी अपनी सवारीनपै चढि

गमैःशनैः सृगालमध्यादिवभागहृद्धरिः ५६ तंमानिनःस्वाभिभवंयशःक्षयंपरेजरासन्धवशानसेहिरे ॥ अहोधिगस्मान्यशआत्तधन्वनां गोपैर्हृतंकेसरिणांमृगैरिव ५७ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीहरणंनामत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ इतिसर्वेसुसंरब्धावाहनारुह्यदंशिताः॥ स्वैःस्वैर्बलैःपरिक्रान्ताअन्वीयुर्धृतकार्मुकाः १ तानापततआलोक्य यादवानीकयूथपाः ॥ तस्थुस्तत्सम्मुखाराजन् विस्फूर्ज्यस्वधनूंषिते २ अश्वपृष्ठेगजस्कन्धेरथोपस्थेचकोविदाः ॥ मुमुचुःशरवर्षाणि मेघाअद्रिष्वपोयथा ३ पत्युर्बलंशरासारैश्छन्नंवीक्ष्यसुमध्यमा ॥ सव्रीडमैक्षत्तद्वक्त्रं भयविह्वललोचना ४ प्रहस्यभगवानाहमास्मभैर्वामलोचने ॥ विनङ्क्ष्यत्यधुनैवैतत्तावकैःशात्रवंबलम् ५ तेषांतद्विक्रमंवीरागदसङ्कर्षणादयः ॥ अमृष्यमाणानाराचैर्जघ्नुर्हयगजान्रथान् ६ पेतुःशिरांसिरथिनामश्विनांगजिनांभुवि ॥ सकुण्डलकिरीटानि सोष्णीषाणिचकोटिशः ७ हस्ताःसासिगदेष्वासाः करभाऊरवोऽङ्घ्रयः ॥ अश्वाश्वतरनागोष्ट्रखरमर्त्यशिरांसिच ८ हन्यमानबलानीकावृष्णिभिर्जयकाङ्क्षिभिः॥

के सेनाकूं संग लैके धनुषनकूं उठायकै पीछे तें आवत भये १ यादवनकी सेनाके जे यूथहैं तिनके पालन करनवारे जे मुख्य मुख्य यादवहैं ते राजानकूं देखिकै हे राजन् परीक्षित्! अपने धनुषन कूं टंकार करिकै सम्मुख ठाढे होत भये २ युद्ध करने में निपुण जे राजा हैं ते घोडान की पीठि पै हाथीन के कन्धा पै रथ के ऊपर बैठिके जैसे पर्वतन के ऊपर मेघ जल वर्षावें हैं ऐसे बाणन की वर्षा करतभये ३ सुन्दरहै कटि जाकी ऐसी जो रुक्मिणी है सो पति जो श्रीकृष्णहैं तिनकी सेनाकूं बाणन सूं ढकी देखिके भयकरिके विह्वल हैं नेत्र जाके ऐसी लाजसूं श्रीकृष्णको मुख है ताय देखतिभई ४ भगवान् जो श्रीकृष्ण हैं सो हँसिके बोलतभये हे वामलोचने अर्थात् मनोहर हैं नेत्र जाके! ऐसी जो तू सो भय मति करै अबहीं तुम्हारी ओर के जे यादव हैं ते शत्रुन की सेना कूं अबहीं नाश कर देंगे ५ गद सङ्कर्षण कूं आदि लैके जे शूरवीर हैं ते तिनके पराक्रम कूं नहीं सहिसके घोड़ा हाथी रथ हैं तिनैं बाणन सूं नाश करत भये ६ रथन में बैठे हैं तिन के और घोड़ान पै चढे हैं तिनके और हाथीन पै बैठे हैं तिनके कुण्डल मुकुट पगड़ीन सहित करोड़न शिर कटिकै पृथ्वी पै गिरत भये ७ तरवार गदा धनुषन सहित जे हाथ हैं ते कटिके गिरत भये करभन की

तुल्य जे जंघा हैं ते कटिके गिरतभए घोड़ा राचर हाथी ऊंट गधा मनुष्य इनके कटिके शिर गिरत भये ८ जीतिवे की है इच्छा जिनके ऐसे जे यादव हैं तिन ने मारे हैं सेना के झुण्ड जिन के ऐसे जरासन्ध सूं आदि लैके राजा हैं ते विमुख होयकै जात भये ६ मानो स्त्री जाकी हरिगई ऐसो व्याकुल शोभा जाकी हत भई उत्साह जाको गयो मुख जाको शुष्क होयगयो ऐसो राजा शिशुपाल है ताके पास आयकै सब राजा बोलत भये १० हे पुरुषन में सिंह राजा शिशुपाल ! तुम अपने मनकी उदासीनता कूं त्यागो देहधारीन कूं सुख और दुःख सर्वदा नहीं रहे हैं ११ जैसे काठकी पुतरी नचावनवारेकी इच्छा करिके नाचेहै ऐसेही ईश्वर के अधीन जो जीवहै ताकूं सुख दुःख होयहै १२ कृष्णतें सत्रहवार तेईस अक्षौहिणी सेनालैके युद्धमें हार्यो केवल एकवेर जीत्यो तथापि मैं शोच नहीं करूं हूं कदाचित् हर्ष नहीं मानू हूं दैवके वश जो काल है ताने समस्तजगत् चलायमान कियोहै यह मैं जानूंहूं १३। १४ बड़े बड़े शूरवीरनके यूथ तिनके पालन करन

राजानोविमुखाजग्मुर्जरासन्धपुरःसराः ६ शिशुपालंसमभ्येत्य हृतदारमिवाऽऽतुरम् ॥ नष्टत्विषंगतोत्साहं शुष्यद्वदनमब्रुवन् १० भोभोःपुरुषशार्दूल दौर्मनस्यमिदंत्यज ॥ नप्रियाप्रिययोराजन्निष्ठादेहिषुदृश्यते ११ यथादारुमयीयोषिन्नृत्यतेकुहकेच्छया॥ एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहतेसुखदुःखयोः १२ शौरेःसप्तदशाहंवै संयुगानिपराजितः ॥ त्रयोविंशतिभिःसैन्यैर्जिग्यएकमहंपरम् १३ तथाप्यहंनशोचामि नप्रहृष्यामिकर्हिचित् ॥ कालेनदैवयुक्तेन जानन्विद्रावितंजगत् १४ अधुनापिवयंसर्वे वीरयूथपयूथपाः ॥ पराजिताःफल्गुतन्त्रैर्यदुभिःकृष्णपालितैः १५ रिपवोजिग्युरधुनाकालआत्मानुसारिणि ॥ तदावयंविजेष्यामोयदाकालःप्रदक्षिणः १६ एवंप्रबोधितोमित्रैश्चैद्योऽगात्सानुगःपुरम् ॥ हतशेषाःपुनस्तेऽपि ययुःस्वंस्वंपुरंनृपाः १७ रुक्मीतुराक्षसोद्वाहं कृष्णद्विडसहन्स्वसुः ॥ पृष्ठतोऽन्वगमत्कृष्णमक्षौहिण्यावृतोबली १८ रुक्म्यमर्षीसुसंरब्धः शृण्वतांसर्वभूभुजाम् ॥ प्रतिजज्ञेमहाबाहुर्दंशितःसशरासनः १९ अहत्वासमरेकृष्णमप्रत्यूह्यचरुक्मिणीम् ॥ कुण्डिनंनप्रवेक्ष्यामि सत्यमेतद्ब्रवीमिवः २० इत्युक्त्वारथमारुह्य सारथिंप्राहसत्वरः ॥ चोदयाश्वान्यतःकृष्ण

वारेनके जे यूथ तिनके पालन करनवारे जे हमहैं ते थोड़ीहै सेना जिनकी कृष्णहै पालन करनवारो जिनको ऐसे यादवन तें अब हारिगये १५ या समय उनके दिन अच्छे हैं तासूं हम शत्रुनकूं जीतत भये जब हमारे दिन अच्छे आवेंगे तब हम जीतेंगे १६ याप्रकार मित्रनने समझायो तब शिशुपाल अपने चाकर टहलुआनकूं संगलैके अपने देशकूं जातभयो मरेन ते बाकी बचे जे राजा हैं ते भी अपने २ पुरन कूं जातभये १७ कृष्णको वैरी जो रुक्मी है सो बहिनिको युद्धमें ते हरिके लेजायबोहै ताकूं नहीं सहिकै एक अक्षौहिणी सेना कों संगलैके बली जो रुक्मी है सो कृष्णके पीछे दौरत भयो १८ असहनता जाकूं आइगई क्रोधित होयकै कवच जाने पहिर लियो धनुष् ग्रहण करिकै सब राजान के श्रवण करत बड़ी है भुजा जाकी ऐसो रुक्मी प्रतिज्ञा करतभयो १९ युद्ध में कृष्ण के मारे विना और रुक्मिणीके वगदाये विना कुण्डिनपुरमें न आऊंगो यह मैं सत्य कहूंहूं २० रुक्मी या प्रकार कहिके रथ में बैठि के रथवान् सूं कहत भयो कि जहाँ कृष्ण है तहाँ शीघ्र घोड़ान

कूं हाँकिकै लै चलो याके संग मेरो युद्ध होयगो २१ बड़ी है दुष्टबुद्धि जाकी गौवन को चरावनवारो जो कृष्ण है ताके पराक्रम के मद कूं पैने बाणन सूं मारि के अब हरिलेउँगो ऐसो कृष्ण जोरावरी मेरी बहिनि कूं हरिलेगयो है २२ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसो रुक्मी है सो ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के बल कू न जानि के कुत्सित शब्दन कूं कहत अकेलो रथकूं दौरायके ठाडो रहु २ ऐसे गोविन्द श्रीकृष्ण कू पुकारत भयो २३ दृढ धनुष् कू खैंचिकै श्रीकृष्ण के तीन बाण मारत भयो और हे यादवन के कुल कूं दोष के लगावनवारे ! यहाँ तू क्षण भर ठाढो रह ऐसे कहत भयो २४ अरे जैसे होम की सामग्री कूं कौआ लैजाय है ऐसे मेरी बहिनि कूं चुराय कै कहां लिये जाय है बड़ो मायावी कपट करिकै युद्धकरै जो तूहै ता तेरो मद मैं अब हरिलेउँगो २५ मेरे बाणन सूं पीड़ित होयके जबताईं न सोवैगो तबताई कन्या कूं त्यागि दे अब श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकाय कै वाके धनुष् कूं काटिकै छःबाणन सूं रुक्मी को वेधतभये २६ आठ बाण करिके रथ के चारों

स्तस्यमेसंयुगंभवेत् २१ अद्याहंनिशितैर्बाणैर्गोपालस्यसुदुर्मतेः ॥ नेष्येवीर्य्यमदंयेन स्वसामेप्रसभंहृता २२ विकत्थमानःकुमतिरीश्वरस्याप्रमाणवित् ॥ रथेनैकेनगोविन्दं तिष्ठतिष्ठेत्यथाह्वयत् २३ धनुर्विकृष्यसुदृढं जघ्नेकृष्णंत्रिभिःशरैः ॥ आहचात्रक्षणंतिष्ठ यदूनांकुलपांसन २४ कुत्रयासिस्वसारंमेमुषित्वाध्वाङ्क्षवद्धविः ॥ हरिष्येऽद्यमदंमन्द मायिनःकूटयोधिनः २५ यावन्नमेहतोबाणैःशयीथामुञ्चदारिकाम् ॥ स्मयन्कृष्णोधनुश्छित्त्वाषड्भिर्विव्याधरुक्मिणम् २६ अष्टभिश्चतुरोवाहान्द्वाभ्यांसूतंध्वजंत्रिभिः ॥ सचान्यद्धनुरादायकृष्णंविव्याधपञ्चभिः २७ तैस्ताडितःशरौघैस्तु चिच्छेदधनुरच्युतः ॥ पुनरन्यदुपादत्त तदप्यच्छिनदव्ययः २८ परिघंपट्टिशंशूलं चर्म्मासीशक्तितोमरौ ॥ यद्यदायुधमादत्त तत्सर्वंसोऽच्छिनद्धरिः २९ ततोरथादवप्लुत्य खड्गपाणिर्जिघांसया ॥ कृष्णमभ्यद्रवत्क्रुद्धःपतङ्गइवपावकम् ३० तस्यचापततःखड्गं तिलशश्चर्मचेषुभिः ॥ छित्त्वाऽसिमाददेतिग्मं रुक्मिणंहन्तुमुद्यतः ३१ दृष्ट्वाभ्रातृवधोद्योगं रुक्मिणीभयविह्वला ॥ पतित्वापादयोर्भर्तुरुवाचकरुणंसती ३२ योगेश्वराप्रमेयात्मन् देवदेवजगत्पते ॥ हन्तुंनार्हसिकल्याण भ्रा

घोड़ान कूं और दो बाणन सूं रथवान् कूं वेधतभये तीन बाणन करिकै ध्वजा काटतभये इतने में रुक्मी और धनुष् कूं लैके श्रीकृष्णचन्द्र कूं पांच बाणनसूं वेधतभयो २७ बाणन करिके ताड़ित जे अच्युत श्रीकृष्ण हैं ते रुक्मी को धनुष् काटतभये तब फेरि रुक्मी और धनुष् लेतभयो ताहू कूं नहीं है नाश जिनके ऐसे भगवान् काटतभये २८ परिघ अर्थात् बेंड़ा पट्टिश अर्थात् पट्टा त्रिशूल ढाल तरवार बरछी नेजा और जे जे हथियार रुक्मी लेतभयो ते ते सब कृष्णचन्द्र काटतभये २९ ता पीछे रुक्मी रथमें तें कूदिकै हाथ में तरवार लैकै मरिबे की इच्छा करिकै जैसे पतङ्ग आगि के सम्मुख जाय ऐसे श्रीकृष्ण के सम्मुख जातभयो ३० चल्यो आवे जो रुक्मी है ताकीढाल तरवार कूं बाणन तें तिल तिल भरि काटिकै पैनी धारकी तरवार लैके श्रीकृष्णचन्द्र रुक्मी के मारिबे कूं उद्यत होतभये ३१ भय्या के मारिबे को उद्यम देखिके भयसू व्याकुल होयकै पतिव्रता जो रुक्मिणी है सो पति जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके चरणन में गिरिके करुणा जामें आय जाय ऐसे वचनकू बोलतभई ३२ हे योगके ईश्वर! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिबे में आवे है स्वरूप जिनको ! हे देवतानके देव ! हे जगत्के पालन करनवारे श्रीकृष्ण ! हे महाभुज !

अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ऐसे जो तुमहो सो मेरे भय्याकूं मतिमारो तुम्हें योग्य नहीं है ३३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! त्रास करिके अङ्ग जाके कांपे शोक करिके मुख जाको शुष्क होगयो और कण्ठ जाको रुकिगयो कायरता सूं गिरी है सुवर्ण की माला जाकी ऐसी रुक्मिणी ने ता समय श्रीकृष्णचन्द्र के चरण पकरे ता समय करुणा आइगई तासूं रुक्मी कूं नहीं मारतभये ३४ दुष्कर्मन कूं करे ऐसो जो रुक्मी है ताकूं वस्त्र तें बांधिके दाढ़ीसहित मूड़ मूंडिके वाको अभद्ररूप करतभये तबताईं यादवन में जे शूरवीर हैं ते अद्भुत जो रुक्मी की सेनाहै ताय जैसे हाथी कमलिनीन कूं मर्दन करे है या प्रकार मर्दन करतभये ३५ बलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र के पास आयके रुक्मीकूं देखतभये कैसो रुक्मी है शिर जाको मुंडिगयो मृतक के तुल्य बँध्यो ठाढ़ो देखिके करुणा जिनकूं आय गई ऐसे सामर्थ्यवान् जे बलदेवजी हैं ते कहतभये ३६ हे कृष्ण ! तैंने यह निन्दितकर्म करयो हमारी यामें निन्दा होयगी शिर दाढ़ी मुड़ाय के बुरो रूप करिदेनो

तरंमेमहाभुज ३३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तयापरित्रासविकम्पिताङ्गयाशुचावशुष्यन्मुखरुद्धकण्ठया ॥ कातर्यविस्रंसितहेममालया गृहीतपादःकरुणोन्यवर्तत ३४ चैलेनबद्ध्वातमसाधुकारिणं सश्मश्रुकेशंप्रवपन्व्यरूपयत् ॥ तावन्ममर्दुःपरसैन्यमद्भुतं यदुप्रवीरानलिनींयथागजाः ३५ कृष्णान्तिकमुपव्रज्य ददृशुस्तत्ररुक्मिणम् ॥ तथाभूतंहतप्रायंदृष्ट्वासङ्कर्षणोविभुः ॥ विमुच्यबद्धंकरुणोभगवान्कृष्णमब्रवीत् ३६ असाध्विदंत्वयाकृष्णकृतमस्मज्जुगुप्सितम् ॥ वपनंश्मश्रुकेशानां वैरूप्यंसुहृदोवधः ३७ मैवास्मान्साध्व्यसूयेथाभ्रातुर्वैरूप्यचिन्तया ॥ सुखदुःखदोनचाऽन्योऽस्ति यतःस्वकृतभुक्पुमान् ३८ बन्धुर्वधार्हदोषोऽपि नबन्धोर्वधमर्हति ॥ त्याज्यःस्वेनैवदोषेण हतःकिंहन्यतेपुनः ३९ क्षत्रियाणामयंधर्मः प्रजापतिविनिर्मितः ॥ भ्राताऽपिभ्रातरंहन्याद्येनघोरतरस्ततः ४० राज्यस्यभूमेर्वित्तस्य स्त्रियोमानस्यतेजसः ॥ मानिनोऽन्यस्यवाहेतोः श्रीमदान्धाःक्षिपन्तिहि ४१ तवेयंविषमाबुद्धिःसर्वभूतेषुदुर्हृदाम् ॥ यन्मन्यसेसदाऽभद्रं सुहृदांभद्रमज्ञवत् ४२ आत्ममोहोनृणामेव कल्पतेदेवमायया ॥ सुहृद्दुर्हृदुदासीनइतिदेहात्ममानिनाम् ४३ एकएवपरोह्यात्मा सर्वेषामपि

यही अपने नातेदार को मारनो है अब याकूं छोड़िदे ३७ अब रुक्मिणी कूं समझावे है हे सुशीले ! भय्याको कुरूप होयगयो या ईर्षा तें हम कूं दोष मति लगावै यह पुरुष अपने कर्मन को फल भोगे है सुख दुःखको देनवारो और कोई नहीं है ३८ फेर श्रीकृष्ण कूं समझावे हैं अपने नातेदार ने मारिवे योग्य अपराध करो भी होइ तथापि न मारे वाकू अपराधी करिके त्यागिदेनो वह पहिलेही अपने दोषकरि मरि रह्यो है फेरि वाकूं कहा मारिये ३९ फेरि रुक्मिणी कूं समझावें हैं क्षत्रियन को यही धर्म विधाता ने बनायो है जा धर्म सूं भय्या भय्या कूं मारि डारे मारे नसुरेन की कौन बात है यह बड़ो घोरधर्म है ताते हमारो कहा दोष है ४० फेरि श्रीकृष्ण कूं समझावे हैं हे कृष्ण ! राज्य के निमित्त पृथ्वी के लिये धनके लिये स्त्री के लिये प्रतिष्ठा के लिये तेजके लिये और और वस्तुके लिये श्रीमदान्ध अभिमानी राजा लड़े हैं हमकूं उचित नहीं है ४१ फेरि कृष्ण कूं समझावे हैं सब प्राणीन में दुष्ट जाको हृदय अर्थात् सब बात को बुरो विचारें ऐसे जे शिशुपालादिक हैं तिनको बुरो चाहो हौ और अपने भय्याको भलो चाहो हौ रुक्मिणी तुम्हारी विषम बुद्धि है अज्ञानी पुरुषनकू जैसे होय तैसे ४२ यह हमारो मित्र है यह शत्रु है यह बराबर है या

प्रकार देहाभिमानी पुरुषन कूं देवमाया करिकै एक मोह रच्यो है ४३ समस्त देहधारीन में एकही शुद्ध आत्मा है वाही कूं अज्ञानीपुरुष अनेकरूप करिकै माने हैं जैसे जलके भरे घटमें एकही सूर्य को प्रतिबिम्ब अनेक होयकै दीखे है जैसे एक आकाश घटादिकन में बहुत रूप करिकै दीखैहै ४४ तैसे द्रव्य अर्थात् अधिभूत प्राण इन्द्रिय अध्यात्मगुण आधिदैविक इतने है स्वरूप जाके ऐसे आत्मा में अविद्या ने रचे हैं वेही देहधारीन कूं संसार में भटकावे हैं ४५ हे पतिव्रता रुक्मिणी ! मिथ्यादेह आत्मा कूं संयोग नहीं है और या देहतें वियोग भी नहीं है देह मिथ्या काहे ते है तहां कहे हैं देह कूं प्रकाशकर्ता आत्मा ते है जैसे सूर्य ते चक्षु इन्द्रिय रूप कूं प्रकाशे है ४६ जन्म मरणादिक जे छःविकार हैं ते देहकूं है आत्मा कूं कदाचित् नहीं हैं जैसे चन्द्रमाकी कला घटै बढ़ै हैं चन्द्रमा कदाचित् घटै बढ़ै नहीं है जैसे अमावसके दिन कलानके घटने तें चन्द्रमाको नाश कहिये है तैसे या आत्माकू देहके नाश तें मरण कहिबे में आवे है ४७ जैसे पुरुष सोवतमें स्वप्नमें अपनपे कूं और विषयन के

देहिनाम् ॥ नानेवगृह्यतेमूढैर्यथाज्योतिर्यथानभः ४४ देहआद्यन्तवानेष द्रव्यप्राणगुणात्मकः ॥ आत्मन्यविद्ययाक्लृप्तः संसारयतिदेहिनम् ४५ नात्मनोऽन्येनसंयोगो वियोगश्चासतःसति ॥ तद्धेतुत्वात्तत्प्रसिद्धेर्दृग्रूपाभ्यांयथारवेः ४६ जन्मादयस्तुदेहस्य विक्रियानाऽऽत्मनःक्वचित् ॥ कलानामिवनैवेन्दोर्मृतिर्ह्यस्यकुहूरिव ४७ यथाशयानआत्मानं विषयान्फलमेवच ॥ अनुभुङ्क्तेऽप्यसत्यर्थेतथाऽऽप्नोत्यबुधोभवम् ४८ तस्मादज्ञानजंशोकमात्मशोषविमोहनम् ॥ तत्त्वज्ञानेननिर्हृत्य स्वस्थाभवशुचिस्मिते ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगवतातन्वी रामेणप्रतिबोधिता ॥ वैमनस्यंपरित्यज्य मनोबुद्ध्यासमादधे ५० प्राणावशेषउत्सृष्टोद्विड्भिर्हतबलप्रभः ॥ स्मरन्विरूपकरणं वितथात्ममनोरथः ५१ अहत्वादुर्मतिंकृष्णमप्रत्यूह्ययवीयसीम् ॥ कुण्डिनंनप्रवेक्ष्यामीत्युक्त्वा तत्रावसद्रुषा ५२ भगवान्भीष्मकसुतामेवंनिर्जित्यभूमिपान् ॥ पुरमानीयविधिवदुपयेमेकुरूद्वह ५३ तदामहोत्सवोनॄणां यदुपुर्यांगृहेगृहे ॥ अभूदनन्यभावानां कृष्णेयदुपतौनृप ५४ नरानार्यश्चमुदिताः प्रमृष्टमणिकुण्डलाः ॥ पारिबर्हमुपाजह्रुर्वरयोश्चित्रवाससोः ५५ सावृष्णिपुर्युत्तभितेन्द्रकेतुभिर्वि

भोगिवे को फल कूं न सुख ताकूं मिथ्या भोगकरै ताहीप्रकार अज्ञानी पुरुष संसार कूं पावै है ४८ पवित्र है मुसिकानि जाकी ऐसी रुक्मिणी ता कारण तें अज्ञान तें भयो जो आत्मा कूं शोक करन वारो मोहहै ताय तत्त्वज्ञान सूं दूरि करिकै अपने शान्तिरूप में स्वस्थ होवो ४९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार भगवान् बलदेवजी ने समझाई तब सुकुमार हैं अङ्ग जाके ऐसी रुक्मिणी मनकी उदासीनता त्यागिके बुद्धितें मनकूं सावधान करतिभई ५० केवल प्राणही जाके बाकी रहे शत्रुनने छोड़िदियो सेना जाकी मारीगई प्रभाव जाको गयो व्यर्थ भयो है मनोरथ जाको शिर मूड़िके भयो है कुरूप जाको खोटी है बुद्धि जाकी ऐसे श्रीकृष्ण कूं मारे बिना और छोटी बहिनी के बगदाये बिना या कुण्डिनपुर में न आऊंगो या प्रतिज्ञा के मारे वहा भोजकटपुर बसायकै रहतभयो ५१ । ५२ हे कौरवन कूं आनन्द के देनवारे राजन् परीक्षित् ! भगवान् जे श्रीकृष्णहैं ते या प्रकार राजान कूं जीतिकै भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी कूं द्वारकापुरी में लायकै विधिपूर्वक विवाह करतभये ५३ हे राजन् परीक्षित् ! यादवनकी पुरी द्वारकामें यादवनके पालन करनवारे जे श्रीकृष्ण हैं तिनमें अनन्य है भाव जिनको ऐसे मनुष्यन के घरमें मङ्गल होतभयो ५४

आनन्द जिनके भयो उज्ज्वल हैं मणिनके जडाऊ गहने जिनके ऐसे स्त्री पुरुष चित्रविचित्र हैं वस्त्र जिनके ऐसे दूलहो दुलहिनि जो रुक्मिणी कृष्ण है तिनके देवेके लिये सुन्दर २ वस्तु लावतभये ५५ ऊँची ध्वजा और चित्रविचित्र माला वस्त्र रत्ननकी वन्दनवारे तिनसूं और द्वारद्वारपै धानकीखीलैं अंकुर फूल और जलके भरे कलश और अगरकी धूप दीप इत्यादिकनसूं वह यादवनकी पुरी द्वारका सुन्दर लगतिभई ५६ बुलाये जे प्यारे राजा हैं तिनके हाथिन के मदचुवे तासूं शोभायमान है और छिरकाव होयगयो है और दरवाजेन पै केला सुपारीन के जे दृक्षलगे हैं तिनसूं शोभायमान है ५७ खुशी के मारे दौरे दौरे फिरें ऐसें जे द्वारकावासी हैं तिनमें कुरुदेश सृञ्जयदेश कैकयदेश विदर्भदेश यदुदेश और कुन्तिदेश के वासी जे राजा हैं ते विवाह में मिलिकै आनन्दकूं पावतभये ५८ जहा तहा गायो जो रुक्मिणीको हरिकै लै जायबो है ताकूं राजा और राजानकी कन्या श्रवण करिकै बडो आश्चर्य मानति भई ५९ हे राजन् परीक्षित् ! द्वारकापुरीमें पुरवासीनके लक्ष्मीपति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं और लक्ष्मी जो रुक्मिणी है ता सहित दर्शन करिकै अति आनन्द होत भयो ६० इति श्रीमन्महाभागवतार्थप्रकाशिकायां दशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिणीविवाहोत्सवेचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

चित्रमाल्याम्बररत्नतोरणैः ॥ बभौप्रतिद्वार्य्युपक्लृप्तमङ्गलैरापूर्णकुम्भागुरुधूपदीपकैः ५६ सिक्तमार्गामदच्युद्भिराहूतप्रेष्ठभूभुजाम् ॥ गजैर्द्वास्सुपरामृष्टरम्भा पूगोपशोभिता ५७ कुरुसृञ्जयकैकेयविदर्भयदुकुन्तयः ॥ मिथोमुमुदिरेतस्मिन् सम्भ्रमात्परिधावताम् ५८ रुक्मिण्याहरणंश्रुत्वा गीयमानंततस्ततः ॥ राजानोराजकन्याश्च बभूवुर्भृशविस्मिताः ५९ द्वारकायामभूद्राजन् महामोदःपुरौकसाम् ॥ रुक्मिण्यारमयोपेतंदृष्ट्वाकृष्णंश्रियःपतिम् ६० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुक्मिण्युद्वाहोनामचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ कामस्तुवासुदेवांशो दग्धःप्राग्रुद्रमन्युना ॥ देहोपपत्तयेभूयस्तमेवप्रत्यपद्यत १ सएवजातोवैदर्भ्यां कृष्णवीर्य्यसमुद्भवः ॥ प्रद्युम्नइतिविख्यातः सर्वतोऽनवमःपितुः २ तंशम्बरःकामरूपी हृत्वातोकमनिर्दशम् ॥ सविदित्वात्मनःशत्रुं प्रास्योदन्वत्यगाद्गृहम् ३ तंनिर्जगारबलवान्

(पञ्चपञ्चाशत्तमेतुप्रद्युम्नोऽजनिकृष्णतः ॥ शम्बरेणाहृतःसोऽथहत्वातंकान्तयाऽगमत् १ प्रद्युम्नहानिलाभाद्यैःशम्बराहरणादिना ॥ कुटुम्बिनामपत्यादिसुखदुःखमसूसुचत् २ पचपनवें अध्याय में श्रीकृष्णजीसूं प्रद्युम्नजी उत्पन्न होतभये और शम्बरासुरने प्रद्युम्नजी को हरलिया फिर प्रद्युम्नजी शम्बरासुर को मारकर स्त्री समेत द्वारकापुरी में प्राप्त होजातभये १ कृष्णजी प्रद्युम्नकी हानि और लाभादिकों और शम्बरासुरके हरने आदिसूं कुटुम्बियोंको सुग्न और दुःख सूचित करतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! वासुदेवको अंश जो कामदेव है सो रुद्रके क्रोधकरिकै पहले भस्म होयगयो फेरि देह पाइवेके लिये वासुदेव हैं तिनमें प्र वतभयो १ वही कामदेव श्रीकृष्ण के वीर्य्य में होय रुक्मिणी के जन्मलैके प्रद्युम्न नाम करिकै विख्यातहोतभयो पिता श्रीकृष्णसूं सब औरतें गुणनमें न्यून नहीं है २ इच्छापूर्वक रूपकूं धारणकरै ऐसो जो शम्बरासुर है सो अपनो शत्रु जानिकै दश दिनके बालककूं हरिकै समुद्रमें डारिकै घरकूं आवतभयो ३ बड़ो बलवान् मत्स्य

वालककू निगलतभयो वा मत्स्यकूं मछरीनकी है जीविका जाके ऐसो धीवर बडो जाल डारिकै और मछरीनके सङ्ग पकरतभयो ४ वा बडे मत्स्यकूं लाय कै धीवर शम्बरासुरकी भेट करत भयो शम्बरासुर ने रसोइयानकूं दियो रसोइया रसोई में लाय कै छुरीते अद्भुत मत्स्यकूं विदीर्ण करतभये ५ ता मछरीके उदर में बालककूं देखिके रसोइया मायावती जो शम्बरासुरकी स्त्रीहै ताय देत भये शङ्कित है चित्त जाको ऐसी मायावती सूं आयके सब वृत्तान्त नारदजी कहतभये यह बालकको स्वरूप तेरो पति कामदेव है श्रीकृष्ण तें रुक्मिणी में उत्पन्नभयो है या प्रकार उत्पत्ति और शम्बरासुर समुद्र में डारिआयो वहाँ याकूं मत्स्य निगलिगयो या प्रकार मत्स्य के उदरमें प्रवेशहै ताय कहत भये ६ वह जो शम्बरासुरकी स्त्री है सो कामदेव की स्त्री रही रति वाको नाम बड़ी यशस्विनीही पति कामदेव को देह दग्ध होय गयो सो वाके देहके उत्पन्न होयवेकी प्रतीक्षाकरैही ७ वह जो मायावती कामदेवकी स्त्रीहै सो,शम्बरासुरने भूंग भात करवेके निमित्त अपने पास राखीरही

मीनःसोऽप्यपरैःसह ॥ वृतोजालेनमहता गृहीतोमत्स्यजीविभिः ४ तंशम्बरायकैवर्त्ताउपाजहुरुपायनम् ॥ सूदामहानसंनीत्वाऽवद्यन्स्वधितिनाऽद्भुतम् ५ दृष्ट्वातदुदरेबालं मायावत्यैन्यवेदयन् ॥ नारदोऽकथयत्सर्वंतस्याःशङ्कितचेतसः ॥ बालस्यतत्त्वमुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ६ साचकामस्यवैपत्नी रतिर्नामयशस्विनी ॥ पत्युर्निर्दग्धदेहस्य देहोत्पत्तिंप्रतीक्षती ७ निरूपिताशम्बरेणसासूपौदनसाधने ॥ कामदेवंशिशुंबुद्ध्वा चक्रेस्नेहंतदार्भके ८ नातिदीर्घेणकालेनसकार्ष्णीरूढयौवनः ॥ जनयामासनारीणां वीक्षन्तीनाञ्चविभ्रमम् ९ सातंपतिंपद्मदलायतेक्षणं प्रलम्बबाहुंनरलोकसुन्दरम् ॥ सव्रीडहासोत्तभितभ्रुवेक्षती प्रीत्योपतस्थेरतिरङ्गसौरतैः १० तामाहभगवान्कार्ष्णिर्मातस्तेमतिरन्यथा ॥ मातृभावमतिक्रम्यवर्त्तसेकामिनीयथा ११ ॥ रतिरुवाच ॥ भवान्नारायणसुतः शम्बरेणाऽऽहृतोगृहात् ॥ अहन्तेऽधिकृतापत्नी रतिःकामोभवान्प्रभो १२ एषत्वानिर्दशंसिन्धावाक्षिपच्छम्बरोऽसुरः ॥ मत्स्योऽग्रसीत्तदुदरादितःप्राप्तोभवान्प्रभो १३ तमिमञ्जहिदुर्द्धर्षंदुर्ज्जयंशत्रुमात्मनः ॥ मायाशतविदंत्वञ्च मायाभिर्मोहनादिभिः १४ परिशोचतितेमाता कुररीव

सो उस बालक कूं कामदेव जानिकै ता समय बालक में स्नेह करति भई ८ थोडे सेही दिनन में प्राप्तभईहै यौवन अवस्था जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र प्रद्युम्न देखनवारी स्त्रीनकूं मोह उत्पन्न करतभये ९ कमलदलसे बडेहैं नेत्र जिनके लम्बीहैं भुजा जिनकी मनुष्यलोक में सुन्दर ऐसे पति प्रद्युम्न कूं लाजभरी मुसकानि सूं उठी जो भृकुटी तासूं देखिकै प्रीति करिकै सुरतसम्बन्धी जे भावहैं तिन करिकै सेवन करति भई १० अब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी रतितें बोलतभये हे मातः ! तुम्हारी मति और प्रकार भई है मातृभावकूं त्यागि कै अब स्त्री की तुल्य आचरण करौ हौ ११ अब रति बोले है हे प्रभो ! तुम नारायण के पुत्रहौ शम्बरासुर तुमकूं चुरायकै घरमेंतें लै गयोहो मैं तुम्हारी स्त्री हूं रति मेरो नाम है तुम कामदेवहौ १२ नहीं व्यतीतभये हैं दश दिन जिनके ऐसे तुमहौ तिनकूं शम्बरासुर समुद्र में पटकत भयो तब मत्स्य तुमकूं निगलतभयो हे प्रभो ! तुम मत्स्य के पेट में तें आये हौ १३ तिरस्कार करिवे में न आवै ऐसो जो अपनो शत्रु शम्बरासुर है सो सैकरन मायान को जाननवारो है ताकूं मोहनादिक मायान सूं मारौ १४ पुत्रके स्नेह करि अतिव्याकुल दीन भयो है मन जाको ऐसी तुम्हारी माता कुररी अर्थात् टिटि-

इरीकी तुल्य शोच करे है विना बछराकी गौंकी तुल्य आतुर है १५ या प्रकार मायावती स्त्री कहिकै सब मायान की नाश करनवारी जो महामाया विद्या है ताय महात्मा प्रद्युम्नजी हैं तिनें देत भई १६ प्रद्युम्नजी शम्बरासुर के पास आयकै असह्य वचननसूं तिरस्कार करिकै कलह उत्पन्न करिकै युद्ध करिवे के अर्थ बुलावत भये १७ खोटे वाक्यन सूं तिरस्कार जाको कस्यो ऐसो शम्बरासुर जैसे ठोकर लगे ते सर्प फुंकारे है या प्रकार क्रोधकरिकै लाल हैं नेत्र जाके ऐसो शम्बरासुर गदा हाथमें लैके निकसतभयो १८ शम्बरासुर गदाकूं फिरायकै महात्मा प्रद्युम्नजी के ऊपर फेंकिकै वज्रपातकी तुल्य जो कठोर शब्द है तासूं अधिक शब्द करतभयो १९ भगवान् प्रद्युम्नजी अपने ऊपर चली आवै जो गदाहै ताय गदासूं दूरि करिकै वैरी शम्बरासुर के ऊपर क्रोध करिकै हे राजन् परीक्षित् ! अपनी गदा फेंकतभये २० शम्बरासुर मय कारीगरने दिखाई ऐसी दैत्यनकी माया ताको आश्रयलैके आकाश में जायके श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी के ऊपर पत्थरन की वर्षा

तप्रजा ॥ पुत्रस्नेहाकुलादीना विवत्सागौरिवाऽऽतुरा १५ प्रभाष्यैवंददौविद्यांप्रद्युम्नायमहात्मने ॥ मायावतीमहामायांसर्वमायाविनाशिनीम् १६ सच शम्बरमभ्येत्य संयुगायसमाह्वयत् ॥ अविषह्यैस्तमाक्षेपैः क्षिपन्सञ्जनयन्कलिम् १७ सोऽधिक्षिप्तोदुर्वचोभिः पदाहतइवोरगः ॥ निश्चक्रामगदापाणि रमर्षात्ताम्रलोचनः १८ गदामाविध्यतरसा प्रद्युम्नायमहात्मने ॥ प्रक्षिप्यव्यनदन्नादं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् १९ तामापतन्तींभगवान् प्रद्युम्नोगदयागदाम् ॥ अपास्यशत्रवेक्रुद्धः प्राहिणोत्स्वगदांनृप २० सचमायांसमाश्रित्य दैतेयींमयदर्शिताम् ॥ मुमुचेऽस्त्रमयंवर्षं कार्ष्णौवैहायसोसुरः २१ बाध्यमानोऽस्त्र वर्षेण रौक्मिणेयोमहारथः ॥ सत्त्वात्मिकांमहाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् २२ ततोगौह्यकगान्धर्वपैशाचोरगराक्षसीः ॥ प्रायुङ्क्तशतशोदैत्यः कार्ष्णि र्व्यधमयत्सताः २३ निशातमसिमुद्यम्य सकिरीटंसकुण्डलम् ॥ शम्बरस्यशिरःकायात्ताम्रश्मश्र्वोजसाऽहरत् २४ आकीर्यमाणोदिविजैः स्तुवद्भिःकुसुमो त्करैः ॥ भार्ययाऽम्बरचारिण्या पुरींनीतोविहायसा २५ अन्तःपुरवरंराजल्ललनाशतसङ्कुलम् ॥ विवेशपत्न्यागगनाद्विद्युतेववलाहकः २६ तंदृष्ट्वाजल दश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥ प्रलम्बबाहुंताम्राक्षं सुस्मितंरुचिराननम् २७ स्वलङ्कृतमुखाम्भोजंनीलवक्रालकादिभिः ॥ कृष्णंमत्वास्त्रियोह्रीतानिलिल्यु

करतभयो २१ पत्थरनकी वर्षासूं पीड़ित ऐसे जो रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्नजी सो समस्त मायानकी नाश करनवारी सत्त्वगुणी जो अपनी माया है ताय बुलावतभये २२ पीछे शम्बरासुर है सो गुह्यक गन्धर्व पिशाच सर्प राक्षसनकी सैकरान माया छोड़तभयो ता समय श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नजी सब मायानको नाश करतभये २३ प्रद्युम्नजी पैनी तरवार उठायकै किरीट और कुण्डलसहित और रक्त दाढ़ी सहित जो शम्बरासुर को शीश है ताय बल करिकै धरतें काटतभये २४ स्तुति करते जे देवता हैं तिनने पुष्पनके ढेरनकी जिनपै वर्षा करी ऐसे प्रद्युम्नजी आकाश की विचरनवारी स्त्री ने आकाशमार्ग होयकै द्वारकापुरी में पहुँचाय दिये २५ हे राजन् परीक्षित् ! सैकरान स्त्री जामें रहैं ऐसो जो अन्तःपुर है तामें आकाश तें उतरिकै जैसे बिजुरी सहित मेघ आवै या प्रकार आवतभये २६ वर्षाकी घटानकी तुल्य सावरे रेशमी पीरे वस्त्रनकूं पहिरे लम्बी जिनकी भुजा अरुण जिनके नेत्र सुन्दर जिनकी मुसिकानि मनोहर जिनको मुख नीली टेढ़ी अलकावलीन सूं शोभायमान जिनको

मुखारविन्द ऐसे प्रद्युम्नजी कूं देखिकै श्रीकृष्ण आयेहैं यह मानिकै स्त्री लज्जितहोयकै जहां तहां छिपती भई २७। २८ कुछ स्त्री कोई विलक्षणता देखिकै श्रीकृष्ण नहीं हैं ऐसे जानिकै प्रसन्नहोइ कै आश्चर्य मानिकै स्त्रीन में श्रेष्ठ जो रतिहै तासहित जो प्रद्युम्नजी हैं तिनके पास आवतिभई २९ याके पीछे ता समय स्नेह करिकै स्तनन में दूध चुवै और नीले हैं कटाक्ष जाके मनोहर हैं वचन जाके ऐसे विदर्भ देश के राजाकी पुत्री रुक्मिणीहै सो नष्टभयो जो अपनो पुत्र है ताको स्मरण करतभई ३० मनुष्यन में श्रेष्ठ कमलकी तुल्यहैं नेत्र जाके ऐसो यह बालक कौन होहै और कौन स्त्रीने याकूं गर्भ में राख्यो है और याकूं यह कौन स्त्री प्राप्तभई है ३१ मेरो भी पुत्र नष्ट होयगयो सूतिकागृह में तें वाकूं कोई लैगयो है जो कदाचित् कहूं जीवतहोयगो तो याही की बराबरि होयगो और ऐसोई वाको रूप होयगो ३२ शार्ङ्ग है धनुष् जिनको ऐसे श्रीकृष्णकी तुल्यरूप याने कैसो पायो है याको स्वरूप और हाथ पावनकी चलनि बोलनि हँसनि चितवनि सब श्रीकृष्णकी समान हैं ३३

स्त्रनत्रह २८ अवधार्य्यशनैरीषद्वैलक्षण्येनयोषितः ॥ उपजग्मुःप्रमुदिताःसस्त्रीरत्नंसुविस्मिताः २९ अथतत्रासितापाङ्गी वैदर्भीवल्गुभाषिणी ॥ अस्म रत्स्वसुतंनष्टं स्नेहस्नुतपयोधरा ३० कोन्वयंनरवैदूर्यः कस्यवाकमलेक्षणः ॥ धृतःकयावाजठरे केयंलब्धात्वनेनवा ३१ ममचाप्यात्मजोनष्टो नीतोयः सूतिकागृहात् ॥ एतत्तुल्यवयोरूपोयदिजीवतिकुत्रचित् ३२ कथंत्वनेनसम्प्राप्तंसारूप्यंशार्ङ्गधन्वनः ॥ आकृत्याऽवयवैर्गत्यास्वरहासावलोकनैः ३३ सएव वाभवेन्नूनं योमेगर्भेधृतोऽर्भकः ॥ अमुष्मिन्प्रीतिरधिकावामःस्फुरतिमेभुजः ३४ एवंमीमांसमानायां वैदर्भ्यांदेवकीसुतः ॥ देवक्यानकदुन्दुभ्यामुत्तम श्लोकआगमत् ३५ विज्ञातार्थोऽपिभगवांस्तूष्णीमासजनार्दनः ॥ नारदोऽकथयत्सर्वंशम्बराहरणादिकम् ३६ तच्छ्रुत्वामहदाश्चर्य्यं कृष्णान्तःपुरयो षितः ॥ अभ्यनन्दन्बहूनब्दान्नष्टंमृतमिवाऽऽगतम् ३७ देवकीवसुदेवश्च कृष्णरामौतथास्त्रियः ॥ दम्पतीतौपरिष्वज्य रुक्मिणीचययुर्मुदम् ३८ नष्टंप्रद्यु म्नमायातमाकर्ण्यद्वारकौकसः ॥ अहोमृतइवाऽऽयातो बालोदिष्ट्येतिहाब्रुवन् ३९ यंवैमुहुःपितृसरूपनिजेशभावास्तन्मातरोयदभजन्रहरूढभावाः ॥

जो बालक मैंने गर्भ में धारण कर्यो हो निश्चय वह यहीहै यामें मेरी प्रीति बढ़ीहै और मेरी बाईभुजा फरकति है ३४ विदर्भ देशके राजाकी पुत्री रुक्मिणी या प्रकार विचार करैही इतने में उत्तम है यश जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र देवकी वसुदेव कू संगलैकै आवतभये ३५ पत्नी साहित पुत्र आयो है या बातकूं जनार्दन श्रीकृष्णचन्द्र जाने हे तथापि चुपहोतभये इतने में नारदजी आयकै शम्बरासुर हरिकै लैगयो समुद्रमें पटकि आयो तब मछरी निगलिगई याकूं आदिलैकै सब वृत्तान्त कहतभये ३६ कृष्णके अन्तःपुरकी स्त्री हैं सो बडो आश्चर्य श्रवण करिकै बहुत दिनन सू देखे नहीं मृतक जैसे जगदिके आवै या प्रकार आये जे प्रद्युम्नजी तिनकी प्रशसा करतिभई ३७ देवकी वसुदेव और श्रीकृष्ण बलदेव तथा और स्त्री हैं ते और रुक्मिणीजी स्त्री पुरुष जे प्रद्युम्न हैं तिनसूं मिलिके आनन्द कूं प्राप्त होतभये ३८ समस्तद्वारकावासी नष्टभये प्रद्युम्न कूं आये सुनिकै अहो बडो आश्चर्यहै मृतककी तुल्य यह बालक आवतभयो ऐसे कहत भये ३९ पिता जो श्रीकृष्ण हैं तिनकी बराबरि है स्वरूप जिनको ऐसे प्रद्युम्नजीमें हमारे पति हैं यह एकान्त में भाव जिनकूं भयो ऐसी प्रद्युम्नजीकी माता रुक्मिणीकू आदिलैकै श्रीकृष्णकी रानी हैं ते प्रद्युम्नजी को

सेवन करतभई यह कछु आश्चर्य्य नहीं है लक्ष्मी वास करै ऐसे जो श्रीकृष्ण तिनके पुत्र कामदेव तिनको मनमें स्मरणमात्रसूं मन चलायमान होइहै साक्षात् मूर्त्तिमान् के दर्शन करे तें स्त्री सेवनकरैं यामें कहा कहनो है ४० ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थेरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेप्रद्युम्नोत्पत्तिनिरूपणंनामपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ * ॥ * ॥

(षट्पञ्चाशत्तमेमिथ्याऽभियोगेमणिमाहरत् ॥ कन्याजाम्बवतःप्रापकृष्णःसत्राजितस्तदा १ पुत्रादिकामसौख्यस्यनिष्ठामुक्त्वाऽतिचञ्चलाम् ॥ अर्थस्यानर्थतामाहस्यमन्तहरणादिना २ छप्पनवें अध्याय में झूंठे कलङ्क में कृष्णजी जाम्बवान् सों मणि लाते भये और उसकी कन्या और सत्राजित् की कन्या कूं प्राप्त होते भये १ पुत्रादिकाम सुख की अत्यन्त चञ्चल निष्ठा कहकर स्यमन्तक मणिके हरणआदि सूं अर्थ की अर्थता कहते हैं २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! कियो है पाप जाने ऐसो सत्राजित् अपने पाप की निवृत्ति के अर्थ अपनी कन्या कूं स्यमन्तक

चित्रंनतत्खलुरमास्पदविम्बविम्बेकामेस्मरेऽक्षिविषयेकिमुतान्यनार्यः ४० इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेप्रद्युम्नोत्पत्तिनिरूपणंनामपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सत्राजितःस्वतनयां कृष्णायकृतकिल्बिषः ॥ स्यमन्तकेनमणिना स्वयमुद्यम्यदत्तवान् १ ॥ राजोवाच ॥ सत्राजितःकिमकरोद्ब्रह्मन् कृष्णस्यकिल्बिषम् ॥ स्यमन्तकःकुतस्तस्य कस्माद्दत्तासुताहरेः २ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आसीत्सत्राजितःसूर्योभक्तस्यपरमःसखा ॥ प्रीतस्तस्मैमणिप्रादात्सूर्यस्तुष्टःस्यमन्तकम् ३ सतंबिभ्रन्मणिंकण्ठे भ्राजमानोयथारविः ॥ प्रविष्टोद्वारकांराजंस्तेजसानोपलक्षितः ४ तंविलोक्यजनादूरात्तेजसामुष्टदृष्टयः ॥ दीव्यतेऽक्षैर्भगवते शशंसुःसूर्यशङ्किताः ५ नारायणनमस्तेऽस्तु शङ्खचक्रगदाधर ॥ दामोदरारविन्दाक्षगोविन्दयदुनन्दन ६ एषआयातिसविता त्वांदिदृक्षुर्जगत्पते ॥ मुष्णन्गभस्तिचक्रेण नृणांचक्षूंषितिग्मगुः ७ नन्वन्विच्छन्तितेमार्गंत्रिलोक्यांविबुधर्षभाः ॥ ज्ञात्वाऽद्यगूढंयदुषु द्रष्टुंत्वांयात्यजःप्रभो ८

नाम मणिके साथ श्रीकृष्णचन्द्र कूं देवे को उपाय करिके देतभयो १ अब राजा परीक्षित् कहे हैं हे शुकदेवजी ! सत्राजित् श्रीकृष्णचन्द्र को कहा अपराध करत भयो और स्यमन्तकमणि कहाँ तें आई और कौन कारण अपनी कन्या श्रीकृष्णचन्द्र कूं दीनी यह सब हमारे आगे वर्णन करो २ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं सत्राजित् सूर्य्य को भक्त परममित्र हो सूर्य्य प्रसन्न होय कै सन्तुष्ट होयकै सत्राजित् कूं स्यमन्तकमणि देत भये ३ सत्राजित् मणिकूं कण्ठ में पहिरि कै सूर्य्य के प्रकाशकी तुल्य प्रकाशमान होय कै द्वारकापुरी में आये ता समय हे राजन् परीक्षित् ! वाके तेज सूं सत्राजित् आवै है यह जानिबे में नहीं आवत भयो ४ तेज की चिकाचौंधी सूं मिची है दृष्टि जिनकी ऐसे जन हैं ते सत्राजित् कू दूरि तें आवत देखिकै राजा उग्रसेन की सभा में चौपरि खेलें जे श्रीकृष्णहैं तिनसूं यह सूर्य्य आवै है ऐसे शङ्कित होयकै कहतभये ५ हे नारायण ! हे शङ्ख चक्र गदा धारण करनवारे ! हे दामोदर ! हे कमलनेत्र ! हे गोविन्द ! हे यादवनकूं आनन्दके देनवारे ! तुम कूं नमस्कार है ६ हे जगत् के पति ! तुम्हारे दर्शन के लिये यह सूर्य्य आवै है तीक्ष्ण किरणन के समूह तें मनुष्यन के नेत्रन कूं चुरावत आवै है हे प्रभो ! ७ त्रिलोकी के देवतान में जे श्रेष्ठ हैं ते तु-

म्हारे मार्ग कूं ढूंढे हैं यादवन में तुमकूं छिप्यो जानिकै देखिवे के लिये सूर्य्य आवै है ८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्र अज्ञानी पुरुषन के वचन सुनिकै हँसिकै बोलत भये यह सूर्य्यदेव नहीं है मणि करिकै प्रकाशमान सत्राजित् आवै है ९ करे है मङ्गलोत्सव जामें ऐसो जो अपनो घर है तामें आय कै देवता के मन्दिर में सत्राजित् ब्राह्मणन तें पूजा कराय मणिकूं धरावत भयो १० हे प्रभो राजन् परीक्षित् ! वह मणि प्रतिदिन चार मनको भार ऐसे आठ भार सुवर्ण उगलैही और जहाँ वा मणि होइ ता देश में दुर्भिक्ष न परे है और अकालमृत्यु तथा अरिष्ट अर्थात् अमङ्गल नहीं होइ है सर्प नहीं काटे है मनुष्यन की देह में दुःख नहीं होय हैं और अशुभ नहीं होय हैं मायावी पुरुष वा देश में नहीं वसे हैं ११ एक समय यादवन के राजा उग्रसेन के लिये श्रीकृष्णचन्द्र ने मणि जाते माँगी ऐसो सत्राजित् लोभ के वशहोय के मणि कूं न देत भयो श्रीकृष्ण कूं नाहीं कैसे करू यहू न विचारत भयो १२ बडो है प्र-

श्रीशुकउवाच ॥ निशम्यबालवचनं प्रहस्याम्बुजलोचनः ॥ प्राहनासौरविर्देवः सत्राजिन्मणिनाज्वलन् ९ सत्राजित्स्वगृहंश्रीमत् कृतकौतुकमङ्गलम् ॥
प्रविश्यदेवसदने मणिंविप्रैर्न्यवेशयत् १० दिनेदिनेस्वर्णभारानष्टौसमृजतिप्रभो ॥ दुर्भिक्षमार्य्यरिष्टानि सर्पाधिव्याधयोऽशुभाः ॥ नसंन्तिमायिनस्तत्र
यत्राऽऽस्तेऽभ्यर्चितोमणिः ११ सयाचितोमणिंक्वापि यदुराजायशौरिणा ॥ नैवार्थकामुकःप्रादाद्याच्ञाभङ्गमतर्कयन् १२ तमेकदामणिंकण्ठे प्रतिमुच्यमहा
प्रभम् ॥ प्रसेनोहयमारुह्य मृगयांव्यचरद्वने १३ प्रसेनंसहयंहत्वा मणिमाच्छिद्यकेसरी ॥ गिरिंविशञ्जाम्बवता निहतोमणिमिच्छता १४ सोऽपिचक्रेकुमा
रस्य मणिंक्रीडनकंबिले ॥ अपश्यन्भ्रातरंभ्राता सत्राजित्पर्यतप्यत १५ प्रायःकृष्णेननिहतोमणिग्रीवोवनंगतः ॥ भ्रातामभेतितच्छ्रुत्वा कर्णेकर्णेऽज
पञ्जनाः १६ भगवांस्तदुपश्रुत्य दुर्यशोलिप्तमात्मनि ॥ मार्ष्टुंप्रसेनपदवीमन्वपद्यतनागरैः १७ हतंप्रसेनमश्वञ्च वीक्ष्यकेसरिणावने ॥ तञ्चाद्रिपृष्ठे
निहतमृक्षेणददृशुर्जनाः १८ ऋक्षराजबिलंभीममन्धेनतमसावृतम् ॥ एकोविवेशभगवानवस्थाप्यबहिःप्रजाः १९ तत्रदृष्ट्वामणिश्रेष्ठं बालक्रीडनकंकृतम् ॥

काश जाको ऐसी मणिकूं एकसमय सत्राजित् को भय्या प्रसेन कण्ठ में पहिरि कै घोड़ा पै चढ़िकै वन में शिकार खेलिवे कू जात भयो १३ घोड़ा सहित जो प्रसेन है ताय मारि कै मणि कूं लैके पर्व्वत में जाय जो सिंह है ताय मणि लेवे की इच्छा जाकूं ऐसो जाम्बवान् ऋक्ष मारत भयो १४ जाम्बवान् अपने बिल में जाय कै मणि को खिलौना करत भयो सत्राजित् अपने भय्या प्रसेन कू शिकार खेलि कै वनमें ते नहीं आयो देखिकै शोच करत भयो १५ मणि कण्ठ में पहिरि कै मेरो भय्या वन में गयो हो और या मणि पै कृष्ण को दांत हो यातें बहुधा यह जानि पड़े है भय्या कूं कृष्ण ने मारयो या प्रकार सत्राजित् के मुख तें श्रवण करिकै सम्पूर्ण मनुष्य कान कान में कहत भये १६ भगवान् श्रीकृष्ण अपने कूं लग्यो जो दुर्यशरूप कलङ्क है ताय श्रवण करिकै द्वारकावासीन कू प्रसेन के खोज ढूंढिवे कू जात भये १७ वनमें सिंह ने मारयो जो प्रसेन और घोड़ा ताय देखि कै और आगे पर्वत के ऊपर ऋक्ष ने मारयो जो सिंह है ताय सपस्त द्वारकावासी मनुष्य देखत भये १८ अंधेरो जामें छाय रह्यो बड़ो भयानक जो ऋक्षराज जाम्बवान् को बिल है तामें सब प्रजा कू बाहिर ठाढ़ी करिकै श्रीकृष्णचन्द्र आपही भीतर जात भये १९

तहाँ बिलमें बालक के खेलिवे कूं खिलौना रही ऐसी जो मणिहै ताय देखिकै मणिके लेवे को मनोरथ करिकै बालक के पास ठाढ़े होतभये २० प्रथम कबू देखे नहीं ऐसे मनुष्य श्रीकृष्ण-
चन्द्र कूं डरपे कीसी नाई धाइ पुकारतिभई वलीनमें बली जाम्बवान् ऋक्ष धाइकी पुकार श्रवण करिकै क्रोधितहोय सम्मुख दौरिकै आवत भयो २१ क्रोधी जाम्बवान् श्रीकृष्ण के प्रभाव कूं
नहीं जानिकै और साधारण पुरुष मानिकै अपने स्वामी श्रीकृष्णके संग युद्ध करत भयो २२ परस्पर जीतिवे की है इच्छा जिनकों ऐसे श्रीकृष्ण और जाम्बवान् हैं तिनकों शस्त्र पत्थर वृक्ष भुजा
इनसूं बड़ो भयानक युद्ध होत भयो जैसे मास के लिये दो शिकरा पक्षी लड़ेहैं तैसे २३ वज्रपातकी तुल्य कठोर जे मुष्टि हैं तिनसूं खेदरहित अट्ठाईस दिन राति परस्पर युद्ध होत भयो २४
कृष्णचन्द्र की मुष्टिन के परिवे तें ढीली भई है नस जाकी और घट्योहै बल जाको पसीना अंगमें जाके आयगयो ऐसो जाम्बवान् बड़ो आश्चर्य मानिकै बोलत भयो २५ सम्पूर्ण प्राणीन

हृत्तुंकृतमतिस्तस्मिन्नानस्थेऽर्भकान्तिके २० तमपूर्वंनरंदृष्ट्वाधात्रीचुक्रोशभीतवत्॥ तच्छ्रुत्वाऽभ्यद्रवत्क्रुद्धोजाम्बवान्बलिनांवरः २१ सवैभगवतातेनयुयु
धेस्वामिनाऽऽत्मनः॥ पुरुषंप्राकृतंमत्वाकुपितोनानुभाववित् २२ द्वन्द्वयुद्धंसुतुमुलमुभयोर्विजिगीषतोः॥ आयुधाश्मद्रुमैर्दोर्भिःक्रव्यार्थेश्येनयोरिव २३ आ
सीत्तदष्टाविंशाहमितरेतरमुष्टिभिः ॥ वज्रनिष्पेषपरुषैरविश्रममहर्निशम् २४ कृष्णमुष्टिविनिष्पातनिष्पिष्टाङ्गोरुबन्धनः ॥ क्षीणसत्त्वःस्विन्नगात्रस्तमाहा
तीवविस्मितः २५ जानेत्वांसर्वभूतानांप्राणओजःसहोबलम्॥ विष्णुंपुराणपुरुषंप्रभविष्णुमधीश्वरम् २६ त्वंहिविश्वसृजांस्रष्टा सृज्यानामपियच्चसत्॥
कालःकलयतामीशःपरआत्मातथाऽऽत्मनाम् २७ यस्येषदुत्कलितरोषकटाक्षमोक्षैर्वर्त्मादिशत्क्षुभितनक्रतिमिङ्गिलोऽब्धिः॥ सेतुःकृतःस्वयशउज्ज्वलिता
लङ्कारक्षःशिरांसिभुविपेतुरिषुक्षतानि २८ इतिविज्ञातविज्ञानमृक्षराजानमच्युतः॥ व्याजहारमहाराज भगवान्देवकीसुतः २९ अभिमृश्यारविन्दाक्षः
पाणिनाशङ्करेणतम्॥ कृपयापरयाभक्तंप्रेमगम्भीरयागिरा ३० मणिहेतोरिहप्राप्तावयमृक्षपतेबिलम् ॥ मिथ्याऽभिशापंप्रमृजन्नात्मनोमणिनाऽमुना ३१

के जे प्राण तिनमें जो बल है और सहोबल अर्थात् इन्द्रिय हृदय देह इत्यादिकनको बल तुमहौ यह मैं जानूं हूं काहे ते विष्णु भगवान् तुमहौ पुराणपुरुषहौ कृपालुहौ सबके ईश्वर हौ २६
विश्व के सृजनवारे जे ब्रह्मादिक हैं तिनके तुम निश्चय निमित्त कारणहौ और उत्पत्तिके योग्य जे पदार्थ हैं तिनके उपादान कारण हौ और सबके प्रेरणवारे हैं तिनके ईश्वर कालरूप तुम
हौ तथा आत्मा जे जीव हैं तिनके उत्कृष्ट आत्माहौ २७ विष्णु पुराण पुरुषहौ याही तें मेरे इष्टदेव रघुनाथहौ यह कहे हैं जिन रघुनाथजी को कछु एक प्रकाशो जो क्रोध है तासूं जो
कटाक्षन को छुटिबो है तिनसूं दुःखितहैं मगर और बड़े बड़े ग्राह जामें ऐसो समुद्र मार्ग देतभयो और जिन रामचन्द्रने अपनो यश प्रकट करिबेके लिये पुल बांध्यो लङ्का जराई प्रमाण करिकै राक्षस
रावण के शिर काटिकै पृथ्वी में डारतभये सो तुम मेरे स्वामी रघुनाथहौ यह मैं जानूं हूं २८ या प्रकार भयोहै ज्ञान जाकूं ऐसो जो ऋक्षराज जाम्बवान्है तासूं हे राजन् परीक्षित्! देवकीके पुत्र
अच्युतभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये २९ कमल से हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुखको देनवारो जो अपनो हाथहै ताय परमकृपाकरिकै भक्त जो जाम्बवान् है ताकेऊपर धरिकै प्रेमगर्भित

वाणी करिके बोलतभये ३० हे ऋक्षन के राजा जाम्बवान् ! हम मणि लेवे के कारण तेरे यहां विलमें आये हैं मिथ्या कलङ्क हमकूं लग्यो है ताय मणि लैजायके दूरि करेंगे ३१ या प्रकार जाते
कही ऐसो जाम्बवान् बड़े आनन्दपूर्वक अपनी कन्याजाम्बवती ताय मणिसहित पूजा करिवे के निमित्त श्रीकृष्णकूं देतभयो ३२ सङ्गगये जे द्वारकावासी मनुष्यहैं ते जाम्बवान्के विलमें घसे जे श्री
कृष्ण हैं तिनको निकसिवो नहीं देखिके वारह दिन प्रतीक्षा करिकै दुःखितहोइ द्वारकापुरी में आवत भये ३३ विलमें तें श्रीकृष्णचन्द्र निकसे नहीं यह बात श्रवण करिकै देवकी रुक्मिणी वसुदेव
और मित्रजन तथा ज्ञाति के मनुष्य सम्पूर्ण शोच करतभये ३४ सम्पूर्ण द्वारकावासी दुःखितहोयकै सत्राजित्कूं गारी देतसन्ते श्रीकृष्णचन्द्रकी प्राप्ति के निमित्त महामाया जो दुर्गादेवी है ताकी पूजा
करतभये ३५ देवीकी पूजा करिवे तें श्रीकृष्णचन्द्रकूं देखेंगे याप्रकार द्वारकावासीनकूं देवीने आशीर्वाद दियो तब सिद्धभयो है मनोरथ जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्त्री कूं संगलैके द्वारकावासीन

इत्युक्तःस्वांदुहितरं कन्यांजाम्बवतींमुदा ॥ अर्हणार्थंसमणिना कृष्णायोपजहारह ३२ अदृष्ट्वानिर्गमंशौरेः प्रविष्टस्यबिलंजनाः ॥ प्रतीक्ष्यद्वादशाहानिदुः
खिताःस्वपुरंययुः ३३ निशम्यदेवकीदेवी रुक्मिण्यानकदुन्दुभिः ॥ सुहृदोज्ञातयोऽशोचन् बिलात्कृष्णमनिर्गतम् ३४ सत्राजितंशपन्तस्ते दुःखिताद्वार
कौकसः ॥ उपतस्थुर्महामायां दुर्गांकृष्णोपलब्धये ३५ तेषांतुदेव्युपस्थानात्प्रत्यादिष्टाऽऽशिषासच ॥ प्रादुर्बभूवसिद्धार्थःसदारोहर्षयन्हरिः ३६ उपलभ्य
हृषीकेशं मृतंपुनरिवाऽऽगतम् ॥ सहपत्न्यामणिग्रीवं सर्व्वेजातमहोत्सवाः ३७ सत्राजितंसमाहूय सभायांराजसन्निधौ ॥ प्राप्तिंचाख्यायभगवान् मणित
स्मैन्यवेदयत् ३८ सचातिव्रीडितोरत्नं गृहीत्वाऽवाङ्मुखस्ततः ॥ अनुतप्यमानोभवनमगमत्स्वेनपाप्मना ३९ सोऽनुध्यायंस्तदेवाघंबलवद्विग्रहाकुलः ॥
कथंमृजाम्यात्मरजःप्रसीदेद्वाऽच्युतःकथम् ४० किंकृत्वासाधुमह्यंस्यान्नशपेद्वाजनोयथा ॥ अदीर्घदर्शनंक्षुद्रं मूढंद्रविणलोलुपम् ४१ दास्येदुहितरंतस्मै
स्त्रीरत्नंरत्नमेवच ॥ उपायोऽयंसमीचीनस्तस्यशान्तिर्नचान्यथा ४२ एवंव्यवसितोबुद्ध्या सत्राजित्स्वसुतांशुभाम् ॥ मणिंचस्वयमुद्यम्य कृष्णायोपजहा

कूं आनन्द देत प्रकट होतभये ३६ जैसे कोई मृतक पुरुष फेरि जगदि कै आवै है ऐसे मणिकूं पहिरिकै स्त्री कूं संग लैके आये जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें प्राप्तहोयकै समस्त द्वारकावासीनके वडो
आनन्द होतभयो ३७ सभामें राजा उग्रसेनके पास सत्राजित्कूं बुलायकै जाम्बवान् ऋक्षपै ते मणि लाये हैं यह कहिकै भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सत्राजित् कूं देतभये ३८ सत्राजित् मणिकूं लैकै
अतिलज्जित होय मुख नीचो करिकै अपने पाप तें पश्चात्ताप करत घरकूं जातभयो ३९ बलवान् श्रीकृष्णसूं जो विरोध पर्यो तासूं व्याकुल जो सत्राजित् है सो अपने पूर्व अपराधकूं रात्रिदिन
विचारकरत अपने पापकूं कैसे दूरिकरूं और कैसे अच्युत भगवान् प्रसन्नहोयँ ऐसे विचार करतभयो ४० कौन कर्म्म करे तें मेरो भलोहोइ मैने विना विचारे श्रीकृष्ण कूं दोष लगायदीनो मैं कृपण
मन्दबुद्धि हूं द्रव्यको लोभी हूं अब मोकूं जैसे प्राणी बुरो न कहैं ऐसो कोई कार्य्य करूंगो यह विचार करतभयो ४१ या प्रकार विचार करिकै अब उपाय निश्चय करेहै श्रीकृष्णचन्द्र कूं मैं
अपनी कन्यादेउँगो और पीछे तें भेंट में मणिदूंगो यही सुन्दर उपाय है और तरह मेरो अपराधदूरि न होयगो याप्रकार बुद्धिसूं निश्चय करिकै सत्राजित् मंगलरूप जो अपनी कन्याहै ताय और

मणिकूं आपही उपाय करिकै श्रीकृष्णकूं देतभयो ४२।४३ सुन्दर स्वभाव रूप उदारता ये गुण जामें विद्यमान और कृतवर्म्मा ते आदि लैकै यादवन ने मांगी ऐसी जो सत्यभामा है ताय भगवान्
श्रीकृष्णचन्द्र विधिपूर्वक व्याहतभये ४४ हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्णचन्द्र कहतभये हमकूं मणि नहीं चाहिये सूर्य्यभक्त जो तुमहौ तिनहींके मणिरहै और याको जो सुवर्ण होय ताय हमारे भिजवाय
दियोकरो—तुम्हारे पुत्र नहींहै तुम्हारो जो धनहै सो हमारोही है यह भगवान्को गूढ़अभिप्रायहै ४५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेपट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥
(सप्तपञ्चाशत्तमेतुपुनःशतधनुर्वधे॥ प्राप्तस्यदुर्यशोमार्ष्टिंकृष्णोक्रूराद्धृतान्मणेः १ अक्रूरमुररीकृत्य मणेःपात्रमयाच्युतः ॥ उपामन्त्र्यतमेकान्तेसरामोऽगाद्गजाह्वयम् २ सत्तावनवें अध्याय में फिर
शतधन्वा के वधमें कृष्णजी अक्रूरजीसों मणि लेकर प्राप्तहुये कलङ्कको दूर करतेभये १ अक्रूर को कृष्णजी मणिका पात्र अंगीकारकर उनसे एकान्तमें सलाहकर वलदेवजी समेत हस्तिनापुर जाते

रह ४३ तांसत्यभामांभगवानुपयेमेयथाविधि ॥ बहुभिर्याचितांशीलरूपौदार्य्यगुणान्विताम् ४४ भगवानाहनमणिं प्रतीच्छामोवयंनृप ॥ तवाऽऽस्तांदेव
भक्तस्य वयञ्चफलभागिनः ४५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेपट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥ ❀ ॥
श्रीशुकउवाच ॥ विज्ञातार्थोऽपिगोविन्दो दग्धानाकर्ण्यपाण्डवान् ॥ कुन्तीञ्चकुल्यकरणे सहरामोययौकुरून् १ भीष्मंकृपंसविदुरं गान्धारींद्रोणमे
व च ॥ तुल्यदुःखौचसङ्गम्य हाकष्टमितिहोचतुः २ लब्ध्वैतदन्तरंराजञ्छतधन्वानमूचतुः ॥ अक्रूरकृतवर्म्माणौ मणिःकस्मान्नगृह्यते ३ योऽस्मभ्यंसम्प्रति
श्रुत्यकन्यारत्नंविगर्ह्यनः ॥ कृष्णायादान्नसत्राजित्कस्माद्भ्रातरमन्वियात् ४ एवंभिन्नमतिस्ताभ्यांसत्राजितमसत्तमः ॥ शयानमवधील्लोभात्सपापःक्षीण
जीवितः ५ स्त्रीणांविक्रोशमानानां क्रन्दन्तीनामनाथवत् ॥ हत्वापशून्सौनिकवन्मणिमादायजग्मिवान् ६ सत्यभामाचपितरं हतंवीक्ष्यशुचाऽर्पिता ॥
व्यलपत्ताततातेतिहाहतास्मीतिमुह्यती ७ तैलद्रोण्यांमृतंप्रास्य जगामगजसाह्वयम् ॥ कृष्णायविदितार्थाय तप्ताऽऽचख्यौपितुर्वधम् ८ तदाकर्ण्येश्वरौ

भये २) पाण्डव लाक्षागृह तें विल में होयकै बाहिर निकसिगये या प्रकार जानेहैं तथापि पाण्डवनकूं जरे सुनिकै और कुन्तीकू जरी सुनिकै कुलोचित व्यवहार करिवेके लिये वलदेवजीकूं संग
लैकै श्रीकृष्णचन्द्र कुरुदेशन कूं जातभये १ भीष्मपितामह विदुरसहित कृपाचार्य्य गान्धारी द्रोणाचार्य्य इनसूं मिलिकै बराबरि है दुःख जिनके ऐसे कृष्ण वलदेव हैं ते हाय पाण्डव जरिगये
वड़ो कष्टभयो या प्रकार कहिकै बोलतभये २ कछु एक दिननके पश्चात् हे राजन् परीक्षित्! अक्रूर और कृतवर्म्मा ये दोनों शतधन्वा तें बोलतभये सत्राजित् तें मणि क्यों न छिनाय लेउ—जो
सत्राजित् अपनी कन्या रत्न हमकूं त्यागिकै कृष्णकूं व्याहिदीनी वह सत्राजित् भय्या प्रसेनके पीछे क्यों नहीं जाय अर्थात् मरे क्यों नहीं ३।४ या प्रकार अक्रूर और कृतवर्म्माने बहकाईहै वुद्धि जाकी
क्षीणभयो है जीवन जाको ऐसो पापी असाधु जो शतधन्वा है सो शय्यापै सोवते सत्राजित् को शिर काटतभयो ५ स्त्री जे हैं ते अनाथकी तुल्य पुकारि पुकारिकै रोदन कर्‍यो करी कसाई जैसे पशून
कूं मारै ऐसे शतधन्वा सत्राजित्कूं मारिकै जातभयो ६ सत्यभामा अपने पिता सत्राजित् कूं मर्‍यो देखिकै अहो पिता! अहो पिता! हाय मैं मरी या प्रकार मोहित होयकै विलाप करतिभई ७

मृतक जो पिता को देह है ताकूं तैलकी कोठी में राखिकै सत्यभामा हस्तिनापुर कूं जाति भई सत्राजित्कूं शतधन्वाने मार्यो यह बात श्रीकृष्णचन्द्रने जानिलीनी तथापि मेरो पिता शतधन्वा
ने मार्यो यह बात दुःखित होय कै कहति भई ८ हे राजन् परीक्षित् ! ईश्वर जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं ते सत्राजित् को मरण श्रवण करिकै मनुष्यलीला में आयकै अहो हमकूं बडो कष्ट है या प्रकार
कहिकै आखिन में तें आसू लायकै विलाप करतभये ९ सत्यभामा और भय्या बलदेवजी इनकूं सङ्गलैकै श्रीकृष्णचन्द्र हस्तिनापुरतें द्वारकापुरी में आयकै शतधन्वाके मारिवे को और वातें मणि
लेवे को प्रारम्भ करतभये १० श्रीकृष्ण ने मेरे मारिवे को उपाय कियोहै यह बात शतधन्वा जानिकै प्राण बचायवे के लिये भयभीतहोयकै कृतवर्म्मातें सहाय के निमित्त कहतभयो तब वह कृतवर्म्मा
बोलत भयो ११ ईश्वर जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनको अपराध मैं न करूंगो कृष्ण बलदेव को अपराध करिकैं कौनको कल्याण होयगो १२ या कृष्ण ते द्वेष करिकै कंस लक्ष्मी ते भ्रष्ट होयकै

राजन्ननुसृत्यनृलोकताम् ॥ अहोनःपरमंकष्टमित्यस्राक्षौविलेपतुः ९ आगत्यभगवांस्तस्मात्सभार्य्यःसाग्रजःपुरम् ॥ शतधन्वानमारेभे हन्तुंहर्त्तुमणिंततः
१० सोऽपिकृष्णोद्यमंज्ञात्वा भीतःप्राणपरीप्सया ॥ साहाय्येकृतवर्म्माणमयाचतसचाब्रवीत् ११ नाहमीश्वरयोःकुर्य्यां हेलनंरामकृष्णयोः ॥ कोनुक्षेमाय
कल्पेततयोर्वृजिनमाचरन् १२ कंसःसहानुगोऽपीतोयद्द्वेषात्त्याजितःश्रिया ॥ जरासन्धःसप्तदशसंयुगाद्विरथोगतः १३ प्रत्याख्यातःसचाक्रूरं पार्ष्णि
ग्राहमयाचत ॥ सोऽप्याहकोविरुध्येतविद्वानीश्वरयोर्बलम् १४ यइदंलीलयाविश्वं सृजत्यवतिहन्तिच ॥ चेष्टांविश्वसृजोयस्यनविदुर्मोहिताऽजया १५
यःसप्तहायनःशैलमुत्पाट्यैकेनपाणिना ॥ दधारलीलयाबालउच्छिलीन्ध्रमिवार्भकः १६ नमस्तस्मैभगवते कृष्णायाद्भुतकर्म्मणे ॥ अनन्तायादिभूतायकू
टस्थायाऽऽत्मनेनमः १७ प्रत्याख्यातःसतेनापिशतधन्वामहामणिम् ॥ तस्मिन्न्यस्याश्वमारुह्य शतयोजनगंययौ १८ गरुडध्वजमारुह्यरथंरामजनार्दनौ ॥
अन्वयातांमहावेगैरश्वैराजन्गुरुद्रुहम् १९ मिथिलायाउपवने विसृज्यपतितंहयम् ॥ पद्भ्यामधावत्संत्रस्तः कृष्णोऽप्यन्वद्रवद्रुषा २० पदातिर्भगवांस्त

भय्यान सहित मरिगयो और जरासन्ध सत्रह वार युद्धमें हारिकै अन्तमें विरथ होयकै गयो १३ कृतवर्म्मा ने शतधन्वा तें मने करदीनी तब अक्रूर तें सहाय करिवे के लिये कहत भयो तब
अक्रूरहू बोलतभये ईश्वर जो श्रीकृष्णहैं तिनके पराक्रम कू जानिकै कौन पुरुष उनतें विरोध करैगो १४ जो ईश्वर लीला करिकै या विश्वकी उत्पत्ति पालन नाशकरै है और माया सूं मोहित
होयकै उनकी चेष्टाकूं ब्रह्मादिक नहीं जाने हैं १५ जो सातवर्ष की अवस्था में श्रीकृष्णचन्द्र एकहाथसूं गोवर्द्धन पर्व्वतकूं उखारिकै जैसे बालक छत्तौनाकूं उठाय लेइहै ऐसे उठावतभये १६ अद्भुतहै
कर्म्म जिनके ऐसे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र तिनके अर्थ नमस्कारहै अन्त जिनकौ नहीं सबके आदिकारण निर्विकार सबके आत्मा तिनकूं नमस्कारहै १७ या प्रकार अक्रूर ने जब नाहीं करी तब
शतधन्वा मणिकूं अक्रूर के पास धरिकै चार सौ कोस चलै ऐसे घोडापै चढिकै भाजतभयो १८ राम और श्रीकृष्णहू ते गरुड़के छापकी है ध्वजा जामें ऐसो जो रथहै तामें सवारहोयकै शीघ्रगामी
जे घोडाहैं तिन करिकै हे राजन् परीक्षित् ! श्वशुरको मारनवारो जो शतधन्वाहै ताके पीछे दौरत भये १९ शतयोजनतें अधिक न चलिसकै ऐसो जो घोड़ाहै सो मिथिलापुरीके बाग में गिरगो ताय

त्यागिकै भयभीत होयकै पाव प्यादो भाजतभयो और श्रीकृष्णकूं क्रोध करिकै पीछे दौरतभये २० पांव प्यादो जो शतधन्वा है ताकूं पांवप्यादे श्रीकृष्ण भगवान् दौरिकै पकरिकै तीक्ष्णधारके चक्र सूं शतधन्वा को शिर काटिकै वाके वस्त्रन में मणिकूं ढूंढतभये २१ नहीं मिली है मणि जिनकूं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बलदेवजीके पास आयकै कहतभये देखो शतधन्वाकूं वृथाही मार्यो वापै मणि नहीं निकसी २२ ताके पीछे बलदेवजी कहतभये शतधन्वा काहू पुरुषके पास मणिकूं धरि आयो है वा पुरुष कूं ढूंढ़ो और तुम द्वारकाकूं जावो २३ श्रीकृष्ण सब बातकूं जाने हैं मणि को मोतें छिपाउ कियो है यह मानिकै बलदेवजी मनमें क्रोध करिकै बोलतभये याको अभिप्राय यह है कि द्रव्य ऐसो निषिद्ध पदार्थ है याके लिये श्रीकृष्ण बलदेवजी को मन बिगरिगयो तौ मनुष्यनकी कहा कथा है मेरो अतिप्रिय विदेह देशको राजा बहुलाश्व है ताय देखिवे कूं जाऊंगो हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार श्रीकृष्ण तें कहिकै यादवनकूं आनन्द देनवारे बलदेवजी मिथिलापुरीमें प्रवेश

स्य पदातिस्तिग्मनेमिना ॥ चक्रेणशिरउत्कृत्य वाससोर्व्यचिनोन्मणिम् २१ अलब्धमणिरागत्य कृष्णआहाग्रजान्तिकम् ॥ वृथाहतःशतधनुर्मणिस्त त्रनविद्यते २२ ततआहबलोनूनं समणिःशतधन्वना ॥ कस्मिंश्चित्पुरुषेन्यस्तस्तमन्वेषपुरंव्रज २३ अहंविदेहमिच्छामि द्रष्टुंप्रियतमंमम ॥ इत्युक्त्वामिथि लांराजन्विवेशयदुनन्दनः २४ तंदृष्ट्वासहसोत्थाय मैथिलःप्रीतमानसः ॥ अर्हयामासविधिवदर्हणीयंसमर्हणैः २५ उवासतस्यांकतिचिन्मिथिलायांसमा विभुः ॥ मानितःप्रीतियुक्तेन जनकेनमहात्मना ॥ ततोऽशिक्षद्गदांकाले धार्त्तराष्ट्रःसुयोधनः २६ केशवोद्वारकामेत्य निधनंशतधन्वनः ॥ अप्राप्तिंचमणेः प्राह प्रियायाःप्रियकृद्विभुः २७ ततःसकारयामास क्रियाबन्धोर्हतस्यवै ॥ साकंसुहृद्भिर्भगवान् यायाःस्युःसाम्परायिकाः २८ अक्रूरःकृतवर्म्माच श्रुत्वाशत धनोर्वधम् ॥ व्यूषतुर्भयवित्रस्तौ द्वारकायाःप्रयोजकौ २९ अक्रूरेप्रोषितेऽरिष्टान्यासन्वैद्वारकौकसाम् ॥ शारीरामानसास्तापामुहुर्दैविकभौतिकाः ३० इ त्यङ्गोपदिशन्त्येके विस्मृत्यप्रागुदाहृतम् ॥ मुनिवासनिवासेकिं घटेतारिष्टदर्शनम् ३१ देवेऽवर्षतिकाशीशः श्वफल्कायागतायवै ॥ स्वसुतांगान्दिनीं

करतभये २४ प्रसन्न है मन जाको ऐसो मिथिलापुरी को राजा बलदेवजीकूं आये देखिकै शीघ्र उठिकै पूजन करिवे योग्य जे बलदेवजी हैं तिनकी पूजनकी सामग्रीनसूं पूजा करतभयो २५ ता मिथिलापुरी में समर्थ बलदेवजी कितनेक वर्ष वास करतभये प्रीतियुक्त महात्मा जो जनक है तातें सत्कार जिनने पायो ऐसो धृतराष्ट्र को पुत्र दुर्योधन सो बलदेवजी सूं गदा चलायवो सीखत भयो २६ प्रिय कार्य्य के करनवारे समर्थ केशव भगवान् द्वारकापुरी में आयकै शतधन्वाको नाश और मणिकी अप्राप्ति है ताय प्यारी जो सत्यभामा है तासूं कहतभये २७ ताके पीछे भगवानश्री-कृष्णचन्द्र अपने सुहृदनकूं सगलैकै मृतक सत्राजित् की परलोककी साधन जे क्रिया हैं तिनैं करावतभये २८ सत्राजित् तें मणिके हरिलेने में शिक्षा करनवारे जे अक्रूर और कृतवर्म्मा है ते शतधन्वा को मरण सुनिकै श्रीकृष्णसूं भयभीत होयके द्वारकापुरी तें भाजतभये २९ द्वारका तें अक्रूर कू भिजवाय दियो ता समय द्वारकावासीनकूं देवता और मनुष्य ये हैं कारण जिनके ऐसे जे शरीर के मनके ताप है ते और अरिष्ट है ते वारंवार द्वारकापुरी में होनभये ३० हे राजन् परीक्षित्! कोई एक ऋषि हैं ते प्रथम श्रीकृष्ण की महिमा कही है ताकूं फेरि कहे हैं मुनिनको है वास जिनमें ऐसे

श्रीकृष्णचन्द्र या द्वारकापुरी में रहैं तहां दुःखहोई यहबात कहा बनेहै ३१ या प्रकार दूषित करिकै फेरि और घ्यापिनको मत कहे हैं एकसमय इन्द्र जब न वर्षो तब काशीको राजा अपनी कन्या गान्दिनी कूं प्राप्तभये जो श्वफल्क हैं तिनें देतभयो तब काशी के देशन में मेघ वर्षतभयो ३२ पिता श्वफल्क की तुल्य है प्रभाव जाको ऐसो अक्रूर जहां जहां रहै तहां तहा इन्द्र वर्षाकरै और ता देश में प्राणीनकूं खेद नहीं होय है मरी नहीं परे है ३३ या प्रकार वृद्धन कों वचन सुनिकै केवल अक्रूरही यहां ते गयो सो नहीं मणिहूगई यहबात श्रवण करि निश्चय करिकै अक्रूर कूं काशीते बुलाय कै श्रीकृष्णचन्द्र बोलतभये ३४ अक्रूरकी पूजाकरिकै हे काका अक्रूर ! याप्रकार सम्बोधन दैकै प्यारी प्यारी बात कहिकै सब बिश्व के जाननहारे अक्रूर के मनकी जानिकै श्रीकृष्णचन्द्र मुसिकाय के बोलत भये ३५ हे दानन के पति अक्रूर ! शतधन्वा स्यमन्तकमणि तुम्हारे पास धरिगयोहै सो तुम्हारे पास है यह हम पहिले तेही जाने हैं ३६ सत्राजित् के पुत्र नहीं याते जाकू पिण्ड

प्रादात्ततोऽवर्षत्स्मकाशिषु ३२ तत्सुतस्तत्प्रभावोऽसावक्रूरोयत्रयत्रह ॥ देवोऽभिवर्षतेतत्रनोपतापानमारिकाः ३३ इतिवृद्धवचःश्रुत्वानैतावदिहकारणम् ॥ इतिमत्वासमानाय्यप्राहाक्रूरंजनार्दनः ३४ पूजयित्वाऽभिभाष्यैनंकथयित्वाप्रियाःकथाः ॥ विज्ञाताऽखिलचित्तज्ञःस्मयमानउवाचह ३५ ननुदानपतेन्यस्तस्त्वय्यास्तेशतधन्वना ॥ स्यमन्तकोमणिःश्रीमान्विदितःपूर्वमेवनः ३६ सत्राजितोऽनपत्यत्वाद्गृह्णीयुर्दुहितुःसुताः ॥ दायंनिनीयापःपिण्डान्विमुच्यर्णचशेषितम् ३७ तथाऽपिदुर्धरस्त्वन्यैस्त्वय्यास्तांसुव्रतेमणिः ॥ किन्तुमामग्रजःसम्यङ्नप्रत्येतिमणिंप्रति ३८ दर्शयस्वमहाभाग बन्धूनांशान्तिमावह ॥ अव्युच्छिन्नामखास्तेऽद्यवर्त्तन्तेरुक्मवेदयः ३९ एवंसामभिरालब्धःश्वफल्कतनयोमणिम् ॥ आदायवाससाच्छन्नन्ददौसूर्य्यसमप्रभम् ४० स्यमन्तकंदर्शयित्वाज्ञातिभ्योरजआत्मनः ॥ विमृज्यमणिनाभूयस्तस्मैप्रत्यर्प्पयत्प्रभुः ४१ यस्त्वेतद्भगवतईश्वरस्यविष्णोर्वीर्याढ्यंवृजिनहरंसुमङ्गलञ्च ॥ आख्यानंपठतिशृणोत्यनुस्मरेद्वादुष्कीर्तिंदुरितमपोह्ययातिशान्तिम् ४२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

जलदान दैकै ऋण चुकायकै शेष धन रहेगो ताय वाकी कन्या के पुत्र लेइंगे यह शास्त्र की आज्ञाहै ३७ सुन्दरहै व्रत जिनको ऐसे हे अक्रूर! तुम हमतें कदाचित् न कहो तथापि हम जानैहैं मणि और पै नहीं रहिसकै तुम्हारे पास है तहा अक्रूरजी कहे हैं हमारे पास है तुम्हें कहा प्रयोजनहै तब श्रीकृष्ण कहे हैं बड़े भय्या बलदेवजी या मणिके पीछे मेरो विश्वास नहीं करे हैं ३८ श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे बड़भागी अक्रूर ! तुम मणि दिखायके बन्धुनकूं शान्तिकरौ मेरे पास मणि नहीं है यह मति कहौ जो कदाचित् मणि न होवै तो सुवर्ण की वेदी बनाय बनाय कै अखण्ड यज्ञकाहतें काशी में जायकै करते ३९ या प्रकार साम भेदन करिकै समझायो ऐसो श्वफल्क को पुत्र अक्रूर वस्त्र तें ढकी सूर्य्य कैसो है तेज जाको ऐसी मणि लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकूं देतभयो ४० श्रीकृष्णचन्द्र स्यमन्तक मणि अक्रूरजी तें लैकै जाति के भय्या बन्धुनकू दिखायकै मणि कृष्णने लीनी है यह जो अपने कों मिथ्या कलङ्क लग्यो ताइ दूरि करिकै फेरि प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र अक्रूरजी कूं नहै मणि समर्पण करत भये ४१ ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको कह्यो वीर्य्ययुक्त पुरुषन के दुःख को हरनवारो सुन्दर मंगलरूप जो स्यमन्तक मणिको प्रसंग है याकूं जो कोई पुरुष पढे

श्रवण करै स्मरण करै वह कुत्सित पाप कूं कलङ्क कूं दूरि करिकै कल्याण कूं पावै है ४२ इति श्रीमद्भागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेस्यमन्तकोपाख्यानेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥ (अष्टपञ्चाशत्तमेतुकृष्णःपञ्चकरेऽग्रहीत् ॥ कालिन्दींमित्रविन्दाञ्चसत्याभद्राञ्चलक्ष्मणाम् १ कालिन्दींनिजलाभायतपःपरमुपेयुषीम् ॥ परिणेष्यन्प्रियावासमिन्द्रप्रस्थमुपागमत् २ अट्ठावनवें अध्याय में कृष्णजी कालिन्दी मित्रविन्दा सत्या भद्रा और लक्षणा इन पाचों का व्याह करते भये १ अपने लाभ के लिये श्रेष्ठ तपस्या करती हुई कालिन्दीजी को कृष्णजी प्राप्त होकर प्यारे स्थानवाले हस्तिनापुरको प्राप्त होतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकि तें आदिलैकै पहिले लाक्षागृहमें जरिगये यह श्रवण करीही फेरि द्रुपद के घरमें सबने देखे ऐसे जे पाण्डव हैं तिनें देखिवे के लिये श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रप्रस्थ में जातभये १ सबके ईश्वर जे श्रीकृष्ण हैं तिनें आये देखिकै जैसे प्राण के आये तें इन्द्रिय चैतन्य होयँ ऐसे वीर पाण्डव उठत भये २ श्रीकृष्णचन्द्र के मिलिवे में अङ्गसंग जो भयो तासू गये हैं पाप जिनके ऐसे वीर पाण्डव स्नेहभरी मुसिकानिसहित श्रीकृष्णचन्द्र को मुखारविन्द देखिकै आनन्दकूं प्राप्त होत

श्रीशुकउवाच ॥ एकदापाण्डवान्द्रष्टुं प्रतीतान्पुरुषोत्तमः ॥ इन्द्रप्रस्थंगतःश्रीमान् युयुधानादिभिर्वृतः १ दृष्ट्वातमागतंपार्था मुकुन्दमखिलेश्वरम् ॥ उत्तस्थुर्युगपद्वीराः प्राणामुख्यमिवाऽऽगतम् २ परिष्वज्याच्युतंवीरा अङ्गसङ्गहतैनसः ॥ सानुरागस्मितंवक्त्रं वीक्ष्यतस्यमुदंययुः ३ युधिष्ठिरस्य भीमस्य कृत्वापादाभिवन्दनम् ॥ फाल्गुनंपरिरभ्याथ यमाभ्यांचाभिवन्दितः ४ परमासनआसीनं कृष्णाकृष्णमनिन्दिता ॥ नवोढाव्रीडिताकिञ्चिच्छनैरेत्याभ्यवन्दत ५ तथैवसात्यकिःपार्थैः पूजितश्चाभिवन्दितः ॥ निषसादाऽऽसनेऽन्येच पूजिताःपर्युपासिताः ६ पृथांसमागत्यकृताभिवादनस्तयातिहार्दार्द्रदृशाऽभिरम्भितः ॥ आपृष्टवांस्तांकुशलंसहस्नुषां पितृष्वसारंपरिपृष्टबान्धवः ७ तमाहप्रेमवैक्लव्यरुद्धकण्ठाश्रुलोचना ॥ स्मरन्तीतान्बहून्क्लेशान् क्लेशापायात्मदर्शनम् ८ तदैवकुशलंनोभूत्सनाथास्तेकृतावयम् ॥ ज्ञातीन्नःस्मरताकृष्णभ्रातामेप्रेषितस्त्वया ९ नतेऽस्तिस्वपरभ्रान्तिर्विश्वस्यसुहृदात्मनः ॥ तथाऽपि

भये ३ श्रीकृष्णचन्द्र बड़े जे युधिष्ठिर और भीमसेन हैं तिनके चरणन में नमस्कार करिकै और बराबरि को जो अर्जुन है तासू मिलतभये पीछे छोटे जो नकुल और सहदेव हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करतभये ४ श्रेष्ठ आसन पै बैठे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें पाँच पाण्डवन की स्त्री है तथापि निन्दा जाकी नहीं ऐसी नई विवाहिता लज्जावती जो द्रौपदी है सो हौले हौले आइ के प्रणाम करतिभई ५ जैसे पृथाके पुत्र जे पाण्डव हैं तिनने पूजा जाकी करी अभिवादन करयो ऐसो सात्यकि यादव आसनपै बैठत भयो पूजा जिनकी करी ऐसे औरहू श्रीकृष्णचन्द्र के संग बैठत भये ६ फेरि श्रीकृष्णचन्द्र कुन्ती के पास आयकै प्रणाम करतभये कुन्ती स्नेहभरी चितवनि सों आलिंगनकरतिभई श्रीकृष्णचन्द्र पतोहूसहित पिता की बहिनि जो कुन्ती है ताते कुशल पूंछत भये श्रीकृष्ण के बन्धुनकी कुशल कुन्ती ने पूछी है ७ प्रेमकी व्याकुलता तें रुक्यो है कण्ठ जाको नेत्रनमें आसू जाके आयगये ऐसी कुन्ती कौरवन ने जे कष्ट दिये हैं तिनकी सुधि करिकै भक्तन के क्लेश कूं दूरि करिवे के लिये दर्शन देहैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सूं बोलत भई ८ हे कृष्ण ! जाति के बन्धु जे हम हैं तिनको स्मरण करिकै जा समय तुमने मेरे भय्या अक्रूरकूं खबरिके लिये भेज्योहो ताही

समय हमारी कुशल होतिभई और तैंने हम मनाथ करे ९ समस्त विश्व के हितकारी आत्मा जो तुमहो तिनको यह अपनो है यह परायो है यह भ्रम तिनके नहीं तथापि जो कोई तुम्हारो सर्वदा स्मरण करै है तिनके हृदय में स्थित होयकै सब क्लेशनकूं दूरि करोहो १० अब राजा युधिष्ठिर कहे हैं हे ब्रह्मादिकन के ईश्वर ! हमने कहा कल्याण कियो है यह मैं नहीं जानूं हूं जो तुम योगेश्वरनके देखिवे में न आवो सो हम विषयासक्तन कूं दिखाई दियो ११ या प्रकार राजा युधिष्ठिर ने प्रार्थना जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रप्रस्थनिवासीनके नेत्रनकूं आनन्ददेत वर्षा ऋतुके महीना वास करतभये १२ एक समय शूरवीर जे शत्रुहैं तिनके मारनवारे जो अर्जुनहैं सो वानरके छापेकीहै ध्वजा जामें ऐसे रथ में चढ़िके गाण्डीव धनुष कूं लैके बाणनको भरचो तरकस लैके शिकारके बहुत सर्प और मृगहैं जामें ऐसो बड़ो वनहै तामें श्रीकृष्ण के संग शिकार खेलिवे कूं जातभयो १३।१४ ता वनमें व्याघ्र सूकर भैंसा रुरु यथात् हिरण शरभ अर्थात् आठपाव के जीव रोज गेंडा

स्मरतांशश्वत्क्लेशान्हंसिहृदिस्थितः १० ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ किंनआचरितंश्रेयोनवेदाहमधीश्वर ॥ योगेश्वराणांदुर्दर्शोयन्नोदृष्टःकुमेधसाम् ११ इतिवै वार्षिकान्मासान् राज्ञासोऽभ्यर्थितःसुखम् ॥ जनयन्नयनानन्दमिन्द्रप्रस्थौकसांविभुः १२ एकदारथमारुह्य विजयोवानरध्वजम् ॥ गाण्डीवंधनुरादाय तूणौचाक्षयसायकौ १३ साकंकृष्णेनसन्नद्धो विहर्तुंगहनंवनम् ॥ बहुव्यालमृगाकीर्णं प्राविशत्परवीरहा १४ तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रान् सूकरान्महिषान्रुरून् ॥ शरभान्गवयान्खड्गान् हरिणाञ्छशशल्लकान् १५ तान्निन्युःकिङ्करा राज्ञे मेध्यान्पर्वण्युपागते ॥ तृट्परीतःपरिश्रान्तोबीभत्सुर्यमुनामगात् १६ तत्रोपस्पृश्यविशदंपीत्वावारिमहारथौ ॥ कृष्णौददृशतुःकन्यां चरन्तींचारुदर्शनाम् १७ तामासाद्यवरारोहांसुद्विजांरुचिराननाम् ॥ पप्रच्छप्रेषितःसख्या फाल्गुनःप्रमदोत्तमाम् १८ कात्वंकस्यासिसुश्रोणि कुतोऽसिकिंचिकीर्षसि ॥ मन्येत्वांपतिमिच्छन्तीं सर्वंकथयशोभने १९ ॥ कालिन्द्युवाच ॥ अहंदेवस्य सवितुर्दुहितापतिमिच्छती ॥ विष्णुंवरेण्यंवरदंतपःपरममास्थिता २० नान्यंपतिंवृणेवीरतमृतेश्रीनिकेतनम् ॥ तुष्यतांमेसभगवान्मुकुन्दोऽनाथसंश्रयः २१

मृग सरहा सेही इनकूं बाणन तें बेधतभये १५ अमावास्या पूर्णमासी ये पर्व जब आयके प्राप्तभये तब टहलुवा हैं ते पवित्र जे पशु हैं तिनें राजा युधिष्ठिर के पास लावतभये शिकारखेलिवे में श्रम जाकूं भयो प्यासलागी तब अर्जुन यमुनापै जातभयो १६ महारथी जे श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं ते यमुना के तटपै आयकै निर्मल जलको आचमन करिके पीके जब ठाढ़े भये तब सुन्दर एक कन्या तैसी देखतभये १७ सुन्दर हैं जंघा जाकी श्रेष्ठ हैं दांत जाके मनोहर है मुख जाको ऐसी जो प्रमदा कन्याहै ताके पास भेज्यो जो श्रीकृष्ण ने अर्जुनहै सो पूछतभयो १८ हे सुश्रोणि अर्थात् सुन्दर है कटि जाकी ! तुम कौनहो और कौनकी पुत्रीहो कहांते आईहो तुम्हारे मनमें कहा करिवे की है तुम्हारे पति करिवेकी इच्छाहै मैं जानों हूं हे सुन्दरी ! सब बातकहो १९ कालिन्दी कहे है मैं सूर्यदेवकी पुत्रीहूं वरके देनवारे जो विष्णुहैं तिनें पति करिवे की इच्छा करिके बड़ो तप करूंहूं २० हे वीर ! सुन्दर जे श्रीकृष्ण हैं तिनके विना और कूं पति न करूंगी अनाथ के आश्रय जो मुकुन्द भगवान् हैं सो मेरे ऊपर प्रसन्नहोउ २१

कालिन्दी नाम करिके विख्यातहूं और मेरे पिता सूर्य्य ने बनायो जो यमुनाको जलहै तामें यावत्पर्य्यन्त श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन न होइगो तबलों वासकरूंगी २२ जीतीहै निद्रा जाने ऐसो जो अर्जुन है सो वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्रके पास आयके जैसे कालिन्दीने कही तैसेही कहतभयो कालिन्दी मेरेनिमित्त तप करे है या बालकूं जानिके श्रीकृष्णचन्द्र रथमें बैठायके धर्म्मराज राजा युधिष्ठिर के पास आवत भये २३ ता समय पाण्डवन ने जिनकूं आज्ञादीनी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र देवतानको कारीगर जो विश्वकर्म्मा है तासूं कहिके पाण्डवन के लिये चित्र विचित्र अद्भुत नगर निर्म्माण करावत भये २४ अपने पाण्डवन के प्रिय करिवे के लिये इन्द्रप्रस्थ में वास करें ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् सो इन्द्रको जो खाण्डव वनहै ताय अग्नि कूं देवेके लिये अर्जुन के रथवान् होत भये २५ हे राजन् परीक्षित् ! जब अग्निकूं खाण्डव वनदियो तब अग्नि प्रसन्न होयके अर्जुनकू धनुष् और श्वेत रङ्गके घोड़ा तीरनके भरे तरकस और हथियारन सूं भेदन न होय ऐसो कवच देतभयो २६

कालिन्दीतिरामाख्याता वसामियमुनाजले ॥ निर्म्मितेभवनेपित्रा यावदच्युतदर्शनम् २२ तथाऽवदद्गुडाकेशो वासुदेवायसोऽपिताम् ॥ रथमारोप्यतद्विद्वान् धर्म्मराजमुपागमत् २३ यदैवकृष्णःसन्दिष्टः पार्थानांपरमाद्भुतम् ॥ कारयामासनगरं विचित्रंविश्वकर्म्मणा २४ भगवांस्तत्रनिवसन् स्वानांप्रियचिकीर्षया ॥ अग्नयेखाण्डवन्दातुमर्जुनस्याऽऽससारथिः २५ सोऽग्निस्तुष्टोधनुरदाद्धयाञ्छ्वेतान्रथंनृप ॥ अर्जुनायाक्षयौतूणौ वर्म्मचाभेद्यमस्त्रिभिः २६ मयश्चमोचितोवह्नेःसभांसख्यउपाहरत् ॥ यस्मिन्दुर्य्योधनस्याऽऽसीज्जलस्थलदृशिभ्रमः २७ सतेनसमनुज्ञातः सुहृद्भिश्चानुमोदितः ॥ आययौद्वारकांभूयः सात्यकिप्रमुखैर्वृतः २८ अथोपयेमेकालिन्दीं सुपुण्यर्त्वृक्षऊर्ज्जिते ॥ वितन्वन्परमानन्दंस्वानांपरममङ्गलम् २९ विन्दानुविन्दावावन्त्यौदुर्य्योधनवशानुगौ ॥ स्वयंवरेस्वभगिनीं कृष्णेसक्तांन्यषेधताम् ३० राजाधिदेव्यास्तनयां मित्रविन्दांपितृष्वसुः ॥ प्रसह्यहृतवान्कृष्णो राजन्राज्ञांप्रपश्यताम् ३१ नग्नजिन्नामकौशल्यआसीद्राजाऽतिधार्म्मिकः ॥ तस्यसत्याऽभवत्कन्या देवीनाग्नजितीनृप ३२ नतांशेकुर्नृपावोढुमजित्वासप्तगोवृषान् ॥

अग्नि तें बचायो ऐसो जो मयनामा दैत्यहै सो सभा बनायके अर्जुनकूं देतभयो जा सभा में जलमें स्थल और स्थल में जल या प्रकार दुर्योधनकी दृष्टिमें भ्रम होतभयो २७ राजा युधिष्ठिरने आज्ञा जिनकूं दीनी सुहृदन ने प्रशंसा जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सात्यकी जिनमें मुख्य ऐसे यादवनकूं संगलैके फेरि द्वारकापुरी में आवतभये २८ जाके पीछे सुन्दर पवित्र ऋतु नक्षत्रमें कालिन्दी कूं व्याहतभये परममङ्गलरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने यादवनकूं परमानन्द देतभये २९ दुर्य्योधनकी आज्ञामें वर्ते ऐसे जे उज्जैनपुरी के राजा विन्द और अनुविन्द दोनों भय्याहैं ते श्रीकृष्णचन्द्रमें मन जाको लग्यो ऐसी जो अपनी बहिनि है ताय स्वयंवर में मने करतभये ३० पिता वसुदेवकी बहिनि जो राजाधिदेवी ताकी पुत्री जो मित्रविन्दा है ताय श्रीकृष्णचन्द्र सब राजान के देखत हे राजन् परीक्षित् ! बल करिकै लावत भये ३१ हे राजन् परीक्षित् ! अयोध्यापुरी को पालन करनवारो बड़ो धर्म्मात्मा राजा नग्नजित नाम करिकै होतभयो ता राजा के प्रकाशमान सत्यानाम करिकै कन्या होतिभई पिताको नाम नग्नजित् है यातें वाकूं नाग्नजिती भी कहे हैं ३२ पैने हैं सींग जिनके वीर डाट्यें में न आवें राजान की गन्ध न सुहाय ऐसे मरखने जो सात बैल हैं

तिनके नाथे विना राजा हैं ते नाग्नजिती कूं नहीं व्याहत भये ३३ यादवन के पति भगवान् हैं सो सात बैलन कूं एक संग नाथै वह या कन्या कूं व्याहै यह बातकूं श्रवण करिकै बड़ी सेना कूं संग लैके अयोध्यापुरी में जात भये ३४ अयोध्यापुरी को राजा नग्नजित् प्रसन्न होयके उठिकै भले आये या प्रकार प्रशंसा करिकै सुन्दर आसन बिछाय कै चरण धोइ कै बड़ी पूजाकी सामग्रीन सूं पूजन करत भयो ३५ राजा नग्नजित् की कन्या है सो आये जो लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण हैं तिनें अपने योग्य वर देखि कै इच्छा करति भई और कहति भई कि जो मैंने व्रत-न करिकै मनमें धार्यो है तो यह श्रीकृष्णचन्द्र मेरो पति होउ और मेरे मनोरथन कूं सत्य करो ३६ जिन भगवान्के चरणकमल की रज कूं लक्ष्मी और कमल तें है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा तथा महादेव और लोकपाल ये समस्त शिर पै धारण करे हैं ऐसे तुम ईश्वर अपनी करी ये धर्म मर्य्यादा हैं तिनके पालन करिबे की इच्छा करिकै लीला करिकै नृसिंहादि मूर्त्तिन कूं

तीक्ष्णशृङ्गान्सुदुर्द्धर्षान् वीरगन्धासहान्खलान् ३३ तांश्रुत्वावृषजिल्लभ्यांभगवान्सात्वतांपतिः ॥ जगामकौशल्यपुरं सैन्येनमहतावृतः ३४ सकोशलपतिःप्रीतः प्रत्युत्थानासनादिभिः ॥ अर्हणेनापिगुरुणाऽपूजयत्प्रतिनन्दितः ३५ वरंविलोक्याभिमतंसमागतं नरेन्द्रकन्याचकमेरमापतिम् ॥ भूयादयंमेपतिराशिषोऽमलाः करोतुसत्यायदिमेधृतोव्रतैः ३६ यत्पादपङ्कजरजःशिरसाबिभर्त्ति श्रीरब्जजःसगिरिशःसहलोकपालैः ॥ लीलातनुःस्वकृतसेतुपरीप्सयेशः कालेदधत्सभगवान्ममकेनतुष्येत् ३७ अर्चितंपुनरित्याह नारायणजगत्पते ॥ आत्मानन्देनपूर्णस्य करवाणिकिमल्पकः ३८ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ तमाहभगवान्हृष्टः कृतासनपरिग्रहः ॥ मेघगम्भीरयावाचासस्मितंकुरुनन्दन ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नरेन्द्रयाच्ञाकविभिर्विगर्हिता राजन्यबन्धोर्निजधर्म्मवर्त्तिनः ॥ तथाऽपियाचेतवसौहृदेच्छया कन्यांत्वदीयांनहिशुल्कदावयम् ४० ॥ राजोवाच ॥ कोऽन्यस्तेऽभ्यधिकोनाथ कन्यावरइहेप्सितः ॥ गुणैकधाम्नोयस्याङ्गे श्रीर्वसत्यनपायिनी ४१ किन्त्वस्माभिःकृतःपूर्वं समयःसात्वतर्षभ ॥ पुंसांवीर्य्यपरीक्षार्थं कन्यावरपरीप्सया ४२ सप्तैतेगोवृषावीर दुर्दा

धारण करो हो सो तुम भगवान् मेरे ऊपर कैसे प्रसन्न होउगे ३७ पूजन करिकै फेरि नग्नजित् राजा कहत भये हे नारायण ! हे जगत् के पति ! आत्मा के आनन्द करिकै पूर्ण जो तुम हो तिनको मैं तुच्छ कहा पूजन करूं ३८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे कौरवन के कुल कूं आनन्द देनवारे राजा परीक्षित् ! आसन पै बैठि करि श्रीकृष्णचन्द्र मेघ की तुल्य गर्ज करिकै मुसिकात राजा नग्नजित् तें बोलत भये ३९ हे राजन् नग्नजित् ! निजधर्म्मवर्त्ती जे क्षत्रिय हैं तिनकूं याचना करिबो कविन ने मने कर्यो है तथापि स्नेह करिकै हम तुम्हारी कन्या कूं माँगे हैं कछु मोल के देनवारे हम नहीं हैं ४० अब राजा नग्नजित् कहे हैं हे नाथ ! समस्त गुण जिन में रहें और लक्ष्मी सर्वदा जिनके अंग में वास करें ऐसे तुम तें अधिक या संसार में कौन वर है ताकूं कन्या देउँगो ४१ हे यादवन में श्रेष्ठ ! पुरुषन के पराक्रम की परीक्षा लेबे के निमित्त और कन्याके वरकी परीक्षा के लिये हमने प्रथम एक प्रतिज्ञा करी है ४२ हे वीर कृष्ण ! शिक्षा जिनकूं न

भई और वशमें न आवें ऐसे सात बैल है तिनके मारे टूटे हैं अंग जिनके ऐसे बहुत राजानके पुत्र परे हैं ४३ हे यदुनन्दन ! हे लक्ष्मी के पति ! जो तुम इन बैलन कूं अपने वश करि लेउ तौ मेरी कन्या कूं सम्मत वरहौ ४४ समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार राजा नग्नजित्की प्रतिज्ञा श्रवण करिकै फेंट बाँधि कै अपने सात रूप धरि कै लीलाही करिकै बैलन कूं पकरत भये ४५ दूरि भयो है गर्व जिनको गयो है बल जिनको ऐसे बैलन कूं शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र रस्सानतें बाँधि कै जैसे बालक काष्ठ के बैल कूं खेंचे है ऐसे खेंचत भये ४६ ताके पीछे आश्चर्यवान् राजा नग्नजित् प्रसन्न होयकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनी कन्या देत भयो समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं सो अपनी बराबरि की कन्या है ताय विधिपूर्वक व्याहत भये ४७ राजा नग्नजित् की रानी हैं ते अपनी कन्या कूं प्यारो पति पाय के परमानन्द पावत भई और बड़ो उत्सव भयो ४८ शङ्ख भेरी नगाड़े बजत भये और गीत बाजे बजावत भये ब्राह्मणन के आशीर्वाद होत भये सु-

न्ताडुखग्रहाः ।। एतैर्भग्नाःसुबहवो भिन्नगात्रानृपात्मजाः ४३ यदिमे निगृहीताःस्युस्त्वयैव यदुनन्दन ।। वरो भवानभिमतो दुहितुर्मे श्रियःपते ४४ एवंसमयमाकर्ण्य बद्ध्वा परिकरंप्रभुः ।। आत्मानंसप्तधाकृत्वा न्यगृह्णाल्लीलयैव तान् ४५ बद्ध्वा तान्दामभिः शौरिर्भग्नदर्पान्हतौजसः ।। व्यकर्षल्लीलया बद्धान् बालो दारुमयान्यथा ४६ ततःप्रीतःसुतांराजा ददौ कृष्णाय विस्मितः ।। तांप्रत्यगृह्णाद्भगवान् विधिवत्सदृशींप्रभुः ४७ राजपत्न्यश्च दुहितुःकृष्णंलब्ध्वा प्रियंपतिम् ।। लेभिरेपरमानन्दं जातश्चपरमोत्सवः ४८ शङ्खभेर्यानकानेदुर्गीतवाद्यद्विजाशिषः ।। नरानार्यःप्रमुदिताः सुवासःस्रगलङ्कृताः ४९ दशधेनुसहस्राणि पारिबर्हमदाद्विभुः ।। युवतीनांत्रिसाहस्रं निष्कग्रीवसुवाससाम् ५० नवनागसहस्राणि नागाच्छतगुणान्रथान् ।। रथाच्छतगुणानश्वानश्वाच्छतगुणान्नरान् ५१ दम्पतीरथमारोप्य महत्या सेनयावृतौ ।। स्नेहप्रक्लिन्नहृदयो यापयामास कोशलः ५२ श्रुत्वैतद्रुरुधुर्भूपा नयन्तंपथि कन्यकाम् ।। भग्नवीर्याःसुदुर्मर्षा यदुभिर्गोवृषैःपुरा ५३ तानस्यतःशरव्रातान् बन्धुप्रियकृदर्जुनः ।। गाण्डीवी कालयामास सिंहःक्षुद्रमृगानिव ५४ पारिबर्हमुपागृह्य द्वारकामेत्यम

न्दर वस्त्र मालान सूं शोभायमान नर नारी है ते प्रसन्न होत भये ४९ सामर्थ्यवान् राजा नग्नजित् दाइजे में दश हजार गौ देत भयो धुकधुकी है कण्ठ में जिनके सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे ऐसी तीन हजार दासी देत भयो ५० नवहजार हाथी देत भयो और हाथीन सूं सौगुणे अर्थात् नवलाख रथ और रथन सूं सौगुणे अर्थात् नवक्रिरोड़ घोड़ा देतभयो और घोड़ानसूं सौगुणे अर्थात् नवअर्ब मनुष्य देत भयो ५१ स्नेह करिकै व्याप्तहै हृदय जाको ऐसो कोशलदेशको राजा नग्नजित् अपनी कन्यासहित श्रीकृष्णचन्द्र कूं रथ में बैठारि कै बड़ी सेनाकूं संग लैकें पहुँचावत भयो ५२ यादवन और बैलन ने पहिले राजान को मद दूरि करि दियो है तथापि असहनता जिनके विद्यमान ऐसे राजा कृष्ण या कन्या कू लिये जाय है यह बात श्रवण करिकै मार्ग में आय कै रोकतभये ५३ बन्धु जे कृष्णचन्द्र हैं तिनके प्यारको करनवारो गाण्डीवहै धनुष् जाको ऐसो अर्जुन सो बाणनकू चलावें ऐसे जे राजा हैं तिनें सिंह जैसे छोटे छोटे जानवर मृगन कूं भजावै ऐसे भजावतभयो ५४

यादवन में श्रेष्ठ देवकी के पुत्र भगवान् हैं सो दाइजे कूं लैके द्वारकापुरी में आयके सत्या जो रानीहै ताके संग रमण करत भये ५५ पिता वसुदेव की बहिनि जो श्रुतकीर्त्ति है ताकी पुत्री कैकयदेशोत्पन्न भद्राहै ताय सन्तर्दनादि भय्यानने दीनी ताकूं श्रीकृष्णचन्द्र व्याहत भये ५६ सुन्दर जामें लक्षण ऐसी जो मद्रदेशके राजाकी कन्या लक्ष्मणाहै ताय गरुड जैसे अमृतकूं लावै है या प्रकार अकेले श्रीकृष्णचन्द्र स्वयंवर में हरि कै लावत भये ५७ भौमासुर के बन्दीखाने में तें छुडाय कै लाये सुन्दर हैं रूप जिन के ऐसी हजारन स्त्री श्रीकृष्णचन्द्र के और भी होती भई ५८ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थबपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽष्टमहिष्युद्वाहोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ऊनपष्टितमेभौमंहत्वातेनाहृताहरिः ॥ कन्याःसहस्रशःमापपारिजातंदिवोऽहरत् १ परिणीयततस्ताभिस्तन्मनोरथपूरणैः ॥ आत्मारामोऽप्यसौरेमेतद्गृहेषुगृहस्थवत् २ उनसठवें अध्याय में भौमासुर को मारकर कृष्णजी तिससूं हरीहुई हजारों कन्याओं को माप्त होते भये और स्वर्ग सूं कल्पवृक्ष हरतेभये १ फिर मनोरथ पूरण करनेवाली तिन स्त्रियों सूं आत्माराम कृष्णजी विवाहकर तिनकेघरन

त्यया ॥ रेमेयदूनामृषभोभगवान्देवकीसुतः ५५ श्रुतकीर्त्तेःसुतांभद्रामुपयेमेपितृष्वसुः ॥ कैकेयींभ्रातृभिर्दत्तां कृष्णःसन्तर्दनादिभिः ५६ सुतांचमद्राधिपतेर्लक्ष्मणांलक्षणैर्युताम् ॥ स्वयंवरेजहारैकः ससुपर्णःसुधामिव ५७ अन्याश्चैवंविधाभार्याःकृष्णस्याऽऽसन्सहस्रशः ॥ भौमंहत्वातन्निरोधादाहृताश्चारुदर्शनाः ५८ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽष्टमहिष्युद्वाहोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

राजोवाच ॥ यथाहतोभगवता भौमोयेनचताःस्त्रियः ॥ निरुद्धाएतदाचक्ष्व विक्रमंशार्ङ्गधन्वनः १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इन्द्रेणहृतच्छत्रेण हृतकुण्डलबन्धुना ॥ हृतामराद्रिस्थानेन ज्ञापितोभौमचेष्टितम् ॥ सभार्योगरुडारूढः प्राग्ज्योतिषपुरंययौ २ गिरिदुर्गैःशस्त्रदुर्गैर्जलाग्न्यनिलदुर्गमम् ॥ मुरपाशायुतैर्घोरैर्दृढैःसर्वतआवृतम् ३ गदयानिर्बिभेदाद्रीञ्छस्त्रदुर्गाणिसायकैः ॥ चक्रेणाग्निंजलंवायुं मुरपाशांस्तथाऽसिना ४ शङ्खनादेनयन्त्राणि हृदयानिमन

में गृहस्थ की नाई रमते भये २) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करै है हे शुकदेवजी ! श्रीकृष्णचन्द्रने भौमासुरकूं मारयो और जैसे भौमासुरने ये स्त्री रोंकीहीं यह समस्त वृत्तान्त शार्ङ्ग है धनुष् जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको पराक्रम हमारे आगे वर्णन कीजिये १ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! छत्र जाको हरिकै लैगयो और माता अदितिके कुण्डल लैगयो सुमेरुपर्वत मेंतें मणि निकासिकै लै गयो या इन्द्रने भौमासुरकी कर्त्तव्यता जाय कै श्रीकृष्णकूं जताई भौमासुर हमकूं अत्यन्त दुःख देतहै यह इन्द्रकी वार्त्ता सुनिकै श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़के ऊपर चढिकै सत्यभामा रानी कूं संग लैके प्राग्ज्योतिष नाम करिकै जो भौमासुर को नगर है तहां जात भये २ अब भौमासुर के नगरको वर्णन करे है पर्व्वतन के जहां किला है शस्त्रन के किला हैं जल चारयो ओर भरयो है अग्नि के और पवन के किला हैं इनमें कोई जाय न सकै ऐसे भयानक गढ है मुरदैत्य की हजारन दृढ भयानक फांसी है तिनसूं चारयो ओर तें व्याप्तहै ३ श्रीकृष्णचन्द्र गदा तें पर्व्वतहैं तिनें तोरत भये और बाणनसूं शस्त्रनके गढहैं तिनें काटत भये चक्रसूं अग्निकूं बुझावत जलकूं शोषत पवनकूं रोंकत भये ऐसेही तलवारसूं मुरदैत्य के पाशनकूं काटत भये ४ और शङ्ख जो बजायो ताके

शब्द करिकै अनेक युद्धके यन्त्र है ते उलटे चलन लगे और शूरन के मन हृदय थर थर कांपतभये गदाके धारण करनवारे श्रीकृष्णचन्द्र बड़ी जो गदा है तासूं भौमासुर के नगरको कोट है ताय तोरत भये ५ मलयकाल के वज्र के शब्दकी तुल्यहै भयङ्कर शब्द जाको ऐसो जो पाञ्चजन्य शङ्ख है ताको शब्द सुनिकै पाच हैं शिर जाके ऐसो खाई के जलके भीतर सोवै जो मुरदैत्यहै सो उठत भयो ६ अतिखोटी है चितवनि जाकी मलयकाल के सूर्य्य और अग्नि के तुल्य है तेज जाको भयंकर है रूप जाको ऐसो जो मुरदैत्य है सो त्रिशूल हाथमें लैके पाचों मुख फारिकै त्रिलोकी कू मानों निगलि जायगो ऐसो दौरिकै श्रीकृष्णचन्द्रके सम्मुख आवत भयो जैसे गरुड़ सर्प के सम्मुख जाय ऐसे ७ मुरदैत्य त्रिशूलकूं फिरायकै बड़े जोरतें गरुड के ऊपर चलायके पाचों मुख फारिकै शब्द करत भयो बड़ो जो शब्द है सो द्यावापृथ्वी समस्त दिशान और अन्तरिक्षमें फैलिकै ब्रह्मायड कूं व्याप्त करत भयो ८ ता समय श्रीकृष्णचन्द्र गरुड़ के ऊपर चल्यो आवै जो त्रिशू-

स्त्रिनाम् ॥ प्राकारंगदयागुर्व्या निर्बिभेदगदाधरः ५ पाञ्चजन्यध्वनिंश्रुत्वायुगान्ताशनिभीषणम् ॥ मुरःशयानउत्तस्थौ दैत्यःपञ्चशिराजलात् ६ त्रिशूलमुद्यम्यसुदुर्निरीक्षणोयुगान्तसूर्य्यानलरोचिरुल्बणः ॥ ग्रसंस्त्रिलोकीमिवपञ्चभिर्मुखैरभ्यद्रवत्तार्क्ष्यसुतंयथोरगः ७ आविध्यशूलंतरसागरुत्मते निरस्यवक्त्रैर्व्यनदत्सपञ्चभिः ॥ सरोदसीसर्व्वदिशोऽम्बरंमहानापूरयन्नण्डकटाहमावृणोत् ८ तदाऽपतद्वैत्रिशिखंगरुत्मते हरिःशराभ्यामभिनत्रिधौजसा ॥ मुखेषुतंचापिशरैरताडयत्तस्मैगदांसोऽपिरुषाव्यमुञ्चत ९ तामापतन्तींगदयागदांमृधे गदाग्रजोनिर्बिभिदेसहस्रधा ॥ उद्यम्यबाहूनभिधावतोऽजितः शिरांसि चक्रेणजहारलीलया १० व्यसुःपपाताम्भसिकृत्तशीर्षोनिकृत्तशृङ्गोऽद्रिरिवेन्द्रतेजसा ॥ तस्यात्मजाःसप्तपितुर्वधातुराः प्रतिक्रियाऽमर्षजुषःसमुद्यताः ११ ताम्रोऽन्तरिक्षःश्रवणोविभावसुर्वसुर्नभस्वानरुणश्चसप्तमः ॥ पीठंपुरस्कृत्यचमूपतिंमृधे भौमप्रयुक्तानिरगन्धृतायुधाः १२ प्रायुञ्जतासाद्यशरानसीन् गदाः शक्त्यृष्टिशूलान्यजितेरुषोल्बणाः ॥ तच्छस्त्रकूटंभगवान्स्वमार्गणैरमोघवीर्य्यस्तिलशश्चकर्त्तह १३ तान्पीठमुख्याननयद्यमालयं निकृत्तशी

ल है ताके बाणन तें तीन टूक करत भये और मुरदैत्य के पाचों मुखन में पाच बाण मारत भये मुरदैत्य भी क्रोध करिकै श्रीकृष्ण के ऊपर गदा चलावत भयो ९ गद के बड़े भय्या जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो युद्ध में चली आवै जो मुरदैत्य की गदा है ताको अपनी गदासूं हजारन टूककरतभये तासमय भुजान कूं उठाय कै दौरिकै सम्मुख आयो जो मुरदैत्य है ताके शिरनकूं श्रीकृष्णचन्द्र लीलाही करिकै चक्रसूं काटतभये १० कटे हैं शिर जाके गये हे प्राण जाके ऐसो मुरदैत्य है सो इन्द्रके वज्रसूं कट्यो है शिर जाको ऐसो पर्व्वत जैसे गिरतभयो ऐसे जलमें गिरतभयो पिता जो मर्यो है तासूं आतुर बदलो लेवे के लिये असहनता जिनके आइ गई ऐसे मुरदैत्य के सातपुत्र ताम्र अन्तरिक्ष श्रवण विभावसु वसु नभस्वान् अरुण ये सहारिकै भौमासुर के कहे तें शस्त्रन कूं लैकै लडिबेकूं सेनाको पालनकरनवारो जो पीठ नामक मुख्य है ताय आगे करिकै निकसतभये ११ । १२ रोष करिकै भयानक जे मुरदैत्य के पुत्र हैं ते आयकै श्रीकृष्ण के ऊपर क्रोध करिकै बाण तरवार गदा बर्छी गुर्ज त्रिशूल इत्यादिक शस्त्र चलावत भये तब बड़ो है पराक्रम जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने बाणन तें तिनके चलायेभये जे शस्त्र है तिन तिल तिलकी बराबरि

टूक करिकै काटत भये १३ पीठ है मुख्य जिनमें ऐसे जे मुरदैत्यके पुत्र हैं तिनके शिर ऊरु भुजा पाँव कवच इनकूं काटिकै मारिकै यमलोक कूं पहुँचावत भये पृथ्वी को पुत्र जो नरकासुर है सो श्रीकृष्ण के चक्र बाणनसूं कटे देखि के असहनता जाके आइगई सो मद जिनके चुवे समुद्र नें तें निकसे ऐसे जे हाथी हैं तिनकूं संगलैके निकसतभयो १४ सूर्य के ऊपर जैसे बिजुली सहित मेघहोइ ऐसे गरुड़ के ऊपर सत्यभामा सहित बैठे भे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देखिके भौमासुर बरछी चलावतभयो और सम्पूर्ण जे योद्धा हैं ते एक संग बेधत भये १५ गदके बड़े भय्या जो श्रीकृष्ण हैं सो चित्र विचित्र हैं पङ्ख जिनके ऐसे बाणनसूं भौमासुर की सेनाको काटत भये कटे हैं भुजा जंघा ग्रीवा देहजामें मरे हैं घोडा हाथी जामें ऐसी करत भये १६ हे कुरुवंश कू आनन्द देनवारे राजा परीक्षित्! जो जो शस्त्र योद्धान ने चलाये तिन सबकूं श्रीकृष्णचन्द्र तीक्ष्ण तीन तीन बाणनसूं एक एक टूक काटतभये १७ श्रीकृष्ण ऊपर जाके चढे ऐसे गरुड़ने अपनी चोंच और पङ्खन तें मारे जे हाथी हैं ते

पौरुभुजाङ्घ्रिवर्मणः ॥ स्वानीकपानच्युतचक्रसायकैस्तथानिरस्तान्नरकोधरासुतः १४ निरीक्ष्यदुर्मर्षणआस्रवन्मदैर्गजैःपयोधिप्रभवैर्निराक्रमत् ॥ दृष्ट्वासभार्यंगरुडोपरिस्थितं सूर्योपरिष्टात्सतडिद्घनंयथा ॥ कृष्णंसतस्मैव्यसृजच्छतघ्नीं योधाश्चसर्वेयुगपत्स्मविव्यधुः १५ तद्भौमसैन्यंभगवान्गदाग्रजो विचित्रवाजैर्निशितैःशिलीमुखैः ॥ निकृत्तबाहूरुशिरोध्रविग्रहं चकारतर्ह्येवहताश्वकुञ्जरम् १६ यानियोधैःप्रयुक्तानि शस्त्रास्त्राणिकुरूद्वह ॥ हरिस्तान्यच्छिनत्तीक्ष्णैःशरैरेकैकशस्त्रिभिः १७ उह्यमानःसुपर्णेन पक्षाभ्यांनिघ्नतागजान् ॥ गरुत्मताहन्यमानास्तुण्डपक्षनखैर्गजाः १८ पुरमेवाऽऽविशन्नार्त्तानरकोयुध्ययुध्यत ॥ दृष्ट्वाविद्रावितंसैन्यं गरुडेनार्दितंस्वकम् १९ तंभौमःप्राहरच्छक्त्यावज्रःप्रतिहतोयतः ॥ नाकम्पततयाविद्धोमालाहतइवद्विपः २० शूलंभौमोऽच्युतंहन्तुमाददेवितथोद्यमः ॥ तद्विसर्गात्पूर्वमेव नरकस्यशिरोहरिः ॥ अपाहरद्गजस्थस्य चक्रेणक्षुरनेमिना ॥ २१ सकुण्डलंचारुकिरीटभूषणं बभौपृथिव्यां पतितंसमुज्ज्वलत् ॥ हाहेतिसाध्वित्यृषयः सुरेश्वरामाल्यैर्मुकुन्दंविकिरन्तईडिरे २२ ततश्चभूःकृष्णमुपेत्यकुण्डले प्रतप्तजाम्बूनदरत्नभास्वरे ॥ सवैजयन्त्याव

पीड़ितहोयकै पुरमें जातभये और नरकासुर रणमें युद्ध करतभयो गरुड़ने पीडा जाकूं दीनी ऐसी जो अपनी सेना है ताकू भाजी देखिके १८ । १९ भौमासुर गरुड के बरछी मारतभयो ता बरछी सू वज्रहू ताड़ितहोतभयो बरछी जाके लगी तथापि गरुड फूलकी माला लगेतें हाथी जैसे चलायमान न होय ऐसे चलायमान नहीं होतभयो वृथाहै उद्यम जाको ऐसो भौमासुर श्रीकृष्णके मारिवे कूं त्रिशूल लेतभयो भौमासुर त्रिशूल चलाय न सक्यो ताते पहिलेही हाथी पै बैठ्यो जो भौमासुर है ताकूं शिर पैनीधार के चक्रसूं श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये २०।२१ कुण्डलन सहित जो मनोहर किरीट है तासूं शोभायमान पृथ्वी में पर्यो प्रकाशमान जो भौमासुरको शिरहै सो सुन्दर लगतभयो ऋषि देवताहैं ते हाय हाय भले भले कहन फूलनकी वर्षा श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपरकरत स्तुति करत भये २२ भौमासुर मर्यो ताके पीछे पृथ्वी श्रीकृष्ण के पास आयकै तपायमान जो सुवर्ण है तामें रत्नजडे तिनसूं प्रकाशमान जे कुण्डलहैं तिनें और वैजयन्ती वनमाला और प्रचेता को

छत्र तथा महामणि देतभई २३ हे राजन् परीक्षित्! विश्व के ईश्वर देवतान में श्रेष्ठ ब्रह्मादिक जिनकी पूजा करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कू हाथ जाने जोरि लिये ऐसी नम्र जो पृथ्वी है सो भक्तिपूर्वक श्रीकृष्णचन्द्रकी ओर बुद्धि लगायके स्तुति करतभई २४ अब पृथ्वी कहे है हे देवन के देव ईश्वर! हे शङ्ख चक्र गदाके धारण करनवारे! तुमकूं नमस्कार है हे परमात्मन्! भक्तनकी इच्छा के लिये धारण कियो है साकाररूप जिनने ऐसे जो तुमहो तिनें नमस्कार है २५ कमल है नाभिमें जिनकी ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है कमलकी माला धारणकरे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है कमलकी तुल्य है नेत्र जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है कमलकी तुल्य हैं चरण जिनके ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है २६ तुम जो भगवान् वासुदेव अर्थात् समस्त प्राणी जिनमें वासकरें ऐसे जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है विष्णु अर्थात् सबके हृदयमें व्यापक जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है पुरुष सम्पूर्ण कार्यन के आदि कारण जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है पूर्णज्ञानस्वरूप जे तुमहो तिनकूं नमस्कार है २७ और आप अजन्मा हो या विश्वके उत्पत्तिकर्त्ता हो ब्रह्म हो याही तें अजन्मा हो अनन्तशक्ति हो याही तें विश्वके उत्पत्तिकर्त्ता हो तहां शङ्का है क्योंकी पित्रादिक हैं ते पुत्रादिकनके उत्पत्तिकर्त्ता

नमाल्याऽर्प्ययत्प्राचेतसंछत्रमथोमहामणिम् २३ अस्तौषीदथविश्वेशंदेवीदेववरार्चितम् ॥ प्राञ्जलिःप्रणताराजन् भक्तिप्रवणयाधिया २४ ॥ भूमिरुवाच ॥ नमस्तेदेवदेवेशशङ्खचक्रगदाधर ॥ भक्तेच्छोपात्तरूपायपरमात्मन्नमोऽस्तुते २५ नमःपङ्कजनाभाय नमःपङ्कजमालिने ॥ नमःपङ्कजनेत्राय नमस्तेपङ्कजाङ्घ्रये २६ नमोभगवतेतुभ्यं वासुदेवायविष्णवे ॥ पुरुषायाऽऽदिबीजाय पूर्णबोधायतेनमः२७अजायजनयित्रेऽस्यब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ परावरात्मन्भूतात्मन् परमात्मन्नमोऽस्तुते २८ त्वंवैसिसृक्षूरजउत्कटंप्रभो तमोनिरोधायबिभर्ष्यसंवृतः ॥ स्थानायसत्त्वंजगतोजगत्पते कालःप्रधानंपुरुषोभवान्परः २९ अहंपयोज्योतिरथानिलोनभोमात्राणिदेवामनइन्द्रियाणि ॥ कर्त्ता महानित्यखिलंचराचरं त्वय्यद्वितीयेभगवन्नयंभ्रमः ३० तस्याऽऽत्मजोऽयंतवपादपङ्कजं भीतःप्रपन्नार्तिहरोपसादितः ॥ तत्पालयैनंकुरुहस्तपङ्कजं शिरस्यमुष्याऽखिलकल्मषापहम् ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिभूम्याऽर्थितोवाग्भिर्भगवान्

हैं और पित्रादिकन के उत्पत्तिकर्त्ता उनके पूर्वपुरुष हैं और पूर्वपुरुषन के उत्पत्तिकर्त्ता पञ्चभूत हैं और पञ्चभूतन के अपने कर्मद्वारा जीव हैं मैं कहा कहूं हूं तहां पृथ्वी कहे है हे कार्यकारणरूप! हे समस्त प्राणीनके आत्मा! हे परमात्मा! तुम सर्वरूप हो तुमकू नमस्कार है २८ यहां एक शङ्का है कि तीनों गुणन करिकै विश्वकू उत्पन्न पालन संहार करै हैं और तीनों गुण मायाके हैं और माया को क्षोभ करनवारो पुरुष है और कालनिमित्त है यह बात प्रसिद्ध है मैं कहा करूं हूं तहां पृथ्वी कहे है—आवरण रहित जो तुम हो सो हे समर्थ! जा समय विश्वकू रच्यो चाहो हो तब तुम रजोगुण कूं धारण करो हो और हे जगत् के पति! जगत् के पालन करिबेकूं सत्त्वगुणकूं धारण करो हो तथा नाश करिबे के निमित्त तमोगुणकूं धारण करो हो और कालरूप तुमहो मायारूप तुमहो पुरुषरूप तुमहो और सबतें न्यारे हो याते सबके उत्पन्नकर्त्ता तुमहीं हौ २९ मैं पृथ्वी जल ज्योति पवन आकाश शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध देवता मन इन्द्रिय अहंकार तत्त्व या प्रकार समस्त स्थावर जंगम हे भगवन! तुम जे अद्वितीय हौ तिनमें यह भ्रम है ३० हे शरणागतन के दुःखके हरनारे! भौमासुरको पुत्र भगदत्त भयभीत होयके तुम्हारो जो चरणकमल है तामें आयके पर्यो है ताते याको पालन

करो और समस्त क्लेशनको हरनवारो जो तुम्हारो हस्तकमलहै ताय याके शिरपै राखो ३१ भक्तिपूर्वक नम्रहोयके पृथ्वी ने याकी करि याप्रकार स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवानहैं सो अभयदेके सर्वसम्पत्तियुक्त जो भौमासुरको घर है तामें जातभये ३२ भौमासुरने पराक्रमकरिके हरीं ऐसी जे अनेक राजानकी सोलहहजार कन्या हैं तिनें भौमासुरके महलनमें देखतभये ३३ नरन में वीर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें आये देखिके सम्पूर्ण स्त्री मोहितहोयके दैवने प्राप्तकरे ऐसे मनोवाञ्छित पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें मनकूं वर करतिभई ३४ यह मेरो पतिहोउ यह विधाता अनुमोदनकरो या प्रकार समस्त कन्याभावकरिकै श्रीकृष्णचन्द्र में अपनो अपनो मन लगावति भई ३५ स्वच्छहैं वस्त्र जिनके ऐसी जे कन्या हैं तिनें पालकीन में बैठारिकै द्वारकापुरी में भिजवावत भये बड़ेबड़े खजाने और रथ घोडा और जो बड़ी द्रव्य है ताय भिजवावतभये ३६ चार चारहैं दांत जिनके शीघ्रगामी श्वेतरंग ऐसे चौंसठि ऐरावत के कुलके हाथी हैं तिनें श्रीकृष्णचन्द्र भिजवावतभये ३७

भक्तिनम्रया ॥ दत्त्वाऽभयंभौमगृहं प्राविशत्सकलर्द्धिमत् ३२ तत्रराजन्यकन्यानां षट्सहस्राधिकायुतम् ॥ भौमाहृतानांविक्रम्य राजभ्योददृशेहरिः
३३ तंप्रविष्टंस्त्रियोवीक्ष्य नरवीरंविमोहिताः ॥ मनसावव्रिरेऽभीष्टं पतिंदैवोपसादितम् ३४ भूयात्पतिरयंमह्यंधातातदनुमोदताम् ॥ इतिसर्वाः पृथक्कृष्णे
भावेनहृदयंदधुः ३५ ताःप्राहिणोद्द्वारवतींसुमृष्टविरजोऽम्बराः ॥ नरयानैर्महाकोशान्रथाश्वान्द्रविणंमहत् ३६ ऐरावतकुलेभांश्च चतुर्दन्तांस्तरस्वि
नः ॥ पाण्डुरांश्चचतुःषष्टिं प्रेषयामासकेशवः ३७ गत्वासुरेन्द्रभवनन्दत्त्वाऽदित्यैचकुण्डले ॥ पूजितस्त्रिदशेन्द्रेण सहेन्द्राण्याचसप्रियः ३८ चोदितोभा
र्ययोत्पाट्य पारिजातंगरुत्मति ॥ आरोप्यसेन्द्रान्विबुधान्निर्जित्योपानयत्पुरम् ३९ स्थापितःसत्यभामायागृहोद्यानोपशोभनः ॥ अन्वगुर्भ्रमराःस्वर्गा
त्तद्गन्धासवलम्पटाः ४० ययाचआनम्यकिरीटकोटिभिः पादौस्पृशन्नच्युतमर्थसाधनम् ॥ सिद्धार्थएतेनविगृह्यतेमहानहोसुराणांचतमोऽधिगाढ्यताम् ४१
अथोमुहूर्त्तएकस्मिन्नानागारेषुताःस्त्रियः ॥ यथोपयेमेभगवांस्तावद्रूपधरोऽव्ययः ४२ गृहेषुतासामनपाय्यतर्क्यकृन्निरस्तसाम्यातिशयेष्ववस्थितः ॥

इन्द्रलोक में जायकै अदिति कू कुण्डल दिये तब इन्द्राणी सहित इन्द्रने सत्यभामासहित श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजाकरी ३८ सत्यभामा ने श्रीकृष्णचन्द्र सूं कही तब कल्पवृक्षकूं उखारि गरुड़ के ऊपर धरिके इन्द्रसहित देवतानकू जीतिकै द्वारकापुरी में आवत भये ३९ सत्यभामा के महलके बगीचाकूं शोभायमान करै ऐसो कल्पवृक्ष बगीचा में लगावतभयो ताकी गन्ध सूंघिवे के निमित्त स्वर्गसूं चलिके भौंरा आवत भये ४० किरीटन के जे अग्रभागहैं तिनें चरणन में लगायके नमस्कार करिकै सम्पूर्ण अर्थके सिद्ध करनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनसूं विनती करतभयो तब सिद्धभयेहैं मनो-रथ जाके ऐसो इन्द्र श्रीकृष्ण के संग युद्ध करनभयो देवतानकूं बड़ो क्रोध है ये अपने कू अन्यथाने हैं तिनें धिक्कार है ४१ याकेपीछे एकही मुहूर्तमें सोलहहजार एकसौ आठ महल हैं तिनमें सर्वत्र परिपूर्ण ऐसे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो जितनी स्त्रीहैं उतनेही स्वरूप धरिकै सबनकूं यथायोग्य व्याहतभये ४२ पुरुषन के विचार में न आवैं ऐसे कर्म हैं तिनकूं करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो और गृहस्थन के घर हैं उनकी बराबरि नहीं है तो अधिक कहाँ तें होइंगे ऐसे जो रानीन के घर हैं तिनमें सर्व्वदा रहिकै अपने स्वरूप के आनन्द सूं परिपूर्णहैं तथापि गृहस्थ के धर्म कर्मकूं

करत जैसे साधारण गृहस्थ तैसे लक्ष्मी के अंश जे स्त्री हैं तिनके सङ्ग रमण करतभये ४३ ब्रह्मादिक देवता जिनके मार्ग कूं नहीं जानें ऐसे जे लक्ष्मी के पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं या प्रकार पति पायकै बढ्यो जो आनन्द है तासूं स्नेहभरी हँसनि चितवनि है ताय और हास्य चितवनिपूर्व्वक नवीन सङ्गम है ताय और नवीन संगम में बोलनि है ताय और ता बोलनि में लाज है ताय सेवन करतिभई ४४ एक एक रानी के पास सौ सौ दासी हाथ जोरे ठाढ़ी हैं तथापि सन्मुख जायकै लिवाइलाइवो आसन बिछायवो सुन्दर पूजा-करनी चरणधोवनो बीरी लगावनो चरण दाबनो पङ्खा करनो अतर अरगजा लगाइवो पुष्प चढ़ावनो केशन को सुधारिवो शय्या बिछावनो स्नान करावनो भेंट को धरिवो इनकरिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवा आपही करतीभई ४५ ॥
इति श्रीमन्महाभागवतार्थचन्द्रिकायांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपारिजातहरणनरकवधोनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
(अथषष्टितमेकृष्ण० परिहासेनरुक्मिणीम् ॥ कोपयित्वाततःप्रेमकलहेतामसान्त्वयत् १ रामारामजनानन्दमहोदयविडम्बनैः ॥ रुक्मिण्याःप्रेमकलहच्छलनैश्वर्यमीर्यते २ साठवें अध्याय में

रेमेरमाभिर्निजकामसंप्लुतोयथेतरोगार्हकमेधिकांश्चरन् ४३ इत्थंरमापतिमवाप्यपतिंस्त्रियस्ताब्रह्मादयोऽपिनविदुःपदवींयदीयाम् ॥ भेजुर्मुदाऽविरतमेधितयाऽनुरागहासावलोकनवसङ्गमजल्पलज्जाः ४४ प्रत्युद्गमासनवरार्हणपादशौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ॥ केशप्रसारशयनस्नपनोपहार्यैर्दासीशताअपिविभोर्विदधुःस्मदास्यम् ४५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपारिजातहरणनरकवधोनामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥
श्रीशुकउवाच ॥ कर्हिचित्सुखमासीनं स्वतल्पस्थंजगद्गुरुम् ॥ पतिंपर्य्यचरद्भैष्मी व्यजनेनसखीजनैः १ यस्त्वेतल्लीलयाविश्वं सृजत्यत्त्यवतीश्वरः ॥ सहिजातःस्वसेतूनां गोपीथाययदुष्वजः २ तस्मिन्नन्तर्गृहेभ्राजन्मुक्तादामविलम्बिना ॥ विराजितेवितानेनदीपैर्मणिमयैरपि ३ मल्लिकादामभिःपुष्पैर्द्विरेफकुलनादिते ॥ जालरन्ध्रप्रविष्टैश्चगोभिश्चन्द्रमसोऽमलैः ४ पारिजातवनामोदवायुनोद्यानशालिना ॥ धूपैरगुरुजैराजञ्जालरन्ध्रविनिर्गतैः ५

कृष्णजी परिहास सूं रुक्मिणीजी को कोपकराकर फिर प्रेमकलह में तिनको शान्त करते भये १ रामाराममहानन्द विडम्बनों सों रुक्मिणीजी के प्रेमकलह के छल सूं ऐश्वर्य वर्णित है २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! काहूसमय एक शय्यापै सुखपूर्व्वक बैठे ऐसे जगत् के गुरु अपने पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें भीष्मक राजा की पुत्री रुक्मिणी सखीनसहित चमर करिकै सेवन करतिभई १ जो अजन्मा भगवान् लीला करिकै या विश्वकू उत्पन्न संहार पालन करे हैं वेभगवान् अपनी धर्म्ममर्यादानकी रक्षा करिबे के निमित्त यादवन में आयके प्रकट होतभये २ अब घर और शय्या को वर्णन करे हैं प्रकाशमान मोतीनकी झालरि जामें लटकै ऐसो चँदोवा तन्यो है तासूं प्रकाशमान है और मणिन के दीपक धरे हैं तिन सूं प्रकाशमान है ३ चमेली की माला है तिनसूं शोभायमान और फूल हैं तिनमें भौंरान के समूह गुञ्जत हैं जारी झरोकान में होयकै आई जे चन्द्रमाकी निर्म्मल किरण तिनसूं शोभायमान ४ बागीचा करिकै शोभायमान ऐसे कल्पवृक्षकी सुगन्ध है तासूं शोभायमान जारी झरोकान में होयकै निकसी ऐसी अगर की धूप हैं तिनसूं शोभायमान ऐसो जो महल है ता महल के भीतर शय्या बिछी है तापै दूध के

फेनकी तुल्य कोमल श्वेत जो विछौना विछो है ताके ऊपर सुखपूर्व्वक वैठे ऐसे जगत् के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र तिनें रुक्मिणी सेवन करतिभई ५। ६ हीराकी डाँड़ी जाकी ऐसो जो चमर है ताय सखी के हाथ मेंते लैके श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर ढोरै ऐसी जो रुक्मिणी है सो या प्रकार ईश्वर को सेवन करतभई ७ रुक्मिणी श्रीकृष्ण के पास मणिन के जड़ाऊ नूपुर हैं तिनसूं झनत्कार शब्द करति सुन्दर लगतिभई कैसी रुक्मिणी है ताको वर्णन करे हैं अंगुरीन में मुंदरीनकूं पहिरे और पहुँचे में कङ्कण हैं हाथ में जडाऊ डाँडी को चँवर है सारी के छोर सूं ढके जे कुच हैं तिनमें केसरि लगी है तासूं अरुण जो मोतीन को हार है ताकूं कटिमें पहिरे जो वड़े मोलकी कोंधनी तासूं शोभायमान है ८ लीला करिकै धारण करचो है देह जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तिनके योग्य है रूप जाको और नहीं है आप विना गति जाकी ऐसी रूपवती लक्ष्मी जो रुक्मिणी है ताय देखिकै प्रसन्न होय मुसिक्यायकै श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो अलकै कुण्डल युकुटकी इनसूं शोभायमान जो मुख

पयःफेननिभेशुभ्रे पर्य्यङ्केकशिपूत्तमे ॥ उपतस्थेसुखासीनं जगतामीश्वरंपतिम् ६ वालव्यजनमादाय रत्नदण्डंसखीकरात् ॥ तेनवीजयतीदेवी उपासांचक्रईश्वरम् ७ सोपाच्युतंकणयतीमणिनूपुराभ्यां रेजेऽङ्गुलीयवलयव्यजनाग्रहस्ता ॥ वस्त्रान्तगूढकुचकुङ्कुमशोणहारभासानितम्वधृतयाचपरार्ध्यकाञ्च्या ८ तांरूपिणींश्रियमनन्यगतिंनिरीक्ष्य यालीलयाधृततनोरनुरूपरूपा ॥ प्रीतःस्मयन्नलककुण्डलनिष्ककण्ठवक्त्रोल्लसत्स्मितसुधांहरिराबभाषे ६ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ राजपुत्रीप्सितासूपैर्लोकपालविभूतिभिः ॥ महानुभावैःश्रीमद्भी रूपौदार्य्यवलोर्जितैः १० तान्प्राप्तानर्थिनोहित्वा चैद्यादीन्स्मरदुर्म्मदान् ॥ दत्ताभ्रात्रास्वपित्राच कस्मान्नोववृषेऽसमान् ११ राजभ्योविभ्यतःसुभ्रूः समुद्रंशरणंगतान् ॥ बलवद्भिःकृतद्वेषान् प्रायस्त्यक्तनृपासनान् १२ अस्पष्टवर्त्मनांपुंसामलोकपथमीयुषाम् ॥ आस्थिताःपदवींसुभ्रूःप्रायःसीदन्तियोषितः १३ निष्किञ्चनावयंशश्वन्निष्किञ्चनजनप्रियाः ॥ तस्मात्प्रायेणनह्याढ्या मांभजन्तिसुमध्यमे १४ ययोरात्मसमंवित्तं जन्मैश्वर्य्याकृतिर्भवः ॥ तयोर्विवाहोमैत्रीच नोत्तमाधमयोःक्वचित् १५ वैदर्भ्येतद

है तामें मन्द मन्द मुसिकाय जो रुक्मिणी हैं तासूं वोलतभये ६ अब श्रीवासुदेवजी कहे हैं हे भीष्मराजाकी पुत्री रुक्मिणी! इन्द्र कुवेर वरुणकी तुल्य है वैभव जिनके वड़े हैं प्रभाव रूप उदारता वल जिनमें ऐसे जे राजा हैं तिनने तुम्हारी चाहनाकरी १० वड़ी चाहना जिनके कामदेव सूं पीड़ित ऐसे शिशुपाल सूं आदिलैके राजा तुम्हारे लेवे के लिये आये तिनें छोड़िकै तुम्हारी वरावरि करिवे के नहीं ऐसे हमहैं तिनें कौन कारणतें व्याहति भई और तुम्हारो भय्या पिता उनें दैभी चुक्योहो ११ हे सुभ्रु! अर्थात् सुन्दरहैं भृकुटी जाकी राजानतें हम डरपै हैं समुद्रको आयकै शरणो लियो है जोरावरन ते शत्रुताकी है वहुधा राजसिंहासन हूं छोड़ि दियो है १२ नहीं जानिवे में आवै है मार्ग्ग जिनको ऐसी स्त्रीनके कहे में न चलैं ऐसे पुरुषनको जे स्त्री हाथ पकरे हैं अर्थात् व्याही जाय हैं हे सुभ्रु! अर्थात् सुन्दर हैं भ्रुकुटी जाकी ऐसी रुक्मिणी वे स्त्री वहुधा दुःखित होय हैं १३ और हम निष्किञ्चन है और निष्किञ्चनजनकूं मैं प्यारो हौं ता कारण हे सुमध्यमे रुक्मिणी! जो कोई धनवारे हैं ते हम दरिद्री होय जायँगे या भयतें वहुधा मेरो भजन नहीं करे हैं १४ जिनके वरावरि को धन है वरावरि को जन्म है वरावरि को ऐश्वर्य है और वरावरि को रूप जाति है और सदा

जिनको एकसों निर्वाह होय है तिनकोही विवाह और मित्रता होयहै छोटे बड़े को कदाचित् नहीं होय है १५ हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री रुक्मिणी ! नहीं है बड़ो विचार जाके ऐसी तू है ताने बराबरि केनको व्याहहोय है यह बात जाने बिना गुणन करिकै हीन जो हमहैं तिनकूं वरोहै परन्तु तुम कहाकरो भिक्षुक नारदादिकन ने हमारी झूंठी बढ़ाई करी तासूं तुम्हारे मन में आइगई १६ अबहूं तुम अपनी बराबरि को क्षत्रियहोय ताको हाथ पकरिलेउ जा क्षत्रिय तें या लोक परलोकके मनोरथन कूं पावोगी १७ रुक्मिणी कहे हैं–तुम क्यों ले आयेहो–तहां श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं–हे वामोरु ! शिशुपाल शाल्व जरासन्ध दन्तवक्र कूं आदि लैके जे राजा हैं ते मोसूं सब शत्रुता करे हैं तेरो बड़ो भय्या रुक्मभी वैर करे है १८ हे मंगलरूपिणी ! पराक्रम के मद करिके आंधरे गर्व्ववन्त जे राजा हैं तिनको गर्व्व दूरि करिबे के निमित्त तब तोकूं लै आयोहों और असाधुनको तेजहै ताकू मैं हरिलेउं हूं १९ हम घरमें देहमें उदासीनहै हमारे स्त्रीकी पुत्रकी द्रव्यकी चाहना नहींहै आतमा

विज्ञाय त्वयादीर्घसमीक्षया ॥ वृतावयंगुणैर्हीना भिक्षुभिःश्लाघितामुधा १६ अथाऽऽत्मनोऽनुरूपंवै भजस्वक्षत्रियर्षभम् ॥ येनत्वमाशिषःसत्याइहामुत्रच लप्स्यसे १७ चैद्यशाल्वजरासन्धदन्तवक्त्रादयोनृपाः ॥ ममद्विषन्तिवामोरुरुक्मीचापितवाग्रजः १८ तेषांवीर्यमदान्धानां दृप्तानांस्मयनुत्तये ॥ आनीताऽसिमयाभद्रे तेजोऽपहरताऽसताम् १९ उदासीनावयंनूनं नस्त्र्यपत्यार्थकामुकाः ॥ आत्मलब्ध्याऽऽस्महेपूर्णा गेहयोर्ज्योतिरक्रियाः २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एतावदुक्त्वाभगवानात्मानंवल्लभामिव ॥ मन्यमानामविश्लेषात्तद्दर्पघ्नउपारमत् २१ इतित्रिलोकेशपतेस्तदाऽऽत्मनः प्रियस्यदेव्यश्रुतपूर्वमप्रियम् ॥ आश्रुत्यभीताहृदिजातवेपथुश्चिन्तान्दुरन्तांरुदतीजगामह २२ पदासुजातेननखारुणश्रिया भुवंलिखन्त्यश्रुभिरञ्जनासितैः ॥ आसिञ्चतीकुङ्कुमरूषितौस्तनौ तस्थावधोमुख्यतिदुःखरुद्धवाक् २३ तस्याःसुदुःखभयशोकविनष्टबुद्धेर्हस्ताच्छ्लथद्वलयतोव्यजनंपपात ॥ देहश्चविक्लवधियःसहसैवमुह्यन्रम्भेववायुविहताप्रविकीर्य्यकेशान् २४ तद्दृष्ट्वाभगवान्कृष्णः प्रियायाःप्रेमबन्धनम् ॥ हास्यप्रौढिमजानन्त्याः करुणःसोऽन्वकम्पत २५ पर्यङ्कादवरु

के आनन्दसूं सदा पूर्ण रहे हैं ज्योति की तुल्य साक्षीमात्र क्रिया रहित वर्ते हैं २० अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! रुक्मिणी के मनके हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो कभऊं न्यारी न होय तातें अपनपेकों बहुत वल्लभा मानैं ऐसी रुक्मिणी तें इतनो कहिकै चुप होतभये २१ या प्रकार त्रिलोकी केईश्वर पालन करनवारे अपने प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र तिनको कभऊं न सुन्यो ऐसो कुप्यारो वचनहै ताय श्रवण करिकै हृदयमें भयोहै कम्प जाके ऐसी रुक्मिणी देवी है सो भयभीत होयकै रोदन करति बड़ी चिन्ताकूं पावतिभई २२ नख करिकै अरुण है कान्ति जाकी ऐसो जो सुकुमार चरण है तासूं पृथ्वी कूं लिखैं है और अञ्जन सूं श्याम जे आंसू आंखिन में तें चलै हैं तिनसूं केसरि जिनमें लगी ऐसे स्तननकूं भिजोवत नीचे कूं है मुख जाको अत्यन्त दुःखसूं रुकी है वाणी जाकी ऐसी रुक्मिणी ठाढ़ी चुपहोति भई २३ अप्रिय वचन सुन्यो तासूं भयो जो दुःख और त्यागि देनेकी शङ्काकरिकै भयो जो शोकहै तिनसूं गईहै बुद्धि जाकी ऐसी जो रुक्मिणीहै ताके ढीले भये हैं कङ्कण जामें ऐसो जो हाथ है ताते चमर गिरतभयो व्याकुल है बुद्धिजाकी ऐसी रुक्मिणीकी देह शीघ्र मोहितहोयकै केशनकूं फैलायकै जैसे केलाको वृक्ष गिरै है या प्रकार गिरत

भइ २४ हास्य की जो डिठाई है ताय न जाने ऐसी जो प्यारी रुक्मिणी है ताको प्रेमबन्धन देखिकै करुणा जिनके आइगई ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र भुजा बलवंत २५ चार हैं भुजा जिनके ऐसे श्रीकृष्ण-चन्द्र पलँग पैतें शीघ्र नीचे उतरिकै रुक्मिणी कूं उठाइकै केशनकूं सम्हारिकै मुखकूं कमल की तुल्य जो कोमल हाथ है तासूं पोंछत भये २६ आंसू जिनमें भाजरहे ऐसे नेत्रनकूं और शोककरिकै ताडित जे स्तन हैं तिनें पोंछिके हे राजन् परीक्षित् ! नहीं है और विषय जाके ऐसी पतिव्रता रुक्मिणी है ताय भुजानसूं आलिंगन करिकै हांसी जो करी तासूं भ्रमायमान है चित्त जाको और कठोर हांसी योग्य नहीं कृपणा ऐसी जो रुक्मिणी है ताय सान्त्वना में समर्थ श्रीकृष्णचन्द्र समझावत भये २७।२८ तब श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहें हैं विदर्भ देशके राजाकीपुत्री! मेतें ईर्षा मति करो तू मेरे बिना और काहूकू नहीं जानैहै यह मैं जानूंहूं हे सुन्दरी! तू कहा कहैगी यह सुनिबे केलिये हांसी करीही २९ क्रोधके कोप करिके फरकिरहे हैं अधर जाके और चढरही है भ्रुकुटी कटाक्ष रा-

ह्याशु तामुत्थाप्यचतुर्भुजः ॥ केशान्समुह्यतद्वक्त्रं प्रामृजत्पद्मपाणिना २६ प्रमृज्याश्रुकलेनेत्रेस्तनौचोपहतौशुचा ॥ आश्लिष्यबाहुनाराजन्ननन्यविषयां सतीम् २७ सान्त्वयामाससान्त्वज्ञःकृपयाकृपणांप्रभुः ॥ हास्यप्रौढिभ्रमच्चित्तामतदर्हांसतांगतिः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मामावैदर्भ्यसूयेथा जानेत्वाम त्परायणाम् ॥ त्वद्वचःश्रोतुकामेन क्ष्वेल्याचरितमङ्गने २९ मुखञ्चप्रेमसंरम्भस्फुरिताधरमीक्षितुम् ॥ कटाक्षेपारुणापाङ्गं सुन्दरभ्रुकुटीतटम् ३० अयंहिपरमो लाभो गृहेषुगृहमेधिनाम् ॥ यन्नर्मैरीयतेयामः प्रियया भीरुभामिनि ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ सैवंभगवताराजन् वैदर्भीपरिसान्त्विता ॥ ज्ञात्वातत्परिहा सोक्तिं प्रियत्यागभयंजहौ ३२ बभाषऋषभंपुंसांवीक्षन्तीभगवन्मुखम् ॥ सव्रीडहासरुचिरस्निग्धापाङ्गेनभारत ३३ ॥ रुक्मिण्युवाच ॥ नन्वेवमेतदरविन्द विलोचनाऽऽह यद्वैभवान्भगवतोऽसदृशीविभूम्नः ॥ क्वस्वेमहिम्न्यभिरतोभगवांस्त्र्यधीशः क्वाहंगुणप्रकृतिरज्ञगृहीतपादा ३४ सत्यंभयादिवगुणेभ्यउरु क्रमान्तः शेतेसमुद्रउपलम्भनमात्रआत्मा ॥ नित्यंकदिन्द्रियगणैःकृतविग्रहस्त्वं त्वत्सेवकैर्नृपपदंविधुतंतमोऽन्धम् ३५ त्वत्पादपद्ममकरन्दजुषांमुनीनां

टान्त जामें और टेढी हैं भ्रकुटी जामें ऐसो जो मुख है ताकी शोभा देखिबे के लिये हांसी करीही ३० हे डरपोकनी ! अपनी प्यारी के संग हाँसीकरिकै समय व्यतीत करनो गृहस्थीनकूं घर में बडो लाभ है ३१ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने शान्तकरी ऐसी जो विदर्भ देश के राजाकी पुत्री रुक्मिणी है सो प्यारेने मोतें हांसिके करी है यह जानि कै और प्यारो मोकूं त्यागि देइगो यह जो मन में भयो ताप ताकूं त्यागति भई ३२ हे भारत ! शोभायमान राजन् परीक्षित् ! लाज भरी हँसनि मनोहर स्निग्ध कटाक्षनसूं सुन्दर जो मुख है ताय देखत पुरुषन में श्रेष्ठ कृष्णचन्द्र तिनसूं बोलति भई ३३ श्रीकृष्णचन्द्र ने जो अपने में अवगुण कहे तिनकूं गुण करिकै रुक्मिणी वर्णन करे है प्रथम श्रीकृष्णने कही तुम हमारी बराबरि की नहीं हौ हमारो हाथ कैसे पकड्यो ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै हे कमलदललोचन! तुम हौ तिनकी बराबरि मैं नहीं हूं या प्रकारके ऐश्वर्ययुक्त जो तुमहौ तिनकी बात सत्य है अपनी महिमा क-रिकै आप आठन तीनों ब्रह्मादिकनके ईश्वर ऐसे तुमहो और सकामपुरुषन ने जाके पांव पकरे ऐसी सत्त्वगुणी तमोगुणी रूप जो माया मैं हूं सो कहा मो में आप में बड़ो अन्तर है ३४ और जो

२५८

कृष्णने कही कि राजान के भयके मारे समुद्र में आयके रहेहैं ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै हे उरुक्रम! अर्थात् बड़ो है पराक्रम जिनको यातें तुमकूं भय नहीं है यह कहो यह बात सत्यहै सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण हैं तेही राजा हैं तिनके भयतेही मानों समुद्रकी जैसे थाह नहीं है ऐसे हृदयकी वातजानिवे में नहीं आवे है ऐसो जो प्राणीन को हृदय है तामें चैतन्यघन जो तुमहो सो निश्चलता करिकै प्रकाशोहो और जोरावरन नें हमने वैरकस्यो है यह जो तुमने कही सोभी सत्यहै क्योंकि विषयन में लगी हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे पुरुषन ने तुमतें विरोध करयो है उनमें तुम्हारी अप्रतीतिहै और जो श्रीकृष्णने कही हमारे राज्य आसन नहीं है ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै बहुत जामें अविवेक ऐसो जो राज्यआसन है सो तुम्हारे सेवक छोड़ि देइहैं तुमने छोड्यो यामें कहा कहनोहै ३५ और जो श्रीकृष्णने कही कि हमारो मार्ग जानिवे में नहीं आवै है और स्त्रीनके अधीन मैं नहीं हूं ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै तुम्हारे चरणारविन्द के मकरन्द को सेवनकरैं ऐसे जे मुनिहैं तिनको मार्ग पशुरूप जे मनुष्यह तिन पै प्रकट नहीं होयहै और जानिवे में नहीं आवै है तुम्हारो मार्ग जानिवे में न आवै यामें कहा आश्चर्य है हे व्यापक! तुम्हारे अनुवर्ती जे भक्तहैं तिनकी चेष्टा न्यारी

वर्त्मास्फुटं नृपशुभिर्ननु दुर्विभाव्यम् ॥ यस्मादलौकिकमिवेहितमीश्वरस्य भूमंस्तवेहितमथो अनु ये भवन्तम् ३६ निष्किञ्चनो ननु भवान्न यतोऽस्ति किञ्चिद्यस्मै बलिं बलिभुजोऽपि हरन्त्यजाद्याः ॥ न त्वा विदन्त्यसुतृपोऽन्तकमाढ्यतान्धाः प्रेष्ठो भवान्बलिभुजामपि तेऽपि तुभ्यम् ३७ त्वं वै समस्तपुरुषार्थमयः फलात्मा यद्वाञ्छया सुमतयो विसृजन्ति कृत्स्नम् ॥ तेषां विभो समुचितो भवतः समाजः पुंसः स्त्रियाश्च रतयोः सुखदुःखिनोर्न ३८ त्वं न्यस्तदण्डमुनिभिर्गदितानुभाव आत्माऽऽत्मदश्च जगतामिति मे वृतोऽसि ॥ हित्वा भवद्भ्रुव उदीरितकालवेगध्वस्ताशिषोऽब्जभवनाकपतीन्कुतोऽन्ये ३९ जाड्यं वचस्तव गदाग्रज यस्तु भूपान् विद्राव्य शार्ङ्गनिनदेन जहर्थ मां त्वम् ॥ सिंहो यथा स्वबलिमीश पशून्स्वभागं तेभ्यो भयाद्यदुदधिं शरणं प्रपन्नः ४० यद्वाञ्छया नृप शिखामणयोऽङ्गवैन्यजाय

है तुम्हारी न्यारी है यामें कहा आश्चर्य है ३६ और निष्किञ्चन जे पुरुषहैं तिनकूं हम प्रिय लगेहैं और धनिक पुरुषहैं ते हम दरिद्री होयजायँगे या डरके मारे हमारो भजन नहीं करे हैं यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै जिनतें कुछ न्यारो नहीं ऐसे तुम निष्किञ्चन हौ दरिद्रताकरि निष्किञ्चनता तुममें नहीं बने है प्रजान तें भेंट लेउ ऐसे जे ब्रह्मादिक देवता ते तुमकूं भेंट देइहैं प्राणनकूं पोषणकरैं धनाढ्यताके मद करिकै आंधरे ऐसे जे पुरुषहैं ते कालरूप जो तुमहौ तिनकूं नहीं जाने है ब्रह्मादिकनकूं तुम प्यारे हौ ३७ जिनके बराबरिको जन्महै तिनको विवाह और मित्रता होयहै यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै तुम सम्पूर्ण पुरुषार्थरूपहौ परमानन्दरूपहौ सुन्दरहै बुद्धि जिनकी वे पुरुष तुम्हारी प्राप्तिके लिये सब वस्तु त्यागिदेइहैं हे प्रभो! उनपुरुषन को और तुम्हारो सेवा सेवकभावहै सुख दुःखसूं व्याकुल परस्पर ऐसे स्त्री पुरुषहैं तिनके स्वामी सेवकभाव नहीं है ३८ और भिखारीनने झूंठी बड़ाईकरी है यह जो श्रीकृष्णने कही ताको उत्तर रुक्मिणी देइहै छूट्यो है कालको दण्ड जिनतें ऐसे जे मुनीश्वरहैं तिनने गायो है प्रभाव जिनको ऐसे जो जगत्के आत्मा और भक्तनकूं मोक्षके देनवारे यह जानिकै मैंने तुमें वरो है कहा करिकै तुम्हारी भ्रुकुटी को जो चढ़ाव सो तासूं प्रकट भयो जो काल ताको जो वेग तासूं दूरि गये हैं मनोरथ जिनके ऐसे जे ब्रह्मादिक हैं तिनकूं त्यागि कै तुम्हें वरो है और तुच्छन की कहा चलाई है ३९ अपने

में मेरो स्नेह होय तब श्रीकृष्ण ने कही स्नेह भये ते तोकूं कहा लाभ होइगो ताको उत्तर देइहै तुम्हारे चरणारविन्द में अनुरागहै सोई बड़ो लाभहै और जा समय या विश्वके बढ़ायवे के लिये रजोगुण कूं अङ्गीकार करिकै मो माया की ओर देखोगे वही बड़ो अनुग्रह है ४६ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने जे जे बातें कहीं तिनको उत्तर दैके प्रसन्न है चित्त जाको ऐसी रुक्मिणी मन्त्र सो कहे हैं हे मधुसूदन! तुमने कही अपनी बराबरि के क्षत्रियको अभऊ हाथ पकरि लेउ यह मैं मिथ्या नहीं मानूं हूं जैसे काशी के राजा की पुत्री अम्बा अम्बिका अम्बालिका ये तीनों कन्यानमें तें अम्बा कन्याकी शाल्वराजा में जैसे रतिभई तैसे मेरी रति तौ तुम्हारे विषेही भई है ४७ और हे अच्युत! विवाहिता जो व्यभिचारिणी स्त्री है वाको मन नवीन पुरुषन में जात है विवेकी पुरुष ऐसी खोंटी स्त्री कूं राखे नहीं है कदाचित् राखै तौ या लोक और परलोक में भ्रष्टहोय है ४८ अब श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे राजपुत्री रुक्मिणी! तुम्हारी बात सुनिबे के लिये मैंने ऐसी कही है मेरे वचनको

द्वयउपात्तरजोऽतिमात्रो मामीक्षसेतदुहनःपरमानुकम्पा ४६ नैवालीकमहंमन्ये वचस्तेमधुसूदन ॥ अम्बायाइवहिप्रायः कन्यायाःस्यादतिःक्वचित् ४७ व्यूढायाश्चापिपुंश्चल्यामनोऽभ्येतिनवन्नवम् ॥ बुधोऽसतींनबिभृयात्तांबिभ्रदुभयच्युतः ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साध्व्येतच्छ्रोतुकामैस्त्वं राजपुत्रिप्रल भिता ॥ मयोदितंयदन्वात्थसर्व्वंतत्सत्यमेवहि ४९ यान्यान्कामयसेकामान् मय्यकामायभामिनि ॥ सन्तिह्येकान्तभक्तायास्तवकल्याणिनित्यदा ५० उपलब्धंपतिप्रेमपातिव्रत्यञ्चतेऽनघे ॥ यद्वाक्यैश्चाल्यमानायानधीर्मय्यपकर्षिता ५१ येमांभजन्तिदाम्पत्ये तपसाव्रतचर्यया ॥ कामात्मानोऽपवर्गेशं मोहितामममायया ५२ मांप्राप्यमानिन्यपवर्गसम्पदं वाञ्छन्तियेसम्पदएवतत्पतिम् ॥ तेमन्दभाग्यानिरयेऽपियेनृणांमात्रात्मकत्वान्निरयःसुसङ्गमः ५३ दिष्ट्यागृहेश्वर्यसकृन्मयित्वया कृतानुवृत्तिर्भवमोचनीखलैः ॥ सुदुष्कराऽसौसुतरांदुराशिषोह्यसुम्भरायानिकृतिंजुषःस्त्रियाः ५४ नत्वादृशींप्रणयिनींगृहिणींगृहेषु पश्यामिमानिनिययास्वविवाहकाले ॥ प्राप्तान्नृपानवगणय्यरहोहरोमे प्रस्थापितोद्विजउपश्रुतसत्कथस्य ५५ भ्रातुर्विरूपकरणंयुधिनिर्जि

जो जो तुमने उत्तर कह्यो सो सब सत्य है ४९ हे भामिनी! हे मङ्गलरूपिणी! जो जो वस्तुकी तुम चाहना करो हो सो सो एकान्त भक्तिहै जाकी ऐसी जो तू है ता तेरे नित्य बनी रहे हैं ५० हे निष्पाप रुक्मिणी! तुमने पतिमें प्रेमपायो और पतिव्रताको जो धर्म्म है सो तुमने पायो वचनन करिकै डिगाई तथापि तुम्हारी बुद्धि सो मोतें चलायमान न भई ५१ विषयन में है आत्मा और मन जिनको ऐसे पुरुष तपस्या करिकै ब्रह्मचर्य्य करिकै स्त्री पुरुषके भोग को जो सुख है ताके लिये मेरो भजन करे हैं वे पुरुष मेरी माया तें मोहितहैं अर्थात् भूलि रहेहैं ५२ हे मानिनी! मोक्षसहित सम्पूर्ण सम्पत्तिनको देनवारो मैं हूं ताय पायकै विषयनकी चाहना करे हैं विषयनको देनवारो मैं हूं ताकी चाहना नहीं करे है वे पुरुष अभागे हैं जो विषय मनुष्यन कूं कुत्तानकी सूकरन की योनि में हूं मिले हैं विषयन में मन रहे हैं ५३ हे घरकी महारानी! संसारकी छुड़ावनवारी चाहना जामें नहीं ऐसे मनकी वृत्ति तैंने मोमें लगायो खोंटो है अभिप्राय जाको याहीते अपने प्राणनको भरणपोषणकरै दूसरे कूं ठगे ऐसी जो स्त्रीहै ताके मनकी वृत्ति मोमें नहीं लगेहै ५४ हे भामिनी! सोलहहजार एकसौ आठ महलन में तुम्हारी बराबरि प्यारकी करनवारी और

स्त्री नहीं देखूं हूं जा तैने अपने विवाह के समय आये जे राजा हैं तिनकूं त्यागिकै मेरी वात सुनिकै पाती लिखिकै मेरे पास ब्राह्मण भिजवायो ५५ युद्ध में तेरे भइया रुक्मीकूं जीतिलियो वाको शिर मूंड़िकै विरूप करिदियो हो और अनिरुद्ध के विवाह में चौपरि खेलत वाकू मास्यो यह भइया के मारिवे को दुःख हमारे त्यागिवे के भयके मारे सहास्यो और कछु न कही ऐसी ऐसी तेरी वातन ने हमको वशकरि राखे हैं ५६ मेरे बुलायो कू कोई जाने नहीं ऐसे एकान्ती दूत कूं मेरे पास भेज्यो जब मोकूं आयवे में विलम्ब भयो तब या विश्वकूं शून्य मानिकै और राजा मेरे योग्य नहीं हैं यह निश्चय करिकै देहके त्यागिवेकी इच्छा करति भई यह वात तेरे विना कापै वनैहै हम तेरी कहा प्रशंसा करैं ५७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार आत्माराम जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र मनुष्यन को अनुकरण करिकै हास्यकी वातै करि करिके स्त्रीनके संग रमण करत भये ५८ समर्थ सम्पूर्ण लोकनके गुरु सबके दुःखके हरनवारे जे श्रीकृष्ण

तस्य प्रोद्वाहपर्वणि चतद्वधमक्षगोष्ठ्याम् ॥ दुःखंसमुत्थमसहोऽस्मदयोगभीत्या नैवाब्रवीःकिमपितेनवयंजितास्ते ५६ दूतस्त्वयाऽऽत्मलभनेसुविविक्तमन्त्रः प्रस्थापितोमयिचिरायतिशून्यमेतत् ॥ मत्वाजिहासइदमङ्गमनन्ययोग्यं तिष्ठेततत्त्वयिनयंप्रतिनन्दयामः ५७॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंसौरतसंलापैर्भगवाञ्जगदीश्वरः ॥ स्वरतोरमयारेमे नरलोकंविडम्बयन् ५८ तथाऽन्यासामपिविभुर्गृहेषुगृहवानिव ॥ आस्थितोगृहमेधीयान् धर्मांल्लोकगुरुर्हरिः ५९ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णरुक्मिणीसंवादोनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकैकशस्ताःकृष्णस्य पुत्रान्दशदशाबलाः ॥ अजीजनन्ननवमान् पितुःसर्वात्मसम्पदा १ गृहादनपगंवीक्ष्यराजपुत्र्योऽच्युतंस्थितम् ॥ प्रेष्ठंन्यमंसतस्वंस्वंनतत्तत्त्वविदःस्त्रियः २ चार्वब्जकोशवदनायतबाहुनेत्रसप्रेमहासरसवीक्षितवल्गुजल्पैः ॥ सम्मोहिताभगवतोनमनोविजेतुंस्वैर्विभ्रमैःसमशकन्वनिताविभूम्नः ३ स्मायावलोकलवदर्शितभावहारिभ्रूमण्डलप्रहितसौरतमन्त्रशौण्डैः ॥ पत्न्यस्तुषोडशसहस्रमनङ्गबाणैर्यस्येन्द्रि

चन्द्र हैं सो और रानीनके महलन में रहिकै गृहस्थनकेसे धर्म सिखावें हैं ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णरुक्मिणीसंवादोनामषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥ ✻ ॥

(एकषष्टितमेशौरेःपुत्रपौत्रादिसन्ततिः ॥ अनिरुद्धविवाहेचरुक्मिणोरामतोवधः १ अष्टाधिकशतद्व्यष्टसहस्रस्त्रीसमुद्भवान् ॥ कोटिशःपुत्रपौत्रादीन्हरिर्दारैरयोजयत् २ इकसठवें अध्यायमें कृष्णजीके पुत्र और पौत्रादिकोंकी सन्तति और अनिरुद्धजीके विवाह में बलदेवजी सूं रुक्मी का नाश वर्णन है १ कृष्णजी सोलहहजार एकसौ आठ स्त्रियों सं उत्पन्न करोड़न पुत्र पौत्रादिकन के विवाह कर देतेभये २) अबश्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्णचन्द्रकी एक २ एकरानी पिता श्रीकृष्णचन्द्रकी तुल्य हैं रूप गुण जिनमें ऐसे दश दश पुत्रनकूं उत्पन्न करती भई १ घरते कहूं बाहर जायँ नहीं अपने पासरहें आवें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं राजानकी पुत्री देखिकै और श्रीकृष्ण आत्माराम हैं या वात कूं नहीं जानिकै अपनो अपनो प्यारो मानति भई २ व्यापक जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं तिनको कमलकोश अर्थात् मध्य ताकी तुल्य है सुकुमार मुख बड़ी भुजा बड़े नेत्र प्रेमसहित हँसनि रसभरी चितवनि मनोहर बोलनि इत्यादिकनसूं मोहित जे स्त्री

है ते अपने अनेक विलासन करिकै पूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको मन मोहित करिवे कूं नहीं समर्थ होति भई ३ गूढ हँसनिपूर्वक जो कटाक्षन सूं जतायो अभिप्राय ता करिकै मनको हरनवारो जो भृकुटीरूप मण्डल है ता करिकै पठाये जे सुरतिसम्बन्धी मन्त्र हैं तिनसूं पैने जे कामदेव के बाण और जे कामशास्त्रविहित प्रसिद्ध साधन हैं तिन करिकै सोलह हजार रानी हैं ते श्रीकृष्ण-चन्द्रके मनकूं चलायमान करिवे कूं समर्थ न होतिभई ४ ब्रह्मादिक जिनके मार्ग कूं नहीं जानें ऐसे लक्ष्मीके पति श्रीकृष्णचन्द्र कूं या प्रकार पति पाय कै छिनके बढ्यो जो आनन्द तासूं स्नेहभरी हँ-सनि चितवनिहै ताय और हास्य चितवनिपूर्वक नवीन सङ्गमहै ताय और ता नवीन सङ्गममें बोलनिहै ताय और बोलनिमें जो लाजहै ताय सेवन करतिभई ५ एकएक रानीके सन्मुख सौ सौ दासी हाथ जोरे ठाढ़ीहैं तथापि सन्मुख जायकै प्रेम करिकै लिवाय लाइवो आसन बिछायवो सुन्दर पूजन करिवो चरणधोइवो बीरी लगाइवो चरणको दाबिवो पङ्खाकरिवो अतर अरगजा लगाइवो पुष्प चढ़ावनो

यंविमथितुंकरणैर्नशेकुः ४ इत्थंरमापतिमवाप्यपतिंस्त्रियस्ताब्रह्मादयोऽपिनविदुःपदवींयदीयाम् ॥ भेजुर्मुदाऽविरतमेधितयानुरागहासावलोकनवसङ्गम
लालसाद्यम् ५ प्रत्युद्गमासनवरार्हणपादशौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ॥ केशप्रसारशयनस्नपनोपहार्यैर्दासीशताअपिविभोर्विदधुःस्मदा-
स्यम् ६ तासांयादशपुत्राणां कृष्णस्त्रीणांपुरोदिताः॥ अष्टौमहिष्यस्तत्पुत्रान् प्रद्युम्नादीन्गृणामिते ७ चारुदेष्णःसुदेष्णश्च चारुदेहश्चवीर्यवान् ॥ सु
चारुश्चारुगुप्तश्च भद्रचारुस्तथाऽपरः ८ चारुचन्द्रोविचारुश्च चारुश्चदशमोहरेः ॥ प्रद्युम्नप्रमुखा जातारुक्मिण्यांनावमाःपितुः ९ भानुःसुभानुःस्वर्भानुःप्रभा
नुर्भानुमांस्तथा ॥ चन्द्रभानुर्बृहद्भानुरतिभानुस्तथाऽष्टमः १० श्रीभानुःप्रतिभानुश्चसत्यभामात्मजादश ॥ साम्बःसुमित्रःपुरुजिच्छतजिच्चसहस्रजित् ११
विजयश्चित्रकेतुश्च वसुमान्द्रविडःक्रतुः॥ जाम्बवत्याःसुताह्येते साम्बाद्याःपितृसम्मताः १२ वीरश्चन्द्रोऽश्वसेनश्च चित्रगुर्वेगवान्वृषः ॥ आमःशङ्कुर्वसुः
श्रीमान् कुन्तिर्नाग्नजितेःसुताः १३ श्रुतःकविर्वृषोवीरः सुबाहुर्भद्रएकलः ॥ शान्तिर्दर्शःपूर्णमासःकालिन्द्याःसोमकोऽवरः १४ प्रघोषोगात्रवान्सिंहोबलः

केशनकूं सुधारिवो शय्या बिछावनो स्नान करावनो भेंटको धरिवो इन करिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी सेवा करतिभई ६ दशदशहैं पुत्र जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णकी रानीहैं तिनमें जे आठ पटरानी प्रथम कही है तिनके प्रद्युम्न कूं आदिलैकै जे पुत्र हैं तिनें तेरेआगे कहूं हूं ७ प्रद्युम्न हैं मुख्य जिनमें गुणन में पितासूं कमती नहीं ऐसे चारुदेष्ण सुदेष्ण बलवान् चारुदेह सुचारु चारुगुप्त तैसेही भद्रचारु चारुचन्द्र विचारु चारु ये दशपुत्र श्रीकृष्णचन्द्रसूं रुक्मिणीमें उत्पन्न होतभये ८। ९ भानु सुभानु स्वर्भानु प्रभानु भानुमान् चन्द्रभानु बृहद्भानु तैसेही आठवों अतिभानु १० श्रीभानु प्रतिभानु ये दश पुत्र सत्यभामा के उत्पन्न होत भये और साम्ब सुमित्र पुरुजित् शतजित् सहस्रजित् ११ विजय चित्रकेतु वसुमान् द्रविड क्रतु ये साम्ब कूं आदि लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकी तुल्य है गुण जिनमें ऐसे दश पुत्र जाम्बवती के होत भये १२ वीरचन्द्र अश्वसेन चित्रगु वेगवान् वृष आम शंकु तथा शोभायमान वसु और कुन्ति ये दश नाग्नजिती के पुत्र होत भये १३ श्रुत कवि वृष वीर सुबाहु और भद्र है नाम जाको ऐसो एक पुत्र शान्ति दर्श पूर्णमास और इन सब सूं छोटो सोमक ये दश पुत्र कालिन्दी के होत भये १४ प्रघोष गात्रवान् सिंह बल प्रबल ऊर्द्ध्वग महाशक्ति सह ओज

अपराजित ये दशपुत्र लक्ष्मणा के होतभये १५ वृक हर्ष अनिल गृध्र वर्द्धन उन्नाद महाश पावन वह्नि क्षुधि ये दश मित्रविन्दाके पुत्र होत भये १६ संग्रामजित् बृहत्सेन शूर प्रहरण अरिजित् जय सुभद्र वाम आयु सत्यक ये दश पुत्र भद्रा के उत्पन्न होत भये ये श्रीकृष्णचन्द्र की आठ रानीन के पुत्र कहे अब आठ रानीन ते न्यारी जो रोहिणी है ताके दीप्तिमान् ताम्रतप्त कूं आदि लैके पुत्र होत भये जैसे रोहिणी के पुत्र कहे ऐसेही और सोलह हजार रानीन के भी दश दश पुत्र जानिलीजै हे राजन् परीक्षित्! भोजकटपुर में रुक्मी की जो पुत्री रुक्मवतीहै तामें प्रद्युम्न जी तें बलवान् अनिरुद्ध नाम करिकै पुत्र होतभयो हे राजन् परीक्षित्! ये जो श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्रहैं तिनके पुत्र औरनाती करोड़न होत भये और श्रीकृष्ण तें जन्मे जे पुत्रहैं तिनकी सोलह हजार माता होतिभई १७।१८।१९ अब राजा परीक्षित् कहे हैं संग्राम के विषे श्रीकृष्णने तिरस्कार जाको करयो ऐसो रुक्मी वैरी श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी हैं तिन कूं अपनी कन्या कैसे विवाहत भयो वह तो कृष्ण के मारिबे

प्रबलऊर्द्धगः॥ माद्र्याःपुत्रामहाशक्तिः सहओजोऽपराजितः १५ वृकोहर्षोऽनिलोगृध्रोवर्द्धनोन्नादएवच॥ महाशःपावनोवह्निर्मित्रविन्दात्मजाःक्षुधिः १६ संग्रामजिद्बृहत्सेनः शूरःप्रहरणोऽरिजित्॥ जयःसुभद्रोभद्रायावामआयुश्चसत्यकः १७ दीप्तिमांस्ताम्रतप्ताद्या रोहिण्यास्तनयाहरेः॥ प्रद्युम्नाच्चानिरुद्धोभूद्रुक्मवत्यांमहाबलः १८ पुत्र्यांतुरुक्मिणोराजन् नाम्नाभोजकटेपुरे॥ एतेषांपुत्रपौत्राश्च बभूवुःकोटिशोनृप॥ मातरःकृष्णजातानां सहस्राणिच पोडश १९॥ राजोवाच॥ कथंरुक्म्यरिपुत्राय प्रादाद्दुहितरंयुधि॥ कृष्णेनपरिभूतस्तं हन्तुंरन्ध्रंप्रतीक्षते॥ एतदाख्याहिमेविद्वन् द्विषोर्वैवाहिकंमिथः २० अनागतमतीतंच वर्त्तमानमतीन्द्रियम्॥ विप्रकृष्टंव्यवहितं सम्यक्पश्यन्तियोगिनः २१॥ श्रीशुकउवाच॥ वृतःस्वयंवरेसाक्षादनङ्गोऽङ्गयुतस्तया॥ राज्ञःसमेतान्निर्जित्य जहारैकरथोयुधि २२ यद्यप्यनुस्मरन्वैरं रुक्मीकृष्णावमानितः॥ व्यतरद्भागिनेयाय सुतांकुर्वन्स्वसुःप्रियम् २३ रुक्मिण्यास्तनयांराजन् कृतवर्म्मसुतोबली॥ उपयेमेविशालाक्षीं कन्यांचारुमतींकिल २४ दौहित्रायानिरुद्धाय पौत्रींरुक्म्यददाद्धरेः॥ रोचनांबद्धवैरोऽपिस्वसुःप्रियचिकी

को उपाय करे हो हे विवेकी शुकदेवजी! शत्रुनको आपुस में विवाह कैसे भयो यह मेरे आगे वर्णन कीजिये २० जो कदाचित् कहो कि हम या बात कूं कहा जानैं ताको उत्तर राजा देइ है योगीश्वर हैं ते जो आगे होनहार है ताय और जो बीतगई है ताय और जो वर्त्तमान है ताय और जो हमारे देखिबे सुनिबे में नहीं आवै है ताय दूरि की बात है ताय और भीतिकी ओट में जो वस्तु धरी है ताय भले प्रकार देखि लेइ हैं २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! रुक्मी की पुत्री जो रुक्मवतीहै ताके स्वयंवरमें आये जे राजाहैं तिनैं जीति कै एक है रथ जिन के ऐसे अङ्गसहित जो कामदेव प्रद्युम्नजी हैं सो युद्ध में हरि कै लावत भये २२ यद्यपि रुक्मीको श्रीकृष्ण ने तिरस्कार कस्यो या वैर को स्मरण करै है तथापि बहिनि के भलो मनाइबे के लिये भानजो जो प्रद्युम्न है ताकूं अपनी कन्या देत भयो २३ श्रीकृष्णचन्द्र की सब रानीन के एक एक कन्या भई यह दिखाइबे के लिये बडी रानी जो रुक्मिणी है ताकी कन्या को विवाह कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! सुन्दरहै बुद्धि जाकी विशाल हैं नेत्र जाके ऐसी रुक्मिणी की पुत्री है ताय बलवान् जो कृतवर्म्मा को पुत्र है सो विवाहत भयो २४ यद्यपि वैर बँधि रह्यो है तथापि रुक्मी

अपनी वहिनि को भलो मनाइवे के कारण श्रीकृष्ण को नाती अपनो दौहितो ऐसो जो अनिरुद्ध है ताकूं अपनी रोचना नाम नातिनी कूं देत भयो नाते में विवाह करनो अधर्म है या बात कूं रुक्मी जाने भी है परन्तु स्नेह के रससान में बँधो है या कारण विवाहि देत भयो २५ हे राजन् परीक्षित् ! ता विवाह में रुक्मिणी बलदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र और साम्ब प्रद्युम्न कूं आदि लेकें श्री कृष्णचन्द्र के पुत्र हैं ते रुक्मी के भोजकटनागपुर में जात भये २६ विवाह होयचुक्यो ता पीछे कलिङ्गदेश को राजा है मुख्य जिनमें ऐसे गर्व्ववन्त जे राजा हैं ते रुक्मी तें बोलत भये पासेन करिकें बलदेव कूं जीति लेउ २७ हे राजन् रुक्मी ! यह बलदेव पासे खेल नहीं जाने है परन्तु याकूं खेलिबे को व्यसन बडो है या प्रकार जातें कही ऐसो रुक्मी बलदेवजी कू बुलाय कें तिनके सङ्ग पासेन करिकें खेलत भयो २८ बलदेवजी सौ मोहरन को ता पीछे हजार मोहरन को फेरि दश हजार मोहरन को दॉव लगावतभये वह दाँव रुक्मी जीतत भयो ता समय कलिङ्गदेश को राजा दांत

पेया ॥ जानन्नधर्मं तद्यौनं स्नेहपाशानुबन्धनः २५ तस्मिन्नभ्युदये राजन् रुक्मिणी रामकेशवौ ॥ पुरं भोजकटं जग्मुः साम्बप्रद्युम्नकादयः २६ तस्मिन्निवृत्त उ द्वाहे कालिङ्गप्रमुखा नृपाः ॥ दृप्तास्ते रुक्मिणं प्रोचुर्बलमक्षैर्विनिर्जय २७ अनक्षज्ञो ह्ययं राजन्नपि तद्व्यसनं महत् ॥ इत्युक्तो बलमाहूय तेनाक्षै रुक्म्यदीव्यत २८ शतं सहस्रमयुतं रामस्तत्राऽऽददे पणम् ॥ तन्तु रुक्म्यजयत्तत्र कालिङ्गः प्राहसद्बलम् ॥ दन्तान् सन्दर्शयन्नुच्चैर्नामृष्यत्तद्धलायुधः २९ ततो लक्षं रुक्म्यगृह्णाद्ग्लहं तत्राजयद्बलः ॥ जितवानहमित्याह रुक्मी कैतवमाश्रितः ३० मन्युना क्षुभितः श्रीमान् समुद्र इव पर्वणि ॥ जात्यारुणाक्षोऽतिरुषा न्यर्बुदं ग्लहमाददे ३१ तं चापि जितवान्रामो धर्मेण च्छलमाश्रितः ॥ रुक्मी जितं मयात्रेमे वदन्तु प्राश्निकाइति ३२ तदाऽब्रवीन्नभोवाणी बलेनैव जितो ग्लहः ॥ धर्मतो वचनेनैव रुक्मी वदति वै मृषा ३३ तामनादृत्य वैदर्भो दुष्टराजन्यचोदितः ॥ सङ्कर्षणं परिहसन् बभाषे कालचोदितः ३४ नैवाक्षकोविदा यूयं गोपाला वनगोचराः ॥ अक्षैर्दीव्य न्ति राजानो बाणैश्च न भवादृशाः ३५ रुक्मिणैवमधिक्षिप्तो राजभिश्चोपहासितः ॥ क्रुद्धः परिघमुद्यम्य जघ्ने तं नृम्णसंसदि ३६ कलिङ्गराजं तरसा गृहीत्वाद

दिखाय कै बलदेवजी की बहुत हासी करत भयो तब हल है हथियार जिनके ऐसे बलदेवजी हासी कूं नहीं सहारत भये २९ ता पीछे रुक्मी लाख मोहर को दॉव लगावत भयो ताकूं बल-देवजी जीते ता समय कपटकरिकें मैंने जीत्यो है या प्रकार रुक्मी कहतभयो ३० पावस पूर्णमासीकूं समुद्र में जैसे क्षोभ होय है या प्रकार क्रोध करिकें क्षोभ जिनके भयो और स्वाभाविक है अरुण नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी अत्यन्त रोष करिकें दश करोड़ मोहरन को दॉव लगावत भये ३१ धर्म करिकें वह जो दॉव है ताय बलदेवजी जीतत भये तब रुक्मी छल करिकें कहत भयो कि मैं जीत्यो हों ये मेरे पास के राजा हैं इनें बूझि लेउ या प्रकार रुक्मी को और बलदेवजी को विवाद होयरह्यो इतने में आकाशवाणी भई धर्म तें बलदेवजी दॉव जीते हैं रुक्मी को वचन मिथ्या है ३२।३३ तासमय आकाशवाणी को अनादर करिकें दुष्ट राजान ने सिखायो ऐसो जो विदर्भदेश को राजा रुक्मी है सो बलदेवजी की हासी करत काल को प्रेरयो यह वचन बोलत भयो ३४ गौवन के चरावनवारे वनवासी तुम पासे नहीं खेल जानो हो पांसेन सूं और बाणनसूं राजा खेलें हैं तुम सरिसे नहीं खेलें हैं ३५ या प्रकार रुक्मी ने अनादर जिनको करयो और राजान ने हॉसीकरी

ऐसे बलदेवजी क्रोध करिकै बेंडो उठाय कै मंगलसभा में रुक्मी कूं मारत भये ३६ ता समय भाज्यो जो कलिङ्गदेश को राजा है ताय दशवें पैंड पै दौरि कै क्रोध करिकै जिन दांतन कूं दिखाय
के हाँसी करीही तिन दातनकूं बलदेवजी झारि डारत भये ३७ बलदेवजी ने बेंडे सूं मारे याते हाथ जिनके टूटे जंघा शिर रुधिर सूं भीने ऐसे और जे राजा हे ते भयभीत होयकै भाजतभये ३८
हे राजन् परीक्षित्! रुक्मी सारो मारो गयो ता समय रुक्मिणी बलदेवके स्नेह टूटिवे के डरके मारे श्रीकृष्ण भली बुरी कछुहू नहीं कहत भये भली भई यह कहने तौ रुक्मिणी बुरो मानती बुरी यह
कहते तौ बलदेवजी बुरो मानते याते चुपही होतभये ३९ श्रीकृष्णचन्द्र है आश्रय जिनके याहीतें सिद्धभये है सम्पूर्ण मनोरथ जिनके ऐसे राम सूं आदि लैके यादवहैं ते नवीनवधूसहित जो
अनिरुद्ध है ताय सुन्दर रथमें बैठायकै रुक्मीके भोजकटपुर तें द्वारकापुरीमें आवतभये ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे अनिरुद्धविवाहेरुक्मिवधोनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥
(द्वियुरुपष्टितमेप्रोक्तमनिरुद्धस्यरोधनम् ॥ कन्ययारममाणस्यबाणेनबहुबाहुना १ अनिरुद्धोद्वहेऽन्यस्मिन्बाणयादवसंयुगे ॥ श्रीकृष्णःश्रीहरंजित्वाबाणबाहूनथाऽच्छिनत् २ बासठवें अध्याय

श्मेपदे ॥ दन्तानपातयत्क्रुद्धोयोऽहसद्विवृतैर्द्विजैः ३७ अन्येनिर्भिन्नबाहूरुशिरसोरुधिरोक्षिताः ॥ राजानोदुद्रुवुर्भीताबलेनपरिघार्दिताः ३८ निहतेरुक्मि
णिश्यालेनाब्रवीत्साध्वसाधुवा ॥ रुक्मिणीबलयोराजन्स्नेहभङ्गभयाद्धरिः ३९ ततोऽनिरुद्धंसहसूर्ययावरंरथंसमारोप्ययमुःकुशस्थलीम् ॥ रामादयोभोज
कट.द्दशार्हाःसिद्धाखिलार्थामधुसूदनाश्रयाः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽनिरुद्धविवाहेरुक्मिवधोनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥
राजोवाच ॥ बाणस्यतनयामूषामुपयेमेयदूत्तमः ॥ तत्रयुद्धमभूद्घोरंहरिशङ्करयोर्महत् ॥ एतत्सर्वंमहायोगिन् समाख्यातुंत्वमर्हसि १ ॥ श्रीशुकउ
वाच ॥ बाणःपुत्रशतज्येष्ठो बलेरासीन्महात्मनः ॥ येनवामनरूपाय हरयेऽदायिमेदिनी २ तस्यौरसःसुतोबाणः शिवभक्तिरतःसदा ॥ मान्योवदान्योधी
मांश्च सत्यसन्धो.दृढव्रतः ॥ शोणिताख्येपुरेरम्येसराज्यमकरोत्पुरा ३ तस्यशम्भोःप्रसादेन किङ्कराइवतेऽमराः ॥ सहस्रबाहुर्वाद्येन ताण्डवेऽतोषयन्मृडम् ४

में बाणासुर की कन्या से रमण करतेहुये अनिरुद्धजी का बहुत भुजावाले बाणासुरने बन्धन करदियो १ दूसरे अनिरुद्धजी के विवाहमें बाणासुर और यादवोंके युद्धमें श्रीकृष्णजी श्रीमहादेव
जी को जीतकर बाणासुर के भुजाओं को काटते भये २) अब राजा परीक्षित् कहे हैं कि हे शुकदेवजी ! यादवन में उत्तम अनिरुद्धजी बाणासुर की कन्या ऊषाकूं विवाहत भये और विवाह पै
श्रीकृष्णचन्द्र और महादेवको घोर युद्ध होतभयो सो सम्पूर्ण मेरे सम्मुख कहिवे कूं योग्यहो १ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! विष्णुने जब वामनरूप धारण करि है पृथ्वी मागी
तब सम्पूर्ण पृथ्वी जिनने दानकरी ऐसे महात्मा राजा बलिके सौ पुत्र होतभये तिन में ज्येष्ठ पुत्र शिवको अत्यन्त भक्त सबको मान्य ज्ञानवान् बुद्धिमान सत्यसङ्कल्प दृढ है व्रत जाको ऐसो बाणा-
सुर नाम करिकै होतभयो शोणित नाम करिकै रमणीकपुर में राज्य करतभयो २ । ३ ता बाणासुर के शिवजी की कृपा करिकै सम्पूर्ण देवता टहलुआन की तुल्य ठाढे रहे एक समय ताण्डव
नृत्यमें हजार हाथनसूं बाजेकूं बजाय शिवजी कूं बाणासुर ने प्रसन्नकरयो तब सब प्राणीन के ईश्वर शरण्य भक्तवत्सल भगवान् शिवजी बाणासुरकूं वरदेवे की इच्छा करतभये तब शिवजी

तें तुम मेरे पुरकी रक्षा करो यह वर मागत भयो ४ । ५ पराक्रम सूं दुष्ट है मद जाको ऐसो बाणासुर है सो अपने पासरहैं जो शिवजी तिनके चरणारविन्द कूं सूर्य जैसो है तेज जाको ऐसो जो किरीट है तासूं स्पर्श करिकै एक समय बोलत भयो ६ हे लोकन के गुरु ईश्वर महादेव! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जिन के ऐसे जे पुरुष हैं तिनके मनोरथन के पूर्ण करनवारे कल्पवृक्षरूप जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार है ७ और हे देव! तुमने हजार भुजा मोकूं दीनी हैं इनको अबतक केवल बोझही भयो है याने त्रिलोकी में तुम्हारे बिना और कोई मोकूं बराबरि को युद्ध करिवेकूं नहीं मिले है ८ खुजली जिन में चलै ऐसी भुजान सूं युद्ध करिवे के लिये हे सम्पूर्ण के कारण शिवजी! मैं पर्वतन कूं चूर्ण करत दिशान के हाथी हैं तिनके पास जानभयो तब मेरे भयके मारे वेभी दिशान कूं छोड़िके भाजत भये ९ या प्रकार ता बाणासुर को वचन सुनिकै भगवान् शिवजी क्रोध करिकै कहतभये हे मूढ! जा समय तेरी ध्वजा टूटेगी ता समय मेरी बराबरि के सूं तेरो युद्ध होयगो १०

भगवान्सर्वभूतेशः शरण्यो भक्तवत्सलः ॥ वरेणच्छन्दयामास सतंवव्रेपुराऽधिपम् ५ सएकदाऽऽहगिरिशं पार्श्वस्थंवीर्यदुर्मदः ॥ किरीटेनार्कवर्णेनसंस्पृशंस्तत्पदाम्बुजम् ६ नमस्येत्वांमहादेव लोकानांगुरुमीश्वरम् ॥ पुंसामपूर्णकामानां कामपूरामराङ्घ्रिपम् ७ दोःसहस्रंत्वयादत्तं परंभारायमेऽभवत् ॥ त्रिलोक्यांप्रतियोद्धारं नलेभेत्वदृतेसमम् ८ कण्डूत्यानिभृतैर्दोर्भिर्युयुत्सुर्दिग्गजानहम् ॥ आद्यायांचूर्णयन्नद्रीन् भीतास्तेऽपिप्रदुद्रुवुः ९ तच्छ्रुत्वाभगवान्क्रुद्धःकेतुस्तेभज्यतेयदा ॥ त्वद्दर्पघ्नंभवेन्मूढसंयुगंमत्समेनते १० इत्युक्तःकुमतिर्हृष्टः स्वगृहंप्राविशन्नृप ॥ प्रतीक्षन्गिरिशादेशं स्ववीर्यनशनंकुधीः ११ तस्योषानामदुहिता स्वप्नेप्राद्युम्निनारतिम् ॥ कन्याऽलभतकान्तेनप्रागदृष्टश्रुतेनसा १२ सातत्रतमपश्यन्तीक्वासिकान्तेतिवादिनी ॥ सखीनांमध्यउत्तस्थौविह्वलाव्रीडिताभृशम् १३ बाणस्यमन्त्रीकुम्भाण्डश्चित्रलेखाचतत्सुता ॥ सख्यपृच्छत्सखीमूषां कौतूहलसमन्विता १४ कंत्वंमृगयसेसुभ्रूः कीदृशस्तेमनोरथः ॥ हस्तग्राहंनतेऽद्यापि राजपुत्र्युपलक्षये १५ ॥ ऊषोवाच ॥ दृष्टःकश्चिन्नरःस्वप्ने श्यामःकमललोचनः ॥ पीतवासाबृहद्बाहुर्योषितांहृदय

हे राजन् परीक्षित्! शिवजी ने या प्रकार बातें कही ऐसो कुबुद्धि बाणासुर अपने घरकू जातभयो और अपनो बल बुद्धि पराक्रम को है नाश जामें ऐसी शिवजीकी आज्ञा है ताको पैंड़ो देखेहै ११ ऊषा है नाम जाको ऐसी बाणासुर की कन्या है सो अपनी कन्यापन की अवस्था में स्वप्नमें प्रद्युम्नजी के पुत्र अनिरुद्धके सङ्ग रति पावतिभई कैसे अनिरुद्धहैं प्रथम कबहूं देखे हैं न सुनेहैं १२ पीछे ऊषा तहां अनिरुद्धकूं नहीं देखिकै बड़ी लज्जित होयकै हे कान्त! तुम कहांगये या प्रकार पुकारति विह्वल होयकै सखीनके बीचमें गिरतिभई १३ बाणासुरको मन्त्री जो कुम्भाण्डहै ताकी पुत्री चित्रलेखा सखीहै सो आश्चर्य मानिकै अपनी सखी ऊषासूं पूंछतिभई १४ हे सुभ्रु अर्थात् सुन्दर हैं भृकुटी जाकी ऐसी! हे ऊषा! तू कौनकू ढूंढेहै और तेरो कैसो मनोरथहै हे राजाकी पुत्री! तेरे हाथ को पकरनवारो पतिहै ताय अबतक मैं नहीं देखूं हूं पति पति तूं कैसे पुकारति है १५ या प्रकार चित्रलेखा को वचन सुनिकै ऊषा बोलति भई सांवरो स्वरूप कमल से हैं नेत्र जाके पीताम्बर कू

पहिरे बड़ी है भुजा जाकी स्त्रीनकूं मनोहर ऐसो पुरुष स्वप्नमें मैने देख्यो है १६ वह जो कान्त है ताय मैं ढूंढूं अपनो अधरामृत प्याइकै इच्छा जाके बनी रही ऐसी जो मैं हूं ताय दुःख के समुद्र में पटकिकै कहूं चल्यो गयो १७ यह वचन सुनिकै चित्रलेखा बोली हे ऊषा! तेरो दुःख मैं दूरि करूंगी जा पुरुष ने तेरो मन हरयो है वह जो त्रिलोकी में कहूं होइगो तौ ले आऊंगी परन्तु वाइ बताय दे १८ चित्रलेखा इतनो कहिकै देवता गन्धर्व सिद्ध चारण पन्नग इनके चित्र लिखति भई दैत्य विद्याधर यक्ष मनुष्य इन सबकूं लिखति भई १९ और मनुष्यन में यादवन के चित्र लिखति भई शूरसेन को चित्र तथा वसुदेवको बलदेवजी को तथा कृष्ण और प्रद्युम्नजीको चित्रलिखति भई जब प्रद्युम्नजी को चित्र ऊषाने देख्यो तब तौ श्वशुर जानिकै लज्जित होतिभई २० शुकदेवजी कहे हैं हे पृथ्वीपति राजा परीक्षित्! अनिरुद्ध कूं लिख्यो देखिकै लाज सूं नीचे कूं है मुख जाको ऐसी ऊषा मेरे मनको हरनवारो पुरुष यही है ऐसे मुसिकायकै सखीतें कहतिभई २१

ङ्गमः १६ तमहंमृगयेकान्तं पाययित्वाऽधरंमधु ॥ क्वापियातःस्पृहयतींक्षिप्त्वामांवृजिनार्णवे १७॥ चित्रलेखोवाच ॥व्यसनंतेऽपकर्षामि त्रिलोक्यांयदि भाव्यते॥तमानेष्येनरंयस्ते मनोहर्त्तातमादिश १८ इत्युक्त्वादेवगन्धर्वसिद्धचारणपन्नगान् ॥ दैत्यविद्याधरान्यक्षान् मनुजांश्चयथाऽलिखत् १९ मनुजेषुचसावृष्णीञ्छूरमानकदुन्दुभिम् ॥ व्यलिखद्रामकृष्णौच प्रद्युम्नंवीक्ष्यलज्जिता २० अनिरुद्धंविलिखितंवीक्ष्योषाऽवाङ्मुखीह्रिया॥सोऽसावसावितिप्राहस्मयमानामहीपते २१ चित्रलेखातमाज्ञायपौत्रंकृष्णस्ययोगिनी ॥ ययौविहायसाराजन्द्वारकांकृष्णपालिताम् २२ तत्रसुप्तंसुपर्यङ्के प्राद्युम्निंयोगमास्थिता ॥ गृहीत्वाशोणितपुरं सख्यैप्रियमदर्शयत् २३ साचतंसुन्दरवरं विलोक्यमुदितानना ॥ दुष्प्रेक्ष्येस्वगृहेपुम्भी रेमेप्राद्युम्निनासमम् २४ परार्घ्यवासःस्रग्गन्धधूपदीपासनादिभिः ॥ पानभोजनभक्ष्यैश्च वाक्यैःशुश्रूषयाऽर्चितः २५ गूढःकन्यापुरेशश्वत्प्रवृद्धस्नेहयातया ॥ नाहर्गणान्सबुबुधे ऊषयाऽपहृतेन्द्रियः २६ तांतथायदुवीरेण भुज्यमानांहतव्रताम् ॥ हेतुभिर्लक्षयाञ्चक्रुराप्रीतांदुरवच्छदैः २७ भटाआवेदयाञ्चक्रूराजंस्तेदुहितुर्वयम् ॥ विचेष्टितंलक्षयामः

योगको है बल जाकूं ऐसी चित्रलेखा है सो ताय श्रीकृष्णचन्द्र को नाती जानिकै आकाशमार्ग होयकै हे राजन् परीक्षित्! कृष्ण जाको पालनकरे ऐसी द्वारकापुरीमें जातभई २२ योगको आश्रयलेकै चित्रलेखा है सो द्वारकापुरी में पलंग के ऊपर सोवै ऐसे जे अनिरुद्ध हैं तिनें शोणितपुरमें लायकै सखी जो ऊषा है ताय प्यारे कूं दिखावति भई २३ सुन्दर वर जो अनिरुद्ध है ताइ देखिकै प्रसन्न है मुख जाको ऐसी जो ऊषा है सो पुरुषन के देखिबे में न आवै ऐसो जो अपनो घर है तामें अनिरुद्ध के संग रमण करति भई २४ बड़े मोलके वस्त्र, माला, सुगन्ध, धूप, दीप, आसन इत्यादिकन सूं और पीवे की सामग्री तथा भोजन और भक्षण वचनन सूं पूजन करातिभई २५ ऐसे अनिरुद्धजी कन्याके पुरमें छिपकै निरन्तर बढ्यो है स्नेह जाको ऐसी जो ऊषा है ताने हरी है इन्द्रिय जिनकी ऐसे अनिरुद्धजी मोहित होइकै वास करत कितने दिन रात्रि चले जाइ हैं ऐसे नहीं जानत भये २६ यादवन में वीर जो अनिरुद्ध है ताने भोगी याही तें दूरिभयो है कन्यापन को व्रत जाको अत्यन्त प्रसन्न ऐसी जो ऊषा है ताके छिपाइबे में न आवै ऐसे जो कारण हैं तिनकूं देखिके प्यादे हैं ते बाणासुरसूं आइकै कहतभये २७ हे राजन् बाणासुर! कन्याके कुलकूं दोष लगावनवारो कुत्सित

तुम्हारी कन्या को चलन है ताय हम देखे है २८ हे समर्थ वाणासुर ! हम सावधान होइकै घर के भीतर कोई पुरुष जाकूं देखि न सकै या प्रकार जाकी रखवारी करी ऐसी कन्याके दोषकूं नहीं जाने हैं कहां तें होयगयो है २९ कन्या को दोष जाने सुन्यो याते बढ़ोहै दुःख जाके ऐसो वाणासुर शीघ्रही कन्या के घरमें जायकै यादवन में उत्तम जे अनिरुद्ध हैं तिनकूं देखत भयो ३० कामदेव के पुत्र त्रिभुवन में एक सुन्दर श्यामस्वरूप पीताम्बर कूं पहिरे कमल से नेत्र बड़ी जिनकी भुजा काननमें कुण्डल और केश जिनकी कान्ति सूं और मुसिकानिपूर्वक चितवनि सूं शोभायमान जिनको मुख ३१ सब ओर तें मङ्गलरूप जो प्यारी है ताके सङ्ग पासे खेले हैं ता प्यारी के अङ्ग सङ्ग सूं स्तनन की केसरि जामें लगी ऐसी जो वसन्तऋतु की चमेली की माला है ताय पहिरे ऐसे जे अनिरुद्ध हैं तिनें ऊषाके आगे बैठे देखिकै आश्चर्य मानतभयो ३२ शत्रून कूं लिये अनेक प्यादेनसहित आयो जो वाणासुर है ताय देखिकै मधुवंशोत्पन्न अनिरुद्धजी लोहे को बेंडो उठाय के मारिबे के

कन्यायाःकुलदूषणम् २८ अनपायिभिरस्माभिर्गुप्तायाश्चगृहेप्रभो ॥ कन्यायादूषणंपुम्भिर्दुष्प्रेक्षायानविद्महे२९ततःप्रव्यथितोवाणो दुहितुःश्रुतदूषणः ॥ त्वरितःकन्यकागारं प्राप्तोऽद्राक्षीद्यदूद्वहम् ३० कामात्मजंतंभुवनैकसुन्दरंश्यामंपिशङ्गाम्बरमम्बुजेक्षणम् ॥ वृहद्भुजंकुण्डलकुन्तलत्विषास्मितावलोकेन चमण्डिताननम् ३१ दीव्यन्तमक्षैःप्रियया भिनृम्णया तदङ्गसङ्गस्तनकुङ्कुमस्रजम् ॥ वाह्वोर्दधानंमधुमल्लिकाश्रितां तस्याग्रआसीनमवेक्ष्यविस्मितः ३२ सतंप्रविष्टंवृतमाततायिभिर्भटैरनीकैरवलोक्यमाधवः ॥ उद्यम्यमौर्व्वंपरिघंव्यवस्थितोयथान्तकोदण्डधरोजिघांसया ३३जिघृक्षयातान्परितःप्रसर्पतः शुनो यथासूकरयूथपोऽहनत्॥तेहन्यमानाभवनाद्विनिर्गतानिर्भिन्नमूर्द्धोरुभुजाःप्रदुद्रुवुः३४तंनागपाशैर्वलिनन्दनोवली घ्नन्तंस्वसैन्यंकुपितोवबन्धह॥ऊषाभृशं शोकविषादविह्वलाबद्धंनिशम्याश्रुकलाक्ष्यरौदिषीत् ३५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽनिरुद्धबन्धनोनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अपश्यतांचानिरुद्धं तद्बन्धूनांचभारत ॥ चत्वारोवार्षिकामासाव्यतीयुरनुशोचताम् १ नारदात्तदुपाकर्ण्य वार्तांबद्धस्यकर्म्मच ॥

लिये जैसे दण्ड कूं धारण करिकै काल दौरे है तैसे ठाढ़े होतभये ३३ पकरिबे के लिये चारयो ओर तें चले आवें ऐसे जो प्यादे हैं तिने सूकरन के यूथको पालन करनवारो जो मुख्य सूकर है सो जैसे कुत्तान कूं मारे है ऐसे मारतभये मार जिनकूं दीनी याही तें टूटे हैं माथे ऊरु भुजा जिनकी ऐसे जे प्यादे हैं ते निकसिके भाजतभये ३४ राजा वलि कूं आनन्द को देनवारो ऐसो जो वली वाणासुर है सो क्रोध करिकै अपनी सेना कूं मारै जो अनिरुद्ध है ताय रस्सान तें बाधतभयो ता समय अत्यन्त जो शोक और खेद तिनसूं व्याकुल आसू जाके नेत्रनतें आयगये ऐसी जो ऊषा है सो वे अनिरुद्धजी कूं देखिकै रोवति भई ३५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपपयदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेअनिरुद्धबन्धनोनामद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥ * ॥ * ॥

(त्रियुक्षष्टितमेचाथवाणयादवसङ्गरे ॥ स्तुतिर्ज्वरेणरुद्रेणवाणवाहुभिदोहरेः १ तिरसठवें अध्याय में वाणासुर और यादवों के युद्धमें महादेवजी के ज्वरसूं वाण सुर की भुजा काटनेवाले कृष्णजी की स्तुति वर्णितहै १) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! अनिरुद्ध के देखे विना भय्या बन्धुन कूं शोच करत वर्षा के चार महीना वीततभये १ ता समय

नारदजी तें अनिरुद्धजी के बन्धनको (१) और वात सब श्रवण करिकै श्रीकृष्णचन्द्र है देवता जिनके ऐसे जे यादव है ते वाणासुर के शोणितपुर कूं जातभये २ प्रद्युम्न युयुधान गद साम्ब सारण नन्द उपनन्द और भद्र तें आदिलेके रामकृष्ण के आज्ञाकारी मुख्य मुख्य यादव हैं ते सम्पूर्ण मिलिकै बारह अक्षौहिणी सेना सूं वाणासुरके पुर कूं चाल्यो और ते घेरतभये ३ । ४ यादवन ने वाणासुर के पुरके तोड़े जो बाग परकोटा अँटारी दरवाजे तिनकूं देखिकै क्रोधमें भरिकै बारह अक्षौहिणी सेनालेके वाणासुर निकसतभयो ५ वाणासुर के लिये अपने पुत्र ने स्कन्द हैं तिनकूं और गणनकूं सङ्गलेके नादिया पै चढ़िकै रामकृष्ण तें युद्ध करिवे के लिये भगवान्शिवजी आयके प्राप्त होतभये ६ हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्णचन्द्र और शिवजीको बडो भयानक घोर युद्ध होतभयो कैसो रोमाञ्च ठाढे होइँ ऐसो आश्चर्य युद्ध होतभयो और प्रद्युम्न को स्वामिकार्त्तिक को युद्ध होत भयो ७ कुम्भाण्ड और कूपकर्ण को युद्ध बलदेवजी के संगभयो श्रीकृष्ण

प्रययुः शोणितपुरं वृष्णयः कृष्णदेवताः २ प्रद्युम्नोयुयुधानश्च गदः साम्बोऽथसारणः ॥ नन्दोपनन्दभद्राद्याराम कृष्णानुवर्त्तिनः ३ अक्षौहिणीभिर्द्वादशभिःसमेताःसर्व्वतोदिशम् ॥ रुरुधुर्बाणनगरं समन्तात्सात्वतर्षभाः ४ भज्यमानपुरोद्यानप्राकाराट्टालगोपुरम् ॥ प्रेक्षमाणोरुषाविष्टस्तुल्यसैन्योऽभिनिर्ययौ ५ बाणार्थेभगवान्रुद्रःससुतैःप्रमथैर्वृतः ॥ आरुह्यनन्दिवृषभं युयुधेरामकृष्णयोः ६ आसीत्सुतुमुलंयुद्धमद्भुतंरोमहर्षणम् ॥ कृष्णशङ्करयोराजन्प्रद्युम्नगुहयोरपि ७ कुम्भाण्डकूपकर्णाभ्यां बलेनसहसंयुगः ॥ साम्बस्यबाणपुत्रेण बाणेनसहसात्यकेः ८ ब्रह्मादयःसुराधीशामुनयःसिद्धचारणाः ॥ गन्धर्व्वाप्सरसोयक्षाविमानैर्द्रष्टुमागमन् ९ शङ्करानुचराञ्छौरिर्भूतप्रमथगुह्यकान्॥ डाकिनीर्यातुधानांश्च वेतालान्सविनायकान् १० प्रेतमातृपिशाचांश्च कूष्माण्डान्ब्रह्मराक्षसान् ॥ द्रावयामासतीक्ष्णाग्रैः शरैःशार्ङ्गधनुश्च्युतैः ११ पृथग्विधानिप्रायुङ्क्त पिनाक्यस्त्राणिशार्ङ्गिणे ॥ प्रत्यस्त्रैःशमयामास शार्ङ्गपाणिरविस्मितः १२ ब्रह्मास्त्रस्यचब्रह्मास्त्रं वायव्यस्यचपार्व्वतम् ॥ आग्नेयस्यचपार्जन्यं नैजंपाशुपतस्यच १३ मोहयित्वातुगिरिशं जृम्भणास्त्रेणजृ

के पुन साम्ब को वाणासुर के पुत्रके सङ्ग होतभयो और वाणासुर को सात्यकी के सङ्ग युद्धभयो ८ देवतान में मुख्य जे ब्रह्मादिक है ते और मुनि सिद्ध चारण गन्धर्व्व अप्सरा यक्ष ये सम्पूर्ण विमानन में बैठिकै युद्ध देखिवे कू आवतभये ९ ता समय शङ्कर महादेवके अनुचर जे भूत प्रेत गुह्यक डाकिनी यातुधान बेताल विनायक प्रेतमातृ पिशाच कूष्माण्ड ब्रह्मराक्षस इन सबकं शूरवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र अपने शार्ङ्ग धनुष् में तें निकासि के पैनी हैं भाल जिनकी ऐसे बाणनसूं भजावत भये १० । ११ पिनाक नाम धनुष् है विद्यमान जिनके ऐसे शिवजी श्रीकृष्णचन्द्रके ऊपर न्यारे न्यारे शस्त्र चलावतभये नहीं है आश्चर्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शिवजी कूं न्यारेन्यारे के शस्त्रन सूं शान्त करतभये १२ शिवने ब्रह्मास्त्र चलायो ताकूं ब्रह्मास्त्र तें शान्त करतभये जब वायु है देवता जाको ऐसो अस्त्र शिवजीने चलायो तब श्रीकृष्णचन्द्र पर्व्वत है देवता जाको ऐसे अस्त्रकूं चलावत भये ता समय पर्व्वतसूं रुकिकै पवन थमिगयो पश्चात् अग्नि है देवता जाको ऐसे अस्त्रकूं चलायकै शिवजी अग्नि लगावत भये ता समय श्रीकृष्णचन्द्र मेघ है देवता जाको ऐसे अस्त्रकू चलायके मेघ बरसाय के अग्नि कूं शान्त करतभये फेर शिवजी अपनो पाशुपत अस्त्र चलावत

भये ताकूं श्रीकृष्णचन्द्र अपने नारायणास्त्र सूं शान्त करतभये १३ फेरि श्रीकृष्णचन्द्र ने जृम्भणास्त्र चलायो तासूं शिवजी जम्हाईलई तासूं मोहित करिकै बाणासुरकी सेनाकूं तरवारि गदा बाणन
मारतभये १४ प्रद्युम्नजीके बाणनके समूहन तें चार्यो ओर तें पीड़ित ऐसो जो स्वामिकार्तिकेयहै सो अपने अङ्गन में तें रुधिर बहावत वाहन जो मोर है ताकूं भजायकै रणमें तें भाजत भयो
१५ कुम्भाण्ड और कूपकर्ण हैं ते मूसलके मारे पृथ्वीमें गिरतभये तब मरे हैं स्वामी जिनके ऐसी जो उनकी सेनाहै सो सम्पूर्ण भाजति भई १६ अपनी सेनाकूं जहां तहां बिखरी देखिकै बड़ी है
असहनता जाके ऐसो रथी बाणासुर है सो संग्राम में सात्यकी यादव कूं छोड़िके श्रीकृष्णचन्द्रके सम्मुख आवतभयो १७ रणमें बढ़ो है मद जाके ऐसो बाणासुर ५०० पञ्चशत धनुषकूं एक सङ्ग
खैंचिके एक एक धनुष पै दो दो बाण लगावत भयो १८ ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बाणासुर के ५०० पञ्चशत धनुषनकूं एक सङ्ग अपने धनुष सूं काटतभये फेरि बाणासुर के रथवान् कूं

भिनत् ॥ बाणस्यपूतनांशौरिर्जघानासिगदेषुभिः १४ स्कन्दःप्रद्युम्नबाणौघैरर्द्यमानःसमन्ततः ॥ असृग्विमुञ्चन्गात्रेभ्यः शिखिनाऽपाक्रमद्रणात् १५
कुम्भाण्डःकूपकर्णश्च पेततुर्मुसलार्दितौ ॥ दुद्रुवुस्तदनीकानि हतनाथानिसर्वतः १६ विशीर्यमाणंस्वबलं दृष्ट्वाबाणोऽत्यमर्षणः ॥ कृष्णमभ्यद्रवत्सङ्ख्ये
रथीहित्वैवसात्यकिम् १७ धनूंष्याकृष्ययुगपद्बाणःपञ्चशतानि वै ॥ एकैकस्मिञ्छरौद्वौद्वौ सन्दधेरणदुर्मदः १८ तानिचिच्छेदभगवान् धनूंषियुगपद्ध
रिः ॥ सारथिंरथमश्वांश्च हत्वाशङ्खमपूरयत् १९ तन्माताकोटरानाम नग्नामुक्तशिरोरुहा ॥ पुरोऽवतस्थेकृष्णस्य पुत्रप्राणरिरक्षया २० ततस्तिर्यङ्मुखो
नग्नामनिरीक्षन्गदाग्रजः ॥ बाणश्चतावद्विरथश्छिन्नधन्वाऽविशत्पुरम् २१ विद्राविते भूतगणे ज्वरस्तुत्रिशिरास्त्रिपात् ॥ अभ्यधावत दाशार्हं दहन्निव दि
शो दश २२ अथनारायणोदेवस्तंदृष्ट्वाव्यसृजज्ज्वरम् ॥ माहेश्वरो वैष्णवश्च युयुधाते ज्वरावुभौ २३ माहेश्वरःसमाक्रन्दन् वैष्णवेनबलार्दितः ॥ अलब्ध्वा
ऽभयमन्यत्र भीतोमाहेश्वरोज्वरः ॥ शरणार्थीहृषीकेशं तुष्टावप्रयताञ्जलिः २४ ॥ ज्वरउवाच ॥ नमामित्वाऽनन्तशक्तिंपरेशं सर्वात्मानं केवलंज्ञप्तिमात्रम् ॥ नि

घोड़ानकूं मारिकै रथकूं तोरिकै जीतको शङ्ख बजावतभये १९ ता समय कोटरा है नाम जाको ऐसी जो बाणासुर की माता है सो अपने केशनकूं खोलिकै नङ्गी होयकै पुत्र के प्राण बचायवे के लिये
श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख ठाड़ी होतिभई २० नङ्गी स्त्रीकूं शास्त्रमें देखिवो मने है या कारण श्रीकृष्णचन्द्र मुख फेरिके ठाड़े होतभये इतने में टूट्यो है रथ जाको कट्यो है धनुष् जाको ऐसो बाणासुर
रणमें तें भाजिकै पुरमें जातभयो २१ भूतनके गण जा समय भाजिगये तब तीनहैं शिर जाके और तीनि हैं पांव जाके ऐसो जो ज्वरहै सो दशो दिशानकूं जरावत दाशार्हवंशोत्पन्न जो श्रीकृष्णचन्द्र
हैं तिनके पास आवतभयो २२ तब नारायणदेव श्रीकृष्णचन्द्र शिवजी के ज्वरकूं आयो देखिकै अपनो शीतज्वर है ताय छोड़तभये शिवजी को ज्वर और भगवान् को ज्वर ये दोनों आपुस में
युद्ध करतभये २३ विष्णु के शीतज्वर ने बलते पीड़ा जाकूं दीनी ऐसो जो शिवजीको तप्तज्वरहै सो रोदन करत भयभीत होयकै अपनी रक्षाके अर्थ और कोई निर्भय स्थान नहीं पाय कै शरण
गा अर्थीहोकर हाथ जोरिकै श्रीकृष्णचन्द्र की स्तुति करतभयो २४ अनन्त हैं शक्ति जिनकी ब्रह्मादिकन के ईश्वर सब के आत्मा शुद्ध चैतन्यघन विश्व के उत्पत्ति पालन संहार करनवारे

ऐसे जे तुमहौ तिनकूं नमस्कार करूं हूं विश्वको उत्पादन पालन संहार ब्रह्म ते होयहै मोतें नहीं जो ऐसे श्रीकृष्ण कहैं ताको उत्तर ज्वर देइ है वेद जाको वर्णन करै ऐसो जो ब्रह्म है सो तुमहीं हौ सर्वविकार रहित हौ यातें कहिवे में नहीं आवो हो २५ काल दैव कर्म्म जीव स्वभाव द्रव्य स्पर्श रूप रस गन्ध शरीर प्राण अहङ्कार विकार अर्थात् ग्यारह इन्द्रिय और पञ्चमहाभूत अर्थात् पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इन तत्वनको बनो यह देहहै सो जैसे बीज तें अंकुर फेरि बीज होइहै या प्रकार कर्म्मन तें देह फेरि देहतें कर्म्म फेरि कर्म्मन तें देह ऐसे जलको सो प्रवाह चल्यो जायहै यही तुम्हारी मायाहै ताके निषेध के अवधिहो अर्थात् माया जिनमें नहीं ऐसे तुमहौ तिनकी शरण में आयो हूं २६ कदाचित् कहो कि मैं देवकी को पुत्रहौं ऐसो मो में कैसे बने है ताको उत्तर कहे है लीला करिकै मत्स्यादिक अवतारनकूं लैके देवतान को पालनकरो हौ तथा वर्णाश्रम के धर्म्मन कूं पालन करो हौ और धर्म्म के करनवारे जे साधु हैं तिनको पालन करो हौ हिंसासहित जो पापमार्ग हैं तिनको नाशकरो हौ या कारण पृथ्वी को बोझ उतारिवे के लिये तुम्हारो जन्महै २७ शान्ति करिवेकूं आवै शीतल उग्र अत्यन्त भयानक जो तुम्हारो

सर्वे त्पत्तिस्थानसंरोधहेतुं यत्तद्ब्रह्मब्रह्मलिङ्गं प्रशान्तम् २५ कालो दैवं कर्म जीवः स्वभावो द्रव्यं क्षेत्रं प्राण आत्मा विकारः ॥ तत्सङ्घातो बीजरोहप्रवाहस्त्वन्मायैषा तन्निषेधं प्रपद्ये २६ नाना भावैर्लीलयैवोपपन्नैर्देवान्साधूँल्लोकसेतून्बिभर्षि ॥ हंस्युन्मार्गान्हिंसया वर्तमानाञ्जन्मैतत्ते भारहाराय भूमेः २७ तप्तोऽहं ते तेजसा दुःसहेन शान्तोग्रेणात्युल्बणेन ज्वरेण ॥ तावत्तापो देहिनां तेऽङ्घ्रिमूलं नो सेवेरन्यावदाशानुबद्धाः २८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिशिरस्ते प्रसन्नोऽस्मि व्येतु तेमज्ज्वराद्भयम् ॥ यो नौ स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद्भयम् २९ इत्युक्तोऽच्युतमानम्य गतो माहेश्वरो ज्वरः ॥ बाणस्तु रथमारूढः प्रागाद्योत्स्यञ्जनार्दनम् ३० ततो बाहुसहस्रेण नानायुधधरोऽसुरः ॥ मुमोच परमक्रुद्धो बाणांश्चक्रायुधे नृप ३१ तस्यास्यतोऽस्त्राण्यसकृच्चक्रेण क्षुरनेमिना ॥ चिच्छेद भगवान्बाहू ञ्छाखा इव वनस्पतेः ३२ बाहुषु च्छिद्यमानेषु बाणस्य भगवान्भवः ॥ भक्तानुकम्प्युपव्रज्य चक्रायुधमभाषत ३२ ॥ श्रीरुद्र उवाच ॥ त्वं हि ब्रह्म परं ज्योतिर्गूढं ब्र

तेजरूप ज्वरहै तासूं मैं तपायमान भयो हूं देहधारीनकूं तवहींताई तापहै जवलों आशा बांधिकै तुम्हारे चरणके तरवाको सेवन न करैं २८ अब श्रीभगवान् कहे है हे तीन शिरके ज्वर ! तेरे ऊपर मैं प्रसन्न भयो हूं मेरे ज्वरते तेरो भय जातरहो और जो पुरुष तेरे हमारे संवादकूं कहे वाकूं तू भयमतिदीजो २९ या प्रकार जातें कही ऐसो जो माहेश्वर ज्वरह सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करिके जातभयो पश्चात् बाणासुर रथमें बैठिकै श्रीकृष्णचन्द्र तें युद्ध करिवे के लिये आवतभयो ३० हजार भुजान में अनेक प्रकार के शस्त्रन कूं धारण करे जो बाणासुर है सो बडो क्रोध करिकै हे राजन् परीक्षित् ! चक्रहै शस्त्र जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर शस्त्रनकूं छोडतभयो ३१ निरन्तर शस्त्रनकूं चलावै ऐसो जो बाणासुरहै ताकी भुजान कूं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र छुराकी तुल्यहै पैनी धार जाकी ऐसे चक्रसू जैसे माली वृक्षनकूं छांटे है ऐसे छांटतभये ३२ बाणासुरकी भुजा कटिगई ता समय भक्त बाणासुर के ऊपर कृपा है जिनकी ऐसे जो भगवान् शिवजी हैं सो आयकै चक्रहै हथियार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तें बोलतभये ३३ अब शिवजी स्तुति करै हैं हे परब्रह्म ! तुम्हारे विना जाने यह बाणासुर युद्ध करै है यामें आश्चर्य्य नहीं है या कारण वाणीमात्र जो वेदहै तामें

तुम छिपेभये परब्रह्महौ और ज्योति सूर्य्यादिकनके तुम प्रकाश करनवारे यातें काहू के जानिबे में नहीं आवोहौ कदाचित् कहो तौ कैसे प्रतीत होय है तहां शिवजी कहै हैं निर्म्मल हैं मन जिन
के ऐसे पुरुष आकाशकी तुल्य निर्लेप निर्गुण तुमें देखे हैं ३४ क्यों जी निर्गुण को ज्ञान तौ रह्यो तब शिवजी कहै हैं लीला करिकै तुमने आश्रय करयो जो ब्रह्माण्ड है सो भी जानिबे में नहीं
आवे है जैसे गूलरके फल के भीतर रहैं जे जीवहैं ते गूलरके फलकूं नहीं जाने हैं तैसे या अभिप्राय सूं ब्रह्माण्ड रूप करिकै शिवजी स्तुति करे हैं आकाश तुम्हारी नाभिहै अग्नि तुम्हारो मुखहै
जल तुम्हारो वीर्य्यहै स्वर्ग तुम्हारो शिरहै दिशा तुम्हारे कान हैं पृथ्वी तुम्हारो चरणहै चन्द्रमा मनहै और सूर्य तुम्हारे नेत्र है मैं शिव तुम्हारो आत्माहूं समुद्र तुम्हारो उदर है इन्द्र तुम्हारी
भुजा हैं ३५ वृक्ष जिनके रोमहैं मेघ केशहैं ब्रह्मा जिनकी बुद्धिहै प्रजापति लिङ्ग है धर्म जिनको हृदय है लोकन करिकै कल्पना करिबे में आवो ऐसे तुम पुरुष हो ३६ सो हे अखण्डरूप! यह
तुम्हारो अवतार धर्म की रक्षा करिबे के कारण और जगत् के कल्याणके निमित्त है और पालन जिनको तुमने करयो ऐसे हम॰ सप्तलोकन को पालन करे हैं ३७ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति

ह्यणिवाब्धये ॥ यंपश्यन्त्यमलात्मानआकाशमिवकेवलम् ३४ नाभिर्नभोऽग्निर्मुखमम्बुरेतोद्यौःशीर्षमाशाःश्रुतिरङ्घ्रिरुर्वी ॥ चन्द्रोमनोयस्यदृगर्कआ
त्मा अहंसमुद्रोजठरंभुजेन्द्रः ३५ रोमाणियस्यौषधयोऽम्बुवाहाः केशाविरिञ्चोधिषणाविसर्गः ॥ प्रजापतिर्हृदयंयस्यधर्मः सवैभवान्पुरुषोलोककल्पः ३६
तवावतारोऽयमकुण्ठधामन् धर्मस्यगुप्त्यैजगतोभवाय ॥ वयञ्चसर्वेभवतानुभाविता विभावयामोभुवनानिसप्त ३७ त्वमेकआद्यःपुरुषोऽद्वितीयस्तुर्यः
स्वदृग्धेतुरहेतुरीशः ॥ प्रतीयसेऽथापियथाविकारं स्वमाययासर्वगुणप्रसिद्ध्यै ३८ यथैवसूर्य्यःपिहितःस्वछायया छायांचरूपाणिचसंचकास्ति ॥ एवं
गुणेनापिहितोगुणांस्त्वमात्मप्रदीपोगुणिनश्चभूमन् ३९ यन्मायामोहितधियः पुत्रदारगृहादिषु ॥ उन्मज्जन्तिनिमज्जन्ति प्रसक्तावृजिनार्णवे ४० देव
दत्तमिमंलब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ॥ योनाद्रियेतत्वत्पादौ सशोच्योह्यात्मवञ्चकः ४१ यस्त्वांविसृजतेमर्त्यआत्मानंप्रियमीश्वरम् ॥ विपर्य्ययेन्द्रियार्थार्थं

तीन हैं अवस्था जिनकी ऐसे जे पुरुष है तिनके तुम कारणहौ और शुद्धहौ याही तें अद्वितीय पुरुष हौ और सब विश्वके कारण हौ आप कारण करिकै रहितहौ तथापि सम्पूर्ण विषय हैं
तिनके प्रकाश करिबे के लिये अपनी माया करिकै जैसो जो देह तामें तैसेही प्रतीत होउहौ ३८ अपनी छायारूपी जो बादर हैं तिन सों मनुष्यन कूं दृष्टि करिकै ढक्यो जों सूर्य है सो
बादरन कूं प्रकाशे है और बादरनके बाहर रूप हैं तिनकूं प्रकाशे है हे भूमन्! या प्रकार अहङ्कार जो अपनो कार्य है तासूं जीवनके देखिबे में ढके जो तुमहो सो प्रकाशो हौ सत्त्वगुण रजो-
गुण तमोगुणहैं तिनमें और जे गुणहैं उपाधि जिनकूं ऐसे जे जीवहैं तिनकूं प्रकाशो हौ ३९ जिनकी माया करिकै मोहित हैं बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष हैं ते पुत्र स्त्री गृहादिकन में अटकिकै दुःख
रूपी समुद्र में उछरे डूबे हैं देवादिक योनिन कूं पावें हैं यह उछरनो है और वृक्षादिक योनिनकूं पावे हैं यह डूबनो है ४० ईश्वरने दीनी जो मनुष्य योनि है ताय प्राप्त होयकै नहीं जीती हैं
इन्द्रिय जाने ऐसो पुरुष तुम्हारे चरणनको आदर नहीं करेहै वह पुरुष शोच करिबे योग्यहै और आत्माको ठगनवारो है ४१ प्यारे पुत्रादिकन के लिये जो पुरुष प्यारे जो तुम आत्मा हौ तिनकूं

त्यागे है वह पुरुष अमृतकूं त्यागिकै विषकूं पीवे है ४२ मैं शिव और ब्रह्मा देवता तथा निर्मल हैं अन्तःकरण जिनके ऐसे मुनि हैं ते आत्मा प्यारे जो ईश्वर तुमहौ तिनकी सब प्रकार करिकै शरण प्राप्त भये हैं ४३ जगत् के उत्पत्ति पालन नाश इनके कारण और सबमें समान शान्तस्वरूप हितकारी आत्मा ईश्वर अनन्य और कोई बराबरि जिनकी नहीं बड़ो कोई नहीं जगत् के आत्मा आश्रय ऐसे जो तुम देव हौ तिन्हें संसार त्यागिवेके लिये हम भजे हैं ४४ हे प्रकाशमान! यह बाणासुर मोकूं वाञ्छित है मेरो प्यारो है आज्ञाकारी है मैंने याकूं अभय दीनो है यातें जैसी तुम्हारी दैत्यनके पति प्रह्लाद के ऊपर कृपा है ऐसी याके ऊपर कृपा करौ ४५ तब श्रीभगवान् कृष्णजी बोले हे शिवजी! तुम हमतें कहौ सो तुम्हारो प्रिय हम करेंगे तुमने जो निश्चय करयो सो हमने भले प्रकार मान्यो ४६ विरोचनके पुत्र राजा बलि तिनको पुत्र यह बाणासुर है सो मारिवे योग्य नहीं है काहे ते मैंने प्रह्लाद को वर दीनो है कि तेरे वंश में जो होयगो ताकूं मैं

विषमत्त्यमृतंत्यजन् ४२ अहंब्रह्माऽथविबुधामुनयश्चामलाशयाः॥ सर्वात्मनाप्रपन्नास्त्वामात्मानंप्रेष्ठमीश्वरम् ४३ तंत्वाजगत्स्थित्युदयान्तहेतुंसमंप्रशान्तंसुहृदात्मदैवम्॥ अनन्यमेकंजगदात्मकेतंभवापवर्गायभजामदेवम् ४४ अयंममेष्टोदयितोऽनुवर्त्तीमयाऽभयंदत्तममुष्यदेव॥ सम्पाद्यतांतद्भवतःप्रसादोयथाहिनेदैत्यपतौप्रसादः ४५॥ श्रीभगवानुवाच॥ यदात्थभगवंस्त्वन्नःकरवामप्रियंतव॥ भवतोयद्व्यवसितंतन्मेसाध्वनुमोदितम् ४६ अवध्योऽयंममाप्येषवैरोचनिसुतोऽसुरः॥ प्रह्लादायवरोदत्तोनवध्योमेतवान्वयः ४७ दर्पोपशमनायास्यप्रवृक्णाबाहवोमया॥ सूदितंचबलंभूरियच्चभारायितंभुवः ४८ चत्वारोऽस्यभुजाःशिष्टाभविष्यन्त्यजरामराः॥ पार्षदमुख्योभवतोनकुतश्चिद्भयोऽसुरः ४९ इतिलब्ध्वाऽभयंकृष्णंप्रणम्यशिरसाऽसुरः॥ प्राद्युम्निंरथमारोप्यसवध्वामुपानयत् ५० अक्षौहिण्यापरिवृतंसुवासःसमलङ्कृतम्॥ सपत्नीकंपुरस्कृत्यययौरुद्रानुमोदितः ५१ स्वराजधानींसमलङ्कृतांध्वजैःसतोरणैरुक्षितमार्गचत्वराम्॥ विवेशशङ्खानकदुन्दुभिस्वनैरभ्युद्यतःपौरसुहृद्द्विजातिभिः ५२ यएवंकृष्णविजयंशङ्करेणचसंयुगम्॥ संस्मरेत्प्रातरुत्थायनतस्यस्यात्पराजयः ५३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽनिरुद्धानयनंनामत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥ ॥ ॥

नहीं मारूंगो ४७ फेरि कृष्ण कहत भये कि याको गर्व दूरि करिवेके लिये मैंने याकी हजार भुजा काटी हैं और पृथ्वी पै जो बोझ होय रह्यो है सो मैंने दूरि करि दियो है ४८ कटिवे तें चार भुजा ये याकी रहीं ते अजर अमर होइंगी और यह दैत्य बाणासुर नहीं पहुंचे है भय जाकूं ऐसो तुम्हारे पार्षदनमें मुख्य होयगो ४९ याप्रकार अभय पायकै बाणासुर श्रीकृष्णचन्द्र कूं बारबार प्रणाम करिकै ऊषासहित अनिरुद्धकूं रथमें बैठारिकै विदा करतभयो ५० अक्षौहिणी सेना जाके संग सुन्दर वस्त्रनसूं शोभायमान ऐसे स्त्रीसहित जो अनिरुद्ध हैं तिनकूं आगे करिकै शिवजीने अनुमोदन जिनको करयो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जातभये ५१ तोरणन सहित जे ध्वजा हैं तिनसूं शोभायमान मार्गमें तथा चौराहेन में छिरकाउ जामें होइ रह्यो ऐसी जो अपनी द्वारावती राजधानी है तामें पुरवासी सुहृद् व ब्राह्मणतें सत्कार जिनने पायो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो शंख ढोल नगाड़ेनके जो शब्द हैं तिन सहित प्रवेश करतभये ५२ यह जो श्रीकृष्णकी जीत है ताय और श्रीकृष्णको शिव

भी को युद्ध है ताय जो पुरुष प्रातःसमय उठिके स्मरण करै है वाकी कभऊं हार नहीं होय है ५३ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरुचिप्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे ऊषाचरित्रवर्णने त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

(चतु षष्टितमे तु कृष्णो नृगशापादमोचयत् ॥ ब्रह्मस्वहारिदोषोक्त्या राज्ञोदमानशिक्षयत् १ विभूतिभाग्यभोगादिमदोन्नद्धमनोरथान् ॥ अन्वशासद्यदून् कृष्णो नृगोद्धारमसङ्गतः २ चौंसठवें अध्याय में कृष्णजी नृगजी को शापसूं छुड़ातेभये और ब्राह्मणनी द्रव्यके हरनेवाले दोषोंकी उक्तिसूं अभिमानी राजाओं को शिक्षा देतेभये १ विभूतिभाग्यभोगादि मदसूं उन्नद्ध मनोरथवाले यदुवंशियों को कृष्णजी नृगके उद्धारके प्रसंगसूं शिक्षादेतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय साम्ब प्रद्युम्न चारु भानु गद इत्यादिक यादवनके पुत्रहैं ते विहार करिवेके निमित्त वनम जातभये १ ता वनमें बहुत देरताई क्रीडा करिकै प्यास जिनकूं लगी ऐसे यादवनके पुत्र हैं ते जलकूं ढूंढत बिना जलको कूप है तामें अद्भुत एक जीव परयो देखत भये २ पर्वत की

श्रीशुकउवाच ॥ एकदोपवनंराजञ्जग्मुर्यदुकुमारकाः ॥ विहर्त्तुंसाम्बप्रद्युम्नचारुभानुगदादयः १ क्रीडित्वासुचिरंतत्र विचिन्वन्तःपिपासिताः ॥ जलंनिरुदकेकूपे ददृशुःसत्त्वमद्भुतम् २ कृकलासंगिरिनिभं वीक्ष्यविस्मितमानसाः ॥ तस्यचोद्धरणेयत्नं चक्रुस्तेकृपयाऽन्विताः ३ चर्मजैस्तान्तवैःपाशैर्बद्ध्वापतितमर्भकाः ॥ नाशक्नुवन्समुद्धर्त्तुं कृष्णायाचख्युरुत्सुकाः ४ तत्राऽऽगत्यारविन्दाक्षो भगवान्विश्वभावनः ॥ वीक्ष्योज्जहारवामेन तंकरेणसलीलया ५ सउत्तमश्लोककराभिमृष्टोविहायसद्यःकृकलासरूपम् ॥ सन्तप्तचामीकरचारुवर्णः स्वर्ग्यद्भुतालङ्करणाम्बरस्रक् ६ पप्रच्छविद्वानपितन्निदानं जनेषुविख्यापयितुंमुकुन्दः ॥ कस्त्वंमहाभागवरेण्यरूपोदेवोत्तमंत्वांगणयामिनूनम् ७ दशामिमांवाकतमेनकर्म्मणा सम्प्रापितोऽस्यतदर्हःसुभद्र ॥ आत्मानमाख्याहिविवित्सतांनो यन्मन्यसेनःक्षममत्रवक्तुम् ८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतिस्मराजासंपृष्टः कृष्णेनानन्तमूर्त्तिना ॥ माधवंप्रणिपत्याह किरीटेनार्कवर्च

बराबरि जो करकेटा है ताय देखिकै आश्चर्ययुक्त हैं मन जिनके कृपा जिनकूं आइ गई ऐसे जे यादवन के बालक हैं ते करकेटा के निकासिवे को उपाय करतभये ३ बालक हैं ते गिरयो जो करकेटा है ताय चाम के और सूत के रस्सान सूं बांधिकै निकासिवे कूं नहीं समर्थ होतभये तब उत्कण्ठायुक्त जे बालक हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र तें आइकै कहत भये ४ विश्व के करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तहां आइके करकेटा कूं देखिकै लीला करिकै वायें हाथ ते निकासतभये ५ उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के हाथ लगे तें शीघ्रही करकेटा के रूपकूं त्यागि कै तप्त सुवर्णकी तुल्य सुन्दर वर्ण जाको अद्भुत आभूषण वस्त्र मालानकूं धारण करे देवस्वरूप होत भयो ६ मुक्ति के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र ताके करकेटा होइवे के कारणकूं जानेभी हैं परन्तु जनन में विख्यात करिवेके निमित्त पूंछतभये हे बड़भागी ! श्रेष्ठ है रूप तेरो ऐसो तू कौन है मैं तोकूं देवतान में उत्तम निश्चय देवता मानूं हूं ७ हे मंगलरूप ! या लायक तू नहीं है कौन कर्म तें तोकूं करकेटा की योनि प्राप्त भई जो हमकूं कहने योग्य मानो हो तो जानो चाहैं जो हम हैं तिनके आगे अपनोरूप कहो ८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! अनन्तहैं मूर्त्ति जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र

से या प्रकार पूंछ्यो ऐसो जो राजा नृग है सो सूर्य की तुल्य है तेज जाको ऐसे किरीट सूं श्रीकृष्णचन्द्रकूं प्रणाम करिकै बोलतभयो ९ राजानृग कहेहैं हे समर्थ! मैं इक्ष्वाकुको पुत्र नृग नाम राजा हूं दानी राजान की बात चली होयगी तब मेरो नामहू आपके कानमें परो होइगो १० हे नाथ! सब प्राणीन की बुद्धि के साक्षी तुम हो सो कहा जानो हो काल करिकै ज्ञान जिनको ताड़ित नहीं भयो है तथापि तुमने बूझी है तौ तुम्हारी आज्ञा तें कहूंगो ११ हे नाथ! जितनी पृथ्वीकी रेणुका हैं और जितने आकाश में तारागण हैं तथा जितनी वर्षा की बूंदें हैं तितनी गौवनको मैंने दान कस्यो है १२ दूध देनवारी तरुण जिनकी अवस्था शील रूप गुण जिनमें विद्यमान कपिला और नीतिपूर्वक संचय करी सुवर्ण सूं सींग और रूपे सूं खुर जिन के मध्ये बछरा जिनके सग और वस्त्र माला गहनेनकूं पहिरे ऐसी गौवें देत भयो १३ भले प्रकार शोभायमान गुण शील जिन में विद्यमान दूधविना दुःखित कुटुम्बी पाखण्डरहित हैं आचार जिनके तपस्या करिकै प्रसिद्ध वेदकूं

सा ९॥ नृगउवाच ॥ नृगोनामनरेन्द्रोऽहमिक्ष्वाकुतनयःप्रभो ॥ दानिष्वाख्यायमानेषु यदितेकर्णमस्पृशत् १० किंनुतेऽविदितंनाथ सर्वभूतात्मसाक्षिणः॥ कालेनाव्याहतदृशोवक्ष्येऽथापितवाऽऽज्ञया ११ यावन्त्यःसिकताभूमेर्यावन्त्योदिवितारकाः ॥ यावन्त्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः १२ पयस्विनीस्तरुणीःशीलरूपगुणोपपन्नाःकपिलाहेमशृङ्गीः॥ न्यायार्जितारूप्यखुराःसवत्सादुकूलमालाभरणाददावहम् १३ स्वलङ्कृतेभ्योगुणशीलवद्भ्यःसीदत्कुटुम्बेभ्यऋतव्रतेभ्यः॥ तपःश्रुतब्रह्मवदान्यसद्भ्यःप्रादांयुवभ्योद्विजपुङ्गवेभ्यः १४ गोभूहिरण्यायतनाश्वहस्तिनः कन्याःसदासीस्तिलरूप्यशय्याः॥ वासांसिरत्नानिपरिच्छदान्रथानिष्टंचयज्ञैश्चरितंचपूर्त्तम् १५ कस्यचिद्द्विजमुख्यस्य भ्रष्टागौर्ममगोधने ॥ संपृक्ताऽविदुषासाच मयादत्ताद्विजातये १६ तांनीयमानांतत्स्वामी दृष्ट्वोवाचममेतितम् ॥ ममेतिप्रतिग्राह्याह नृगोमेदत्तवानिति १७ विप्रौविवदमानौमामूचतुःस्वार्थसाधकौ ॥ भवान्दाताऽपहर्त्तेति तच्छ्रुत्वामेऽभवद्भ्रमः १८ अनुनीतावुभौविप्रौ धर्मकृच्छ्रगतेनवै॥ गवांलक्षंप्रकृष्टानां दास्याम्येषाप्रदीयताम् १९ भवन्तावनुगृह्णीतां किङ्करस्याविजानतः॥

पढ़ें तरुण जिनकी अवस्था ऐसे द्विजन में श्रेष्ठ ब्राह्मणनकूं दान करिकै देतभयो १४ गौ पृथ्वी सुवर्ण महल घोड़ा हाथी इत्यादिक दानकरे और दासीनसहित कन्यादान करे तिल रूपा शय्या वस्त्र रत्न और आच्छादन के श्रेष्ठ वस्त्र रथन के दानकरे यज्ञकरे कुआं तालाब बावली बनवाये १५ ऐसो मैं हों परंतु मोकूं एक सङ्कट आय कै प्राप्तभयो सो श्रवण करो कोई एक अयाचक ब्राह्मण की गौ भाजिकै मेरी गौवन में मिलिगई वह गौ मैंने बिना जाने ब्राह्मण कूं दान करिदीनी १६ वा गौ को मालिकहै सो वा गौ कूं ले जाती देखिकै यह गौ मेरी है या प्रकार कहत भयो दूसरो ब्राह्मण कहत भयो कि यह गौ मोकू राजा नृगने दान करिकै दीनी है १७ या प्रकार आपुस में विवाद करें अपने अपने प्रयोजनकू सिद्ध कस्यो चाहैं ऐसे दोनों ब्राह्मण आयकै कहतभये जाकू दान करिकै दीनी ही वह ब्राह्मण कहतभयो कि राजा तूही याको दाता है और जाकी गौ है कि कहा को दाताहै बिरानी गौ पुण्य करै है यह वार्ता श्रवण करिकै मोकूं भ्रमभयो १८ धर्म में कष्ट जाकूं प्राप्तभयो ऐसो जो मैं हूं ताने दोनों ब्राह्मणन की विनती करी कि महाराज या गौ के बदले सुन्दरी सुन्दरी एक लक्ष गौ देऊंगो यह गौ दीजिये १९ मैं तुम्हारो दासहूं मैंने जानी नहीं

कि यह गौ तुम्हारीहै मेरे ऊपर अनुग्रह करो घोर नरकमें गिरूं जो मैंहूं ताकी कष्ट तें रक्षाकरो २० हे राजन् नृग! और तेरी लाख गौ मोकूं नहीं अपेक्षितहैं जो दान करिकै दीनी है सोई लेउंगो यह कहिकै जा ब्राह्मण कूं गौ दीनी ही वह गौकूं त्यागिकै घरकूं जातभयो २१ हे देवतानके देव जगत्के पालन करनवारे! याके पीछे यमके दूत आयकै धर्मराजके पास मोकूं लैगये तहां धर्मराज ने मोसूं पूंछी २२ हे राजन् नृग! तुम्हारे दान और धर्मको लोकके प्रकाशको मैं अन्त नहींदेखूं हूं परन्तु यत्किञ्चित् तुम्हारो पापहै और सम्पूर्ण शुभहै सो प्रथम तुम पाप भोगोगे अथवा शुभ २३ या प्रकार धर्मराज ने कह्यो तब प्रथम पाप भोगोंगो ऐसे मैंने कह्यो ताही समय धर्मराजने आज्ञाकरी कि याकूं गिराइ देउ करकेंटाकी योनिमें अपनी रक्षाकरै हे प्रभो! गिरतेही अपनो करकेंटाको रूप देखतभयो २४ हे केशव! ब्राह्मणनको भक्तदाता तुम्हारे दर्शनकी इच्छा जाके ऐसो मैं तुम्हारो दासहूं ताकूं अब पर्यन्त नहीं नष्ट भई है २५ हे प्रभो! योगेश्वर वेदरूप नेत्र करिकै

समुद्धरतमांकृच्छ्रात्पतन्तंनिरयेऽशुचौ २० नाहंप्रतीच्छेवैराजन्नित्युक्त्वास्वाम्यपाक्रमत् ॥ नान्यद्गवामप्ययुतमिच्छामीत्यपरोययौ २१ एतस्मिन्नन्तरेयाम्यै र्दूतैर्नीतोयमक्षयम् ॥ यमेनपृष्टस्तत्राहं देवदेवजगत्पते २२ पूर्वंत्वमशुभंभुङ्क्षउताहोनृपतेशुभम् ॥ नान्तंदानस्यधर्मस्य पश्येलोकस्यभास्वतः २३ पूर्वंदेवाशुभंभुञ्जइतिप्राहपतेतिसः ॥ तावदद्राक्षमात्मानं कृकलासंपतन्प्रभो २४ ब्राह्मणस्यवदान्यस्य तवदासस्यकेशव ॥ स्मृतिर्नाद्यापिविध्वस्ताभवत्संदर्शनार्थिनः २५ सत्वंकथंममविभोऽक्षिपथःपरात्मा योगेश्वरैःश्रुतिदृशाऽमलहृद्विभाव्यः ॥ साक्षादधोक्षजउरुव्यसनान्धबुद्धेः स्यान्मेऽनुदृश्यइहयस्यभवापवर्गः २६ देवदेवजगन्नाथ गोविन्दपुरुषोत्तम ॥ नारायणहृषीकेश पुण्यश्लोकाच्युताव्यय २७ अनुजानीहिमांकृष्णयान्तंदेवगतिंप्रभो ॥ यत्रक्वापिसतश्चेतो भूयान्मेत्वत्पदास्पदम् २८ नमस्तेसर्वभावाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥ कृष्णायवासुदेवाय योगानांपतयेनमः २९ इत्युक्त्वातंपरिक्रम्य पादौस्पृष्ट्वास्वमौलिना ॥ अनुज्ञातोविमानाग्र्यमारुहत्पश्यतांनृणाम् ३० कृष्णःपरिजनंप्राह भगवान्देवकीसुतः ॥ ब्रह्मण्यदेवोधर्मात्मा राजन्याननुशिक्षयन् ३१

निर्म्मल हृदयमें जिनकी भावनाकरै और इन्द्रियनकी जिनमें पहुंच नहीं ऐसे परमात्मा जो तुमहौ सो अतिदुःखन करिकै अंधरी है बुद्धि जाकी ऐसो मैं हूं ताकूं कैसे प्रत्यक्ष दिखाई दीनी है यह आश्चर्य है या संसार में जा पुरुष को संसार छूटनहार होइहै ताकूं तुम्हारो दर्शन होइहै २६ हे देवनके देव! हे जगत्के नाथ! हे गोविन्द! हे पुरुषन में उत्तम! हे नारायण! हे इन्द्रियनके प्रेरणवारे! हे पवित्र है यश जिनको ऐसे! हे अखण्डरूप! हे अविनाशी! २७ हे कृष्ण! हे समर्थ! अब मैं स्वर्गमें जातहूं मोकूं आज्ञादेउ जहां कहूं मैं रहूं तहां मेरो चित्त तुम्हारे चरणनमें लग्यो रहै २८ सब कार्यको है जन्म जिनतें विश्वके कर्त्ता तथापि विकाररहित हौ काहे तें अनन्त माया है शक्ति जिनकी ऐसे तुमहौ तिनें और वासुदेव अर्थात् सब प्राणीनके आश्रय कृष्ण अर्थात् सर्वदा आनन्दरूप (कृषिर्भूवाचकःशब्दोणश्चनिर्वृतिवाचकः ॥ तयोरैक्यंपरंब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयतइति) वेदनके कहे जे यज्ञादिक कर्म्म और स्मृतिन के कहे जे कुआ बावली तालाव इत्यादिक कर्म्मनके फलदाता जो तुमहौ तिनकूं नमस्कार है २९ राजा नृग या प्रकार कहिकै श्रीकृष्णचन्द्रकी परिक्रमा दैके अपने मुकुट तें चरणकूं स्पर्श करिकै आज्ञालैकै सब प्राणीनके देखत विमान में चढ़तभयो ३० ब्राह्मण-

न की भक्ति करिके देवगर्भ में है मन जिनको ऐसे देवकी के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो क्षत्रियनकी शिक्षाके लिये अपने जे परिवार यादव हैं तिनसूं कहतभये ३१ अग्निकी तुल्यहै तेज जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तिनको थोडो भी भोग्यो ब्रह्मअंश नहीं पचैहै और अपने कूं ईश्वर माने जे राजा हैं तिनकी कौन कथाहै ३२ हलाहल जो विषहै ताकूं मैं विष नहीं मानूं हूं वाके दूरि करिवे की औषधहै परन्च ब्रह्मअंशहै सो विषहै या पृथ्वीमें ब्रह्मअंशके दूरि करिवेको उपाय नहीं ३३ विषहै सो खानवारे कूं मारै है अग्निलगै सो जलसूं शान्त होइहै और अग्निके जराइवे में जड वाकी रहि जातिहै परन्तु ब्रह्मअंशरूप जो लकड़ी है तामें तें जन्मी जो अग्नि सो मूलसहित कुलकूं भस्मकरै है ३४ शास्त्रने याको निषेध कर्यो ऐसो जो ब्रह्मअंशहै सो भोगे तें तीन पीढ़ीन को नाशकरै है जो भोगे ताकू वाके पुत्रकूं वाके पौत्रकू और राजाके बलतें अथवा छीनके जो ब्रह्मअंशको भोगकरै तौ दश अगिली और दश पिछली एक आप ऐसे इकईस पीढीको नाशकरै है ३५ जो कि

दुर्जरंबतब्रह्मस्वं भुक्तमग्नेर्मनागपि ॥ तेजीयसोऽपिकिमुत राज्ञामीश्वरमानिनाम् ३२ नाहंहालाहलंमन्येविषंयस्यप्रतिक्रिया ॥ ब्रह्मस्वंहिविषंप्रोक्तंनास्य प्रतिविधिर्भुवि ३३ हिनस्तिविषमत्तारं वह्निरद्भिःप्रशाम्यति ॥ कुलंसमूलंदहति ब्रह्मस्वारणिपावकः ३४ ब्रह्मस्वंदुरनुज्ञातं भुक्तंहन्तित्रिपूरुषम् ॥ प्रसह्यतु बलाद्भुक्तं दशपूर्वान्दशापरान् ३५ राजानोराजलक्ष्म्यान्धानात्मपातंविचक्षते ॥ निरयंयेऽभिमन्यन्तेब्रह्मस्वंसाधुबालिशाः ३६ गृह्णन्तियावतःपांसून्क्रन्द तामश्रुबिन्दवः ॥ विप्राणांहृतवृत्तीनां वदान्यानांकुटुम्बिनाम् ३७ राजानोराजकुल्याश्चतावतोऽब्दान्निरङ्कुशाः ॥ कुम्भीपाकेषुपच्यन्ते ब्रह्मदायापहारि णः ३८ स्वदत्तांपरदत्तांवा ब्रह्मवृत्तिंहरेच्चयः ॥ षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायांजायतेकृमिः ३९ नमेब्रह्मधनंभूयाद्यद्गृध्वाऽल्पायुषोनराः ॥ पराजिताश्च्युताराज्याद्भवन्त्युद्वेजिनोऽहयः ४० विप्रंकृतागसमपि नैवद्रुह्यतमामकाः ॥ घ्नन्तंबहुशपन्तंवा नमस्कुरुतनित्यशः ४१ यथाऽहंप्रणमेविप्राननुकालंसमाहितः ॥ तथानमतयूयञ्च योऽन्यथामेसदण्डभाक् ४२ ब्राह्मणार्थोह्यपहृतोहर्तारंपातयत्यधः॥अजानन्तमपिह्येनं नृगंब्राह्मणगौरिव ४३ एवंविश्राव्यभगवान्मुकुन्दो

लक्ष्मीसूं आधरे ऐसे जे राजा हैं ते अपनो नरकमें गिरिवो नहीं देखे हैं जे मूर्ख पुरुष ब्रह्मअंश पै मन चलावे है वे पुरुष नरकमें जायवे की इच्छा करे हैं ३६ कुटुम्बी उदार हरिगई है जीविका जिनकी याते रोदन करै ऐसे जे ब्राह्मणहैं तिनके नेत्रनतें आसूनकी बूंद गिरिकै जितनी पृथ्वी की रेणु भीजै हैं तितने वर्षपर्यंत ब्राह्मण के धनके हरनवारे निरंकुश जे राजा हैं ते और राजान के दीवान प्रधान टहलुआ हैं ते कुम्भीपाक नरक में पड़े है ३७। ३८ जो पुरुष अपनी दीनी अथवा और की दीनी ब्राह्मण की जीविका है ताय हरै वह पुरुष साठिहजार वर्षपर्यन्त विष्ठा को कीडा होइहै ३९ मेरे धरमें ब्राह्मण को धन मति आवो जे मनुष्य ब्राह्मण के धनकी चाहना करे हैं वे अल्पायु होइहैं पराजय कूं प्राप्त होइ है और राज्य तें भ्रष्ट होय कै मनुष्यन कूं भय के देनवारे सर्प होइहै ४० अपराध कूं करै मारतो आवै बहुत गारी देइ ऐसे ब्राह्मणतें भी द्रोह मतिकरो नित्य नित्य नमस्कारही करो ४१ जैसे सावधान होइकै समय समय तें ब्राह्मणनकू मैं नमस्कार करूं हूं तैसे तुमहूं नमस्कार करो और जो कोई मेरी आज्ञाकू न मानैगो वह पुरुष मेरे दण्ड कू पावेगो ४२ हर्यो जो ब्राह्मण को धन है सो हरनवारे कूं नरक में डारै है या बात

कूं कोई मिथ्या मति मानियो विना जाने नृग राजाने ब्राह्मणकी गौ ब्राह्मण कूं दीनीरही तासूं यह जैसे नरक में गिरयो तैसे ४३ समस्त लोकन के पवित्र करनवारे जो मुकुन्द भगवान् हैं सो या प्रकार द्वारकावासीन कूं सुनायकै अपनो जो मन्दिरहै तामें जात भये ४४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थप्रकाशिकायां दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे नृगोपाख्याननामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥ * ॥

(६५ पञ्चषष्टितमेऽध्याये रामश्चक्रे गोकुलमागतः ॥ रममाणस्तुगोपीभिःकालिन्द्याःकर्षणंमदात् १ रामस्यचरितंचित्रंकालिन्द्याःकर्षणादियत् ॥ पौण्ड्रकान्तादि कृष्णस्यपृथगुक्तमतःपरम् २ पैंसठवें अध्यायमें गोकुल में प्राप्त होकर गोपियों से रमण करतेहुये वलदेवजी मद तें यमुनाजी को खैंचते भये १ यमुनाजी का खैंचना आदि वलदेवजीका आश्चर्य चरित जो है ताके पीछे कृष्णजी का पौण्ड्रक वा नाश आदि अलग कहो है २) अथ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे कुरुवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित् ! इच्छा जिनके भई ऐसे भगवान् वलदेवजी रथमें वैठिकै सुहृदनके देखिवेके लिये नन्दजी के गोकुल में जातभये १ वहुत दिन तें उत्कण्ठा जिनके लगी ऐसे गोप गोपी मिलत भये वलदेवजीने माता पिता जे नन्द यशोदा हैं तिनकूं प्रणाम करी तव उनने आशीर्वाद दीने २

द्वारकौकसः ॥ पावनःसर्वलोकानांविवेशनिजमन्दिरम् ४४ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे नृगोपाख्यानंनामचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ वलभद्रःकुरुश्रेष्ठ भगवान्रथमास्थितः ॥ सुहृद्दिदृक्षुरुत्कण्ठःप्रययौनन्दगोकुलम् १ परिष्वक्तश्चिरोत्कण्ठैर्गोपैर्गोपीभिरेवच ॥ रामोऽभिवाद्यपितरावाशीर्भिरभिनन्दितः २ चिरंनःपाहिदाशार्ह सानुजोजगदीश्वरः ॥ इत्यारोप्याङ्कमालिङ्ग्यनेत्रैःसिषिचतुर्जलैः ३ गोपवृद्धांश्चविधिवद्यविष्ठैरभिवन्दितः ॥ यथावयोयथासख्यं यथासम्बन्धमात्मनः ४ समुपेत्याथगोपालान्हास्यहस्तग्रहादिभिः ॥ विश्रान्तंसुखमासीनं पप्रच्छुःपर्युपागताः ५ पृष्टाश्चानामयंस्वेषु प्रेमगद्गदयागिरा ॥ कृष्णेकमलपत्राक्षे संन्यस्ताखिलराधसः ६ कच्चिन्नोबान्धवाराम सर्वेकुशलमासते ॥ कच्चित्स्मरथनोराम यूयंदारसुतान्विताः ७ दिष्ट्याकंसोहतःपापो दिष्ट्यामुक्ताःसुहृज्जनाः ॥ निहत्यनिर्जित्यरिपून् दिष्ट्यादुर्गंसमाश्रिताः ८ गोप्योहसन्त्यःपप्रच्छूरामसंदर्शनादृताः ॥

हे दशार्हवंशोत्पन्न जगत् के ईश्वर वलदेवजी ! छोटे भय्या श्रीकृष्ण सहित तुम हमारी वहुत दिनपर्य्यन्त रक्षा करो या प्रकार गोद में वैठारि कै छाती में लगायकै नेत्रन में ते वहे जे आंसू तिन सूं वलदेवजी कूं भिजोवतभये ३ विधिपूर्वक वृद्ध गोपनकूं प्रणाम करिकै छोटे गोपन ने इनकूं प्रणाम करी ऐसे वलदेवजी जैसी जाकी अवस्था और जैसी जातें मित्रतारही और जैसो जातें सम्बन्ध रहो ४ तैसेही तिनकूं हास्य और हाथ को पकरिवो इत्यादिकन सूं मिलि कै श्रम जिनको गयो सुख सूं वैठे ऐसे वलदेवजीके पास आयकै पूछत भये ५ वलदेवजी ने पूंछे ऐसे व्रजवासी प्रेमवश होय कै गद्गद वाणी करिकै अपने यादवन की कुशल पूंछत भये कमलपत्रसे हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी प्राप्ति के लिये समस्त विषय जिनने त्यागि दिये ६ हे राम ! सम्पूर्ण हमारे वन्धु यादव प्रसन्न हैं अव तुम्हारे विवाह भये तुम्हारे पुत्र भये तुम कछु हमारी सुधि करो हौ ७ पापी कंस मरयो यह वड़ो मङ्गल भयो और हमारे मित्रजन वन्दीखाने तें छूटे यह वड़ो मङ्गलभयो शत्रुनकूं मारि और जीतिकै तुम द्वारकापुरीमें किला वनाइकै रहे यह वड़ो मङ्गल भयो ८ राम के दर्शन में है आदर जिनके ऐसी जे गोपी हैं ते हँसि कै पूंछति

भई पुरके स्त्रीजन हैं तिनकूं प्यारो ऐसो कृष्ण मुरारी है ९ वह कृष्ण कबहू अपने बन्धूनकी भी सुधि करे है अपने पिता माता की सुधि करे है कबहूं अपनी माताकूं एक वार देखन कूं भी आवैगो बड़ी हैं भुजा जाकी ऐसो कृष्ण कबहूं हमारी सेवा की सुधि करे है १० हे दशार्हकुलोत्पन्न समर्थ बलदेवजी ! या कृष्ण के लिये माता पिता भय्या पति पुत्र बहिनि स्वजन ये सब दुःख करिकै भी छोडे न जायँ ऐसे हमने छोडि दिये ११ तिन हमकूं शीघ्रही छोडिकै स्नेह कूं तोरिकै कृष्ण जात भयो कदाचित् कहो कि जब गयो हो तब क्यों नहीं रोंक्यो ताको जवाब देई हैं वाके मनमें विश्वास आइ गयो तासू न रोक्यो वाके वचनको विश्वास तुम करो हो यह बलदेवजी कहैं ताको उत्तर वाके मीठे मीठे वचन स्त्रीनके मन में कैसे न आवैं कहनवारी बहुत हैं याते नाना प्रकार के वचन हैं १२ तहाँ और गोपी कहे हैं नहीं स्थिर है चित्त जाको ऐसे कृष्ण को जो है वचन ताय विवेकिनी जे पुरकी स्त्री हैं ते कैसे सत्य मानें हैं और गोपी कहे है चित्र विचित्र है कथा जाकी

कच्चिदास्ते सुखं कृष्णः पुरस्त्रीजनवल्लभः ९ कच्चित्स्मरति वा बन्धून्पितरं मातरं च सः ॥ अप्यसौ मातरं द्रष्टुं सकृदप्यागमिष्यति ॥ अपि वा स्मरतेऽस्माकमनुसेवां महाभुजः १० मातरं पितरं भ्रातॄन् पतीन्पुत्रान्स्वसॄरपि ॥ यदर्थे जहिम दाशार्ह दुस्त्यजान्स्वजनान्प्रभो ११ तानः सद्यः परित्यज्य गतः सञ्छिन्नसौहृदः ॥ कथं नु तादृशं स्त्रीभिर्न श्रद्धीयेत भाषितम् १२ कथं नु गृह्णन्त्यनवस्थितात्मनो वचः कृतघ्नस्य बुधाः पुरस्त्रियः ॥ गृह्णन्ति वै चित्रकथस्य सुन्दरस्मितावलोकोच्छ्वसितस्मरातुराः १३ किं नस्तत्कथया गोप्यः कथाः कथयतापराः ॥ यात्यस्माभिर्विना कालो यदि तस्य तथैव नः १४ इति प्रहसितं शौरेर्जल्पितं चारुवीक्षितम् ॥ गतिं प्रेमपरिष्वङ्गं स्मरन्त्यो रुरुदुः स्त्रियः १५ सङ्कर्षणस्ताः कृष्णस्य सन्देशैर्हृदयंगमैः ॥ सान्त्वयामास भगवान् नानाऽनुनयकोविदः १६ द्वौ मासौ तत्रचावात्सीन्मधुं माधवमेव च ॥ रामः क्षपासु भगवान् गोपीनां रतिमावहन् १७ पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ॥ यमुनोपवने रेमे सेविते स्त्रीगणैर्वृतः १८ वरुणप्रेषिता देवी वारुणी वृक्षकोटरात् ॥ पतन्ती तद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत् १९ तं गन्धं मधुधाराया वायुनोपहृतं बलः ॥ आघ्रायोपगत

ऐसो जो कृष्ण ताकी सुन्दर मुसकानि चितवनि सूं शोभित जो कामदेव तासूं आतुर होयकै सत्य माने हैं १३ और गोपी कहे है हे गोपियो ! वाकी बातसूं हमें कहा काम है और बात क्यों न कहो हमारे बिना जैसे वाको काल व्यतीत होइ है तैसे वाके बिना हमारो भी काल व्यतीत होय है वाकूं सुख सूं बीते है हमकूं दुःखसू बीतै है इतनोही अन्तर है १४ या प्रकार श्रीकृष्ण की हँसनि बोलनि सुन्दर चितवनि पांवनकी चलनि प्रेमपूर्वक आलिंगन इनकी सुधि करिकै सब स्त्री रोदनकरति भई १५ अनेक प्रकार समझायवे में निपुण ऐसे जो भगवान् सङ्कर्षण हैं सो मनोहर जो श्रीकृष्ण के सदेश है तिनकूं कहिकै समझावत भये १६ ता व्रजमें भगवान् बलदेवजी रात्रिनमें गोपीन कूं आनन्द देत चैत्र वैशाख दो महीने पर्यन्त वास करत भये १७ पूर्ण चन्द्रमा की कला हैं तिन करिकै शोभायमान कुमोदिनीनकी सुगन्धयुक्त पवन जहां आवै ऐसो जो यमुनाजी को बाग है तामें स्त्रीन कूं संगलैके रमण करतभये १८ वरुण की पठाई हुई वारुणी जो मदिरा देवी है सो वृक्षनकी खोतरि में तें गिरिके समस्त वनहै ताय अपने गन्ध करिकै सुगन्धित करतभई १९ पवन ने प्राप्तकरी ऐसी जो मदिरा के धारकी सुगन्ध है ताय सूंघिकै बलदेवजी तहां आयकै स्त्रीन

कू संगलै है मदिरा पान करत भये २० स्त्रीन ने गाये हैं चरित्र जिनके और हलाई शस्त्र जिनको मतवारे अमल करिके विह्वल है नेत्र जिनके ऐसे बलदेवजी वनमें विचरतभये २१ वनमाला पहिरे एक कान में कुण्डल पहिरे मतवारे वैजयन्ती माला कूं धारणकरे तासू शोभायमान पसीना के विन्दुन करिके शोभायमान मन्द मन्द हास्ययुक्त जो कमलरूप मुख है ताय धारणकरे २२ जलक्रीड़ा करिवे के लिये ईश्वर समर्थ बलदेवजी यमुनाकूं बुलावतभये तब मतवारे हैं या कारणतें बलदेवजीके वचनको अनादर करिके नहीं आवति भई ऐसी जो यमुना नदी है ताय क्रोधकरिकै हलके अग्रभागसू खेंचतभये २३ हे पापिनी ! या कारण तें नहीं आई है अपनी इच्छापूर्वक विचरै जो तू है ताके हलके अग्रभागसूं सैकरान खण्ड करूंगो २४ हे राजन्परीक्षित् ! या प्रकार डराई जो यमुना है सो भयभीत होय है चकित होइकै चरणन में गिरिके यदुनन्दन बलदेवजी सूं बोलतभई २५ हे राम ! हे राम ! हे महाबाहो अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ! हे संसारके स्वामी !

स्तत्र ललनाभिःसमंपपौ २० उपगीयमानचरितो वनिताभिर्हलायुधः ॥ वनेषुव्यचरत्क्षीबो मदविह्वललोचनः २१ स्रग्व्येककुण्डलोमत्तो वैजयन्त्या चमालया ॥ बिभ्रत्स्मितमुखाम्भोजं स्वेदप्रालेयभूषितम् २२ सआजुहावयमुनां जलक्रीडाऽर्थमीश्वरः ॥ निजंवाक्यमनादृत्य मत्तइत्यापगांबलः ॥ अनागतांहलाग्रेण कुपितोविचकर्ष ह २३ पापेत्वंमामवज्ञाय यन्नायासिमयाऽऽहुता ॥ नेष्येत्वांलाङ्गलाग्रेण शतधाकामचारिणीम् २४ एवंनिर्भर्त्सिताभीता यमुनायदुनन्दनम् ॥ उवाचचकितावाचं पतितापादयोर्नृप २५ रामराममहाबाहो नजानेतवविक्रमम् ॥ यस्यैकांशेनविधृता जगतीजगतःपते २६ परंभावंभगवतो भगवन्मामजानतीम् ॥ मोक्तुमर्हसिविश्वात्मन् प्रपन्नांभक्तवत्सल २७ ततोव्यमुञ्चद्यमुनां याचितोभगवान्बलः ॥ विजगाहजलंस्त्रीभिःकरेणुभिरिवेभराट् २८ कामंविहृत्यसलिलादुत्तीर्णायासिताम्बरे ॥ भूषणानिमहार्हाणि ददौकान्तिःशुभांस्रजम् २९ वसित्वावाससीनीले मालाम्* आमुच्यकाञ्चनीम् ॥ रेजेस्वलङ्कृतोलिप्तो माहेन्द्रइववारणः ३० अद्यापिदृश्यतेराजन् यमुनाकृष्टवर्त्मना ॥ बलस्यानन्तवीर्यस्यवीर्यंसूचयतीवहि ३१

तुम्हारे पराक्रम कूं मैं नहीं जानूं हूं जिन तुम्हारो एक अंश जो शेषजी हैं तिनने समस्त पृथ्वी कूं सहस्र फणन में ते एक फण पै धारण करि राख्यो है २६ हे भगवन् ! तुम्हारे श्रेष्ठ प्रभावकूं नहीं जानूं हूं अब शरण आई जो मैं हूं ताकूं हे विश्वके आत्मा ! हे भक्तन पै हितकरनवारे ! छोड़िवे कूं योग्यहौ २७ ता पीछे याचना जिननें करी ऐसे जे भगवान् बलदेवजी हैं सो यमुनाकों छोड़िदेतभये जैसे हाथी हथिनीन के संग विहार करै ऐसे यमुना में विहार करते भये २८ इच्छापूर्वक विहार करिकै जलमें ते निकसे ऐसे जे बलदेवजी हैं तिनकूं लक्ष्मी नीलाम्बरकी धोती उपरना हैं तिनें देतभई बड़े मोलके आभूषण और सुन्दरमाला देतभई २९ नीलाम्बर की धोती और नीलाम्बर कोही उपरना पहिरिकै सुवर्ण की माला पहिरिकै भले प्रकार शोभायमान चन्दन जिनके लग्यो ऐसे

* यथोक्तवैष्णवे ॥ वरुणप्रहितां चास्मै मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ समुद्राभे तथा वस्त्रे नीले लक्ष्मीरयच्छत (हरिवंशे च मालाति लक्ष्मीवाक्यम्) जातरूपमयं चैककुण्डलं श्रवणभूषणम् ॥ आदित्यवर्णपद्मास्यं दिव्यश्रवणभूषणम् ॥ देवमातादितिर्हीश्च पौराणीं भूषणक्रियामित्यादि ६ ॥

बलदेवजी हैं सो इन्द्रको हाथी जैसे सुन्दर लगे है या प्रकार शोभायमान होतभये ३० हे राजन् परीक्षित ! अब पर्यन्त भी यमुनाजी खिंची दिखाई देइ है अनन्तहै पराक्रम जिनको ऐसे बलदेवजीके पराक्रमकूं यमुनाजी जनावै है ३१ ब्रजकी स्त्रीनके संग विलासन करिके चलायमानहै चित्त जिनको ऐसे बलदेवजीको ब्रजमें रमण करत एक राति जैसे बीतै ऐसे सम्पूर्ण रात्रि बीतत भई ३२ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थप्रकाशेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवविजयेयमुनाऽऽकर्षणनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥ * ॥ * ॥

(षट्षष्टितमेकाशींगताऽहन्पौण्ड्रं हरिः ॥ तन्मित्रंचततोदृप्तंसुदक्षिणवधादिकम् १ छाछठवें अध्याय में कृष्णजी काशी जी में जाकर पौण्ड्रक और उसके मित्र और सुदक्षिण का वध आदिक करते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहैहैं हे राजन् परीक्षित् ! जब बलदेव जी नन्दराय के ब्रजमें आये तब अज्ञानी जो करूष देश को राजा पौण्ड्रक है सो मैं वासुदेवहूं या प्रकार मन में

एवंसर्वानिशायाता एकेवरमतोव्रजे ॥ रामस्याक्षिप्तचित्तस्य माधुर्यैर्व्रजयोषिताम् ३२ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवविजये यमुनाऽऽकर्षणंनामपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ नन्दव्रजंगतेरामे करूषाधिपतिर्नृप ॥ वासुदेवोऽहमित्यज्ञोदूतंकृष्णायप्राहिणोत् १ त्वंवासुदेवोभगवानवतीर्णोजगत्पतिः ॥ इतिप्रस्तोभितोबालैर्मेनआत्मानमच्युतम् २ दूतंचप्राहिणोन्मन्दः कृष्णायाव्यक्तवर्त्मने ॥ द्वारकायांयथाबालो नृपोबाल*कृतोऽबुधः ३ दूतस्तुद्वारकामेत्य सभायामास्थितंप्रभुम् ॥ कृष्णंकमलपत्राक्षं राजसन्देशमब्रवीत् ४ वासुदेवोऽवतीर्णोऽहमेकएवनचापरः ॥ भूतानामनुकम्पार्थं त्वंतुमिथ्याऽभिधान्त्यज ५ यानित्वमस्मच्चिह्नानि मौढ्याद्बिभर्षिसात्वत ॥ त्यक्त्वैहिमांत्वंशरणं नोचेद्देहिममाहवम् ६ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कत्थनंतदुपाकर्ण्य पौण्ड्रक

विचार करके श्रीकृष्णचन्द्रके पास दूत भेजत भयो १ तू वासुदेव अवतर्योहै जगत्को पतिहै याप्रकार अज्ञानी पुरुषन ने जब तेरी प्रशंसा करी तब तू अपने मनमें अच्युत मानतभयो सो तू अच्युत नहीं है ऐसे कहिकै दूत भेजत भयो २ नहीं है प्रकट मार्ग जिनको ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके पास द्वारकापुरी में अज्ञानी पौण्ड्रक दूत भेजतभयो जैसे बालकन ने खेल में बनायो ऐसो जो अज्ञानी बालक है सो आपे को राजा माने है ऐसे अपने को पौण्ड्रक वासुदेव मानतभयो ३ कमलपत्रकी तुल्य हैं नेत्र जिनके ऐसे श्रीकृष्णकूं दूत जाय के सभा में बैठे देखिकै राजा पौण्ड्रक को संदेशो कहत भयो ४ प्राणीनके ऊपर कृपाकरिबे के लिये एकही मैं वासुदेव अवतर्यो हूं दूसरो नहीं है तैंने मिथ्याही अपनो नाम वासुदेव धरि राख्यो है ताय त्यागि दे ५ हे यादवमूर्ख ! तासूं मेरे चिह्न जे गदा पद्म हैं तिनें धारण करेहै तिनकूं शीघ्र त्यागिकैं मेरी शरणआउ और जो नहीं छोडे तौ मेरे संग युद्ध करिबे की त्यारी करु ६ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं

* बालैस्तत्र क्रीडायांपरिकल्पितराजवत् ॥

हे राजन् परीक्षित् ! मन्दहै बुद्धि जाकी ऐसो जो पौण्ड्रक है ताको संदेशो श्रवण करिकै ता समय राजा उग्रसेन तैं आदि लैके जे सभासद्हैं ते अतिशय करिकै हँसतभये ७ हँसिकै भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र दूततैं बोलतभये हे मूढ! कृत्रिम जे सुदर्शनादिक चिह्नहैं तिनसूं तू अपनी ऐसी बड़ाईकरैहै तिनकूं तोपै ते छुड़ाइ लेउँगो ८ हे अज्ञानी ! जा समय तूं अपने मुख कूं ढँकिकै और उजरीचील्ह गीध बगुलानने आयकै घेरयो ऐसो तू मरिकै सोवैगो ता समय कुत्तानको शरण लेइगो अर्थात् वे तोकूं भक्षण करेंगे ९ तासमय जो सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्रने अनादर करिकै कह्यो सो तैसेही दूत अपनो स्वामी जो मिथ्या वासुदेव है ताकूं सब श्रवण करावत भयो और श्रीकृष्णचन्द्रहू रथमें बैठि कै काशीपुरी में जातभये क्योंकि ता समय पौण्ड्रक भी अपनो मित्र काशी को राजा है ताके आयो है याते ता समय श्रीकृष्णचन्द्रहू प्राप्त होतभये १० ता समय महारथी जो पौण्ड्रकहै सो भी श्रीकृष्णचन्द्र के युद्ध को उद्यम है ताय जानिकै दो अक्षौहिणी सेना सङ्ग लैके शीघ्रही

स्याल्पमेधसः॥ उग्रसेनादयःसभ्या उच्चकैर्जहसुस्तदा ७ उवाचदूतंभगवान्परिहासकथामनु ॥ उत्स्रक्ष्येमूढचिह्नानि यैस्त्वमेवंविकत्थसे ८ मुखंतदपिधायाज्ञ कङ्कगृध्रवटैर्वृतः॥ शयिष्यसेहतस्तत्र भविताशरणंशुनाम् ९ इतिदूतस्तदाक्षेपं स्वामिनेसर्वमाहरत्॥कृष्णोऽपिरथमास्थाय काशीमुपजगामह१० पौण्ड्रकोपितदुद्योगमुपलभ्यमहारथः ॥ अक्षौहिणीभ्यांसंयुक्तोनिश्चक्रामपुराद्द्रुतम् ११ तस्यकाशिपतिर्मित्रं पार्ष्णिग्राहोऽन्वयान्नृप ॥ अक्षौहिणीभिस्त्रिभिरपश्यत्पौण्ड्रकंहरिः १२ शङ्खार्य्यसिगदाशार्ङ्गश्रीवत्साद्युपलक्षितम्॥बिभ्राणंकौस्तुभमणिं वनमालाविभूषितम्१३कौशेयवाससीपीते वसानंगरुडध्वजम्॥ अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् १४ दृष्ट्वातमात्मनस्तुल्यवेषंकृत्रिममास्थितम् ॥ यथानटंरङ्गगतं विजहासभृशंहरिः १५ शूलैर्गदाभिःपरिघैः शक्त्यृष्टिप्रासतोमरैः ॥ असिभिःपट्टिशैर्बाणैः प्राहरन्नरयोहरिम् १६ कृष्णस्तुतत्पौण्ड्रककाशिराजयोर्बलंगजस्यन्दनवाजिपत्तिमत्॥ गदासिचक्रेषुभिरार्दयद्भृशं यथायुगान्तेहुतभुक्पृथक्प्रजाः १७ आयोधनंतद्रथवाजिकुञ्जरद्विपत्खरोष्ट्रैररिणाऽवखण्डितैः॥बभौचितंमोदवहंमनस्विनामा

काशीपुरी तैं बाहर निकसत भयो ११ ता पौण्ड्रकको मित्र काशीकी रक्षा करनवारो जो राजाहै सो मित्रकी सहाय करिवेके लिये पीछे तैं आवत भयो तब तीन अक्षौहिणी सेना जाके संग ऐसे पौण्ड्रककू भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र देखत भये १२ शङ्ख चक्र तरवारि गदा धनुष भृगुलता इनसूं आदि लैकै जे चिह्न हैं तिनसूं देख्यो जाय है और कौस्तुभमणि कूं धारण करे वनमाला कू पहिरिके शोभायमानहै १३ रेशमी पीरेधोती उपरनानकूं पहिरे गरुडको छापो जाकी ध्वजामें है बडे मोलके है मुकुट और आभूषण जाके मकराकृत कुण्डलन करिकै प्रकाशमान है १४ जैसे रणभूमिमें वेष बनायकै प्राप्तभयो जो नटहै तैसे अपनी बराबरिके बनाये भये रूपकू धारणकरे ऐसो जो मिथ्या वासुदेव है ताय देखिकै श्रीकृष्णचन्द्र बहुत हँसतभये क्योंकि नकली ने ज्योंकी त्यों नकल उतारी है १५ त्रिशूल गदा मेंड़े बरछी गुर्ज नेजा तोमर तरवारि पट्टा बाण ये हथियार वैरी श्रीकृष्णचन्द्र के ऊपर चलावत भये १६ जैसे प्रलयकी अग्नि जरायुज स्वेदज अण्डज उद्भिज्ज इन चार प्रकारके प्राणीनकूं पीड़ा देइहै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मिथ्यावासुदेवकूं और काशीके राजा कूं और तिनके हाथी रथ घोडा प्यादे हैं जामें ऐसी जो चतुरंगिणी सेनाहै ताय गदा तरवारि चक्र

बाण इनसूं बहुत पीड़ा देतभये १७ चक्रसूं काटेभये जे रथ घोड़ा हाथी प्यादे गये अंग जामें परे ऐसी जो रणभूमिहै सो सुन्दर लगतभई जो कोई शूरवीर हैं तिनकूं देखिकै आनन्द होतभयो जैसे प्रलयकालमें भयानक शिवजीके खेलिवेको स्थान सुन्दर लगै है या प्रकार १८ सेना मारे पीछे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते पौण्ड्रकतें कहतभये भो भोः पौण्ड्रक ! तू दूतके वचन सूं मोते कहत भयो जे तेरे शस्त्र छुड़ाइ देउँगो १९ हे अज्ञानी ! मेरो नाम जो वासुदेवहै सो तैंने अपनो नाम झूठोही धरिलीनो यह तेरो नाम छूटि जायगो और जो तेरे आगे युद्ध न करूंगो तो तेरो शरण लेउँगो २० या प्रकार तिरस्कार करिकै पैनेबाणनसूं पौण्ड्रकको रथ तोरिकै जैसे इन्द्र अपने वज्रतें पर्व्वत के शिखर काटै है तैसे चक्रतें श्रीकृष्णचन्द्र पौण्ड्रकको शिर काटत भये २१ तैसेही काशीके राजाको बाणन करिकै देहतें शिर उखारिकै काशीपुरीमें पटकत भये जैसे कमल कोशकूं पवन पटकैहै ऐसे पटकतभये २२ या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र मित्रसहित जो पौण्ड्रकहै ताय

क्रीडनंभूतपतेरिवोल्बणम् १८ अथाहपौण्ड्रकंशौरिर्भो भोःपौण्ड्रकयद्भवान् ॥ दूतवाक्येनमामाह तान्यस्त्राण्युत्सृजामिते १९ त्याजयिष्येऽभिधानंमे यत्त्वयाऽज्ञमृषाधृतम् ॥ व्रजामिशरणंतेऽद्य यदिनेच्छामिसंयुगम् २० इतिक्षिप्त्वाशितैर्बाणैर्विरथीकृत्यपौण्ड्रकम् ॥ शिरोऽवृश्चद्रथाङ्गेनवज्रेणेन्द्रोयथागिरेः २१ तथाकाशिपतेःकायाच्छिरउत्कृत्यपत्रिभिः ॥ न्यपातयत्काशिपुर्यां पद्मकोशमिवानिलः २२ एवंमत्सरिणंहत्वा पौण्ड्रकंससखंहरिः ॥ द्वारकामाविशत्सिद्धैर्गीयमानकथामृतः २३ सनित्यंभगवद्ध्यानप्रध्वस्ताऽखिलबन्धनः ॥ बिभ्राणश्चहरेराजन्स्वरूपंतन्मयोऽभवत् २४ शिरःपतितमालोक्यराजद्वारेसकुण्डलम् ॥ किमिदंकस्यवावक्त्रमितिसंशयिरेजनाः २५ राज्ञःकाशिपतेर्ज्ञात्वामहिष्यःपुत्रबान्धवाः ॥ पौराश्चहाहताराजन् नाथनाथेतिप्रारुदन् २६ सुदक्षिणस्तस्यसुतःकृत्वासंस्थाविधिंपितुः ॥ निहत्यपितृहन्तारं यास्यम्यपचितिंपितुः २७ इत्यात्मनाऽभिसंधाय सोपाध्यायोमहेश्वरम् ॥ सुदक्षिणोऽर्चयामास परमेणसमाधिना २८ प्रीतोऽविमुक्तोभगवांस्तस्मैवरमदाद्विभुः ॥ पितृहन्तृवधोपायं सवव्रेवरमीप्सितम् २९ दक्षिणाग्निंपरिचरब्राह्मणैःसममृत्विजम्

मारिकै सिद्धनने गायो है कथारूप अमृत जिनको ऐसे श्रीकृष्ण द्वारकापुरीमें आवतभये २३ हे राजन् परीक्षित् ! भगवान्के ध्यानतें दूरि भये हैं सब मनोरथ जाके ऐसो पौण्ड्रक हरिके स्वरूप कूं हरिको नाम मिथ्या मानिकै अपनो नाम हरिमय मानतभयो २४ काशीमें राजाके द्वारपै कुण्डल सहित परयो जो शिर है ताय देखिकै यह कहाहै कौनको मुख है या प्रकार मनुष्य सन्देह करत भये २५ पीछे हे राजन् परीक्षित् ! काशीके राजाको शिर जानिकै रानी हैं ते और पुत्र भय्या बन्धु तथा पुरवासी हैं ते हे नाथ ! हाय हाय मरे मरे याप्रकार कहि कहिके रोदन करतभये २६ ता काशी के राजाको सुदक्षिण नाम करिकै पुत्रहै सो अपने पिताकी परलोक क्रिया करिकै पिताको मारनवारो कृष्णहै ताय मारिकै पिताको ऋण चुकाऊंगो २७ या प्रकार बुद्धिसूं निश्चय करिकै उपाध्यायन सहित जो सुदक्षिणहै सो परम समाधि लगायकै शिवजीको पूजन करतभयो २८ विशेष करिकै अविमुक्त जो भगवान् शिवजी है सो प्रसन्न होयकै ता सुदक्षिणकूं तू वर मांग या प्रकार कहत भये तब सुदक्षिणहै सो पिताको मारनवारो जो है ताके वधको उपाय वाञ्छित वरहै ताय मांगत भयो २९ ऋत्विज् कौसो नाहिं (ऋत्विगगृह्दिजमित्यत्वनियोगकरणंयज्ञस्यदेवमृत्विजमितिश्रु-

तेः) अपनी आज्ञाको करनवारो ऐसो जो कृत्याको अग्निहै ताय ब्राह्मणनकूं सायलैकै सेवन करि वह अग्नि प्रमथगण हैं तिनकूं संगलैकै मारणकी जो विधिहै ता करिकै तेरे मनोरथ सिद्ध करैगो ३० ब्राह्मणकी भक्ति करिके रहित जो पुरुषहै तापै चलावैगो तो तेरो सङ्कल्प सिद्ध होयगो यामें कहा कह्यो ब्राह्मणकी भक्ति करैं जो श्रीकृष्णचन्द्र तिनपै चलावैगो तो उलटो परेगो या प्रकार आज्ञा ताकूं दीनी ग्रहण कर्‌यो है नियम जाने ऐसो जो सुदक्षिणहै सो श्रीकृष्णकूं घातसूं मारिवेके लिये जैसे शिवजी ने आज्ञादीनी तैसेही करत भयो ३१ वह जो कुण्ड है तासूं अति भयानक मूर्तिमान् अग्नि उठतभयो तप्त ताम्रकी तुल्यहै शिखा और दाढ़ी जाकी नेत्र और मुखसूं अंगारनकूं उगिलै ३२ दातन करिकै भयानक जे भ्रुकुटीदण्ड तिनसूं कठोर है मुख जाको अपनी जीभतें ओंठनके अग्रभागकूं चाटै जाज्वल्यमान जो त्रिशूलहै ताकू भ्रमण करेहै ३३ और बड़े तालसे लम्बे पाव हैं तिनपूं पृथ्वी कूं कँपावत और दशो दिशानकूं जरावत भूत प्रेतन

अभिचारविधानेन सचाग्निःप्रमथैर्वृतः ३० साधयिष्यतिसङ्कल्पमब्रह्मण्येप्रयोजितः ⊛ ॥ इत्यादिष्टस्तथा चक्रेकृष्णायाभिचरन्व्रती ३१ ततोऽग्निरुत्थितः कुण्डान्मूर्त्तिमानतिभीषणः ॥ तप्तताम्रशिखाश्मश्रुरङ्गारोद्गारिलोचनः ३२ दंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीदण्डकठोरास्यःस्वजिह्वया ॥ आलिहन्सृक्किणीनग्नोविधुन्वंस्त्रिशिखंज्वलत् ३३ पद्भ्यांतालप्रमाणाभ्यां कम्पयन्नवनीतलम् ॥ सोऽभ्यधावद्वृतोभूतैर्द्वारकांप्रदहन्दिशः ३४ तमाभिचारदहनमायान्तंद्वारकौकसः ॥ विलोक्यतत्रसुःसर्वे वनदाहेमृगायथा ३५ अक्षैःसभायांक्रीडन्तं भगवन्तंभयातुराः ॥ त्राहित्राहित्रिलोकेश वह्नेःप्रदहतःपुरम् ३६ श्रुत्वातज्जनवैक्लव्यं दृष्ट्वास्वानांचसाध्वसम् ॥ शरण्यःसंप्रहस्याह माभैष्टेत्यवितास्म्यहम् ३७ सर्वस्यान्तर्बहिःसाक्षी कृत्यांमाहेश्वरींविभुः ॥ विज्ञायतद्विघातार्थं पार्श्वस्थं चक्रमादिशत् ३८ तत्सूर्य्यकोटिप्रतिमंसुदर्शनं जाज्वल्यमानंप्रलयाऽनलप्रभम् ॥ स्वतेजसाखंककुभोऽथरोदसी चक्रंमुकुन्दास्त्रमथाग्निमार्दयत् ३९

कूं संगलैकै वह अग्नि द्वारकापुरी में आवतभयो ३४ वनके पजरिवे में मृग जैसे त्रासकूं पावे हैं ऐसे चलीआवै जो कृत्याग्नि है ताय देखिकै समस्त द्वारकावासी त्रासकूं पावतभये ३५ पासेन सूं सभामें खेलैं ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनसूं भयकरिकै व्याकुल जे द्वारकावासी हैं ते हे त्रिलोकीके ईश्वर ! अग्नि करिके पजरै जो पुरहै ताकी तुम रक्षाकरो ऐसे कहतभये ३६ मनुष्यनकी व्याकुलताहै ताय सुनिकै और अपने पुरमें यादवनकूं हरबराहटहै ताय देखिकै शरणागतनके रक्षक जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो हँसिकै भय मतिकरो मैं रक्षा करूंगो या प्रकार कहतभये ३७ सबके भीतर बाहर के देखनवारे समर्थ जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो महादेवकी कृत्याग्नि है यह जानिकै ताके नाश करिवे के निमित्त पास ठाढ़ो जो चक्रहै ताकू आज्ञा करतभये ३८ करोड़ सूर्य्यकी बराबरि है तेज जाको प्रलयकालकी अग्निकी तुल्य है कान्ति जाकी अपने तेज करिकै आकाश दिशा यावा पृथ्वी इनकूं प्रकाशै ऐसो जो मुकुन्द को अस्त्र चक्र सुदर्शनहै सो ता अग्निकूं पीड़ा देतभयो ३९

⊛ अब्रह्मण्ये प्रयोजित इति कृष्णे प्रयोजितो विपरीतो भविष्यतीति सूचितम् तस्य ब्रह्मभक्तत्वात् १ ॥

हे राजन् परीक्षित् ! चक्रहै हाथमें जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके अस्त्रकेतेजतें ताड़ितभयो याहीतें टूट्यो है मुख जाको ऐसो जो कृत्याको अग्निहै सो उलटो नगादिकैं काशीमें आइकै यज्ञके करा-
वनवारे ऋत्विजन सहित जो सुदक्षिण है ताय जरावतभयो क्योंकि अपनो करयो अभिचार है यामें कहा योतन करयो कि जो शत्रुपै चलिजाय तौ चलिजाय नहीं तौ जो चलावै ताकूं मारै ४०
ता अग्निके पीछे आयो ता श्रीकृष्णचन्द्र को चक्रहै सो मञ्चान सहित जो सभाहैं ताय और हवेली दूकान पुरके दरवाजे और खज़ानेन सहित अटारी कोठे हाथी घोडा अन्न इनकी शाला जामें
वनी ऐसी जो काशी है ताय जरावत भयो ४१ नहीं क्लेशयुक्त है कर्म्म जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको जो सुदर्शन चक्रहै सो सम्पूर्ण काशीकूं जरायके फेरि पास आयकै ठाड़ो होतभयो ४२
उत्तम है यश जिनको ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को यह पराक्रमहै ताय जो मनुष्य सावधान होयकै श्रवण करै अथवा श्रवण करावै वह सम्पूर्ण पापननें छूटि जाय है ४३ इति श्रीमन्महाभाग-
वतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपौण्ड्रकादिवधोनामपट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

कृत्याऽनलःप्रतिहतःसरथाङ्गपाणेरस्त्रौजसासनृपभग्नमुखोनिवृत्तः ॥ वाराणसींपरिसमेत्यसुदक्षिणंतं सर्त्विग्जनंसमदहत्स्वकृतोऽभिचारः ४० चक्रंच
विष्णोस्तदनुप्रविष्टं वाराणसींसाट्टसभालयापणाम् ॥ सगोपुराट्टालककोष्ठसङ्कुलां सकोशहस्त्यश्वरथान्नशालाम् ४१ दग्ध्वावाराणसींसर्वां विष्णोश्च
क्रंसुदर्शनम् ॥ भूयःपार्श्वमुपातिष्ठत्कृष्णस्याक्लिष्टकर्मणः ४२ यएनंश्रावयेन्मर्त्यउत्तमश्लोकविक्रमम् ॥ समाहितोवाशृणुयात्सर्व्वपापैःप्रमुच्यते४३
इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपौण्ड्रकादिवधोनामपट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

राजोवाच ॥ भूयोऽहंश्रोतुमिच्छामि रामस्याद्भुतकर्म्मणः ॥ अनन्तस्याप्रमेयस्य यदन्यत्कृतवान्प्रभुः १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ नरकस्यसखाकश्चि
द्द्विविदोनामवानरः ॥ सुग्रीवसचिवःसोऽथभ्रातामैन्दस्यवीर्यवान् २ सख्युःसोऽपचितिंकुर्व्वन् वानरोराष्ट्रविप्लवम् ॥ पुरग्रामाकरान्घोषानदहद्वह्निमुत्सृज
न् ३ क्वचित्सशैलानुत्पाट्यतैर्देशान्समचूर्णयत् ॥ आनर्तान्सुतरामेव यत्राऽऽस्तेऽमित्रहाहरिः ४ क्वचित्समुद्रमध्यस्थोदोर्भ्यामुत्क्षिप्यतज्जलम् ॥ देशा

(सप्तषष्टितमेरामोगिरौरैवतकेमदात् ॥ स्त्रैरंयुवतिभिःक्रीडन्नवधीद्द्विविदंखलम् १ सड़सठवें अध्याय में वलदेव जी मद सूं इच्छापूर्व्वक रैवतक पर्व्वत मे स्त्रियों के साथ क्रीडा करते हुये दुष्ट
द्विविदको मारते भये १) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे शुकदेवजी ! अद्भुत हैं कर्म्म जिनके अनन्त जिनको नहीं प्रमाण करिवे में न आवें ऐसे जे राम वलदेवजी और जे चरित्र करत भये
तिनकी मैं फेरि सुनिवे की इच्छा करू हूं मेरे आगे वर्णन कीजिये १ तब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! नरकासुर को मित्र सुग्रीव को मन्त्री मैन्द को भय्या बड़ो पराक्रमी कोई द्विविद
नाम करिकै वानर हो २ सो अपने मित्र नरकासुरको ऋण चुकायवे के निमित्त पुर ग्राम खानि खिरक छप्पर इनकूं जरावत देशन को नाश करत भयो ३ कभऊं यह वानर पर्व्वतन कूं उखारि

* अभिचर्यतमाग्नेनडाहत्यभिचार कृत्याग्न ? ॥

कै देशनके ऊपर पटकि कै चूर्ण करत भयो और जिन देशन में कि मित्र नरकासुर के मारनवारे श्रीकृष्णचन्द्र रहे हैं उन देशन कूं बहुत कष्ट देतभयो ४ दश हजार हाथी को है बल जामें ऐसो द्विविद वानर समुद्र के बीच में ठाडो होयकै भुजान तें जलकूं उछारि कै समुद्र के तट के जो देशहैं तिनकूं डुवावत भयो ५ दुष्ट वानर है सो बडे बडे ऋषिन के आश्रमन में जाय कै वृक्षन कूं तोरि कै मल मूत्र करिकै यज्ञ की अग्नि कूं दूषित करत भयो ६ बड़ो है गर्व जाके ऐसो जो वन्दर है सो पुरुष और स्त्रीन कूं पकरिकै पर्वत की गुफा में कन्दरान में धरिकै जैसे भृङ्गी कीड़ान कूं मूंदि देइहै ऐसे मूदत भयो ७ या प्रकार देशनमें उपद्रव करत कुलकी स्त्रीनकूं दोष लगायकै मनोहर गीतहै ताकू सुनिकै वानर रैवतक पर्वतमें जातभयो ८ ता रैवतक पर्वत में जायकै यादवन के पालनवारे कमल की माला पहिरे सुन्दर देखिवे योग्य हैं सब अंग जिनके स्त्रीन के बीचमें बैठे ऐसे जो राम बलदेव जी हैं तिनें देखत भयो ९ कैसे बलदेवजी देखे सो कहे हैं—वरुणहै देवता जाको ऐसी

नागायुतप्राणोवेलाकूलानमज्जयत् ५ आश्रमानृषिमुख्यानां कृत्वाभग्नवनस्पतीन् ॥ अदूषयच्छकृन्मूत्रैरग्नीन्वैतानिकान्खलः ६ पुरुषान्योषितोदृप्तः क्ष्माभृद्द्रोणीगुहासुसः ॥ निक्षिप्यचाप्यधाच्छैलैः पेशस्कारीवकीटकम् ७ एवंदेशान्विप्रकुर्वन् दूषयंश्चकुलस्त्रियः ॥ श्रुत्वासुललितंगीतं गिरिंरैवतकंययौ ८ तत्रापश्यद्यदुपतिं रामंपुष्करमालिनम् ॥ सुदर्शनीयसर्वाङ्गं ललनायूथमध्यगम् ९ गायन्तंवारुणींपीत्वा मदविह्वललोचनम् ॥ विभ्राजमानंवपुषाप्रभिन्नमिववारणम् १० दुष्टःशाखामृगःशाखामारूढःकम्पयन्द्रुमान् ॥ चक्रेकिलकिलाशब्दमात्मानंसम्प्रदर्शयन् ११ तस्यधार्ष्ट्यंकपेर्वीक्ष्य तरुण्योजातिचापलाः ॥ हास्यप्रियाविजहसुर्बलदेवपरिग्रहाः १२ ताहेलयामासकपिर्भ्रूक्षेपैःसम्मुखादिभिः ॥ दर्शयन्स्वगुदंतासां रामस्यचनिरीक्षतः १३ तंग्राव्णाप्राहरत्क्रुद्धोबलःप्रहरतांवरः ॥ सवञ्चयित्वाग्रावाणं मदिराकलशंकपिः १४ गृहीत्वाहेलयामासधूर्तस्तंकोपयन्हसन् ॥ निर्भिद्यकलशंदुष्टोवासांस्यास्फालयद्बलम् १५ कदर्थीकृत्यबलवान्विप्रचक्रेमदोद्धतः ॥ तंतस्याविनयंदृष्ट्वादेशांश्चतदुपद्रुतान् १६ क्रुद्धोमुसलमादत्तहलंचारिजिघांसया ॥ द्विविदो

मदिराकूं पीकै गावें मद करिकै विह्वल हैं नेत्र जिनके मतवारे हाथीकी तुल्य देह करिकै प्रकाशमान हैं १० दुष्ट जो शाखामृग वन्दरहै सो वृक्षकी शाखानपै चढिकै उनकूं हलावत आपेकूं दिखायकै किचिर किचिर शब्द करतभयो ११ वह जो वन्दरहै ताकी धृष्टता देखिकै स्वभाव तें चञ्चल हँसी जिनकूं प्यारीलगै ऐसी जो वलदेवजीके सगकी स्त्रीहैं तेहू हँसतिभई १२ वह जो वन्दरहै सो भ्रुकुटी चढायकै सामहें घुडकिकै स्त्रीनकूं अपनी गुदा दिखायकै बलदेवजी के देखत स्त्रीनकी अवज्ञा करतभयो १३ प्रहार करनवारेन में श्रेष्ठ ऐसे बलदेवजी क्रोध करिकै वन्दरके पत्थर मारतभये वह धूर्त्त वन्दर पत्थर कूं बचाय के मदिराको कलशहै ताय लैकै हँसिकै बलदेवजी कूं क्रोध कराय कै अवज्ञा करनभयो दुष्ट जो वन्दर है सो मदिरा के कलश कूं फोरिकै स्त्रीन के वसन कूं खैंचि कै फारत भयो बडो बलवान् मद करिकै उद्धत जो वन्दर है सो बलदेवजी की कदर्थना करिकै दुःख देतभयो ता वन्दर की अनम्रता देखिकै और उपद्रव जिनमें मचायो ऐसे देशनकूं देखिकै १४।१५।१६

और जिनकूं आयतयो ऐसे बलदेवजी ता वैरी के मारिबे कूं हल मसल लेत भये बड़ो पराक्रमी बन्दर है सो भी हाथ में शालवृक्ष कूं उखारिके १७ शीघ्रता सूं पास आय के ता वृक्षकी चोट बलदेवजी के माथे में मारत भयो पर्वतकी तुल्य माथे पे चलयो और जो शाल को वृक्ष है ताय १८ बलवान् बलदेवजी पकरत भये और अपने मूसलकूं या बन्दर के मारत भये मूसल करिकै कट्यो है माथो जाको ऐसो जो बन्दर है सो मूसल की चोट कूं नहीं मानिकैं जैसे गेरु में गेरू की धार तें पर्वत सुन्दर लगे है ऐसे रुधिर की धारा जो बही तासूं सुन्दर लगतभयो बड़ो है क्रोध जाके ऐसो बन्दर फेरि और जो वृक्ष है ताकूं बलतें उखारिके वाके पत्तानकूं साफ करिकै बलदेवजी के मारत भयो तब बलदेवजी या वृक्षके टूकटूक करतभये ताके पीछे और जो वृक्ष है ताकूं उखारिकै बलदेवजी के मारत भयो तब या वृक्षके बलदेवजी सौ टूक करतभये १९ । २० । २१ या प्रकार भगवान् बलदेवजी के साथ युद्ध करिकै फेरिफेरि जब वृक्ष कटि गये तब चारयो ओर तें

ऽपिमहावीर्य्यःशालमुद्यम्यपाणिना१७ अभ्येत्यतरसातेनबलंमूर्द्धन्यताडयत् ॥ तन्तुसङ्कर्षणोमूर्द्ध्नि पतन्तमचलोयथा १८ प्रतिजग्राहबलवान् सुनन्देनाहनच्चतम् ॥ मुसलाहतमस्तिष्कोविरेजेरक्तधारया १९ गिरिर्यथागैरिकयाप्रहारंनानुचिन्तयन् ॥ पुनरन्यंसमुत्क्षिप्य कृत्वानिष्पत्रमोजसा २० तेनाहनत् सुसंक्रुद्धस्तंबलःशतधाऽच्छिनत् ॥ ततोऽन्येनरुषाजघ्नेतंचापिशतधाऽच्छिनत् २१ एवंयुद्ध्यन् भगवताभग्नेभग्नेपुनःपुनः ॥ आकृष्यसर्वतोवृक्षान्निर्वृक्ष मकरोद्वनम् २२ततोऽमुञ्चच्छिलावर्षंबलस्योपर्यमर्षितः ॥ तत्सर्वंचूर्णयामासलीलयामुसलायुधः२३ सबाहूतालसङ्काशौ मुष्टीकृत्यकपीश्वरः ॥ आसाद्यरोहिणीपुत्रंताभ्यांवक्षस्यरूरुजत् २४यादवेन्द्रोऽपितंदोर्भ्यांत्यक्त्वामुसललाङ्गले॥जत्रावभ्यर्दयत्क्रुद्धःसोऽपतद्रुधिरंवमन् २५ चकम्पेतेनपततासटङ्कःसवनस्पतिः ॥पर्वतःकुरुशार्दूल वायुनानौरिवाम्भसि२६ जयशब्दोनमःशब्दःसाधुसाध्वितिचाम्बरे॥सुरसिद्धमुनीन्द्राणामासीत्कुसुमवर्षिणाम्२७एवंनिहत्यद्विविदंजगद्व्यतिकरावहम्॥ संस्तूयमानोभगवाञ्जनैःस्वपुरमाविशत् २८ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेद्विविदवधोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः६७॥

वृक्षन कूं उखारिकै नहीं रह्यो है एकहू वृक्ष जामें ऐसो या वनकूं करत भयो २२ ताके पीछे भई है असहनता जाके ऐसो जो बन्दर है सो बलदेवजी के ऊपर पत्थर बरसावत भयो मूसल है हथियार जिनको ऐसे बलदेवजी बन्दरने पत्थर जे बरसाये तिनें लीला करिकै चूर्ण करतभये २३ बन्दरनको ईश्वर जो वह बन्दर है सो ताड़वृक्ष की बराबरि बड़ी भुजाईं तिनकी मूठी बाधिकै रोहिणीपुत्र जो बलदेवजी हैं तिनके पास जायकै छातीमें मुष्टि मारतभयो २४ यादवनके इन्द्र जो बलदेवजी हैं सो भी हल मूसलकूं त्यागिकै क्रोध करिकै भुजानतें बन्दरके कण्ठकूं मर्दन करतभये ता समय वह बन्दर रुधिरको वमनकरि गिरिकै मरतभयो २५ हे कौरवनमें सिंहरूप राजा परीक्षित्! गिर्यो जो बन्दर है तासूं झरनानसहित और वृक्षनसहित जो पर्वत है सो कांपतभये जैसे जलमें पवनसूं नौका कांपै या प्रकार २६ आकाशमार्ग में देवता सिद्ध मुनीश्वर हैं ते फूलनकी वर्षा करत जयशब्द और नमःशब्द और भले भले शब्द करतभये २७ या प्रकार जगत् को नाश करनवारो जो बन्दर

⊛ मस्ति ८ मस्तिकाचयगौरिप १ ॥

है ताय मारिकै जननने स्तुति जिनकी करी ऐसे भगवान् वलदेवजी द्वारकापुरीमें आवत भये २८ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेद्विविदवधोनामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

(अष्टषष्टितमेसाम्बेनिरुद्धेकौरवैर्युधि ॥ तद्विमोक्षायरामेणगजाह्वयविकर्षणम् १ अडसठवें अध्यायमें कौरवोंने साम्बको संग्राममें बाँध लियो तब उनके छुड़ाने के लिये बलदेवजीने हस्तिनापुरको खींचोहै १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! युद्धमें जीतनवारो जो जाम्बवतीको पुत्र साम्बहै सो दुर्योधनकी पुत्री जो लक्ष्मणाहै ताय स्वयंवर में तें हरिकै लावतभयो १ तासमय सम्पूर्ण कौरव क्रोधकरिकै बोलतभये यह बालक बडो अनम्रहै हमारो अनादर करिकै नहीं है काम जाके ऐसी हमारी कन्याकूं बलतें हरतभयो २ अनम्र जो यह बालकहै ताय बाँधिलेउ यादव हमारो कहा करेंगे जे यादव हमारी प्रसन्नतासूं वृद्धिकूं प्राप्तभये हैं हमारी दीनीभई पृथ्वीको भोग करे हैं ३ या बालक कूं बँध्यो सुनिकै जो यादव यहा आवेंगे तौ दूरि भयो है गर्व जिनको

श्रीशुकउवाच ॥ दुर्योधनसुतांराजल्लँक्ष्मणांसमितिंजयः ॥ स्वयंवरस्थामहरत् साम्बोजाम्बवतीसुतः १ कौरवाःकुपिताऊचुर्दुर्विनीतोऽयमर्भकः ॥ कदर्थीकृत्यनःकन्यामकामामहरद्बलात २ बध्नीतेमंदुर्विनीतं किंकरिष्यन्तिवृष्णयः ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितां दत्तांनोभुञ्जतेमहीम् ३ निगृहीतंसुतंश्रुत्वायद्येष्यन्तीहवृष्णयः ॥ भग्नदर्पाःशमंयान्ति प्राणाइवसुसंयताः ४ इतिकर्णःशलोभूरिर्यज्ञकेतुःसुयोधनः ॥ साम्बमारेभिरेबद्धुं कुरुवृद्धानुमोदिताः ५ दृष्ट्वाऽनुधावतः साम्बोधार्त्तराष्ट्रान्महारथः ॥ प्रगृह्यरुचिरंचापं तस्थौसिंहइवैकलः ६ तंतेजिघृक्षवःक्रुद्धास्तिष्ठतिष्ठेतिभाषिणः ॥ आसाद्यधन्विनोबाणैःकर्णाग्रण्यःसमाकिरन् ७ सोऽपविद्धःकुरुश्रेष्ठ कुरुभिर्यदुनन्दनः ॥ नामृष्यत्तदचिन्त्यार्भः*सिंहःक्षुद्रमृगैरिव ८ विस्फूर्ज्यरुचिरंचापं सर्वान्विव्याधसायकैः ॥ कर्णादीन्षड्रथान्वीरस्तावद्भिर्युगपत्पृथक् ९ चतुर्भिश्चतुरोवाहानेकैकेनचसारथीन् ॥ रथिनश्चमहेष्वासांस्तस्यतत्तेऽभ्यपूजयन् १० तन्तुतेविरथंचक्रुश्चत्वारश्च

ऐसे प्राणायाम करे तें जैसे इन्द्रिय शान्त होती हैं ऐसे शान्तिकूं पावेंगे ४ याप्रकार भीष्मजीने अनुमोदन जिनकूं करयो ऐसे कर्ण शल भूरि यज्ञकेतु दुर्योधन भीष्म सहित ये छः बाँधिवेको उपाय करतभये ५ महारथी जो साम्ब है सो पीछे दौरे चले आवें जे छः धृतराष्ट्रके अनुयायी तिनें देखिकै सुन्दर धनुष् हाथमें लैके सिंहकी तुल्य अकेलोही ठाढो होत भयो ६ कर्ण है मुख्य जिनमें ऐसे धनुषके धारण करनवारे छः हैं ते क्रोधमें भरिकै साम्बके पकरिवेके लिये ठाढोरहु ठाढोरहु ऐसे कहत पास आय कै बाणन कूं चलावत भये ७ हे राजन् परीक्षित् ! यादवन कूं आनन्द के देनवारे अचिन्त्य भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को पुत्र जो साम्ब है ताके कौरवनने बाण मारे तब क्षुद्र जानवरन के पराक्रम कूं सिंह जैसे नहीं सहारे है ऐसे नहीं सहारत भयो ८ वीर जो साम्ब है सो मनोहर धनुषकूं चढाय कै कर्णादिक जे छः रथी हैं तिनें छः बाणन करिकै एक सङ्ग वेधतभयो ९ चार बाण करिकै रथके चारों घोड़ान कूं और एक एक बाण करिकै रथवानन कूं वेधन भयो बड़े बड़े हैं धनुष् जिनके ऐसे जे छः रथी हैं ते साम्ब के पराक्रमकी प्रशंसा करतभये १० तिन कौरवनमें ते चारजने तौ चारों घोडानकू मारत भये और एकजनो रथवानकूं मारतभयो एक धनुषकूं तोरत

* अचिन्त्यस्यभगवतोऽर्भोऽर्भक अचिन्त्यश्चासावर्भश्चेति वा ५ ॥

भयो या प्रकार सब मिलिकै साम्ब कूं विरथ करत भये ११ कौरव हैं ते कष्ट सूं युद्ध में बालक साम्बकूं विरथ करिकै बांधिकै अपनी कन्याहै ताय लैके जीतिकै अपने पुरमें जात भये १२ हे राजन् परीक्षित्! नारदके कहे ते साम्ब कूं बँध्यो सुनिकै भयो है क्रोध जिनके ऐसे यादव राजा उग्रसेन के कहे तें कौरवन सूं लड़िबे को उद्यम करत भये १३ कलियुग के पापन के नाश करनवारे जो बलदेवजी हैं सो कौरव यादवन को परस्पर विरोध न होइ यह विचारिकै कवच जिनने पहिरे हथियार बांधे जे यादव हैं तिनें समझाय कै १४ सूर्य की तुल्य है कान्ति जाकी ऐसे रथ में बैठि कै ब्राह्मणन कूं सङ्ग लिये कुलमें वृद्ध हैं तिनकूं सङ्ग लैके जैसे ग्रहणसहित चन्द्रमा गमन करे है ऐसे हस्तिनापुरकूं जात भये १५ बलदेवजी हस्तिनापुर में जाय कै वस्ती के बाहर बगीचा में ठहरि कै कौरवनको अभिप्राय जानिवे के लिये धृतराष्ट्र के पास उद्धवजी कूं भेजत भये १६ उद्धवजी अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्र कूं प्रणाम करिकै भीष्मजी कूं और बाह्लीक सहित द्रोणाचार्य्य कूं

तुरोहयान्॥ एकस्तुसारथिंजघ्ने चिच्छेदान्यःशरासनम् ११ तम्बद्ध्वाविरथीकृत्यकृच्छ्रेणकुरवोयुधि॥ कुमारंस्वस्यकन्याञ्च स्वपुरंजयिनोऽविशन् १२तच्छ्रुत्वानारदोक्तेन राजन्सञ्जातमन्यवः॥कुरून्प्रत्युद्यमञ्चक्रुरुग्रसेनप्रचोदिताः१३सान्त्वयित्वातुतान्रामः सन्नद्धान्वृष्णिपुङ्गवान्॥ नैच्छत्कुरूणांवृष्णीनां कलिंकलिमलापहः १४ जगामहास्तिनपुरं रथेनाऽऽदित्यवर्चसा॥ ब्राह्मणैःकुलवृद्धैश्च वृतश्चन्द्रइवग्रहैः १५ गत्वागजाह्वयंरामो बाह्योपवनमास्थितः॥ उद्धवंप्रेषयामास धृतराष्ट्रंबुभुत्सया। १६ सोऽभिवन्द्याम्बिकापुत्रं भीष्मंद्रोणञ्चबाह्लिकम्॥दुर्योधनञ्चविधिवद्राममागतमब्रवीत् १७ तेऽतिप्रीतास्तमाकर्ण्य प्राप्तंरामंसुहृत्तमम्॥ तमर्चयित्वाऽभिययुःसर्वेमङ्गलपाणयः १८ तंसङ्गम्ययथान्यायं गामर्घ्यंन्यवेदयन्॥तेषांयेतत्प्रभावज्ञाः प्रणेमुःशिरसाबलम् १९ बन्धून्कुशलिनःश्रुत्वा पृष्ट्वाशिवमनामयम् ॥ परस्परमथोरामोबभाषेऽविक्लवंवचः २० उग्रसेनःक्षितीशेशो यद्वआज्ञापयत्प्रभुः॥ तदव्यग्रधियःश्रुत्वा कुरुध्वमाविलम्बितम् २१ यद्यूयं⊛बहवस्त्वेकंजित्वाऽधर्मेणधार्मिकम्॥ अबध्नीताथतन्मृष्ये†बन्धूनामैक्यकाम्यया २२वीर्यशौर्यबलोन्नद्धमात्मशक्तिसमंवचः॥कुरू

दुर्योधन कूं विधिपूर्वक प्रणाम करिकै बलदेवजी आये हैं यह कहत भये १७ बड़े हितकारी बलदेवजी हैं तिनकूं आये सुनिकै अतिप्रसन्न भये ऐसे जे सम्पूर्ण कौरव हैं ते उद्धवजी को पूजन करिकै भेंटन कू हाथ में लैके बलदेवजी के सम्मुख जातभये १८ ते कौरव रीतिपूर्वक बलदेवजीतें मिलिकै गौ और अर्घ्य है ताय देत भये और तिन कौरवन में जे बलदेवजी के प्रभावकूं जाने हैं ते शिर नवाइ कै प्रणाम करत भये १९ समस्त बन्धुन की कुशल श्रवण करि आपुस में कुशल क्षेम पूंछिकै पीछे जाके श्रवण करे तें व्याकुलता होइ ऐसो वचन बलदेवजी कहत भये २० सामर्थ्यवान् पृथ्वी के ईश्वर राजा उग्रसेनने जो आज्ञा तुमकूं करी है ताय एकाग्रबुद्धिसूं श्रवणकरिकै शीघ्रकरो २१ अब राजा उग्रसेनको वचन कहे हैं बहुत जो तुमही तिनने अधर्म करिकै धर्मात्मा बालक कूं बांधि लियो यह जो तुम्हारो अपराध है सो बन्धुनकी आपुस में ऐक्यता रहै विरोध न होय याकारण हमने सहार लियो अब तुम शीघ्र साम्बकूं लायकै अर्पण करो २२ पराक्रम शूरता बलको

⊛ यद्यूयमित्युग्रसेनवाक्यम् ७॥ † मृष्ये सहे अथाशु तमानीय समर्पयतेति शेषः ७॥

भयो और अपनी सामर्थ्य के समान ऐसो जो बलदेवजी को वचन है ताय श्रवण करिकै कोप करिकै कौरव बोलतभये २३ अहो बड़े आश्चर्य की बातहै देखो काल की गति बड़ी दुरत्यय है पावके पहिरिवेकी जूती मुकुट करिकै सेवित जो शिरहै तापै चढ्यो चाहै है २४ इनके यहातें जब तें पृथाकूं व्याहिकै लाये तबतें यादवनतें सम्बन्ध भयो है हमारे सग पलंगपै सोवै हैं संग बैठहैं संग भोजन करे हैं यादव हमने अपनी बराबरि के करिलिये और हमनेही इनकूं राज्यासनदियो है २५ चमर पङ्खा शङ्ख श्वेतछत्र किरीट आसन शय्या ये वस्तु हमारी दीनी यादव भोगकरे हैं २६ जैसे सर्पनकू जो दूध पिवावै ताहीकूं काटे हैं ऐसे देनवारेनकूं उलटे भये ऐसे यादवन कू राज्यकी वस्तु छत्र चामरादिक हैं तिनके देवेतूं पुष्टभये हमारी प्रसन्नता सू बढे अब हमही कूं आज्ञा करतहैं बडे कष्टकी बातहै इनकू लाजहू न आई ऐसे यादव बड़े निर्लज्जहैं २७ भीष्म द्रोण अर्जुन इत्यादि कौरवनके दिये विना वस्तु कूं इन्द्रहू कैसे ग्रहण करै जैसे भेड़ सिंह के मुख

वोबलदेवस्य निशम्योचुःप्रकोपिताः २३ अहोमहच्चित्रमिदं कालगत्यादुरत्यया ॥ आरुरुक्षत्युपानद्वै शिरोमुकुटसेवितम् २४ एतेयौनेनसम्बद्धाःसहश य्यासनाशनाः ॥ वृष्णयस्तुल्यतांनीता अस्मद्दत्तनृपासनाः २५ चामरव्यजनेशङ्खमातपत्रञ्चपाण्डुरम् ॥ किरीटमासनशय्यां भुञ्जन्त्यस्मदुपेक्षया २६ अलंयदूनानरदेवलाञ्छनैर्दातुःप्रतीपैःफणिनामिवामृतम् ॥ येऽस्मत्प्रसादोपचितादियादवाआज्ञापयन्त्यद्यगतत्रपाहत २७ कथमिन्द्रोऽपिकुरुभिर्भीष्मद्रो णार्जुनादिभिः ॥ अदत्तमवरुन्धीत सिंहग्रस्तमिवोरणः २८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ जन्मबन्धुश्रियोन्नद्धमदास्तेभरतर्षभ ॥ आश्राव्यरामंदुर्वाच्यमसभ्याः पुरमाविशन् २९ दृष्ट्वाकुरूणान्दौःशील्यं श्रुत्वाऽवाच्यानिचाच्युतः ॥ अवोचत्कोपसंरब्धोदुष्प्रेक्ष्यःप्रहसन्मुहुः ३० नूनंनानामदोन्नद्धाःशान्तिंनेच्छन्त्य साधवः ॥ तेषांहिप्रशमोदण्डः पशूनांलगुडोयथा ३१ अहोयदून्सुसंरब्धान्कृष्णञ्चकुपितंशनैः ॥ सान्त्वयित्वाऽहमेतेषां शममिच्छन्निहागतः ३२ तइमे मन्दमतयः कलहाभिरताःखलाः ॥ तंमामवज्ञायमुहुर्दुर्भाषान्मानिनोऽब्रुवन् ३३ नोग्रसेनःकिलविभुर्भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ॥ शक्रादयोलोकपालायस्यादेशा

की वस्तुकूं कैसे ग्रहण करि सकैहै २८ अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे भरतवंशीनमें श्रेष्ठ राजा परीक्षित् ! श्रेष्ठ कुलमें जन्म बन्धु धन इनसूं बढे हैं मद जिनके ऐसे जे असाधु कौरव हैं ते कहिवे योग्य नहीं ऐसे वचन बलदेवजीकूं सुनायकै पुरमें जातभये २९ कौरवनकी दुष्टता देखि और कहिवे योग्य नहीं ऐसे वचन श्रवण करिकै क्रोधमें भरिकै देखे न जायँ ऐसे बलदेवजी वारंवार हँसिकै बोलतभये ३० नानाप्रकारके मदहैं तिनसूं मर्य्यादा जिनने त्यागिदीनी ऐसे जे असाधु कौरवहैं ते निश्चय शान्ति नहीं चाहे हैं इन दुष्टनके शान्ति करिवे कूं दण्डही है जैसे पशु लट्ठ मारेतेही समझे हैं याप्रकार ३१ बड़ो है क्रोध जिनके ऐसे यादवनकूं हौले हौले समझायकै और क्रोधमें भरे जे श्रीकृष्ण हैं तिनकूं समझायकै इन कौरवनको मिलाप करायवेके निमित्त मैं यहाँ आयो हूं ३२ परन्च मन्द हैं बुद्धि जिनकी कलहप्रिय अभिमानी कौरवहैं ते मेरी अवज्ञा करिकै निन्दितवचन कहत भये ३३ भोज वृष्णि अन्धक ये यादवनके गोत्रहैं तिनके ईश्वर इन्द्रते आदिलैके बड़े

बडे लोकपाल देवता जिनकी आज्ञा वर्त्तें हैं सो कहा कौरवनकूं आज्ञा करिवेकू समर्थ नहीं हैं ३४ जिन श्रीकृष्णचन्द्रने इन्द्रकी सभा पावनसूं खूंदी और देवतानको कल्पवृक्ष लायकै अपने महलके बगीचामें लगायो ते कहा योग्य नहीं हैं ३५ ब्रह्मादिकन की ईश्वरी जो लक्ष्मी है सो साक्षात् जिनके चरणारविन्दको सेवनकरै वे श्रीकृष्णचन्द्र लक्ष्मी के पति सो कहा राजानकी वस्तुनके योग्य नहीं हैं ३६ जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणारविन्दकी रजहै सो समस्त लोकनके पालन करनवारे जे ब्रह्मादिक तिनके मुकुटन करिके युक्त जे माथे हैं तिनपै धारण करी है और सेवन कर्यो जो गङ्गातीर्थ ताहूकू पवित्र करनवारो है जिनके अंशके अंश जे ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी हैं ते और हम सम्पूर्ण बहुत दिन पर्यन्त चरणारविन्द की रेणुकूं माथे पै धारण करे हैं इन श्रीकृष्णचन्द्र कूं राज्यासन कहा पदार्थ है ३७ कौरवनने जो पृथ्वी को टूकदियो है ताय यादवभोगे हैं और हम पांवकी जूती ठहरे कौरव शिर ठहरे ३८ अहो ऐश्वर्य्य करिके मतवारे की तुल्य अभिमानी जे कौरव हैं

नुवर्त्तिनः ३४ सुधर्म्माऽऽक्रम्यतेयेन पारिजातोऽमराङ्घ्रिपः ॥ आनीयभुज्यतेसोऽसौ नकिलाध्यासनार्हणः ३५ यस्यपादयुगंसाक्षाच्छ्रीरुपास्तेऽखिलेश्वरी ॥ सनार्हतिकिलश्रीशोनरदेवपरिच्छदान् ३६ यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजोऽखिललोकपालैर्मौल्युत्तमैर्धृतमुपासिततीर्थतीर्थम् ॥ ब्रह्माभवोऽहमपियस्यकलाःकलायाःश्रीश्चोद्वहेमचिरमस्यनृपासनंक्व ३७ भुञ्जतेकुरुभिर्दत्तंभूखण्डंवृष्णयःकिल ॥ उपानहःकिलवयं स्वयंतुकुरवःशिरः ३८ अहोऐश्वर्य्यमत्तानांमत्तानामिवमानिनाम् ॥ असम्बद्धागिरोरूक्षाःकःसहेतानुशासिता ३९ अद्यनिष्कौरवींपृथ्वीं करिष्यामीत्यमर्षितः ॥ गृहीत्वाहलमुत्तस्थौ दहन्निवजगत्त्रयम् ४० लाङ्गलाग्रेण†नगरमुद्विदार्य्यगजाह्वयम् ॥ विचकर्षसगङ्गायांप्रहरिष्यन्नमर्षितः ४१ जलयानमिवाघूर्णं गङ्गायांनगरंपतत् ॥ आकृष्यमाणमालोक्य कौरवाजातसम्भ्रमाः ४२ तमेवशरणंजग्मुः सकुटुम्बाजिजीविषवः⊛ ॥ सलक्ष्मणंपुरस्कृत्य साम्बंप्राञ्जलयःप्रभुम् ४३ रामरामाखिलाधार प्रभावंनविदामते ॥ मूढानांनःकुबुद्धीनां क्षन्तुमर्हस्यतिक्रमम् ४४ स्थित्युत्पत्त्यप्ययानांत्वमेकोहेतुर्निराश्रयः ॥ लोकान्क्रीडनकानीश क्रीडतस्तेवदन्तिहि ४५ त्वमेवमूर्ध्नी

तिनके कर्कश टेढे वचनकूं सुनिके दण्डको देनवारो होयकै ऐसो कौन पुरुषहै जो सहिसकैगो ३९ अब इन कौरवन करिकै रहित पृथ्वी कूं करिदेउंगो या प्रकार भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलकू ग्रहण करिकै मानों त्रिलोकी कूं भस्म करिदेइंगे ऐसे क्रोध करिकै ठाढे होतभये ४० भई है असहनता जिनके ऐसे बलदेवजी हलके अग्रभाग ते हस्तिनापुर कूं उखारिकै नाश करिवे के लिये गङ्गामें खैंचत भये ४१ नौकाकी तुल्य भ्रमण करत गङ्गाजी में गिरयो जाय ऐसे नगरकूं देखिकै भयो है भ्रम जिनके ऐसे कौरव लक्ष्मणासहित जो सांब है ताय आगे करिकै हाथ जोरिकै कुटुम्बसहित जीवनकी इच्छा करिकै समर्थ जे बलदेवजी हैं तिनकी शरण जातभये ४२।४३ हे राम ! हे राम ! हे सबके आश्रय ! तुम्हारे प्रभावकूं नहीं जानें जे हम मूढ कुबुद्धि हैं तिनके ऊपर तुम क्षमा करिवे योग्यहौ ४४ स्थिति उत्पत्ति नाश इनके तुम एक निराश्रय कारणहौ हे ईश ! क्रीडा करो जो तुमहौ तिन तुम्हारे लोकनकूं खिलौना कहे हैं ४५ हे अनन्त ! हे सहस्रमूर्द्धन् अर्थात् हजार

† लाङ्गलाग्रेण दलितं प्राकारमूले नितान्तं उद्विदार्य्य उत्पाट्य ५ ॥ ⊛ जिजीविषवः जीवितुमिच्छवः ६ ॥

हैं मस्तक जिनके ! ऐसे जे तुमहौ सो या पृथ्वीमण्डल कूं लीला करिकै मस्तकपै धारण करो हौ अन्त समय समस्त विश्वकूं उदरमें धरिकै शेषशय्या पै शयनकरो हौ सो अद्वितीय ब्रह्म तुमहौ ४६ हे भगवन् ! सत्त्वगुण कूं धारण करो जो तुम हौ तिनको कोप सबकी शिक्षा देवेके लिये है द्वेप करिके मत्सरता करिकै नहीं है हे भगवन् ! विश्वकी स्थितिके निमित्त और पालन करिवे के लिये कोप को तात्पर्य्य है ४७ हे समस्त प्राणीन के आत्मा ! हे सम्पूर्ण शक्ति के धारण करनवारे ! तुमकूं नमस्कारहै हे विश्व के धारण करनवारे ! तुम्हारी हम शरण आये हैं ४८ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कांपे हैं स्थान जिनके उद्वेगयुक्त शरण आये ऐसे जे कौरवहैं तिनने प्रसन्नकरे तब बलदेवजी प्रसन्न होयकै मति भय करो या प्रकार अभयदान करतभये ४६ राजा दुर्य्योधन अपनी कन्याके दाइजे में साठि साठि वर्ष की अवस्था के बारह हजार हाथी और बारह हजार घोड़ा देतभयो ५० सुवर्ण को साज जिनपै पर्यो सूर्य्य कैसो है चमचमाहट जिनको ऐसे छः हजार रथ देत

दमनन्तलीलया भूमण्डलंबिभर्षिसहस्रमूर्द्धन् ॥ अन्तेचयःस्वात्मनिरुद्धविश्वःशेषेऽद्वितीयःपरिशिष्यमाणः ४६ कोप✽स्तेऽखिलशिक्षार्थं नद्वेषान्नच मत्सरात् ॥ बिभ्रतोभगवन्सत्त्वंस्थितिपालनतत्परः ४७ नमस्तेसर्व्वभूतात्मन् सर्व्वशक्तिधराव्यय ॥ विश्वकर्म्मन्नमस्तेऽस्तु त्वां†वयंशरणंगताः ४८ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंप्रपन्नैःसंविग्नैर्वेपमानायनैर्बलः ॥ प्रसादितःसुप्रसन्नोमाभैष्टेत्यभयंददौ ४६ दुर्य्योधनःपारिबर्हंकुञ्जरान्षष्टिहायनान् ॥ ददौचद्वादश शतान्ययुतानितुरङ्गमान् ५० रथानांषट्सहस्राणिरौक्माणांसूर्य्यवर्चसाम् ॥ दासीनांनिष्ककण्ठीनांसहस्रंदुहितृवत्सलः ५१ प्रतिगृह्यतुतत्सर्व्वं भगवान् सात्वतर्षभः ॥ ससुतःसस्नुषःप्रागात्सुहृद्भिरभिनन्दितः ५२ ततःप्रविष्टःस्वपुरंहलायुधः समेत्यबन्धूननुरक्तचेतसः ॥ शशंससर्व्वंयदुपुङ्गवानां मध्येसभायां कुरुपुस्वचेष्टितम् ५३ अद्यापिचपुरंह्येतत्सूचयद्रामविक्रमम् ॥ समुन्नतंदाक्षिणतोगङ्गायामनुदृश्यते ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धे उत्तरार्द्धेहास्तिनपुरकर्षणरूपसङ्कर्षणविजयोनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥ ✽ ॥ ✽ ॥ ✽ ॥

भयो और पुत्रीपै है प्यार जाको ऐसो दुर्य्योधन धुकधुकी हैं कण्ठमें जिनके ऐसी हजारदासी देत भयो ५१ यादवन में श्रेष्ठ जो भगवान् बलदेव हैं सो सम्पूर्ण दाइजे कूं ग्रहण करिकै बहू बेटाकू सङ्ग लैके कौरवन को अभिवादन ग्रहण करिकै आवत भये ५२ कौरवन ने विदा करे ता पीछे हल है हथियार जिनको ऐसे बलदेवजी अपने पुरमें आय कै स्नेह भरे हैं चित्त जिनके ऐसे बन्धुन सूं मिलि कै उत्तम यादवन की सभा में बैठि कै कौरवन तें जे जे बातें करी ते ते सब कहतभये ५३ अब पर्य्यन्त हस्तिनापुर बलदेवजी के पराक्रम कूं सूचन करत दक्षिणदिशा की ओर तें गङ्गाजी में झुंक्यो दिखाई देत है ५४ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेसङ्कर्षणविजयोनामाऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥ ✽ ॥ ✽ ॥ ✽ ॥

✽ कोपइतिपाठान्तरेसम्बोधनम् १ ॥ †त्वामितिसम्बोधनम् २ ॥

(एकोनसप्ततितमेऽध्याये इत्थं प्रतिमन्दिरम् ॥ कृष्णं स्यनारदोऽद्राक्षीद्विस्मितोऽगात्ततः स्तुवन् १ उनहत्तरवें अध्याय में नारदजी कृष्णजी को प्रत्येक मन्दिर की गार्हस्थ्य देखकर विस्मययुक्त होकर स्तुति करते हुये चले जाते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! नरकासुर कूं मार्यो सुनिकै तैसेही अकेले श्रीकृष्णचन्द्र ने बहुत स्त्री व्याही यह बात सुनिकै देखिबे की इच्छा जिनके भई ऐसे नारदजी द्वारकापुरी में आवत भये १ कैसे नारद हैं यह बड़ो आश्चर्य है कि एक देह तें एक संग न्यारे न्यारे घरन में सोलहहजार स्त्रीन कूं एक संग व्याहत भये २ या प्रकार उत्कण्ठा जिनके भई हैं अब द्वारकापुरी को वर्णन करे हैं फूले जे उद्यान अर्थात् विना लगाये वन और उपवन अर्थात् बस्ती के समीप लगाये भये बगीचा तिनमें पक्षी भौंरा जो बोले है तिनको शोर जामें होयरह्यो है ३ फूले जे इन्दीवर अम्भोज कह्लार कुमुद उत्पल ये कमलन के भेद हैं तिन करिकै व्याप्त ऐसे जे सरोवर हैं तिनमें उच्चस्वर करिकै हंस सारस जे बोले हैं तिनको शोर

श्रीशुक उवाच ॥ नरकं निहतं श्रुत्वा तथोद्वाहं च योषिताम् ॥ कृष्णेनैकेन बह्वीनां तद्दिदृक्षुः स्म नारदः १ चित्रं बतैतदेकेन वपुषा युगपत्पृथक् ॥ गृहेषु द्व्यष्टसाहस्रं स्त्रिय एक उदावहत् २ इत्युत्सुको द्वारवतीं देवर्षिर्द्रष्टुमागमत् ॥ पुष्पितोपवनारामद्विजालिकुलनादिताम् ३ उत्फुल्लेन्दीवराम्भोजकह्लारकुमुदोत्पलैः ॥ छुरितेषु सरस्सूच्चैः कूजितां हंससारसैः ४ प्रासादलक्षैर्नवभिर्जुष्टां स्फाटिकराजतैः ॥ महामरकतप्रख्यैः स्वर्णरत्नपरिच्छदैः ५ विभक्तरथ्यापथचत्वरापणैः शालासभाभी रुचिरां सुरालयैः ॥ संसिक्तमार्गाङ्गणवीथिदेहलीं पतत्पताकाध्वजवारितातपाम् ६ तस्यामन्तःपुरं श्रीमदर्चितं सर्वधिष्ण्यपैः ॥ हरेः स्वकौशलं यत्र त्वष्ट्रा कार्त्स्न्येन दर्शितम् ७ तत्र षोडशभिः सद्म सहस्रैः समलङ्कृतम् ॥ विवेशैकतमं शौरेः पत्नीनां भवनं महत् ८ विष्टब्धं विद्रुमस्तम्भैर्वैदूर्यफलकोत्तमैः ॥ इन्द्रनीलमयैः कुड्यैर्जगत्या चाहतत्विषा ९ वितानैर्निर्मितैस्त्वष्ट्रा मुक्तादामविलम्बिभिः ॥ दान्तैरासनपर्यङ्कैर्मण्युत्तमपरिष्कृतैः १० दासीभि

जामें होयरह्यो है ४ स्फटिकमणि चांदी और महामरकतमणिन करिकै प्रकाशमान सुवर्ण की रत्नन की सामग्री जिनमें धरी ऐसे नवलाख जामें महल बने हैं ५ न्यारे न्यारे बने जे राजमार्ग और गली कूचा बाजार तिन करिकै और शाला सभा देवतानके मन्दिर बने हैं तिन करिकै शोभायमान द्वारका है छिरकाव जिनमें होयरह्यो ऐसे मार्ग आँगन गली देहरी जामें बनी हैं छोटी छोटी पताका जिनमें फहरायँ ऐसी बड़ी बड़ी ध्वजा हैं तिनसूं धूप जिनमें नहीं आवै है ६ या द्वारकापुरीमें सम्पूर्ण लोकपाल जाकी पूजा करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को अन्तःपुर है ता अन्तःपुरकी रचना में विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण अपनी चतुराई दिखाई है ७ सोलहहजार महलन करिकै शोभायमान अन्तःपुर है तामें श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके जे भवन हैं तिनमें तें एक भवन में नारदजी जातभये ८ कैसे भवन में गये हैं ताको वर्णन करे हैं मूंगान के खम्भ जामें लगे हैं और वैदूर्य मणिके फलकोत्तम अर्थात् खम्भघरन की चौकी बनी हैं इन्द्रनीलमणि की भीति बनी हैं नहीं गई है शोभा जाकी ऐसी जहाँ भूमि बनी है ९ मोतन की झालरि जिनमें लगी ऐसे विश्वकर्मा ने बनाये जे चँदोवा हैं तिन करिकै यह भवन शोभायमान है मणि जिनमें लगी तिनसूं शोभायमान ऐसे हाथी-

दाँत के चौकी और पलंग बिछे हैं तिन करिकै शोभायमान है १० धुकधुकी जिनके कण्ठ में सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे ऐसी जे दासी हैं तिन करिकै शोभायमान है जामा पगड़ी पटुका मणिन के कुण्डल पहिरे ऐसे जे पुरुष हैं तिन करिकै शोभायमान है ११ हे राजन् परीक्षित्! रत्नन के दीपन की जो पंक्ति लगि रही हैं तिनके प्रकाश करिके अन्धकार जा भवन में तें दूरि भयो और वा भवन के भीतर अगर की जो धूप दीनी ताको धुआँ जाली झरोखान में होय के निकसे ताय देखि कैं मानों बादर आये हैं यह जानि कैं मोर शब्द कूं करिकै भवन के चित्र विचित्र छज्जेन के ऊपर नृत्य करें हैं १२ ता महल में अपनी बराबरि के गुण रूप अवस्था गहने जिनके ऐसी हजार दासीनकूं सङ्ग लैके सर्व्वकाल सुवर्णकी डांडी को चमर पखा लैके यादवन के पति जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ऊपर ढोरे ऐसी जो श्री रुक्मिणी हैं ता सहित श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन नारदजी करत भये १३ समस्त धर्म्म के जाननवारेन में श्रेष्ठ जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ते नारदजी कूं देखि कै रुक्मिणी सहित

निष्ककण्ठीभिः सुवासोभिरलङ्कृतम् ॥ पुम्भिःसकञ्चुकोष्णीषसुवस्त्रमणिकुण्डलैः ११ रत्नप्रदीपनिकरद्युतिभिर्निरस्तध्वान्तंविचित्रवलभीषुशिखण्डिनो ऽङ्ग ॥ नृत्यन्तियत्रविहितागुरुधूपमक्षैर्निर्यान्तमीक्ष्यघनबुद्धयउन्नदन्तः १२ तस्मिन्समानगुणरूपवयःसुवेषदासीसहस्रयुतयाऽनुसवंगृहिण्या ॥ विप्रोद दर्शचमरव्यजनेनरुक्मदण्डेनसात्वतपतिंपरिवीजयन्त्या १३ तंसन्निरीक्ष्यभगवान्सहसोत्थितः श्रीपर्य्यङ्कतःसकलधर्म्मभृतांवरिष्ठः ॥ आनम्यपादयुग लंशिरसाकिरीटजुष्टेनसाञ्जलिरवीविशदासनेस्वे १४ तस्यावनिज्यचरणौतदपःस्वमूर्द्ध्ना बिभ्रज्जगद्गुरुतरोऽपिसतांपतिर्हि ॥ ब्रह्मण्यदेवइतियद्गुणना मयुक्तं तस्यैवयच्चरणशौचमशेषतीर्थम् १५ सम्पूज्यदेवऋषिवर्य्यमृषिःपुराणोनारायणोनरसखोविधिनोदितेन ॥ वाण्याऽभिभाष्यमितयाऽमृतमिष्टयातं प्राहप्रभोभगवतेकरवामहेकिम् १६ ॥ नारदउवाच ॥ नैवाऽद्भुतंत्वयिविभोऽखिललोकनाथमैत्रीजनेषु सकलेषुदमःखलानाम् ॥ निःश्रेयसायहिजगत्स्थिति रक्षणाभ्यां स्वैरावतारउरुगायविदामसुष्ठु १७ दृष्टंतवाङ्घ्रियुगलंजनतापवर्गंब्रह्मादिभिर्हृदिविचिन्त्यमगाधबोधैः ॥ संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बंध्यायंश्च

पलंगपै तें शीघ्र उठिकै किरीटयुक्त शोभायमान जो शिर है तासूं चरणन में नमस्कार करिकै हाथ जोरिकै अपने आसनपै बैठतभये १४ जगत्के अतिशय करिकै गुरु साधुनके रक्षक ऐसे श्रीकृष्ण-चन्द्र हैं सो नारदजी के चरण धोइके चरणारविन्द को धोवन जल है ताय अपने माथेपै चढ़ावत भये जिन श्रीकृष्णचन्द्र को चरणोदक गङ्गा सबकूं पवित्र करै है तिनमें ब्रह्मण्यदेव यह गुणयुक्त नाम ज्यों को त्यों बनो है १५ नर हैं सखा जिनको ऐसे ऋषिन में श्रेष्ठ नारायण नारदजी हैं तिनको शास्त्रोक्तविधिपूर्व्वक पूजन करिकै अमृत की तुल्य प्रमाणीभूत मधुरवाणी करिकै सम्भाषण करतभये कि नारदजी आप आये बड़ो मङ्गलभयो हे समर्थ भगवान्! हम तुम्हारो कहा पूजन करैं यह कहतभये १६ अब नारदजी कहै हैं हे समर्थ! सब जीवन ते मित्रता करौ हौ और दुष्टन कूं दण्ड देत हौ ऐसे समस्त लोकनके नाथ जो तुम हौ तिनमें आश्चर्य नहीं है बहुतप्रकार गायबे में आवो जगत् की स्थिति और रक्षासहित कल्याण करिबेके लिये अपनी इच्छापूर्वक अवतार लेतहौ यह मैं भले प्रकार जानूं हूं दुष्टनकूं दण्ड देनो और साधुन को सत्कार करनो यह तुम कूं योग्य है १७ जननकूं मोक्ष को देनवारो चरणकमल है ताकूं बड़ो है ज्ञान जिनके ऐसे ब्रह्मादिक देवता हृदयमें ध्यान करैं

संसाररूप कुवां में डूबो जो जीव है ताकूं निकासिबे को आश्रय ऐसो तुम्हारे चरणारविन्दको दर्शन करयो जैसे सुधि रही आवै तैसे चरणारविन्द को ध्यान करत में विचरूं यह अनुग्रह मेरे ऊपर करो १८ हे राजन् परीक्षित्! योगेश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी योगमाया जानिबे के लिये श्रीकृष्णचन्द्र की और रानी है ताके महल में जात भये १९ ता महल मेंभी प्यारी सत्यभामा के सङ्ग और उद्धवजी के सङ्ग चौपरि खेलें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनें नारदजी देखत भये परम भक्तिपूर्व्वक उठिकै आसन बिछाय कै अर्घ्य दैकै पूजन करत भये २० तुम कब आये या प्रकार अज्ञानी की तुल्य श्रीकृष्णचन्द्र नारदजीते पूंछत भये पूर्ण जो तुम हौ तिनको हम अपूर्ण कहा पूजन करैं २१ हे ब्रह्मन्! हम पूर्ण नहींहै तथापि हम तें कछु कहौ हमारो यह जन्म है ताय सार्थक करो नारदजी आश्चर्य मानि कै वहां तें उठिकै और मन्दिर में जात भये २२ ता महल में भी छोटे २ बालकन कूं खिलावें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं देखत भये ता पीछे और महल में जायकै देखें

राम्यनुगृहाणयथास्मृतिःस्यात् १८ ततोऽन्यदाविशद्गेहं कृष्णपत्न्याःसनारदः ॥ योगेश्वरेश्वरस्याङ्गयोगमायाविवित्सया १९ दीव्यन्तमक्षैस्तत्रापि प्रिययाचोद्धवेनच॥पूजितःपरयाभक्त्या प्रत्युत्थानासनादिभिः २० पृष्टश्चाविदुषेवाऽसौ कदायातोभवानिति ॥ क्रियतेकिंनुपूर्णानामपूर्णैरस्मदादिभिः २१ अथापिब्रूहिनोब्रह्मञ्जन्मैतच्छोभनंकुरु ॥ सतुविस्मितउत्थाय तूष्णीमन्यदगाद्गृहम् २२ तत्राप्यचष्टगोविन्दंलालयन्तंसुताञ्छिशून् ॥ ततोऽन्यस्मिन्गृहेऽपश्यन्मज्जनायकृतोद्यमम् २३ जुह्वन्तंचवितानाग्नीन् यजन्तंपञ्चभिर्मखैः ॥ भोजयन्तंद्विजान्क्वापि भुञ्जानमवशेषितम् २४ क्वापिसन्ध्यामुपासीनं जपन्तंब्रह्मवाग्यतम् ॥ एकत्रचासिचर्मभ्याञ्चरन्तमसिवर्त्मसु २५ अश्वैर्गजैरथैःक्वापि विचरन्तंगदाग्रजम्॥ क्वचिच्छयानंपर्यङ्केस्तूयमानञ्चवन्दिभिः २६ मन्त्रयन्तंचकस्मिंश्चिन्मन्त्रिभिश्चोद्धवादिभिः ॥ जलक्रीडारतंक्वापिवारमुख्याऽबलावृतम् २७ कुत्रचिद्द्विजमुख्येभ्योददतंगाःस्वलङ्कृताः॥ इतिहासपुराणानि शृण्वन्तंमङ्गलानिच २८ हसन्तंहास्यकथया कदाचित्प्रिययागृहे ॥ क्वापिधर्मंसेवमानमर्थकामौचकुत्रचित् २९ ध्यायन्तमेकमासीनं

तो स्नान को उपाय करे हैं २३ काहू महलमें श्रीकृष्णचन्द्र अग्निमें अग्निहोत्र करै हैं और महल में पञ्चयज्ञ करे है काहू महल में ब्राह्मणन कूं भोजन कराय कै ब्राह्मणनको बच्यो जो प्रसाद ताय आप भोजन करे हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २४ काहू महलमें सन्ध्योपासन करै है और कहूं मौन होयकै गायत्री जपै हैं एक महल में ढाल तलवार लैकै फिरै हैं या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन करतभये २५ काहू महलमें घोड़ान पै हाथीन पै रथन पै चढ़िकै डोलै हैं और काहू महलमें पलंगपै सोवें बन्दीजन जिनकी स्तुतिकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २६ काहू महल में उद्धवादिक मन्त्रिन के सङ्ग सलाह करत देखे और काहू महल में श्रेष्ठ स्त्रियों के सङ्ग जल में विहार करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये २७ काहू महल में शृङ्गार करिकै गौवन कूं ब्राह्मणन के अर्थ देहैं और काहू महलमें इतिहास पुराण मङ्गलरूपी वाक्य श्रवण करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करतभये २८ काहू महल में हांसीकी बात कहिकै प्यारी के सङ्ग श्रीकृष्णचन्द्र हँसे हैं और काहू महल में अपने धर्म को सेवन करेहैं काहू महलमें अर्थ और कामकूं सम्पादन करेहैं २९ काहू महल में माया सूं अतीत जो परब्रह्महै ताको

एक आसन पै बैठिकै ध्यान करे हैं और काहू महलमें काम भोग पूजन इन करिकै गुरुनकी शुश्रूषा करे हैं ३० काहू महल में काहू सों विरोध की बात करे हैं और काहू महल में मिलाप की बात करे हैं और काहू महल में बलदेवजी के सङ्ग साधुन कूं सुख होइ यह विचार करे हैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करत भये ३१ काहू महल में पुत्रनको समय पै सदृश स्त्रीन कूं देखिके विवाह करे हैं और कहूं अपनी कन्या कूं सदृश वर देखिकै द्रव्यन करिकै विवाह करे है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कू देखत भये ३२ काहू महल में कन्यान कूं जमाइन कूं विदा करे हैं और काहू महल में पुत्रन कूं सुसरारि भेजिकै उनकी स्त्रीन कू बुलावे हैं या प्रकार योगेश्वरन के ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र के सन्तानन के बड़े उत्सव देखिकै लोक आश्चर्य्य कूं प्राप्त होत भये ३३ काहू महल में बड़े यज्ञन करिकै अपनी कला जे देवता हैं तिनको पूजन करे हैं और काहू महल में अमुक रस्तामें कुंआ बनवावो बाग लगावो नवीन मन्दिर बनवावो या प्रकार धर्म्म कूं करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं नारदजी देखत

पुरुषंप्रकृतेःपरम् ॥ शुश्रूषन्तंगुरून्क्वापि कामैर्भोगैःसपर्य्यया ३० कुर्वन्तंविग्रहंकैश्चित्सन्धिंचान्यत्रकेशवम् ॥ कुत्रापिसहरामेण चिन्तयन्तंसतांशिवम् ३१ पुत्राणांदुहितॄणाञ्च कालेविध्युपयापनम् ॥ दारैर्वरैस्तत्सदृशैःकल्पयन्तंविभूतिभिः ३२ प्रस्थापनोपानयनैरपत्यानांमहोत्सवान् ॥ वीक्ष्ययोगेश्वरेशस्य येषांलोकाविसिस्मिरे ३३ यजन्तंसकलान्देवान् क्वापिक्रतुभिरूर्जितैः ॥ पूर्त्तयन्तंक्वचिद्धर्मं कूपाराममठादिभिः ३४ चरन्तंमृगयांक्वापि हयमारुह्यसैन्धवम् ॥ घ्नन्तंततःपशून्मेध्यान्परीतंयदुपुङ्गवैः ३५ अव्यक्तलिङ्गंप्रकृतिष्वन्तःपुरगृहादिषु ॥ क्वचिच्चरन्तंयोगेशं तत्तद्भावबुभुत्सया ३६ अथोवाचहृषीकेशं नारदःप्रहसन्निव ॥ योगमायोदयंवीक्ष्य मानुषीमीयुषोगतिम् ३७ विदामयोगमायास्ते दुर्दर्शाअपिमायिनाम् ॥ योगेश्वरात्मन्निर्भाता भवत्पादनिषेवया ३८ अनुजानीहिमांदेव लोकांस्तेयशसाप्लुतान् ॥ पर्य्यटामितवोद्गायल्लीलाभुवनपावनीम् ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मन्धर्मस्यवक्ताऽहं कर्त्तातदनुमोदिता ॥ तच्छिक्षयँल्लोकमिममास्थितःपुत्रमाखिद ४० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्याचरन्तंसद्धर्मान् पावनान्गृहमेधिनाम् ॥ तमेवसर्वगेहेषु सन्तमेक

भये ३४ काहू महल में तें सिन्धु देशके घोड़ा पै चढ़िकै यादवन कूं संग लैके शिकार खेलिवे के लिये जाय हैं तहां विचित्र विचित्र पशूनकूं मारें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखत भये ३५ काहू महलमें अपनो रूप छिपाय कै अन्तःपुरके भीतर जे गृहादिक है तिनमें जो प्रजा हैं ताको अभिप्राय जानिवेके लिये विचरैं ऐसे योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र है तिनैं देखत भये ३६ मनुष्यन की जाति कूं प्राप्तभये ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र है तिनकी योगमाया को वैभव है ताय देखिकै सम्पूर्ण लीलान के देखे पीछे नारदजी हँसिकै बोलतभये ३७ हे योगेश्वर ! तुम्हारे चरणारविन्द की सेवा करिकै मेरे मन में प्रकाशी ऐसी जो तुम्हारी योगमाया है ताय हम केवल जाने हैं और तुम्हारो जो सत्यरूप है ताय नहीं जाने हैं ३८ हे देव ! तुम्हारो यश जिनमें फैलि रह्यो समस्त लोकनके पवित्र करनवारी जे तुम्हारी लीला हैं तिनमें गावत विचरूं यह आज्ञा तुम मोकूं देउ या प्रकार नारदजी कहतभये ३९ अब श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र बोले हे ब्रह्मन् ! मैं धर्म को कहनवारो हूं औरकूं धर्म्मकर्त्ता देखिकै प्रशंसा करूं हूं ता कारण लोकन कूं सिखाइवे के लिये कर्म करूं हूं हे पुत्र ! तू अपने मनमें खेद मति करै ४० अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार गृहस्थ पुरुषनके पवित्र

करनवारे श्रेष्ठ धर्म्मन कूं करैं ऐसे अकेले श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनेंही समस्त घरन में नारदजी देखतभये ४१ अनन्त है पराक्रम जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की योगमाया को बड़ो उदयहै ताय वारंवार देखिकै भयो है कौतुक जिनके ऐसे नारदजी आश्चर्य्य मानतभये ४२ या प्रकार अर्थ काम धर्म्म इनमें श्रद्धायुक्त हैं मन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र ने भले प्रकार पूजन जिनको करयो ऐसे नारदजी प्रसन्नतापूर्व्वक श्रीकृष्णचन्द्रको मनमें स्मरण करत जातभये ४३ या प्रकार मनुष्यनके मार्ग में वर्तें समस्त जीवन के कल्याण करिवे के निमित्त ग्रहण करी है अनेक मूर्त्ति जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सोलह हजार श्रेष्ठ स्त्रीनके वीचमें लाजभरी स्नेहकी चितवनि हँसनि तिनसूं सेवितहोयकै रमण करतभये ४४ हे राजन् परीक्षित् ! विश्वकी प्रलय और उत्पत्तिके कारण ऐसे जे हरि भगवान् हैं तिनके और से जे वने नहीं ऐसे जे असाधारण कर्म्म हैं तिनें या संसारमें जे पुरुष गावे हैं अथवा श्रवणकरैं बड़ाई करैं उन पुरुषनको मोक्षके देननारे जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन में भक्ति होइहै ४५ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णगार्हस्थ्यदर्शनंनामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥ * ॥ * ॥ ॥

न्ददर्शह ४१ कृष्णस्यानन्तवीर्यस्य योगमायामहोदयम् ॥ मुहुर्दृष्ट्वाऋषिरभूद्विस्मितोजातकौतुकः ४२ इत्यर्थकामधर्म्मेषु कृष्णेनश्रद्धितात्मना ॥ सम्य क्सभाजितःप्रीतस्तमेवानुस्मरन्ययौ ४३ एवंमनुष्यपदवीमनुवर्त्तमानोनारायणोऽखिलभवायगृहीतशक्तिः ॥ रेमेऽङ्गषोडशसहस्रवराङ्गनानां सव्रीडसौ हृदनिरीक्षणहासजुष्टः ४४ यानीहविश्वविलयोद्भववृत्तिहेतुः कर्माण्यनन्यविषयाणिहरिश्चकार ॥ यस्त्वङ्गगायतिशृणोत्यनुमोदतेवा भक्तिर्भवेद्भगवति ह्यपवर्गमार्गे ४५ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णगार्हस्थ्यदर्शनंनामैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथोषस्युपवृत्तायां कुक्कुटान्कूजतोऽशपन् ॥ गृहीतकण्ठ्यःपतिभिर्माधव्योविरहातुराः १ वयांस्यरूरुवन्कृष्णंबोधयन्तीववन्दिनः ॥ गायत्स्वलिष्वनिद्राणि मन्दारवनवायुभिः २ मुहूर्त्तंतन्तुवैदर्भी नामृष्यदतिशोभनम् ॥ परिरम्भणविश्लेषात्प्रियबाह्वन्तरङ्गता ३ ब्राह्मेमुहूर्त्तउत्थाय वार्यु

(ततस्तुसप्ततितमेकृष्णस्याह्निककर्म्मणि ॥ दूतनारदयोःकार्य्येकार्य्यमन्त्रविचारणम् ? जगन्मङ्गलचारित्रमाह्निकंजगदीशितुः ॥ नारदेनकचित्किञ्चिद्दृष्टमाहयथाक्रमम् २ सत्तरवें अध्यायमें कृष्ण जीके दिनके कर्म्म में दूत और नारदजी के कार्य्य में सलाह करनी योग्यहै यह वर्णनहै १ संसारके स्वामी कृष्णजी के संसारके मङ्गल दिनके चरित्र नारदजी कवहूं कुछ देखतभये तिनको क्रमसूं कहते भये २) अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने ग्रहणकरे हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे श्रीकृष्णचन्द्रकी रानी हैं ते मातःकाल होत आयो तब मुरगा वोले तिनें विरहमें व्याकुल होयकै कोशति भई कि अरे अभागे अवहीं ते तुम वोले श्रीकृष्णचन्द्र मातःकाल जानिकै उठेंगे १ मातःसमय गई है निद्रा जिनकी ऐसे पक्षी वोलतभये और कल्पवृक्षकी पवन सूंघिके भौंरा गूंजतभये सो मानों श्रीकृष्णचन्द्र कूं वन्दीजन गावे हैं २ प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र की भुजान के वीचमें प्राप्तभई ऐसी जो विदर्भदेश के राजाकी पुत्री रुक्मिणी है सो आलिङ्गन को जो वियोगहै ताय देखिकै अतिसुन्दर जो मातःकाल है ताय नहीं सहतिभई ३ प्रसन्न हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे मधुवंशोत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्म मुहूर्त्त अर्थात् सूर्योदय तें दो घड़ी पहिले उठिकै जल

कौ आचमन करिकै माया तें परे जो अपनो स्वरूप है ताको ध्यान करतभये ४ कैसे स्वरूप को ध्यानकरो ताको वर्णन करे हैं एक अखण्ड स्वयंज्योति स्वरूप उपाधिरहित अविनाशी सर्व्वकाल अविद्यारहित ब्रह्म जाको नाम या विश्व की उत्पत्ति और नाश इनको कारण अपनी शक्ति करिकै लखिवे में आवै ऐसो सत्तामात्र आनन्दरूपहैं ५ ध्यानकरे पीछे निर्म्मल जलमें विधिपूर्व्वक स्नान जिनने कस्यो ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र धोती उपरनाकूं पहिरिके सन्ध्योपासनादि जे कर्म्म और अग्निहोत्र इनकूं करिकै मौन होयकै गायत्री जप करतभये ६ उदयभयो जो सूर्य्य है ताय अर्घदैके अपने अंश जे देवता ऋषि पितृहैं तिनको तर्पण करिकै ज्ञानवान् श्रीकृष्णचन्द्र ब्राह्मणन को पूजन करतभये ७ सुवर्ण सूं सींग जिनके मढे बड़ी सूधी मोतिनकी माला जिनके परी दूधदेईं एकवारकी ब्यानी बछरा जिनके संग सुन्दर वस्त्रनकी झूलें ओढे ८ रूपे सूं खुरनके अग्रभाग जिनके मढ़े ऐसीं गौ एक एक महलमें तें प्रतिदिन शोभायमान सत्पात्र जे ब्राह्मण हैं तिनकूं रेशमी वस्त्र मृगछाला और

पस्पृश्यमाधवः ॥ दध्यौप्रसन्नकरणआत्मानंतमसःपरम् ४ एकंस्वयंज्योतिरनन्यमव्ययं स्वसंस्थयानित्यनिरस्तकल्मषम् ॥ ब्रह्माख्यमस्योद्भवनाशहेतु भिःस्वशक्तिभिर्लक्षितभावनिर्वृतिम्५ अथाप्लुतोऽम्भस्यमलेयथाविधिक्रियाकलापंपरिधायवाससी॥ चकारसन्ध्योपगमादिसत्तमोहुतानलोब्रह्मजजापवा ग्यतः ६ उपस्थायार्कमुद्यन्तंतर्पयित्वाऽऽत्मनःकलाः॥ देवानृषीन्पितॄन्वृद्धान्विप्रानभ्यर्च्यचात्मवान् ७ धेनूनांरुक्मशृङ्गीणां साध्वीनांमौक्तिकस्रजाम्॥ पयस्विनीनांगृष्टीनांसवत्सानांसुवाससाम् ८ ददौरूप्यखुराग्राणां क्षौमाजिनतिलैःसह ॥ अलङ्कृतेभ्योविप्रेभ्योबद्धंबद्धं+दिनेदिने ९ गोविप्रदेवतावृद्धगु रून्भूतानिसर्व्वशः॥ नमस्कृत्याऽऽत्मसंभूतीर्मङ्गलानिसमस्पृशत् १० आत्मानंभूषयामासनरलोकविभूषणम्॥वासोभिर्भूषणैःस्वीयैर्दिव्यस्रगनुलेपनैः ११ अवेक्ष्याज्यंतथाऽऽदर्शंगोवृषद्विजदेवताः॥कामांश्चसर्व्ववर्णानांपौरान्तःपुरचारिणाम्॥प्रदाप्यप्रकृतीःकामैःप्रतोष्यप्रत्यनन्दत १२ संविभज्याग्रतोविप्रान्

तिल इनसहित दान करतभये ९ अपनी विभूति जे गौ ब्राह्मण देवता वृद्ध गुरु हैं तिनें नमस्कार करिकै मङ्गलवस्तु जे कपिला तें आदिलैकै गौ हैं तिनको स्पर्श करतभये १० नरलोक कूं भूषणरूप जो अपनी आत्मा है ताय वस्त्रनसूं और दिव्यमाला अरगजा चन्दन इत्यादिकन सूं शोभायमान करतभये ११ घृतमें मुखारविन्द कू देखिकै तैसेही दर्पण में देखिके गौ बैल ब्राह्मण देवता इनको दर्शन करिकै पुरके अन्तःपुरके रहनवारे जे सर्व्व वर्णहैं तिनकी मनोवाञ्छित जे कामना हैं तिनकूं दैकै और प्रधान दीवानहैं तिनें कामनासूं सन्तुष्ट करिके आनन्दकू पावतभये और माला बीरी चन्दन अरगजा इनें प्रथम ब्राह्मणन कूं दैके सुहृदन कूं दैकै प्रधान दीवान कूं दैकै आप अङ्गीकार करतभये यामें गृहस्थन को धर्म्म दिखायो अर्थात् गृहस्थनको ऐसो चाहिये जो सनकू दैके आप अङ्गीकार

+ बद्धमिति हिरण्येनपरावृतान्कृष्णान् शुक्लरत्नोमृगान् मण्यारमरतोऽददाच्छतबद्धानिमत्तचेति शुत्युताति सप्तोत्तरशतबद्धाये कौकृत्यपुराणचतुर्दशलक्षत्वेन गणितानि यथोक्त भरतमेवाविद्दत्यनरमस्क्वचेमृगान् शुक्लद। कृष्णान् सुवर्णनारिक्तनान् अदात्कर्मणिमण्णार निवृतानिचतुर्दशेति ततश्चयबद्धसख्यानश्लोकेनसमुप्रत चतुर्दशानांलक्षाणांसप्त षिकशताशक ॥ बद्धचतुरर्धं त्वग्रसहस्राणित्रयोदशातिदिनेदिनेचप्रतिगृह्चेति ४ ॥

करै १०। १३ इतने में रथवान् सुग्रीव सूं आदिलैके जे घोड़े हैं तिनकूं जोतिकै परमअद्भुत रथकूं लायकै प्रणाम करिकै आगे ठाढ़ो होतभयो १४ रथवान् को हाथ सूं हाथ पकरिकै सात्यकि उद्धव कूं संगलैके रथमें बैठतभये जा प्रकार सूर्य सुमेरु पर्वत के ऊपर तैसे १५ लाज भरी प्रेमकी चितवनिसूं अन्तःपुरकी स्त्रीन ने देखे जासूं भयो है हास्य जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र बडे कष्ट तें उन स्त्रीनकूं छोडिकै उनके मनकूं हरिकै निकसतभये १६ या प्रकार सब घरनतें न्यारे २ निकसिकै पीछे सब एकरूप होयकै सब यादवनकूं संगलैके श्रीकृष्णचन्द्र सुधर्म्मा सभामें जातभये हे राजन् परीक्षित्! सुधर्म्मा सभामें जे गये हैं तिनकूं क्षुधा पिपासा शीत गर्मी शोक मोह ये बाधा नहीं करे हैं १७ ता सभामें श्रेष्ठ सिंहासनपै बैठे मनुष्यनमें श्रेष्ठ यादव जिनके आसपास बैठे तिनमें उत्तम व्यापक श्रीकृष्णचन्द्र अपनी कान्ति करिकै दिशान कूं प्रकाशमान करतभये जैसे आकाश में तारागणन के बीचमें चन्द्रमा शोभा कूं प्राप्तहोइहै तैसे १८ हे राजन् परीक्षित्! ता सभाके बीचमें भांड़हैं ते नानाप्रकारकी

स्रग्गन्धाम्बराद्यान् तर्पणैः॥ सुहृदः प्रकृतीर्दारानुपायुङ्क्त ततः स्वयम् १३ तावत्सूत उपानीय स्यन्दनं परमाद्भुतम्॥ सुग्रीवाद्यैर्हयैर्युक्तं प्रणम्यावस्थितोऽग्रतः १४ गृहीत्वा पाणिना पाणी सारथेस्तमथारुहत्॥ सात्यक्युद्धवसंयुक्तः पूर्वाद्रिमिव भास्करः १५ ईक्षितोऽन्तःपुरस्त्रीणां सव्रीडप्रेमवीक्षितैः॥ कृच्छ्राद्विसृष्टो निरगाज्जातहासो हरन्मनः १६ सुधर्माख्यां सभां सर्वैर्वृष्णिभिः परिवारितः॥ प्राविशद्यन्निविष्टानां न सन्त्यङ्ग षडूर्मयः १७ तत्रोपविष्टः परमासने विभुर्बभौ स्वभासा ककुभोऽवभासयन्॥ वृतो नृसिंहैर्यदुभिर्यदूत्तमो यथोडुराजो दिवि तारकागणैः १८ तत्रोपमन्त्रिणो राजन् नानाहास्यरसैर्विभुम्॥ उपतस्थुर्नटाचार्या नर्तक्यस्ताण्डवैः पृथक् १९ मृदङ्गवीणामुरजवेणुतालदरस्वनैः॥ ननृतुर्जगुस्तुष्टुवुश्च सूतमागधवन्दिनः २० तत्राहुर्ब्राह्मणाः केचिदासीना ब्रह्मवादिनः॥ पूर्वेषां पुण्ययशसां राज्ञां चाकथयन् कथाः २१ तत्रैकः पुरुषो राजन्नागतोऽपूर्वदर्शनः॥ विज्ञापितो भगवते प्रतीहारैः प्रवेशितः २२ स नमस्कृत्य कृष्णाय परेशाय कृताञ्जलिः॥ राज्ञामावेदयद्दुःखं जरासन्धनिरोधजम् २३ ये च दिग्विजये तस्य सन्नतिं न ययुर्नृपाः॥ प्रसह्य रुद्धास्तेनासन्नयुते द्वे गिरिव्रजे २४ कृष्ण कृष्णाप्रमेयात्मन् प्रपन्नभयभञ्ज

हासी की वार्ता करिकै श्रीकृष्णचन्द्र को सेवन करतभये और नटनमें जे मुख्य हैं ते और नृत्यकी करनवारी स्त्री हैं ते अपने न्यारे २ जे गवय्या हैं तिनकू संगलैकै सम्मुख ठाढे होतभये १९ मृदंग वीणा मुरज बांसुरी झांझ शङ्ख इनकूं बजाय कै नृत्य करतभये गान करतभये और सूत मागध वन्दीजन हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख स्तुति करतभये २० कोई एक ब्राह्मण कहिवे में अतिबुद्धिमान् ते वेदकी ऋचा पढिके व्याख्या करतभये कोई ब्राह्मण पवित्र है यश जिनको ऐसे पहिले राजान की कथान कूं कहतभये २१ हे राजन् परीक्षित्! प्रथम कबहूं देख्यो नहीं ऐसो एक अपूर्व्व नवीन पुरुष आवतभयो जब ड्योढीवारेन ने श्रीकृष्णचन्द्र ते जायकै खबरि करी तब कृष्णचन्द्रनेकही जावो लिवाय लावो तब वाकूं सभाके भीतर पहुँचाय दियो २२ ब्रह्मादिकन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं वह पुरुष हाथ जोरिकै नमस्कार करिकै जरासन्ध ने रोंके जे बीसहजार आठसै राजा हैं तिनके दुःख कूं कहतभयो २३ जरासन्ध के दिग्विजय के समय जिन राजान ने आयकै भेंट न दीनी ते बीसहजार आठसै राजा हैं तिनैं पकरिकै गिरिव्रजनाम किलाहै तामें रोंकिदेतभयो २४ हे कृष्ण! हे कृष्ण! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिवेमें आवै है प्रभाव जिन

को ! हे शरणागतनके भयके काटनवारे ! या संसार तें भयभीत तुम तें न्यारी है बुद्धि जिनकी ऐसे हम तुम्हारी शरण आये हैं २५ जो लोक अतिशय करिकै पापकर्ममें लगि रहा है सो तुमने बतायो अपनो जामें भलो होइ ऐसो तुम्हारो पूजन सेवनरूप जो कर्म्म है ताय भूलिरहा है जो तुम बलवान् या संसार में जीवे की आशा है ताकूं शीघ्र काटो हौ ऐसे जो कालरूप तुमहौ तिनकूं नमस्कार है २६ जगत् के ईश्वर जो तुमहौ सो या संसार में साधुनकी रक्षा करिबे के लिये और दुष्टनकूं दण्ड देवे के लिये अंश करिके अवतार लिये हौ कोई जरासन्ध सरीखो जोरावर तुम्हारी आज्ञाकूं नहीं माने है अथवा जे प्राणी अपने कर्म्मनको फल भोगे है यह हम नहीं जाने हैं अर्थात् यह जरासन्ध तुम तें जोरावर है जाके कर्म्म में दुःख लिखो है याही तें हम रोंकि राखे हैं २७ हे ईश्वर ! पराधीन स्वप्नकी तुल्य मिथ्या जो राजापनेके सुख को बोझ है ताय सर्व्वदा जामें भय लग्यो रहै ऐसो मृतककी तुल्य जो शरीर है तासूं धारण करे हैं अपनपे में रहे आवो ऐसे सुख

न ॥ वयंत्वांशरणंयामोभयभीताःपृथग्धियः २५ लोकोविकर्म्मनिरतःकुशलेप्रमत्तःकर्म्मण्ययन्त्वदुदितेभवदर्चनेस्वे॥ यस्तावदस्यबलवानिहजीविताशांसद्यश्छिनत्त्यनिमिषायनमोऽस्तुतस्मै २६ लोकेभवाञ्जगदिनःकलयाऽवतीर्णःसद्रक्षणायखलनिग्रहणायचान्यः ॥ कश्चित्त्वदीयमतियातिनिदेशमीशकिंवाजनःस्वकृतमृच्छतितन्नविद्मः२७स्वप्नायितंनृपसुखंपरतन्त्रमीशशश्वद्भयेनमृतकेनधुरंवहामः॥हित्वातदात्मनिसुखंत्वदनीहलभ्यंक्लिश्यामहेऽतिकृपणास्तवमाययेह २८ तन्नोभवान्प्रणतशोकहराङ्घ्रियुग्मोबद्धान्वियुङ्क्ष्वमगधाह्वयकर्म्मपाशात्॥ योभूभुजोऽयुतमतङ्गजवीर्य्यमेकोबिभ्रद्रुरोधभवनेमृगराडिवावीः २९ योवैत्वयाद्विनवकृत्वउदात्तचक्रभग्नोमृधेखलुभवन्तमनन्तवीर्य्यम्॥जित्वानृलोकनिरतंसकृदूढदर्पोयुष्मत्प्रजारुजतिनोऽजिततद्विधेहि ३० ॥दूतउवाच ॥ इतिमागधसंरुद्धाभवद्दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ प्रपन्नाःपादमूलंते दीनानांशंविधीयताम् ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ राजदूतेब्रुवत्येवं देवर्षिःपरमद्युतिः ॥

रूप जो तुमहौ तिनें त्यागिकै या संसार में तुम्हारी मायाकरिकै कृपण जे हम हैं ते दुःखकूं प्राप्तभये हैं २८ ता कारण हे कृष्ण ! मैं तुम्हारो हूं तुम कूं नमस्कार है या प्रकार जिनने कही तिन पुरुषन के शोक कूं हरे हैं चरणारविन्द जिनके ऐसे तुम जरासन्ध है नाम जाको ऐसी कर्म्मरूप फांसी सूं बँधे जो हम हैं तिनें छुड़ावो कदाचित् कहो कि तुमहीं पराक्रम करिकै क्यों न छुटिजावो ताको उत्तर राजा देइ है जो अकेलो जरासन्ध दश हजार हाथीन के बलकूं धारण करिकै जैसे सिंह भेंड़न कूं रोंकत भयो ऐसे बीसहजार आठसै राजा हैं तिनें रोंकतभयो २९ ग्रहण कियोहै चक्र जिनने ऐसे हे कृष्ण ! तुम हौ तिनसूं अठारह वार जरासन्ध लड़यो तामें सत्रह वार तुमने हराय दियो पश्चात् बड़ो है पराक्रम जिनको ऐसे जो तुम हौ सो मनुष्यलीला करो हौ तिनें एकवार जीति कै बढ़यो है गर्व जाके ऐसो जरासन्ध तुम्हारी प्रजा हम हैं तिनें पीड़ा देइ है यहाँ जो आपकूं योग्यहोय सो करो ३० अब दूत कहे है या प्रकार जरासन्ध के रोंके तुम्हारे दर्शन की चाहनावाले तुम्हारे चरणारविन्दको शरण जिनने लियो ऐसे दीन राजान कूं जामें सुख होवै सो कीजै ३१ श्रीशुकदेव जी बोले कि हे परीक्षित् ! या प्रकार राजान को दूत कहे

हो इतने में श्रेष्ठ है कान्ति जिनकी पीरी जटान कूं धारण करे ऐसे श्रीमन्नारदजी जैसे सूर्य प्रकट होइ है ऐसे प्रकट होतभये ३२ सम्पूर्ण लोकन के महान् ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो नारदजीकूं आये देखि कै अपनी सभा में जे बैठे हैं तिन सहित शिर नवायकै प्रणाम करतभये ३३ आसन पै बैठे ऐसे नारदजी को विधिपूर्वक सत्कार करिकै श्रद्धापूर्वक मधुर मधुर वचन करिकै तृप्त करतभये ३४ श्रीकृष्ण पूंछै हैं नारद जी त्रिलोकी में कहूं भय तो नहीं है लोकन में फिरो जो तुमहो तिनसूं हमें बडो लाभहै घर बैठेही सबरी खबरि मिलिजायहै ३५ ईश्वर के निर्म्माणकरे लोकन में ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम न जानो अब पाण्डवनकी कहा करिवे की इच्छा है यह हम तुमतें पूंछे हैं ३६ तब नारदजी बोले हे समर्थ! ब्रह्मा के मोह करन वारे जे तुमहौ तिनकी मायान को पार नहीं ऐसी मैंने बहुत माया देखी हैं हे व्यापक! अपनी शक्तिन करिकै प्राणीन के भीतर विचरो हौ अग्नि की तुल्य ढक्यो है तेज जिनको ऐसे तुम मो

विभ्रत्पिङ्गजटाभारं प्रादुरासीद्यथारविः ३२ तंदृष्ट्वाभगवान्कृष्णः सर्व्वलोकेश्वरेश्वरः॥ ववन्दउत्थितःशीर्ष्णाससभ्यःसानुगोमुदा ३३ सभाजयित्वाविधि वत्कृतासनपरिग्रहम्॥ बभाषेसूनृतैर्वाक्यैः श्रद्धयातर्पयन्मुनिम् ३४ अपिस्विदद्यलोकानां त्रयाणामकुतोभयम्॥ ननुभूयान्भगवतोलोकान्पर्यटतो गुणः ३५ नहितेऽविदितंकिञ्चिल्लोकेष्वीश्वरकर्तृषु॥ अथपृच्छामहेयुष्मान्पाण्डवानांचिकीर्षितम् ३६॥ श्रीनारदउवाच॥ दृष्टामयातेबहुशोदुरत्यया मायाविभोविश्वसृजश्चमायिनः॥ भूतेषुभूमंश्चरतःस्वशक्तिभिर्वह्नेरिवच्छन्नरुचोनमेऽद्भुतम् ३७ तवेहितंकोऽर्हतिसाधुवेदितुंस्वमाययेदंसृजतोनियच्छतः॥ यद्विद्यमानात्मतयाऽवभासते तस्मैनमस्तेस्वविलक्षणात्मने ३८ जीवस्ययःसंसरतोविमोक्षणं नजानतोऽनर्थवहाच्छरीरतः॥ लीलावतारैःस्वयशःप्रदीपकं प्राज्वालयत्त्वातमहंप्रपद्ये ३९ अथाप्याश्रावयेब्रह्मन् नरलोकविडम्बनम्॥ राज्ञःपैतृष्वस्रेयस्य भक्तस्यचचिकीर्षितम् ४० यक्ष्यतित्वांमखेन्द्रेण राजसूयेन पाण्डवः॥ पारमेष्ठ्यकामोनृपतिस्तद्भवाननुमोदताम् ४१ तस्मिन्देवक्रतुवरेभवन्तंवैसुरादयः॥ दिदृक्षवःसमेष्यन्ति राजानश्चयशस्विनः ४२ श्रवणात्कीर्

तें पूंछो हौ यह आश्चर्य नहीं है ३७ अपनी माया करिकै या विश्वकूं उपजावो हौ और संहारकरो हौ ऐसे जो तुमहौ तिनकी चेष्टा कौन पुरुष भलेप्रकार जानिवे कूं योग्य है अपने स्वरूप करिकै विचार में न आवें ऐसे जे तुमहो तिनको नमस्कार है ३८ अविद्या करिकै अनर्थ कूं प्राप्तकरनवारो जो देह है तासूं जन्म मृत्युहू पावै और ता अविद्या करिकै शरीर तें छूटिवे के उपाय कूं नहीं जानै ऐसो जो जीवहै ताकू लीलावतारन करिकै दीपकरूप जो अपनो यश है ताय प्रकाश करतभये जो तुम हौ तिन तुम्हारी शरण प्राप्तभयो हूं ३९ तौ भी हे ब्रह्मन्! मनुष्यन को अनुकरण करो जो तुमहौ तिनकूं तुम्हारी फूफी को पुत्र भक्त ऐसो राजायुधिष्ठिर जो कछु कर्यो चाहै है ताय सुनाऊंहूं ४० पाण्डुको पुत्र चक्रवर्त्ती राज्य करिवे की इच्छाभई ऐसो जो राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञराट् जो राजसूययज्ञ है ता करिकै तुम्हारो पूजन कर्यो चाहैहै यह आप अनुमोदन करौ ४१ हे देव! या यज्ञमें तुम्हारे दर्शन करिवे के निमित्त इन्द्रादिक देवता आवेंगे और बड़े

यशस्वी राजा आवेंगे ४२ हे ईश्वर ! ब्रह्मरूप जो तुमही तिनकी कथान के श्रवण करे तें तुम्हारो ध्यान करे तें चाण्डाल हैं तेऊ पवित्र होइ जाय हैं तुम्हारे दर्शन करे तें पवित्र होईं यामें कहा कहनो है ४३ हे त्रिलोकी के मंगलरूप ! तुम्हारो निर्म्मल यश स्वर्ग में रसातल में पृथ्वी में फैलि रह्यो है और दिशान कूं चँदोवा की तुल्य शोभायमान करे है कैसो फैलो है सो कहे है स्वर्ग में मन्दाकिनीरूप पाताल में भोगवतीरूप और या संसारमें तुम्हारो चरणोदक गङ्गारूप होयकै सम्पूर्ण विश्व कूं पवित्र करे है या कारण तुम्हारे चले तें यज्ञमें बड़ो मंगल होयगो ४४ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार नारदजी ने कही तब ता सभा में अपनी ओर के जे यादव बैठे हैं तिनकूं जरासन्ध के जीतिवे की इच्छा करिकै जब अच्छी लगी तब मनोहर वचनन सूं मुसिक्यात अपने भक्त उद्धवजी सू श्रीकृष्णचन्द्र बोलत भये ४५ श्रीभगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं उद्धवजी तुम हमारे परमनेत्र हौ परमहितकारी हौ गुह्य वातन के अभिप्राय

त्त्वनाद्ध्यानात्पूयन्तेऽन्तेऽवसायिनः ।। तवब्रह्ममयस्येशकिमुतेक्षाऽभिमर्शिनः ४३ यस्यामलन्दिवियशःप्रथितंरसायां भूमौचतेभुवनमङ्गलदिग्वितानम् ।। मन्दाकिनीतिदिविभोगवतीतिचाधोगङ्गेतिचेहचरणाम्बुपुनातिविश्वम् ४४ ।। श्रीशुकउवाच ।। तत्रतेष्वात्मपक्षेष्वगृणत्सुविजिगीषया ।। वाचःपेशैःस्मयन्भृत्यमुद्धवंप्राहकेशवः ४५ ।। श्रीभगवानुवाच ।। त्वंहिनःपरमंचक्षुःसुहृन्मन्त्रार्थतत्त्ववित् ।।तथाऽत्रब्रूह्यनुष्ठेयंश्रद्ध्मःकरवामतत् ४६इत्युपामन्त्रितोभर्त्रा सर्व्वज्ञेनापिमुग्धवत् ।। निदेशंशिरसाऽऽधायउद्धवःप्रत्यभाषत ४७ ।।इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेभगवद्यानेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ।।

श्रीशुकउवाच ।। इत्युदीरितमाकर्ण्य देवर्षेरुद्धवोऽब्रवीत् ।। सभ्यानांमतमाज्ञाय कृष्णस्यचमहामतिः १ ।। उद्धवउवाच ।। यदुक्तमृषिणादेव साचिव्यं यक्ष्यतस्त्वया ।। कार्य्यंपैतृष्वस्रेयस्य रक्षाचशरणैषिणाम् २ यष्टव्यंराजसूयेनदिक्चक्रजयिनाविभो ।। अतोजरासुतजयउभयार्थोमतोमम ३ अस्माकंच

कूं जानो हौ याते जो यहाँ योग्य होय ताय बतावो वाकूं हम श्रद्धापूर्व्वक करेंगे ४६ सब बातके जाननवारे श्रीकृष्णचन्द्र मानों कछु नहीं जाने हैं ऐसे भोरे की तुल्य होय के पूंछें ऐसे जो उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र की आज्ञा कूं शिरपै धरिकै बोलत भये ४७ ।। इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेभगवद्यानेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ।। * ।। * ।।

(अथैकसप्ततितमउद्धवस्यतुमन्त्रतः ।। इन्द्रप्रस्थंगतेकृष्णेपार्थानापरमोत्सवः १ राजसूयमिषंकृत्वाभीमदुर्य्योधनादिषु ।। कलिमुत्पाद्यतद्द्वाराभूभारमहरत्प्रभुः २ इकहत्तरवें अध्याय में उद्धवजी की सलाह सूं हस्तिनापुर कूं कृष्णजी के जाने मों कुन्तीके पुत्रोंका परमोत्सव वर्णितहै १ कृष्णचन्द्रजी राजसूयका बहानाकर भीमसेन और दुर्य्योधन आदिकों में लड़ाई उत्पन्न कराकर ताके द्वारा पृथ्वीके भारको हरतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार बड़ीहै बुद्धि जिनकी ऐसे उद्धवजी हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र को कह्यो वचन सुनिकै और नारदजी को मत कहा है कि यज्ञमें जायगो ताय जानिकै और सभाके बैठनवारे जे यादव हैं तिनको मत कहा कि राजान की रक्षा करिवो ताय जानिकै और श्रीकृष्णचन्द्र को मत कहा कि दोनों कार्य्य करनो ताय जानिकै बोलतभये १ उद्धवजी कहे हैं हे प्रकाशवान् श्रीकृष्णचन्द्र ! नारदजीने जो कह्यो कि तुम्हारो पूजन करयो चाहै ऐसो राजा युधिष्ठिर है ताकीऊ सहायता करिवो योग्यहै और शरणा-

गत जे राजा हैं तिनकी रक्षाकरनो भी योग्यहै २ हे समर्थ ! सम्पूर्ण दिशान के राजानकी है जीत जामें ऐसो राजसूय यज्ञ करिकै पूजन होयगो याहीतें जरासन्धहू जीत्यो जायगो यामें दोनों कार्य्य सिद्ध होयँगे यज्ञ और शरणागतन की रक्षा ३ यज्ञमें आप चलोगे याही ते हमारे बड़े मनोरथ सिद्धहोयँगे और हे गोविन्द ! बँधे राजानकूं छुडावोगे यामें आपको वडो यशहोइगो ४ वडी चाहना करिकै जरासन्धके मारिवे की इच्छाकरैं ऐसे यादवन कूं देखिकै कहे हैं जरासन्ध की वराबरि है वल जामें ऐसो जो भीमसेन है ताके विना दश हजार हाथीके समानहै वल जामें ऐसो जरासन्ध बड़े वली राजानके जीतिवे में नहीं आवे है क्योंकि भीमसेन तेंही विधनाने वाकी मृत्यु रची है ५ द्वंद्वयुद्धमें जरासन्ध जीत्यो जायगो और सैकड़न अक्षौहिणी सेनानकूं संगलैकै जो पुरुष जीत्यो चाहै तौ न जीति सकैगो वह जरासन्ध ब्राह्मणन को भक्तहै याते वाके पास जायकै ब्राह्मण मागै तौ कभऊं मने न करैगो ६ वृकनामा अग्निहै उदरमें जाके ऐसो जो भीमसेन है सो ब्राह्मण को वेष धरिकै जरासन्धतें युद्धकी भिक्षा मागै तुम्हारे निकटमें मैं द्वन्द्वयुद्ध करूंगो तौ भीमसेन जरासन्धकूं मारैगो यामें कछु सन्देह नहीं है ७ माकृतरूप करिकै रहित जो तुमहौ तिन तुम्हारे कर्म्म जे विश्वकूं उत्पत्ति

महानर्थोह्येनेनैवभविष्यति ॥ यशश्चतवगोविन्द राज्ञोवद्धान्विमुञ्चतः ४ सवैदुर्विषहोराजानागायुतसमोवले ॥ बलिनामपिचान्येषां भीमसमबलंविना ५ द्वैरथेसतुजेतव्योमाशताक्षौहिणीयुतः॥ ब्रह्मण्योऽभ्यर्थितोविप्रैर्नप्रत्याख्यातिकर्हिचित् ६ ब्रह्मवेषधरोगत्वा तंभिक्षेतवृकोदरः॥ हनिष्यतिनसन्देहोद्वैरथेतव सन्निधौ ७ निमित्तंपरमीशस्य विश्वसर्गनिरोधयोः॥ हिरण्यगर्भःशर्वश्चकालस्यारूपिणस्तव ८ गायन्तितेविशदकर्म्मगृहेषुदेव्योराज्ञांस्वशत्रुवधमात्मविमोक्षणंच ॥ गोप्यश्चकुञ्जरपतेर्जनकात्मजायाःपित्रोश्चलब्धशरणामुनयोवयञ्च ९ जरासन्धवधःकृष्णभूर्य्यर्थायोपकल्पते॥ प्रायःपाकविपाकेनतवचाभिमतःक्रतुः १० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युद्धववचोराजन् सर्व्वतोभद्रमच्युतम् ॥ देवर्षिर्यदुवृद्धाश्चकृष्णश्चप्रत्यपूजयन् ११ अथाऽऽदिशत्प्रयाणाय भग

करिवो नाश करिवो तिनमें ब्रह्मा और महादेव ये नाममात्र है तातें तुमहीं पास रहिकै जरासन्धको संहार करोगे भीमसेन तो केवल नाम होयगो ८ राजानकी रानी हैं ते अपने घरमें तुम्हारे निर्म्मल यशनकूं गावें हैं और जब उनके बालक रोवैं हैं तब कहे हैं हे पुत्र ! तुम काहे कूं रोदन करोहौ जो कोई अनाथ होइ सो रोवै तुम्हारे शिरपै तौ नाथ श्रीकृष्णचन्द्रहैं मतिरोवो जैसे गोपी शङ्खचूड़को मारिवो और अपनो छुटिवो गावें हैं और गजराजको छुटिवो ग्राहकी मृत्यु जैसे गावें हैं और जनकनन्दनी जानकी को छुटिवो रावणको मारिवो जैसे गावें हैं और माता पिताको छुटिवो कंसको मारिवो पाई है शरण जिनने ऐसे मुनि और हम भक्त गावें हैं ऐसे जरासन्धको मारिवो और अपने पतिनको छुटिवो गावें हैं ९ हे कृष्ण ! जरासन्धके मरेतें बड़ो कार्य्य सिद्ध होयगो शिशुपालादिकन को मारिवो सहजमें होय जायगो राजानके पुण्यको फल उदय होयगो और यज्ञ होइ यह तुमकूं सम्मत है राजा युधिष्ठिर के पासगये ते सब बात बनेगी १० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! सब ओर तें मङ्गलरूप बड़ी जामें युक्ति ऐसो जो उद्धवजी को वचनहै ताकी नारदजी बड़ाई करतभये और यादवन में मुख्य हैं ते बड़ाई करतभये और श्रीकृष्णचन्द्र बड़ाई करतभये यामें आयो कहा अनिरुद्ध तें आदिलैकै यादव हैं ते बड़ाई न करतभये ११ याके पीछे देवकी के पुत्र समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र चलिवे के निमित्त टहलुवा और दारुक रथवान्

हाथीन के महावतन तें आदिलैकें जे हैं तिनें और वसुदेवादिकन तें आदिलैकें जे यादव हैं तिनें आज्ञा करतभये १२ साग्रीन सहित प्रथम स्त्रीनकूं चलायकें सङ्कर्षणजी तें आज्ञामांगिकें यादवन
के राजा जो उग्रसेन हैं तिनतें भ आज्ञामांगिकें हे शत्रुन के मारनवारे राजन् परीक्षित् ! सारथीलैकें आयो गरुड़की ध्वजा जामें ऐसो जो अपनो रथ है तामें चढ़तभये १३ ता पीछे रथ हाथी प्यादे
सवार इनमें जे मुख्यहैं तिन करिके तीव्र अपनी सेनाहै ताकूं लैके मृदंग भेरी नगाड़े शङ्ख रणसिंहा इनके शब्दकरिकें शोर जामें होइ रह्यो ऐसी जे दिशा हैं तिनमें तें निकसतभये १४ सुन्दर वस्त्र
गहने चन्दन माला पहिरे ढाल तलवार हाथ में लिये दोनोंओर सिपाही जिनके चलेजायँ मनुष्य हैं वहनवारे घोड़ा जिनमें ऐसी जे सोनेकी पालकी हैं तिनमें बैठिकें पतिव्रता जे श्रीकृष्णचन्द्र
की रानी हैं ते अपने पुत्रकूं संग लैके अपने पति जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पीछे जात भईं १५ चाकरन की स्त्री और वेश्या हैं ते शृंगार करिकें चटाईन के बने घर तथा कम्मलन के और बनातन
के डेरा तम्बू इत्यादिक जे सम्पूर्ण वस्तु हैं तिनकों मनुष्य ऊँट बैल भैंसा गधा खच्चर गाड़ा हाथी इनपै लादि कै जात भये १६ बड़ो है शोर जामें ऐसी सेना है सो बड़े बड़े ध्वजानके वस्त्र छत्र चामर

वान्देवकीसुतः ॥ भृत्यान्दारुकजैत्रादीननुज्ञाप्यगुरून्विभुः १२ निर्गमय्यावरोधान्स्वान् ससुतान्सपरिच्छदान् ॥ सङ्कर्षणमनुज्ञाप्य यदुराजञ्चशत्रुहन्
सूतोपनीतंस्वरथमारुहद्गरुडध्वजम् १३ ततोरथद्विपभटसादिनायकैःकरालयापरिवृतआत्मसेनया ॥ मृदङ्गभेर्यानकशङ्खगोमुखैःप्रघोषघोषितककुभोनि
राक्रमत् १४ नृवाजिकाञ्चनशिबिकाभिरच्युतंसहात्मजाःपतिमनुसुव्रताययुः ॥ वराम्बराभरणविलेपनस्रजःसुसंवृतानृभिरसिचर्मपाणिभिः १५ नरोष्ट्रगोम
हिषखराश्वतर्यनःकरेणुभिःपरिजनवारयोषितः ॥ स्वलंकृताःकटकुटिकम्बलाम्बराद्युपस्कराययुरधियुज्यसर्वतः १६ बलंबृहद्ध्वजपटछत्रचामरैर्वरायुधाभरणकि
रीटवर्मभिः ॥ दिवांऽशुभिस्तुमुलरवंबभौरवेर्यथाऽर्णवःक्षुभिततिमिङ्गिलोर्मिभिः १७ अथोमुनिर्यदुपतिनासभाजितःप्रणम्यतंहृदिविदधद्विहायसा ॥ निश
म्यतद्व्यवसितमाहृतार्हणोमुकुन्दसन्दर्शननिर्वृतेन्द्रियः १८ राजदूतमुवाचेदंभगवान्प्रीणयन्गिरा ॥ माभैष्टदूतभद्रंवोघातयिष्यामिमागधम् १९ इत्युक्तःप्र
स्थितोदूतोयथावदवदन्नृपान् ॥ तेऽपिसंदर्शनंशौरेःप्रत्यैक्षन्यन्मुमुक्षवः २० आनर्तसौवीरमरूंस्तीर्त्वाविनशनंहरिः ॥ गिरीन्नदीरतीयाय पुरग्रामव्रजाकरा

इन करिकै और सुन्दर हथियार गहने किरीट बखतर इत्यादिकनकी चमकहै ता करिकैं और सूर्यकी किरण हैं तिन करिकैं दिवस में सुन्दर लगति भई जैसे क्षोभ कूं प्राप्तभये जे ग्राह और लहर
हैं तिन करिकैं जैसे समुद्र सुन्दर लगे है १७ याके पीछे यादवन के पति श्रीकृष्णचन्द्रने सत्कार जिनको करयो और पूजादीनी और श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन तें सुखी हैं इन्द्रिय जिनकी ऐसे
मुनि नारद हैं सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करिकैं और श्रीकृष्णचन्द्र ने निश्चय करयो है ताय श्रवण करिकैं और उनके स्वरूप कों हृदय में ध्यान करिकैं आकाशमार्ग में होय कै जातभये
१८ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र वाणी करिकै दूत कूं प्रसन्न करत भये हे दूत ! तुम राजान सूं जायकें कहो कि तुम मति भय करो तुम्हारो कल्याण होयगो जरासन्ध कूं मैं मारूंगो १९ याप्रकार
श्रीकृष्णचन्द्र ने कही तब दूत तहां से चलिकैं राजान के पास आय के श्रीकृष्णचन्द्र आवे हैं याप्रकार कहत भयो तब जरासन्ध के बन्दीखाने तें छूटिवे की इच्छा जिनके ऐसे राजा हैं ते श्री ३०

कृष्णचन्द्र को दर्शन कब होयगो ऐसे बैठो देखत भये २० ता पीछे आनर्त सौवीर मारवाड़ कुरुक्षेत्र इन देशन कूं उल्लङ्घन करिकै तथा पर्व्वत नदीनकूं और पुर ग्राम व्रज आकर इन सबन कूं उलांघि के २१ ताके पीछे दृषद्वती और सरस्वती नदी कूं तरिकै और पञ्चाल देशन कू तथा मत्स्यदेशन कूं उलांघिकै मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र इन्द्रप्रस्थ में आवत भये २२ मनुष्यन कूं दुर्लभ जिनको दर्शन ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आये श्रवण करिकै प्रसन्न होय कै अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर हैं सो उपाध्यायन कूं सङ्ग लैकै पुरके बाहर निकसत भये २३ गीत और बाजेनको जो शब्द है ता करिकै और बड़ो जो वेद को शब्द है ता करिकै राजा युधिष्ठिर हैं सो जैसे आदरयुक्त इन्द्रिय प्राण लेबे कों आवैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के सम्मुख लिवाइबे कूं आवत भये २४ श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिकै आर्द्र है हृदय जाको ऐसो जो पाण्डु को पुत्र राजा युधिष्ठिर है सो बहुत दिनन में देखे अत्यन्त प्यारे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं वारंवार आलिंगन करतभये २५ लक्ष्मी के रहिबे को निर्म्मल स्थान ऐसो जो श्रीकृष्णचन्द्र को अंग है ताय भुजानतें आलिंगन करिकै दूरि भये हैं पाप जाके हर्षित है तनु जाको नेत्रन में अश्रुयुक्त और विस्मृत हैं समस्त लौकिक

न् २१ ततो दृषद्वतीं तीर्त्वा मुकुन्दोऽथ सरस्वतीम् ॥ पञ्चालानथ मत्स्यांश्च शक्रप्रस्थमथागमत् २२ तमुपागतमाकर्ण्य प्रीतो दुर्दर्शनं नृणाम् ॥ अजातशत्रुर्निरगात् सोपाध्यायः सुहृद्वृतः २३ गीतवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा ॥ अभ्ययात्स हृषीकेशं प्राणाः प्राणमिवाऽऽदृतः २४ दृष्ट्वा विक्लिन्नहृदयः कृष्णं स्नेहेन पाण्डवः ॥ चिराद्दृष्टं प्रियतमं सस्वजेऽथ पुनः पुनः २५ दोर्भ्यां परिष्वज्य रमामलालयं मुकुन्दगात्रं नृपतिर्हताशुभः ॥ लेभे परां निर्वृतिमश्रुलोचनो हृष्यत्तनुर्विस्मृतलोकविभ्रमः २६ तं मातुलेयं परिरभ्य निर्वृतो भीमः स्मयन्प्रेमजवाकुलेन्द्रियः ॥ यमौ किरीटी च सुहृत्तमं मुदा प्रवृद्धबाष्पाः परिरेभिरेऽच्युतम् २७ अर्जुनेन परिष्वक्तो यमाभ्यामभिवादितः ॥ ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य वृद्धेभ्यश्च यथाऽर्हतः २८ मानितो मानयामास कुरुसृञ्जयकेकयान् ॥ सूतमागधगन्धर्वान्वन्दिनश्चोपमन्त्रिणः २९ मृदङ्गशङ्खपटहवीणापणवगोमुखैः ॥ ब्राह्मणाश्चारविन्दाक्षं तुष्टुवुर्ननृतुर्जगुः ३० एवं सुहृद्भिः पर्यस्तः पुण्यश्लोकशिखामणिः ॥ संस्तूयमानो भगवान् विवेशालंकृतं पुरम् ३१ संसिक्तवर्त्म करिणां मदगन्धतोयैश्चित्रध्वजैः कनकतोरणपूर्णकुम्भैः ॥ मृष्टात्मभिर्नवदुकूलविभूषणस्रग्गन्धैर्नृ

व्यवहार जातें ऐसो राजा युधिष्ठिर परमसुख कूं पावतभयो २६ मामा के पुत्र जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं आलिंगन करिकै प्रसन्न जो भीमसेन है सो प्रेम के वेग करिकै आकुल हैं इन्द्रिय जाकी ऐसो होत भयो बढ़े हैं नेत्रन में आंसू जिनके ऐसे नकुल सहदेव और किरीट है विद्यमान जाके ऐसो अर्ज्जुन ये सब अत्यन्त हितकारी जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं आनन्दपूर्वक आलिंगन करत भये २७ अर्ज्जुन बराबरि को है यातें श्रीकृष्णचन्द्र कूं छाती ते लगाय कै मिलत भयो और नकुल सहदेव ने नमस्कार करी यथायोग्य ब्राह्मणन कूं और वृद्धनकूं नमस्कार करिकै २८ मानिबे के योग्य ऐसे जे कुरुदेश सृञ्जयदेश और केकय देश के राजा हैं तिनैं और सूत मागध गन्धर्व भाट बन्दीजन हैं तिनैं सत्कार करत भये २९ मृदंग शङ्ख ढोल वीणा नगाड़े बांसुरी इनकूं बजाय कै ब्राह्मण कमल के समान नेत्रनवाले श्रीकृष्णजी की स्तुति करत भये और नाचत गावतभये ३० याप्रकार सुहृदनकूं संग लैकै पुण्यहै यश जिनको ऐसे जे युधिष्ठिरादिक हैं तिनके मुकुटमणि ऐसे

जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सबने स्तुति करी तब शोभायमान जो युधिष्ठिर को पुर तामें प्रवेश करत भये ३१ हाथीन के मद चुवे तासूं और सुगन्धयुक्त जे जल हैं तिनसूं छिरकाव जामें होय रह्यो ऐसे जामें मार्ग हैं चित्रविचित्र जे ध्वजा हैं तिन करिकै सुवर्ण के तोरण और जल के पूर्ण कलश तथा नवीन वस्त्र गहने माला केसरि अतर अरगजा इन करिकै शृंगार कियो है आत्मा जिनने ऐसे जे पुरुष और स्त्री हैं तिन करिकै शोभायमान ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर हैं तिनके महल देखत भये ३२ महलको वर्णन करें हैं प्रकाशमान दीपान की पंक्तिन करिकै और महल के झरोखान में तें निकसी जो धूपकी सुगन्ध ता करिकै शोभायमान हैं और प्रकाशमान जामें पताका हैं तथा रूपे के शिखरन के ऊपर सोने के कलश विराजमान हैं ऐसे कौरवन के राजा युधिष्ठिर के महल देखत भये ३३ मनुष्यन के नेत्रनकूं सौन्दर्यरूपी अमृत के पीवे को पात्र ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं आये श्रवण करिकै उत्कण्ठा करिके ढीले भये हैं केशन के और वस्त्रन के बन्धन जिनके ऐसी जे स्त्री हैं ते घरन के कार्य्यन कूं शीघ्र त्यागिकै और शय्यान के ऊपर पतिन कूं त्यागि कै देखिवे के निमित्त राजमार्ग जो बाजार है तामें आवति भई ३४ हाथी घोड़ा रथ प्यादे इनकी भीर जामें होय

भिर्युवतिभिश्चविराजमानम् ३२ उद्दीप्तदीपवलिभिः प्रतिसद्मजालनिर्यातधूपरुचिरंविलसत्पताकम्॥ मूर्द्धन्यहेमकलशैरजतोरुशृङ्गैर्जुष्टंददर्शभवनैः कुरुराजधाम ३३ प्राप्तंनिशम्यनरलोचनपानपात्रमौत्सुक्यविश्लथितकेशदुकूलबन्धाः॥ सद्योविसृज्यगृहकर्म्मपतींश्चतल्पे द्रष्टुंययुर्युवतयःस्मनरेन्द्रमार्गे ३४ ऊचुःस्त्रितस्मिन्सुसंकुलइभाश्वरथद्विपद्भिः कृष्णंसभार्य्यमुपलभ्यगृहाधिरूढाः॥ नार्य्योविकीर्य्यकुसुमैर्मनसोपगुह्यसुस्वागतंविदधुरुत्स्मयवीक्षितेन ३५ ऊचुःस्त्रियःपथिनिरीक्ष्यमुकुन्दपत्नीस्ताराग थोडुपसहाः किमकार्य्यमूभिः॥ यच्चक्षुषांपुरुषमौलिरुदारहासलीलावलोककलयोत्सवमातनोति ३६ तत्रतत्रोपसङ्गम्य पौरामङ्गलपाणयः॥ चक्रुःसपर्य्यांकृष्णाय श्रेणीमुख्याहतैनसः ३७ अन्तःपुरजनैःप्रीत्या मुकुन्दःफुल्ललोचनैः॥ ससम्भ्रमैरभ्युपेतः प्राविशद्राजमन्दिरम् ३८ पृथाविलोक्यभ्रात्रेयं कृष्णंत्रिभुवनेश्वरम्॥ प्रीतात्मोत्थायपर्य्यङ्कात्सस्नुपापरिषस्वजे ३९ गोविन्दंगृहमानीयदेवदेवेशमादृतः॥ पूजायांनाविदत्कृ

रही ऐसो जो राजमार्ग है तामें रानीन सहित जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देखिकै घरन के ऊपर चढ़ी जे स्त्री हैं ते फूलन कूं बरसाय कै मनसूं आलिंगन करिकै मुसिकानिपूर्वक जो चितवनि है तासूं देखिकै भले आये या प्रकार कहति भई ३५ जैसे चन्द्रमा सहित तारागण ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकी रानी हैं तिनें मार्ग में देखिकै इन रानीन ने कहा पुण्य कर्यो है देखो पुरुषन में मुकुटतुल्य श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जिन स्त्रीनके नेत्रनकू उदारहास लीलापूर्वक चितवनि के लेशसूं आनन्दकूं विस्तार करें है ऐसे सब स्त्री कहति भई ३६ दूरि भये हैं पाप जिनके ऐसे जे पंक्तिन में मुख्य मुख्य पुरके बासी हैं ते पान सुपारी बताशे नारियल ये सब मंगलवस्तु हैं तिनकू हाथ में लैकै श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजा करत भये ३७ प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके खुशी के मारे हरबराहट जिनकूं भयो ऐसे जे अन्तःपुरके बासीजन हैं तिनने प्रीतिपूर्वक सम्मुख आयकै सत्कार जिनकूं कियो ऐसे जे मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा के मन्दिर में जात भये ३८ त्रिलोकी के ईश्वर अपने भय्याके पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देखि कै प्रसन्न है मन जाको ऐसी कुन्ती अपनी बहू द्रौपदी सहित पलग पैतें उठिकै श्रीकृष्णचन्द्र सूं मिलति भई ३९ देवन के देव और ब्रह्मादिकनके ईश्वर जो गोविन्द ३०

श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं नर में लायकै आनन्द करिकै सुधि जाकूं नहीं ऐसे राज युधिष्ठिर हैं सो पूजा करिबे की जो विधि है ताय भी न जानत भये ४० हे राजन् परीक्षित्! द्रौपदी और बहिन जो सुभद्रा है ताने प्रणाम जिनकूं करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो पिता वसुदेवजी की बहिन जो कुन्ती है ताकूं और बड़ेन की स्त्री हैं तिनकूं प्रणाम करतभये ४१ सासु कुन्ती ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसी जो द्रौपदी है सो सम्पूर्ण जो श्रीकृष्णचन्द्र की रानी हैं रुक्मिणी सत्यभामा भद्रा जाम्बवती इनको पूजन करातिभई ४२ कालिन्दी मित्रविन्दा लक्ष्मणा पतिव्रता नाग्नजिती इनकूं और जे संगआई हैं तिनकूं वस्त्र माला अतर अरगजा चन्दन इत्यादिकन करिकै पूजा करतिभई ४३ धर्मराज जो राजा युधिष्ठिर हैं सो सेना टहलुवान मन्त्रिन और रानीन सहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनैं नित्य नये सुख सूं राखत भये ४४ अर्ज्जुनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अग्नि कू खाण्डववन सू तृप्त करिकै जा मय नामा दैत्य ने राजा युधिष्ठिर कूं दिव्यसभा बनायकै दीनी वा मय दैत्य कूं

त्यंप्रमोदोपहतोनृपः ४० पितृष्वसुर्गुरुस्त्रीणांकृष्णश्चक्रेऽभिवादनम् ॥ स्वयंचकृष्णयाराजन् भगिन्याचाभिनन्दितः ४१ श्वश्र्वासंचोदिताकृष्णा कृष्णपत्नीश्चसर्वशः ॥ आनर्च रुक्मिणींसत्यां भद्रांजाम्बवतींतथा ४२ कालिन्दींमित्रविन्दाञ्च शैब्यांनाग्नजितींसतीम् ॥ अन्याश्चाभ्यागतायास्तुवासःस्रङ्मण्डनादिभिः ४३ सुखंनिवासयामास धर्म्मराजोजनार्द्दनम् ॥ ससैन्यंसानुगामात्यं सभार्य्यञ्चनवंनवम् ४४ तर्पयित्वाखाण्डवेन वह्निफाल्गुनसंयुतः ॥ मोचयित्वामयंयेन राज्ञेदिव्यासभाकृता ४५ उवासकतिचिन्मासान् राज्ञःप्रियचिकीर्षया ॥ विहरन्रथमारुह्य फाल्गुनेनभटैर्वृतः ४६ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे कृष्णस्येन्द्रप्रस्थगमनंनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ एकदातुसभामध्यआस्थितोमुनिभिर्वृतः ॥ ब्राह्मणैःक्षत्रियैर्वैश्यैर्भ्रातृभिश्चयुधिष्ठिरः १ आचार्य्यैःकुलवृद्धैश्चज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ शृण्वतामेवचैतेषामाभाष्येदमुवाचह २ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ क्रतुराजेनगोविन्द राजसूयेनपावनीः ॥ यक्ष्येविभूतीर्भवतस्तत्सम्पादयनःप्रभो ३ त्वत्पादुके

वन तें छुड़ावत भये ४५ रथ में सवार होयकै अर्ज्जुन कूं तथा और योद्धान कूं संग लैकै विहार करत राजा युधिष्ठिरके प्रिय करिबे के निमित्त कितने मासपर्य्यन्त वास करतभये ४६ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे कृष्णस्येन्द्रप्रस्थगमनंनामैकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ततोद्विसप्ततितमेराज्ञा कार्य्येनिवेदिते ॥ दुर्जयंमागधंयुक्त्याभीमेनाघातयद्धरिः १ बहत्तरवें अध्याय में राजा युधिष्ठिरसूं कार्य्य निवेदित होने मों जरासन्ध कूं दुःख सूं जीतवेवाला समझकर कृष्ण जी भीमसेनसू नाश करातेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! एक समय मुनीश्वर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य भय्या आचार्य्य और कुल में वृद्ध तथा ज्ञातिके सम्बन्धी बान्धव इन सहित सभाके बीच बैठे ऐसे राजायुधिष्ठिर हैं सो इन सबके श्रवण करत भो कृष्णभक्तवत्सल! या प्रकार सम्बोधन दैकै बोलतभये १ । २ हे समर्थ! यज्ञन को राजा जो राजसूय यज्ञ है ता करिकै पवित्रकरनेहारे जे तुम्हारे देवता हैं तिन को पूजन करूंगो यह कार्य्य आप सिद्धकरो ३ अभद्रको नाशकरनवारी जे तुम्हारी चरणपादुका हैं तिनको जे पुरुष सेवन ध्यान

और पवित्र होयकै वाणी सूं नाम लेत हैं हे कमलनाभ ! वेही पुरुष संसार तें छूटत है और जो चाहना करे हैं वे मनोरथ उनहीं के सिद्ध होय हैं और कैसोही चक्रवर्ती क्यों न होय विना भक्ति कछु नहीं होय है ४ ता कारण हे देवनके देव ! यह लोक या संसार में तुम्हारे चरणारविन्दकी सेवा के प्रभावकूं देखे है सो हे समर्थ ! जे पुरुष कर्मादिकनकूं मोक्ष मानें कौरव सृञ्जय हैं तिनको मोह दूरि करिवे के निमित्त जे तुम्हें भजे हैं तिनकूं और जे नहीं भजे हैं तिनकूं अपने भजनको प्रताप दिखावो ५ सबके आत्मा समदर्शी आत्मसुख को अनुभव जिनकूं ऐसे ब्रह्म जो तुम हो तिनके अपनो विरानो यह भेदबुद्धि नहीं है जैसे कल्पवृक्ष को जो सेवन करै ताही कूं फल प्राप्त होइहै ऐसेही जो तुम्हारो सेवन करै तिनहीं पै प्रसन्न होत हो जैसी जो सेवा करै ताकूं तैसोही फल देउहो यामें विपरीत नहीं है ६ अब श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले हे राजन् युधिष्ठिर ! हे शत्रुनके नाश करनवारे ! तुमने यह भलो निश्चय करयो है या यज्ञके करे तें लोकनमें तुम्हारी मंगल रूप कीर्त्ति फैलेगी ७ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर ! यह सब यज्ञनको राजा राजसूय यज्ञ तुमने करनो विचारो है सो ऋषि और पितृ तथा देवता और सुहृद् तथा हम और समस्त प्राणीन कूं प्यारो

अविरतंपरियेचरन्तिध्यायन्त्यभद्रनशनेशुचयोगृणन्ति ॥ विन्दन्तिनेकमलनाभभवापवर्गमाशासतेयदिनआशिषईशनान्ये ४ तद्देवदेवभवतश्चरणारविन्दसेवानुभावमिहपश्यतुलोकएषः॥ येत्वांभजन्तिनभजन्त्युतवोभयेपानिष्ठाप्रदर्शयविभोकुरुसृञ्जयानाम् ५ नब्रह्मणःस्वपरभेदमतिस्तवस्यात्सर्वात्मनःसमदृशःस्वसुखानुभूतेः ॥ संसेवतांसुरतरोरिवतेप्रसादः सेवाऽनुरूपमुदयोनविपर्ययोत्र ६॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सम्यग्व्यवसितंराजन्भवताशत्रुकर्शन ॥ कल्याणीयेनतेकीर्त्तिर्लोकाननुभविष्यति ७ ऋषीणांपितृदेवानां सुहृदामपिनःप्रभो॥ सर्वेषामपिभूतानामीप्सितःक्रतुराडयम् ८ विजित्यनृपतीन्सर्वान्कृत्वाचजगतींवशे॥ संभृत्यसर्वसम्भारानाहरस्वमहाक्रतुम् ९ एतेतेभ्रातरोराजँल्लोकपालांशसम्भवाः ॥ जितोस्म्यात्मवतातेऽहं दुर्जयोयोऽकृतात्मभिः १० नकश्चिन्मत्परंलोके तेजसायशसाश्रिया॥ विभूतिभिर्वाऽभिभवेद्देवोऽपिकिमुपार्थिवः ११ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ निशम्यभगवद्गीतं प्रीतःफुल्लमुखाम्बुजः॥ भ्रातॄन्दिग्विजयेऽयुङ्क्त विष्णुतेजोऽपबृंहितान् १२ सहदेवंदक्षिणस्यामादिशत्सहसृञ्जयैः ॥ दिशिप्रतीच्यांनकुलमुदीच्यांसव्यसाचिनम् ॥

है ८ समस्त राजानकूं जीतिकै सम्पूर्ण पृथ्वी कूं वशमें करिकै समस्त वस्तुन कूं इकठौरी करिकै बडे यज्ञकूं तुम करो ९ हे राजन् युधिष्ठिर ! ये तेरे भय्या लोकनके पालन करनवारे जे देवता तिनके अंश तें उत्पन्न भये हैं परन्तु इन्द्रिय जिनने जीती नहीं हैं यातें मैं वशमें नहीं आऊं हू और इन्द्रियजित् जो तू है ताके वशमें हूं १० मेरो आश्रय जाने लियो ऐसो जो पुरुष है ताकूं लोक में तेज यश श्री और वैभव करिकै कोई देवता भी पराभव नहीं करिसकै है तौ राजा कहा तें करि सकैगो ११ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को वचन सुनिकै प्रसन्नता सूं प्रफुल्लित है मुख जाको ऐसो राजा युधिष्ठिरहै सो भगवान्के तेज तें बढे ऐसे जे अपने भ्राता हैं तिनें दिशान के जीतिवे के लिये भेजत भये १२ सृञ्जयदेश के राजान कूं संग करिकै दक्षिण दिशाके राजान के जीतिवे कूं सहदेव कूं आज्ञा देत भये और मत्स्यदेश के राजान कूं संग करिकै पश्चिमदिशा के राजान के जीतिवे कूं नकुल कूं आज्ञा देत भये और केकयदेश के राजान

कूं संग करिकै उत्तरदिशाके राजान के जीतिवे कूं अर्ज्जुन कूं आज्ञा देत भये और मद्रदेश के राजानकूं संग करिकै पूर्व्वदिशा के राजान के जीतिवे कूं भीमसेन कूं आज्ञा देत भये १३ हे राजन् परीक्षित् ! सहदेव नकुल अर्ज्जुन भीमसेन जे वीर हैं ते सम्पूर्ण दिशान तें राजान कूं बल करिकै जीति के यज्ञ कर्यो चाहे ऐसो अजातशत्रु जा राजा युधिष्ठिर है ताकूं बहुत द्रव्य लाय कै देत भये १४ और सब दिशानके राजा जीते गये परन्तु पूर्वदिशा को राजा जरासन्ध जीतिवे में नहीं आयो या बात कूं श्रवण करिकै अतिचिन्ता जाकूं भई ऐसो राजा युधिष्ठिर ताकूं जो उपाय उद्धवजी ने श्रीकृष्णचन्द्र कूं बतायो हो सो उपाय श्रीकृष्णचन्द्र राजा युधिष्ठिर तें कहत भये १५ तब तो भीमसेन अर्जुन श्रीकृष्णचन्द्र तीनों ब्राह्मण बनिकै हे राजन् परीक्षित् ! जहा बृहद्रथ को पुत्र जरासन्ध गिरिव्रज नाम किला में रहे है तहा जात भये १६ ब्राह्मण को वेष धारण करे ऐसे जे क्षत्रिय हैं ते अभ्यागतन के आइवे के समय ब्रह्मभक्त गृहस्थ घरमें रहे ऐसो जो राजा जरा-

प्राच्यांवृकोदरंमत्स्यैः केकयैःसहमद्रकैः १३ तेविजित्यनृपान्वीराआजहुर्दिग्भ्यओजसा ॥ अजातशत्रवेभूरिद्रविणंनृपयक्ष्यते १४ श्रुत्वाऽजितंजरासन्धंनृपतेर्ध्यायतोहरिः ॥ आहोपायंतमेवाऽद्यउद्धवोयमुवाचह १५ भीमसेनोऽर्जुनःकृष्णोब्रह्मलिङ्गधरास्त्रयः ॥ जग्मुर्गिरिव्रजंतात बृहद्रथसुतोयतः १६ तेगत्वातिथ्यवेलायांगृहेषुगृहमेधिनम् ॥ ब्रह्मण्यंसमयाचेरन्राजन्याब्रह्मलिङ्गिनः १७ राजन्विद्ध्यतिथीन्प्राप्तानर्थिनोदूरमागतान् ॥ तन्नःप्रयच्छभद्रन्ते यद्वयंकामयामहे १८ किन्दुर्मर्षंतितिक्षूणांकिमकार्य्यमसाधुभिः ॥ किन्नदेयंवदान्यानांकःपरःसमदर्शिनाम् १९ योनित्येनशरीरेण सतांगेयंयशोध्रुवम् ॥ नाचिनोतिस्वयंकल्पः सवाच्यःशोच्यएवसः २० हरिश्चन्द्रो❀रन्तिदेवउञ्छवृत्तिःशिबिर्बलिः ॥ व्याधःकपोतोबहवोह्यध्रुवेणध्रुवंगताः २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ स्वरैराकृ

सन्ध है ताते भिक्षा मागत भये १७ हे राजन् जरासन्ध ! हम दूरि तें आये हैं मांगनवारे अतिथि हैं तिनें तुम जानो जो हम चाहना करे हैं वह वस्तु तुम हम कूं देउ तुम्हारो कल्याण होयगो यह वस्तु हम मागै हैं या प्रकार नाम लैके क्यों न कहो तहा कहे हैं नाम लैकै पुत्र मांगोगे तौ पुत्र कब दियो जायगो और मुकुट तें आदिलैके आभूषण मागोगे तौ भिखारीन कू कैसे देउँगो तथा रत्नजटित गहनो पुत्रादिकों के योग्य है सो दूसरे कूं कैसे दियो जाय ऐसे जरासन्ध कहै ताको उत्तर कहे हैं १८ सहनशील जे पुरुष हैं ते कहा नहीं सहि सके है दुर्जनन स् क्या नहीं करने योग्य है और दातान कूं कौन वस्तु देवे योग्य नहीं है और समदर्शीन के कौन दूसरो शत्रु है याते नाम लेवे तें कहा है जो मांगैं सो देउ १९ साधु जाकूं गावे ऐसे नित्य यशकूं जो पुरुष अनित्य देह तें आप समर्थ होयकै नहीं करै वह पुरुष निन्दा योग्य है और शोच करिवे योग्य है २० राजा हरिश्चन्द्र तथा रन्तिदेव और मुद्गलश्चापि राजा शिबि तथा बलि व्याध और कपोतपक्षी और ऐसे बहुत

❀ विश्वामित्रायर्थानृण्याय हरिश्चन्द्रोभार्यापुत्रादिसर्वं विक्रीय स्वयंचाण्डालतांप्राप्तोऽप्यनिर्विण्णः सहायोध्यावासिभिर्जनैः स्वर्गंगतः रन्तिदेवः सकुटुम्बोऽष्टचत्वारिंशद्दिनान्यलब्धोदकोऽपिकथंचिल्लब्धान्नोदकान्यतिथिभ्योदत्त्वा ब्रह्मलोकंगतः उञ्छवृत्तिर्मुद्गलः पण्मासं सोदत्कुटुम्बोऽपि आतिथ्यदानेनब्रह्मलोकंगतः शिबिः शरणागतकपोतरक्षणाय स्वमांसश्येनायदत्त्वा दिवंगतः बलिः सर्वस्वंब्राह्मणवेषधारिणेहरयेदत्त्वा तमेवात्मसात्चकार कपोतः आतिथ्ये व्याधाय कपोतीमङ्ग स्वमांसदत्त्वा विमानेन दिवंगतः व्याधस्तयोः सरोषाश्च स्वयमतिनिर्विण्णोमहाप्रस्थाने वनाग्निदग्धदेहः शिवस्वरूपो दिवमारुरोह एवमन्येचबहवोऽध्रुवेणशरीरेणध्रुवंगताइति ५ ॥

महात्मा या अनित्य देह करिकै भुवर्लोक में जातभये २१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! कर्कश बोलनि और स्वरूप इनकों तथा धनुषके प्रत्यञ्चा के घट्टे जिनमें परिरहे ऐसे पहुँचने कूं देखिकै ये क्षत्रियन में नीच हैं यह जानिकै द्रौपदी के स्वयंवर में पहिले मैंने देखे हैं यह विचार करतभयो २२ ये क्षत्रियन में नीच है परन्तु ब्राह्मण को स्वाग धरे हैं या कारण दियो न जाय ऐसो जो अपनो आत्मा है ताय भी इनकूं भिक्षा देऊँगो कदाचित् मांगेंगे तो २३ विष्णु भगवान् ने ब्राह्मण को स्वरूप वामन अवतार धारिकै ऐश्वर्यतें भ्रष्ट जाकूं करि दियो ऐसो राजा बलि ताकी निर्मल कीर्ति अब पर्यन्त पृथ्वी पै सुनी जाति है २४ इन्द्र के अर्थ लक्ष्मी हरिवे के लिये ब्राह्मण को रूप धरिकै प्राप्त भये ऐसे जे विष्णु भगवान् हैं तिनकूं जाने भी हैं कि मेरे छलिवे के लिये आये हैं और शुक्राचार्य ने मने भी करचो तथापि दैत्यन को राजा बलि है सो वामनजी कूं पृथ्वी दान करत भयो २५ एक दिन जो यह देह पतनहोयगी परन्तु जीवतहूं क्षत्रियकी देहसूं ब्राह्मण के अर्थ निर्मल यश कूं न करे तो या देहसूं कहा प्रयोजन है २६ या प्रकार निश्चय करिकै उदार है बुद्धि जाकी ऐसो राजा जरासन्ध है सो श्रीकृष्ण अर्ज्जुन भीमसेन इनसूं कहतभयो

निभिस्तांस्तु प्रकोष्ठेर्ज्याहतैरपि॥राजन्यबन्धून्विज्ञाय दृष्टपूर्वानचिन्तयत् २२ राजन्यबन्धवोह्येते ब्रह्मलिङ्गानिबिभ्रति॥ ददामिभिक्षितेभ्यआत्मानमपि दुस्त्यजम् २३ बलेर्नुश्रूयतेकीर्त्तिर्विततादिक्ष्वकल्मषा॥ ऐश्वर्याद्भ्रंशितस्यापिविप्रव्याजेनविष्णुना २४ श्रियंजिहीर्षतेन्द्रस्यविष्णवेद्विजरूपिणे॥जानन्नपिमहींप्रादाद्वार्य्यमाणोऽपिदैत्यराट् २५ जीवताब्राह्मणार्थाय कोऽन्वर्थःक्षत्रबन्धुना॥ देहेनपतमानेन नेहताविपुलंयशः २६ इत्युदारमतिःप्राह कृष्णार्ज्जुनवृकोदरान्॥ हेविप्राव्रियतांकामोददाम्यात्मशिरोऽपिवः २७ ॥ श्रीभगवानुवाच॥ युद्धंनोदेहिराजेन्द्र द्वन्द्वशोयदिमन्यसे ॥ युद्धार्थिनोवयंप्राप्ताराजन्यानान्नकाङ्क्षिणः २८ असौवृकोदरःपार्थस्तस्यभ्राताऽर्ज्जुनोह्ययम्॥ अनयोर्मातुलेयंमां कृष्णंजानीहितेरिपुम् २९ एवमावेदितोराजा जहासोच्चैःस्म मागधः॥ आहचामर्षितोमन्दायुद्धंतर्हिददामिवः ३० नत्वयाभीरुणायोत्स्येयुधिविक्लवचेतसा॥ मथुरांस्वपुरींत्यक्त्वा समुद्रंशरणंगतः ३१ अयंतुवयसाऽतुल्योनातिसत्त्वोनमेसमः॥ अर्ज्जुनोनभवेद्योद्धा भीमस्तुल्यबलोमम ३२ इत्युक्त्वाभीमसेनाय प्रादायमहतींगदाम्॥ द्वितीयांस्वयमादाय निर्जगामपु

हे ब्राह्मणो! जो तुम्हारे इच्छा होय सो वर मांगो तब श्रीकृष्ण फेरि पक्की करेहैं जो मांगें सो देउगे तब जरासन्ध कहे है वारंवार कहा कहो हौ शिरपर्य्यन्त मांगोगे तो देउंगो २७ तबतो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् बोले हे राजान के इन्द्र राजन् जरासन्ध! तुम्हारे मन में आवै तो द्वन्द्वयुद्ध देव युद्ध के निमित्त हम क्षत्रिय तुम्हारे पास आये हैं अन्न के लेनवारे ब्राह्मण हम नहीं हैं २८ तब जरासन्ध ने पूंछचो तुम कौनहो श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं वृकनामा अग्नि जाके उदर में ऐसो पृथा को पुत्र यह भीमसेन है और याको भय्या यह अर्ज्जुन है और इनके मामा को पुत्र तेरो पहिलो वैरी मैं श्रीकृष्णचन्द्र हूं यह जानिले २० या प्रकार श्रवण करिकै मगधदेशको राजा जरासन्ध बहुत हँसत भयो पीछे क्रोध में भरिकै हे मूर्खो! मैं तुमकू युद्ध देउंगो या प्रकार कहत भयो ३० अरे डरपोकना व्याकुल है चित्त जाको ता तेरे संग मैं युद्ध नहीं करूंगो मेरे डरतें तूं अपनी मथुरापुरी त्यागि कै समुद्र में जायकै वस्यो है ३१ अर्ज्जुन है सो मो तें अवस्था में न्यून है और न मेरी

बराबरि बलवान् है याते अर्ज्जुन योद्धा न होयगो हां भीमसेन मेरी बराबरि बल में है याके संग युद्ध होयगो ३२ इतनी बात करिके भीमसेन कूं बड़ी गदा देके और दूसरी गदा आप लेके पुर तें बाहर निकसत भयो ३३ ता पीछे बड़ो है मद जिनके ऐसे बीर जे भीमसेन जरासन्ध हैं ते परस्पर मिलिके रणभूमि में बज्र की तुल्य जे गदा हैं तिन करिके प्रहार करत भये ३४ रणभूमि में प्राप्त जे नट हैं तिनके बायें दाहिने जे विचित्र मण्डल हैं तिनमें जैसे फिरें ऐसे भीमसेन और जरासन्ध हैं तिनको युद्ध सुन्दर लगत भयो ३५ ता पीछे हे राजन् परीक्षित् ! दांत हैं विद्यमान जिनके ऐसे हाथीन के दांतन को जैसे शब्द होयहै तैसे दोनों वीरन की चली जे गदा हैं तिनको वज्र जैसे पिसे ऐसे चटचटा शब्द होत भयो ३६ युद्ध करें बढ़ो है कोप जिनके ऐसे हाथीन की लड़ाई में आक की लकड़ी जैसे चूर्ण होय जाय है तैसे भुजान के वेग तें आपुसमें चली ऐसी जे गदा हैं ते कन्धा कमर पांव हाथ जंघा जत्रु इनसूं लगिके चूर्ण होतभई ३७ या प्रकार जब दोनों की गदा टूटिगई तब क्रोधी जे मनुष्यन में वीर भीमसेन जरासन्ध हैं ते लोहे की तुल्य है स्पर्श जिनको ऐसी मुष्टीनकी मार शरीरमें मारतभये हाथीन की तुल्य आपुस में मारें ऐसे जे जरासन्ध

राद्धरिः ३३ ततःसमेत्यखलेवीरौ संयुक्तावितरेतरौ ॥ जघ्नतुर्वज्रकल्पाभ्यांगदाभ्यांरणदुर्म्मदौ ३४ मण्डलानिविचित्राणि सव्यंदक्षिणमेवच ॥ चरतोःशुशुभेयुद्धं नटयोरिवरङ्गिणोः ३५ ततश्चटचटाशब्दो वज्रनिष्पेषसन्निभः ॥ गदयोःक्षिप्तयोराजन् दन्तयोरिवदन्तिनोः ३६ तेवैगदेभुजजवेननिपात्यमाने अन्योऽन्यतोऽसकटिपादकरोरुजत्रून् ॥ चूर्णीबभूवतुरुपेत्ययथार्कशाखे संयुध्यतोर्द्दिरदयोरिवदीप्तमन्य्वोः ३७ इत्थंतयोःप्रहतयोर्गदयोर्नृवीरौ क्रुद्धौस्वमुष्टिभिरयःस्पर्शैरपिष्टाम् ॥ शब्दस्तयोःप्रहरतोरिभयोरिवाऽऽसीन्निर्घातवज्रपरुषस्तलताडनोत्थः ३८ तयोरेवंप्रहरतोःसमशिक्षाबलौजसोः ॥ निर्विशेषमभूद्युद्धमक्षीणजवयोर्नृप ३९ एवंतयोर्महाराजयुध्यतोःसप्तविंशतिः ॥ दिनानिनिरगंस्तत्रसुहृद्वन्निशितिष्ठतोः ४० एकदामातुलेयंवैप्राहराजन्वृकोदरः ॥ नशक्तोऽहंजरासन्धं निर्जेतुंयुधिमाधव ४१ शत्रोर्जन्ममृतीविद्वाञ्जीवितंचजराकृतम् ॥ पार्थमाप्याययन्स्वेन तेजसाऽचिन्तयद्धरिः ४२ सञ्चिन्त्यारिवधोपायं भीमस्यामोघदर्शनः ॥ दर्शयामासविटपं पाटयन्निवसंज्ञया ४३ तद्विज्ञायमहासत्त्वोभीमःप्रहरतांवरः ॥ गृहीत्वापादयोःशत्रुंपातयामासभूतले ४४

भीमसेन हैं तिनकी मुक्की लगिके उठ्यो जो शब्द है सो जैसे बिना बादर वज्रपातको शब्द होय ता प्रकार कठोर शब्द होत भयो ३८ हे राजन् परीक्षित् ! नहीं घट्यो है वेग जिनको और बराबरि दाउँ पेंच बल प्रभाव जिनको मुक्की मारें ऐसे जे भीमसेन जरासन्ध हैं तिनको बराबर युद्ध होत भयो ३९ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार दिनमें तो युद्ध करें और रातिमें मित्रकी तुल्य एकठौरे रहें ऐसे जे भीमसेन जरासन्ध हैं तिन कूं युद्ध करत सत्ताईस दिन बीतगये ४० हे राजन् परीक्षित् ! एकसमय वृकनामा अग्नि है उदर में ऐसो भीमसेन है सो मामा के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनसूं बोलत भयो हे माधव ! युद्ध में जरासन्ध कूं मैं नहीं जीति सकूं हूं ४१ शत्रु जो जरासन्ध है ताको जन्म भयो है ताय और जैसे याकी मृत्यु होयगी ताय और जरानाम राक्षसी ने दो टूक जोरिकै जिवाय दियो ताय जानें ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अपने तेज करिकै भीमसेन कूं पुष्टि करिकै जरासन्ध की मृत्यु को उपाय विचारत भये ४२ सफल है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो

वैरी जरासन्ध के मारिवे को चिन्तन करिकै तुनका चीरकै सैन करिकै भीमसेनकूं दिखावत भये जैसे मैने यह तुनका चीरयो है ऐसे तूं याकू चीर डारु ४३ मारनवारेन में श्रेष्ठ बड़ो बलवान् भीमसेन है सो श्रीकृष्णचन्द्र ने जो सकेत कस्यो ताय जानिकै वैरी जो जरासन्ध है ताके पाव पकरिकै पृथ्वी में पटकत भयो ४४ जैसे बडो हाथी वृक्षकी शाखाकूं पकरिकै चीर डारे हैं तैसे पावसूं वाके एक पावकूं दाबि कै दूसरे पाव कूं भुजान तें पकरिकै गुदा के बीचतें चीरिकै डारत भयो ४५ एक एक है पांव जंघा अण्डकोश कमर पीठि स्तन कन्धा जिनमें एक एक भुजा नेत्र भ्रुकुटी और कान जिनमें ऐसे दो टूक करे तिनें प्रजा देखत भई ४६ मगधदेश को राजा जरासन्ध मस्यो तासमय बड़ो हाहाकार शब्द होत भयो और अर्ज्जुन तथा श्रीकृष्णचन्द्र भीमसेन कूं आलिङ्गन करिकै पूजन करत भये ४७ नहीं प्रमाण करिवे में आवै है स्वरूप जिनको ऐसे समर्थ सब प्राणीन के पालनवारे श्रीकृष्ण जरासन्ध के पुत्र सहदेव कू मगधदेश को राजतिलक देत भये और जरासन्ध ने जो वीस हजार आठसै राजा रोंके हैं तिनें बन्दीखाने तें छुड़ावत भये ४८ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेजरासन्धवधोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥ ॐ ॥

एकं पादं पदाऽऽक्रम्य दोर्भ्यामन्यं प्रगृह्य सः ॥ गुदतः पाटयामास शाखामिव महागजः ४५ एकपादोरुवृषणकटिपृष्ठस्तनांसके ॥ एकबाह्वक्षिभ्रूकर्णे शकले ददृशुः प्रजाः ४६ हाहाकारो महानासीन्निहते मगधेश्वरे ॥ पूजयामासतुर्भीमं परिरभ्य जयाच्युतौ ४७ सहदेवं तत्तनयं भगवान् भूतभावनः ॥ अभ्यषिञ्चदमेयात्मा मगधानां पतिं प्रभुः ॥ मोचयामास राजन्यान् संरुद्धा मागधेन ये ४८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे जरासन्धवधो नाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुक उवाच ॥ अयुते द्वे शतान्यष्टौ लीलया युधि निर्जिताः ॥ ते निर्गता गिरिद्रोण्यां मलिना मलवाससः १ क्षुत्क्षामाः शुष्कवदनाः संरोधपरिकर्शिताः ॥ ददृशुस्ते घनश्यामं पीतकौशेयवाससम् २ श्रीवत्साङ्कं चतुर्बाहुं पद्मगर्भारुणेक्षणम् ॥ चारुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ३ पद्महस्तं गदाशङ्खरथाङ्गैरु

(ततस्त्रिसप्ततितमे मोचयित्वा नृपान्हरिः ॥ राजार्हभोगैः स्वान्देशान्प्रस्थाप्य पुनरागमत् १ अत्युन्नद्धजरासन्धवधात्तद्रुद्धभूपतीन् ॥ विमोच्य कृपया कृष्णो निजरूपमदर्शयत् २ तिहत्तरवें अध्याय में कृष्णजी राजाओं को छुड़ाकर राजाओं के योग्य भोगनसूं अपने देशोंको बिदाकर फिर हस्तिनापुरमें प्राप्त होजातेभये १ कृष्णजी अत्यन्त उन्नद्ध जरासन्धके नाशसूं ताके रोंके हुये राजाओंको छुड़ाकर दया सूं उनको अपनो रूप दिखलाते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! मलिनहैं रूप और वस्त्र जिनके क्षुधा करिकै कृश सूखे हैं मुख जिनके रोंकने सूं क्लेशयुक्त ऐसे वीस हजार आठसै राजा गिरिद्रोणी किलामें रुँके हैं तिनकू लीला करिकै संग्राममें छुटावतभये ते समस्तराजा बन्दीखाने तें बाहर निकसिकै मेघकी तुल्यहै श्यामरूप जिनको पीरे वस्त्रनकू पहिरे ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखतभये १।२ अब जैसे स्वरूपको श्रीकृष्णचन्द्रको दर्शन कस्यो सो वर्णन करे हैं भृगुलताको चिह्न जिनके हृदयमें और चार जिनके भुजा और कमलके गर्भकी तुल्य अरुणहैं नेत्र जिनके

सुन्दर प्रसन्न मुखहै और प्रकाशमान मकराकृत कुण्डलनकूं धारण करे हैं ३ कमल जिनके हाथमें विराजमान गदा शंख चक्र इनकूं धारणकरे और किरीट हार कड़ा कौंधनी बाजूबन्द इनकूं पहिरे हैं ४ और प्रकाशमान सुन्दर मणि ग्रीवामें तथा गलेमें पावपर्य्यन्त वनमाला कूं धारणकरे ऐसे रूपकू देखिकै राजान कूं लूटिसी परि गई देखिकै नेत्र ऐसे चलावें मानों रूपको पीजायँगे जीभ ऐसी चलावें मानो चाटि जायगे नाक ऐसी फुलावें मानों सूंघि जायँगे भुजा ऐसी चलावें मानों स्वरूपको आलिङ्गन करिलेंगे पाप जिनके दूरिभये ऐसे राजा हैं ते शिरन सूं श्रीकृष्णचन्द्रके चरणनमें प्रणाम करतभये ५ । ६ श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन तें जो आनन्दभयो तासूं दूरि भयो है बन्दीखाने को क्लेश जिनको हाथ जोरे ऐसे समस्त राजा हृषीकेश जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं तिनकी वाणीन करिकै स्तुति करतभये ७ इन्द्रादिक देवतान के देव जो ब्रह्मादिक तिनके ईश्वर हे शरणागतनके कष्ट के हरनवारे! हे अविनाशी ! हे कृष्ण ! या घोर संसार तें दुःखितभये तुम्हारो शरण लियो ऐसे जे हम हैं तिनकी रक्षाकरो ८ हे नाथ ! हे मधुसूदन ! यह जो जरासन्ध है ताय दोष लगायकै हम नहीं देखे हैं हे प्रभो ! राजा जे हमहैं तिनको राज्य भ्रष्टभयो यह तुम्हारो अनुग्रहभयो ९ राज्य ऐश्वर्य्य

पलाशिनम् ॥ किरीटहारकटककटिसूत्राङ्गदाञ्चितम् ४ भ्राजद्वरमणिग्रीवं निवीतंवनमालया ॥ पिबन्तइवचक्षुर्भ्यांलिहन्तइवजिह्वया ५ जिघ्रन्तइवनासाभ्यांरम्भन्तइवबाहुभिः ॥ प्रणेमुर्हतपाप्मानोमूर्द्धभिःपादयोर्हरेः ६ कृष्णसन्दर्शनाह्लादध्वस्तसंरोधनक्लमाः ॥ प्रशशंसुर्हृषीकेशं गीर्भिःप्राञ्जलयोनृपाः ७ राजानऊचुः ॥ नमस्तेदेवदेवेश प्रपन्नार्त्तिहराव्यय ॥ प्रपन्नान्पाहिनःकृष्णनिर्विण्णान्घोरसंसृतेः ८ नैनंनाथानुसूयामो मागधंमधुसूदन ॥ अनुग्रहोयद्भवतोराज्ञांराज्यच्युतिर्विभो ९ राज्यैश्वर्यमदोन्नद्धोनश्रेयोविन्दतेनृपः ॥ त्वन्मायामोहितोनित्यामन्यतेसम्पदोऽचलाः १० मृगतृष्णांयथाबालामन्यन्तउदकाशयम् ॥ एवंवैकारिकींमायामयुक्तावस्तुचक्षते ११ वयंपुराश्रीमदनष्टदृष्टयोजिगीषयाऽस्याइतरेतरस्पृधः ॥ घ्नन्तःप्रजाःस्वाअतिनिर्घृणाःप्रभो मृत्युंपुरस्त्वाऽविगणय्यदुर्मदाः १२ तएवकृष्णाद्यगभीररंहसा दुरन्तवीर्येणविचालिताःश्रियः॥कालेनतन्वाभवतोऽनुकम्पया विनष्टदर्पाश्चरणौस्मरामते १३ अथोनराज्यंमृगतृष्णिरूपितं देहेनशश्वत्पततारुजांभुवा ॥ उपासितव्यंस्पृहयामहेविभो क्रियाफलंप्रेत्यचकर्णरोचनम् १४ तन्नःसमादिशोपायं येनते

के मद करिकै छोड़ी है मर्य्यादा जाने ऐसो जो राजा है सो तौ कल्याण कूं नहीं प्राप्त होयहै और तुम्हारी माया सूं मोहित होयकै अनित्य जे सम्पदा हैं तिनें अचल माने है १० जैसे अज्ञानीबालक सूर्य्य की किरणनसूं चमकै जो दाबहै ताय जलको सरोवर माने हैं ऐसेही अज्ञानी पुरुष हैं ते नानारूपि असत्रूपी जो माया है ताय सत्य माने है ११ धन के मद करिकै फूटे हैं नेत्र जिनके और पृथ्वीके जीतिवे की इच्छा करिकै आपुस में भई है ईर्षा जिनके अपनी प्रजानकूं मारें अत्यन्त निर्दयी और हे समर्थ ! आगे तुम कालरूप ठाढे हो तिनको अनादर करिकै पहिले दुष्ट हैं मद जिनको ऐसे हम होत भये १२ हे कृष्ण ! गम्भीर वेग और बडो पराक्रम जाको ऐसो तुम्हारी मूर्ति जो काल है ताने हम लक्ष्मी तें भ्रष्टकरे अब तुम्हारी कृपाकरिकै दूरिभये हैं गर्व जिन के ऐसे हम तुम्हारे चरणनको स्मरण करेंहैं १३ हे विभो ! याके पीछे नित्य आयु जाकी क्षीणहोय और रोगनकी खानि अर्थात् एक न एक रोग जामें उत्पन्नहोय ऐसी जो देह है तासूं मृगतृष्णारूप जो

मिथ्या राज्य है ताकी इच्छा हम नहीं करे हैं और कर्म्मन के फल जे स्वर्गादिक हैं तिनकी इच्छा हम नहीं करे हैं ते केवल कानन सूं श्रवणमात्र हैं १४ या संसार में भूले जे हम हैं तिनकूं तुम्हारे चरणारविन्द की भूल न होइ ऐसो उपाय बतावो १५ भक्तन के क्लेश कूं दूरि करनवारे शुद्ध अन्तःकरण के प्रकाशक हरि परमात्मा और तुम्हारो नाम लेइ ताके क्लेश के काटनवारे गोविन्द ऐसे जो तुमहो तिनकूं प्रणाम करे हैं १६ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! जरासन्ध के बन्दीखाने तें छूटे ऐसे जे राजाहैं तिनने स्तुति जिनकी करी ऐसे जे शरण के योग्य करुणावान् जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते मनोहर वाणी करिकै राजान तें बोलतभये १७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं हे राजाओ ! जैसे तुम ने चाहना करी तैसे सबको ईश्वर जो आत्मा मैं हूं ता मो में आज ते लैके तुम्हारी निश्चय दृढभक्ति भई १८ हे राजाओ ! सत्यवादी जे तुमहो तिनने मेरो भजन करिबो यह भलो सत्यसङ्कल्प निश्चय कियो है और मनुष्यन कूं धन ऐश्वर्य्य सूं मद है तासूं इच्छापूर्व्वक विचारिबो और उन्मत्तता है ताय देखूं हूं १९ कृतवीर्य्य को पुत्र चक्रवर्त्ती राजा सहस्रबाहु एकसमय जमदग्नि ऋषिकी गौ हरिकै लै आयो तब वाकूं परशुरामजी ने पुत्रन

चरणाब्जयोः ॥ स्मृतिर्यथा न विरमेदपि संसरतामिह १५ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ॥ प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः १६ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ संस्तूयमानो भगवान् राजभिर्मुक्तबन्धनैः ॥ तानाह करुणस्तात शरण्यः श्लक्ष्णया गिरा १७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अद्य प्रभृति वो भूपा मय्यात्मन्यखिलेश्वरे ॥ सुदृढा जायते भक्तिर्बाढमाशंसितं तथा १८ दिष्ट्या व्यवसितं भूपा भवन्त ऋतभाषिणः ॥ श्रियैश्वर्य्यमदोन्नाहं पश्य उन्मादकं नृणाम् १९ हैहयो नहुषो वेनो रावणो नरकोऽपरे ॥ श्रीमदाद्भ्रंशिताः स्थानाद्देवदैत्यनरेश्वराः २० भवन्त एतद्विज्ञाय देहाद्युत्पाद्यमन्तवत् ॥ मां यजन्तोऽध्वरैर्युक्ताः प्रजा धर्म्मेण रक्षथ २१ सन्तन्वन्तः प्रजातन्तून् सुखं दुःखं भवाभवौ ॥ प्राप्तं प्राप्तं च सेवन्तो मच्चित्ता विचरिष्यथ २२ उदासीनाश्च देहादावात्मारामा धृतव्रताः ॥ मय्यावेश्य मनः सम्यङ् मामन्ते ब्रह्म यास्यथ २३ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यादिश्य नृपान् कृष्णो भगवान् भुवनेश्वरः ॥ तेषां न्ययुङ्क्त पुरुषान् स्त्रियो मज्जनकर्म्मणि २४ सपर्य्याका

सहित मारयो और राजा नहुष मदोन्मत्त होयकै इन्द्राणी के पास जायवे के लिये ब्राह्मणन कूं पालकीमें लगाय के चल्यो तब ब्राह्मणन ने वाकूं ऐश्वर्य्य तें भ्रष्ट करिकै सर्प करिदियो और राजा वेन मतवारो होयकै ब्राह्मणनको तिरस्कार करयो तब ब्राह्मणनने हुङ्कार शब्द करिकै मारयो और राक्षसनके राजा रावणने सीताकी आकाक्षाकरी तब रामचन्द्रने मारयो तथा दैत्यनको राजा नरकासुर अदितिके कुण्डल हरिलायो तब मैंनेही मारयो और कितनेहूं देवता तथा दैत्य राजा धनके मदतें स्थानन तें भ्रष्ट होयगये २० और तुम सम्पूर्ण हौ ते उत्पन्न जे देहादिक हैं ते नाश होयँगे यह जानिकै यज्ञन करिकै मेरो पूजन और प्रजाकी रक्षाकरो २१ और पुत्रादिकन कूं उत्पन्न करो सुख दुःख जन्म मृत्यु जो प्राप्त होय ताको सेवन करो मो में चित्तकूं लगायकै विचरो २२ आत्मामें है रमण जिनको धारण कियो है व्रत जिनने ऐसे जे तुमहौ ते देह में और घरन में उदासीन होयकै भले प्रकार मो में मन लगावोगे तो अन्तमें मो ब्रह्मकूं पावोगे २३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! त्रिलोकी के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो या प्रकार राजानकूं आज्ञा करिकै तिनको उबटन स्नान और इन कर्म्मन के करायवे के निमित्त स्त्री पुरुषनकूं लगावत

भये २४ हे भरतवंशोत्तम राजन् परीक्षित! सुन्दर स्नान जिनने करे ऐसे जे राजा हैं तिनकी जरासन्ध के पुत्र सहदेव सूं राजान के योग्य जे वस्त्र आभूषण माला चन्दन इन करिकै पूजन करावत
भये २५ सुन्दर स्नान जिनने किये वस्त्र आभूषण करिके शोभित और नानाप्रकार के भोगन करिके युक्त ऐसे जे राजा हैं तिनकूं श्रेष्ठ अन्न भोजन करायकै राजान के योग्य जे ताम्बूलादिक हैं तिनें
देत भये २६ मुकुन्द श्रीकृष्णने पूजा जिनकी करी और प्रकाशमान कुण्डलन कूं पहिरे बन्दीखानेके क्लेशतें छुटाये ऐसे जे राजा हैं ते जैसे वर्षा ऋतुके पीछे आकाश में तारागण सुन्दर लगे हैं ऐसे
सुन्दर लगतभये २७ मणि और सुवर्ण के गहनेन करिकै शोभायमान जे राजा हैं तिने सुन्दर घोड़ा जिनमें जुगे ऐसे जे रथ हैं तिनमें बैठायके मनोहर वचनन सूं प्रसन्न करिकै श्रीकृष्णचन्द्र उनके देश-
नकूं भिजवावत भये २८ बड़े महात्मा जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने बन्दीखाने के कष्ट तें छुड़ाये ऐसे जे राजा हैं ते जगत् के पति जे श्रीकृष्ण हैं तिनको ध्यान और उनके कर्मनको ध्यान करत मार्ग में
जातभये २९ ते समस्त राजा जैसे महापुरुष श्रीकृष्णचन्द्र ने छुड़ाये और जैसे पूजा कराई यह सब वृत्तान्त अपनी प्रजाके आगे कहत भये और जा प्रकार श्रीकृष्णचन्द्र ने शिक्षा दीनी तैसेही आच-

रयामास सहदेवेनभारत ॥ नरदेवोचितैर्वस्त्रैर्भूषणैःस्रग्विलेपनैः २४ भोजयित्वावरान्नेन सुस्नातान्समलंकृतान् ॥ भोगैश्चविविधैर्युक्तांस्ताम्बूलाद्यैर्नृपो
चितैः २५ तेपूजितामुकुन्देन राजानोमृष्टकुण्डलाः ॥ विरेजुर्मोचिताःक्लेशात्प्रावृडन्तेयथाग्रहाः २६ रथान्सदश्वानारोप्य मणिकाञ्चनभूषितान् ॥ प्री
णय्यसूनृतैर्वाक्यैः स्वदेशान्प्रत्ययापयत् २७ तएवंमोचिताःकृच्छ्रात् कृष्णेनसुमहात्मना ॥ ययुस्तमेवध्यायन्तः कृतानिचजगत्पतेः २८ जगदुःप्रकृति
भ्यस्तं महापुरुषचेष्टितम् ॥ यथाऽन्वशासद्भगवांस्तथाचक्रुरतन्द्रिताः २९ जरासन्धंघातयित्वा भीमसेनेनकेशवः ॥ पार्थाभ्यांसंयुतःप्रायात्सहदेवेनपूजितः
३० गत्वातेखाण्डवप्रस्थं शङ्खान्दध्मुर्जितारयः ॥ हर्षयन्तःस्वसुहृदोदुर्हृदांचासुखावहाः ३१ तच्छ्रुत्वाप्रीतमनसइन्द्रप्रस्थनिवासिनः ॥ मेनिरेमागधंशान्तं
राजाचाप्तमनोरथः ३२ अभिवन्द्याथराजानं भीमार्जुनजनार्दनाः ॥ सर्वमाश्रावयाञ्चक्रुरात्मनायदनुष्ठितम् ३३ निशम्यधर्मराजस्तत्केशवेनानुकम्पि
तम् ॥ आनन्दाश्रुकलांमुञ्चन् प्रेम्णानोवाचकिञ्चन ३४ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेकृष्णाद्यागमनेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

रण करतभये ३० केशव जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भीमसेन करके जरासन्ध को घात करायकै और सहदेव सूं पूजन अपनो करायकै भीमसेन अर्जुन कूं संगलैके आवतभये ३१ दुष्ट है
हृदय जिनको ऐसे जे शत्रु हैं तिनकूं दुःख के देनवारे और अपने सुहृदन कूं आनन्द के देनवारे ऐसे जे श्रीकृष्ण भीमसेन अर्जुन हैं ते वैरी जरासन्ध कूं मारिकै इन्द्रप्रस्थ में जायकै शङ्खन कूं बजावत
भये ३२ शङ्खनको शब्द सुनिकै प्रसन्न हैं मन जिनके ऐसे जे इन्द्रप्रस्थ के निवासी हैं ते जरासन्धकी मृत्यु भई यह मानतभये और राजा युधिष्ठिर के मनोरथ पूर्ण होते भये ३३ याके पीछे भीमसेन अर्जुन
श्रीकृष्णचन्द्र आयकै राजा युधिष्ठिर कूं प्रणाम करिकै अपने जो कर्म करे सो सब सुनावतभये ३४ धर्मराज के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं सो ब्रह्मा महादेव के वश करनवारे श्रीकृष्णचन्द्रने जो कार्य
करचो ताय श्रवण करिकै नेत्रन सूं आनन्द के आंसूनकी धार बहावत प्रेममें विह्वल होयकै कछु न बोलत भये ३५ इति श्रीमद्भागवतभाषायांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

(चतुर्युक्तमप्रतितमेराजसूयक्रियाद्विजैः ॥ अग्रपूजाप्रसङ्गेनचैद्यघातादिवर्ण्यते १ राजसूयमुखे हत्वाजरासन्धंतदन्तरे ॥ चैद्यंतदन्तेकुर्वन्तं वीजंकलिमिवावपत् २ चौहत्तरवें अध्याय में ब्राह्मणों ने राजसूययज्ञ की क्रिया कराई तामें प्रथमही पूजा के प्रसङ्गसूं शिशुपालका नाश आदि वर्णित है१ राजसूययज्ञके मुखमें जरासन्ध को मारकर ताके वीच में शिशुपाल को मारकर अन्तमें लड़ाईका वीज सा बोते भये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार राजा युधिष्ठिर जरासन्धको वध सुनिके और श्रीकृष्णको प्रभाव सुनिके प्रसन्नहोयके श्रीकृष्णचन्द्र सूं वोलतभये १ जे पुरुष त्रिलोकी के गुरुहैं सब लोकनके वड़े ईश्वरहैं वे भी दुर्लभ पायके तुम्हारी आज्ञाकूं शिरपै धारण करेहैं २ हे व्यापक! कमल से हैं नेत्र जिनके ऐसे तुमहो सो ईश्वर आपेकूं मानें ऐसे जो कृपण हम हैं तिनकी आज्ञाकूं हे व्यापक! तुम धारण करो हो यह अत्यन्त अनुकरण है ३ एक अद्वितीय अर्थात् कोई जिनकी वरावर नहीं और कोई जिनतें वडो नहीं ऐसे जो परमात्मा तुमहो तिनको तेज परोपकार के लिये जो कर्म्म हैं तिनसूं न्यूनभी नहीं होयहै जैसे सूर्य्य को उदय अस्तमें आवत जात में तेज घटै वढै नहीं है ४ कदाचित् कहो कि मैं परमेश्वरहूं तो सबकी आज्ञा करनो यह मन्द कर्म्म क-

श्रीशुकउवाच ॥ एवंयुधिष्ठिरोराजा जरासन्धवधंविभोः ॥ कृष्णस्यचानुभावंतं श्रुत्वाप्रीतस्तमब्रवीत् १ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ येस्युस्त्रैलोक्यगुरवः सर्व्वे लोकमहेश्वराः ॥ वहन्तिदुर्लभंलब्ध्वा शिरसैवानुशासनम् २ सभवानरविन्दाक्षोदीनानामीशमानिनाम्॥धत्तेऽनुशासनंभूमंस्तदत्यन्तविडम्बनम् ३ न ह्येकस्याद्वितीयस्यब्रह्मणःपरमात्मनः ॥ कर्मभिर्वर्द्धतेतेजोह्रसतेचयथारवेः४ नवैतेऽजितभक्तानांममाहमितिमाधव ॥ त्वन्तवेतिचनानाधीःपशूनामिववैकृता ५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इत्युक्त्वायाज्ञियेकाले वव्रेयुक्तान्सऋत्विजः ॥ कृष्णानुमोदितःपार्थोब्राह्मणान्ब्रह्मवादिनः ६ द्वैपायनोभरद्वाजःसुमन्तुर्गौतमोऽसितः ॥ वसिष्ठश्च्यवनःकण्वोमैत्रेयःकवषस्त्रितः ७ विश्वामित्रोवामदेवःसुमतिर्जैमिनिःक्रतुः ॥ पैलःपराशरोगर्गोवैशम्पायनएवच ८ अथर्वाकश्यपोधौम्योरामोभार्गवआसुरिः ॥ वीतिहोत्रोमधुच्छन्दावीरसेनोऽकृतव्रणः ९ उपहूतास्तथाचान्ये द्रोणभीष्मकृपादयः॥ धृतराष्ट्रःसहसुतोविदुरश्चमहामतिः१० ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्रायज्ञदिदृक्षवः ॥ तत्रेयुःसर्वराजानोराज्ञांप्रकृतयोनृप ११ ततस्तेदेवयजनंब्राह्मणाःस्वर्णलाङ्गलैः ॥ कृष्ट्वातत्रयथाम्नायं दीक्षया

रनो योग्य नहीं है सो कहे हैं हे मधुवंशोत्पन्न श्रीकृष्ण! हे अजित अर्थात् काहू के जीतिवे में न आवो! जैसे अज्ञानी पुरुषन के देह में अहङ्कार और देहके सम्बन्धीन में ममता रहे है ऐसे तुम्हारे भक्तन के मै मेरो तू तेरो यह वुद्धि नहीं होय है ५ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! श्रीकृष्ण ने प्रशंसा जाकी करी ऐसो कुन्ती को पुत्र जो राजा युधिष्ठिर है सो या प्रकार कहिकै यज्ञ करिवे योग्य जे वसन्तादि काल हैं तामें वेद के पढनवारे जे योग्य ब्राह्मण हैं तिनें होता उद्गाता अध्वर्यु इत्यादिक वरण करतभयो ६ द्वैपायन भरद्वाज सुमन्तु गौतम असित वसिष्ठ च्यवन कण्व मैत्रेय कवष त्रित ७ विश्वामित्र वामदेव सुमति जैमिनि क्रतु पैल पराशर गर्ग वैशम्पायन ८ अथर्वा कश्यप धौम्य परशुरामभार्गव आसुरि वीतिहोत्र मधुच्छन्द वीरसेन अकृतव्रण ९ तैसेही वुलाये जे और द्रोणाचार्य भीष्मजी कृपाचार्य तें आदि लेके आप हे ते आवत भये और पुत्रनसहित धृतराष्ट्र और वडेवुद्धिमान् विदुरजी आवत भये तथा यज्ञ देखिवेके निमित्त ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और सम्पूर्ण

राजा हैं ते और उनके प्रधान दीवानहैं ते हे राजन् परीक्षित् ! ता यज्ञ में सब आवतभये १०।११ ता पीछे ब्राह्मण हैं ते यज्ञ करिबे की भूमि में सुवर्ण के हल चलाय के भूमिशोधन करिकै जैसे वेद में विधि है तैसेही राजा युधिष्ठिर कूं यज्ञदीक्षा करनभये १२ जैसे पहिले वरुण के यज्ञमें सुवर्णकी सामग्रीपात्र होतभये ऐसेही याहू यज्ञमें होतभये और ब्रह्मा महादेव कूं सङ्ग लैके तथा इन्द्रादिक देवतान कूं सङ्ग लैके लोकपाल हैं ते आवतभये १३ गणनसहित सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और बड़े २ सर्प हैं ते और मुनीश्वर यक्ष राक्षस खग किन्नर चारण इनके समूह आवत भये १४ और आये जे राजा हैं तिनकी सम्पूर्ण स्त्री हैं ते पाण्डु को पुत्र जो राजा युधिष्ठिरहै ताके राजसूययज्ञमें आवति भईं १५ नहीं भयो है आश्चर्य जिनके ऐसे सम्पूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त जो राजा युधिष्ठिर है ताको यश अनेकप्रकार सिद्धभयो या प्रकार मानतभये जैसे देवतान ने वरुणकूं यज्ञ करायो तैसेही देवतान की तुल्यहै कान्ति जिनकी ऐसे जे ऋत्विज् हैं ते राजसूय यज्ञ करिकै विधिपूर्वक महाराज युधिष्ठिर सूं यजन करावतभये १६ अतिशय करिकै सावधान पृथ्वीके पालन करनवारे राजा युधिष्ठिर ने जा दिन सोमवल्ली कूटी गई वा दिन यज्ञ करावनवारेन को तथा

ऋत्विग्भिर्नृपम् १२ हैमाः किलोपकरणा वरुणस्य यथा पुरा॥ इन्द्रादयो लोकपाला विरिञ्चिभवसंयुताः १३ सगणाः सिद्धगन्धर्वा विद्याधरमहोरगाः॥ मुनयो यक्षरक्षांसि खगकिन्नरचारणाः १४ राजानश्च समाहूता राजपत्न्यश्च सर्वशः॥ राजसूयं समीयुः स्म राज्ञः पाण्डुसुतस्य वै १५ मेनिरे कृष्णभक्तस्य सूपपन्नमविस्मिताः अयाजयन्महाराजं याजका देववर्चसः॥ राजसूयेन विधिवत्प्राचेतसमिवामराः १६ सौत्येऽहन्यवनीपालो याजकान्सदसस्पतीन्॥ अपूजयन्महाभागान् यथावत्सुसमाहितः १७ सदस्याग्र्यार्हणार्हं वै विमृशन्तः सभासदः॥ नाध्यगच्छन्ननैकान्त्यात्सहदेवस्तदाऽब्रवीत् १८ अर्हति ह्यच्युतः श्रैष्ठ्यं भगवान्सात्वतां पतिः॥ एष वै देवताः सर्वा देशकालधनादयः १९ यदात्मकमिदं विश्वं क्रतवश्च यदात्मकाः॥ अग्निराहुतयो मन्त्राः सांख्ययोगश्च यत्परः २० एक एवाद्वितीयोऽसावैतदात्म्यमिदं जगत्॥ आत्मनाऽऽत्माश्रयः सभ्याः सृजत्यवति हन्त्यजः २१ विविधानीह कर्माणि जनयन्यदवेक्षया॥ ईहते यदयं सर्वः श्रेयो धर्मादिलक्षणम् २२ तस्मात्कृष्णाय महते दीयतां परमार्हणम्॥ एवं चेत्सर्वभूतानामात्मनश्चार्हणं भवेत् २३ सर्वभूतात्मभूताय कृष्णायानन्यदर्शिने॥ देयं शान्ताय

बड़भागी जे सभामें मुख्य हैं तिनकी पूजन करयो १७ सभाके बैठनवारेन में प्रथम पूजन योग्य कौनहै यह विचार करत करत एक की अपेक्षा एक बड़ो है यातें काहूको निश्चय जब न भयो तब युधिष्ठिर को भय्या सहदेव बोलतभयो १८ भक्तन के पालन करनवारे अखण्ड जिनको रूप समस्तदेवता देश काल धनादिरूप जो श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् हैं ते या यज्ञमें पूजा करिबे के पात्र हैं १ यह समस्त विश्व या श्रीकृष्णको ईश्वररूप है और यज्ञादिक हैं तेहू श्रीकृष्णरूप हैं अग्नि आहुति मन्त्र सांख्य योग ये सब श्रीकृष्णपरायण हैं २० हे सभाके बैठनवारे ! नहीं है जन्म जाको ऐसो एक अद्वितीय जो यह श्रीकृष्ण है सो आपही स्वरूप जाको ऐसो यह विश्व है ताय अपने आतमाही करिकै दूसरे की सहायता बिना उत्पन्न पालन नाश करे है २१ सब जनन के अनुग्रह तें या संसार में अनेक तरहके जपयोगादि कर्म हैं तिनकूं करिके धर्मादिक है स्वरूप जाको ऐसे कल्याण कूं करै है अनेकप्रकार के सम्पूर्ण कर्म और कर्मन के फल ये सब श्रीकृष्ण के

अधीन हैं २२ ता कारण सबते बडे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं पूजादेउ इनकूं देने मे सब प्राणीनकी पूजा होजायगी और जो कोई पूजायोग्य होयगो ताहू की होजायगी २३ जो पुरुष पूजा के अनन्त फल की चाहना करै वह पुरुष सब प्राणीन के आत्मा और भेदभाव जिनके नहीं ऐसे शान्त परिपूर्ण रूप जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं पूजा देइ २४ श्रीकृष्ण के प्रभावकूं जाने ऐसो सहदेव इतनी कहिकै चुपहोत भयो ता समय सम्पूर्ण जे श्रेष्ठ पुरुष हैं ते सहदेव को वचन श्रवण करिकै भले २ या प्रकार बड़ाई करतभये २५ स्नेह करिकै विह्वल प्रसन्न जो राजा युधिष्ठिर है सो तिन ब्राह्मणन ने कह्यो जो वचन है ताय सुनिकै और सभा में बैठे हैं तिन के हृदयको अभिप्राय जानिकै इन्द्रियन के प्रेरण करनवारे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिन को पूजन करत भयो २६ स्त्री भय्या मन्त्री सब कुटुम्ब के पुरुषनसहित जो राजा युधिष्ठिर है सो श्रीकृष्णचन्द्र के चरण धोइकै लोकन को पवित्र करनवारो जो चरणारविन्दको धोवन जल है ताय आनन्द करिकै शिरपै चढ़ावत भयो २७ पीरे रेशमी वस्त्र और बहुत मोल के जे आभूषण हैं तिनसूं पूजन करिकै आंसूभरे नेत्रन में जाके ऐसो राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन करिबेकूं नहीं समर्थ होतभयो २८ या

पूर्णाय दत्तस्यानन्त्यमिच्छता २४ इत्युक्त्वा सहदेवोऽभूत्तूष्णीं कृष्णानुभाववित्। तच्छ्रुत्वा तुष्टुवुः सर्वे साधु साध्विति सत्तमाः २५ श्रुत्वा द्विजेरितं राजा ज्ञात्वा हार्दं सभासदाम्। समर्हयद्धृषीकेशं प्रीतः प्रणयविह्वलः २६ तत्पादाववनिज्यापः शिरसा लोकपावनीः। सभार्यः सानुजामात्यः सकुटुम्बोऽवहन्मुदा २७ वासोभिः पीतकौशेयैर्भूषणैश्च महाधनैः। अर्हयित्वाऽश्रुपूर्णाक्षो नाशकत्समवेक्षितुम् २८ इत्थं सभाजितं वीक्ष्य सर्वे प्राञ्जलयो जनाः। नमो जयेति नेमुस्तं निपेतुः पुष्पवृष्टयः २९ इत्थं निशम्य दमघोषसुतः स्वपीठादुत्थाय कृष्णगुणवर्णनजातमन्युः। उत्क्षिप्य बाहुमिदमाह सदस्यमर्षी संश्रावयन्भगवते परुषाण्यभीतः ३० ईशो दुरत्ययः काल इति सत्यवती श्रुतिः। वृद्धानामपि यद्बुद्धिर्बालवाक्यैर्विभिद्यते ३१ यूयं पात्रविदां श्रेष्ठा मा मन्ध्वं बालभाषितम्। सदसस्पतयः सर्वे कृष्णो यत्सम्मतोऽर्हणे ३२ तपोविद्याव्रतधराञ्ज्ञानविध्वस्तकल्मषान्। परमर्षीन्ब्रह्मनिष्ठाँल्लोकपालैश्च पूजितान् ३३ सदस्पतीनतिक्रम्य गोपालः कुल

प्रकार राजा युधिष्ठिर ने पूजा जिनकी करी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिकै जोरी हैं अञ्जली जिनने ऐसे सम्पूर्ण जन नमोनमः और जयजय शब्द करिकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं प्रणाम करिकै फूलन की वर्षा करत भये २९ या प्रकार दमघोष को पुत्र शिशुपाल है सो सुनिकै अपने पीठ सूं उठिकै श्रीकृष्णचन्द्र के गुणन को वर्णन भयो तासूं भयो है क्रोध जाके ऐसो भुजाकूं ऊंची उठायकै ईर्षा जाके भई ऐसो निर्भय होय सभामें श्रीकृष्णको कठोर वचन सुनाय कै यह बोलतभयो ३० नहीं है नाश जाको ऐसो सामर्थ्यवान् जो काल है सो प्रबल है यह वेदकी श्रुति सत्य है ऐसे कालकरिकै वृद्ध वृद्ध जे सभा में बैठे हैं तिनकी बुद्धि या बाल सहदेव के कहने तें चलायमान होय गई ३१ हे पात्रके जाननवारेन में श्रेष्ठो सभा के पतियो! यह कृष्ण पूजाके योग्य है या बालक सहदेव को वचन सब मति मानो ३२ तपकूं करैं विद्या पढ़ैं व्रतन कूं करैं ज्ञान करिकै ध्वस्त भये हैं पाप जिन के और ब्रह्म में निष्ठा है जिनकी लोकपाल पूजा करैं ऐसे श्रेष्ठ ऋषि हैं तिनें और सभाके पतिनें तिन ३१

सदकूं त्यागि कै गायन को चरावनवारो कुल कूं दोप लगावनवारो पूजा के योग्य कैसे होय है जैसे यज्ञ में देवतान के योग्य जो बलि है ताय वाँवा कैसे ग्रहण करिवे योग्य है ३३ । ३४ न जाको कोई वर्ण है न आश्रम है न कोई कुल है सम्पूर्ण धर्मन सूं बहिष्कृत जैसे मनमें आवै तैसेही करै गुणन करिकै हीन ऐसो कृष्ण कैसे पूजायोग्य होयहै ३५ राजा ययातिने इनके कुल कू शाप दियो और सत्पुरुषन ने जातिसूं बाहर कियो और सर्वदा वृथा मदिरा पान करै ऐसो इनको कुल ता कुल में जो कृष्ण है सो कैसे पूजा योग्य होय है ३६ ब्रह्मर्षि जिनको सेवन करें ऐसे देशन कूं त्यागि कै ब्रह्मतेज जामें न रहे ऐसे समुद्र के किलाको आश्रय लैकै यादव चोरनकी तुल्य प्रजाकूं बाधा करे है ३७ नष्ट भयो है मंगल जाको ऐसो शिशुपाल ऐसे ऐसे अमंगल वचन कहतभयो जैसे सिंह स्यारकी बोलनि पै मन नहीं देइहै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कछु न बोलत भये ३८ सभा के बैठनवारे हैं ते ऐसी दुस्सह भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी निन्दा श्रवण करिकै काननकूं मूंदि कै क्रोध करिकै शिशुपाल कूं गारी देत जात भये ३९ भगवान् की निन्दा सुनिकै अथवा भगवत्परायण जो पुरुष है ताकी निन्दा सुनिकै जो पुरुष वा स्थान तें न उठिजाय वह पुरुष अपने

पांसनः ॥ यथा काकः पुरोडाशं सपर्य्यां कथमर्हति ३४ वर्णाश्रमकुलापेतः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ स्वैरवर्त्ती गुणैर्हीनः सपर्य्यां कथमर्हति ३५ ययातिनैषां हि कुलं शप्तं सद्भिर्बहिष्कृतम् ॥ वृथापानरतं शश्वत्सपर्य्यां कथमर्हति ३६ ब्रह्मर्षिसेवितान्देशान्हित्वैतेऽब्रह्मवर्चसम् ॥ समुद्रं दुर्गमाश्रित्य बाधन्ते दस्यवः प्रजाः ३७ एवमादीन्यभद्राणि बभाषे नष्टमङ्गलः ॥ नोवाच किञ्चिद्भगवान् यथा सिंहः शिवारुतम् ३८ भगवन्निन्दनं श्रुत्वा दुस्सहं तत्सभासदः ॥ कर्णौ पिधाय निर्जग्मुः शपन्तश्चेदिपं रुषा ३९ निन्दां भगवतः शृण्वंस्तत्परस्य जनस्य वा ॥ ततो नापैति यः सोपि यात्यधः सुकृताच्च्युतः ४० ततः पाण्डुसुताः क्रुद्धा मत्स्यकेकयसृञ्जयाः ॥ उदायुधाः समुत्तस्थुः शिशुपालजिघांसवः ४१ ततश्चैद्यस्त्वसम्भ्रान्तो जगृहे खड्गचर्मणी ॥ भर्त्सयन्कृष्णपक्षीयान् राज्ञः सदसि भारत ४२ तावदुत्थाय भगवान् स्वान्निवार्य स्वयं रुषा ॥ शिरः क्षुरान्तचक्रेण जहार पततो रिपोः ४३ शब्दः कोलाहलोऽप्यासीच्छिशुपाले हते महान् ॥ तस्यानुयायिनो भूपा दुद्रुवुर्जीवितैषिणः ४४ चैद्यदेहोत्थितं ज्योतिर्वासुदेवमुपाविशत् ॥ पश्यतां सर्वभूतानामुल्केव भुवि खाच्च्युता ४५ जन्मत्रयानुगुणितवैरसंरब्धया

पुण्य तें भ्रष्ट होय कै नरक में गिरे है ४० ता पीछे क्रोध जिनके भयो ऐसे जे पाण्डु के पुत्र हैं ते और मत्स्य देश केकयदेश सृञ्जयदेश के राजा हैं ते शस्त्रन कू उठायकै शिशुपाल के मारिवे के लिये ठाडे होत भये ४१ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! ता पीछे नहीं भयो है हरवराहट जाके ऐसो जो शिशुपाल है सो कृष्णचन्द्र के पक्षी जे राजा हैं तिनके मारिवे कूं सभामें ढाल तलवार लेत भये ४२ यह मेरो पार्षद है मेरी बराबरि यामें बल है यह सबनकू मारेगो यातें मैंहीं याकूं मारूं यह विचारिकै ताही समय उठिकै भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपनी ओर के राजानकू मनेकरिकै सम्मुख आवै जो वैरी शिशुपाल है ताको शिर छुरा की तुल्य है पैनी धार जाके ऐसे चक्रसूं क्रोधसों काटतभये ४३ ता समय शिशुपाल के मारेजाने में बड़ो कोलाहल शब्द होतभयो और शिशुपाल के पिछलागू जे राजा हैं ते जीवे की इच्छा करिकै भाजतभये ४४ ता समय शिशुपालके देह में तें निकसी जो ज्योति है सो सब प्राणीनके देखत श्रीकृष्णचन्द्र में मिलतिभई जैसे आकाश

दन्तवक्र अ० ७४

तें गिरयो जो तारा है सो पृथ्वी में मिलिजाय या प्रकार ४५ पहिले जन्म में हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु भये और दूसरे जन्म में रावण कुम्भकर्ण भये तीसरे जन्म में शिशुपाल दन्तवक्र
भये या प्रकार तीन जन्मलों चल्यो आयो जो वैर है तासूं तन्मयहोय गई ऐसी जो बुद्धि है ता करिकै रूपको ध्यान करत २ वाही रूपकूं पावत भयो अर्थात् पार्षद होत भयो क्योंकि जैसी जो भावना
करै तैसोई ताको जन्म होयहै ४६ चक्रवर्त्ती राजा युधिष्ठिर है सो यज्ञ के करावनवारे ब्राह्मणनकूं और बड़े बड़े सभामें बैठे हैं तिनकूं बडी दक्षिणा देतभये विधिपूर्वक सबको पूजन करिकै यज्ञान्त
स्नान करत भये ४७ योगेश्वरन के ईश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो राजा युधिष्ठिर को यज्ञ सिद्धकरिकै सुहृदन ने विनती करी तब कितनेहू मासपर्यन्त वास करत भये ४८ ता पीछे आप देवे
की इच्छा न करे ऐसो राजा युधिष्ठिर है तासू आज्ञा मांगि कै समर्थ देवकी के पुत्र अपनी स्त्रीन और मन्त्री कू सङ्ग लैके अपनी द्वारकापुरी में आवत भये ४९ वैकुण्ठ के वसनवारे जे जय विजय

सर्वान्सम्पूज्यविधिवच्चक्रेऽवभृथमेकराट् ४७
धिया ॥ ध्यायंस्तन्मयतायातोभावोहिभवकारणम् ४६ ऋत्विग्भ्यःससदस्येभ्योदक्षिणांविपुलामदात् ॥ सर्वान्सम्पूज्यविधिवच्चक्रेऽवभृथमेकराट् ४७ यधौसमाप्य॰सा
साधयित्वाक्रतुंराज्ञः कृष्णोयोगेश्वरेश्वरः ॥ उवासकतिचिन्मासान्सुहृद्भिरभियाचितः ४८ ततोऽनुज्ञाप्यराजानमनिच्छन्तमपीश्वरः ॥ ययौसभार्यःसा
मात्यः स्वपुरंदेवकीसुतः ४९ वर्णितंतदुपाख्यानं मयातेबहुविस्तरम् ॥ वैकुण्ठवासिनोर्जन्मविप्रशापात्पुनःपुनः ५० राजसूयावभृथ्येनस्नातोराजायुधि
ष्ठिरः ॥ ब्रह्मक्षत्रसभामध्ये शुशुभेसुरराडिव ५१ राज्ञासभाजिताःसर्वेसुरमानवखेचराः ॥ कृष्णंक्रतुंचशंसन्तः स्वधामानियमुर्मुदा ५२ दुर्योधनमृतेपापं
कलिंकुरुकुलामयम् ॥ योनसेहेश्रियंस्फीतां दृष्ट्वापाण्डुसुतस्यताम् ५३ यइदंकीर्त्तयेद्विष्णोः कर्म्मचैद्यवधादिकम् ॥ राजमोक्षंवितानंच सर्वपापैःप्रमु
च्यते ५४ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशिशुपालवधोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥
राजोवाच ॥ अजातशत्रोस्तंदृष्ट्वाराजसूयमहोदयम् ॥ सर्वेमुमुदिरेब्रह्मन्नृदेवायेसमागताः १ दुर्योधनंवर्ज्जयित्वाराजानःसर्षयःसुराः ॥ इतिश्रुतंनोभ

पार्षद हैं तिनको और सनकादिकन को शाप लग्यो तातें वारंवार जन्म भयो यह कथा राजन् तुम्हारे आगे मैंने बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन करी ५० राजसूययज्ञ करिकै पश्चात् स्नान जिनने
कियो ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो ब्राह्मण और क्षत्रियन की सभा के मध्य में बैठे इन्द्र की तुल्य सुन्दर लगत भये ५१ राजा युधिष्ठिरने सत्कार जिनको करयो ऐसे सम्पूर्ण देवता मनुष्य आकाश
के विचरनवारे प्रमथगण हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और यज्ञकी प्रशंसा करत बड़े आनन्द सू अपने २ लोकन कूं जात भये ५२ कौरवन के कुलकूं कलियुगरूप कुलको पापी जो दुर्योधन है सो पाण्डु
पुत्र महाराज युधिष्ठिर की बड़ी लक्ष्मी कूं देखिकै कुढ़त भयो ५३ शिशुपाल के वधकूं आदिलैके जे श्रीकृष्ण के कर्म्म हैं और बीसहजार आठसौ राजा बन्ध तें छुड़ाये युधिष्ठिर को यज्ञ करायो
या प्रसङ्ग कूं जो पुरुष कहै वह सब पापन तें छूटि जाय है ५४ ॥ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशिशुपालवधोनामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥ ❊ ॥ ❊ ॥
(पञ्चयुक्सप्ततितमेयज्ञावभृथसरुप्रपः ॥ सुयोधनस्यचाज्ञानान्मानभङ्गोदशिभ्रपाद् ? पचहत्तरवें अध्यायमें यज्ञान्तस्नानमें सम्भ्रम अज्ञानित सूं दृष्टिमें भ्रमसूं दुर्योधनका मानभङ्ग वर्णित है १)

३२

अब राजा परीक्षित् कहे हैं हे शुकदेवजी ! अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की बड़ी शोभा देखिकै जे मनुष्यन के देव राजा आये ते सम्पूर्ण प्रसन्न होत भये १ और राजा ऋषि देवता आये हैं ते सम्पूर्ण दुर्योधन के विना आनन्द कूं पावत भये यह मैंने तुम्हारे मुख से सुनीसो दुर्योधन के आनन्द क्यों न भयो याको कारण मेरे आगे वर्णन करो २ ऋषीश्वर कहे हैं महात्मा तुम्हारे दादे जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञमें सव भय्या वन्धु प्रेमवश होय कै सवही की टहल में युक्त होत भये ३ जिसने कौन टहल लीनी सो कहे हैं भीमसेन कूं रसोई को अधिष्ठाता और दुर्योधन खर्च को मालिक क्योंकि यह हमकूं शत्रु जानिकै द्रव्य बहुत उठावैगो तो यामें हमारो यश होयगो और सहदेव कूं आये गयेन की पूजा करनो नकुल सव सामग्रीन कूं लेआवैं ४ गुरुनकी टहल अर्ज्जुन करत भये श्रीकृष्णचन्द्र जो यज्ञमें आवें तिनके पांव धोइकै पोंछि देईं परोसा परोसी में द्रौपदी प्रवृत्त भई बडो है मन जाको ऐसो कर्ण दान देने की टहल में लगत भयो ५ युयुधान विकर्ण हार्दिक्य और जे विदुर कूं आदिलैके हैं ते और भूरिश्रवा कूं आदिलैके वाह्लीक के पुत्र हैं ते और जे सन्तर्दन कूं आदिलैके हैं ते बड़े यज्ञमें अनेकप्रकार के

गर्वस्तत्रकारणमुच्यताम् २ ॥।॥ ऋषिरुवाच ॥ पितामहस्यतेयज्ञे राजसूयेमहात्मनः ॥ वान्धवाःपरिचर्य्यायांतस्याऽऽसन्प्रेमवन्धनाः ३ भीमोमहानसाध्यक्षो धनाध्यक्षःसुयोधनः ॥ सहदेवस्तुपूजायांनकुलोद्रव्यसाधने ४ गुरुशुश्रूषणेजिष्णुःकृष्णःपादावनेजने ॥ परिवेषणेद्रुपदजा कर्णोदानेमहामनाः ५ युयुधानोविकर्णश्चहार्दिक्योविदुरादयः ॥ वाह्लीकपुत्राभूर्याद्यायेचसन्तर्दनादयः ६ निरूपितामहायज्ञे नानाकर्म्मसुतेतदा ॥ प्रवर्त्तन्तेस्मराजेन्द्र राज्ञःप्रियचिकीर्षवः ७ ऋत्विक्सदस्यबहुवित्सुसुहृत्तमेषुस्विष्टेषुसूनृतसमर्हणदक्षिणाभिः ॥ चैद्येचसात्वतपतेश्चरणंप्रविष्टेचक्रुस्ततस्त्ववभृथस्नपनंद्युनद्याम् ८ मृदङ्गशङ्खपणवधुन्धुर्य्यानकगोमुखाः ॥ वादित्राणिविचित्राणि नेदुरावभृथोत्सवे ९ नर्तक्योननृतुर्हृष्टा गायकायूथशोजगुः ॥ वीणावेणुतलोन्नादस्तेपांसदिवमस्पृशत् १० चित्रध्वजपताकाग्रैरिभेन्द्रस्यन्दनार्वभिः ॥ स्वलंकृतैर्भटैर्भूपानिर्ययूरुक्ममालिनः ११ यदुसृञ्जयकाम्बोजकुरुकेकयकोसलाः ॥ कम्पयन्तोभुवंसैन्यैर्यजमानपुरःसराः १२ सदस्यर्त्विग्द्विजश्रेष्ठा ब्रह्मघोषेणभूयसा ॥ देवर्षिपितृगन्धर्वास्तुष्टुवुः पुष्पवर्षिणः १३ स्वलंकृतानरानार्य्योगन्ध

कर्म्मन में लगाय दिये ता समय हे राजान के इन्द्र राजा परीक्षित ! महाराज युधिष्ठिर के प्रिय करिवे के निमित्त समस्त प्रवृत्त होतभये ६ । ७ ऋत्विज् और सभाके वैठनवारे तथा विवेकी सुहृद् हैं ते सुन्दर मनोहर वचन गहने दक्षिणा इनसूं पूजन करैं और शिशुपाल कूं श्रीकृष्णचन्द्र के चरण की प्राप्ति होयचुकी ता पीछे स्वर्ग की नदी जो गङ्गा है तामें यज्ञकी समाप्ति को स्नान करत भये ८ यज्ञकी समाप्तिको जो उत्सव है तामें मृदङ्ग शङ्ख ढोलक झंझरी नगारे नरसिंहा ये चित्रविचित्र वाजे वाजतभये ९ नाचनवारी हैं ते नाचत भई आनन्द जिनके भयो ऐसे गवैयान के झुंड के झुंड गावतभये तिनके वीणा वेणु हथेरी वजे हैं तिनको शब्द स्वर्गपर्य्यन्त जातभयो १० चित्रविचित्र ध्वजा पताका जिनके ऊपर ढँकी ऐसे बड़े हाथी और घोड़ान पै बैठिकै सुवर्ण की मालान कूं पहिरिकै प्यादेन कूं सङ्ग लैके राजा हैं ते निकसत भये ११ राजा युधिष्ठिर हैं आगे जिनके ऐसे जे सृञ्जय काम्बोज कुरु केकय कोसल इन देशन के राजा हैं ते सेनान सूं पृथ्वी को

कंपावत जातभये १२ सभाके बैठनवारे और ऋत्विज तथा ब्राह्मण हैं ते बड़ी वेदकी ध्वनि करत जातभये और देवता ऋषि पितृ गन्धर्व्व ये पुष्पनकी वर्षा करिकै स्तुति करतभये १३ चन्दन माला गहने वस्त्र इनसूं शृंगार जिनने करयो ऐसे जे स्त्री पुरुष हैं ते नानाप्रकार के रसन कूं लेपन और छिरकाव करतभये १४ तेल और माखन सुगन्ध के जल हरदी केसर इत्यादिकनकूं स्त्री पुरुष हैं ते लेपन करत और छिरकत परस्पर विहार करतभये १५ या उत्सवके देखिवे के निमित्त जैसे जैसे उत्तम विमाननमें बैठिकै देवांगना निकसे हैं या प्रकार प्यादे जिनकी रक्षा करैं ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी रथन में पालकीन में बैठिकै निकसत भई लाज भरी हँसनिसूं शोभायमान है मुख जिनके ममिया श्वशुरन के लरिका और सखा जिनकूं छिरकैं ऐसी राजा युधिष्ठिर की रानी सुन्दर लगत भई १६ भीजे हैं वस्त्र जिनके याही ते प्रकट हैं अंग कुच जघा जिनके और उत्कण्ठा सूं केश जिनके खुलि रहे तिनसूं फूल झरैं ऐसी जे रानी हैं ते देवरनकूं और सखानकूं भिजोवति भई सुन्दर विहारन सूं मलिन हैं बुद्धि जिनकी ऐसे कामी पुरुषनके मनकूं चलायमान करतभई १७ सुवर्ण की माला पहिरे सुन्दर घोड़ा जुते ऐसो जो रथहै तामें बैठे राजा युधिष्ठिर

स्रग्भूषणाम्बरैः ॥ विलिम्पन्त्योऽभिषिञ्चन्त्यो विजहुर्विविधैरसैः १४ तैलगोरसगन्धोदहरिद्रासान्द्रकुङ्कुमैः ॥ पुम्भिर्लिप्ताःप्रलिम्पन्त्योविजहुर्वारयोषितः १५ गुप्तानृभिर्निरगमन्नुपलब्धुमेतद्देव्योयथादिविविमानवरैर्नृदेव्यः ॥ तामातुलेयसखिभिःपरिषिच्यमानाः सव्रीडहासविकसद्वदनाविरेजुः १६ तादेवरानुत सखीन्सिषिचुर्दृतीभिः क्लिन्नाम्बरविवृतगात्रकुचोरुमध्याः ॥ औत्सुक्यमुक्तकबराच्च्यवमानमाल्याः क्षोभंदधुर्मलधियांरुचिरैर्विहारैः १७ ससम्राड्रथमारूढः सदश्वंरुक्ममालिनम् ॥ व्यरोचतस्वपत्नीभिः क्रियाभिःक्रतुराडिव १८ पत्नीसंयाजावभृथ्यैश्चरित्वातेतमृत्विजः ॥ आचान्तंस्नापयाञ्चक्रुर्गङ्गायांसहकृष्णया १९ देवदुन्दुभयोनेदुर्नरदुन्दुभिभिःसमम् ॥ मुमुचुःपुष्पवर्षाणि देवर्षिपितृमानवाः २० सस्नुस्तत्रततःसर्व्वेवर्णाश्रमयुतानराः ॥ महापातक्यपि यतः सद्योमुच्येतकिल्बिषात् २१ अथराजाऽहतेक्षौमे परिधायस्वलंकृतः ॥ ऋत्विक्सदस्यविप्रादीनानर्चाभरणाम्बरैः २२ बन्धूञ्ज्ञातीन्नृपान्मित्रसुहृदोऽन्यांश्च सर्व्वशः ॥ अभीक्ष्णंपूजयामास नारायणपरोनृपः २३ सर्व्वेजनाःसुररुचोमणिकुण्डलस्रगुष्णीषकञ्चुकदुकूलमहार्घ्यहाराः ॥ नार्यश्चकुण्डलयुगालक

हैं सो जैसे क्रियानसहित यज्ञ सुन्दर लगे है या प्रकार स्त्रीन सहित सुन्दर लगतभये १८ ऋत्विज् हैं ते पत्नीसंयाज् और अवभृथ्य नाम करिकै जे दो यज्ञ हैं तिनकूं करिकै गंगामें द्रौपदी सहित आचमन जिनने कियो ऐसे राजा युधिष्ठिरकूं स्नान करावत भये १९ देवतानके नगारे तथा मनुष्यनके नगारे बजतभये देवता ऋषि पितृ मनुष्य हैं ते फूलनकी वर्षा करतभये २० वर्णयुक्त जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ये चारोवर्ण और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चार आश्रम ता गंगामें सब स्नान करतभये बड़ो पापी पुरुष जामें स्नान करिकै शीघ्र पाप तें छूटिजात है २१ स्नान करे पीछे राजा युधिष्ठिर नवीन रेशमी धोती उपरना पहिरिकै भलेप्रकार शोभायमान होयके ऋत्विज् और सभाके बैठनवारे हैं तिनें और ब्राह्मणादिक हैं तिनें गहने और वस्त्र सूं पूजन करतभये २२ नारायणही है आश्रय जिनके ऐसे राजा युधिष्ठिर हैं सो बन्धु जाति के राजा मित्र सुहृद् और सम्पूर्ण हैं तिन सबको बारंबार पूजन करतभये २३ देवतान की तुल्य हैं

कान्ति जिनकी और मणिनके जडाऊ कुण्डल माला पगडी जामा पटुका बडे मोलके हार इनकूं पहिरे जे पुरुषहैं ते और दोनों कुण्डल अलकनके समूह तिन करिकै शोभायमान हैं मुख जिनके ऐसी स्त्री हैं ते सुवर्णकी करधनी पहिरिकै सब सुन्दर लगतभई २४ हे राजन् परीक्षित् ! स्नानकरे पीछे राजा युधिष्ठिरने पूजन जिनको करयो बड़े हैं शील स्वभाव जिनके ऐसे ऋत्विज् और सभा के बैठनवारे तथा वेदके पढनवारे हैं ते और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र हैं ते और राजा आये हैं ते २५ और देवता ऋषि पितृ हैं ते और समस्त प्राणी तथा टहलुआन सहित लोकपाल हैं ते राजा युधिष्ठिर तें पूजन करायकै आज्ञा मांगिकै अपने अपने घरनकूं जातभये २६ हरि भगवान्के भक्तन में राजर्षि जो राजा युधिष्ठिर हैं तिनके राजसूय यज्ञकी जो बडी शोभा है ताकी प्रशंसा करत करत नहीं तृप्त होतभये जैसे मनुष्य अमृत पीवत पीवत नहीं तृप्त होयहै २७ सुहृद् सम्बन्धी बन्धु और श्रीकृष्णचन्द्र इनके बिछुरिवे में कायरहै मन जाको ऐसो राजा युधिष्ठिर प्रेम करिकै राखत भयो २८ हे राजन् परीक्षित् ! तिन राजा युधिष्ठिरको प्रिय करिवे कूं साम्बहै आदिमें जिनके ऐसे पुत्र हैं तिनें और यादवनमें शूरवीर हैं तिनें द्वारकामें भिजवायकै आप इन्द्रप्रस्थ में रहतभये २९

वृन्दजुष्टवक्त्रश्रियः कनकमेखलया विरेजुः २४ अथर्त्विजो महाशीलाः सदस्या ब्रह्मवादिनः ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा राजानो ये समागताः २५ देवर्षिपितृभूतानि लोकपालाः सहानुगाः ॥ पूजितास्तमनुज्ञाप्य स्वधामानि ययुर्नृप २६ हरिदासस्य राजर्षे राजसूयमहोदयम् ॥ नैवातृप्यन्प्रशंसन्तः पिबन्मर्त्योऽमृतं यथा २७ ततो युधिष्ठिरो राजा सुहृत्सम्बन्धिबान्धवान् ॥ प्रेम्णा निवारयामास कृष्णं च त्यागकातरः २८ भगवानपि तत्राङ्ग न्यवात्सीत्तत्प्रियंकरः ॥ प्रस्थाप्य यदुवीरांश्च साम्बादींश्च कुशस्थलीम् २९ इत्थं राजा धर्मसुतो मनोरथमहार्णवम् ॥ सुदुस्तरं समुत्तीर्य्य कृष्णेनाऽऽसीद्गतज्वरः ३० एकदान्तःपुरे तस्य वीक्ष्य दुर्योधनः श्रियम् ॥ अतप्यद्राजसूयस्य महित्वं चाच्युतात्मनः ३१ यस्मिन्नरेन्द्रदितिजेन्द्रसुरेन्द्रलक्ष्मीर्नाना विभान्ति किल विश्वसृजोपक्लृप्ताः ॥ ताभिः पतीन्द्रुपदराजसुतोपतस्थे यस्यां विषक्तहृदयः कुरुराडतप्यत् ३२ यस्मिंस्तदा मधुपतेर्महिषीसहस्रं श्रोणीभरेण शनकैः क्वणदङ्घ्रिशोभम् ॥ मध्ये सुचारु कुचकुङ्कुमशोणहारं श्रीमन्मुखं प्रचलकुण्डलकुन्तलाढ्यम् ३३ सभायां मयक्लृप्तायां क्वापि धर्मसुतोऽधिराट् ॥ वृतोनुजैर्बन्धुभिश्च कृष्णेनापि स्वचक्षुषा ३४ आसीनः

धर्म के पुत्र जो राजा युधिष्ठिर हैं सो अतिशय करिकै तरयो न जाय ऐसो जो मनोरथरूपी बड़ो समुद्रहै ताय श्रीकृष्णचन्द्र की सहायता तें तरिकै सब खेद दूरि होतभयो ३० एकसमय पुरके मध्यमें राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञकी शोभा देखिकै और श्रीकृष्णचन्द्रमें है मन जाको ऐसे राजा युधिष्ठिरकी महत्त्वता देखिकै और राजा युधिष्ठिर के अन्तःपुरमें मय कारीगर ने बनाई जे अनेकप्रकार की राजानकी असुरनकी देवतानकी विभूति हैं तिन सहित द्रुपदराजाकी पुत्री द्रौपदी है सो अपने पतिको सेवन करत भई और जा द्रौपदी में है आसक्त मन जाको ऐसो कौरवनको राजा दुर्योधनहै सो तापकूं पावतभयो ३१ । ३२ राजा युधिष्ठिरके अन्तःपुरमें ता समय मधुपति श्रीकृष्णचन्द्र की रानीनके समूहको वर्णन करे हैं कटिके बोझतें चरणन में हौले हौले बजें जे नूपुर तिनसूं शोभायमान हैं और मध्यमें अत्यन्त सुन्दर कुचनमें जो केसर तासूं अरुण जिनके हार हैं और चलायमान कुण्डल और केशन करिकै युक्त शोभायमान जिन

के मुरा ऐसी रानीन के समूह शोभा कूं प्राप्त होतभये ३३ मय दैत्यकी निर्म्माण करी जो सभा है तामें काहू समय अपने आज्ञाकारी भय्या बन्धुन सहित और हित अहितके जाननवारे जे श्री कृष्णचन्द्र हैं तिन सहित धर्म्म पुत्र चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर हैं ते ३४ साक्षात् सिंहासन पै जैसे इन्द्र विराजमान होय ऐसे सुवर्ण के सिंहासन पै विराजमान होयकै राज्यकी शोभा जिनकूं सेवन करै और वन्दीजन जिनकी स्तुति करैं ऐसे शोभायमान होतभये ३५ हे राजन् परीक्षित् ! ता समय भय्यानकूं सङ्ग लैके किरीट धारण करे माला पहिरे हाथ में तरवार लिये क्रोध करिकै द्वारपाल गणन कूं डाटतो अभिमानी दुर्योधन आवत भयो ३६ मयदैत्यकी बनाई सभा में शत्रुकूं सूखे में जल दीखै और जल में सूखो दीखै ऐसी मायारचित जो सभा है तामें मयदैत्यकी मायासूं मोहित होय कै दुर्योधन भ्रम सूं सूखेमें जल मानिकै जामा उठावत भयो और सूखो जानि जल में गिरतभयो ३७ हे राजन् परीक्षित् ! दुर्योधन कूं देखिकै भीमसेन हँसत भयो स्त्री जे हैं ते हँसत भई और राजा युधिष्ठिर ने मनेकरे तथापि श्रीकृष्णचन्द्र ने सनकारदिये तासूं और भी सब राजा हँसतभये ३८ हास्य देखिकै भई है लाज जाकूं नीचेकों है मुख जाकूं ऐसो दुर्योधन क्रोध करिकै सभामें तें

काञ्चनेसाक्षादासनेमघवानिव ॥ पारमेष्ठ्यश्रियाजुष्टः स्तूयमानश्चवन्दिभिः ३५ तत्रदुर्योधनोमानी परीतोभ्रातृभिर्नृप ॥ किरीटमालीन्यविशदसिहस्तःक्षिपन्रुषा ३६ स्थलेऽभ्यगृह्णाद्वस्त्रान्तं जलंमत्वास्थलेऽपतत् ॥ जलेचस्थलवद्भ्रान्त्या मयमायाविमोहितः ३७ जहासभीमस्तंदृष्ट्वा स्त्रियोनृपतयोऽपरे ॥ निवार्यमाणाऽप्यङ्ग राज्ञाकृष्णानुमोदिताः ३८ सव्रीडितोऽवाग्वदनोरुषाज्वलन् निष्क्रम्यतूष्णींप्रययौगजाह्वयम् ॥ हाहेतिशब्दःसुमहानभूत्सताम जातशत्रुर्विमनाइवाभवत् ॥ बभूवतूष्णींभगवान्भुवोभरं समुज्जिहीर्षुर्भ्रमतिस्मयद्दृशा ३९ एतत्तेऽभिहितंराजन् यत्पृष्टोऽहमिहत्वया ॥ सुयोधनस्यदौरात्म्यं राजसूयेमहाक्रतौ ४० ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेदुर्योधनमानभङ्गोनामपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथान्यदपिकृष्णस्यशृणुकर्म्माद्भुतंनृप ॥ क्रीडानरशरीरस्य यथासौभपतिर्हतः १ शिशुपालसखःशाल्वोरुक्मिण्युद्वाहआगतः ॥

निकसिकै चुपचुपातो हस्तिनापुर कूं जातभयो साधुन के बडो हाहाकार शब्द होतभयो और अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर उदास होतभयो और जिन दृष्टि सूं सूखे में जल और जल में सूखो यह भ्रमभयो पृथ्वी को बोझ उतारयो चाहै ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भीमादिकन को हास्य और दुर्योधन को अपमान करिकै चुप होतभये यही भारत को बीज है ३९ हे राजन् परीक्षित् ! राजसूय जो बडो यज्ञ है तामें दुर्योधन कूं कुढन कैसे भयो यह तुमने प्रश्न कस्यो ताको उत्तर तुम्हारे सम्मुख वर्णन करो ४० इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेदुर्योधनमानभङ्गोनामपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥ ✲ ॥ ✲ ॥ ✲ ॥ ✲ ॥ ✲ ॥ ✲ ॥

(तत षट्सप्ततिमेवृष्णिशाल्वमहामृधे ॥ द्युमद्गदामहारेण रणात्प्रद्युम्ननिर्गमः १ सम्पाद्य धर्मराजस्य राजसूयमहोदयम् ॥ निहत्यसौभराजादीनथोपारमदच्युतः २ छिहत्तरवें अध्यायमें यादव और शाल्व के भारी युद्धमें द्युमान् की गदा की चोट सों युद्ध सूं प्रद्युम्नजी को निकलनो भयो है १ कृष्णजी युधिष्ठिर की राजसूय के बडे उदयको सम्पादन कर सौभराजादिकों को नाशकर

तिस पीछे शान्त होजातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! याके पीछे क्रीड़ाकरिकै मनुष्यशरीर धारण कियो ऐसो श्रीकृष्णचन्द्र के औरहू जो अद्भुत कर्म हैं जैसे सौभ वि-मान को पति शाल्व माखो ताय श्रवण करो १ शिशुपाल को मित्र शाल्व रुक्मिणी के विवाह में आयो तब संग्राम में यादवन ने जीति लियो ताही प्रकार जरासन्धादिक राजा हैं ते जीति लिये २ सब राजान के श्रवण करत राजा शाल्व प्रतिज्ञा करतभयो कि समस्त पृथ्वीकूं यादवकुलरहित करूंगो अब तुम सब मेरे पराक्रम कूं देखौ ३ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार मूढ़ जो शाल्व है सो प्रतिज्ञा करिकै देवप्रभु पशुपति जो शिवजी हैं तिनको नित्य नित्य धूलिकी मुट्ठी फाकिकै आराधन करत भयो ४ शीघ्र तुष्ट होयँ ऐसे भी शिवजी हैं परन्तु श्रीकृष्णको द्वेषी जो शाल्व है ताकूं वरदेवो निष्फल मानिकै शीघ्र प्रकट न भये किन्तु शरण आयो जो शाल्व है तासूं एक वर्ष के पश्चात् यह कहत भये कि तू वर मांगु ५ ता समय देवता असुर मनुष्य गन्धर्व सर्प राक्षस इनसू भेदन न होय और जहां कूं इच्छा होय तहां पहुँचावै यादवन कूं भय को देनवारो ऐसो विमानदेउ यह वर मांगत भयो ६ तैसोही होयगो ऐसे प्रतिज्ञा करिकै शिवजी ने आज्ञा जाकूं दीनी ऐसो

यदुभिर्निर्जितःसङ्ख्ये जरासन्धादयस्तथा २ शाल्वःप्रतिज्ञामकरोच्छृण्वतांसर्व्वभूभुजाम् ॥ अयादवींक्ष्मांकरिष्ये पौरुषंममपश्यत ३ इतिमूढःप्रतिज्ञाय देवंपशुपतिंप्रभुम् ॥ आराधयामासनृप पांसुमुष्टिंसकृद्ग्रसन् ४ संवत्सरान्तेभगवानाशुतोषउमापतिः ॥ वरेणच्छन्दयामास शाल्वंशरणमागतम् ५ देवासुरमनुष्याणां गन्धर्व्वोरगरक्षसाम् ॥ अभेद्यंकामगंवव्रे सयानंवृष्णिभीषणम् ६ तथेतिगिरिशादिष्टोमयःपरपुरञ्जयः ॥ पुरंनिर्म्मायशाल्वाय प्रादात्सौभमयस्मयम् ७ सलब्ध्वाकामगंयानं तमोधामदुरासदम् ॥ ययौद्वारवतींशाल्वोवैरंवृष्णिकृतंस्मरन् ८ निरुध्यसेनयाशाल्वो महत्याभरतर्षभ ॥ पुरींबभञ्जोपवनान्युद्यानानिचसर्व्वशः ९ सगोपुराणिद्वाराणि प्रासादाट्टालतोलिकाः ॥ विहारान्सविमानाग्र्यान्निपेतुःशस्त्रवृष्टयः १० शिलाद्रुमाश्चाशनयःसर्पाआसारशर्कराः ॥ प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूद्रजसाच्छादितादिशः ११ इत्यर्द्यमानासौभेन कृष्णस्यनगरीभृशम् ॥ नाभ्यपद्यतशंराजंस्त्रिपुरेणयथामही १२ प्रद्युम्नोभगवान्वीक्ष्य बाध्यमानानिजाःप्रजाः ॥ माभैष्टेत्यभ्यधाद्वीरोरथारूढोमहायशाः १३ सात्यकिश्चारुदेष्णश्च साम्बोऽक्रूरःसहानुजः ॥ हार्दिक्यो

जो मयदैत्य है सो वैरीन के पुरकूं जीतनवारो सौभ जाको नाम लोहेको बनायो जो विमान है ताय शाल्व कूं देत भयो ७ मन चाहें तहां चल्यो जाय अन्धकार जामें छाय रह्यो कोई जाकूं पाइ न सकै ऐसो जो विमान है ताय पाइकै कृष्णने करयो जो वैर है ताको स्मरण करिकै द्वारकाको जात भयो ८ हे राजन् परीक्षित् ! शाल्व है सो वड़ी सेना करिकै द्वारकापुरी कू घेरिकै सम्पूर्ण जे फूलन के वाग उद्यान हैं तिनें तोरत भयो ९ और पुर के दरवाजेन सहित जे दरवाजे हैं तिनें और महल अट्टा अटारी गीतिस्थान हैं तिन सवकूं तोरत भयो और विमान में तें शस्त्रनकी वर्षा होतिभई १० और शिला वृक्ष विजुली हैं ते तथा सर्प और जलकी धारा धूरि ये गिरतभये बड़ीपवन चली धूरिसूं सम्पूर्णदिशा आच्छादित होय गई ११ हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार सौभ निमानसूं पीड़ित जो श्रीकृष्णचन्द्र की पुरी द्वारका है सो जैसे त्रिपुरदैत्य करिकै पृथ्वी कूं सुख प्राप्त न भयो ऐसे सुखनकूं न पावति भई १२ बड़ो है यश जिनको ऐसे महारथी जो भगवान् प्रद्युम्न

हैं सो अपनी प्रजाकू दुःखित देखिकै मति भयकरो या प्रकार कहिकै सम्मुख आवतभये १३ और सात्यकि चारुदेष्ण साम्ब और छोटे भय्या समेत अक्रूर तथा हार्दिक्य भानुविन्द गद शुक सारण और बड़े हैं धनुष जिनके ऐसे जे रथन के यूथपन के यूथन के पालन करनवारे हैं ते कवच पहिरिकै रक्षित होइकै रथ हाथी घोड़ा प्यादेन कूं सङ्गलैकै निकसत भये १४ । १५ ताके पीछे असुरनको जैसे देवतान के संग युद्ध भयो हो तैसे रोमाञ्च जामें ठाढ़ होइ आवें ऐसो भयानक युद्ध शाल्व की ओरकेन को यादवन के संग होत भयो १६ जैसे रात्रि के अन्धकार कूं सूर्य्य दूरि करि देइहैं ऐसे रुक्मिणी के पुत्र जो प्रद्युम्नजी हैं सो सौभ विमान के पति शाल्व की मायानकूं दिव्य अस्त्रनसूं क्षणभर में नाश करत भये १७ सोने के पुंख लोहेकी भालि छोटी २ गांठि जिन में ऐसे पचीस बाणन करिकै शाल्व की सेनान को पालन करनवारो है ताय वेधतभये १८ प्रद्युम्नजी सौ बाण शाल्वके और एक एक बाण प्यादेन के तथा दश दश बाण सारथीन के और तीन तीन बाण घोड़ा हाथीन के मारत भये १९ महात्मा प्रद्युम्न को बड़ो अद्भुत पराक्रम देखिकै अपनी पराई सेना में जे सब योद्धा हैं ते प्रद्युम्नजी की प्रशंसा करत भये २० मयदैत्य को निर्माण

भानुविन्दश्च गदश्चशुकसारणौ १४ अपरेचमहेष्वासारथयूथपयूथपाः ॥ निर्ययुर्दंशितागुप्तारथेभाश्वपदातिभिः १५ ततःप्रववृतेयुद्धंशाल्वानांयदुभिःस ह ॥ यथासुराणांविबुधैस्तुमुलंरोमहर्षणम् १६ ताश्चसौभपतेर्माया दिव्यास्त्रैरुक्मिणीसुतः ॥ क्षणेननाशयामास नैशंतमइवोष्णगुः १७ विव्याधपञ्च विंशत्या स्वर्णपुङ्खैरयोमुखैः ॥ शाल्वस्यध्वजिनीपालं शरैःसन्नतपर्वभिः १८ शतेनाताडयच्छाल्वमेकैकेनास्यसैनिकान् ॥ दशभिर्दशभिर्नेतॄन्वाहना नित्रिभिस्त्रिभिः १९ तदद्भुतंमहत्कर्म्म प्रद्युम्नस्यमहात्मनः ॥ दृष्ट्वातंपूजयामासुःसर्व्वेस्वपरसैनिकाः २० बहुरूपैकरूपंतद्दृश्यतेनचदृश्यते ॥ मायामयंम यकृतन्दुर्विभाव्यंपरैरभूत् २१ क्वचिद्भूमौक्वचिद्व्योम्नि गिरिमूर्द्ध्निजलेक्वचित् ॥ अलातचक्रवद्भ्राम्यत्सौभंतद्दुरवस्थितम् २२ यत्रयत्रोपलक्ष्येत ससौ भःसहसैनिकः ॥ शाल्वस्ततस्ततोऽमुञ्चञ्छरान्सात्वतयूथपाः २३ शरैरग्न्यर्कसंस्पर्शैराशीविषदुरासदैः ॥ पीड्यमानपुरानीकः शाल्वोऽमुह्यत्परेरि तैः २४ शाल्वानीकपशस्त्रौघैर्वृष्णिवीराभृशार्दिताः ॥ नतत्यजूरणंस्वंस्वंलोकद्वयजिगीषवः २५ शाल्वामात्योद्युमान्नाम प्रद्युम्नंप्राक्प्रपीडितः ॥ आ

करयो मायामय जो विमानहै ताके कभऊं बहुत रूप होय जाय हैं कभऊं एक रूप होय जाय हैं कभऊं दीखै है और कभऊं नहीं दिखाई देइ है या प्रकार शत्रुन के विचार में न आवतभयो २१ कभऊं वह विमान पृथ्वी में आय जाय है कभऊं आकाश में जाय है कभऊं पर्व्वत के ऊपर जायहै कभऊं जल में जाय है ऐसे सुलगती लकड़ी की तुल्य दुरवस्थित जो विमान है सो या प्रकार चलायमान होत भयो २२ विमानसहित सेनासहित जहां जहां शाल्व दिखाई देय है तहां तहां यादवन में मुख्य हैं ते बाणनकूं छोड़त भये २३ अग्नि सूर्य्यकी तुल्य परम है स्पर्श जिनको विष की तुल्य सहारे न जायँ ऐसे वैरीन ने चलाये बाण हैं तिनसूं पीड़ित विमान और सेना जाकी ऐसो शाल्व मोहकूं पावत भयो २४ शाल्व की सेना के शस्त्रन के समूहन तें अत्यन्त पीड़ित और यह लोक परलोक के जीतिवे की इच्छा जिनकूं लगिरही ऐसे जे यादवन में शूरवीर हैं ते अपनी अपनी युद्धभूमिकूं नहीं त्यागनभये २५ प्रद्युम्न ने पहिले गदा जो मारी तासूं पीड़ित भयो ऐसो

जो शाल्व को मन्त्री बली नाम करिकै द्युमान् है सो लोहे की बड़ी गदा छाती में मारिकै पुकारतभयो २६ धर्म्म को जाननवारो जो श्रीकृष्णचन्द्र को दारुक रथवान् ताको पुत्र जो प्रद्युम्नजी को रथवान् है सो गदा करिकै टूटी है छाती जिनकी ऐसे वैरीन के दण्ड को देनवारे जो प्रद्युम्नहैं तिनैं रण में तें लेजात भयो २७ दो घड़ी में भयो है चेत जिनकूं ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र के पुत्र प्रद्युम्नहैं सो रथवान् तें बोलत भये अहो रथवान् ! तूं रण में तें मोकू भजायकै ले आयो यह बुरो कर्म्म कियो २८ व्याकुल है चित्त जाको ऐसो रथवान् जो तू है ताने कलङ्क लगायो ऐसो मैं हू ता विना यादवन के कुल में जाने जन्मलियो वह रण में तें भाज्यो नहीं सुन्यो गयो है अब मोहींकूं भजाय लायो २९ धर्म्मरूप जो रण है तामें तें भाजिकै आयो कुशल जातें पूंछी ऐसो जो मैं हूं सो पिता श्रीकृष्ण बलदेव के पास जायकै कहा अपनी कुशल कहूंगो ३० भय्यान की स्त्री जे भाभी हैं ते हे वीर! युद्धमें तें शत्रुन के सम्मुख तें नपुसक होयकै कैसे भाजि आये इमसूं तो कहो ऐसे हँसिकै मोसूं कहेंगी ३१ ऐसे श्रवण करिकै रथवान् बोल्यो हे चिरञ्जीव! हे समर्थ ! धर्म्मको ज्ञाता जो मैं हूं सो तुमकूं रण में तें निकासि लायो धर्म्म मैंही कयो है कि रथ के बैठनवारे कूं कष्ट

सायगदयामौर्व्या व्याहत्यव्यनदद्बली २६ प्रद्युम्नंगदयाशीर्णवक्षस्स्थलमरिन्दमम् ॥ अपोवाहरणात्सूतोधर्म्मविद्दारुकात्मजः २७ लब्धसंज्ञोमुहूर्त्तेनकार्ष्णिःसारथिमब्रवीत् ॥ अहोअसाध्विदंसूतयद्रणान्मेऽपसर्पणम् २८ नयदूनांकुलेजातःश्रूयतेरणविच्युतः ॥ विनामत्क्लीबचित्तेन सूतेनप्राप्तकिल्बिषात् २९ किन्नुवक्ष्येऽभिसङ्गम्यपितरौरामकेशवौ ॥ युद्धात्सम्यगपक्रान्तःपृष्टस्तत्राऽऽत्मनःक्षमम् ३० व्यक्तंमेकथयिष्यन्तिहसन्त्योभ्रातृजामयः॥ क्लैब्यंकथंकथंवीर तवान्यैःकथ्यतांमृधे ३१ सारथिरुवाच॥धर्म्मंविजानताऽऽयुष्मन्कृतमेतन्मयाविभो ॥ सूतःकृच्छ्रगतंरक्षेद्रथिनंसारथिंरथी ३२ एतद्विदित्वातुभवान्मयाऽपोवाहितोरणात् ॥ उपसृष्टःपरेणेति मूर्च्छितोगदयाहतः ३३ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशाल्वयुद्धेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

श्रीशुकउवाच॥ सउपस्पृश्यसलिलं दंशितोधृतकार्म्मुकः ॥ नयमांद्युमतःपार्श्वं वीरस्येत्याहसारथिम् १ विधमन्तंस्वसैन्यानि द्युमन्तंरुक्मिणीसुतः॥ प्रतिहत्यप्रत्यविध्यन्नाराचैरष्टभिःस्मयन् २ चतुर्भिश्चतुरोवाहान्सूतमेकेनचाहनत्॥ द्वाभ्यांधनुश्चकेतुञ्चशरेणान्येनवैशिरः ३ गदसात्यकिसाम्बाद्याजघ्नुः

आयकै उपस्थितहोय तौ सारथी अर्थात् रथवान् रक्षाकरै और सारथी के ऊपर आयके कष्टहोय तौ बैठनवारो रक्षाकरै ३२ शत्रुने गदा जो मारी तासूं तुमकूं पीड़ाभई और मूर्च्छा आइ गई यासूं धर्म्म जानिकै तुमकू रण में तें निकासि लायों ३३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशाल्वयुद्धेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥ * ॥ * ॥ ॥

(सप्तयुक्सप्ततितमेनानामायाविचक्षणः ॥ कृष्णेनागत्यशाल्वस्तु हतः सौभश्चचूर्णितम् १ सतहत्तरवें अध्याय में कृष्णजी ने आकर अनेकप्रकारकी मायाओं में निपुण शाल्वको मारा और विमान को चूर्ण करडाला १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! प्रद्युम्नजी हाथ पाव धोइकै कवचकूं पहिरिकै धनुषकूं हाथ में लैके वीर जो द्युमान् है ताके पास मोकूं लेचल यह रथवान् तें कहत भये १ रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्नजी अपनी सेना के योद्धानकू मारै ऐसे जो द्युमान् है ताय घेरिकै आठ बाणनसूं मारतभये २ अब आठ बाणनकूं पृथक् पृथक् करेहैं चार बाणनसूं चारों

घोड़ानकूं और एक वाणसूं रथवान्कू मारतभये दो वाण करिकै धनुष् और ध्वजाकूं काटत भये और एक वाणसू द्युमान् को शिर काटत भये ३ गद सात्यकि सारुत्रसूं आदिलैकै जे यादव हैं ते विमान को पालन करनवारो जो शाल्व है ताकी सेना कूं मारत भये कटी है नारि जिनकी ऐसे सम्पूर्ण विमानके वैठनवारे हैं ते समुद्र में गिरत भये ४ या प्रकार यादवन को और शाल्व की ओरकेन को जो परस्पर युद्ध भयो ताकूं सुनिकै व्याकुलता होय आवै ऐसो भयानक युद्ध सत्ताईस दिन होतभयो ५ अव श्रीशुकदेवजी कहें हैं ऐ राजन् परीक्षित्! धर्मके पुत्र जो राजा युधिष्ठिरहैं तिनने वुलाये ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो इन्द्रप्रस्थगये गये राजसूययज्ञ होय चुक्यो और शिशुपाल मारि चुक्यो ६ ता पीछे कौरवनमें जे वृद्ध हैं तिनसूं आज्ञा मागिकै मुनिनसूं आज्ञा मांगिकै और पुत्रन समेत कुन्ती सूं आज्ञा मागिकै मार्ग में कुत्सित शकुन देखत द्वारकापुरी में आवत भये ७ खोटे शकुननकूं देखिकै कहत भये कि वड़े भय्या वलदेवजी सहित मैं यहा यज्ञमें आयो हूं शिशुपाल की ओरके राजा निश्चय मेरी पुरी कूं मारेंगे ८ अपने यादवन को कष्ट देखिकै वलदेवजीकू द्वारकापुरी की रत्ता करिवे के निमित्त देखिकै विमान और शाल्व कूं देखिकै केशव भगवान्

सौभपतेर्वलम् ॥ पेतुःसमुद्रेसौभेयाः सर्व्वेसंछिन्नकन्धराः ४ एवंयदूनांशाल्वानां निघ्नतामितरेतरम् ॥ युद्धंत्रिणवरात्रंतदभूत्तुमुलमुल्वणम् ५ इन्द्रप्रस्थंगतःकृष्ण आहूतोधर्म्मसूनुना ॥ राजसूयेऽथनिर्वृत्तेशिशुपालेचसंस्थिते ६ कुरुवृद्धाननुज्ञाप्य मुनींश्चससुतांपृथाम् ॥ निमित्तान्यतिघोराणि पश्यन्द्वारवतींययौ ७ आहचाहमिहायातआर्य्यमिश्राभिसङ्गतः ॥ राजन्याश्चैद्यपक्षीयानूनंहन्युःपुरींमम ८ वीक्ष्यतत्कदनंस्वानां निरूप्यपुररक्षणम् ॥ सौभंचशाल्वराजंच दारुकंप्राहकेशवः ९ रथंप्रापयमेसूत शाल्वस्यान्तिकमाशुवै ॥ सम्भ्रमस्तेनकर्त्तव्यो मायावीसौभराडयम् १० इत्युक्तश्चोदयामास रथमास्थायदारुकः ॥ विशन्तंददृशुःसर्व्वे स्वेपरेचारुणानुजम् ११ शाल्वश्चकृष्णमालोक्य हतप्रायबलेश्वरः ॥ प्राहरत्कृष्णसूताय शक्तिंभीमरवांमृधे १२ तामापतन्तींनभसि महोल्कामिवरंहसा ॥ भासयन्तींदिशःशौरिः सायकैःशतधाच्छिनत् १३ तंचषोडशभिर्विद्ध्वा बाणैःसौभंचखेभ्रमत् ॥ अविध्यच्छरसन्दोहैः खंसूर्यइवरश्मिभिः १४ शाल्वःशौरेस्तुदोःसव्यं सशार्ङ्गंशार्ङ्गधन्वनः ॥ बिभेदन्यपतद्धस्ताच्छार्ङ्गमासीत्तदद्भुतम् १५ हाहाकारोमहानभू

श्रीकृष्णचन्द्र रथवान् तें वोलत भये ९ हे रथवान्! शीघ्र मेरे रथकूं शाल्वके समीप प्राप्तकर या विमान को राजा जो शाल्व है सो वड़ो मायावी है तू सम्भ्रम मतिकर १० या प्रकार जातें कही ऐसो जो रथवान् है सो रथपै वैठिकै हाकत भयो अपनी पराई सेना में हैं ते रथकी ध्वजा में अरुण को छोटो भय्या गरुड है ताय देखत भये ११ मृतक की तुल्य सेना को राजा जो शाल्वहै सो युद्ध में श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिकै उनके रथवान् के ऊपर भयानक है शब्द जाके ऐसी वरछी कूं फेंकत भयो १२ दिशान कूं प्रकाश करत वड़े तारेकी तुल्य आकाश में चली आवै ऐसी जो वरछी है ताको कृष्णजी वाणन करिकै सौ खण्ड करत भये १३ शाल्वकूं सोलह वाणनसूं वेधिकै आकाशमार्ग में भ्रमण करै जो विमान है ताय जैसे सूर्य किरणन करिकै आकाश कूं वेधे ऐसे वाणन के समूह करिकै वेधत भये १४ शार्ङ्गधनुष् है विद्यमान जिनके ऐसे जे शौरि श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी धनुष्सहित जो वामभुजा है ताय शाल्व वेधत भयो तव श्रीकृष्ण के हाथ तें धनुष् गिरत

भयो यह बड़ो आश्चर्य होतभयो १५ हाथमें तें धनुष कूं गिरयो देखिकै मायीन के बड़ो हाहाकार शब्द होत भयो औ विमान को ईर्जा जो शाल्व है सो ऊंचे स्वरसूं गार्जिकै श्रीकृष्णचन्द्र तें यह कहत भयो १६ कि हे मूढ ! हमारो सखा भय्या जो शिशुपाल है ताकी स्त्री कूं जो तू देखतही हरि लायो और सभाके बीच असावधान मेरो सखा शिशुपाल तैंने मारयो १७ तोकूं काहू ने जीत्यो नहीं है ऐसे अपनपे कूं माने जो तू है सो मेरे सम्मुख ठाढ़ो रहैगो तो यहा बगदैगो नहीं किन्तु तीक्ष्ण बाणनसूं मृत्युकू पहुँचाय देउंगो १८ अब श्रीकृष्ण कहे हैं हे मूर्ख ! तू वृथा कहे है निकटही मृत्यु है ताय नहीं देखे है शूरवीर हैं ते अपनो पुरुषार्थ दिखावें हैं और जे बहुत बोले हैं ते कछु पराक्रम नहीं करे है १९ या प्रकार कहिकै श्रीकृष्ण भगवान्‌ने सो बड़े वेग की जो गदा है ताय क्रोध करिकै कण्ठ के नीचे के हाड़ में मारत भये तब शाल्व रुधिर को वमन करत कांपतभयो २० गदा चले पीछे शाल्व छिपत भयो ताके दो घड़ी पीछे एक पुरुष आयके शिर झुकाय

सौह्वानानान्तत्रपश्यताम् ॥ विनद्यसौभराडुच्चैरिदमाहजनार्दनम् १६ यत्त्वयामूढनःसख्युर्भ्रातुर्भार्याहृतेक्षताम् ॥ प्रमत्तःससभामध्ये त्वयाव्यापा दितःसखा १७ तत्वाद्यनिशितैर्बाणैरपराजितमानिनम् ॥ नयाम्यपुनरावृत्तिं यदितिष्ठेर्ममाग्रतः १८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वृथात्वंकत्थसेमन्दनप श्यस्यन्तिकेऽन्तकम् ॥ पौरुषंदर्शयन्तिस्म शूरानबहुभाषिणः १९ इत्युक्त्वाभगवाञ्छाल्वंगदयाभीमवेगया ॥ तताडजत्रौसंरब्धः सचकम्पेवमन्न सृक् २० गदायासन्निवृत्तायां शाल्वस्त्वन्तरधीयत ॥ ततोमुहूर्तआगत्यपुरुषःशिरसाऽच्युतम् ॥ देवक्याप्रहितोऽस्मीति नत्वाप्राहवचोरुदन् २१ कृष्णकृष्णमहाबाहो पितातेपितृवत्सल ॥ बद्ध्वाऽपनीतःशाल्वेन सौनिकेनयथापशुः २२ निशम्यविप्रियंकृष्णो मानुषींप्रकृतिंगतः ॥ विमनस्को घृणीस्नेहाद्बभाषेप्राकृतोयथा २३ कथंराममसम्भ्रान्तं जित्वाऽजेयंसुरासुरैः ॥ शाल्वेनाल्पीयसानीतः पितामेबलवान्विधिः २४ इतिब्रुवाणेगोविन्दे सौभराट्प्रत्युपस्थितः ॥ वसुदेवमिवानीय कृष्णञ्चेदमुवाचसः २५ एषतेजनितातातोयदर्थमिहजीवसि ॥ वधिष्येवीक्षतस्तेऽमुमीशश्चेत्पाहिबालि श २६ एवंनिर्भर्त्स्यमायावी खड्गेनानकदुन्दुभेः ॥ उत्कृत्यशिरआदायखस्थंसौभंसमाविशत् २७ ततोमुहूर्त्तंप्रकृतावुपप्लुतः स्वबोधआस्तेस्वजना

श्रीकृष्णचन्द्र कूं नमस्कार करिकै रोदन करिकै देवकी ने भेज्यो हूं यह वचन कहत भयो २१ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महाबाहो अर्थात् बड़ी हैं भुजा जिनकी ! हे पिता के हितके करनवारे ! जैसे कसाई पशुकूं बांधिकै लेजाय ऐसे शाल्व तुम्हारे पिताकूं बांधिकै लेगयो २२ ऐसो अप्रिय वचन श्रवण करिकै मनुष्य स्वभाव में प्राप्त भयो है मन जिनको ऐसे दयावान् श्रीकृष्णचन्द्र वेमन होयकै जैसे प्राकृत मनुष्य कहे ऐसे कहतभये २३ हरबराहट जिनके नहीं और देवता असुर जिनकूं जीति न सकैं ऐसे बलदेवजी कूं जीतिकै तुच्छ शाल्व मेरे पिताकूं कैसे लेगयो विधाता बलवान्‌है कदा-चित् लेगयो होयगो २४ या प्रकार श्रीकृष्ण कहे हैं इतने में विमानको राजा शाल्व आयो और मायारूपी वसुदेव निर्म्माण करिकै लायकै श्रीकृष्ण से बोलत भयो २५ यह तेरो उत्पन्न करन-वारो पिता है जाके लिये तू यहां जीवे है तेरे देखत याकूं मारूंगो हे मूर्ख ! तेरी सामर्थ्य होय तो याकी रक्षाकर २६ मायावी जो शाल्व है सो या प्रकार डरपायकै माया के वसुदेव जो बनाय

कै लायो हो तिनको तरवार से शिर काटिकै हाथ में लैके आकाश में विमान हो तामें जातभयो २७ स्वतःसिद्ध ज्ञान जिनको ऐसे भी श्रीकृष्णहैं परन्तु अपने जनन के सङ्ग दो घडी पर्य्यन्त मनुष्यन को स्वभाव जो शोक करिबो तामें डूबत भये ताके पीछे बड़ो है प्रभाव जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र मयदैत्य ने प्रकटकरी शाल्व ने चलाई ऐसी आसुरीमाया जानत भये २८ ज्ञान जिनकूं भयो ऐसे अच्युत जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो वा सग्राम में दूत बनिकै जो आयो हो ताय देखत भये और ता वसुदेव के देहकूं भी नहीं देखत भये जैसे जागे पीछे स्वप्न की वस्तुकूं नहीं देखे हैं और विमान में बैठो आकाश में विचरै ऐसो जो वैरी शाल्व है ताय देखिकै मारिबे को उद्यम करत भये २९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजान में ऋषि राजा परीक्षित् ! पूर्व्वापर प्रसंग को विचार न करैं ऐसे कोई ऋषि हैं ते या प्रकार कहे हैं जो अपने कथन तें विरोध परै ताको स्मरण नहीं करै कहा विरोध परै ताको दृष्टान्त कहे हैं राजसूययज्ञ में बलदेवजी सहित श्री कृष्णचन्द्र नहीं गये हैं क्योंकि पहिले कहिआये हैं सङ्कर्षण सूं आज्ञा मांगिकै श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिर के यज्ञमें गये और यहां कह्यो बलदेवसहित मैं यज्ञ में आयों यह पूर्व्वापर सङ्गति को वि-

नपङ्कतः ॥ महानुभावस्तदवुध्यदासुरीं मायांसशाल्वप्रसृतांमयोदिताम् २८ नतत्रदूतंनपितुःकलेवरं प्रबुद्धआजौसमपश्यदच्युतः ॥ स्वाप्नंयथाचाम्बर चारिणंरिपुं सौभस्थमालोक्यनिहन्तुमुद्यतः २९ एवंवदन्तिराजर्षे ऋषयःकेचनान्विताः ॥ यत्स्ववाचोविरुध्येत नूनंतेनस्मरन्त्युत ३० क्वशोकमोहौस्नेहोवा भयंवायेऽज्ञसम्भवाः ॥ क्वचाखण्डितविज्ञानज्ञानैश्वर्य्यस्त्वखण्डितः ३१ यत्पादसेवोर्जितयाऽत्मविद्यया हिन्वन्त्यनाद्यात्मविपर्य्ययग्रहम् ॥ लभन्तआत्मानमनन्तमैश्वरं कुतोनुमोहःपरमस्यसद्गतेः ३२ तंशस्त्रपूगैःप्रहरन्तमोजसा शाल्वंशरैःशौरिरमोघविक्रमः ॥ विद्ध्वाऽच्छिनद्वर्म्मधनुःशिरोमणिं सौभञ्चशत्रोर्गदयारुरोजह ३३ तत्कृष्णहस्तेरितयाविचूर्णितं पपाततोयेगदयासहस्रधा ॥ विसृज्यतद्भूतलमास्थितोगदामुद्यम्यशाल्वोऽच्युतमभ्यगाद्द्रुतम् ३४ आधावतःसगदन्तस्यबाहुं भल्लेनछित्त्वाऽथरथाङ्गमद्भुतम् ॥ वधायशाल्वस्यलयार्कसन्निभं बिभ्रद्बभौसार्कइवोदयाचलः ३५ जहारते

रोध परैहै ताको स्मरण नहीं करैहैं शुकदेवजी कहे हैं राजा यह हमारो मत नहीं है और ऋषिन को मतहै ३० अब शुकदेवजी अपनो मत कहे हैं अज्ञानसूं होवें ऐसे जे शोक मोह स्नेह भय ये कहां और अखण्ड है विज्ञान ज्ञान ऐश्वर्य्य जिनको देवता जिनकी स्तुतिकरैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कहा ३१ जिनके चरण की सेवा करिकै पुष्ट भई ऐसी जो आत्मविद्या है ता करिकै मैं लख्यो हू दुःखीहूं यहहै स्वरूप जाको ऐसे देहमें अहङ्कार है ताय दूरि करे हैं अपनपे में अनन्त ईश्वर के स्वरूप कू पावे हैं यातें साधुन की गति जे परम श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकूं मोह कहा ते होय ३२ सफल है पराक्रम जिनको ऐसे शूरवंशोत्पन्न जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते बल करिकै शस्त्रनके समूहनतें मारो ऐसो जो शाल्व है ताय वेधिके कवच और धनुष् है ताय और शाल्व के शिर में जे मणि हैं तिनें काटत भये और वैरी शाल्व को जो विमान है ताय गदा करिके तोरत भये ३३ श्रीकृष्णचन्द्र के हाथकी चलाई भई जो गदाहै तासूं हजारन टूक होयकै वह विमान चूर्णीभूत होयके जल में गिरत भयो ता समय शाल्व विमानकूं त्यागिकै पृथ्वीपै ठाढो होयकै गदा हाथमें उठायके श्रीकृष्ण के ऊपर दौरत भयो ३४ गदासहित दौरो चलो आवै जो शाल्व है ताकी गदा

सहित जो हाथहै ताय बाण करिकै काटत भये और शाल्वके मारिवेके लिये प्रलयकाल के सूर्यकी तुल्यहै तेज जाको ऐसे अद्भुत चक्रकूं धारण करिकै जैसे उदयाचल पर्व्वत सूर्य्य कूं धारण करिकै शोभाकूं प्राप्तहोय ऐसे श्रीकृष्ण शोभाकूं पावत भये ३५ जैसे इन्द्र वज्र करिकै वृत्रासुरको शिर काटै तैसे बड़ो मायावी जो शाल्व है ताको कुण्डलन और मुकुटन सहित शिर श्रीकृष्णचन्द्र वाही चक्रसू काटतभये ता समय मनुष्यनको हाहाकार शब्द होतभयो ३६ हे राजन् परीक्षित् ! ता समय गदा करिकै विमान टूट्यो और पापी शाल्व पृथ्वीमें गिरिपरयो तब स्वर्ग में देवतानके नगाड़े वजतभये ताके पीछे मित्र जो शिशुपाल और शाल्व तथा पौण्ड्रक इनको ऋण चुकायवेके निमित्त क्रोध करिकै दन्तवक्र आवत भयो ३७ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेशाल्ववधोनामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ततोऽष्टसप्ततितमेदन्तवक्रविदूरथौ ॥ हत्वाहरिःपुरेरेमेरामःसूतंततोऽवधीत् १ अठहत्तरवें अध्याय में श्रीकृष्णजी दन्तवक्र और विदूरथको मारकर द्वारकामें रमण करते भये तिस पीछे बलदेवजी सूतको मारतेभये १)

नैवशिरःसकुण्डलं किरीटयुक्तंपुरमायिनोहरिः ॥ वज्रेणवृत्रस्ययथापुरन्दरोबभूवहाहेतिवचस्तदानृणाम् ३६ तस्मिन्निपतितेपापे सौभेचगदयाहते ॥ नेदुर्दुन्दुभयोराजन् दिविदेवगणेरिताः ॥ सखीनामपचितिंकुर्व्वन् दन्तवक्रोरुपाऽभ्ययात् ३७ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेसौभवधोनामसप्तनितमोऽध्यायः ७७ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ शिशुपालस्यशाल्वस्य पौण्ड्रकस्यापिदुर्म्मतिः ॥ परलोकगतानाञ्च कुर्व्वन्पारोक्ष्यसौहृदम् १ एकःपदातिःसंक्रुद्धो गदापाणिःप्रकम्पयन् ॥ पद्भ्यामिमांमहाराज महासत्त्वोऽव्यदृश्यत २ तंतथायान्तमालोक्य गदामादायसत्वरः ॥ अवप्लुत्यरथात्कृष्णः सिन्धुंवेलेवप्रत्यधात् ३ गदामुद्यम्यकारूषोमुकुन्दंप्राहदुर्म्मदः ॥ दिष्ट्यादिष्ट्याभवानद्य ममदृष्टिपथंगतः ४ त्वंमातुलेयोनःकृष्ण मित्रध्रुङ्मांजिघांससि ॥ अतस्त्वांगदयामन्दहनिष्येवज्रकल्पया ५ तर्ह्यानृण्यमुपैम्यज्ञ मित्राणांमित्रवत्सलः ॥ बन्धुरूपमरिंहत्वाव्याधिन्देहचरंयथा ६ एवंरूक्षैस्तुदन्वाक्यैः कृष्णंतोत्रैरिवद्विपम् ॥ गदया

अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! परलोकमें प्राप्त भये जे शिशुपाल और शाल्व तथा पौण्ड्रक इनके परोक्षमें मित्रताकू जनावै ऐसो जो दुष्टबुद्धि दन्तवक्र है सो क्रोध करिकै अकेलो पावप्यादो बड़ो बलवान् गदा हाथमें लैके पृथ्वीकूं कँपावत चल्योआवै ऐसो दिखाई देतभयो १ । २ या प्रकार आवते दन्तवक्र कूं देखिकै शीघ्रतायुक्त श्रीकृष्णचन्द्र गदा हाथमें लैके रथमें ते उतरिकै समुद्र कूं जैसे किनारा रोंके ऐसे रोंकत भये ३ दुष्टहै मद जाके ऐसो करूप देशको राजा दन्तवक्र है सो मुक्ति के देनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनतें बोलतभयो तू मेरी आंखिन के आगे या समय आयो यह बड़ो मङ्गलभयो ४ हे कृष्ण ! तू हमारे मामाको पुत्र भय्या है और हमारे मित्रन को मारनवारो है और मोहूं कूं मार्यो चाहे है याते हे मूर्ख ! वज्र की तुल्य यह गदाहै ताते तोकूं मारूंगो ५ हे अज्ञानी ! मित्रन के हितको करनवारो जो मैं हूं सो वन्धुरूप जो वैरी तू है ताय मारिकै मित्रन को ऋण चुकाऊंगो जैसे देहोत्पन्न जो

रोग है ताय दूरि करै तब सुखी होय ऐसे है या प्रकार कठोर वाक्य कहिकै श्रीकृष्णके माथे में गदा मारिकै सिंहकी तुल्य दन्तवक्र गर्जतभयो जैसे हाथी के अंकुश लगै ऐसे गदा लगति भई ७ संग्राम में गदा जिनके लगी तथापि श्रीकृष्णचन्द्र न डिगतभये पश्चात् श्रीकृष्णचन्द्र भी कौमोदकी जो बड़ी गदा है ताकूं दन्तवक्र की छाती में मारतभये ८ गदा करिकै विदीर्ण भयो है हृदय जाको ऐसो जो दन्तवक्र है सो मुखते रुधिर कूं वमन करत प्राणनकूं त्यागिकै केश हाथ पाव फैलायकै पृथ्वी में गिरतभयो ९ ता पीछे दन्तवक्र के शरीर ते अद्भुत सूक्ष्म ज्योति निकसिकै सब प्राणीन के देखत हे राजन् परीक्षित् ! शिशुपाल के वधमें जैसे श्रीकृष्णचन्द्रमें प्रवेश करति भई तैसेही प्रवेश करतिभई १० भ्राता दन्तवक्र के शोक करिकै व्याकुल ऐसो जो विदूरथ है सो तलवार ढाल लैकै श्रीकृष्ण के मारिवे के लिये बड़े बड़े श्वासन कूं लेत आवतभयो ११ हे राजान के इन्द्र परीक्षित् ! चलयो आवे जो विदूरथ है ताको मुकुट और कुण्डलसहित जो शिर है ताकूं छूरा की तुल्य है धार जाकी ऐसे चक्र सूं श्रीकृष्णचन्द्र काटतभये १२ औरन पै सहारो न जाय ऐसो जो सौभ विमान है ताय और शाल्व कूं तथा अनुयान सहित जो दन्तवक्र है ताय मारि

ऽताडयन्मूर्ध्नि सिंहवद्व्यनदच्चसः ७ गदयाऽभिहतोऽप्याजौ नचचालयदूद्वहः ॥ कृष्णोऽपिनमहद्गुर्व्या कौमोदक्यास्तनान्तरे ८ गदानिर्भिन्नहृदयउद्वमन्रुधिरंमुखात् ॥ प्रसार्यकेशबाह्वङ्घ्रीन् धरण्यांन्यपतद्व्यसुः ९ ततःसूक्ष्मतरंज्योतिः कृष्णमाविशदद्भुतम् ॥ पश्यतांसर्वभूतानां यथाचैद्यवधेनृप १० विदूरथस्तुतद्भ्राता भ्रातृशोकपरिप्लुतः ॥ आगच्छदसिचर्माभ्यामुच्छ्वसंस्तज्जिघांसया ११ तस्यचापततःकृष्णश्चक्रेणक्षुरनेमिना ॥ शिरोजहारराजेन्द्र सकिरीटंसकुण्डलम् १२ एवंसौभंचशाल्वञ्च दन्तवक्रंसहानुजम् ॥ हत्वादुर्विषहानन्यैरीडितःसुरमानवैः १३ मुनिभिःसिद्धगन्धर्वैर्विद्याधरमहोरगैः ॥ अप्सरोभिःपितृगणैर्यक्षैःकिन्नरचारणैः १४ उपगीयमानविजयःकुसुमैरभिवर्षितः ॥ वृतश्चवृष्णिप्रवरैर्विवेशालंकृतांपुरीम् १५ एवंयोगेश्वरःकृष्णोभगवाञ्जगदीश्वरः ॥ ईयतेपशुदृष्टीनां निर्जितोजयतीतिसः १६ श्रुत्वायुद्धोद्यमंरामः कुरूणांसहपाण्डवैः ॥ तीर्थाभिषेकव्याजेन मध्यस्थःप्रययौकिल १७ स्नात्वाप्रभासेसन्तर्प्य देवर्षिपितृमानवान् ॥ सरस्वतींप्रतिस्रोतं ययौब्राह्मणसंवृतः १८ पृथूदकंबिन्दुसरस्त्रितकूपंसुदर्शनम् ॥ विशालंब्रह्मतीर्थञ्च च

चुके तब देवता और मनुष्य सर्व स्तुति करतभये १३ मुनीश्वर सिद्ध गन्धर्व विद्याधर और बड़े सर्प अप्सरा पितृनके गण यक्ष किन्नर चारण इन सबने गाई है जीत जिनकी और फूल बरसाये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र यादवन कूं संगलैके शोभायमान जो द्वारकापुरी है तामें जातभये १४ । १५ या प्रकार योगके ईश्वर और जगत् के ईश्वर जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जरासन्धादिकन ने जीते पशु पशुन की तुल्य है दृष्टि जिनकी अज्ञानी पुरुषन कूं हारे जीते प्रतीत होइ हैं १६ पाण्डव कौरवन कूं एक तुल्य मानैं ऐसे जे बलदेवजी हैं सो उनके युद्धको उद्यम श्रवण करिकै तीर्थस्नान को मिष करिकै यात्रा करतभये क्योंकि यहां रहोंगो तो जाकी ओर न होउँगो सोई बुरो मानैगो १७ प्रभासतीर्थ में स्नानकरिकै देवता ऋषि पितृ मनुष्यन को तर्पण करिकै ब्राह्मण कूं संगलैकै सरस्वती के प्रवाह के सम्मुख बलदेवजी जातभये १८ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! पृथूदक बिन्दुसर त्रितकूप सुदर्शन ती विशाल ब्रह्मतीर्थ चक्रतीर्थ और पूर्ववाहिनी

सरस्वती और यमुना के जे तीर्थ तथा गङ्गा के तीर्थ और जहां ऋषि यज्ञ करें या नैमिषारण्यमें वलदेवजी जातभये १६ । २० बड़े हैं यज्ञ जिनके ऐसे जे मुनि हैं ते वलदेवजी कूं आया जानि कै प्रशंसा करिकै उठिकै प्रणाम करिकै यथायोग्य पूजन करत भये २१ ब्राह्मणन सहित पूजा जिनकी करी और आसन कूं अङ्गीकार करिकै वलदेवजी हैं सो वेदव्यासको शिष्य जो रोमहर्षण हैं ताय वैठो देखतभये २२ वलदेवजी कूं देखिकै उठ्यो नहीं और नहीं करी है प्रणाम अञ्जली जाने ब्राह्मणन तें ऊँचो वैठ्यो जो सूत है ताय मधुवंशोत्पन्न वलदेवजी देखिकै क्रोध करतभये २३ प्रतिलोमज अर्थात् ब्राह्मणी माता और पिता क्षत्रिय ऐसो यह सूत है सो इन ब्राह्मणन तें कैसे ऊँचो वैठ्यो है तैसेही धर्म्म के पालन करनवारे जे हम हैं तिनतें ऊँचो वैठ्यो है ता कारण दुष्ट है बुद्धि जाकी ऐसो सूत मारिवे योग्य है २४ कदाचित् कहो कि विना जाने ऊँचो वैठ्यो है सो नहीं भगवान् वेदव्यास को शिष्य है और महाभारत सहितजे पुराण तिनकूं पढ़िकै और

कंप्राचींसरस्वतीम् १६ यमुनामनुयान्येव गङ्गामनुचभारत ॥ जगामनैमिषंयत्र ऋषयःसत्रमासते २० तमागतमभिप्रेत्य मुनयोदीर्घसत्रिणः ॥ अभिवन्द्ययथान्यायं प्रणम्योत्थायचार्चयन् २१ सोऽर्चितःसपरीवारः कृतासनपरिग्रहः ॥ रोमहर्षणमासीनं महर्षेःशिष्यमैक्षत २२ अप्रत्युत्थायिनंसूतमकृतप्रह्वणाञ्जलिम् ॥ अध्यासीनञ्चतान्विप्रांश्चुकोपोद्वीक्ष्यमाधवः २३ कस्मादसाविमान्विप्रानध्यास्तेप्रतिलोमजः ॥ धर्म्मपालांस्तथैवास्मान् वधमर्हतिदुर्म्मतिः २४ ऋषेर्भगवतोभूत्वा शिष्योऽधीत्यबहूनिच ॥ सेतिहासपुराणानिधर्म्मशास्त्राणिसर्व्वशः २५ अदान्तस्याविनीतस्य वृथापण्डितमानिनः ॥ नगुणायभवन्तिस्म नटस्येवाजितात्मनः २६ एतदर्थोहिलोकेस्मिन्नवतारोमयाकृतः ॥ वध्यामेधर्म्मध्वजिनस्तेहिपातकिनोऽधिकाः २७ एतावदुक्त्वाभगवान्निवृत्तोऽसद्वधादपि ॥ भावित्वात्तंकुशाग्रेण करस्थेनाहनत्प्रभुः २८ हाहेतिवादिनःसर्व्वे मुनयःखिन्नमानसाः ॥ ऊचुःसङ्कर्षणंदेवमधर्म्मस्तेकृतःप्रभो २६ अस्यब्रह्मासनन्दत्तमस्माभिर्यदुनन्दन ॥ आयुश्चात्माक्लमंतावद्यावत्सत्रंसमाप्यते ३० अजानतैवाचरितस्त्वयाब्रह्मवधोयथा ॥ योगेश्वरस्यभवतोनाम्नायोपिनियामकः ३१ यद्येतद्ब्रह्महत्यायाः पावनंलोकपावन ॥ चरिष्यतिभवाँल्लोकसंग्रहोऽनन्यचोदितः ३२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ करिष्येवध

समस्त धर्म्मशास्त्रन कूं पढ़िकै २५ इन्द्रिय जाने रोंकी नहीं नम्रता जामें है नहीं वृथा अपने कूं पण्डित माने ऐसे कूं शास्त्र गुण के लिये नहीं होय है जैसे नहीं जीत्यो है मन जाने ऐसे नटकी विद्या वाकू गुण के लिये नहीं होयहै २६ एतदर्थही या लोकमें अवतार मैंने लियो है धर्म्मध्वजी अर्थात् जाति में छोटे उत्तम स्वरूप कू धरे ऐसे जो अधिक पापी पुरुष हैं सो मारिवे के योग्य हैं २७ समर्थ जो भगवान् वलदेवजी हैं सो इतनो कहिकै असत् जो सूतको वधहै ताते निवृत्तभये हे परन्तु होनहारही तासूं हाथमें जो कुशाही तासूं सूत कूंमारतभये २८ खेदयुक्त हैं मन जिनके ऐसे जे सम्पूर्ण मुनिहैं ते हाहाकार शब्द करिकै हे समर्थ ! यह कहा कर्‌यो ऐसे देव वलदेवजीतें कहतभये २६ हे यादवन कूं आनन्द के देनवारे ! हमने या सूत कूं ब्रह्मासन दियो है और यावत् पर्य्यन्त हमारो यज्ञ पूर्ण न होयगो तावत्पर्य्यन्त शरीर कू खेद न होय ऐसी अवस्था दीनी है ३० विना जाने जैसे ब्राह्मण को वधकरें ऐसे या सूतको वध तुमने कर्‌यो है योगके ईश्वर जो

तुमहो तिनकूं योग्य नहींहै वेद जे हैं ते भी नाहीं नाहीं करैं हैं हे लोकनके पवित्र करनवारे ! और नहींहै कहनवारो जिनकूं ऐसे जो तुमहो सो या ब्रह्महत्याको प्रायश्चित्तकरोगे तौ लोकनकूं शिक्षा हो-यगी और जो न करोगे तो आगे कोई ब्राह्मणकूं पारिकै हाथहू न धोवैगो ३१ । ३२ अब श्रीभगवान् बलदेवजी बोले लोकनके अनुग्रह करिवे के निमित्त मैं सूतके वधको प्रायश्चित्त करूंगो जो प्रायश्चित्तन में मुख्य प्रकार होय सो मोकूं बतावो ३३ हे मुनीश्वरो ! या सूतकूं तुमने बड़ी अवस्था दीनीही और इन्द्रिय भली बनीरहैं यह दीनो होइ अब तुम्हारे जो इच्छा होय सो सब कहो मैं अपनी योगमाया के बलतें सिद्ध करि देऊँगो ३४ अब सब ऋषीश्वर बोले हे राम ! जैसे तुम्हारे अस्त्रको पराक्रम को मृत्युको और हमारो वचनये सब सत्यहोयँ सो विचारकरौ ३५ तब श्रीभगवान् बलदेवजी बोले आपुही पुत्ररूप होयकै पिता उत्पन्न होयहै यह वेदकी आज्ञाहै याते या रोमहर्षणको पुत्र जो उदस्रवाहै सो तुम्हारे पुराण को वक्ता होय या उदस्रवा की बड़ी आयु होय और इ-न्द्रिय अच्छी बनीरहैं बलवान् होय साक्षात् याकू न जिवायो याते मृत्यु और शास्त्रकी सत्यताभई और पुत्ररूप करिकै आयु बल इन्द्रिय सिद्धभई यातें तुम्हारो वचन सिद्धभयो ३६ हे मुनिनमें श्रेष्ठो !

निर्वेशं लोकानुग्रहकाम्यया ॥ नियमःप्रथमेकल्पेयावान्सतुविधीयताम् ३३दीर्घमायुर्बतैतस्य सत्त्वमिन्द्रियमेवच ॥ आशासितंयत्तद्ब्रूत साधयेयोगमा यया ३४ ॥ ऋषयऊचुः ॥ अस्त्रस्यतववीर्य्यस्य मृत्योरस्माकमेवच ॥ यथाभवेद्वचःसत्यं तथारामविधीयताम् ३५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ आत्मावैपुत्रउ त्पन्नइतिवेदानुशासनम् ॥ तस्मादस्यभवेद्वक्ता आयुरिन्द्रियसत्त्ववान् ३६ किंवःकामोमुनिश्रेष्ठाब्रूताहंकरवाण्यथ ॥ अजानतस्त्वपचितिं यथामेचिन्त्य तांबुधाः ३७ ॥ ऋषयऊचुः ॥ इल्वलस्यसुतोघोरोबल्वलोनामदानवः ॥ सदूषयतिनःसत्रमेत्यपर्वणिपर्वणि ३८ तंपापंजहिदाशार्ह तन्नःशुश्रूषणंप रम् ॥ पूयशोणितविण्मूत्रसुरामांसाभिवर्षिणम् ३९ ततश्चभारतंवर्षं परीत्यसुसमाहितः ॥ चरित्वाद्वादशमासांस्तीर्थस्नायीविशुध्यसे ४० ॥ इति श्री मद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवचरित्रेबल्वलवधोपक्रमोनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ ततःपर्वण्युपावृत्ते प्रचण्डःपांसुवर्षणः ॥ भीमोवायुरभूद्राजन् पूयगन्धस्तुसर्वशः १ ततोऽमेध्यमयंवर्षं बल्वलेनविनिर्म्मितम् ॥ अभ

तुम्हारे कौन वस्तुकी चाहनाहै सो मोतें कहो मैं करूंगो हे विवेकियो ! प्रायश्चित्त कूं नहीं जानूं जो मैंहूं ताकूं भलेप्रकार प्रायश्चित्त विचारो ३७ अब ऋषीश्वर बोले घोरहै रूप जाको ऐसो इल्वलको पुत्र बल्वल नाम दानवहै सो अमावस पूनो आयकै हमारे यज्ञकूं भ्रष्ट करैहै ३८ हे दशार्हवंशोत्पन्न बलदेवजी ! पीव रुधिर विष्ठा मूत्र मदिरा मांस इनकी वर्षा करै ऐसो जो पापी बल्वलहै ताय मारो यही हमारी बड़ी सेवाहै ३९ ता पीछे अत्यन्त सावधान होयकै कामक्रोधादिकन कूं त्यागिकै भारतखण्ड की परिक्रमा करिकै एकवर्ष पर्यन्त तीर्थन में स्नान करोगे तब शुद्ध होउगे ४० इति श्री-मन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवचरित्रेबल्वलवधोपक्रमोनामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(ऊनाशीतितमेरामोबल्वलद्विजद्रुहे ॥ निहत्यतीर्थस्नानाद्यैर्ब्रह्महत्यामपानुदत् १ उनासीवें अध्यायमें बलदेवजी ब्राह्मणनकी प्रसन्नता के लिये बल्वलको मारकर तीर्थस्नानादिकन सूं सूत

की हत्याको दूर करतेभये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! ता पीछे अमावास्या पूर्णमासी पर्व्व आयो तब धूरि जामें वर्षे ऐसी भयानक प्रचण्ड पवन चलतभई और चारयो ओर तें राधिकी दुर्गन्ध आवतिभई १ ता पीछे वल्वल दैत्यने करी ऐसी विष्ठा मूत्रकी वर्षा यज्ञशालामें होतिभई और त्रिशूल लिये वल्वल भी दृष्टि आवतभयो २ विदीर्ण कियो जो काजरको पहाड़ ताकी तुल्य बड़ो है देह जाको ताते तावेसे लाल हैं शिखा और डाढ़ी जाके दाढ़ करिकै भयानक भ्रुकुटीन सूं लग्यो है मुख जाको ऐसो जो वल्वल है ताय देखिकै ३ शत्रुकी सेना को विदीर्ण करनवारो जो मूसल है ताको स्मरण करिकै दैत्यनको मारनवारो जो हलहै ताको स्मरण करतभये ता समय पार्षदरूप जे हल मूसल हैं ते जल्दी आवतभये ४ आकाशमें विचरै जो वल्वलहै ताय हलके अग्रभाग सूं खैंचिकै क्रोधयुक्त जो वलदेवजी हैं सो ब्रह्मद्रोही जो वल्वल है ताके माथे में मूसल मारतभये ५ फूट्यो है माथो जाको ऐसो जो वल्वलहै सो रुधिर को वमन करत दीनशब्द उच्चारण करत जैसे वज्रके मारे गेरूको पर्व्वत गिरे ऐसे पृथ्वीमें गिरतभयो ६ मुनीश्वरहैं ते वलदेवजी की स्तुति करिकै सफल आशीर्व्वादन कूं देके जैसे वडभागी देवता वृत्रासुर के मारनवारे

वद्यज्ञशालायां सोऽन्वदृश्यतशूलधृक् २ तंविलोक्यबृहत्कायं भिन्नाञ्जनचयोपमम् ॥ तप्तताम्रशिखाश्मश्रुं दंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीमुखम् ३ सस्मारमुसलंरामः परसैन्यविदारणम् ॥ हलञ्चदैत्यदमनं तेतूर्णमुपतस्थतुः ४ तमाकृष्यहलाग्रेणबल्वलंगगनेचरम् ॥ मुसलेनाहनत्क्रुद्धोमूर्द्धिब्रह्मद्रुहंबलः ५ सोऽपतद्भुवि निर्भिन्नललाटोऽसृक्समुत्सृजन् ॥ मुञ्चन्नार्त्तस्वरंशैलोयथावज्रहतोऽरुणः ६ संस्तुत्यमुनयोरामं प्रयुज्यावितथाशिषः ॥ अभ्यषिञ्चन्महाभागावृत्रघ्नंविबुधायथा ७ वैजयन्तींददुर्मालां श्रीधामाम्लानपङ्कजाम् ॥ रामायवाससीदिव्ये दिव्यान्याभरणानिच ८ अथतैरभ्यनुज्ञातः कौशिकीमेत्यब्राह्मणैः ॥ स्नात्वासरोवरमगाद्यतःसरयुरास्रवत् ९ अनुस्रोतेनसरयूं प्रयागमुपगम्यसः ॥ स्नात्वासन्तर्प्यदेवादीञ्जगामपुलहाश्रमम् १० गोमतींगण्डकींस्नात्वा विपाशांशोणआप्लुतः ॥ गयांगत्वापितॄनिष्ट्वा गङ्गासागरसङ्गमे ११ उपस्पृश्यमहेन्द्राद्रौ रामंदृष्ट्वाभिवाद्यच ॥ सप्तगोदावरींवेणां पम्पांभीमरथींततः १२ स्कन्दंदृष्ट्वाययौरामः श्रीशैलंगिरिशालयम् ॥ द्रविडेषुमहापुण्यं दृष्ट्वाऽद्रिंवेङ्कटंप्रभुः १३ कामकोष्णीपुरींकाञ्चीं कावेरींचसरिद्वराम् ॥ श्रीरङ्गाख्यंमहापुण्यं

इन्द्रको अभिषेक करैं ऐसे अभिषेक करतभये ७ लक्ष्मीके बसिवेके स्थान ऐसे कोमल कमलनकी वैजयन्ती माला और दिव्य नीलाम्बरके धोती उपरना और अनेकप्रकार के आभूषणहैं ते बलदेवजी कूं देतभये ८ याके पीछे मुनिनने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे बलदेवजी ब्राह्मणनकूं संग लैके कौशिकीनदी में आयकै स्नान करिकै जा सरोवर में तें सरयू निकली तहां आवत भये ९ सरयूके प्रवाहके किनारे किनारे होयकै प्रयाग में आय स्नान करिकै देवादिकन को तर्पण करिकै पुलहऋषिको आश्रम जो हरिक्षेत्र है तामें जा भये १० वहां तें गोमती और गण्डकी तथा विपाशा में स्नान करिकै शोणनदीमें स्नान जिनने कर्यो ऐसे बलदेवजी गयातीर्थ में जायकै पितरनको पूजनकरिकै गंगा और समुद्र को जहां संगम भयोहै तहां जात भये ११ ता पीछे महेन्द्र पर्वत में परशुरामजीको दर्शन करिकै प्रणामकरिकै सप्तगोदावरी और वेणा तथा पम्पा में जाय कै भीमरथी में जातभये १२ ता पीछे समर्थ बलदेवजी स्वामिकार्त्तिकेय को दर्शन करिकै महादेव जहां

विराजें ऐसो जो श्रीशैल पर्व्वत है तहां जात भये और द्रविड़ देशन में वड़ो पुनीत जो वेङ्कटपर्वत है ताको दर्शन करिकै कामकोष्णी पुरी और काञ्चीपुरी में जातभये और नदीन में श्रेष्ठ जो कावेरी है तामें स्नान करिकै वड़ो पवित्र और जहा नित्य हरि विराजमान रहें ऐसो जो श्रीरङ्गनाम विख्यात स्थान है तहा जात भये १३ । १४ वहा ते ऋषभाद्रि पर्व्वत जो हरिको क्षेत्र है तहा जायकै दक्षिणदेश में जो मथुराहै तहां जात भये वहा ते वड़े पापन के नाश करनवारे जे सेतुवन्ध रामेश्वर हैं तहा जात भये १५ वहा जायकै हलायुध वलदेवजी दशहजार गौ ब्राह्मणन कूं देतभये पश्चात् कृतमाला नदी और ताम्रपर्णी नदीनमें होयकै मलयाचल कुलाचल पर्व्वतन में जातभये १६ तहां विराजमान जे अगस्त्यमुनि हैं तिनकी नमस्कारपूर्व्वक स्तुति करत भये तव अगस्त्यजीने आशीर्व्वाद दैके आज्ञा तिनकूं दीनी ऐसे वलदेवजी दक्षिणदेश में जो समुद्र है तहा जायकै कन्या नाम जो दुर्गादेवी है ताको दर्शन करत भये १७ ता पीछे फाल्गुन जो अनन्तपुरहै तामें नित्य विष्णु भगवान् विराजें ऐसो जो उत्तम पञ्चाप्सरस नाम सर है तामें स्नान करिकै दश हजार गौवन को संकल्प करत भये १८ वहा ते चलिकै भगवान् वलदेवजी

यत्रसन्निहितोहरिः १४ ऋषभाद्रिंहरेःक्षेत्रं दक्षिणांमथुरांतथा ॥ सामुद्रंसेतुमगमन्महापातकनाशनम् १५ तत्रायुतमदाद्धेनूर्ब्राह्मणेभ्योहलायुधः ॥ कृतमालांताम्रपर्णीं मलयंचकुलाचलम् १६ तत्रागस्त्यंसमासीनं नमस्कृत्याभिवाद्यच ॥ योजितस्तेनचाशीर्भिरनुज्ञातोगतोऽर्णवम् ॥ दक्षिणंतत्रकन्याख्यां दुर्गांदेवींददर्शसः १७ ततःफाल्गुनमासाद्य पञ्चाप्सरसमुत्तमम् ॥ विष्णुःसन्निहितोयत्र स्नात्वाऽस्पर्शद्गवायुतम् १८ ततोऽभिव्रज्यभगवान् केरलांस्तु त्रिगर्त्तकान् ॥ गोकर्णाख्यंशिवक्षेत्रंसान्निध्यंयत्रधूर्जटेः १९ आर्य्यांद्वैपायनींदृष्ट्वाशूर्पारकमगाद्बलः ॥ तापींपयोष्णींनिर्विन्ध्यामुपस्पृश्याथदण्डकम् २० प्रविश्यरेवामगमद्यत्रमाहिष्मतीपुरी ॥ मनुतीर्थमुपस्पृश्य प्रभासंपुनरागमत् २१ श्रुत्वाद्विजैःकथ्यमानंकुरुपाण्डवसंयुगे ॥ सर्व्वराजन्यनिधनंभारंमेनेहृतंभुवः २२ सभीमदुर्य्योधनयोर्गदाभ्यांयुध्यतोर्मृधे ॥ वारयिष्यन्विनशनं जगामयदुनन्दनः २३ युधिष्ठिरस्तुतंदृष्ट्वा यमौकृष्णार्जुनावपि ॥ अभिवाद्याभवंस्तूष्णींकिंविवक्षुरिहागतः २४ गदापाणीउभौदृष्ट्वा संरब्धौविजयैषिणौ ॥ मण्डलानिविचित्राणि चरन्ताविदमब्रवीत् २५ युवांतुल्यबलौवीरौ हेराजन्

केरल और त्रिगर्त्त देशमें होय कै जहां धूर्जटि शिवजी विराजैं ऐसो जो गोकर्ण नाम करिकै शिवक्षेत्र है तहा जात भये १९ वहां तें वलदेवजी आर्य्या द्वीपवासिनी जो देवीहै ताको दर्शन करिकै शूर्पारक क्षेत्रमें आवत भये वहा तें तापी और पयोष्णी निर्विन्ध्या नदीमें आचमन करिकै दण्डकारण्य में आवत भये २० जहा माहिष्मती पुरीहै वा रेवानदी पै जात भये फेरि मनुतीर्थ में आचमन करिकै प्रभासक्षेत्र में आवत भये २१ तव कौरव और पाण्डवन के संग्राम में सव क्षत्रियन को नाश भयो यह ब्राह्मणन को वचन श्रवण करिकै पृथ्वी को वोझ उतरयो यह मानत भये २२ यादवन कूं आनन्द के देनवारे जो वलदेवजी हैं सो संग्राम में गदान सूं युद्ध करैं ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं तिनें मने करिवे कूं कुरुक्षेत्र में जात भये २३ राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव कृष्ण और अर्जुन ये वलदेवजी कूं देखिकै प्रणाम करिकै कहा कहनेकी इच्छा करिकै यहा आये हैं या भयके मारे चुप होत भये २४ गदा हाथमें लिये क्रोधमें भरे एकको एक जीत्यो चाहैं विच

विचित्र मण्डलन में फिरें ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं तिनें देखिकै बोलत भये २५ हे राजन् दुर्योधन और भीमसेन ! तुम दोनों शूरवीर हौ तुल्य तुम्हारो बल है एक भीमसेन में कुछ बल अधिक है यह मैं जानूं हूं दूसरो दुर्योधन है तामें दाव पेंच अधिक है यह मैं जानूंहूं २६ ता कारण बराबरिहै पराक्रम जिनमें ऐसे जे तुम दोनों हौ तिनके बीचमें एकेहूकी जीति हार न होयगी याते निष्फल युद्धकूं शान्तकरो २७ हे राजन् परीक्षित ! परस्पर कुत्सित वचन और दुष्कृतन कूं स्मरण करिकै बँध्यो है वैर जिनको ऐसे जे भीमसेन दुर्योधन हैं ते भयोजन भर्यो वाक्य नहीं मानत भये २८ भीमसेन दुर्योधन को ऐसोही पिछलो कर्म्म है यह मानिकै बलदेवजी द्वारकापुरी में आवतभये तहा उग्रसेन सूं आदिलैकै प्रसन्न जे ज्ञातिवाले यादव हैं तिनसूं मिलतभये २९ निवृत्तभये हैं समस्त विरुद्ध जिनते फेरि नैमिषारण्य में आये ऐसे यज्ञमूर्त्ति जे भगवान् बलदेवजी हैं तिनें आनन्दपूर्वक सब ऋषीश्वर सब यज्ञन करिकै यजन करावतभये ३० समर्थ भगवान् बलदेवजी तिन ब्राह्मणन कूं विशुद्धज्ञान देतभये जा ज्ञान करिकै आत्मा में विश्व और विश्वमें आत्माकूं जाने है ३१ यज्ञकरे पीछे स्नान जिनने कियो सुन्दर वस्त्र आभूषणन करिके अलंकृत

हेवृकोदर॥ एकंप्राणाधिकंमन्यउतैकंशिक्षयाधिकम् २६ तस्मादेकतरस्येहयुवयोःसमवीर्य्ययोः॥ नलक्ष्यतेजयोऽन्योवा विरमत्वफलोरणः २७ नतद्वाक्यं जगृहतुर्बद्धवैरौनृपार्थवत्॥ अनुस्मरन्तावन्योन्यंदुरुक्तंदुष्कृतानिच २८ दिष्टंतदनुमन्वानोरामोद्वारवतींययौ॥ उग्रसेनादिभिःप्रीतैर्ज्ञातिभिःसमुपागतः २९ तंपुनर्नैमिषंप्राप्तमृषयोऽयाजयन्मुदा॥ क्रत्वङ्गंक्रतुभिःसर्वैर्निवृत्ताखिलविग्रहम् ३० तेभ्योविशुद्धविज्ञानं भगवान्व्यतरद्विभुः॥ येनैवाऽऽत्मन्यदोविश्व मात्मानंविश्वगंविदुः ३१ स्वपत्न्याऽवभृथस्नातोज्ञातिबन्धुसुहृद्वृतः॥ रेजेस्वज्योत्स्नयेवेन्दुःसुवासाःसुष्ठ्वलंकृतः ३२ ईदृग्विधान्यसंख्यानि बलस्यबल शालिनः॥ अनन्तस्याप्रमेयस्य मायामर्त्यस्यसन्तिहि ३३ योऽनुस्मरेतरामस्य कर्म्माण्यद्भुतकर्म्मणः॥ सायंप्रातरनन्तस्य विष्णोःसदयितोभवेत् ३४॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवतीर्थयात्रानिरूपणंनामैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९॥ ॥ ॥

राजोवाच॥ भगवन्यानिचान्यानि मुकुन्दस्यमहात्मनः॥ वीर्य्याण्यनन्तवीर्य्यस्य श्रोतुमिच्छामहेप्रभो १ कोनुश्रुत्वासकृद्ब्रह्मन्नुत्तमश्लोकसत्क

ज्ञाति बन्धु सुहृद् इनकूं सङ्गलैकै जैसे अपनी चादनी करिकै चन्द्रमा शोभाकूं प्राप्त होयहै ऐसे अपनी स्त्रीन सहित शोभाकूं प्राप्त होतभये ३२ बलवान् अनन्त अप्रमेय अर्थात् प्रमाण करिवे में न आवें माया करिकै मनुष्यरूप जिनने धारण कर्यो ऐसे बलदेवजी के ऐसे ऐसे अनेक लीला चरित्रहैं ३३ अद्भुतहैं कर्म्म जिनके ऐसे अनन्त बलदेवजीहैं तिनके कर्म्मन कूं जो पुरुष सायंकाल प्रातःकाल समय स्मरणकरै वह श्रीकृष्णचन्द्रको प्यारो होयहै ३४ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेबलदेवतीर्थयात्रानिरूपणंनामैकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९॥ ॥

(अथाशीतितमेकृष्णःश्रीदामानंगृहागतम्॥ सम्पूज्यापृच्छदर्थेषुंगुरुवासकथामुदा १ अस्सीवें अध्यायमें कृष्णजी घरमें आये द्रव्यकी इच्छावाले सुदामाजी तो अच्छे प्रकार पूजाकर आनन्दसूं गुरुके वासकी कथाको पूंछतभये १) अब राजापरीक्षित् प्रश्न करे हैं हे भगवन् समर्थ शुकदेवजी ! अनन्त हैं पराक्रम जिनके ऐसे मुक्तिके देनवारे जो महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्र-

मनकूं मेरी श्रवणकरिवे की इच्छाहै १ हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! उत्तम है यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रके विषयन में वैराग्यकी उत्पन्न करनवारी जो मनोहर कथा हैं तिनें निरन्तर सुनिके काम के बाणनतें खेदको प्राप्तभयो ऐसो सारको जाननवारो कौन पुरुषहै जो श्रवण न करै २ जा वाणी में भगवान् के नाम गुण निकसें वही वाणी सफलहै और जिन हाथनतें भगवान् की सेवा पूजा कर्म्म बनें वेही हाथ सफलहै स्थावर जङ्गम जीवनमें अन्तर्यामीरूप होयके बसे जे भगवान् हैं तिनको जो स्मरण करै वही मन सफल है और जिन काननसूं भगवान् की पवित्रकथा सुनै वेही कान सफल हैं ३ स्थावर जगम सब भगवान् के रूप हैं यह मानिके जो पुरुष शिरसूं प्रणामकरै वही शिर धन्यहै स्थावर जंगम भगवान् को रूप जानिके जिन नेत्रनसूं देखै वेही नेत्र धन्य हैं और भगवान् अथवा भक्तजनन के चरणनको धोवन जल नित्य जिन अंगनमें लगै वेही अंग सफलहैं ४ अब श्रीसूतजी सनकादिकनसूं कहे हैं विष्णुरात राजा परीक्षित्नें पूछे वासुदेव भगवान्में डूब्यो है हृदय जिनको ऐसे जो वेदव्यास के पुत्र भगवान् शुकदेवजी हैं सो बोलतभये ५ श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कोई एक ब्राह्मण ब्रह्मके जाननवारेन में उत्तम विषयन में वैराग्यवान्

थाः ॥ विरमेतविशेषज्ञोविषण्णःकाममार्गणैः २ सावाग्ययातस्यगुणान्गृणीते करौचतत्कर्म्मकरौमनश्च ॥ स्मरेद्वमन्तंस्थिरजङ्गमेषु शृणोतितत्पुण्यक
थाःसकर्णः ३ शिरस्तुतस्योभयलिङ्गमानमेत्तदेवयत्पश्यतितद्धिचक्षुः ॥ अङ्गानिविष्णोरथतज्जनानां पादोदकंयानिभजन्तिनित्यम् ४ ॥ सूतउवाच ॥
विष्णुरातेनसंपृष्टोभगवान्बादरायणिः ॥ वासुदेवेभगवति निमग्नहृदयोऽब्रवीत् ५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ कृष्णस्यासीत्सखाकश्चिद्ब्राह्मणोब्रह्मवित्तमः ॥
विरक्तइन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्माजितेन्द्रियः ६ यदृच्छयोपपन्नेन वर्त्तमानोगृहाश्रमी ॥ तस्यभार्य्याकुचैलस्य क्षुत्क्षामाचतथाविधा ७ पतिव्रतापतिंप्राह म्ला
यतावदनेनसा ॥ दरिद्रासीदमानासा वेपमानाऽभिगम्यच ८ ननुब्रह्मन्भगवतः सखासाक्षाच्छ्रियःपतिः ॥ ब्रह्मण्यश्चशरण्यश्च भगवान्सात्वतर्षभः ९ त
मुपैहिमहाभाग साधूनांचपरायणम् ॥ दास्यतिद्रविणंभूरि सीदतेतेकुटुम्बिने १० आस्तेऽधुनाद्वारवत्यां भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ॥ स्मरतःपादकमलमात्मा
नमपियच्छति ॥ किंत्वर्थकामान्भजते नात्यभीष्टाञ्जगद्गुरुः ११ सएवंभार्य्ययाविप्रोबहुशःप्रार्थितोमुहुः ॥ अयंहिपरमोलाभउत्तमश्लोकदर्शनम् १२ इति

शान्त मन जितेन्द्रिय कृष्णको मित्रहो ६ गृहस्थाश्रम कूं बर्तै जो कछु अनायासपूर्व्वक प्राप्त होय ताहीमें अपनो देह निर्वाह करै जीर्ण वस्त्रनकूं धारणकरै ऐसो ब्राह्मणहो ताकी तैसीही स्त्री रही क्षुधा सूं पीड़ित होनेसे समस्त अङ्गनकरि कृशित और अन्न प्राप्तहोय ताय पतिकूं परोसिदेइ आप भूंखी रहिजाय ७ बहुत दुःखित और भयके मारे थर थर कांपै ऐसी जो पतिव्रता स्त्री है सो दरिद्री जो पतिहै ताके समीप आयकै बोलति भई ८ हे ब्राह्मण ! साक्षात् लक्ष्मीके पति ब्रह्मभक्त शरणागतके पालक यादवनमें श्रेष्ठ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो तुम्हारे सखा सुने हैं ९ अहो बड़भागी ब्राह्मण ! साधुनकूं परमआश्रय जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पास तुम जावो दुःखित कुटुम्बी जो तुमहौ तिनें बहुत सों द्रव्य देयँगे १० भोज वृष्णि अन्धक ये यादवन के गोत्रहैं तिनके ईश्वर जो श्री कृष्णचन्द्र हैं सो अब द्वारकापुरी में है वे चरणकमल के स्मरण करनवारे कूं आत्मापर्य्यन्त देय हैं ११ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भजनकरनवारे अपने भक्तन कूं परिणाम में दुःखरूप

ऐसो जो धन और विषय इनको देनो कछु बहुत नहीं है या प्रकार कोमल वचनन सूं स्त्रीने बहुत प्रार्थनाकरी तब तो सुदामा ब्राह्मण उत्तमहै यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन होयगो यह बड़ो लाभहै १२ या प्रकार मनमें विचार करिकै जायबे की इच्छा करतभये कि हे मंगलरूपिणी ! तेरे घरमें कछु भेंटदेबेकू होय तो दे खाली हाथ कैसे जाऊं १३ तब सुदामाकी स्त्री काहू परोसी ब्राह्मण के घरते चारिमुट्ठी चावल मागिकै कपड़ाकी चीरमें बांधिकै सुदामाकूं श्रीकृष्ण के लिये भेंट देतिभई १४ ब्राह्मणन में श्रेष्ठ जो सुदामाहै सो चावलन कूं लैकै श्रीकृष्णको दर्शन मोकूं कैसे होयगो ऐसे विचार करत द्वारकापुरी में जातभये १५ द्वारकाके ब्राह्मणहैं सङ्ग जाके ऐसो जो सुदामा ब्राह्मणहै सो तीन चौकी उल्लंघन करिकै और तीन ड्योढीनकूं उल्लंघनकरिकै जिनके पास काहूके जानेकी सामर्थ्य नहीं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कोहीहै धर्म्म जिनके ऐसेजे अन्धक वृष्णि यादवनके घर हैं १६ तिन घरन के बीचमें सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्रकी रानीनके घरमें सूं एक जो सुन्दर घरहै तामें सुदामा प्रवेश करत भयो ता समय ब्रह्मकी प्राप्तिमें जो आनन्द प्राप्त होय तैसे आनन्द कूं पावत भयो १७ प्यारी रुक्मिणी की शय्या के ऊपर विराजमान जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो दूर ते

संचिन्त्यमनसा गमनायमतिन्दधे ॥ अप्यस्त्युपायनंकिञ्चिद्गृहेकल्याणिदीयताम् १३ याचित्वाचतुरोमुष्टीन् विप्रान्पृथुकतण्डुलान् ॥ चैलखण्डेनतान् बद्ध्वा भर्त्रेप्रादादुपायनम् १४ सतानादायविप्राग्र्यः प्रययौद्वारकांकिल ॥ कृष्णसंदर्शनंमह्यं कथंस्यादितिचिन्तयन् १५ त्रीणिगुल्मान्यतीयाय तिस्रःक क्षाश्चसद्विजः ॥ विप्रोऽभ्यन्धकवृष्णीनां गृहेष्वच्युतधर्म्मिणाम् १६ गृहंद्व्यष्टसहस्राणां महिषीणांहरेर्द्विजः ॥ विवेशैकतमंश्रीमद्ब्रह्मानन्दंगतोयथा १७ तंविलोक्याच्युतोदूरात्प्रियापर्य्यङ्कमास्थितः ॥ सहसोत्थायचाभ्येत्य दोर्भ्यांपर्यग्रहीन्मुदा १८ सख्युःप्रियस्यविप्रर्षेरङ्गसङ्गातिनिर्वृतः ॥ प्रीतोव्यमुञ्चद ब्बिन्दून् नेत्राभ्यांपुष्करेक्षणः १९ अथोपवेश्यपर्यङ्के स्वयंसख्युःसमर्हणम् ॥उपहृत्यावनिज्यास्य पादौपादावनेजनीः २० अग्रहीच्छिरसाराजन् भगवा ल्लोकपावनः ॥ व्यलिम्पद्दिव्यगन्धेन चन्दनागुरुकुङ्कुमैः २१ धूपैःसुरभिभिर्मित्रं प्रदीपावलिभिर्मुदा ॥ अर्चित्वावेद्यताम्बूलं गांचस्वागतमब्रवीत् २२ कुचैलंमलिनंक्षामं द्विजन्धमनिसन्ततम् ॥ देवीपर्यचरत्साक्षाच्चामरव्यजनेनवै २३ अन्तःपुरजनोदृष्ट्वा कृष्णेनामलकीर्त्तिना ॥ विस्मितोऽभूदतिप्रीत्या

देखिकै शीघ्र उठिकै आयकै भुजा पसारिकै बड़े आनन्दपूर्वक सुदामाजी सूं मिलतभये १८ प्यारे सखा जो सुदामा ब्राह्मण हैं तिनके मिले ते अतिआनन्दपूर्वक प्रसन्न भये ऐसे जो कमलदल लोचन श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके नेत्रन सू आसून की बूंदे टपकती भई १९ हे राजन् परीक्षित् ! लोकन के पवित्र करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुदामा सूं मिलिकै पलंग के ऊपर बैठाय कै सखा जो सुदामा हैं तिनकूं भेंट दैकै चरण धोइकै धोवन जो जल है ताय अपने शिरपै चढ़ावत भये और दिव्य गन्ध चन्दन अगर केसर इनकू सुदामाजी के लगावत भये २० । २१ श्रेष्ठगन्धयुक्त धूपदीनी और बराबरि दीपक बरायकै धरि दिये बड़े आनन्द तें मित्र जो सुदामा हैं तिनकी पूजा करिकै ताम्बूल की बीरी दैकै सम्मुख ठाढ़ो करिकै मित्र भलें आये ऐसे कहतभये २२ फटे मलिन वस्त्र पहिरे और कृशित अंग में नसें जाके निकसिरहीं ऐसो जो सुदामा ब्राह्मणहै ताय साक्षात् देवी रुक्मिणी हैं सो चमर ढोरिकै पखा करिकै सेवा करति भई २३ निर्मल

है कीर्त्ति जिनकी ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने प्रसन्नतापूर्व्वक सत्कार जाको कर्यो ऐसो जो अवधूत सुदामा है ताय देखिकै अन्तःपुर के वासी जन आश्चर्य्य मानत भये २४ भिक्षाको मांगनवारो अवधूत याही तें निन्दित अधम शोभाहीन ऐसे या सुदामा ने या संसारमें कौन पुण्य करे हैं २५ जैसे बड़े भय्या बलदेवजी तें मिलैं तैसे त्रिलोकी के गुरु लक्ष्मी जिनके अंगमें वास करैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र शय्या के ऊपर बैठी रुक्मिणी कूं त्यागिकै यासूं आयकै मिले २६ हे राजन् परीक्षित् ! सुदामा और श्रीकृष्णचन्द्र दोनों परस्पर हाथ पकरिकै पहलेही गुरुकुल में जब वास करयो हो तब की अपनी ललित बात कहत भये २७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र बोले हे धर्म्म के जाननवारे ! हे ब्राह्मण ! दक्षिणा जिनने पाई ऐसे जे श्रीगुरु हैं तिनके पासतें जब तुम विद्या पढ़िके आये तब से तुमने अपनी बराबरि की स्त्री ब्याही कि नहीं ब्याही कछु विवाह करिवे के चिह्न दिखाई देइहैं और कछु विषयादिकन के भोग दिखाई नहीं देइहैं यातें न भयो होइगो यह सन्देह है २८ हे विवेकी मित्र सुदामा ! तुम्हारो चित्त विषयन करिकै बहुधा चलायमान नहीं है यह मैं जानूहूं तैसेही घरन में वस्त्रादिकन में तुम अत्यन्त प्रसन्न नहीं हौ विवेकी हौ तुमकूं ऐसो

अवधूतंसभाजितम् २४ किमनेनकृतंपुण्यमवधूतेनभिक्षुणा ॥ श्रियाहीनेनलोकेऽस्मिन् गर्हितेनाधमेनच २५ योऽसौत्रिलोकगुरुणा श्रीनिवासेनसम्भृतः॥ पर्य्यङ्कस्थांश्रियंहित्वा परिष्वक्तोऽग्रजोयथा २६ कथयाञ्चक्रतुर्गाथाः पूर्व्वागुरुकुलेसतोः ॥ आत्मनोललिताराजन् करौगृह्यपरस्परम् २७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अपिब्रह्मन्गुरुकुलाद्भवतालब्धदक्षिणात् ॥ समावृत्तेनधर्मज्ञभार्य्योढासदृशीनवा २८ प्रायोगृहेषुतेचित्तमकामविहतंतथा ॥ नैवातिप्रीयसे विद्वन्धनेषुविदितंहिमे २९ केचित्कुर्व्वन्तिकर्म्माणि कामैरहतचेतसः ॥ त्यजन्तःप्रकृतीर्दैवीर्यथाऽहंलोकसंग्रहम् ३० कच्चिद्गुरुकुलेवासं ब्रह्मन्स्मरसि नौयतः ॥ द्विजोविज्ञायविज्ञेयं तमसःपारमश्नुते ३१ सवैसत्कर्म्मणांसाक्षाद्द्विजातेरिहसम्भवः ॥ आद्योऽङ्गयत्राऽऽश्रमिणां यथाऽहंज्ञानदोगुरुः ३२ नन्वर्थकोविदाब्रह्मन् वर्णाश्रमवतामिह ॥ येमयागुरुणावाचातरन्त्यञ्जोभवार्णवम् ३३ नाहमिज्याप्रजातिभ्यां तपसोपशमेनवा ॥ तुष्येयंसर्व्वभूतात्मा गुरुशु

ही योग्य है २९ जो कदाचित् कहो कि चाहना नहीं तो घरमें रहिवे तें कहा प्रयोजन है ताके उत्तर श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—जैसे मैं ईश्वर लोकन के सिखायवे के लिये कर्म्म करूहूं तैसेही ईश्वर की मायाने रची जे विषयवासना हैं तिनैं त्यागिकै कामना करिकै नहीं हैं चलायमान मन जिन के ऐसे भी कोई पुरुष कर्म्मन कूं करे हैं ३० हे ब्राह्मण ! हम तुम जब गुरुके घरमें जायकै रहे हे तब को कभऊं स्मरण करो हौ कि नहीं जिन गुरुतें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य जानिवे योग्य जो आत्माको स्वरूप है ताय जानिकै पुरुष संसार तें छूटिजात है ३१ या संसारमें जहां जन्म लेइ है वह पिता प्रथम गुरुहै और फेरि जो यज्ञोपवीत करिके वेद पढ़ावै सन्ध्या गायत्री सुन्दर कर्म्म सिखावै वह दूसरो गुरुहै जैसो मो ईश्वरकूं पूजे तें पिता गुरु तें या दूसरे गुरुकूं पूजै और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चारयो आश्रमी है इन सबकूं ज्ञान देनवारो जो गुरुहै सो साक्षात् मैं हूं ३२ जे पुरुष मनुष्य जन्म धारण करिकै गुरुरूप जो मैं हूं ताके उपदेश तें संसाररूपी समुद्र के पारलगे हैं हे ब्राह्मण सुदामा ! वे पुरुष ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इन चारि वर्णन में और ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी इन चारयो आश्रमन में हैं तिनके मध्य में अर्थ में निपुण मैं हूं ३३ ज्ञानके

देनवारे जो गुरु हैं तिनसूं अधिक और सेवा लायक कोई नहीं है याही तें तिन गुरुन के भजनतें और कोई अधिक धर्म्म नहीं है समस्त प्राणीन को आत्मा जो मैं हूं सो यज्ञ करिबो गृहस्थ को धर्म्म और ब्रह्मचारीको धर्म्म इन करिकै और तप करिबो वानप्रस्थको धर्म्म और शान्ति संन्यासी को धर्म्म इन सब करिकै सन्तुष्ट नहीं होऊंहूं जैसो गुरुकी सेवा करे तें तुष्ट होऊंहूं ३४ हे ब्राह्मण! जब गुरुनके समीप जायकै वसे हैं तब को स्मरण आवे है इन्धन लाइवे के निमित्त एकसमय गुरुकी स्त्रीने कहीरही तब हम तुम एकबड़े वनमें गयेरहे ३५ ता समय ऋतुके विना बड़ी भयङ्कर पवन चलीरही मेघ वर्षा कठोर गर्जनि भई ३६ तबताईं सूर्य्य अस्त होय गयो चारोंओर दिशानमें अन्धकार छाय रह्यो जलही जल दृष्टिपरै ऊंचो नीचो कछु न दिखाई दियो ३७ वार वार पवन चली जल वर्षे तिनसूं हम अतिदुःखित भये दिशानकूं भूलि गये चारयो ओर जलहीजल जामें होय गयो ऐसे वनमें आपसमें हाथ पकरिकै आतुर होयकै लकड़ीके वोझनकूं शिर

शूपयायथा ३४ अपिनःस्मर्य्यतेब्रह्मन् वृत्तंनिवसतांगुरौ ॥ गुरुदारैश्चोदितानामिन्धनानयनेक्वचित् ३५ प्रविष्टानांमहारण्यमपर्त्तौसुमहद्द्विज ॥ वातवर्षमभूत्तीव्रं निष्ठुराःस्तनयित्नवः ३६ सूर्य्यश्चास्तंगतस्तावत्तमसाचावृतादिशः ॥ निम्नंकूलंजलमयं नप्राज्ञायतकिञ्चन ३७ वयंभृशंतत्रमहानिलाम्बुभिर्निहन्यमानामुहुरम्बुसंप्लवे ॥ दिशोऽविदन्तोऽथपरस्परंवनेगृहीतहस्ताःपरिबभ्रिमातुराः ३८ एतद्विदित्वाउदितेरवौसान्दीपनिर्गुरुः ॥ अन्वेषमाणोनःशिष्यानाचार्य्योऽपश्यदातुरान् ३९ अहोहेपुत्रकायूयमस्मदर्थेऽतिदुःखिताः ॥ आत्मावैप्राणिनांप्रेष्ठस्तमनादृत्यमत्पराः ४० एतदेवहिसच्छिष्यैःकर्त्तव्यंगुरुनिष्कृतम् ॥ यद्वैविशुद्धभावेन सर्व्वार्थात्मार्प्पणंगुरौ ४१ तुष्टोऽहंभोद्विजश्रेष्ठाःसत्याःसन्तुमनोरथाः ॥ छन्दांस्ययातयामानि भवन्त्विहपरत्रच ४२ इत्थंविधान्यनेकानि वसतांगुरुवेश्मसु ॥ गुरोरनुग्रहेणैव पुमान्पूर्णःप्रशान्तये ४३ ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ किमस्माभिरनिर्वृत्तं देवदेवजगद्गुरो ॥ भवतासत्यकामेन येषांवासोगुरावभूत् ४४ यस्यच्छन्दोमयंब्रह्मदेहआवपनंविभो ॥ श्रेयसांतस्यगुरुषु वासोऽत्यन्तविडम्बनम् ४५ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रीदामचरितेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

पै धरे डोलतभये ३८ सान्दीपनि जो गुरु आचार्य्य हैं सो बालक शिष्य इन्धन लेवेकू गये हैं यह बात जानिकै प्रातःकाल जब सूर्य्य उदय भयो तब हम शिष्यनकूं ढूंढ़त ढूंढ़त वन में गये हे ता समय लकड़ीन के वोझ शिरपै धरे वस्त्र जिनके भीजि गये ऐसे दुःखित जो हम हैं तिनें देखत भये ३९ ता समय कृपा करिकै तीन श्लोक कहे तिनसूं हम कृतार्थ होयगये हे पुत्रो! तुम हमारेलिये बहुत दुःखित भये प्राणीनकूं देह बहुत प्यारो है ताको निरादर करिकै हमारी सेवा करयो ४० सत्पात्र शिष्यन कू याही प्रकार गुरुन की सेवा करनी योग्यहै शुद्ध भावना करिकै धर्म्म अर्थ काम मोक्ष ये चारयो पदार्थ जासूं प्राप्त होइँ ऐसे देह कूं गुरुके अर्प्पण करि देय ४१ हे द्विजनमें श्रेष्ठो! तुम्हारे ऊपर मैं प्रसन्न भयो हू तुम्हारे मनोरथ सत्य होयँ तुमने मोतें जो वेद पढ़ेहैं ते या लोक और परलोकमें नहीं गयो है सार जिनको ऐसे अर्थात् नवीन पढ़े याद बने रहैं ४२ गुरुनके घरमें वसे जे हम हैं तिनके ऐसे ऐसे अनेक चरित्रहैं गुरुनकी कृपा करिके पुरुषके पूर्ण मनोरथ होयकै

शान्त होयहैं ४३ अब ब्राह्मण सुदामा बोले–हे देवन के देव! हे जगत् के गुरु! सत्यहै सङ्कल्प जिनको ऐसे जो तुमहो तिनके सङ्ग हमारो गुरुन के पास वासभयो इनकूं कौन वस्तुकी प्राप्ति न भई अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु पाय चुके ४४ हे समर्थ! सम्पूर्ण कल्याण जाते होइँ ऐसो छन्दोमय वेद सो जिनकी मूर्त्ति है तिन तुम्हारो गुरुन के पास जो वासहै सो लीलामात्रहै ४५ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरुचिरप्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रीदामचरितेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(एकाशीतितमेसख्युर्जग्ध्वापृथुकतण्डुलान् ॥ श्रियंनिर्म्मितवानिन्द्रदुर्लभान्तुतदाश्रमे १ इक्यासीवें अध्याय में कृष्णजी मित्र सुदामा के चावलों को भोजनकर ताके स्थानमें इन्द्रकेभी दुर्लभ लक्ष्मीको रचते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन् परीक्षित्! सब प्राणीन के मनकी जाननवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो द्विजनमें मुख्य जो सुदामाहै ताके संग बातें करत मुसिकायकै तासों बोलत भये १ ब्राह्मणन की भक्ति करैं साधुन की गति ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र प्रेमसहित चितवनि सूं देखत हँसत प्यारो जो ब्राह्मण सुदामाहै तासूं बोलत भये २ अब श्री-

श्रीशुकउवाच ॥ सइत्थंद्विजमुख्येन सहसंकथयन्हरिः ॥ सर्व्वभूतमनोऽभिज्ञः स्मयमानउवाचतम् १ ब्रह्मण्योब्राह्मणंकृष्णो भगवान्प्रहसन्प्रियम् ॥ प्रेम्णानिरीक्षणेनैव प्रेक्षन्खलुसतांगतिः २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ किमुपायनमानीतं ब्रह्मन्मेभवतागृहात् ॥ अण्वप्युपाहृतंभक्तैः प्रेम्णाभूर्य्येवमेभवेत् ॥ भूर्य्यप्यभक्तोपहृतं नमेतोषायकल्पते ३ पत्रंपुष्पंफलंतोयं योमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ४ इत्युक्तोऽपिद्विजस्तस्मैव्रीडितःपतये श्रियः ॥ पृथुकप्रसृतिंराजन्नप्रायच्छदवाङ्मुखः ५ सर्व्वभूतात्मदृक्साक्षात्तस्याऽऽगमनकारणम् ॥ विज्ञायाचिन्तयन्नायंश्रीकामोमाऽभजत्पुरा ६ पत्न्याःपतिव्रतायास्तु सखाप्रियचिकीर्षया ॥ प्राप्तोमामस्यदास्यामि सम्पदोऽमर्त्यदुर्ल्लभाः ७ इत्थंविचिन्त्यवसनाच्चीरबद्धान्द्विजन्मनः ॥ स्वयंजहारकिमिदमिति पृथुकतण्डुलान् ८ नन्वेतदुपनीतंमे परमप्रीणनंसखे ॥ तर्पयन्त्यङ्गमांविश्वमेतेपृथुकतण्डुलाः ९ इतिमुष्टिंसकृज्जग्ध्वा द्वितीयांजग्धुमाददे ॥ तावच्छ्री

कृष्णचन्द्र कहेहैं हे ब्राह्मण! तुम मेरे लिये कहा भेंट लायेहो भक्ति प्रेमपूर्व्वक मोकूं थोड़ीसी भी भेंट देइ हैं सो बहुत होय जायहै और जो भक्ति बिना मोकूं बहुत भी देइ परन्तु वह मेरे सन्तोष के लिये नहीं होय है ३ जो पुरुष भक्ति करिकै पत्र पुष्प फल जल मोकूं देइ हैं सावधानहै मन जाको ऐसे पुरुष ने भक्ति करिके जो मोकूं दियोहै ताय मैं भोजन करूंहूं ४ हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार जाते कही नीचे कूं जाको मुख ऐसो जो सुदामा ब्राह्मणहै सो लाज के मारे लक्ष्मी के पति जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनें चावल न देत भयो ५ साक्षात् सब प्राणीनके साक्षी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुदामा के आगमनको कारण जानिकै विचार करत भये कि धन की चाहना करिकै या सुदामा ने मेरो भजन नहीं कर्यो है ६ पतिव्रता या सुदामा की स्त्री है ताके प्रिय करिवे के लिये मित्र सुदामा मेरे पास आयो है यातें देवतानकूं दुर्लभ ऐसी सम्पत्ति याहि देऊँगो ७ या प्रकार विचारिकै चीरमें बँधे जे चावल हैं तिनें यह कहा है ऐसे कहिकै सुदामा के वस्त्र में तें आपही लेतभये ८ हे मित्र! हे अङ्ग सुदामा! ये तुम चावल लाये सो मोकूं बहुत प्यारे लगेहैं इनकूं थोड़े मति जानो ये चावल मेरे सर्व्व विश्वको पेट भरिदेइँगे ९ ऐसे कहिकै एक मुट्ठी चावलनको

भोजन करिकै और दूसरी मुट्ठी जब मारी तबहीं श्रीकृष्णपरायण जो रुक्मिणी है सो परमेष्ठी श्रीकृष्ण को हाथ पकरि कै कहति भई कि मित्र के घरकी वस्तु आपुही भोजन करि ज उगे कछु हमकूं भी रहन देउगे एक तो यातें आय कैं हाथ पकरयो दूसरो कारण आगे कहे हैं १० हे विश्व के आत्मा! एक मुट्ठी चावल भोजन करिकै सम्पूर्ण विश्व की सम्पत्ति याकूं देचुके और दूसरी मुट्ठी भोजन करिकै कहा मोकूं देचुकोगे यह लोक और परलोक में तुम्हारे संतुष्ट भये तेही पुरुषकूं सम्पत्ति प्राप्त होय हैं ११ ब्राह्मण सुदामा वा रात्रिकूं श्रीकृष्णचन्द्र के मन्दिर में रहिके भोजन करिकै जल पीकै मानों स्वर्ग में आयो हूं ऐसे अपने कूं मानिकै सुख मानत भये १२ हे राजन् परीक्षित्! प्रातःकाल जब भयो तब विश्व के पालन करनवारे आत्मा के आनन्द में मग्न ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सुदामा कूं प्रणाम करिकै मार्ग्ग में पहुँचावनकूं संग पीछे पीछे आवत भये और मित्र सुदामा तुमने भलो दर्शन दियो ऐसे अधीनता के वचनन सूं आनन्द जिनकूं दियो ऐसे सुदामा अपने घरकूं आवत भये १३ सुदामा कूं जब धन नहीं मिल्यो तब मोकूं धन देव ऐसे श्रीकृष्ण तें न कहत भयो बड़े जो श्रीकृष्ण हैं तिनके दर्शनतें आनन्द जिनके भयो ऐसे सुदामा लज्जित होय

जगृहेहस्तं तत्परापरमेष्ठिनः १० एतावताऽलंविश्वात्मन् सर्व्वसम्पत्समृद्धये ॥ अस्मिन्लोकेऽथवाऽमुष्मिन्पुंसस्त्वत्तोपकारणम् ११ ब्राह्मणस्तांतुरजनीमुषित्वाऽच्युतमन्दिरे ॥ भुक्त्वापीत्वासुखंमेने आत्मानंस्वर्गगंयथा १२ श्वोभूतेविश्वभावेन स्वसुखेनाभिवन्दितः ॥ जगामस्वालयंतात पथ्यनुव्रज्यनन्दितः १३ सचालब्ध्वाधनंकृष्णान्नतुयाचितवान्स्वयम् ॥ स्वगृहान्व्रीडितोऽगच्छन् महद्दर्शननिर्वृतः १४ अहोब्रह्मण्यदेवस्य दृष्टाब्रह्मण्यतामया ॥ यद्दरिद्रतमोलक्ष्मीमाश्लिष्टोबिभ्रतोरसि १५ क्वाहंदरिद्रःपापीयान् क्वकृष्णःश्रीनिकेतनः ॥ ब्रह्मबन्धुरितिस्माहं बाहुभ्यांपरिरम्भितः १६ निवासितःप्रियाजुष्टे पर्य्यङ्केभ्रातरोयथा ॥ महिष्यावीजितःश्रान्तोबालव्यजनहस्तया १७ शुश्रूषयापरमया पादसंवाहनादिभिः ॥ पूजितोदेवदेवेनविप्रदेवेनदेववत् १८ स्वर्गापवर्गयोःपुंसां रसायांभुविसम्पदाम् ॥ सर्व्वासामपिसिद्धीनां मूलंतच्चरणार्चनम् १९ अधनोऽयंधनंप्राप्यमाद्यन्नुच्चैर्नमांस्मरेत् ॥ इतिकारुणिकोनूनं धनंमेभूरिनाददात् २० इतितच्चिन्तयन्नन्तः प्राप्तोनिजगृहान्तिकम् ॥ सूर्य्यानलेन्दुसङ्काशैर्विमानैःसर्व्वतोवृतम् २१ विचित्रोपवनोद्यानैःकूजद्द्विजकुलाकु

अपने घरकूं जात भये १४ अहो बड़ो आश्चर्य है ब्राह्मणन की भक्ति करनवारेन के देवता श्रीकृष्णचन्द्र की ब्रह्मभक्ति मैंने देखी लक्ष्मी कूं छाती में धारण करनवारे श्रीकृष्ण हैं सो दरिद्री जो मैं सुदामा हूं तासूं छाती लगायके मिले १५ दरिद्री पापी ऐसो ब्राह्मण मैं कहां और लक्ष्मी जिनके अंग में वास करें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कहां मोमें उनमें बड़ा अन्तर है सो भुजा पसारिकै मोसूं मिले १६ जैसे बलदेवजी कूं बैठावें ऐसे रुक्मिणी जापै बैठी वा पलँगके ऊपर मोंकूं बैठाय लियो मार्ग्ग को परिश्रम जाके भयो ऐसो जो मैं हूं ताकूं चमर है हाथ में जाके ऐसी रुक्मिणी पै पंखा ढुरवायो १७ बड़ी सेवा करिकै पांवन को दाबनो धोवनो पोछनो इत्यादिक जे सत्कार हैं तिन करिकै देवन के देव ब्रह्मदेव श्रीकृष्णचन्द्र ने देवतान की पूजा करैं ऐसे मेरी पूजा करी १८ जे मुक्त हैं तिनकूं और पृथ्वी कूं तथा रसातल की सम्पत्तिन कूं और सम्पूर्ण सिद्धिन कू श्रीकृष्णके चरणारविन्द को पूजनहै सोई कारण है अर्थात् श्रीकृष्ण के चरणकमल की पूजा करै तब पदार्थ

मिलैं दरिद्री जो सुदामा है सो धनकूं पायकै बहुत मतवारो होयकै मोकूं भूलि जायगो या कारण करुणावान् श्रीकृष्ण मोकूं यत्किञ्चित् भी धन न देत भये १९ । २० या प्रकार सुदामाजी मनमें विचार करत अपने घरके पास आवत भये कैसो घर को समीपहै ताको वर्णन करें हैं सूर्य्य अग्नि चन्द्रमा की तुल्य जिनको प्रकाश ऐसे चारोओर विमान धरे हैं २१ चित्र विचित्र वगीचा लगिरहे हैं तिनमें पक्षीन के झुंड के झुंड बोलि रहे हैं फूले हैं कुमुद अम्भोज कह्लार उत्पल जिनमें ऐसे जलहैं २२ और शृङ्गार करे पुरुष और हिरन केसे हैं नेत्र जिनके ऐसी स्त्री जहां तहां डोले हैं ऐसी शोभा देखिकै और विमानन को प्रकाश देखिकै आश्चर्य्य मानिकै यह कहा है कौनको स्थानहै फेरि विचारत भये कि यह तो हमारोही रहिबे को स्थानहै कैसो होय गयो या प्रकार ऐसे बड़भागी जे सुदामा हैं तिनकूं देवतान की तुल्य है शोभा जिनकी ऐसे स्त्री पुरुष गावत बजावत सम्मुख लिवायवे कूं आवत भये २३ । २४ पतिकूं आये सुनिकै भयो है आनन्द और हरबराहट जाके ऐसी जो सुदामा की स्त्री है सो जैसे साक्षात् रूप धरिके कमळ वनमें तें लक्ष्मी निकसे या प्रकार जल्दीहीते घर ते बाहर निकसति भई श्रीकृष्णचन्द्र स्वर्ग कूं सुदामाके महल में लाये याते सुदामा और

लैः ॥ प्रोत्फुल्लकुमुदाम्भोजकह्लारोत्पलवारिभिः २२ जुष्टंस्वलंकृतैःपुम्भिःस्त्रीभिश्चहरिणाक्षिभिः ॥ किमिदंकस्यवास्थानं कथंनदिदमित्यभूत् २३ एवंमीमांसमानंतं नरानार्य्योऽमरप्रभाः ॥ प्रत्यगृह्णन्महाभागं गीतवाद्येनभूयसा २४ पतिमागतमाकर्ण्य पत्न्युद्धर्षाऽतिसंभ्रमा ॥ निश्चक्रामगृहात्तूर्णं रूपिणीश्रीरिवालयात् २५ पतिव्रतापतिंदृष्ट्वा प्रेमोत्कण्ठाऽश्रुलोचना ॥ मीलिताक्ष्यनमद्बुद्ध्या मनसापरिषस्वजे २६ पत्नींवीक्ष्यविस्फुरन्तींदेवींवैमानिकीमिव ॥ दासीनांनिष्ककण्ठीनां मध्येभान्तींसविस्मितः २७ प्रीतःस्वयंतयायुक्तः प्रविष्टोनिजमन्दिरम् ॥ मणिस्तम्भशतोपेतं महेन्द्रभवनंयथा २८ पयःफेननिभाःशय्यादान्तारुक्मपरिच्छदाः ॥ पर्य्यङ्काहेमदण्डानि चामरव्यजनानिच २९ आसनानिचहैमानि मृदूपस्तरणानिच ॥ मुक्तादामविलम्बीनि वितानानिद्युमन्तिच ३० स्वच्छस्फटिककुड्येषु महामारकतेषुच ॥ रत्नदीपान्भ्राजमानाल्ँललनारत्नसंयुतान् ३१ विलोक्यब्राह्मणस्तत्र समृद्धीःसर्व्वसम्पदाम् ॥ त

सुदामा की स्त्री दोनों देवस्वरूप होय गये २५ प्रेम करिकै चाहना जाके भई नेत्रन में आंसू आयगये ऐसी पतिव्रता जो सुदामा की स्त्री है सो पतिकूं आये देखिकै नेत्र मूंदिकै बुद्धि करिकै विचार करति भई कि नमस्कार करिबो योग्य है ऐसे निश्चय करिकै मन सूं आलिङ्गन करत नमस्कार करति भई २६ जैसे विमान में बैठी देवी प्रकाशे है ऐसे धुकधुकी है कण्ठ में जिनके ऐसी दासीन के मध्य में प्रकाशमान अपनी स्त्री कूं देखिकै सुदामाजी आश्चर्य्य मानत भये २७ प्रसन्न होयकै ता स्त्री कूं सङ्ग लैके अपने मन्दिर में धसत भये कैसो मन्दिर है सैकडन मणिन के स्तम्भ जामें लगे मानों इन्द्रको भवनहै २८ दूध के श्वेत भागन की तुल्य कोमल श्वेत बिछौना जिनपै बिछे ऐसे हाथीदाँत के सोने से जटित पलँग जा मन्दिर में बिछे हैं और स्वर्ण की डाडी जिनमें ऐसे चमर पखा धरे हैं २९ कोमल हैं बिछौना जिनमें ऐसी सुवर्ण की चौकी बिछी हैं मोतिन की माला जिनमें लटकैं ऐसे प्रकाशमान चँदोवा तनि रहे हैं ३० निर्म्मल स्फटिक मणिन की भीतैं बनी हैं तिनमें और महामरकतमणिन की भीतैं हैं तिन में स्त्रीरत्नसहित जा मन्दिर में रत्नके दीवा प्रकाशित हैं ३१ ता मन्दिर में सब सम्पत्तिन की वृद्धि देखिकै स्थिर होयकै अक-

स्मात् भई जो अपनी सम्पत्ति है सो कहां तें आई ऐसे विचार करत भये ३२ सदाको दरिद्री भाग्यहीन जो मैं हूं ताके वड़ो है वैभव जिनके ऐसे यादवन में उत्तम जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकी चितवनि विना निश्चय और कोई या सम्पत्ति को कारण नहीं है ३३ जो कृष्ण ने चितवनि करिकै वडी जो सम्पत्ति दीनी है सो मैं तोकूं देऊं हूं यह क्यों न कहिदीनी तहां सुदामा कहे हैं पूर्णमनोरथ लक्ष्मी के पति यातें वहुत हैं भोग जिनके ऐसे दशार्हवंशोत्पन्न श्रेष्ठ जो मेरे सखा श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मागनवारे पुरुषन कूं कहे विनाही वहुत सों धन देइ हैं आप देवे लायक जो वस्तुहै ताय मेघकी तुल्य देखे हैं यामें तात्पर्य्य कहा निकस्यो जैसे सम्पूर्ण कूं भरिदेइ ऐसो जो उदार मेघ है सो कभऊं एक वहुत वर्षा कूं थोडी मानिकै लाज के मारे दिनमें नहीं वरसे किन्तु रातिमें वर्षा करिके वाके खेत कूं डुवाय देयहै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रहू भोग वैभव के आगे ताभक्तके देवे लायक जे इन्द्रादिक पदहैं तिनें तुच्छ मानिकै और ता भक्तके भजन कूं वहुत मानिकै वाके विना कहेही वहुतसी सम्पत्ति देइहैं ३४ आप वहुत देयँ ताय थोड़ो माने हैं और सुहृदनके थोड़े दिये को भी वहुत माने हैं मैं चावलनकी एकमुट्ठी लेगयो ताय महात्मा श्रीकृष्णचन्द्र प्रसन्न

र्क्षयामासनिर्व्यग्रः स्वसमृद्धिमहैतुकीम् ३२ नूनंवतैतन्ममदुर्भगस्य शश्वद्दरिद्रस्यसमृद्धिहेतुः ॥ महाविभूतेरवलोकतोऽन्योनैवोपपद्येतयदूत्तमस्य ३३ नन्वब्रुवाणोदिशतेसमक्षं याचिष्णवेभूर्य्यपिभूरिभोजः ॥ पर्जन्यवत्तत्स्वयमीक्षमाणोदाशार्हकाणामृषभःसखामे ३४ किञ्चित्करोत्युर्वपियत्स्वदत्तं सुहृत्कृतंफल्ग्वपिभूरिकारी ॥ मयोपनीतंपृथुकैकमुष्टिं प्रत्यग्रहीत्प्रीतियुतोमहात्मा ३५ तस्यैवमेसौहृदसख्यमैत्रीदास्यं पुनर्जन्मनिजन्मनिस्यात् ॥ महाऽनुभावेनगुणालयेन विषज्जतस्तत्पुरुषप्रसङ्गः ३६ भक्तायचित्राभगवान्हिसम्पदोराज्यंविभूतीर्नसमर्द्धयत्यजः॥अदीर्घबोधायविचक्षणःस्वयं पश्यन्निपातंधनिनांमदोद्भवम् ३७ इत्थंव्यवसितोबुद्ध्या भक्तोऽतीवजनार्दने ॥ विषयाञ्जाययात्यक्ष्यन् बुभुजेनातिलम्पटः ३८ तस्यवैदेवदेवस्य हरेर्यज्ञपतेःप्रभोः ॥ ब्राह्मणाःप्रभवोदैवं नतेभ्योविद्यतेपरम् ३९ एवंसविप्रोभगवत्सुहृत्तदा दृष्ट्वास्वभृत्यैरजितंपराजितम् ॥ तद्ध्यानवेगोद्ग्रथितात्मबन्धनस्तद्धामलेभेऽचिरतःसतां

होयकै लेतभये ३५ श्रीकृष्णको भक्तन पै हित देखिकै तिनकी भक्ति कूं मागै है श्रीकृष्णचन्द्र सूं मेरो प्रेम सख्यभाव मित्रता दास्यभाव जन्म जन्ममें होउ और मोकूं कछु धन दौलत नहीं अपेक्षित है वड़ो है भाव जिनको और सम्पूर्ण हैं गुण जिनमें ऐसे श्रीकृष्णको और तिनके भक्तन को सत्सङ्गहोय ३६ क्यों जी भक्तिको फल सम्पत्ति पायकै फेरि क्यों मांगो हौ तहां सुदामा कहे है प्यारो है ज्ञान जाकूं ऐसे भक्तकूं भगवान् श्रीकृष्ण अनेकप्रकार की सम्पत्ति नहीं देइ हैं ऐश्वर्य्य स्त्री पुत्रादिक नहीं देइहैं क्यों भगवान् विवेकी हैं भक्त अज्ञानीहै धनवान् पुरुषकूं नरक होयहै यह आप देखे हैं मेरे भक्ति नहीं रही यातें सम्पत्ति भईहै यातें उनकी भक्ति मैं मांगूं हूं ३७ या प्रकार वुद्धिसूं निश्चय जाने कियो और श्रीकृष्णको अत्यन्त भक्त ऐसो सुदामाहै सो विषयनकूं सहजमें त्यागिवे को अभ्यास करत स्त्री के सङ्ग भोग करतभयो विषयन में अति आसक्त नहीं होतभयो ३८ श्रीकृष्णचन्द्र ब्रह्मभक्त है यामें कुछ आश्चर्य्य नहीं यह कहे हैं देवन के देव पाप के हरनवारे यज्ञ के पति समर्थ ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके ब्राह्मणन को भाग्यहै तहा सव देवताहैं तिन ब्राह्मणन तें परे और कोई देवता नहीं है ३९ या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को मित्र जो सुदामा ब्राह्मण है सो औरनपै

जीते न जायँ और भक्तन ने जीति लिये ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिके तिनके ध्यान के वेगतें दूरिभयो है अहङ्कार जाको ऐसो जो श्रीकृष्णको धाम है ताय शीघ्रही पावत भयो ४० जो पुरुष या चरित्र कूं श्रवण करै और ब्रह्मण्यदेव जो श्रीकृष्ण हैं सो ऐसे ब्राह्मण की भक्ति करै हैं ताय सुनिकै भगवान्में भक्ति कूं पायकै कर्म्मनको बन्धन जो संसारहै तासूं छूटिजाय है ४१ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेपृथुकोपाख्यानंनामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(द्व्यशीतितमश्रागत्यकुरुक्षेत्रंरविग्रहे ॥ वृष्णीन्दृष्ट्वामुदाभूपाश्चकुःकृष्णकथामिथः १ श्रीदामसुहृदेकृष्णःप्रकल्प्यैन्द्रंपदंभुवि ॥ नन्दादिसुहृदानन्दीकुरुक्षेत्रंजगामसः २ बयासीवें अध्यायमें सूर्य्यग्रहणमें कुरुक्षेत्र को आकर राजा यादवनको देखकर आनन्दसूं परस्पर कृष्णजीकी कथान कूं करतेभये १ नन्दादिक सुहृदनके आनन्द देनेवाले कृष्णजी सुदामा मित्रके लिये पृथ्वीपर इन्द्रके पद को अच्छी प्रकार देकर कुरुक्षेत्र को जातेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! याके पीछे द्वारकापुरी में वासकरैं ऐसे जे राम कृष्णहैं तिनकूं एकसमय जैसो प्रलयमें तैसो सर्वग्रास

गतिम् ४० एतद्ब्रह्मण्यदेवस्य श्रुत्वाब्रह्मण्यतांनरः ॥ लब्धभावोभगवतिकर्म्मबन्धाद्विमुच्यते ४१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धे पृथुकोपाख्यानंनामैकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ अथैकदाद्वारवत्यां वसतोरामकृष्णयोः ॥ सूर्य्योपरागःसुमहानासीत्कल्पक्षयेयथा १ तंज्ञात्वामनुजाराजन् पुरस्तादेवसर्व्वतः ॥ स्यमन्तपञ्चकंक्षेत्रं ययुःश्रेयोविधित्सया २ निःक्षत्रियांमहींकुर्वन् रामःशस्त्रभृतांवरः ॥ नृपाणांरुधिरौघेण यत्रचक्रेमहाह्रदान् ३ ईजेचभगवान्रामोयत्रास्पृष्टोऽपिकर्म्मणा ॥ लोकस्यग्राहयन्नीशोयथाऽन्योघापनुत्तये ४ महत्यांतीर्थयात्रायां तत्रागन्भारतीःप्रजाः ॥ वृष्णयश्चतथाऽक्रूरवसुदेवाहुकादयः ५ ययुर्भारततत्क्षेत्रं स्वमघंक्षपयिष्णवः ॥ गदप्रद्युम्नसाम्बाद्याःसुचन्द्रशुकसारणैः ६ आस्तेऽनिरुद्धोरक्षायां कृतवर्म्माचयूथपः ॥ तेरथैर्देवधिष्ण्याभैर्हयैश्चतरलप्लवैः ७ गजैर्नदद्भिरभ्राभैर्नृभिर्विद्याधरद्युभिः ॥ व्यरोचन्तमहातेजाः पथिकाञ्चनमालिनः ८ दिव्यस्रग्वस्त्रसन्नाहाः कलत्रैःखेचराइव ॥ तत्रस्नात्वामहा

जो बड़ो सूर्य्य को ग्रहण है सो आवतभयो १ हे राजन् परीक्षित्! ज्योतिषीनतें वा ग्रहणकूं पहिलेही जानिकै मनुष्य सब ओरते दान पुण्य स्नान करिबे के निमित्त कुरुक्षेत्र कूं जातभये २ शस्त्रन के धारण करनवारेन में श्रेष्ठ जो परशुरामजी हैं सो नहीं रहे हैं क्षत्रिय जामें ऐसी पृथ्वी कूं करिकै राजान के रुधिर सूं जा कुरुक्षेत्र में बड़े सरोवर करतभये ३ नहीं लग्यो है पाप जिनकूं ऐसे समर्थ भगवान् परशुरामजी अपने पाप दूरि करिबे के लिये जैसे अज्ञानी पुरुष यज्ञ करे है तैसे लोकन के सिखाइवे के लिये जा कुरुक्षेत्र में यज्ञ करतभये ४ बड़ीजो तीर्थयात्रा है तामें भरतखण्ड की प्रजा आवति भई तैसेही वृष्णि अक्रूर वसुदेव और आहुक कूं आदि लैके जे यादव हैं ते ५ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! अपने अपने पाप दूरि करिबेके लिये ता कुरुक्षेत्र में आवत भये गद प्रद्युम्न साम्ब कूं आदि लकै जे श्रीकृष्ण के पुत्रहैं ते जातभये और सुचन्द्र शुक सारण सहित ६ अनिरुद्ध और कृतवर्म्मा यूथपाल ये दोनों द्वारकापुरी की रक्षा करिबे के लिये रहत

भये बड़ोहै तेज जिनको सुवर्ण की माला और दिव्य फूलनकी माला वस्त्र कवच धारण करे ऐसे जे यादव हैं ते देवतानके विमान की तुल्य है प्रकाश जिनमें ऐसे रथनमें और जलकी तरङ्ग जैसे उठें ऐसी है चाल जिनकी ऐसे घोड़ान पै और बादरन कीसीहै कान्ति जिनकी ऐसे शब्द करते हुये हाथीन के ऊपर विद्याधरन कीसी है कान्ति जिनकी ऐसे सिपाहीन सहित मार्ग में जैसे देवाङ्गनान सहित आकाश में देवता सुन्दर लगे हैं ऐसे सुन्दर लगतभये बड़ो है भाग्य जिनको बहुत सावधान ऐसे यादव कुरुक्षेत्र में व्रत स्नान करिके ७ । ८ । ९ वस्त्र और फूलन की माला सुवर्ण की मालान कूं पहिरे ऐसी गौ ब्राह्मणन कूं दान करिकै देतभये यादव हैं ते परशुरामजी ने करे जे सरोवर हैं तिनमें और दिन अथवा वाही दिन फिर स्नान करिकै १० श्रीकृष्णचन्द्र में हमारी भक्ति होय यह सङ्कल्प करिकै ब्राह्मणन कूं सुन्दर अन्न दान करत भये तिन ब्राह्मणन ने आज्ञा जिन कूं करी ऐसे कृष्णही हैं देवता जिनके ऐसे जे यादव हैं ११ ते आय यथेच्छा भोजन करिकै शीतलहै छाया जिनकी ऐसे वृक्षन के नीचे बैठत भये ता कुरुक्षेत्र में आये जो सुहृद् सम्बन्धी नाते गोते के राजा हैं तिनें देखत भये १२ कौन कौन

भागा उपोष्यसुसमाहिताः ९ ब्राह्मणेभ्योददुर्धेनूर्वासःस्रग्रुक्ममालिनीः ॥ रामह्रदेषुविधिवत्पुनराप्लुत्यवृष्णयः १० ददुःस्वन्नंद्विजाग्र्येभ्यःकृष्णेनोभक्तिरस्त्विति ॥ स्वयञ्चतदनुज्ञातावृष्णयःकृष्णदेवताः ११ भुक्त्वोपविविशुःकामंस्निग्धच्छायाङ्घ्रिपाङ्घ्रिपु ॥ तत्राऽऽगतांस्तेददृशुः सुहृत्सम्बन्धिनोनृपान् १२ मत्स्योशीनरकौसल्यविदर्भकुरुसृञ्जयान् ॥ काम्बोजकेकयान्मद्रान्कुन्तीनानर्त्तकेरलान् १३ अन्यांश्चैवाऽऽत्मपक्षीयान्परांश्चशतशोनृप ॥ नन्दादीन्सुहृदोगोपान् गोपीश्चोत्कण्ठिताश्चिरम् १४ अन्योऽन्यसंदर्शनहर्षरंहसा प्रोत्फुल्लहृद्वक्त्रसरोरुहश्रियः ॥ आश्लिष्यगाढंनयनैःस्रवज्जलाहृष्यत्त्वचोरुद्धगिरोययुर्मुदम् १५ स्त्रियश्चसंवीक्ष्यमिथोऽतिसौहृदस्मितामलापाङ्गदृशोऽभिरेभिरे ॥ स्तनैःस्तनान्कुङ्कुमपङ्करूषितान् निहत्यदोर्भिःप्रणयाश्रुलोचनाः १६ ततोऽभिवाद्यतेवृद्धान् यविष्ठैरभिवादिताः ॥ स्वागतंकुशलंपृष्ट्वाचक्रुःकृष्णकथांमिथः १७ पृथाभ्रातॄन्स्वसॄर्वीक्ष्य तत्पुत्रान्पितरावपि ॥ भ्रातृ

राजा हैं तिनको नाम लेय हैं मत्स्यदेश उशीनर कोसल विदर्भ कुरु सृञ्जय काम्बोज केकय मद्र कुन्ती आनर्त केरल इन देशन के राजान कूं १३ और अपनी ओर के राजा हैं तिन कूं और सैकरान राजा हैं तिन कूं हे राजन् परीक्षित्! सम्पूर्ण यादव देखत भये और नन्दजी सूं आदि लैकै जो हितकारी गोप हैं तिनें और बहुत दिनतें कृष्णदर्शन की चाहना जिनके लगि रही ऐसी जे गोपी हैं तिनें देखत भये १४ परस्पर दर्शन जो भयो तासू जो आनन्द उमड़यो तासूं फूले हैं हृदय और मुखकमल जिनके ऐसे जो यादवन के भलेप्रकार मिलिकै नेत्रनमें तें आंसू बहे और देहमें रोमांच होयआये कण्ठ रुकि गये या प्रकार बहुत आनन्द कूं पावत भये १५ अत्यन्त स्नेह करिकै जो मुसिकानि तासूं निर्मल है कटाक्ष करिकै दृष्टि जिनकी और स्नेहके आंसू हैं नेत्रन में जिनके ऐसी स्त्री हैं ते स्त्रीन कूं देखिकै केसर जिन में लगी ऐसे स्तनन कू स्तननतें लगायकै भुजान तें आपुस में मिलति भई १६ छोटेन ने दण्डवत् जिनकूं करी ऐसे जे यादव हैं ते वृद्धन कूं प्रणाम करिकै भले आये प्रसन्न हौ ऐसे कुशल पूछिकै आपुसमें कृष्णकी कथा कूं पूंछत भये १७ कुन्ती है सो भय्या बहिनि भतीजे माता पिता और भय्यान की स्त्री इन सबकूं

देखिकै और मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र कूं देखिकै आपुस में प्रेम की बात चीत करिकै नेत्रनतें आंसूनकूं छोड़ति भई १८ अब कुन्ती बोली हे श्रेष्ठ भय्या ! नहीं भये हैं पूर्ण मनोरथ जाके ऐसी मैं आ-
त्मा कूं मानूंहूं जो कारण तें आपत्ति परे हैं तब श्रेष्ठ जो तुम हौ सो मेरी बातको स्मरण भी नहीं करो हौ १६ जाको दैव सूधो नहीं है वा स्वजन को सुहृद् हैं ते और जातिके हैं ते पुत्र भय्या
माता पिता ये स्मरण नहीं करे हैं २० अब वसुदेवजी कहेहैं हे बहिनि ! दैवके खिलौना हम मनुष्य हैं तिनैं दोष मति लगावो लोक ईश्वर के अधीन होयके कर्म्म करे है अथवा ईश्वरही कर्म्म क
रावे है २१ हे बहिनि ! कंस के सताये जे हम सब ते दशो दिशान में चलेगये अबहीं फेरि दैवने घर में बसाये हैं २२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! वसुदेव उग्रसेनादिक यादवन
ने पूजा जिन की करी ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र को भले प्रकार दर्शन करिकै परमानन्दकूं पावत भये २३ भीष्मपितामह द्रोणाचार्य्य अम्बिका को पुत्र धृतराष्ट्र तैसेही पुत्रन सहित

पत्नीर्मुकुन्दश्च जहौप्रकथयाशुचः १८ ॥ कुन्त्युवाच ॥ आर्य्यभ्रातरहंमन्ये आत्मानमकृताशिषम् ॥ यद्वा आपत्सुमद्वार्त्तां नानुस्मरथसत्तमाः १६ सुहृदो ज्ञातयः पुत्रा भ्रातरः पितरावपि ॥ नानुस्मरन्तिस्वजनं यस्यदैवमदक्षिणम् २० ॥ वसुदेवउवाच ॥ अम्बमास्मानसूयेथादैवक्रीडनकान्नरान् ॥ ईशस्यहिवशे लोकः कुरुतेकार्य्यतेऽथवा २१ कंसप्रतापिताःसर्व्वेवयंयातादिशोदश ॥ एतर्ह्येवपुनःस्थानं दैवेनाऽऽसादिताःस्वसः २२ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ वसुदेवोग्रसे नाद्यैर्यदुभिस्तेऽर्चितानृपाः ॥ आसन्नच्युतसन्दर्शपरमानन्दनिर्वृताः २३ भीष्मोद्रोणोऽम्बिकापुत्रोगान्धारीससुतातथा ॥ सदाराःपाण्डवाःकुन्ती सृञ्ज योविदुरःकृपः २४ कुन्तिभोजोविराटश्च भीष्मकोनग्नजिन्महान् ॥ पुरुजिद्द्रुपदःशल्योधृष्टकेतुःसकाशिराट् २५ दमघोषोविशालाक्षोमैथिलोमद्रकेकयौ ॥ युधामन्युःसुशर्म्माच ससुताबाह्लिकादयः २६ राजानोयेचराजेन्द्र युधिष्ठिरमनुव्रताः ॥ श्रीनिकेतंवपुःशौरेः सस्त्रीकंवीक्ष्यविस्मिताः २७ अथतेरामकृष्णा भ्यां सम्यक्प्राप्तसमर्हणाः ॥ प्रशशंसुर्मुदायुक्तावृष्णीन्कृष्णपरिग्रहान् २८ अहो भोजपतेयूयं जन्मभाजोनृणामिह ॥ यत्पश्यथासकृत्कृष्णं दुर्दर्शमपियो गिनाम् २६ यद्विश्रुतिःश्रुतिनुतेदमलंपुनाति पादावनेजनपयश्चवचश्चशास्त्रम् ॥ भूःकालभर्जितभगाऽपियदङ्घ्रिपद्मस्पर्शोत्थशक्तिरभिवर्षतिनोऽखिलार्था

गान्धारी स्त्रीन सहित पाण्डव कुन्ती सृञ्जय विदुर कृपाचार्य्य २४ कुन्तिभोज राजा विराट भीष्मक और बड़ो नग्नजित् पुरुजित् द्रुपद शल्य काशी के राजा सहित धृष्टकेतु २५ बड़े हैं नेत्र
जाके ऐसो राजा दमघोष मिथिलापुरी को राजा मद्रदेश को राजा और केकयदेश को राजा युधामन्यु सुशर्मा और पुत्रन सहित बाह्लिकादिक हैं ते २६ हे राजानके इन्द्र राजा परीक्षित्!
महाराज युधिष्ठिरके आज्ञाकारी जे राजा हैं ते सम्पूर्ण रानीन सहित सुन्दर जो श्रीकृष्ण को रूपहै ताय देखिकै आश्चर्य्य मानत भये २७ दर्शन करे पीछे रामकृष्ण तें भलेप्रकार प्राप्त भयो है
सत्कार जिनकूं ऐसे जे राजा हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र हैं मुख्य जिनमें ऐसे यादवन की सब प्रशंसा करतभये २८ योगीजननकूं दुर्लभ है दर्शन जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको सर्व्वदा तुम दर्शन करोहौ
याहीते भोजवंशीन के पालन करनवारे राजा उग्रसेन या संसारके मनुष्यन में सफलजन्माहौ २६ श्रुति जिनकी स्तुतिकरैं ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र की कीर्त्ति और चरणारविन्द के धोवन को जल गंगा

मुखारविन्द को वचनरूप वेद ये या विश्व कूं अत्यन्त पवित्र करे हैं काल करिकैं दग्धहै माहात्म्य जाको ऐसी भी पृथ्वी जिन श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल के स्पर्श तें प्रकटभई है शक्ति जामें ऐसी होयकै हमकूं चारयो ओरतें सम्पूर्ण कामनानकूं पूर्ण करे है ३० तिन श्रीकृष्णचन्द्र को तुम दर्शन करोहौ स्पर्श करोहौ पीछे चलोहौ बात चीत करो हौ संगसोवोहौ बैठोहौ भोजनकरोहौ और श्रीकृष्णचन्द्र के संग तुम्हारे विवाहादि सम्बन्ध होय हैं और देह सम्बन्ध होयहैं प्रवृत्तिमार्गमें रहो जो तुमहौ तिनके घरनमें स्वर्ग मोक्ष दोनोंनकी चाहनाकूं दूरिकरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र तुम्हारे घरनमें आप विराजमान हैं याही तें तुम सफलजन्माहौ ३१ अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजनपरीक्षित् ! नन्दरायजी ता कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्णचन्द्र कूं आदि लैके जे यादव है विनकूं आये जानि कै गोपनसहित और गाडान में लदी जे वस्तु हैं तिन सहित देखिवे के लिये यादवन के पास आवत भये ३२ बहुत दिनान तें दर्शन जो न भयो तासूं कायर हैं चित्त जिनके ऐसे यादवहैं ते नन्दरायजीके दर्शन करिकै जो आनन्द भयो तासूं देहमें माण आये तें जैसे हाथ पाव उठे हैं ऐसे उठिकै भले प्रकार मिलत भये ३३ वसुदेवजी नन्दरायजी सूं मिलिकै प्रसन्न होयकै प्रेममें विह्वल

न् ३० तद्दर्शनस्पर्शनानुपथप्रजल्पशय्यासनाशनसयौनसपिण्डबन्धः ॥ येषांगृहेनिरयवर्त्मनिवर्त्ततांवः स्वर्गापवर्गविरमःस्वयमासविष्णुः ३१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ नन्दस्तत्रयदून्प्राप्ताञ्ज्ञात्वाकृष्णपुरोगमान् ॥ तत्राऽऽगमद्वृतोगोपैरनस्थार्थैर्दिदृक्षया ३२ तंदृष्ट्वावृष्णयोहृष्टास्तन्वःप्राणमिवोत्थिताः ॥ परिषस्वजिरेगाढं चिरदर्शनकातराः ३३ वसुदेवःपरिष्वज्य सम्प्रीतःप्रेमविह्वलः ॥ स्मरन् कंसकृतान्क्लेशान् पुत्रन्यासंचगोकुले ३४ कृष्णरामौपरिष्वज्य पितरावभिवाद्यच ॥ नकिञ्चनोचतुःप्रेम्णा साश्रुकण्ठौकुरूद्वह ३५ तावात्मासनमारोप्य बाहुभ्यांपरिरभ्यच ॥ यशोदाचमहाभागा सुतौविजहतुःशुचः ३६ रोहिणीदेवकीचाथ परिष्वज्यव्रजेश्वरीम् ॥ स्मरन्त्यौतत्कृतांमैत्रीं बाष्पकण्ठ्यौसमूचतुः ३७ काविस्मरेतवांमैत्रीमनिवृत्तांव्रजेश्वरि ॥ अवाप्याप्यैन्द्रमैश्वर्यं यस्यानेहप्रतिक्रिया ३८ एतावदृष्टपितरौयुवयोःस्मपित्रोः सम्प्रीणनाभ्युदयपोषणपालनानि ॥ प्राप्योपलुर्भवतिपक्ष्महयद्वदक्ष्णोर्न्यस्तावकुत्रचभयौनसतांपरःस्वः ३९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ गोप्यश्चकृष्णमुपलभ्यचिरादभीष्टं यत्प्रेक्षणेदृशिषुपक्ष्मकृतंशपन्ति ॥ दृग्भिर्हृदिकृतमलंपरिरभ्यसर्व्वास्तद्भावमापुर

होतभये और कंसने जे कष्ट दिये तिनकूं और गोकुल में जायकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं पहुँचाय आये ताको स्मरण करतभये ३४ हे कौरवन कूं आनन्द के देनेवारे राजा परीक्षित ! कृष्ण वलदेव हैं ते माता पिता जो नन्द यशोदा हैं तिनसूं मिलिकै प्रणाम करिकै प्रेमविह्वलभये आसून तें कण्ठ जो रुकि गयो तातें कछु भी न बोलतभये ३५ बड़ोहै भाग्य जाको ऐसी यशोदा और नन्दजी पुत्र जे कृष्ण वलदेव हैं तिनकूं अपने आसन पै बैठाय कै भुजानतें आलिंगन करिकै नेनन तें आंसू वहावत भये ३६ पीछे रोहिणी और देवकी है ते व्रजकी रानी यशोदा सूं मिलिकै और यशोदा ने करी जो मित्रता है ताको स्मरण करिकै आंसू कण्ठमें भरिकै यह कहति भई ३७ हे व्रजकी रानी ! जाको वदलो न होइसकै ऐसी तुम्हारी मित्रता कूं कौन भूलै इन्द्रको ऐश्वर्य पायकै या संसार में तुम्हारी मित्रताको वदलो नहीं होय सकैहै ३८ हे यशोदे ! नहीं देखेहैं माता पिता जिनने ऐसे जे कृष्ण वलदेव हैं ते तुम जो माता पिताहौ तिनके पास राखे तव तुमसूं प्यार करिकै वढिनो पोषण पालन

है तिनैं पायकै निर्भय तुम्हारे पास वास करत भये जैसे पलक नेत्रन की रक्षा करैं ऐसे तुमने इनकी रक्षाकरी यह तुमकूं योग्यही है क्यों साधुनकूं यह अपनो यह विरानो एतादृश बुद्धि नहीं होय है ३९ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! श्रीकृष्णचन्द्र के देखत समय आखिनमें पलक लगायकै जो अन्तराय करेहै ऐसे विधाता कू गोपी गारी देयहैं बहुत दिननतें आशा जिनकूं लगि रही ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं पायकै गोपी नेत्रनकी रस्ता हृदयमें लेजायकै अत्यन्त आलिङ्गन करिकै योगारूढ योगीजननकूं भी दुर्लभ ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको भाव अर्थात् श्रीकृष्णरूप जो है ताकूं पावतिभई ४० या प्रकारहै प्रेम जिनको ऐसी गोपीन के पास एकान्तमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जायकै आलिङ्गन करिकै कुशल पूंछिकै मुसिकायकै यह बोलतभये ४१ हे सखियो ! अपने जननके कार्य करिवेकूं गये हैं परन्तु शत्रुनके मारिवे में है चित्त जिनको याही तें विलम्ब भयो ऐसे जो हम हैं तिनको कदाचित् स्मरण करोहो ४२ यह कृष्ण कृतघ्नी है यह शङ्का मानिकै कहा गोपियो तुम हमारी अवज्ञा करो हौ मै कुछ भी नहीं करू हूं होनहारकूं करै ऐसो जो भगवान्है सो प्राणीनको संयोग और वियोग करेहै ४३ जैसे वायु बादरनके समूह कूं तृणकूं रुईकूं धूलिकूं उड़ायकै संयोग करे है और फेरि वियोग करे है तैसेही समस्त प्राणीन को उत्पत्तिकर्त्ता जो ईश्वर है सो सबकूं मिलावे है फेरि न्यारो न्यारो करिदेयहै यामें मोकूं कहा दोषहै ४४ प्राणीनकी जो मोमें भक्तिहै

पिनित्ययुजांदुरापम् ४० भगवांस्तास्तथाभूताविविक्तउपसङ्गतः ॥ आश्लिष्यानामयंपृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ४१ अपिस्मरथनःसख्यः स्वानामर्थचिकीर्षया ॥ गतांश्चिरायिताञ्शत्रुपक्षक्षपणचेतसः ॥ ४२ अप्यवध्यायथास्मान्स्विदकृतज्ञाविशङ्कया ॥ नूनंभूतानिभगवान् युनक्तिवियुनक्तिच ४३ वायुर्यथाघनानीकं तृणंतूलंरजांसिच॥ संयोज्याऽऽक्षिपतेभूयस्तथाभूतानिभूतकृत् ४४ मयिभक्तिर्हिभूतानाममृतत्वायकल्पते॥ दिष्ट्यायदासीन्मत्स्नेहोभवतीनां मदापनः ४५ अहंहिसर्वभूतानामादिरन्तोऽन्तरंबहिः ॥ भौतिकानांयथाखंवार्भूर्वायुर्ज्योतिरङ्गनाः ४६ एवंह्येतानिभूतानि भूतेष्वात्माऽऽत्मनाततः ॥उभयंमय्यथपरे पश्यताऽऽभातमक्षरे ४७॥ श्रीशुकउवाच॥ अध्यात्मशिक्षयागोप्यएवंकृष्णेनशिक्षिताः ॥तदनुस्मरणध्वस्तजीवकोशास्तमध्यगन् ४८ आ

सोई जन्म और मृत्युसे छुड़ावेहै तुम्हारो मोमें स्नेहभयो याते मोकूं प्राप्त होउगी यह वड़ो मङ्गलहै ४५ कैसे तुमहौ जिनैं स्नेह करिकै हम पावैंगी ऐसी इच्छा जब गोपीनके भई तौ अपनो रूप कहे हैं हे गोपियो ! जैसे पञ्चभूतनके बने जे घटादिक हैं तिनके आकाश जल पृथ्वी वायु तेज ये आदिमेंभी हैं और अन्तमें भी हैं याही प्रकार जेरते हैं जन्म जिनको ऐसे मनुष्य और पशुतें आदिलैकै और अण्डान तें है जन्म जिनको ऐसे पक्षी इत्यादिक और पसीना तें है जन्म जिनको ऐसे खटमल जुआ इत्यादिक और उद्भिज्ज अर्थात् वृक्षादिक जे चार प्रकार के प्राणी हैं तिनके आदि में हूं और अन्तमें भी हूं भीतर बाहर हूं यातें व्यापक मैं हू ता मोकू प्राप्त भईहौ ४६ यहां एक शङ्काहै चारि प्रकारके प्राणी हैं तिनको भोक्ता जो आत्माहै सोई आदि अन्तमें है और व्यापक जो आत्माहै तामें सम्पूर्ण प्राणी वास करे हैं तुम्हारी प्राप्ति हमें कैसे भई तहा कहे हैं जैसे घटादिकनके आदिमें भी हैं और अन्तमें भी हैं ऐसे चारिप्रकार के प्राणी अपने कारण ते भूत हैं तिनमें वर्ते हैं भोक्ता आत्मामें नहीं रहे हैं आत्माहै सो देहनमें भोक्तृरूप करिकै व्यापक है पञ्चभूतरूप देहरूप जो भोग करिवे योग्य पदार्थ है ताय और भोगको करनवारो जो आत्माहै ताय परिपूर्ण जो मैं हूं

तामें प्रकाशित देखो ४७ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार श्रीकृष्णचन्द्रने अपने अपने स्वरूपको उपदेश करिकै समझाई जे गोपी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के स्मरण तें दूरिभये हैं लिङ्ग देह जिनके ऐसी होयकै श्रीकृष्णचन्द्र कूं पार्वतिभई ४८ गोपी बोलति भई कमलहै नाभिमें जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र कूं वड़ो है ज्ञान ऐसे योगीश्वर ध्यानकरैं संसाररूपी कूप में गिरे जे प्राणी तिनके निकसिवे को आश्रय ऐसो तुम्हारो चरणकमल घरनमें परे रहैं और हमारे मनमें सदा वन्यो रहै यह मागे हैं ४९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्धेवृष्णिगोपसङ्गमोनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(त्र्यशीतितमएवञ्चस्त्रीणांकृष्णकथोत्सवे ॥ द्रौपद्यैकृष्णभार्याभिरुक्ताःस्वस्वकरग्रहाः ॥ तिरासीवें अध्याय में इसी प्रकार स्त्रियन को कृष्णजी की कथा के उत्सव में कृष्णजी की स्त्रियन करिकै द्रौपदी के अर्थ अपने अपने विवाह को वृत्तान्त कहोगयोहै १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! गुरु और प्राप्त होयवे कूं योग्य जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो गोपीन पै अनुग्रह

हुआनेनलिननाभपदारविन्दं योगेश्वरैर्हृदिविचिन्त्यमगाधबोधैः ॥ संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बंगेहंजुषामपिमनस्युदियात्सदानः ४९ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेवृष्णिगोपसङ्गमोनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ तथाऽनुगृह्यभगवान् गोपीनांसगुरुर्गतिः ॥ युधिष्ठिरमथापृच्छत्सर्वांश्चसुहृदोऽव्ययम् १ तएवंलोकनाथेन परिपृष्टाःसुसत्कृताः ॥ प्रत्यूचुर्हृष्टमनसस्तत्पादेक्षाहतांहसः २ कुतोऽशिवंत्वच्चरणाम्बुजासवं महन्मनस्तोमुखनिःसृतंक्वचित् ॥ पिबन्तियेकर्णपुटैरलंप्रभो देहंभृतांदेहकृदस्मृतिच्छिदम् ३ हित्वात्मधामविधुतात्मकृतत्र्यवस्थमानन्दसम्प्लवमखण्डमकुण्ठबोधम् ॥ कालोपसृष्टनिगमावनआत्तयोगमायाकृतिंपरमहंसगतिंनताःस्म ४ ॥ ऋषिरुवाच ॥ इत्युत्तमश्लोकशिखामणिंजनेष्वभिष्टुवत्स्वन्धककौरवस्त्रियः ॥ समेत्यगोविन्दकथामिथोऽगृणंस्त्रिलोकगीताःशृणुवर्णयामिते ५ ॥ द्रौपद्युवाच ॥ हेवैदर्भ्यच्युतेभद्रे हेजाम्बवतिकौशले ॥ हेसत्यभामेकालिन्दि शैब्येरोहिणिलक्ष्मणे ६ हेकृष्णपत्न्यएतन्नोब्रूतवोभगवान्स्वयम् ॥ उपयेमेयथालोकमनु

करिकै पीछे राजा युधिष्ठिर तें और सब सुहृदन तें खबरि पूंछत भये १ या प्रकार लोकन के नाथ श्रीकृष्णचन्द्र ने कुशल जिनतें पूंछी सत्कार जिनको कियो श्रीकृष्णके चरणारविन्द के दर्शन तें पाप जिनके दूरि भये ऐसे राजा युधिष्ठिर और सब मित्रजन प्रसन्न मन होयकै कहत भये २ हे प्रभो ! महत्पुरुषन के मनतें मुखद्वारा निकस्यो जो तुम्हारे चरणारविन्दको मकरन्दहै ताय कानरूपी दोनान में भरिकै जे देहधारी पुरुष अतिशय करिकै पीवे हैं तिनकूं देह की करनवारी जो अविद्या ताकूं काटे हैं ३ स्वरूप के प्रकाश करिकै दूरि भईहै बुद्धिकृत जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्था जिनमें याही तें सम्पूर्ण आनन्दके समूह अखण्डरूप ढंकिवेमें न आवैहै ज्ञान जिनको ऐसे और कालकरिकै नष्ट भये जे वेद तिनकी रक्षा करिवे के लिये योगमाया कूं अंगीकार करिकै मनुष्यदेह जिनने धारण कियो और परमहंसन की प्राप्ति के योग्य जो तुम हौ तिनें प्रणाम करे हैं ४ ऋषीश्वर कहे हैं या प्रकार उत्तम है यश जिनको ऐसे जे पुरुष हैं तिनके मुकुटमणि ऐसे श्रीकृष्ण-

चन्द्र की प्रशंसा करें हैं इतने में अन्धक और कौरवन की स्त्री हैं ते आपुस में गोविन्द की कथा हैं तिनैं कहति भई हे राजन् परीक्षित्! त्रिलोकीमें गाई जे कथा हैं ते तुम्हारे आगे वर्णन करूं हूं तुम श्रवणकरो ५ अब द्रौपदी कहे है हे विदर्भ देशके राजा की पुत्री रुक्मिणी! हे भद्रा! हे जाम्बवती! हे कोशलदेशके राजा की पुत्री! हे सत्यभामा! हे कालिन्दी! हे शैब्या अर्थात् मित्रविन्दा! हे रोहिणी! हे लक्ष्मणा!–हे सोलह हजार श्रीकृष्णचन्द्रकी रानियो! स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके अपनी माया सूं लोकनके तुल्य जैसे विवाह भये तैसे अपने अपने विवाह की वात हमारे आगे कहो ६। ७ अब रुक्मिणी अपने विवाह की वात कहे है–जरासन्धादिक राजा हैं ते मोहिं शिशुपाल के विवाहवे के लिये धनुष कूं उठायकै जब आये ता समय जीतिवे में न आवें ऐसे योद्धान के शिरपै चरण धरिकै श्रीकृष्णचन्द्र जैसे वकरीन के समूह में ते सिंह अपनी वलिकूं लेआवै ऐसे लावत भये तिन श्रीकृष्णको लक्ष्मी जामें वासकरै ऐसो जो चरण है ताकी मैं पूजा करूं हूं ८ सत्यभामा अपने विवाह की वात कहे है–भय्या प्रसेन कूं सिंह ने मारयो तासूं दुःखितहै हृदय जाको ऐसो जो मेरा पिता सत्राजित् है ताने मिथ्या कलङ्क लगायो तव कृष्णजी जाम्बवान् को

कुर्वन्स्वमायया ७॥ रुक्मिण्युवाच॥ चैद्यायमार्पयितुमुद्यतकार्म्मुकेषु राजस्वजेयभटशेखरिताङ्घ्रिरेणुः॥ निन्येमृगेन्द्रइवभागमजावियूथात्तच्छ्रीनिकेतचरणोऽस्तुममार्चनाय ८॥ सत्यभामोवाच॥ योमेसनाभिवधतप्तहृदाततेनलिप्ताभिशापमपमार्ष्टुमुपाजहार॥ जित्वर्क्षराजमथरत्नमदात्सतेन भीतःपिताऽदिशतमांप्रभवेऽपिदत्ताम् ९॥ जाम्बवत्युवाच॥ प्राज्ञायदेहकृदमुंनिजनाथदैवं सीतापतिंत्रिनवहान्यमुनाऽभ्ययुध्यत्॥ ज्ञात्वापरीक्षितउपाहरदर्हणंमां पादौप्रगृह्यमणिनाऽहममुष्यदासी १०॥ कालिन्द्युवाच॥ तपश्चरन्तीमाज्ञाय स्वपादस्पर्शनाशया॥ सख्योपेत्याऽग्रहीत्पाणिं योऽहन्तद्गृहमार्जनी ११॥ भद्रोवाच॥ योमांस्वयंवरउपेत्यविजित्यभूपान् निन्येश्वयूथगमिवात्मबलिंद्विपारिः॥ भ्रातॄंश्चमेऽपकुरुतःस्वपुरंश्रियौकस्तस्यास्तुमेऽनुभवमङ्घ्र्यवनेजनत्वम् १२॥ सत्योवाच॥ सप्तोक्षणोऽतिबलवीर्य्यसुतीक्ष्णशृङ्गान् पित्राकृतान्क्षितिपवीर्य्यपरीक्षणाय॥ तान्वीरदुर्म्मदहनस्तरसानिगृह्य क्रीडन्बबन्धहय

जीतकर मणि सत्राजित् को देते भये तासूं भयभीत जो मेरो पिता है ताने अक्रूरादिकन कूं देनकही जो मैंही ताय श्रीकृष्णचन्द्रही कूं देत भयो ९ अब जाम्बवती अपने विवाह की वात कहे है देह को उत्पन्न करनवारो जो मेरो पिता है सो श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनो स्वामी ईश्वर सीता को पति नहीं जानिकै सत्ताईसदिन पर्यन्त श्रीकृष्णचन्द्र के सङ्ग युद्ध करे पीछे भईहै परीक्षा जाकूं ऐसो मेरो पिता सीताके पति इष्टदेव जानिकै चरण पकरिकै स्यमन्तकमणिसहित मोकूं श्रीकृष्णचन्द्र की सेवा करिवे के लिये देत भयो यह श्रवण करिकै द्रौपदी ने कही तुम वड़ी श्रेष्ठहौ तहां जाम्बवती कहे है मैं तो इनकी दासी हू १० अब कालिन्दी अपने विवाह की वात कहे है–श्रीकृष्णचन्द्र के चरणस्पर्श की आशा करिकै तपकरूं जो मैं हूं ताको अर्ज्जुन सहित जायकै हाथ पकरत भये मैं तिन श्रीकृष्णचन्द्र के घरकी वुहारी देनवारी हूं ११ अब भद्रा अपने विवाह की वात कहे है–लक्ष्मी जिनके वक्षःस्थल में वास करै ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र स्वयंवर में जाय के राजान कूं जीतिकै और तिरस्कार करैं ऐसे जे मेरे भय्या हैं तिनैं भी जीतिकै हाथीन को शत्रु सिंह जैसे कुत्तान के वीच में अपनी वलिकूं लेआवै ऐसे मोकूं अपने पुरमें लावतभये तिन

श्रीकृष्णचन्द्रके चरण धोइबे की सेवा मोकूं जन्म जन्ममें भयो करै यह मेरी प्रार्थनाहै १२ अब सत्या अपने विवाहकी बात कहै है–बड़ो है बल पराक्रम जिनमें बड़े पैने जिनके सींग और शूरवीरन के बड़े मदकूं दूरि करनवारे राजानके पराक्रमकी परीक्षा लेवेके कारण मेरे पिताने पाले ऐसे जे सात बैलहैं तिनें पकरिकै जैसे बालक काष्ठकी बकरीके बच्चानकूं बाधेहैं ऐसे सहजमें श्रीकृष्णचन्द्र बाधि लेतभये १३ पराक्रमही है मोल जाको ऐसी येहूं ताय हाथी घोडा रथ प्यादेन सहित दासीन सहित जो मैं ताय मार्गमें क्षत्रियनकूं जीतिकै श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार लावतभये तिनको मोकूं दास्यभाव होउ यह मेरी प्रार्थना है १४ अब मित्रविन्दा अपने विवाह की बात कहैहै–हे द्रौपदी ! मेरे मामाके पुत्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें बुलायकै तिन श्रीकृष्णचन्द्रमें लग्योहै मन जाको ऐसी जो मैं हूं ताय मेरो पिता अक्षौहिणी सेना और सखियन सहित देतभयो १५ अनेक कर्म्मन करिकै भटकूं ऐसी जो मैं हूं ताकूं जन्म जन्ममें श्रीकृष्णचन्द्र के चरणकमल को स्पर्शहोय जा चरणारविन्द के स्पर्श ते मोक्ष है नाम जाको ऐसो कल्याण मोकूं प्राप्तहोय यह मेरी प्रार्थना है १६ अब लक्ष्मणा अपने विवाह की बात कहैहै हे रानी द्रौपदी ! वारंवार नारदने गाये जे श्रीकृष्णचन्द्रके जन्म

थाशिशवोऽजतोकान् १३ यइत्थंवीर्य्यशुल्कांमां दासीभिश्चतुरङ्गिणीम् ॥ पथिनिर्जित्यराजन्यान् निन्येतद्दास्यमस्तुमे १४ ॥ मित्रविन्दोवाच ॥ पिता मेमातुलेयाय स्वयमाहूयदत्तवान् ॥ कृष्णेकृष्णायतच्चित्तामक्षौहिण्यासखीजनैः १५ अस्यमेपादसंस्पर्शोभवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ कर्म्मभिर्भ्राम्यमाणा यायेनतच्छ्रेयआत्मनः १६ ॥ लक्ष्मणोवाच ॥ ममापिराज्ञ्यच्युतजन्मकर्म्मश्रुत्वामुहुर्नारदगीतमासह ॥ चित्तंमुकुन्देकिलपद्महस्तया वृतःसुसंमृश्यवि हायलोकपान् १७ ज्ञात्वाममतंसाध्वि पितादुहितृवत्सलः ॥ बृहत्सेनइतिख्यातस्तत्रोपायमचीकरत् १८ यथास्वयंवरेराज्ञि मत्स्यःपार्थेप्सयाकृतः ॥ अयंतुबहिराच्छन्नोदृश्यतेसजलेपरम् १९ श्रुत्वैतत्सर्वतोभूपाआययुर्मत्पितुःपुरम् ॥ सर्वास्त्रशस्त्रतत्त्वज्ञाः सोपाध्यायाःसहस्रशः २० पित्रासम्पूजिताःसर्वे यथावीर्य्यंयथावयः ॥ आददुःसशरंचापं वेद्धुंपर्षदिमद्धियः २१ आदायव्यसृजन्केचित्सज्यंकर्त्तुमनीश्वराः ॥ आकोष्ठंज्यांसमुत्कृष्यपेतुरेकेऽमुनाहताः २२

कर्म्म हैं तिनें श्रवण करिकै जैसे मित्रविन्दा को चित्त लग्योहै ऐसे मेरो भी चित्त श्रीकृष्णचन्द्रमेंही लगतभयो कमलहै हाथमें जाके ऐसी जो लक्ष्मी है ताने लोकपालन कूं त्यागिकै वरेहैं याहीते मेरो चित्त श्रीकृष्णचन्द्र में लगतभयो १७ हे सुशीले द्रौपदी ! पुत्रीपै है हित जाको ऐसो जो बृहत्सेन नाम करिकै विख्यात मेरो पिताहै सो मेरे मनकी बात जानिकै श्रीकृष्णचन्द्रके आइबेके लिये उपाय करतभयो १८ हे रानी द्रौपदी ! जैसे तेरे स्वयंवर में अर्ज्जुन के आइबेके लिये मत्स्य रच्योहो ऐसे मेरोहू पिता मत्स्य रचावतभयो यह सुनिकै द्रौपदी कहैहै फेरि अर्ज्जुनही क्यों न वेधतभयो तहां लक्ष्मणा कहै है तेरे स्वयंवरकी मछरीरही सो बाहर ते ढकीरही भीतरते नहीं ढकीरही याते खम्भमें लगाय के ऊपर कूं दृष्टि करिकै देखे तें दिखाई देरही और मेरे स्वयंवर की मछरी ऐसी नहींरही किन्तु खम्भकी जड़में धर्‌यो जो कलशहै ताके जलमें केवल परछाई दिखाई देरही देखिवो तौ नीचे जलमें और वेधिवो ऊपर ऐसी मछरीकूं श्रीकृष्णचन्द्रके विना कौन वेधिसकै १९ स्वयंवर रच्यो है यह बात श्रवण करिकै सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्रनके तत्त्वके जाननवारे उपाध्याय अर्थात् सिखावनवारेन कूं सङ्गलैकै हजारन राजा मेरे पिताके पुरमें आवतभये २० ता समय जैसो जाको

पराक्रम और जैसी जाकी अवस्थारही तैसोही ताको पूजन मेरो पिता करतभयो मोहीं में है बुद्धि जिनकी ऐसे राजा मत्स्य के वेधिवे कूं सभामें बाणसहित जो धनुष् है ताय ग्रहण करतभये २१ कोई एक राजाहैं ते धनुष् कूं लेकर चढानेही मों असमर्थ होकर पटकतभये और कोई एक मत्यश्चाकूं कोष्ठ पर्य्यन्त खैंचिके धनुष्की चपेटतेही गिरतभये २२ और जे शूरवीर जरासन्धअम्बष्ठ चन्देली को राजा भीमसेन दुर्योधन कर्ण ये अपने अपने धनुष् पै मत्यञ्चा चढाय के कैसे मछरी लगीहै यहभी जानिवे कू न समर्थ होतभये २३ जलमें मछरी की परछाई देखिकै जा विधि मछरीलगीरही सो जानिकै उपाय को करनवारो जो अर्ज्जुन है सो बाण चलावतभयो बाण मछरी के स्पर्शभयो परञ्च मछरी कटी नहीं यामें आयो कहा अर्ज्जुनकूं ज्ञान तो बड़ो परन्तु बल नहीं २४ सम्पूर्ण क्षत्रिय हारिकै वैठिरहे और अभिमानीन के अभिमान दूरिभये ता समय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र धनुष् कूं लैके लीलाही करिके मत्यञ्चा चढायकै २५ धनुष् में बाण लगायकै एकहीवार मछरीकूं जलमें देखिकै मध्याह्नसमय अभिजित् नक्षत्र जब आयो अर्थात् सब कार्य्यन के सिद्ध करनवारे मुहूर्त्त में मछरी कूं बाण सू काटिकै पटकतभये २६ स्वर्ग में देवतान के नगारे बजतभये पृथ्वी

सज्यंकृत्वाऽपरेवीरा मागधाम्बष्ठचेदिपाः ॥ भीमोदुर्य्योधनःकर्णोनाविन्दंस्तदवस्थितिम् २३ मत्स्याभासंजलेवीक्ष्य ज्ञात्वाचतदवस्थितिम् ॥ पार्थोयत्तो ऽसृजद्बाणं नाच्छिनत्पस्पृशेपरम् २४ राजन्येपुनिवृत्तेपु भग्नमानेपुमानिपु ॥ भगवान्धनुरादाय सज्यंकृत्वाऽथलीलया २५ तस्मिन्सन्धायविशिखं मत्स्यंवीक्ष्यसकृज्जले ॥ छित्त्वेपुणाऽपातयत्तं सूर्य्येचाभिजितिस्थिते २६ दिविदुन्दुभयोनेदुर्जयशब्दयुताभुवि ॥ देवाश्चकुसुमासारान् मुमुचुर्हर्षविह्वलाः २७ तद्रङ्गमाविशमहंकलनूपुराभ्यां पद्भ्यांप्रगृह्यकनकोज्ज्वलरत्नमालाम् ॥ नूत्नेनिवीयपरिधायचकौशिकाग्र्ये सव्रीडहासवदनाकवरीधृतस्रक् २८ उन्नीयवक्त्रमुरुकुन्तलकुण्डलत्विड्गण्डस्थलंशिशिरहासकटाक्षमोक्षैः ॥ राज्ञोनिरीक्ष्यपरितःशनकैर्मुरारेरंसेऽनुरक्तहृदयानिदधेस्वमालाम् २९ तावन्मृदङ्गपटहाः शङ्खभेर्य्यानकादयः ॥ निनेदुर्नटनर्त्तक्योननृतुर्गायकाजगुः ३० एवंवृतेभगवति मयेशेनृपयूथपाः ॥ नसेहिरेयाज्ञसेनि स्पर्द्धन्तोहृच्छयातुराः ३१ मांतावद्रथमारोप्य हयरत्नचतुष्टयम् ॥ शार्ङ्गमुद्यम्यसन्नद्धस्तस्थावाजौचतुर्भुजः ३२ दारुकश्चोदयामास काञ्चनोपस्करंरथम् ॥ मिपतांभूभुजांराज्ञि मृगा

में जयजय शब्द होतभयो देवता आनन्द में विह्वल होयकै बहुत पुष्पन की वर्षा करत भये २७ लाज भरीहै हँसनि जामें ऐसो जो मुख और चोटीमें माला गुहे ऐसी जो मैं हूं सो नवीन रेशमी सुन्दर धोती उपरना पहिरि ओढिकै सुवर्णमें जड़ी जो रत्नकी मालाहै ताय हाथमें लैकै और मनोहर हैं नूपुर जिन में ऐसे चरणन करिकै हे द्रौपदी ! मैं रङ्गभूमि में जात भई २८ श्रीकृष्णचन्द्र में है आसक्त हृदय जाको ऐसी जो मैं हूं सो बड़ेहैं केश जामें और कुण्डलन करिकै शोभायमानहैं कपोल जामें ऐसे मुखकू उठायकै सन्तापको दूरि करनवारो है हास जिनमें ऐसे कटाक्षपूर्व्वक जे चितवनिहैं तिन करिकै राजानकूं चारयो ओरतें देखिकै हौले हौले जायकै मुरारि जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके कन्धापै माला धरति भई २९ ता समय मृदंग ढोल शङ्ख भेरी नगारे आदि लैकै बाजेहैं ते बजतभये नट और नृत्यकारीहैं ते नाचतभये और गवैया गावतभये ३० हे यज्ञसेनकीपुत्री द्रौपदी ! याप्रकार मैंने भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जब वश करे तब ईर्षा जिनके भई काम करिके

आतुर ऐसे जे राजानके यूथ हैं ते नहीं सहतभये ३१ सुन्दर चार घोडा जामें जुते ऐसो जो रथहै तामें वा समय बैठायकै शार्ङ्गधनुपकूं उठायकै कवच पहिरिकै चार हैं भुजा जिनके ऐसे श्रीकृष्ण-
चन्द्र सग्राममें ठाडे होतभये ३२ हे रानी द्रौपदी ! रथवान् है सो सुनहरी साजको जो रथहै ताय हांकि देतभयो और जैसे मृगन के देखत सिंह चल्योजाय ऐसे राजान के बीचमें राजानके देख-
तेही जातभये ३३ कोई एक राजाहैं ते श्रीकृष्णचन्द्र के मार्ग में रोंकिवेकूं आगे जायकै धनुष्कूं ऊंचे उठायके जैसे सिंहके रोंकिवे कूं कुत्ता ठाढ़ो होय ऐसे मार्ग में सावधान होय कै ठाढे होत
भये ३४ शार्ङ्गधनुष् में ते निकसे जे बाणनके समूह तिनसूं कटी हैं भुजा पाव नारि जिनकी ऐसे कोई क्षत्रिय युद्धमें गिरतभये और कोई एक हैं ते संग्रामकूं छोड़िके भाजत भये ३५ ता पीछे
यादवनके पति श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो अत्यन्त शोभायमान जिनसूं सूर्य्य ढकिजाय ऐसे ध्वजानके वस्त्र जामें उड़ें और चित्रविचित्र वन्दनवार बँधी स्वर्ग और पृथ्वीमें स्तुति जाकी होय ऐसी
द्वारकापुरी में जैसे सूर्य्य अस्ताचल में प्रवेश करतभये ३६ मेरो पिता है सो मित्र नातेन गोतेन कूं और वन्धुन कू वड़े मोलके वस्त्र गहने शय्या आसन और जे साज हैं तिनसूं पूजन करत

णांमृगराडिव ३३ तेऽन्वसज्जन्तराजन्यानिपेद्धुंपथिकेचन ॥ संयत्ताउद्धृतेष्वासाग्रामसिंहायथाहरिम् ३४ तेशार्ङ्गच्युतबाणौघैः कृत्तबाह्वङ्घ्रिकन्धराः ॥
निपेतुःप्रधनेकेचिदेकेसन्त्यज्यदुद्रुवुः ३५ ततःपुरींयदुपतिरत्यलंकृतां रविच्छदध्वजपटचित्रतोरणाम् ॥ कुशस्थलींदिविभुविचाभिसंस्तुतां समाविशत्तर
णिरिवस्वकेतनम् ३६ पितामेपूजयामास सुहृत्सम्बन्धिबान्धवान् ॥ महार्हवासोऽलङ्कारैः शय्यासनपरिच्छदैः ३७ दासीभिःसर्व्वसम्पद्भिर्भटेभरथवाजि
भिः॥आयुधानिमहार्हाणि ददौपूर्णस्यभक्तितः ३८ आत्मारामस्यतस्येमावयंवैगृहदासिकाः॥सर्व्वसङ्गनिवृत्त्याऽद्धा तपसाचवभूविम ३९॥ महिष्यऊचुः॥
भौमन्निहत्यसगणंयुधितेनरुद्धाज्ञात्वाऽथनःक्षितिजयेजितराजकन्याः ॥ निर्मुच्यसंसृतिविमोक्षमनुस्मरन्तीः पादाम्बुजंपरिणिनाययआप्तकामः ४० नव
यंसाध्विसाम्राज्यं स्वाराज्यंभौज्यमप्युत ॥ वैराज्यंपारमेष्ठ्यंच आनन्त्यंवाहरेःपदम् ४१ कामयामहएतस्य श्रीमत्पादरजःश्रियः ॥ कुचकुङ्कुमगन्धाढ्यं मू

भयो ३७ सम्पूर्ण सम्पत्ति है विद्यमान जिनके ऐसी दासी और प्यादे हाथी रथ घोड़ान सहित और वहुत मोलके हथियारन सहित मोकूं मेरो पिता परिपूर्ण जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें देतभयो ३८
ये आठों हम हैं ते आत्मापें रमण करें जे श्रीकृष्णचन्द्र तिनकी सब संगनकूं त्यागिकै अपनो धर्म्म करिकै साक्षात् घरकी दासी भयो चाहैं हैं ३९ सोलह हजार रानी एकसे व्याही हैं याते एक
सङ्ग अपने व्याह की बात कहे हैं गणनसहित भौमासुर है ताय युद्ध में मारिकै पीछे पृथ्वीकूं जीतती बिरियां जीते जे राजा हैं तिनकी कन्या हम हैं तिनकूं भौमासुर ने रोंकी है यह जानिकै
संसार तें छुड़ावनवारो जो चरणारविन्द है ताय स्मरण करैं ऐसी हम हैं तिनें वन्दीखाने तें छुडाये वोही है कारण जिनके और काहू बात की इच्छा नहीं ऐसे भी श्रीकृष्णचन्द्र विवाहत भये ४०
हे द्रौपदी ! हम चक्रवर्त्ती राज्य कूं नहीं चाहैं चक्रवर्त्ती राज्य और इन्द्रपद इनके भोगनको जो भोगिवे है ताय नहीं चाहैं अणिमादिक सिद्धिन कूं नहीं चाहैं और ब्रह्मलोक और मोक्ष तथा
वैकुण्ठधाम इनकी चाहना नहीं करे हैं गदा के धारण करनवारे जो ये हैं तिनके लक्ष्मी के कुचनकी केसर जामें लगी ऐसी सुन्दर जो चरण की रज है ताय माथे के ऊपर चढायवे की चाहना

करे हैं ४१ । ४२ वयों जी वहतो वड़ी दुर्लभहै वाय क्यों चाहती हौ तहां कहे हैं जैसे व्रजकीस्त्री वा रजकी चाहना करेहैं भीलिनी चाहना करेहैं वृन्दावन के तृण लता चाहना करेहैं गौवन कूं चरावैं ऐसे महात्मा जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके चरणस्पर्श कूं गोप चाहना करे हैं ऐसे हमहूंचाहना करे हैं श्रीकृष्णको जिनने आश्रय लियो तिनकूं वह रजसहजहै ४३ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिणयादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(चतुर्भिरधिकाशीतितमेमुनिसमागमे ॥ वसुदेवमखोत्साहबन्धुप्रस्थापनादिकम् १ चौरासीवें अध्यायमें मुनियों के समागममें वसुदेवजीकी यज्ञका उत्साह वन्धुओंका प्रस्थापनआदिक वर्णितहै १)

अब श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन्! परीक्षित् कुन्ती सुवलकी पुत्री गान्धारी ताके पीछे यज्ञसेनकीपुत्री द्रौपदी सुभद्रा याके पीछे राजानकी स्त्रीहैं ते और श्रीकृष्णचन्द्रकीभक्त सम्पूर्णगोपीहैं ते सबके

र्द्वीवोढुंगदाभृतः ४२ व्रजस्त्रियोयद्वाञ्छन्ति पुलिन्द्यस्तृणवीरुधः ॥ गावश्चारयतोगोपाःपादस्पर्शंमहात्मनः ४३ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ श्रुत्वापृथासुवलपुत्र्यथयाज्ञसेनीमाधव्यथक्षितिपपत्न्यउतस्वगोप्यः ॥ कृष्णेऽखिलात्मनिहरौप्रणयानुबन्धं सर्वाविसिस्म्युरलमश्रुकलाकुलाक्ष्यः १ इतिसम्भाष्यमाणासुस्त्रीभिःस्त्रीषुनृभिर्नृषु ॥ आययुर्मुनयस्तत्र कृष्णरामदिदृक्षया २ द्वैपायनोनारदश्च च्यवनोदेवलोऽसितः ॥ विश्वामित्रः शतानन्दोभरद्वाजोऽथगौतमः ३ रामःसशिष्योभगवान् वसिष्ठोगालवोभृगुः ॥ पुलस्त्यःकश्यपोऽत्रिश्च मार्कण्डेयोवृहस्पतिः ४ द्वितस्त्रितश्चैकतश्च ब्रह्मपुत्रास्तथाङ्गिराः ॥ अगस्त्योयाज्ञवल्क्यश्चवामदेवादयोऽपरे ५ तान्दृष्ट्वासहसोत्थायप्रागासीनानृपादयः ॥ पाण्डवाःकृष्णरामौचप्रणेमुर्विश्ववन्दितान् ६ तानानर्चुर्यथासर्वेसहरामोऽच्युतोऽर्चयत् ॥ स्वागतासनपाद्यार्घ्यमाल्यधूपानुलेपनैः ७ उवाचसुखमासीनान्भगवान्धर्म्मगुप्तनुः ॥ सदसस्तस्यमह

आत्मा जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें रानीनको प्रेम सुनिकैं नेत्रनमें आशू भरिकै वड़ो आश्चर्य्य मानतिभई १ ता कुरुक्षेत्रमें या प्रकार स्त्रीनके सङ्ग स्त्रीवार्ते करैं और पुरुषनके सङ्ग पुरुष वातें करैं इतने में श्रीकृष्णचन्द्र और वलदेवजीके दर्शन करिवे के लिये मुनि आवतभये २ अव जो ऋषि आये तिनें कहेहैं वेदव्यास नारद च्यवन देवल असित विश्वामित्र शतानन्द भरद्वाज गौतम ३ शिष्यनसहित भगवान् परशुराम वशिष्ठ गालव भृगु पुलस्त्य कश्यप अत्रि मार्कण्डेय वृहस्पति ४ द्वित त्रित एकत तैसेही ब्रह्माके पुत्र अंगिरा अगस्त्य याज्ञवल्क्य तथा वामदेव ते आदि लैके और मुनि हैं ते सम्पूर्ण आवतभये ५ विश्व जिनकूं प्रणामकरैं ऐसे मुनिनकूं आये देखिकै राजानते आदिलैके जे प्रथम वैठे हैं ते और पाण्डव अर्थात् महाराज युधिष्ठिरादिक हैं ते तथा श्रीकृष्णचन्द्र वलदेव जी ये सम्पूर्ण शीघ्रही उठकर प्रणाम करतभये ६ तिन मुनिनको यथायोग्य सम्पूर्ण पूजन करतभये और वलदेवसहित श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो भले आये ऐसे मुनिनसूं कहिकै आसन दैकै पाद्य अर्घ्य पुष्प धूप दीप चन्दन इन करिकै पूजन करतभये ७ चुपहोयकै सम्पूर्ण जागें वैठे ऐसी सभामें धर्म्मकी रक्षा करनवारी है मूर्त्ति जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो सुखपूर्वक वैठेजे ब्राह्मणहैं

तिनसूं बोलत भये ८ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं—अहो बडो आश्चर्य्य है हम सफलजन्मभये सब जन्मको साफल्य हमकूं प्राप्तभयो देवतान कूं भी दुर्लभ ऐसे योगेश्वरन को दर्शनभयो ९ तीर्थस्नान करनो याहीकू तपजाने केवल प्रतिमाही कूं देवतादेखें ऐसे मनुष्यनकूं योगेश्वरन कूं दर्शन स्पर्शन वार्त्ता को प्रश्न शिरसों नमस्कार चरणनको पूजन आदिक करिबो ये कहा मिले हैं १० जलमय तीर्थ नहीं हैं सो नहीं है मृत्तिका और शिलान के देवता नहीं है सो नहीं हैं बहुत दिन देवतानकी पूजाकरै तब पवित्र करें और साधु महात्मा दर्शनही तें पवित्र करें हैं ११ अग्नि सूर्य्य चन्द्रमा तारागण पृथ्वी जल आकाश पवन वाणी मन ये सेवनकरेते भी इनें भेदबुद्धि करिकै देखे है ऐसे पुरुषके अज्ञान कूं दूरि नहीं करे हैं और विवेकी पुरुषहैं ते दो घड़ीकी सेवा करतेही अज्ञान कूं दूरि करि देइहैं १२ वात पित्त श्लेष्म इन तीनि धातुन को रच्यो जो देह है ताय आत्मा जानें हैं और स्त्री आदिकन में आत्मबुद्धि मानें तथा पृथ्वी को विकार जे प्रतिमा है तिनमें जा पुरुष की

तोयतवाचोऽनुशृण्वतः ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अहोवयंजन्मभृतोलब्धंकात्स्न्र्येनतत्फलम् ॥ देवानामपिदुष्प्रापंयद्योगेश्वरदर्शनम् ९ किंस्वल्पतपसांनॄणामर्चायांदेवचक्षुषाम् ॥ दर्शनस्पर्शनप्रश्नप्रह्वपादार्चनादिकम् १० नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः॥तेपुनन्त्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ११ नाग्निर्नसूर्य्योनचचन्द्रतारकानभूर्जलंखंश्वसनोऽथवाङ्मनः॥ उपासिताभेदकृतोहरन्त्यघंविपश्चितोघ्नन्तिमुहूर्त्तसेवया १२ यस्यात्मबुद्धिःकुणपेत्रिधातुके स्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः॥ यत्तीर्थबुद्धिःसलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगोखरः १३ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ निशम्येत्थंभगवतः कृष्णस्याकुण्ठमेधसः ॥ वचोदुरन्वयंविप्रास्तूष्णीमासन्भ्रमद्धियः १४ चिरंविमृश्यमुनयईश्वरस्येशितव्यताम् ॥ जनसंग्रहइत्यूचुः स्मयन्तस्तंजगद्गुरुम् १५ ॥ मुनयऊचुः ॥ यन्माययातत्त्वविदुत्तमावयं विमोहिताविश्वसृजामधीश्वराः ॥ यदीशितव्यायतिगूढईहया अहोविचित्रंभगवद्विचेष्टितम् १६ अनीहएतद्बहुधैकआत्मना सृजत्यवत्यत्तिनबध्यतेयथा ॥ भौमैर्हिभूमिर्बहुनामरूपिणी अहोविभूम्नश्चरितंविडम्बनम् १७ अथापिकालेस्वजनाभिगुप्तये बिभर्षिसत्त्वंखल

यह पूजाकरिबे योग्य देवताहैं ऐसी बुद्धिहै और जलकूं तीर्थ मानें और विवेकी पुरुषनमें भाव नहीं राखें ऐसे पुरुष गौके चारो ढोवनवारे गधाहैं १३ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! नहीं मन्द हैं बुद्धि जिनकी ऐसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को दुरन्वय वचन श्रवण करिकै भ्रमयुक्त हैं बुद्धि जिनकी ऐसे ब्राह्मण चुप होतभये १४ ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र को कर्म्मनमें जो अधिकार है ताय बहुत देर पर्य्यन्त विचारिकै जननकी शिक्षा के लिये हमारी स्तुति करे हैं या प्रकार मुनीश्वर मुसिकाय कै जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनसूं बोलतभये १५ तत्त्व के जाननवारेनमें उत्तम और विश्व के रचनवारे जो ब्रह्मादिक हैं तिनके ईश्वर ऐसे जे हमहैं ते जिनकी माया करिकै मोहितभये मनुष्यरूप धरिकै मनुष्यन कैसे कर्म्म करो हौ कदाचित् कहो कि मैं ईश्वर हू तो कर्म्म क्यों करूं हू तहां कहे हैं तुम्हारी चेष्टा विचारिबे में नहीं आवै है १६ चेष्टा न करो अर्थात् हाथ पांयन कूं न चलावो ऐसे जे एक तुमही सो अपने आत्मा करिकै या विश्वकूं बहुत प्रकार उत्पत्ति पालन और संहार करो हौ जैसे पृथ्वी है सो घटादि विकारन करिकै बहुत नाम जाके ऐसी होयहै कदाचित् कहो कि मैं कैसे उत्पत्ति पालन संहार करूं हू मैं तो वसुदेव को पुत्रहू तहां कहे हैं परिपूर्ण

जो तुमहौ तिनको वसुदेव के घर जन्म है यह विचित्र लीलामात्रहै सत्य नहीं है १७ समयमै अपने भक्तन की रक्षा करिवे के लिये और दुष्टन के दण्डदेवे कूं शुद्ध सतोगुणी रूप कूं धारण करो हौ और आप अपनी लीला करिकै सनातन जो वेदमार्ग है ताय प्रवृत्त करो हौ जो तुम काहू के पुत्र नहीं हो तो भी चारि वर्ण और चारि आश्रम इनके आत्मा परमपुरुषहौ याही तें ब्राह्मणन को बहुत सत्कार करो हो यह कहे हैं १८ शुद्ध जो वेदहै सो तुम्हारो भीतर को रूपहै तप करिवो वेदको पढिवो इन्द्रियनको रोंकिवो इन करिकै कार्य्य और कारण दोउनते परे जो ब्रह्महै ताकी प्राप्ति होयहै १९ हे ब्रह्मन्! वेदके कारण आत्मा जो तुमहौ तिनको वतावनवारो जो ब्रह्मकुल है ताय पूजो हौ ताही कारण ते ब्राह्मणन की भक्ति करनवारे जे पुरुष हैं तिनमें श्रेष्ठ हौ २० तातें ईश्वर जो तुमहौ तिनकूं हमारो जो सत्कार करनो है सो पुरुषन के शिक्षा करिवेके लिये है और हम हैं ते तुम्हारे संग तें कृतार्थ भये यह कहे हैं साधुन की गति जो तुमहौ तिनको सङ्ग भयो तासूं हमारो जन्म विद्या तप दृष्टि ये सम्पूर्ण सफलभये काहेसे तुम समस्त कल्याणनकी अवधि हौ २१ नहीं मन्दहै बुद्धि जिनकी और अपनी योगमाया करिकै ढकी है महिमा

निग्रहाय च ॥ स्वलीलया वेदपथं सनातनं वर्णाश्रमात्मा पुरुषः परो भवान् १८ ब्रह्म ते हृदयं शुक्लं तपःस्वाध्यायसंयमैः ॥ यत्रोपलब्धं सद्व्यक्तमव्यक्तं च ततः परम् १९ तस्माद्ब्रह्मकुलं ब्रह्मञ्छास्त्रयोनेस्त्वमात्मनः ॥ सभाजयसि सद्धाम तद्ब्रह्मण्याग्रणीर्भवान् २० अद्य नो जन्मसाफल्यं विद्यायास्तपसो दृशः ॥ त्वया संगम्य सद्गत्या यदन्तः श्रेयसां परः २१ नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ॥ स्वयोगमाययाच्छन्नमहिम्ने परमात्मने २२ नयं विदन्त्यमी भूपा एकारामाश्च वृष्णयः ॥ मायाजवनिकाच्छन्नमात्मानं कालमीश्वरम् २३ यथा शयानः पुरुष आत्मानं गुणतत्त्वदृक् ॥ नाममात्रेन्द्रियाभातं न वेद रहितं परम् २४ एवं त्वा नाममात्रेषु विषयेष्विन्द्रियेहया ॥ मायया विभ्रमच्चित्तो न वेद स्मृत्युपप्लवात् २५ तस्याद्य ते ददृशिमाङ्घ्रिमघौघमर्षतीर्थास्पदं हृदि कृतं सुविपक्वयोगैः ॥ उत्सिक्तभक्त्युपहताशयजीवकोशा आपुर्भवद्गतिमथोऽनुगृहाण भक्तान् २६ ॥ श्रीशुक उवाच ॥ इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हं धृतराष्ट्रं युधिष्ठिरम् ॥ राजर्षे स्वाश्रमान्

जिनकी ऐसे परमात्मा भगवान् जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनकू नमस्कार है २२ मायारूपी चिक सूं ढके सृष्ट्यादिकन के कारण ऐसे ईश्वर आत्मा जो तुमहौ तिनें ये राजा नहीं जाने हैं और एक स्थान में है सुख जिनकूं ऐसे यादव हैं तेभी नहीं जाने हैं २३ जैसे पुरुष सोवत में स्वप्नदृष्ट जे मिथ्या पदार्थ हैं तिनें सत्य माने है मनतें सिंह व्याघ्रादि रूप आप वनिजाय है अपने स्वरूप कूं नहीं जाने है २४ याही प्रकार स्वप्नादितुल्य जे विषय पदार्थ हैं तिनमें इन्द्रियन की प्रवृत्ति रूप माया ता करिकै चलायमान है चित्त जाको ऐसो पुरुष विवेक के नाश तें तुमें नहीं जाने है २५ पापन के समूहन कूं दूरि करे ऐसो गङ्गारूपी तीर्थ जामें तें प्रकटभयो और पक्व हैं योग जिनके ऐसे योगीजनन ने केवल हृदयमें ध्यान जाको करयो परन्तु उनकूं भी दिखाई नहीं दियो ऐसो जो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको हम दर्शन करतभये याते हम भक्तनकूं भक्ति करिवे कू अनुग्रह करो कदाचित् कहौ कि भक्ति करिकै कहा करोगे पहिले की तुल्य तप करे जावो तहां कहे हैं उदय भई जो भक्ति तासूं जरयो है लिंग देह जिनको ऐसे जे पुरुषहैं तेही तुम्हारे स्वरूपकूं पाइगये और नहीं २६ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजान में ऋषि राजा परीक्षित्! या प्रकार मुनीश्वर

हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र और राजा धृतराष्ट्र तथा युधिष्ठिर इन सूं आज्ञा मागिकै अपने अपने आश्रमन में जायवे की इच्छा करतभये २७ बड़ो है यश जिनको ऐसे वसुदेवजी हैं सो तिन मुनिन कूं जाते देखिकै उनके समीप जायकै सावधान होइकै यह कहतभये २८ अब वसुदेवजी कहे हैं सम्पूर्ण देवतारूप तुमहौ तिनकूं मणामहै हे ऋषीश्वरो ! मेरी एक वार्त्ता तुम श्रवण करो जैसे कर्म्म करिकै कर्म्म को नाश होय सो हमें बतावो २९ श्रीकृष्णचन्द्र कूं छोडिके हमसूं कल्याण पूंछे हैं या प्रकार आश्चर्य्य जिनके भयो ऐसे नारदजी ब्राह्मणनते कहे हैं हे ब्राह्मणो ! वसुदेवजी श्रीकृष्णचन्द्र कूं अपनो पुत्र मानिकै जानिवे के लिये अपनो कल्याण हम सूं पूछेहैं यह बड़ो आश्चर्य नहीं है ३० श्रीकृष्णचन्द्र कूं बालक माननो अविद्या करिकै है यह कहे हैं या संसार में मनुष्यन के पास रहे ते अनादर होय जायहै जैसे गंगातीर को रहनवारो जो पुरुषहै सो गंगाछोड़िकै शुद्ध होयवे के लिये और जल में स्नान करिवे कू जायहै ३१ जा श्रीकृष्ण को ज्ञान काहू कारण तें

गन्तुंमुनयोदधिरेमनः २७ तद्वीक्ष्यतानुपव्रज्य वसुदेवोमहायशाः ॥ प्रणम्यचोपसंगृह्य बभाषेदंसुयन्त्रितः २८ ॥ वसुदेवउवाच ॥ नमोवःसर्व्वदेवेभ्यऋपयःश्रोतुमर्हथ ॥ कर्म्मणाकर्म्मनिर्हारोयथास्यान्नस्तदुच्यताम् २९ ॥ नारदउवाच ॥ नातिचित्रमिदंविप्रावसुदेवोवुभुत्सया ॥ कृष्णंमत्वाऽर्भकंयन्नःपृच्छतिश्रेयआत्मनः ३० सन्निकर्षोऽत्रमर्त्यानामनादरणकारणम् ॥ गाङ्गंहित्वायथान्याम्भस्तत्रत्योयातिशुद्धये ३१ यस्यानुभूतिःकालेनलयोत्पत्त्यादिनास्यवै ॥ स्वतोऽन्यस्माच्चगुणतोनकुतश्चनरिष्यति ३२ तंक्लेशकर्म्मपरिपाकगुणप्रवाहैरव्याहतानुभवमीश्वरमद्वितीयम् ॥ प्राणादिभिःस्वविभवैरुपगूढमन्योमन्येतसूर्य्यमिवमेघहिमोपरागैः ३३ अथोचुर्मुनयोराजन्नाभाष्यानकदुन्दुभिम् ॥ सर्व्वेषांशृण्वतांराज्ञां तथैवाच्युतरामयोः ३४ कर्म्मणाकर्म्मनिर्हारएपसाधुनिरूपितः ॥ यच्छ्रद्धयायजेद्विष्णुंसर्व्वयज्ञेश्वरंमखैः ३५ चित्तस्योपशमोऽयंवैकविभिःशास्त्रचक्षुपा ॥ दर्शितःसुगमोयोगोधर्म्मश्चात्ममुदावहः ३६ अयंस्वस्त्ययनःपन्थाद्विजातेर्गृहमेधिनः ॥ यच्छ्रद्धयाप्तवित्तेनशुक्लेनेज्येतपूरुषः ३७ वित्तैपणांयज्ञदानैर्गृहैर्दारसुतैपणाम् ॥ आत्मलोकैपणांदेवकालेनविसृ

भी नहीं नष्ट होय है सोई कहे हैं जैसे काल करिकै काकरी फटिजायहै और या विश्वको उत्पत्तिकरिवो पालन और नाश करिवो इनसूं भी नहीं जायहै और जैसे आपतें बिजुली चमकिके विलाय जायहै और जैसे गुण करिकै पूर्व्वरूप को नाश होय और रूपान्तरकी प्राप्ति होय ऐसेभी नहीं जायहै ऐसे जो अद्वितीय ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्रहै तिनके प्रभावकूं क्लेश कर्म्म अर्थात् रागद्वेषादिकन करिकै करे जे कर्म्म तिन कर्म्मन के फल जो सुख दु खहैं तिन करिकै और सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इनके वारंवार प्रवाहकी तुल्य जो आइवोहै ता करिकै प्राकृतपुरुष प्राण इन्द्रिय जो अपने कार्य्य हैं तिनसूं आच्छादित माने हैं जैसे वादर तुपार और राहु के ग्रसे ते सूर्य मालूमहोयहै ऐसे ३२ । ३३ इतनो कहिके पीछे हे राजन् परीक्षित् ! मुनिहू ते सब राजानके श्रवण करत और तैसे ही श्रीकृष्ण और बलदेवजी के श्रवण करत वसुदेवजी कूं बोधन करत बोलतभये ३४ कर्म्म करेतें कर्म्म कटे यह भलो पूछ्यो श्रद्धापूर्व्वक यज्ञन करिकै सब यज्ञन के ईश्वर जे भगवान् हैं तिन को पूजन करो ३५ कविन ने शास्त्ररूप नेत्रन करिकै चित्तके शान्ति करनवारे आत्मा कूं आनन्द को प्राप्ति करनवारो धर्म्मरूप यज्ञ करिकै पूजन करिवो है सो सुगम उपाय दिखायो है ३६ गृहस्थ

जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं तिनकूं यही कल्याण को मार्ग है निष्काम होयकै प्राप्तभयो जो शुद्धद्रव्यहै ता करिकै ईश्वर को पूजनकरै ३७ हे वसुदेवजी यज्ञकरिकै दान करिकै विवेकी पुरुष धनकी चाहना कूं त्यागै और घरमें उचित भोजन भोगनकू भोगिकै स्त्रीपुत्रनकी चाहना कूं त्यागै और या देहके मरे पीछे स्वर्गलोकादिकनकी प्राप्ति कूं नाशवान् समझिकै तिनकी चाहना कू त्यागै ग्राम में त्यागी हैं चाहना जिनने ऐसे समस्त धीर पुरुष तपकरिबे के लिये वनमें जातभये ३८ हे समर्थ वसुदेवजी ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहैं ते देव ऋषि पितृ इन तीनोंन को ऋण या जन्म में है तासूं उद्धार होई यज्ञ करिकै देवतान को ऋण और विद्या पढ़िकै ऋषिन को ऋण तथा पुत्र उत्पन्न करिकै पितरन को ऋण चुकावै इन ऋणन के चुकायबे विना जो कर्म्मन को त्यागकरै तो वह पुरुष नरकमें गिरै ३९ बड़ी है बुद्धि जाकी ऐसे वसुदेव अब तुम दो ऋणन तें तो छूटिगये विद्या पढ़े यातें ऋषिन के ऋण सूं उद्धारभये और पुत्रभयो यातें पितरन के ऋण सूं उद्धारभये अब यज्ञ करिकै देवतान के ऋण तें उद्धार होयकै गृह कूं त्यागि संन्यास ग्रहण करौ ४० हे वसुदेवजी ! तुम बड़ीभक्ति करिकै जगत् के ईश्वर जे हरि भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये वेई हरि भगवान् आयकै -

जेद्बुधः ॥ ग्रामेत्यक्तैषणाःसर्वे ययुर्धीरास्तपोवनम् ३८ ऋणैस्त्रिभिर्द्विजोजातोदेवर्षिपितॄणांप्रभो ॥ यज्ञाध्ययनपुत्रैस्तान्यनिस्तीर्य्यत्यजन्पतेत् ३९ त्वंत्वद्यमुक्तोद्वाभ्यांवै ऋषिपित्रोर्महामते ॥ यज्ञैर्देवर्णमुन्मुच्य निर्ऋणोऽशरणोभव ४० वसुदेवभवान्नूनं भक्त्यापरमयाहरिम् ॥ जगतामीश्वरंप्रार्चःसयद्वांपुत्रतांगतः ४१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वा वसुदेवोमहामनाः ॥ तानृषीनृत्विजोवव्रे मूर्ध्नाऽऽनम्यप्रसाद्यच ४२ तएनमृषयोराजन्वृताधर्मेण धार्मिकम् ॥ तस्मिन्नयाजयन्क्षेत्रे मखैरुत्तमकल्पकैः ४३ तद्दीक्षायांप्रवृत्तायांवृष्णयःपुष्करस्रजः ॥ स्नाताःसुवाससोराजन्राजानःसुष्ठ्वलंकृताः ४४ तन्महिष्यश्चमुदितानिष्ककण्ठ्यःसुवाससः ॥ दीक्षाशालामुपाजग्मुरालिप्तावस्तुपाणयः ४५ नेदुर्मृदङ्गपटहशङ्खभेर्य्यानकादयः ॥ ननृतुर्नटनर्तक्यस्तुष्टुवुः सूतमागधाः ॥ जगुःसुकण्ठ्योगन्धर्व्यः सङ्गीतंसहभर्तृकाः ४६ तमभ्यषिञ्चन्विधिवदक्तमभ्यक्तमृत्विजः ॥ पत्नीभिरष्टादशभिः सोमराजमिवोडुभिः ४७

तुम्हारे पुत्रहोतभये ४१ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! बड़ोहै मन जिनको ऐसे वसुदेवजी या प्रकार ब्राह्मणन को वचन सुनिकै मस्तक नवायकै प्रसन्न करिकै तिन ऋषिन कूं यज्ञके करनवारे ऋत्विजन को वरण करतभये ४२ हे राजन् परीक्षित् ! धर्म्म करिकै वरण जिनको करयो ऐसे जे ऋषि हैं ते धर्म्मात्मा वसुदेवजी कूं ता कुरुक्षेत्रमें उत्तम सामग्रीन करिकै यजन करावत भये ४३ हे राजन् परीक्षित् ! जा समय वसुदेवजी कूं यज्ञकी दीक्षा भई ता समय कमलन की माला पहिरिकै यादव और स्नान करिकै सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरि शृंगार करिकै राजा आवतभये ४४ और धुकधुकीहै कण्ठ में जिनके सुन्दर वस्त्रन कूं पहिरे केसरि चन्दनलगे ऐसी राजानकी स्त्रीहैं ते पूजाकी सामग्री कूं हाथ में लैके जहा यज्ञशालाही तहां आवति भई ४५ मृदङ्ग ढोल शङ्ख भेरी नगारेन कूं आदिलैके जे बाजे हैं ते बाजतभये नट और नृत्यकी करनवारी जे हैं ते नाचति भई सूत और जागा स्तुति करतभये सुन्दर हैं कण्ठ जिनके ऐसी जे गन्धर्व्वपत्नी हैं ते अपने पतिनसहित सुन्दर गीतन कूं गावति भई ४६ नेत्रन में अञ्जन जिनने लगायो और सब अङ्गोंमें माखन लगायो ऐसे वसुदेवजी को विधिपूर्व्वक अठारह स्त्रीन सहित ऋत्विज अभिषेक करतभये जैसे तारागण सहित

चन्द्रमा को करे हैं तैसे ४७ वस्त्र कङ्कण हार नूपुर कुण्डल इन आभूषणन करिकै शोभायमान जे स्त्रीहैं तिन सहित दीक्षा जिनने लीनी मृगछाला ओढे ऐसे वसुदेवजी सुन्दर लगतभये ४८ हे महा
राज परीक्षित् ! रत्नन के गहने और रेशमी वस्त्रन कूं पहिरे ऐसे वसुदेवजी यज्ञके करावनवारे और सभामें बैठे हैं तिन सहित जैसे वृत्रासुर के मारनवारे इन्द्रके यज्ञमें तैसे सुन्दर लगतभये ४९
सम्पूर्ण जीवनके ईश्वर जो रामकृष्ण है ते अपने अपने बन्धुन कूं सङ्गलिये और अपने पुत्र स्त्रीनसहित अपने ऐश्वर्यन करिके सुन्दर लगतभये ५० यज्ञमें विधिपूर्वक अग्निहोत्र कूं आदिलेके हैं स्व-
रूप जिनको कह्यो और समस्त अङ्ग जिनमें ऐसे ज्योतिष्टोम दर्श पौर्णमास सूं आदि लैके यज्ञ है ते और थोड़े सेंहैं अंग जिनमें ऐसे सौर्यसत्रादिकहैं ते द्रव्य अर्थात् साकल्य मन्त्र कर्म इन सबके ईश्वर
जे भगवान् हैं तिनको पूजन करतभये ५१ यज्ञकरे पीछे वसुदेवजी समयपै आभूषण न करिकै शोभायमान जे यज्ञ करनवारे ऋषिहैं तिनकूं गौ पृथ्वी कन्या और बड़े धन इनकी दक्षिणा हैं ते वेद
विधिसूं देतभये ५२ पत्नीसंयात् आवभृथ्य इत्यादिक जे यज्ञहैं तिनैं करायकै बडे ऋषि जे ब्राह्मणहैं ते यजमान वसुदेवजी कूं आगे करिकै रामह्रद में स्नान करत भये ५३ स्नान जिनने कर्यो

ताभिर्दुकूलवलयैर्हारनूपुरकुण्डलैः ॥ स्वलंकृताभिर्विबभौ दीक्षितोऽजिनसंवृतः ४८ तस्यर्त्विजोमहाराज रत्नकौशेयवाससः॥ ससदस्या विरेजुस्ते यथा वृत्रहणोऽध्वरे ४९ तदारामश्चकृष्णश्च स्वैःस्वैर्बन्धुभिरन्वितौ ॥ रेजतुःस्वसुतैर्दारैर्जीवेशौस्वविभूतिभिः ५० ईजेऽनुयज्ञंविधिना अग्निहोत्रादिलक्षणैः ॥ प्राकृतैर्वैकृतैर्यज्ञैर्द्रव्यज्ञानक्रियेश्वरम् ५१ अथर्त्विग्भ्योऽददात्काले यथाम्नातंसदक्षिणाः॥ स्वलंकृतेभ्योविप्रेभ्योगोभूकन्यामहाधनाः ५२ पत्नीसंयाजावभृथ्यैश्चरित्वातेमहर्षयः ॥ सस्नूरामह्रदेविप्रायजमानपुरःसराः ५३ स्नातोऽलङ्कारवासांसिवन्दिभ्योऽदात्तथास्त्रियः ॥ ततःस्वलंकृतोवर्णानाश्वभ्योऽन्नेनपूजयत् ५४ बन्धून्सदारान्ससुतान् पारिबर्हेणभूयसा ॥ विदर्भकोशलकुरून्काशिकेकयसृञ्जयान् ५५ सदस्यर्त्विक्सुरगणान् नृभूतपितृचारणान् ॥ श्रीनिकेतमनुज्ञाप्य शंसन्तःप्रययुःक्रतुम् ५६ धृतराष्ट्रोऽनुजःपार्थाभीष्मोद्रोणःपृथायमौ॥ नारदोभगवान्व्यासःसुहृत्सम्बन्धिबान्धवाः ५७ बन्धून्परिष्वज्ययदून् सौहृदाक्लिन्नचेतसः ॥ ययुर्विरहकृच्छ्रेणस्वदेशांश्चापरेजनाः ५८ नन्दस्तुसहगोपालैर्बृहत्यापूजयार्चितः॥ कृष्णरामोग्रसेनाद्यैर्न्यवात्सीद्बन्धु

ऐसे वसुदेवजी और तैसेही उनकी स्त्रीहैं ते सब बन्दीजनन कूं अपने अंगके गहने और वस्त्र देतिभई ता पीछे वसुदेवजी और आभूषण पहिरि श्वान पर्यन्त चार्यो वर्णन कूं अन्न दान करि पूज-
तभये ५४ स्त्री पुत्रन सहित जे बन्धुहैं तिनैं प्रीतिपूर्वक बहुत से द्रव्य करिकै पूजन करतभये अब कौन कौन बन्धु है तिनको नाम लेतहैं विदर्भ कोशल कुरु काशि केकय सृञ्जय इन देशनके
राजाहैं तिनको और सभाके बैठनवारे तथा यज्ञके करावनवारे देवतानके गण हैं तिनको तथा मनुष्य भूत पितृ चारणगण हैं तिनको पूजन करतभये सब राजा श्रीकृष्णचन्द्र कूं बोधन करिकै
यज्ञकी प्रशंसा करत अपने अपने देशनकूं जातभये ५५।५६ धृतराष्ट्र विदुर पृथाके पुत्र युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन भीष्मजी द्रोणाचार्य कुन्ती नकुल सहदेव नारद भगवान् व्यासजी और
मित्र हैं तिनसूं तथा नाते गोतेवारे बन्धु जे यादव हैं तिन सबरूं मिलिकै स्नेह करिकै खेदित हैं चित्त जिनके ऐसे विरहके कष्ट करिकै अपने अपने देशनकूं जातभये और जे मनुष्यहैं तेभी अपने

अपने देशनकूं जातभये ५७। ५८ कृष्ण राम उग्रसेनादिक यादवनने बड़ी पूजा जिनकी करी ऐसे गोपालनसहित जो नन्दरायजी हैं ते वन्धु जे यादवहैं तिनसूं स्नेह करत वसतभये ५९ प्रसन्नहै मन जिनको ऐसे वसुदेवजी सहजमें यज्ञ करिवेको मनोरथरूपी बडे समुद्रकू पार उतरिकै अर्थात् यज्ञकूं पूर्णकरिकै सब सुहृदनकूं सङ्गलैकै नन्दरायजीको हाथ पकरिकै यह कहतभये ६० अब वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! मनुष्यनकूं स्नेहरूपी फांसी जो ईश्वरने करीहै ताय शूरवीर बलसूं और ज्ञानी ज्ञानसूं नहीं काटि सकैहै उपमादेवे योग्य नहीं और जाकी उपमा भी नहीं ऐसी जो मित्रता करीहै सो कदाचित् न जायगी और तुम्हारे उपकारकू जाने नहीं ऐसे हम हैं तिनसूं श्रेष्ठ जो तुमही तिनने मित्रताकरी ६१ । ६२ वसुदेवजी कहे हैं हे भय्या नन्दरायजी ! हम असमर्थ हैं याते कछु तुम्हारो उपकार नहीं करिसकें और अब धन करिकै आं रे हैं नेत्र जिनके ऐसे हमहैं ते सम्मुख तुम बैठेहो तिनें नहीं देखेहैं ६३ हे मानके देनवारे भय्या नन्दजी ! जो अपनो भलोचाहै तापुरुष

वत्सलः ५८ वसुदेवोऽञ्जसोत्तीर्य्य मनोरथमहार्णवम् ॥ सुहृद्वृतः प्रीतमना नन्दमाह करे स्पृशन् ६० ॥ वसुदेवउवाच ॥ भ्रातरीशकृतः पाशो नृणां यः स्नेहसंज्ञितः ॥ तं दुस्त्यजमहं मन्ये शूराणामपि योगिनाम् ६१ अस्मास्वप्रतिकल्पेयं यत्कृताज्ञेषु सत्तमैः ॥ मैत्र्यर्पिताऽफला वापि न निवर्त्तेत कर्हिचित् ६२ प्रागकल्पाच्च कुशलं भ्रातर्वो नाचरामहि ॥ अधुना श्रीमदान्धाक्षा न पश्यामः पुरः सतः ६३ मा राज्यश्रीरभूत्पुंसः श्रेयस्कामस्य मानद ॥ स्वजनानुत बन्धून्वा न पश्यति ययाऽन्धदृक् ६४ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवं सौहृदशैथिल्यचित्त आनकदुन्दुभिः ॥ रुरोद तत्कृतां मैत्रीं स्मरन्नश्रुविलोचनः ६५ नन्दस्तु सख्युः प्रियकृत्प्रेम्णा गोविन्दरामयोः ॥ अद्यश्व इति मासांस्त्रीन्यदुभिर्मानितोऽवसत् ६६ ततः कामैः पूर्य्यमाणः सव्रजः सहबान्धवः ॥ परार्घ्याभरणक्षौमनानाऽनर्घ्यपरिच्छदैः ६७ वसुदेवोग्रसेनाभ्यां कृष्णोद्धवबलादिभिः ॥ दत्तमादाय पारिबर्हं यापितो यदुभिर्ययौ ६८ नन्दो गोपाश्च गोप्यश्च गोविन्दचरणाम्बुजे ॥ मनः क्षिप्तं पुनर्हर्त्तुमनीशा मथुरां ययुः ६९ बन्धुषु प्रतियातेषु वृष्णयः कृष्णदेवताः ॥ वीक्ष्य प्रावृषमासन्नां ययुर्द्वारवतीं पुनः ७० जनेभ्यः कथयाञ्चक्रुर्यदुदेवमहोत्सवम् ॥

कूं राज्य सम्पत्ति कदाचित् मतिहोउ जा सम्पत्तिसूं आधरी दृष्टिहोयजाय है तब यह पुरुष अपने नाते गोतेवारेनकूं और भय्या बन्धुनकूं नहीं देखेहै ६४ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार स्नेह करिकै शिथिलहै चित्त जिनको आसू नेत्रन में आयगये ऐसे वसुदेवजी हैं सो नन्दजीनेकरी जो मित्रता है ताको स्मरणकरिकै रोदन करतभये ६५ सखा जो वसुदेव हैं तिनके हितकेकरनवारे यादवनने सत्कारकर्‌यो ऐसे जो नन्दजीहैं सो कृष्ण बलदेवके प्रेमकरिकै प्रातःकाल जब चलैं तब आयके कहैं बाबा भोजन करिकै जाइयो और भोजन करिकै चलैं तब कहैं दिन थोड़ो रह्यो अब कहां रात्रिमें वसोगे ऐसे आज कालिह करत करत तीनमहीना वास करतभये ६६ ताके पीछे बड़े मोलके आभूषण और रेशमी वस्त्र अनेक भांतिके बडे मोलकी वस्तुनसूं कामनान करिकै व्रजवासीन सहित नन्दरायजी पूर्ण करिदिये और वसुदेव उग्रसेनतें तथा कृष्ण उद्धव बलदेवजी सूं आदिलैकै यादवन ने दीनी जे सामग्री तिनें ग्रहण करिकै उनने जब विदाकरे तब आवत भये ६७। ६८ नन्दगोप गोपीन को गोविन्द श्रीकृष्ण के चरणकमल में लग्यो जो मनहै ताय फेरि निकासिवे कूं असमर्थ होयकै मथुरादेशनमें आवतभये ६९ कुरुक्षेत्र में ते सब बन्धु

चलेगये तब श्रीकृष्णचन्द्र हैं देवता जिनके ऐसे यादव वर्षान्त्रतुकूं समीप आई देखिकै फेरि द्वारकापुरी कू आवतभये ७० सब यादव हैं ते वसुदेवजी के यज्ञभयो है ताय और कुरुक्षेत्रकी यात्रा में सुहृदनको दर्शन आदिक भयो है ताय प्रजानतें कहतभये ७१ इति श्रीमन्महाभागवततार्थरूपिएयादशमस्कन्धे उत्तरार्द्धेतीर्थयात्रानुवर्णननामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

(पञ्चाशीतितमेरामकृष्णौसम्प्रार्थितौसुतौ ॥ पित्रेज्ञानंप्रयोमात्रेमृतान्पुत्रानयच्छताम् १ नन्दयित्वाकुरुक्षेत्रयात्रायांसुहृदोबहून् ॥ तत्त्वज्ञानंततःपित्रोरादिशन्मृतसूनुभिः २ पचासीवें अध्यायमें भले प्रकार प्रार्थना कियेगये बलदेव और कृष्ण ये दोनों पुत्र वसुदेवजी को ज्ञान और देवकीजी कों उनके मरेहुये पुत्रनकूं देतेभये १ कुरुक्षेत्रकी यात्रा में बहुत मित्रनकों आनन्दितकर मृतक वसुदेव देवकी जी के पुत्रनको लाकर उनको तत्त्वज्ञान देतेभये २) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! कुरुक्षेत्रकी यात्राकरे पीछे एकसमय आयके करो है चरणनमें प्रणाम जिनने ऐसे पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेवजी हैं तिनकी प्रशंसा करिकै प्रीतिपूर्वक वसुदेवजी बोलतभये १ पुत्रन के प्रभाव को जनावनवारो जो मुनिन को कह्यो वचन कि तुम्हारे पुत्र परमेश्वर हैं ऐसे सुनिके श्री-

यदाऽऽसीत्तीर्थयात्रायांसुहृत्संदर्शनादिकम् ७१ ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेतीर्थयात्राऽनुवर्णनंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

श्रीबादरायणिरुवाच ॥ अथैकदात्मजौप्राप्तौ कृतपादाभिवन्दनौ ॥ वसुदेवोऽभिनन्द्याह प्रीत्यासङ्कर्षणाच्युतौ १ मुनीनांसवचःश्रुत्वा पुत्रयोर्धाम सूचकम् ॥ तद्वीर्य्यैर्जातविश्रम्भःपरिभाष्याभ्यभाषत २ कृष्णकृष्णमहायोगिन् सङ्कर्षणसनातन ॥ जानेवामस्ययत्साक्षात्प्रधानपुरुषौपरौ ३ यत्रयेनय तोयस्य यस्मैयद्यद्यथायदा ॥ स्यादिदं भगवान्साक्षात्प्रधानपुरुषेश्वर ४ एतन्नानाविधंविश्वमात्मसृष्टमधोऽक्षज ॥ आत्मनाऽनुप्रविश्यात्मन् प्राणोजी वोबिभर्ष्यजः ५ प्राणादीनांविश्वसृजां शक्तयोयाःपरस्यताः ॥ पारतन्त्र्याद्वैसादृश्याद्द्वयोश्चेष्टैवचेष्टताम् ६ कान्तिस्तेजःप्रभासत्ताचन्द्राग्न्यर्कर्क्षविद्यु

कृष्ण बलदेव के पराक्रम देखिकै भयो है विश्वास जिनके ऐसे वसुदेव जी सम्बोधन देकै बोलतभये २ हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! हे महायोगिन् ! हे संकर्षण ! हे सनातन ! या विश्वके कारण जे प्रकृति पुरुष हैं तिनके भी कारण ऐसे साक्षात् ईश्वर तुमहौ यह मैं जानूंहूं ३ जामें जा करिकै जाते जाको सम्बन्धी जाके अर्थ जो जो जैसे जा समय यह विश्व होय है सो समस्त प्रकृतिपुरुष के साक्षात् भगवान् ईश्वर तुमहौ ४ हे अधोक्षज ! नेत्रनतें देखिबे में न आवो कानननतें सुनिबे में न आवो वाणी तें कहिवेमें न आवो ऐसे कोई इन्द्रिय जामें पहुँचे नहीं हे सबके आत्मा ! आपने रच्यो जो यह नानाप्रकारको विश्वहै तामें अपनपे करिकै प्रवेश होयकै प्राणरूप होयकै अजन्मा जो तुमहौ सो ज्ञानशक्ति कूं धारण करोहौ ५ पृथक् पृथक् है शक्ति जिनकी ऐसे प्राणादिक या विश्व के कारण जानिबे में आवे है परमेश्वर कूं कारणरूप करिकै सर्वरूप कैसे कहोहौ यह शंका जा भई ताको समाधान यह है कि प्राणादिकन में जे शक्ति हैं ते ईश्वरकी है जैसे विश्व के करनवारे प्राण ते आदिलैके जे तत्त्व हैं तिनमें जे शक्ति है ते परमकारण जो ईश्वर है ताहीकी है काहेतें प्राणादिक ईश्वरके अधीन हैं ता कारण और जैसे तीरमें वेधिवेकी स्वतन्त्र शक्ति नहीं है किन्तु पुरुष की शक्तिसूं वेधे है ऐसे प्राणादिकन में ईश्वर शक्तिहै प्राणादिक जड़हैं और ईश्वर चैतन्यहै जड़ पदार्थ कूं चैतन्यकी अधीनता योग्यहै तहा कहे हैं प्राणादिकन में शक्ति नहीं है तो क्रिया कैसे

करे हैं ताको उत्तर कहे हैं चेष्टाकरें जे प्राणादिक हैं तिनकी चेष्टा यहां कछु शक्ति नहीं है जैसे पवनकी शक्ति करिके तृण हले है ऐसे क्रिया करे हैं ६ अब पराधीनता कहे हैं चन्द्रमा में जो प्रकाश है और अग्नि में जो तेजहै और सूर्य्य में जो प्रकाश है तथा नक्षत्र में बिजुलीन में जो चमक है सो सब तुमहीं हौ और पर्व्वत में जो स्थिरता है सो तुम्हारोही गुण है तथा पृथ्वी में सबको भार धारण करिवो और सुगन्ध ये सब तुमहीं हौ तुम्हारी शक्ति है ७ हे देव! जल पिये ते तृप्ति होय जाय प्राण बचि जाय यह जलन में तुम्हारीही शक्ति है वे जल और जलनमें रसगुणहै सो तुमहींहौ और हे ईश्वर! पवनमें ओज अर्थात् मनको बल और इन्द्रियनको बल देहको बल चेष्टा चलनो यह सब तुम्हारोही रूपहै ८ दिशान में जो खालीपन है सो और दिशाहै ते सब तुम्हारोही रूपहैं और आकाश तथा आकाशमें जो शब्द रूप गुणहै सो सब तुम्हारोही रूपहै वाणी आकार और नामरूप कहिवेमें आवै सो सब तुमहींहौ ९ नेत्रनमें दर्शन शक्ति और कानननमें श्रवण शक्ति काय जिह्वामें रसकी ग्रहणशक्ति इत्यादिक जे इन्द्रियन में विषयन के ग्रहणकरिवे की शक्ति तुमहीं हौ और इन्द्रियन के अधिष्ठाता देवताहैं ते तुमहींहौ देवता इन्द्रियनकू मेरे

यत्स्थैर्यंभूभृतांभूमेर्वृत्तिर्गन्धोऽर्थतोभवान् ७ तर्प्पणंप्राणनमपांदेवत्वंताश्चतद्रसः ॥ ओजःसहोवलंचेष्टागतिर्वायोस्तवेश्वर ८ दिशांत्वमवकाशोऽसि दिशःखंस्फोटआश्रयः ॥ नादोवर्णस्त्वमोङ्कारआकृतीनांपृथक्कृतिः ९ इन्द्रियंत्विन्द्रियाणांत्वंदेवाश्चतदनुग्रहः। अवबोधोभवान्बुद्धेर्जीवस्यानुस्मृतिः सती १० भूतानामसिभूतादिरिन्द्रियाणांचतैजसः ॥ वैकारिकोविकल्पानांप्रधानमनुशायिनाम् ११ नश्वरेष्विहभावेषु तदसित्वमनश्वरम् ॥ यथाद्रव्यविकारेषु द्रव्यमात्रंनिरूपितम् १२ सत्त्वंरजस्तमइतिगुणास्तद्वृत्तयश्चयाः ॥ त्वय्यद्धाब्रह्मणिपरेकल्पितायोगमायया १३ तस्मान्नसन्त्यमीभावायर्हित्वयिविकल्पिताः ॥ त्वंचामीषुविकारेषुह्यन्यदाव्यावहारिकः १४ गुणप्रवाहएतस्मिन्नबुधास्त्वखिलात्मनः ॥ गतिंसूक्ष्मामबोधेन संसरन्तीहकर्मभिः १५ यदृच्छयानृतांप्राप्य सुकल्पामिहदुर्लभाम् ॥ स्वार्थेप्रमत्तस्यवयोगतंत्वन्माययेश्वर १६ असावहंममैवैते देहेचास्यान्वयादिषु ॥ स्नेहपाशैर्निबध्नाति

हैं यह तुम्हारी शक्तिहै बुद्धिमें निश्चय करिवेकी जो शक्तिहै सो तुमहींहौ और जीवन कू श्रेष्ठवार्त्ताको स्मरणहै यह तुम्हारी शक्तिहै १० पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इन पञ्चभूतनको कारण तामस अहङ्कार तुमहींहौ और इन्द्रिय जातें भई ऐसो राजस अहंकार तुमहींहौ देवता जाते भये ऐसो सात्त्विक अहङ्कार तुमहींहौ तथा जीवन कूं संसार जातेंहोइ ऐसी माया तुमहीं हौ ११ नाशवान् पदार्थन में जो शेषरहै अर्थात् जाको नाश नहीं होय ऐसे तुमहींहौ जैसे मृत्तिका सुवर्ण के बने जे घड़ा मुँदरी कड़ा इत्यादिक सब नाशवान्हैं मृत्तिका सुवर्ण को नाश नहीं होय है तैसे १२ सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इनकी जे वृत्ति हैं ते साक्षात् परब्रह्म जो तुमहौ तिनमें योगमाया करिकै कल्पितहैं १३ जाते कल्पितहै ताही कारण ते तीनों गुणनसूं आदि लेके जे पदार्थ हैं ते सब तुम्हारेही विषे कल्पितहैं तो कैसे प्रतीत होयहैं तहा कहे हैं कल्पना करिवे के समय प्रतीतमात्रही तुममें होयहै और तुम उन पदार्थन में कारणरूप करिकै रहोहौ और समय व्यवहार जिनमें नहीं भेद जिनमें नहीं ऐसे जब इन तत्त्वनको नाश होय जायहै तब तुमहीं शेष रहोहौ १४ यह जो गुणनको प्रवाहरूप संसारहै तामें सब के आत्मा जो तुमहौ तिनकी संसार ते न्यारी जो गति है ताय नहीं

जाने ऐसे जे अज्ञानी पुरुषहैं तिनको देहमें जो अभिमानहै तासूं करे जे कर्म्म हैं तिन करिके या संसार में जन्मे हैं १५ सुन्दर हाथ पाव नाक कान सब इन्द्रिय जामें बहुत दुर्लभ ऐसे देह कूं या संसारमें कोई एक पुण्य के फल सूं पाइके स्वार्थ में भूलि रह्यो ऐसो जो मैं हूं ताको जो अवस्था है सो ईश्वर तुम्हारी माया करिके वृथा होगई १६ मै ब्राह्मणहूं क्षत्रियहूं या प्रकार देहमें अभिमान और या देहके सम्बन्धी स्त्री पुत्रादिक मेरे हैं यह अभिमान ऐसे स्नेहके रस्सान ते यह जगत् तुमने बांधि राख्यो है १७ हम तुम्हारे पुत्रहैं तुम कहा हमारी स्तुति करोहो तहां वसुदेवजी कहे हैं तुम हमारे पुत्र नहींहो माया और मायाकी ओट देखनवारो पुरुष इनके ईश्वर साक्षात् तुमही पृथ्वी पै क्षत्रियनको जो भारहै ताके उद्धार के लिये नाश करिवेकूं प्रकट भये हो १८ ता कारण हे दीनबन्धु! शरण प्राप्त भयो जो पुरुषहै ताके संसारके भयके दूरिकरनवारे ऐसे जो तुम्हारे चरणारविन्द हैं तिनकी मैं शरण प्राप्त भयोहूं तुम तो बडे सुखी हो वृथा क्यों खेद करोहो ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहें तहां वसुदेवजी कहे हैं इतनी जो विषयकी लालसाहै ता करिके मरणधर्म्मा शरीर कूं आत्मा मान्यो और तुम परमेश्वर कूं पुत्र मान्यो १९ प्रथम जन्म में

भवान्सर्व्वमिदंजगत् १७ युवांननःसुतौसाक्षात्प्रधानपुरुषेश्वरौ ॥ भूभारक्षत्रक्षपणअवतीर्णौतथात्थह १८ तत्तेगतोऽस्म्यरणमद्यपदारविन्दमापन्नसंसृतिभयापहमार्त्तबन्धो ॥ एतावताऽलमलमिन्द्रियलालसेन मर्त्यात्मदृक्त्वयिपरेयदपत्यबुद्धिः १९ सूतीगृहेननुजगादभवानजोनौसंजज्ञइत्यनुयुगंनिजधर्म्मगुप्त्यै ॥ नानातनूर्गगनवद्विदधज्जहासिकोवेदभूम्नउरुगायविभूतिमायाम् २० ॥ श्रीशुकउवाच ॥ आकर्ण्येत्थंपितुर्वाक्यं भगवान्सात्वतर्षभः ॥ प्रत्याहप्रश्रयानम्रः प्रहसञ्छ्लक्ष्णयागिरा २१ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वचोवःसमवेतार्थं तातैतदुपमन्महे ॥ यन्नःपुत्रान्समुद्दिश्य तत्त्वग्रामउदाहृतः २२ अहंयूयमसावार्यइमेचद्वारकौकसः ॥ सर्व्वेऽप्येवंयदुश्रेष्ठविमृश्याःसचराचरम् २३ आत्माह्येकःस्वयंज्योतिर्नित्योऽन्योनिर्गुणोगुणैः ॥ आत्मसृष्टैस्तत्कृतेषु भूतेषुबहुधेयते २४ खंवायुर्ज्योतिरापोभूस्तत्कृतेषुयथाशयम् ॥ आविस्तिरोऽल्पभूर्य्येकोनानात्वंयात्यसावपि २५ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंभगवताराजन्

सुतपा पृश्नि भये फेरि कश्यप अदिति भये अब वसुदेव देवकी भये यह तीन जो हैं तिनके तीनवार अपने धर्म्मकी रक्षा करिबे के लिये अजन्मा आपके जन्म्यो हूं यह आपने सूतिकागृहमें हम सूं कहीरही तुम्हारे आपके जाने जन्म लियो है यह चतुर्भुज देवहै ऐसे जो कदाचित् श्रीकृष्ण कहें तहां वसुदेवजी कहे हैं आकाशकी तुल्य निर्म्मल जो तुमहो सो अनेक रूपन कूं धरण करोहो हे उरुगाय बहुत प्रकार गायवे में आवो! व्यापकहो तिनकी वैभवरूप जो मायाहै ताय कौन जाने है २० अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! यादवन में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र या प्रकार पिताको वचन सुनिके अधीनतापूर्व्वक नम्रहोयके हँसके मनोहर वाणीसूं बोलतभये २१ श्रीकृष्णभगवान् कहे हैं हे पिता! हम पुत्रनके ऊपर धरिके सब तत्त्व कहि दीनो यह जो तुम्हारो वचनहै ताय योग्य मानूंहूं २२ हे यादवन में श्रेष्ठ पिता वसुदेवजी! तुम और बड़े भय्या बलदेवजी तथा जे सब द्वारकावासी यादव हैं तिन और स्थावर जंगम जगत्है ताय ब्रह्मरूप जानो २३ यहां एक शङ्का है नाना विकारवान् हैं तिनकूं ब्रह्मरूपता कैसे बने ताको उत्तर दृष्टान्त सूं कहे हैं आत्मा एक स्वयंप्रकाश नित्य है सबते पृथक् है निर्गुणहै आपने रचे जे सत्त्वगुण रजोगुण तमो-

गुण तिन करिकै उत्पन्न जे देह हैं तिनमें बहुत प्रकार प्रतीत होइहै फेरि जैसी देह तामें तैसोही प्रतीत होइ है जैसे आकाश पवन ज्योति जल पृथ्वी ये पञ्चभूत घटपटादि पदार्थन में कहूं प्रकट कहूं अन्तर्द्धान कहूं थोड़े कहूं बहुत प्रतीत होइ हैं ऐसे एक आत्मा जो ब्रह्मस्वरूप है सो अनेकरूप करिकै प्रतीत होइ है २४। २५ अब श्रीशुकदेवजी कहै हैं हे राजन्परीक्षित्! या प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को कह्यो वचन सुनिकै हरि गयो है भेद भाव जिनको प्रसन्न मन होयके वसुदेवजी चुप होइगये २६ वसुदेवजी स्तुति करचुके ताके पीछे हे कौरवन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित्! सर्व्वदेवता रूप जो देवकी है सो पुत्र जे श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनने सान्दीपिनि गुरुके मरे पुत्र लाय दिये यह सुनिके आश्चर्य्य मानिके कंसने मारे जे पुत्र हैं तिनकी सुधि करिकै व्याकुल होयके नेत्रन में आंसू आय गये ऐसी कृपण की तुल्य होयकै बोलति भई २७। २८ देवकी कहै हैं हे राम! हे राम! हे अप्रमेयात्मन् अर्थात् नहीं प्रमाण करिवे में आवे है स्वरूप जिनको! हे कृष्ण! हे योगेश्वरनके ईश्वर! विश्वके रचनवारे ब्रह्मादिक है तिनके ईश्वर आदिपुरुष तुम हो तिनैं मैं जानूंहूं २६ कालने दूरि करे हैं धीरज जिनके शास्त्र मर्य्यादा जिनने त्यागि दीनी पृथ्वी पै भार जिनको भयो ऐसे जे

वसुदेवउदाहृतः ॥ श्रुत्वाविनष्टनानाधीस्तूर्ष्णींप्रीतमनाअभूत् २६ अथतत्रकुरुश्रेष्ठ देवकीसर्व्वदेवता ॥ ॥ श्रुत्वानीतंगुरोःपुत्रमात्मजाभ्यांसुविस्मिता
२७ कृष्णरामौसमाश्राव्य पुत्रान्कंसविहिंसितान् ॥ स्मरन्तीकृपणंप्राह वैक्लव्यादश्रुलोचना २८ ॥ देवक्युवाच ॥ रामरामाप्रमेयात्मन् कृष्णयोगे
श्वरेश्वर ॥ वेदाहंवांविश्वसृजामीश्वरावादिपूरुषौ २६ कालविध्वस्तसत्त्वानां राज्ञामुच्छास्त्रवर्तिनाम् ॥ भूमेर्भारायमाणानामवतीर्णौकिलाद्यमे ३०
यस्यांशांशांशभागेन विश्वोत्पत्तिलयोदयाः ॥ भवन्तिकिलविश्वात्मंस्तंत्वाद्याहंगतिंगता ३१ चिरान्मृतसुतादाने गुरुणाकिलचोदितौ ॥ आनि
न्यथुःपितृस्थानाद्गुरवेगुरुदक्षिणाम् ३२ तथामेकुरुतंकामं युवांयोगेश्वरेश्वरौ ॥ भोजराजहतान्पुत्रान् कामयेद्रष्टुमाहृतान् ॥ ३३ ॥ ऋषिरुवाच ॥
एवंसंचोदितौमात्रा रामःकृष्णश्चभारत ॥ सुतलंसंविविशतुर्योगमायामुपाश्रितौ ३४ तस्मिन्प्रविष्टावुपलभ्यदैत्यराड् विश्वात्मदैवंसुतरांतथा
त्मनः ॥ तद्दर्शनाह्लादपरिप्लुताशयः सद्यःसमुत्थायननामसान्वयः ३५ तयोःसमानीयवरासनंमुदा निविष्टयोस्तत्रमहात्मनोस्तयोः ॥ दधारपादाववन

राजा हैं तिनके नाश करिवे के लिये मेरे आयकै प्रकट भये हौ ३० हे सब के कारण! हे विश्व के आत्मा! तुम्हारो अंश पुरुष है ताको अंश माया ता मायाके अंश सत्त्व रज तम इन तीनों गुणन के परमाणुमात्र लेश करिकै या विश्वके उत्पत्ति पालन प्रलय होत हैं ऐसे जे तुमहौ तिनकी मैं शरण प्राप्त भयो हूं ३१ बहुत दिनन के मरे पुत्रन के लायवे कू गुरु ने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे तुम यमलोक ते गुरुके मरे पुत्र लायके दक्षिणा में देत भये ताहीप्रकार हे योगेश्वरनके ईश्वर! कंसने मारे जे मेरे पुत्रहैं तिनैं मैं देख्यो चाहूंहूं तुम लायके मेरे मनोरथ कूं पूरो करो ३२। ३३ अब ऋषीश्वर कहै हैं हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित्! माता देवकी ने या प्रकार जिनते कही ऐसे जे राम कृष्ण हैं ते योगमायाको आश्रय लेके सुतललोक में प्रवेश करत भये ३४ तहां दैत्य न को राजा जो बलि है सो विश्वके आत्मदेवता और अपने इष्टदेव ऐसे जे कृष्ण बलदेव हैं तिनैं सुतललोकमें प्रविष्टहुये देखिकै उनके दर्शन सूं आनन्द होयके परिपूर्ण है अन्तःकरण जाको

ऐसो परिवारसहित शीघ्र उठिके नमस्कार करत भयो ३५ राजा बलि नड़े आनन्दपूर्वक सुन्दर आसन बिछावत भयो ता आसनपै बैठे जे महात्मा श्रीकृष्ण बलदेव हैं तिनके चरणारविन्द को धोवन जल है ताय कुटुम्बसहित अपने माथे पै चढावत भयो जिन चरणारविंद को धोवन जल गङ्गा ब्रह्मासूं आदिलेके समस्त जगत्कूं पवित्र करे है ३६ राजा बलि बहुत मोलके वस्त्र आभूषण चन्दन अतर अरगजा पान दीपक अमृतकी तुल्य स्वादिष्ट भोजनादिक हैं तिन करिकै और पूजन की जे वस्तु हैं तिनकरिकै तथा अपनो गोत्र द्रव्य देहकू अर्पण करिकै बड़े वैभव सूं श्रीकृष्ण बलदेव को पूजन करत भयो ३७ हे राजन् परीक्षित्! बलिराजा भगवान् के चरणारविन्दकूं वारंवार मस्तक पै धरिकै प्रेम करिकै आर्द्रबुद्धि है ता करिकै आनन्द के आंसू हैं नेत्रन में जिनके देह में जिनके रोमाञ्च होय आये ऐसे गद्गद अक्षर बोलत भये ३८ अब राजा बलि कहे हैं समस्त विश्व जिनने फणके ऊपर धरि राख्यो ऐसे अनन्त शेषरूप तुम हो तिनकूं प्रणाम है और सब जगत् के

निज्यतज्जलं सवृन्दआब्रह्मपुनद्यदम्बुह ३६ समर्हयामाससतौविभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः॥ताम्बूलदीपाऽमृतभक्षणादिभिःस्वगोत्रवित्तात्मस मर्प्पणेनच ३७ सइन्द्रसेनोभगवत्पदाम्बुजं बिभ्रन्मुहुःप्रेमविभिन्नयाधिया॥ उवाचहानन्दजलाकुलेक्षणःप्रहृष्टरोमानृपगद्गदाक्षरम् ३८॥ बलिरुवाच॥ नमोऽनन्तायबृहते नमःकृष्णायवेधसे॥ साङ्ख्ययोगवितानाय ब्रह्मणेपरमात्मने ३९ दर्शनंवांहिभूतानांदुष्प्रापञ्चाप्यदुर्लभम्॥ रजस्तमःस्वभावानां यन्नः प्राप्तौयदृच्छया ४० दैत्यदानवगन्धर्वाःसिद्धविद्याध्रचारणाः॥ यक्षरक्षःपिशाचाश्च भूतप्रमथनायकाः ४१ विशुद्धसत्त्वधाम्न्यद्धा त्वयिशास्त्रशरीरि णि॥ नित्यंनिबद्धवैरास्तेवयञ्चान्येचतादृशाः ४२ केचनोद्बद्धवैरेण भक्त्याकेचनकामतः॥ नतथासत्त्वसंरब्धाःसन्निकृष्टाःसुरादयः ४३ इदमित्थमिति प्रायस्तवयोगेश्वरेश्वर॥ नविन्दन्त्यपियोगेशायोगमायांकुतोवयम् ४४ तन्नःप्रसीदनिरपेक्षविमृग्ययुष्मत्पादारविन्दधिषणान्यगृहान्धकूपात्॥ निष्क्र म्यविश्वशरणाङ्घ्र्युपलब्धवृत्तिःशान्तोयथैकउतसर्वसखैश्चरामि ४५ शाध्यस्मानीशितव्येश निष्पापान्कुरुनःप्रभो॥ पुमान्यच्छ्रद्धयातिष्ठंश्चोदना

रचनवारे कृष्ण तुमहो तिनकूं नमस्कार है साङ्ख्यशास्त्र योगशास्त्र इनके विस्तार करनवारे ब्रह्म परमात्मा जो तुमहो तिनकूं प्रणाम है ३९ योगीश्वरन कूं भी तुम्हारो दर्शन दुर्लभ है सो हमकूं भयो यह आश्चर्य नहीं है यद्यपि प्राणीनकूं तुम्हारो दर्शन दुर्लभ है तथापि तुम्हारी कृपा करिकै काहू काहू कूं सुलभ होय जाय है याते रजोगुणी तमोगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे हम असुरन कूं अनायासपूर्वक आपने दर्शन दियो ४० बड़ो आश्चर्य है शत्रु हमहैं ते सत्त्वगुणी भक्तन ते भी बडभागी हैं यह कहे हैं—दैत्य दानव गन्धर्व सिद्ध विद्याधर चारण यक्ष राक्षस पिशाच भूत प्रम- थनमें मुख्य हैं ते ४१ शास्त्रके रक्षा करनवारे सत्त्वगुणी है स्वभाव जिनके ऐसे जे तुमहौ तिनसू नित्यशत्रुता हमने करी तथा औरनने भी वैर बांधि राख्यो है ४२ कोई एक शिशुपालादिक है ते वैर करिकै जो भक्ति है तासू तुमकूं जैसे पायगये और गोपीन ते आदिलेके कामभक्ति करिकै जैसे तुमकूं पायगये तैसे सत्त्वगुणी देवता तुमकूं न प्राप्तभये ४३ हे योगेश्वरन के ईश्वर! या प्रकार ऐसी जो तुम्हारी योगमाया है ताय योगेश्वरहू नहीं जाने है तो हम असुर कहा जानें ४४ ताते हमपै आप प्रसन्न होउ जैसे कोई बातकी जिनके इच्छा नहीं ऐसे पुरुष जाकूं ढूंढे ऐसो जो तुम्हारो चरणारविन्द है ताको

आश्रय लैके चरणारविन्दते न्यारो जो घररूप कूप है ताते निकसि कै विश्वको रक्षा करनवारे जे वृक्ष हैं तिनकी जरन में आपही ते गिरे जे फल फूल हैं तिनको भोजनकरूं ऐसो मैं शान्त होयकै अकेलो विचरूं अथवा सबके सहाय करनवारे जे महात्मा पुरुष हैं तिनके संग विचरूं ४५ थोड़ो जिनको पुण्य ऐसे पुरुषनकूं एतादृश भाव कैसे होय ऐसे जो कदाचित् भगवान् कहैं तहा राजा वलि कहे हैं जैसे एतादृशभाव होय तैसे हमकूं शिक्षा देवे कूं योग्यहौ हे सब जीवनके ईश ! हे प्रभो ! हमकूं शिक्षा देउ और हमारे पापनकूं दूरि करो जो पुरुष श्रद्धा करिकै तुम्हारी आज्ञा कूं करै वह विधि निषेधतें मुक्त होयजायहै ४६ अब भगवान् श्रीकृष्ण कहे हैं यह जो स्वायम्भुव मन्वन्तरहै तामें मरीचि प्रजापतिके ऊर्णा स्त्री में छः पुत्र होत भये एक समय देवतारूप छैओ पुत्रहैं ते अपनी कन्या सरस्वतीके साथ मैथुनसूं रमण करनेमें उद्यत जो ब्रह्माहै ताय देखिके हँसतभये ४७ ता पापकर्मसूं असुरयोनिकूं पावतभये ताही समय हिरण्यकशिपु के जन्म लेतभये तेई छैओ हिरण्यकशिपुके यहा ते योगमायाके प्रेरे–हे राजन्परीक्षित् ! देवकी के उदरमें जन्म लेत भये तेई कंसने मारे सो अब तुम्हारे पासहैं इनें देवकी अपने पुत्र मानिके शोच

याविमुच्यते ४६ श्रीभगवानुवाच ॥ आसन्मरीचेःषट्पुत्राऊर्णायांप्रथमेऽन्तरे ॥ देवाःकंजहसुर्वीक्ष्यसुतांयभितुमुद्यतम् ४७ तेनासुरीमगन्योनिमधुना ऽवद्यकर्म्मणा ॥ हिरण्यकशिपोर्जाता नीतास्तेयोगमायया ४८ देवक्याउदरेजाताराजन्कंसविहिंसिताः ॥ सातान्शोचत्यात्मजान्स्वांस्तइमेऽध्यास तेऽन्तिके ४९ इतएतान्प्रणेष्यामोमातृशोकापनुत्तये ॥ ततःशापाद्विनिर्मुक्तालोकंयास्यन्तिविज्वराः ५० स्मरोद्गीथःपरिष्वङ्गःपतङ्गःक्षुद्रभृद्घृणी ॥ षडिमे मत्प्रसादेन पुनर्यास्यन्तिमद्गतिम् ५१ इत्युक्त्वातान्समादायइन्द्रसेनेनपूजितौ ॥ पुनर्द्वारवतीमेत्य मातुःपुत्रानयच्छताम् ५२ तान्दृष्ट्वाबालकान्देवी पुत्रस्नेहस्नुतस्तनी ॥ परिष्वज्याङ्कमारोप्यमूर्ध्न्यजिघ्रदभीक्ष्णशः ५३ अपाययत्स्तनंप्रीता सुतस्पर्शपरिस्नुता ॥ मोहितामाययाविष्णोर्ययासृष्टिःप्र वर्त्तते ५४ पीत्वाऽमृतंपयस्तस्याः पीतशेषंगदाभृतः ॥ नारायणाङ्गसंस्पर्शप्रतिलब्धात्मदर्शनाः ५५ तेनमस्कृत्यगोविन्दं देवकींपितरंबलम् ॥ मिषतांस

करे है ४८ । ४९ माता देवकी के शोक दूरि करिवे के निमित्त यहां ते इन छैओ पुत्रनकूं ले जायँगे ता पीछे शापते छूटिके खेदरहित होयके देवलोक में जायँगे ५० स्मर उद्गीथ परिष्वङ्ग पतंग क्षुद्रभृत् घृणी ये छः पुत्र हैं ते मेरे प्रसाद करिकै मुक्त होजायँगे ५१ ऐसे जब कही तब राजा बलिने पूजन जिनको कर्यो ऐसे श्रीकृष्ण बलदेव तिन पुत्रन कूं संग लैके द्वारकापुरी में आयके माता देवकी कूं पुत्र देतभये ५२ पुत्रन में जो स्नेह ता करिकै स्तननमें दुग्ध चुवै ऐसी देवकी तिन बालकन कूं देखिकै गोद में बैठायके छातीते लगायकै बेर बेर माथो सूंघति भई ५३ सृष्टिकी उत्पन्न करनवारी जो विष्णु भगवान् की माया है तासूं मोहित और पुत्रन को जो छाती लगायबो तामें मग्न ऐसी जो देवकी है सो प्रसन्न होयके पुत्रन कूं स्तन प्यावति भई ५४ गदा के धारण करनवारे जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पीवेतें बच्यो अर्थात् भगवान् को प्रसाद ऐसो जो वह अमृतरूप देवकी को दुग्धहै ताय पान करिकै और नारायण श्रीकृष्णचन्द्रके अंगके स्पर्श करेतें हम देवता हैं यह ज्ञान जिनकूं भयो ५५ ऐसे जे बालक हैं ते गोविन्द श्रीकृष्णचन्द्र कूं और देवकी तथा पिता वसुदेवजी कूं और बलदेवजी कूं नमस्कार करिकै सब प्राणीन के देखत देवतान को

धाम जो देवलोक है तामें जात भये ५६ हे राजन्परीक्षित् ! प्रकाशमान जो देवकी है सो मरे पुत्रन को आयवो फेरि जायवो है ताय देखिकै विस्मित होयके श्रीकृष्णकी रची माया मानति भई ५७ हे भरतवंशोत्पन्न राजा परीक्षित् ! अनन्तहै पराक्रम जिनको ऐसे जो परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके पराक्रम को अन्त नहीं जिनकेया प्रकारके अद्भुत चरित्र हैं ५८ अब श्रीसूत जी कहे हैं हे ऋषीश्वरो ! व्यासपुत्र जे शुकदेवजी हैं तिननें वर्णन करे और समस्त जगत्के पापनके दूरि करनवारे भक्तन के कानन कूं आनन्ददायक ऐसी अमृतरूपी कीर्ति जिनकी ऐसे मुरारि श्रीकृष्णभगवान् के चरित्रनकूं भगवान् में चित्त लगायके जो पुरुष श्रवणकरै अथवा श्रवण करावै वह पुरुष कालको और मायाको जामें जोर नहीं ऐसो जो भगवान् को धामहै ताय पावै है ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमृताग्रजानयनंनामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

(षडशीतितमेदम्भात्सुभद्रामर्ज्जुनोऽहरत् ॥ गत्वाचमिथिलांकृष्णो नृपविप्रावनन्दयत् १ पित्रोःस्वज्ञानमादिश्य सुभद्रांफाल्गुनायच ॥ जगाममिथिलांकृष्णःस्वभक्तप्रियकृत्ततः २ छियासीवें

र्मभूतानांययुर्धामदिवौकसाम् ५६ तंदृष्ट्वादेवकीदेवीमृतागमननिर्गमम् ॥ मेनेसुविस्मितामायां कृष्णस्यरचितांनृप ५७ एवंविधान्यद्भुतानि कृष्णस्यपरमात्मनः ॥ वीर्य्याण्यनन्तवीर्य्यस्यसन्त्यनन्तानिभारत ५८ सूतउवाच ॥ यइदमनुशृणोतिश्रावयेद्वामुरारेश्चरितममृतकीर्त्तेर्वर्णितंव्यासपुत्रैः ॥ जगदघभिदलंतद्भक्तसत्कर्णपूरं भगवतिकृतचित्तोयातितत्क्षेमधाम ५९ ॥ इतिश्रीमद्भागवतेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेमृताग्रजानयनन्नामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५

राजोवाच ॥ ब्रह्मन्वेदितुमिच्छामः स्वसारंरामकृष्णयोः ॥ यथोपयेमेविजयोयाममासीत्पितामही १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ अर्ज्जुनस्तीर्थयात्रायां पर्य्यटन्नवनीप्रभुः ॥ गतःप्रभासमशृणोन्मातुलेयींसआत्मनः २ दुर्य्योधनायरामस्तां दास्यतीतिनचापरे ॥ तल्लिप्सुःसयतिर्भूत्वा त्रिदण्डीद्वारकामगात् ३ तत्रवैवार्षिकान्मासानवात्सीत्स्वार्थसाधकः ॥ पौरैःसभाजितोऽभीक्ष्णं रामेणाजानताचसः ४ एकदागृहमानीय आतिथ्येननिमन्त्र्यतम् ॥ श्रद्धयोपहृतं

अध्याय में अर्जुन दम्भ सूं सुभद्रा को हरतेभये और कृष्णजी मिथिलापुरीमों जाकर राजा और ब्राह्मण को आनन्दित करतेभये १ अपने भक्त के प्रिय करनेवाले कृष्णजी पिता और माताको अपना ज्ञान देकर और सुभद्राको अर्जुनको देकर फिर मिथिलापुरीको जातेभये २) अब राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् शुकदेवजी ! रामकृष्ण की बहिनि जो सुभद्राही ताय अर्जुन जैसे व्याहतभये जो सुभद्रा हमारी दादी होतिभई यह हम जाननेकी इच्छाकरे हैं १ यह प्रश्न सुनिकै श्रीशुकदेवजी कहेहैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय समर्थ अर्ज्जुन है सो तीर्थयात्रा करिवे कूं पृथ्वी में फिरत प्रभास तीर्थ में जातभयो तहां जायके अपने मामा की पुत्री सुभद्रा है ताय बलदेवजी दुर्य्योधन कूं विवाह देंगे और वसुदेवादिक नहीं देंगे यह बात सुनिकै ता सुभद्रा के लेवे की है इच्छा जाके ऐसो अर्ज्जुन संन्यासी बनिकै तीनदण्ड धारण करिकै द्वारकापुरीमें आवतभयो २। ३ अपने कार्य्य कूं सिद्ध कर्यो चाहै ऐसो अर्ज्जुन चार महीना वर्षाके द्वारकापुरी में वितावतभयो द्वारकावासी मनुष्यन ने आयके वारवार अर्ज्जुन को सन्मान कर्यो है और संन्यासी बनिके अर्ज्जुन आयो है यह न जाने ऐसे बलदेवजी ने भी सत्कार कर्यो ४ एक दिन संन्यासी है या

भावसूं अर्ज्जुन को निमन्त्रण करिके घरमें बुलाय कै श्रद्धापूर्व्वक बलदेवजी ने जो भोजन परोस्यो ताय अर्ज्जुन भोजन करतभयो ५ द्वारका में शूरवीरन के मनकूं हरे ऐसी सुन्दर कन्याहै ताय अर्ज्जुन देखतभयो प्रसन्नता करिके प्रफुल्लित हैं नेत्र जिनके ऐसे अर्ज्जुन रति के अभिप्राय करिके चलायमान जो मन है ताय सुभद्रा में लगावतभये ६ स्त्रीन के हृदय में वसिजाय ऐसे अर्ज्जुन कूं देखिके हासी सहित लाजभरे कटाक्षन कूं करे और अर्ज्जुन मेंही लागे हैं हृदय और नेत्र जाके ऐसी सुभद्रा भी चाहना करति भई ७ बड़ो जो बलवान् कामदेवहै ता करिके चलायमानहै चित्त जाको ऐसो अर्ज्जुन केवल सुभद्रा को ध्यान करत हरण करिवे को जो अवसर है ताय देखत बलदेवजी ने जो सन्मान कियो है ताको सुख नहीं पावतभयो ८ बड़ी जो देवी की यात्राहै तामें रथमें बैठिकै निकसी ऐसी सुभद्राकूं माता पिता जो देवकी व वसुदेव हैं तिनकी और कृष्णजी की सम्मातिसूं महारथी अर्ज्जुन हरतभयो ९ रथ में बैठिके धनुष् कूं लेके अर्ज्जुन है सो चारयो ओरते रोंके जो प्यादे हैं तिनें भजायके उनके पुकारतही जैसे सिंह अपनेभागकूं लेजायहै ऐसे लेजातभयो १० अर्ज्जुन सुभद्राकूं लेके गयो यह बात श्रवण करिके जैसे पूर्णमासीकूं समुद्र उमड़े तैसे क्रोध जिनके उमड़ि

भैक्ष्यं बलेनवुभुजे किल ५ सोऽपश्यत्तत्रमहतीं कन्यावीरमनोहराम् ॥ प्रीत्युत्फुल्लेक्षणस्तस्यां भावक्षुब्धंमनोदधे ६ साऽपितंचकमेवीक्ष्य नारीणांहृदयंगमम् ॥ हसन्तीव्रीडितापाङ्गीतन्न्यस्तहृदयेक्षणा ७ तांपरंसमनुध्यायन्नन्तरंप्रेप्सुरर्ज्जुनः ॥ नलेभेसंभ्रमच्चित्तः कामेनातिबलीयसा ८ महत्यांदेवयात्रायां रथस्थांदुर्गनिर्गताम् ॥ जहारानुमतःपित्रोः कृष्णस्यचमहारथः ९ रथस्थोधनुरादाय शूरांश्चारुन्धतोभटान् ॥ विद्राव्यक्रोशतांस्वानां स्वभागंमृगराडिव १० तच्छ्रुत्वाक्षुभितोरामः पर्व्वणीवमहार्णवः ॥ गृहीतपादःकृष्णेन सुहृद्भिश्चान्वशाम्यत ११ प्राहिणोत्पारिवर्हाणि वरवध्वोर्मुदाबलः ॥ महाधनोपस्करेभरथाश्वनरयोषितः १२ श्रीशुकउवाच ॥ कृष्णस्यासीद्द्विजश्रेष्ठःश्रुतदेवइतिश्रुतः ॥ कृष्णैकभक्त्यापूर्णार्थः शान्तःकविरलम्पटः १३ सउवासविदेहेषु मिथिलायांगृहाश्रमी ॥ अनीहयागताहार्य्यनिर्व्वर्त्तितनिजक्रियः १४ यात्रामात्रंत्वहरहर्दैवादुपनमत्युत ॥ नाधिकंतावतातुष्टः क्रियाश्चक्रेयथोचिताः १५ तथातद्राष्ट्रपालोऽङ्गबहुलाश्वइतिश्रुतः ॥ मैथिलोनिरहंमानउभावप्यच्युतप्रियौ १६ तयोःप्रसन्नोभगवान् दारुकेणाऽऽहृतंरथम् ॥ आरुह्यसाकंमुनिभि

आयो ऐसे बलदेवजीकूं सुहृदनसहित श्रीकृष्णचन्द्रने चरण पकरिके शान्तकरे ११ बलदेवजी बड़े आनन्दसूं बहिनि बहनोई हैं तिनको दहेज पीछेतें भिजवावत भये बहुत सो धन और वस्त्र वासन इत्यादिक सामग्री हाथी रथ घोड़ा पुरुष स्त्री इनसबकूं भिजवावतभये १२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं श्रीकृष्णकी जो एकभक्ति ताकरिकै सम्पूर्णहै मनोरथ जाको शान्तस्वभाव विवेकी विषयनमें आसक्त नहीं ऐसो श्रुतदेव या नाम करिकै प्रसिद्ध जो ब्राह्मणहै सो श्रीकृष्णचन्द्र को भक्त होतभयो १३ विना उपाय करे मिलै जो भोजन ताही सों निर्वाह करिके अपने कर्म्मनकूं करै ऐसो गृहस्थी ब्राह्मणहै सो विदेह देशमें जो मिथिलापुरी है तामें वास करतभयो १४ जितनेमें शरीरको निर्वाह होइ उतनो भोजन प्रतिदिन अनायासपूर्व्वक आयोकरै और अधिक नहीं परञ्च उतनेहीमें सन्तोष करिके यथायोग्य सन्ध्योपासनादिक कर्म्मनकू करोकरै १५ हे राजन् परीक्षित् ! जैसो श्रुतदेव ब्राह्मण भक्तहो तैसोही मिथिलादेशको पालन करनवारो जनकके वंशमें भयो निरभिमान ऐसो बहुलाश्व

नाम करिके विख्यात राजा है सो श्रीकृष्ण को भक्त होतभयो ब्राह्मण और राजा ये दोनों श्रीकृष्णके प्यारे हैं १६ तिन दोनों भक्तन के ऊपर प्रसन्न भये ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो रथवान्ने लायके ठाढो करयो जो रथहै तामें बैठिके मुनिनकूं संग लेके विदेह देशनकूं जातभये १७ कौन कौन मुनि संग लिये तिनको नाम लेइ हैं नारदजी वामदेव अत्रिऋषि वेदव्यासजी परशुरामजी शुकदेवजी कहे हैं मैं भी संग गयों और बृहस्पति कण्व मैत्रेय च्यवनऋषिकूं आदि लेके और भी संग गये १८ हे राजन् परीक्षित्! मार्गमें ग्रहनके सो तेज जिनको ऐसे मुनिनकूं संग लेके तहां तहां आये जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके लिये पुरवासीजन हाथनमें अर्घलेके स्तुति करतभये जैसे उदय भये सूर्यकूं अर्घ देइहैं तैसे १९ आनर्तदेश धन्व कुरु जांगल कङ्क मत्स्य पाञ्चाल कुन्ति मधु केकय कोसल आर्ण इन देशनके तथा और देशनके वासी जो स्त्री पुरुषहैं ते उदार हँसनि युक्त स्नेहभरी चितवनि जामें ऐसो श्रीकृष्णचन्द्रको मुखारविन्दहै ताय दृष्टि भरिके देखतभये २० अपनी दृष्टि करेते दूरिभयो है अज्ञान जिनको ऐसे पुरुषनकी दृष्टि कूं कल्याण देत और तत्त्वज्ञान देत दिशान के अन्तपर्यन्त फैलिरहे पापनकूं नाशकरत देवता और मनुष्यन ने गायो जो

विदेहान्प्रययौप्रभुः १७ नारदोवामदेवोऽत्रिःकृष्णोरामोऽसितोऽरुणिः ॥ अहंबृहस्पतिःकण्वोमैत्रेयश्च्यवनादयः १८ तत्रतत्रतमायान्तं पौराजानपदानृप॥ उपतस्थुःसार्घहस्ताग्रहैःसूर्यमिवोदितम् १९ आनर्त्तधन्वकुरुजाङ्गलकङ्कमत्स्यपाञ्चालकुन्तिमधुकेकयकोसलार्णाः ॥ अन्येचतन्मुखसरोजमुदारहासस्निग्धेक्षणंनृपपपुर्दृशिभिर्नृनार्यः २० तेभ्यःस्ववीक्षणविनष्टतमिस्रदृग्भ्यःक्षेमंत्रिलोकगुरुरर्थदृशंचयच्छन् ॥ शृण्वन्दिगन्तधवलंस्वयशोऽशुभघ्नंगीतंसुरैर्नृभिरगाच्छनकैर्विदेहान् २१ तेऽच्युतंप्राप्तमाकर्ण्यपौराजानपदानृप ॥ अभीयुर्मुदितास्तस्मैगृहीतार्हणपाणयः २२ दृष्ट्वातउत्तमश्लोकं प्रीत्युत्फुल्लाननाशयाः ॥ कैर्धृताञ्जलिभिर्नेमुःश्रुतपूर्वांस्तथामुनीन् २३ स्वानुग्रहायसंप्राप्तंमन्वानौतंजगद्गुरुम् ॥ मैथिलःश्रुतदेवश्चपादयोःपेततुःप्रभोः २४ न्यमन्त्रयेतांदाशार्हमातिथ्येनसहद्विजैः ॥ मैथिलःश्रुतदेवश्च युगपत्संहताञ्जली २५ भगवांस्तदभिप्रेत्य द्वयोःप्रियचिकीर्षया ॥ उभयोराविशद्गेहमुभाभ्यांतदलक्षितः २६ श्रोतुमप्यसतांदूराज्जनकःस्वगृहागतान् ॥ आनीतेष्वासनाग्र्येषु सुखासीनान्महामनाः २७ प्रवृद्धभक्त्याउद्धर्षहृदयास्राविलेक्षणः ॥ न

अपनो यशहै ताय श्रवण करत त्रिलोकीके गुरु श्रीकृष्णचन्द्र हौले हौले विदेहादिक देशनको जानभये २१ हे राजन् परीक्षित्! ते सम्पूर्ण पुरवासी देशवासी जनहैं ते श्रीकृष्णचन्द्रकू आये सुनिके हर्षित होयके पूजाके योग्य सामग्रीनकूं हाथमें लेके सम्मुख आवतभये २२ उत्तमहै यश जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को दर्शन करिके प्रीति सूं प्रफुल्लित भये हैं मुख और अन्तःकरण, जिनकें ऐसे पुरुष हाथनकूं जोरिके शिरसूं लगायके नमस्कार करतभये तैसेही पहिले सुनि राखे जे मुनि हैं तिनें प्रणाम करतभये २३ जगत् के गुरु जो श्रीकृष्णचन्द्रहैं ते हमारे अनुग्रह करिबे के लिये आये हैं या प्रकार मानिके मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ब्राह्मण ये दोनों श्रीकृष्णके चरणनमें परतभये २४ मिथिलापुरी को राजा बहुलाश्व और श्रुतदेव ये दोनों एक संग हाथ जोरिके ब्राह्मणनसहित जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको आतिथ्यभाव करिके निमन्त्रण करतभये २५ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रदोनोंन को निमन्त्रण मानिके दोनोंन के प्रिय करिबेके लिये दो रूप धरिके

दोनोंन के घर जातभये तासमय राजा और ब्राह्मण यह नहीं जाने हैं कि ये दो रूप करे हैं २६ बडो है मन जाको बडी भक्ति करिके हृदयमें हर्ष जाके भयो नेत्रनमें आंसू जाके आयगये ऐसो जनकवंशी राजा बहुलाश्व हैं सो असत्य पुरुषन के सुनिवे में भी न आवें ऐसे भगवान् अपने घरआये लायके बिछाये जो श्रेष्ठ आसनहैं तिनपै सुख तें बैठ ऐसे जे मुनिहैं तिनें नमस्कार करिके तिनके चरणन कूं धोइके लोकन के पवित्र करनवारो जो चरणन को जलहै २७। २८ ताय कुटुम्ब सहित राजा बहुलाश्व अपने माथे पै चढ़ायके ईश्वर और ईश्वरकी बराबरि जो ब्राह्मणहैं तिनको गन्ध पुष्प माला वस्त्र आभूषण धूप दीप अर्घ गौ बैल इन सामग्रीन सूं पूजन करतभये २९ और मधुरवाणीन सूं प्रसन्न करत गोदमें धरे जो श्रीकृष्ण के चरण हैं तिनें हौले हौले दाबत आनन्द करिके अन्नसूं तृप्तभये जे ब्राह्मणहैं तिनसूं यह कहतभये ३० अब राजा बहुलाश्व कहे हैं हे समर्थ! सब प्राणीनके आत्मा साक्षी स्वयंप्रकाश तुमहीं हौ याही कारण तें तुम्हारे चरणारविन्दको स्मरण करूं जो मैं हूं ताकूं तुमने दर्शन दियो है ३१ जो मोकूं एकान्ती भक्त प्यारो है ऐसो भय्याके सम्बन्धते बलदेवजी प्यारे नहीं हैं स्त्री के सम्बन्धते लक्ष्मी प्रिय नहीं हैं पुत्र के सम्बन्ध ते ब्रह्मा

त्वातदङ्घ्रीन्प्रक्षाल्य तदपोलोकपावनीः २८ सकुटुम्बोवहन्मूर्ध्ना पूजयाञ्चक्रईश्वरान् ॥ गन्धमाल्याम्बराकल्पधूपदीपार्घगोवृषैः २९ वाचामधुरयाप्रीण न्निदमाहान्नतर्पितान् ॥ पादावङ्कगतौविष्णोःसंस्पृशञ्छनकैर्मुदा ३० राजोवाच ॥ भवान्हिसर्वभूतानामात्मासाक्षीस्वदृग्विभोः ॥ अथनस्त्वत्पदा म्भोजं स्मरतांदर्शनंगतः ३१ स्ववचस्तदृतंकर्तुमस्मद्दृग्गोचरोभवान् ॥ यदात्थैकान्तभक्तान्मेनानन्तःश्रीरजःप्रियः ३२ कोनुत्वच्चरणाम्भोजमेवंविद्विसृ जेत्पुमान् ॥ निष्किञ्चनानांशान्तानांमुनीनांयस्त्वमात्मदः ३३ योऽवतीर्ययदोर्वंशेनृणांसंसरतामिह ॥ यशोवितेनेतच्छान्त्यै त्रैलोक्यवृजिनापहम् ३४ नमस्तुभ्यंभगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ॥ नारायणायऋषये सुशान्तंतपईयुषे ३५ दिनानिकतिचिद्भूमन् गृहान्नोनिवसद्विजैः ॥ समेतःपादरजसा पुनी हीदंनिमेःकुलम् ३६ इत्युपामन्त्रितोराज्ञा भगवाँल्लोकभावनः ॥ उवासकुर्वन्कल्याणं मिथिलानरयोषिताम् ३७ श्रुतदेवोऽच्युतंप्राप्तं स्वगृहाञ्जन

प्यारे नहीं हैं यह आपको कह्यो जो वचनहै ताय सत्य करिवेके लिये आपने हमकूं दर्शन दियोहै ३२ भक्त तुम्हें प्रिय हैं या प्रकार जाने है ऐसो कौन पुरुष तुम्हारे चरणारविन्दकू त्यागेगो निष्किञ्चन अर्थात् कछु जिनके पास नहीं शान्त जिनको स्वभाव ऐसे, जे मननशील मुनिहैं तिनकूं तुम अपनो पद दे चुके हौ ३३ ऐसे तुम यदुवंश में अवतार लेके संसार में भ्रमे जे प्राणी हैं तिनके ससार छुड़ायवे के लिये त्रिलोकी को जो दुःख है ताय दूरिकरै ऐसे यशको विस्तार करत भये ३४ नहीं नाश होय ज्ञान जिनको अत्यन्त शान्त तपकूं करो ऐसे नारायण ऋषि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जो तुम हौ तिनकूं नमस्कार है ३५ हे व्यापक! सर्वत्र जो तुम हौ सो सब ब्राह्मणन सहित कछु दिन हमारे घरनमें बसिकै अपने चरणकमल की रज सूं यह निमि राजा को कुल है ताय पवित्र करो ३६ राजा बहुलाश्व ने या प्रकार जिनते कही ऐसे लोकन के पवित्र करनवारे जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो मिथिलापुरी के पुरुष स्त्रीनके कल्याण करतेहुये कितने दिन पर्यन्त वास करत भये ३७ जैसे जनकवंशोत्पन्न बहुलाश्व राजा कूं प्राप्त भये ऐसे श्रुतदेव ब्राह्मण भी प्राप्तहुये जो श्रीकृष्णचन्द्र और मुनि हैं तिने नमस्कार करिके अत्यन्त हर्षित होय

के वस्त्रकूं घुमावत नाचतभयो ३८ लाय के बिछाये जे तृण पट्टा कुशा के आसन हैं तिनपे मुनिगन सहित श्रीकृष्णचन्द्रकूं बैठाय के भले आये ऐसे बड़ाई करिके स्त्रीसहित श्रुतदेव ब्राह्मण है
सो आनन्द सूं उनके चरण धोवत भयो ३९ भयो है रूपे जाके और प्राप्त करे हैं सम्पूर्ण मनोरथ जाने ऐसो बड़भागी जो श्रुतदेव ब्राह्मण है सो चरणारविन्द के धोवन जल सूं घरवारसहित
समस्तकुल कूं पवित्र करत भयो ४० आंबे सूं आदि लेके फल हैं तिन करिके और चन्दनका अमृत की तुल्य मधुर जल है तिन करिके तथा सुगन्धयुक्त मृत्तिका तुलसी कुश कमल और जो
कोई अनायास पूजा की सामग्री है तिन करिके और सत्त्वगुण कूं बढ़ावे ऐसे शुद्ध अन्न करिके श्रुतदेव ब्राह्मण भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र को पूजन करिके आराधन करत भयो ४१ सब तीर्थनकूं
पवित्र करे हैं चरणरेणु जिनकी और श्रीकृष्ण के रहिबे को स्थान ऐसे जे ब्राह्मण हैं तिनको संग मो [illegible] अन्धकूप में परयो जो मैं हूं ताकूं यह संगम कौन कारण ते भयो या प्रकार
ब्राह्मण तर्क करत भयो ४२ स्त्री भृत्य पुत्र इन सबकूं संग लेके पास आयके बैठो और श्रीकृष्णजी के चरण को दाबे जो श्रुतदेव है सो [illegible] और आतिथ्य कियेहुये भगवान्

कोयथा ॥ नत्वामुनीन्सुमंहृष्टोधुन्वन्वासोननर्त्तह ३८ तृणपीठबृसीष्वेतानानीतेषूपवेश्यसः ॥ स्वागतेनाभिनन्द्यांघ्रीन् सभार्योऽवनिजेमुदा ३९ तद
म्भसामहाभाग आत्मानंसगृहान्वयम् ॥ स्नापयांचक्रउद्धर्षोलब्धसर्वमनोरथः ४० फलार्हणोशीरशिवामृताम्बुभिर्मृदासुरभ्यातुलसीकुशाम्बुजैः ॥ आ
राधयामासयथोपपन्नया सपर्य्ययासत्त्वविवर्द्धनान्धसा ४१ सतर्कयामासकुतोममान्वभूद्गृहान्धकूपेपतितस्यसङ्गमः ॥ यःसर्वतीर्थास्पदपादरेणुभिः कृ
ष्णेनचास्यात्मनिकेतभूसुरैः ४२ सूपविष्टान्कृतातिथ्याञ्छ्रुतदेवउपस्थितः ॥ सभार्यःस्वजनापत्यउवाचाङ्घ्र्यभिमर्शनः ४३ श्रुतदेवउवाच ॥ नाद्यनो
दर्शनंप्राप्तःपरंपरमपूरुषः ॥ यर्हीदंशक्तिभिःसृष्ट्वाप्रविष्टोह्यात्मसत्तया ४४ यथाशयानःपुरुषोमनसैवात्ममायया ॥ सृष्ट्वालोकंपरंस्वाप्नमनुविश्यावभासते
४५ शृण्वतांगदतांशश्वदर्चतांत्वाऽभिवन्दताम् ॥ नृणांसंवदतामन्तर्हृदिभास्यमलात्मनाम् ४६ हृदिस्थोऽप्यतिदूरस्थः कर्म्मविक्षिप्तचेतसाम् ॥ आत्मश
क्तिभिरग्राह्योऽप्यन्त्युपेतगुणात्मनाम् ४७ नमोऽस्तुतेऽध्यात्मविदांपरात्मने अनात्मनेस्वात्मविभक्तमृत्यवे ॥ सकारणाकारणलिङ्गमीयुषे स्वमाययाऽसंवृ

सूं कहत भयो ४३ अब श्रुतदेव कहे हैं जा समय शक्तिन करिके या विश्व कूं रचि के अपनी सत्ता करिके यामें प्रविष्ट भये ताही समय परमपुरुष जो तुम हो सो हम कूं प्राप्तभये परन्तु या साक्षात्
स्वरूप को दर्शन अबहीं प्राप्त भयो है ४४ जैसे सोवतो भयो पुरुष मन करिके तुम्हारी मायासूं स्वप्न में और देह कूं रचिके वामें प्रवेश करिके प्रकाश करे है ४५ तुम्हारी कथानकूं सुनें तुम्हारे
नाम कू कहें सर्वदा तुम्हारी पूजा करें तुम कूं प्रणाम करें तुम्हारी कथा कू कहें तासूं निर्मल है आत्मा जिनके ऐसे पुरुषन के हृदय के भीतर प्रकाशो हो ४६ कर्मन करिके चलायमान है चित्त
जिनके ऐसे पुरुषन के हृदय में भी हो परन्तु अति दूरि हो और तुम्हारी कथा के सुनिबो तुम्हारे नामको लेबो तासूं सुन्दर है अन्तःकरण जिनके ऐसे पुरुषन के तुम सर्वदा पास रहो हो ४७
देह और गृह में दूरि भयो है अभिमान जिनको ऐसे पुरुषन कू मोक्ष के देनवारे हो और देह गृहमें जाके अभिमान नहीं ऐसे पुरुषन कूं आप संसार देत हो कार्य महदादिक कारण माया ये

दोनों उपाधि हैं तिनें सेवन करो हौ अपनी माया करिके आप ढके नहीं हौ और जीवनकी दृष्टि जिनने ढकि राखी है ऐसे जे तुम हौ तिनकूं प्रणाम है ४८ ऐसे तुम हम अपने भृत्यनकूं शिक्षा देउ हे देव अर्थात् प्रकाशमान! तुम्हारो कहा हम पूजनकरैं यावत् आप नेत्रके आगे नहीं आवो हो तावत् मनुष्यनकूं क्लेश रहे हैं ४९ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन् परीक्षित ! या प्रकार श्रुतदेव ब्राह्मण को कह्यो वचन सुनिकै शरणागतन के दुःख के हरनवारे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने हाथ सूं ब्राह्मण को हाथ पकरिके हँसिके यह बोलतभये ५० मेरो आदर बहुत और ब्राह्मणन को थोड़ो कियो देखि के लोकन के शिक्षक भगवान् हैं सो मोते भी ब्राह्मणन में श्रद्धा बहुतकरी चाहिये या प्रकार श्रुतदेव कूं सिखावे हैं हे ब्राह्मण ! तुम्हारो भलो करिवे के लिये ये मुनि प्राप्त हुये हैं यह तुम जानो हो अपने चरणन की रेणु डारिके लोकन के पवित्र करिवे के लिये मोसहित विचरत हैं ५१ देवता क्षेत्र तीर्थ इनके दर्शन स्पर्शन अर्चन करे तें बहुत कालमें हौले हौले पवित्र होय हैं सो भी महात्मान की इच्छा होय तो और ब्राह्मण तो शीघ्रही पवित्र करे है ५२ या ससारमें समस्त प्राणीन की अपेक्षा करिके ब्राह्मण जन्महीं ते श्रेष्ठ है और जो तप करिके विद्या पढ़ि

तरुद्धदृष्टये ४८ सत्वंशाधिस्वभृत्यान्नः किंदेवकरवामहे ॥ एतदन्तोनृणांक्लेशो यद्भवानक्षिगोचरः ४९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ तदुक्तमित्युपाकर्ण्य भगवान् प्रणतार्त्तिहा ॥ गृहीत्वापाणिनापाणिं प्रहसंस्तमुवाचह ५० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ब्रह्मंस्तेऽनुग्रहार्थायसम्प्राप्तान्विद्ध्यमून्मुनीन् ॥ सञ्चरन्तिमयालोकान् पुनन्तःपादरेणुभिः ५१ देवाःक्षेत्राणितीर्थानि दर्शनस्पर्शनार्च्चनैः ॥ शनैःपुनन्तिकालेन तदप्यर्हत्तमेक्षया ५२ ब्राह्मणोजन्मनाश्रेयान् सर्व्वेषांप्राणिनामिह ॥ तपसाविद्ययातुष्ट्या किमुमत्कलयायुतः ५३ नब्राह्मणान्मेदयितं रूपमेतच्चतुर्भुजम् ॥ सर्व्ववेदमयोविप्रःसर्व्वदेवमयोह्यहम् ५४ दुष्प्रज्ञाअविदित्वैवमवजानन्त्यसूयवः ॥ गुरुंमांविप्रमात्मानमर्चादाविज्यदृष्टयः ५५ चराचरमिदंविश्वं भावायेचास्यहेतवः ॥ मद्रूपाणीतिचेतस्याधत्तेविप्रोमदीक्षया ५६ तस्माद्ब्रह्मऋषीनेतान् ब्रह्मन्मच्छ्रद्धयाऽर्चय ॥ एवंचेदर्चितोऽस्म्यद्धानान्यथाभूरिभूतिभिः ५७ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ सइत्थंप्रभुणाऽऽदिष्टःसहकृष्णान्द्विजो

के सन्तोष करिके हमारी कला सूं युक्त होयकै श्रेष्ठ होय तौ यामें कहा कहनो है ५३ जो ब्राह्मण मोकूं प्यारो है सो चतुर्भुजरूप प्यारो नहीं लगे है सम्पूर्ण वेदमय ब्राह्मण है और देवतारूप मैं हूं ५४ खोटी है बुद्धि जिनकी गुणन में दोषन कू देखें पूजादिकमें पूज्यबुद्धि ऐसे पुरुष हैं ते भी ब्राह्मण वेदमयहैं ऐसे नहीं जानिके गुरुरूप ब्राह्मणरूप सबको आतमा जो मैं हूं ताको अनादर करे है ५५ स्थावर जंगम जो यह विश्व है और जे या विश्व के कारण महदादिक पदार्थ हैं तिनकूं ब्राह्मणहै सो मेरो स्वरूप जानिके मेरोही सर्व्वत्र दर्शन है ता करिकै चित्त में राखे है ५६ हे ब्राह्मण श्रुतदेव ! श्रद्धा करिके ब्रह्मऋषिन को पूजन करो मो में इनमें एक सों भाव करोगे तो मेरी साक्षात् पूजा होयजायगी भेदभाव करिके मेरी बहुत सी सम्पत्ति करिके भी पूजा करोगे तो मैं प्रसन्न नहीं होउँगो ५७ अब श्रीशुकदेव जी कहे हैं हे राजन्परीक्षित् ! ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने जाकूं आज्ञा दीनी ऐसो जो श्रुतदेव ब्राह्मण है सो श्रीकृष्णचन्द्र सहित जे ब्राह्मण हैं तिनें एक

भाव सूं आराधन करिके सुन्दर गति कूं पाय गयो और मिथिलापुरी को राजा है सो भी सुन्दर गति कूंपाय गयो ५८ हे राजन्परीक्षित् ! या प्रकार भक्तन की भक्ति करें ऐसे भगवान् श्रीकृष्ण-चन्द्र हैं सो अपने भक्त बहुलाश्व और श्रुतदेव इन के यहाँ वास करिके सन्मार्ग अर्थात् उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड इन तीनों काण्डन को उपदेश करि फेरि द्वारकापुरी में आवत भये ५९ इति श्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रुतदेवानुग्रहोनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥ ~ ॥ * ॥ * ॥ ~ ॥

(सप्ताशीतितमेनारायणनारदवादतः ॥ वेदैःस्तुतिर्गुणालम्बानिर्गुणावधिवर्ण्यते १ सत्तासीवें अध्यायमें नारायण और नारदजी के वादसूं वेदनने गुणनके आलम्बवाली स्तुति निर्गुणकी अवधिताई वर्णन करी है १) पहिले अध्यायके अन्त में भगवान् वेद को मार्ग ब्रह्मपर है ऐसे उपदेश करिके जातभये यह कह्यो तहाँ वेदन कूं ब्रह्म परत्व नहीं बने है यह मानिके राजा परीक्षित् प्रश्न करे हैं हे ब्रह्मन् ! निर्देश करिवे में न आवै निर्गुण और साक्षात् कार्य्य कारण इनते परे ऐसो जो ब्रह्म तामें गुणवृत्ति श्रुति साक्षात् कैसे विचरे हैं १ तहा शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् !

समान् ॥ आराध्यैकात्मभावेन मैथिलश्चापसद्गतिम् ५८ एवंस्वभक्तयोराजन्भगवान्भक्तभक्तिमान् ॥ उषित्वाऽऽदिश्यसन्मार्गं पुनर्द्वारवतीमगात् ५९ ॥

इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेश्रुतदेवानुग्रहोनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

परीक्षिदुवाच ॥ ब्रह्मन्ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणेगुणवृत्तयः ॥ कथंचरन्तिश्रुतयःसाक्षात्सदसतःपरे १ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ बुद्धीन्द्रियमनःप्राणाञ्जनाना मसृजत्प्रभुः ॥ मात्रार्थञ्चभवार्थञ्चआत्मनेऽकल्पनायच २ सैषाह्युपनिषद्ब्राह्मी पूर्व्वेषांपूर्व्वजैर्धृता ॥ श्रद्धयाधारयेद्यस्तां क्षेमंगच्छेदकिञ्चनः ३ अत्रतेवर्ण यिष्यामि गाथांनारायणान्विताम् ॥ नारदस्यचसंवादमृषेर्नारायणस्यच ४ एकदानारदोलोकान् पर्य्यटन्भगवत्प्रियः ॥ सनातनमृषिन्द्रष्टुं ययौनारायणा श्रमम् ५ योवैभारतवर्षेऽस्मिन् क्षेमायस्वस्तयेनृणाम् ॥ धर्म्मज्ञानशमोपेतमाकल्पादास्थितस्तपः ६ तत्रोपविष्टमृषिभिः कलापग्रामवासिभिः ॥ परीतंप्र णतोऽपृच्छदिदमेवकुरूद्वह ७ तस्मैह्यवोचद्भगवानृषीणांशृण्वतामिदम् ॥ योब्रह्मवादःपूर्व्वेषां जनलोकनिवासिनाम् ८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ स्वा

प्रभु जो हैं सो जनन के लिये बुद्धि इन्द्रिय मन प्राण इनकूं सृजत भये काहे के अर्थ मात्रा जे विषय तिनके अर्थ और जन्मलक्षण जे कर्म्म तिनके करायने के लिये और आत्मा कूं लोकनके भोग के अर्थ तथा मुक्तिके लिये सृजे हैं २ यह जो ब्रह्मपर उपनिषद् है सो पहिलेन के पहिले भये ऐसे जे सनकादिक हैं तिनने प्रथम धारण करी है जो पुरुष निष्किञ्चन होयके श्रद्धापूर्व्वक याहि धारण करै सो कल्याणकूं प्राप्त होइ है ३ यहां तेरे अर्थ नारायण करिके युक्त जो गाथा है ताय हम वर्णन करे हैं जा गाथा में नारद जी को और ऋषि नारायण जी को सवाद है ४ एकसमय भगवान् के प्यारे नारदजी सम्पूर्ण लोकन में फिरत फिरत सनातनऋषि कूं देखिवे के निमित्त नारायण के आश्रम में आवतभये ५ जो नारायण या भरतखण्ड में मनुष्यनके क्षेम के लिये और मङ्गल के लिये धर्म्म ज्ञान शम इन करिके युक्त जो तप है ताकूं कल्पपर्य्यन्त करे हैं ६ हे परीक्षित् ! तहा कलापग्राम के वासी ऋषिन सहित बैठे जे नारायण तिनसूं नम्र होयके यह पूंछत

भये ७ तासमय जो ब्रह्मविचार जनलोकनिवासी सनकादिकन में भयो हो सोही भगवान् सब ऋषिनके श्रवण करत नारदके अर्थ कहत भये ८ भगवान् कहे हैं हे नारदजी! पहिले जनलोक में ब्रह्मा के मनते उत्पन्न भये ऐसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी सनकादिक मुनिनको ब्रह्मसत्र अर्थात् ब्रह्मविद्या को विचार होत भयो ९ अहो जा ब्रह्मसत्र को मोकूं ज्ञान नहीं तहा कहे हैं हे नारद! श्वेतद्वीप के ईश्वर अनिरुद्ध मूर्त्ति तिनें देखिवे के लिये श्वेतद्वीप में तुम गये पीछे ब्रह्मवाद होत भयो या ब्रह्मवाद में श्रुति भगवान् को प्रतिपादन करे हैं तहा यही प्रश्न होत भयो जो तू मो सूं पूछे है १० तुल्य है श्रवण तप शील जिनको और तुल्यही हैं मित्र शत्रु मध्यम जिनके ऐसे भी सनकादिक हैं परन्च एक कूं वक्ता बनाय के सम्पूर्ण श्रोता होत भये ११ अब सनन्दनजी कहे हैं आपने निर्म्माण कियो जो यह संसार ताको नाश करिके अपनी शक्तिन करिके सहित सोये जब प्रलयको अन्त आवे है ता समय ब्रह्म के प्रतिपादक जे वचन हैं तिनकरिके श्रुती परमेश्वरकूं जगावति भई १२ जैसे रात्रिके सोये चक्रवर्त्ती राजाकूं प्रातःकाल राजोपजीवी वन्दीजन उठिके अपने पराक्रमनकरिके सुन्दर यशकूं वर्णनकरिके जगावे हैं १३ हे अजित अर्थात् जीतिवे में न आवो!

स्वायम्भुवब्रह्मसत्रं जनलोकेऽभवत्पुरा ॥ तत्रस्थानां मानसानां मुनीनामूर्द्ध्वरेतसाम् ९ श्वेतद्वीपं गतवति त्वयि द्रष्टुं तदीश्वरम् ॥ ब्रह्मवादः सुसंवृत्तः श्रुतयो यत्र शेरते ॥ तत्र हायमभूत्प्रश्नस्त्वं मां यमनुपृच्छसि १० तुल्यश्रुततपःशीलास्तुल्यस्वीयारिमध्यमाः ॥ अपि चक्रुः प्रवचनमेकं शुश्रूषवोऽपरे ११ सनन्दन उवाच ॥ स्वसृष्टमिदमापीय शयानं सह शक्तिभिः ॥ तदन्ते बोधयाञ्चक्रुस्तल्लिङ्गैः श्रुतयः परम् १२ यथा शयानं संम्राजं वन्दिनस्तत्पराक्रमैः ॥ प्रत्यूषेऽभ्येत्य सुश्लोकैर्बोधयन्त्यनुजीविनः १३ श्रुतय ऊचुः ॥ जय जय जह्यजामजित दोषगृभीतगुणां त्वमसि यदात्मना समवरुद्धसमस्तभगः ॥ अगजगदोकसामखिलशक्त्यवबोधक ते क्वचिदजयाऽऽत्मना च चरतोऽनुचरेन्निगमः १४ बृहदुपलब्धमेतदवयन्त्यवशेषतया यत उदयास्तमयौ विकृतेर्मृदि वाऽविकृतात् ॥ अत ऋषयो दधुस्त्वयि मनोवचनाचरितं कथमयथा भवन्ति भुवि दत्तपदानि नृणाम् १५ इति तव सूरयस्त्र्यधिपतेऽखिललोकमलक्षपणकथाऽमृताब्धिमवगाह्य तपांसि जहुः ॥ किमुत

ऐसे जो तुमही सो अपनी उत्कृष्टताकूं प्रकटकरौ कदाचित् कहो कि कौन कारण प्रकट करूं ताको उत्तर देइ हैं दोषके निमित्त ग्रहण किये हैं गुण जाने ऐसी जो स्थावर जङ्गम शरीराश्रित जीवनकी अविद्या ताको नाशकरो या कारण तुम अपने रूप करिकेई संप्राप्त सम्पूर्ण ऐश्वर्यहो तिनकूं ऐसोही योग्यहै सम्पूर्ण शक्तिन के जगावनवारे जो तुमहो सो कबहूं सृष्ट्यादि समय में माया करिके क्रीड़ा करोहौ और आनन्द देकर सब अपने आत्मा करिके वर्त्तमान जो तुम तिनकूं वेद प्रतिपादनकरे हैं १४ यह जो समस्त इन्द्रादिक दीखे हैं ते सम्पूर्ण ब्रह्मही हैं कैसे ब्रह्महैं तहां कहे हैं तुमहीं शेष रहोहौ ताकरिकै नहीं है विस्तार जामें ऐसे ब्रह्म में सबको उदय अस्त अर्थात् उत्पत्ति नाश होइहै जैसे घटादिकनको उदय अस्त मृत्तिकामें होइहै या प्रकार ऋषिहैं ते मन और वचनको आचरण तुम्हारे विषे धारण करतभये जैसे मनुष्यन के चरण मृत्तिका पाषाण ईट इनके ऊपर परे हैं परन्तु भूमितें पृथक् नहीं हैं ऐसे जो कछु विकारहै सो सब तुमरूंही भयो है सर्वकारण परमार्थरूप तुमही या प्रकार वेद प्रतिपादन करे हैं १५ या प्रकार त्रिगुणमाया मृगीके नचावनवारे त्रिलोकी पुरुषहैं ते तुम्हारो अखिल लोकन के मलको नाश करनवारो कथारूपी अमृतको समुद्र

ताकूं सेवन करिके पाप और दुःखन कूं त्यागे हैं जो तुम्हारी कथामात्र करिके पापनको त्याग होइ है तहां कहा कहनो है और जे स्वरूपके स्मरण करिके त्यागे हैं अन्तःकरण के रागादिक काल के गुण जरादिक ते जिनते पापकूं दूरि करे हैं यामें कहा कहनो है हे परमेश्वर ! तुम्हारो परम अखण्ड आनन्द अनुभव स्वरूप को भजन करिकै दुःखन कू त्यागें यामें कहा कहनो है १६ अब जे पुरुष तुम्हारो भजन नहीं करे हैं तिनकी निन्दा और प्राणधारी तुम्हारो भजन करे हैं तिनको सफल जीवनहै या प्रकार स्तुति करे हैं जे प्राणधारी तुम्हारो भजन करिके श्वासन कूं पूरी करे हैं ते सफलजन्मा हैं और जो विना भजनकरे श्वास लेइहैं वे लोहार की धौंकनीकी तुल्य वृथा श्वास लेइ है तुम्हारे भजनके विना कृतघ्नीनकूं फल सिद्ध नहीं होइहै अब या प्रकार कहे हैं जाके अनुग्रह करिके महत्तत्त्व अहङ्कारादिक जे तत्त्व हैं ते या देहकूं सृजत भये ता देहने अन्नमयादिकोशन में प्रवेश करिके ताता आकार करिके चेतन करे हैं सो तुमही सो कहे हैं अन्नमयादिकन कैसो है आकार जाको ऐसो पुरुष अन्नमयादिकनमें मिलि रह्यो है ऐसेहो तो सत्य अङ्गमें कैसेहो तहां कहे हैं अन्नमयादिकन के अन्तमें हौ याते पुच्छ करिके वर्णन करेहैं स्थूल सूक्ष्म इनतें परेहौ

पुनःस्वधामविधुताशयकालगुणाः परमभजन्तियेपदमजस्रसुखानुभवम् १६ दृतयइवश्वसन्त्यसुभृतोयदितेनुविधामहदहमादयोऽण्डमसृजन्यदनुग्रहतः॥ पुरुषविधोऽन्वयोऽत्रचरमोऽन्नमयादिषुयःसदसतःपरन्त्वमथयदेष्ववशेषमृतम् १७ उदरमुपासतेयऋषिवर्त्मसुकूर्पदृशःपरिसरपद्धतिंहृदयमारुणयोदहरम्॥ ततउदगादनन्ततवधामशिरःपरमं पुनरिहयत्समेत्यनपतन्तिकृतान्तमुखे १८स्वकृतविचित्रयोनिषुविशन्निवहेतुतयातरतमतश्चकास्स्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः॥ अथवितथास्वमूष्ववितथंतवधामसमं विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यवएकरसम् १९ स्वकृतपुरेष्वमीष्वबहिरन्तरसंवरणंतवपुरुषंवदन्त्यखिलशक्तिधृतोंशकृतम्॥ इतिनृगतिंविविच्यकवयोनिगमावपनं भवतउपासतेऽङ्घ्रिमभवंभुविविश्वसिताः २० दुरवगमात्मतत्त्वनिगमायतवात्ततनोश्चरितमहामृता

और इनमें अतिशेषरूपहौ याते सत्यहौ शाखा इन्द्रकी तुल्य शुद्धरूप दिखायवे के लिये अन्नमयादिकन में सम्बन्ध कह्यो हौ १७ ऋषिन के मार्ग में जे कूरदृष्टि हैं ते उदरब्रह्मकी उपासना करे हैं और जे अरुणवंशीय हैं ते नाड़ीन के चलिवे को स्थान सूक्ष्म हृदय में स्थित ऐसे ब्रह्मकी उपासना करे हैं हे अनन्त ! तुम्हारी प्राप्तिको जो स्थान सुषुम्णा जाको नाम सो शिरकूं प्राप्त होत भयो कैसो धामहै कि जाय प्राप्तहोय के फेरि मृत्युको मुख जो यह संसारहै तामें नहीं परे हैं १८ तुम्हारे करे ऐसे चित्र विचित्र ऊँच नीच मध्यम देहादिक तिनमें कारणरूप होइकै पहिलेही विद्यमानहो याते प्रवेशसे करत तारतम्यता करिके प्रकाशो हौ जैसे काष्ठ में अग्नि ऐसे अपनी करी जे योनि तिनमें अनुकरण करोहौ याते मिथ्याभूत योनि में समान एकरस सत्य ऐसो तुम्हारा स्वरूप ताय निर्म्मल हैं बुद्धि जिनकी तथा गये हैं व्यवहार जिनके ते पुरुष जाने हैं १९ अपने कर्म्मन करिके प्राप्तभये जे नरादिक देह हैं तिनमें भोक्तृत्व करिके वर्त्तमान है और भीतर बाहर आवरण नहीं हैं जाके ऐसे जीवकूं समस्त शक्तिनके धारण करनवारे जो तुम तिनको अंश सो कह्यो है सो कहे हैं या प्रकार कवि हैं ते जीवकी गतिकूं विचारिके वेदनको उत्पत्तिस्थान और नहीं है संसार जाते ऐसे तुम्हारे चरणकी उपासना करे है या प्रकार कियो है विश्वास जिनने ऐसे कविन कूं मर्त्यलोक में यही उचित है २० हे ईश्वर ! दुर्बोध जो आत्मतत्त्व है ताके जनाइबे के निमित्त प्रकटकरी

है मूर्त्ति जिनने ऐसे जे तुमहो तिनको चरित्ररूपी बड़ो अमृतरूप समुद्र है तामें अवगाहन करिके दूरि भयो है श्रम जिनको ऐसे कोई एक तुम्हारे भक्तहैं ते मोक्षकीभी इच्छा नहीं करे हैं और तुम्हारे चरणकमल में अवगाहन करत हंसकी तुल्य रमण करे हैं ऐसे भक्तन के कुलके संग करिके घर जिनने त्यागि दिये हैं २१ तुम्हारी सेवाको मार्ग जो देहहै सो आत्मा और मित्रके तुल्य आचरण करे है तथापि सम्मुख हितकारी प्यारे आत्मा जो तुमहो तिनमें साक्षात् भाव करिके नहीं भजनकरे हैं याते आत्मघाती है अहो बड़ोकष्टहै मिथ्याभूत देहादिकनके सेवनते असत् उपासना में है वासना जिनकी ऐसे नीच देहकूं धारण करनवारे बड़ो भयरूप जो संसारहै तामें भ्रमणकरे हैं याते आत्मघाती हैं २२ जीती हैं माण मन इन्द्रिय जिनने ऐसे दृढयोगके करनवारे मुनि हृदय में जाकी उपासना करे हैं ताही प्रकार शत्रु हैं ते भी तुम्हारे स्मरण ते तुमकूं प्राप्तभये है तथा शेष के शरीरकी तुल्य जे तुम्हारे भुजदण्डहैं तिनमें आसक्तहै बुद्धि जिनकी ऐसी जे स्त्रीहैं ते सम्पूर्ण समान दृष्टि करिके तुमकूं देखे हैं और तुमकूं प्राप्त भई हैं याही प्रकार हम जे श्रुतिहैं ते तुमकूं कृपा करिबेमें समान हैं कैसी हम है तुम्हारे चरण धारण करे हैं या प्रकार तुम्हारे स्मरणको प्रभाव

विधपरिवर्त्तपरिश्रमणाः ॥ नपरिलषन्तिकेचिदपवर्गमपीश्वरते चरणसरोजहंसकुलसङ्गविसृष्टगृहाः २१ त्वदनुपथंकुलायमिदमात्मसुहृत्प्रियवच्चरतितथो न्मुखेत्वयिहितेप्रियआत्मनिच ॥ नवतरमन्त्यहोअसदुपासनयाऽऽत्महनोयदनुशयाभ्रमन्त्युरुभयेकुशरीरभृतः २२ निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजोहृदिय न्मुनयउपासतेतदरयोऽपिययुःस्मरणात् ॥ स्त्रियउरगेन्द्रभोगभुजदण्डविषक्तधियोवयमपितेसमाःसमदृशोऽङ्घ्रिसरोजसुधाः २३ कइहनुवेदबतावरजन्मल योऽग्रसरंयतउदगादृषिर्यमनुदेवगणाउभये ॥ तर्हिनसन्नचासदुभयंनचकालजवःकिमपिनतत्रशास्त्रमवकृष्यशयीतयदा २४ जनिमसतःसतोमृतिमुता त्मनियेचभिदां विपणमृतंस्मरन्त्युपदिशन्तितआरुपितैः ॥ त्रिगुणमयःपुमानितिभिदायदबोधकृतात्वयिनततःपरत्रसभवेदवबोधरसे २५ सदिवमनस्त्रिवृ

है २३ हे भगवन् ! या संसार में पूर्व्वसिद्ध जो तुमहौ तिनकूं आधुनिक उत्पत्ति विनाश इन करिके युक्त जो पुरुषहै सो कैसे जानेगो अर्थात् नहीं जानेगो जिन तुमते ब्रह्मा उत्पन्न भयोहै जा ब्रह्मा के पीछे आध्यात्मिक आधिदैविक देवतानके गण उत्पन्नभये जा समय तुम सबको सहार करिके सोवो हौ ता समय जीवनकूं ज्ञानसाधन नहीं है याते प्रलयके समय स्थूल जो आकाशादिक सो नहीं है और सूक्ष्म महदादिक सोभी नहीं है तथा स्थूल सूक्ष्म करिके आरब्ध जो शरीर सो भी नहीं है और शरीरको कारणरूप कालको विषमभाव है सो भी नहीं है ऐसे भये सन्ते ता समय इन्द्रिय प्राणादिक कछु नहीं हैं और सबको जनावनवारो जो शास्त्र सो भी नहीं है २४ मिथ्याभूत यह जगत्‌है ताकी उत्पत्तिहै या प्रकार वैशेषिकादिक आचार्य्य कहे हैं और इकईस प्रकार के दुःखन को जो नाश है सो मोक्षहै ऐसे नैयायिक माने है और साख्याचार्य्य हैं ते आत्मा में भेद भाव माने हैं तथा कर्म्म फलके व्यवहारकूं मीमांसक सत्य कहे हैं ते सम्पूर्ण आरोपित भ्रम करिके ही उपदेश करे हैं तत्त्वदृष्टि करिके उपदेश नहीं करे हैं वास्तव ते पुरुष त्रिगुणमयहोय तो सब जीव जिसके हैं सो सम्भव नहीं है यह कहे हैं त्रिगुणमय पुरुष है यह जो भेद है सो तुम्हारे विषे अज्ञान करिके कियो है तुम कैसेहो अज्ञानते परे हौ सङ्गरहित हौ ज्ञानघनहौ याते तुम अबोध हौ सो नहीं सब है २५ जो असत् नहीं उपजेहै और त्रिगुणमय पुरुष नहीं है तो यह प्रपञ्च भयोहो

कैसो है कारणभाव करिके जो विकार तिनें त्यागिके जो है सो सर्व्वव्यापक है फेरि कैसो है कि जो कहे हैं हम जाने हैं तिनने नहीं जान्यो है और जे कहे हैं हमने नहीं जान्यो है तिननेही जान्यो है ३० प्रकृति और पुरुष इनको जो जन्म है सो नहीं सम्भव है क्यों प्रकृति पुरुष अजन्मा हैं या कारण प्रकृति पुरुषके सम्बन्ध धरिके जीव जन्म लेइ है जैसे जल में बबूला है ते केवल जल करिके नहीं उत्पन्न होइ हैं और केवल पवन करिकेभी नहीं उत्पन्न होइ हैं किन्तु दोनों से उत्पन्न होइ हैं तुम जो कारणरूप ईश्वर हौ तिनके विषे अनेक नाम रूप गुण इन करिके सहित जीव लीन होइ हैं ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे शहदमें सम्पूर्ण वनस्पतीनके रस लीनहोइ हैं और जैसे समुद्र में सम्पूर्ण नदी लीन होइ हैं ऐसे ३१ जीवनके विषे तुम्हारी माया करिके भ्रमहै ताय जानिके सुन्दर है बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष ससारके निवृत्त करनवारे जे तुमहौ तिनके विषे भावना करे हैं कैसे भ्रमे हैं वारंवार जन्म लेइ हैं और जे तुम्हारे शरण होइके भजन करे हैं तिनकूं संसारको भय नहीं होइहै काहे तें तीनि हैं शीत उष्ण वर्षा नेमि जाके ऐसो संवत्सररूपी काल सो तुम्हारो भ्रूभङ्गरूपहै और जे तुम्हारे शरण नहीं हैं तिनके तुम रक्षक नहीं हौ किन्तु भयकारक हौ याते बुद्धिमान् हैं ते तुम्हारे विषे भाव करे हैं ३२

नियन्तृभवेत्सममनुजानतांयदमतंमतदुष्टतया ३० नघटतउद्भवःप्रकृतिपूरुषयोरजयोरुभययुजाभवन्त्यसुभृतोजलबुद्बुदवत् ॥ त्वयितइमेततोवि विधनामगुणैःपरमेसरितइवार्णवेमधुनिलिल्युरशेषरसाः ३१ नृपुतवमायया भ्रमममीष्ववगत्यभृशंत्वयिसुधियोऽभवेदधतिभावमनुप्रभवम् ॥ कथमनुवर्त्त तांभवभयन्तवयद्भ्रुकुटिःसृजतिमुहुस्त्रिणेमिरभवच्छरणेषुभयम् ३२ विजितहृषीकवायुभिरदान्तमनस्तुरगंयइहयतन्तियन्तुमतिलोलमुपायखिदः ॥ व्यसनशतान्विताःसमवहायगुरोश्चरणंवणिजइवाजसन्त्यकृतकर्णधराजलधौ ३३ स्वजनसुतात्मदारधनधामधराऽसुरथैस्त्वयिसतिकिंनृणांश्रयतआत्म निसर्व्वरसे ॥ इतिसदजानतांमिथुनतोरतयेचरतांसुखयतिकोन्विहस्वविहतेस्वनिरस्तभगे ३४ भुविपुरुपुण्यतीर्थसदनान्यृषयोविमदास्तउतभवत्पदा म्बुजहृदोऽघभिदङ्घ्रिजलाः ॥ दधतिसकृन्मनस्त्वयियआत्मनिनित्यसुखेनपुनरुपासतेपुरुषसारहरावसथान् ३५ सतइदमुत्थितंसदितिचेन्ननुतर्कहतं

जीती हैं इन्द्रिय प्राण जिनने तिन करिकेहू अतिचञ्चल दमन करिने कूं अशक्य ऐसो मनरूप घोड़ा ताय जीतिवेकूं जे यत्न करे हैं ते उपाय करिके खेदकूं प्राप्त होइहैं और बहुत व्यसनन करिके व्याकुल होइहैं काहे तें कि जासूं मन जीतिये है तिन गुरुनके चरणनकूं त्यागिके यत्न करेहैं ते दुःखकूं पावेहैं जैसे नहीं कियोहै नावको खेवनवारो जिनने ऐसे वनिया समुद्रमें दुःख पावें ऐसे ३३ तुम्हारो जो पुरुष आश्रय लेइहै ताकू स्वजन पुत्र देह स्त्री धन घर पृथ्वी प्राण रथ इनसूं कहा प्रयोजन है कैसे तुमहौ आत्मा सब सुख आनन्दरूप जो तुमहौ तिनको जो पुरुष आत्मामें सेवन करै ताकूं इन तुच्छ पदार्थन सूं कहा प्रयोजन है सत्य परमार्थ सुखकू नहीं जानिके स्त्री पुरुष मिलिके रतिके लिये विचरे हैं तिनकूं या संसारमें कौन सुखहै अर्थात् कोई नहीं कैसो संसारहै आपते मिथ्याभूत और साररहित है याते तुम्हारोही भजन करिवो उचित है ३४ अहङ्कार कूं त्यागिके तुम्हारे चरणारविंदकूं हृदय में धारण कियो है जिनने याही ते पापको दूरि करनवारो है चरणोदक जिनको ऐसे जे तुम्हारे भक्त ऋषि हैं ते पृथ्वीमें बहुत पुण्यतीर्थ क्षेत्रनकूं सेवन करे हैं अथवा बहुतहै भगवान्‌को भजनरूप पुण्य जिनके ऐसे गुरु महात्मानके आश्रमन को सेवनकरे हैं वे पुरुषके सारके हरनवारे जे घर हैं तिनें नहीं

यति संन्यासी हैं ते हृदयमें स्थित ऐसी जे कामकी वासना हैं तिने नहीं उखारे हैं तिन असाधुन के हृदयमें तुम स्थित हौ परन्तु नहीं मिलो हौ कैसे नहीं मिलो हौ जैसे कण्ठ में स्थित मणि भूले पीछे नहीं मिले है तैसे तुम नहीं मिलो हौ उन संन्यासीनकूं केवल तुम्हारो स्मरण नहीं है तो कहा है जे इन्द्रियन के तृप्ति करनवारे हैं तिन कू या लोक में दुःखही है काहे ते दुःख है जाते लोकन को आराधन करनो धन सञ्चय करनो भोग करनो परन्तु छिपाय के करनो ताते या लोक में दुःख होइ है और तुम्हारी प्राप्ति के लिये संन्यास लियो है सो तुम्हारी प्राप्ति भई नहीं और अपने निजधर्म्म को अतिक्रमण कर्यो याते तुम्हारो दण्डरूप नरक ताकी प्राप्ति भई यासूं परलोक में भी सुख नहीं दोनों लोकन ते भ्रष्ट भये ३९ गुण और ऐश्वर्य्य करिके युक्त हे भगवन् ! तुम्हारे ज्ञान करिके युक्त ऐसो जो भक्तहै सो कर्म्मफलके देनवारे जो तुम ईश्वर तिन ते उठे प्राचीन पुण्य पाप तिनके फल जे सुख दुःख तिनें स्मरण नहीं करे है और देहाभिमानीन की प्रवृत्ति निवृत्ति की करनवारी ऐसी जे विधि निषेधरूप वाणी तिनें नहीं जाने हैं तुम्हारे भक्त के देहाभिमान नहीं है या कारण ते कार्य्य अकार्य्यको बोध नहीं है यह योग्य है जा कारण ते मनुष्यन करिके दिन दिन में श्रवण करिके चित्त में धारण किये ऐसे तुम सो भक्तन कूं मोक्षगति होउ कैसे तुम भक्तन ने धारण कियो हो तहां कहे हैं युग युग में उपदेश को जो

पदाब्जवतः ३९ त्वदवगमीनवेत्तिभवदुत्थशुभाशुभयोर्गुणविगुणान्वयांस्तर्हिदेहभृतांश्चगिरः ॥ अनुयुगमन्वहंसगुणगीतपरंपरया श्रवणभृतोयतस्त्व
मपवर्गगतिर्मनुजैः ४० द्युपतयएवतेनययुरन्तमनन्ततयात्वमपियदन्तराऽण्डनिचयाननुसावरणाः ॥ खइवरजांसिवान्तिवयसासहयच्छ्रुतयस्त्वयि
हिफलन्त्यतन्निरसनेनभवन्निधनाः ४१ श्रीभगवानुवाच ॥ इत्येतद्ब्रह्मणःपुत्रा आश्रुत्यात्मानुशासनम् ॥ सनन्दनमथाऽनर्चुःसिद्धाज्ञात्वाऽऽत्मनोगतिम्
४२ इत्यशेषसमाम्नायपुराणोपनिषद्रसः ॥ समुद्धृतःपूर्व्वजातैर्व्योमयानैर्महात्मभिः ४३ त्वञ्चैतद्ब्रह्मदायादश्रद्धयाऽऽत्मानुशासनम् ॥ धारयंश्चरगां

विस्तार ता करिके सम्प्रदाय के अनुसार करिके धारण किये हौ यामें यह कहे हैं जे तत्त्वज्ञानी हैं तिनकूं तौ कर्म्म को अधिकार नहीं और जे नित्य तुम्हारी कथा श्रवण कीर्त्तन इत्यादिक करे हैं तिनकूं तुम्हारे चरणकी प्राप्ति होइहै याते उनकूं विधि निषेध नहीं है और जे हैं ते योग के कपट करिके इन्द्रियन कूं लड़ावे हैं तिन पुरुषन कूं या लोक परलोक में दुःखही है ४० हे भगवन् ! स्वर्गादिक लोकन के पति जे ब्रह्मादिक हैं ते भी तुम्हारे प्रताप कूं नहीं पावतभये तुमहीं अपने अन्त कूं नहीं प्राप्त होउ हौ ब्रह्मादिक न पावें यामें कहा आश्चर्य्य है तहां भगवान् कहे है जो मैं अपने अन्त कूं न जानों तौ सर्व्वशक्ति और सर्व्वज्ञ कैसेहूं तहाँ कहे हैं तुम्हारे वैभव को अन्त नहीं है जैसे शशे के शृङ्ग नहीं जानने ते सर्व्वज्ञता शक्ति जाति रहे है किन्तु नहीं जाय है जो शशे के शृङ्ग होई तौ मिलै जा तुम परमेश्वर के मध्यमें दश दश गुण अधिक सात आवरण तिन करिके युक्त ब्रह्माण्डन के समूह ते कालचक्र करिके भ्रमत डोलै हैं जैसे आकाश में एक सङ्ग रज भ्रमण करे हैं ऐसे याते श्रुति हैं ते पर्य्यवसान कूं तात्पर्य्य करिके प्राप्त होइ हैं साक्षात् कहे है सगुण रूप जो तुमहौ तिनके गुणन को अन्त नहीं है निर्गुण है ताकूं अगोचर नहीं जाते तात्पर्य्य सूं कहे हैं ४१ नारायण नारदसूं कहे हैं या ब्रह्मा के पुत्र सनकादिक वेदनकी स्तुति श्रवण करिके आत्मा की गति जानि के सनन्दनजी को पूजन करत भये ४२ या प्रकार आकाशमें है गमन जि-

है १) अब राजा परीक्षित् प्रश्नकरे हैं कि हे महाराज शुकदेव जी! देवता असुर मनुष्यन में जे अमंगलरूप शिव को भजन करे हैं ते बहुधा धनवान् होय हैं और लक्ष्मी के पति श्री कृष्णचन्द्र को जे भजनकरे हैं ते धनवान् हू नहीं होइ हैं और विषय भी नहीं भोगे हैं यह हम जान्यो चाहे हैं यामें हमारे बड़ो सन्देह है विरुद्ध है स्वभाव जिनको ऐसे जे स्वामी हैं तिनके भजन करनवारेन की और गति होइ है कहो जो शिवजी विभूति लगावें श्मशान में वास करें आक धतूरो जिनकूं प्यारो लगे ऐसे अमङ्गलरूप शिवजी हैं जिनके कछु नहीं तिनको जे भजन करें हैं ते लक्ष्मीवान् होइ हैं और भोग भोगे हैं और लक्ष्मीके पति अच्छे भोग भोगें सुन्दर वस्त्र पहिरें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं जे भजें हैं ते बहुधा दरिद्री होइ हैं यह स्वामीन की गति और है सेवकन की गति और है उचित तो यह है जो स्वामी होय तैसोही सेवकहोय सो नहीं यह सन्देह है १। २ अब शुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! शिवजी में शक्ति रहे है गुणनको जो आपुसमें संघर्षण है ताधूं तमोगुण तीन प्रकार को है ताहीकूं कहे हैं सात्त्विक अहंकार और राजस अहङ्कार तामस अहंकार ऐसे तीन प्रकारके अहंकारके अधिष्ठाता शिवजी हैं सो तीनप्रकारके हैं ३ ता अहंकारते पृथ्वी जल तेज वायु आकाश ये

विरुद्धशीलयोःप्रभ्वोर्विरुद्धाभजतांगतिः२ श्रीशुकउवाच ॥ शिवःशक्तियुतःशश्वत्त्रिलिङ्गोगुणसंवृतः ॥ वैकारिकस्तैजसश्चतामसश्चेत्यहंत्रिधा ३ ततो विकाराअभवन्षोडशामीषुकिञ्चन ॥ उपधावन्विभूतीनांसर्व्वासामश्नुतेगतिम् ४ हरिर्हिनिर्गुणःसाक्षात् पुरुषःप्रकृतेःपरः ॥ ससर्व्वदृगुपद्रष्टा तंभजन्निर्गुणोभवेत् ५ निवृत्तेष्वश्वमेधेषु राजायुष्मत्पितामहः ॥ शृण्वन्भगवतोधर्म्मानपृच्छादिदमच्युतम् ६ सआहभगवांस्तस्मै प्रीतःशुश्रूषवेप्रभुः ॥ नृणांनिःश्रेयसार्थाय योऽवतीर्णोयदोःकुले ७ श्रीभगवानुवाच ॥ यस्याहमनुगृह्णामिहरिष्येतद्धनंशनैः ॥ ततोऽधनन्त्यजन्त्यस्यस्वजनादुःखदुःखितम् ८ सयदावितथोद्योगोनिर्विण्णःस्याद्धनेहया ॥ मत्परैःकृतमैत्रस्य करिष्येमदनुग्रहम् ९ तद्ब्रह्मपरमंसूक्ष्मं चिन्मात्रंसदनन्तकम् ॥ अतोमांसुदुराराध्यं हित्वाऽन्या

पञ्चभूत और दश इन्द्रिय तथा एक मन ये सोलह विकार भये हैं इन विकारनमें कोई एक विकारवान् उपाधिरूप विकार के भजन करेते सम्पत्ति मिले है उपाधि जाकूं लगि रही है वाके भजन करे ते उपाधि होइ है ४ निर्गुण साक्षात् माया ते परे सबके देखनवारे साक्षीभूत जो हरि भगवान् है तिनको जो पुरुष भजनकरे वह निर्गुण होइ है ५ अश्वमेध यज्ञ जब पूर्ण होय चुक्यो तब तुम्हारे दादे राजा युधिष्ठिर वैष्णव धर्म्मनकूं श्रवण करिके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ते यह पूंछत भये ६ मनुष्यनके कल्याण करिवे के लिये यदुकुलमें आप अवतरे ऐसे समर्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो प्रसन्न होय के सुनने की इच्छावाले राजा युधिष्ठिर ते यह कहत भये ७ अब भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जा पुरुष के ऊपर मैं कृपा करूं हूं ता पुरुष को धन हौले हौले हरण करि लेउ हूं ता पीछे जब दरिद्री होइ जाय है तब दुःखी की तुल्य दिखाई देइ है वाकूं भय्या बन्धु सब त्यागि देइहैं ८ भय्या बन्धुन के हठते फेरि कमाई में लगे तब मेरे अनुग्रहते निष्फल उद्यम होइ है तब धनके कमाइबे ते भी वैराग्य आय जाय है ता समय मत्परायण जे साधु हैं तिनसूं मित्रता करे है वा पुरुष के ऊपर मैं असाधारण अनुग्रह करूंहूं ९ वह परब्रह्म सूक्ष्म है चैतन्य है सर्वव्यापी है नाशरहित

है याते मैं आराधन करिवे में नहीं आऊंहूं मोकूं त्यागिके यह पुरुष और देवतानकूं भजे है १० सेवनकरे पीछे शीघ्र प्रसन्न होय जे देवताहैं तिनसूं जो राज्य और धन प्राप्त भयो है तासूं उद्धत होय के मतवारो होयके उन्मत्त होयके वरके देनवारे जे देवताहैं तिनें भूलि जायहैं और अवज्ञाकरे हैं ११ अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिक जे देवता हैं ते शाप देहैं और प्रसन्न होइ हैं और शिव ब्रह्मा ये दोनों शीघ्रही प्रसन्न होइ हैं और शीघ्रही शाप देहैं हैं और श्रीकृष्णचन्द्र शीघ्रही प्रसन्न नहीं होइ हैं और जापै प्रसन्न होइ ताकूं शाप नहीं देइहैं १२ ब्रह्मा और शिवजी ये शीघ्र शाप देहैं हैं यामें एक प्राचीन इतिहास है सो वर्णन करे हैं शिवजी वृकासुरकूं वरदैके कष्ट पावतभये १३ खोटी है बुद्धि जाकी ऐसो शकुनिको पुत्र वृकासुर मार्ग में नारदजी कूं देखिके ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवतान में जल्दी कौन प्रसन्न होइ है यह पूछतभयो १४ तब नारदजी कहतभये कि तू महादेव को सेवन करु शीघ्र तेरो मनोरथ सिद्ध हो-

न्भजतेजनः१० ततस्त आशुतोषेभ्यो लब्धराज्यश्रियोद्धताः ॥ मत्ताः प्रमत्ता वरदान्विस्मरन्त्यवजानते ११ श्रीशुकउवाच ॥ शापप्रसादयोरीशा ब्रह्मविष्णु शिवादयः ॥ सद्यःशापप्रसादोऽङ्गशिवोब्रह्मा नचाच्युतः १२ अत्रचोदाहरन्तीममितिहासंपुरातनम् ॥ वृकासुराय गिरिशो वरंदत्त्वापसङ्कटम् १३ वृको नामा सुरःपुत्रःशकुनेःपथिनारदम् ॥ दृष्ट्वाऽऽशुतोषंपप्रच्छ देवेषुत्रिषुदुर्मतिः १४ सआहदेवंगिरिशमुपाधावाऽऽशुसिद्ध्यसि ॥ योऽल्पाभ्यांगुणदोषाभ्यामाशुतु ष्यतिकुप्यति १५ दशास्यबाणयोस्तुष्टः स्तुवतोर्बन्दिनोरिव ॥ ऐश्वर्यमतुलंदत्त्वा ततआपसुसङ्कटम् १६ इत्यादिष्टस्तमसुरउपाधावत्स्वगात्रतः ॥ केदार आत्मक्रव्येण जुह्वानोऽग्निमुखंहरम् १७ देवोपलब्धिमप्राप्य निर्वेदात्सप्तमेऽहनि ॥ शिरोऽवृश्चत्स्वधितिना तत्तीर्थक्लिन्नमूर्द्धजम् १८ तदामहाकारुणिकः सधूर्जटिर्यथावयंचाग्निरिवोत्थितोऽनलात् ॥ निगृह्य दोर्भ्यांभुजयोर्न्यवारयत्तत्स्पर्शनाद्भूयउपस्कृताकृतिः १९ तमाहचाङ्गालमलंवृणीष्वमे यथाऽभिकामं

यगो जो शिवजी थोड़े गुणनसूं शीघ्र प्रसन्न और थोडे दोष करिके क्रोधित होइ हैं १५ वन्दीजन की तुल्य स्तुति करें ऐसे जे रावण और बाणासुर तिनके ऊपर प्रसन्नभये ऐसे जे शिवजी हैं सो बड़ो ऐश्वर्य देके तिन असुरनतें आपही कष्ट पावतभये रावणने तो कैलास उखारि लियो और बाणासुरने कही कि मेरे पुरकी रक्षाकरो १६ या प्रकार नारदजीने कही ता समय वृकासुर अपने देहतें शिवजी को सेवन करतभयो केदारतीर्थ में शिवजी के अर्थ अपने शरीरको मांस काटिके अग्नि में हवन करतभयो १७ महादेवकी प्राप्ति न भई तब निर्वेद आयगयो तातें सप्तमदिन तीर्थ में जो स्नान कियो तासूं भीजे हैं बार जामें ऐसो जो शिरहै ताय छुरीलैके काटनलग्यो १८ ता समय बडे करुणावान् शिवजी हैं सो मूर्तिमान् अग्नि की तुल्यहै प्रकाश जिनको ऐसे अग्नि-कुण्ड में ते निकसिके हाथनते असुरकी भुजा पकरिकै जैसे कोई दुःखके मारे मरिवेकूं आवै ताय मने करे हैं ऐसे मने करतभये शिवजी के हाथके स्पर्श ते वाको देह ज्यों को त्यों होइगयो १९ वृका-सुरसूं शिवजी कहतभये कि हे वृकासुर ! तू तप करिके पूर्ण भयो अब वरमाग जो तेरी इच्छाहोइ सोही वर देउँगो जे मेरी शरण मनुष्य आवे हैं तिनके ऊपर जलमात्र के चढायेतेही प्रसन्न होय

जाऊँ हौं बड़ो आश्चर्य है तैंने वृथाही अपने देहकूं दुःख दियो २० तब वह अत्यन्त पापी जा जा पुरुषके शिरपै मैं हाथधरूं वह पुरुष मरिजाय या प्रकार सम्पूर्ण प्राणीनके भयको देनवारो जो वर
है ताय महादेवजी सूं मागतभयो २१ हे भरतवंशोत्पन्न राजन् परीक्षित्! या प्रकार वृकासुरको वचन श्रवण करिके उदासीन से होयके अच्छी वातहै ऐसे मुसिकायके जैसे सर्पकूं दूध प्यावे हैं ऐसे
वृकासुरकूं वर देतभये २२ या प्रकार जातेकही निश्चय पार्व्वती के हरिवेकी है चाहना जाके ऐसो असुर है सो वर मिथ्याहै या सत्यहै यह परीक्षा लेवेके लिये महादेवजी के माथेपै हाथ धरिवे को
उपाय करतभयो तासमय अपने कर्तब ते भयभीत होयके शिवजी भाजतभये २३ असुर जिनके पीछे लग्यो ऐसे शिवजी डरपिके कँपतेहुये स्वर्गपर्यन्त भाजे और पृथ्वीको जहां पर्यन्त अन्तहो
तहाताई भाजे फेरि उत्तरदिशामें भाजिके गये २४ ता समय उपायकूं नहीं जानिके सम्पूर्ण देवता चुप होत भये ता पीछे प्रकाशमान माया ते परे ऐसो जो वैकुण्ठधाम है तामें जात भये २५ जा दु-

यस्ययस्यकरंशीर्ष्णि धास्येसम्रिय
वितरागितेवरम्॥ प्रीयेयतोयेननृणांप्रपद्यनामहोत्वयाऽऽत्माभृशमर्द्यतेवृथा २० देवंसवव्रेपापीयान् वरंभूतभयावहम्॥ यस्ययस्यकरंशीर्ष्णि धास्येसम्रिय
तामिति २१ तच्छ्रुत्वाभगवान्रुद्रोदुर्मनाइवभारत॥ ओमितिप्रहसंस्तस्मै ददेऽहेरमृतंयथा २२ इत्युक्तःसोऽसुरोनूनं गौरीहरणलालसः॥ सतद्वरपरीक्षार्थंश
म्भोर्मूर्ध्निकिलासुरः॥ स्वहस्तंधातुमारेभे सोऽबिभ्यत्स्वकृताच्छिवः २३ तेनोपसृष्टःसंत्रस्तः पराधावत्सवेपथुः॥ यावदन्तंदिवोभूमेःकाष्ठानामुदगादुदक्
२४ अजानन्तःप्रतिविधिं तूष्णीमासन्सुरेश्वराः॥ ततोवैकुण्ठमगमद्भास्वरंतमसःपरम् २५ यत्रनारायणःसाक्षान्न्यासिनांपरमागतिः॥ शान्तानांन्यस्त
दण्डानांयतोनावर्त्ततेगतः २६ तंतथाव्यसनंदृष्ट्वा भगवान्वृजिनार्दनः॥ दूरात्प्रत्युदियाद्भूत्वा वटुकोयोगमायया २७ मेखलाऽजिनदण्डाक्षैस्तेजसाऽ
ग्निरिवज्वलन्॥ अभिवादयामासचतं कुशपाणिर्विनीतवत् २८ श्रीभगवानुवाच॥ शाकुनेयभवान्व्यक्तं श्रान्तःकिंदूरमागतः॥ क्षणंविश्रम्यतांपुंस
आत्माऽयंसर्व्वकामधुक् २९ यदिनःश्रवणायाऽलं युष्मद्व्यवसितंविभो॥ भण्यतांप्रायशःपुम्भिर्धृतैःस्वार्थान्समीहते ३० श्रीशुकउवाच॥ एवंभगव

हां साक्षात् नारायण हैं जो संन्यासिन की परम गति हैं सो साक्षात् विराजमान हैं २६ दुःखन के
कुण्ठधाम में शान्त जिनको स्वभाव और दूरि भयो है कालको दण्ड जिनते ऐसे संन्यासीन कूं परमगति अर्थात् प्राप्त होयवे योग्य ऐसे नारायण हैं सो साक्षात् विराजमान हैं २६ दुःखन के
दूर करनवारे जो भगवान् नारायण हैं सो दौरयो चल्यो आवे है ता प्रकार कष्ट जाकूं ऐसो जो वृकासुर है ताइ दूरतेही देखिके अपनी योगमाया करिके ब्रह्मचारी को वेष मूंजकी कौंधनी मृग-
छाला दण्ड माला इनकूं पहिरिके तेजसू अग्निकी तुल्य प्रकाशमान होयके आयके कुशा है हाथमें जिनके ऐसे भगवान् हैं सो जैसे कोई नम्र होइके प्रणाम करे ऐसे प्रणाम करावत भये २७।२८
अब श्रीभगवान् कहे हैं हे शकुनिके पुत्र! तो कूं निश्चय खेदहै दूरि काहेकूं आयो क्षणभर विश्राम ले पुरुष कूं समस्त कामनान को देनवारो यह देह है ताकूं पीड़ा मतिदेय २९ हे समर्थ! जो
तुम्हारो अभिप्राय हमारे आगे सुनाइवे योग्यहै तो कहो जनहै सो वहुधा पुरुषनकी सहाय ते अपने कामकूं करे है या कारण तुम हमसूं कहो ३० अब श्रीशुकदेवजी कहे है हे राजन्

परीक्षित्! या प्रकार अमृतरूप वचनन करिके भगवान् ने पूछ्यो तब गयो है खेद जाको ऐसो वृकासुर है सो जैसे प्रथम तप कर्‍यो हो ताय कहत भयो ३१ अब श्रीभगवान् कहे हैं जो शिवने तुमकूं वर दियो है तो ताके वचनकूं हम सत्य नहीं माने हैं यह शिव दक्षके शाप करिके पिशाचन की दशाकूं प्राप्त भयो है और प्रेत पिशाचन को राजा है ३२ हे दानवन के इन्द्र! जगत्को गुरु जो महादेव है ताके वचनमें तोकू विश्वास है तो हे वृकासुर! तू शीघ्र अपने शिरपै हाथ धरिके परीक्षा ले ३३ हे दानवनमें श्रेष्ठ! या महादेव को वचन कैसे सत्य होयगो यह तो मिथ्यावादी है ऐसे महादेव कूं मार जो फेरि कभऊं मिथ्या न बोलेगो ३४ या प्रकार मनोहर विचित्र विचित्र जे भगवान्के वचन हैं तिन करिके भ्रष्ट भई है बुद्धि जाकी ऐसो कुबुद्धि वृकासुर है सो भूलिके अपने शिरपै अपनो हाथ धरतभयो ३५ शिरपै हाथधरे पीछे वज्रको मारो जैसे गिरे है ऐसे क्षणभरमें भिन्न शिर करिके गिरतभयो ता समय स्वर्ग में जय जय और नमःशब्द तथा साधुशब्द होतभयो ३६

तापृष्टोवचसाऽमृतवर्षिणा ॥ गतक्लमोऽब्रवीत्तस्मै यथापूर्वमनुष्ठितम् ३१ श्रीभगवानुवाच ॥ एवंचेत्तर्हितद्वाक्यंनवयंश्रद्दधीमहि ॥ योदक्षशापात्पैशाच्यं प्राप्तःप्रेतपिशाचराट् ३२ यदिवस्तत्रविश्रम्भोदानवेन्द्रजगद्गुरौ ॥ तर्ह्यङ्गाशुस्वशिरसि हस्तंन्यस्यप्रतीयताम् ३३ यद्यसत्यंवचःशम्भोः कथंचिद्दानवर्षभ ॥ तदैनं जह्यसद्वाचं नयद्वक्तानृतंपुनः ३४ इत्थंभगवतश्चित्रैर्वचोभिःससुपेशलैः ॥ भिन्नधीर्विस्मृतःशीर्ष्णि स्वहस्तंकुमतिर्व्यधात् ३५ अथापतद्भिन्नशिरावज्राहतइवक्षणात् ॥ जयशब्दोनमःशब्दःसाधुशब्दोऽभवद्दिवि ३६ मुमुचुःपुष्पवर्षाणि हतेपापेवृकासुरे ॥ देवर्षिपितृगन्धर्वा मोचितःसङ्कटाच्छिवः ३७ मुक्तंगिरिशमभ्याह भगवान्पुरुषोत्तमः ॥ अहोदेवमहादेव पापोऽयंस्वेनपाप्मना ३८ हतःकोनुमहत्स्वीशजन्तुर्वैकृतकिल्बिषः ॥ क्षेमीस्यात्किमुविश्वेशेकृतागस्कोजगद्गुरौ ३९ यएवमव्याकृतशक्त्युदन्वतःपरस्यसाक्षात्परमात्मनोहरेः ॥ गिरित्रमोक्षंकथयेच्छृणोतिवा विमुच्यतेसंसृतिभिस्तथाऽरिभिः ४० इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुद्रमोक्षणंनामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

श्रीशुकउवाच ॥ सरस्वत्यास्तटेराजन्नृषयःसत्रमासत ॥ वितर्कःसमभूत्तेषां त्रिष्वधीशेषुकोमहान् १ तस्यजिज्ञासयातेवैभृगुंब्रह्मसुतंनृप ॥ तज्ज्ञप्त्यै

पापात्मा वृकासुर मर्‍यो ता समय देवता ऋषि पितृ गन्धर्व ये फूलनकी वर्षा करतभये और शिवजी कष्ट ते छूटत भये ३७ जब शिवजी कष्टते छूटे तब पुरुषोत्तम भगवान् कहतभये अहो देव महादेव! यह वृकासुर पापी अपने पाप करिके मर्‍यो है ३८ हे ईश! बडेनको अपराध करे तें कौन प्राणी कल्याण कूं प्राप्त होइहै देखो विश्वके ईश्वर जगत् के गुरु तुमहौ तिनके अपराध करेतें भलो कदापि नहीं होय है ३९ वचन और मनते कहिबे में न आवें ऐसी अनेक शक्ति जिनमें रहें सब के कारण साक्षात् परमेश्वर जो श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनने शिवजी कूं कष्टते छुड़ाय दियो यह जो चरित्र है ताय जो पुरुष कहै और सुने वह संसार ते और वैरिनते छूटि जाय है ४० इति श्रीमन्महाभागवततात्पर्यार्थरूपिण्यांदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेरुद्रमोक्षणनामाष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

(नवाशीतितमेदेवःकोमहानितिसंशये ॥ परीक्ष्यविष्णोरुत्कर्षंमुनिभ्योऽवर्णयद्भृगुः १ नवासीवें अध्याय में कौन देव बड़ो है या संशय में भृगुजी परीक्षाकर विष्णुजीकी श्रेष्ठता मुनिन सूं वर्णन

करते भये १) अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! एक समय सरस्वती नदीके तटपै ऋषि यज्ञकरे हैं तहाँ ब्रह्मा विष्णु शिव इन तीनों देवतान में कौन बड़ो है ऐसो आपुस में झगरो होतभयो १ हे राजन् ! इनमें कौन बड़ोहै ताकी परीक्षाके लिये ब्रह्माके पुत्र भृगुकूं पठावतभये सो भृगु परीक्षा करिवे के निमित्त ब्रह्माकी सभामें जातभये २ ब्रह्माके स्वभावकी परीक्षा के लिये ब्रह्माके प्रणाम स्तुति कछु भी न करतभये ब्रह्माजी अपने क्रोधसूं मज्वलित होयके भृगुके ऊपर क्रोध करतभये ३ श्रीहरिते है जन्म जाको ऐसो ब्रह्मा अपने पुत्रके अर्थ चित्तमें उठ्यो जो क्रोध है ताय आपुही शान्त करतभये जैसे अपने कारण जलसूं अग्नि शान्त होइहै ऐसे ४ वहा से भृगुजी कैलास पर्व्वतपै शिवजी के पास जातभये ता समय शिवजी भय्या जो भृगुहै ताय उठिके मिलिवे कूं प्रीति करिके आरम्भ करतभये ५ भृगुजी महादेवजी सूं मिलिवे की इच्छा न करतभये क्योंकि तू अमंगलहै तासूं न मिलूंगो यह सुनिके महादेवजी बड़ो क्रोध करिके लाल नेत्र करिके हाथ में त्रिशूल लेके मारिवे को प्रारम्भ करतभये ६ ता समय पार्व्वती महादेवजी के पावनमें परिके कहति भई कि हे महाराज ! आपको भ्राताहै याकू कैसे मारोहौ ऐसी वाणी करिके शान्त कराति

प्रेषयामासुः सोऽभ्यगाद्ब्रह्मणःसभाम् २ नतस्मैप्रह्वणंस्तोत्रं चक्रेसत्त्वपरीक्षया ॥ तस्मैचुक्रोधभगवान् प्रज्वलन्स्वेनतेजसा ३ सआत्मन्युत्थितंमन्युमात्मजायात्मनाप्रभुः॥ अशीशमद्यथावह्निं स्वयोन्यावारिणाऽऽत्मभूः ४ ततःकैलासमगमत्सतंदेवोमहेश्वरः॥ परिरब्धुंसमारेभउत्थायभ्रातरंमुदा ५ नैच्छत्त्वमस्युत्पथगइतिदेवश्चुकोपह॥शूलमुद्यम्यतंहन्तुमारेभेतिग्मलोचनः ६ पतित्वापादयोर्देवी सान्त्वयामासतंगिरा॥ अथोजगामवैकुण्ठं यत्रदेवोजनार्दनः ७ शयानंश्रियउत्सङ्गे पदावक्षस्यताडयत्॥ ततउत्थायभगवान् सहलक्ष्म्यासतांगतिः ८ स्वतल्पादवरुह्याथ ननामशिरसामुनिम् ॥ आहतेस्वागतंब्रह्मन्निषीदात्राऽऽसनेक्षणम् ॥ अजानतामागतान्वः क्षन्तुमर्हथनःप्रभो ९ अतीवकोमलौतात चरणौतेमहामुने ॥ इत्युक्त्वाविप्रचरणौ मर्दयन्स्वेनपाणिना १० पुनीहिसहलोकंमां लोकपालांश्चमद्गतान् ॥ पादोदकेनभवतस्तीर्थानांतीर्थकारिणा ११ अद्याहंभगवँल्लक्ष्म्याआसमेकान्तभाजनम् ॥ वत्स्यत्युरसिमेभूतिर्भवत्पादहतांहसः १२ श्रीशुकउवाच ॥ एवंब्रुवाणेवैकुण्ठेभृगुस्तन्मन्द्रयागिरा ॥ निर्वृतस्तर्पितस्तूष्णीं भक्त्युत्कण्ठोऽश्रुलोचनः १३ पुनश्चसत्र

भई ताके पीछे भृगु वैकुण्ठमें जातभये जहा जनार्दन भगवान् वास करेहैं ७ लक्ष्मीकी गोदमें सोवैं जो विष्णु हैं तिनके हृदयमें पांवकी लात मारतभयो तदनन्तर साधुनकी गति जे विष्णु हैं ते लक्ष्मीसहित पलँगपै ते उठिके पृथ्वीमें मस्तक धरिके भृगुजी कूं प्रणाम करतभये ८ और कहतभये कि हे ब्रह्मन् ! तुम भलेआये नेक आसनपै वैठिजावो हे समर्थ ! आपके आयवेकू नहीं जानें जे हम तिनके अपराधकूं क्षमाकरो ९ हे तात ! हे महामुनि ! तुम्हारे चरण कोमल हैं और मेरी छाती कठोर है तुम्हारे चरणमें चोट लगी होयगी या प्रकार कहिके अपने हाथ ते ब्राह्मण के चरणनकूं सहरावन लगे १० गङ्गादिक तीर्थनको पवित्र करनवारो जो तुम्हारो चरणोदकहै ताकरिके लोकन समेत मोको और मेरे भीतरके लोकपालन को पवित्रकरौ ११ हे भगवन् ! अब मैं लक्ष्मीके वास करिवे को एकान्त पात्र भयो तुम्हारे चरणस्पर्श ते पाप दूरिभये मेरी छाती में लक्ष्मी वास करै १२ अब श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित् ! या प्रकार नारायण के कहतेहुये

तिनकी मनोहर वाणी करिके तृप्त होयके भक्ति करिके चाह जिनके आंसू नेत्रनमें आयगये ऐसे भृगुजी सुखी होयके चुप होतभये १३ हे राजन् परीक्षित्! भृगुजी फेरि अपने यज्ञमें आयके वेदके
पढ़नवारे मुनिन सूं तीनोंन की जो बात देखि आये ताय सम्पूर्ण कहतभये १४ भृगुकी बात सुनिके आश्चर्ययुक्त भये और सन्देह जिनके दूरिभये ऐसे मुनि हैं ते इतनो अपनो अपराध कियो परन्तु
क्रोध न आयो विष्णु भगवान्में ही शान्ति है और काहू देवतामें नहीं है याते सबते बड़े विष्णुभगवान् हैं यही निश्चय करतभये १५ साक्षात् धर्म्म और धर्म्म के लिये ज्ञान तथा वैराग्य और
आठप्रकारके ऐश्वर्य और आत्माके मलनकूं दूरि करनवारो यश ये सम्पूर्ण भगवान्के विषेही हैं १६ दूरि भयो है कालको दण्ड जिनते शान्तस्वभाव और समानचित्त जिनके निष्किञ्चन अर्था-
त् काहू वस्तुकी जिनके चाहना नहीं ऐसे जे साधु मुनि हैं तिनकूं भगवान् प्राप्त होयवे योग्य हैं यह कहे हैं १७ सत्त्वगुण है सो भगवान् को प्यारो रूपहै और ब्राह्मण हैं ते भगवान् के इष्ट
देवता हैं जिनके ऐसे भगवान् हैं तिनको नहीं है कोई बातकी चाहना जिनके निपुणहै बुद्धि जिनकी ऐसे शान्तपुरुष भजन करे हैं १८ तिन भगवान् ने अपनी गुणिनी माया करिके सत्त्वगुणी

माव्रज्य मुनीनांब्रह्मवादिनाम् ॥ स्वानुभूतमशेषेण राजन्भृगुरवर्णयत् १४ तन्निशम्याथमुनयोविस्मितामुक्तसंशयाः ॥ भूयांसंश्रद्दधुर्विष्णुं यतःशान्तिर्य
तोऽभयम् १५ धर्मःसाक्षाद्यतोज्ञानं वैराग्यंचतदन्वितम् ॥ ऐश्वर्यंचाष्टधायस्माद्यशश्चात्ममलापहम् १६ मुनीनांन्यस्तदण्डानांशान्तानांसमचेतसाम् ॥
अकिञ्चनानांसाधूनां यमाहुःपरमांगतिम् १७ सत्त्वंयस्यप्रियामूर्त्तिर्ब्राह्मणास्त्विष्टदेवताः ॥ भजन्त्यनाशिषःशान्तायंवानिपुणबुद्धयः १८ त्रिविधाकृ
तयस्तस्य राक्षसाअसुराःसुराः ॥ गुणिन्यामायसासृष्टाःसत्त्वंतत्तीर्थसाधनम् १९ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एवंसारस्वताविप्रानृणांसंशयनुत्तये ॥ पुरुषस्यपदा
म्भोजसेवयातद्गतिंगताः २० ॥ सूतउवाच ॥ इत्येतन्मुनितनयास्यपद्मगन्धपीयूषंभवभयभित्परस्यपुंसः ॥ सुश्लोकंश्रवणपुटैःपिबन्त्यभीक्ष्णं पान्थो
ध्वभ्रमणपरिश्रमंजहाति २१ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ एकदाद्वारवत्यांतु विप्रपत्न्याःकुमारकः ॥ जातमात्रोभुवंस्पृष्ट्वा ममारकिलभारत २२ विप्रोगृहीत्वा
मृतकं राजद्वार्युपधायसः ॥ इदंप्रोवाचविलपन्नातुरोदीनमानसः २३ ब्रह्मद्विषःशठधियोलुब्धस्यविषयात्मनः ॥ क्षत्रबन्धोःकर्मदोषात्पञ्चत्वंमेगतोऽर्भ

रजोगुणी तमोगुणी तीनप्रकार के राक्षस असुर और देवता रचे हैं तिनमें सत्त्वगुणीरूप है सोही पुरुषार्थ को हेतुहै १९ अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या प्रकार सरस्वती के तीर-
वासी ब्राह्मण हैं ते मनुष्यन के सन्देह दूरि करिबे के लिये श्रीकृष्ण के चरणारविन्द की सेवा करिके श्रीकृष्णचन्द्रकीही गतिकूं पावतभये २० अव सूतजी कहे हैं हे ऋषीश्वरो! व्यासदेवमुनि
के पुत्र जे शुकदेवजी हैं तिनके मुखकमलकी सुगन्ध जामें मिली ऐसो जो अमृततुल्य संसार के भयको काटनवारो श्रेष्ठपुरुष श्रीकृष्णचन्द्र को सुन्दर यश है ताय कानरूपी दोनान में भरिके जो
पुरुष पानकरेगो वह संसार के आवागमनके परिश्रमसूं छूटि जायगो २१ अव श्रीशुकदेवजी कहे हैं हे राजन् परीक्षित्! या चरित्रमें श्रीकृष्णचन्द्र को उत्कर्ष कह्यो अव श्रीकृष्णचन्द्रको ही उत्कर्ष
निकसे ऐसो और चरित्रहै ताय वर्णनकरे हैं एकसमय द्वारकामें हे राजन् परीक्षित्! एक ब्राह्मणकी स्त्री को पुत्र जन्म होत पृथ्वीको स्पर्श करतेही मरतभयो २२ वह ब्राह्मण मरे पुत्रकूं लैके राजा

उग्रसेन की ड्योढ़ी पै धरिके विलाप करत आतुर होय दीनमन होयके यह कहतभयो २३ ब्राह्मणन को द्वेषी शठबुद्धि लोभी विषयनमें आसक्तहै मन जाको ऐसो जो क्षत्रियनमें अधम यह राजा है ताके कर्म्मदोष ते मेरो पुत्र मर्यो है मेरो कुछ दोष नहीं है २४ हिंसामें है विहार जाको खोंटोस्वभाव जाको नहीं जीती हैं इन्द्रिय जाने ऐसो जो राजा है ताय जे प्रजा सेवन करें हैं ते दरिद्री नित्यही दुःखयुक्त रहकर क्लेशकूं पावे हैं २५ याही प्रकार ब्राह्मणह्मापि दूसरे पुत्रकूं फेरि तीसरेपुत्रकूं लैके राजा के द्वारपै धरिके यही कहत भयो कि मेरो कछु दोष नहीं है या राजा के दोष ते मेरे पुत्र मरे हैं २६ काहू एकसमय अर्ज्जुनहै सो श्रीकृष्णचन्द्र के निकट ब्राह्मणकी वात श्रवणकरिके नवम बालक जब मरिचुको तब ब्राह्मण ते बोलतभयो २७ हे ब्राह्मण ! तू काहे के निमित्त रोदन करे है तेरो स्थान जो द्वारकाहै तामें धनुषको धारण करनवारो कोई क्षत्रियन में अधमहू नहीं है जो ब्राह्मणकी सेवाकरै जैसे यज्ञमें ब्राह्मण इकट्ठे होय बैठे हैं ऐसे ये यादव मिलि बैठे हैं २८ हे भगवन् ! जिन यादवन के जीवत धन स्त्री पुत्र जिनके गये ऐसे ब्राह्मण शोच करे हैं प्रजाके पोषण करनवारे क्षत्रियन के वेषसूं अपने प्राणनको पोषण विचारे नटके समान करे हैं २९ हे

कः २४ हिंसाविहारंनृपतिं दुःशीलमजितेन्द्रियम् ॥ प्रजाभजन्त्यःसीदन्तिदरिद्रानित्यदुःखिताः २५ एवंद्वितीयंविप्रर्षिस्तृतीयंत्वेवमेवच ॥ विसृज्यसनृप

द्वारि तांगाथांसमगायत २६ तामर्ज्जुनउपश्रुत्य कर्हिचित्केशवान्तिके ॥ परेतेनवमेबाले ब्राह्मणंसमभाषत २७ किंस्विद्ब्रह्मंस्त्वन्निवासे इहनास्तिध

नुर्धरः ॥ राजन्यबन्धुरेतेवै ब्राह्मणाःसत्रमासते २८ धनदारात्मजापृक्तायत्रशोचन्तिब्राह्मणाः ॥ तेवैराजन्यवेषेण नटाजीवन्त्यसुम्भराः २९ अहंप्र

जांवांभगवन्रक्षिष्येदीनयोरिह ॥ अनिस्तीर्णप्रतिज्ञोऽग्निं प्रवेक्ष्येहतकल्मषः ३० ब्राह्मणउवाच ॥ संकर्षणोवासुदेवःप्रद्युम्नोधन्विनांवरः ॥ अनिरुद्धोऽप्रति

रथोनत्रातुंशक्नुवन्तियत् ३१ तत्कथंनुभवान्कर्म्मदुष्करंजगदीश्वरैः ॥ चिकीर्षसित्वंबालिश्यात्तन्नश्रद्दध्महेवयम् ३२ ॥ अर्ज्जुनउवाच ॥ नाहंसंकर्षणोब्रह्म

न् नकृष्णःकार्ष्णिरेवच ॥ अहंवाअर्ज्जुनोनामगाण्डीवंयस्यवैधनुः ३३ मावमंस्थाममब्रह्मन् वीर्य्यंत्र्यम्बकतोषणम् ॥ मृत्युंविजित्यप्रधने आनेष्येतेप्रजां

प्रभो ३४ एवंविश्रम्भितोविप्रः फाल्गुनेनपरंतप ॥ जगामस्वगृहंप्रीतःपार्थवीर्य्यंनिशामयन् ३५ प्रसूतिकालआसन्ने भार्य्याद्विजसत्तमः ॥ पाहिपाहि

ब्राह्मण ! दीन जो तुमहौ तिनके पुत्रनकी मैं रक्षा करूंगो और जो मोपै रक्षा न होयगी अर्थात् मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण न होयगी तो ब्राह्मण की प्रीति करे विना नहीं गये हैं पाप जाके ऐसो मैं अग्नि में जरूंगो ३० अब ब्राह्मण कहे है सङ्कर्षण वासुदेव और धनुर्द्धारीन में श्रेष्ठ प्रद्युम्नजी तथा जाकी बराबरिको योद्धा कोई नहीं ऐसो अनिरुद्ध ये सब मेरे बालककी रक्षा करिवे कूं जो समर्थ न होत भये ३१ तो जगत्के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जा कर्म्म कूं न करिसके वा कर्म्मकूं तू अर्ज्जुन कैसे करिसकेगो तू अज्ञानते कर्यो चाहे है यह हम निश्चय नहीं माने हैं ३२ अब अर्ज्जुन कहे है के हे ब्राह्मण ! तैंने यौन कायरनके नाम मेरे सम्मुख लिये मैं संकर्षण नहीं हूं कृष्ण नहीं हूं कृष्णको पुत्र प्रद्युम्न नहींहूं गाण्डीव है धनुष जाको ऐसो अर्ज्जुन नामी क्षत्रिय हूं ३३ हे ब्राह्मण ! तू मेरो अपमान मतिकरे महादेवको प्रसन्न करनवारो मेरो पराक्रम है हे समर्थ ब्राह्मण ! संग्राम विषे मृत्युकूं जीतिके तेरे पुत्र लायके देउंगो ३४ हे शत्रुन के तापके दूरि करनवारे राजा परीक्षित् ! या प्र-

कार धृष्टता के वचनन करिके विश्वास जाकूं दियो ऐसो जो ब्राह्मणहै सो अर्ज्जुनके पराक्रमकूं श्रवणकरिके प्रसन्नहोय अपने घरकूं आवत भयो ३५ जब स्त्रीकूं प्रसूतिकाल को समय आयो तब ब्राह्म-
णहै सो मृत्यु ते पुत्र की रक्षाकर रक्षाकर या प्रकार वारंवार आतुरहोय अर्ज्जुन ते कहत भयो ३६ ता समय अर्ज्जुन पवित्र जलको स्पर्श करिके शिवजीकूं नमस्कार करिके दिव्यशस्त्रन को स्मरण
करिके पूर्व्यंचाचढाय गाण्डीवधनुष्कूं हाथमें लेतभयो ३७ अनेक अस्त्रनमें मिलाये जे बाणहै तिनकरिके सोघरिके घरको आच्छादित करतभयो तिरछे बाण चलाये ऊपरकूं चलाये नीचेकूं चलाय
के घरके ऊपर बाणनको अर्ज्जुन पंजरा सों करतभयो ३८ तापीछे ब्राह्मणकी स्त्रीके जन्म्यो जो बालकहै सो वारवार रोदन करिके शीघ्रही शरीरसहित आकाशमार्ग होयके जातभयो और वेर
देह परचो रहे हो अबकी देह भी न रह्यो ३९ ता समय ब्राह्मण श्रीकृष्णचन्द्रके निकटही अर्ज्जुन की निन्दा करत यह कहत भयो मेरी मूढता देखो जा मैंने या नपुंसक अर्ज्जुनको कह्यो सत्य मान्यो
४० प्रद्युम्नजी और अनिरुद्ध तथा बलदेवजी और श्रीकृष्णचन्द्र ये सम्पूर्ण मिलिके जाकी रक्षा न करिसके ताकी रक्षा करिवेकूं और कौन समर्थहै ४१ मिथ्यावादी जो अर्जुनहै ताय धिक्कारहै खोटीहै बुद्धि

प्रजां मृत्योरित्याहार्जुनमातुरः ३६ स उपस्पृश्य शुच्यम्भो नमस्कृत्य महेश्वरम् ॥ दिव्यान्यस्त्राणि संस्मृत्य सज्यं गाण्डीवमाददे ३७ न्यरुणत्सूतिकागारं शरै
र्नानाऽस्त्रयोजितैः ॥ तिर्यगूर्ध्वमधः पार्थश्चकार शरपञ्जरम् ३८ ततः कुमारः संजातो विप्रपत्न्या रुदन्मुहुः ॥ सद्योऽदर्शनमापेदे सशरीरो विहायसा ३९ तदाह
विप्रो विजयं विनिन्दन्कृष्णसन्निधौ ॥ मौढ्यं पश्यत मे योऽहं श्रद्दधे क्लीबकत्थनम् ४० न प्रद्युम्नो नानिरुद्धो न रामो न च केशवः ॥ यस्य शेकुः परित्रातुं कोऽन्य
स्तदवितेश्वरः ४१ धिगर्ज्जुनं मृषावादं धिगात्मश्लाघिनो धनुः ॥ दैवोपसृष्टं यो मौढ्यादानिनीषति दुर्मतिः ४२ एवं शपति विप्रर्षौ विद्यामास्थाय फाल्गुनः ॥
ययौ संयमनीमाशु यत्रास्ते भगवान्यमः ४३ विप्रापत्यमचक्षाणस्तत ऐन्द्रीमगात्पुरीम् ॥ आग्नेयीं नैर्ऋतीं सौम्यां वायव्यां वारुणीमथ ॥ रसातलं नाकपृ
ष्ठं धिष्ण्यान्यन्यान्युदायुधः ४४ ततोऽलब्ध्वा द्विजसुतो ह्यनिस्तीर्णप्रतिश्रुतः ॥ अग्निं विविक्षुः कृष्णेन प्रत्युक्तः प्रतिषेधता ४५ दर्शये द्विजसूनूंस्ते माऽवज्ञाऽऽत्मा
नमात्मना ॥ ये ते हि कीर्तिं विमलां मनुष्याः स्थापयिष्यन्ति ४६ इति संभाष्य भगवानर्ज्जुनेन सहेश्वरः ॥ दिव्यं स्वरथमास्थाय प्रतीचीं दिशमाविशत् ४७ सप्त

जाकी ऐसो यह अर्ज्जुन है सो दैवने हरचो जो बालक ताय मूढता सूं लायो चाहेहै ४२ या प्रकार जब ब्राह्मणने खोटो वचन कह्यो तब अर्ज्जुन विद्याकूं धारण करिके जहां कि भगवान् यम विराजे
हैं वा संयमनीपुरी को शीघ्र जात भयो ४३ तहां यमराजकी पुरी में पुत्र कूं न देख्यो तब वहां ते अर्ज्जुन इन्द्रकी पुरी में जात भयो फेरि अग्निकी पुरी में जातभयो निर्ऋतिकी पुरीमें जात भयो कु-
बेर की पुरीमें जात भयो वायुकी पुरीमें जातभयो वरुणकी पुरीमें जातभयो याके पीछे रसातलमें जातभयो और स्वर्गमें जातभयो धनुषकूं उठाये और जे स्थानहैं तिनमें जातभयो ४४ सर्व्वत्र ढूंढि आये
ता पीछे नहीं मिल्यो है ब्राह्मण को पुत्र जाकू याते भ्रष्ट भई प्रतिज्ञा जाकी अग्नि में धसिबे की इच्छा करै ऐसे अर्ज्जुनकूं श्रीकृष्णचन्द्र नाहीं करतभये ४५ ब्राह्मणके पुत्रकूं मैं लायदेउँगो तू अग्नि में
जरे मति तुम लाइ देउगे तो मोकूं कहा तहां श्रीकृष्णचन्द्र कहे हैं कि जे निन्दा करेंगे तेही मनुष्य हमारो यशभी कहेंगे अर्ज्जुनके रथवान् श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण के पुत्र लाय दिये महाराज अर्ज्जुन

लाय दे तो यामें कहा सन्देह है ४६ समर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो या प्रकार कहिके अर्जुनकूं सङ्ग लैके अलौकिक जो अपनो रथहै तामें चढ़िकै पश्चिमदिशाकूं जात भये ४७ सात सातहैं पर्वत जिनमें ऐसे जे सात द्वीपहैं तिनें उल्लंघन करिके तथा सात समुद्रनकूं और लोकालोकपर्वतकूं उल्लंघनकरिके बडो जो अन्धकार है तामें धसतभये ४८ हे भरतवंशीन में श्रेष्ठ राजा परीक्षित् ! ता अन्धकार में शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक ये हैं नाम जिनके ऐसे रथके घोडानकी गति शिथिल होति भई,४९ महायोगेश्वरनके ईश्वर जे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र हैं ते घोड़ानकी शिथिल गतिकूं देखिके हजार सूर्यको है तेज जामें ऐसो अपनो सुदर्शन चक्रहै ताय रथके आगे चलिवेकी आज्ञा देतभये ५० अतिघोर सघन प्रकृतिको परिणामरूप जो बड़ो अन्धकार है ताय अपनी उत्कृष्ट कान्ति करिके विदीर्ण करत मनकी तुल्यहै वेग जाको ऐसो सुदर्शनचक्रहै सो जैसे मत्यश्चा ते छूटिके रामचन्द्रको बाण सेनामें प्रवेश करेहै ऐसे प्रवेश करत भयो ५१ चक्रके पीछे जो गमन है ता करिके वा अन्धकार ते परे वर्त्तमान ऐसो श्रेष्ठ व्याप्त जो भगवान् को प्रकाशरूपहै ताय देखिके चकचौंधी जाकी आखिन कू लगी ऐसो अर्ज्जुन दोनों नेत्रनकू मूंदत भयो ५२ ता पीछे बड़ी पवन

द्वीपान्सप्तसिन्धूंन्सप्तसप्तगिरीनथ ॥ लोकालोकंतथाऽतीत्यविवेशसुमहत्तमः ४८ तत्राश्वाःशैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ॥ तमसिभ्रष्टगतयोबभूवुर्भरतर्षभ ४९ तान्दृष्ट्वाभगवान्कृष्णोमहायोगेश्वरेश्वरः॥ सहस्रादित्यसङ्काशंस्वचक्रंप्राहिणोत्पुरः ५० तमःसुघोरंगहनंकृतंमहद्विदारयद्भूरितरेणरोचिषा॥ मनोजवंनिर्विविशेसुदर्शनं गुणच्युतोरामशरोयथाचमूः ५१ द्वारेणचक्रानुपथेनतत्तमः परम्परंज्योतिरनन्तपारम्॥ समश्नुवानंप्रसमीक्ष्यफाल्गुनः प्रताडिताक्षोऽपिदधेऽक्षिणीउभे ५२ ततःप्रविष्टःसलिलंनभस्वताबलीयसैजद्बृहदूर्मिभूषणम्॥ तत्राद्भुतंवैभवनंद्युमत्तमं भ्राजन्मणिस्तम्भसहस्रशोभितम् ५३ तस्मिन्महाभीममनन्तमद्भुतं सहस्रमूर्द्धन्यफणामणिद्युभिः॥ विभ्राजमानंद्विगुणोल्बणेक्षणं सिताचलाभंशितिकण्ठजिह्वम् ५४ ददर्शतद्भोगसुखासनंविभुं महानुभावंपुरुषोत्तमोत्तमम्॥ सान्द्राम्बुदाभंसुपिशङ्गवाससंप्रसन्नवक्त्रंरुचिरायतेक्षणम् ५५ महामणिव्रातकिरीटकुण्डलप्रभापरिक्षिप्तसहस्रकुन्तलम्॥ प्रलम्बचार्वष्टभुजंसकौस्तुभंश्रीवत्सलक्ष्म्यावनमालयावृतम् ५६ सुनन्दनन्दप्रमुखैःस्वपार्षदैश्चक्रादिभिर्मूर्त्तिधरैर्निजायुधैः॥ पुष्ट्याश्रियाकीर्त्त्यजयाऽखिल

जो चली तासू उड़ी जे लहरें तिनसूं शोभायमान जो जलहै तामें वह रथ जात भयो ता जलमें प्रकाशमान वस्तु हैं तिनमें श्रेष्ठ और देदीप्यमान ऐसे हजारन मणिनके खम्भ लगे हैं तिनसूं शोभायमान जो अद्भुत भवन है ताय देखत भये ५३ ता भवन में बड़ो है देह जाको अद्भुत सहस्रमस्तकनमें जे मणि तिनकी कान्ति करिके प्रकाशमान दो हजार नेत्रन करिके शोभायमान स्फटिक मणिके पर्वतकी तुल्यहै कान्ति,जाकी और नीली श्वेत हैं जिह्वा जाकी ऐसे शेषनाग कूं अर्ज्जुन देखत भयो ५४ ता शेषनाग को देहहै सुखदायक आसन जिनके बड़ो प्रभाव जिनके ऐसे पुरुषन में जो उत्तम तिनके उत्तम जो भूमा पुरुष हैं तिनें अर्ज्जुन देखत भये कैसे भूमा पुरुष हैं वर्षाऊ मेघकी तुल्यहै कान्ति जिनकी सुन्दर पीतवस्त्रन कूं धारण करे प्रसन्न है मुख जिनको मनोहर बड़े हैं नेत्र जिनके ५५ बड़ी मणि जिनमें जड़ी ऐसे जे किरीट और कुण्डल तिनकी कान्ति करिके शोभायमान हैं केश जिनके लम्बी सुन्दर है आठ भुजा जिनकी कौस्तुभमणि कूं धारण करे भृगुलताको

है ताके उत्सव करिके प्रकाशमान हैं मुख जिनके ऐसी शोभायमान होतिभई १० तिन स्त्रीनके स्तनन को लग्यो है केसर मालामें जिनके और खेलमें जो आसक्त हैं तासूं कम्पायमानहैं शिरको जूड़ो जिनको और स्त्रीनने वारंवार छिरके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र आप स्त्रीनकूं छींटा देते और स्त्रियन सूं सींचे जाकर जैसे हथिनीन के सङ्ग हाथी रमणकरे ऐसे स्त्रीनके सङ्ग रमण करतभये ११ नट हैं तिनकूं और नाचनवारीन कूं गीत गायके तथा बाजे बजाय के जीविका करें तिनकूं श्रीकृष्णचन्द्र और उनकी स्त्री हैं ते क्रीड़ा करिबेके अलङ्कार और वस्त्र ये देतभये १२ या प्रकार विहारकरें जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनकी चलनि बोलनि देखनि मुसिकानि और हास्यकी वार्त्ता क्रीड़ा आलिङ्गन इनकरिके निश्चय स्त्रीनकी बुद्धि हरिगई है १३ मुकुन्द श्रीकृष्णचन्द्र में हैं एक बुद्धि जिनकी ऐसी स्त्री हैं ते प्रथम चुपहोयके फेरि श्रीकृष्णचन्द्र को ध्यान करत उन्मत्त होयके जड़की तुल्य होयके जे वचन कहति भई तिन वचनन कूं मैं कहूं हूं सुनो १४ श्रीकृष्णचन्द्र के प्रेम करिके स्त्रीनकी यह दशा होयगई मानों हमारे पास ते प्यारो दूरिगयोहै याते मतवारेकी तुल्य वार्त्ता कहनेलगीं हे टटा टीहरी ! तोकूं नींद नहीं आवेहै विलाप करे है सोवे नहीं है संसारमें छिप्यो है ज्ञान जिनको

नो रेमे करेणुभिरिवेभपतिःपरीतः ११ नटानांनर्त्तकीनांचगीतवाद्योपजीविनाम्॥ क्रीडाऽलङ्कारवासांसि कृष्णोऽदात्तस्यचस्त्रियः १२ कृष्णस्यैवंविहरतोगत्यालापेक्षितस्मितैः॥ नर्मक्ष्वेलिपरिष्वङ्गैःस्त्रीणांकिलहृताधियः १३ ऊचुर्मुकुन्दैकधियोगिरउन्मत्तवज्जडम् ॥ चिन्तयन्त्योऽरविन्दाक्षं तानिमेगदतःशृणु १४ ॥ महिष्यऊचुः॥ कुररिविलपसित्वंवीतनिद्रानशेषे स्वपितिजगतिराज्यामीश्वरोगुप्तबोधः॥ वयमिवसखिकच्चिद्गाढनिर्भिन्नचेतानलिननयनहासोदारलीलेक्षितेन १५ नेत्रेनिमीलयसिनक्तमदृष्टबन्धुस्त्वंरोरवीषिकरुणंवनचक्रवाकि॥ दास्यंगतावयमिवाच्युतपादजुष्टां किंवास्रजंस्पृहयसेकबरेणवोढुम् १६ भोभोःसदानिष्टनसेउदन्वन्नलब्धनिद्रोऽधिगतप्रजागरः ॥ किंवामुकुन्दापहृतात्मलाञ्छनःप्राप्तांदशांत्वंचगतोदुरत्ययाम् १७ त्वंयक्ष्मणाबलवताऽसिगृहीतइन्दोक्षीणस्तमोननिजदीधितिभिःक्षिणोषि॥ कच्चिन्मुकुन्दगदितानियथावयंत्वं विस्मृत्यभोःस्थगितगीरुपलक्ष्यसेनः १८ किंत्वाचरितमस्माभिर्मल

ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र रात्रिमें सोवे हैं तू बोलिके सोवन नहीं देइहै यह तोकूं उचित नहींहै यह कहे हैं हे सखी ! कहा हमारीसी नाईं कमलनेत्र श्रीकृष्णचन्द्रकी हास उदार लीलापूर्व्वक चितवनिसूं तेरो चित्त बँधिगयोहै याही ते पुकारेहै? ५ हे चकवी! तेरेनेन नहींलगेहैं रात्रिमें नहीं देख्योहै अपनो पतिजाने अर्थात् बिछुर गयोहै पति जाको ऐसी तू करुणा जामें उपजै ऐसे रोदन करेहै बड़ो खेदहै अथवा दास्यभावमें प्राप्त भई जे हम हैं तिनकी तुल्य श्रीकृष्णचन्द्रके चरणकी प्रसादी जो माला है ताय अपनी चोटी पै चढायवेकी इच्छाकरे है याही ते रोवे है १६ हे समुद्र ! नहीं प्राप्तभई है निद्रा जाके नित्य जागरण करत सदा पुकारे जो तू है अथवा हमारी सी दुरत्यय दशा तेरी भी है जैसे भोग करिके मुकुन्दने हमारे कुचनकी केसर लीनीहै ऐसे तोकूं भी मथिकै लक्ष्मी कौस्तुभमणि ये निकासिलीनी है ऐसो हमकूं दिखाई देइहै १७ हे चन्द्रमा ! तोकूं बलिष्ठ जो क्षयीको रोगहै ताने ग्रहण करिलियो है याही ते तू क्षीणताकूं प्राप्तभयो है अपनी किरणन करिके अन्धकार कूं नहीं दूरि करैहै हमारीसी नाईं मुकुन्दकी रहस्यवार्त्तानकू भूलिके ताही चिन्ताके मारे क्षीण होयगयोहै अर्थात् थकीहै वाणी जाकी ऐसो हमकूं दिखाईदेयहै १८ हेमलयाचलकी पवन! हमने तेरो कहा अप्रियकरोहै जो तू गोविन्द

के अङ्ग कटाक्षसूं भिदेभये हमारे हृदय में कामदेवकूं मेरणकरेहै १९ हे मेघ! हे श्रीमन्! यादवनके इन्द्र जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनको तू निश्चय प्यारो मित्रहै याहीते प्रेमकरिके बंध्यो जो तूहै सो भृगुलता को है चिह्न जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रको हमारी नाईं ध्यानकरेहै वहीहै चाहना जाके ऐसो आर्द्रहृदय जो तूहै सो अपने मित्र श्रीकृष्णचन्द्रको स्मरण करिके वारंवार हमारी तुल्य मानों आसून की धारा वहावैहै परन्तु ताको प्रसंग दुःखदायी है २० शोभायमानहै कण्ठ जाको ऐसी हे कोकिल! अमृतकूं जिवावे ऐसी कोमलवाणी करिके प्यारीवात कूं कहै ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं तिनके तू वचननकूं कहेहै अब तेरो मैं कहा प्रिय करूं तू मोते कह २१ हे उदारबुद्धे! हे पर्व्वत! तू चलेभी नहीं है और बोलेभी नहींहै बड़े अर्थकी चिन्ताकरेहै जैसे वसुदेवनन्दनके चरणनकूं हम अपने स्तननसूं धरिवेकी चाहना करेहै ऐसे तूभी अपने शिखरनसूं धरिवेकी इच्छाकरे है जो धरैगो तो हमारीसी दशा तेरीभी होयगी २२ हे समुद्रकी पत्नी नदियो! अब ग्रीष्मऋतुमें समुद्र मेघनके द्वारा अमृतकी धारा वर्षायके तुम्हें नहीं आनन्ददेइहै वड़ोकष्टहै याहीते तुम्हारे हृद सूखिके लटिगईहौ कमलनकी शोभाऊ जाति रहीहै जैसे वाञ्छित पति यदुपति श्रीकृष्णचन्द्रकी स्नेह भरी चितवनिके परे विना हमारे हृदय चुरायगये

यानिलतेऽप्रियम् ॥ गोविन्दापाङ्गनिर्भिन्ने हृदीरयसिनःस्मरम् १९ मेघश्रीमंस्त्वमसिदयितोयादवेन्द्रस्यनूनं श्रीवत्साङ्कंवयमिवभवान्ध्यायतिप्रेमबद्धः ॥ अत्युत्कण्ठःशवलहृदयोस्मद्विधोवाष्पधाराः स्मृत्वास्मृत्वाविसृजसिमुहुर्दुःखदस्तत्प्रसङ्गः २० प्रियरावपदानिभाषसेऽमृतसञ्जीविकयाऽनयागिरा ॥ करवाणिकिमद्यतेप्रियंवदमेवल्गितकण्ठकोकिल २१ नचलसिनवदस्युदारबुद्धे क्षितिधरचिन्तयसेमहान्तमर्थम् ॥ अपिवतवसुदेवनन्दनाङ्घ्रिंवयमिवकामयसेस्तनैर्विधर्त्तुम् २२ शुष्यद्ध्रदाःकरशितावतसिन्धुपत्न्यःसम्प्रत्यपास्तकमलश्रियइष्टभर्त्तुः ॥ यद्वद्वयंयदुपतेःप्रणयावलोकमप्राप्यमुष्टहृदयाःपुरुकर्शिताःस्म २३ हंसस्वागतमास्यतांपिबपयोब्रूह्यङ्गशौरेःकथां दूतंत्वांनुविदामकच्चिदजितःस्वस्त्यास्तउक्तंपुरा ॥ किंवानश्चलसौहृदःस्मरतितंकस्माद्भजामोवयंक्षौद्रालापयकामदंश्रियमृतेसैवैकनिष्ठास्त्रियाम् २४ इतीदृशेनभावेन कृष्णेयोगेश्वरेश्वरे ॥ क्रियमाणेनमाधव्योलेभिरेपरमाङ्गतिम् २५ श्रुतमात्रोऽपियःस्त्री

हम लटी हैं ऐसे २३ तासमय दैवयोग सूं आयो जो हंस ताकूं दूत मानिकै कहे हैं हे हंस! तू भल्यो आयो वैठ दूध पीले हे मित्र! श्रीकृष्णचन्द्रकी कथा कह हम तोकूं वाको दूत जानैं हैं कहा श्रीकृष्णचन्द्र कुशलसूं हैं चलायमानहै स्नेह जाको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रने एकान्तमें जो हमसूं कह्यो ताको कभऊं स्मरणकरे हैं जो कहो कि स्मरण करिकेही हमकूं पठायो है तापर कहे हैं हे कपटीके दूत हंस! हम किस हेतु वाको भजें जो कहो कि कामके अर्थ बुलावें हैं तो उनहीं को लक्ष्मी के विना क्यों न बुलायलावो जो कहो कि लक्ष्मी तो केवल कृष्णकेही आश्रितहै ताको छोड़िके कैसे आवेंगे तापर कहे हैं कि स्त्रीन में कहा लक्ष्मीही एक कृष्णके आश्रित है हम सबभी तो वाही के आश्रित है २४ योगेश्वरन के ईश्वर जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनमें ऐसे भाव करिके श्रीकृष्णचन्द्र की स्त्री हैं ते वैष्णव की गतिकूं पावति भई २५ वहुत से गीतन करिके वहुत प्रकार गाये ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो श्रवण करते स्त्रीन के मन कूं जोरावरी हरि लेइ हैं और देखनवारी स्त्रीनके मनकूं

हरें यामें फेरि कहा कहनो है २६ जगत् के गुरु जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनें जे स्त्री हमारो पति है ऐसी बुद्धिकरि प्रेमपूर्व्वक चरण सेवा ते आदि लेके यथोचित सेवा कराति भई तिन स्त्रीनको तप राजा तेरे आगे कहा वर्णन करूं २७ याप्रकार साधुनकी गति जे श्रीकृष्णचन्द्रहैं सो वेदविहित धर्म्म को अनुष्ठान करिके घरमें रहिके धर्म्म अर्थ विषय याप्रकार सेवन होत हैं ऐसे संसारी पुरुषन कूं वारंवार दिखावत भये २८ गृहस्थन को उत्कृष्ट जो धर्म्म है ताय करें ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सोलह हजार एकसौ आठ रानी होति भई २९ तिन स्त्रीनमें रत्न की तुल्य जे सोलह हजार एकसौ आठ रानी हैं तिनमें रुक्मिणी ते आदि लैके जे आठ रानी पहले कही और हे राजन्! तिनके पुत्र भी अनुक्रमपूर्व्वक कहे ३० नहीं प्रमाण करिवे में आवै है गति जिनकी ऐसे ईश्वर श्रीकृष्णचन्द्र हैं सो जितनी अपनी भार्य्यारहीं तिनमें एक एक भार्य्या में दश दश पुत्रनकूं उत्पन्न करतभये ३१ बड़ो है पराक्रम जिनको और उदारहै यश जिनको ऐसे अठारह महारथी होतभये

णां प्रसह्याऽऽकर्षतेमनः ॥ उरुगायोरुगीतोवा पश्यन्तीनांकुतःपुनः २६ याःसंपर्य्यचरन्प्रेम्णा पादसंवाहनादिभिः ॥ जगद्गुरुंभर्तृबुद्ध्यातासांकिंवर्ण्यते तपः २७ एवंवेदोदितंधर्म्ममनुतिष्ठन्सतांगतिः ॥ गृहंधर्म्मार्थकामानां मुहुश्चादर्शयत्पदम् २८ आस्थितस्यपरंधर्म्मं कृष्णस्यगृहमेधिनाम् ॥ आसन्षोडशसाहस्रं महिष्यश्चशताधिकम् २९ तासांस्त्रीरत्नभूतानामष्टौयाःप्रागुदाहृताः ॥ रुक्मिणीप्रमुखाराजंस्तत्पुत्राश्चानुपूर्व्वशः ३० एकैकस्यांदशदशकृष्णोऽजीजनदात्मजान् ॥ यावत्यआत्मनोभार्य्याअमोघगतिरीश्वरः ३१ तेषामुद्दामवीर्य्याणामष्टादशमहारथाः ॥ आसन्नुदारयशसस्तेषांनामानिमेशृणु ३२ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च दीप्तिमान्भानुरेवच ॥ साम्बोमधुर्बृहद्भानुश्चित्रभानुर्वृकोऽरुणः ३३ पुष्करोवेदबाहुश्चश्रुतदेवःसुनन्दनः ॥ चित्रबाहुर्विरूपश्च कविर्न्यग्रोधएवच ३४ एतेषामपिराजेन्द्र तनुजानांमधुद्विषः ॥ प्रद्युम्नआसीत्प्रथमःपितृवद्रुक्मिणीसुतः ३५ सरुक्मिणोदुहितरमुपयेमेमहारथः ॥ तस्मात्सुतोऽनिरुद्धोऽभून्नागायुतबलान्वितः ३६ सचापिरुक्मिणःपौत्रीं दौहित्रोजगृहेततः ॥ वज्रस्तस्याभवद्यस्तु मौसलादवशेषितः ३७ प्रतिबाहुरभूत्तस्मात्सुबाहुस्तस्यचाऽऽत्मजः ॥ सुबाहोःशान्तसेनोऽभूच्छतसेनस्तुतत्सुतः ३८ नह्येतस्मिन्कुलेजाताअधनाअबहुप्रजाः ॥ अल्पायुषोऽल्पवीर्य्याश्च अब्रह्मण्याश्च

तिनके नामनकूं हे राजन्! मोते श्रवण करौ ३२ प्रद्युम्न अनिरुद्ध दीप्तिमान् भानु साम्ब मधु बृहद्भानु चित्रभानु वृक अरुण ३३ पुष्कर वेदबाहु श्रुतदेव सुनन्दन चित्रबाहु विरूप कवि न्यग्रोध ३४ हे राजानके इन्द्र राजन् परीक्षित्! मधुदैत्य के मारनवारे जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके सब पुत्रनमें रुक्मिणीके पुत्र जे प्रथम प्रद्युम्नजी हैं ते श्रीकृष्णचन्द्र की तुल्य गुणनमें होतभये ३५ महारथी प्रद्युम्न रुक्मीकी पुत्री कूं विवाहतभये तिन प्रद्युम्नजी ते रुक्मीकी पुत्रीमें दश हजार हाथीको है बल जामें ऐसो अनिरुद्ध पुत्र होत भयो ३६ अनिरुद्धहै सो रुक्मीकी पोती रोचना कूं विवाहत भये ता रोचनामें अनिरुद्धके वज्र पुत्र होतभयो जो वज्र प्रभासक्षेत्र के मुसल तें बाकी रह्यो ३७ ता वज्रके प्रतिबाहु पुत्र भयो प्रतिबाहु के सुबाहु पुत्र भयो सुबाहुके शान्तसेन भयो शान्तसेनके शतसेन

भयो ३८ या यदुकुल में धनहीन प्रजाहीन कोई नहीं जन्मतभयो और थोड़ी है आयु जिनके पराक्रम रहित ब्राह्मणन की भक्तिहीन ऐसो कोई नहीं उत्पन्न होत भयो ३९ हे राजन् परीक्षित्! यदुवंश में जन्मे विख्यात हैं कर्म्म जिनके ऐसे पुरुषनकी संख्या दश हजार वर्ष में भी नहीं करने कूं समर्थ होयसके है ४० तीन करोड़ अट्ठासी सौ यदुकुलके असंख्य बालकन के पढ़ावनवारे आचार्य्य होतभये यह मैने श्रवण कस्यो है ४१ महात्मा यादवनकी संख्या कौन करिसके है जा कुलमें हजारन के दश हजार तिनके लाख इतने यादवन कूं लैके द्वारकापुरी में उग्रसेन वास करतभये ४२ देवता असुरन के युद्धमें मरे जे दारुण दैत्य हैं तेही मनुष्यन में उत्पन्न होयके गर्व्ववन्त होयके प्रजान कूं बाधा देतभये ४३ हे राजन् परीक्षित्! तिन असुरनके दण्डदेबे के लिये हरि जे भगवान् हैं तिनने आज्ञा जिनकूं दीनी ऐसे देवता यदुकुलमें अवतार लेतभये ४४ तिन यादवन की प्रभुतामें भगवानही प्रमाण होतभये तिन श्रीकृष्णचन्द्रके आज्ञानुवर्ती सब यादव होयके वृद्धि कूं प्राप्त होतभये तिनके कुलकी एकसौ एक संख्याहुई ४५ सोइबो और बैठिबो चलिबो तथा बोलिबो क्रीड़ा स्नानादि कर्म्म करनेमों श्रीकृष्णचन्द्र में हैं चित्त जिनके ऐसे यादवहैं

जज्ञिरे ३९ यदुवंशप्रसूतानां पुंसांविख्यातकर्म्मणाम् ॥ संख्यानशक्यतेकर्त्तुमपिवर्षायुतैर्नृप ४० तिस्रःकोट्यःसहस्राणामष्टाशीतिशतानिच ॥ आसन्यदुकुलाचार्य्याः कुमाराणामितिश्रुतम् ४१ संख्यानंयादवानांकः करिष्यतिमहात्मनाम् ॥ यत्रायुतानामयुतलक्षेणास्तेसआहुकः ४२ देवासुराहवहतादैतेयायेसुदारुणाः ॥ तेचोत्पन्नामनुष्येषु प्रजादृप्ताबबाधिरे ४३ तन्निग्रहायहरिणा प्रोक्तादेवायदोःकुले ॥ अवतीर्णाःकुलशतन्तेपामेकाधिकंनृप ४४ तेपांप्रमाणंभगवान्प्रभुत्वेनाभवद्धरिः ॥ येचानुवर्त्तिनस्तस्यववृधुःसर्व्वयादवाः ४५ शय्यासनाटनालापक्रीडास्नानादिकर्म्मसु ॥ नविदुःसन्तमात्मानंवृष्णयःकृष्णचेतसः ४६ तीर्थंचक्रेनृपोनंयदजनियदुपुस्वःसरित्पादशौचं विद्विट्स्निग्धाःस्वरूपंययुरजितपराश्रीर्यदर्थेऽन्ययत्नः ॥ यन्नामामङ्गलघ्नंश्रुतमथगदितंयत्कृतोगोत्रधर्म्मः कृष्णस्यैतन्नचित्रंक्षितिभरहरणंकालचक्रायुधस्य ४७ जयतिजननिवासोदेवकीजन्मवादो यदुवरपरिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्म्मम् ॥

तेअपने आत्माकूं नहीं जानतभये ४६ यासूं प्रथम श्रीगङ्गाजी है सोही अधिक तीर्थहो जब यादवनमें श्रीकृष्णचन्द्र को यशरूपी तीर्थ प्रकटभयो तब सूं अपनो चरणोदकरूप जो गङ्गातीर्थहै ताकूं भी न्यून करत भयो आपुही समस्त तीर्थन के ऊपर विराजें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रसूं जिन पुरुषनने वैर कस्यो और जिनने स्नेह कस्यो वेभी तद्रूपकू प्राप्तभये देखो जा लक्ष्मी के निमित्त ब्रह्मादिक उपाय करे है काहूकूं प्राप्त भई जो लक्ष्मी है सो भी श्रीकृष्णचन्द्रकी है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को नाम श्रवण करेते कथनकरेते समस्त पापन को नाशकरे है और जितने ऋषिन के वंशहैं तिनमें धर्म्म चलायो कालचक्र है हथियार जिनको ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रकूं दुष्टनको मारिबो पृथ्वीको बोझ उतारिबो यह कछु आश्चर्य्य नहीं है ४७ सब जीवनके अन्तर्य्यामीरूप होयके बसें ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र सर्व्वदा उत्कर्षतापूर्व्वक विराजमानहैं देवकी में जन्मभयो यह कथनमात्र है यादवन में जे उत्तमहैं ते जिनकी सभाके पार्षद हैं इच्छामात्र करिके अधर्म्म के नाश करिबे में समर्थ हैं तथापि क्रीड़ा के निमित्त अपनी भुजान ते अधर्म्म कूं दूरि करिके स्थावर जंगम सब जीवन को दुःख जिनने दूरि कस्यो सुन्दर मुसिकानि युक्त जो अपनो श्रीमुखहै तासूं ब्रजकी स्त्री गोपिका और पुर मथुरा

द्वारका की स्त्री हैं तिनकूं कामदेव बढ़ावत सर्व्वदा विराजमान रहैहैं ४८ अपने धर्म्म की रक्षा करिवे के लिये ग्रहण करे हैं मत्स्य कूर्मादिक अवतार जिनने ऐसे यादवन में उत्तम जे श्रीकृष्णचन्द्र हैं तिनके जे जे रूप धरिके उनके योग्य कर्म्म करे हैं तिनकूं श्रवण करिके पुरुष पापकर्म्म सूं छूटि जायहैं ४९ तीनों कालमें बड़ी मुक्ति के देनवारे श्रीकृष्णचन्द्र की शोभायमान कथा को श्रवण

इत्थंपरस्यनिजवर्त्मरिरक्षयात्तलीलातनोस्तदनुरूपविडम्बनानि ॥ कर्म्माणि स्थिरचरवृजिनघ्नःसुस्मितश्रीमुखेन व्रजपुरवनितानांवर्द्धयन्कामदेवम् ४८ कर्म्माणि कर्म्मकषणानियदूत्तमस्य श्रूयादमुष्यपदयोरनुवृत्तिमिच्छन् ४९ मर्त्यस्तयाऽनुसवमेधितयामुकुन्दश्रीमत्कथाश्रवणकीर्तनचिन्तयैति ॥ तद्धामदुस्तर कृतान्तजवापवर्ग्गग्रामाद्वनंक्षितिभुजोऽपिययुर्यदर्थाः ५० ॥ इति श्रीमद्भागवतेमहापुराणेदशमस्कन्धेउत्तरार्द्धेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांश्री कृष्णचरितानुवर्णनंनामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥ ⊛ ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

कीर्तन विचार करिके पुरुषहै सो कालकी जामें गति नहीं ऐसो जो भगवान् को धाम है ताय प्राप्त होइहै यह श्रवण करिके चक्रवर्ती राजाभी अपनो राज्य त्यागि के श्रीकृष्णचन्द्र की प्राप्तिके निमित्त ग्रामके बाहर वन में जातभये ५० ॥ इति श्रीमद्यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीशाखाध्येतृवैयाघ्रपदगोत्रजातश्रीमन्नृपतिजयकिशोरदेवात्मजविश्वामित्रपुराधिपश्रीगिरिप्रसादवर्म्माज्ञयामर्दकीपुरनिवासिपण्डितास्कन्दशर्म्मशास्त्रिविरचितायांश्रीमन्महाभागवतार्थरूपिण्यादशमस्कन्धेश्रीकृष्णचरितानुवर्णनंनामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥ * ॥ * ॥

समाप्तश्चायं दशमस्कन्धः ॐतत्सत् श्रीगोपीजनवल्लभार्पणमस्तु ॐशान्तिःशान्तिःशान्तिः ॥

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपा दिसम्बर सन् १९०५ ई० ॥

॥ इति श्रीमद्भागवतं दशमस्कन्धउत्तरार्द्धम् ॥